CET-2026

राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड (RSSB)

समान पात्रता परीक्षा

स्नातक स्तर – (हिन्दी माध्यम)

NODIA

भाग - 2

भूगोल

GEOGRAPHY

अध्यायवार MCQs

Scan QR for Demo PDF

Nodia

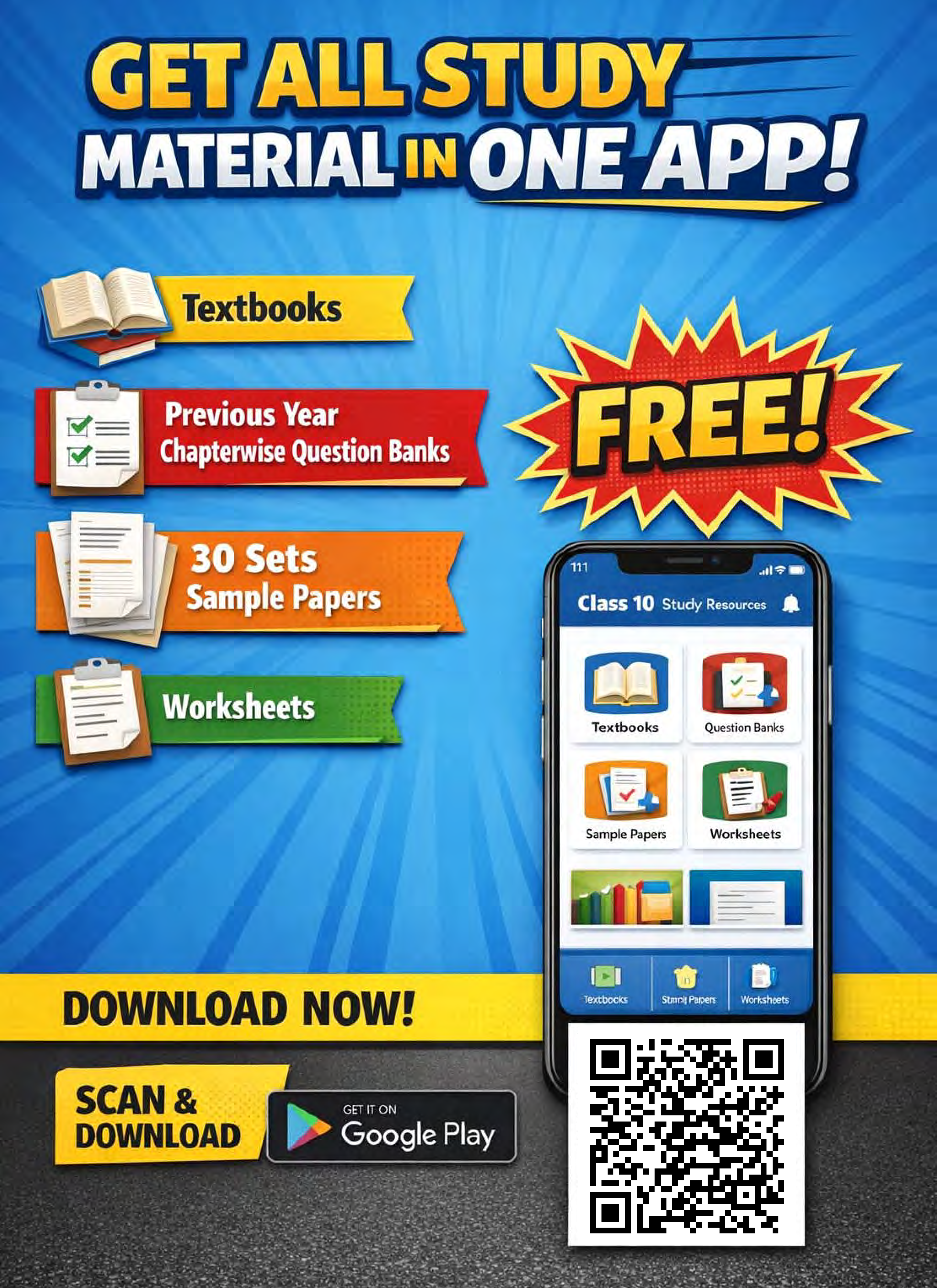
GET ALL STUDY MATERIAL IN ONE APP!
Textbooks
Previous Year Chapterwise Question Banks
30 Sets Sample Papers
Worksheets
FREE!
Class 10 Study Resources
Textbooks
Question Banks
Sample Papers
Worksheets
DOWNLOAD NOW!
SCAN & DOWNLOAD
GET IT ON Google Play

RSSB 2026

राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड

COMMON ELIGIBILITY TEST (CET)
GRADUATE LEVEL

समान पात्रता परीक्षा
स्नातक स्तर

PART 2

GEOGRAPHY

भाग 2

भूगोल

अध्यायवार वस्तुनिष्ठ प्रश्न बैंक
नवीनतम पाठ्यक्रम के अनुसार

Nodia

Downloaded from www.pdf.tube

RSSB CET स्नातक स्तर भूगोल भाग 2
Edition July 2026
Published by :Nodia
An Imprint of NODIA EDITIONS LLP

इस पुस्तक में निहित जानकारी लेखक द्वारा ऐसे स्रोतों से प्राप्त की गई है जिन्हें विश्वसनीय माना गया है। तथापि, Nodia तथा इसके लेखक इस पुस्तक में दी गई किसी भी जानकारी की शुद्धता, पूर्णता अथवा अद्यतनता की कोई गारंटी नहीं देते हैं। इस पुस्तक में किसी प्रकार की त्रुटि, चूक अथवा इसमें निहित जानकारी के उपयोग से उत्पन्न होने वाली किसी भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष हानि के लिए Nodia तथा इसके लेखक उत्तरदायी नहीं होंगे। यह पुस्तक इस समझ के साथ प्रकाशित की गई है कि Nodia तथा इसके लेखक केवल सामान्य जानकारी उपलब्ध करा रहे हैं। इसका उद्देश्य अभियांत्रिकी (Engineering) अथवा किसी अन्य व्यावसायिक या विशेषज्ञ सेवा अथवा परामर्श प्रदान करना नहीं है।

© NODIA EDITIONS LLP

MRP ₹440.00

NODIA

NODIA EDITIONS LLP
125, Sector 6, Vidyadhar Nagar, Jaipur 302039
Phone :+91 9001005245
email : mail@nodia.in

विषय-सूची

अध्याय 1.	भारत की भौतिक विशेषताएँ	5
अध्याय 2.	भारत की जलवायु और मानसून प्रणाली	23
अध्याय 3.	भारत की नदियाँ, बाँध, झीलें और समुद्र	41
अध्याय 4.	भारत के वन्यजीव अभयारण्य	58
अध्याय 5.	भारत की प्रमुख फसलें	78
अध्याय 6.	भारत के प्रमुख खनिज	95
अध्याय 7.	भारत के ऊर्जा संसाधन	112
अध्याय 8.	भारत के प्रमुख उद्योग और औद्योगिक क्षेत्र	131
अध्याय 9.	भारत का परिवहन	151
अध्याय 10.	भारत का व्यापार	168
अध्याय 11.	राजस्थान की भौतिक संरचना	187
अध्याय 12.	राजस्थान की जलवायु	204
अध्याय 13.	राजस्थान की जल निकासी प्रणाली और जल संरक्षण	224
अध्याय 14.	राजस्थान की प्राकृतिक वनस्पति	241
अध्याय 15.	राजस्थान के वन्यजीव अभयारण्य	260

Click Here to Buy book on Amazon

अध्याय 16.	राजस्थान की मिट्टी	280
अध्याय 17.	राजस्थान की रबी और खरीफ़ फ़सलें	299
अध्याय 18.	राजस्थान की जनसंख्या	318
अध्याय 19.	राजस्थान की प्रमुख जनजातियाँ	336
अध्याय 20.	राजस्थान के खनिज	354
अध्याय 21.	राजस्थान के ऊर्जा संसाधन	372
अध्याय 22.	राजस्थान के पर्यटन स्थल	390
अध्याय 23.	राजस्थान का परिवहन	408

****

NODIA

अध्याय 01
भारत की भौतिक विशेषताएँ

1. भारत के निम्नलिखित भौतिक विभागों में से कौन-सा सबसे बड़ा भौगोलिक क्षेत्रफल आच्छादित करता है?
(A) उत्तरी मैदान
(B) प्रायद्वीपीय पठार
(C) हिमालय पर्वतमाला
(D) तटीय मैदान

2. भारत की भूगर्भीय संरचना के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. प्रायद्वीपीय पठार को पृथ्वी के सबसे स्थिर भूखंडों में से एक माना जाता है।
II. हिमालय भूगर्भीय रूप से प्राचीन और स्थिर पर्वत हैं।
III. उत्तरी मैदान मुख्य रूप से जलोढ़ निक्षेपों से बने हैं।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

3. कथन I और कथन II को पढ़िए तथा सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I : हिमालय का निर्माण इंडो-ऑस्ट्रेलियन प्लेट और यूरेशियन प्लेट के मध्य टक्कर के परिणामस्वरूप हुआ था।
कथन II : टेथिस सागर से हिमालय के ऊपर उठने के परिणामस्वरूप एक द्रोणी (अवदाब) का निर्माण हुआ, जो बाद में भरकर उत्तरी मैदान बन गया।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है

4. नीचे एक कथन (A) और एक कारण (R) दिया गया है।
कथन (A) : हिमाद्रि या महान हिमालय में माउंट एवरेस्ट और कंचनजंगा सहित विश्व की अधिकांश उच्चतम चोटियाँ स्थित हैं।
कारण (R) : हिमाद्रि, हिमालय पर्वत श्रेणी की सबसे दक्षिणी और भूगर्भीय रूप से सबसे नवीन श्रृंखला है।
सही विकल्प का चयन कीजिए:
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

5. ट्रांस-हिमालय के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन असत्य है?
(A) यह दक्षिण-पश्चिम मानसून से भारत में सर्वाधिक वर्षा प्राप्त करता है।
(B) यह महान हिमालय के उत्तर में एक उच्च शीत क्षेत्र के रूप में स्थित है।
(C) जास्कर, लद्दाख और काराकोरम इसके अंतर्गत प्राथमिक पर्वत श्रेणियाँ हैं।
(D) ट्रांस-हिमालयी क्षेत्र का एक बड़ा हिस्सा तिब्बत में स्थित है, इसलिए इसे तिब्बती हिमालय भी कहा जाता है।

6. भारत की सबसे ऊँची चोटी K2 (गॉडविन ऑस्टिन) निम्नलिखित में से किस पर्वत श्रेणी में स्थित है?
(A) जास्कर श्रेणी
(B) पीर पंजाल श्रेणी
(C) लद्दाख श्रेणी
(D) काराकोरम श्रेणी

7. निम्नलिखित हिमालयी श्रेणियों और उनकी प्रमुख भौगोलिक विशेषताओं या स्थितियों पर विचार कीजिए, तथा सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए।
सूची I : (हिमालयी श्रेणियाँ)
P. महान हिमालय
Q. मध्य हिमालय
R. शिवालिक
S. ट्रांस-हिमालय
सूची II : (भौगोलिक विशेषताएं)
1. मुख्य रूप से असंगठित अवसादों से निर्मित
2. शिमला और दार्जिलिंग जैसे प्रसिद्ध पर्वतीय नगर सम्मिलित हैं
3. इसमें सियाचिन हिमनद स्थित है
4. केंद्रीय भाग ग्रेनाइट से निर्मित और असमित वलनों से युक्त है
सही कूट का चयन कीजिए:
(A) P-3, Q-1, R-2, S-4
(B) P-4, Q-2, R-1, S-3
(C) P-4, Q-1, R-2, S-3
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

Downloaded from www.pdf.tube

8. मध्य हिमालय (हिमाचल) अपनी मनोरम घाटियों के लिए प्रसिद्ध है। निम्नलिखित में से कौन-सी घाटी मध्य हिमालय में स्थित नहीं है?
(A) कश्मीर घाटी
(B) कुल्लू घाटी
(C) शांत घाटी (साइलेंट वैली)
(D) काँगड़ा घाटी

9. हिमालयी पर्वत प्रणाली के संदर्भ में, "दून" शब्द संदर्भित करता है:
(A) तीव्र प्रवाहित हिमनदीय नदियों और धाराओं द्वारा समय के साथ निर्मित V-आकार की घाटियाँ।
(B) भारत और तिब्बत को जोड़ने वाले व्यापारिक मार्ग बनाने वाले उच्च-ऊँचाई वाले पर्वतीय दर्रे।
(C) काराकोरम श्रेणी के पार स्थित विस्तृत उच्च समतल भूमि और शीत मैदान।
(D) लघु हिमालय और शिवालिक के बीच स्थित अनुदैर्ध्य घाटियाँ।

10. हिमालय और ट्रांस-हिमालय प्रणाली की निम्नलिखित पर्वत श्रेणियों को उत्तर से दक्षिण की ओर सही क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. जास्कर श्रेणी
2. काराकोरम श्रेणी
3. शिवालिक श्रेणी
4. लद्दाख श्रेणी

निम्नलिखित में से कौन-सा सही अनुक्रम है?
(A) 2, 4, 1, 3
(B) 2, 1, 4, 3
(C) 4, 2, 1, 3
(D) 1, 2, 4, 3

11. निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प उत्तरी मैदानों के "भाबर" उप-क्षेत्र को परिभाषित करता है?
(A) घने वनों और समृद्ध वन्यजीवों से ढकी एक संकीर्ण, आर्द्र, दलदली पट्टी।
(B) शिवालिक के गिरिपाद के समानांतर कंकड़-पत्थरों की एक सरंध्र पट्टी जहाँ नदियाँ विलुप्त हो जाती हैं।
(C) पुराने जलोढ़ से बने उत्तरी मैदानों का सबसे बड़ा हिस्सा जिसमें चूनेदार निक्षेप पाए जाते हैं।
(D) नदी के बाढ़ के मैदानों के नए, उपजाऊ निक्षेप जो प्रतिवर्ष नवीनीकृत होते हैं।

12. भाबर पट्टी के ठीक दक्षिण में तराई क्षेत्र स्थित है। तराई क्षेत्र की प्राथमिक जलवैज्ञानिक विशेषता क्या है?
(A) यह गहरे भूजल जलभृतों की विशेषता वाला एक शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्र है।
(B) वह क्षेत्र जहाँ विलुप्त भूमिगत धाराएँ पुनः धरातल पर प्रकट होकर दलदली क्षेत्र का निर्माण करती हैं।
(C) इसमें अत्यधिक सरंध्र चट्टानों का प्राधान्य है जो धरातलीय जल के संचयन को रोकती हैं।
(D) इसमें मुख्य रूप से तटीय पश्चजल, ज्वारीय खाड़ियाँ और ज्वारनदमुख तंत्र सम्मिलित हैं।

13. उत्तरी मैदानों के बांगर और खादर उप-क्षेत्रों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. बांगर पुराने जलोढ़ से बना है और नदियों के बाढ़ के स्तर से ऊपर स्थित है।
II. खादर नए जलोढ़ से बना है जो वार्षिक बाढ़ द्वारा निक्षेपित होता है।
III. बांगर क्षेत्र की मृदा में चूनेदार निक्षेप होते हैं, जिन्हें स्थानीय रूप से 'कंकर' कहा जाता है।
IV. खादर मृदा सामान्यतः बांगर मृदा की तुलना में कम उपजाऊ होती है और गहन कृषि के लिए अनुपयुक्त होती है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल I, III और IV
(C) केवल II, III और IV
(D) I, II, III और IV

14. नीचे एक कथन (A) और एक कारण (R) दिया गया है।
कथन (A) : दक्कन के पठार के उत्तर-पश्चिमी भाग को दक्कन ट्रैप के नाम से जाना जाता है और यहाँ काली मृदा पाई जाती है।
कारण (R) : इस क्षेत्र का निर्माण प्लीस्टोसीन युग के दौरान तीव्र हिमनदीय अपरदन द्वारा हुआ था।
सही विकल्प का चयन कीजिए:
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

15. राजस्थान के दक्षिण-पूर्वी भागों तक विस्तृत मालवा का पठार मुख्य रूप से किस नदी तंत्र द्वारा अपवाहित होता है?
(A) लूनी और सुकड़ी
(B) गोदावरी और कृष्णा
(C) महानदी और सुवर्णरेखा
(D) चंबल और बेतवा

16. मध्य उच्चभूमि नर्मदा नदी के उत्तर में स्थित है। कौन-सी पर्वत श्रृंखला मध्य उच्चभूमि को उत्तर-पश्चिम में सीमाबद्ध करती है?
(A) विंध्य श्रेणी
(B) सतपुड़ा श्रेणी
(C) अरावली श्रेणी
(D) महादेव पहाड़ियाँ

17. निम्नलिखित भू-आकृतिक विशेषताओं और उनके भौगोलिक संबंधों पर विचार कीजिए, तथा सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए।
सूची I : (भू-आकृतिक विशेषताएं)
P. छोटानागपुर पठार

NODIA

Q. मेघालय पठार
R. दक्कन का पठार
S. बुंदेलखंड

सूची II : (भौगोलिक संबंध)
1. प्रायद्वीपीय पठार का उत्तर-पूर्वी विस्तार
2. खनिजों का भंडार, जो दामोदर नदी द्वारा अपवाहित है
3. गंगा के मैदान और विंध्याचल के बीच का संक्रमणकालीन क्षेत्र
4. नर्मदा नदी के दक्षिण में स्थित त्रिभुजाकार भूखंड

सही कूट का चयन कीजिए:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-1, R-4, S-3
(C) P-2, Q-3, R-4, S-1
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

18. पश्चिमी घाट की चोटियों और उनकी संबंधित पर्वत श्रेणियों का निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म गलत सुमेलित है?
(A) अनामुडी चोटी — अनामलाई पहाड़ियाँ
(B) डोडा बेट्टा चोटी — नीलगिरि पहाड़ियाँ
(C) कलसूबाई चोटी — सह्याद्रि श्रेणी
(D) महेंद्रगिरि — इलायची पहाड़ियाँ

19. पूर्वी घाट से संबंध के आधार पर निम्नलिखित पहाड़ियों में से विषम (बेमेल) पहाड़ी की पहचान कीजिए।
(A) अनामलाई पहाड़ियाँ
(B) जावड़ी पहाड़ियाँ
(C) शेवरॉय पहाड़ियाँ
(D) नल्लामाला पहाड़ियाँ

20. राजस्थान में थार मरुस्थल के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इस क्षेत्र में बहुत कम वर्षा होती है, जो सामान्यतः 150 मिमी प्रति वर्ष से कम होती है।
II. बरखान (अर्धचंद्राकार बालुका स्तूप) इस क्षेत्र की एक प्रमुख स्थलाकृतिक विशेषता हैं।
III. लूनी इस भौगोलिक विभाग की एकमात्र बड़ी नदी है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

21. मुख्य रूप से गोवा और मंगलुरु के बीच स्थित पश्चिमी तटीय मैदान का मध्य भाग किस नाम से जाना जाता है?
(A) कन्नड़ तट
(B) कोंकण तट
(C) मालाबार तट
(D) कोरोमंडल तट

22. कथन I और कथन II को पढ़िए तथा सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I : पूर्वी तटीय मैदान, पश्चिमी तटीय मैदानों की तुलना में अधिक चौड़े और समतल हैं।
कथन II : महानदी, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी जैसी प्रमुख नदियों ने पूर्वी तट पर विस्तृत डेल्टाओं का निर्माण किया है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है

23. अंडमान और निकोबार द्वीप समूह को भूगर्भीय रूप से विशिष्ट माना जाता है। मुख्य रूप से ऐसा माना जाता है कि वे:
(A) पूर्णतः समुद्री प्रवाल जीवों के कंकालीय निक्षेपों द्वारा निर्मित निचले प्रवाल द्वीप हैं।
(B) अराकान योमा श्रेणी से विस्तृत जलमग्न पर्वत श्रृंखलाओं के उभरे हुए भाग हैं।
(C) वैश्विक समुद्र के स्तर में वृद्धि के कारण पृथक हुए एक प्राचीन महाद्वीपीय मग्नतट के अवशेष हैं।
(D) अंतिम हिमयुग के दौरान निर्मित हिमनद हिमोढ़ और हिमनद-प्रक्षालित निक्षेप हैं।

24. नीचे एक कथन (A) और एक कारण (R) दिया गया है।
कथन (A) : लक्षद्वीप द्वीप समूह सामान्यतः समतल हैं और समुद्र तल से इनकी ऊँचाई बहुत कम है।
कारण (R) : लक्षद्वीप द्वीप समूह मुख्य रूप से प्रवाल निक्षेपों (एटॉल) से बने हैं।
सही विकल्प का चयन कीजिए:
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

25. प्रायद्वीपीय पठार की निम्नलिखित पर्वत श्रेणियों को उत्तर से दक्षिण के क्रम में व्यवस्थित कीजिए, जो महत्वपूर्ण जल विभाजक के रूप में भी कार्य करती हैं:
(A) विंध्य श्रेणी, सतपुड़ा श्रेणी, अजंता श्रेणी, नीलगिरि पहाड़ियाँ
(B) सतपुड़ा श्रेणी, विंध्य श्रेणी, नीलगिरि पहाड़ियाँ, अजंता श्रेणी
(C) विंध्य श्रेणी, अजंता श्रेणी, सतपुड़ा श्रेणी, नीलगिरि पहाड़ियाँ
(D) अजंता श्रेणी, विंध्य श्रेणी, सतपुड़ा श्रेणी, नीलगिरि पहाड़ियाँ

26. निम्नलिखित भूगर्भीय शैल प्रणालियों और उनके विशिष्ट आर्थिक खनिजों पर विचार कीजिए, तथा सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए।
सूची I : (भूगर्भीय शैल प्रणालियाँ)
P. धारवाड़ प्रणाली
Q. गोंडवाना प्रणाली
R. विंध्यन प्रणाली
S. तृतीयक प्रणाली

Click Here to Buy book on Flipkart

सूची II : (आर्थिक खनिज)
1. कोयले के प्रमुख भंडार
2. भवन निर्माण के पत्थर, चूना पत्थर और बलुआ पत्थर
3. पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस
4. अत्यधिक धात्विक खनिज (लौह अयस्क, सोना, मैंगनीज)

सही कूट का चयन कीजिए:
(A) P-4, Q-1, R-2, S-3
(B) P-1, Q-4, R-3, S-2
(C) P-4, Q-2, R-1, S-3
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

27. भारत का निम्नलिखित में से कौन-सा भू-आकृतिक क्षेत्र अपनी उच्च कृषि उत्पादकता के कारण राष्ट्र की खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है?
(A) प्रायद्वीपीय पठार
(B) उत्तरी मैदान
(C) पूर्वी तटीय मैदान
(D) मध्य उच्चभूमि

28. भौतिक लक्षण भारत में बसावट के पैटर्न (अधिवास प्रतिरूप) को गहराई से प्रभावित करते हैं। निम्नलिखित में से कौन-सी भौगोलिक स्थिति सामान्यतः उच्च जनसंख्या घनत्व और सघन बस्तियों के लिए अनुकूल नहीं है?
(A) समतल भूभाग की व्यापक उपलब्धता
(B) तीव्र ढाल वाली उबड़-खाबड़ स्थलाकृति
(C) गहरी, उपजाऊ जलोढ़ मृदा
(D) मीठे जल के स्रोतों तक विश्वसनीय पहुँच

29. हिमालयी क्षेत्र और प्रायद्वीपीय पठार के बारे में निम्नलिखित तुलनात्मक कथनों पर विचार कीजिए:
I. हिमालय की स्थलाकृति नवीन (युवा) है, जिसमें ऊँची चोटियाँ, गहरी घाटियाँ और तीव्र प्रवाहित नदियाँ हैं।
II. प्रायद्वीपीय पठार में चौड़ी एवं छिछली घाटियाँ तथा गोलाकार पहाड़ियाँ शामिल हैं।
III. हिमालय, प्रायद्वीपीय पठार की तुलना में भूगर्भीय रूप से अधिक प्राचीन हैं।
IV. प्रायद्वीपीय पठार मुख्य रूप से आग्नेय और कायांतरित चट्टानों से बना है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल I, II और IV
(C) केवल II, III और IV
(D) केवल I, III और IV

30. भारत अपनी सबसे लंबी अंतरराष्ट्रीय स्थलीय सीमा निम्नलिखित में से किस देश के साथ साझा करता है, जो इसके पूर्वी भौतिक लक्षणों के भौगोलिक विस्तार को महत्वपूर्ण रूप से आकार देती है?
(A) चीन (B) पाकिस्तान
(C) बांग्लादेश (D) नेपाल

31. प्लेट विवर्तनिकी के सिद्धांत के अनुसार, हिमालय का निर्माण किस भूसन्नति में जमा अवसादी चट्टानों के वलन द्वारा हुआ था?
(A) पैंथलासा
(B) अंगारालैंड
(C) गोंडवाना
(D) टेथिस

32. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन हिमालय पर्वत प्रणाली की विशेषता का सही वर्णन करता है?
(A) हिमालय पर्वत कश्मीर से अरुणाचल प्रदेश तक एक सतत, अखंड सीधी रेखा बनाते हैं।
(B) हिमालय को भ्रंशन द्वारा निर्मित ब्लॉक पर्वतों के रूप में वर्गीकृत किया गया है।
(C) हिमालय के पश्चिमी भाग की तुलना में पूर्वी भाग में ऊँचाई संबंधी विविधताएँ (उच्चावच) अधिक हैं।
(D) जैसे-जैसे कोई कश्मीर से अरुणाचल प्रदेश की ओर बढ़ता है, हिमालय की चौड़ाई उत्तरोत्तर बढ़ती जाती है।

33. काराकोरम श्रेणी अत्यधिक सामरिक और भौगोलिक महत्व रखती है। निम्नलिखित में से कौन-सा प्रमुख हिमनद काराकोरम श्रेणी में स्थित है?
(A) गंगोत्री हिमनद
(B) सियाचिन हिमनद
(C) जेमू हिमनद
(D) मिलाम हिमनद

34. लद्दाख और जास्कर श्रेणियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. लद्दाख श्रेणी, जास्कर श्रेणी के उत्तर में स्थित है।
II. सिंधु नदी लद्दाख और जास्कर श्रेणियों के बीच एक गहरे महाखड्ड से होकर बहती है।
III. दोनों श्रेणियाँ महान हिमालय (हिमाद्रि) प्रणाली का हिस्सा हैं।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

35. महान हिमालय (हिमाद्रि) के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन असत्य है?
(A) यह ग्रीष्मकाल के महीनों में पूरी तरह से बर्फ से विहीन रहता है।
(B) यह 6,000 मीटर की औसत ऊँचाई वाली सबसे सतत श्रेणी है।
(C) हिमालय के इस भाग का क्रोड ग्रेनाइट से बना है।
(D) नंदा देवी और कामेट जैसी प्रमुख चोटियाँ इसी श्रेणी से संबंधित हैं।

36. नीचे एक कथन (A) और एक कारण (R) दिया गया है।
कथन (A) : मध्य हिमालय (हिमाचल) श्रेणी अत्यधिक उबड़-खाबड़ पर्वत प्रणाली है और मुख्य रूप से अत्यधिक

Downloaded from www.pdf.tube

संपीडित तथा परिवर्तित चट्टानों से बनी है।
कारण (R) : पीर पंजाल श्रेणी मध्य हिमालय के भीतर सबसे लंबी और सबसे महत्वपूर्ण श्रेणी बनाती है।
सही विकल्प का चयन कीजिए:
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

37. शिवालिक श्रेणी की औसत चौड़ाई किसके बीच भिन्न होती है?
(A) 10 से 50 किमी (B) 100 से 150 किमी
(C) 200 से 250 किमी (D) 400 से 500 किमी

38. उत्तरी मैदानों के विभागों के स्थानीय नामों और उनके भौगोलिक क्षेत्रों पर विचार कीजिए, तथा सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए।
सूची I : (उत्तरी मैदानों के विभाग)
P. पंजाब के मैदान
Q. गंगा के मैदान
R. ब्रह्मपुत्र के मैदान
S. दोआब
सूची II : (भौगोलिक क्षेत्र)
1. तीस्ता और दिहांग नदियों के बीच
2. सिंधु और उसकी सहायक नदियों द्वारा निर्मित
3. दो मिलती हुई नदियों के बीच स्थित भूभाग
4. घग्गर और तीस्ता नदियों के बीच
सही कूट का चयन कीजिए:
(A) P-1, Q-4, R-2, S-3
(B) P-2, Q-1, R-4, S-3
(C) P-4, Q-2, R-1, S-3
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

39. उत्तरी मैदानों के अनुदैर्ध्य विभाजनों के संबंध में सही सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए।
(A) भाबर — घने वनों वाला दलदली क्षेत्र
(B) खादर — बाढ़ के मैदानों पर निक्षेपित नवीन जलोढ़
(C) तराई — कंकड़-पत्थरों की सरंध्र पट्टी जहाँ नदियाँ विलुप्त हो जाती हैं
(D) बांगर — तटीय ज्वारनदमुखी निक्षेप जो ज्वारीय बाढ़ के प्रति अत्यधिक संवेदनशील हैं

40. उत्तरी मैदानों की निम्नलिखित भू-आकृतिक विशेषताओं को उत्तर (गिरिपाद) से दक्षिण की ओर सही क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. तराई
2. भाबर
3. खादर (नदी का बाढ़ का मैदान)
4. बांगर
निम्नलिखित में से कौन-सा सही अनुक्रम है?
(A) 2, 1, 4, 3
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 2, 4, 1, 3
(D) 4, 3, 1, 2

41. दक्कन के पठार के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह एक त्रिभुजाकार भूखंड है जो नर्मदा नदी के दक्षिण में स्थित है।
II. उत्तर में इसके चौड़े आधार पर सतपुड़ा श्रेणी स्थित है।
III. यह पठार पूर्व में ऊँचा है और पश्चिम की ओर धीमी ढाल वाला है।
IV. इस पठार का एक विस्तार उत्तर-पूर्व में भी दिखाई देता है, जिसे स्थानीय रूप से मेघालय और कारबी-एंगलोंग पठार कहा जाता है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल I, II और IV
(C) केवल II, III और IV
(D) केवल I, III और IV

42. राजस्थान के भूगोल के संदर्भ में, हाड़ौती पठार के नाम से जाना जाने वाला दक्षिण-पूर्वी पठारी क्षेत्र मूल रूप से भारत के किस प्रमुख भू-आकृतिक विभाग का विस्तार है?
(A) मालवा का पठार
(B) छोटानागपुर का पठार
(C) दक्कन ट्रैप
(D) मेघालय का पठार

NODIA

43. मध्य उच्चभूमि में कई पूर्वी विस्तार शामिल हैं। निम्नलिखित में से कौन-सा मध्य उच्चभूमि का पूर्वी विस्तार नहीं है?
(A) बुंदेलखंड
(B) काठियावाड़
(C) बघेलखंड
(D) छोटानागपुर

44. छोटानागपुर पठार मुख्य रूप से किस नदी द्वारा अपवाहित होता है, जो कोयला निक्षेपों के लिए प्रसिद्ध एक महत्वपूर्ण घाटी बनाती है?
(A) गोदावरी
(B) दामोदर
(C) सोन
(D) नर्मदा

45. पश्चिमी घाट, वर्षा वाली आर्द्र हवाओं को पश्चिमी ढलानों के साथ ऊपर उठने पर प्रेरित करके पर्वतीय वर्षा का कारण बनते हैं। दक्षिण-पश्चिम मानसून के दौरान, पश्चिमी घाट का कौन-सा भाग वृष्टि-छाया क्षेत्र में आता है?
(A) घाटों का पवनविमुख भाग
(B) अरब सागर से सटा संकीर्ण पश्चिमी तटीय मैदान
(C) केरल की पवनाभिमुख मालाबार तटीय पट्टी
(D) महाराष्ट्र की उत्तरी कोंकण तटीय पट्टी

46. निम्नलिखित में से कौन-सा पूर्वी घाट का सबसे सटीक वर्णन है?
(A) वे बंगाल की खाड़ी के पूरे तट के समानांतर चलने वाली एक सतत, अखंड पर्वत श्रृंखला बनाते हैं।
(B) वे पश्चिमी घाट की तुलना में काफी ऊँचे हैं और घने विषुवतीय वनों से ढके हैं।
(C) वे असतत और अनियमित हैं, जिन्हें बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली प्रमुख नदियों ने काट दिया है।
(D) वे विशुद्ध रूप से नवीन ज्वालामुखीय चट्टानी संरचनाओं, प्रवाह बेसाल्ट और सक्रिय शील्ड ज्वालामुखी से बने हैं।

47. कथन I और कथन II को पढ़िए तथा सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I : राजस्थान में थार मरुस्थल की दक्षिण-पूर्वी सीमा पर अरावली पहाड़ियाँ स्थित हैं।
कथन II : दक्षिण-पश्चिम मानसून की अरब सागर शाखा की दिशा के समानांतर अरावली पहाड़ियों की उपस्थिति थार मरुस्थल की शुष्कता का एक प्राथमिक कारण है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है

48. पश्चिमी तटीय मैदानों को विभिन्न भागों में विभाजित किया गया है। निम्नलिखित में से कौन-सा पश्चिमी तटीय मैदान का भाग नहीं है?
(A) कोंकण तटीय मैदान
(B) कन्नड़ तटीय मैदान
(C) उत्तरी सरकार
(D) मालाबार तटीय मैदान

49. पूर्वी तटीय मैदानों के भौगोलिक विभाजनों का उत्तर से दक्षिण की ओर सही क्रम चुनिए:
(A) उत्कल तट, कोरोमंडल तट, उत्तरी सरकार
(B) उत्तरी सरकार, उत्कल तट, कोरोमंडल तट
(C) उत्कल तट, उत्तरी सरकार, कोरोमंडल तट
(D) कोरोमंडल तट, उत्तरी सरकार, उत्कल तट

50. अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?
(A) अंडमान द्वीप समूह, निकोबार द्वीप समूह के दक्षिण में स्थित हैं।
(B) यह द्वीप समूह विशेष रूप से प्रवाल पॉलिप्स द्वारा निर्मित एक विशाल एटॉल प्रणाली से संबंधित है।
(C) इसकी राजधानी कवरत्ती, ग्रेट अंडमान समूह में स्थित है।
(D) वे 10° चैनल (दस डिग्री चैनल) नामक एक गहरे जल निकाय द्वारा अलग किए जाते हैं।

51. लक्षद्वीप द्वीप समूह अपेक्षाकृत छोटे भौगोलिक क्षेत्र को कवर करते हैं। लक्षद्वीप द्वीप समूह का कुल क्षेत्रफल लगभग कितना है?
(A) 32 वर्ग किमी
(B) 102 वर्ग किमी
(C) 250 वर्ग किमी
(D) 500 वर्ग किमी

52. भारत के प्रमुख जल विभाजकों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. अरावली श्रेणी सिंधु और गंगा अपवाह तंत्रों के बीच जल विभाजक के रूप में कार्य करती है।
II. पश्चिमी घाट पश्चिम की ओर बहने वाली अरब सागर की नदियों और पूर्व की ओर बहने वाली बंगाल की खाड़ी की नदियों के बीच प्रमुख जल विभाजक बनाते हैं।
III. विंध्य श्रेणी हिमालयी नदी तंत्रों और प्रायद्वीपीय नदी तंत्रों के बीच प्राथमिक विभाजक के रूप में कार्य करती है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

53. भारत के प्रायद्वीपीय पठार के उत्तर-पश्चिमी भाग में व्यापक रूप से काली मृदा पाई जाती है। भूगर्भीय रूप से, यह मृदा किसके अपक्षय के कारण बनी थी?
(A) क्रिटेशियस काल के दौरान उद्गारित बेसाल्टिक लावा चट्टानों के
(B) नदियों के परिवहन द्वारा समय के साथ निक्षेपित अवसादी शैल संरचनाओं के
(C) आर्कियन युग की नाइस और शिस्ट जैसी कायांतरित शैल प्रणालियों के
(D) तटीय पश्चजल में पाए जाने वाले चूनेदार समुद्री निक्षेपों और अवसादों के

54. भारतीय भू-आकृतिक विशेषताओं और उनके प्रमुख कृषि महत्व के संबंध में गलत सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए।
(A) उत्तरी मैदान — गहन गेहूं और चावल की खेती
(B) दक्कन ट्रैप — काली मृदा में कपास की खेती
(C) मालाबार तट — मसाले और रोपण फसलें
(D) थार मरुस्थल — जूट और गन्ने की खेती

55. ऐतिहासिक रूप से, उत्तरी मैदानों ने मुख्य रूप से किस कारण से अत्यधिक उच्च जनसंख्या घनत्व का समर्थन किया है?
(A) धात्विक खनिज संसाधनों के अत्यधिक निक्षेप जिन्होंने तीव्र औद्योगीकरण को बढ़ावा दिया।
(B) कृषि के लिए समृद्ध जलोढ़ मृदा, अनुकूल जलवायु और प्रचुर जल आपूर्ति।
(C) अंतरराष्ट्रीय व्यापार को सुगम बनाने वाले प्राकृतिक गहरे समुद्री बंदरगाहों की व्यापक उपस्थिति।
(D) आसपास के उबड़-खाबड़ भूमाग द्वारा सभी तरफ प्रदान किया गया रणनीतिक प्राकृतिक अलगाव।

56. भारत की भौतिक विशेषताओं के बारे में निम्नलिखित तुलनात्मक कथनों पर विचार कीजिए:

Click Here to Buy book on Amazon

I. पर्वत जल और वन संपत्ति का प्रमुख स्रोत प्रदान करते हैं।
II. उत्तरी मैदानों को देश का अन्न भंडार माना जाता है।
III. पठार खनिजों का भंडार है, जो औद्योगीकरण में सहायता करता है।
IV. तटीय क्षेत्र और द्वीप समूह मत्स्य पालन और बंदरगाह गतिविधियों के लिए स्थल प्रदान करते हैं।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल I, III और IV
(C) केवल II, III और IV
(D) I, II, III और IV

57. निम्नलिखित में से कौन-सा देशांतर भारत का मानक याम्योत्तर चुना गया है, जो उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर से होकर गुजरता है?
(A) 80°30' पू.
(B) 85°30' पू.
(C) 88°30' पू.
(D) 82°30' पू.

58. विवर्तनिक गति जिसके कारण गोंडवानालैंड से भारतीय प्लेट का पृथक्करण हुआ, में मुख्य रूप से इसका विस्थापन किस दिशा की ओर शामिल था?
(A) दक्षिण
(B) उत्तर
(C) पूर्व
(D) पश्चिम

59. हिमालय पर्वत श्रृंखला में प्रमुख तीखे मोड़ इसके पश्चिमी और पूर्वी छोर पर स्थित हैं। इन मोड़ों को क्रमशः किन दो महत्वपूर्ण भौगोलिक बिंदुओं द्वारा चिन्हित किया गया है?
(A) माउंट एवरेस्ट और कंचनजंगा
(B) नंगा पर्वत और नमचा बरवा
(C) K2 और कामेट
(D) नंदा देवी और धौलागिरी

60. भारत का शीत मरुस्थल क्षेत्र ट्रांस-हिमालयी क्षेत्र में स्थित है। निम्नलिखित में से कौन-सी श्रेणी मानसून हवाओं को इस शीत मरुस्थल तक पहुँचने से रोकने के लिए एक अवरोधक के रूप में कार्य करती है?
(A) शिवालिक श्रेणी
(B) महान हिमालय
(C) अरावली श्रेणी
(D) विंध्य श्रेणी

61. महान हिमालय की प्रकृति असमित है। इस श्रेणी के वलन मुख्य रूप से दक्षिण की ओर उन्मुख हैं, जिससे दक्षिणी ढलान अधिक तीव्र हैं। कौन-सा देश महान हिमालय के अधिक धीमे उत्तरी ढलानों को साझा करता है?
(A) चीन (तिब्बत)
(B) पाकिस्तान
(C) नेपाल
(D) भूटान

62. महाभारत श्रेणी एक प्रमुख अनुदैर्ध्य पर्वत श्रृंखला है। महाभारत श्रेणी, जो लघु (मध्य) हिमालय का एक भाग है, मुख्य रूप से किस देश में स्थित है?
(A) भारत
(B) भूटान
(C) नेपाल
(D) म्यांमार

63. शिवालिक असंगठित अवसादों से निर्मित हैं। इन अवसादों का प्राथमिक स्रोत क्या है?
(A) दक्कन ट्रैप से उत्सर्जित ज्वालामुखीय राख और बेसाल्टिक मलबे की मोटी परतें।
(B) प्राचीन टेथिस सागर के पीछे हटने के दौरान निक्षेपित छिछले समुद्री अवसाद।
(C) थार मरुस्थल से निरंतर परिवाहित महीन, पवन-उड़ शुष्क बालू।
(D) उत्तरी हिमालयी श्रेणियों से नदियों द्वारा बहाकर लाए गए अवसाद।

64. हिमालयी नदियों का निक्षेपण कार्य नदी के वेग में कमी के कारण अपने निचले मार्गों में नदी द्वीपों का निर्माण करता है। ब्रह्मपुत्र नदी में स्थित विश्व का सबसे बड़ा बसा हुआ नदी द्वीप कौन-सा है?
(A) उमानंद
(B) श्रीरंगम
(C) माजुली
(D) भवानी द्वीप

65. उत्तरी मैदानों के भौतिक विभाजनों के संदर्भ में, भाबर पट्टी में पहुँचने पर हिमालय से उतरने वाली अनेक धाराओं का क्या होता है?
(A) वे विस्तृत डेल्टा बनाने के लिए कई विशाल वितरिकाओं में विभाजित हो जाती हैं।
(B) वे कंकड़-पत्थरों के निक्षेपों की उच्च सरंध्रता के कारण भूमिगत होकर विलुप्त हो जाती हैं।
(C) वे बड़ी अंतर्देशीय मीठे पानी की झीलें बनाने के लिए छिछले अवदाबों में एकत्र हो जाती हैं।
(D) वे अवसाद परत के माध्यम से अत्यधिक गहरी, V-आकार की नदी खड्डों का निर्माण करती हैं।

66. उत्तरी मैदानों में पाई जाने वाली विशिष्ट वेदिका जैसी आकृति, जो नदियों के बाढ़ के मैदानों के ऊपर स्थित है, किस क्षेत्र की विशेषता है?
(A) तराई
(B) खादर
(C) भाबर
(D) बांगर

NODIA

67. भारत का प्रायद्वीपीय पठार कई छोटे पठारों का समूचन है। निम्नलिखित में से कौन भारतीय प्रायद्वीपीय मुख्य भूमि का सबसे दक्षिणी छोर बनाता है?
(A) कन्याकुमारी
(B) इंदिरा पॉइंट
(C) रामेश्वरम
(D) पॉइंट कैलिमेरे

68. दक्कन का पठार एक प्रमुख भूगर्भीय भ्रंश द्वारा छोटानागपुर पठार से पृथक होता है। इस भ्रंश का नाम क्या है?
(A) मुख्य सीमा भ्रंश
(B) महान सीमा भ्रंश
(C) मालदा भ्रंश
(D) हिमालयन फ्रंटल फॉल्ट

69. चंबल नदी मालवा के पठार और पूर्वी राजस्थान के आस-पास के क्षेत्रों से होकर बहती है, जिससे अत्यधिक अपरदित भूभाग का निर्माण होता है जो गहरे खड्डों द्वारा चिन्हित है। इस प्रकार की स्थलाकृति को किस नाम से जाना जाता है?
(A) उत्खात भूमि स्थलाकृति
(B) कास्ट स्थलाकृति
(C) हिमनदीय स्थलाकृति
(D) वातोढ़ स्थलाकृति

70. विंध्य श्रेणी मध्य उच्चभूमि की दक्षिणी सीमा बनाती है। निम्नलिखित में से कौन-सी नदी इस क्षेत्र में अमरकंटक पठार के पास से निकलती है और एक भ्रंश घाटी से होकर पश्चिम की ओर बहती है?
(A) महानदी
(B) गोदावरी
(C) तापी
(D) नर्मदा

71. छोटानागपुर पठार कई भारतीय राज्यों के भागों को आच्छादित करता है। निम्नलिखित में से कौन-सा राज्य छोटानागपुर पठार क्षेत्र का महत्वपूर्ण हिस्सा नहीं है?
(A) झारखंड
(B) पंजाब
(C) पश्चिम बंगाल
(D) छत्तीसगढ़

72. पश्चिमी घाट पश्चिमी तट और दक्कन के पठार के बीच संचार और परिवहन के लिए एक महत्वपूर्ण अवरोधक के रूप में कार्य करते हैं। निम्नलिखित में से कौन-सा पश्चिमी घाट में स्थित एक प्रमुख दर्रा है जो मुंबई को पुणे से जोड़ता है?
(A) पालघाट
(B) थालघाट
(C) भोरघाट
(D) शेनकोट्टा दर्रा

73. पूर्वी घाट की सबसे ऊँची चोटी, जो इस असतत श्रेणी में अपनी प्रमुखता के लिए प्रसिद्ध है, वह है:
(A) अनामुडी
(B) डोडा बेट्टा
(C) गुरु शिखर
(D) अरमा कोंडा

74. पश्चिमी घाट और पूर्वी घाट दक्षिण भारत में एक विशिष्ट पर्वतीय संगम पर मिलते हैं। इस संगम का नाम क्या है?
(A) नीलगिरि पहाड़ियाँ
(B) इलायची पहाड़ियाँ
(C) पलानी पहाड़ियाँ
(D) नल्लामाला पहाड़ियाँ

75. राजस्थान के थार मरुस्थलीय क्षेत्र में, बालुका स्तूपों के बीच गर्तों (अवदाबों) में खारे पानी की झीलें सामान्य हैं। इन छिछली, आंतरायिक खारी झीलों का वर्णन करने के लिए किस स्थानीय शब्द का प्रयोग किया जाता है?
(A) दून
(B) प्लाया
(C) खड़ीन
(D) भाबर

76. ग्रीष्मकाल के महीनों में, थार मरुस्थल में तीव्र, गर्म और शुष्क पछुआ पवनें चलती हैं जो राजस्थान और उत्तरी मैदानों के कुछ भागों में प्रवाहित होती हैं। इन हवाओं को स्थानीय रूप से किस नाम से जाना जाता है?
(A) आम्र वर्षा
(B) लू
(C) काल बैसाखी
(D) चेरी ब्लॉसम

77. केरल का मालाबार तट अपनी अनूठी भौगोलिक विशेषता के लिए प्रसिद्ध है, जिसमें तट के समानांतर आपस में जुड़े हुए खारे पानी के लैगून और झीलें शामिल हैं। इन पश्चजल का स्थानीय नाम क्या है?
(A) कयाल
(B) खादर
(C) चो
(D) ध्रियाण

78. चिल्का झील, भारत की सबसे बड़ी खारे पानी की झील, पूर्वी तटीय मैदानों की एक प्रमुख विशेषता है। यह किस राज्य में स्थित है?
(A) आंध्र प्रदेश
(B) तमिलनाडु
(C) ओडिशा
(D) पश्चिम बंगाल

79. बैरन द्वीप, भारत का एकमात्र सक्रिय ज्वालामुखी, निम्नलिखित में से किस क्षेत्र में स्थित है?
(A) लक्षद्वीप सागर
(B) मन्नार की खाड़ी
(C) पाक जलडमरूमध्य

Downloaded from www.pdf.tube

(D) अंडमान सागर

80. केंद्र शासित प्रदेश लक्षद्वीप का प्रशासनिक मुख्यालय और राजधानी निम्नलिखित में से किस द्वीप पर स्थित है?
(A) मिनीकॉय द्वीप
(B) अगाती द्वीप
(C) कवरत्ती
(D) एंड्रोट द्वीप

81. अरावली श्रेणी विश्व की सबसे पुरानी वलित पर्वत प्रणालियों में से एक है। एक प्रमुख जल विभाजक के रूप में कार्य करने के अलावा, राजस्थान में स्थित अरावली श्रेणी की सबसे ऊँची चोटी कौन-सी है?
(A) सेर चोटी
(B) गुरु शिखर
(C) अचलगढ़ चोटी
(D) दिलवाड़ा चोटी

82. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन "जलसम्भर" या "जल विभाजक" को सबसे अच्छी तरह से परिभाषित करता है?
(A) किसी पर्वत श्रृंखला से होकर बहने वाली पूर्ववर्ती नदी द्वारा काटी गई एक गहरी खड्ड।
(B) पृथ्वी की सतह पर एक बड़ा अवदाब जहाँ कई नदियाँ मिलकर एक झील बनाती हैं।
(C) एक तटीय ज्वारनदमुख जहाँ नदी का मीठा पानी महासागर के खारे पानी से मिलता है।
(D) एक उच्च क्षेत्र, जैसे पर्वत या उच्चभूमि, जो दो अपवाह द्रोणियों को पृथक करता है।

83. हिमालय को भूगर्भीय रूप से नवीन वलित पर्वत के रूप में वर्गीकृत किया गया है। निम्नलिखित में से कौन-सा भूगर्भीय महाकल्प हिमालय के उत्थान के प्रमुख चरणों से संबंधित है?
(A) केनोजोइक महाकल्प
(B) प्रीकैम्ब्रियन महाकल्प
(C) पैलियोजोइक महाकल्प
(D) मेसोजोइक महाकल्प

84. भारत में गोंडवाना शैल प्रणाली आर्थिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारत के कोयला भंडार का लगभग कितना प्रतिशत गोंडवाना शैल संरचनाओं में पाया जाता है?
(A) लगभग 20%
(B) लगभग 40%
(C) लगभग 60%
(D) 95% से अधिक

85. अपनी कठोर चट्टानी सतह और उबड़-खाबड़ भूभाग के साथ प्रायद्वीपीय पठार की स्थलाकृति, ऐतिहासिक रूप से दक्षिण भारत में प्रयुक्त कृषि सिंचाई की निम्नलिखित में से किस विधि के लिए अत्यधिक उपयुक्त है?
(A) तालाब (तड़ाग) सिंचाई
(B) विस्तृत नहर नेटवर्क
(C) गहरे जलभृतों से जल निकालने वाले नलकूप
(D) अनिश्चित (बाढ़) नहरें

86. पश्चिमी राजस्थान में, प्रकीर्ण अधिवास प्रतिरूप सबसे सामान्य रूप से देखे जाते हैं। इसके लिए कौन-सी भू-आकृतिक बाधा प्राथमिक कारण है?
(A) क्षेत्र में लगातार भूकंपीय गतिविधि और सक्रिय विवर्तनिक अस्थिरता
(B) मौसमी नदी बाढ़ का उच्च जोखिम और व्यापक तटीय अपरदन
(C) घना, अभेद्य उष्णकटिबंधीय वन आवरण और तीव्र पहाड़ी भूभाग
(D) जल संसाधनों की कमी और निम्न कृषि वहन क्षमता

NODIA

87. भारत की विशिष्ट भौतिक विशेषताएं परिवहन नेटवर्क को प्रभावित करती हैं, जो बदले में बस्तियों के विकास को निर्धारित करती हैं। मुख्य रूप से अपने समतल भूभाग और उच्च जनसंख्या घनत्व के कारण भारत के किस क्षेत्र में रेलमार्गों का सबसे घना नेटवर्क है?
(A) हिमालयी क्षेत्र
(B) उत्तरी मैदान
(C) प्रायद्वीपीय पठार
(D) पश्चिमी घाट

88. हिमालय की नदियों की तुलना प्रायद्वीपीय पठार की नदियों से करने पर, निम्नलिखित में से कौन-सी अधिकांश प्रायद्वीपीय नदियों की एक लाक्षणिक विशेषता है?
(A) वे बारहमासी हैं, जिन्हें वर्षा और पिघलते ग्लेशियरों दोनों से लगातार जल प्राप्त होता है।
(B) वे अत्यधिक गहरी V-आकार की घाटियाँ बनाती हैं और तीव्र अपरदन कार्य करती हैं।
(C) वे मौसमी हैं, जो मुख्य रूप से वर्षा पर निर्भर हैं, और चौड़ी, छिछली घाटियों से होकर बहती हैं।
(D) वे अत्यधिक सर्पिलाकार (विसर्पण) प्रवृत्ति प्रदर्शित करती हैं और अक्सर अपने मार्ग बदलती हैं।

89. निम्नलिखित में से कौन-सा क्षेत्र भूगर्भीय रूप से पुराने, स्थिर प्रायद्वीपीय पठार और नवीन, अत्यधिक अस्थिर हिमालय पर्वत प्रणाली के बीच संक्रमण के एक विस्तृत क्षेत्र के रूप में कार्य करता है?
(A) पूर्वी घाट पर्वत श्रृंखला
(B) थार मरुस्थलीय क्षेत्र
(C) अंडमान सागर बेसिन
(D) उत्तरी मैदान

90. भारत की विशाल भौतिक विविधता संरचनात्मक रूप से प्रमुख भू-आकृतिक विभाजनों में विभाजित है। मानक भौगोलिक वर्गीकरण के अनुसार, भारत को सामान्यतः कितने विस्तृत भू-आकृतिक विभाजनों में वर्गीकृत किया गया है?
(A) चार
(B) छह
(C) आठ
(D) दस

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) प्रायद्वीपीय पठार
प्रायद्वीपीय पठार भारत का सबसे प्राचीन और विशालतम भू-आकृतिक विभाग है। यह लगभग 16 लाख वर्ग किलोमीटर के विस्तृत क्षेत्रफल पर फैला हुआ है, जो देश के कुल भौगोलिक क्षेत्र का लगभग आधा भाग है। त्रिकोणीय आकृति वाला यह पठारी क्षेत्र आग्नेय और कायांतरित चट्टानों से निर्मित है। इसके अंतर्गत मालवा का पठार, दक्कन का पठार तथा छोटानागपुर का पठार जैसे कई क्षेत्रीय विस्तार सम्मिलित हैं। इसकी औसत ऊँचाई 600 से 900 मीटर के मध्य पाई जाती है।

2. (C) केवल I और III
प्रायद्वीपीय पठार गोंडवाना भूमि का भाग होने के कारण पृथ्वी के सबसे प्राचीन और स्थिर भूखंडों में गिना जाता है। इसके विपरीत, हिमालय भूगर्भीय रूप से नवीन और अत्यधिक अस्थिर वलित पर्वत प्रणाली है, जिसमें निरंतर विवर्तनिक हलचलें होती रहती हैं। सिंधु, गंगा तथा ब्रह्मपुत्र नदियों द्वारा लाए गए जलोढ़ निक्षेपों के निरंतर जमाव से विशाल उत्तरी मैदान का निर्माण हुआ है, जो अत्यधिक उपजाऊ कृषि क्षेत्र प्रदान करता है।

3. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
भारतीय प्लेट का उत्तर दिशा में विस्थापन होने से इसका यूरेशियन प्लेट से भीषण टकराव हुआ। इस टकराव के कारण दोनों प्लेटों के मध्य स्थित टेथिस भूसन्नति में संचित अवसादी शैल वलित होकर हिमालय पर्वत के रूप में ऊपर उठ गए। इस उत्थान से हिमालय के ठीक दक्षिण में एक विशाल द्रोणी बन गई। कालक्रम में, उत्तरी पर्वतों और दक्षिणी प्रायद्वीप से बहने वाली नदियों ने इस अवदाब को जलोढ़ से भरकर उपजाऊ मैदान बनाया।

4. (C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
हिमाद्रि या महान हिमालय श्रृंखला हिमालय की सबसे उत्तरी, उच्चतम और सतत पर्वत श्रेणी है। इसमें माउंट एवरेस्ट, कंचनजंगा और नंदा देवी जैसी विश्व की अनेक सर्वोच्च पर्वत चोटियाँ समाहित हैं। यह श्रेणी सदैव बर्फ से आच्छादित रहती है और यहाँ से कई विशाल हिमनद निकलते हैं। इसके विपरीत, शिवालिक श्रेणी हिमालय की सबसे दक्षिणी, नवीनतम और बाहरी श्रृंखला मानी जाती है, न कि हिमाद्रि।

5. (A) यह दक्षिण-पश्चिम मानसून से भारत में सर्वाधिक वर्षा प्राप्त करता है।
ट्रांस-हिमालय महान हिमालय के उत्तर में स्थित एक उच्च पर्वतीय क्षेत्र है, जिसे तिब्बती हिमालय भी कहा जाता है। इसमें काराकोरम, लद्दाख और जास्कर जैसी प्रमुख पर्वत श्रेणियाँ शामिल हैं। महान हिमालय के वृष्टि-छाया क्षेत्र में स्थित होने के कारण यह भाग दक्षिण-पश्चिम मानसून से बहुत कम वर्षा प्राप्त करता है। इसी भौगोलिक स्थिति के कारण यह अत्यधिक शुष्क और अत्यंत ठंडा क्षेत्र है, जहाँ वनस्पति का आवरण नगण्य पाया जाता है।

6. (D) काराकोरम श्रेणी
के2, जिसे गॉडविन ऑस्टिन के नाम से भी जाना जाता है, 8611 मीटर की ऊँचाई के साथ भारत की सबसे ऊँची और विश्व की दूसरी सबसे ऊँची पर्वत चोटी है। यह चोटी ट्रांस-हिमालयी क्षेत्र के अंतर्गत आने वाली काराकोरम पर्वत श्रेणी में स्थित है। यह क्षेत्र अत्यधिक विकट भूभाग तथा विशाल हिमनदों से आच्छादित है। काराकोरम श्रेणी को उच्च एशिया की रीढ़ के नाम से भी भौगोलिक पहचान प्राप्त है।

7. (B) P-4, Q-2, R-1, S-3
हिमालय की विभिन्न श्रेणियों की भूगर्भीय और भौगोलिक विशेषताएँ पृथक हैं। महान हिमालय का आंतरिक भाग मुख्य रूप से ग्रेनाइट से बना है। मध्य हिमालय अपनी सुहावनी घाटियों तथा शिमला और दार्जिलिंग जैसे पर्वतीय नगरों के लिए प्रसिद्ध है। शिवालिक श्रेणी का निर्माण नदियों द्वारा लाए गए असंगठित अवसादों से हुआ है। ट्रांस-हिमालय क्षेत्र में विशाल सियाचिन हिमनद स्थित है, जो सामरिक दृष्टिकोण से अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

8. (C) शांत घाटी (साइलेंट वैली)
मध्य हिमालय या हिमाचल श्रेणी अपनी सुंदर घाटियों जैसे कश्मीर घाटी, काँगड़ा घाटी और कुल्लू घाटी के लिए विश्व प्रसिद्ध है। ये घाटियाँ पर्वतीय पर्यटन और फल उत्पादन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इसके विपरीत, शांत घाटी या साइलेंट वैली भारत के दक्षिणी राज्य केरल के पलक्कड़ जिले में पश्चिमी घाट की नीलगिरि पहाड़ियों में स्थित है। यह क्षेत्र अपनी समृद्ध जैव विविधता और उष्णकटिबंधीय सदाबहार वनों के लिए जाना जाता है।

9. (D) लघु हिमालय और शिवालिक के बीच स्थित अनुदैर्ध्य घाटियाँ।
हिमालयी पर्वत तंत्र में, लघु हिमालय (हिमाचल) और बाह्य हिमालय (शिवालिक) श्रेणियों के मध्य स्थित अनुदैर्ध्य घाटियों को "दून" कहा जाता है। ये घाटियाँ नदियों द्वारा लाए गए कंकड़, बजरी और भारी जलोढ़ निक्षेपों से ढकी होती हैं। देहरादून, कोटली दून और पातली दून इसके सर्वप्रमुख उदाहरण हैं। देहरादून इनमें सबसे विस्तृत और प्रसिद्ध घाटी है, जो सांस्कृतिक और प्रशासनिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में विकसित हुई है।

10. (A) 2, 4, 1, 3
उत्तरी पर्वतीय क्षेत्र में पर्वत श्रेणियों का उत्तर से दक्षिण की ओर भौगोलिक अनुक्रम अत्यधिक स्पष्ट है। सबसे उत्तर में काराकोरम श्रेणी स्थित है, जिसके दक्षिण में लद्दाख श्रेणी आती है। लद्दाख

Click Here to Buy book on Flipkart

के दक्षिण में जास्कर श्रेणी स्थित है, जो ट्रांस-हिमालय का भाग है। इन सभी के दक्षिण में क्रमशः महान हिमालय, मध्य हिमालय और अंत में सबसे बाह्य श्रेणी के रूप में शिवालिक श्रेणी स्थित है।

11. (B) शिवालिक के गिरिपाद के समानांतर कंकड़-पत्थरों की एक सरंध्र पट्टी जहाँ नदियाँ विलुप्त हो जाती हैं।
भाबर पट्टी उत्तरी मैदान का सबसे उत्तरी क्षेत्र है, जो शिवालिक की ढाल के समानांतर लगभग 8 से 16 किलोमीटर की चौड़ाई में फैली हुई है। नदियाँ पर्वतों से उतरते समय इस पट्टी में भारी कंकड़, पत्थर और गोलश्म का निक्षेपण करती हैं। इस निक्षेप की अत्यधिक सरंध्रता (पारगम्यता) के कारण पर्वतीय क्षेत्र से बहकर आने वाली छोटी नदियाँ और धाराएँ इस पट्टी के धरातल के नीचे अदृश्य होकर प्रवाहित होती हैं।

12. (B) वह क्षेत्र जहाँ विलुप्त भूमिगत धाराएँ पुनः धरातल पर प्रकट होकर दलदली क्षेत्र का निर्माण करती हैं।
तराई क्षेत्र भाबर पट्टी के ठीक दक्षिण में स्थित एक विस्तृत भौगोलिक भाग है। भाबर क्षेत्र में भूमिगत होकर विलुप्त हुई नदियाँ तराई में पुनः धरातल पर प्रकट हो जाती हैं। इसके परिणामस्वरूप एक अनिश्चित अपवाह वाला नम, आर्द्र तथा दलदली क्षेत्र बनता है। यह क्षेत्र प्राकृतिक रूप से घने वनों और विविध वन्यजीवों से समृद्ध रहा है, जिसे वर्तमान में कृषि कार्यों हेतु साफ किया गया है।

13. (A) केवल I, II और III
उत्तरी मैदान का बड़ा हिस्सा पुराने जलोढ़ से बना है जिसे बांगर कहते हैं, जो बाढ़ के स्तर से ऊपर वेदिका जैसी आकृति बनाता है। इसमें चूनेदार निक्षेप पाए जाते हैं जिन्हें 'कंकर' कहा जाता है। इसके विपरीत, खादर नदियों के बाढ़ के मैदानों में प्रतिवर्ष निक्षेपित होने वाला नवीन जलोढ़ है। खादर मृदा अत्यधिक उपजाऊ, महीन कणों वाली और गहन कृषि के लिए अत्यंत उपयुक्त मानी जाती है।

14. (C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
दक्कन के पठार का उत्तर-पश्चिमी भाग दक्कन ट्रैप कहलाता है, जो विशाल बेसाल्टिक लावा के प्रवाह से निर्मित है। कालक्रम में इस लावे की चट्टानों के विखंडन और अपक्षय से अत्यंत उपजाऊ काली मृदा का निर्माण हुआ है, जो कपास की फसल हेतु उत्तम है। इस क्षेत्र की रचना ज्वालामुखी उद्गेदन के परिणामस्वरूप हुई थी, न कि प्लीस्टोसीन काल के हिमनदीय अपरदन के द्वारा।

15. (D) चंबल और बेतवा
मालवा का पठार मध्य उच्चभूमि का एक प्रमुख भाग है, जो अरावली और विंध्य श्रेणियों के बीच फैला हुआ है। यह पठार मुख्य रूप से चंबल, बेतवा, केन और शिप्रा जैसी नदियों तथा उनकी सहायक धाराओं द्वारा अपवाहित होता है। ये नदियाँ उत्तर और उत्तर-पूर्व दिशा की ओर प्रवाहित होकर अंततः यमुना नदी तंत्र में मिल जाती हैं। चंबल नदी इस क्षेत्र में गहरे खड्डों का निर्माण करती है।

16. (C) अरावली श्रेणी
नर्मदा नदी के उत्तर में स्थित प्रायद्वीपीय पठार का भाग मध्य उच्चभूमि के नाम से जाना जाता है। यह क्षेत्र उत्तर-पश्चिम में प्राचीन अरावली पर्वत श्रेणी द्वारा तथा दक्षिण में विंध्य श्रेणी द्वारा घिरा हुआ है। अरावली श्रेणी विश्व की प्राचीनतम वलित पर्वतमालाओं में से एक है, जो राजस्थान से लेकर दिल्ली तक विस्तृत है। यह श्रेणी मध्य उच्चभूमि को थार मरुस्थल की ओर से सीमाबद्ध करती है।

17. (B) P-2, Q-1, R-4, S-3
छोटानागपुर का पठार खनिजों से समृद्ध है और दामोदर नदी द्वारा अपवाहित होता है। मेघालय का पठार गारो-राजमहल भ्रंश द्वारा अलग हुआ प्रायद्वीपीय पठार का उत्तर-पूर्वी विस्तार है। दक्कन का पठार नर्मदा नदी के दक्षिण में स्थित एक विशाल त्रिभुजाकार भूखंड है। बुंदेलखंड क्षेत्र यमुना के मैदानों और विंध्याचल श्रेणी के बीच स्थित एक पठारी संक्रमणकालीन भूभाग है, जो अपनी विशेष संरचना के लिए जाना जाता है।

NODIA

18. (D) महेंद्रगिरि — इलायची पहाड़ियाँ
पश्चिमी घाट की पर्वत श्रेणियों और उनकी चोटियों में गहरा भौगोलिक संबंध है। अनामुडी चोटी अनामलाई पहाड़ियों में स्थित प्रायद्वीपीय भारत की सबसे ऊँची चोटी है। डोडा बेट्टा नीलगिरि पहाड़ियों की तथा कलसूबाई सह्याद्रि श्रेणी की प्रमुख चोटी है। इसके विपरीत, महेंद्रगिरि ओडिशा में स्थित पूर्वी घाट की एक महत्वपूर्ण चोटी है, न कि पश्चिमी घाट के सुदूर दक्षिण में स्थित इलायची (कार्डमम) पहाड़ियों का भाग।

19. (A) अनामलाई पहाड़ियाँ
जावड़ी पहाड़ियां, शेवरॉय पहाड़ियां तथा नल्लामाला पहाड़ियां भारत के पूर्वी तट के समानांतर फैले हुए पूर्वी घाट पर्वत तंत्र के अभिन्न अंग हैं। ये पहाड़ियां नदियों द्वारा कटी-छंटी और असतत श्रृंखला के रूप में स्थित हैं। इसके विपरीत, अनामलाई पहाड़ियां पश्चिमी घाट पर्वत प्रणाली का हिस्सा हैं, जो केरल और तमिलनाडु राज्यों की सीमा पर स्थित हैं। इसलिए अनामलाई पहाड़ियां पूर्वी घाट की श्रेणी में सम्मिलित नहीं हैं।

20. (D) I, II और III
थार मरुस्थल भारत के उत्तर-पश्चिम में अरावली पहाड़ियों के पश्चिम में स्थित एक रेतीला मैदान है। इस क्षेत्र में अत्यधिक शुष्क जलवायु पाई जाती है और वार्षिक वर्षा 150 मिमी से कम होती है। बरखान, जो अर्धचंद्राकार बालुका स्तूप होते हैं, इस मरुस्थल की प्रमुख स्थलाकृतिक पहचान हैं। लूनी इस शुष्क क्षेत्र की एकमात्र प्रमुख और बड़ी नदी है, जो अंततः कच्छ के रण में विलुप्त हो जाती है।

21. (A) कन्नड़ तट
भारत का पश्चिमी तटीय मैदान एक संकीर्ण पट्टी है जो अरब सागर और पश्चिमी घाट के मध्य स्थित है। इसके भौगोलिक विभाजनों में सबसे उत्तरी भाग को कोंकण तट (महाराष्ट्र और गोवा) कहा जाता है। इसके मध्य भाग को कन्नड़ या कर्नाटक तट (गोवा से मंगलुरु) कहा जाता है। दक्षिणी भाग को मालाबार तट (केरल) के नाम से जाना जाता है, जो अपने कयाल के लिए प्रसिद्ध है।

22. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
पूर्वी तटीय मैदान बंगाल की खाड़ी के समानांतर फैले हैं और पश्चिमी तटीय मैदानों की तुलना में अधिक चौड़े तथा समतल हैं। इस तट की चौड़ाई अधिक होने का मुख्य कारण महानदी, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी जैसी बड़ी नदियों द्वारा किए जाने वाले निरंतर निक्षेपण कार्य हैं। इन नदियों ने पूर्वी तट पर विशाल और अत्यधिक उपजाऊ डेल्टाओं का निर्माण किया है, जिससे यहाँ गहन कृषि की जाती है।

23. (B) अराकान योमा श्रेणी से विस्तृत जलमग्न पर्वत श्रृंखलाओं के उभरे हुए भाग हैं।
अंडमान और निकोबार द्वीप समूह बंगाल की खाड़ी में स्थित एक महत्वपूर्ण द्वीप समूह है। भूगर्भीय अध्ययनों के अनुसार, ये द्वीप म्यांमार की अराकान योमा पर्वत श्रेणी के दक्षिण की ओर जलमग्न हुए पर्वतों के शिखर भाग हैं जो समुद्र तल से ऊपर उभरे हुए दिखाई देते हैं। ये द्वीप रणनीतिक दृष्टि से भारत के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं और यहाँ तीव्र विवर्तनिक गतिविधियाँ तथा समृद्ध जैव विविधता पाई जाती है।

24. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
लक्षद्वीप द्वीप समूह अरब सागर में स्थित भारत का एक केंद्र शासित प्रदेश है। यह संपूर्ण द्वीप समूह मुख्य रूप से सूक्ष्म समुद्री जीवों जिन्हें प्रवाल पॉलिप्स कहा जाता है, के कंकालीय निक्षेपों (एटॉल) से निर्मित हुआ है। प्रवाल संरचना से बने होने के कारण ये द्वीप सामान्यतः अत्यधिक समतल हैं और समुद्र तल से इनकी औसत ऊँचाई बहुत कम पाई जाती है, जो इन्हें संवेदनशीलता प्रदान करती है।

25. (A) विंध्य श्रेणी, सतपुड़ा श्रेणी, अजंता श्रेणी, नीलगिरि पहाड़ियाँ
प्रायद्वीपीय भारत में पर्वत श्रेणियों का उत्तर से दक्षिण का क्रम भू-आकृतिक और जलवैज्ञानिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। सबसे उत्तर में विंध्य श्रेणी स्थित है जो उत्तर और दक्षिण भारत को विभाजित करती है। इसके दक्षिण में नर्मदा और तापी नदियों के बीच सतपुड़ा श्रेणी है। इसके बाद महाराष्ट्र में अजंता श्रेणी स्थित है तथा सुदूर दक्षिण में पश्चिमी और पूर्वी घाट के संगम पर नीलगिरि पहाड़ियां स्थित हैं।

26. (A) P-4, Q-1, R-2, S-3
धारवाड़ प्रणाली की चट्टानें अत्यधिक कायांतरित हैं और लौह अयस्क, सोना तथा मैंगनीज जैसे धात्विक खनिजों से समृद्ध हैं। गोंडवाना प्रणाली में भारत के 95 प्रतिशत से अधिक कोयला भंडार पाए जाते हैं। विंध्यन प्रणाली भवन निर्माण पत्थरों, चूना पत्थर तथा लाल बलुआ पत्थर के लिए जानी जाती है। तृतीयक (टर्शियरी) शैल प्रणाली में असम और गुजरात जैसे क्षेत्रों में पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस के निक्षेप मौजूद हैं।

27. (B) उत्तरी मैदान
उत्तरी मैदान भारत का सर्वाधिक उपजाऊ और सघन कृषि वाला क्षेत्र है। सिंधु, गंगा और ब्रह्मपुत्र नदियों द्वारा लाई गई समृद्ध जलोढ़ मृदा, समतल भूभाग, प्रचुर भूजल और अनुकूल जलवायु यहाँ उच्च कृषि उत्पादकता सुनिश्चित करती है। यह क्षेत्र देश के कुल खाद्यान्न उत्पादन का बहुत बड़ा हिस्सा प्रदान करता है, जिस कारण इसे भारत का अन्न भंडार और राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा की रीढ़ माना जाता है।

28. (B) तीव्र ढाल वाली उबड़-खाबड़ स्थलाकृति
भौतिक लक्षण मानव अधिवास के वितरण को सीधे प्रभावित करते हैं। समतल मैदान, उपजाऊ जलोढ़ मृदा और मीठे जल की सुलभता कृषि, परिवहन और बुनियादी ढाँचे के विकास को आसान बनाती हैं, जिससे सघन बस्तियाँ बसती हैं। इसके विपरीत, तीव्र ढालों वाली उबड़-खाबड़ पर्वतीय स्थलाकृति कृषि कार्य, सड़क निर्माण और जीवनयापन को अत्यंत कठिन बना देती है। इसलिए ऐसी भौगोलिक स्थितियों में जनसंख्या का घनत्व अत्यंत निम्न पाया जाता है।

29. (B) केवल I, II और IV
हिमालय एक नवीन वलित पर्वत है जिसमें ऊँची चोटियाँ, गहरी घाटियाँ और तीव्र नदियाँ पाई जाती हैं, जबकि प्रायद्वीपीय पठार प्राचीन गोंडवाना भूमि का हिस्सा है और अत्यधिक स्थिर है। प्रायद्वीपीय पठार मुख्य रूप से आग्नेय और कायांतरित शैल संरचनाओं से निर्मित है तथा इसमें चौड़ी व छिछली घाटियाँ मौजूद हैं। अतः भूगर्भीय रूप से प्रायद्वीपीय पठार हिमालय की तुलना में अधिक प्राचीन है, न कि नवीन।

NODIA

30. (C) बांग्लादेश
भारत अपनी सबसे लंबी अंतरराष्ट्रीय स्थलीय सीमा बांग्लादेश के साथ साझा करता है, जिसकी कुल लंबाई लगभग 4,096 किलोमीटर है। यह अंतरराष्ट्रीय सीमा भारत के उत्तर-पूर्वी राज्यों तथा पश्चिम बंगाल के भौतिक और सांस्कृतिक परिदृश्य को गहराई से प्रभावित करती है। यह सीमा गंगा-ब्रह्मपुत्र के विशाल डेल्टाई मैदान और सुरमा घाटी जैसे प्रमुख भौगोलिक लक्षणों के साथ विस्तृत रूप से फैली हुई है।

31. (D) टेथिस
प्लेट विवर्तनिकी सिद्धांत के अनुसार, करोड़ों वर्ष पूर्व गोंडवानालैंड और अंगारालैंड नामक दो बड़े भूखंडों के मध्य टेथिस नामक एक छिछला सागर स्थित था। भारतीय प्लेट के उत्तर की ओर विस्थापित होने पर दोनों प्लेटों के निकट आने से टेथिस सागर के तली में जमा अवसादी चट्टानों पर अत्यधिक संपीडन बल लगा। इस दबाव के कारण ये अवसाद वलित होकर विशाल हिमालय पर्वत के रूप में ऊपर उठ गए।

32. (C) हिमालय के पश्चिमी भाग की तुलना में पूर्वी भाग में ऊँचाई संबंधी विविधताएँ (उच्चावच) अधिक हैं।
हिमालय पर्वत श्रृंखला पश्चिम में सिंधु नदी से लेकर पूर्व में ब्रह्मपुत्र तक एक मेहराब या चाप के रूप में फैली है। पूर्वी भाग में संपीडन बल अधिक होने के कारण ऊँचाई संबंधी विविधताएँ पश्चिमी भाग की तुलना में अधिक स्पष्ट और तीव्र हैं। पूर्व की ओर बढ़ने पर हिमालय की चौड़ाई घटती जाती है। यह एक वलित पर्वत प्रणाली है, जिसका निर्माण विवर्तनिक क्रियाओं के परिणामस्वरूप हुआ है।

33. (B) सियाचिन हिमनद
काराकोरम श्रेणी ट्रांस-हिमालयी क्षेत्र की एक अत्यंत महत्वपूर्ण पर्वत श्रृंखला है। सियाचिन हिमनद इसी काराकोरम श्रेणी में स्थित है, जो ध्रुवीय क्षेत्रों के बाहर विश्व का सबसे लंबा हिमनद माना जाता है। लगभग 76 किलोमीटर लंबा यह हिमनद सामरिक और जलवैज्ञानिक दृष्टि से भारत के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसी क्षेत्र से नुब्रा नदी निकलती है जो आगे चलकर सिंधु नदी तंत्र में मिल जाती है।

34. (A) केवल I और II
लद्दाख श्रेणी, जास्कर श्रेणी के उत्तर में स्थित है और दोनों ट्रांस-हिमालयी क्षेत्र के भाग हैं, न कि महान हिमालय के। सिंधु नदी लद्दाख और जास्कर श्रेणियों के मध्य एक गहरी और संकीर्ण घाटी से होकर प्रवाहित होती है तथा लेह शहर इसी घाटी के तट पर बसा है। ये दोनों पर्वत श्रेणियाँ भारत के सुदूर उत्तर में स्थित शीत मरुस्थल के भौगोलिक स्वरूप को निर्धारित करती हैं।

35. (A) यह ग्रीष्मकाल के महीनों में पूरी तरह से बर्फ से विहीन रहता है।
महान हिमालय या हिमाद्रि हिमालय की सबसे सतत श्रेणी है, जिसकी औसत ऊँचाई 6,000 मीटर है। अत्यधिक ऊँचाई और निम्न तापमान के कारण यह श्रेणी वर्ष भर पूरी तरह से बर्फ से ढकी रहती है और कभी भी बर्फ से विहीन नहीं होती। इसका आंतरिक क्रोड भाग मुख्य रूप से ग्रेनाइट चट्टानों से निर्मित है तथा नंदा देवी, कामेट और कंचनजंगा जैसी प्रमुख चोटियाँ इसी श्रेणी में स्थित हैं।

36. (B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
मध्य हिमालय या हिमाचल श्रेणी का निर्माण अत्यधिक संपीडित तथा परिवर्तित चट्टानों से हुआ है और यह एक अत्यंत उबड़-खाबड़ पर्वत प्रणाली प्रस्तुत करती है। इस श्रेणी के अंतर्गत पीर पंजाल श्रेणी सबसे लंबी और सबसे महत्वपूर्ण पर्वत श्रृंखला बनाती है। यद्यपि दोनों कथन भौगोलिक रूप से पूर्णतः सत्य हैं, परंतु पीर पंजाल की उपस्थिति मध्य हिमालय के चट्टानी संगठन और उबड़-खाबड़पन का सीधा कारण नहीं दर्शाती है।

37. (A) 10 से 50 किमी
शिवालिक श्रेणी हिमालय पर्वत प्रणाली की सबसे बाहरी और नवीनतम श्रृंखला है। इस श्रेणी की चौड़ाई में प्रादेशिक भिन्नता पाई जाती है, जो हिमाचल प्रदेश में लगभग 50 किलोमीटर से लेकर अरुणाचल प्रदेश में घटते हुए मात्र 10 किलोमीटर तक रह जाती है। इसकी औसत ऊँचाई 900 से 1100 मीटर के बीच है और यह निक्षेपित अवसादों से निर्मित एक कम ऊँचाई वाली पर्वत श्रृंखला मानी जाती है।

38. (D) P-2, Q-4, R-1, S-3
उत्तरी मैदानों के क्षेत्रीय विभाजनों में पंजाब का मैदान सिंधु और उसकी सहायक नदियों द्वारा निर्मित है। गंगा का मैदान घग्गर और तीस्ता नदियों के मध्य विस्तृत है। ब्रह्मपुत्र का मैदान पूर्व में तीस्ता और दिहांग नदियों के बीच स्थित है। दोआब शब्द दो नदियों के मिलने के बीच स्थित उपजाऊ भूमि खंड को संदर्भित करता है, जो कृषि उत्पादन के लिए अत्यंत समृद्ध माना जाता है।

39. (B) खादर — बाढ़ के मैदानों पर निक्षेपित नवीन जलोढ़
उत्तरी मैदानों के अनुदैर्ध्य विभाजनों में खादर नदियों के निचले बाढ़ के मैदानों में प्रतिवर्ष जमा होने वाला नवीन उपजाऊ जलोढ़ है। इसके विपरीत, भाबर शिवालिक के गिरिपाद पर कंकड़-पत्थरों वाली सरंध्र पट्टी है जहाँ नदियाँ अदृश्य हो जाती हैं। तराई भाबर के दक्षिण में स्थित दलदली और वनाच्छादित क्षेत्र है। बांगर पुराने जलोढ़ से बनी उच्च वेदिका जैसी भूमि है जिसमें चूनेदार निक्षेप पाए जाते हैं।

40. (A) 2, 1, 4, 3
शिवालिक पर्वत श्रेणी के गिरिपाद से दक्षिण की ओर बढ़ने पर उत्तरी मैदानों का भौगोलिक अनुक्रम अत्यंत व्यवस्थित है। पर्वतों के ठीक नीचे सबसे पहले भाबर की कंकड़ीली पट्टी आती है। भाबर के ठीक दक्षिण में नम और दलदली तराई क्षेत्र स्थित है। इसके बाद नदियों के पुराने जलोढ़ से बना बांगर क्षेत्र आता है और सबसे दक्षिण में नदियों के बाढ़ के मैदानों में नया खादर क्षेत्र स्थित होता है।

41. (B) केवल I, II और IV
दक्कन का पठार एक विशाल त्रिकोणीय भूखंड है जो नर्मदा नदी के दक्षिण में स्थित है और उत्तर में इसका आधार सतपुड़ा श्रेणी द्वारा निर्मित है। यह पठार पश्चिम में ऊँचा है और पूर्व की ओर धीमी ढाल वाला है, जिससे इसकी नदियाँ पूर्व की ओर बहती हैं। इसका एक पूर्वी विस्तार मेघालय, कारबी-एंगलोंग तथा उत्तरी कछार पहाड़ियों के रूप में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

42. (A) मालवा का पठार
राजस्थान के दक्षिण-पूर्वी भाग में स्थित हाड़ौती का पठार भौगोलिक रूप से मालवा के पठार का ही उत्तर-पश्चिमी विस्तार है। यह क्षेत्र बेसाल्टिक लावा के प्रवाह से निर्मित है और यहाँ उपजाऊ काली मृदा पाई जाती है। हाड़ौती पठारी क्षेत्र चंबल नदी और उसकी सहायक नदियों द्वारा अपवाहित होता है। यह क्षेत्र राजस्थान को मध्य प्रदेश के पठारी परिदृश्य से जोड़ने वाले एक प्रमुख भौगोलिक पुल का कार्य करता है।

43. (B) काठियावाड़
मध्य उच्चभूमि नर्मदा नदी के उत्तर में स्थित प्रायद्वीपीय पठार का भाग है। इसके पूर्वी और उत्तर-पूर्वी विस्तारों में बुंदेलखंड, बघेलखंड तथा छोटानागपुर पठार सम्मिलित हैं, जो मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, झारखंड और छत्तीसगढ़ तक फैले हैं। इसके विपरीत, काठियावाड़ प्रायद्वीप गुजरात राज्य के पश्चिमी तटीय भाग में स्थित एक पृथक भौगोलिक क्षेत्र है, जो मध्य उच्चभूमि के पूर्वी विस्तार के अंतर्गत शामिल नहीं किया जाता है।

44. (B) दामोदर
छोटानागपुर पठार भारत का एक प्रमुख खनिज समृद्ध क्षेत्र है, जो मुख्य रूप से झारखंड राज्य में विस्तृत है। यह पठार मुख्य रूप

Downloaded from www.pdf.tube

से दामोदर नदी और उसकी सहायक धाराओं द्वारा अपवाहित होता है। दामोदर नदी एक प्रसिद्ध भ्रंश घाटी से होकर बहती है, जिसमें गोंडवाना काल के विशाल कोयला निक्षेप स्थित हैं। इस कोयला समृद्ध घाटी को भारत का रूर क्षेत्र भी कहा जाता है।

45. (A) घाटों का पवनविमुख भाग
दक्षिण-पश्चिम मानसून के दौरान, अरब सागर से आने वाली नमी युक्त हवाएं पश्चिमी घाट के पश्चिमी (पवनाभिमुख) ढलानों से टकराकर ऊपर उठती हैं और अत्यधिक पर्वतीय वर्षा करती हैं। जब ये हवाएं घाटों को पार करके पूर्वी (पवनविमुख) ढलानों की ओर नीचे उतरती हैं, तो उनका तापमान बढ़ जाता है और नमी घट जाती है। इसके परिणामस्वरूप पश्चिमी घाट का पूर्वी आंतरिक भाग एक शुष्क वृष्टि-छाया क्षेत्र बन जाता है।

46. (C) वे असतत और अनियमित हैं, जिन्हें बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली प्रमुख नदियों ने काट दिया है।
पूर्वी घाट भारत के पूर्वी तट के समानांतर विस्तृत एक पुरानी और अत्यधिक अपरदित पर्वत श्रृंखला है। पश्चिमी घाट की निरंतरता के विपरीत, पूर्वी घाट असतत और अनियमित हैं। महानदी, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी जैसी बड़ी नदियों ने बंगाल की खाड़ी में गिरने से पूर्व इन घाटों को अनेक स्थानों पर गहराई से काट दिया है। इनकी औसत ऊँचाई पश्चिमी घाट की तुलना में काफी कम पाई जाती है।

47. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
अरावली पहाड़ियां थार मरुस्थल की दक्षिण-पूर्वी सीमा बनाती हैं और गुजरात से दिल्ली तक फैली हुई हैं। दक्षिण-पश्चिम मानसून की अरब सागर शाखा जब भारत में प्रवेश करती है, तो वह अरावली पर्वत श्रेणी के समानांतर प्रवाहित होकर बिना किसी अवरोध के सीधे उत्तर की ओर निकल जाती है। पर्वतीय अवरोध के अभाव के कारण इस क्षेत्र में वर्षा नहीं हो पाती, जो थार मरुस्थल की शुष्कता का प्रमुख कारण है।

48. (C) उत्तरी सरकार
भारत का पश्चिमी तटीय मैदान उत्तर से दक्षिण तक तीन प्रमुख भागों में विभाजित है: उत्तरी भाग को कोंकण तट, मध्य भाग को कन्नड़ तट और दक्षिणी भाग को मालाबार तट कहा जाता है। इसके विपरीत, उत्तरी सरकार पूर्वी तटीय मैदान का एक प्रमुख भाग है, जो आंध्र प्रदेश और ओडिशा के तटीय क्षेत्रों में स्थित है। अतः उत्तरी सरकार पश्चिमी तटीय मैदान का हिस्सा नहीं है।

49. (C) उत्कल तट, उत्तरी सरकार, कोरोमंडल तट
पूर्वी तटीय मैदान बंगाल की खाड़ी के समानांतर विस्तृत है और इसके प्रादेशिक विभाजनों का उत्तर से दक्षिण का अनुक्रम अत्यंत स्पष्ट है। सबसे उत्तर में ओडिशा का तटीय भाग उत्कल तट कहलाता है। इसके मध्य भाग को, जो मुख्य रूप से आंध्र प्रदेश के तट को आच्छादित करता है, उत्तरी सरकार के नाम से जाना जाता है। सुदूर दक्षिण में तमिलनाडु के विस्तृत तटीय मैदान को कोरोमंडल तट कहा जाता है।

50. (D) वे 10° चैनल (दस डिग्री चैनल) नामक एक गहरे जल निकाय द्वारा अलग किए जाते हैं।
अंडमान और निकोबार द्वीप समूह बंगाल की खाड़ी में स्थित पर्वतीय जलमग्न द्वीपों की एक श्रृंखला है। इस द्वीप समूह में उत्तर में अंडमान द्वीप और दक्षिण में निकोबार द्वीप स्थित हैं। ये दोनों मुख्य द्वीप समूह 10° चैनल (दस डिग्री चैनल) नामक एक संकीर्ण और गहरे समुद्री जल निकाय द्वारा एक-दूसरे से पृथक होते हैं। इस केंद्र शासित प्रदेश की राजधानी पोर्ट ब्लेयर दक्षिण अंडमान में स्थित है।

NODIA

51. (A) 32 वर्ग किमी
लक्षद्वीप भारत का सबसे छोटा केंद्र शासित प्रदेश है, जो अरब सागर में स्थित एक प्रवाल द्वीप समूह है। इसका कुल भौगोलिक क्षेत्रफल मात्र 32 वर्ग किलोमीटर है। यह द्वीप समूह 36 छोटे-बड़े द्वीपों का एक समूह है, जिनमें से केवल कुछ ही द्वीपों पर मानव आबादी निवास करती है। प्रशासनिक दृष्टि से कवरत्ती इस छोटे किंतु सामरिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण द्वीप समूह की राजधानी है।

52. (D) I, II और III
भारत में जल विभाजक नदियों के अपवाह को दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अरावली श्रेणी सिंधु नदी तंत्र को गंगा नदी तंत्र से अलग करती है। पश्चिमी घाट एक प्रमुख जल विभाजक है जो अरब सागर में गिरने वाली छोटी तीव्र नदियों और बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली बड़ी नदियों के बीच विभाजन रेखा बनाता है। विंध्य श्रेणी उत्तर की गंगा प्रणाली को दक्षिण की प्रायद्वीपीय नदियों से पृथक करती है।

53. (A) क्रिटेशियस काल के दौरान उद्गारित बेसाल्टिक लावा चट्टानों के
प्रायद्वीपीय पठार के उत्तर-पश्चिमी भाग में स्थित दक्कन ट्रैप का निर्माण क्रिटेशियस काल में हुए दरारी ज्वालामुखी उद्गारों से निकले लावा के जमने से हुआ था। इस लावा के ठंडे होने से कठोर बेसाल्टिक चट्टानों का निर्माण हुआ। लाखों वर्षों तक इन बेसाल्टिक चट्टानों के निरंतर भौतिक और रासायनिक अपक्षय के परिणामस्वरूप अत्यंत उपजाऊ काली मृदा बनी, जिसमें जल धारण करने की उच्च क्षमता पाई जाती है।

54. (D) थार मरुस्थल — जूट और गन्ने की खेती
भारत के विभिन्न भू-आकृतिक विभाग अपनी विशिष्ट मृदा और जलवायु के अनुसार फसलों का समर्थन करते हैं। उत्तरी मैदान में जलोढ़ मृदा के कारण गेहूं और चावल की गहन खेती होती है। दक्कन ट्रैप की काली मृदा कपास के लिए उपयुक्त है और मालाबार तट पर मसाले उगाए जाते हैं। इसके विपरीत, थार मरुस्थल में अत्यधिक शुष्कता के कारण जूट और गन्ने जैसी अधिक जल वाली फसलें उगाना संभव नहीं है।

55. (B) कृषि के लिए समृद्ध जलोढ़ मृदा, अनुकूल जलवायु और प्रचुर जल आपूर्ति।
उत्तरी मैदान इतिहास के आरंभ से ही मानव अधिवास और उच्च जनसंख्या घनत्व का मुख्य केंद्र रहा है। नदियों द्वारा लाई गई उपजाऊ जलोढ़ मृदा, समतल मैदानी भूभाग, अनुकूल शीतोष्ण-

उष्णकटिबंधीय जलवायु तथा बारहमासी नदियों से निरंतर प्रचुर जल आपूर्ति ने यहाँ गहन कृषि विकास को संभव बनाया। इन अनुकूल भौगोलिक कारकों ने खाद्य सुरक्षा और जीवनयापन को सहज बनाकर घनी आबादी का पोषण किया है।

56. (D) I, II, III और IV
भारत के सभी भू-आकृतिक विभाग देश के आर्थिक विकास में पूरक भूमिका निभाते हैं। पर्वत जल और सघन वन संसाधनों के स्रोत हैं। उत्तरी मैदान अपनी उपजाऊ मृदा के कारण देश का प्रमुख अन्न भंडार हैं। प्रायद्वीपीय पठार खनिजों से समृद्ध होने के कारण औद्योगीकरण का आधार है। तटीय मैदान और द्वीप समूह मत्स्य पालन, समुद्री व्यापार और बंदरगाह गतिविधियों के लिए अनुकूल परिस्थितियां प्रदान करते हैं।

57. (D) 82°30' पू.
भारत का देशांतरीय विस्तार लगभग 30 अंश का है, जिससे देश के पूर्वी और पश्चिमी छोरों के स्थानीय समय में लगभग दो घंटे का अंतर आता है। इस समय भिन्नता को दूर करने के लिए 82°30' पूर्वी देशांतर रेखा को संपूर्ण भारत का मानक याम्योत्तर स्वीकार किया गया है। यह देशांतर रेखा उत्तर प्रदेश में मिर्जापुर से होकर गुजरती है और इसका समय ग्रीनविच मीन टाइम से 5 घंटे 30 मिनट आगे है।

58. (B) उत्तर
प्लेट विवर्तनिकी के अनुसार, प्राचीन काल में पेंजिया के विखंडन के पश्चात भारतीय प्लेट गोंडवाना महाद्वीप का एक भाग थी। लगभग 20 करोड़ वर्ष पूर्व गोंडवानालैंड के टूटने पर भारतीय प्लेट पृथक होकर उत्तर दिशा की ओर विस्थापित होने लगी। इस उत्तरगामी विस्थापन के परिणामस्वरूप भारतीय प्लेट का यूरेशियन प्लेट से भीषण टकराव हुआ, जिससे दोनों प्लेटों के बीच स्थित अवसाद वलित होकर विशाल हिमालय में परिवर्तित हो गए।

59. (B) नंगा पर्वत और नमचा बरवा
हिमालय पर्वत श्रृंखला पूर्व-पश्चिम दिशा में फैली है, परंतु इसके दोनों छोरों पर तीखे मोड़ (सिंटेक्सियल बैंड) पाए जाते हैं। इसका पश्चिमी तीखा मोड़ पाकिस्तान सीमा के निकट नंगा पर्वत के पास स्थित है, जहाँ से सिंधु नदी एक गहरा खड्ड बनाती है। इसका पूर्वी तीखा मोड़ अरुणाचल प्रदेश सीमा पर नमचा बरवा चोटी के पास स्थित है, जहाँ से ब्रह्मपुत्र नदी मुड़कर भारत में प्रवेश करती है।

60. (B) महान हिमालय
भारत का शीत मरुस्थल, जिसे लद्दाख क्षेत्र कहा जाता है, ट्रांस-हिमालयी भाग में स्थित है। महान हिमालय की अत्यधिक ऊँची और सतत पर्वत श्रृंखला दक्षिण-पश्चिम मानसून की आर्द्र हवाओं के मार्ग में एक विशाल दीवार के रूप में खड़ी हो जाती है। इस पर्वतीय अवरोध के कारण मानसूनी हवाएं इस क्षेत्र तक नहीं पहुँच पातीं और यह भाग वृष्टि-छाया क्षेत्र बनकर एक अत्यंत ठंडे और शुष्क मरुस्थल में बदल जाता है।

61. (A) चीन (तिब्बत)
महान हिमालय या हिमाद्रि की भू-आकृतिक संरचना असमित प्रकृति की है। इस पर्वत श्रृंखला के वलन का झुकाव दक्षिण की ओर अधिक होने के कारण भारत की ओर स्थित दक्षिणी ढलान अत्यधिक तीव्र और सीधे हैं। इसके विपरीत, इस श्रेणी के उत्तरी ढलान काफी धीमे और मंद ढाल वाले हैं, जो तिब्बत (चीन) के उच्च पठारी क्षेत्र के साथ अपनी सीमा साझा करते हैं और उसमें विलीन हो जाते हैं।

62. (C) नेपाल
महाभारत श्रेणी लघु हिमालय या हिमाचल श्रेणी का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और विस्तृत भाग है। यह पर्वत श्रेणी मुख्य रूप से पड़ोसी देश नेपाल के मध्य भाग में पूर्व से पश्चिम दिशा में फैली हुई है। यह श्रेणी जटिल शैल संरचनाओं और गहरी नदियों की घाटियों से आच्छादित है। नेपाल में यह श्रेणी जल विभाजक के साथ-साथ एक महत्वपूर्ण भौगोलिक और जलवायु अवरोधक के रूप में कार्य करती है।

63. (D) उत्तरी हिमालयी श्रेणियों से नदियों द्वारा बहाकर लाए गए अवसाद।
शिवालिक श्रेणी हिमालय पर्वत प्रणाली की सबसे बाहरी और नवीनतम पर्वत श्रृंखला मानी जाती है। इस श्रेणी का निर्माण उत्तर में स्थित मुख्य हिमालयी श्रेणियों (महान हिमालय और मध्य हिमालय) से बहने वाली नदियों द्वारा बहाकर लाए गए असंगठित अवसादों, जैसे कंकड़, बालू और मृदा के निक्षेपण से हुआ है। विवर्तनिक दबाव के कारण ये अवसादी निक्षेप वलित होकर कम ऊँचाई वाली पहाड़ियों के रूप में रुपांतरित हो गए।

64. (C) माजुली
हिमालयी नदियाँ जब मैदानी भागों में प्रवेश करती हैं, तो ढाल कम होने के कारण उनके प्रवाह का वेग धीमा हो जाता है। इस गति मंदता से नदियों द्वारा लाया गया अवसाद मार्ग में जमा होने लगता है, जिससे नदी द्वीपों का निर्माण होता है। असम राज्य में ब्रह्मपुत्र नदी में स्थित माजुली द्वीप विश्व का सबसे बड़ा बसा हुआ नदी द्वीप है, जो अपनी समृद्ध असमिया संस्कृति के लिए प्रसिद्ध है।

65. (B) वे कंकड़-पत्थरों के निक्षेपों की उच्च सरंध्रता के कारण भूमिगत होकर विलुप्त हो जाती हैं।
हिमालय से उतरने वाली नदियाँ जब शिवालिक के गिरिपाद में प्रवेश करती हैं, तो वे 8 से 16 किमी चौड़ी भाबर पट्टी में कंकड़, पत्थर और भारी गोलाश्म जमा कर देती हैं। इन मोटे अवसादों के जमाव के कारण धरातलीय सतह में अत्यधिक सरंध्रता पैदा हो जाती है। इसके परिणामस्वरूप, पर्वतीय ढलानों से तेजी से बहकर आने वाली अनेक छोटी नदियाँ और जलधाराएँ इस पट्टी में भूमिगत होकर विलुप्त हो जाती हैं।

66. (D) बांगर
उत्तरी मैदानों में विशाल निक्षेपात्मक भू-आकृतियाँ पाई जाती हैं। बांगर क्षेत्र उत्तरी मैदान का वह भाग है जो पुराने जलोढ़ निक्षेपों से निर्मित है। यह क्षेत्र नदियों के वर्तमान बाढ़ के मैदानों के स्तर से ऊपर स्थित होता है और देखने में एक स्पष्ट वेदिका

Click Here to Buy book on Amazon

(टेरेस) जैसी भू-आकृति प्रस्तुत करता है। इस क्षेत्र की मृदा में चूनेदार निक्षेप पाए जाते हैं, जिन्हें स्थानीय भाषा में 'कंकर' कहा जाता है।

67. (A) कन्याकुमारी
भारत का प्रायद्वीपीय पठार उत्तर में विशाल मैदानों से लेकर दक्षिण में हिंद महासागर तक विस्तृत है। कन्याकुमारी, जिसे केप कोमोरिन भी कहा जाता है, भारतीय प्रायद्वीपीय मुख्य भूमि का सुदूर दक्षिणी छोर बनाती है। यह वह स्थान है जहाँ अरब सागर, बंगाल की खाड़ी और हिंद महासागर का संगम होता है। इसके विपरीत, इंदिरा पॉइंट अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में स्थित भारत का सुदूर दक्षिणी बिंदु है।

68. (C) मालदा भ्रंश
प्रायद्वीपीय भारत का पठार एक सतत भूखंड था, परंतु उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में भूगर्भीय हलचलों के कारण एक विशाल भ्रंश का निर्माण हुआ। इस भ्रंश को मालदा भ्रंश या गारो-राजमहल भ्रंश कहा जाता है। इस भ्रंश के कारण मेघालय का पठार और कारबी-एंगलोंग पठार मुख्य दक्कन पठार और छोटानागपुर पठार से पृथक हो गए। बाद में गंगा और ब्रह्मपुत्र नदियों ने इस धंसे हुए भाग को जलोढ़ से भर दिया।

69. (A) उत्खात भूमि स्थलाकृति
चंबल नदी और उसकी सहायक नदियाँ मालवा पठार के उत्तरी भागों में तीव्र अवनालिका अपरदन करती हैं। इस अत्यधिक अपरदन के कारण गहरा कटाव होता है, जिससे संपूर्ण धरातल उबड़-खाबड़, खड्डों और गड्ढों से भर जाता है। इस प्रकार की गंभीर रूप से काटी-छंटी भूमि को 'उत्खात भूमि स्थलाकृति' या चंबल के बीहड़ कहा जाता है। यह भूभाग कृषि और सामान्य परिवहन गतिविधियों के लिए पूरी तरह से अनुपयुक्त होता है।

70. (D) नर्मदा
नर्मदा नदी मध्य प्रदेश में अमरकंटक पठार के निकट मैकाल श्रेणी से निकलती है। यह नदी विंध्य श्रेणी और सतपुड़ा श्रेणी के मध्य स्थित एक प्रसिद्ध भ्रंश घाटी (रिफ्ट वैली) से होकर पश्चिम दिशा में बहती है। प्रायद्वीपीय भारत की अधिकांश नदियों के विपरीत, नर्मदा नदी पूर्व से पश्चिम की ओर बहते हुए गुजरात के निकट खंभात की खाड़ी में गिरती है और अपने मुहाने पर ज्वारनदमुख बनाती है।

71. (B) पंजाब
छोटानागपुर का पठार भारत के पूर्वी प्रायद्वीपीय भाग में स्थित एक महत्वपूर्ण पठारी क्षेत्र है। इसका मुख्य विस्तार झारखंड राज्य में है, जबकि इसके कुछ हिस्से उत्तर-पूर्वी छत्तीसगढ़, पश्चिम बंगाल के पश्चिमी जिलों और ओडिशा के उत्तरी भागों तक फैले हुए हैं। इसके विपरीत, पंजाब राज्य भारत के उत्तर-पश्चिम में स्थित सिंधु नदी प्रणाली द्वारा निर्मित मैदानी क्षेत्र का हिस्सा है, जिसका छोटानागपुर पठार से कोई संबंध नहीं है।

72. (C) भोरघाट
पश्चिमी घाट पश्चिमी तट के समानांतर स्थित एक सतत पर्वतीय दीवार है, जिसे केवल कुछ प्रमुख दर्रों के माध्यम से ही पार किया जा सकता है। भोरघाट दर्रा महाराष्ट्र में स्थित पश्चिमी घाट का एक महत्वपूर्ण पर्वतीय मार्ग है, जो तटीय शहर मुंबई को आंतरिक पठारी शहर पुणे से जोड़ता है। यह दर्रा मध्य रेलवे और मुंबई-पुणे एक्सप्रेसवे के परिवहन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण प्राकृतिक मार्ग प्रदान करता है।

73. (D) अरमा कोंडा
पूर्वी घाट बंगाल की खाड़ी के तट के समानांतर फैली एक असतत पर्वत श्रृंखला है। इस श्रृंखला की सबसे ऊँची चोटी अरमा कोंडा (जिंधागड़ा चोटी) है, जो आंध्र प्रदेश के विशाखापत्तनम जिले में स्थित है और इसकी ऊँचाई लगभग 1680 मीटर है। इसके अतिरिक्त अयाकोंडा और महेंद्रगिरि भी पूर्वी घाट की अन्य प्रमुख चोटियाँ हैं, जबकि अनामुडी और डोडा बेट्टा पश्चिमी घाट की चोटियाँ हैं।

74. (A) नीलगिरि पहाड़ियाँ
पश्चिमी घाट और पूर्वी घाट पर्वत प्रणालियाँ दक्षिण भारत में एक-दूसरे की ओर बढ़ते हुए अंततः एक प्रमुख पर्वतीय गांठ पर मिलती हैं। इस प्रसिद्ध पर्वतीय संगम को नीलगिरि पहाड़ियों के नाम से जाना जाता है। नीलगिरि पहाड़ियां तमिलनाडु, केरल और कर्नाटक राज्यों के त्रि-संगम पर स्थित हैं। डोडा बेट्टा नीलगिरि पहाड़ियों की सबसे ऊँची चोटी है, जो इस क्षेत्र के आकर्षण का मुख्य केंद्र मानी जाती है।

75. (B) प्लाया
राजस्थान के थार मरुस्थल में वायु अपरदन और निक्षेपण से कई प्रकार की भू-आकृतियाँ बनती हैं। रेतीले बालुका स्तूपों के बीच स्थित निचले गर्तों में वर्षा का जल एकत्र हो जाता है, जिससे आंतरायिक और छिछली खारे पानी की झीलें बन जाती हैं। इन मरुस्थलीय खारी झीलों को भौगोलिक शब्दावली में 'प्लाया' कहा जाता है। सांभर, डीडवाना और पंचभद्रा इस क्षेत्र में स्थित प्रमुख प्लाया झीलों के उदाहरण हैं।

76. (B) लू
उत्तर और उत्तर-पश्चिम भारत के शुष्क मैदानी एवं मरुस्थलीय क्षेत्रों में ग्रीष्मकाल (मई-जून) के महीनों में अत्यंत तेज, शुष्क और अत्यधिक गर्म हवाएं चलती हैं। इन स्थानीय पवनों को 'लू' कहा जाता है। थार मरुस्थल से उत्पन्न होने वाली ये हवाएं तापमान को 45° से 48° तक बढ़ा देती हैं। इन हवाओं के सीधे संपर्क में आने से मानव शरीर में गंभीर निर्जलीकरण और सनस्ट्रोक जैसी स्वास्थ्य समस्याएँ पैदा हो जाती हैं।

77. (A) कयाल
केरल का मालाबार तट अपनी विशिष्ट तटीय भू-आकृति के लिए जाना जाता है, जहाँ समुद्र तट के समानांतर खारे पानी की कई झीलें और लैगून स्थित हैं। इन पश्चजल (बैकवाटर्स) को स्थानीय भाषा में 'कयाल' कहा जाता है। वेम्बनाड और अष्टमुडी कयाल इसके सबसे प्रसिद्ध उदाहरण हैं। ये कयाल न केवल स्थानीय नौकायन और मत्स्य पालन के लिए महत्वपूर्ण हैं, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन और नेहरु ट्रॉफी नौका दौड़ के लिए प्रसिद्ध हैं।

NODIA

78. (C) ओडिशा
चिल्का झील भारत की सबसे बड़ी खारे पानी की तटीय झील और लैगून है, जो पूर्वी तटीय मैदान पर ओडिशा राज्य में महानदी के मुहाने के दक्षिण में स्थित है। यह विशाल जल निकाय बंगाल की खाड़ी से एक संकीर्ण रेतीली पट्टी द्वारा पृथक होता है। चिल्का झील अपनी समृद्ध जैव विविधता, संकटग्रस्त इरावाड़ी डॉल्फिन तथा शीतकाल में आने वाले लाखों प्रवासी पक्षियों के आवास के लिए विश्व भर में विख्यात है।

79. (D) अंडमान सागर
बैरन द्वीप भारत और दक्षिण एशिया का एकमात्र सक्रिय ज्वालामुखी द्वीप है। यह द्वीप बंगाल की खाड़ी के पूर्व में अंडमान सागर में स्थित है, जो पोर्ट ब्लेयर से लगभग 135 किलोमीटर उत्तर-पूर्व में पड़ता है। यह द्वीप उत्तर-दक्षिण दिशा में फैले ज्वालामुखीय चाप का एक हिस्सा है। बैरन द्वीप पर हाल के वर्षों में भी ज्वालामुखीय उद्गार दर्ज किए गए हैं, जिससे यह भूगर्भशास्त्रियों के अध्ययन का केंद्र है।

80. (C) कवरत्ती
कवरत्ती अरब सागर में स्थित भारत के केंद्र शासित प्रदेश लक्षद्वीप का प्रशासनिक मुख्यालय और राजधानी शहर है। यह एक सुंदर प्रवाल द्वीप (एटॉल) है, जो अपनी नीली लैगून, सफेद रेतीले समुद्र तटों और समृद्ध समुद्री जीवन के लिए जाना जाता है। कवरत्ती द्वीप में भारतीय नौसेना का एक प्रमुख अड्डा भी स्थित है, जो अरब सागर में भारत की समुद्री सुरक्षा और निगरानी की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

81. (B) गुरु शिखर
अरावली पर्वत श्रेणी भारत की सबसे प्राचीन वलित पर्वत श्रृंखला है, जो उत्तर-पश्चिम भारत में उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम दिशा में फैली है। राजस्थान के सिरोही जिले में माउंट आबू के निकट स्थित 'गुरु शिखर' अरावली श्रेणी की सबसे ऊँची चोटी है, जिसकी ऊँचाई 1,722 मीटर है। यह चोटी न केवल एक प्रमुख भौगोलिक उच्चावच है, बल्कि धार्मिक और पर्यटन की दृष्टि से भी एक अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

82. (D) एक उच्च क्षेत्र, जैसे पर्वत या उच्चभूमि, जो दो अपवाह द्रोणियों को पृथक करता है।
'जलसम्भर' या 'जल विभाजक' एक ऐसी उच्च भौगोलिक भूमि संरचना को संदर्भित करता है, जो दो पड़ोसी अपवाह द्रोणियों (नदी तंत्रों) को एक-दूसरे से पृथक करती है। यह उच्च क्षेत्र कोई पर्वत श्रेणी, पठार या छोटी उच्चभूमि हो सकता है। उदाहरण के लिए, अरावली श्रेणी सिंधु और गंगा नदी तंत्रों के मध्य तथा पश्चिमी घाट भारत की पूर्व और पश्चिम की ओर बहने वाली नदियों के मध्य प्रमुख जल विभाजक हैं।

83. (A) केनोजोइक महाकल्प
हिमालय पर्वत प्रणाली का उत्थान केनोजोइक महाकल्प के दौरान हुआ था, जिस कारण इसे नवीन वलित पर्वत माना जाता है। केनोजोइक महाकल्प के तृतीयक (टर्शियरी) काल के दौरान भारतीय प्लेट और यूरेशियन प्लेट के मध्य हुए भीषण टकराव से टेथिस सागर के अवसाद कई चरणों में ऊपर उठे। इस महाकल्प में टर्शियरी युग के विभिन्न कालों (ओलिगोसीन, मायोसीन और प्लायोसीन) में हिमालय का क्रमिक उत्थान पूरा हुआ।

84. (D) 95% से अधिक
गोंडवाना शैल प्रणाली भारत की सबसे महत्वपूर्ण कोयला धारक भूगर्भीय संरचना है। भारत के कुल कोयला भंडार का 95 प्रतिशत से अधिक भाग तथा कुल कोयला उत्पादन का लगभग संपूर्ण हिस्सा इसी गोंडवाना काल की चट्टानों में पाया जाता है। ये शैल निक्षेप मुख्य रूप से प्रायद्वीपीय भारत की प्रमुख नदी घाटियों जैसे दामोदर घाटी, महानदी घाटी, सोन घाटी और गोदावरी घाटी में विस्तृत रूप से संचित हैं।

85. (A) तालाब (तड़ाग) सिंचाई
प्रायद्वीपीय पठार की भूगर्भीय संरचना मुख्य रूप से कठोर आग्नेय और कायांतरित चट्टानों से बनी है, जिसके कारण नहरें खोदना और नलकूप लगाना अत्यंत कठिन है। इसके अतिरिक्त, उबड़-खाबड़ स्थलाकृति और अप्रवेश्य चट्टानी धरातल के कारण प्राकृतिक गर्तों में वर्षा जल का संचयन आसान हो जाता है। इन भौगोलिक परिस्थितियों के कारण दक्षिण भारत के पठारी क्षेत्रों में पारंपरिक रूप से तालाब (तड़ाग) सिंचाई पद्धति सर्वाधिक प्रचलित और उपयुक्त रही है।

86. (D) जल संसाधनों की कमी और निम्न कृषि वहन क्षमता
पश्चिमी राजस्थान में शुष्क जलवायु, बालुका स्तूपों का आधिक्य और अत्यधिक कम वर्षा पाई जाती है। इसके परिणामस्वरूप जल संसाधनों की भारी कमी रहती है और भूमि की कृषि वहन क्षमता अत्यंत निम्न होती है। जीवन निर्वाह के सीमित साधनों और पानी की उपलब्धता के बिखरे हुए स्रोतों के कारण लोग दूर-दूर छोटी ढाणियों में बसते हैं, जिससे इस क्षेत्र में प्रकीर्ण (बिखरे हुए) अधिवास प्रतिरूप का विकास हुआ है।

87. (B) उत्तरी मैदान
भारत का उत्तरी मैदान रेलमार्गों के सबसे सघन नेटवर्क से आच्छादित है। इसके पीछे मुख्य भौगोलिक कारण यहाँ का अत्यंत समतल और सपाट भूभाग है, जो पटरी बिछाने के लिए आदर्श परिस्थितियां प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त, समृद्ध जलोढ़ मृदा के कारण अत्यधिक उच्च जनसंख्या घनत्व, गहन कृषि गतिविधियाँ और बड़े औद्योगिक नगरों की उपस्थिति ने इस क्षेत्र में रेल परिवहन की मांग और विकास को अत्यधिक बढ़ावा दिया है।

88. (C) वे मौसमी हैं, जो मुख्य रूप से वर्षा पर निर्भर हैं, और चौड़ी, छिछली घाटियों से होकर बहती हैं।
प्रायद्वीपीय भारत की अधिकांश नदियाँ मौसमी प्रकृति की होती हैं, क्योंकि उनका जल प्रवाह पूरी तरह से ग्रीष्मकालीन मानसून वर्षा पर निर्भर करता है। ये नदियाँ भूगर्भीय रूप से प्राचीन और स्थिर भूखंड से होकर बहती हैं, जिसके कारण इन्होंने अपनी घाटियों को चौड़ा और छिछला बना लिया है। इसके विपरीत, हिमालयी नदियाँ बारहमासी होती हैं, जो ग्लेशियरों के पिघलने और वर्षा दोनों से जल प्राप्त करके गहरी वी-आकार घाटियाँ बनाती हैं।

Downloaded from www.pdf.tube

89. (D) उत्तरी मैदान

उत्तरी मैदान भूगर्भीय दृष्टि से दक्षिण में स्थित प्राचीन, कठोर और स्थिर प्रायद्वीपीय पठार तथा उत्तर में स्थित नवीन, अत्यधिक अस्थिर और विवर्तनिक रूप से सक्रिय हिमालय पर्वतमाला के मध्य एक विशाल संक्रमणकालीन क्षेत्र के रूप में कार्य करता है। हिमालय के उत्थान के दौरान निर्मित विशाल द्रोणी में नदियों द्वारा लाए गए निरंतर जलोढ़ निक्षेपों के जमाव से इस समतल और उपजाऊ मैदानी क्षेत्र का विकास हुआ है।

90. (B) छह

भारत की विशाल भौगोलिक और भौतिक विविधताओं को मानक भौगोलिक वर्गीकरण के अनुसार मुख्य रूप से छह विस्तृत भू-आकृतिक विभाजनों में वर्गीकृत किया गया है। ये छह प्रमुख भौतिक विभाग हैं: 1. उत्तरी तथा उत्तर-पूर्वी पर्वतमाला (हिमालय), 2. उत्तरी भारत का मैदान, 3. प्रायद्वीपीय पठार, 4. भारतीय मरुस्थल (थार), 5. तटीय मैदान (पूर्वी व पश्चिमी), तथा 6. द्वीप समूह (लक्षद्वीप एवं अंडमान-निकोबार)।

www.nodia.in

NODIA

अध्याय 02
भारत की जलवायु और मानसून प्रणाली

1. हिमालय भारत के लिए एक प्रमुख जलवायु विभाजक के रूप में कार्य करता है। निम्नलिखित में से कौन-सा इसकी प्राथमिक जलवायु संबंधी भूमिका का सबसे सही वर्णन करता है?
(A) यह दक्षिण-पश्चिम मानसूनी पवनों को मध्य एशिया की ओर जाने से रोकता है।
(B) यह मध्य एशिया की ठंडी, शुष्क पवनों को उपमहाद्वीप में प्रवेश करने से रोकता है।
(C) A और B दोनों सही हैं।
(D) यह ग्रीष्मकाल के दौरान उष्णकटिबंधीय पूर्वी जेट स्ट्रीम उत्पन्न करता है।

2. निम्नलिखित में से कौन-सा अक्षांश भारत को लगभग दो बराबर भागों में विभाजित करता है, जो इसके तापमान वितरण को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है?
(A) भूमध्य रेखा
(B) मकर रेखा
(C) कर्क रेखा
(D) आर्कटिक वृत्त

3. भारत भर में तापमान की भिन्नता में ऊँचाई एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शहरों का निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म, समान अक्षांशों पर स्थित होने के बावजूद, मुख्य रूप से ऊँचाई के कारण औसत ग्रीष्मकालीन तापमान में अत्यधिक अंतर दर्शाता है?
(A) मुंबई और पुणे
(B) आगरा और दार्जिलिंग
(C) दिल्ली और जयपुर
(D) चेन्नई और कोच्चि

4. सूची I में दिए गए कोपेन के जलवायु वर्गीकरण को सूची II में भारत के उनके संबंधित क्षेत्रों से सुमेलित कीजिए:
सूची I : जलवायु वर्गीकरण
P. Amw
Q. Cwg
R. BShw
S. Aw
सूची II : भारत के क्षेत्र
1. गंगा का मैदान
2. भारत का पश्चिमी तट
3. प्रायद्वीपीय पठार (अधिकांश भाग)
4. राजस्थान का अर्ध-शुष्क स्टेपी क्षेत्र
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-4, R-1, S-3
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

5. कोपेन के जलवायु वर्गीकरण के अनुसार, 'BWhw' प्रकार की जलवायु राजस्थान के निम्नलिखित में से किस क्षेत्र में पाई जाती है?
(A) सुदूर पश्चिमी राजस्थान
(B) राजस्थान का उत्तर-पूर्वी क्षेत्र
(C) राजस्थान का दक्षिण-पूर्वी क्षेत्र
(D) दक्षिण-पूर्वी हाड़ौती पठार क्षेत्र

6. कोपेन के वर्गीकरण में, 'Cwg' में अक्षर 'w' क्या दर्शाता है?
(A) शुष्क ग्रीष्मकाल
(B) गर्म ग्रीष्मकाल
(C) शुष्क शीतकाल
(D) मरुस्थलीय जलवायु

7. शीत ऋतु (दिसंबर-फरवरी) के दौरान उत्तर भारत में कम तापमान का प्राथमिक कारण निम्नलिखित में से कौन-सा है?
(A) सूर्य की तिरछी किरणें और समुद्र से दूरी
(B) समुद्री जल का प्रत्यक्ष प्रभाव और निकटता
(C) उत्तर-पूर्वी व्यापारिक पवनों का निरंतर प्रभाव
(D) विषुवतीय अल नीनो प्रभाव की निरंतर उपस्थिति

8. भारत में शीत ऋतु के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. भारत के उत्तर-पश्चिम क्षेत्र के ऊपर उच्च दाब केंद्र विकसित होता है।
II. प्रचलित पवनें स्थल से समुद्र की ओर चलती हैं।
III. इस ऋतु के दौरान पूरे देश में भारी वर्षा होती है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

9. ग्रीष्मकाल के महीनों में भारत के उत्तरी मैदानों में चलने वाली गर्म, शुष्क और कष्टदायक पवनों को स्थानीय रूप से किस नाम से जाना जाता है?
(A) आम्र वृष्टि
(B) लू
(C) काल बैसाखी
(D) चेरी ब्लॉसम

Click Here to Buy book on Flipkart

10. निम्नलिखित क्षेत्रों को उस कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए जिसमें वे सामान्यतः दक्षिण-पश्चिम मानसून प्राप्त करते हैं:
I. केरल तट
II. मुंबई
III. अंडमान और निकोबार द्वीप समूह
IV. राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली
(A) I, III, II, IV
(B) III, I, II, IV
(C) III, I, IV, II
(D) I, II, III, IV

11. अंतःउष्णकटिबंधीय अभिसरण क्षेत्र (ITCZ) निम्न दाब का एक विस्तृत गर्त है। भारतीय ग्रीष्मकालीन मानसून ऋतु के दौरान यह कहाँ स्थित होता है?
(A) विषुवतीय पट्टी के ठीक ऊपर स्थित
(B) दक्षिणी मकर रेखा के साथ स्थित
(C) हिंद महासागर के दक्षिणी क्षेत्र में स्थित
(D) गंगा के मैदान पर

12. लौटते मानसून की ऋतु के दौरान, कोरोमंडल तट पर वर्षा के लिए आर्द्रता मुख्य रूप से किस जल निकाय से प्राप्त होती है?
(A) बंगाल की खाड़ी
(B) अरब सागर
(C) हिंद महासागर
(D) मन्नार की खाड़ी

13. भारतीय मानसून की क्रियाविधि से जुड़े निम्नलिखित कारकों पर विचार कीजिए:
I. तिब्बत के पठार का अत्यधिक गर्म होना।
II. मेडागास्कर के पूर्व में उच्च दाब क्षेत्र की उपस्थिति।
III. पछुआ जेट स्ट्रीम का हिमालय के उत्तर में स्थानांतरित होना।
IV. भारतीय प्रायद्वीप के ऊपर उष्णकटिबंधीय पूर्वी जेट स्ट्रीम की उपस्थिति।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल II, III और IV
(C) केवल I, III और IV
(D) I, II, III और IV

14. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A) : दक्षिण-पश्चिम मानसून अरब सागर शाखा और बंगाल की खाड़ी शाखा में विभाजित हो जाता है।
कारण (R) : भारतीय प्रायद्वीप की स्थलाकृतिक आकृति आगे बढ़ती मानसूनी पवनों को विभाजित कर देती है।
उपर्युक्त कथनों के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

15. सितंबर में दक्षिण-पश्चिम मानसून की वापसी आमतौर पर भारत के किस भाग से सबसे पहले शुरु होती है?
(A) उत्तर-पश्चिमी राज्य
(B) उत्तर-पूर्वी राज्य
(C) प्रायद्वीपीय भारत
(D) पूर्वी तटीय मैदान

16. अल नीनो परिघटना, जो भारतीय मानसून को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है, निम्नलिखित में से किस महासागर में उत्पन्न होती है?
(A) हिंद महासागर का विषुवतीय क्षेत्र
(B) अटलांटिक महासागर का उत्तरी क्षेत्र
(C) पूर्वी प्रशांत महासागर
(D) दक्षिणी महासागर का अंटार्कटिक क्षेत्र

17. सूची I में दी गई जलवायु संबंधी परिघटनाओं को सूची II में भारत पर उनके विशिष्ट प्रभावों से सुमेलित कीजिए:
सूची I : जलवायु संबंधी परिघटनाएँ
P. अल नीनो
Q. ला नीना
R. धनात्मक हिंद महासागर द्विध्रुव
S. ऋणात्मक हिंद महासागर द्विध्रुव
सूची II : भारत पर प्रभाव
1. भारतीय मानसूनी वर्षा को कम करता है
2. भारतीय मानसूनी वर्षा को बढ़ाता है
3. औसत से अधिक मानसूनी वर्षा (शीतल पूर्वी हिंद महासागर)
4. कम मानसूनी वर्षा (गर्म पूर्वी हिंद महासागर)
(A) P-2, Q-1, R-4, S-3
(B) P-1, Q-3, R-2, S-4
(C) P-4, Q-2, R-3, S-1
(D) P-1, Q-2, R-3, S-4

18. भारतीय मानसून पर ला नीना परिघटना का सामान्य प्रभाव क्या है?
(A) यह संपूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप में लगातार गंभीर और व्यापक सूखे की स्थिति पैदा करती है।
(B) इसके कारण दक्षिण-पश्चिम मानसूनी पवनों की असामान्य रूप से समय पूर्व और तीव्र वापसी होती है।
(C) यह सामान्य से अधिक मानसूनी वर्षा लाती है।
(D) यह शीतकालीन पश्चिमी विक्षोभ के कारण होने वाले मौसमी प्रभाव को पूरी तरह से बेअसर कर देती है।

19. निम्नलिखित क्षेत्रों का उनकी औसत वार्षिक वर्षा के आधार पर सही अवरोही क्रम (उच्चतम से न्यूनतम) चुनिए:
(A) पश्चिमी घाट → गंगा का मैदान → पश्चिमी राजस्थान
(B) पश्चिमी राजस्थान → गंगा का मैदान → पश्चिमी घाट
(C) गंगा का मैदान → पश्चिमी घाट → पश्चिमी राजस्थान

Downloaded from www.pdf.tube

(D) पश्चिमी घाट → पश्चिमी राजस्थान → गंगा का मैदान

20. निम्नलिखित स्थानों में से उनकी विशिष्ट वार्षिक वर्षा श्रेणी के आधार पर विषम स्थान की पहचान कीजिए:
(A) चेरापूंजी
(B) मौसिनराम
(C) महाबलेश्वर
(D) जैसलमेर

21. ग्रीष्म ऋतु के दौरान, भारत में उच्चतम तापमान आमतौर पर निम्नलिखित में से किस क्षेत्र में दर्ज किया जाता है?
(A) थार मरुस्थल
(B) मालाबार क्षेत्र के तटीय मैदान
(C) छोटानागपुर पठार का पूर्वी क्षेत्र
(D) ब्रह्मपुत्र घाटी के मैदान

22. उष्णकटिबंधीय चक्रवातों के निर्माण के लिए निम्नलिखित परिस्थितियों पर विचार कीजिए:
I. समुद्री सतह का तापमान 27°C से अधिक होना।
II. कोरियोलिस बल की उपस्थिति।
III. ऊर्ध्वाधर पवन की गति में उच्च भिन्नता (उच्च पवन अपरुपण)।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

23. भारत का निम्नलिखित में से कौन-सा तटीय क्षेत्र मानसून-पश्चात् (लौटते मानसून) की ऋतु के दौरान उष्णकटिबंधीय चक्रवातों से सबसे गंभीर रूप से प्रभावित होता है?
(A) कोरोमंडल तट
(B) कोंकण क्षेत्र की पश्चिमी तटीय पट्टी
(C) मालाबार की दक्षिण-पश्चिमी तटीय पट्टी
(D) गुजरात की उत्तर-पश्चिमी तटरेखा

24. उष्णकटिबंधीय चक्रवात का केंद्र, जो शांत अवतलित वायु और साफ़ आकाश द्वारा अभिलक्षित होता है, किस नाम से जाना जाता है?
(A) चक्षुभित्ति
(B) सर्पिल बैंड
(C) गर्त
(D) चक्षु

25. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A) : उत्तर-पश्चिम भारत में शीतकाल के दौरान वर्षा होती है जो रबी फसलों के लिए अत्यधिक लाभदायक होती है।
कारण (R) : उत्तर-पश्चिम भारत में शीतकालीन वर्षा दक्षिण-पश्चिम मानसून के लौटने के कारण होती है।
उपर्युक्त कथनों के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

NODIA

26. राजस्थान में पश्चिमी विक्षोभों के कारण होने वाली शीतकालीन वर्षा को स्थानीय रूप से किस नाम से जाना जाता है?
(A) आम्र वृष्टि
(B) काल बैसाखी
(C) मावट
(D) लू

27. राजस्थान का कौन-सा जिला अत्यधिक परिवर्तनशील और अपर्याप्त वर्षा के कारण सूखे के वर्षों की उच्चतम आवृत्ति का सामना करता है?
(A) बांसवाड़ा जिला
(B) झालावाड़ जिला
(C) कोटा जिला
(D) जैसलमेर जिला

28. भारत के बाढ़-प्रवण क्षेत्रों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. भारी वर्षा और अत्यधिक गाद जमा होने के कारण ब्रह्मपुत्र घाटी बाढ़ के प्रति अत्यधिक संवेदनशील है।
II. प्रायद्वीपीय नदियाँ हिमालयी नदियों की तुलना में बार-बार आने वाली विनाशकारी बाढ़ों के प्रति अधिक संवेदनशील हैं।
III. चक्रवाती तूफान पूर्वी तटीय डेल्टा क्षेत्रों में गंभीर बाढ़ का कारण बनते हैं।
IV. हिमालयी जलग्रहण क्षेत्रों में वनों की कटाई ने उत्तरी मैदानों में बाढ़ की आवृत्ति बढ़ा दी है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल I, III और IV
(C) केवल II, III और IV
(D) I, II, III और IV

29. भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (IMD), जो मानसून का पूर्वानुमान लगाने और जलवायु पैटर्न की निगरानी के लिए उत्तरदायी है, का मुख्यालय वर्तमान में कहाँ स्थित है?
(A) पुणे, महाराष्ट्र
(B) नई दिल्ली
(C) शिमला, हिमाचल प्रदेश
(D) कोलकाता, पश्चिम बंगाल

30. हाल के दशकों में भारतीय मानसून के पैटर्न पर जलवायु परिवर्तन का क्या प्रभाव देखा गया है?
(A) सभी मौसम संबंधी जिलों में वार्षिक वर्षा वितरण में निरंतर, स्थिर और पूरी तरह से समान वृद्धि।

(B) अधिक बार अत्यधिक वर्षा की घटनाएँ और लंबी शुष्क अवधि।
(C) उपमहाद्वीप से निम्न दाब वाले मानसूनी गर्त का पूरी तरह से समाप्त होना।
(D) वर्षा की तीव्रता में बिना किसी मापनीय भिन्नता के मौसमी वापसी के चरण में निरंतर देरी।

31. चूँकि कृषि क्षेत्र वर्षा के समय और वितरण पर अत्यधिक निर्भर है, इसलिए भारतीय बजट को पारंपरिक रूप से क्या कहा जाता है?
(A) मानसून का जुआ
(B) औद्योगिक वृद्धि का प्रतिबिंब
(C) कृषि अधिशेष मॉडल
(D) जलवायु-अनुकूल ढांचा

32. सूची I में दी गई जेट स्ट्रीम और वायुमंडलीय परिघटनाओं को सूची II में भारत के ऊपर उनकी मौसमी विशेषताओं से सुमेलित कीजिए:
सूची I : जेट स्ट्रीम और वायुमंडलीय परिघटनाएँ
P. उप-उष्णकटिबंधीय पछुआ जेट स्ट्रीम
Q. उष्णकटिबंधीय पूर्वी जेट स्ट्रीम
R. सोमाली जेट
S. पश्चिमी विक्षोभ
सूची II : मौसमी विशेषताएं
1. उत्तर भारत में शीतकालीन मौसम को प्रभावित करता है
2. ग्रीष्मकाल के दौरान हिमालय के उत्तर में बहता है
3. हिंद महासागर से दक्षिण-पश्चिम मानसून को मजबूत करता है
4. ग्रीष्मकाल के महीनों के दौरान प्रायद्वीपीय भारत के ऊपर उपस्थित रहता है
(A) P-1, Q-4, R-3, S-2
(B) P-2, Q-1, R-4, S-3
(C) P-2, Q-4, R-3, S-1
(D) P-4, Q-2, R-1, S-3

33. किस जेट स्ट्रीम को मुख्य रूप से उष्णकटिबंधीय अवदाबों को भारत में लाने के लिए उत्तरदायी माना जाता है, जिससे मानसूनी वर्षा का वितरण प्रभावित होता है?
(A) उप-उष्णकटिबंधीय पछुआ जेट स्ट्रीम
(B) ध्रुवीय रात्रि जेट स्ट्रीम
(C) मध्य-अक्षांश जेट स्ट्रीम
(D) उष्णकटिबंधीय पूर्वी जेट स्ट्रीम

34. पश्चिमी घाट का कौन-सा भाग तुलनात्मक रूप से बहुत कम वर्षा प्राप्त करता है, जो वृष्टि छाया क्षेत्र के रूप में कार्य करता है?
(A) पश्चिमी ढाल
(B) उत्तरी किनारे
(C) पूर्वी ढाल
(D) तटीय मैदान

35. 'मानसून' शब्द अरबी शब्द 'मौसम' से बना है। इसका शाब्दिक अर्थ क्या है?
(A) लगातार भारी वर्षा
(B) मौसम / ऋतु
(C) पवन की दिशा में परिवर्तन
(D) महासागरीय धाराएँ

36. IMD द्वारा मानसून के दीर्घकालिक पूर्वानुमान के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह जून से सितंबर की अवधि के लिए पूरे देश में वर्षा का पूर्वानुमान प्रदान करता है।
II. यह किसी भी सांख्यिकीय मॉडलिंग के बिना पूरी तरह से स्वदेशी उपग्रह डेटा पर निर्भर करता है।
III. यह प्रशांत और हिंद महासागरों में समुद्री सतह के तापमान जैसे मापदंडों का उपयोग करता है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल I और III
(C) केवल II और III
(D) I, II और III

37. भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (IMD) की स्थापना किस वर्ष की गई थी?
(A) 1875
(B) 1901
(C) 1947
(D) 1950

38. कर्नाटक और केरल में मानसून-पूर्व की बौछारें जो एक विशेष फल को जल्दी पकने में मदद करती हैं, उन्हें किस नाम से जाना जाता है?
(A) बारडोली छीड़ा
(B) नार्वेस्टर
(C) आम्र वृष्टि
(D) काल बैसाखी

39. मानसून-पूर्व ऋतु के दौरान पश्चिम बंगाल में आने वाले कौन-से भीषण तूफान अपनी विनाशकारी प्रकृति के लिए जाने जाते हैं?
(A) काल बैसाखी
(B) लू
(C) आम्र वृष्टि
(D) चेरी ब्लॉसम

40. मानसून में 'विच्छेद' का क्या अर्थ है?
(A) जून की शुरुआत में पूरे देश में अचानक और तीव्र भारी वर्षण की शुरुआत।
(B) अक्टूबर के अंत तक मानसूनी पवनों की अंतिम, पूर्ण मौसमी वापसी।
(C) महीनों तक बिना रुके लगातार होने वाली मूसलाधार वर्षा।
(D) मानसून के दौरान कुछ दिनों या हफ्तों तक रहने वाली

Click Here to Buy book on Amazon

वर्षाहीन अवधि।

41. कौन-सी भौगोलिक विशेषता दक्षिण-पश्चिम मानसून की बंगाल की खाड़ी शाखा को म्यांमार की ओर जाने के बजाय भारतीय मैदानों की ओर मुड़ने के लिए मजबूर करती है?
(A) नीलगिरि पहाड़ियाँ
(B) अराकान पहाड़ियाँ
(C) विंध्य पर्वतमाला
(D) पश्चिमी घाट

42. 'मस्करेन हाई' क्या है जो भारतीय मानसून की तीव्रता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है?
(A) मध्य एशिया में स्थित एक विशाल उच्च-ऊँचाई वाली पर्वत श्रृंखला
(B) थार मरुस्थल में स्थित अत्यधिक उच्च तापमान वाला मरुस्थलीय क्षेत्र
(C) दक्षिण हिंद महासागर में उच्च दाब वाला क्षेत्र
(D) तिब्बत के पठार पर स्थित एक अर्ध-स्थायी निम्न दाब गर्त

43. भारतीय ग्रीष्मकाल के दौरान तापीय विषुवत वृत्त उत्तर की ओर खिसक जाता है। जुलाई के दौरान इसकी लगभग स्थिति क्या होती है?
(A) 5° उत्तरी अक्षांश
(B) 10° उत्तरी अक्षांश
(C) 20° से 25° उत्तरी अक्षांश
(D) 35° से 40° उत्तरी अक्षांश

44. दक्षिण-पश्चिम मानसून के दौरान राजस्थान में बहुत कम वर्षा होने के लिए निम्नलिखित में से कौन-सा कारक उत्तरदायी है?
(A) अरावली पर्वतमाला अरब सागर शाखा की दिशा के समानांतर स्थित है।
(B) यह राज्य बंगाल की खाड़ी शाखा से आर्द्रता प्राप्त करने के लिए बहुत दूर है।
(C) अत्यधिक गर्मी आर्द्रता के संघनन को रोकती है।
(D) उपर्युक्त सभी।

45. अंतःउष्णकटिबंधीय अभिसरण क्षेत्र (ITCZ) के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह भूमध्य रेखा पर स्थित उच्च दाब का क्षेत्र है।
II. यह वह क्षेत्र है जहाँ उत्तर-पूर्वी और दक्षिण-पूर्वी व्यापारिक पवनें अभिसरित होती हैं।
III. ग्रीष्मकाल में, यह भारतीय उपमहाद्वीप के ऊपर उत्तर की ओर खिसक जाता है।
IV. गंगा के मैदान पर इसकी उपस्थिति मानसून गर्त का निर्माण करती है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल II, III और IV
(C) केवल I, III और IV
(D) I, II, III और IV

46. लौटते मानसून की ऋतु के दौरान, साफ़ आकाश और तापमान में वृद्धि, उच्च आर्द्रता के साथ मिलकर, कष्टदायक मौसम की स्थिति पैदा करती है। इस परिघटना को सामान्यतः किस नाम से जाना जाता है?
(A) आम्र वृष्टि
(B) अक्टूबर की गर्मी
(C) पश्चिमी विक्षोभ
(D) मानसून विच्छेद

47. उत्तर-पूर्वी मानसून भारत के अधिकांश भागों के लिए सामान्यतः शुष्क होता है क्योंकि:
(A) यह स्थल से समुद्र की ओर चलता है।
(B) यह खुले समुद्र से सीधे भूभाग की ओर निरंतर बहता है।
(C) यह अत्यंत अस्थिर, तीव्र और विक्षुब्ध पवन प्रणाली बनाता है।
(D) यह पश्चिमी घाट की ऊँची श्रृंखलाओं द्वारा पूरी तरह से अवरुद्ध हो जाता है।

48. भारत की औसत वार्षिक वर्षा लगभग कितनी है?
(A) 50 सेमी
(B) 80 सेमी
(C) 118 सेमी
(D) 200 सेमी

49. लेह में अत्यधिक कम वार्षिक वर्षा (10 सेमी से कम) क्यों होती है?
(A) यह भौगोलिक रूप से विषुवतीय तापीय क्षेत्र के बहुत करीब स्थित है।
(B) इसमें बादलों के वर्षण के लिए आवश्यक न्यूनतम ऊँचाई का पूर्ण अभाव है।
(C) यह लगातार गर्म समुद्री धाराओं की गति से प्रभावित होता है।
(D) यह हिमालय के वृष्टि छाया क्षेत्र में स्थित है।

50. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A) : दक्षिण-पश्चिम मानसून ऋतु के दौरान तमिलनाडु तट अपेक्षाकृत शुष्क रहता है।
कारण (R) : तमिलनाडु तट बंगाल की खाड़ी शाखा के समानांतर स्थित है और अरब सागर शाखा के वृष्टि छाया क्षेत्र में पड़ता है।
उपर्युक्त कथनों के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

51. 'अल नीनो' स्पैनिश भाषा का शब्द है जिसका अर्थ 'छोटा लड़का' या 'बाल ईसा' है। इसे यह नाम क्यों दिया गया था?

NODIA

(A) ऐतिहासिक रूप से इसे सबसे पहले प्रशांत तट के साथ खेलने वाले छोटे बच्चों द्वारा देखा गया था।
(B) यह क्रिसमस के आसपास दक्षिण अमेरिकी तट से दूर प्रकट होता है।
(C) यह पारंपरिक रूप से इस क्षेत्र में बहुत हल्की, बाल-सुलभ मौसमी वर्षा लाता है।
(D) इसे मूल रूप से एक मामूली, अत्यधिक स्थानीयकृत अल्पकालिक मौसमी घटना के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

52. 'वॉकर परिसंचरण' मुख्य रूप से किस क्षेत्र में देखी जाने वाली एक महासागरीय-वायुमंडलीय परिघटना है, जो भारतीय मानसून को अत्यधिक प्रभावित करती है?
(A) अटलांटिक महासागर
(B) आर्कटिक महासागर
(C) दक्षिणी महासागर
(D) प्रशांत महासागर

53. 'धनात्मक हिंद महासागर द्विध्रुव' की क्या विशेषता है?
(A) पश्चिमी हिंद महासागर में सामान्य से अधिक गर्म और पूर्वी भाग में शीतल समुद्री सतह का तापमान।
(B) पश्चिमी हिंद महासागर में सामान्य से अधिक शीतल और पूर्वी भाग में गर्म समुद्री सतह का तापमान।
(C) पूरे हिंद महासागर में समान रूप से उच्च समुद्री सतह का तापमान।
(D) पूरे हिंद महासागर में समान रूप से कम समुद्री सतह का तापमान।

54. धनात्मक हिंद महासागर द्विध्रुव (IOD) आमतौर पर भारतीय मानसून के साथ कैसे क्रिया करता है?
(A) यह हर साल बिना अपवाद के देश भर में गंभीर और व्यापक सूखे की स्थिति पैदा करता है।
(B) यह दक्षिण-पश्चिम मानसून के मौसमी आगमन में लगातार एक महीने की देरी करता है।
(C) यह मानसूनी वर्षा को बढ़ाता है, जो अक्सर अल नीनो के प्रभाव को बेअसर करता है।
(D) यह ग्रीष्मकाल के महीनों के दौरान संपूर्ण हिमालयी श्रृंखला में अभूतपूर्व भारी बर्फबारी का कारण बनता है।

55. निम्नलिखित क्षेत्रों से दक्षिण-पश्चिम मानसून की वापसी का सही कालानुक्रमिक क्रम चुनिए:
(A) उत्तर-पश्चिम भारत → मध्य भारत → दक्षिणी प्रायद्वीप
(B) दक्षिणी प्रायद्वीप → मध्य भारत → उत्तर-पश्चिम भारत
(C) मध्य भारत → उत्तर-पश्चिम भारत → दक्षिणी प्रायद्वीप
(D) उत्तर-पश्चिम भारत → दक्षिणी प्रायद्वीप → मध्य भारत

56. बंगाल की खाड़ी में बनने वाले उष्णकटिबंधीय चक्रवात मुड़ने या तट से टकराने से पहले आमतौर पर किस सामान्य दिशा में बढ़ते हैं?
(A) पश्चिम से उत्तर-पश्चिम
(B) क्षेत्र में सीधे पश्चिम से पूर्व की ओर
(C) तटरेखा के साथ सीधे उत्तर से दक्षिण की ओर
(D) ध्रुवों की ओर लगातार दक्षिण से उत्तर की ओर

57. उत्तर हिंद महासागर में उष्णकटिबंधीय चक्रवातों के नामकरण की व्यवस्था में, कौन-सा संगठन सदस्य देशों द्वारा प्रदान किए गए नामों के आवंटन की देखरेख करता है?
(A) संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP)
(B) WMO / ESCAP पैनल
(C) भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO)
(D) विश्व बैंक समूह अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थान

58. निम्नलिखित में से कौन-सी स्थिति बंगाल की खाड़ी में उष्णकटिबंधीय चक्रवात की तीव्र गहनता के लिए अनुकूल नहीं है?
(A) उच्च समुद्री सतह का तापमान
(B) निचले और मध्य क्षोभमंडल में उच्च सापेक्ष आर्द्रता
(C) उच्च ऊर्ध्वाधर पवन अपरूपण
(D) मजबूत कोरियोलिस बल

59. पश्चिमी विक्षोभ भूमध्य सागर के ऊपर उत्पन्न होते हैं। कौन-सी पवन प्रणाली उन्हें भारतीय उपमहाद्वीप की ओर ले जाती है?
(A) प्रचलित उत्तर-पूर्वी व्यापारिक पवन प्रणाली
(B) उच्च-ऊँचाई वाली उष्णकटिबंधीय पूर्वी जेट स्ट्रीम
(C) निचले स्तर की ध्रुवीय पूर्वी पवन पेटी
(D) पछुआ जेट स्ट्रीम

60. हिमालयी क्षेत्र में पश्चिमी विक्षोभों के कारण होने वाले वर्षण की प्राथमिक विशेषता क्या है?
(A) पर्वतीय क्षेत्रों में हिमपात और मैदानों में वर्षा
(B) विनाशकारी पवनों के साथ व्यापक भीषण गरज के साथ तूफान
(C) तत्काल आकस्मिक बाढ़ का कारण बनने वाली लगातार मूसलाधार भारी वर्षा
(D) बिना किसी वर्षा के केवल विशिष्ट क्षेत्रों में होने वाली गंभीर ओलावृष्टि

61. भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (IMD) के अनुसार, 'गंभीर सूखा' तब घोषित किया जाता है जब किसी मौसम संबंधी उप-खंड में वर्षा की कमी होती है:
(A) दीर्घकालिक औसत के 10% से 25% के बीच
(B) दीर्घकालिक औसत के 26% से 50% के बीच
(C) दीर्घकालिक औसत के 50% से अधिक
(D) दीर्घकालिक औसत के 75% से अधिक

62. भारत सरकार द्वारा मुख्य रूप से सूखे के प्रभावों को कम करने के लिए 'मरुस्थल विकास कार्यक्रम' (DDP) शुरु किया गया था। राजस्थान में, यह कार्यक्रम बड़े पैमाने पर किस भौगोलिक क्षेत्र पर केंद्रित है?
(A) दक्षिणी मेवाड़ क्षेत्र
(B) पश्चिमी जिले
(C) दक्षिण-पूर्वी हाड़ौती पठार
(D) दक्षिणी वागड़ क्षेत्र

Downloaded from www.pdf.tube

63. भारत का कौन-सा राज्य मानसून के दौरान कोसी नदी के मार्ग बदलने के कारण आने वाली विनाशकारी बाढ़ के प्रति सबसे अधिक संवेदनशील है?
(A) बिहार (B) असम
(C) पश्चिम बंगाल (D) ओडिशा

64. IMD एंसेंबल मल्टीपल लीनियर रिग्रेशन पर आधारित दीर्घकालिक पूर्वानुमान के लिए एक सांख्यिकीय मॉडल का उपयोग करता है। इस प्रकार के सांख्यिकीय पूर्वानुमान के लिए निम्नलिखित में से क्या एक अनिवार्य आवश्यकता है?
(A) बादलों के आवरण पैटर्न को ट्रैक करने वाली वास्तविक समय की उच्च-संकल्प उपग्रह इमेजरी
(B) विषुवतीय क्षेत्र में एकत्र किए गए दैनिक सतह पवन गति के माप
(C) ऐतिहासिक डेटा और पूर्ववर्ती मापदंड
(D) महासागरों में निरंतर गहरे समुद्र के पनडुब्बी जल तापमान का पठन

65. सूची I में दी गई स्थानीय मानसून-पूर्व बौछारों को सूची II में उन राज्यों से सुमेलित कीजिए जिनसे वे मुख्य रूप से संबंधित हैं:
सूची I : मानसून-पूर्व बौछारें
P. चेरी ब्लॉसम बौछारें
Q. काल बैसाखी
R. आम्र वृष्टि
S. बारडोली छीड़ा
सूची II : राज्य
1. असम
2. केरल
3. पश्चिम बंगाल
4. कर्नाटक
(A) P-2, Q-3, R-4, S-1
(B) P-4, Q-1, R-2, S-3
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

66. भारत के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय द्वारा 'मानसून मिशन' शुरू किया गया था। इसका प्राथमिक उद्देश्य क्या है?
(A) अधिशेष मानसूनी जल को संचित करने के लिए सभी राष्ट्रीय नदियों पर बड़े पैमाने पर मेगा-बांधों का व्यवस्थित निर्माण करना।
(B) निर्दिष्ट सूखा-प्रवण आंतरिक क्षेत्रों में व्यापक कृत्रिम क्लाउड सीडिंग संचालन करना।
(C) डायनेमिक मॉडलिंग के माध्यम से मानसून के पूर्वानुमान को उन्नत करना।
(D) वर्षा पर निर्भर मानसूनी फसलों के कुल आर्थिक उत्पादन की लगातार निगरानी और ट्रैकिंग करना।

67. भारत सरकार का कौन-सा मंत्रालय भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (IMD) के कामकाज की देखरेख करता है?
(A) पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय
(B) पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय
(C) विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय
(D) कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय

68. भारत में खरीफ फसल की ऋतु स्वाभाविक रूप से मानसून से जुड़ी हुई है। खरीफ फसलों की बुआई मुख्य रूप से कब शुरू होती है?
(A) शीतकाल की शुरुआत के साथ
(B) लौटते मानसून के दौरान
(C) मई में रबी फसलों की कटाई के बाद
(D) दक्षिण-पश्चिम मानसून के आगमन के साथ

69. शीत ऋतु के दौरान, कौन-सी विशिष्ट दाब प्रणाली एशियाई महाद्वीप से ठंडी, शुष्क पवनों को हिंद महासागर की ओर संचालित करती है?
(A) साइबेरियन हाई
(B) एल्यूशियन लो
(C) विषुवतीय गर्त
(D) बरमूडा हाई

NODIA

70. उत्तर-पूर्वी मानसून के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह तमिलनाडु राज्य को महत्वपूर्ण वर्षा प्रदान करता है।
II. देश के अधिकांश भागों में पवन की दिशा स्थल से समुद्र की ओर होती है।
III. यह पूरे उत्तर भारतीय मैदान में निरंतर वर्षा लाता है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

71. शीत ऋतु के दौरान वर्षा प्राप्त करने वाले कोरोमंडल तट पर कौन-सा कोपेन जलवायु वर्गीकरण लागू होता है?
(A) As
(B) Aw
(C) Amw
(D) Cwg

72. क्या होता है जब दक्षिण-पश्चिम मानसून की अरब सागर शाखा और बंगाल की खाड़ी शाखा गंगा के उत्तर-पश्चिमी मैदानों पर मिलती हैं?
(A) वे तुरंत मानसूनी वर्षा में एक अचानक, लंबे मौसमी विच्छेद का कारण बनती हैं।
(B) वे टकराने पर एक-दूसरे को पूरी तरह से बेअसर कर देती हैं, जिससे एक लंबी शुष्क अवधि बन जाती है।
(C) वे तेजी से अपने समग्र प्रवाह की दिशा को उलट देती हैं और वापस महासागरों की ओर लौट जाती हैं।
(D) वे उत्तर-पश्चिमी मैदानों में व्यापक वर्षा का कारण बनती हैं।

73. निम्नलिखित में से कौन-सा राज्य स्पष्ट रूप से द्वि-मोडाल वर्षा पैटर्न का अनुभव करता है (दक्षिण-पश्चिम मानसून और

शीतकाल में पश्चिमी विक्षोभ दोनों से महत्वपूर्ण वर्षण प्राप्त करता है)?
(A) तमिलनाडु का तटीय राज्य
(B) हिमाचल प्रदेश
(C) केरल का दक्षिण-पश्चिमी राज्य
(D) ओडिशा का पूर्वी तटीय राज्य

74. कौन-सी वायुमंडलीय विशेषता शीतकाल में भारतीय उपमहाद्वीप पर एक ढक्कन के रूप में कार्य करती है, जो ठंडी हवा को रोककर रखती है और ग्रीष्मकाल में उत्तर की ओर खिसकने तक शुष्क परिस्थितियों को बनाए रखती है?
(A) उच्च-ऊँचाई वाली उष्णकटिबंधीय पूर्वी जेट स्ट्रीम
(B) विषुवतीय अंत:उष्णकटिबंधीय अभिसरण क्षेत्र
(C) पछुआ जेट स्ट्रीम
(D) पश्चिमी हिंद महासागर सोमाली धारा प्रणाली

75. निम्नलिखित शहरों को उनकी औसत वार्षिक वर्षा के आरोही क्रम (न्यूनतम से उच्चतम) में व्यवस्थित कीजिए:
I. जोधपुर
II. दिल्ली
III. कोलकाता
IV. शिलांग
(A) I, II, III, IV
(B) IV, III, II, I
(C) I, III, II, IV
(D) II, I, III, IV

76. 'दक्षिणी दोलन' सूचकांक (SOI) की गणना किन्हीं दो स्थानों के बीच वायुमंडलीय दाब के अंतर के आधार पर की जाती है?
(A) ताहिती और डार्विन
(B) मुंबई का तटीय शहर और मेडागास्कर का द्वीप
(C) इंडोनेशिया में जकार्ता और पेरु में लीमा
(D) श्रीलंका में कोलंबो और दक्षिण अफ्रीका में केप टाउन

77. निम्नलिखित में से कौन-सा भारत में वर्षा के असमान वितरण का प्राथमिक कारण नहीं है?
(A) पर्वत श्रृंखलाओं का क्षेत्रीय अभिविन्यास और संरेखण
(B) मृदा के प्रकार में एकरूपता
(C) निकटवर्ती महासागरीय जल निकायों से सापेक्ष भौगोलिक दूरी
(D) आर्द्रता-युक्त पवनों की मौसमी दिशात्मक गति

78. बंगाल की खाड़ी की तुलना में अरब सागर में उष्णकटिबंधीय चक्रवात कम बार क्यों आते हैं?
(A) अरब सागर साल भर निरंतर रूप से काफी उच्च औसत समुद्री सतह तापमान बनाए रखता है।
(B) अरब सागर में उच्च पवन अपरूपण और शीतल जल का होना।
(C) बंगाल की खाड़ी के गहरे पानी की तुलना में अरब सागर बेसिन भौतिक रूप से बहुत उथला है।
(D) अरब सागर के पूरे विस्तार में ग्रहीय कोरियोलिस बल पूरी तरह से अनुपस्थित है।

79. भारतीय मानसून की 'स्पंदित' प्रकृति का तात्पर्य क्या है?
(A) एकांतर शुष्क और आर्द्र अवधि (आर्द्र और शुष्क दौर)
(B) भूकंपीय गतिविधियों और गंभीर भूकंपों को ट्रिगर करने की इसकी भौतिक क्षमता
(C) हर एक दिन पवन की दिशाओं का अप्रत्याशित, अत्यधिक परिवर्तनशील बदलाव
(D) रात में वायुमंडलीय तापमान में अचानक, अत्यधिक और निरंतर गिरावट

80. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A) : मानसून की अरब सागर शाखा बंगाल की खाड़ी शाखा की तुलना में बहुत अधिक शक्तिशाली है।
कारण (R) : अरब सागर आकार में बड़ा है और संपूर्ण अरब सागर धारा भारत की ओर बढ़ती है।
उपर्युक्त कथनों के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

81. मानसून के पूर्वानुमान के लिए IMD द्वारा उपयोग किया जाने वाला 'MMCFS' मॉडल क्या है?
(A) मौसम विज्ञान मानसून गणना और पूर्वानुमान प्रणाली (Meteorological Monsoon Calculation and Forecasting System)
(B) जलवायु और बाढ़ प्रणालियों के लिए मौसम विज्ञान मॉडल (Meteorological Model for Climate and Flood Systems)
(C) मानसून मापन और चक्रवात पूर्वानुमान प्रणाली (Monsoon Measurement and Cyclonic Forecast System)
(D) मानसून मिशन कपल्ड फॉरकास्टिंग सिस्टम (Monsoon Mission Coupled Forecasting System)

82. भारत के शुद्ध बोए गए क्षेत्र का लगभग कितना प्रतिशत मुख्य रूप से वर्षा पर निर्भर (असिंचित) है?
(A) 10-15%
(B) 25-30%
(C) 45-50%
(D) 85-90%

83. 'ENSO' शब्द का अर्थ है:
(A) ईस्टर्न नॉर्दर्न साउदर्न ऑसिलेशन (Eastern Northern Southern Oscillation)
(B) अल नीनो साउदर्न ऑसिलेशन (El Nino Southern Oscillation)
(C) इक्वेटोरियल न्यूट्रल सी ऑसिलेशन (Equatorial Neutral Sea Oscillation)

Click Here to Buy book on Flipkart

(D) एनवायरनमेंटल नेचुरल सिस्टमैटिक ऑसिलेशन (Environmental Natural Systematic Oscillation)

84. शीत ऋतु के दौरान, भारत के उत्तर-पश्चिमी मैदानों में पाला पड़ना एक सामान्य घटना है। यह मुख्य रूप से किसके द्वारा सुगम होता है?
(A) घने बादलों वाले आकाश के साथ लगातार उच्च वायुमंडलीय आर्द्रता
(B) मैदानों में लगातार बहने वाली तेज, अबाधित पश्चिमी पवनें
(C) ऊपरी स्तर की उष्णकटिबंधीय पूर्वी जेट स्ट्रीम की सक्रिय मौसमी उपस्थिति
(D) साफ़ आकाश और शांत पवनें

85. भारतीय जलवायु की विशेषताओं के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह मानसूनी पवन प्रणाली से अत्यधिक प्रभावित है।
II. तापमान और वर्षण में बड़े पैमाने पर क्षेत्रीय भिन्नताएँ हैं।
III. हिमालय उपमहाद्वीप को अत्यधिक ठंडी मध्य एशियाई पवनों से बचाता है।
IV. वर्ष के सभी बारह महीनों में समान रूप से वर्षा होती है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I, II और IV
(B) केवल I, II और III
(C) केवल II, III और IV
(D) केवल I, III और IV

86. भारत में कौन-सा क्षेत्र उच्चतम औसत वार्षिक वर्षा प्राप्त करता है?
(A) उत्तरी मैदान और पश्चिमी राजस्थान
(B) दक्कन का पठार और पूर्वी तटीय मैदान
(C) पश्चिमी तट और उत्तर-पूर्वी भारत
(D) मध्य उच्चभूमि और गुजरात

87. जून की शुरुआत में तीव्र गरज और बिजली के साथ आर्द्रता युक्त पवनों का अचानक आगमन क्या कहलाता है?
(A) मानसून का प्रस्फोट
(B) मानसून का विच्छेद
(C) मानसून का लौटना
(D) मानसून की वापसी

88. 'अल नीनो मोडोकी' क्या है?
(A) एक गंभीर जलवायु विसंगति जहाँ प्रशांत महासागर का संपूर्ण पश्चिमी क्षेत्र अत्यधिक ठंडा हो जाता है।
(B) एक पूरी तरह से सामान्य मानसून वर्ष जो महासागरीय सतह तापमान विसंगतियों की पूर्ण अनुपस्थिति द्वारा अभिलक्षित होता है।
(C) हिमालय की उच्च ऊँचाइयों पर विकसित होने वाली एक गंभीर, अत्यधिक स्थानीयकृत शीतकालीन तूफान प्रणाली।
(D) मध्य प्रशांत महासागर में जल का गर्म होना जिसके दोनों ओर शीतल जल होता है।

89. निम्नलिखित में से कौन-सी भारत की एक संरचनात्मक विशेषता है जो पश्चिमी तट के साथ पर्वतीय वर्षा में सहायता करती है?
(A) पूर्वी घाट
(B) पश्चिमी घाट
(C) अरावली पर्वतमाला
(D) विंध्याचल

90. कौन-सा भारतीय राज्य दक्षिण-पश्चिम मानसून के प्रवेश द्वार के रूप में कार्य करता है, जो इसे सबसे पहले प्राप्त करता है?
(A) तमिलनाडु
(B) गुजरात
(C) केरल
(D) पश्चिम बंगाल

NODIA

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (C) A और B दोनों सही हैं।
हिमालय पर्वतमाला भारत के लिए एक अत्यंत महत्वपूर्ण जलवायु विभाजक के रूप में कार्य करती है। यह ग्रीष्मकाल के दौरान दक्षिण-पश्चिम मानसूनी पवनों को उत्तर की ओर जाने से रोककर भारतीय उपमहाद्वीप में भारी वर्षा कराने में सहायता करती है। इसके अतिरिक्त, शीतकाल में यह मध्य एशिया और साइबेरिया से आने वाली अत्यधिक ठंडी तथा शुष्क ध्रुवीय हवाओं को भारत में प्रवेश करने से रोकती है, जिससे भारत अत्यंत तीव्र शीत लहरों से सुरक्षित रहता है।

2. (C) कर्क रेखा
कर्क रेखा 23.5° उत्तरी अक्षांश पर स्थित है और भारत को लगभग दो समान भागों में विभाजित करती है। इसका दक्षिणी भाग उष्णकटिबंधीय क्षेत्र में स्थित होने के कारण वर्ष भर उच्च तापमान का अनुभव करता है। दूसरी ओर, इसका उत्तरी भाग उपोष्णकटिबंधीय कटिबंध में स्थित है, जहाँ ग्रीष्मकाल अत्यंत गर्म तथा शीतकाल मध्यम ठंडा होता है। यह अक्षांशीय विभेदन भारत में तापमान वितरण की मुख्य विशेषता तय करता है।

3. (B) आगरा और दार्जिलिंग
सामान्यतः अक्षांश समान होने पर तापमान समान होना चाहिए, किंतु समुद्र तल से ऊँचाई बढ़ने के साथ तापमान में सामान्य ह्रास दर के कारण गिरावट आती है। क्षोभमंडल में प्रति 165 मीटर की ऊँचाई पर तापमान 1°C घट जाता है। आगरा और दार्जिलिंग लगभग एक ही अक्षांश पर स्थित हैं, परंतु दार्जिलिंग पर्वतीय क्षेत्र में स्थित होने के कारण आगरा की तुलना में ग्रीष्मकाल में अत्यधिक ठंडा रहता है। यह ऊँचाई के प्रभाव को दर्शाता है।

4. (D) P-2, Q-1, R-4, S-3
कोपेन के जलवायु वर्गीकरण में विभिन्न संकेतों का उपयोग किया जाता है। इसके अनुसार Amw उष्णकटिबंधीय मानसूनी जलवायु है जो पश्चिमी तट पर पाई जाती है। Cwg शुष्क शीत ऋतु वाली जलवायु है जो गंगा के विशाल मैदान को आच्छादित करती है। BShw अर्ध-शुष्क स्टेपी जलवायु को निरुपित करता है जो राजस्थान के अर्ध-शुष्क क्षेत्र में पाई जाती है। इसके अलावा Aw उष्णकटिबंधीय सवाना जलवायु है जो प्रायद्वीपीय पठार के अधिकांश भाग में विस्तृत है।

5. (A) सुदूर पश्चिमी राजस्थान
कोपेन की जलवायु वर्गीकरण पद्धति के अनुसार BWhw प्रकार की जलवायु गर्म और शुष्क मरुस्थलीय क्षेत्रों को दर्शाती है। यहाँ B का अर्थ शुष्क जलवायु, Wh का अर्थ गर्म मरुस्थल और w का अर्थ शुष्क शीतकाल होता है। भारत में यह जलवायु मुख्य रूप से सुदूर पश्चिमी राजस्थान में पाई जाती है, जहाँ थार का मरुस्थल फैला हुआ है। इस क्षेत्र में अत्यंत कम वर्षा, अत्यधिक दैनिक तापमान और उच्च वाष्पीकरण दर पाई जाती है।

6. (C) शुष्क शीतकाल
कोपेन की जलवायु वर्गीकरण प्रणाली में विभिन्न छोटे अक्षरों का उपयोग वर्षा के मौसमी वितरण को दर्शाने के लिए किया जाता है। अक्षर 'w' जर्मन शब्द 'Winter' से लिया गया है, जिसका शाब्दिक अर्थ शुष्क शीतकाल होता है। यह दर्शाता है कि शीत ऋतु में बहुत कम वर्षा होती है जबकि ग्रीष्मकाल में अधिकांश वर्षा प्राप्त होती है। भारत के उत्तरी मैदानों में पाई जाने वाली Cwg जलवायु में शीतकाल शुष्क और ग्रीष्मकाल आर्द्र रहता है।

7. (A) सूर्य की तिरछी किरणें और समुद्र से दूरी
शीत ऋतु में उत्तर भारत में कम तापमान का मुख्य कारण सूर्य का मकर रेखा पर सीधा चमकना है, जिसके कारण उत्तरी गोलार्ध में सूर्य की किरणें अत्यंत तिरछी पड़ती हैं। इसके अतिरिक्त उत्तर भारत का क्षेत्र समुद्र से काफी दूर स्थित है, जिससे यहाँ महाद्वीपीय जलवायु का प्रभाव रहता है। समुद्री प्रभाव की अनुपस्थिति के कारण तापमान में तेजी से गिरावट आती है। साथ ही मध्य एशिया से आने वाली ठंडी पवनें भी इस प्रभाव को बढ़ाती हैं।

8. (A) केवल I और II
शीत ऋतु के दौरान उत्तर-पश्चिम भारत में सूर्य के दक्षिणायन होने के कारण अत्यधिक ठंड पड़ती है, जिससे वहाँ उच्च वायुदाब का केंद्र बन जाता है। इस उच्च दाब के कारण पवनें भूभाग से समुद्र की ओर बहने लगती हैं, जो शुष्क होती हैं। चूँकि ये पवनें स्थल से चलती हैं, इसलिए इनमें नमी का अभाव होता है और संपूर्ण देश में भारी वर्षा नहीं होती। केवल बंगाल की खाड़ी से नमी प्राप्त करने वाली पवनें कोरोमंडल तट पर वर्षा करती हैं।

NODIA

9. (B) लू
ग्रीष्मकाल में भारत के उत्तरी और उत्तर-पश्चिमी मैदानों में दिन के समय बहने वाली अत्यधिक गर्म, शुष्क और कष्टदायक हवाओं को स्थानीय भाषा में लू कहा जाता है। यह मुख्य रूप से मई और जून के महीनों में चलती है। इन हवाओं का तापमान प्रायः 45°C से 50°C तक पहुँच जाता है। इन हवाओं का सीधा प्रभाव मानव स्वास्थ्य पर पड़ता है और इससे शरीर में जल की भारी कमी होने के कारण हीट स्ट्रोक का खतरा अत्यधिक बढ़ जाता है।

10. (B) III, I, II, IV
भारत में दक्षिण-पश्चिम मानसून के आगमन का एक निश्चित कालानुक्रमिक क्रम होता है। सबसे पहले मई के अंतिम सप्ताह में मानसून अंडमान और निकोबार द्वीप समूह पर पहुँचता है। इसके पश्चात् लगभग 1 जून को यह केरल तट पर दस्तक देता

है। मानसून की अरब सागर शाखा लगभग 10 जून तक मुंबई पहुँचती है। अंत में उत्तर भारत की ओर बढ़ते हुए यह जुलाई के प्रथम सप्ताह तक राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली में वर्षा प्रारम्भ करता है।

11. (D) गंगा के मैदान पर
अंतःउष्णकटिबंधीय अभिसरण क्षेत्र एक विशाल निम्न वायुदाब का गर्त है जहाँ उत्तर-पूर्वी और दक्षिण-पूर्वी व्यापारिक पवनें आपस में मिलती हैं। ग्रीष्मकाल में सूर्य के उत्तरायण होने के कारण यह गर्त उत्तर की ओर खिसक जाता है और जुलाई के महीने में गंगा के मैदान के ऊपर स्थित हो जाता है। इसे मानसून गर्त भी कहा जाता है। यह निम्न दाब केंद्र दक्षिण-पश्चिम मानसूनी पवनों को भारतीय उपमहाद्वीप की ओर आकर्षित करने में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

12. (A) बंगाल की खाड़ी
मानसून की वापसी या उत्तर-पूर्वी मानसून की अवधि के दौरान पवनें उत्तर-पूर्व दिशा से दक्षिण-पश्चिम की ओर चलती हैं। चूँकि ये पवनें भारतीय भूभाग के ऊपर से होकर बहती हैं, इसलिए इनमें नमी नहीं होती। परंतु जब ये पवनें बंगाल की खाड़ी के ऊपर से गुजरती हैं, तो वहाँ से प्रचुर मात्रा में जलवाष्प ग्रहण कर लेती हैं। नमी से युक्त ये पवनें आगे जाकर भारत के दक्षिण-पूर्वी तट यानी कोरोमंडल तट पर भारी वर्षा करती हैं।

13. (D) I, II, III और IV
भारतीय मानसूनी प्रणाली का संचालन अनेक वायुमंडलीय और महासागरीय कारकों के समेकित प्रभाव से होता है। ग्रीष्मकाल में तिब्बत के पठार का अत्यधिक गर्म होना ऊपरी वायुमंडल में तीव्र चक्रवातीय स्थिति उत्पन्न करता है। मेडागास्कर के पूर्व में स्थित उच्च दाब केंद्र पवनों को भारत की ओर धकेलता है। उप-उष्णकटिबंधीय पछुआ जेट स्ट्रीम का हिमालय के उत्तर में खिसकना तथा प्रायद्वीप के ऊपर उष्णकटिबंधीय पूर्वी जेट स्ट्रीम का स्थापित होना मानसून की क्रियाविधि को पूर्णतः सक्रिय करता है।

14. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
दक्षिण-पश्चिम मानसूनी पवनें जब हिंद महासागर से उत्तर की ओर बढ़ती हैं, तो भारतीय प्रायद्वीप के दक्षिणी सिरे से टकराती हैं। प्रायद्वीप की विशिष्ट त्रिभुजाकार स्थलाकृति और भौगोलिक उभार के कारण ये पवनें दो स्पष्ट धाराओं में विभाजित हो जाती हैं। पहली धारा पश्चिमी तट की ओर जाती है जिसे अरब सागर शाखा कहते हैं, जबकि दूसरी धारा पूर्वी भाग की ओर बहती है जिसे बंगाल की खाड़ी शाखा कहा जाता है। अतः भौगोलिक आकृति विभाजन का मुख्य कारण है।

15. (A) उत्तर-पश्चिमी राज्य
सितंबर के महीने में सूर्य के दक्षिणायन होने के कारण भारतीय उपमहाद्वीप पर तापमान घटने लगता है और वायुदाब बढ़ने लगता है। इसके परिणामस्वरूप अंतःउष्णकटिबंधीय अभिसरण क्षेत्र दक्षिण की ओर खिसकने लगता है। दक्षिण-पश्चिम मानसून की वापसी सबसे पहले उत्तर-पश्चिम भारत के राज्यों, विशेषकर राजस्थान से शुरू होती है। सितंबर के मध्य तक यह क्षेत्र मानसूनी पवनों से मुक्त हो जाता है और धीरे-धीरे पूरे देश से मानसून की वापसी की प्रक्रिया पूरी होती है।

16. (C) पूर्वी प्रशांत महासागर
अल नीनो एक जटिल महासागरीय और वायुमंडलीय परिघटना है जो पेरू के तट के पास पूर्वी विषुवतीय प्रशांत महासागर में उत्पन्न होती है। इस स्थिति में पेरु तट के ठंडे जल के स्थान पर अस्थाई रूप से गर्म जलधारा विकसित हो जाती है। समुद्री सतह का तापमान सामान्य से अधिक बढ़ जाने के कारण प्रशांत महासागर का वायुमंडलीय दाब पैटर्न बदल जाता है। यह वैश्विक जलवायु के साथ-साथ भारतीय मानसून को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर वर्षा को कम करता है।

17. (D) P-1, Q-2, R-3, S-4
विभिन्न महासागरीय परिघटनाओं का भारतीय मानसून पर सीधा प्रभाव पड़ता है। अल नीनो पूर्वी प्रशांत के गर्म होने के कारण भारतीय मानसूनी वर्षा को कम करता है, जबकि ला नीना प्रशांत के शीतल होने पर वर्षा को बढ़ाता है। धनात्मक हिंद महासागर द्विध्रुव की स्थिति में पश्चिमी हिंद महासागर गर्म और पूर्वी भाग ठंडा होता है, जिससे मानसून मजबूत होता है। इसके विपरीत ऋणात्मक द्विध्रुव में पूर्वी भाग गर्म होने से भारत में मानसूनी वर्षा कम होती है।

18. (C) यह सामान्य से अधिक मानसूनी वर्षा लाती है।
ला नीना परिघटना अल नीनो के ठीक विपरीत होती है, जिसमें मध्य और पूर्वी विषुवतीय प्रशांत महासागर का जल सामान्य से अधिक ठंडा हो जाता है। इस स्थिति के कारण पश्चिमी प्रशांत महासागर और हिंद महासागर क्षेत्र में उच्च नमी तथा अनुकूल निम्न वायुदाब का निर्माण होता है। इसके परिणामस्वरूप भारत में दक्षिण-पश्चिम मानसून अत्यधिक मजबूत हो जाता है, जिससे देश भर में सामान्य से अधिक वर्षा होती है और कृषि उत्पादन तथा जल संसाधनों को लाभ पहुँचता है।

19. (A) पश्चिमी घाट → गंगा का मैदान → पश्चिमी राजस्थान
भारत में वर्षा का वितरण पर्वतीय संरचना और मानसूनी पवनों की दिशा पर निर्भर करता है। पश्चिमी घाट में अरब सागर की मानसूनी हवाओं से अत्यधिक पर्वतीय वर्षा होती है, जहाँ वार्षिक वर्षा 250 सेमी से अधिक होती है। गंगा के मैदान में पूर्व से पश्चिम की ओर जाने पर वर्षा घटती है और यह 100 से 150 सेमी के मध्य रहती है। अंत में पश्चिमी राजस्थान मरुस्थलीय क्षेत्र होने के कारण सबसे कम वर्षा (20 सेमी से कम) प्राप्त करता है।

20. (D) जैसलमेर
दिए गए स्थानों में से वर्षा की मात्रा के आधार पर वर्गीकरण करने पर विषमता स्पष्ट होती है। चेरापूंजी, मौसिनराम और महाबलेश्वर ऐसे स्थान हैं जहाँ अत्यधिक वर्षा होती है। मौसिनराम और चेरापूंजी मेघालय की पहाड़ियों पर स्थित होने के कारण विश्व में सर्वाधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में शामिल हैं, जबकि महाबलेश्वर पश्चिमी घाट में स्थित भारी वर्षा वाला क्षेत्र है। इसके विपरीत जैसलमेर थार मरुस्थल में स्थित अत्यंत शुष्क स्थान है जहाँ नगण्य वर्षा होती है।

Downloaded from www.pdf.tube

21. (A) थार मरुस्थल
ग्रीष्मकाल में उत्तर-पश्चिम भारत का थार मरुस्थल तीव्र सूर्यताप प्राप्त करता है। इस क्षेत्र की रेतीली मृदा ऊष्मा को तेजी से अवशोषित करती है, जिससे यहाँ का तापमान अत्यधिक बढ़ जाता है। मई और जून के महीनों में थार मरुस्थल और आसपास के क्षेत्रों में दैनिक अधिकतम तापमान अक्सर 45°C से 48°C तक पहुँच जाता है। यह अत्यधिक तापन एक मजबूत स्थानीय निम्न वायुदाब केंद्र का निर्माण करता है, जो आगे चलकर मानसून को आकर्षित करने में सहायक होता है।

22. (A) केवल I और II
उष्णकटिबंधीय चक्रवातों के निर्माण के लिए विशिष्ट भौतिक परिस्थितियों की आवश्यकता होती है। इसके लिए समुद्री सतह का तापमान 27°C से अधिक होना अनिवार्य है ताकि पर्याप्त जलवाष्प बन सके। साथ ही चक्रवातीय घूर्णन उत्पन्न करने के लिए पर्याप्त कोरियोलिस बल की उपस्थिति आवश्यक है। हालाँकि ऊर्ध्वाधर पवन गति में उच्च भिन्नता या उच्च पवन अपरुपण चक्रवात के विकास में बाधा डालता है; अतः केवल निम्न पवन अपरुपण ही चक्रवात के विकास के लिए अनुकूल माना जाता है।

23. (A) कोरोमंडल तट
मानसून के लौटने की अवधि अर्थात् अक्टूबर और नवंबर के महीनों में बंगाल की खाड़ी में तीव्र उष्णकटिबंधीय चक्रवात उत्पन्न होते हैं। ये चक्रवात पश्चिम और उत्तर-पश्चिम दिशा में बढ़ते हुए भारत के पूर्वी तट से टकराते हैं। इनमें से कोरोमंडल तट, जो आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु का तटीय भाग है, इन चक्रवातों से सबसे अधिक प्रभावित होता है। इन तूफानों के कारण तटीय क्षेत्रों में भारी वर्षा, तेज हवाएं और विनाशकारी समुद्री लहरें देखने को मिलती हैं।

24. (D) चक्षु
उष्णकटिबंधीय चक्रवात के केंद्र को उसकी आँख या 'चक्षु' कहा जाता है। यह चक्रवात का सबसे शांत और विशिष्ट भाग होता है जहाँ वायुदाब न्यूनतम होता है। इस क्षेत्र में हवा ऊपर से नीचे की ओर अवतलित होती है, जिससे यहाँ वर्षा नहीं होती और आकाश पूरी तरह से साफ़ रहता है। चक्षु के चारों ओर अत्यंत विशाल और विनाशकारी बादलों की दीवार होती है जिसे चक्षुभित्ति कहते हैं, जहाँ सबसे तेज हवाएं और मूसलाधार वर्षा होती है।

25. (C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
उत्तर-पश्चिम भारत में शीतकाल के दौरान होने वाली वर्षा रबी फसलों, विशेषकर गेहूं की खेती के लिए अत्यंत लाभदायक होती है। हालाँकि यह शीतकालीन वर्षा दक्षिण-पश्चिम मानसून के लौटने के कारण नहीं होती, बल्कि भूमध्य सागर से उत्पन्न होने वाले पश्चिमी विक्षोभों के कारण होती है। ये विक्षोभ पछुआ जेट स्ट्रीम द्वारा भारत लाए जाते हैं। अतः शीतकाल में उत्तर भारत में वर्षा होने का कारण लौटता मानसून न होकर भूमध्यसागरीय चक्रवातीय विक्षोभ है।

26. (C) मावट
राजस्थान में शीत ऋतु के दौरान होने वाली वर्षा को स्थानीय भाषा में 'मावट' कहा जाता है। यह वर्षा भूमध्य सागर में उत्पन्न होने वाले शीतोष्ण कटिबंधीय चक्रवातों या पश्चिमी विक्षोभों के कारण होती है। जिन्हें उप-उष्णकटिबंधीय पछुआ जेट स्ट्रीम भारतीय उपमहाद्वीप की ओर लाती है। यह मावट राजस्थान में शीतकालीन रबी फसलों, विशेषकर गेहूं, चना और सरसों की पैदावार को बढ़ाने में एक महत्वपूर्ण संजीवनी का कार्य करती है।

27. (D) जैसलमेर जिला
राजस्थान का जैसलमेर जिला थार मरुस्थल के सुदूर पश्चिमी भाग में स्थित है। यह क्षेत्र मानसूनी पवनों की पहुँच से बहुत दूर होने तथा अरावली पर्वतमाला के समानांतर होने के कारण नगण्य वर्षा प्राप्त करता है। यहाँ की औसत वार्षिक वर्षा 15 सेमी से भी कम है और वर्षा की परिवर्तनशीलता अत्यधिक उच्च है। इसी कारण जैसलमेर में बारंबार और गंभीर सूखे की स्थिति उत्पन्न होती है, जिससे यह राज्य में सर्वाधिक सूखा-प्रवण जिला बन जाता है।

28. (B) केवल I, III और IV
भारत के बाढ़-प्रवण क्षेत्रों में ब्रह्मपुत्र घाटी अत्यधिक संवेदनशील है क्योंकि यहाँ भारी वर्षा के साथ-साथ नदियों में भारी गाद जमा होती है। चक्रवाती तूफान पूर्वी तटीय डेल्टा क्षेत्रों में जलस्तर बढ़ाकर गंभीर बाढ़ लाते हैं। इसके अलावा पर्वतीय क्षेत्रों में वनों की कटाई से मृदा अपरदन बढ़ा है, जिससे उत्तरी मैदानों में नदियों का जलस्तर तेजी से बढ़ता है। इसके विपरीत प्रायद्वीपीय नदियाँ कठोर चट्टानी धरातल पर बहने के कारण हिमालयी नदियों से कम बाढ़-प्रवण हैं।

NODIA

29. (B) नई दिल्ली
भारतीय मौसम विज्ञान विभाग भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के अंतर्गत कार्य करने वाली प्रमुख एजेंसी है। इसकी स्थापना 1875 में हुई थी और इसका प्रारंभिक मुख्यालय कोलकाता में बनाया गया था। बाद में इसे शिमला और फिर पुणे स्थानांतरित किया गया। अंततः वर्ष 1944 में इसका स्थायी मुख्यालय नई दिल्ली में स्थापित किया गया। यह विभाग देश में मौसम पूर्वानुमान, मानसूनी गतिविधियों और भूकंपीय घटनाओं की निगरानी के लिए उत्तरदायी है।

30. (B) अधिक बार अत्यधिक वर्षा की घटनाएँ और लंबी शुष्क अवधि।
ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन ने भारतीय मानसून के पारंपरिक स्वरुप को अनिश्चित बना दिया है। इसके प्रभाव से मानसून के दौरान कुल वर्षा के दिनों की संख्या घटी है, परंतु अल्प समय में अत्यधिक भारी वर्षा की घटनाओं में वृद्धि हुई है। इसके साथ ही मानसूनी ऋतु के दौरान लंबी शुष्क अवधियों की आवृत्ति भी बढ़ी है। वर्षा का यह असमान और अप्रत्याशित वितरण कृषि, जल प्रबंधन और आपदा प्रबंधन के लिए नई चुनौतियां खड़ी कर रहा है।

31. (A) मानसून का जुआ
भारत की कृषि प्रणाली ऐतिहासिक रूप से मानसूनी वर्षा पर अत्यधिक निर्भर रही है। देश की कुल कृषि भूमि का एक बड़ा भाग सिंचाई सुविधाओं के अभाव में केवल मानसून पर आधारित है। यदि मानसून समय पर और पर्याप्त होता है, तो कृषि उत्पादन उत्कृष्ट रहता है और देश की आर्थिक वृद्धि दर बढ़ती है। इसके विपरीत मानसून खराब रहने पर खाद्यान्न संकट और मंदी की स्थिति बन जाती है। इसलिए भारतीय बजट को पारंपरिक रूप से 'मानसून का जुआ' कहा जाता है।

32. (C) P-2, Q-4, R-3, S-1
उप-उष्णकटिबंधीय पछुआ जेट स्ट्रीम ग्रीष्मकाल में हिमालय के उत्तर में स्थानांतरित हो जाती है, जिससे भारत में मानसून का आगमन सुगम होता है। उष्णकटिबंधीय पूर्वी जेट स्ट्रीम ग्रीष्मकाल में प्रायद्वीपीय भारत के ऊपर स्थापित होकर मानसूनी अवदाब लाती है। सोमाली जेट हिंद महासागर से बहते हुए दक्षिण-पश्चिम मानसून को तीव्र गति प्रदान करती है। वहीं पश्चिमी विक्षोभ भूमध्य सागर से नमी लाकर शीतकाल में उत्तर भारत के मौसम और वर्षा को सीधे प्रभावित करते हैं।

33. (D) उष्णकटिबंधीय पूर्वी जेट स्ट्रीम
ग्रीष्म ऋतु के दौरान तिब्बत के पठार के अत्यधिक गर्म होने से ऊपरी वायुमंडल में एक तीव्र हवा का प्रवाह उत्पन्न होता है, जिसे उष्णकटिबंधीय पूर्वी जेट स्ट्रीम कहा जाता है। यह जेट स्ट्रीम लगभग 13° उत्तरी अक्षांश के पास भारतीय प्रायद्वीप के ऊपर से गुजरती है। यह जेट स्ट्रीम बंगाल की खाड़ी में उष्णकटिबंधीय अवदाबों को निर्मित करने और उन्हें भारत की मुख्यभूमि की ओर धकेलेने में मुख्य भूमिका निभाती है, जिससे मानसूनी वर्षा का वितरण निर्धारित होता है।

34. (C) पूर्वी ढाल
दक्षिण-पश्चिम मानसून की अरब सागर शाखा जब भारत के पश्चिमी तट पर पहुँचती है, तो यह पश्चिमी घाट की ऊँची पर्वत श्रृंखलाओं से टकराती है। इसके परिणामस्वरूप पश्चिमी ढाल पर अत्यधिक पर्वतीय वर्षा होती है। परंतु जब ये पवनें पर्वत को पार करके पूर्वी ढाल की ओर उतरती हैं, तो नीचे उतरते समय उनका तापमान बढ़ता है और आर्द्रता घट जाती है। इसी कारण पश्चिमी घाट का पूर्वी ढाल एक शुष्क वृष्टि छाया क्षेत्र बन जाता है।

35. (B) मौसम / ऋतु
अंग्रेजी भाषा का 'मानसून' शब्द मूल रूप से अरबी भाषा के शब्द 'मौसम' से व्युत्पन्न हुआ है। अरबी भाषा में 'मौसम' शब्द का शाब्दिक अर्थ ऋतु या मौसम होता है। प्राचीन काल में अरब नाविक हिंद महासागर में बहने वाली उन पवनों के लिए इस शब्द का प्रयोग करते थे जो वर्ष में दो बार अपनी दिशा पूरी तरह से बदल लेती थीं। इस प्रकार मानसून उन पवनों को संदर्भित करता है जिनकी दिशा ऋतु परिवर्तन के साथ पूरी तरह उलट जाती है।

36. (B) केवल I और III
भारतीय मौसम विज्ञान विभाग जून से सितंबर तक की मानसूनी अवधि के लिए देशव्यापी दीर्घकालिक पूर्वानुमान जारी करता है। यह पूर्वानुमान पूरी तरह से उपग्रह डेटा पर निर्भर न होकर उन्नत सांख्यिकीय और गतिकीय मॉडलों का उपयोग करता है। पूर्वानुमान तैयार करने में वैश्विक जलवायु मापदंडों जैसे प्रशांत और हिंद महासागरों के समुद्री सतह का तापमान, अल नीनो तथा हिंद महासागर द्विध्रुव की स्थितियों का विश्लेषण किया जाता है। अतः यह एक बहु-मापदंड आधारित वैज्ञानिक प्रणाली है।

37. (A) 1875
भारतीय मौसम विज्ञान विभाग की आधिकारिक स्थापना वर्ष 1875 में ब्रिटिश शासनकाल के दौरान हुई थी। 1864 में कलकत्ता में आए भीषण चक्रवात और उसके बाद पड़े भयंकर सूखे के कारण एक केंद्रीय मौसम सेवा की आवश्यकता महसूस की गई थी। इसके प्रथम महानिदेशक एच. एफ. ब्लैनफोर्ड को नियुक्त किया गया था। स्थापना के पश्चात् से यह संस्थान भारत में मौसम संबंधी प्रेक्षणों, वर्षा की मात्रा के मापन और चक्रवात चेतावनी प्रणालियों को निरंतर संचालित कर रहा है।

38. (C) आम्र वृष्टि
ग्रीष्मकाल के अंत में अर्थात् अप्रैल और मई के महीनों में दक्षिण भारत के केरल और तटीय कर्नाटक क्षेत्रों में मानसून-पूर्व की वर्षा होती है। इन स्थानीय बौछारों को 'आम्र वृष्टि' या मैंगो शावर कहा जाता है। यह वर्षा आम के फलों को समय से पहले पकने और झड़ने से बचाने में अत्यंत सहायता करती है। इसी प्रकार की मानसून-पूर्व बौछारों को कर्नाटक के कॉफी उत्पादक क्षेत्रों में 'चेरी ब्लॉसम' या 'कॉफी शावर' के नाम से जाना जाता है।

39. (A) काल बैसाखी
मानसून-पूर्व ऋतु के दौरान अप्रैल और मई के महीनों में पश्चिम बंगाल और पड़ोसी राज्यों में भयंकर गरज के साथ तूफान आते हैं। इन तूफानों में तीव्र गति से हवाएं चलती हैं और मूसलाधार वर्षा होती है। स्थानीय भाषा में इन्हें 'काल बैसाखी' कहा जाता है, जिसका अर्थ बैसाख महीने में आने वाली आफत होता है। यद्यपि ये तूफान जन-धन की भारी हानि पहुँचाते हैं, परंतु ये चाय, जूट और चावल की फसलों के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होते हैं।

40. (D) मानसून के दौरान कुछ दिनों या हफ्तों तक रहने वाली वर्षाहीन अवधि।
दक्षिण-पश्चिम मानसून की अवधि के दौरान जब कुछ दिनों या हफ्तों तक लगातार वर्षा रुक जाती है और मौसम शुष्क हो जाता है, तो इस स्थिति को 'मानसून विच्छेद' या 'मानसून ब्रेक' कहा जाता है। ऐसा मुख्य रूप से अंतःउष्णकटिबंधीय अभिसरण क्षेत्र या मानसून गर्त के उत्तर या दक्षिण की ओर खिसकने के कारण होता है। इस दौरान मैदानी क्षेत्रों में वर्षा थम जाती है जबकि हिमालय के पाद प्रदेशों में भारी वर्षा होने से मैदानी नदियों में बाढ़ आती है।

Click Here to Buy book on Amazon

41. (B) अराकान पहाड़ियाँ
दक्षिण-पश्चिम मानसून की बंगाल की खाड़ी शाखा जब उत्तर की ओर बढ़ती है, तो म्यांमार के तट पर स्थित अराकान योमा पर्वत श्रृंखला से टकराती है। अराकान पहाड़ियों का यह प्राकृतिक भौगोलिक संरेखण मानसूनी पवनों के एक बड़े भाग को म्यांमार में प्रवेश करने से रोक देता है। इसके परिणामस्वरुप ये नमी युक्त पवनें पश्चिम और उत्तर-पश्चिम दिशा की ओर मुड़कर भारतीय उपमहाद्वीप के विशाल गंगा के मैदानी क्षेत्रों तथा उत्तर-पूर्वी भारत में प्रवेश कर जाती हैं।

42. (C) दक्षिण हिंद महासागर में उच्च दाब वाला क्षेत्र
'मस्करेन हाई' दक्षिण हिंद महासागर में मेडागास्कर द्वीप के पूर्व में स्थित एक विशाल अर्ध-स्थायी उच्च वायुदाब का क्षेत्र है। ग्रीष्मकाल में यह उच्च दाब क्षेत्र अत्यधिक मजबूत हो जाता है। यहाँ से उत्पन्न होने वाली हवाएं विषुवतीय रेखा को पार करने के बाद कोरियोलिस बल के कारण दाहिनी ओर मुड़कर भारत के दक्षिण-पश्चिम मानसून के रूप में आगे बढ़ती हैं। इस उच्च दाब केंद्र की तीव्रता सीधे तौर पर भारतीय मानसून की ताकत और वर्षा की मात्रा को निर्धारित करती है।

43. (C) 20° से 25° उत्तरी अक्षांश
तापीय विषुवत वृत्त वह रेखा है जो पृथ्वी पर उच्चतम औसत वार्षिक तापमान वाले स्थानों को जोड़ती है। ग्रीष्म ऋतु में उत्तरी गोलार्ध में सूर्य के सीधे चमकने के कारण तापीय विषुवत वृत्त उत्तर की ओर खिसक जाता है। जुलाई महीने के दौरान यह खिसककर लगभग 20° से 25° उत्तरी अक्षांश के आसपास गंगा के मैदान पर स्थित हो जाता है। इसके परिणामस्वरुप यहाँ अत्यधिक निम्न दाब गर्त बनता है जो मानसूनी हवाओं को आकर्षित करता है।

44. (D) उपर्युक्त सभी।
राजस्थान में दक्षिण-पश्चिम मानसून के दौरान बहुत कम वर्षा होने के पीछे अनेक भौगोलिक कारण जिम्मेदार हैं। अरावली पर्वत श्रृंखला की स्थिति अरब सागर शाखा की पवनों की दिशा के समानांतर है, जिससे वे बिना अवरोध के सीधे निकल जाती हैं। इसके अतिरिक्त बंगाल की खाड़ी शाखा उत्तर भारत को पार करते हुए यहाँ पहुँचते-पहुँचते अपनी नमी खो देती है। साथ ही थार मरुस्थल की अत्यधिक गर्मी वायु की आर्द्रता को संघनित होने से रोकती है।

45. (B) केवल II, III और IV
अंतःउष्णकटिबंधीय अभिसरण क्षेत्र भूमध्य रेखा के पास स्थित एक व्यापक निम्न वायुदाब का गर्त है, न कि उच्च दाब का। इस क्षेत्र में उत्तर-पूर्वी और दक्षिण-पूर्वी व्यापारिक पवनें आकर आपस में अभिसरित होती हैं। ग्रीष्म ऋतु में सूर्य के उत्तर की ओर बढ़ने के साथ यह गर्त भी खिसककर भारतीय उपमहाद्वीप में गंगा के मैदान पर आ जाता है। यहाँ इसकी उपस्थिति मानसून गर्त का निर्माण करती है, जो भारत में मानसूनी वर्षा को गहराई से संचालित करती है।

46. (B) अक्टूबर की गर्मी
दक्षिण-पश्चिम मानसून की वापसी के समय अर्थात् अक्टूबर महीने में आकाश पूरी तरह से साफ हो जाता है और सूर्य की किरणें सीधी पड़ती हैं। इससे दिन के तापमान में तेजी से वृद्धि होती है। इसके साथ ही हवा में मानसून की नमी पहले से विद्यमान रहती है। उच्च तापमान और अत्यधिक आर्द्रता के इस संयुक्त प्रभाव के कारण मौसम अत्यंत उमसभरा और कष्टदायक हो जाता है। इस मौसमी स्थिति को सामान्यतः 'अक्टूबर की गर्मी' कहा जाता है।

47. (A) यह स्थल से समुद्र की ओर चलता है।
उत्तर-पूर्वी मानसून शीतकाल के दौरान सक्रिय होता है, जब पवनों की दिशा भारतीय भूभाग से हिंद महासागर की ओर होती है। चूँकि ये पवनें विशाल स्थलीय भागों के ऊपर से होकर बहती हैं, इसलिए इनमें नमी का पूर्ण अभाव होता है। शुष्क होने के कारण ये पवनें भारत के अधिकांश भागों में कोई वर्षा नहीं करती हैं। केवल जब इनका कुछ भाग बंगाल की खाड़ी के ऊपर से गुजरता है, तो नमी प्राप्त करके कोरोमंडल तट पर वर्षा करता है।

NODIA

48. (C) 118 सेमी
भारत की औसतन वार्षिक वर्षा लगभग 118 सेमी दर्ज की जाती है, हालाँकि इसमें अत्यधिक क्षेत्रीय भिन्नता पाई जाती है। पश्चिमी घाट और उत्तर-पूर्वी राज्यों में जहाँ वार्षिक वर्षा 200 से 400 सेमी से अधिक होती है, वहीं राजस्थान के थार मरुस्थल और लद्दाख के शीत मरुस्थल में यह 15 सेमी से भी कम रहती है। मानसूनी पवनों की अनिश्चितता और भौगोलिक विविधताओं के कारण देश में वर्षा का वितरण अत्यंत असमान और भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में भिन्न रहता है।

49. (D) यह हिमालय के वृष्टि छाया क्षेत्र में स्थित है।
लेह लद्दाख क्षेत्र में स्थित है जहाँ अत्यधिक कम (10 सेमी से कम) वार्षिक वर्षा दर्ज की जाती है। इसका मुख्य भौगोलिक कारण यह है कि लेह महान हिमालय पर्वत श्रृंखला के उत्तर में उसके वृष्टि छाया क्षेत्र में स्थित है। दक्षिण-पश्चिम मानसून की आर्द्रता से भरी पवनें दक्षिण की ओर से आते समय हिमालय की विशाल ऊंचाइयों को पार नहीं कर पातीं और अपनी सारी नमी दक्षिणी ढालों पर ही गिरा देती हैं। अतः लेह शुष्क रहता है।

50. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
दक्षिण-पश्चिम मानसून ऋतु के दौरान तमिलनाडु का तटीय भाग सूखा रहता है। इसके दो मुख्य कारण हैं। प्रथम, तमिलनाडु तट बंगाल की खाड़ी शाखा की मानसूनी पवनों की दिशा के समानांतर स्थित है, जिससे ये हवाएं बिना टकराए निकल जाती हैं। द्वितीय, दक्षिण-पश्चिम मानसून की अरब सागर शाखा पश्चिमी घाट से टकराकर अपनी नमी पश्चिमी ढाल पर गिरा देती है, जिससे तमिलनाडु का तटीय मैदान उसके वृष्टि छाया क्षेत्र में आ जाता है।

51. (B) यह क्रिसमस के आसपास दक्षिण अमेरिकी तट से दूर प्रकट होता है।
'अल नीनो' एक स्पैनिश शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ 'छोटा बच्चा' या 'बाल ईसा' होता है। यह नाम पेरू के स्थानीय मछुआरों द्वारा दिया गया था क्योंकि यह उष्ण समुद्री जलधारा आमतौर पर दिसंबर के अंत में क्रिसमस के पर्व के आसपास पेरू और इक्वाडोर के तटीय क्षेत्रों में दिखाई देती है। यह घटना प्रशांत महासागर के सतह जल को असामान्य रुप से गर्म कर देती है, जिसका प्रभाव दुनिया भर की मौसमी प्रणालियों और भारतीय मानसून पर पड़ता है।

52. (D) प्रशांत महासागर
वॉकर परिसंचरण विषुवतीय प्रशांत महासागर के ऊपर पाई जाने वाली वायुमंडलीय वायु परिसंचरण प्रणाली है। सामान्य परिस्थितियों में प्रशांत महासागर के पश्चिमी भाग में निम्न वायुदाब और पूर्वी भाग में उच्च वायुदाब होता है, जिससे हवाएं पूर्व से पश्चिम की ओर बहती हैं। यह परिसंचरण महासागरीय जल के तापमान में होने वाले परिवर्तनों से गहराई से प्रभावित होता है। जब वॉकर परिसंचरण कमजोर होता है, तो अल नीनो की स्थिति बनती है जो भारतीय मानसून को प्रतिकूल प्रभावित करती है।

53. (A) पश्चिमी हिंद महासागर में सामान्य से अधिक गर्म और पूर्वी भाग में शीतल समुद्री सतह का तापमान।
हिंद महासागर द्विध्रुव हिंद महासागर के पश्चिमी और पूर्वी हिस्सों के बीच समुद्री सतह के तापमान का अंतर है। धनात्मक हिंद महासागर द्विध्रुव तब बनता है जब अरब सागर से सटा पश्चिमी हिंद महासागर का क्षेत्र सामान्य से अधिक गर्म हो जाता है और इंडोनेशिया के पास पूर्वी हिंद महासागर का क्षेत्र अपेक्षाकृत ठंडा हो जाता है। यह स्थिति पश्चिमी भाग में वाष्पीकरण और निम्न दाब को बढ़ाती है, जो भारतीय मानसूनी पवनों को अधिक ऊर्जा प्रदान करती है।

54. (C) यह मानसूनी वर्षा को बढ़ाता है, जो अक्सर अल नीनो के प्रभाव को बेअसर करता है।
धनात्मक हिंद महासागर द्विध्रुव भारतीय ग्रीष्मकालीन मानसून के लिए अत्यंत अनुकूल स्थिति मानी जाती है। इसके घटित होने पर पश्चिमी हिंद महासागर में अधिक वाष्पीकरण होता है जिससे भारत की ओर बढ़ने वाली मानसूनी हवाओं में नमी की मात्रा बढ़ जाती है। यह धनात्मक अवस्था भारत में वर्षा को बढ़ाती है। कई बार यदि अल नीनो का नकारात्मक प्रभाव सक्रिय हो, तब भी एक मजबूत धनात्मक हिंद महासागर द्विध्रुव उस प्रभाव को बेअसर करके भारत में अच्छी वर्षा करा देता है।

55. (A) उत्तर-पश्चिम भारत → मध्य भारत → दक्षिणी प्रायद्वीप
दक्षिण-पश्चिम मानसून की वापसी का एक स्पष्ट दिशात्मक क्रम होता है। सूर्य के दक्षिणायन होने के साथ मानसूनी गर्त दक्षिण की ओर खिसकता है। इसकी वापसी सबसे पहले सितंबर के आरंभ में उत्तर-पश्चिम भारत से शुरु होती है। इसके पश्चात् अक्टूबर के मध्य तक मानसूनी पवनें मध्य भारत के क्षेत्रों से हट जाती हैं। अंत में नवंबर और दिसंबर के महीनों में यह दक्षिणी प्रायद्वीप से पूरी तरह वापस लौट जाता है, जिससे शीतकालीन मौसम स्थापित होता है।

56. (A) पश्चिम से उत्तर-पश्चिम
बंगाल की खाड़ी में निर्मित होने वाले उष्णकटिबंधीय चक्रवात व्यापारिक पवनों के प्रभाव में आकर मुख्य रुप से पश्चिम से उत्तर-पश्चिम दिशा की ओर गति करते हैं। इस दिशा में बढ़ते हुए ये चक्रवात भारत के पूर्वी तटीय राज्यों जैसे तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, ओडिशा और पश्चिम बंगाल से टकराते हैं। तट से टकराने के पश्चात् आंतरिक भूभाग में प्रवेश करने पर नमी की आपूर्ति रुक जाने के कारण ये चक्रवात धीरे-धीरे कमजोर होकर समाप्त हो जाते हैं।

57. (B) WMO / ESCAP पैनल
उत्तरी हिंद महासागर क्षेत्र में बनने वाले उष्णकटिबंधीय चक्रवातों के नामकरण की पारदर्शी व्यवस्था विश्व मौसम विज्ञान संगठन (WMO) और एशिया-प्रशांत के लिए संयुक्त राष्ट्र आर्थिक और सामाजिक आयोग (ESCAP) के संयुक्त पैनल द्वारा संचालित की जाती है। इस पैनल में भारत सहित क्षेत्र के 13 सदस्य देश शामिल हैं। प्रत्येक सदस्य देश द्वारा सुझाए गए संभावित नामों की सूची में से क्रमबद्ध तरीके से चक्रवातों को आधिकारिक नाम आवंटित किए जाते हैं।

58. (C) उच्च ऊर्ध्वाधर पवन अपरुपण
बंगाल की खाड़ी में चक्रवात के अत्यधिक तीव्र होने के लिए कई कारक जिम्मेदार होते हैं। ऊर्ध्वाधर पवन अपरुपण वायुमंडल के निचले और ऊपरी स्तरों के बीच हवा की गति और दिशा का अंतर होता है। जब ऊर्ध्वाधर पवन अपरुपण उच्च होता है, तो यह चक्रवात की लंबवत संरचना को तोड़ देता है और ऊष्मा को छिन्न-भिन्न कर देता है, जिससे चक्रवात तीव्र नहीं हो पाता। अतः केवल निम्न पवन अपरुपण ही चक्रवात के विकास के अनुकूल होता है।

59. (D) पछुआ जेट स्ट्रीम
पश्चिमी विक्षोभ भूमध्यसागरीय क्षेत्र में उत्पन्न होने वाले बहिर्उष्णकटिबंधीय चक्रवात होते हैं। शीतकाल में जब सूर्य दक्षिणायन होता है, तो उच्च वायुमंडल में बहने वाली उप-उष्णकटिबंधीय पछुआ जेट स्ट्रीम दक्षिण की ओर खिसककर हिमालय के दक्षिण में प्रवाहित होने लगती है। यह पछुआ जेट स्ट्रीम भूमध्य सागर से नमी लेकर चलने वाले इन पश्चिमी विक्षोभों को पूर्व की ओर खींचकर भारतीय उपमहाद्वीप में लाती है, जिससे उत्तर भारत में शीतकालीन वर्षा होती है।

60. (A) पर्वतीय क्षेत्रों में हिमपात और मैदानों में वर्षा
शीतकाल में आने वाले पश्चिमी विक्षोभ जब भारत के उत्तर-पश्चिमी भागों में पहुँचते हैं, तो उनकी वर्षा का स्वरुप धरातलीय ऊँचाई के अनुसार बदल जाता है। जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड के उच्च पर्वतीय क्षेत्रों में अत्यधिक कम तापमान होने के कारण यह वर्षण मुख्य रुप से हिमपात के रुप में होता है। इसके विपरीत पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के मैदानी भागों में यह विक्षोभ हल्की से मध्यम वर्षा के रुप में जल प्रदान करता है।

Downloaded from www.pdf.tube

61. (C) दीर्घकालिक औसत के 50% से अधिक
भारतीय मौसम विज्ञान विभाग वर्षा की कमी के आधार पर सूखे का वर्गीकरण करता है। जब किसी मौसम संबंधी उप-खंड में प्राप्त होने वाली वर्षा उसके दीर्घकालिक औसत से 26% से 50% तक कम होती है, तो उसे 'सामान्य सूखा' माना जाता है। परंतु जब वर्षा की यह कमी दीर्घकालिक औसत के 50% से अधिक हो जाती है, तो उसे 'गंभीर सूखा' घोषित किया जाता है। ऐसी स्थिति में जल संसाधनों और फसलों को भारी क्षति पहुँचती है।

62. (B) पश्चिमी जिले
भारत सरकार द्वारा मरुस्थलीय क्षेत्रों में पारिस्थितिक संतुलन बहाल करने और सूखे के प्रभावों को कम करने के लिए 'मरुस्थल विकास कार्यक्रम' प्रारंभ किया गया था। राजस्थान में यह कार्यक्रम मुख्य रूप से राज्य के पश्चिमी जिलों पर केंद्रित है, जिनमें बाड़मेर, जैसलमेर, बीकानेर, जोधपुर और जालौर शामिल हैं। इन जिलों में थार मरुस्थल का विस्तार है, जहाँ जल संरक्षण, वनीकरण और मृदा अपरदन को रोकने के उपाय करके मरुस्थलीकरण को नियंत्रित किया जाता है।

63. (A) बिहार
कोसी नदी नेपाल के हिमालयी क्षेत्र से निकलकर भारत के बिहार राज्य में प्रवेश करती है। मानसूनी ऋतु में यह नदी अपने साथ भारी मात्रा में अवसाद और गाद बहाकर लाती है। इस गाद के जमाव के कारण नदी का तल भर जाता है और यह बार-बार अपना प्राकृतिक मार्ग बदल लेती है। मार्ग बदलने के कारण बिहार के उत्तरी मैदानी क्षेत्रों में अचानक और अत्यधिक विनाशकारी बाढ़ आती है। इसी तबाही के कारण कोसी को 'बिहार का शोक' कहा जाता है।

64. (C) ऐतिहासिक डेटा और पूर्ववर्ती मापदंड
भारतीय मौसम विज्ञान विभाग द्वारा उपयोग किए जाने वाले सांख्यिकीय पूर्वानुमान मॉडल भूतकाल की जलवायु प्रणालियों के संबंधों पर आधारित होते हैं। इस प्रकार के मॉडल में मानसून का अनुमान लगाने के लिए कई दशकों का ऐतिहासिक डेटा और मानसून से पूर्व के विभिन्न वैश्विक वायुमंडलीय एवं महासागरीय मापदंडों की आवश्यकता होती है। इन ऐतिहासिक आंकड़ों के बीच गणितीय और रेखीय संबंध स्थापित करके ही आगामी मानसून ऋतु की कुल वर्षा की मात्रा का सांख्यिकीय अनुमान लगाया जाता है।

65. (D) P-4, Q-3, R-2, S-1
मानसून के आगमन से पूर्व भारत के विभिन्न राज्यों में होने वाली स्थानीय बौछारों के अलग-अलग नाम हैं। कर्नाटका में चेरी ब्लॉसम बौछारें कॉफी के फूलों को खिलने में मदद करती हैं। पश्चिम बंगाल में काल बैसाखी की गरज के साथ बारिश होती है। केरल में होने वाली आम्र वृष्टि आम के फलों को पकाने के लिए जानी जाती है। वहीं असम क्षेत्र में मानसून-पूर्व तूफानी वर्षा को बारडोली छीड़ा के नाम से जाना जाता है।

66. (C) डायनेमिक मॉडलिंग के माध्यम से मानसून के पूर्वानुमान को उन्नत करना।
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय द्वारा शुरू किए गए 'राष्ट्रीय मानसून मिशन' का मुख्य उद्देश्य भारत में मानसून पूर्वानुमान प्रणालियों की सटीकता को बढ़ाना है। इसके तहत पारंपरिक सांख्यिकीय तरीकों के स्थान पर अत्याधुनिक गतिकीय और युग्मित महासागर-वायुमंडल गणितीय मॉडलों का विकास किया गया है। इन आधुनिक मॉडलों के प्रयोग से मौसमी, मौसमीय-अंतराल और अल्पकालिक मानसूनी वर्षा तथा चक्रवातों का अधिक सटीक पूर्वानुमान प्राप्त करने में बड़ी सफलता मिली है।

67. (B) पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय
भारतीय मौसम विज्ञान विभाग भारत सरकार के 'पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय' के प्रशासनिक नियंत्रण में कार्य करता है। यह विभाग देश में मौसम संबंधी प्रेक्षणों, मौसम पूर्वानुमान, चक्रवात चेतावनियों और भूकंपीय गतिविधियों की ट्रैकिंग के लिए नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करता है। पहले यह विभाग अन्य मंत्रालयों के तहत था, परंतु मौसम और जलवायु सेवाओं को एकीकृत करने के उद्देश्य से इसे पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के अंतर्गत पूर्णतः पुनर्गठित किया गया।

68. (D) दक्षिण-पश्चिम मानसून के आगमन के साथ
भारत में खरीफ फसलों की बुआई का सीधा संबंध जून महीने में होने वाले दक्षिण-पश्चिम मानसून के आगमन से है। चूँकि खरीफ की फसलों जैसे धान, मक्का, ज्वार, बाजरा, कपास और मूंगफली को अंकुरण और शुरुआती विकास के लिए प्रचुर मात्रा में जल और उच्च तापमान की आवश्यकता होती है, इसलिए किसान मानसून की पहली वर्षा होते ही जून और जुलाई में इनकी बुआई प्रारंभ कर देते हैं। इन फसलों की कटाई मानसून के अंत में होती है।

69. (A) साइबेरियन हाई
शीत ऋतु के दौरान एशियाई महाद्वीप का आंतरिक भाग, विशेषकर साइबेरिया और मंगोलिया का क्षेत्र अत्यंत ठंडा हो जाता है। अत्यधिक ठंड के कारण इस क्षेत्र के ऊपर एक विशाल और शक्तिशाली उच्च वायुदाब केंद्र विकसित होता है, जिसे 'साइबेरियन हाई' कहा जाता है। इस उच्च दाब क्षेत्र से ठंडी और शुष्क पवनें बाहर की ओर बहती हुई हिंद महासागर में स्थित निम्न दाब क्षेत्रों की ओर बढ़ती हैं, जो भारत में उत्तर-पूर्वी मानसून का आधार बनती हैं।

70. (A) केवल I और II
उत्तर-पूर्वी मानसून शीतकाल में सक्रिय होता है और इसकी पवनें भारतीय भूभाग से बहती हैं। चूँकि अधिकांश देश में ये पवनें स्थल से समुद्र की ओर बहती हैं, इसलिए ये शुष्क रहती हैं और उत्तर भारतीय मैदान में निरंतर वर्षा नहीं लाती हैं। केवल जब ये पवनें बंगाल की खाड़ी से होकर गुजरती हैं, तो नमी अवशोषित कर तमिलनाडु के कोरोमंडल तट पर महत्वपूर्ण वर्षा करती हैं। अतः उत्तर भारतीय मैदानों में वर्षा न होकर केवल दक्षिण-पूर्व में होती है।

71. (A) As
कोपेन के जलवायु वर्गीकरण में संकेत 'As' का प्रयोग शुष्क ग्रीष्मकाल वाली उष्णकटिबंधीय जलवायु को दर्शाने के लिए किया जाता है। यहाँ संकेत 'A' उष्णकटिबंधीय जलवायु को और छोटा अक्षर 's' शुष्क ग्रीष्मकाल को निरुपित करता है।

NODIA

भारत का कोरोमंडल तट (तमिलनाडु तट) इस जलवायु का प्रमुख उदाहरण है, क्योंकि यह क्षेत्र दक्षिण-पश्चिम मानसून के दौरान ग्रीष्मकाल में शुष्क रहता है और शीतकाल में उत्तर-पूर्वी मानसून से अपनी अधिकांश वर्षा प्राप्त करता है।

72. (D) वे उत्तर-पश्चिमी मैदानों में व्यापक वर्षा का कारण बनती हैं।
दक्षिण-पश्चिम मानसून की दो मुख्य शाखाएं- अरब सागर शाखा और बंगाल की खाड़ी शाखा- देश के विभिन्न भागों से बहती हुई अंततः उत्तर-पश्चिम भारत में एक-दूसरे से मिलती हैं। अरब सागर शाखा पश्चिमी तट और मध्य भारत को पार करते हुए आगे बढ़ती है, जबकि बंगाल की खाड़ी शाखा गंगा के मैदान के अनुदिश पश्चिम की ओर बढ़ती है। पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के ऊपर इन दोनों नम शाखाओं का अभिसरण व्यापक वर्षा का कारण बनता है।

73. (B) हिमाचल प्रदेश
हिमाचल प्रदेश एक ऐसा राज्य है जो स्पष्ट रूप से द्वि-मोडाल वर्षा पैटर्न का अनुभव करता है। इसका तात्पर्य है कि यहाँ वर्ष में दो अलग-अलग ऋतुओं में वर्षा होती है। ग्रीष्मकाल में जून से सितंबर के दौरान यह राज्य दक्षिण-पश्चिम मानसून की बंगाल की खाड़ी शाखा से वर्षा प्राप्त करता है। इसके पश्चात् शीतकाल में दिसंबर से फरवरी के मध्य भूमध्य सागर से आने वाले पश्चिमी विक्षोभों के कारण यहाँ वर्षा और उच्च पहाड़ी क्षेत्रों में हिमपात होता है।

74. (C) पछुआ जेट स्ट्रीम
शीतकाल के दौरान ऊपरी क्षोभमंडल में बहने वाली उप-उष्णकटिबंधीय पछुआ जेट स्ट्रीम उत्तर भारत के ऊपर स्थित रहती है। यह वायुमंडलीय विशेषता धरातल पर उच्च दाब और वायु के नीचे बैठने की स्थिति को बनाए रखती है, जो एक ढक्कन की तरह काम करती है। यह निचले स्तरों की ठंडी हवा को रोककर रखती है और वायुमंडल को स्थिर बनाकर शुष्क मौसम बनाए रखती है। ग्रीष्मकाल में जब यह जेट स्ट्रीम हिमालय के उत्तर में खिसकती है, तब मानसून सक्रिय होता है।

75. (A) I, II, III, IV
भारत के विभिन्न शहरों में औसत वार्षिक वर्षा का स्पष्ट आरोही क्रम देखा जाता है। थार मरुस्थल में स्थित जोधपुर में सबसे कम वर्षा (लगभग 35-40 सेमी) होती है। उत्तर भारत के मैदानी भाग में स्थित दिल्ली में वार्षिक वर्षा लगभग 65-70 सेमी होती है। पूर्व की ओर बढ़ते हुए कोलकाता में बंगाल की खाड़ी शाखा से लगभग 160 सेमी वर्षा होती है। अंत में उत्तर-पूर्वी पर्वतीय क्षेत्र में स्थित शिलांग में सर्वाधिक (200 सेमी से अधिक) वर्षा दर्ज की जाती है।

76. (A) ताहिती और डार्विन
दक्षिणी दोलन सूचकांक प्रशांत महासागर में वायुमंडलीय दाब के उतार-चढ़ाव को मापने का एक प्रमुख मापदंड है। इसकी गणना मध्य प्रशांत महासागर में स्थित ताहिती द्वीप और उत्तरी ऑस्ट्रेलिया में स्थित डार्विन के बीच समुद्र तल के वायुमंडलीय दाब के अंतर के आधार पर की जाती है। जब ताहिती का दाब डार्विन की तुलना में अधिक होता है, तो सूचकांक धनात्मक रहता है जो अच्छे भारतीय मानसून का संकेत देता है, जबकि ऋणात्मक मान अल नीनो को दर्शाता है।

77. (B) मृदा के प्रकार में एकरूपता
भारत में वर्षा के असमान वितरण के मुख्य कारणों में पर्वतों की दिशा जैसे पश्चिमी घाट और अरावली का संरेखण, महासागरों से भौगोलिक दूरी तथा मानसूनी हवाओं में नमी की मात्रा शामिल है। इसके विपरीत मृदा के प्रकार में एकरुपता या भिन्नता का पवनों से वर्षा होने की प्रक्रिया पर कोई प्रत्यक्ष प्रभाव नहीं पड़ता है। वर्षा मुख्य रूप से वायुमंडलीय स्थितियों और स्थलाकृतिक अवरोधों द्वारा निर्धारित होती है, न कि धरातल की मृदा की संरचना से।

78. (B) अरब सागर में उच्च पवन अपरूपण और शीतल जल का होना।
बंगाल की खाड़ी की तुलना में अरब सागर में उष्णकटिबंधीय चक्रवात कम संख्या में बनते हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि अरब सागर का जल बंगाल की खाड़ी की तुलना में अपेक्षाकृत ठंडा रहता है और यहाँ वायुमंडल में उच्च ऊर्ध्वाधर पवन अपरूपण पाया जाता है। उच्च पवन अपरूपण चक्रवातों के लंबवत विकास को बाधित करता है। इसके विपरीत बंगाल की खाड़ी का जल अत्यधिक गर्म होता है तथा वहाँ पश्चिमी प्रशांत महासागर से आने वाले अवदाब भी चक्रवात में बदल जाते हैं।

79. (A) एकांतर शुष्क और आर्द्र अवधि (आर्द्र और शुष्क दौर)
भारतीय मानसून की प्रकृति लगातार एक समान वर्षा देने वाली नहीं होती, बल्कि यह 'स्पंदित' या रुक-रुक कर होने वाली वर्षा द्वारा अभिलक्षित होती है। इसका अर्थ यह है कि मानसूनी ऋतु के दौरान भारी वर्षा वाले आर्द्र दौर आते हैं, जिनके बाद कुछ दिनों या सप्ताहों के लिए वर्षाहीन या शुष्क दौर आते हैं। वर्षा के इस उतार-चढ़ाव को मानसूनी विच्छेद और मानसूनी प्रस्फोट के नाम से जाना जाता है, जो मानसूनी गर्त की गतिशीलता पर निर्भर करता है।

80. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
दक्षिण-पश्चिम मानसून की अरब सागर शाखा बंगाल की खाड़ी शाखा की तुलना में अत्यधिक शक्तिशाली और विशाल होती है। इसका पहला मुख्य कारण यह है कि अरब सागर का भौगोलिक क्षेत्रफल बंगाल की खाड़ी से बहुत बड़ा है। दूसरा कारण यह है कि अरब सागर के ऊपर से बहने वाली संपूर्ण मानसूनी धारा सीधे भारतीय प्रायद्वीप की ओर बढ़ती है, जबकि बंगाल की खाड़ी शाखा का एक बड़ा भाग म्यांमार और बांग्लादेश की ओर मुड़ जाता है।

81. (D) मानसून मिशन कपल्ड फॉरकास्टिंग सिस्टम (Monsoon Mission Coupled Forecasting System)
'MMCFS' का पूर्ण रूप मानसून मिशन कपल्ड फॉरकास्टिंग सिस्टम है। यह भारत के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के 'राष्ट्रीय मानसून मिशन' के तहत विकसित किया गया एक अत्याधुनिक गतिकीय पूर्वानुमान मॉडल है। यह मॉडल महासागर, वायुमंडल

Click Here to Buy book on Flipkart

और भूमि की सतह के बीच होने वाली जटिल अंतःक्रियाओं को गणितीय रूप से जोड़कर मानसून का पूर्वानुमान लगाता है। IMD द्वारा मौसमी मानसूनी वर्षा का सटीक दीर्घकालिक पूर्वानुमान तैयार करने के लिए इस मॉडल का व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है।

82. (C) 45-50%
भारत में कृषि का एक बड़ा हिस्सा आज भी प्राकृतिक वर्षा पर निर्भर है। देश के कुल शुद्ध बोए गए कृषि क्षेत्र का लगभग 45 से 50 प्रतिशत भाग पूरी तरह से असिंचित है और अपनी सिंचाई आवश्यकताओं के लिए मानसूनी वर्षा पर निर्भर करता है। इन वर्षा आधारित क्षेत्रों में मुख्य रूप से मोटे अनाज, दलहन और तिलहन की खेती की जाती है। यही कारण है कि मानसूनी वर्षा में किसी भी प्रकार का विचलन इन क्षेत्रों की कृषि सुरक्षा को सीधे प्रभावित करता है।

83. (B) अल नीनो साउदर्न ऑसिलेशन (El Nino Southern Oscillation)
'ENSO' का पूर्ण रूप 'अल नीनो साउदर्न ऑसिलेशन' है। यह प्रशांत महासागर में होने वाली एक एकीकृत महासागरीय और वायुमंडलीय परिघटना है। इसमें 'अल नीनो' समुद्र की सतह के तापमान में होने वाले गर्म बदलाव को संदर्भित करता है, जबकि 'साउदर्न ऑसिलेशन' यानी दक्षिणी दोलन वायुमंडलीय दाब में होने वाले परिवर्तनों को दर्शाता है। ये दोनों मिलकर वैश्विक जलवायु पैटर्न को गहराई से प्रभावित करते हैं और भारत में मानसूनी वर्षा की मात्रा को सीधे नियंत्रित करते हैं।

84. (D) साफ़ आकाश और शांत पवनें
शीत ऋतु में उत्तर-पश्चिम भारत के मैदानी भागों में पाला पड़ना एक आम बात है। इसके लिए साफ़ आकाश और शांत हवाएं सबसे अनुकूल परिस्थितियाँ प्रदान करती हैं। जब रात के समय आकाश मेघरहित होता है, तो धरातल से पार्थिव विकिरण तेजी से अंतरिक्ष में उत्सर्जित हो जाता है, जिससे पृथ्वी की सतह अत्यधिक ठंडी हो जाती है। शांत हवा के कारण यह ठंडी वायु धरातल के पास रुक जाती है और जलवाष्प जम कर पाले का रूप ले लेता है।

85. (B) केवल I, II और III
भारतीय जलवायु मुख्य रूप से मानसूनी पवनों द्वारा संचालित होती है और इसमें अक्षांशीय तथा स्थलाकृतिक विविधताओं के कारण तापमान एवं वर्षा में भारी क्षेत्रीय भिन्नताएँ पाई जाती हैं। इसके साथ ही विशाल हिमालय पर्वत श्रृंखला मध्य एशिया से आने वाली अत्यंत ठंडी ध्रुवीय हवाओं को रोककर उपमहाद्वीप की रक्षा करती है। हालाँकि यह कथन असत्य है कि वर्ष के सभी बारह महीनों में समान रूप से वर्षा होती है, क्योंकि भारत में अधिकांश वर्षा केवल मानसूनी महीनों में केंद्रित रहती है।

86. (C) पश्चिमी तट और उत्तर-पूर्वी भारत
भारत में उच्चतम औसत वार्षिक वर्षा प्राप्त करने वाले दो मुख्य भौगोलिक क्षेत्र पश्चिमी तट और उत्तर-पूर्वी भारत हैं। पश्चिमी तट पर पश्चिमी घाट की पहाड़ियाँ अरब सागर से आने वाली नम मानसूनी हवाओं को रोककर 250 सेमी से अधिक पर्वतीय वर्षा कराती हैं। इसी प्रकार उत्तर-पूर्वी भारत में कीपाकार पहाड़ियों की उपस्थिति के कारण मानसूनी हवाएं फंस जाती हैं, जिससे मौसिनराम और चेरापूंजी जैसे क्षेत्रों में विश्व की सर्वाधिक वार्षिक वर्षा दर्ज की जाती है।

87. (A) मानसून का प्रस्फोट
जून महीने के प्रारंभ में दक्षिण-पश्चिम मानसून का भारत की मुख्यभूमि पर आगमन अत्यंत तीव्र और नाटकीय होता है। आद्रता से भरी मानसूनी पवनें तीव्र गर्जन, कड़कती बिजली और मूसलाधार वर्षा के साथ अचानक तटीय क्षेत्रों में प्रवेश करती हैं। मानसून के इस आकस्मिक, जोरदार और तीव्र आगमन को भौगोलिक भाषा में 'मानसून का प्रस्फोट' या 'मानसून बर्स्ट' कहा जाता है। इससे ग्रीष्मकाल की भीषण गर्मी से तुरंत राहत मिलती है और तापमान में भारी गिरावट आती है।

88. (D) मध्य प्रशांत महासागर में जल का गर्म होना जिसके दोनों ओर शीतल जल होता है।
'अल नीनो मोडोकी' प्रशांत महासागर में घटने वाली एक विशिष्ट महासागरीय-वायुमंडलीय विसंगति है। पारंपरिक अल नीनो में जहाँ पूर्वी प्रशांत महासागर का जल गर्म होता है, वहीं अल नीनो मोडोकी में मध्य विषुवतीय प्रशांत महासागर का जल असामान्य रूप से गर्म हो जाता है, जबकि इसके पूर्वी और पश्चिमी दोनों ओर शीतल जल पाया जाता है। यह अनूठी तापीय स्थिति दुनिया भर के मौसम पैटर्न को अलग तरह से प्रभावित करती है और भारतीय मानसून पर भी भिन्न प्रभाव डालती है।

89. (B) पश्चिमी घाट
भारत के पश्चिमी तट के अनुदिश स्थित 'पश्चिमी घाट' एक सतत पर्वत श्रृंखला है जो पर्वतीय वर्षा कराने में प्राथमिक भूमिका निभाती है। जब अरब सागर से आने वाली आर्द्र दक्षिण-पश्चिम मानसूनी पवनें भारत में प्रवेश करती हैं, तो पश्चिमी घाट इन पवनों के मार्ग में एक लंबवत प्राकृतिक अवरोध प्रस्तुत करता है। इन पहाड़ियों से टकराकर हवाएं ऊपर उठती हैं, ठंडी होती हैं और संघनित होकर पश्चिमी तटीय मैदानों पर मूसलाधार पर्वतीय वर्षा का निर्माण करती हैं।

90. (C) केरल
भारत में दक्षिण-पश्चिम मानसून के प्रवेश द्वार के रूप में केरल राज्य को जाना जाता है। हिंद महासागर से उत्तर की ओर बढ़ने वाली मानसूनी पवनें सबसे पहले भारत की मुख्यभूमि में 1 जून के आसपास केरल के तटीय क्षेत्र से टकराती हैं। केरल में मानसून की इस पहली बौछार के साथ ही पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में चार महीने चलने वाली मानसूनी वर्षा ऋतु का आधिकारिक शुभारंभ माना जाता है। इसके बाद मानसून आगे उत्तर की ओर बढ़ता है।

www.nodia.in

Downloaded from www.pdf.tube

अध्याय 03

भारत की नदियाँ, बाँध, झीलें और समुद्र

NODIA

1. निम्नलिखित में से कौन-सी प्राथमिक विशेषता भारत में हिमालयी नदियों को प्रायद्वीपीय नदियों से अलग करती है?
(A) हिमालयी नदियाँ मुख्य रूप से मौसमी होती हैं, जबकि प्रायद्वीपीय नदियाँ बारहमासी होती हैं।
(B) हिमालयी नदियाँ हिम पिघलने और वर्षा दोनों से पोषित होती हैं, जिससे वे बारहमासी बनती हैं।
(C) हिमालयी नदियाँ अपरदन के अपने आधार तल तक पहुँच चुकी हैं।
(D) हिमालयी नदियाँ आमतौर पर उथली, चौड़ी घाटियों से होकर बहती हैं।

2. प्रायद्वीपीय नदियों के अपवाह प्रतिरुप के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन असत्य है?
(A) इनका मार्ग सामान्यतः निश्चित होता है और ये बार-बार अपना मार्ग नहीं बदलती हैं।
(B) इनमें महत्त्वपूर्ण विसर्पों का अभाव पाया जाता है।
(C) हिमालयी नदियों की तुलना में इनके अपवाह बेसिन अपेक्षाकृत छोटे हैं।
(D) ये गहरी V-आकार की घाटियों के साथ नदी पार्श्विका की अत्यधिक युवावस्था को प्रदर्शित करती हैं।

3. देवप्रयाग में किन दो शीर्ष धाराओं के संगम के पश्चात् गंगा नदी औपचारिक रुप से अपना नाम प्राप्त करती है?
(A) भागीरथी और अलकनंदा
(B) अलकनंदा और मंदाकिनी
(C) भागीरथी और पिंडर
(D) अलकनंदा और धौलीगंगा

4. निम्नलिखित में से कौन-सी गंगा की दाएँ तट की सहायक नदी है?
(A) गोमती
(B) गंडक
(C) सोन
(D) कोसी

5. गंगा नदी तंत्र में नदियों के संगम को दर्शाने वाले सही युग्म की पहचान कीजिए।
(A) रुद्रप्रयाग - अलकनंदा और मंदाकिनी
(B) कर्णप्रयाग - अलकनंदा और भागीरथी
(C) नंदप्रयाग - अलकनंदा और पिंडर
(D) विष्णुप्रयाग - अलकनंदा और मंदाकिनी

6. निम्नलिखित में से कौन-सा राज्य गंगा नदी बेसिन का हिस्सा नहीं है?
(A) मध्य प्रदेश
(B) राजस्थान
(C) झारखंड
(D) पंजाब

7. फरक्का बैराज का निर्माण मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किस उद्देश्य की पूर्ति के लिए किया गया था?
(A) पश्चिम बंगाल और बांग्लादेश के लिए बड़े पैमाने पर जलविद्युत उत्पन्न करना
(B) कोलकाता बंदरगाह की नौवहन क्षमता बनाए रखने के लिए हुगली नदी में जल मोड़ना
(C) बिहार के सूखा प्रभावित क्षेत्रों में व्यापक सिंचाई जल की आपूर्ति करना
(D) निचले प्रवाह वाले बांग्लादेश में बहने वाले भारी मौसमी बाढ़ के पानी को नियंत्रित करना

8. भारत में प्रवेश करने से पूर्व ब्रह्मपुत्र नदी को तिब्बत में निम्नलिखित में से किस नाम से जाना जाता है?
(A) सिआंग
(B) दिहांग
(C) यरलुंग त्सांगपो
(D) जमुना

9. ब्रह्मपुत्र की निम्नलिखित में से कौन-सी सहायक नदी तिब्बत से निकलती है और बांग्लादेश में मुख्य नदी में मिलने से पूर्व सिक्किम से होकर बहती है?
(A) सुबनसिरी
(B) कामेंग
(C) मानस
(D) तीस्ता

10. ब्रह्मपुत्र नदी तंत्र के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह मानसरोवर झील के पास चेमायुंगडुंग हिमनद से निकलती है।
II. यह भारत में अरुणाचल प्रदेश राज्य से दिहांग नाम से प्रवेश करती है।
III. असम में इसके द्वारा एक बड़ा नदी द्वीप, माजुली द्वीप बनाया जाता है।
IV. यह बांग्लादेश में गंगा से मिलती है और बंगाल की खाड़ी में गिरने से पूर्व पद्मा नाम धारण करती है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) I, II और III

(B) II, III और IV
(C) I, III और IV
(D) I, II, III और IV

11. निम्नलिखित में से कौन-सी नदी एक अपवाद है और ब्रह्मपुत्र नदी तंत्र से संबंधित नहीं है?
(A) धनसिरी
(B) टोंस
(C) लोहित
(D) संकोश

12. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A) : भारत की प्रायद्वीपीय नदियाँ सामान्यतः गैर-बारहमासी प्रकृति की होती हैं।
कारण (R) : प्रायद्वीपीय नदियाँ अपनी जल आपूर्ति के लिए पूरी तरह से मानसूनी वर्षा पर निर्भर हैं और इनका उद्गम हिम-पोषित स्रोतों से नहीं है।
सही विकल्प का चयन कीजिए:
(A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) अभिकथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) अभिकथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

13. भारत और पाकिस्तान के बीच 1960 की सिंधु जल संधि के अनुसार, भारत को निम्नलिखित में से किस नदी समूह के जल पर विशेष अधिकार दिए गए हैं?
(A) रावी, व्यास और सतलुज
(B) सिंधु, झेलम और चिनाब
(C) झेलम, रावी और सतलुज
(D) चिनाब, व्यास और सिंधु

14. सिंधु नदी तंत्र की कौन-सी सहायक नदी कश्मीर घाटी में पीर पंजाल के पाद में स्थित वेरीनाग झरने से निकलती है?
(A) चिनाब
(B) रावी
(C) झेलम
(D) व्यास

15. सिंधु नदी तंत्र के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. चिनाब नदी दो धाराओं, चंद्रा और भागा के मिलने से बनी है।
II. व्यास नदी रोहतांग दर्रे के पास से निकलती है और पूरी तरह से भारत के भीतर बहती है।
III. सतलुज नदी तिब्बत में राकस ताल से निकलती है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

16. सतलुज नदी निम्नलिखित में से किस पर्वतीय दर्रे से होकर भारत में प्रवेश करती है?
(A) नाथू ला
(B) लिपुलेख
(C) शिपकी ला
(D) ज़ोजी ला

17. गोदावरी नदी का उद्गम निम्नलिखित में से किस स्थान से होता है?
(A) सतारा जिला, महाराष्ट्र में महाबलेश्वर
(B) नासिक जिला, महाराष्ट्र में त्र्यंबकेश्वर
(C) अनूपपुर, मध्य प्रदेश में अमरकंटक पठार
(D) रायपुर जिला, छत्तीसगढ़ में सिहावा पहाड़ी

18. निम्नलिखित में से कौन-सी नदी गोदावरी की सहायक नदी नहीं है?
(A) प्राणहिता
(B) इंद्रावती
(C) मंजिरा
(D) हेमावती

19. गोदावरी नदी को मुख्य रूप से किसके कारण अक्सर 'दक्षिण गंगा' कहा जाता है:
(A) इसके बड़े आकार, विस्तार और क्षेत्रीय महत्त्व
(B) इसके निरंतर बड़े जल प्रवाह और बारहमासी बहाव
(C) पश्चिमी घाट की हिम से ढकी चोटियों से इसके उद्गम
(D) इसके निचले मार्ग में गंगा के साथ सीधे संगम

20. गोदावरी नदी बंगाल की खाड़ी में गिरती है और एक बड़ा डेल्टा बनाती है। इसके प्राथमिक डेल्टा का निर्माण किस राज्य से शुरु होता है?
(A) महाराष्ट्र
(B) तेलंगाना
(C) आंध्र प्रदेश
(D) ओडिशा

21. गोदावरी के बाद भारत में पूर्व की ओर बहने वाली दूसरी सबसे बड़ी प्रायद्वीपीय नदी कौन-सी है?
(A) कृष्णा
(B) महानदी
(C) कावेरी
(D) पेनार

22. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
सूची I : (नदी)
P. गोदावरी
Q. कृष्णा
R. कावेरी
S. नर्मदा
सूची II : (उद्गम स्थल)

Click Here to Buy book on Amazon

1. अमरकंटक
2. तालकावेरी
3. महाबलेश्वर
4. त्र्यंबकेश्वर

(A) P-4, Q-3, R-2, S-1
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-4, Q-2, R-3, S-1
(D) P-1, Q-3, R-2, S-4

23. तुंगभद्रा नदी किस नदी तंत्र की एक प्रमुख सहायक नदी है?
(A) गोदावरी
(B) कृष्णा
(C) कावेरी
(D) महानदी

24. सहायक नदियों की निम्नलिखित सूची में से उनके नदी तंत्र के आधार पर विषम (अलग) का चयन कीजिए।
(A) भीमा
(B) मूसी
(C) वैनगंगा
(D) घटप्रभा

25. अन्य प्रायद्वीपीय नदियों की तुलना में कावेरी नदी में वर्ष भर जल की मात्रा अपेक्षाकृत अधिक रहती है। इसका प्राथमिक भौगोलिक कारण क्या है?
(A) यह दक्कन के पठार में एक बड़े भूमिगत जलभृत द्वारा पोषित होती है।
(B) इसे नीलगिरि पहाड़ियों से महत्वपूर्ण हिमनद पिघलाव का जल प्राप्त होता है।
(C) इसका अत्यधिक द्रुमाकृतिक अपवाह प्रतिरूप है जो जल की हानि को रोकता है।
(D) इसे दक्षिण-पश्चिम और उत्तर-पूर्वी दोनों मानसूनी हवाओं से वर्षा प्राप्त होती है।

26. प्रसिद्ध शिवसमुद्रम जलप्रपात निम्नलिखित में से किस नदी पर स्थित है?
(A) कावेरी
(B) गोदावरी
(C) कृष्णा
(D) शरावती

27. कावेरी नदी बेसिन निम्नलिखित में से किन भारतीय राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों के समूह में विस्तृत है?
(A) महाराष्ट्र, कर्नाटक, तेलंगाना और आंध्र प्रदेश
(B) कर्नाटक, तमिलनाडु, केरल और पुडुचेरी
(C) कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, केरल और तमिलनाडु
(D) तेलंगाना, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु

28. पूर्व की ओर बहने वाली निम्नलिखित प्रायद्वीपीय नदियों को उत्तर से दक्षिण के क्रम में व्यवस्थित करने पर सही अनुक्रम का चयन कीजिए:
(A) महानदी, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी
(B) गोदावरी, महानदी, कावेरी, कृष्णा
(C) महानदी, कृष्णा, गोदावरी, कावेरी
(D) कृष्णा, गोदावरी, महानदी, कावेरी

29. नर्मदा नदी पश्चिम की ओर अरब सागर में बहती है क्योंकि:
(A) यह विंध्य और सतपुड़ा श्रेणियों के बीच एक भ्रंश घाटी से होकर बहती है।
(B) प्रायद्वीपीय पठार का सामान्य क्षेत्रीय ढाल पश्चिम की ओर झुका हुआ है।
(C) यह इस पूरे क्षेत्र में एक अच्छी तरह से परिभाषित पूर्ववर्ती अपवाह प्रतिरूप का अनुसरण करती है।
(D) कोरियालिस बल इसके नदी मार्ग को पश्चिम की ओर काफी विचलित कर देता है।

30. नर्मदा नदी के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह मध्य प्रदेश के अमरकंटक पठार से निकलती है।
II. यह एक भ्रंश घाटी से होकर बहती है।
III. यह जबलपुर के पास प्रसिद्ध धुआंधार जलप्रपात बनाती है।
IV. यह अरब सागर में मिलने से पूर्व एक बड़ा और विस्तृत डेल्टा बनाती है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) I, II और IV
(B) II, III और IV
(C) I, II और III
(D) I, III और IV

31. निम्नलिखित में से कौन-सी भारतीय प्रायद्वीप की पश्चिम की ओर बहने वाली नदी नहीं है?
(A) तापी
(B) माही
(C) साबरमती
(D) सुवर्णरेखा

32. तापी नदी निम्नलिखित में से किस भौगोलिक संरचना से निकलती है?
(A) मध्य प्रदेश के सिवनी जिले में महादेव पहाड़ियाँ
(B) छत्तीसगढ़ के धमतरी जिले में सिहावा पर्वत
(C) मध्य प्रदेश के बैतूल जिले में मुलताई
(D) दक्षिणी राजस्थान में माउंट आबू के पास अरावली श्रेणियाँ

33. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन तापी नदी का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) यह नर्मदा के समानांतर बहती है लेकिन एक लंबी भ्रंश घाटी में बहती है।
(B) इसका बेसिन मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और गुजरात के भागों में विस्तृत है।
(C) यह प्रायद्वीपीय क्षेत्र में पश्चिम की ओर बहने वाली सबसे लंबी नदी है।
(D) यह पश्चिमी घाट से निकलती है और मन्नार की खाड़ी में गिरती है।

NODIA

34. भारत की सबसे बड़ी बहुउद्देशीय नदी घाटी परियोजनाओं में से एक, भाखड़ा नांगल बांध किस नदी पर बनाया गया है?
(A) व्यास
(B) रावी
(C) चिनाब
(D) सतलुज

35. भाखड़ा नांगल परियोजना के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह पंजाब, हरियाणा और राजस्थान का एक संयुक्त उपक्रम है।
II. भाखड़ा बांध द्वारा निर्मित जलाशय को गोविंद सागर के नाम से जाना जाता है।
III. यह मुख्य रूप से झेलम नदी के पानी का उपयोग करने के लिए बनाया गया है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

36. विश्व के सबसे लंबे मिट्टी के बांधों में से एक के रूप में प्रसिद्ध हीराकुड बांध किस नदी पर बनाया गया है?
(A) दामोदर
(B) गोदावरी
(C) महानदी
(D) ब्राह्मणी

37. हीराकुड बांध परियोजना निम्नलिखित में से किस राज्य में स्थित है?
(A) ओडिशा
(B) छत्तीसगढ़
(C) झारखंड
(D) पश्चिम बंगाल

38. भारत में निम्नलिखित बहुउद्देशीय नदी घाटी परियोजनाओं को उत्तर से दक्षिण के भौगोलिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. भाखड़ा नांगल
2. टिहरी बांध
3. हीराकुड बांध
4. नागार्जुन सागर बांध
(A) 2-1-3-4
(B) 1-2-3-4
(C) 1-3-2-4
(D) 2-3-1-4

39. सरदार सरोवर बांध निम्नलिखित में से किस नदी पर निर्मित एक प्रमुख जलविद्युत और सिंचाई परियोजना है?
(A) तापी
(B) नर्मदा
(C) माही
(D) साबरमती

40. निम्नलिखित में से कौन-सा राज्य सरदार सरोवर बांध परियोजना का लाभार्थी नहीं है?
(A) गुजरात
(B) राजस्थान
(C) छत्तीसगढ़
(D) मध्य प्रदेश

41. भारत का सबसे ऊँचा बांध, टिहरी बांध किन दो नदियों के संगम पर स्थित है?
(A) अलकनंदा और मंदाकिनी
(B) भागीरथी और अलकनंदा
(C) यमुना और टोंस
(D) भागीरथी और भिलंगना

42. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A) : टिहरी बांध के निर्माण को महत्वपूर्ण पर्यावरणीय और सुरक्षा संबंधी विरोध प्रदर्शनों का सामना करना पड़ा है।
कारण (R) : टिहरी बांध हिमालय के अत्यधिक सक्रिय भूकंपीय क्षेत्र में स्थित है, जिससे संभावित भूकंप के कारण बांध टूटने की चिंताएँ बढ़ गई हैं।
सही विकल्प का चयन कीजिए:
(A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) अभिकथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) अभिकथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

43. टिहरी बांध किस राज्य में स्थित है?
(A) हिमाचल प्रदेश
(B) उत्तराखंड
(C) उत्तर प्रदेश
(D) जम्मू और कश्मीर

44. नागार्जुन सागर बांध किस नदी पर निर्मित है?
(A) गोदावरी
(B) कृष्णा
(C) पेनार
(D) कावेरी

45. नागार्जुन सागर बहुउद्देशीय परियोजना किन दो राज्यों की सीमा पर स्थित है?
(A) आंध्र प्रदेश और तेलंगाना
(B) कर्नाटक और आंध्र प्रदेश
(C) महाराष्ट्र और तेलंगाना
(D) कर्नाटक और तेलंगाना

46. नदी नियोजन के संदर्भ में, एक नदी बेसिन और जलसम्भर (वॉटरशेड) के बीच मूलभूत अंतर क्या है?
(A) नदी बेसिन विशेष रूप से भूजल प्रणालियों पर लागू

Downloaded from www.pdf.tube

होता है, जबकि जलसम्भर केवल सतही जल प्रवाह पर लागू होता है।
(B) नदी बेसिन एक कृत्रिम रूप से निर्मित नहर तंत्र है, जबकि जलसम्भर एक विशुद्ध रूप से प्राकृतिक भौगोलिक विशेषता है।
(C) नदी बेसिन एक प्रमुख नदी प्रणाली को अपवाहित करता है, जबकि जलसम्भर एक छोटी धारा या सहायक नदी को अपवाहित करता है।
(D) नदी बेसिन में केवल मीठे पानी के निकाय होते हैं, जबकि जलसम्भर में मीठे और अत्यधिक खारे पानी दोनों प्रकार के निकाय होते हैं।

47. 'बहुउद्देशीय नदी घाटी परियोजना' का सबसे उपयुक्त वर्णन निम्नलिखित में से कौन-सा है?
(A) एक संरचनात्मक परियोजना जो मुख्य रूप से क्षेत्रीय बाढ़ को रोकने के लिए दो अलग-अलग नदी बेसिनों को जोड़ती है।
(B) औद्योगिक क्षेत्रों के लिए विशेष रूप से जलविद्युत उत्पन्न करने के लिए निर्मित एक उच्च क्षमता वाली बांध परियोजना।
(C) अंतर्देशीय जलमार्गों के लंबी दूरी के नौवहन के विकास के लिए पूरी तरह से समर्पित एक आधारभूत संरचना परियोजना।
(D) सिंचाई, विद्युत और बाढ़ नियंत्रण जैसे अनेक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए परिकल्पित परियोजना।

48. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
सूची I : (बांध परियोजना)
P. भाखड़ा नांगल
Q. हीराकुड
R. सरदार सरोवर
S. टिहरी
सूची II : (संबंधित नदी)
1. नर्मदा
2. भागीरथी
3. सतलुज
4. महानदी
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

49. एशिया की सबसे बड़ी मीठे पानी की झीलों में से एक, वूलर झील का निर्माण मुख्य रूप से किसके कारण हुआ था?
(A) ज्वालामुखी गतिविधि
(B) विवर्तनिक गतिविधि
(C) हिमनद अपरदन
(D) नदी के विसर्पण

50. भारत की प्रमुख झीलों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. जम्मू और कश्मीर में वूलर झील झेलम नदी द्वारा पोषित होती है।
II. चिल्का झील भारत की सबसे बड़ी तटीय कयाल है।
III. डल झील हिमाचल प्रदेश राज्य में स्थित है।
IV. पुलिकट झील कोरोमंडल तट पर स्थित है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) I, II और III
(B) I, II और IV
(C) II, III और IV
(D) I, III और IV

51. डल झील अपने तैरते हुए बगीचों के लिए प्रसिद्ध है जो टमाटर और खीरे जैसी उपज देते हैं। इन तैरते बगीचों को स्थानीय रूप से किस नाम से जाना जाता है?
(A) राड
(B) फुमडी
(C) कयाल
(D) बील

52. चिल्का झील भारत के पूर्वी तट पर किस नदी प्रणाली के मुहाने पर स्थित है?
(A) गोदावरी
(B) कृष्णा
(C) महानदी
(D) ब्राह्मणी

NODIA

53. निम्नलिखित में से कौन-सी नदियाँ सीधे चिल्का झील में गिरती हैं?
(A) दया और भार्गवी
(B) सुवर्णरेखा और वैतरणी
(C) वंशधारा और नागावली
(D) ऋषिकुल्या और प्राणहिता

54. भारत की दूसरी सबसे बड़ी खारे पानी की झील, पुलिकट झील किन दो राज्यों की सीमा पर स्थित है?
(A) ओडिशा और आंध्र प्रदेश
(B) तमिलनाडु और केरल
(C) कर्नाटक और केरल
(D) आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु

55. पुलिकट झील के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह श्रीहरिकोटा के रोध द्वीप द्वारा बंगाल की खाड़ी से अलग होती है।
II. यह फ्लेमिंगो सहित प्रवासी पक्षियों का एक प्रमुख आवास है।
III. यह पूरी तरह से आंध्र प्रदेश की राजनीतिक सीमाओं के भीतर स्थित है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III

(D) I, II और III

56. भारत में नदियों को जोड़ने की राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य योजना के तहत पहली सफल पहल कौन-सी है?
(A) गोदावरी-कृष्णा लिंक
(B) पार-तापी-नर्मदा लिंक
(C) केन-बेतवा लिंक
(D) कोसी-मेची लिंक

57. निम्नलिखित में से किसे भारत में नदी जोड़ो परियोजना का प्राथमिक उद्देश्य नहीं माना जाता है?
(A) जल-अधिशेष वाले बेसिनों से जल-कमी वाले बेसिनों में पानी स्थानांतरित करना
(B) क्षेत्रों में अंतर्देशीय जल परिवहन और नौवहन क्षमताओं को बढ़ाना
(C) क्षेत्रीय जलविद्युत उत्पादन क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि करना
(D) बारहमासी नदियों को मौसमी नदियों में परिवर्तित करना

58. भारत के पश्चिमी तट पर स्थित निम्नलिखित प्रमुख बंदरगाहों को उत्तर से दक्षिण के क्रम में व्यवस्थित करने पर सही अनुक्रम का चयन कीजिए:
(A) कांडला, मुंबई, न्यू मंगलौर, कोच्चि
(B) मुंबई, कांडला, कोच्चि, न्यू मंगलौर
(C) कांडला, न्यू मंगलौर, मुंबई, कोच्चि
(D) मुंबई, कोच्चि, कांडला, न्यू मंगलौर

59. पश्चिमी घाट और अरब सागर के बीच स्थित तटीय मैदान को सामान्यतः तीन भागों में विभाजित किया गया है। इसके दक्षिणी भाग को किस नाम से जाना जाता है?
(A) कोंकण तट (B) मालाबार तट
(C) कोरोमंडल तट (D) कन्नड़ मैदान

60. प्रसिद्ध 'कयाल' (पश्चजल), जिनका उपयोग मछली पकड़ने और अंतर्देशीय नौवहन के लिए किया जाता है, किस तट की एक विशिष्ट विशेषता हैं?
(A) कोंकण तट (B) मालाबार तट
(C) काठियावाड़ तट (D) उत्कल तट

61. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I : भारत की पश्चिमी तटरेखा एक उन्मज्जित तट का उदाहरण है।
कथन II : पूर्वी तट की तुलना में पश्चिमी तटरेखा में चौड़े महाद्वीपीय मग्नतट और व्यापक डेल्टा पाए जाते हैं।
सही विकल्प का चयन कीजिए:
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।

62. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A) : अरब सागर में गिरने वाली नदियाँ डेल्टा के बजाय ज्वारनदमुख बनाती हैं।
कारण (R) : ये नदियाँ तीव्र ढाल पर बहती हैं और बहुत कम मात्रा में तलछट ले जाती हैं, जिससे उनके मुहाने पर डेल्टा का निर्माण नहीं हो पाता।
सही विकल्प का चयन कीजिए:
(A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) अभिकथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) अभिकथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

63. मुख्य रूप से तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश के कुछ भागों में फैली बंगाल की खाड़ी के साथ वाले तट को किस नाम से जाना जाता है?
(A) मालाबार तट
(B) कोंकण तट
(C) उत्तरी सरकार
(D) कोरोमंडल तट

64. किस भौगोलिक परिघटना के कारण कोरोमंडल तट को शीतकालीन महीनों के दौरान अपनी वार्षिक वर्षा का एक बड़ा हिस्सा प्राप्त होता है?
(A) दक्षिण-पश्चिम मानसून
(B) अरब सागर में उत्पन्न होने वाले उष्णकटिबंधीय चक्रवात
(C) उत्तर-पूर्वी (लौटता हुआ) मानसून
(D) पश्चिमी विक्षोभ

65. भारत के पूर्वी तट पर स्थित सबसे गहरा स्थल-रुद्ध और सुरक्षित बंदरगाह निम्नलिखित में से कौन-सा है?
(A) चेन्नई
(B) विशाखापत्तनम
(C) पारादीप
(D) एन्नौर

66. जवाहरलाल नेहरु बंदरगाह (जिसे न्हावा शेवा भी कहा जाता है) का निर्माण मुख्य रूप से किस लिए किया गया था?
(A) भारतीय नौसेना के लिए प्राथमिक नौसैनिक परिचालन केंद्र के रूप में कार्य करने के लिए।
(B) गोवा से निकाले गए लौह अयस्क के विशेष थोक निर्यात को संभालने के लिए।
(C) पश्चिमी भारत के विभाजन के बाद कांडला बंदरगाह को बदलने के लिए।
(D) मुंबई बंदरगाह की भीड़भाड़ को कम करने और एक हब बंदरगाह के रूप में कार्य करने के लिए।

67. भारतीय तटरेखा पर उनकी स्थिति के आधार पर निम्नलिखित बंदरगाहों में से विषम की पहचान कीजिए।
(A) मर्मगाओ
(B) हल्दिया
(C) पारादीप
(D) तूतीकोरिन

Click Here to Buy book on Flipkart

68. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए:

सूची I : (प्रमुख बंदरगाह)
P. पारादीप
Q. मर्मगाओ
R. न्यू मंगलौर
S. एन्नौर

सूची II : (राज्य)
1. कर्नाटक
2. तमिलनाडु
3. ओडिशा
4. गोवा

(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-1, Q-2, R-3, S-4

69. निम्नलिखित में से कौन-सा बंदरगाह एक अपवाद है, जो समुद्री बंदरगाह के बजाय एक नदीय बंदरगाह है?
(A) कोलकाता
(B) चेन्नई
(C) कोच्चि
(D) विशाखापत्तनम

70. गंगा कार्य योजना (GAP) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. गंगा कार्य योजना का प्रथम चरण वर्ष 1986 में शुरु किया गया था।
II. इसका मुख्य उद्देश्य घरेलू सीवेज को रोकने, मोड़ने और उपचारित करके पानी की गुणवत्ता में सुधार करना था।
III. GAP का प्रथम चरण प्रारंभ में 100% केंद्र प्रायोजित योजना के रूप में शुरु किया गया था।
IV. योजना ने दस वर्षों के भीतर गंगा में औद्योगिक प्रदूषण के सभी रूपों को सफलतापूर्वक समाप्त कर दिया।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) I, II और III
(B) II, III और IV
(C) I, III और IV
(D) I, II, III और IV

71. राष्ट्रीय नदी गंगा के प्रदूषण के प्रभावी उन्मूलन और संरक्षण के दोहरे उद्देश्यों को पूरा करने के लिए एक एकीकृत संरक्षण मिशन 'नमामि गंगे' कार्यक्रम केंद्र सरकार द्वारा किस वर्ष शुरु किया गया था?
(A) 2010
(B) 2012
(C) 2014
(D) 2016

72. भारत में राष्ट्रीय जलमार्ग 1 (NW-1) निम्नलिखित में से किस नदी खंड के अंतर्गत आता है?
(A) सादिया से धुबरी तक विस्तारित मुख्य ब्रह्मपुत्र नदी का भाग
(B) कोल्लम से कोट्टापुरम तक विस्तारित पश्चिम तटीय नहर का भाग
(C) प्रयागराज से हल्दिया तक गंगा-भागीरथी-हुगली नदी तंत्र
(D) काकीनाडा से पुडुचेरी तक गोदावरी और कृष्णा नदियों का भाग

NODIA

73. अंतर्देशीय जल परिवहन के लिए घोषित राष्ट्रीय जलमार्ग 2 (NW-2), निम्नलिखित में से किस नदी पर स्थित है?
(A) महानदी
(B) बराक
(C) गोदावरी
(D) ब्रह्मपुत्र

74. नदियों का एक विशाल जाल होने के बावजूद, भारत में माल ढुलाई में अंतर्देशीय जल परिवहन का हिस्सा बहुत कम है। प्रायद्वीपीय नदियों में अंतर्देशीय नौवहन के लिए निम्नलिखित में से कौन-सी एक प्रमुख प्राकृतिक बाधा है?
(A) नदियाँ मौसमी हैं और जल स्तर में तीव्र उतार-चढ़ाव का सामना करती हैं।
(B) नदियाँ भारी मात्रा में गाद ले जाती हैं, जिससे निरंतर ड्रेजिंग असंभव हो जाता है।
(C) नदियाँ घने जंगलों वाले क्षेत्रों से होकर बहती हैं जहाँ नौवहन सख्त वर्जित है।
(D) नदियाँ औद्योगिक अपशिष्ट से अत्यधिक प्रदूषित हैं, जिससे जहाजों को तेजी से नुकसान पहुँचता है।

75. भारत के अंतर्देशीय जलमार्गों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. NW-1 गंगा-भागीरथी-हुगली नदी तंत्र पर स्थित है।
II. NW-2 ब्रह्मपुत्र नदी पर स्थित है।
III. NW-3 आंध्र प्रदेश में गोदावरी नदी के किनारे स्थित है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

76. पूर्णतः भारतीय क्षेत्र के भीतर बहने वाली लंबाई के संदर्भ में भारत की सबसे लंबी नदी निम्नलिखित में से कौन-सी है?
(A) ब्रह्मपुत्र (B) गंगा
(C) सिंधु (D) गोदावरी

77. भारतीय नदियों के तुलनात्मक अवलोकन के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन असत्य है?
(A) महानदी का उद्गम पश्चिमी घाट से होता है और यह बंगाल की खाड़ी में गिरती है।
(B) गोदावरी नदी तंत्र प्रायद्वीपीय नदियों में सबसे बड़ा अपवाह बेसिन रखता है।
(C) नर्मदा नदी को प्रायद्वीपीय भारत में पश्चिम की ओर बहने वाली सबसे लंबी नदी के रूप में मान्यता प्राप्त है।

(D) ब्रह्मपुत्र नदी, गंगा नदी की तुलना में काफी अधिक मात्रा में जल ले जाती है।

78. निम्नलिखित में से कौन-सी नदी अपने मार्ग के दौरान कर्क रेखा को दो बार पार करती है?
(A) नर्मदा (B) तापी
(C) माही (D) साबरमती

79. लूनी नदी, जो राजस्थान के थार मरुस्थल से होकर बहती है, अंततः कहाँ विलीन होती है?
(A) खंभात की खाड़ी के माध्यम से अरब सागर में
(B) साबरमती नदी में
(C) सांभर नमक झील में
(D) कच्छ के रण में

80. हिमालयी नदियाँ अपने पर्वतीय मार्गों में महाखड्ड, V-आकार की घाटियाँ और क्षिप्रिकाओं जैसी विशेषताओं द्वारा चिह्नित होती हैं। ये विशेषताएँ नदी के विकास के किस चरण की सूचक हैं?
(A) युवावस्था (B) प्रौढ़ावस्था
(C) वृद्धावस्था (D) पुनर्नवीकृत चरण

81. निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प 'नदी बेसिन' की अवधारणा का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) वह प्राकृतिक भौतिक भूमि अवनमन जिसमें एक बड़ी झील बनती है।
(B) किसी नदी और उसकी सहायक नदियों द्वारा अपवाहित भूमि क्षेत्र।
(C) भूमि का वह विशिष्ट क्षेत्र जो नदी द्वारा गंभीर आवधिक बाढ़ के अधीन होता है।
(D) गहरा भूमिगत जलभृत जाल जो एक बारहमासी नदी प्रणाली को पोषित करता है।

82. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A) : दिल्ली के पास यमुना नदी में बायोकेमिकल ऑक्सीजन डिमांड (BOD) का स्तर असाधारण रूप से उच्च है।
कारण (R) : जब नदी नगर से होकर बहती है, तो इसमें बड़ी मात्रा में अनुपचारित घरेलू सीवेज और औद्योगिक अपशिष्ट प्रवाहित किए जाते हैं।
सही विकल्प का चयन कीजिए:
(A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) अभिकथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) अभिकथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

83. सुबनसिरी, कामेंग, धनसिरी और मानस किस नदी बेसिन की महत्वपूर्ण सहायक नदियाँ हैं?
(A) ब्रह्मपुत्र
(B) गंगा
(C) गोदावरी
(D) सिंधु

NODIA

84. निम्नलिखित में से कौन-सी नदी हिमाचल प्रदेश राज्य से नहीं निकलती है?
(A) व्यास
(B) रावी
(C) झेलम
(D) चिनाब

85. भारत की निम्नलिखित नदियों को उनकी कुल लंबाई के घटते क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. गंगा
2. गोदावरी
3. कृष्णा
4. नर्मदा
(A) 1-2-3-4
(B) 1-3-2-4
(C) 2-1-3-4
(D) 1-2-4-3

86. गोदावरी नदी बेसिन के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?
(A) इसे मानसूनी वर्षा लगभग पूरी तरह से लौटते हुए उत्तर-पूर्वी मानसून से प्राप्त होती है।
(B) यह सभी भारतीय नदियों में सबसे बड़े नदी बेसिन क्षेत्र को आच्छादित करता है, जो गंगा से भी अधिक है।
(C) यह एक पूर्ववर्ती नदी है जो सीधे पूर्वी घाट को काटकर गहरे महाखड्ड बनाती है।
(D) यह महाराष्ट्र, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, छत्तीसगढ़ और ओडिशा में फैला हुआ है।

87. एक प्रमुख जलविद्युत परियोजना, अल्मट्टी बांध निम्नलिखित में से किस नदी पर बनाया गया है?
(A) गोदावरी
(B) कृष्णा
(C) कावेरी
(D) तुंगभद्रा

88. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
सूची I : (झील)
P. वूलर झील
Q. चिल्का झील
R. पुलिकट झील
S. लोनार झील
सूची II : (प्रकार/निर्माण)
1. तटीय कयाल (खारा)
2. विवर्तनिक मीठे पानी
3. क्रेटर/उल्कापिंड
4. रोधक कयाल
(A) P-2, Q-1, R-4, S-3

(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-2, Q-4, R-1, S-3
(D) P-3, Q-1, R-4, S-2

89. अधिकांश प्रायद्वीपीय नदियों की तुलना में नर्मदा और तापी दोनों नदियाँ एक अनूठी भौगोलिक विशेषता साझा करती हैं। निम्नलिखित में से वह कौन-सी है?
(A) वे दोनों अपने मुहानों पर बड़े, उपजाऊ डेल्टा बनाती हैं।
(B) वे दोनों पश्चिमी घाट से निकलती हैं।
(C) वे दोनों गंगा की तुलना में अधिक मात्रा में निलंबित गाद ले जाती हैं।
(D) वे दोनों संरचनात्मक द्रोणी या भ्रंश घाटियों से होकर बहती हैं।

90. 'महाद्वीपीय मग्नतट' शब्द मत्स्य पालन और पेट्रोलियम निष्कर्षण के लिए महत्वपूर्ण है। भारतीय तटरेखा पर किस ओर सामान्यतः अधिक चौड़ा महाद्वीपीय मग्नतट पाया जाता है?
(A) पश्चिमी तट
(B) पूर्वी तट
(C) केवल कोरोमंडल तट
(D) दोनों तटों पर समान रूप से चौड़े महाद्वीपीय मग्नतट हैं

www.nodia.in

Downloaded from www.pdf.tube

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs, you are wasting valuable time.

Research shows that learning from **PRINTED BOOKS** has up to **4× HIGHER RETENTION** than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS** move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND** in competition.

In competitive exams, being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) हिमालयी नदियाँ हिम पिघलने और वर्षा दोनों से पोषित होती हैं, जिससे वे बारहमासी बनती हैं।
हिमालयी नदियाँ अपने उद्गम क्षेत्रों में उच्च पर्वतीय ग्लेशियरों या हिमनदों से निरंतर जल प्राप्त करती हैं। इसके अतिरिक्त ग्रीष्मकालीन मानसूनी वर्षा भी इनके जल स्तर में वृद्धि करती है। इस दोहरे जल स्रोत के कारण ये नदियाँ वर्ष भर निरंतर बहती रहती हैं। इसके विपरीत प्रायद्वीपीय नदियाँ केवल मानसूनी वर्षा पर निर्भर होती हैं और शुष्क मौसम में प्रायः सूख जाती हैं।

2. (D) ये गहरी V-आकार की घाटियों के साथ नदी पार्श्विका की अत्यधिक युवावस्था को प्रदर्शित करती हैं।
प्रायद्वीपीय नदियाँ अत्यंत प्राचीन भू-भाग पर प्रवाहित होती हैं, जिसके कारण वे अपनी प्रौढ़ावस्था में पहुँच चुकी हैं। इन नदियों ने अपरदन का आधार तल प्राप्त कर लिया है और इनकी घाटियाँ उथली तथा चौड़ी हैं। गहरी V-आकार की घाटियाँ तथा अत्यधिक युवावस्था की विशेषताएँ हिमालयी पर्वतीय नदियों में पाई जाती हैं, जबकि प्रायद्वीपीय नदियाँ मुख्यतः समतल घाटियों, निश्चित मार्गों और विसर्पों के अभाव से चिह्नित होती हैं।

3. (A) भागीरथी और अलकनंदा
देवप्रयाग उत्तराखंड के गढ़वाल क्षेत्र में स्थित एक अत्यंत पवित्र संगम स्थल है। यहाँ उत्तरकाशी जिले के गंगोत्री हिमनद से निकलने वाली भागीरथी नदी और चमोली के सतोपंथ हिमनद से निकलने वाली अलकनंदा नदी का आपस में मिलन होता है। इस पवित्र संगम बिंदु के पश्चात् ही यह संयुक्त जलधारा औपचारिक रूप से गंगा नदी के नाम से जानी जाती है और मैदानों में बहती है।

4. (C) सोन
गंगा नदी में विभिन्न क्षेत्रों से कई सहायक नदियाँ आकर मिलती हैं। सोन नदी मध्य प्रदेश की अमरकंटक पहाड़ियों से निकलकर उत्तर की ओर बहती है और पटना के निकट दक्षिण दिशा अर्थात गंगा के दाएँ तट से आकर इसमें मिलती है। इसके विपरीत गोमती, गंडक और कोसी जैसी अन्य नदियाँ हिमालयी क्षेत्र से उत्पन्न होकर उत्तर दिशा अर्थात गंगा के बाएँ तट से इसमें समाहित होती हैं।

5. (A) रुद्रप्रयाग - अलकनंदा और मंदाकिनी
उत्तराखंड राज्य में पंच प्रयागों का अत्यंत महत्वपूर्ण धार्मिक और भौगोलिक स्थान है। रुद्रप्रयाग में अलकनंदा नदी का मंदाकिनी नदी से पवित्र संगम होता है। इसके अतिरिक्त कर्णप्रयाग में अलकनंदा और पिंडर नदी मिलती हैं, नंदप्रयाग में अलकनंदा और नंदाकिनी का मिलन होता है तथा विष्णुप्रयाग में अलकनंदा एवं धौलीगंगा नदियाँ आपस में मिलती हैं। देवप्रयाग में अलकनंदा भागीरथी नदी से मिलकर गंगा बनाती है।

6. (D) पंजाब
गंगा नदी बेसिन भारत का सबसे बड़ा अपवाह बेसिन है, जो देश के लगभग 26% भू-भाग को आच्छादित करता है। इस विशाल बेसिन के अंतर्गत उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल, मध्य प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, छत्तीसगढ़ और झारखंड राज्य आते हैं। पंजाब राज्य सिंधु नदी अपवाह तंत्र का मुख्य हिस्सा है और यह भौगोलिक रूप से गंगा बेसिन के अंतर्गत नहीं आता है।

7. (B) कोलकाता बंदरगाह की नौवहन क्षमता बनाए रखने के लिए हुगली नदी में जल मोड़ना
पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद जिले में स्थित फरक्का बैराज का निर्माण 1975 में पूर्ण हुआ था। इसका मुख्य भौगोलिक और तकनीकी उद्देश्य गंगा नदी के जल को पद्मा की ओर बहने से रोककर हुगली नदी में मोड़ना था। इस जल मोड़ से हुगली नदी में निरंतर जलप्रवाह बना रहता है, जिससे गाद का जमाव कम होता है और कोलकाता बंदरगाह की नौवहन क्षमता सुरक्षित रहती है।

NODIA

8. (C) यरलुंग त्सांगपो
ब्रह्मपुत्र नदी का उद्गम तिब्बत में मानसरोवर झील के निकट स्थित चेमायुंगडुंग हिमनद से होता है। तिब्बत के शुष्क और समतल पठारी क्षेत्र में पूर्व की ओर प्रवाहित होते समय इस नदी को यरलुंग त्सांगपो नाम से जाना जाता है। भारत के अरुणाचल प्रदेश राज्य में प्रवेश करने के उपरांत इसे सिआंग अथवा दिहांग कहा जाता है, तथा असम में यह ब्रह्मपुत्र नाम धारण करती है।

9. (D) तीस्ता
तीस्ता नदी का उद्गम तिब्बत क्षेत्र के पाहुनरी हिमनद से होता है। वहाँ से दक्षिण की ओर प्रवाहित होकर यह भारत के सिक्किम राज्य में प्रवेश करती है और तीस्ता घाटी का निर्माण करती है। इसके पश्चात् पश्चिम बंगाल से होकर बहते हुए यह अंततः बांग्लादेश में प्रवेश करती है, जहाँ यह ब्रह्मपुत्र नदी (जमुना) में मिल जाती है। सुबनसिरी, कामेंग और मानस अन्य क्षेत्रों से प्रवाहित होती हैं।

10. (D) I, II, III और IV
ब्रह्मपुत्र नदी चेमायुंगडुंग हिमनद से निकलती है और अरुणाचल प्रदेश में दिहांग नाम से प्रवेश करती है। असम घाटी में यह विशाल नदी तंत्र बनाती है और विश्व के सबसे बड़े नदी द्वीप माजुली का निर्माण करती है। बांग्लादेश में प्रवेश करने के बाद यह गंगा (पद्मा) में मिलती है तथा अंततः मेघना के रूप में बंगाल की खाड़ी में विलीन हो जाती है। अतः सभी कथन सत्य हैं।

11. (B) टोंस
ब्रह्मपुत्र नदी तंत्र पूर्वोत्तर भारत का मुख्य अपवाह तंत्र है जिसमें धनसिरी, लोहित, संकोश, सुबनसिरी और मानस जैसी नदियाँ सम्मिलित हैं। इसके विपरीत टोंस नदी उत्तराखंड में बंदरपूँछ पर्वत श्रृंखला से निकलती है और यह यमुना नदी की सबसे बड़ी सहायक नदी है। टोंस नदी का ब्रह्मपुत्र नदी तंत्र से कोई संबंध नहीं है, क्योंकि यह गंगा नदी तंत्र का एक अंग है।

12. (A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
भारत के प्रायद्वीपीय पठार की नदियाँ मुख्य रूप से वर्षा पर आश्रित होती हैं। इन नदियों का उद्गम पश्चिमी घाट या मध्य भारत की पहाड़ियों से होता है, जहाँ हिम-आच्छादित हिमनद उपस्थित नहीं हैं। इसलिए केवल मानसूनी वर्षा के महीनों में इनमें पर्याप्त जल बहता है और शुष्क ग्रीष्म ऋतु में इनका प्रवाह अत्यधिक घट जाता है। अतः अभिकथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण सही व्याख्या प्रस्तुत करता है।

13. (A) रावी, व्यास और सतलुज
1960 में विश्व बैंक की मध्यस्थता से भारत और पाकिस्तान के मध्य सिंधु जल संधि पर हस्ताक्षर किए गए थे। इस ऐतिहासिक समझौते के तहत पूर्वी नदियों अर्थात् रावी, व्यास और सतलुज के संपूर्ण जल पर भारत को अप्रतिबंधित और विशेष अधिकार प्रदान किए गए। जबकि पश्चिमी नदियों अर्थात् सिंधु, झेलम और चिनाब के अधिकांश जल का उपयोग पाकिस्तान द्वारा करने का प्रावधान किया गया था।

14. (C) झेलम
झेलम नदी सिंधु नदी प्रणाली की एक अत्यंत महत्वपूर्ण सहायक नदी है। इसका उद्गम जम्मू और कश्मीर राज्य में पीर पंजाल पर्वतमाला के पाद क्षेत्र में स्थित प्रसिद्ध वेरीनाग झरने से होता है। अपने शुरुआती मार्ग में यह श्रीनगर शहर तथा प्रसिद्ध वूलर झील से होकर प्रवाहित होती है। इसके पश्चात् यह तंग महाखड्डों का निर्माण करते हुए पाकिस्तान क्षेत्र में प्रवेश कर जाती है।

15. (D) I, II और III
चिनाब नदी हिमाचल प्रदेश के लाहुल क्षेत्र में चंद्रा और भागा दो धाराओं के संगम से बनती है। व्यास नदी रोहतांग दर्रे के समीप से निकलकर पूरी तरह भारतीय सीमा के भीतर प्रवाहित होकर सतलुज में मिलती है। सतलुज नदी तिब्बत में मानसरोवर के निकट स्थित राकस ताल से निकलती है। इस प्रकार दिए गए तीनों कथन भौगोलिक दृष्टि से पूर्णतः सत्य और सटीक हैं।

16. (C) शिपकी ला
सतलुज नदी का उद्गम तिब्बत के राकस ताल जलाशय से होता है। यह नदी हिमालय पर्वत श्रेणियों को काटती हुई एक गहरी घाटी बनाती है। भारत में यह हिमाचल प्रदेश राज्य के किन्नौर जिले में स्थित शिपकी ला दर्रे के माध्यम से प्रवेश करती है। इसके पश्चात् यह पंजाब के मैदानों में बहती हुई अंततः पाकिस्तान में प्रवेश कर सिंधु नदी से मिल जाती है।

17. (B) नासिक जिला, महाराष्ट्र में त्र्यंबकेश्वर
गोदावरी नदी प्रायद्वीपीय भारत की सबसे लंबी और सबसे विशाल नदी प्रणाली है। इसका उद्गम महाराष्ट्र राज्य के नासिक जिले में पश्चिमी घाट की श्रेणियों में स्थित त्र्यंबकेश्वर नामक स्थान से होता है। यहाँ से यह पूर्व दिशा की ओर प्रवाहित होकर महाराष्ट्र, तेलंगाना, छत्तीसगढ़ और आंध्र प्रदेश राज्यों से गुजरती हुई अंततः बंगाल की खाड़ी में अपना जल विसर्जित करती है।

18. (D) हेमावती
प्राणहिता, इंद्रावती, मंजिरा, पेनगंगा और वैनगंगा गोदावरी नदी की प्रमुख सहायक नदियाँ हैं जो इसके विस्तृत अपवाह क्षेत्र को जल प्रदान करती हैं। इसके विपरीत हेमावती नदी कर्नाटक के चिकमगलूर जिले में पश्चिमी घाट से निकलती है और यह कावेरी नदी की एक महत्वपूर्ण बाएँ तट की सहायक नदी है। इसलिए हेमावती नदी का गोदावरी नदी तंत्र से कोई संबंध नहीं है।

19. (A) इसके बड़े आकार, विस्तार और क्षेत्रीय महत्त्व
गोदावरी नदी लगभग 1465 किलोमीटर लंबी है और इसका अपवाह बेसिन प्रायद्वीपीय भारत में सबसे बड़ा है। अपने विशाल भौगोलिक विस्तार, अत्यधिक लंबाई तथा दक्षिण भारत में सांस्कृतिक व आर्थिक महत्त्व के कारणइसे बहुधा 'दक्षिण गंगा' या 'वृद्ध गंगा' के नाम से जाना जाता है। यद्यपि यह मौसमी नदी है, परंतु इसका क्षेत्रीय महत्त्व उत्तर भारत की गंगा नदी के तुल्य माना जाता है।

20. (C) आंध्र प्रदेश
गोदावरी नदी महाराष्ट्र, तेलंगाना और छत्तीसगढ़ से बहती हुई आंध्र प्रदेश राज्य में प्रवेश करती है। आंध्र प्रदेश के राजमुंद्री शहर के निकट यह नदी दो प्रमुख शाखाओं - गौतमी और वसिष्ठ में विभाजित होकर एक विस्तृत एवं उपजाऊ डेल्टा का निर्माण शुरू करती है। यह डेल्टा क्षेत्र कृषि उत्पादन की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है और अंततः बंगाल की खाड़ी में विलीन हो जाता है।

21. (A) कृष्णा
कृष्णा नदी की कुल लंबाई लगभग 1400 किलोमीटर है, जो गोदावरी के बाद प्रायद्वीपीय भारत की पूर्व की ओर बहने वाली दूसरी सबसे लंबी नदी है। इसका उद्गम महाराष्ट्र के महाबलेश्वर के निकट पश्चिमी घाट से होता है। यह नदी महाराष्ट्र, कर्नाटक, तेलंगाना और आंध्र प्रदेश राज्यों से होकर बहती है तथा पूर्वी तट पर बंगाल की खाड़ी में गिरने से पूर्व एक उपजाऊ डेल्टा बनाती है।

22. (A) P-4, Q-3, R-2, S-1
गोदावरी का उद्गम महाराष्ट्र के त्र्यंबकेश्वर से होता है, जबकि कृष्णा नदी महाबलेश्वर के निकट से निकलती है। कावेरी नदी कर्नाटक के कोडागु जिले में स्थित तालकावेरी से निकलती है, तथा नर्मदा नदी मध्य प्रदेश के अमरकंटक पठार से निकलती है। इस प्रकार सभी नदियों के उद्गम स्थलों का सही मिलान P-4, Q-3, R-2 और S-1 क्रम में पूर्ण होता है।

Click Here to Buy book on Amazon

23. (B) कृष्णा
तुंगभद्रा नदी कर्नाटक राज्य में पश्चिमी घाट से निकलने वाली दो नदियों, तुंगा और भद्रा, के संगम से निर्मित होती है। यह कृष्णा नदी तंत्र की सबसे प्रमुख और विशाल सहायक नदी है। यह नदी कर्नाटक, तेलंगाना और आंध्र प्रदेश में प्रवाहित होती हुई आंध्र प्रदेश के कर्नूल जिले के पास मुख्य कृष्णा नदी में मिल जाती है। इस पर प्रसिद्ध तुंगभद्रा बांध भी स्थित है।

24. (C) वैनगंगा
भीमा, मूसी और घटप्रभा नदियाँ कृष्णा नदी तंत्र की महत्वपूर्ण सहायक नदियाँ हैं जो इसके अपवाह क्षेत्र का निर्माण करती हैं। इसके विपरीत वैनगंगा नदी मध्य प्रदेश के सिवनी जिले से निकलती है और दक्षिण की ओर बहती हुई गोदावरी नदी में मिल जाती है। इस प्रकार वैनगंगा गोदावरी नदी तंत्र का हिस्सा है, जिसके कारण यह अन्य तीन सहायक नदियों के समूह से भिन्न है।

25. (D) इसे दक्षिण-पश्चिम और उत्तर-पूर्वी दोनों मानसूनी हवाओं से वर्षा प्राप्त होती है।
कावेरी नदी का ऊपरी जलग्रहण क्षेत्र कर्नाटक में स्थित है, जहाँ ग्रीष्मकाल के दौरान दक्षिण-पश्चिम मानसून द्वारा भारी वर्षा होती है। इसका निचला अपवाह क्षेत्र तमिलनाडु में स्थित है, जहाँ शीतकाल के दौरान लौटते हुए उत्तर-पूर्वी मानसून द्वारा वर्षा होती है। दोनों मानसून सत्रों से जल प्राप्त होने के कारण कावेरी में अन्य प्रायद्वीपीय नदियों की तुलना में वर्ष भर जल की निरंतरता बनी रहती है।

26. (A) कावेरी
शिवसमुद्रम जलप्रपात भारत का एक अत्यंत प्रसिद्ध और सुरम्य जलप्रपात है जो कर्नाटक राज्य के चामराजनगर जिले में स्थित है। यह जलप्रपात कावेरी नदी के प्रवाह मार्ग में बनता है, जहाँ नदी दो शाखाओं में विभाजित होकर चट्टानी ढलानों से नीचे गिरती है। यहाँ वर्ष 1902 में भारत के सबसे पहले जलविद्युत संयंत्रों में से एक की स्थापना की गई थी।

27. (B) कर्नाटक, तमिलनाडु, केरल और पुडुचेरी
कावेरी नदी बेसिन का कुल क्षेत्रफल लगभग 81,155 वर्ग किलोमीटर है। यह बेसिन भारत के चार राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों में फैला हुआ है। इसमें कर्नाटक में इसका ऊपरी भाग, केरल में सहायक नदियों का जलग्रहण क्षेत्र, तमिलनाडु में इसका मुख्य मार्ग व विस्तृत डेल्टा, तथा केंद्र शासित प्रदेश पुडुचेरी का कराइकल क्षेत्र सम्मिलित है। इस प्रकार यह इन चारों प्रशासनिक क्षेत्रों में विस्तृत है।

28. (A) महानदी, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी
भारत के पूर्वी तट की ओर बहने वाली नदियों का उत्तर से दक्षिण का सही भौगोलिक क्रम महानदी, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी है। महानदी ओडिशा से होकर बहती है, गोदावरी आंध्र प्रदेश के पास गिरती है, कृष्णा आंध्र प्रदेश के दक्षिण में गिरती है तथा कावेरी तमिलनाडु के तट से बंगाल की खाड़ी में विलीन होती है। यह अनुक्रम मानचित्र पर स्पष्ट दिखाई देता है।

29. (A) यह विंध्य और सतपुड़ा श्रेणियों के बीच एक भ्रंश घाटी से होकर बहती है।
प्रायद्वीपीय पठार की अधिकांश नदियाँ पूर्व की ओर बहती हैं क्योंकि पठार का सामान्य ढाल पूर्व की ओर है। परंतु नर्मदा नदी उत्तर में विंध्याचल और दक्षिण में सतपुड़ा पर्वत श्रृंखलाओं के मध्य स्थित एक गहरी भ्रंश घाटी (रिफ्ट वैली) से होकर प्रवाहित होती है। इस भूवैज्ञानिक संरचनात्मक द्रोणी की ढलान पश्चिम की ओर होने के कारण यह नदी सीधे अरब सागर में गिरती है।

30. (C) I, II और III
नर्मदा नदी मध्य प्रदेश के अमरकंटक पठार से निकलती है और विंध्य तथा सतपुड़ा श्रेणियों के बीच भ्रंश घाटी में बहती है। जबलपुर के निकट यह संगमरमर की चट्टानों के बीच धुआंधार जलप्रपात बनाती है। तीव्र ढाल और कम गाद के कारण यह खंभात की खाड़ी में ज्वारनदमुख (एश्चुअरी) बनाती है, न कि डेल्टा। इसलिए केवल प्रथम तीन कथन पूर्णतः सही हैं।

31. (D) सुवर्णरेखा
तापी, माही और साबरमती नदियाँ पश्चिम की ओर प्रवाहित होकर खंभात की खाड़ी के माध्यम से अरब सागर में गिरती हैं। इसके विपरीत सुवर्णरेखा नदी झारखंड के छोटानागपुर पठार से निकलती है और पश्चिम बंगाल तथा ओडिशा राज्यों से बहती हुई पूर्व दिशा की ओर बंगाल की खाड़ी में अपना जल विसर्जित करती है। अतः सुवर्णरेखा पश्चिम की ओर बहने वाली नदी नहीं है।

32. (C) मध्य प्रदेश के बैतूल जिले में मुलताई
तापी नदी प्रायद्वीपीय भारत की एक प्रमुख पश्चिम-वाहिनी नदी है। इसका उद्गम मध्य प्रदेश राज्य के बैतूल जिले में सतपुड़ा पर्वत श्रृंखला की मुलताई नामक आरक्षित वन भूमि से होता है। मुलताई से निकलने के पश्चात् यह नदी मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और गुजरात राज्यों में सतपुड़ा श्रेणी के समानांतर प्रवाहित होती हुई अंततः खंभात की खाड़ी में अरब सागर से मिल जाती है।

33. (B) इसका बेसिन मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और गुजरात के भागों में विस्तृत है।
तापी नदी का कुल अपवाह बेसिन लगभग 65,145 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है। इसका लगभग 79 प्रतिशत भाग महाराष्ट्र में, 15 प्रतिशत भाग मध्य प्रदेश में और 6 प्रतिशत भाग गुजरात राज्य में स्थित है। यद्यपि यह नर्मदा के समानांतर बहती है, परंतु नर्मदा इससे अधिक लंबी है। तापी नदी का उद्गम सतपुड़ा पहाड़ियों से होता है, न कि पश्चिमी घाट से।

34. (D) सतलुज
भाखड़ा नांगल परियोजना स्वतंत्र भारत की सबसे शुरुआती और सबसे बड़ी बहुउद्देशीय नदी घाटी परियोजनाओं में से एक है। यह विशाल बांध हिमाचल प्रदेश और पंजाब की सीमा पर सतलुज नदी पर बनाया गया है। यह परियोजना उत्तरी भारत में कृषि सिंचाई, पेयजल आपूर्ति और औद्योगिक जलविद्युत

NODIA

उत्पादन के क्षेत्र में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और क्षेत्रीय आर्थिक प्रगति की रीढ़ है।

35. (A) केवल I और II
भाखड़ा नांगल परियोजना पंजाब, हरियाणा और राजस्थान राज्यों का एक विशाल संयुक्त उद्यम है। इसके जलाशय को सिखों के दसवें गुरु, गुरु गोविंद सिंह के नाम पर 'गोविंद सागर' कहा जाता है। यह परियोजना पूरी तरह से सतलुज नदी के जल का उपयोग करने के लिए बनाई गई है, झेलम नदी से इसका कोई संबंध नहीं है। अतः कथन I और II सही हैं।

36. (C) महानदी
हीराकुड बांध विश्व के सबसे लंबे मिट्टी के बांधों में गिना जाता है, जिसकी कुल लंबाई 25.8 किलोमीटर है। इस ऐतिहासिक बांध का निर्माण ओडिशा राज्य में महानदी पर किया गया है। इसका निर्माण मुख्य रूप से महानदी घाटी में आने वाली विनाशकारी बाढ़ों को नियंत्रित करने, कृषि के लिए सिंचाई क्षमता विकसित करने और विशाल पैमाने पर जलविद्युत उत्पन्न करने हेतु किया गया था।

37. (A) ओडिशा
हीराकुड बांध परियोजना पूर्वी भारत के ओडिशा राज्य के संबलपुर जिले में स्थित है। 1957 में निर्मित यह बांध महानदी के जलप्रवाह को नियमित करता है। इस परियोजना ने ओडिशा के एक बड़े भाग को बाढ़ से सुरक्षा प्रदान करने के साथ-साथ राज्य की कृषि व्यवस्था और औद्योगिक जलविद्युत जरूरतों को पूरा करने में क्रांतिकारी बदलाव किया है, जिससे राज्य का तेजी से आर्थिक विकास हुआ।

38. (B) 1-2-3-4
इन बहुउद्देशीय परियोजनाओं का उत्तर से दक्षिण का सही भौगोलिक क्रम है: सबसे उत्तर में पंजाब-हिमाचल सीमा पर भाखड़ा नांगल (सतलुज नदी), उसके दक्षिण में उत्तराखंड में टिहरी बांध (भागीरथी नदी), फिर ओडिशा में हीराकुड बांध (महानदी), और सबसे दक्षिण में आंध्र प्रदेश-तेलंगाना सीमा पर नागार्जुन सागर बांध (कृष्णा नदी)। अतः सही क्रम 1-2-3-4 है।

39. (B) नर्मदा
सरदार सरोवर बांध गुजरात के नर्मदा जिले में केवड़िया के पास नर्मदा नदी पर निर्मित एक विशाल कंक्रीट गुरुत्व बांध है। यह नर्मदा घाटी परियोजना का सबसे बड़ा बांध है। इस बहुउद्देशीय परियोजना का प्राथमिक उद्देश्य गुजरात, राजस्थान और मध्य प्रदेश के सूखाग्रस्त क्षेत्रों में सिंचाई जल और पेयजल उपलब्ध कराना तथा विशाल जलविद्युत शक्ति उत्पन्न करना है।

40. (C) छत्तीसगढ़
सरदार सरोवर परियोजना भारत के चार प्रमुख राज्यों - गुजरात, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और राजस्थान का एक अंतरराज्यीय संयुक्त उद्यम है। इन चारों राज्यों को परियोजना से जल और विद्युत का बंटवारा प्राप्त होता है। छत्तीसगढ़ राज्य यद्यपि मध्य प्रदेश का पड़ोसी है, परंतु वह इस विशिष्ट परियोजना के लाभार्थी राज्यों की सूची में शामिल नहीं है।

41. (D) भागीरथी और भिलंगना
टिहरी बांध भारत का सबसे ऊँचा और विश्व के उच्चतम बांधों में से एक है, जिसकी ऊँचाई 260.5 मीटर है। यह विशाल बांध उत्तराखंड राज्य के गढ़वाल क्षेत्र में टिहरी जिले के पास भागीरथी नदी और उसकी सहायक भिलंगना नदी के संगम स्थल पर बनाया गया है। यह बांध विशाल जलापूर्ति और जलविद्युत क्षमता प्रदान करता है।

42. (A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
टिहरी बांध के निर्माण के समय विशाल जन-आंदोलन और विरोध हुआ था। इसका मुख्य कारण यह था कि यह विशाल संरचना मध्य हिमालय के अत्यधिक संवेदनशील और भूकंप-संभावित ज़ोन 5 क्षेत्र में बनाई गई है। भविष्य में किसी तीव्र भूकंप के कारण बांध टूटने पर निचले मैदानी इलाकों में भारी विनाश की आशंका बनी रहती है। अतः कथन और कारण दोनों सत्य हैं।

43. (B) उत्तराखंड
टिहरी बांध उत्तर भारत के उत्तराखंड राज्य में गढ़वाल मंडल के टिहरी गढ़वाल जिले में स्थित है। यह भागीरथी नदी पर निर्मित एक प्राथमिक जलविद्युत और सिंचाई परिसर है। यह बांध न केवल दिल्ली और उत्तर प्रदेश जैसे पड़ोसी राज्यों को पेयजल उपलब्ध कराता है, बल्कि राष्ट्रीय ग्रिड के लिए 2400 मेगावाट की कुल क्षमता वाली बिजली भी उत्पन्न करता है।

44. (B) कृष्णा
नागार्जुन सागर बांध भारत की सबसे बड़ी बहुउद्देशीय नदी घाटी परियोजनाओं में से एक है। यह विशाल चिनाई वाला बांध कृष्णा नदी के निचले प्रवाह पर बनाया गया है। इस बांध द्वारा निर्मित जलाशय 'नागार्जुन सागर' दुनिया के सबसे बड़े मानव निर्मित जलाशयों में गिना जाता है, जो विशाल कृषि क्षेत्रों में सिंचाई और बिजली उत्पादन के लिए जल प्रदान करता है।

45. (A) आंध्र प्रदेश और तेलंगाना
नागार्जुन सागर बांध आंध्र प्रदेश के पालनाडु जिले और तेलंगाना के नलगोंडा जिले के मध्य सीमा पर स्थित है। यह कृष्णा नदी पर निर्मित है और दोनों राज्यों को व्यापक स्तर पर सिंचाई और जलविद्युत लाभ प्रदान करता है। 2014 में आंध्र प्रदेश के पुनर्गठन के बाद यह बांध दोनों राज्यों के लिए एक महत्वपूर्ण जल संसाधन प्रबंधन बिंदु बना हुआ है।

46. (C) नदी बेसिन एक प्रमुख नदी प्रणाली को अपवाहित करता है, जबकि जलसम्भर एक छोटी धारा या सहायक नदी को अपवाहित करता है।
नदी बेसिन और जलसम्भर (वॉटरशेड) दोनों भौगोलिक जल-अपवाह इकाइयाँ हैं, परंतु उनके आकार में बड़ा अंतर होता है। एक नदी बेसिन एक बड़ी मुख्य नदी और उसकी सभी सहायक नदियों द्वारा अपवाहित विस्तृत भूमि क्षेत्र को निरुपित करता है। इसके विपरीत, जलसम्भर आकार में छोटा होता है जो किसी छोटी धारा, नाले या सहायक नदी के जलग्रहण क्षेत्र को निरुपित करता है।

Downloaded from www.pdf.tube

47. (D) सिंचाई, विद्युत और बाढ़ नियंत्रण जैसे अनेक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए परिकल्पित परियोजना।
बहुउद्देशीय नदी घाटी परियोजनाएँ वे एकीकृत संरचनाएँ होती हैं जो एक ही जल संसाधन से कई सामाजिक और आर्थिक लक्ष्यों को एक साथ प्राप्त करने के लिए बनाई जाती हैं। इन परियोजनाओं का प्राथमिक उद्देश्य कृषि हेतु सिंचाई सुविधाओं का विस्तार, जलविद्युत का उत्पादन, बाढ़ पर प्रभावी नियंत्रण, पेयजल आपूर्ति, मत्स्य पालन तथा नौवहन एवं पर्यटन का विकास करना होता है।

48. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
भाखड़ा नांगल बांध सतलुज नदी पर स्थित है, जबकि हीराकुड बांध ओडिशा में महानदी पर निर्मित है। सरदार सरोवर बांध गुजरात में नर्मदा नदी पर बना हुआ है, तथा टिहरी बांध उत्तराखंड में भागीरथी नदी पर स्थित है। इस प्रकार इन सभी प्रमुख बांध परियोजनाओं और उनकी संबंधित नदियों का सही सुमेलित क्रम P-3, Q-4, R-1 और S-2 है।

49. (B) विवर्तनिक गतिविधि
जम्मू और कश्मीर के बांदीपोरा जिले में स्थित वूलर झील एशिया की सबसे बड़ी मीठे पानी की झीलों में से एक है। इस झील का निर्माण पृथ्वी की आंतरिक विवर्तनिक (टेक्टोनिक) गतिविधियों के कारण हुआ भू-भाग के धँसाव से हुआ था। इसके अतिरिक्त यह झेलम नदी द्वारा निरंतर पोषित होती है जो इसमें पानी लाती है और बहकर आगे निकलती है।

50. (B) I, II और IV
वूलर झील जम्मू-कश्मीर में झेलम नदी द्वारा पोषित होती है। चिल्का झील ओडिशा के पूर्वी तट पर भारत की सबसे बड़ी तटीय खारे पानी की झील (कयाल) है, और पुलिकट झील कोरोमंडल तट पर आंध्र प्रदेश-तमिलनाडु सीमा पर स्थित है। डल झील श्रीनगर (जम्मू-कश्मीर) में है, न कि हिमाचल प्रदेश में। अतः केवल कथन I, II और IV सही हैं।

51. (A) राड
श्रीनगर में स्थित प्रसिद्ध डल झील में वनस्पति, मिट्टी और जैविक पदार्थों के सड़ने से निर्मित तैरते हुए द्वीप पाए जाते हैं। इन तैरते हुए बगीचों को स्थानीय कश्मीरी भाषा में 'राड' कहा जाता है। झील के आसपास के कृषक इन तैरती भूमियों पर विशेष रूप से सब्जियों जैसे टमाटर, खीरा, कद्दू और खरबूजे की जैविक खेती सफलता पूर्वक करते हैं।

52. (C) महानदी
चिल्का झील भारत के पूर्वी राज्य ओडिशा में स्थित एशिया की सबसे बड़ी खारे पानी की तटीय झील है। भौगोलिक रूप से यह झील महानदी नदी प्रणाली के मुहाने के ठीक दक्षिण में स्थित है। महानदी की विभिन्न वितरिकाएँ और तटीय नदियाँ इस लैगून में मीठा जल लाती हैं, जो बंगाल की खाड़ी के खारे जल से मिलकर अनूठा पारिस्थितिकी तंत्र बनाता है।

53. (A) दया और भार्गवी
चिल्का झील एक विशाल तटीय लैगून है जिसे मुख्य रूप से ओडिशा की स्थानीय नदियों से मीठा जल प्राप्त होता है। दया और भार्गवी नदियाँ, जो महानदी अपवाह तंत्र की तटीय शाखाएँ हैं, सीधे चिल्का झील के उत्तरी भाग में गिरती हैं। इन नदियों का प्रवाहित जल चिल्का झील के लवणीय संतुलन और जल विज्ञान को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

54. (D) आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु
पुलिकट झील चिल्का के बाद भारत की दूसरी सबसे बड़ी खारे पानी की तटीय झील है। यह दक्षिण भारत के पूर्वी तट पर स्थित है और इसकी भौगोलिक सीमा आंध्र प्रदेश के तिरुपति जिले और तमिलनाडु के तिरुवल्लुर जिले के बीच फैली हुई है। इस झील का लगभग 84% भाग आंध्र प्रदेश में तथा 16% भाग तमिलनाडु राज्य के अंतर्गत आता है।

55. (A) केवल I और II
पुलिकट झील को श्रीहरिकोटा का लंबा रोधक द्वीप बंगाल की खाड़ी से पृथक करता है। यह पक्षी अभयारण्य फ्लेमिंगो जैसे हजारों प्रवासी पक्षियों के लिए प्रसिद्ध ग्रीष्मकालीन आवास है। यह झील केवल आंध्र प्रदेश में नहीं है, बल्कि आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु दोनों राज्यों की सीमाओं में विस्तृत है। इसलिए केवल कथन I और II सत्य हैं।

56. (C) केन-बेतवा लिंक
भारत में राष्ट्रीय जल विकास एजेंसी द्वारा प्रस्तावित नदियों को आपस में जोड़ने की महत्वाकांक्षी राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य योजना के तहत केन-बेतवा लिंक परियोजना पहली स्वीकृत और निष्पादित की जाने वाली पहल है। इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य मध्य प्रदेश में केन नदी के अधिशेष जल को उत्तर प्रदेश के सूखाग्रस्त बुंदेलखंड क्षेत्र की बेतवा नदी में स्थानांतरित करना है।

57. (D) बारहमासी नदियों को मौसमी नदियों में परिवर्तित करना
भारत में नदी जोड़ो परियोजना का मुख्य उद्देश्य जल-अधिशेष वाले क्षेत्रों से पानी को सूखाग्रस्त क्षेत्रों में भेजना, जलविद्युत क्षमता बढ़ाना, बाढ़ नियंत्रण और अंतर्देशीय जल परिवहन का विकास करना है। किसी भी बारहमासी नदी को मौसमी नदी में बदलना इसका उद्देश्य कभी नहीं हो सकता, बल्कि यह मौसमी नदियों में जल की उपलब्धता को निरंतर बनाए रखने का प्रयास करती है।

58. (A) कांडला, मुंबई, न्यू मंगलौर, कोच्चि
भारत के पश्चिमी तट पर स्थित प्रमुख बंदरगाहों का उत्तर से दक्षिण की ओर सही भौगोलिक क्रम है: सबसे उत्तर में गुजरात का कांडला (दीनदयाल) बंदरगाह, उसके दक्षिण में महाराष्ट्र का मुंबई बंदरगाह, फिर कर्नाटक का न्यू मंगलौर बंदरगाह, और सबसे दक्षिण में केरल का कोच्चि बंदरगाह। अतः विकल्प (A) सही भौगोलिक अनुक्रम को दर्शाता है।

59. (B) मालाबार तट
भारत का पश्चिमी तटीय मैदान उत्तर में गुजरात से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी तक फैला हुआ है। इसे मुख्य रूप से तीन खंडों में बाँटा गया है: उत्तरी भाग को कोंकण तट (महाराष्ट्र और गोवा), मध्य भाग को कन्नड़ या कर्नाटक मैदान, और सबसे

NODIA

दक्षिणी भाग को मालाबार तट (केरल) के नाम से जाना जाता है। अतः दक्षिणी भाग मालाबार तट कहलाता है।

60. (B) मालाबार तट
'कयाल' केरल के मालाबार तट पर पाई जाने वाली एक अत्यंत विशिष्ट भौगोलिक विशेषता है, जिन्हें पश्चजल (बैकवाटर्स) या तटीय लैगून कहा जाता है। ये शांत जल निकाय नौकायन, अंतर्देशीय जल परिवहन, मत्स्य पालन और नेहरू ट्रॉफी जैसी प्रसिद्ध पारंपरिक नौका दौड़ (वल्लमकली) के लिए पूरी दुनिया में प्रसिद्ध हैं। वेंबनाड झील इसका प्रमुख उदाहरण है।

61. (B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
भारत की पश्चिमी तटरेखा मुख्य रूप से एक निमज्जित (जलमग्न) तट का उदाहरण है, न कि उन्मज्जित का। इसके अतिरिक्त, पूर्वी तटरेखा की तुलना में पश्चिमी तट पर महाद्वीपीय मग्नतट संकरे होते हैं और नदियाँ तीव्र ढाल के कारण बड़े डेल्टा बनाने के बजाय ज्वारनदमुख बनाती हैं। इस प्रकार भौगोलिक तथ्यों के आधार पर दिए गए दोनों कथन असत्य हैं।

62. (A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
नर्मदा और तापी जैसी नदियाँ जो अरब सागर में गिरती हैं, वे पश्चिमी घाट तथा विंध्य-सतपुड़ा की तीव्र ढलान वाली संकरी घाटियों से बहती हैं। तीव्र जलप्रवाह के कारण नदियाँ अपरदित गाद को अपने मुहाने पर जमा नहीं होने देतीं और बहुत कम तलछट लाती हैं। इस कारण वे डेल्टा के स्थान पर ज्वारनदमुख (एश्चुअरी) बनाती हैं। अतः अभिकथन और कारण दोनों सही हैं।

63. (D) कोरोमंडल तट
भारत के पूर्वी तटीय मैदान के दक्षिणी भाग को, जो मुख्य रूप से तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश के तटीय क्षेत्रों में विस्तृत है, कोरोमंडल तट कहा जाता है। यह तट कृष्णा नदी के डेल्टा से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी तक फैला हुआ है। यह तटीय क्षेत्र अपनी अनूठी मानसूनी जलवायु और समृद्ध ऐतिहासिक व व्यापारिक महत्त्व के लिए जाना जाता है।

64. (C) उत्तर-पूर्वी (लौटता हुआ) मानसून
शीतकाल के दौरान अक्टूबर से दिसंबर के महीनों में जब दक्षिण-पश्चिम मानसून पीछे हटता है, तो उत्तर-पूर्वी मानसूनी हवाएँ बंगाल की खाड़ी के ऊपर से गुजरते समय नमी ग्रहण कर लेती हैं। ये नमी युक्त हवाएँ तमिलनाडु के कोरोमंडल तट से टकराकर वहाँ भारी वर्षा करती हैं। इसी परिघटना के कारण कोरोमंडल तट को अपनी वार्षिक वर्षा का बड़ा हिस्सा सर्दियों में मिलता है।

65. (B) विशाखापत्तनम
आंध्र प्रदेश राज्य में स्थित विशाखापत्तनम बंदरगाह भारत के पूर्वी तट पर स्थित सबसे गहरा, प्राकृतिक तथा पूरी तरह से स्थल-रुद्ध (लैंडलॉक्ड) बंदरगाह है। यह बंदरगाह 'डॉल्फ़िन नोज़' नामक एक ऊँची चट्टानी पहाड़ी संरचना द्वारा समुद्री तूफानों और तीव्र लहरों से प्राकृतिक रूप से सुरक्षित रहता है। यह लौह अयस्क और खनिजों के निर्यात का प्रमुख केंद्र है।

66. (D) मुंबई बंदरगाह की भीड़भाड़ को कम करने और एक हब बंदरगाह के रूप में कार्य करने के लिए।
जवाहरलाल नेहरू बंदरगाह (न्हावा शेवा) का निर्माण महाराष्ट्र में मुंबई बंदरगाह के ठीक सामने किया गया था। इसका प्राथमिक उद्देश्य मुंबई बंदरगाह पर बढ़ रहे अत्यधिक जहाजी दबाव और ट्रैफिक भीड़भाड़ को कम करना था। यह वर्तमान में भारत का सबसे बड़ा आधुनिक कंटेनर बंदरगाह है जो अत्याधुनिक तकनीकों और विशाल माल ढुलाई सुविधाओं से लैस है।

67. (A) मर्मगाओ
हल्दिया (पश्चिम बंगाल), पारादीप (ओडिशा) और तूतीकोरिन (तमिलनाडु) बंदरगाह भारत के पूर्वी तट पर बंगाल की खाड़ी के किनारे स्थित हैं। इसके विपरीत मर्मगाओ बंदरगाह गोवा राज्य में भारत के पश्चिमी तट पर अरब सागर के किनारे स्थित एक प्रमुख लौह-अयस्क निर्यातक बंदरगाह है। इस प्रकार भौगोलिक स्थिति के आधार पर मर्मगाओ अन्य तीनों बंदरगाहों से भिन्न है।

68. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
पारादीप बंदरगाह ओडिशा राज्य में स्थित है, जबकि मर्मगाओ बंदरगाह गोवा में जुआरी नदी के मुहाने पर स्थित है। न्यू मंगलौर बंदरगाह कर्नाटक का मुख्य समुद्री प्रवेश द्वार है, तथा कामराजर (एन्नौर) बंदरगाह तमिलनाडु राज्य में स्थित पहला कॉर्पोरेट बंदरगाह है। इस प्रकार बंदरगाहों और उनके राज्यों का सही मिलान P-3, Q-4, R-1 और S-2 है।

69. (A) कोलकाता
भारत के 12 प्रमुख बंदरगाहों में से कोलकाता बंदरगाह एकमात्र ऐसा बंदरगाह है जो सीधे समुद्र तट पर स्थित न होकर हुगली नदी के तट पर स्थित एक नदीय (रिवरराइन) बंदरगाह है। यह समुद्र से लगभग 128 किलोमीटर अंदर स्थित है। चेन्नई, कोच्चि और विशाखापत्तनम जैसे अन्य सभी बंदरगाह सीधे समुद्र तट पर स्थित तटीय अथवा प्राकृतिक समुद्री बंदरगाह हैं।

70. (A) I, II और III
गंगा कार्य योजना (GAP) का पहला चरण 1986 में 100% केंद्र प्रायोजित योजना के रूप में शुरू किया गया था जिसका उद्देश्य सीवेज उपचार द्वारा गंगा के जल की गुणवत्ता सुधारना था। हालाँकि, यह योजना दस वर्षों में औद्योगिक और घरेलू प्रदूषण को पूरी तरह समाप्त करने में सफल नहीं हो सकी। इसलिए केवल प्रथम तीन कथन ऐतिहासिक रूप से सही हैं।

71. (C) 2014
केंद्र सरकार द्वारा जून 2014 में 'नमामि गंगे' कार्यक्रम को एक प्रमुख एकीकृत संरक्षण मिशन के रूप में स्वीकृत किया गया था। इस योजना का उद्देश्य राष्ट्रीय नदी गंगा में प्रदूषण को कम करना, उसकी स्वच्छता को बहाल करना तथा नदी पारिस्थितिकी तंत्र का संरक्षण और पुनरुद्धार करना था। इसके लिए 20,000 करोड़ रुपये का बजट आवंटित किया गया था।

72. (C) प्रयागराज से हल्दिया तक गंगा-भागीरथी-हुगली नदी तंत्र
भारत का राष्ट्रीय जलमार्ग 1 (NW-1) उत्तर प्रदेश के प्रयागराज (इलाहाबाद) से पश्चिम बंगाल के हल्दिया तक फैले गंगा-

Click Here to Buy book on Flipkart

भागीरथी-हुगली नदी तंत्र में स्थित है। 1620 किलोमीटर की कुल लंबाई के साथ यह भारत का सबसे लंबा अंतर्देशीय जलमार्ग है। यह उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड और पश्चिम बंगाल राज्यों से होकर गुज़रता है और व्यापारिक नौवहन को बढ़ावा देता है।

73. (D) ब्रह्मपुत्र
राष्ट्रीय जलमार्ग 2 (NW-2) पूर्वोत्तर भारत में ब्रह्मपुत्र नदी के असम वाले भाग में स्थित है। यह जलमार्ग भारत-बांग्लादेश सीमा पर स्थित धुबरी से लेकर असम के सादिया तक 891 किलोमीटर की दूरी में विस्तृत है। इस जलमार्ग का उपयोग पूर्वोत्तर राज्यों में भारी माल, कृषि उत्पादों और यात्रियों के अंतर्देशीय परिवहन के लिए प्रमुखता से किया जाता है।

74. (A) नदियाँ मौसमी हैं और जल स्तर में तीव्र उतार-चढ़ाव का सामना करती हैं।
प्रायद्वीपीय नदियाँ मुख्य रूप से मानसूनी वर्षा पर निर्भर होती हैं। इसके कारण मानसून के मौसम में इन नदियों में अचानक बाढ़ आ जाती है, जबकि शुष्क ग्रीष्म ऋतु में इनका जल स्तर अत्यधिक घट जाता है और धाराएँ सिमट जाती हैं। जल गहराई में इस तीव्र मौसमी उतार-चढ़ाव के कारण प्रायद्वीपीय नदियों में वर्ष भर अंतर्देशीय नौवहन चलाना अत्यंत कठिन हो जाता है।

75. (A) केवल I और II
राष्ट्रीय जलमार्ग 1 (NW-1) प्रयागराज से हल्दिया तक गंगा नदी प्रणाली पर स्थित है और राष्ट्रीय जलमार्ग 2 (NW-2) सादिया से धुबरी तक ब्रह्मपुत्र नदी पर स्थित है। राष्ट्रीय जलमार्ग 3 (NW-3) केरल राज्य की पश्चिम तटीय नहर पर स्थित है, गोदावरी नदी पर नहीं। अतः दिए गए कथनों में से केवल कथन I और II सत्य हैं।

76. (B) गंगा
गंगा नदी भारत की सबसे लंबी और सर्वाधिक महत्वपूर्ण नदी है, जिसकी कुल लंबाई लगभग 2525 किलोमीटर है। यह पूर्णतः भारत के राजनीतिक भू-भाग के भीतर प्रवाहित होने वाली नदियों में सबसे लंबी दूरी तय करती है। यद्यपि सिंधु और ब्रह्मपुत्र नदियाँ कुल लंबाई में गंगा से लंबी हैं, परंतु उनका अधिकांश प्रवाह भारत से बाहर तिब्बत और पाकिस्तान में होता है।

77. (A) महानदी का उद्गम पश्चिमी घाट से होता है और यह बंगाल की खाड़ी में गिरती है।
महानदी का उद्गम पश्चिमी घाट से नहीं, बल्कि छत्तीसगढ़ के रायपुर जिले में स्थित सिहावा की पहाड़ियों से होता है। गोदावरी प्रायद्वीपीय भारत का सबसे बड़ा बेसिन बनाती है, नर्मदा पश्चिम-वाहिनी नदियों में सबसे लंबी है, तथा तिब्बत से आने वाली ब्रह्मपुत्र नदी में भारी वर्षा के कारण गंगा से अधिक जल मात्रा होती है। अतः विकल्प (A) असत्य कथन है।

78. (C) माही
माही नदी भारत की एक अत्यंत अनूठी नदी है जो मध्य प्रदेश के धार जिले से निकलती है। वहाँ से यह उत्तर की ओर बहकर राजस्थान में प्रवेश करती है और फिर दक्षिण-पश्चिम की ओर मुड़कर गुजरात से होती हुई खंभात की खाड़ी में गिरती है। अपने इस विशेष घुमावदार प्रवाह मार्ग में यह भारत से गुजरने वाली 23.5° उत्तरी अक्षांश रेखा (कर्क रेखा) को दो बार पार करती है।

79. (D) कच्छ के रण में
लूनी नदी राजस्थान में अजमेर के पास अरावली पर्वतमाला की नाग पहाड़ियों से निकलती है। यह थार मरुस्थल के शुष्क क्षेत्रों में बहने वाली एकमात्र प्रमुख अंतःस्थलीय नदी है। लगभग 495 किलोमीटर प्रवाहित होने के उपरांत यह नदी किसी समुद्र या खाड़ी में पहुँचने के बजाय गुजरात राज्य में स्थित कच्छ के रण की दलदली भूमि में विलीन होकर समाप्त हो जाती है।

80. (A) युवावस्था
हिमालयी नदियाँ अपने उद्गम स्थलों से पर्वतीय क्षेत्रों से गुजरते समय अत्यधिक तीव्र ढाल पर प्रवाहित होती हैं। तीव्र जलप्रवाह के कारण नदियाँ अपनी घाटी का तीव्र ऊर्ध्वाधर (नीचे की ओर) अपरदन करती हैं। इसके परिणामस्वरूप गहरी V-आकार की घाटियाँ, गॉर्ज (महाखड्ड) और क्षिप्रिकाएँ बनती हैं। ये सभी स्थल रूप नदी के विकास की प्रारंभिक अथवा युवावस्था के स्पष्ट सूचक हैं।

81. (B) किसी नदी और उसकी सहायक नदियों द्वारा अपवाहित भूमि क्षेत्र।
'नदी बेसिन' अथवा अपवाह बेसिन उस संपूर्ण भौगोलिक भूमि क्षेत्र को निरुपित करता है जिसका जल वर्षा या हिम पिघलने के बाद एक मुख्य नदी तथा उसकी सभी छोटी-बड़ी सहायक नदियों द्वारा अंततः एक ही जल निकाय में अपवाहित होता है। यह एक प्राकृतिक जलविज्ञानीय इकाई है जो क्षेत्रीय जल संसाधन प्रबंधन और नदी नियोजन का आधार बनती है।

82. (A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
दिल्ली में प्रवेश करने के बाद यमुना नदी में अत्यधिक मात्रा में अनुपचारित नाले का जल, घरेलू सीवेज और औद्योगिक अपशिष्ट विसर्जित किया जाता है। जैविक कचरे के सड़ने के लिए सूक्ष्मजीवों द्वारा अधिक ऑक्सीजन की आवश्यकता होती है, जिससे जल में जैव-रासायनिक ऑक्सीजन माँग (BOD) का स्तर बहुत बढ़ जाता है। अतः अभिकथन और कारण दोनों सत्य हैं तथा कारण सही व्याख्या प्रस्तुत करता है।

83. (A) ब्रह्मपुत्र
सुबनसिरी, कामेंग, धनसिरी, मानस, लोहित और दिबांग नदियाँ पूर्वोत्तर भारत के विशाल ब्रह्मपुत्र नदी बेसिन की महत्वपूर्ण सहायक नदियाँ हैं। सुबनसिरी, कामेंग और मानस हिमालय की ओर से आकर ब्रह्मपुत्र के बाएँ व दाएँ तटों से मिलती हैं। ये सभी नदियाँ तिब्बत और उत्तर-पूर्वी पहाड़ियों का विशाल जल लाकर ब्रह्मपुत्र को एक अत्यंत विशाल नदी प्रणाली में परिवर्तित करती हैं।

84. (C) झेलम
व्यास और रावी नदियों का उद्गम हिमाचल प्रदेश में कुल्लू पहाड़ियों के रोहतांग दर्रे से होता है, तथा चिनाब नदी लाहुल-

Downloaded from www.pdf.tube

स्पिति में बारालाचा दर्रे के पास से निकलती है। इसके विपरीत झेलम नदी का उद्गम केंद्र शासित प्रदेश जम्मू और कश्मीर के अनंतनाग जिले में पीर पंजाल श्रेणी के पाद में स्थित वेरीनाग झरने से होता है। अतः झेलम हिमाचल से नहीं निकलती है।

85. (A) 1-2-3-4
भारत की प्रमुख नदियों की लंबाई का घटता हुआ सही क्रम है: गंगा (2525 किमी), गोदावरी (1465 किमी), कृष्णा (1400 किमी) और नर्मदा (1312 किमी)। गंगा भारत की सबसे लंबी नदी है, जबकि गोदावरी प्रायद्वीपीय भारत की सबसे लंबी नदी है। कृष्णा और नर्मदा क्रमशः लंबाई में इसके बाद आती हैं। अतः सही घटता क्रम 1-2-3-4 है।

86. (D) यह महाराष्ट्र, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, छत्तीसगढ़ और ओडिशा में फैला हुआ है।
गोदावरी नदी का अपवाह बेसिन प्रायद्वीपीय भारत का सबसे विशाल बेसिन है जो लगभग 3.12 लाख वर्ग किलोमीटर में फैला है। यह बेसिन भारत के पाँच प्रमुख राज्यों - महाराष्ट्र, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, छत्तीसगढ़ और ओडिशा तथा मध्य प्रदेश के कुछ भागों को आच्छादित करता है। इसका मुख्य जल स्रोत दक्षिण-पश्चिम मानसून है, न कि उत्तर-पूर्वी मानसून। अतः कथन (D) सही है।

87. (B) कृष्णा
अल्मट्टी बांध (जिसे लाल बहादुर शास्त्री बांध भी कहा जाता है) उत्तरी कर्नाटक में स्थित एक प्रमुख बांध और जलविद्युत परियोजना है। यह विशाल बांध कृष्णा नदी के प्रवाह पर बनाया गया है। यह परियोजना ऊपरी कृष्णा सिंचाई परियोजना का एक प्रमुख अंग है जो उत्तरी कर्नाटक के कई सूखाग्रस्त कृषि क्षेत्रों को सिंचाई जल प्रदान करने के साथ विद्युत उत्पादन करती है।

88. (A) P-2, Q-1, R-4, S-3
वूलर झील विवर्तनिक हलचलों से बनी मीठे पानी की झील है। चिल्का झील ओडिशा के तटीय क्षेत्र में स्थित खारी कयाल है। पुलिकट झील श्रीहरिकोटा रोधक द्वारा निर्मित खारे पानी का कयाल है, तथा महाराष्ट्र की लोनार झील बेसाल्टिक चट्टान पर उल्कापिंड के प्रभाव से बनी क्रेटर झील है। इस प्रकार सही सुमेलित क्रम P-2, Q-1, R-4 और S-3 है।

89. (D) वे दोनों संरचनात्मक द्रोणी या भ्रंश घाटियों से होकर बहती हैं।
नर्मदा और तापी नदियाँ प्रायद्वीपीय भारत की अन्य अधिकांश नदियों से इस मायने में भिन्न हैं कि ये पूर्व के बजाय पश्चिम की ओर बहती हैं। इन दोनों नदियों की अनूठी भौगोलिक विशेषता यह है कि ये पर्वत श्रृंखलाओं के मध्य स्थित भूवैज्ञानिक संरचनात्मक द्रोणियों या भ्रंश घाटियों (रिफ्ट वैली) से होकर प्रवाहित होती हैं और अपने मुहाने पर ज्वारनदमुख बनाती हैं।

90. (A) पश्चिमी तट
समुद्र तट से सटा हुआ वह जलमग्न भू-भाग जो मंद ढाल वाला होता है, महाद्वीपीय मग्नतट कहलाता है। भारत का पश्चिमी तटीय मग्नतट पूर्वी तटीय मग्नतट की तुलना में काफी अधिक चौड़ा (लगभग 100 से 500 किमी तक) है। अत्यधिक चौड़ाई के कारण पश्चिमी मग्नतट क्षेत्र में मुंबई हाई जैसे विशाल प्राकृतिक तेल भंडार तथा अत्यंत समृद्ध मत्स्य ग्रहण क्षेत्र पाए जाते हैं।

www.nodia.in

NODIA

अध्याय 04

भारत के वन्यजीव अभयारण्य

1. "जैव विविधता हॉटस्पॉट" की अवधारणा उन क्षेत्रों के लिए प्रयुक्त की जाती है जो जैविक रुप से अत्यधिक समृद्ध हैं लेकिन अत्यधिक संकटग्रस्त भी हैं। निम्नलिखित में से कौन-सा क्षेत्र भारत में जैव विविधता हॉटस्पॉट के रूप में वर्गीकृत नहीं है?
(A) गंगा के मैदान
(B) पश्चिमी घाट
(C) हिमालय
(D) इंडो-बर्मा क्षेत्र

2. जैव विविधता हॉटस्पॉट के रूप में अर्हता प्राप्त करने के लिए, किसी क्षेत्र को स्थानिकता और आवास क्षति से संबंधित दो कठोर मापदंडों को पूरा करना होता है। अर्हता प्राप्त करने के लिए किसी हॉटस्पॉट को अपने मूल प्राकृतिक आवास का न्यूनतम कितना प्रतिशत हिस्सा खो चुका होना चाहिए?
(A) 30 प्रतिशत
(B) 50 प्रतिशत
(C) 70 प्रतिशत
(D) 90 प्रतिशत

3. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रुप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A) : पश्चिमी घाट को विश्व के जैव विविधता हॉटस्पॉट्स में से एक के रूप में वर्गीकृत किया गया है।
कारण (R) : इस क्षेत्र में प्रजातियों की उच्च समृद्धि और उच्च स्तर की स्थानिकता पाई जाती है, लेकिन यह मानवीय गतिविधियों से गंभीर खतरों का सामना कर रहा है।
(A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) अभिकथन (A) सही है, लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) अभिकथन (A) गलत है, लेकिन कारण (R) सही है।

4. वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 के तहत, राष्ट्रीय उद्यान और वन्यजीव अभयारण्य के बीच मूलभूत कानूनी अंतर क्या है?
(A) अभयारण्य केंद्र सरकार द्वारा बनाए जाते हैं, जबकि राष्ट्रीय उद्यान राज्य सरकारों द्वारा बनाए जाते हैं।
(B) राष्ट्रीय उद्यान केवल वनस्पतिजात की रक्षा कर सकते हैं, जबकि वन्यजीव अभयारण्य वनस्पतिजात और प्राणीजात दोनों की रक्षा करते हैं।
(C) राष्ट्रीय उद्यानों की तुलना में वन्यजीव अभयारण्यों का कोर क्षेत्र बड़ा होता है।
(D) राष्ट्रीय उद्यान के भीतर किसी भी मानवीय गतिविधि की अनुमति नहीं होती है, जबकि वन्यजीव अभयारण्य में चराई जैसे सीमित अधिकारों की अनुमति दी जा सकती है।

5. निम्नलिखित राष्ट्रीय उद्यानों को उनके संबंधित राज्यों के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I : (राष्ट्रीय उद्यान)
P. इरविकुलम राष्ट्रीय उद्यान
Q. वाल्मीकि राष्ट्रीय उद्यान
R. बेतला राष्ट्रीय उद्यान
S. केबुल लामजाओ राष्ट्रीय उद्यान
सूची II : (राज्य)
1. मणिपुर
2. केरल
3. बिहार
4. झारखंड
(A) P-3, Q-2, R-1, S-4
(B) P-2, Q-3, R-4, S-1
(C) P-2, Q-4, R-3, S-1
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

6. भारत में वन्यजीव अभयारण्यों की घोषणा के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
(A) केवल भारत की संसद के पास किसी क्षेत्र को वन्यजीव अभयारण्य घोषित करने की शक्ति है।
(B) एक बार अधिसूचित होने के बाद वन्यजीव अभयारण्य को राष्ट्रीय उद्यान के रूप में उच्चीकृत नहीं किया जा सकता है।
(C) राज्य सरकारें अधिसूचना द्वारा किसी क्षेत्र को वन्यजीव अभयारण्य घोषित कर सकती हैं यदि वह पर्याप्त पारिस्थितिक महत्व का हो।
(D) किसी भी परिस्थिति में नए घोषित वन्यजीव अभयारण्य की सीमाओं के भीतर निजी भूमियों को शामिल नहीं किया जा सकता है।

7. निम्नलिखित में से कौन-सी गतिविधि सामान्यतः वन्यजीव अभयारण्य में दर्ज अधिकार के रूप में अनुमत है, लेकिन राष्ट्रीय उद्यान के भीतर सख्ती से प्रतिबंधित है?
(A) मुख्य खनिजों का व्यावसायिक खनन
(B) प्रकाष्ठ के लिए पेड़ों की अनियंत्रित कटाई
(C) अत्यधिक प्रदूषण फैलाने वाले उद्योगों की स्थापना
(D) स्थानीय समुदायों द्वारा मवेशियों की चराई

Click Here to Buy book on Amazon

8. भारत में संरक्षित क्षेत्रों के वर्गीकरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. बायोस्फीयर रिजर्व (जैवमंडल आरक्षित क्षेत्र) वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 के तहत अधिसूचित किए जाते हैं।
II. राष्ट्रीय उद्यान, वन्यजीव अभयारण्यों की तुलना में उच्च स्तर का संरक्षण प्राप्त करते हैं।
III. संरक्षण रिजर्व स्थापित राष्ट्रीय उद्यानों और वन्यजीव अभयारण्यों के बीच बफर क्षेत्र या संयोजक और प्रवास गलियारे के रूप में कार्य करते हैं।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से संयोजन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

9. भौगोलिक विस्तार की दृष्टि से राजस्थान का सबसे बड़ा संरक्षित क्षेत्र कौन-सा है, जो ग्रेट इंडियन बस्टर्ड (गोडावण) के संरक्षण के लिए जाना जाता है?
(A) रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान
(B) राष्ट्रीय मरु उद्यान
(C) केवलादेव घना राष्ट्रीय उद्यान
(D) मुकुंदरा हिल्स टाइगर रिजर्व

10. बायोस्फीयर रिजर्व का कौन-सा क्षेत्र कानूनी रूप से संरक्षित है और अनुमत वैज्ञानिक अनुसंधान एवं निगरानी को छोड़कर किसी भी मानवीय हस्तक्षेप की अनुमति नहीं देता है?
(A) बफर क्षेत्र
(B) कोर क्षेत्र
(C) संक्रमण क्षेत्र
(D) मैनिपुलेशन क्षेत्र

11. प्रोजेक्ट टाइगर के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
कथन I : प्रोजेक्ट टाइगर को वर्ष 1973 में एक केंद्र प्रायोजित योजना के रूप में शुरु किया गया था।
कथन II : राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (NTCA) पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 के तहत गठित एक वैधानिक निकाय है।
निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।

12. यूनेस्को के एक विशिष्ट बायोस्फीयर रिजर्व के निम्नलिखित क्षेत्रों पर विचार कीजिए:
I. संक्रमण क्षेत्र
II. कोर क्षेत्र
III. बफर क्षेत्र
निम्नलिखित में से कौन-सा सबसे आंतरिक क्षेत्र से सबसे बाहरी क्षेत्र की ओर सही स्थानिक क्रम दर्शाता है?
(A) II, III, I
(B) II, I, III
(C) I, III, II
(D) III, II, I

13. रामगढ़ विषधारी को राजस्थान में टाइगर रिजर्व के रूप में अधिसूचित किया गया था। यह निम्नलिखित में से किन दो प्रमुख संरक्षित क्षेत्रों को जोड़ने वाले एक महत्वपूर्ण गलियारे के रूप में कार्य करता है?
(A) सरिस्का और राष्ट्रीय मरु उद्यान
(B) कुंभलगढ़ और माउंट आबू
(C) केवलादेव और राष्ट्रीय चम्बल अभयारण्य
(D) रणथंभौर और मुकुंदरा हिल्स

14. राजस्थान के निम्नलिखित में से किस जिले में मुख्य रूप से रामगढ़ विषधारी टाइगर रिजर्व स्थित है?
(A) सवाई माधोपुर
(B) कोटा
(C) बूंदी
(D) अलवर

15. राजस्थान के निम्नलिखित टाइगर रिजर्वों पर विचार कीजिए:
I. रणथंभौर
II. सरिस्का
III. मुकुंदरा हिल्स
IV. धौलपुर-करौली
कौन-सा संयोजन टाइगर रिजर्व के रूप में उनकी आधिकारिक अधिसूचना के सही कालानुक्रमिक क्रम (प्राचीनतम से नवीनतम) को दर्शाता है?
(A) I, II, III, IV
(B) I, III, II, IV
(C) II, I, III, IV
(D) II, III, I, IV

16. प्रमुख हाथी-समृद्ध राज्यों को वित्तीय और तकनीकी सहायता प्रदान करने के लिए भारत सरकार द्वारा निम्नलिखित में से किस वर्ष 'प्रोजेक्ट एलिफेंट' प्रारंभ किया गया था?
(A) 1986
(B) 1992
(C) 2002
(D) 2010

NODIA

17. 'माइक' (MIKE) कार्यक्रम एक अंतरराष्ट्रीय सहयोग है जो निम्नलिखित में से किस प्रजाति के अवैध शिकार से संबंधित जानकारी की निगरानी करता है?
(A) हाथी
(B) बाघ
(C) गेंडा
(D) हिम तेंदुआ

18. 'मैन एंड द बायोस्फीयर' (MAB) कार्यक्रम निम्नलिखित में से किस अंतरराष्ट्रीय संगठन द्वारा शुरु किया गया एक अंतर-सरकारी वैज्ञानिक कार्यक्रम है?

(A) IUCN
(B) UNEP
(C) UNESCO
(D) WWF

19. काज़ीरंगा राष्ट्रीय उद्यान किस प्रमुख नदी प्रणाली के बाढ़ के मैदानों में स्थित है?
(A) ब्रह्मपुत्र
(B) गंगा
(C) तीस्ता
(D) महानदी

20. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A) : अखिल भारतीय बाघ आकलन के लिए पारंपरिक पगचिह्न ट्रैकिंग को काफी हद तक कैमरा ट्रैपिंग और डीएनए विश्लेषण द्वारा प्रतिस्थापित कर दिया गया है।
कारण (R) : पगचिह्न ट्रैकिंग में सांख्यिकीय त्रुटियों की अत्यधिक संभावना होती है और यह सभी भूभागों में बाघों की सटीक व्यक्तिगत पहचान प्रदान नहीं करती है।
(A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) अभिकथन (A) सही है, लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) अभिकथन (A) गलत है, लेकिन कारण (R) सही है।

21. निम्नलिखित में से किस वैश्विक रूप से संकटग्रस्त प्रजाति की सबसे बड़ी शेष प्राकृतिक आबादी काज़ीरंगा राष्ट्रीय उद्यान में पाई जाती है?
(A) एशियाई शेर
(B) एक-सींग वाला गेंडा
(C) ग्रेट इंडियन बस्टर्ड पक्षी
(D) नीलगिरि तहर

22. काज़ीरंगा राष्ट्रीय उद्यान के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसे यूनेस्को के विश्व धरोहर स्थल के रूप में मान्यता प्राप्त है।
II. यह ब्रह्मपुत्र सहित चार मुख्य नदियों द्वारा आच्छादित है।
III. यह पश्चिम बंगाल राज्य में स्थित है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा संयोजन गलत है?
(A) केवल I
(B) केवल II और III
(C) केवल III
(D) केवल I और II

23. भारत का सबसे पुराना राष्ट्रीय उद्यान, जिम कॉर्बेट राष्ट्रीय उद्यान, मूल रूप से 1936 में निम्नलिखित में से किस नाम से स्थापित किया गया था?
(A) हार्डिंग राष्ट्रीय उद्यान
(B) इम्पीरियल राष्ट्रीय उद्यान
(C) विक्टोरिया राष्ट्रीय उद्यान
(D) हेली राष्ट्रीय उद्यान

24. जिम कॉर्बेट राष्ट्रीय उद्यान से होकर कौन-सी प्रमुख नदी बहती है, जो इसके परिदृश्य को अत्यधिक प्रभावित करती है और वन्यजीवों को महत्वपूर्ण जल संसाधन प्रदान करती है?
(A) रामगंगा
(B) यमुना
(C) भागीरथी
(D) अलकनंदा

25. सुंदरबन राष्ट्रीय उद्यान का नाम "सुंदरी" वृक्ष से लिया गया है, जो वनस्पति की निम्नलिखित में से किस श्रेणी से संबंधित है?
(A) उष्णकटिबंधीय सदाबहार
(B) मैंग्रोव
(C) अल्पाइन शंकुधारी
(D) उष्णकटिबंधीय पर्णपाती

26. निम्नलिखित राष्ट्रीय उद्यानों को उनकी प्रमुख संरक्षित प्रजातियों के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I : (राष्ट्रीय उद्यान)
P. गिर वन
Q. दाचीगाम
R. केबुल लामजाओ
S. हेमिस
सूची II : (संरक्षित प्रजातियां)
1. हंगुल (कश्मीरी महामृग)
2. हिम तेंदुआ
3. संगाई (संगाई हिरण)
4. एशियाई शेर
(A) P-4, Q-3, R-1, S-2
(B) P-4, Q-1, R-3, S-2
(C) P-2, Q-1, R-3, S-4
(D) P-1, Q-4, R-2, S-3

27. गिर वन राष्ट्रीय उद्यान के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
कथन I : यह विश्व में एशियाई शेर का एकमात्र प्राकृतिक आवास है।
कथन II : यह गुजरात के काठियावाड़ प्रायद्वीप में स्थित है।
सही विकल्प चुनिए:
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

28. गिर में महामारी या प्राकृतिक आपदाओं के कारण एशियाई शेरों के संभावित विलुप्त होने को रोकने के लिए, दूसरी आबादी को निम्नलिखित में से किस अभयारण्य या उद्यान में स्थानांतरित करने हेतु एक पुनर्वास परियोजना शुरू की गई थी?
(A) बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान

Downloaded from www.pdf.tube

(B) रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान
(C) कूनो राष्ट्रीय उद्यान
(D) पेंच राष्ट्रीय उद्यान

29. जिम कॉर्बेट राष्ट्रीय उद्यान के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(A) यह 'प्रोजेक्ट टाइगर' पहल के तहत आने वाला भारत का आधिकारिक रूप से पहला राष्ट्रीय उद्यान था।
(B) यह भौगोलिक रूप से उत्तराखंड के नैनीताल और पौड़ी गढ़वाल जिलों में स्थित है।
(C) इसमें बहती हुई रामगंगा नदी द्वारा निर्मित विशाल पाटली दून घाटी शामिल है।
(D) यह मुख्य रूप से अल्पाइन घास के मैदानों और शंकुधारी वनों से आच्छादित है।

30. उनकी भौगोलिक स्थिति (राज्य) के आधार पर निम्नलिखित संरक्षित क्षेत्रों में से भिन्न की पहचान कीजिए:
(A) राजाजी राष्ट्रीय उद्यान
(B) फूलों की घाटी राष्ट्रीय उद्यान
(C) पिन घाटी राष्ट्रीय उद्यान
(D) नंदा देवी राष्ट्रीय उद्यान

31. बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान, जो भारत में बंगाल टाइगर की सर्वाधिक ज्ञात आबादी घनत्वों में से एक के लिए जाना जाता है, किस राज्य में स्थित है?
(A) महाराष्ट्र
(B) मध्य प्रदेश
(C) छत्तीसगढ़
(D) कर्नाटक

32. भारत के एक प्रसिद्ध राष्ट्रीय उद्यान से जुड़ी निम्नलिखित विशेषताओं पर विचार कीजिए:
I. यह विंध्य पहाड़ियों में स्थित है।
II. यह पास के रीवा क्षेत्र में सफेद बाघों की ऐतिहासिक उपस्थिति के लिए प्रसिद्ध है।
III. इस उद्यान के कोर क्षेत्र के भीतर एक प्रमुख पहाड़ी पर एक विशाल प्राचीन किला स्थित है।
IV. इसे 1968 में राष्ट्रीय उद्यान घोषित किया गया था।
कौन-सा विकल्प इन चार कथनों से सटीक रूप से मेल खाता है?
(A) कान्हा राष्ट्रीय उद्यान
(B) पन्ना राष्ट्रीय उद्यान
(C) माधव राष्ट्रीय उद्यान
(D) बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान

33. आर्द्रभूमियों के संरक्षण और टिकाऊ उपयोग के लिए एक अंतरराष्ट्रीय संधि, रामसर सम्मेलन, पर 1971 में किस देश में हस्ताक्षर किए गए थे?
(A) ईरान
(B) स्विट्जरलैंड
(C) फ्रांस
(D) ब्राजील

34. निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म वर्तमान में राजस्थान राज्य में मान्यता प्राप्त केवल दो नामित रामसर आर्द्रभूमि स्थलों का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) पिछोला झील और आनासागर झील
(B) नक्की झील और पुष्कर झील
(C) केवलादेव और सांभर झील
(D) जवाई बांध और सिलीसेढ़ झील

NODIA

35. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A) : राजस्थान के केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान को मोंट्रेक्स रिकॉर्ड में रखा गया था।
कारण (R) : मोंट्रेक्स रिकॉर्ड आर्द्रभूमि स्थलों का एक रजिस्टर है जहाँ तकनीकी विकास, प्रदूषण या अन्य मानवीय हस्तक्षेप के कारण पारिस्थितिक स्वरूप में परिवर्तन हुए हैं, हो रहे हैं या होने की संभावना है।
(A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) अभिकथन (A) सही है, लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) अभिकथन (A) गलत है, लेकिन कारण (R) सही है।

36. निम्नलिखित में से किसे भारत में रामसर आर्द्रभूमि स्थल के रूप में मान्यता प्राप्त नहीं है?
(A) चिल्का झील
(B) लोकतक झील
(C) वूलर झील
(D) डल झील

37. यूनेस्को मैन एंड बायोस्फीयर (MAB) कार्यक्रम के तहत भारत में स्थापित पहला बायोस्फीयर रिजर्व कौन-सा था?
(A) मन्नार की खाड़ी
(B) नीलगिरि
(C) नंदा देवी
(D) सुंदरबन

38. भारत के निम्नलिखित बायोस्फीयर रिजर्वों का उत्तर से दक्षिण की ओर सही भौगोलिक क्रम चुनिए:
(A) कोल्ड डेजर्ट > नंदा देवी > पचमढ़ी > अगस्त्यमलाई
(B) नंदा देवी > कोल्ड डेजर्ट > अगस्त्यमलाई > पचमढ़ी
(C) कोल्ड डेजर्ट > पचमढ़ी > नंदा देवी > अगस्त्यमलाई
(D) नंदा देवी > पचमढ़ी > कोल्ड डेजर्ट > अगस्त्यमलाई

39. सुंदरबन बायोस्फीयर रिजर्व के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए:
(A) इसे व्यापक रूप से विश्व में सबसे बड़े सतत मैंग्रोव वन क्षेत्र के रूप में मान्यता प्राप्त है।
(B) यह एकमात्र ऐसा मैंग्रोव वन पारिस्थितिकी तंत्र है जो बाघों के प्राकृतिक आवास के रूप में कार्य करता है।
(C) इसे वैश्विक समुद्र के बढ़ते स्तर और जल की लवणता से अत्यधिक गंभीर खतरों का सामना करना पड़ रहा है।

(D) यह पूरा क्षेत्र विशेष रूप से भारत के भीतर स्थित है।

40. राष्ट्रीय उद्यान से भिन्न बायोस्फीयर रिजर्व स्थापित करने का सबसे उपयुक्त प्राथमिक उद्देश्य क्या है?
(A) स्थानीय आर्थिक विकास के साथ जैव विविधता संरक्षण को संतुलित करना।
(B) सभी मानवीय प्रवेश को रोकने के लिए वन भूमि के विशाल भूभागों को भौतिक रूप से बाड़बद्ध करना।
(C) संकटग्रस्त प्रजातियों का बाद में जंगल में छोड़ने के लिए बाड़े में व्यवस्थित रूप से प्रजनन कराना।
(D) सभी मौजूदा प्राकृतिक वनस्पतियों को साफ करना और केवल व्यावसायिक रूप से मूल्यवान प्रकाष्ठ प्रजातियों का पुनर्रोपण करना।

41. भारत में उष्णकटिबंधीय सदाबहार वन आमतौर पर उन क्षेत्रों में पाए जाते हैं जहाँ औसत वार्षिक वर्षा होती है:
(A) 70 सेमी से कम
(B) 70 सेमी और 100 सेमी के बीच
(C) 100 सेमी और 200 सेमी के बीच
(D) 200 सेमी से अधिक

42. भारत के निम्नलिखित क्षेत्रों पर विचार कीजिए:
I. पश्चिमी घाट के पश्चिमी ढलान
II. राजस्थान के अर्ध-शुष्क पठार
III. पूर्वोत्तर राज्यों की पहाड़ियाँ
उपर्युक्त क्षेत्रों में से कौन-सा संयोजन प्राकृतिक रूप से उष्णकटिबंधीय सदाबहार वनों का समर्थन करता है?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

43. भौगोलिक क्षेत्रफल के प्रसार के आधार पर, भारत में पाया जाने वाला सबसे व्यापक और विस्तृत वन प्रकार कौन-सा है?
(A) उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वन
(B) उष्णकटिबंधीय सदाबहार वन
(C) पर्वतीय शंकुधारी वन
(D) मैंग्रोव वन

44. सागौन, साल, शीशम और चंदन व्यावसायिक रूप से महत्वपूर्ण प्रकाष्ठ वृक्ष हैं जो मुख्य रूप से किस वन प्रकार में प्रमुख हैं?
(A) उष्णकटिबंधीय आर्द्र सदाबहार वन
(B) उप-उष्णकटिबंधीय चौड़ी पत्ती वाले पर्वतीय वन
(C) उष्णकटिबंधीय आर्द्र पर्णपाती वन
(D) हिमालयी शुष्क शीतोष्ण वन

45. राजस्थान की वनस्पति के संदर्भ में, एनोजिसस पेंडुला वृक्ष प्रजाति (जिसे आमतौर पर धौक या धौकड़ा के नाम से जाना जाता है) मुख्य रूप से किस प्रकार के वन का निर्माण करती है?
(A) उष्णकटिबंधीय सदाबहार वन
(B) उप-उष्णकटिबंधीय पाइन वन
(C) अल्पाइन झाड़ीदार वन
(D) शुष्क पर्णपाती वन

46. भारत में शंकुधारी वन, जिनकी विशेषता सुई जैसी पत्तियों वाले पेड़ और शंकु-युक्त प्रजनन है, प्राकृतिक रूप से किस भौगोलिक क्षेत्र में पाए जाते हैं?
(A) पूर्वी घाट पर्वतमाला
(B) अरावली पर्वतमाला
(C) हिमालय
(D) मालाबार तटीय क्षेत्र

47. वनों के प्रकारों को उनकी विशिष्ट प्रतिनिधि वृक्ष प्रजातियों के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I : (वनों के प्रकार)
P. उष्णकटिबंधीय सदाबहार
Q. उष्णकटिबंधीय आर्द्र पर्णपाती
R. उष्णकटिबंधीय कांटेदार वन
S. पर्वतीय शंकुधारी
सूची II : (वृक्ष प्रजातियां)
1. पाइन, देवदार
2. महोगनी, रोजवुड
3. बबूल, कीकर
4. सागौन, साल
(A) P-4, Q-2, R-1, S-3
(B) P-2, Q-4, R-3, S-1
(C) P-2, Q-3, R-4, S-1
(D) P-1, Q-4, R-3, S-2

48. उष्णकटिबंधीय सदाबहार वनों के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन वैज्ञानिक रूप से गलत है?
(A) इनमें पेड़ों के अपने पत्ते गिराने का कोई निश्चित समय नहीं होता है, जिससे ये वर्ष भर हरे-भरे दिखाई देते हैं।
(B) ये उच्च प्रजाति विविधता और बहु-स्तरीय संरचना प्रदर्शित करते हैं।
(C) अधिपदप और काष्ठलताएं इन वनों के सामान्य संरचनात्मक घटक हैं।
(D) विरल वितान के कारण वन की सतह को प्रचुर मात्रा में सूर्य का प्रकाश प्राप्त होता है।

49. भारत में पर्णपाती वनों के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
कथन I : आर्द्र पर्णपाती वन 100 से 200 सेमी वर्षा प्राप्त करने वाले क्षेत्रों में पाए जाते हैं।
कथन II : शुष्क पर्णपाती वन 70 सेमी से कम वर्षा प्राप्त करने वाले क्षेत्रों में कांटेदार वनों में परिवर्तित हो जाते हैं।
सही विकल्प चुनिए:
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

Click Here to Buy book on Flipkart

50. भारत में प्राकृतिक रूप से पाए जाने वाले वनों के प्रकारों के आधार पर वृक्ष प्रजातियों की निम्नलिखित सूची में से भिन्न को चुनिए:
(A) स्प्रूस
(B) फर
(C) आबनूस
(D) देवदार

51. 'भारत वन स्थिति रिपोर्ट' (ISFR) देश के वन और वृक्ष आवरण का एक व्यापक आकलन है। भारतीय वन सर्वेक्षण (FSI) द्वारा यह रिपोर्ट कितनी बार प्रकाशित की जाती है?
(A) वार्षिक (प्रत्येक वर्ष)
(B) द्विवार्षिक (प्रत्येक दो वर्ष में)
(C) त्रिवार्षिक (प्रत्येक तीन वर्ष में)
(D) पंचवार्षिक (प्रत्येक पाँच वर्ष में)

52. भारत वन स्थिति रिपोर्ट (ISFR) 2021 के अनुसार निम्नलिखित राज्यों को उनके कुल वनावरण क्षेत्रफल के अवरोही क्रम (घटते क्रम) में व्यवस्थित कीजिए:
I. अरुणाचल प्रदेश
II. मध्य प्रदेश
III. ओडिशा
IV. छत्तीसगढ़
निम्नलिखित में से कौन-सा सही अवरोही क्रम दर्शाता है?
(A) II, I, IV, III
(B) I, II, III, IV
(C) II, IV, I, III
(D) I, IV, II, III

53. ISFR 2021 के अनुसार राजस्थान के वनावरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. कुल क्षेत्रफल की दृष्टि से उदयपुर जिले में राज्य का सर्वाधिक वनावरण है।
II. चूरू जिले में राज्य का सबसे कम वनावरण है।
III. राजस्थान का अभिलेखित वन क्षेत्र इसके कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का लगभग 33% है।
IV. अत्यधिक सघन वन (VDF) राजस्थान के कुल वनावरण का सबसे बड़ा हिस्सा है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा संयोजन सही है?
(A) केवल III और IV
(B) केवल I और II
(C) केवल I, II और III
(D) केवल II, III और IV

54. वन्यजीव (संरक्षण) संशोधन अधिनियम, 2022 ने संरक्षित प्रजातियों की अनुसूचियों को पुनर्गठित किया। इस संशोधन के बाद, अधिनियम में अनुसूचियों की कुल संख्या घटकर कितनी हो गई है?
(A) दो
(B) तीन
(C) चार
(D) पाँच

55. वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 के प्रावधानों के तहत, संरक्षण अनुसूचियों में निर्दिष्ट जंगली जानवरों का शिकार सख्त वर्जित है। हालाँकि, मुख्य वन्यजीव संरक्षक किस विशिष्ट परिस्थिति में शिकार की अनुमति दे सकता है?
(A) यदि व्यावसायिक मांस प्रसंस्करण के लिए जानवर की आवश्यकता है।
(B) यदि स्थानीय समुदायों को पारंपरिक खेल आयोजनों के लिए जानवर की आवश्यकता है।
(C) यदि जानवर की आबादी स्थानीय पंचायत द्वारा निर्धारित सीमा से अधिक हो जाती है।
(D) यदि जानवर मानव जीवन के लिए खतरनाक हो गया है या असाध्य विकलांगता से ग्रस्त है।

56. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रुप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A) : वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 की अनुसूची I में सूचीबद्ध प्रजातियों को भारत में उच्चतम स्तर का कानूनी संरक्षण प्राप्त है।
कारण (R) : अनुसूची I की प्रजातियों के अवैध शिकार या व्यापार पर अधिनियम के तहत निर्धारित सबसे कठोर दंड लगाया जाता है।
(A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) अभिकथन (A) सही है, लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) अभिकथन (A) गलत है, लेकिन कारण (R) सही है।

NODIA

57. राजस्थान का बिश्नोई समुदाय पर्यावरण संरक्षण की अपनी प्राचीन परंपरा और एक विशिष्ट मृग प्रजाति के कड़े संरक्षण के लिए विश्व भर में प्रसिद्ध है, जो वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम 1972 की अनुसूची I के तहत संरक्षित है। उस प्रजाति की पहचान कीजिए।
(A) नीलगाय
(B) कृष्णमृग (काला हिरण)
(C) चिंकारा
(D) बारहसिंगा

58. ISFR 2021 के अनुसार वनावरण के तहत भौगोलिक क्षेत्र के प्रतिशत के संबंध में गलत युग्म की पहचान कीजिए:
(A) मिजोरम – सभी राज्यों में उच्चतम प्रतिशत
(B) मध्य प्रदेश – सभी राज्यों में उच्चतम प्रतिशत
(C) हरियाणा – भारत में सबसे कम प्रतिशत वाले राज्यों में शामिल
(D) लक्षद्वीप – केंद्र शासित प्रदेशों में उच्चतम प्रतिशत

59. वन्यजीव संरक्षण के संस्थागत ढांचे के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
कथन I : राष्ट्रीय वन्यजीव बोर्ड (NBWL) वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 के तहत गठित एक वैधानिक संगठन है।
कथन II : राष्ट्रीय वन्यजीव बोर्ड की अध्यक्षता पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री करते हैं।

सही विकल्प चुनिए:
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

60. भारत की राष्ट्रीय वन नीति (1988) के अनुसार, पारिस्थितिक स्थिरता के लिए देश के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का कितना इष्टतम लक्षित प्रतिशत वन और वृक्ष आवरण के तहत बनाए रखा जाना चाहिए?
(A) 20 प्रतिशत
(B) 25 प्रतिशत
(C) 33 प्रतिशत
(D) 50 प्रतिशत

61. 'रेड डेटा बुक', जो जानवरों, पौधों और कवक की दुर्लभ और संकटग्रस्त प्रजातियों का एक व्यापक सार्वजनिक रिकॉर्ड बनाए रखती है, किस संगठन द्वारा प्रकाशित की जाती है?
(A) वर्ल्ड वाइड फंड फॉर नेचर इंटरनेशनल (WWF)
(B) संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP)
(C) वैश्विक पर्यावरण सुविधा (GEF)
(D) अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ (IUCN)

62. भारत में पाई जाने वाली निम्नलिखित पक्षी प्रजातियों पर विचार कीजिए:
I. ग्रेट इंडियन बस्टर्ड (गोडावण)
II. जर्डन्स कोर्सर
III. भारतीय गिद्ध
उपर्युक्त प्रजातियों में से कौन-सा संयोजन वर्तमान में आईयूसीएन (IUCN) रेड लिस्ट में 'गंभीर रूप से संकटग्रस्त' के रूप में सूचीबद्ध है?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

63. ग्रेट इंडियन बस्टर्ड, जिसे स्थानीय रूप से 'गोडावण' कहा जाता है, राजस्थान का राज्य पक्षी है। थार मरुस्थल क्षेत्र में इसकी आबादी में गिरावट का प्राथमिक पारिस्थितिक खतरा क्या है?
(A) मरुस्थलीय वनों के पेड़ों की अनियंत्रित व्यावसायिक कटाई
(B) ओवरहेड बिजली लाइनों से टकराना
(C) अस्थायी मरुस्थलीय झीलों में गंभीर जल प्रदूषण
(D) एशियाई शेरों द्वारा अत्यधिक शिकार

64. मानव-वन्यजीव संघर्ष भारत में एक प्रमुख संरक्षण चुनौती है। मानव-हाथी संघर्ष में वृद्धि का सबसे मूलभूत अंतर्निहित कारण निम्नलिखित में से किसे माना जाता है?
(A) हाथी की जन्म दर में अत्यधिक प्राकृतिक वृद्धि
(B) जलवायु परिवर्तन के कारण हाथियों के आहार का वनस्पति से फसलों की ओर स्थानांतरित होना
(C) बाघों के साथ अंतर-प्रजाति प्रतिस्पर्धा के कारण आक्रामक व्यवहार
(D) आवास विखंडन और हाथी गलियारों का विनाश

65. वैश्विक विलुप्ति के बढ़ते जोखिम को दर्शाने वाली आईयूसीएन (IUCN) रेड लिस्ट श्रेणियों के सही क्रम का चयन कीजिए:
(A) संकटग्रस्त > सुभेद्य > गंभीर रूप से संकटग्रस्त > वनों से विलुप्त
(B) सुभेद्य > संकटग्रस्त > गंभीर रूप से संकटग्रस्त > वनों से विलुप्त
(C) गंभीर रूप से संकटग्रस्त > संकटग्रस्त > सुभेद्य > वनों से विलुप्त
(D) सुभेद्य > गंभीर रूप से संकटग्रस्त > संकटग्रस्त > वनों से विलुप्त

66. भारतीय वन्यजीव संस्थान (WII), जो प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रदान करने और वन्यजीव विज्ञान में अनुसंधान करने के लिए प्रसिद्ध है, किस शहर में स्थित है?
(A) भोपाल
(B) बेंगलुरु
(C) देहरादून
(D) नई दिल्ली

67. निम्नलिखित में से कौन-सा भारतीय वन्यजीव संस्थान (WII) के प्राथमिक जनादेश का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) वन्यजीव संरक्षण और प्रबंधन में अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संचालित करना।
(B) हर वर्ष भारत में रहने वाले सभी जंगली जानवरों की वार्षिक गणना का संचालन करना।
(C) वन्यजीव अपराधों की जांच के लिए प्राथमिक नोडल पुलिस प्रवर्तन एजेंसी के रूप में कार्य करना।
(D) देश के सभी राष्ट्रीय उद्यानों के दैनिक प्रशासनिक कार्यों और प्रबंधन की देखभाल करना।

NODIA

68. भारत में उनकी वर्तमान संरक्षण स्थिति के संबंध में निम्नलिखित जीव-जंतु प्रजातियों में से भिन्न का चयन कीजिए:
(A) हिम तेंदुआ
(B) पैंगोलिन
(C) जंगली जल भैंसा
(D) जंगली सूअर

69. वन्यजीव आवासों में रेखीय अवसंरचना के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
कथन I : संरक्षित वनों के माध्यम से राजमार्गों और रेलवे लाइनों का निर्माण प्रायः आवास विखंडन और जानवरों की मृत्यु का कारण बनता है।
कथन II : इको-ब्रिज और अंडरपास का निर्माण ऐसी अवसंरचना के पार वन्यजीवों की सुरक्षित आवाजाही की अनुमति देने के लिए एक मान्यता प्राप्त शमन रणनीति है।
सही विकल्प चुनिए:
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।

(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

70. भारतीय वन्यजीव संस्थान (WII) के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(A) इसकी स्थापना वर्ष 1982 में हुई थी।
(B) यह एक स्वायत्त संस्थान के रूप में कार्य करता है।
(C) यह विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में आता है।
(D) यह वन्यजीव प्रबंधन पर सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों को परामर्श सेवाएं प्रदान करता है।

71. भारत के वन संरक्षण प्रयासों के संदर्भ में, संक्षिप्त नाम 'कैम्पा' (CAMPA) का पूर्ण रूप क्या है?
(A) सेंट्रल अथॉरिटी फॉर द सस्टेनेबल मैनेजमेंट ऑफ प्रोटेक्टेड फॉरेस्ट एरियाज
(B) कंजर्वेशन एंड अफॉरेस्टेशन मैनेजमेंट प्रोग्राम एक्ट फॉर फॉरेस्ट रेस्टोरेशन
(C) कमेटी फॉर नेशनल असेसमेंट ऑफ माइनर फॉरेस्ट प्रोड्यूस एंड अफॉरेस्टेशन
(D) कम्पेंसेटरी अफॉरेस्टेशन फंड मैनेजमेंट एंड प्लानिंग अथॉरिटी (क्षतिपूरक वनीकरण कोष प्रबंधन एवं योजना प्राधिकरण)

72. किस विशिष्ट परिस्थिति में परियोजना प्रस्तावक के लिए कानूनी रूप से कैम्पा (CAMPA) खाते में धन जमा करना अनिवार्य है?
(A) गैर-वन औद्योगिक या खनन उद्देश्यों के लिए वन भूमि का परिवर्तन करते समय।
(B) निजी स्वामित्व वाले वृक्षारोपण से व्यावसायिक प्रकाष्ठ की कटाई करते समय।
(C) समुदाय-संचालित सामाजिक वानिकी या कृषि-वानिकी परियोजना शुरू करते समय।
(D) वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए संरक्षित क्षेत्रों से जंगली जानवरों को पकड़ते समय।

73. साइट्स (CITES) संकटग्रस्त पौधों और जानवरों की सुरक्षा के लिए एक बहुपक्षीय संधि है। CITES का पूर्ण रूप क्या है?
(A) काउंसिल फॉर इंटरनेशनल ट्रेड ऑफ एंडेंजर्ड स्पीशीज एंड थ्रेटेंड बायोडायवर्सिटी
(B) कन्वेंशन ऑन इंटरनेशनल ट्रेड इन एंडेंजर्ड स्पीशीज ऑफ वाइल्ड फौना एंड फ्लोरा
(C) कमेटी ऑन इंटरनेशनल ट्रीटीज फॉर इकोलॉजिकल सस्टेनेबिलिटी एंड कंजर्वेशन
(D) सेंटर फॉर इंटरनेशनल ट्रैकिंग ऑफ एंडेंजर्ड स्पीशीज एंड वाइल्ड वाइल्डलाइफ

74. CITES की परिशिष्टों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. परिशिष्ट I में उन प्रजातियों को सूचीबद्ध किया गया है जो सबसे अधिक संकटग्रस्त हैं और उनमें व्यावसायिक व्यापार सामान्यतः प्रतिबंधित है।
II. परिशिष्ट II में उन प्रजातियों को सूचीबद्ध किया गया है जो आवश्यक रूप से विलुप्त होने की कगार पर नहीं हैं, लेकिन उनके अस्तित्व के अनुकूल उपयोग से बचने के लिए व्यापार को नियंत्रित किया जाना चाहिए।
III. परिशिष्ट III में वे प्रजातियां शामिल हैं जो कम से कम एक देश में संरक्षित हैं, जिसने व्यापार को नियंत्रित करने में अन्य CITES पक्षों से सहायता मांगी है।
IV. भारत CITES समझौते का हस्ताक्षरकर्ता नहीं है।
कौन-सा संयोजन सही कथनों का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल II, III और IV
(C) केवल I और II
(D) I, II, III और IV

75. राजस्थान के निम्नलिखित वन्यजीव अभयारण्यों/उद्यानों को उनके प्राथमिक सम्बद्ध जिलों के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I : (वन्यजीव अभयारण्य / उद्यान)
P. सीता माता वन्यजीव अभयारण्य
Q. ताल छापर अभयारण्य
R. माउंट आबू वन्यजीव अभयारण्य
S. बंध बरेठा अभयारण्य
सूची II : (जिले)
1. चूरू
2. सिरोही
3. भरतपुर
4. प्रतापगढ़
(A) P-4, Q-1, R-2, S-3
(B) P-1, Q-4, R-3, S-2
(C) P-4, Q-2, R-1, S-3
(D) P-3, Q-1, R-2, S-4

76. राज्य और उसके प्रसिद्ध वन्यजीव अभयारण्य/राष्ट्रीय उद्यान के सही सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए:
(A) पेरियार राष्ट्रीय उद्यान — तमिलनाडु
(B) नामदफा राष्ट्रीय उद्यान — सिक्किम
(C) मानस राष्ट्रीय उद्यान — असम
(D) सिमलीपाल राष्ट्रीय उद्यान — छत्तीसगढ़

77. क्षतिपूरक वनीकरण कोष अधिनियम, 2016 के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
कथन I : यह अधिनियम राष्ट्रीय क्षतिपूरक वनीकरण कोष और राज्य क्षतिपूरक वनीकरण कोषों की स्थापना का प्रावधान करता है।
कथन II : एकत्र किए गए क्षतिपूरक वनीकरण धन का 90% राष्ट्रीय कोष में स्थानांतरित किया जाना है, जबकि 10% राज्य कोष द्वारा रखा जाता है।
सही विकल्प चुनिए:
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

Downloaded from www.pdf.tube

78. CITES को 1963 में IUCN के सदस्यों की एक बैठक में अपनाए गए एक प्रस्ताव के परिणामस्वरूप तैयार किया गया था। इसे आमतौर पर उस शहर के नाम से भी जाना जाता है जहाँ इस पर हस्ताक्षर किए गए थे। यह अनौपचारिक नाम क्या है?
(A) जेनेवा सम्मेलन
(B) पेरिस जलवायु समझौता
(C) वाशिंगटन सम्मेलन
(D) क्योटो जलवायु प्रोटोकॉल

79. राजस्थान में सीता माता वन्यजीव अभयारण्य पारिस्थितिक रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि यह निम्नलिखित में से किस अनोखी प्रजाति के प्राथमिक आवास के रूप में प्रसिद्ध है?
(A) भारतीय पैंगोलिन
(B) उड़न गिलहरी
(C) हिम तेंदुआ
(D) जंगली गधा

80. कैम्पा (CAMPA) के तहत एकत्र किए गए धन का उपयोग विशेष रूप से विशिष्ट पर्यावरण पुनर्स्थापन गतिविधियों के लिए किया जाना है। निम्नलिखित में से कौन-सी गतिविधि एक अपवाद है और सामान्यतः कैम्पा धन का उपयोग करके अनुमत नहीं है?
(A) क्षयग्रस्त वन क्षेत्रों का सहायक प्राकृतिक पुनरुत्पादन और कृत्रिम पुनरुत्पादन
(B) व्यापक वन्यजीव संरक्षण और गहन आवास पुनर्स्थापन प्रबंधन
(C) संवेदनशील वन-सीमावर्ती गांवों में ईंधन-बचत पकाने के उपकरणों की आपूर्ति
(D) वन विभाग के कर्मचारियों के नियमित वेतन का भुगतान

81. मैंग्रोव लवणमृदोद्भिद पौधों का एक विशिष्ट समूह हैं। "लवणमृदोद्भिद" शब्द का अर्थ है कि ये पौधे विशेष रूप से किसमें जीवित रहने के लिए अनुकूलित हैं?
(A) अत्यधिक लवणीय मिट्टी और खारे पानी वाले आवास
(B) नाइट्रोजन की अत्यधिक कमी वाली मिट्टी
(C) हिमीकरण तापमान वाले उच्च ऊंचाई वाले वातावरण
(D) शून्य सतही जल वाले शुष्क मरुस्थलीय वातावरण

82. ISFR 2021 के अनुसार, किस भारतीय राज्य में मैंग्रोव वनों द्वारा आच्छादित अधिकतम क्षेत्रफल है?
(A) गुजरात
(B) अंडमान और निकोबार द्वीप समूह
(C) पश्चिम बंगाल
(D) महाराष्ट्र

83. मैंग्रोव वृक्षों में 'न्यूमेटोफोर' (श्वसन मूल) नामक विशेष जड़ संरचनाएं होती हैं। इन जड़ों का प्राथमिक कार्य क्या है?
(A) जलभराव वाली मिट्टी में वायुमंडलीय ऑक्सीजन को अवशोषित करना।
(B) तीव्र तटीय हवाओं के विरुद्ध पेड़ के तने को गहराई से मजबूती प्रदान करना।
(C) समुद्र के खारे पानी से जल का भंडारण करना।
(D) बड़ी मात्रा में वायुमंडलीय नाइट्रोजन का स्थिरीकरण करना।

NODIA

84. मैंग्रोव की पारिस्थितिक भूमिका के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
कथन I : मैंग्रोव पारिस्थितिकी तंत्र तूफान, चक्रवात और सुनामी के खिलाफ प्राकृतिक तटीय रक्षा तंत्र के रूप में कार्य करते हैं।
कथन II : स्थलीय उष्णकटिबंधीय वनों की तुलना में मैंग्रोव वन खराब कार्बन सिंक हैं और जितना कार्बन वे अवशोषित करते हैं उससे अधिक उत्सर्जित करते हैं।
सही विकल्प चुनिए:
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।

85. नीलगिरि तहर, एक संकटग्रस्त पर्वतीय खुरदार जीव, तमिलनाडु का राज्य पशु है। निम्नलिखित में से कौन-सा राष्ट्रीय उद्यान इसकी सबसे बड़ी जीवित आबादी के संरक्षण के लिए प्रसिद्ध है?
(A) बांदीपुर राष्ट्रीय उद्यान
(B) इरविकुलम राष्ट्रीय उद्यान
(C) साइलेंट वैली राष्ट्रीय उद्यान
(D) नागरहोले राष्ट्रीय उद्यान

86. भारत में समुद्री राष्ट्रीय उद्यानों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(A) कच्छ की खाड़ी समुद्री राष्ट्रीय उद्यान भारत का पहला समुद्री राष्ट्रीय उद्यान था।
(B) महात्मा गांधी समुद्री राष्ट्रीय उद्यान अंडमान द्वीप समूह में स्थित है।
(C) मन्नार की खाड़ी समुद्री राष्ट्रीय उद्यान गुजरात के तट पर स्थित है।
(D) ओडिशा में गहिरमाथा समुद्री अभयारण्य ऑलिव रिडले समुद्री कछुओं के सामूहिक घोंसले के लिए प्रसिद्ध है।

87. संकटग्रस्त बंगाल टाइगर की रक्षा के लिए स्थापित, भारत में आधिकारिक रूप से घोषित किया गया पहला राष्ट्रीय उद्यान कौन-सा था?
(A) कान्हा राष्ट्रीय उद्यान
(B) काज़ीरंगा राष्ट्रीय उद्यान
(C) रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान
(D) जिम कॉर्बेट राष्ट्रीय उद्यान

88. संरक्षण रणनीतियों को मोंट्रेक्स रिकॉर्ड के अनुसार स्व-स्थाने और बाह्य-स्थाने तरीकों में विभाजित किया गया है। निम्नलिखित में से कौन स्व-स्थाने संरक्षण की अवधारणा का सबसे अच्छा प्रतिनिधित्व करता है?
(A) किसी प्रजाति को उसके प्राकृतिक आवास के भीतर संरक्षित करना।
(B) किसी संकटग्रस्त पौधे की आनुवंशिक जननद्रव्य सामग्री

को एक नियंत्रित बीज बैंक सुविधा में संरक्षित करना।
(C) एक निर्दिष्ट प्राणी उद्यान में किसी संकटग्रस्त या लुप्तप्राय पशु प्रजाति का प्रजनन कराना।
(D) अनुसंधान अध्ययन के लिए एक संवेदनशील पौधे की प्रजाति को एक विशेष वनस्पति उद्यान में स्थानांतरित करना।

89. इस आधार पर कि वे स्व-स्थाने या बाह्य-स्थाने संरक्षण का प्रतिनिधित्व करते हैं, संरक्षण सुविधाओं की निम्नलिखित सूची में से भिन्न का चयन कीजिए:
(A) बायोस्फीयर रिजर्व
(B) प्राणी उद्यान
(C) वन्यजीव अभयारण्य
(D) सामुदायिक रिजर्व

90. वर्ष 2023 के अंत तक, धौलपुर-करौली रिजर्व की आधिकारिक अधिसूचना के बाद, राजस्थान राज्य में स्वीकृत टाइगर रिजर्वों की कुल संख्या कितनी है?
(A) तीन
(B) चार
(C) पाँच
(D) छह

www.nodia.in

Click Here to Buy book on Amazon

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (A) गंगा के मैदान
भारत में चार प्रमुख जैव विविधता हॉटस्पॉट क्षेत्र विद्यमान हैं, जिनमें हिमालय, पश्चिमी घाट, इंडो-बर्मा क्षेत्र तथा सुंडालैंड शामिल हैं। ये क्षेत्र अत्यधिक प्रजाति समृद्धि और उच्च स्थानिकता प्रदर्शित करते हैं, किंतु मानवीय गतिविधियों से गंभीर संकट का सामना कर रहे हैं। इसके विपरीत, गंगा के मैदानी भाग मुख्य रूप से कृषि और सघन मानव बसावट वाले उपजाऊ मैदानी क्षेत्र हैं। इस क्षेत्र में विशिष्ट स्थानिकता तथा गंभीर आवास क्षति संबंधी निर्धारित हॉटस्पॉट मापदंड पूर्ण नहीं होते हैं।

2. (C) 70 प्रतिशत
अंतरराष्ट्रीय स्तर पर किसी भौगोलिक क्षेत्र को जैव विविधता हॉटस्पॉट के रूप में मान्यता प्राप्त करने हेतु दो मुख्य मापदंडों का पालन करना अनिवार्य होता है। प्रथम मापदंड के अनुसार उस क्षेत्र में कम से कम 1500 संवहनी पौधों की स्थानिक प्रजातियां होनी चाहिए। द्वितीय मापदंड के तहत उस क्षेत्र को अपनी मूल प्राकृतिक वनस्पति या प्राकृतिक आवास का कम से कम 70 प्रतिशत हिस्सा खो चुका होना चाहिए, अर्थात केवल 30 प्रतिशत या उससे कम प्राथमिक वनस्पति ही शेष बची होनी चाहिए।

3. (A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
भारत के पश्चिमी तट के साथ फैली पश्चिमी घाट पर्वत श्रृंखला विश्व के आठ अत्यधिक समृद्ध जैव विविधता हॉटस्पॉट्स में से एक है। इस भौगोलिक क्षेत्र में पादपों, उभयचरों, सरीसृपों और स्तनधारियों की अनेक दुर्लभ प्रजातियां पाई जाती हैं जो केवल इसी क्षेत्र तक सीमित हैं। तीव्र शहरीकरण, वनों की कटाई, खनन और कृषि विस्तार जैसी मानवीय गतिविधियों के कारण इस समृद्ध पारिस्थितिक तंत्र पर निरंतर विनाश का खतरा बना हुआ है, जिसके कारण इसे हॉटस्पॉट दर्जा प्राप्त है।

4. (D) राष्ट्रीय उद्यान के भीतर किसी भी मानवीय गतिविधि की अनुमति नहीं होती है, जबकि वन्यजीव अभयारण्य में चराई जैसे सीमित अधिकारों की अनुमति दी जा सकती है।
वन्यजीव संरक्षण अधिनियम 1972 के प्रावधानों के अंतर्गत राष्ट्रीय उद्यान और वन्यजीव अभयारण्य के मध्य वैधानिक अंतर उनके संरक्षण स्तर तथा मानवीय हस्तक्षेप की सीमा पर आधारित है। राष्ट्रीय उद्यान उच्च स्तरीय संरक्षण क्षेत्र होते हैं, जहाँ मानवीय गतिविधियों, जैसे मवेशियों की चराई, लकड़ी एकत्र करने या निजी भूमि अधिकारों की पूर्णतः मनाही होती है। दूसरी ओर, अभयारण्यों में मुख्य वन्यजीव संरक्षक की अनुमति से स्थानीय समुदायों को चराई जैसे कुछ सीमित पारंपरिक अधिकारों का उपयोग करने की स्वीकृति दी जा सकती है।

5. (B) P-2, Q-3, R-4, S-1
विभिन्न राज्यों में स्थित राष्ट्रीय उद्यान भारत की समृद्ध जैव विविधता का प्रतिनिधित्व करते हैं। केरल राज्य के इडुक्की जिले में पश्चिमी घाट पर स्थित इरविकुलम राष्ट्रीय उद्यान नीलगिरि तहर के संरक्षण के लिए जाना जाता है। वाल्मीकि राष्ट्रीय उद्यान बिहार के पश्चिमी चंपारण जिले में स्थित एकमात्र राष्ट्रीय उद्यान है। बेतला राष्ट्रीय उद्यान झारखंड राज्य के लातेहार जिले में स्थित है, जबकि विश्व का एकमात्र तैरता हुआ राष्ट्रीय उद्यान केबुल लामजाओ मणिपुर की लोकतक झील में स्थित है।

6. (C) राज्य सरकारें अधिसूचना द्वारा किसी क्षेत्र को वन्यजीव अभयारण्य घोषित कर सकती हैं यदि वह पर्याप्त पारिस्थितिक महत्व का हो।
वन्यजीव संरक्षण अधिनियम 1972 की धारा 18 के अनुसार, राज्य सरकार को किसी भी ऐसे आरक्षित वन या प्रादेशिक जल क्षेत्र को अधिसूचना जारी करके वन्यजीव अभयारण्य घोषित करने का वैधानिक अधिकार प्राप्त है, जिसका पारिस्थितिक, वनस्पतिशास्त्रीय, जीव-जंतु संबंधी या भू-आकृति वैज्ञानिक महत्व पर्याप्त हो। राज्य सरकार द्वारा एक बार अभयारण्य घोषित किए जाने के बाद, यदि परिस्थितियां उपयुक्त हों, तो उस क्षेत्र को आगे प्रक्रिया का पालन करके राष्ट्रीय उद्यान के रूप में भी उच्चीकृत किया जा सकता है।

7. (D) स्थानीय समुदायों द्वारा मवेशियों की चराई
संरक्षित क्षेत्रों में जैविक संसाधनों के दोहन और मानवीय गतिविधियों के लिए अलग-अलग कानूनी नियम लागू होते हैं। वन्यजीव अभयारण्य में मुख्य वन्यजीव संरक्षक द्वारा विनियमित सीमाओं के भीतर स्थानीय मवेशियों की चराई और ईंधन की लकड़ी एकत्र करने जैसे पारंपरिक अधिकारों की अनुमति दी जा सकती है। इसके विपरीत, राष्ट्रीय उद्यान में किसी भी प्रकार की चराई, फसल उत्पादन या निजी भूमि अधिकारों का प्रयोग वैधानिक रूप से पूरी तरह प्रतिबंधित होता है ताकि पारिस्थितिक तंत्र प्राकृतिक अवस्था में रहे।

8. (B) केवल II और III
भारत में राष्ट्रीय उद्यान और वन्यजीव अभयारण्य वन्यजीव संरक्षण अधिनियम 1972 के तहत कानूनी रूप से गठित संरक्षित क्षेत्र हैं, जिनमें राष्ट्रीय उद्यानों में अभयारण्यों की तुलना में अधिक कठोर संरक्षण नियम लागू होते हैं। वर्ष 2002 के संशोधन द्वारा शामिल किए गए संरक्षण रिजर्व दो संरक्षित क्षेत्रों के बीच संयोजी गलियारे का कार्य करते हैं। हालांकि, बायोस्फीयर रिजर्व यूनेस्को के मैन एंड बायोस्फीयर कार्यक्रम के तहत घोषित किए जाते हैं, न कि सीधे 1972 के अधिनियम के तहत।

NODIA

9. (B) राष्ट्रीय मरु उद्यान
राजस्थान के जैसलमेर और बाड़मेर जिलों में फैला राष्ट्रीय मरु उद्यान राज्य का सबसे बड़ा संरक्षित क्षेत्र है, जो लगभग 3162 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र आच्छादित करता है। यह विशाल मरुस्थलीय पारिस्थितिकी तंत्र थार मरुस्थल की विशिष्ट वनस्पति और जीव-जंतुओं का प्रतिनिधित्व करता है। यह उद्यान अत्यधिक संकटग्रस्त पक्षी ग्रेट इंडियन बस्टर्ड (गोडावण) का प्रमुख प्राकृतिक आवास और प्रजनन स्थल है। इसके अतिरिक्त, यहाँ प्राचीन जीवाश्म और मरुस्थलीय लोमड़ी तथा चिंकारा जैसी प्रजातियां प्रचुर मात्रा में पाई जाती हैं।

10. (B) कोर क्षेत्र
बायोस्फीयर रिजर्व की त्रिस्तरीय संरचना में कोर क्षेत्र सबसे आंतरिक और वैधानिक रूप से अत्यधिक संरक्षित भाग होता है। इस क्षेत्र का प्राथमिक उद्देश्य स्थानिक जैव विविधता और पारिस्थितिक प्रक्रियाओं का पूर्ण प्राकृतिक संरक्षण करना है। कोर क्षेत्र में मानव आबादी के निवास, लकड़ी की कटाई, चराई या किसी भी प्रकार के व्यावसायिक दोहन की सख्त मनाही होती है। यहाँ केवल गैर-विनाशकारी वैज्ञानिक अनुसंधान, पारिस्थितिक निगरानी और न्यूनतम पर्यावरणीय शिक्षा गतिविधियों की ही अनुमति दी जाती है।

11. (C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
भारत में बाघों की घटती संख्या को रोकने और उनके प्राकृतिक आवासों को संरक्षित करने के लिए वर्ष 1973 में जिम कॉर्बेट राष्ट्रीय उद्यान से प्रोजेक्ट टाइगर नामक एक केंद्र प्रायोजित योजना शुरू की गई थी। राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (एनटीसीए) की स्थापना वर्ष 2006 में वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम 1972 में किए गए संशोधन के तहत एक वैधानिक निकाय के रूप में की गई थी, न कि पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम 1986 के अंतर्गत। अतः प्रोजेक्ट टाइगर से संबंधित पहला कथन सत्य है।

12. (A) II, III, I
यूनेस्को के सिद्धांतों के अनुसार बायोस्फीयर रिजर्व को तीन परस्पर संबद्ध क्षेत्रों में विभाजित किया जाता है। सबसे केंद्रीय और कानूनी रूप से संरक्षित भाग कोर क्षेत्र होता है, जहाँ मानवीय हस्तक्षेप पूर्णतः वर्जित है। कोर क्षेत्र को चारों ओर से घेरने वाला मध्य भाग बफर क्षेत्र कहलाता है, जहाँ पर्यावरण-अनुकूल अनुसंधान और शिक्षा की अनुमति होती है। सबसे बाहरी भाग संक्रमण क्षेत्र होता है, जहाँ स्थानीय समुदायों के सहयोग से टिकाऊ सतत विकास और कृषि गतिविधियां संचालित की जाती हैं।

13. (D) रणथंभौर और मुकुंदरा हिल्स
राजस्थान के बूंदी जिले में स्थित रामगढ़ विषधारी वन्यजीव अभयारण्य को राज्य के चौथे बाघ अभयारण्य के रूप में अधिसूचित किया गया था। यह संरक्षित क्षेत्र सवाई माधोपुर में स्थित रणथंभौर बाघ अभयारण्य और कोटा-झालावाड़ क्षेत्र में स्थित मुकुंदरा हिल्स बाघ अभयारण्य के मध्य एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्राकृतिक गलियारे का निर्माण करता है। यह भौगोलिक जुड़ाव बाघों के स्वतंत्र आवाजाही, आनुवंशिक विविधता के आदान-प्रदान और नए क्षेत्रों में उनके प्राकृतिक विस्तार के लिए अत्यधिक आवश्यक पारिस्थितिक सहायता प्रदान करता है।

14. (C) बूंदी
रामगढ़ विषधारी बाघ अभयारण्य मुख्य रूप से राजस्थान के बूंदी जिले में स्थित है, जो अरावली और विंध्य पर्वतमालाओं के संगम क्षेत्र के समीप पड़ता है। इस अभयारण्य की स्थापना मूल रूप से वर्ष 1982 में एक वन्यजीव अभयारण्य के रूप में की गई थी। मई 2022 में इसे आधिकारिक तौर पर भारत का 52वां और राजस्थान का चौथा बाघ अभयारण्य घोषित किया गया। यह क्षेत्र अपनी शुष्क पर्णपाती वनस्पति, पहाड़ियों और मेज नदी के जलग्रहण क्षेत्र के लिए जाना जाता है।

15. (A) I, II, III, IV
राजस्थान में बाघ अभयारण्यों की स्थापना का कालानुक्रमिक क्रम उनकी आधिकारिक अधिसूचना के आधार पर निर्धारित है। रणथंभौर को 1973-74 में देश के शुरुआती बाघ अभयारण्यों में शामिल किया गया था। इसके पश्चात् वर्ष 1978 में सरिस्का को बाघ अभयारण्य घोषित किया गया। तीसरे स्थान पर मुकुंदरा हिल्स को वर्ष 2013 में यह दर्जा मिला। सबसे नवीनतम धौलपुर-करौली बाघ अभयारण्य को वर्ष 2023 में राजस्थान के पांचवें बाघ अभयारण्य के रूप में मंजूरी प्रदान की गई थी।

16. (B) 1992
भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा एशियाई हाथियों के दीर्घकालिक संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए फरवरी 1992 में 'प्रोजेक्ट एलिफेंट' की शुरुआत की गई थी। यह एक केंद्र प्रायोजित योजना है जिसका मुख्य उद्देश्य हाथियों, उनके प्राकृतिक आवासों और पारंपरिक प्रवास गलियारों की रक्षा करना है। इसके अतिरिक्त, यह योजना मानव-हाथी संघर्ष को कम करने तथा बंदी हाथियों के कल्याण और स्वास्थ्य की देखभाल हेतु राज्यों को वित्तीय व तकनीकी सहायता प्रदान करती है।

17. (A) हाथी
'माइक' (हाथियों के अवैध शिकार की निगरानी) कार्यक्रम साइट्स (CITES) संधि के तहत शुरु की गई एक अंतरराष्ट्रीय पहल है। यह कार्यक्रम पूरे एशिया और अफ्रीका में हाथियों के अवैध शिकार के स्तर और प्रवृत्तियों को मापने तथा अनुवीक्षण करने के लिए आंकड़े एकत्र करता है। इसका प्राथमिक उद्देश्य अवैध शिकार के कारणों को समझना और हाथियों की आबादी पर अवैध दंत-व्यापार के प्रभावों का आकलन करना है, जिससे संरक्षण नीतियों को वैज्ञानिक रूप से प्रभावी बनाया जा सके।

18. (C) UNESCO
'मैन एंड द बायोस्फीयर' (MAB) कार्यक्रम संयुक्त राष्ट्र शैक्षणिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) द्वारा वर्ष 1971 में शुरु किया गया एक अंतर-सरकारी वैज्ञानिक कार्यक्रम है। इसका मुख्य उद्देश्य लोगों और उनके पर्यावरण के बीच संबंधों में सुधार के लिए वैज्ञानिक आधार तैयार करना है। यह कार्यक्रम प्राकृतिक और सामाजिक विज्ञानों को जोड़कर

Downloaded from www.pdf.tube

मानव आजीविका में सुधार लाने और जैव विविधता के संरक्षण हेतु विश्वव्यापी बायोस्फीयर रिजर्व नेटवर्क की स्थापना और प्रबंधन का मार्गदर्शन करता है।

19. (A) ब्रह्मपुत्र
असम राज्य में स्थित काज़ीरंगा राष्ट्रीय उद्यान मुख्य रूप से ब्रह्मपुत्र नदी के दक्षिण किनारे पर फैले विशाल बाढ़ के मैदानों में स्थित है। ब्रह्मपुत्र नदी और उसकी सहायक नदियां प्रतिवर्ष मानसून के दौरान इस उद्यान में बाढ़ लाती हैं, जिससे जलोढ़ मिट्टी का नवीनीकरण होता है और समृद्ध जलीय पारिस्थितिकी तंत्र बना रहता है। यह मौसमी जलप्लावन उद्यान के विशाल हाथियों, गेंडों और अन्य वन्यजीवों के लिए पोषक तत्वों से भरपूर घास के मैदानों को बनाए रखता है।

20. (A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
भारत में अखिल भारतीय बाघ आकलन के लिए पुरानी पगचिह्न विधि के स्थान पर अब कैमरा ट्रैपिंग, स्ट्राइप पैटर्न पहचान सॉफ्टवेयर और मल के डीएनए विश्लेषण जैसी आधुनिक तकनीकों का उपयोग किया जाता है। पारंपरिक पगचिह्न गणना में मिट्टी के प्रकार और मानवीय त्रुटियों के कारण एक ही बाघ की बार-बार गिनती या गलत पहचान की संभावना अत्यधिक रहती थी। आधुनिक कैमरा ट्रैप विधि प्रत्येक बाघ की अद्वितीय धारियों के आधार पर उनका सटीक व्यक्तिगत डेटा प्रदान करती है।

21. (B) एक-सींग वाला गेंडा
असम का काज़ीरंगा राष्ट्रीय उद्यान विश्व में भारतीय एक-सींग वाले गेंडे की सबसे बड़ी आबादी का प्राकृतिक आवास है। वैश्विक स्तर पर बचे कुल एक-सींग वाले गेंडों की दो-तिहाई से अधिक आबादी केवल इसी उद्यान में निवास करती है। यहाँ के दलदली घास के मैदान, ऊँची कछारी घास और प्रचुर जल स्रोत गेंडों के अस्तित्व के लिए आदर्श वातावरण प्रदान करते हैं। कठोर संरक्षण प्रयासों और अवैध शिकार विरोधी अभियानों ने यहाँ इनकी संख्या बढ़ाने में सफलता पाई है।

22. (C) केवल III
काज़ीरंगा राष्ट्रीय उद्यान के संबंध में तीसरा कथन गलत है क्योंकि यह उद्यान पश्चिम बंगाल में नहीं, बल्कि पूर्वोत्तर भारत के असम राज्य के गोलाघाट और नागांव जिलों में स्थित है। इसे वर्ष 1985 में यूनेस्को द्वारा प्राकृतिक विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया था। यह उद्यान उत्तर में विशाल ब्रह्मपुत्र नदी और दक्षिण में कार्बी एंगलोंग पहाड़ियों के बीच स्थित है, तथा यह डिफ्लू, मोरा डिफ्लू और मोरा धनसिरी जैसी नदियों द्वारा सिंचित होता है।

23. (D) हेली राष्ट्रीय उद्यान
उत्तराखंड राज्य में स्थित जिम कॉर्बेट राष्ट्रीय उद्यान भारत का पहला और सबसे पुराना राष्ट्रीय उद्यान है। इसकी स्थापना वर्ष 1936 में संयुक्त प्रांत के तत्कालीन गवर्नर सर मालकम हेली के नाम पर 'हेली राष्ट्रीय उद्यान' के रूप में की गई थी। स्वतंत्रता के बाद इसका नाम बदलकर 'रामगंगा राष्ट्रीय उद्यान' कर दिया गया था, जिसे वर्ष 1956 में प्रसिद्ध शिकारी, प्रकृतिवादी और महान संरक्षणवादी जिम कॉर्बेट की स्मृति में पुनः जिम कॉर्बेट राष्ट्रीय उद्यान नाम दिया गया।

24. (A) रामगंगा
रामगंगा नदी जिम कॉर्बेट राष्ट्रीय उद्यान के मध्य से होकर बहने वाली मुख्य जलधारा है। यह नदी उद्यान के परिदृश्य, जलीय पारिस्थितिकी तंत्र और वन्यजीवों के अस्तित्व को बनाए रखने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। रामगंगा और उसकी सहायक नदियां जैसे मंडल और पालेन उद्यान क्षेत्र को वर्ष भर पर्याप्त पेयजल उपलब्ध कराती हैं। इस नदी में संकटग्रस्त मगरमच्छ, घड़ियाल और महाशीर मछली की दुर्लभ प्रजातियां पाई जाती हैं, जो इस जलीय आवास पर निर्भर हैं।

25. (B) मैंग्रोव
पश्चिम बंगाल में गंगा, ब्रह्मपुत्र और मेघना नदियों के डेल्टा क्षेत्र में स्थित सुंदरबन राष्ट्रीय उद्यान का नाम 'सुंदरी' नामक पेड़ की प्रचुरता के कारण पड़ा है। सुंदरी पेड़ मैंग्रोव वनस्पति श्रेणी का एक विशिष्ट प्रतिनिधि है, जो खारे और मीठे पानी के सम्मिश्रण वाले तटीय वातावरण में उगता है। इस पौधे में विशेष श्वसन जड़ें और लवणीय जल को सहन करने की क्षमता होती है। सुंदरबन विश्व का सबसे बड़ा सतत मैंग्रोव वन पारिस्थितिकी तंत्र निर्मित करता है।

NODIA

26. (B) P-4, Q-1, R-3, S-2
गुजरात का गिर वन एशियाई शेरों की अंतिम शरणस्थली और एकमात्र प्राकृतिक आवास है। जम्मू और कश्मीर का दाचीगाम राष्ट्रीय उद्यान लाल हिरण की एक दुर्लभ उपप्रजाति हंगुल (कश्मीरी महामृग) के संरक्षण के लिए जाना जाता है। मणिपुर की लोकतक झील पर स्थित केबुल लामजाओ राष्ट्रीय उद्यान संकटग्रस्त संगाई (नाचते हुए हिरण) का निवास स्थान है। लद्दाख का हेमिस राष्ट्रीय उद्यान उच्च पर्वतीय क्षेत्र में पाया जाने वाले हिम तेंदुए का प्रमुख वैश्विक संरक्षण केंद्र है।

27. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
गुजरात के काठियावाड़ प्रायद्वीप में स्थित गिर वन राष्ट्रीय उद्यान और अभयारण्य एशियाई शेरों का पूरे विश्व में एकमात्र शेष प्राकृतिक आवास है। बीसवीं शताब्दी की शुरुआत में अत्यधिक शिकार के कारण एशियाई शेर विलुप्ति की कगार पर पहुँच गए थे, परंतु जूनागढ़ के नवाब और बाद में वन विभाग के निरंतर संरक्षण प्रयासों से इनकी संख्या में सुधार हुआ। यह क्षेत्र शुष्क पर्णपाती वनों और कांटेदार झाड़ियों से आच्छादित है, जो शेरों के लिए उपयुक्त वातावरण बनाता है।

28. (C) कूनो राष्ट्रीय उद्यान
गिर राष्ट्रीय उद्यान में किसी महामारी या प्राकृतिक आपदा के समय एशियाई शेरों की पूरी आबादी के एक साथ नष्ट होने के जोखिम को कम करने के लिए भारतीय वन्यजीव संस्थान द्वारा एक वैकल्पिक आवास की खोज की गई थी। इसके तहत मध्य प्रदेश के श्योपुर जिले में स्थित कूनो राष्ट्रीय उद्यान को एशियाई शेरों के पुनर्वास हेतु दूसरे प्राकृतिक आवास के रूप में चुना

गया। कूनो का पारिस्थितिक वातावरण और शिकार आधार गिर के शुष्क पर्णपाती वनों के अत्यंत समान है।

29. (D) यह मुख्य रूप से अल्पाइन घास के मैदानों और शंकुधारी वनों से आच्छादित है।
चौथा कथन गलत है क्योंकि जिम कॉर्बेट राष्ट्रीय उद्यान अल्पाइन घास के मैदानों या शंकुधारी वनों से ढका हुआ नहीं है, बल्कि यह मुख्य रूप से आर्द्र पर्णपाती वनों, साल के वृक्षों और विशाल कांस घास के मैदानों से आच्छादित है। यह उद्यान शिवालिक हिमालय की तलहटी में उत्तराखंड के नैनीताल और पौड़ी गढ़वाल जिलों में स्थित है। इसमें रामगंगा नदी द्वारा निर्मित प्रसिद्ध पाटली दून घाटी शामिल है और यह 1973 में प्रोजेक्ट टाइगर का पहला केंद्र बना था।

30. (C) पिन घाटी राष्ट्रीय उद्यान
दिए गए विकल्पों में से पिन घाटी राष्ट्रीय उद्यान भौगोलिक दृष्टि से भिन्न है क्योंकि यह हिमाचल प्रदेश राज्य के लाहौल और स्पीति जिले के ठंडे मरुस्थलीय क्षेत्र में स्थित है। इसके विपरीत, राजाजी राष्ट्रीय उद्यान, फूलों की घाटी राष्ट्रीय उद्यान और नंदा देवी राष्ट्रीय उद्यान तीनों उत्तराखंड राज्य में स्थित हैं। पिन घाटी राष्ट्रीय उद्यान अपनी विशिष्ट शीत मरुस्थलीय वनस्पति और हिम तेंदुए तथा साइबेरियन इबेक्स जैसे दुर्लभ वन्यजीवों के संरक्षण के लिए जाना जाता है।

31. (B) मध्य प्रदेश
बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान मध्य प्रदेश राज्य के उमरिया जिले में विंध्याचल पर्वतमाला की पहाड़ियों में स्थित एक प्रसिद्ध राष्ट्रीय उद्यान है। इसे वर्ष 1968 में राष्ट्रीय उद्यान और 1993 में बाघ अभयारण्य घोषित किया गया था। यह उद्यान भारत में बंगाल टाइगर की उच्चतम घनत्व वाली आबादी में से एक का घर होने के लिए दुनिया भर में जाना जाता है। इसके अतिरिक्त, इस उद्यान का ऐतिहासिक और प्राकृतिक परिदृश्य सफेद बाघों के लिए भी प्रसिद्ध रहा है।

32. (D) बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान
उल्लिखाति सभी चार विशेषताएं मध्य प्रदेश के बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान से सटीक रूप से मेल खाती हैं। यह उद्यान विंध्य पहाड़ी श्रृंखला में स्थित है और इसका ऐतिहासिक संबंध पास के रीवा साम्राज्य से है, जो सफेद बाघों की खोज के लिए प्रसिद्ध रहा। उद्यान के केंद्र में एक 800 मीटर ऊँची पहाड़ी पर 2000 वर्ष पुराना प्राचीन बांधवगढ़ किला स्थित है। इस क्षेत्र को आधिकारिक रूप से वर्ष 1968 में राष्ट्रीय उद्यान के रूप में अधिसूचित किया गया था।

33. (A) ईरान
रामसर सम्मेलन आर्द्रभूमियों के संरक्षण और उनके विवेकपूर्ण उपयोग के लिए स्थापित एक अंतर-सरकारी वैश्विक संधि है। इस ऐतिहासिक सम्मेलन को 2 फरवरी 1971 को ईरान के कैस्पियन सागर के तट पर स्थित रामसर शहर में अपनाया गया था। इसी कारण प्रतिवर्ष 2 फरवरी को विश्व आर्द्रभूमि दिवस के रूप में मनाया जाता है। यह अंतर्राष्ट्रीय संधि 1975 में लागू हुई थी और भारत 1982 में आधिकारिक तौर पर इस संधि का एक हस्ताक्षरकर्ता पक्ष बना था।

34. (C) केवलादेव और सांभर झील
राजस्थान राज्य में अंतर्राष्ट्रीय महत्व की केवल दो रामसर आर्द्रभूमि स्थल मान्यता प्राप्त हैं। इनमें पहला भरतपुर जिले में स्थित केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान है, जिसे वर्ष 1981 में रामसर स्थल घोषित किया गया था। यह एक मानव निर्मित आर्द्रभूमि है जो लाखों प्रवासी पक्षियों का मुख्य पड़ाव है। दूसरा स्थल जयपुर, अजमेर और नागौर जिलों में फैली सांभर झील है, जिसे वर्ष 1990 में शामिल किया गया था, जो भारत की सबसे बड़ी अंतर्देशीय खारे पानी की झील है।

35. (A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
मोंट्रेक्स रिकॉर्ड रामसर संधि के अंतर्गत उन अंतरराष्ट्रीय महत्वपूर्ण आर्द्रभूमियों की एक सूची है जहाँ मानवीय गतिविधियों, प्रदूषण या जल आपूर्ति में परिवर्तन के कारण पारिस्थितिक स्वरूप में नकारात्मक बदलाव हुए हैं या होने की संभावना है। राजस्थान के केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान को पानी की कमी और जलकुंभी के अत्यधिक आक्रमण के कारण मोंट्रेक्स रिकॉर्ड में दर्ज किया गया था। अतः अभिकथन और कारण दोनों सत्य हैं तथा कारण अभिकथन की सही व्याख्या करता है।

36. (D) डल झील
जम्मू और कश्मीर के श्रीनगर में स्थित प्रसिद्ध डल झील को अभी तक आधिकारिक रूप से रामसर आर्द्रभूमि स्थल के रूप में नामित नहीं किया गया है। इसके विपरीत, ओडिशा की चिल्का झील, मणिपुर की लोकतक झील और जम्मू और कश्मीर में ही स्थित वूलर झील तीनों भारत में मान्यता प्राप्त अंतरराष्ट्रीय महत्व की रामसर आर्द्रभूमियां हैं। चिल्का और केवलादेव भारत के प्रथम रामसर स्थल थे, जिन्हें वर्ष 1981 में इस सूची में शामिल किया गया था।

37. (B) नीलगिरि
वर्ष 1986 में स्थापित नीलगिरि बायोस्फीयर रिजर्व भारत का पहला बायोस्फीयर रिजर्व था। यह तमिलनाडु, केरल और कर्नाटक राज्यों के संगम पर पश्चिमी घाट पर्वत श्रृंखला में स्थित है। इसके विशाल पारिस्थितिक महत्व के कारण इसे यूनेस्को के 'मैन एंड द बायोस्फीयर' (MAB) विश्व नेटवर्क में शामिल किया गया था। इसमें बांदीपुर, नागरहोले, मुदुमलाई, साइलेंट वैली और वायनाड जैसे कई प्रसिद्ध राष्ट्रीय उद्यान और वन्यजीव अभयारण्य शामिल हैं।

38. (A) कोल्ड डेजर्ट > नंदा देवी > पचमढ़ी > अगस्त्यमलाई
उत्तर से दक्षिण की ओर भौगोलिक स्थिति का सही क्रम इस प्रकार है: कोल्ड डेजर्ट बायोस्फीयर रिजर्व सबसे उत्तर में हिमाचल प्रदेश में स्थित है। इसके दक्षिण में उत्तराखंड राज्य में नंदा देवी बायोस्फीयर रिजर्व आता है। मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले में स्थित पचमढ़ी बायोस्फीयर रिजर्व देश के मध्य भाग में है। अंततः, दक्षिण भारत में तमिलनाडु और

Click Here to Buy book on Flipkart

केरल की सीमाओं पर फैले पश्चिमी घाट में अगस्त्यमलाई बायोस्फीयर रिजर्व सबसे दक्षिण में स्थित है।

39. (D) यह पूरा क्षेत्र विशेष रूप से भारत के भीतर स्थित है।
चौथा कथन पूरी तरह से गलत है क्योंकि सुंदरबन का पूरा मैंग्रोव क्षेत्र केवल भारत के भीतर स्थित नहीं है। सुंदरबन का विशाल डेल्टा क्षेत्र भारत (पश्चिम बंगाल) और पड़ोसी देश बांग्लादेश के बीच फैला हुआ है, जिसका लगभग 60 प्रतिशत हिस्सा बांग्लादेश में और 40 प्रतिशत हिस्सा भारत में आता है। यह विश्व का सबसे बड़ा मैंग्रोव वन है और एकमात्र मैंग्रोव पारिस्थितिकी तंत्र है जहाँ रॉयल बंगाल टाइगर प्राकृतिक रूप से निवास करते हैं।

40. (A) स्थानीय आर्थिक विकास के साथ जैव विविधता संरक्षण को संतुलित करना।
बायोस्फीयर रिजर्व स्थापित करने का प्राथमिक उद्देश्य केवल सख्त वन्यजीव संरक्षण तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका उद्देश्य जैव विविधता के संरक्षण और प्राकृतिक संसाधनों के सतत उपयोग के बीच संतुलन बनाना है। राष्ट्रीय उद्यानों के विपरीत, बायोस्फीयर रिजर्व स्थानीय पारंपरिक समुदायों को संरक्षण प्रयासों में शामिल करते हैं। यह सतत सामाजिक-आर्थिक विकास, वैज्ञानिक अनुसंधान, पर्यावरणीय शिक्षा और पारिस्थितिक तंत्र के बहु-स्तरीय प्रबंधन को एक साथ बढ़ावा देने वाला एक आदर्श ढांचा प्रदान करता है।

41. (D) 200 सेमी से अधिक
भारत में उष्णकटिबंधीय सदाबहार वन उन अत्यधिक आर्द्र और गर्म क्षेत्रों में पनपते हैं जहाँ वार्षिक वर्षा 200 सेमी से अधिक होती है और औसत तापमान लगभग 22 डिग्री सेल्सियस से अधिक रहता है। ये वन अत्यधिक घने, बहु-स्तरीय और समृद्ध जैव विविधता वाले होते हैं। इन क्षेत्रों में शुष्क मौसम बहुत छोटा होता है, जिससे पेड़ों की पत्तियां एक साथ नहीं गिरतीं और वन वर्ष भर पूरी तरह से हरे-भरे तथा सघन बने रहते हैं।

42. (C) केवल I और III
उष्णकटिबंधीय सदाबहार वन भारत के उन क्षेत्रों में पाए जाते हैं जहाँ बहुत भारी वर्षा होती है। पश्चिमी घाट के पश्चिमी ढलान अत्यधिक मानसूनी वर्षा प्राप्त करते हैं, जिससे वहाँ सघन सदाबहार वन पाए जाते हैं। इसी प्रकार, असम, मेघालय और नागालैंड जैसे पूर्वोत्तर राज्यों की पहाड़ियाँ भी भारी वर्षा के कारण उष्णकटिबंधीय सदाबहार वनों का समर्थन करती हैं। इसके विपरीत, राजस्थान के अर्ध-शुष्क पठार में वर्षा कम होने से केवल कांटेदार और शुष्क पर्णपाती वन पाए जाते हैं।

43. (A) उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वन
भारत में कुल भौगोलिक क्षेत्रफल के प्रसार के आधार पर सबसे व्यापक और विस्तृत रूप से पाए जाने वाले वन उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वन हैं, जिन्हें मानसूनी वन भी कहा जाता है। ये वन उन क्षेत्रों में फैले हैं जहाँ वार्षिक वर्षा 70 सेमी से 200 सेमी के बीच होती है। जल संरक्षण के लिए ग्रीष्म ऋतु की शुरुआत में इन वनों के पेड़ अपनी पत्तियां गिरा देते हैं। ये वन आगे आर्द्र पर्णपाती और शुष्क पर्णपाती में विभाजित होते हैं।

44. (C) उष्णकटिबंधीय आर्द्र पर्णपाती वन
सागौन (टीक), साल, शीशम, महुआ, आँवला और चंदन जैसी बहुमूल्य और व्यावसायिक रूप से महत्वपूर्ण प्रकाष्ठ प्रजातियां मुख्य रूप से उष्णकटिबंधीय आर्द्र पर्णपाती वनों में पाई जाती हैं। ये वन 100 से 200 सेमी वार्षिक वर्षा वाले क्षेत्रों में पनपते हैं। यह वन प्रकार पूर्वोत्तर राज्यों, हिमालय की तलहटी (तराई क्षेत्र), पश्चिमी घाट के पूर्वी ढलानों और ओडिशा तथा मध्य प्रदेश के पहाड़ी भागों में व्यापक रूप से विस्तृत है, जो देश के महत्वपूर्ण लकड़ी संसाधन प्रदान करता है।

45. (D) शुष्क पर्णपाती वन
एनोजिसस पेंडुला, जिसे स्थानीय भाषा में धौक या धौकड़ा कहा जाता है, राजस्थान के अरावली और विंध्य पहाड़ी क्षेत्रों में पाया जाने वाला एक प्रमुख वृक्ष है। यह वृक्ष प्रजाति मुख्य रूप से उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वनों का निर्माण करती है। धौक के वन कम वर्षा वाले पहाड़ी ढलानों, पथरीली मिट्टी और शुष्क जलवायु परिस्थितियों के प्रति अत्यधिक सहनशील होते हैं। राजस्थान के रणथंभौर, सरिस्का और रामगढ़ विषधारी जैसे संरक्षित क्षेत्रों में यह वनस्पति बहुतायत में पाई जाती है।

46. (C) हिमालय
भारत में शंकुधारी पर्वतीय वन प्राकृतिक रूप से केवल हिमालय पर्वतमाला के उच्च ऊंचाई वाले क्षेत्रों में पाए जाते हैं। लगभग 1500 से 3000 मीटर की ऊंचाई पर स्थित इन वनों में सुई जैसी नुकीली पत्तियों और शंकु-युक्त फल वाले वृक्ष पाए जाते हैं, जैसे देवदार, चीड़ (पाइन), स्प्रूस, सिल्वर फर और सीडर। इन पत्तियों की बनावट और शंकु संरचना इन पेड़ों को भारी बर्फबारी और अत्यधिक ठंडी जलवायु परिस्थितियों में आसानी से अनुकूलित होने में मदद करती है।

47. (B) P-2, Q-4, R-3, S-1
उष्णकटिबंधीय सदाबहार वनों की मुख्य प्रजातियों में महोगनी और रोजवुड शामिल हैं। उष्णकटिबंधीय आर्द्र पर्णपाती वनों में व्यावसायिक रूप से महत्वपूर्ण सागौन और साल के पेड़ प्रमुखता से उगते हैं। शुष्क और कम वर्षा वाले क्षेत्रों में उष्णकटिबंधीय कांटेदार वन पाए जाते हैं जिनमें बबूल और कीकर जैसी कँटीली प्रजातियां पाई जाती हैं। उच्च हिमालयी पर्वतीय क्षेत्रों में पाए जाने वाले शंकुधारी वनों के प्रमुख प्रतिनिधि वृक्ष पाइन (चीड़) और देवदार हैं।

48. (D) विरल वितान के कारण वन की सतह को प्रचुर मात्रा में सूर्य का प्रकाश प्राप्त होता है।
चौथा कथन वैज्ञानिक रूप से असत्य है क्योंकि उष्णकटिबंधीय सदाबहार वनों का वितान (केनोपी) अत्यधिक सघन और निरंतर होता है, विरल नहीं। इस अत्यधिक घने वितान के कारण सूर्य की किरणें वन की सतह या ज़मीन तक मुश्किल से ही पहुँच पाती हैं, जिससे निचले स्तर पर अंधेरा और नमी बनी रहती है। ये वन बहु-स्तरीय संरचना प्रदर्शित करते हैं, जिनमें ऊंचे पेड़ों पर चढ़ने वाली काष्ठलताएं और अन्य पौधों पर उगने वाले अधिपदप प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं।

Downloaded from www.pdf.tube

49. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
भारत में पर्णपाती वनों को वर्षा की उपलब्धता के आधार पर दो भागों में बांटा जाता है। आर्द्र पर्णपाती वन 100 से 200 सेमी वर्षा वाले क्षेत्रों में विकसित होते हैं, जबकि शुष्क पर्णपाती वन 70 से 100 सेमी वर्षा वाले क्षेत्रों में पाए जाते हैं। जब वार्षिक वर्षा 70 सेमी से भी कम हो जाती है, तो ये शुष्क पर्णपाती वन धीरे-धीरे कँटीले वनों और झाड़ियों में परिवर्तित हो जाते हैं। अतः दोनों कथन वैज्ञानिक रुप से पूर्णतः सही हैं।

50. (C) आबनूस
दिए गए विकल्पों में आबनूस (एबोनी) एक भिन्न प्रजाति है क्योंकि यह उष्णकटिबंधीय सदाबहार वनों का एक प्रमुख वृक्ष है जो भारी वर्षा वाले गर्म तटीय या मैदानी क्षेत्रों में उगता है। दूसरी ओर, स्प्रूस, फर और देवदार तीनों उच्च पर्वतीय क्षेत्रों में उगने वाले शंकुधारी वनस्पति परिवार के वृक्ष हैं, जो केवल हिमालय की ठंडी जलवायु में पाए जाते हैं। इसलिए आबनूस अपने वन प्रकार और पारिस्थितिक आवास के आधार पर अलग है।

51. (B) द्विवार्षिक (प्रत्येक दो वर्ष में)
'भारत वन स्थिति रिपोर्ट' (ISFR) भारतीय वन सर्वेक्षण (FSI) द्वारा प्रत्येक दो वर्ष में (द्विवार्षिक रुप से) प्रकाशित की जाने वाली एक राष्ट्रीय रिपोर्ट है। पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के तहत कार्यरत भारतीय वन सर्वेक्षण उपग्रह रिमोट सेंसिंग डेटा का उपयोग करके देश के वन और वृक्ष आवरण का नियमित आकलन करता है। इस श्रृंखला की पहली रिपोर्ट वर्ष 1987 में प्रकाशित की गई थी और तब से यह प्रक्रिया निरंतर जारी है।

52. (A) II, I, IV, III
भारत वन स्थिति रिपोर्ट (ISFR) 2021 के अनुसार, कुल वनावरण क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत के राज्यों का अवरोही क्रम (घटता क्रम) इस प्रकार है: मध्य प्रदेश देश में सर्वाधिक वनावरण (77,493 वर्ग किमी) के साथ प्रथम स्थान पर है। इसके पश्चात् अरुणाचल प्रदेश द्वितीय स्थान पर, छत्तीसगढ़ तृतीय स्थान पर और ओडिशा चतुर्थ स्थान पर आता है। अतः राज्यों का सही अवरोही क्रम II, I, IV, III है।

53. (B) केवल I और II
ISFR 2021 के अनुसार, कुल क्षेत्रफल की दृष्टि से उदयपुर जिला राजस्थान में सर्वाधिक वनावरण (2753 वर्ग किमी) वाला जिला है, जबकि चूरु जिले में सबसे कम वनावरण क्षेत्र पाया जाता है। अतः पहला और दूसरा कथन सही हैं। तीसरा कथन गलत है क्योंकि राजस्थान का अभिलेखित वन क्षेत्र इसके कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का लगभग 9.60% है, न कि 33%। चौथा कथन गलत है क्योंकि राजस्थान में खुले वन का हिस्सा सबसे बड़ा है।

54. (C) चार
वन्यजीव (संरक्षण) संशोधन अधिनियम 2022 ने वर्ष 1972 के मूल अधिनियम की छह अनुसूचियों को पुनर्गठित करके उनकी संख्या घटाकर चार कर दी है। संशोधित ढांचे के तहत: अनुसूची I उच्चतम स्तर के संरक्षण प्राप्त संकटग्रस्त जानवरों के लिए है; अनुसूची II कम संरक्षण वाली जानवर प्रजातियों के लिए है; अनुसूची III संरक्षित पादप प्रजातियों के लिए समर्पित है; तथा अनुसूची IV CITES के तहत अंतरराष्ट्रीय व्यापार से विनियमित नमूनों से संबंधित है।

55. (D) यदि जानवर मानव जीवन के लिए खतरनाक हो गया है या असाध्य विकलांगता से ग्रस्त है।
वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम 1972 की धारा 11 के प्रावधानों के अनुसार, अनुसूची I में सूचीबद्ध जंगली जानवरों का शिकार पूर्णतः प्रतिबंधित है। केवल मुख्य वन्यजीव संरक्षक (CWLW) लिखित आदेश द्वारा शिकार या बेहोश करने की अनुमति दे सकता है, यदि वह आश्वस्त हो जाए कि कोई विशिष्ट जंगली जानवर मानव जीवन के लिए खतरा बन गया है या वह किसी ऐसी असाध्य बीमारी या विकलांगता से पीड़ित है जिससे उसका उबरना असंभव है।

56. (A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम 1972 की अनुसूची I में शामिल प्रजातियों को भारत में सर्वोच्च कानूनी संरक्षण दिया गया है, जैसे बाघ, हाथी और गोडावण। इन प्रजातियों का शिकार करना, अवैध व्यापार करना या इनके अंगों का कब्जा कानूनन गंभीर अपराध माना जाता है। इस अनुसूची के तहत किए गए अपराधों के लिए अधिनियम में सबसे कठोर कारावास और न्यूनतम भारी जुर्माने के दंड का प्रावधान है। अतः कारण अभिकथन की सटीक व्याख्या करता है।

57. (B) कृष्णमृग (काला हिरण)
राजस्थान का बिश्नोई समुदाय पर्यावरण, वृक्षों और वन्यजीवों के प्रति अपने धार्मिक और सांस्कृतिक समर्पण के लिए जाना जाता है। यह समुदाय विशेष रुप से कृष्णमृग (काला हिरण) और चिंकारा की रक्षा अपने प्राणों की बाजी लगाकर करता है। कृष्णमृग वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम 1972 की अनुसूची I के तहत सूचीबद्ध एक उच्च कानूनी रुप से संरक्षित प्रजाति है। ताल छापर अभयारण्य और जोधपुर का गुरु बिश्नोई क्षेत्र कृष्णमृग के प्रमुख प्राकृतिक संरक्षण स्थल हैं।

58. (B) मध्य प्रदेश — सभी राज्यों में उच्चतम प्रतिशत
दूसरा युग्म गलत है क्योंकि भौगोलिक क्षेत्रफल के प्रतिशत के रुप में मध्य प्रदेश में सबसे अधिक वनावरण नहीं है। प्रतिशत की दृष्टि से मिजोरम (लगभग 84.53%) भारत के सभी राज्यों में सर्वोच्च स्थान पर है। मध्य प्रदेश केवल कुल वनावरण के निरपेक्ष क्षेत्रफल (वर्ग किलोमीटर) की दृष्टि से प्रथम स्थान पर है। हरियाणा राज्य प्रतिशत की दृष्टि से सबसे कम वनावरण वाले राज्यों में शामिल है, जबकि लक्षद्वीप केंद्र शासित प्रदेशों में शीर्ष पर है।

59. (C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
राष्ट्रीय वन्यजीव बोर्ड (NBWL) वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम 1972 की धारा 5A के तहत गठित एक शीर्ष वैधानिक निकाय है, जो देश में वन्यजीव नीति-निर्माण का सर्वोच्च कार्य करता

NODIA

है। अतः पहला कथन सही है। दूसरा कथन गलत है क्योंकि राष्ट्रीय वन्यजीव बोर्ड की अध्यक्षता केंद्रीय पर्यावरण मंत्री नहीं, बल्कि स्वयं भारत के प्रधानमंत्री करते हैं। पर्यावरण मंत्री इस बोर्ड के उपाध्यक्ष के रूप में कार्य करते हैं।

60. (C) 33 प्रतिशत
भारत की राष्ट्रीय वन नीति 1988 के अनुसार, पारिस्थितिक संतुलन, पर्यावरण स्थिरता और जैविक संसाधनों के संरक्षण के लिए देश के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का कम से कम एक-तिहाई भाग (33 प्रतिशत) वन और वृक्ष आवरण के अंतर्गत होना अनिवार्य लक्षित सीमा है। इस नीति में यह भी निर्धारित किया गया है कि कटाव और पारिस्थितिक संवेदनशीलता को देखते हुए पर्वतीय और पहाड़ी क्षेत्रों में कुल क्षेत्रफल का 67 प्रतिशत हिस्सा वन आच्छादित होना चाहिए।

61. (D) अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ (IUCN)
'रेड डेटा बुक' अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ (IUCN) द्वारा नियमित रूप से प्रकाशित की जाने वाली एक विश्व प्रसिद्ध कैटलॉग सूची है। यह पुस्तक दुनिया भर में पौधों, जानवरों और कवक की दुर्लभ, विलुप्तप्राय और संकटग्रस्त प्रजातियों की वैश्विक संरक्षण स्थिति का एक व्यापक और अद्यतन रिकॉर्ड प्रदान करती है। IUCN की इस रेड लिस्ट का मुख्य उद्देश्य वैश्विक समुदाय को जैव विविधता के नुकसान की गंभीरता के प्रति सचेत करना और संरक्षण कार्यवाहियों को निर्देशित करना है।

62. (D) I, II और III
आईयूसीएन (IUCN) की रेड लिस्ट में ग्रेट इंडियन बस्टर्ड (गोडावण), जर्डन्स कोर्सर और भारतीय गिद्ध तीनों प्रजातियां वर्तमान में 'गंभीर रूप से संकटग्रस्त' (Critically Endangered) श्रेणी में वर्गीकृत हैं। गोडावण बिजली की तारों से टकराने के कारण विलुप्ति की कगार पर है; जर्डन्स कोर्सर आंध्र प्रदेश के शुष्क क्षेत्रों का एक अत्यंत दुर्लभ पक्षी है; और भारतीय गिद्धों की संख्या में डाइक्लोफेनाक दवा के दुष्प्रभावों के कारण भारी गिरावट दर्ज की गई थी।

63. (B) ओवरहेड बिजली लाइनों से टकराना
राजस्थान के थार मरुस्थल में राज्य पक्षी ग्रेट इंडियन बस्टर्ड (गोडावण) की आबादी में गिरावट का सबसे बड़ा और तत्काल पारिस्थितिक खतरा हाई-वोल्टेज ओवरहेड बिजली लाइनों से टकराना है। गोडावण भारी वजन वाले पक्षी हैं और इनकी दृष्टि की सामने की ओर सीमित दृश्यता के कारण वे उड़ते समय इन पारगमन तारों को समय पर नहीं देख पाते हैं। इस खतरे को कम करने के लिए बिजली लाइनों पर बर्ड डायवर्टर लगाने का कार्य किया जा रहा है।

64. (D) आवास विखंडन और हाथी गलियारों का विनाश
भारत में मानव-हाथी संघर्ष में हो रही लगातार वृद्धि का सबसे मूलभूत और अंतर्निहित कारण हाथियों के प्राकृतिक आवासों का विखंडन और उनके पारंपरिक प्रवास गलियारों का विनाश है। वनों की अंधाधुंध कटाई, कृषि भूमि का प्रसार, खनन तथा सड़कों और रेल लाइनों के निर्माण के कारण हाथियों का बड़ा आवास छोटे टुकड़ों में बंट गया है। इसके परिणामस्वरूप भोजन और जल की तलाश में हाथी अक्सर मानव बस्तियों और कृषि खेतों में प्रवेश करने को मजबूर होते हैं।

65. (B) सुभेद्य > संकटग्रस्त > गंभीर रूप से संकटग्रस्त > वनों से विलुप्त
आईयूसीएन (IUCN) रेड लिस्ट श्रेणियों में विलुप्ति के बढ़ते जोखिम का सही क्रम 'सुभेद्य' (Vulnerable) से शुरु होकर 'वनों से विलुप्त' (Extinct in the Wild) की ओर जाता है। सुभेद्य श्रेणी कम जोखिम दर्शाती है, जिसके बाद जोखिम बढ़ने पर प्रजाति 'संकटग्रस्त' (Endangered) बनती है। जब विलुप्ति का जोखिम अत्यधिक उच्च स्तर पर पहुँच जाता है तो वह 'गंभीर रूप से संकटग्रस्त' (Critically Endangered) श्रेणी में आती है, और अंततः केवल बाड़े में जीवित रहने पर वनों से विलुप्त घोषित होती है।

66. (C) देहरादून
भारतीय वन्यजीव संस्थान (WII) उत्तराखंड राज्य की राजधानी देहरादून में स्थित एक अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त संस्थान है। इसकी स्थापना वर्ष 1982 में की गई थी। यह संस्थान भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के तहत एक स्वायत्त संस्था के रूप में कार्य करता है। देहरादून का यह परिसर वन्यजीव अनुसंधान, जैव विविधता प्रबंधन और वन अधिकारियों तथा वैज्ञानिकों के लिए उन्नत प्रशिक्षण कार्यक्रमों का प्रमुख केंद्र है।

67. (A) वन्यजीव संरक्षण और प्रबंधन में अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संचालित करना।
भारतीय वन्यजीव संस्थान (WII) का प्राथमिक जनादेश देश में वन्यजीव संरक्षण, पारिस्थितिक अनुसंधान और संरक्षित क्षेत्र प्रबंधन के क्षेत्र में वैज्ञानिक अध्ययन तथा प्रशिक्षण संचालित करना है। यह संस्थान वन सेवा अधिकारियों, वन्यजीव जीवविज्ञानियों और प्रबंधकों को उच्च स्तरीय प्रशिक्षण और डिग्री पाठ्यक्रम प्रदान करता है। इसके अलावा, यह भारत में लुप्तप्राय प्रजातियों के संरक्षण पुनरुद्धार और राष्ट्रीय वन्यजीव नीतियों के निर्माण में सरकार को वैज्ञानिक सलाह और तकनीकी सहायता प्रदान करता है।

68. (D) जंगली सूअर
संरक्षण स्थिति के आधार पर जंगली सूअर (Wild Boar) अन्य तीनों विकल्पों से पूरी तरह भिन्न है। हिम तेंदुआ, पैंगोलिन और जंगली जल भैंसा तीनों वैश्विक और राष्ट्रीय स्तर पर संकटग्रस्त प्रजातियां हैं और इन्हें वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम की अनुसूची I के तहत उच्चतम कानूनी संरक्षण प्राप्त है। इसके विपरीत, जंगली सूअर एक प्रचुर मात्रा में पाई जाने वाली तथा कम चिंताजनक श्रेणी की प्रजाति है, जिसे कृषि फसलों को नुकसान पहुँचाने के कारण कम कानूनी संरक्षण प्राप्त है।

69. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
संरक्षित वन क्षेत्रों के बीच से गुजरने वाले राजमार्ग और रेलवे लाइनें वन्यजीवों के आवासों को छोटे-छोटे टुकड़ों में विभाजित कर देती हैं, जिससे वाहनों की टक्कर से कई जानवरों की

Click Here to Buy book on Amazon

मृत्यु हो जाती है। इस गंभीर समस्या को कम करने के लिए अवसंरचना के ऊपर या नीचे इको-ब्रिज (इको-ओवरपास) और अंडरपास का निर्माण किया जाता है। ये हरित मार्ग वन्यजीवों को बिना किसी खतरे के अपने प्राकृतिक आवास में स्वतंत्र आवाजाही की सुविधा प्रदान करते हैं।

70. (C) यह विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में आता है।
तीसरा कथन पूरी तरह से असत्य है क्योंकि भारतीय वन्यजीव संस्थान (WII) विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अधीन नहीं आता है, बल्कि यह भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में एक स्वायत्त संस्थान के रूप में कार्य करता है। इसकी स्थापना वर्ष 1982 में हुई थी और यह देहरादून में स्थित है। यह संस्थान वन्यजीव प्रबंधन और नीति निर्माण में सरकारी और गैर-सरकारी निकायों को विशेषज्ञता प्रदान करता है।

71. (D) कम्पेंसेटरी अफॉरेस्टेशन फंड मैनेजमेंट एंड प्लानिंग अथॉरिटी (क्षतिपूरक वनीकरण कोष प्रबंधन एवं योजना प्राधिकरण)
'कैम्पा' (CAMPA) का सही पूर्ण रूप 'कम्पेंसेटरी अफॉरेस्टेशन फंड मैनेजमेंट एंड प्लानिंग अथॉरिटी' (हिंदी में: क्षतिपूरक वनीकरण कोष प्रबंधन एवं योजना प्राधिकरण) है। इस संस्थागत तंत्र की स्थापना सर्वोच्च न्यायालय के आदेशों के पश्चात क्षतिपूरक वनीकरण अधिनियम 2016 के तहत की गई थी। इसका मुख्य उद्देश्य गैर-वन उद्देश्यों के लिए परिवर्तित की गई वन भूमि के बदले प्राप्त धन का कुशलतापूर्वक प्रबंधन करना और देश में वनीकरण तथा पारिस्थितिक पुनर्स्थापन गतिविधियों को गति प्रदान करना है।

72. (A) गैर-वन औद्योगिक या खनन उद्देश्यों के लिए वन भूमि का परिवर्तन करते समय।
वन (संरक्षण) अधिनियम के तहत, जब भी किसी वन भूमि को खनन, बांध निर्माण या औद्योगिक विकास जैसे गैर-वन उद्देश्यों के लिए हस्तांतरित या परिवर्तित किया जाता है, तो परियोजना प्रस्तावक के लिए कैम्पा (CAMPA) खाते में धन जमा करना कानूनी रूप से अनिवार्य होता है। इस राशि में गैर-वन भूमि पर समकक्ष वनीकरण की लागत और परिवर्तित की जा रही वन भूमि का निवल वर्तमान मूल्य (NPV) शामिल होता है, ताकि खोए हुए वन आवरण की भरपाई की जा सके।

73. (B) कन्वेंशन ऑन इंटरनेशनल ट्रेड इन एंडेंजर्ड स्पीशीज ऑफ वाइल्ड फौना एंड फ्लोरा
'साइट्स' (CITES) का सही पूर्ण रूप 'कन्वेंशन ऑन इंटरनेशनल ट्रेड इन एंडेंजर्ड स्पीशीज ऑफ वाइल्ड फौना एंड फ्लोरा' है। यह एक अंतरराष्ट्रीय बहुपक्षीय समझौता है जो यह सुनिश्चित करने के लिए स्थापित किया गया है कि जंगली जानवरों और पौधों की प्रजातियों के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार से उनके अस्तित्व को कोई खतरा न पहुँचे। वर्ष 1973 में हस्ताक्षरित इस संधि के माध्यम से वैश्विक स्तर पर हजारों पौधों और जानवरों की प्रजातियों के व्यापार पर नियंत्रण लगाया जाता है।

74. (A) केवल I, II और III
CITES की तीन परिशिष्टियाँ व्यापार नियंत्रण के विभिन्न स्तरों को निर्दिष्ट करती हैं। परिशिष्ट I सर्वाधिक संकटग्रस्त प्रजातियों के व्यावसायिक व्यापार को प्रतिबंधित करती है; परिशिष्ट II नियंत्रित व्यापार की अनुमति देती है; और परिशिष्ट III किसी देश के अनुरोध पर प्रजातियों को सूचीबद्ध करती है। अतः I, II और III कथन सत्य हैं। चौथा कथन गलत है क्योंकि भारत वर्ष 1976 से CITES समझौते का एक नियमित हस्ताक्षरकर्ता और प्रतिबद्ध पक्ष देश रहा है।

75. (A) P-4, Q-1, R-2, S-3
राजस्थान के सीता माता वन्यजीव अभयारण्य का अधिकांश भाग प्रतापगढ़ जिले में स्थित है, जो अपनी उड़न गिलहरियों के लिए प्रसिद्ध है। ताल छापर अभयारण्य चूरू जिले में स्थित है और काले हिरणों का प्रमुख शरणस्थल है। माउंट आबू वन्यजीव अभयारण्य राज्य के एकमात्र पर्वतीय स्थल सिरोही जिले में स्थित है। बंध बरेठा अभयारण्य भरतपुर जिले में स्थित एक महत्वपूर्ण आर्द्रभूमि और वन्यजीव अभयारण्य है, जो अपने विविध पक्षी जीवन के लिए जाना जाता है।

76. (C) मानस राष्ट्रीय उद्यान — असम
मानस राष्ट्रीय उद्यान और असम राज्य का युग्म पूर्णतः सही सुमेलित है। मानस एक यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल, बाघ अभयारण्य और हाथी आरक्षित क्षेत्र है जो असम के बारपेटा और बक्सा जिलों में भूटान सीमा के पास स्थित है। अन्य विकल्प गलत हैं क्योंकि पेरियार राष्ट्रीय उद्यान तमिलनाडु में नहीं बल्कि केरल में स्थित है; नामदफा राष्ट्रीय उद्यान सिक्किम में नहीं बल्कि अरुणाचल प्रदेश में है; और सिमलीपाल राष्ट्रीय उद्यान छत्तीसगढ़ में नहीं बल्कि ओडिशा में स्थित है।

NODIA

77. (C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
क्षतिपूरक वनीकरण कोष अधिनियम 2016 राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर अलग-अलग क्षतिपूरक वनीकरण कोष स्थापित करने का वैधानिक प्रावधान करता है। इसलिए कथन I सही है। हालाँकि, कथन II गलत है क्योंकि अधिनियम के नियमों के अनुसार एकत्र की गई कुल राशि का 90% हिस्सा संबंधित राज्य क्षतिपूरक वनीकरण कोष में स्थानांतरित किया जाता है, जबकि केवल शेष 10% हिस्सा ही राष्ट्रीय क्षतिपूरक वनीकरण कोष के पास रखा जाता है।

78. (C) वाशिंगटन सम्मेलन
CITES (कन्वेंशन ऑन इंटरनेशनल ट्रेड इन एंडेंजर्ड स्पीशीज ऑफ वाइल्ड फौना एंड फ्लोरा) को अनौपचारिक रूप से 'वाशिंगटन सम्मेलन' (Washington Convention) के नाम से भी जाना जाता है। इस ऐतिहासिक संधि के पाठ पर 3 मार्च 1973 को वाशिंगटन डी.सी., संयुक्त राज्य अमेरिका में आयोजित IUCN सदस्यों की एक वैश्विक बैठक में सहमति बनी थी और हस्ताक्षर किए गए थे। यह संधि 1 जुलाई 1975 से प्रभावी रूप से लागू की गई थी।

79. (B) उड़न गिलहरी
राजस्थान के प्रतापगढ़ जिले में स्थित सीता माता वन्यजीव अभयारण्य अपनी अनूठी प्रजाति 'उड़न गिलहरी' (पेटोइस्टा फिलिपेंसिस) के प्राथमिक प्राकृतिक आवास के रूप में पूरे भारत में प्रसिद्ध है। यह निशाचर जीव अभयारण्य के विशाल महुआ और सागौन के पेड़ों की शाखाओं पर पाया जाता है। यह अभयारण्य अरावली, विंध्याचल और मालवा के पठार के संगम पर स्थित है, जहाँ सागौन के सघन वन इस प्रजाति के अस्तित्व के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करते हैं।

80. (D) वन विभाग के कर्मचारियों के नियमित वेतन का भुगतान
कैम्पा (CAMPA) नियमों के तहत क्षतिपूरक वनीकरण कोष का उपयोग केवल वनीकरण, आवास सुधार, वन अग्नि रोकथाम और पारिस्थितिक पुनरुद्धार गतिविधियों के लिए ही किया जा सकता है। इस कोष से प्राप्त राशि का उपयोग वन विभाग के नियमित कर्मचारियों और अधिकारियों के मासिक वेतन, भत्तों या नियमित प्रशासनिक कार्यालय खर्चों के भुगतान के लिए करना कानूनी रूप से पूरी तरह वर्जित है। वेतन संबंधी व्यय नियमित राज्य बजट द्वारा वहन किए जाते हैं।

81. (A) अत्यधिक लवणीय मिट्टी और खारे पानी वाले आवास
"लवणमृदोद्भिद" (हेलोफाइट्स) उन विशिष्ट पौधों को कहा जाता है जो अत्यधिक लवणीय मिट्टी, खारे पानी और तटीय दलदली वातावरण में जीवित रहने और पनपने के लिए विशेष रूप से अनुकूलित होते हैं। मैंग्रोव वनस्पति लवणमृदोद्भिद पौधों का एक सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है। इन पौधों में अपनी जड़ों द्वारा अतिरिक्त नमक को बाहर निकालने, पत्तियों में नमक जमा करने या पत्तियों के माध्यम से लवण उत्सर्जित करने जैसी अद्वितीय शारीरिक कार्यप्रणाली पाई जाती है।

82. (C) पश्चिम बंगाल
भारत वन स्थिति रिपोर्ट (ISFR) 2021 के अनुसार, पश्चिम बंगाल राज्य में देश का सर्वाधिक मैंग्रोव आवरण क्षेत्र स्थित है। पश्चिम बंगाल में भारत के कुल मैंग्रोव क्षेत्र का लगभग 42.45 प्रतिशत हिस्सा (2114 वर्ग किलोमीटर) पाया जाता है। इसका मुख्य कारण दक्षिण 24 परगना और उत्तर 24 परगना जिलों में विस्तृत विशाल सुंदरबन डेल्टा क्षेत्र है। इस सूची में गुजरात राज्य दूसरे और अंडमान तथा निकोबार द्वीप समूह तीसरे स्थान पर आते हैं।

83. (A) जलभराव वाली मिट्टी में वायुमंडलीय ऑक्सीजन को अवशोषित करना।
मैंग्रोव पौधे तटीय दलदली और लगातार जलभराव वाली मिट्टी में उगते हैं, जहाँ मिट्टी में ऑक्सीजन की भारी कमी होती है। इस समस्या से निपटने के लिए इन पौधों में 'न्यूमेटोफोर' (श्वसन मूल) नामक विशेष खूंटीदार जड़ें विकसित होती हैं जो जमीन और पानी की सतह से ऊपर हवा में निकलती हैं। इन जड़ों की सतह पर छोटे-छोटे छिद्र (लैन्टीसेल्स) होते हैं, जिनका प्राथमिक कार्य वायुमंडल से सीधे ऑक्सीजन को अवशोषित करके पौधे की भूमिगत जड़ों तक पहुँचाना है।

84. (C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
मैंग्रोव अपनी घनी जड़ों से तटीय रेखा को स्थिर करते हैं और तूफानी लहरों, चक्रवातों तथा सुनामी के प्रभाव को कम करके प्राकृतिक रक्षा तंत्र का कार्य करते हैं, इसलिए कथन I सत्य है। हालाँकि, कथन II पूरी तरह गलत है क्योंकि मैंग्रोव अत्यंत प्रभावी कार्बन सिंक ('ब्लू कार्बन') होते हैं। ये वन स्थलीय उष्णकटिबंधीय वनों की तुलना में प्रति हेक्टेयर तीन से पांच गुना अधिक कार्बन अपनी मिट्टी और जैवभार में संचित कर सकते हैं।

85. (B) इरविकुलम राष्ट्रीय उद्यान
केरल के इडुक्की जिले में पश्चिमी घाट की उच्च पहाड़ियों में स्थित इरविकुलम राष्ट्रीय उद्यान नीलगिरि तहर (एक संकटग्रस्त पर्वतीय जंगली बकरी) की सबसे बड़ी जीवित आबादी के संरक्षण के लिए विश्व प्रसिद्ध है। तमिलनाडु का यह राज्य पशु मुख्य रूप से मोंटेन शोला-घास के मैदान पारिस्थितिकी तंत्र में निवास करता है। इस राष्ट्रीय उद्यान में स्थित अनामुडी चोटी दक्षिण भारत की सबसे ऊँची चोटी है, जो इस दुर्लभ जीव को आदर्श प्राकृतिक आवास प्रदान करती है।

86. (C) मन्नार की खाड़ी समुद्री राष्ट्रीय उद्यान गुजरात के तट पर स्थित है।
तीसरा कथन गलत है क्योंकि मन्नार की खाड़ी समुद्री राष्ट्रीय उद्यान गुजरात के तट पर नहीं, बल्कि तमिलनाडु राज्य के दक्षिण-पूर्वी तट पर भारत और श्रीलंका के बीच मन्नार की खाड़ी में स्थित है। गुजरात के तट पर भारत का पहला 'कच्छ की खाड़ी समुद्री राष्ट्रीय उद्यान' स्थित है। अंडमान में महात्मा गांधी समुद्री राष्ट्रीय उद्यान स्थित है, तथा ओडिशा का गहिरमाथा अभयारण्य ऑलिव रिडले कछुओं के सामूहिक घोंसले (अरिबादा) के लिए प्रसिद्ध है।

87. (D) जिम कॉर्बेट राष्ट्रीय उद्यान
उत्तराखंड में स्थित जिम कॉर्बेट राष्ट्रीय उद्यान भारत का पहला आधिकारिक रूप से स्थापित राष्ट्रीय उद्यान था, जिसकी स्थापना 1936 में हेली राष्ट्रीय उद्यान के नाम से हुई थी। जब भारत सरकार ने 1 अप्रैल 1973 को संकटग्रस्त बंगाल टाइगर को विलुप्ति से बचाने के लिए ऐतिहासिक 'प्रोजेक्ट टाइगर' पहल का शुभारंभ किया, तो जिम कॉर्बेट राष्ट्रीय उद्यान को ही इस महत्वाकांक्षी परियोजना की आधिकारिक शुरुआत करने वाले देश के प्रथम बाघ अभयारण्य के रूप में चुना गया था।

88. (A) किसी प्रजाति को उसके प्राकृतिक आवास के भीतर संरक्षित करना।
स्व-स्थाने (In-situ) संरक्षण जैव विविधता संरक्षण की वह पद्धति है जिसमें किसी भी पादप या पशु प्रजाति को उसके प्राकृतिक प्राकृतिक आवास और पारिस्थितिक तंत्र के भीतर ही संरक्षित और प्रबंधित किया जाता है। इसके अंतर्गत जीवों को उनके मूल प्राकृतिक परिवेश में फलने-फूलने का अवसर मिलता है। राष्ट्रीय उद्यान, वन्यजीव अभयारण्य, बायोस्फीयर रिजर्व और पवित्र उपवन स्व-स्थाने संरक्षण के सर्वोत्कृष्ट उदाहरण हैं, जहाँ प्राकृतिक पारिस्थितिक प्रक्रियाएं निरंतर और अबाध रूप से संचालित होती रहती हैं।

Downloaded from www.pdf.tube

89. (B) प्राणी उद्यान
संरक्षण विधियों के आधार पर 'प्राणी उद्यान' (चिड़ियाघर) एक भिन्न विकल्प है क्योंकि यह बाह्य-स्थाने (Ex-situ) संरक्षण का एक उदाहरण है। बाह्य-स्थाने संरक्षण में संकटग्रस्त जीवों को उनके प्राकृतिक आवास से बाहर मानव-निर्मित कृत्रिम और नियंत्रित वातावरण में संरक्षित किया जाता है। इसके विपरीत, बायोस्फीयर रिजर्व, वन्यजीव अभयारण्य और सामुदायिक रिजर्व तीनों स्व-स्थाने (In-situ) संरक्षण के उदाहरण हैं, जहाँ प्रजातियों को उनके मूल प्राकृतिक वातावरण के भीतर ही सुरक्षा दी जाती है।

90. (C) पाँच
वर्ष 2023 के अंत तक, धौलपुर-करौली रिजर्व की आधिकारिक स्वीकृति और अधिसूचना के बाद राजस्थान राज्य में स्वीकृत बाघ अभयारण्यों की कुल संख्या बढ़कर पाँच हो गई है। राज्य के ये पांचों बाघ अभयारण्य क्रमशः रणथंभौर (सवाई माधोपुर), सरिस्का (अलवर), मुकुंदरा हिल्स (कोटा), रामगढ़ विषधारी (बूंदी) और धौलपुर-करौली बाघ अभयारण्य हैं। यह विस्तार राज्य में बाघों के लगातार बढ़ते कुनबे और उनके सुरक्षित प्राकृतिक गलियारों के प्रबंधन में अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध हो रहा है।

www.nodia.in

NODIA

अध्याय 05
भारत की प्रमुख फसलें

1. भारत के योजना आयोग ने कृषि नियोजन के लिए देश को मोटे तौर पर कितने कृषि-जलवायु क्षेत्रों में वर्गीकृत किया है?
(A) 10
(B) 15
(C) 20
(D) 12

2. राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान परियोजना (NARP) के दिशा-निर्देशों के अंतर्गत, स्थान-विशिष्ट रणनीतियों को तैयार करने के लिए राजस्थान को कितने कृषि-जलवायु क्षेत्रों में विभाजित किया गया है?
(A) 5 (B) 15
(C) 10 (D) 14

3. भारत के निम्नलिखित में से किस कृषि-जलवायु क्षेत्र की विशेषता न्यूनतम वार्षिक वर्षा तथा ग्रीष्मकाल में उच्च तापमान है, और जहाँ मुख्य रूप से बाजरा, ग्वार एवं मोठ की खेती की जाती है?
(A) ट्रांस-गंगा मैदानी क्षेत्र
(B) मध्य पठार एवं पहाड़ी क्षेत्र
(C) पश्चिमी शुष्क क्षेत्र
(D) पूर्वी हिमालयी क्षेत्र

4. भारत के कृषि-जलवायु क्षेत्रों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. योजना आयोग का वर्गीकरण मुख्य रूप से मृदा के प्रकार, वर्षा, तापमान और जल संसाधनों पर आधारित है।
II. राजस्थान पूर्णतः एक ही कृषि-जलवायु क्षेत्र के अंतर्गत आता है।
III. पश्चिमी शुष्क क्षेत्र मुख्य रूप से पश्चिमी राजस्थान को आच्छादित करता है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल I और III
(C) केवल II और III
(D) I, II और III

5. भारत में गेहूँ की इष्टतम खेती के लिए आवश्यक आदर्श तापमान और वर्षा की परिस्थितियाँ क्या हैं?
(A) वर्धन काल के दौरान 10-15°C तापमान और 50-75 सेमी वर्षा
(B) वर्धन काल के दौरान 21-27°C तापमान और 100-150 सेमी वर्षा
(C) वर्धन काल के दौरान 20-25°C तापमान और 150-200 सेमी वर्षा
(D) वर्धन काल के दौरान 15-20°C तापमान और 30 सेमी से कम वर्षा

6. भारत में किस क्षेत्र को गेहूँ के उच्च उत्पादन और उत्पादकता के कारण पारंपरिक रूप से 'गेहूँ का कटोरा' कहा जाता है?
(A) कृष्णा-गोदावरी डेल्टा
(B) पंजाब-हरियाणा के मैदान
(C) मालवा का पठार
(D) ब्रह्मपुत्र घाटी

7. राजस्थान के संदर्भ में, नहर सिंचाई की उपलब्धता के कारण कौन-से जिले गेहूँ के प्रमुख उत्पादक हैं?
(A) जैसलमेर और बाड़मेर के शुष्क जिले
(B) बांसवाड़ा और डूंगरपुर के दक्षिणी जिले
(C) चूरु और जोधपुर के शुष्क मध्य जिले
(D) श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ जिले

8. भारत में गेहूँ की खेती के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसके लिए वर्धन काल में समान रूप से वितरित 50-75 सेमी की वार्षिक वर्षा की आवश्यकता होती है।
II. पकते समय खिली हुई धूप अच्छी उपज के लिए आवश्यक है।
III. पुष्पन अवस्था के दौरान तीव्र पाला गेहूँ की फसल के लिए अत्यधिक लाभदायक होता है।
IV. यह मुख्य रूप से दक्षिण-पश्चिम मानसून के आगमन के दौरान बोया जाता है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन गलत है/हैं?
(A) I और II
(B) III और IV
(C) I, II और III
(D) II, III और IV

9. हाल के वर्षों में, कुल मात्रा के आधार पर भारत में कौन-सा राज्य लगातार गेहूँ का सबसे बड़ा उत्पादक रहा है?
(A) पंजाब
(B) मध्य प्रदेश
(C) उत्तर प्रदेश
(D) हरियाणा

Click Here to Buy book on Flipkart

10. भारत में हरित क्रांति निम्नलिखित में से किस फसल युग्म के लिए सर्वाधिक सफल रही?
(A) गेहूँ और चावल
(B) कपास और गन्ना
(C) दलहन और तिलहन
(D) चाय और कॉफी

11. चावल भारत की अधिकांश जनसंख्या की मुख्य खाद्य फसल है। इसे मुख्य रूप से किस प्रकार की फसल के रूप में वर्गीकृत किया जाता है?
(A) रबी
(B) जायद
(C) रोपण फसल
(D) खरीफ

12. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A) : चावल मुख्य रूप से भारत के तटीय क्षेत्रों और उत्तर-पूर्वी मैदानों में उगाया जाता है।
कारण (R) : चावल के लिए 100 सेमी से अधिक वार्षिक वर्षा के साथ उच्च तापमान और उच्च आर्द्रता की आवश्यकता होती है।
उपर्युक्त कथनों के संदर्भ में, सही विकल्प का चयन कीजिए:
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है परंतु कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है परंतु कारण (R) सही है।

13. असम, पश्चिम बंगाल और ओडिशा जैसे राज्यों में एक वर्ष में धान की तीन फसलें उगाई जाती हैं। निम्नलिखित में से इन फसलों के नामों का सही समुच्चय कौन-सा है?
(A) बैसाख, जेठ, असाढ़
(B) वसंत, शरद, हेमंत
(C) औस, अमन, बोरो
(D) शाली, आहू, बाओ

14. भारत में चावल का सबसे बड़ा उत्पादक राज्य कौन-सा है, जबकि इसके कृषि योग्य क्षेत्र का एक बड़ा भाग चक्रवाती तूफानों से प्रभावित रहता है?
(A) पंजाब
(B) उत्तर प्रदेश
(C) आंध्र प्रदेश
(D) पश्चिम बंगाल

15. भारत में चावल उत्पादन की प्रवृत्तियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. भारत विश्व में चावल का सबसे बड़ा निर्यातक है।
II. पश्चिम बंगाल का भारत में चावल का कुल उत्पादन सबसे अधिक है।
III. चावल की प्रति हेक्टेयर उपज (उत्पादकता) ओडिशा राज्य में सबसे अधिक है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

NODIA

16. पारंपरिक रोपाई विधियों की तुलना में सघन चावल प्रणाली (एस.आर.आई.) का प्राथमिक लाभ क्या है?
(A) इसके लिए संपूर्ण फसल चक्र के दौरान निरंतर जलभराव वाली स्थिति की आवश्यकता होती है।
(B) यह फसल की उपज में वृद्धि करते हुए जल की आवश्यकता और बीज दर को कम करती है।
(C) इसके लिए संश्लेषित रासायनिक उर्वरकों के अत्यधिक उपयोग की आवश्यकता होती है।
(D) यह विशेष रूप से लवणीय और जलभराव वाली तटीय मृदा परिस्थितियों के लिए उपयुक्त है।

17. कपास की खेती में समुचित वृद्धि और डोडे के निर्माण को सुनिश्चित करने के लिए पाला-रहित दिनों की एक विशिष्ट संख्या की आवश्यकता होती है। यह आदर्श आवश्यकता कितनी है?
(A) 100 दिन
(B) 150 दिन
(C) 210 दिन
(D) 300 दिन

18. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर का चयन कीजिए।
सूची I : (फसल)
P. जूट
Q. मूंगफली
R. गन्ना
S. रबर
सूची II : (प्रमुख उत्पादक राज्य)
1. उत्तर प्रदेश
2. केरल
3. पश्चिम बंगाल
4. गुजरात
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-3, Q-1, R-4, S-2
(C) P-4, Q-3, R-1, S-2
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

19. दक्कन ट्रैप की रेगुर मृदा को व्यापक रूप से निम्नलिखित में से किस व्यावसायिक फसल की खेती के लिए सर्वाधिक उपयुक्त माना जाता है?
(A) चाय (B) कॉफी
(C) कपास (D) जूट

20. उत्तर भारत से दक्षिण और पश्चिम भारत की ओर चीनी उद्योग का क्रमिक स्थानांतरण और संकेंद्रण क्यों हो रहा है?

(A) जल की कमी के कारण उत्तर भारत में गन्ने की खेती पर कड़े सरकारी प्रतिबंध लागू हैं।
(B) गन्ने की फसलें उत्तर प्रदेश और बिहार की अत्यधिक क्षारीय और लवणीय मृदा परिस्थितियों को सहन नहीं कर सकती हैं।
(C) केवल दक्षिण भारतीय राज्य सरकारें ही गन्ने के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य और अनुदान की गारंटी देती हैं।
(D) प्रायद्वीपीय भारत में उच्च सुक्रोज मात्रा वाले गन्ने का उत्पादन होता है और यहाँ पेराई का मौसम अधिक लंबा होता है।

21. निम्नलिखित में से कौन-सी परिस्थिति गन्ने की खेती के लिए उपयुक्त नहीं है?
(A) वृद्धि के दौरान उष्णकटिबंधीय गर्म और आर्द्र जलवायु परिस्थितियाँ
(B) 21°C और 27°C के बीच औसत तापमान सीमा
(C) फसल के पकने के चरण में तीव्र पाला
(D) 75 सेमी और 100 सेमी के बीच समान रूप से वितरित वार्षिक वर्षा

22. भारत में गन्ने की खेती के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह एक उष्णकटिबंधीय के साथ-साथ उपोष्णकटिबंधीय फसल भी है।
II. इसके लिए 21°C से 27°C तापमान वाली गर्म और आर्द्र जलवायु की आवश्यकता होती है।
III. उत्तर प्रदेश भारत में गन्ने का सबसे बड़ा उत्पादक है।
IV. भारत ब्राजील को पछाड़कर विश्व में गन्ने का सबसे बड़ा उत्पादक है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) I, II और III
(B) I, II और IV
(C) II, III और IV
(D) I, III और IV

23. चाय के पौधे गहरी, उपजाऊ और सुअपवाहित मृदा वाली उष्णकटिबंधीय एवं उपोष्णकटिबंधीय जलवायु में अच्छी वृद्धि करते हैं। चाय के बागान अधिकतर पहाड़ी ढलानों पर क्यों स्थित होते हैं?
(A) अधिक ऊँचाई से पत्तियों में कैफीन की मात्रा बढ़ जाती है।
(B) पहाड़ी ढलान स्वतः ही खरपतवारों की वृद्धि को रोकते हैं।
(C) स्वाद के विकास के लिए चाय की पत्तियों को सीधे हिमांक तापमान की आवश्यकता होती है।
(D) जल का जमाव चाय की जड़ों के लिए हानिकारक होता है।

24. वर्ष भर चाय की कोमल पत्तियों की इष्टतम वृद्धि के लिए निम्नलिखित में से कौन-सी एक अनिवार्य आवश्यकता है?
(A) बारंबार, समान रूप से वितरित बौछारें
(B) 3 महीने से अधिक का निरंतर शुष्क मौसम
(C) वर्धन काल के दौरान तीव्र पवन गति
(D) वर्ष भर न्यूनतम 35°C तापमान

NODIA

25. भारत में कुल चाय उत्पादन के संदर्भ में राज्यों के सही अवरोही क्रम का चयन कीजिए।
(A) असम, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, केरल
(B) पश्चिम बंगाल, असम, केरल, तमिलनाडु
(C) केरल, तमिलनाडु, असम, पश्चिम बंगाल
(D) असम, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल, केरल

26. बाबा बूदन की पहाड़ियाँ भारत में किस रोपण फसल का प्रारंभ और खेती करने के लिए ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण हैं?
(A) कॉफी
(B) चाय
(C) रबर
(D) इलायची

27. कॉफी की कौन-सी किस्म, जो प्रारंभ में यमन से लाई गई थी, मुख्य रूप से भारत में उत्पादित की जाती है और विश्व स्तर पर अत्यधिक मांग में है?
(A) रोबस्टा
(B) लिबेरिका
(C) एक्सेल्सा
(D) अरेबिका

28. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A) : भारत में कॉफी के बागान आमतौर पर बड़े छायादार वृक्षों के आवरण के अंतर्गत स्थापित किए जाते हैं।
कारण (R) : छायादार वृक्ष संवेदनशील कॉफी पौधों को सीधी एवं तीव्र धूप से बचाते हैं तथा मृदा की नमी बनाए रखने में सहायता करते हैं।
उपर्युक्त कथनों के संदर्भ में, सही विकल्प का चयन कीजिए:
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है परंतु कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है परंतु कारण (R) सही है।

29. भारत में खरीफ फसल का मौसम आमतौर पर निम्नलिखित में से किस अवधि के अनुरूप होता है?
(A) अक्टूबर से मार्च तक
(B) जून से सितंबर तक
(C) मार्च से जून तक
(D) जनवरी से अप्रैल तक

30. उत्तर भारत में प्राथमिक फसल मौसम के आधार पर निम्नलिखित फसलों में से विषम फसल की पहचान कीजिए।
(A) ज्वार
(B) बाजरा

(C) तुर (अरहर)
(D) जौ

31. शुष्क परिस्थितियों के प्रति उच्च सहनशीलता के कारण निम्नलिखित में से कौन-सा राज्य भारत में बाजरे का सबसे बड़ा उत्पादक है?
(A) राजस्थान
(B) गुजरात
(C) महाराष्ट्र
(D) उत्तर प्रदेश

32. उत्तर-पश्चिम भारत में शीतकालीन वर्षा, जो रबी फसलों के लिए अत्यधिक लाभदायक होती है, किस मौसम वैज्ञानिक परिघटना के कारण होती है?
(A) लौटता हुआ मानसून
(B) पश्चिमी विक्षोभ
(C) उष्णकटिबंधीय चक्रवात
(D) स्थानीय ग्रीष्मकालीन हवाएँ (लू)

33. भारत के उत्तरी और उत्तर-पश्चिमी राज्यों में निम्नलिखित में से कौन-सी विशेष रूप से रबी की फसल है?
(A) मक्का
(B) सरसों
(C) मूंगफली
(D) सोयाबीन

34. रबी की फसलें सर्दियों में अक्टूबर से दिसंबर तक बोई जाती हैं। इनकी कटाई आमतौर पर कब की जाती है?
(A) जनवरी से फरवरी
(B) अप्रैल से जून
(C) जुलाई से अगस्त
(D) सितंबर से नवंबर

35. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर का चयन कीजिए।
सूची I : (फसल श्रेणी)
P. खरीफ खाद्यान्न फसल
Q. रबी खाद्यान्न फसल
R. जायद फसल
S. नकदी फसल
सूची II : (उदाहरण)
1. तरबूज
2. गन्ना
3. धान
4. गेहूँ
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-3, Q-4, R-2, S-1
(D) P-1, Q-2, R-3, S-4

36. रबी और खरीफ मौसम के मध्य आने वाले लघु मौसम को जायद मौसम कहा जाता है। निम्नलिखित में से कौन-सी फसल आमतौर पर जायद के दौरान नहीं उगाई जाती है?
(A) खरबूजा
(B) खीरा
(C) चारा फसलें
(D) मूंगफली

37. जायद की फसलें ग्रीष्मकाल में अपने वर्धन काल के दौरान निम्नलिखित में से किस जल स्रोत पर अत्यधिक निर्भर होती हैं?
(A) मौसमी दक्षिण-पश्चिम मानसूनी वर्षा
(B) मौसमी लौटते मानसून की वर्षा
(C) सुनिश्चित सिंचाई सुविधाएं
(D) शीतकालीन पश्चिमी विक्षोभ

38. भारत में हरित क्रांति के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसकी शुरुआत 1960 के दशक में उच्च उपज देने वाली किस्मों के बीजों के प्रयोग के साथ हुई थी।
II. डॉ. वर्गीज कुरियन को भारत में हरित क्रांति के जनक के रूप में जाना जाता है।
III. प्रारंभ में, इसकी सफलता मुख्य रूप से पंजाब और हरियाणा जैसे राज्यों में गेहूँ और चावल तक ही सीमित थी।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन गलत है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II
(C) केवल I और III
(D) केवल III

39. निम्नलिखित में से किसे हरित क्रांति द्वारा प्रारंभ की गई गहन कृषि पद्धतियों का नकारात्मक पारिस्थितिक परिणाम माना जाता है?
(A) स्वदेशी फसलों की आनुवंशिक विविधता में वृद्धि
(B) मृदा के जैविक कार्बन में वृद्धि
(C) सीमांत किसानों के लिए कृषि लागत में कमी
(D) भूजल स्तर में गिरावट

40. 'पूर्वी भारत में हरित क्रांति लाना' पहल किस क्षेत्र में कृषि उत्पादकता में सुधार के लिए प्रारंभ की गई थी?
(A) हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड जैसे पश्चिमी हिमालयी राज्य
(B) गुजरात और महाराष्ट्र राज्यों के तटीय मैदान
(C) बिहार, ओडिशा और पश्चिम बंगाल
(D) पंजाब और हरियाणा जैसे उत्तर-पश्चिमी राज्य

41. निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प 'नकदी फसल' की सबसे सटीक परिभाषा प्रस्तुत करता है?
(A) केवल किसान के घरेलू खाद्यान्न उपभोग को पूरा करने के लिए उगाई जाने वाली फसल।
(B) रासायनिक उर्वरकों या संश्लेषित कीटनाशकों के उपयोग

Downloaded from www.pdf.tube

के बिना जैविक रूप से उगाई जाने वाली फसल।
(C) लाभ प्राप्त करने के लिए मुख्य रूप से बाजार में बिक्री हेतु उगाई जाने वाली फसल।
(D) वह फसल जिसे सरकार द्वारा वाणिज्यिक कराधान से पूरी तरह छूट दी गई है।

42. भारत में कृषि के वाणिज्यीकरण का तात्पर्य है:
(A) मुख्य रूप से राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों के लिए फसलें उगाना।
(B) कृषि उत्पादन को नकदी फसलों से पुनः पारंपरिक खाद्यान्न फसलों में परिवर्तित करना।
(C) किसान के परिवार द्वारा स्वयं के उपभोग के लिए मुख्य रूप से खाद्यान्न फसलें उगाना।
(D) उपजाऊ कृषि भूमि को सीधे औद्योगिक क्षेत्र में स्थानांतरित करना।

43. निम्नलिखित में से कौन-सा उस फसल का उत्कृष्ट उदाहरण है जो भारत के एक क्षेत्र में मुख्य खाद्यान्न के रूप में कार्य करती है, किंतु दूसरे क्षेत्र में वाणिज्यिक नकदी फसल के रूप में उगाई जाती है?
(A) उत्तर-पूर्वी पहाड़ी क्षेत्रों में उगाई जाने वाली चाय
(B) दक्षिणी उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में उगाया जाने वाला रबर
(C) पूर्वी डेल्टाई मैदानी क्षेत्रों में उत्पादित जूट
(D) पंजाब और हरियाणा जैसे क्षेत्रों में चावल

44. गंभीर जल संकट वाले क्षेत्रों में बागवानी और अधिक दूरी वाली फसलों के लिए ड्रिप सिंचाई की अत्यधिक अनुशंसा की जाती है। इसका प्राथमिक कार्यात्मक लाभ क्या है?
(A) यह प्राकृतिक वर्षा की भाँति सीधे फसल के आवरण पर जल का छिड़काव करती है, जिससे कीट बह जाते हैं।
(B) यह सीधे जड़ क्षेत्र में जल पहुँचाती है, जिससे वाष्पीकरण और अपवाह कम होता है।
(C) यह मृदा की लवणता को अत्यधिक बढ़ाती है, जो नकदी फसल के विकास के लिए लाभदायक है।
(D) इसके लिए व्यापक भूमि समतलीकरण और खेत में पूर्ण जलभराव की आवश्यकता होती है।

45. भारत में सिंचाई पद्धतियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. सूक्ष्म-सिंचाई तकनीक प्रवाह सिंचाई की तुलना में जल की खपत को काफी कम करती है।
II. स्प्रिंकलर सिंचाई उच्च अंतःस्यंदन दर वाली बलुई मृदा के लिए आदर्श है।
III. नहर सिंचाई मुख्य रूप से प्रायद्वीपीय पठारी क्षेत्र में संकेंद्रित है।
IV. राजस्थान में, नलकूपों और कुओं के माध्यम से निकाला गया भूजल सिंचाई का सबसे बड़ा स्रोत है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन गलत है/हैं?
(A) I और II
(B) केवल III
(C) II और IV
(D) I, III और IV

46. प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के अंतर्गत, 'प्रति बूंद अधिक फसल' घटक मुख्य रूप से किस पर केंद्रित है?
(A) बड़े बहुउद्देशीय नदी बाँधों का निर्माण और विस्तार।
(B) प्रमुख राष्ट्रीय और प्रायद्वीपीय नदी प्रणालियों को आपस में जोड़ना।
(C) नलकूप संचालन के लिए रियायती या निःशुल्क बिजली प्रदान करना।
(D) ड्रिप और स्प्रिंकलर सूक्ष्म-सिंचाई को बढ़ावा देना।

47. फसल उत्पादकता के संदर्भ में, कृषि 'उपज' को किस प्रकार परिभाषित किया जाता है?
(A) भूमि के प्रति इकाई क्षेत्र में फसल का उत्पादन।
(B) एक वर्ष में एक किसान परिवार द्वारा अर्जित कुल शुद्ध वित्तीय आय।
(C) संपूर्ण राज्य या देश में उत्पादित फसल की कुल मात्रा।
(D) काटी गई कुल फसल मात्रा के सापेक्ष बोए गए बीजों का अनुपात।

NODIA

48. गेहूँ की कृषि उत्पादकता (प्रति हेक्टेयर उपज) के सही अवरोही क्रम में निम्नलिखित राज्यों को व्यवस्थित कीजिए:
1. पंजाब
2. उत्तर प्रदेश
3. मध्य प्रदेश
सही विकल्प का चयन कीजिए:
(A) 1, 2, 3
(B) 2, 1, 3
(C) 3, 2, 1
(D) 1, 3, 2

49. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन कुल कृषि उत्पादन और कृषि उत्पादकता के बीच अंतर की सबसे अच्छी व्याख्या करता है?
(A) उत्पादन का तात्पर्य केवल खेती की गई कुल भूमि से है, जबकि उत्पादकता का तात्पर्य प्राप्त कुल वर्षा से है।
(B) उत्पादन काटी गई कुल फसल की मात्रा है, जबकि उत्पादकता प्रति इकाई भूमि क्षेत्र का उत्पादन है।
(C) उत्पादकता को कुल सकल वित्तीय मूल्य के रूप में परिभाषित किया जाता है, जबकि उत्पादन भौतिक फसल भार को मापता है।
(D) दोनों के मध्य कोई कार्यात्मक अंतर नहीं है; दोनों शब्द पूर्ण पर्यायवाची हैं।

50. भारत में न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) की सिफारिश निम्नलिखित में से किस निकाय द्वारा की जाती है?
(A) कृषि लागत और मूल्य आयोग
(B) नीति आयोग
(C) भारतीय खाद्य निगम
(D) राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक

51. वर्तमान में भारत सरकार कृषि लागत और मूल्य आयोग की सिफारिशों के आधार पर कितनी अधिदिष्ट कृषि फसलों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) की घोषणा करती है?
(A) 15 अधिदिष्ट फसलें
(B) 22 अधिदिष्ट फसलें
(C) 35 अधिदिष्ट फसलें
(D) 10 अधिदिष्ट फसलें

52. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A) : पंजाब और हरियाणा में फसल प्रारूप अत्यधिक रूप से गेहूँ और चावल की खेती की ओर झुका हुआ है।
कारण (R) : सरकार द्वारा न्यूनतम समर्थन मूल्य पर सुनिश्चित खरीद ने किसानों को इन विशिष्ट फसलों की खेती के लिए अत्यधिक प्रोत्साहित किया है।
उपर्युक्त कथनों के संदर्भ में, सही विकल्प का चयन कीजिए:
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है परंतु कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है परंतु कारण (R) सही है।

53. यद्यपि अधिकांश फसलों के लिए एमएसपी की घोषणा की जाती है, गन्ने का मूल्य निर्धारण एक अलग तंत्र द्वारा नियंत्रित होता है। गन्ने के लिए केंद्र सरकार द्वारा निर्धारित वैधानिक मूल्य को क्या कहा जाता है?
(A) राज्य परामर्शित मूल्य तंत्र
(B) सुनिश्चित खरीद मूल्य प्रणाली
(C) उचित और लाभकारी मूल्य (एफ.आर.पी.)
(D) आधारभूत व्यावसायिक मूल्य मानक

54. राष्ट्रीय कृषि बाजार (ई-नाम) प्लेटफॉर्म का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?
(A) सीमांत किसानों को सीधे रियायती उच्च उपज वाले बीज और रासायनिक उर्वरक प्रदान करना।
(B) कृषि उपज मंडी समितियों (एपीएमसी) को एक एकीकृत राष्ट्रीय कृषि बाजार से जोड़ना।
(C) विदेशी बाजारों में अधिशेष भारतीय कृषि उपज के सीधे निर्यात की सुविधा प्रदान करना।
(D) ट्रैक्टरों और आधुनिक कृषि मशीनों के खुदरा मूल्य निर्धारण को विनियमित और मानकीकृत करना।

55. भारत में कृषि विपणन को पारंपरिक रूप से एपीएमसी अधिनियमों के माध्यम से राज्य सरकारों द्वारा विनियमित किया जाता रहा है। एपीएमसी (APMC) का पूर्ण रूप क्या है?
(A) एग्रीकल्चरल प्रोडक्ट्स मैन्युफैक्चरिंग कॉरपोरेशन
(B) एग्रो-प्रोसेसिंग एंड मार्केटिंग काउंसिल
(C) एग्रेरियन प्राइजिंग एंड मैनेजमेंट कमीशन
(D) एग्रीकल्चरल प्रोड्यूस मार्केट कमेटी (कृषि उपज बाजार समिति)

56. निम्नलिखित में से किसे भारत में पारंपरिक कृषि विपणन प्रणाली में एक बड़ी बाधा माना जाता है?
(A) बिचौलियों की एक लंबी श्रृंखला जो उपभोक्ता मूल्य में किसान के हिस्से को कम करती है।
(B) जटिल इलेक्ट्रॉनिक ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म और ऑनलाइन नीलामी तंत्र पर अत्यधिक निर्भरता।
(C) सीधे खेत के स्तर पर शहरी अंतिम उपभोक्ताओं द्वारा सीधी खरीद।
(D) राज्यों में भौतिक बाजार प्रांगणों और विनियमित भंडारण अवसंरचना का पूर्ण अभाव।

57. भारत की कृषि जनगणना के अनुसार, देश में अधिकांश जोतें किस श्रेणी की हैं?
(A) बड़ी (10 हेक्टेयर और उससे अधिक)
(B) मध्यम (4 से 10 हेक्टेयर)
(C) अर्ध-मध्यम (2 से 4 हेक्टेयर)
(D) सीमांत (1 हेक्टेयर से कम)

58. कृषि जोतों का अत्यधिक विखंडन भारतीय कृषि को किस प्रकार नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है?
(A) यह आधुनिक यांत्रिकीकरण और बड़े पैमाने पर सिंचाई को आर्थिक रूप से अव्यवहारिक बनाता है।
(B) यह कुछ धनी कॉर्पोरेट किसानों के हाथों में उपजाऊ भूमि के अत्यधिक संकेंद्रण की ओर ले जाता है।
(C) यह आवश्यक खाद्यान्नों के निर्यात मूल्यांकन और अंतर्राष्ट्रीय मूल्य निर्धारण को कृत्रिम रूप से बढ़ाता है।
(D) यह छोटे किसानों को स्वतः ही प्रमाणित जैविक वाणिज्यिक कृषि में स्थानांतरित करता है।

59. कृषि भूमि के निरंतर विखंडन से उत्पन्न चुनौतियों से निपटने के लिए नीति निर्माताओं द्वारा निम्नलिखित में से किस रणनीति की सर्वाधिक वकालत की जाती है?
(A) विखंडित भूमि को बंजर छोड़ने के लिए ग्रामीण युवाओं के बीच तेजी से शहरी प्रवास को प्रोत्साहित करना।
(B) पारिवारिक कृषि संपत्ति के कानूनी विभाजन और उत्तराधिकार पर पूर्ण प्रतिबंध लगाना।
(C) सभी सीमांत कृषि फार्मों को औद्योगिक विशेष आर्थिक क्षेत्रों में परिवर्तित करना।
(D) सहकारी खेती और किसान उत्पादक संगठनों (एफ.पी.ओ.) को बढ़ावा देना।

60. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर का चयन कीजिए।
सूची I : (मानसून पूर्व बौछारें)
P. आम्र वर्षा
Q. चेरी ब्लॉसम / फूलों वाली बौछार
R. नार्वेस्टर / कालबैशाखी
S. लू
सूची II : (संबंधित राज्य/प्रभाव)
1. पश्चिम बंगाल (तीव्र अंधड़, फिर भी जूट/चावल के लिए सहायक)
2. केरल (आमों को शीघ्र पकने में सहायता करती है)

Click Here to Buy book on Amazon

3. कर्नाटक (कॉफी के फूलों के लिए लाभदायक)
4. उत्तरी मैदान (गर्म शुष्क हवा, तीव्र होने पर फसलों के लिए हानिकारक)

(A) P-2, Q-3, R-1, S-4
(B) P-3, Q-2, R-4, S-1
(C) P-2, Q-1, R-3, S-4
(D) P-1, Q-3, R-2, S-4

61. भारत में निवल बोए गए क्षेत्र का लगभग कितना प्रतिशत भाग वर्षा आधारित है और दक्षिण-पश्चिम मानसून पर अत्यधिक निर्भर है?
(A) 10-15%
(B) 25-30%
(C) 50-55%
(D) 80-85%

62. निम्नलिखित में से कौन-सी जलवायु परिघटना सामान्यतः कमजोर मानसूनी वर्षा और भारतीय कृषि में सूखे जैसी परिस्थितियों से जुड़ी है?
(A) ला नीना
(B) हिंद महासागर द्विध्रुव (सकारात्मक चरण)
(C) मैडेन-जूलियन दोलन
(D) अल नीनो

63. भारत में निम्नलिखित में से किस तिलहनी फसल के उत्पादन में राजस्थान का एकाधिकार/प्रभुत्व है?
(A) रेपसीड और सरसों
(B) मूंगफली
(C) सूरजमुखी
(D) नारियल

64. भारतीय कृषि के इतिहास में 'पीली क्रांति' किसके उत्पादन में तीव्र वृद्धि से जुड़ी है?
(A) दलहन फसलें
(B) तिलहन
(C) जूट
(D) मक्का

65. भारत में तिलहन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. मूंगफली मुख्य रूप से एक खरीफ फसल है।
II. सरसों मुख्य रूप से एक रबी फसल है।
III. भारत तिलहन का बड़ा उत्पादक है, फिर भी बड़ी मात्रा में खाद्य तेल का आयात करता है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

66. सोयाबीन भारत में तेजी से एक प्रमुख तिलहनी फसल के रूप में उभरा है। किस राज्य को पारंपरिक रूप से भारत का 'सोयाबीन राज्य' कहा जाता है?
(A) मध्य प्रदेश
(B) महाराष्ट्र
(C) राजस्थान
(D) गुजरात

67. अधिकांश दालें वायुमंडल से नाइट्रोजन का स्थिरीकरण करके मृदा की उर्वरता को पुनर्स्थापित करने में सहायता करती हैं। निम्नलिखित में से कौन-सी एक अपवाद है, जो अपनी फसल अवधि के दौरान इस प्राथमिक नाइट्रोजन-स्थिरीकरण के बिना उगती है?
(A) मूंग
(B) उड़द
(C) अरहर (तुर)
(D) मसूर

NODIA

68. वैश्विक दलहन अर्थव्यवस्था में भारत की स्थिति अद्वितीय है। निम्नलिखित में से कौन-सा कथन इस स्थिति का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) भारत सबसे बड़ा उत्पादक है परंतु वैश्विक स्तर पर दालों का सबसे छोटा उपभोक्ता है।
(B) भारत पूर्णतः विदेशी आयात पर निर्भर है और घरेलू स्तर पर लगभग कोई दाल उत्पादित नहीं करता है।
(C) भारत एक सीमांत दाल उत्पादक है परंतु सबसे बड़े वैश्विक निर्यातक का स्थान रखता है।
(D) भारत दालों का सबसे बड़ा उत्पादक, उपभोक्ता और आयातकर्ता है।

69. दालें विविध जलवायु परिस्थितियों के लिए अत्यधिक अनुकूल होती हैं। सीमित सिंचाई सुविधाओं वाले क्षेत्रों में कौन-सी विशेषता इन्हें एक पसंदीदा फसल बनाती है?
(A) इन्हें निरंतर जलभराव और खड़े जल की आवश्यकता होती है।
(B) ये सीधे सूर्य के प्रकाश के संपर्क के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होती हैं।
(C) इन्हें कम नमी की आवश्यकता होती है और ये शुष्क परिस्थितियों में भी जीवित रहती हैं।
(D) इन्हें केवल अत्यधिक लवणीय तटीय मृदा पारिस्थितिकी तंत्र में ही उगाया जा सकता है।

70. भारत में शीर्ष तीन दाल उत्पादक राज्यों (हाल की सामान्य प्रवृत्तियों के अनुसार) का सही क्रम चुनिए।
(A) मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान
(B) राजस्थान, पंजाब, हरियाणा
(C) उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल
(D) महाराष्ट्र, गुजरात, कर्नाटक

71. भारत में बागवानी फसलों (फल, सब्जियाँ, मसाले आदि) के उत्पादन में तीव्र वृद्धि की अवधि को क्या कहा जाता है?
(A) रजत क्रांति

(B) गोल क्रांति
(C) गुलाबी क्रांति
(D) स्वर्ण क्रांति

72. बागवानी भारतीय कृषि का एक महत्वपूर्ण घटक बन गई है। भारतीय बागवानी के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सटीक है?
(A) बागवानी फसलें मुख्य खाद्यान्न फसलों की तुलना में प्रति इकाई क्षेत्र अधिक आय प्रदान करती हैं।
(B) भारत चीन को पीछे छोड़ते हुए फलों और सब्जियों का सबसे बड़ा वैश्विक उत्पादक है।
(C) भारत के कुल कृषि सकल मूल्य वर्धन में बागवानी क्षेत्र का योगदान 5% से कम है।
(D) बागवानी की खेती विशेष रूप से ठंडे हिमालयी पर्वतीय क्षेत्रों तक ही सीमित है।

73. भारत में कौन-सा राज्य पारंपरिक रूप से मसालों का प्रमुख उत्पादक है, जिसे अक्सर 'भारत का मसाला उद्यान' कहा जाता है?
(A) असम (B) जम्मू और कश्मीर
(C) केरल (D) हिमाचल प्रदेश

74. एम.आई.डी.एच., जो कि बागवानी क्षेत्र के समग्र विकास के उद्देश्य से एक केंद्र प्रायोजित योजना है, का पूर्ण रूप क्या है?
(A) मिशन फॉर इंटीग्रेटेड डेवलपमेंट ऑफ हॉर्टिकल्चर
(B) मैनेजमेंट इनिशिएटिव फॉर डोमेस्टिक हॉर्टिकल्चर
(C) मिनिस्ट्रीज इन्वेस्टमेंट इन डाइवर्सिफाइड हॉर्टिकल्चर
(D) मैकेनिज्म फॉर इंटरनेशनल डिलीवरी ऑफ हॉर्टिकल्चर

75. कृषि उत्पादन में, पश्चिम बंगाल का निम्नलिखित में से किस प्राकृतिक रेशे के उत्पादन में स्पष्ट वर्चस्व है?
(A) कपास (B) रेशम
(C) कॉयर (D) जूट

76. राजस्थान निम्नलिखित में से किस व्यावसायिक फसल के राष्ट्रीय उत्पादन में अत्यधिक (70% से अधिक) योगदान देता है, जिसका उपयोग बड़े पैमाने पर औद्योगिक गोंद उत्पादन में किया जाता है?
(A) अरंडी (B) ग्वार
(C) ईसबगोल (D) धनिया

77. भारत में ज्वार जैसे मोटे अनाजों के उत्पादन में कौन-सा राज्य अग्रणी है?
(A) पंजाब
(B) पश्चिम बंगाल
(C) महाराष्ट्र
(D) ओडिशा

78. भारत में फसल और उनके प्रमुख उत्पादक राज्यों के निम्नलिखित संयोजनों पर विचार कीजिए:
I. सोयाबीन - मध्य प्रदेश
II. कपास - गुजरात
III. बाजरा - राजस्थान
IV. कॉफी - कर्नाटक
उपर्युक्त में से कौन-सा/से संयोजन सही है/हैं?
(A) I, II और III
(B) II, III और IV
(C) I, III और IV
(D) I, II, III और IV

79. भारत सरकार पी.के.वी.वाई. नामक योजना के माध्यम से जैविक खेती को बढ़ावा देती है। पी.के.वी.वाई. का पूर्ण रुप क्या है?
(A) परंपरागत कृषि विकास योजना
(B) प्रधानमंत्री कृषि विकास योजना
(C) पूर्ण किसान वृद्धि योजना
(D) पंचायत कृषि व्यापार योजना

80. भारत के किस राज्य को विश्व का प्रथम पूर्णतः जैविक राज्य घोषित होने का गौरव प्राप्त है?
(A) केरल
(B) सिक्किम
(C) उत्तराखंड
(D) हिमाचल प्रदेश

81. जैविक खेती में, संश्लेषित रासायनिक उर्वरकों के स्थान पर मृदा की उर्वरता बढ़ाने के लिए निम्नलिखित में से किसका उपयोग किया जाता है?
(A) यूरिया और डी.ए.पी. जैसे संश्लेषित रासायनिक इनपुट
(B) राइजोबियम जैसे जैव-उर्वरक
(C) प्रयोगशाला में निर्मित आनुवंशिक रूप से संशोधित सूक्ष्मजीव
(D) ब्रॉड-स्पेक्ट्रम ऑर्गनोक्लोरीन रासायनिक कीटनाशक

82. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A) : जैविक खेती को अक्सर पारंपरिक खेती की तुलना में प्रारंभिक संक्रमण अवधि के दौरान प्रति हेक्टेयर फसल की कम उपज की चुनौती का सामना करना पड़ता है।
कारण (R) : संश्लेषित उर्वरकों के उपयोग की समाप्ति के पश्चात् मृदा को अपनी प्राकृतिक जैविक गतिविधि और उर्वरता पुनः प्राप्त करने में समय लगता है।
उपर्युक्त कथनों के संदर्भ में, सही विकल्प का चयन कीजिए:
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है परंतु कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है परंतु कारण (R) सही है।

83. कृषि में 'फसल सघनता' (क्रॉपिंग इंटेंसिटी) शब्द का तात्पर्य है:
(A) उपयोग किए गए सिंचाई जल की कुल मात्रा का कुल भूमि क्षेत्र से अनुपात।
(B) कृषि योग्य भूमि के प्रति हेक्टेयर नियोजित कृषि श्रमिकों

Downloaded from www.pdf.tube

की औसत संख्या।
(C) सकल फसल क्षेत्र का निवल बोए गए क्षेत्र से अनुपात।
(D) उत्पादित कृषि फसल की प्रति इकाई प्रयुक्त रासायनिक उर्वरकों की मात्रा।

84. 'कर्तन एवं दहन' कृषि, जो जीवन निर्वाह कृषि का एक प्रारंभिक रूप है, विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग नामों से जानी जाती है। भारत के उत्तर-पूर्वी राज्यों में इसे किस नाम से जाना जाता है?
(A) मिल्पा खेती (B) पोडू खेती
(C) कुमारी प्रणाली (D) झूमिंग

85. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर का चयन कीजिए।
सूची I : (कृषि क्रांति)
P. नीली क्रांति
Q. श्वेत क्रांति
R. रजत क्रांति
S. गोल क्रांति
सूची II : (संबंधित उत्पादन)
1. दुग्ध / डेयरी
2. मत्स्य पालन
3. आलू
4. अंडा / कुक्कुट
(A) P-2, Q-1, R-4, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-2, Q-1, R-3, S-4
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

86. 'मिश्रित खेती' और 'मिश्रित फसल' के बीच मौलिक अंतर क्या है?
(A) मिश्रित खेती में एकांतर पंक्तियों में एक साथ दो फसलें उगाई जाती हैं, जबकि मिश्रित फसल में फसलों का व्यवस्थित मौसमी चक्रण शामिल होता है।
(B) मिश्रित खेती फसल उत्पादन को पशुपालन के साथ एकीकृत करती है, जबकि मिश्रित फसल में एक साथ कई फसलें उगाई जाती हैं।
(C) मिश्रित खेती केवल बारहमासी सिंचित भूमि पर की जाती है, जबकि मिश्रित फसल पूरी तरह से वर्षा आधारित शुष्क भूमि क्षेत्रों तक सीमित है।
(D) दोनों के बीच कोई वैज्ञानिक अंतर नहीं है; दोनों शब्द एक-दूसरे के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं।

87. भारतीय कृषि की संरचनात्मक विशेषताओं के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(A) संपूर्ण भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि रोजगार का प्राथमिक और सबसे बड़ा प्रत्यक्ष स्रोत बनी हुई है।
(B) भारतीय कृषि फसल सिंचाई के लिए मौसमी दक्षिण-पश्चिम मानसून पर अत्यधिक निर्भर है।
(C) भारत में परिचालन योग्य कृषि जोतों का औसत आकार समय के साथ लगातार घट रहा है।
(D) पिछले पांच दशकों में भारत के सकल मूल्य वर्धन (जीवीए) में कृषि का हिस्सा लगातार बढ़ा है।

88. खेत से उपभोक्ता तक कृषि विपणन के मानक चरणों को सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. प्राथमिक प्रसंस्करण और ग्रेडिंग
2. खेत के स्तर पर कटाई और एकत्रीकरण
3. द्वितीयक बाजारों / कृषि उपज मंडियों तक परिवहन
4. अंतिम उपभोक्ता को खुदरा बिक्री
सही विकल्प का चयन कीजिए:
(A) 2, 1, 3, 4
(B) 1, 2, 4, 3
(C) 2, 3, 1, 4
(D) 3, 2, 1, 4

89. यदि उत्तर भारत में मार्च के महीने में अचानक, बेमौसम लू तापमान में अत्यधिक वृद्धि कर देती है, तो निम्नलिखित में से कौन-सा फसल चरण सबसे सीधे और नकारात्मक रूप से प्रभावित होता है?
(A) मानसूनी खरीफ फसलों का प्रारंभिक अंकुरण और पौध स्थापना चरण।
(B) जायद तरबूज की फसल का नाजुक पुष्पन और शुरुआती फल लगने का चरण।
(C) रबी गेहूँ का दाना भरने का चरण, जिससे दाने सिकुड़ जाते हैं।
(D) ग्रीष्मकालीन धान की फसलों का शुरुआती रोपण और जड़ स्थापना चरण।

90. 'क्रॉप कटिंग एक्सपेरिमेंट' कार्यप्रणाली का उपयोग करके भारत में फसल उत्पादन और पूर्वानुमान के अनुमान के लिए निम्नलिखित में से कौन-सा निकाय उत्तरदायी है?
(A) अर्थशास्त्र एवं सांख्यिकी निदेशालय
(B) राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण कार्यालय, सांख्यिकी मंत्रालय
(C) भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली
(D) भारतीय रिजर्व बैंक, कृषि प्रभाग

www.nodia.in
NODIA

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) 15
योजना आयोग ने कृषि नियोजन के उद्देश्य से भारत की क्षेत्रीय विविधताओं का अध्ययन कर पूरे देश को 15 कृषि-जलवायु क्षेत्रों में वर्गीकृत किया है। यह वर्गीकरण वर्षा, तापमान, मृदा के प्रकार, जल संसाधनों की उपलब्धता तथा भू-आकृति जैसी पारिस्थितिकीय विशेषताओं पर आधारित है। इसका मुख्य उद्देश्य क्षेत्रीय संसाधनों का कुशल उपयोग करना और कृषि उत्पादकता में सतत वृद्धि सुनिश्चित करना है।

2. (C) 10
राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान परियोजना के अंतर्गत भारत के विभिन्न राज्यों को स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार सूक्ष्म कृषि-जलवायु क्षेत्रों में बांटा गया है। इस परियोजना के दिशा-निर्देशों के तहत राजस्थान की विविध भौगोलिक परिस्थितियों, मृदा के प्रकारों और वर्षा के स्तर को ध्यान में रखते हुए राज्य को 10 कृषि-जलवायु क्षेत्रों में विभाजित किया गया है। यह विभाजन स्थान-विशिष्ट कृषि रणनीतियों और अनुसंधान को बढ़ावा देने हेतु किया गया है।

3. (C) पश्चिमी शुष्क क्षेत्र
भारत का पश्चिमी शुष्क क्षेत्र मुख्य रूप से राजस्थान के थार मरुस्थल और पश्चिमी जिलों में फैला हुआ है। इस क्षेत्र की जलवायु अत्यधिक शुष्क है, जहाँ वार्षिक वर्षा अत्यंत कम होती है और ग्रीष्मकाल में तापमान अत्यधिक उच्च रहता है। प्रतिकूल जलवायु और बलुई मृदा की उपस्थिति के कारण यहाँ बाजरा, ग्वार तथा मोठ जैसी कम जल की आवश्यकता वाली शुष्क-सहनशील फसलों की खेती प्रमुखता से की जाती है।

4. (B) केवल I और III
योजना आयोग द्वारा भारत को कृषि-जलवायु क्षेत्रों में वर्गीकृत करने का आधार मुख्य रूप से मृदा प्रकार, वर्षा, तापमान और जल संसाधन जैसे भौगोलिक कारक हैं। पश्चिमी शुष्क क्षेत्र के अंतर्गत मुख्यतः राजस्थान का पश्चिमी मरुस्थलीय भाग शामिल है। राजस्थान एक विशाल और भौगोलिक रूप से विविध राज्य है, इसलिए यह किसी एक कृषि-जलवायु क्षेत्र में न आकर योजना आयोग के अनुसार विभिन्न क्षेत्रों में विभाजित है।

5. (A) वर्धन काल के दौरान 10-15°C तापमान और 50-75 सेमी वर्षा
गेहूँ एक प्रमुख रबी फसल है जिसके सफल उत्पादन हेतु ठंडी जलवायु की आवश्यकता होती है। फसल की बुवाई तथा वर्धन काल के दौरान 10-15°C का तापमान अत्यंत उपयुक्त माना जाता है। इसके साथ ही वर्धन काल के दौरान समान रूप से वितरित 50-75 सेमी वार्षिक वर्षा और पकने के समय खिली हुई धूप गेहूँ की अच्छी उपज के लिए आवश्यक परिस्थितियाँ हैं।

6. (B) पंजाब-हरियाणा के मैदान
पंजाब और हरियाणा के सतलुज-यमुना मैदानी क्षेत्रों को भारत में पारंपरिक रूप से 'गेहूँ का कटोरा' कहा जाता है। यह क्षेत्र अत्यंत उपजाऊ जलोढ़ मृदा, विस्तृत नहरी एवं नलकूप सिंचाई सुविधाओं और आधुनिक कृषि प्रौद्योगिकियों के प्रयोग के लिए प्रसिद्ध है। इन अनुकूल कारकों के कारण यहाँ प्रति हेक्टेयर गेहूँ की उत्पादकता और कुल उत्पादन राष्ट्रीय औसत से अत्यधिक ऊंचा बना हुआ है।

7. (D) श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ जिले
राजस्थान के उत्तरी भाग में स्थित श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ जिले राज्य के प्रमुख गेहूँ उत्पादक क्षेत्र हैं। इंदिरा गांधी नहर और भाखड़ा नांगल नहर प्रणाली से निरंतर जल की उपलब्धता ने इन शुष्क क्षेत्रों को अत्यधिक उपजाऊ कृषि भूमि में परिवर्तित कर दिया है। पर्याप्त सिंचाई सुविधाओं और अनुकूल जलोढ़-बलुई मृदा के कारण यहाँ गेहूँ की पैदावार प्रति हेक्टेयर बहुत अधिक होती है।

8. (B) III और IV
गेहूँ रबी की फसल है जिसे शीतकाल में अक्टूबर से दिसंबर के मध्य बोया जाता है, न कि दक्षिण-पश्चिम मानसून के आगमन पर। गेहूँ के पुष्पन और दाना बनने की अवस्था में तीव्र पाला अत्यधिक हानिकारक होता है क्योंकि इससे बालियों में दाना नहीं बन पाता। इसके विपरीत, वर्धन काल में 50-75 सेमी वर्षा और पकते समय खिली धूप इसकी इष्टतम उपज के लिए आवश्यक होती है।

9. (C) उत्तर प्रदेश
उत्तर प्रदेश कुल उत्पादन मात्रा के आधार पर लगातार भारत का सबसे बड़ा गेहूँ उत्पादक राज्य रहा है। राज्य का विशाल भौगोलिक क्षेत्रफल, गंगा-यमुना का उपजाऊ मैदानी भाग, प्रचुर जलोढ़ मृदा और विस्तृत सिंचाई नेटवर्क इसे उच्च उत्पादन प्राप्त करने में सहायता करते हैं। यद्यपि प्रति हेक्टेयर उत्पादकता में पंजाब आगे है, किंतु कुल उत्पादन के मामले में उत्तर प्रदेश प्रथम स्थान पर है।

10. (A) गेहूँ और चावल
1960 के दशक के उत्तरार्ध में शुरू की गई हरित क्रांति की सबसे बड़ी सफलता गेहूँ और चावल के उत्पादन में देखी गई। उच्च उपज देने वाले बीजों के प्रयोग, रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों और उन्नत सिंचाई प्रणालियों के संयुक्त उपयोग से इन दोनों खाद्यान्नों के उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि हुई। इस क्रांति ने भारत को खाद्यान्न संकट से उबारकर आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

Click Here to Buy book on Flipkart

11. (D) खरीफ
भारत में चावल को मुख्य रूप से खरीफ फसल के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। इसकी बुवाई दक्षिण-पश्चिम मानसून के आगमन के साथ जून-जुलाई में की जाती है और कटाई सितंबर-अक्टूबर में होती है। चावल की खेती के लिए उच्च तापमान, उच्च आर्द्रता और प्रचुर मात्रा में जल की आवश्यकता होती है, जो मानसूनी मौसम के दौरान स्वाभाविक रूप से उपलब्ध होती है।

12. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
भारत के तटीय क्षेत्रों और उत्तर-पूर्वी मैदानी भागों में अनुकूल भौगोलिक परिस्थितियों के कारण मुख्य रूप से चावल की खेती की जाती है। चावल एक उष्णकटिबंधीय फसल है जिसे उगाने के लिए 25°C से अधिक तापमान, उच्च आर्द्रता और 100 सेमी से अधिक वार्षिक वर्षा की आवश्यकता होती है। यह प्रचुर वर्षा और आर्द्रता तटीय एवं उत्तर-पूर्वी भारत में प्राकृतिक रूप से उपलब्ध रहती है।

13. (C) औस, अमन, बोरो
भारत के पूर्वी और उत्तर-पूर्वी राज्यों जैसे असम, पश्चिम बंगाल और ओडिशा में अनुकूल जलवायु तथा प्रचुर जल संसाधनों के कारण एक ही कृषि वर्ष में धान की तीन फसलें उगाई जाती हैं। इन तीन फसलों को स्थानीय रूप से औस, अमन और बोरो कहा जाता है। यह बहु-फसली चक्र इन राज्यों में चावल के उच्च वार्षिक उत्पादन और खाद्य सुरक्षा को सुनिश्चित करता है।

14. (D) पश्चिम बंगाल
पश्चिम बंगाल भारत का सबसे बड़ा चावल उत्पादक राज्य है। बंगाल की खाड़ी के निकट स्थित होने के कारण इसके तटीय और डेल्टाई क्षेत्र अक्सर चक्रवाती तूफानों से प्रभावित होते हैं। इसके बावजूद, गंगा के उपजाऊ डेल्टा, प्रचुर वर्षा और अनुकूल समशीतोष्ण-उष्णकटिबंधीय जलवायु के कारण यहाँ वर्ष में तीन बार धान की खेती की जाती है, जिससे यहाँ चावल का उत्पादन सर्वाधिक होता है।

15. (A) केवल I और II
भारत विश्व स्तर पर चावल का सबसे बड़ा निर्यातक देश है और देश के भीतर कुल चावल उत्पादन में पश्चिम बंगाल अग्रिम स्थान पर है। हालाँकि, प्रति हेक्टेयर चावल की उत्पादकता के मामले में पंजाब राज्य शीर्ष पर है, न कि ओडिशा। पंजाब में उन्नत सिंचाई सुविधाओं और उर्वरकों के कुशल उपयोग के कारण प्रति हेक्टेयर उपज बहुत अधिक प्राप्त होती है।

16. (B) यह फसल की उपज में वृद्धि करते हुए जल की आवश्यकता और बीज दर को कम करती है।
सघन चावल प्रणाली कृषि की एक अभिनव पद्धति है जो जल और बीजों की खपत को काफी कम करती है। इस प्रणाली में पौधों के बीच पर्याप्त दूरी रखी जाती है और खेत को निरंतर जलमग्न रखने के स्थान पर केवल मृदा में नमी बनाए रखी जाती है। इससे पौधों की जड़ों का समुचित विकास होता है, जिससे कम संसाधनों में भी फसल की उपज अधिक प्राप्त होती है।

17. (C) 210 दिन
कपास एक उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय खरीफ फसल है जिसकी समुचित वृद्धि और डोडे के पूर्ण विकास के लिए कम से कम 210 पाला-रहित दिनों की आवश्यकता होती है। पाला कपास के पौधों और खिलते हुए डोडों को भारी नुकसान पहुँचाता है। इसके अतिरिक्त, इसकी इष्टतम उपज प्राप्त करने के लिए खिली हुई धूप, उच्च तापमान और हल्की वर्षा या सिंचित वातावरण की आवश्यकता होती है।

18. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
भारत में फसलों का प्रादेशिक वितरण उनकी अनुकूल जलवायु पर आधारित है। पश्चिम बंगाल अपनी आर्द्र डेल्टाई जलवायु के कारण जूट का सबसे बड़ा उत्पादक है, जबकि गुजरात की बलुई-दोमट मृदा मूंगफली उत्पादन में प्रथम स्थान रखती है। उत्तर प्रदेश उपजाऊ जलोढ़ मैदानों के कारण गन्ने का अग्रणी उत्पादक है और केरल अपनी अत्यधिक वर्षा के कारण रबर का प्रमुख उत्पादक है।

19. (C) कपास
दक्कन पठार क्षेत्र की काली मृदा को 'रेगुर मृदा' या 'काली सूती मृदा' कहा जाता है। यह मृदा ज्वालामुखी बेसाल्ट चट्टानों के क्षरण से बनी है और इसमें नमी धारण करने की असाधारण क्षमता होती है। इसमें कैल्शियम कार्बोनेट, मैग्नीशियम और पोटाश प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं, जो कपास के पौधों की जड़ों के विकास और डोडे के पकने के लिए सर्वाधिक उपयुक्त हैं।

20. (D) प्रायद्वीपीय भारत में उच्च सुक्रोज मात्रा वाले गन्ने का उत्पादन होता है और यहाँ पेराई का मौसम अधिक लंबा होता है।
उत्तर भारत की तुलना में दक्षिण और पश्चिम भारत में चीनी उद्योग तेजी से स्थानांतरित हो रहा है। प्रायद्वीपीय भारत की समुद्री जलवायु के कारण यहाँ उत्पादित गन्ने में सुक्रोज की मात्रा अधिक होती है। इसके अलावा, दक्षिण भारत की आर्द्र जलवायु के कारण शक्कर मिलों में पेराई का मौसम अधिक लंबा चलता है और यहाँ की सहकारी समितियां भी अधिक कुशल और सफल हैं।

21. (C) फसल के पकने के चरण में तीव्र पाला
गन्ना एक लंबी अवधि की उष्णकटिबंधीय फसल है जिसे पकने के दौरान सूखी, ठंडी और पाला-रहित जलवायु की आवश्यकता होती है। फसल के पकने की अवस्था में तीव्र पाला गन्ने में मौजूद शर्करा (सुक्रोज) की मात्रा को गंभीर रूप से नष्ट कर देता है और फसल की वृद्धि रोक देता है। इसलिए तीव्र पाला गन्ने की खेती के लिए अत्यंत प्रतिकूल परिस्थिति माना जाता है।

22. (A) I, II और III
गन्ना उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय दोनों क्षेत्रों में उगाई जाने वाली फसल है, जिसके लिए 21°C से 27°C तापमान की आवश्यकता होती है। उत्तर प्रदेश भारत में गन्ने के कुल उत्पादन और क्षेत्रफल में प्रथम स्थान रखता है। वैश्विक स्तर पर ब्राजील गन्ने का सबसे बड़ा उत्पादक देश है, जबकि

Downloaded from www.pdf.tube

भारत दूसरे स्थान पर आता है, जिससे भारत का पहला स्थान होने का दावा असत्य है।

23. (D) जल का जमाव चाय की जड़ों के लिए हानिकारक होता है।
चाय के पौधों को समृद्ध, सुअपवाहित दोमट मृदा और प्रचुर वर्षा की आवश्यकता होती है। हालाँकि, यदि जड़ों के पास जल का जमाव हो जाए, तो चाय के नाजुक पौधे गलने लगते हैं और सड़ जाते हैं। यही कारण है कि चाय के बागान ढलाऊ पर्वतीय क्षेत्रों पर स्थापित किए जाते हैं, ताकि वर्षा का अतिरिक्त जल बिना रुके आसानी से बहकर निकल सके।

24. (A) बारंबार, समान रूप से वितरित बौछारें
चाय के पौधों से वर्ष भर निरंतर कोमल पत्तियों की प्राप्ति के लिए समान रूप से वितरित वर्षा की हल्की बौछारें अत्यंत आवश्यक होती हैं। यह निरंतर नमी पत्तियों के नए फुटाव और उनकी कोमलता को बनाए रखती है। लंबी शुष्क अवधि या अत्यधिक उच्च तापमान पत्तियों को कठोर और शुष्क बना देता है, जिससे चाय की गुणवत्ता और उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

25. (A) असम, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, केरल
भारत में कुल चाय उत्पादन का सबसे बड़ा भाग पूर्वोत्तर और दक्षिणी राज्यों से आता है। असम देश का सबसे बड़ा चाय उत्पादक राज्य है, जिसके बाद दार्जिलिंग और डुआर्स क्षेत्रों के कारण पश्चिम बंगाल दूसरे स्थान पर आता है। दक्षिणी भारत में नीलगिरी की पहाड़ियों के कारण तमिलनाडु तीसरे और केरल चौथे स्थान पर स्थित है, जो इस अवरोही क्रम को सही ठहराता है।

26. (A) कॉफी
भारत में कॉफी की खेती की ऐतिहासिक शुरुआत कर्नाटक की बाबा बूदन पहाड़ियों से मानी जाती है। 17वीं शताब्दी में संत बाबा बूदन यमन से कॉफी के सात बीज लाए थे और उन्होंने इन्हें चिकमगलूर की पहाड़ियों में रोपा था। आज भी कर्नाटक का यह पहाड़ी क्षेत्र भारत के कुल कॉफी उत्पादन में सबसे बड़ा योगदान देता है और कॉफी कृषि का केंद्र बना हुआ है।

27. (D) अरेबिका
भारत में उत्पादित अरेबिका किस्म की कॉफी अपनी विशिष्ट सुगंध और समृद्ध स्वाद के लिए विश्व भर में प्रसिद्ध है। प्रारंभ में यह किस्म यमन से भारत लाई गई थी और इसकी भारी मांग अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में रहती है। यद्यपि भारत रोबस्टा किस्म का भी उत्पादन करता है, किंतु उच्च गुणवत्ता और व्यावसायिक मूल्य के दृष्टिकोण से अरेबिका किस्म को सबसे उत्कृष्ट स्थान प्राप्त है।

28. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
भारत में कॉफी की खेती मुख्य रूप से दोहरे स्तर वाले छायादार वृक्षों के छत्र के नीचे की जाती है। कॉफी के पौधे सीधे प्रखर सूर्य के प्रकाश और उच्च तापमान के प्रति बहुत संवेदनशील होते हैं। यह ऊंचे छायादार वृक्ष न केवल तेज धूप और तेज हवाओं से नाजुक पौधों की सुरक्षा करते हैं, बल्कि मृदा में नमी बनाए रखने और तापमान संतुलित करने में भी मदद करते हैं।

29. (B) जून से सितंबर तक
भारत में खरीफ फसल का मौसम मुख्य रूप से दक्षिण-पश्चिम मानसूनी हवाओं के आगमन से जुड़ा हुआ है। इसकी शुरुआत जून में पहली वर्षा के साथ होती है और फसलें सितंबर-अक्टूबर के दौरान काटी जाती हैं। इस मौसम में उगाई जाने वाली प्रमुख फसलों में धान, मक्का, ज्वार, बाजरा, कपास और जूट शामिल हैं, जिन्हें अत्यधिक जल और उच्च तापमान की आवश्यकता होती है।

30. (D) जौ
उत्तर भारत में फसलों को मौसम के अनुसार वर्गीकृत किया जाता है। ज्वार, बाजरा और तुर (अरहर) मुख्य रूप से खरीफ मौसम की फसलें हैं, जिन्हें जून-जुलाई में बोया जाता है। इसके विपरीत, जौ एक प्रमुख रबी फसल है, जिसे सर्दियों की शुरुआत में अक्टूबर-नवंबर में बोया जाता है और वसंत ऋतु में काटा जाता है। इस प्रकार जौ मौसमी आधार पर अलग है।

NODIA

31. (A) राजस्थान
राजस्थान भारत में बाजरे का सबसे बड़ा उत्पादक राज्य है। बाजरा एक अत्यंत सहनशील फसल है जो कम उपजाऊ, बलुई मृदा और नाममात्र की वर्षा वाले क्षेत्रों में भी सरलता से पनप सकती है। राजस्थान की शुष्क एवं अर्ध-शुष्क जलवायु और कम जल संसाधनों वाले विस्तृत थार मरुस्थलीय भाग में बाजरे की खेती व्यापक पैमाने पर खाद्यान्न एवं चारे हेतु की जाती है।

32. (B) पश्चिमी विक्षोभ
उत्तर-पश्चिम भारत में शीतकाल के दौरान होने वाली वर्षा का मुख्य कारण भूमध्यसागरीय क्षेत्र से उत्पन्न होने वाले पश्चिमी विक्षोभ हैं। यह शीतोष्ण कटिबंधीय चक्रवात भारतीय उपमहाद्वीप में प्रवेश करके पंजाब, हरियाणा, राजस्थान और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में हल्की से मध्यम वर्षा करते हैं। स्थानीय भाषा में 'मावठ' कही जाने वाली यह वर्षा रबी फसलों, विशेषकर गेहूँ, के लिए अत्यंत लाभदायक होती है।

33. (B) सरसों
सरसों भारत के उत्तरी और उत्तर-पश्चिमी भागों में उगाई जाने वाली एक अत्यंत महत्वपूर्ण रबी तिलहनी फसल है। इसे अक्टूबर से नवंबर के मध्य कम तापमान में बोया जाता है और मार्च-अप्रैल में काटा जाता है। इसके विपरीत मक्का, मूंगफली और सोयाबीन मुख्य रूप से खरीफ मौसम की फसलें हैं, जिन्हें मानसूनी वर्षा के दौरान ग्रीष्मकाल में उगाया जाता है।

34. (B) अप्रैल से जून
रबी फसलों का उत्पादन चक्र शीतकाल से शुरु होकर ग्रीष्मकाल की शुरुआत तक चलता है। इन फसलों की बुवाई अक्टूबर से दिसंबर के महीनों में तापमान घटते ही की जाती है। संपूर्ण शीतकाल में वृद्धि करने के पश्चात जब ग्रीष्मकाल में तापमान बढ़ने लगता है, तब अप्रैल से जून के महीनों के मध्य इन फसलों की कटाई पूरी कर ली जाती है। गेहूँ और चना इसके मुख्य उदाहरण हैं।

35. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
फसलों का वर्गीकरण उनके उगाने के मौसम और व्यावसायिक उपयोग पर आधारित होता है। धान मानसूनी खरीफ मौसम की मुख्य खाद्यान्न फसल है, जबकि गेहूँ शीतकालीन रबी मौसम की खाद्यान्न फसल है। तरबूज रबी और खरीफ के बीच ग्रीष्मकाल में उगाई जाने वाली जायद फसल है, और गन्ना एक दीर्घकालिक व्यावसायिक नकदी फसल का प्रमुख उदाहरण है।

36. (D) मूंगफली
जायद का मौसम रबी और खरीफ के मध्य मार्च से जून तक चलने वाला एक अल्पकालिक ग्रीष्मकालीन फसल मौसम है। इस दौरान मुख्य रूप से तरबूज, खरबूजा, खीरा, ककड़ी और हरी चारा फसलें उगाई जाती हैं, जो तीव्र गर्मी को सहन कर सकती हैं। इसके विपरीत, मूंगफली एक प्रमुख खरीफ तिलहनी फसल है जिसे मानसूनी वर्षा के आगमन पर उगाया जाता है।

37. (C) सुनिश्चित सिंचाई सुविधाएं
जायद फसलें ग्रीष्मकाल के दौरान मार्च से जून के शुष्क महीनों में उगाई जाती हैं। इस अवधि में प्राकृतिक मानसूनी वर्षा का अभाव रहता है और तापमान अत्यधिक उच्च होता है। परिणाम स्वरूप, जायद फसलों के सफल उत्पादन के लिए पूरी तरह से नलकूपों, नहरों और कुओं से मिलने वाली सुनिश्चित सिंचाई सुविधाओं पर निर्भर रहना पड़ता है।

38. (B) केवल II
भारत में हरित क्रांति के जनक के रूप में वैज्ञानिक डॉ. एम. एस. स्वामीनाथन को जाना जाता है, जबकि डॉ. वर्गीज कुरियन दुग्ध क्रांति (ऑपरेशन फ्लड) के जनक थे। 1960 के दशक में शुरु हुई हरित क्रांति में उच्च उपज देने वाले बीजों के प्रयोग से खाद्यान्न उत्पादन बढ़ा, जो प्रारंभिक वर्षों में मुख्य रूप से पंजाब और हरियाणा में गेहूँ एवं चावल तक सीमित रहा था।

39. (D) भूजल स्तर में गिरावट
हरित क्रांति द्वारा अपनाई गई सघन कृषि पद्धतियों का एक गंभीर पर्यावरण दुष्प्रभाव भूजल का अत्यधिक दोहन है। उच्च उपज वाली किस्मों को प्रचुर सिंचाई की आवश्यकता थी, जिसके लिए नलकूपों से अंधाधुंध जल निकाला गया। इसके परिणामस्वरूप पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में भूजल स्तर में भारी गिरावट आई और मृदा में लवणता की समस्या उत्पन्न हुई।

40. (C) बिहार, ओडिशा और पश्चिम बंगाल
'पूर्वी भारत में हरित क्रांति लाना' पहल राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के तहत शुरु की गई एक लक्षित योजना है। इसका मुख्य उद्देश्य भारत के पूर्वी राज्यों जैसे बिहार, ओडिशा, पश्चिम बंगाल, असम और छत्तीसगढ़ में धान आधारित कृषि प्रणालियों की उत्पादकता को बढ़ाना है। यह क्षेत्र प्रचुर जल संसाधनों के बावजूद पारंपरिक रूप से कम कृषि उत्पादकता से ग्रस्त रहा था।

41. (C) लाभ प्राप्त करने के लिए मुख्य रूप से बाजार में बिक्री हेतु उगाई जाने वाली फसल।
'नकदी फसल' अथवा वाणिज्यिक फसल उस कृषि उपज को कहा जाता है जिसे किसान अपने पारिवारिक उपभोग के स्थान पर सीधे बाजार में बेचकर मौद्रिक लाभ कमाने के प्राथमिक उद्देश्य से उगाता है। कपास, गन्ना, जूट, चाय, कॉफी और तंबाकू नकदी फसलों के सर्वोत्कृष्ट उदाहरण हैं। यह फसलें कृषि आधारित उद्योगों के लिए कच्चे माल का प्रमुख स्रोत भी बनती हैं।

42. (A) मुख्य रूप से राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों के लिए फसलें उगाना।
कृषि के वाणिज्यीकरण से अभिप्राय कृषि उत्पादन के दृष्टिकोण में आए उस बदलाव से है, जहाँ खेती का मुख्य उद्देश्य केवल जीवन निर्वाह न होकर बाजारों के लिए उत्पादन करना बन जाता है। इसमें किसान ऐसी फसलों का चयन करते हैं जिनकी राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में अत्यधिक मांग होती है, ताकि कृषि को एक व्यावसायिक और लाभप्रद उद्यम के रूप में संचालित किया जा सके।

43. (D) पंजाब और हरियाणा जैसे क्षेत्रों में चावल
भारत में चावल पूर्वी और दक्षिणी राज्यों में आम लोगों का मुख्य जीवन-निर्वाह खाद्यान्न है। हालाँकि, पंजाब और हरियाणा जैसे उत्तर-पश्चिम राज्यों में जहाँ पारंपरिक रूप से चावल का सेवन कम किया जाता है, वहाँ इसे मुख्य रूप से एक व्यावसायिक नकदी फसल के रूप में उगाया जाता है। यहाँ उत्पादित चावल का अधिकांश हिस्सा अन्य राज्यों को बेचने अथवा निर्यात करने के लिए उपयोग होता है।

44. (B) यह सीधे जड़ क्षेत्र में जल पहुँचाती है, जिससे वाष्पीकरण और अपवाह कम होता है।
ड्रिप अथवा टपकन सिंचाई प्रणाली एक अत्यंत कुशल सूक्ष्म-सिंचाई तकनीक है। इसमें प्लास्टिक की नालियों द्वारा जल सीधे पौधों के जड़ क्षेत्र में बूंद-बूंद करके पहुँचाया जाता है। इससे मिट्टी से होने वाला वाष्पीकरण और सतह से बहने वाला अतिरिक्त जल व्यर्थ नहीं जाता, जिससे 60 से 70 प्रतिशत तक जल की बचत होती है और जल-संकट वाले क्षेत्रों में फसल वृद्धि सुनिश्चित होती है।

45. (B) केवल III
सूक्ष्म-सिंचाई से जल की दक्षता बढ़ती है और स्प्रिंकलर बलुई मृदा के लिए उपयुक्त है। राजस्थान में भूजल सिंचाई का मुख्य आधार है। हालाँकि, भारत में नहर सिंचाई मुख्य रूप से उत्तरी मैदानों में फैली हुई है, न कि प्रायद्वीपीय पठार पर। प्रायद्वीपीय भारत में कठोर चट्टानी धरातल के कारण नहर बनाना कठिन होता है, अतः वहाँ तालाब सिंचाई अधिक प्रचलित है।

46. (D) ड्रिप और स्प्रिंकलर सूक्ष्म-सिंचाई को बढ़ावा देना।
प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना का 'प्रति बूंद अधिक फसल' घटक खेत स्तर पर जल उपयोग दक्षता बढ़ाने पर केंद्रित है। इसके तहत पारंपरिक प्रवाह सिंचाई के स्थान पर आधुनिक ड्रिप और स्प्रिंकलर जैसी सूक्ष्म-सिंचाई प्रणालियों को अपनाने हेतु

Click Here to Buy book on Amazon

किसानों को प्रोत्साहन और सब्सिडी प्रदान की जाती है। इससे जल संसाधनों का संरक्षण होता है और फसलों की उत्पादकता में उल्लेखनीय वृद्धि होती है।

47. (A) भूमि के प्रति इकाई क्षेत्र में फसल का उत्पादन।
कृषि 'उपज' अथवा उत्पादकता का तात्पर्य किसी विशेष फसल के उस भौतिक उत्पादन से है जो भूमि के प्रति इकाई क्षेत्रफल से प्राप्त होता है। इसे आमतौर पर किलोग्राम प्रति हेक्टेयर या क्विंटल प्रति हेक्टेयर में मापा जाता है। उपज की मात्रा मृदा की उर्वरता, सिंचाई सुविधाओं, उन्नत बीजों, तकनीकी इनपुट और मौसम की अनुकूल परिस्थितियों पर निर्भर करती है।

48. (A) 1, 2, 3
गेहूँ की प्रति हेक्टेयर उत्पादकता के मामले में पंजाब भारत में शीर्ष स्थान पर है, जहाँ उन्नत सिंचाई तकनीक और गहन उर्वरक उपयोग के कारण सर्वाधिक उपज प्राप्त होती है। उत्तर प्रदेश दूसरे स्थान पर आता है जहाँ का विशाल उपजाऊ मैदानी क्षेत्र अच्छी उत्पादकता देता है, जबकि मध्य प्रदेश उत्पादकता में तीसरे स्थान पर है। अतः इनका सही अवरोही क्रम 1, 2, 3 है।

49. (B) उत्पादन काटी गई कुल फसल की मात्रा है, जबकि उत्पादकता प्रति इकाई भूमि क्षेत्र का उत्पादन है।
कृषि में कुल उत्पादन का तात्पर्य किसी क्षेत्र या देश में किसी विशेष समय में काटी गई फसल की कुल मात्रा से होता है। दूसरी ओर, उत्पादकता एक सापेक्ष माप है जो भूमि के प्रति इकाई क्षेत्र (जैसे किलोग्राम प्रति हेक्टेयर) से प्राप्त फसल की मात्रा को दर्शाती है। कोई राज्य विशाल क्षेत्रफल के कारण उच्च उत्पादन कर सकता है परंतु उत्पादकता में पीछे हो सकता है।

50. (A) कृषि लागत और मूल्य आयोग
भारत में न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) की सिफारिश कृषि लागत और मूल्य आयोग द्वारा की जाती है। यह निकाय भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय का एक संलग्न कार्यालय है। यह आयोग उत्पादन लागत, बाजार मूल्य प्रवृत्तियों, मांग-आपूर्ति और अंतर-फसल मूल्य समानता का विश्लेषण करने के बाद केंद्र सरकार को अपनी सिफारिशें प्रस्तुत करता है।

51. (B) 22 अधिदिष्ट फसलें
वर्तमान में भारत सरकार कृषि लागत और मूल्य आयोग की सिफारिशों के आधार पर 22 अधिदिष्ट कृषि फसलों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) घोषित करती है। इनमें 14 खरीफ फसलें, 6 रबी फसलें और 2 व्यावसायिक फसलें शामिल हैं। इसके अलावा, गन्ने के लिए पृथक रूप से उचित और लाभकारी मूल्य (एफआरपी) की घोषणा की जाती है, जिससे कुल 23 फसलें कवर होती हैं।

52. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
पंजाब और हरियाणा में फसल चक्र मुख्य रूप से गेहूँ-चावल प्रणाली पर केंद्रित हो गया है। इसका प्रमुख कारण सरकार द्वारा इन दोनों खाद्यान्नों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य पर सुनिश्चित और असीमित सरकारी खरीद का आश्वासन है। इस मूल्य सुरक्षा और सुनिश्चित बाजार ने किसानों को अन्य जोखिम भरी फसलों को छोड़कर गेहूँ और चावल की निरंतर खेती करने के लिए प्रेरित किया है।

NODIA

53. (C) उचित और लाभकारी मूल्य (एफ.आर.पी.)
गन्ने के मूल्य का निर्धारण सामान्य न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) के बजाय 'उचित और लाभकारी मूल्य' (एफआरपी) द्वारा किया जाता है। केंद्र सरकार की आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति इसे चीनी सत्र हेतु घोषित करती है। यह वह न्यूनतम कानूनी मूल्य है जो चीनी मिल मालिकों द्वारा गन्ना किसानों को आपूर्ति किए गए गन्ने के भुगतान हेतु अनिवार्य रूप से दिया जाना होता है।

54. (B) कृषि उपज मंडी समितियों (एपीएमसी) को एक एकीकृत राष्ट्रीय कृषि बाजार से जोड़ना।
राष्ट्रीय कृषि बाजार (ई-नाम) एक अखिल भारतीय इलेक्ट्रॉनिक ट्रेडिंग पोर्टल है। इसका मुख्य उद्देश्य देश भर में बिखरी हुई कृषि उपज मंडी समितियों को एक नेटवर्क में जोड़कर कृषि जिंसों के लिए एक एकीकृत राष्ट्रीय बाजार बनाना है। यह मंच पारदर्शिता बढ़ाता है, बिचौलियों पर निर्भरता घटाता है और किसानों को उनकी उपज का बेहतर मूल्य दिलाने में मदद करता है।

55. (D) कृषि उपज बाजार समिति
एपीएमसी का पूर्ण रूप 'एग्रीकल्चरल प्रोड्यूस मार्केट कमेटी' (कृषि उपज बाजार समिति) है। यह राज्य सरकारों द्वारा स्थापित एक वैधानिक निकाय है, जो निर्दिष्ट भौगोलिक क्षेत्रों में कृषि, पशुधन और बागवानी उत्पादों के विपणन को विनियमित करता है। इसका प्राथमिक उद्देश्य किसानों को बिचौलियों के शोषण से बचाना और पारदर्शी नीलामी प्रक्रिया सुनिश्चित करना रहा है।

56. (A) बिचौलियों की एक लंबी श्रृंखला जो उपभोक्ता मूल्य में किसान के हिस्से को कम करती है।
भारत की पारंपरिक कृषि विपणन प्रणाली की सबसे बड़ी कमी खेत से उपभोक्ता तक बिचौलियों, आढ़तियों और एजेंटों की अत्यधिक लंबी श्रृंखला का होना है। यह मध्यस्थ मनमाना कमीशन लेते हैं और विपणन लागत को बढ़ा देते हैं। इसके कारण अंतिम उपभोक्ता द्वारा चुकाई गई कीमत का केवल एक छोटा सा हिस्सा ही मूल किसान तक पहुँच पाता है, जिससे किसानों का लाभ घट जाता है।

57. (D) सीमांत (1 हेक्टेयर से कम)
भारत की कृषि जनगणना के नवीनतम आंकड़ों के अनुसार, देश में कुल कृषि जोतों में सर्वाधिक हिस्सेदारी सीमांत जोतों (1 हेक्टेयर से कम भूमि) की है, जो कुल जोतों का लगभग 68 प्रतिशत से अधिक है। छोटी और सीमांत जोतों को मिलाकर यह आंकड़ा 86 प्रतिशत से अधिक हो जाता है, जो भारतीय कृषि की अति-विखंडित और छोटे पैमाने की प्रकृति को उजागर करता है।

58. (A) यह आधुनिक यांत्रिकीकरण और बड़े पैमाने पर सिंचाई को आर्थिक रुप से अव्यवहारिक बनाता है।
कृषि भू-जोतों का अत्यधिक विखंडन और छोटा आकार भारतीय कृषि की एक प्रमुख बाधा है। जब खेत छोटे और टुकड़ों में बँटे होते हैं, तो उन पर ट्रैक्टर, कंबाइन हार्वेस्टर जैसी आधुनिक मशीनों का प्रयोग करना और नहरी या ड्रिप सिंचाई प्रणाली स्थापित करना आर्थिक रूप से बहुत खर्चीला और अव्यवहारिक हो जाता है, जिससे कृषि की उत्पादकता और लाभप्रदता दोनों गिर जाती हैं।

59. (D) सहकारी खेती और किसान उत्पादक संगठनों (एफ.पी.ओ.) को बढ़ावा देना।
कृषि जोतों के विखंडन की समस्या से निपटने के लिए विशेषज्ञ सहकारी खेती और किसान उत्पादक संगठनों के गठन की सिफारिश करते हैं। जब छोटे और सीमांत किसान एक साथ मिलकर समूह बनाते हैं, तो वे सामूहिक रूप से इनपुट खरीद सकते हैं, आधुनिक मशीनों का साझा उपयोग कर सकते हैं और अपनी उपज का बेहतर विपणन कर सकते हैं, जिससे उन्हें बड़े पैमाने की अर्थव्यवस्था का लाभ मिलता है।

60. (A) P-2, Q-3, R-1, S-4
भारत में मानसूनी वर्षा से पूर्व होने वाली स्थानीय बौछारों का कृषि में विशेष महत्व है। केरल में आम्र वर्षा आमों को जल्दी पकने में मदद करती है, जबकि कर्नाटक में चेरी ब्लॉसम कॉफी के फूलों को खिलने में सहायक होती है। पश्चिम बंगाल की कालबैशाखी चावल और जूट के लिए लाभदायक होती है, जबकि उत्तरी मैदानों में बहने वाली तीव्र 'लू' फसलों को सुखा देती है।

61. (C) 50-55%
भारत में कुल निवल बोए गए कृषि क्षेत्र का लगभग 50 से 55 प्रतिशत भाग आज भी बुनियादी सिंचाई सुविधाओं से वंचित है और पूरी तरह से वर्षा पर आधारित है। इन क्षेत्रों में फसल का उत्पादन मुख्यतः चार महीने के दक्षिण-पश्चिम मानसून की समयबद्धता और मात्रा पर निर्भर करता है। वर्षा में अनिश्चितता या विफलता सीधे इन क्षेत्रों की खाद्य सुरक्षा को प्रभावित करती है।

62. (D) अल नीनो
'अल नीनो' प्रशांत महासागर के विषुवतीय क्षेत्र में समुद्र की सतह के जल के असामान्य रूप से गर्म होने की एक जलवायु परिघटना है। यह वैश्विक वायुमंडलीय परिसंचरण को बाधित करती है, जिसका भारतीय उपमहाद्वीप पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अल नीनो के वर्षों में अक्सर भारत में दक्षिण-पश्चिम मानसूनी वर्षा कमजोर पड़ जाती है, जिससे देश के कई हिस्सों में सूखा और कृषि संकट उत्पन्न होता है।

63. (A) रेपसीड और सरसों
राजस्थान भारत में रेपसीड और सरसों के उत्पादन में स्पष्ट वर्चस्व रखता है और कुल राष्ट्रीय उत्पादन में एक तिहाई से अधिक का योगदान देता है। राज्य की शुष्क और अर्ध-शुष्क जलवायु, हल्की दोमट मृदा और शीतकालीन हल्की वर्षा सरसों की खेती के लिए अत्यंत अनुकूल हैं। भरतपुर, जयपुर, अलवर और श्रीगंगानगर राजस्थान के प्रमुख सरसों उत्पादक जिले हैं।

64. (B) तिलहन
भारत में 'पीली क्रांति' की शुरुआत 1986-87 में खाद्य तेलों और तिलहन फसलों के उत्पादन में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के उद्देश्य से की गई थी। इसके तहत सरसों, मूंगफली, सोयाबीन, सूरजमुखी और तिल जैसी फसलों के उन्नत बीजों, आधुनिक तकनीकों और प्रोत्साहन नीतियों को बढ़ावा दिया गया। इसके परिणामस्वरूप देश में तिलहन उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि दर्ज की गई थी।

65. (D) I, II और III
मूंगफली मुख्य रूप से खरीफ मौसम में उगाई जाने वाली तिलहनी फसल है, जबकि सरसों एक प्रमुख रबी फसल है। यद्यपि भारत विश्व में तिलहन का एक बड़ा उत्पादक देश है, फिर भी देश में खाद्य तेलों की घरेलू खपत और मांग इतनी अधिक है कि भारत को अपनी आवश्यकता का लगभग 50 से 60 प्रतिशत खाद्य तेल विदेशी बाजारों से आयात करना पड़ता है।

66. (A) मध्य प्रदेश
मध्य प्रदेश को देश में अत्यधिक उत्पादन के कारण 'सोयाबीन राज्य' या 'सोया प्रदेश' के नाम से जाना जाता है। राज्य की मालवा पठारी भूमि, काली मृदा और अनुकूल मानसूनी परिस्थितियाँ सोयाबीन की खेती के लिए सबसे उपयुक्त हैं। भारत के कुल सोयाबीन उत्पादन में मध्य प्रदेश का हिस्सा सबसे बड़ा रहा है, यद्यपि हाल के वर्षों में महाराष्ट्र भी इसके निकट प्रतिस्पर्धी के रूप में उभरा है।

67. (C) अरहर (तुर)
अधिकांश दलहनी फसलें अपनी जड़ों में पाए जाने वाले राइजोबियम जीवाणु की सहायता से वायुमंडलीय नाइट्रोजन का मृदा में स्थिरीकरण करती हैं। हालाँकि, अरहर (तुर) एक ऐसी दीर्घकालिक दलहनी फसल है जिसकी नाइट्रोजन स्थिरीकरण की क्षमता अन्य दालों (जैसे मूंग, उड़द, चना) की तुलना में बहुत कम होती है, विशेष रूप से अपनी शुरुआती लंबी वनस्पति वृद्धि अवधि के दौरान।

68. (D) भारत दालों का सबसे बड़ा उत्पादक, उपभोक्ता और आयातकर्ता है।
वैश्विक दलहन अर्थव्यवस्था में भारत की स्थिति अत्यंत अनूठी है। भारत विश्व में दालों का सबसे बड़ा उत्पादक देश है, किंतु शाकाहारी आबादी की विशाल मांग के कारण यह सबसे बड़ा उपभोक्ता भी है। घरेलू उत्पादन उच्च खपत को पूरा करने के लिए अपर्याप्त होने के कारण, भारत दुनिया में दालों का सबसे बड़ा आयातकर्ता देश भी बना हुआ है।

69. (C) इन्हें कम नमी की आवश्यकता होती है और ये शुष्क परिस्थितियों में भी जीवित रहती हैं।
दालें मुख्य रूप से शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों की फसलें हैं जिन्हें बहुत कम जल और नमी की आवश्यकता होती है। इनकी

Downloaded from www.pdf.tube

गहरी जड़ें मृदा की गहराई से नमी सोखने में सक्षम होती हैं, जिससे यह वर्षा पर निर्भर और सीमित सिंचाई वाले शुष्क क्षेत्रों में भी आसानी से जीवित रह सकती हैं। इसी कारण इन्हें शुष्क कृषि में प्राथमिकता दी जाती है।

70. (A) मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान
भारत में कुल दाल उत्पादन के संदर्भ में मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और राजस्थान शीर्ष तीन राज्यों में शामिल हैं। मध्य प्रदेश अपने विशाल बोए गए क्षेत्र और अनुकूल शुष्क-अर्धशुष्क परिस्थितियों के कारण लंबे समय से प्रथम स्थान पर बना हुआ है। इसके पश्चात् महाराष्ट्र और राजस्थान क्रमशः दूसरे व तीसरे स्थान पर आते हैं, जो देश के बड़े दलहन उत्पादक क्षेत्र हैं।

71. (D) स्वर्ण क्रांति
भारत में 1991 से 2003 के मध्य की अवधि को 'स्वर्ण क्रांति' के रूप में जाना जाता है। यह अवधि फलों, सब्जियों, मसालों, शहद और अन्य बागवानी फसलों के उत्पादन में हुई तीव्र वृद्धि से संबंधित है। भारत में निरपख तुतेज को स्वर्ण क्रांति का जनक माना जाता है, जिनके प्रयासों से भारत वैश्विक बागवानी परिदृश्य में एक प्रमुख शक्ति बना।

72. (A) बागवानी फसलें मुख्य खाद्यान्न फसलों की तुलना में प्रति इकाई क्षेत्र अधिक आय प्रदान करती हैं।
बागवानी फसलें (फल, सब्जियाँ, फूल और मसाले) पारंपरिक खाद्यान्न फसलों (जैसे गेहूँ और चावल) की तुलना में प्रति इकाई कृषि भूमि क्षेत्र से काफी अधिक आर्थिक मूल्य और आय प्रदान करती हैं। यह उच्च-मूल्य वाली फसलें किसानों की आय बढ़ाने, कृषि जोखिम को कम करने और ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के नए अवसर पैदा करने में अत्यंत प्रभावी साबित हुई हैं।

73. (C) केरल
केरल को पारंपरिक रूप से 'भारत का मसाला उद्यान' कहा जाता है। राज्य की उष्णकटिबंधीय जलवायु, पश्चिमी घाट की समृद्ध ढलानें और प्रचुर मानसूनी वर्षा काली मिर्च, छोटी इलायची, दालचीनी, लौंग और जायफल जैसे मूल्यवान मसालों के उत्पादन के लिए विश्व प्रसिद्ध रही हैं। सदियों से अंतरराष्ट्रीय मसाला व्यापार में केरल का ऐतिहासिक और वाणिज्यिक स्थान रहा है।

74. (A) बागवानी के एकीकृत विकास के लिए मिशन
एमआईडीएच का पूर्ण रूप 'मिशन फॉर इंटीग्रेटेड डेवलपमेंट ऑफ हॉर्टिकल्चर' (बागवानी के एकीकृत विकास के लिए मिशन) है। यह भारत सरकार के कृषि मंत्रालय द्वारा संचालित एक केंद्र प्रायोजित योजना है। इसका मुख्य उद्देश्य फलों, सब्जियों, मसालों, फूलों और औषधीय पौधों सहित संपूर्ण बागवानी क्षेत्र का समग्र और सतत विकास सुनिश्चित करना है।

75. (D) जूट
पश्चिम बंगाल भारत में जूट उत्पादन में एकाधिकार जैसा स्थान रखता है और कुल राष्ट्रीय उत्पादन का तीन-चौथाई से अधिक हिस्सा उत्पादित करता है। गंगा-ब्रह्मपुत्र डेल्टा की उपजाऊ जलोढ़ मृदा, उच्च तापमान (25-35°C), भारी वर्षा और जूट के पौधों को सड़ने (रेटिंग) के लिए प्रचुर मात्रा में जल की उपलब्धता इसे जूट कृषि का आदर्श क्षेत्र बनाती है।

NODIA

76. (B) ग्वार
राजस्थान भारत के कुल ग्वार उत्पादन में 70 प्रतिशत से अधिक का योगदान देकर एक छत्र राज्य बना हुआ है। ग्वार एक शुष्क-सहनशील लेग्यूम फसल है। ग्वार के बीजों से निकाला गया 'ग्वार गम' (गोंद) अंतर्राष्ट्रीय बाजार में बहुत लोकप्रिय है, जिसका व्यापक उपयोग पेट्रोलियम निष्कर्षण, खाद्य प्रसंस्करण और वस्त्र उद्योगों में किया जाता है।

77. (C) महाराष्ट्र
महाराष्ट्र भारत में ज्वार का सबसे बड़ा उत्पादक राज्य है। ज्वार एक प्रमुख मोटा अनाज है जिसे खरीफ और रबी दोनों मौसमों में उगाया जा सकता है। दक्कन पठार की अर्ध-शुष्क जलवायु, काली मृदा और सीमित जल संसाधन ज्वार की खेती के लिए अत्यंत अनुकूल हैं। यह फसल राज्य के शुष्क ग्रामीण क्षेत्रों में भोजन और पशु चारे का मुख्य आधार है।

78. (D) I, II, III और IV
दिए गए सभी संयोजन उनके संबंधित फसलों के प्रमुख उत्पादक राज्यों को सही ढंग से दर्शाते हैं। मध्य प्रदेश भारत का सबसे बड़ा सोयाबीन उत्पादक है, गुजरात कपास उत्पादन में शीर्ष पर है, राजस्थान अपने मरुस्थलीय इलाकों में बाजरे का सबसे बड़ा उत्पादक है, और कर्नाटक भारत के कुल कॉफी उत्पादन में 70 प्रतिशत से अधिक हिस्सेदारी के साथ प्रथम स्थान पर है।

79. (A) परंपरागत कृषि विकास योजना
पीकेवीवाई का पूर्ण रूप 'परंपरागत कृषि विकास योजना' है। यह भारत सरकार की एक प्रमुख योजना है जिसे रसायन-मुक्त जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए शुरू किया गया है। इस योजना के तहत किसानों को क्लस्टर बनाकर जैविक कृषि पद्धतियों को अपनाने, मृदा स्वास्थ्य में सुधार करने और प्रमाणित जैविक उत्पादों के सीधे विपणन हेतु वित्तीय और तकनीकी सहायता दी जाती है।

80. (B) सिक्किम
सिक्किम को वर्ष 2016 में विश्व का पहला पूर्णतः जैविक राज्य घोषित किया गया था। राज्य सरकार ने एक साहसिक नीतिगत निर्णय लेते हुए रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के आयात और बिक्री पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगा दिया। सिक्किम ने अपनी संपूर्ण कृषि योग्य भूमि को जैविक कृषि मापदंडों के तहत सफलतापूर्वक प्रमाणित कराया है।

81. (B) राइजोबियम जैसे जैव-उर्वरक
जैविक खेती में मृदा की प्राकृतिक उर्वरता और पोषक तत्वों के संतुलन को बनाए रखने के लिए किसी भी प्रकार के संश्लेषित रसायनों का प्रयोग पूरी तरह वर्जित होता है। इसके स्थान पर राइजोबियम, एजोटोबैक्टर और नील-हरित शैवाल जैसे जैव-उर्वरकों, वर्मीकंपोस्ट (केंचुआ खाद), गोबर की खाद और हरी खाद का उपयोग किया जाता है जो मिट्टी को जैविक रूप से उपजाऊ बनाते हैं।

82. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
रासायनिक कृषि से जैविक कृषि में स्थानांतरित होते समय शुरुआती 2 से 3 वर्षों में फसल की उपज में गिरावट देखी जाती है। इसका कारण यह है कि रासायनिक उर्वरकों से मुक्त होने के बाद मृदा के सूक्ष्मजीवों और प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र को स्वयं को पुनर्स्थापित करने में समय लगता है। एक बार मृदा की जैविक संरचना सुधर जाने पर उत्पादकता में स्थिरता आ जाती है।

83. (C) सकल फसल क्षेत्र का निवल बोए गए क्षेत्र से अनुपात।
फसल सघनता कृषि भूमि के उपयोग की दक्षता को दर्शाती है। इसका गणितीय मान सकल फसल क्षेत्र (वर्ष में बोया गया कुल क्षेत्रफल) को निवल बोए गए क्षेत्र से विभाजित करके और 100 से गुणा करके निकाला जाता है। उच्च फसल सघनता का अर्थ है कि एक ही भूमि पर एक वर्ष में एक से अधिक फसलें सफलता पूर्वक उगाई जा रही हैं।

84. (D) झूमिंग
'कर्तन एवं दहन' (स्लैश एंड बर्न) कृषि को भारत के उत्तर-पूर्वी राज्यों जैसे असम, मेघालय, मिजोरम और नागालैंड में स्थानीय रूप से 'झूमिंग' या 'झूम खेती' कहा जाता है। इस आदिम कृषि पद्धति में जनजातीय समुदायों द्वारा जंगलों के एक भूभाग को काटकर और जलाकर साफ किया जाता है तथा उस पर कुछ वर्षों तक पारंपरिक रूप से फसलें उगाई जाती हैं।

85. (A) P-2, Q-1, R-4, S-3
भारत में विभिन्न कृषि क्रांतियाँ विशिष्ट क्षेत्रों के उत्पादन को बढ़ाने से संबंधित हैं। नीली क्रांति मत्स्य पालन के विकास से जुड़ी है, जबकि श्वेत क्रांति दुग्ध उत्पादन (ऑपरेशन फ्लड) से संबंधित है। रजत क्रांति का संबंध अंडा और कुक्कुट उत्पादन में वृद्धि से है, और गोल क्रांति देश में आलू के उत्पादन में तीव्र वृद्धि को दर्शाती है।

86. (B) मिश्रित खेती फसल उत्पादन को पशुपालन के साथ एकीकृत करती है, जबकि मिश्रित फसल में एक साथ कई फसलें उगाई जाती हैं।
'मिश्रित खेती' कृषि की वह प्रणाली है जिसमें फसलों के उत्पादन के साथ-साथ पशुपालन, मुर्गीपालन या डेयरी जैसी गतिविधियों को एकीकृत रूप से अपनाया जाता है। इसके विपरीत, 'मिश्रित फसल' का अर्थ एक ही खेत में एक ही समय पर दो या दो से अधिक फसलों (जैसे गेहूँ और सरसों) को एक साथ उगाना होता है।

87. (D) पिछले पांच दशकों में भारत के सकल मूल्य वर्धन (जीवीए) में कृषि का हिस्सा लगातार बढ़ा है।
भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास के साथ सकल मूल्य वर्धन में कृषि क्षेत्र का प्रतिशत हिस्सा पिछले पांच दशकों में लगातार घटा है, जबकि सेवा और उद्योग क्षेत्रों का हिस्सा बढ़ा है। इसके बावजूद, कृषि देश में रोजगार देने वाला सबसे बड़ा क्षेत्र बनी हुई है, औसत जोत का आकार घटा है, और वर्षा पर अत्यधिक निर्भरता आज भी बनी हुई है।

88. (A) 2, 1, 3, 4
कृषि विपणन का मानक क्रम खेत के स्तर से शुरू होकर उपभोक्ता तक पहुँचता है। सबसे पहले खेत से फसल की कटाई और एकत्रीकरण किया जाता है। इसके पश्चात उत्पाद की प्राथमिक छंटाई (ग्रेडिंग) और सफाई होती है। फिर इसे परिवहन के माध्यम से मंडियों या द्वितीयक बाजारों में लाया जाता है, जहाँ से यह खुदरा विक्रेताओं द्वारा अंतिम उपभोक्ताओं तक पहुँचती है।

89. (C) रबी गेहूँ का दाना भरने का चरण, जिससे दाने सिकुड़ जाते हैं।
मार्च महीने में बेमौसम लू और अचानक तापमान में वृद्धि रबी की फसल, विशेषकर गेहूँ, के लिए अत्यंत घातक होती है। मार्च के दौरान गेहूँ के पौधों में 'दाना भरने' की संवेदनशील प्रक्रिया चल रही होती है। अत्यधिक गर्मी के कारण दाना पकने से पहले ही सूख जाता है, जिससे गेहूँ के दाने छोटे और सिकुड़ जाते हैं और कुल उपज में भारी गिरावट आती है।

90. (A) अर्थशास्त्र एवं सांख्यिकी निदेशालय
भारत में प्रमुख फसलों के उत्पादकता और उत्पादन के आधिकारिक अनुमान तैयार करने के लिए अर्थशास्त्र एवं सांख्यिकी निदेशालय उत्तरदायी है। यह निकाय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के अधीन कार्य करता है। यह संस्था राज्यों द्वारा आयोजित किए जाने वाले वैज्ञानिक फसल कटाई प्रयोगों से प्राप्त सांख्यिकीय आंकड़ों का विश्लेषण करके राष्ट्रीय स्तर पर फसल पूर्वानुमान और कृषि आंकड़े जारी करने का कार्य करती है।

www.nodia.in

Click Here to Buy book on Flipkart

अध्याय 06
भारत के प्रमुख खनिज

1. निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प धात्विक खनिज को सर्वोत्तम रूप से परिभाषित करता है?
   (A) वह खनिज जिसमें सिलिका और ऑक्सीजन का उच्च प्रतिशत होता है
   (B) वह खनिज जो पिघलाने पर धातु प्रदान करता है और सामान्यतः चमकदार दिखाई देता है
   (C) वह खनिज जो मुख्य रूप से कार्बनिक पदार्थों के अपघटन से बनता है
   (D) वह खनिज जो किसी भी स्थिति में विद्युत या ऊष्मा का संचालन नहीं कर सकता

2. खनिजों के निम्नलिखित वर्गीकरणों में से किस समूह में पूर्णतः अधात्विक खनिज शामिल हैं?
   (A) तांबा, बॉक्साइट, चूना पत्थर
   (B) मैंगनीज, अभ्रक, कोयला
   (C) लौह अयस्क, बॉक्साइट, डोलोमाइट
   (D) अभ्रक, चूना पत्थर, जिप्सम

3. खनिज वर्गीकरण के संदर्भ में, निम्नलिखित में से किसे बहुमूल्य धात्विक खनिज माना जाता है?
   (A) प्लैटिनम
   (B) बॉक्साइट
   (C) गैलेना
   (D) क्रोमाइट

4. लौह अयस्क की निम्नलिखित किस्मों में से किसमें लोहे की मात्रा सबसे अधिक होती है और इसमें उत्कृष्ट चुंबकीय गुण होते हैं, जो इसे विद्युत उद्योग के लिए अत्यधिक मूल्यवान बनाते हैं?
   (A) हेमेटाइट
   (B) लिमोनाइट
   (C) मैग्नेटाइट
   (D) सिडेराइट

5. उच्च श्रेणी के हेमेटाइट लौह अयस्क के लिए प्रसिद्ध बादामपहाड़ खदानें निम्नलिखित में से किस खनिज पट्टी में स्थित हैं?
   (A) ओडिशा-झारखंड पट्टी
   (B) दुर्ग-बस्तर-चंद्रपुर पट्टी
   (C) बेल्लारी-चित्रदुर्ग-चिक्कमगलुरु-तुमकुरु पट्टी
   (D) महाराष्ट्र-गोवा पट्टी

6. कुद्रेमुख लौह अयस्क निक्षेप, जिन्हें विश्व में सबसे बड़े निक्षेपों में से एक माना जाता है, मुख्य रूप से किस राज्य में स्थित हैं?
   (A) ओडिशा
   (B) छत्तीसगढ़
   (C) झारखंड
   (D) कर्नाटक

7. मैंगनीज मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किस औद्योगिक उत्पाद के निर्माण के लिए आवश्यक है?
   (A) प्राथमिक एल्युमीनियम प्रगलन संचालन
   (B) इस्पात और मिश्र धातु निर्माण
   (C) संश्लेषित विद्युत रोधी उत्पादन
   (D) निर्माण ग्रेड सीमेंट निर्माण

NODIA

8. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
   कथन (A) : भारत जापान और दक्षिण कोरिया जैसे देशों को बड़ी मात्रा में उच्च श्रेणी के लौह अयस्क का निर्यात करता है।
   कारण (R) : भारत के पास अपने स्वयं के लौह अयस्क उत्पादन का उपयोग करने के लिए घरेलू इस्पात निर्माण क्षमता की कमी है।
   उपयुक्त कथनों के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:
   (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।
   (B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
   (C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
   (D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

9. किस राज्य को पारंपरिक रूप से भारत में मैंगनीज अयस्क के सबसे बड़े उत्पादक के रूप में मान्यता प्राप्त है, जो अक्सर देश के कुल उत्पादन में उच्चतम हिस्सेदारी रखता है?
   (A) राजस्थान
   (B) गुजरात
   (C) तमिलनाडु
   (D) मध्य प्रदेश

10. भारत में बॉक्साइट के वितरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
    I. बॉक्साइट निक्षेप मुख्य रूप से एल्युमीनियम सिलिकेट से समृद्ध चट्टानों की एक विस्तृत विविधता के अपघटन से बनते हैं।
    II. अमरकंटक पठार और मैकाल पहाड़ियाँ महत्वपूर्ण बॉक्साइट उत्पादक क्षेत्र हैं।

III. अपनी विस्तृत मरुस्थलीय चट्टानी संरचनाओं के कारण राजस्थान भारत में बॉक्साइट का सबसे बड़ा उत्पादक है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

11. कोरापुट जिले में स्थित पंचपतमाली निक्षेप निम्नलिखित में से किस खनिज के लिए अत्यधिक प्रसिद्ध हैं?
(A) लौह अयस्क
(B) बॉक्साइट
(C) तांबा
(D) मैंगनीज

12. एल्युमीनियम प्रगलन संयंत्र की स्थापना के लिए निम्नलिखित में से कौन-सा सबसे महत्वपूर्ण अवस्थितिक कारक है?
(A) लकड़ी के लिए घने वन क्षेत्रों की निकटता
(B) सस्ती बिजली की नियमित और व्यापक आपूर्ति
(C) केवल शीतलन जल हेतु किसी बारहमासी नदी की निकटता
(D) बड़े शहरी उपभोक्ता बाजारों से निकटता

13. अभ्रक को विद्युत और इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योग के लिए अनिवार्य माना जाता है, मुख्य रूप से इसके:
(A) उच्च परावैद्युत सामर्थ्य और निम्न शक्ति क्षति के कारण
(B) असाधारण आघातवर्धनीयता के साथ उच्च तापीय चालकता के कारण
(C) प्रभावी विद्युत चुंबकीय परिरक्षण की सुविधा प्रदान करने वाले उच्च लौह तत्व के कारण
(D) अम्लीय विलयनों में आसानी से घुलने की असाधारण क्षमता के कारण

14. कोडरमा-गया-हजारीबाग पट्टी को निम्नलिखित में से किस खनिज का प्रमुख उत्पादक माना जाता है?
(A) बॉक्साइट
(B) तांबा
(C) अभ्रक
(D) चूना पत्थर

15. भारत में कोयले के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. भारत में कोयला दो मुख्य भूवैज्ञानिक युगों की चट्टान श्रृंखलाओं में पाया जाता है: गोंडवाना और टर्शियरी।
II. गोंडवाना कोयला मुख्य रूप से धातुकर्म (कोकिंग) कोयला है और दामोदर घाटी में स्थित है।
III. टर्शियरी कोयला निक्षेप मुख्य रूप से पूर्वोत्तर राज्यों मेघालय, असम, अरुणाचल प्रदेश और नागालैंड में पाए जाते हैं।
IV. एन्थ्रेसाइट, जो उच्चतम गुणवत्ता वाला कठोर कोयला है, प्रायद्वीपीय भारत के सभी प्रमुख राज्यों में प्रचुर मात्रा में पाया जाता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से गलत है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल III और IV
(D) केवल IV

NODIA

16. भारत के धातुकर्म ग्रेड कोयले के अधिकांश भंडार किस भूवैज्ञानिक संरचना से संबंधित हैं?
(A) धारवाड़ प्रणाली
(B) टर्शियरी प्रणाली
(C) गोंडवाना प्रणाली
(D) कुडप्पा प्रणाली

17. भारत में, एन्थ्रेसाइट कोयले के एकमात्र महत्वपूर्ण भंडार निम्नलिखित में से किस क्षेत्र में पाए जाते हैं?
(A) झारखंड राज्य में झरिया क्षेत्र
(B) कालाकोट, जम्मू और कश्मीर
(C) पश्चिम बंगाल राज्य में रानीगंज क्षेत्र
(D) तमिलनाडु राज्य में नेवेली क्षेत्र

18. डिगबोई, नाहरकटिया और मोरान-हुगरीजन महत्वपूर्ण तेल क्षेत्र किस राज्य में स्थित हैं?
(A) गुजरात
(B) महाराष्ट्र
(C) राजस्थान
(D) असम

19. भारत के सबसे बड़े पेट्रोलियम उत्पादक क्षेत्रों में से एक, मुंबई हाई तेल क्षेत्र अपनी अपतटीय स्थिति के कारण किस निकाय के क्षेत्राधिकार के अंतर्गत कार्य करता है?
(A) भारत की केंद्र सरकार
(B) महाराष्ट्र की राज्य सरकार
(C) बृहन्मुंबई नगर निगम
(D) सभी तटीय राज्यों का एक संयुक्त संघ

20. कृष्णा-गोदावरी बेसिन में प्राकृतिक गैस के विशाल भंडार की खोज की गई है। यह बेसिन मुख्य रूप से किस राज्य के तट पर स्थित है?
(A) गुजरात
(B) ओडिशा
(C) आंध्र प्रदेश
(D) केरल

21. निम्नलिखित में से कौन-सा क्षेत्र भारत में तांबा खनन से पारंपरिक रूप से नहीं जुड़ा है?
(A) कर्नाटक में कुद्रेमुख
(B) मध्य प्रदेश में बालाघाट खदानें
(C) राजस्थान में खेतड़ी खदानें
(D) झारखंड में पूर्वी सिंहभूम जिला

22. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची I : खनिज
P. तांबा
Q. बॉक्साइट
R. लिग्नाइट कोयला
S. अभ्रक
सूची II : प्रमुख उत्पादक राज्य/क्षेत्र
1. ओडिशा
2. मध्य प्रदेश
3. आंध्र प्रदेश
4. तमिलनाडु
(A) P-2, Q-1, R-4, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-2, Q-4, R-1, S-3
(D) P-3, Q-1, R-4, S-2

23. हिंदुस्तान कॉपर लिमिटेड द्वारा स्थापित खेतड़ी तांबा परिसर राजस्थान के किस जिले में स्थित है?
(A) उदयपुर
(B) झुंझुनू
(C) भीलवाड़ा
(D) अलवर

24. राजस्थान में जावर खदानें मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किस खनिज अयस्क के निष्कर्षण के लिए प्रसिद्ध हैं?
(A) बॉक्साइट और एल्युमीनियम
(B) लौह अयस्क और मैंगनीज
(C) सीसा और जस्ता
(D) कोयला और लिग्नाइट

25. कुल बॉक्साइट भंडार के अवरोही क्रम (उच्चतम से निम्नतम) में व्यवस्थित निम्नलिखित राज्यों का सही क्रम चुनिए:
(A) ओडिशा, आंध्र प्रदेश, गुजरात
(B) गुजरात, ओडिशा, आंध्र प्रदेश
(C) आंध्र प्रदेश, गुजरात, ओडिशा
(D) ओडिशा, गुजरात, आंध्र प्रदेश

26. निम्नलिखित में से कौन-सा खनिज सीमेंट उद्योग के लिए एक आवश्यक, बुनियादी कच्चा माल है और वात्या भट्टी (ब्लास्ट फर्नेस) में लौह अयस्क को पिघलाने के लिए आवश्यक है?
(A) चूना पत्थर
(B) जिप्सम
(C) डोलोमाइट
(D) बॉक्साइट

27. राजस्थान का भारत में निम्नलिखित में से किस अधात्विक खनिज के उत्पादन में लगभग एकाधिकार है?
(A) कोयला और पेट्रोलियम
(B) वोलास्टोनाइट और जास्पर
(C) बॉक्साइट और लौह अयस्क
(D) मैंगनीज और क्रोमाइट

28. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A) : एल्युमीनियम प्रगलन संयंत्र अक्सर प्रचुर और सस्ती बिजली के स्रोतों के पास स्थापित किए जाते हैं।
कारण (R) : एल्युमिना से एल्युमीनियम निकालने की प्रक्रिया में अत्यधिक ऊर्जा की आवश्यकता होती है।
उपयुक्त कथनों के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

29. राष्ट्रीय खनिज नीति 2019 मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किस रणनीतिक उद्देश्य पर ध्यान केंद्रित करती है?
(A) निजी अन्वेषण और टिकाऊ खनन को बढ़ावा देना
(B) 2030 तक निजी क्षेत्र के सभी खनन कार्यों के पूर्ण राष्ट्रीयकरण को अनिवार्य करना
(C) भंडार को संरक्षित करने के लिए सभी धात्विक खनिजों के व्यावसायिक निर्यात पर रोक लगाना
(D) अपतटीय खनन कार्यों को विशेष रूप से विदेशी बहुराष्ट्रीय निगमों तक सीमित करना

30. खान एवं खनिज (विकास एवं विनियमन) अधिनियम के तहत, जिला खनिज फाउंडेशन का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) जिले से निकाले गए खनिजों के अंतर्राष्ट्रीय निर्यात को सुगम और सुव्यवस्थित बनाना
(B) सभी नई खनन परियोजनाओं के लिए अनिवार्य पर्यावरण मंजूरी का मूल्यांकन करना और उन्हें मंजूरी देना
(C) खनन प्रभावित व्यक्तियों और क्षेत्रों के हित में कार्य करना
(D) जिले में निकाले गए सभी खनिज संसाधनों के लिए स्थानीय बाजार मूल्यों को विनियमित और निर्धारित करना

31. राष्ट्रीय खनिज अन्वेषण ट्रस्ट की स्थापना एमएमडीआर अधिनियम के तहत मुख्य रूप से किस उद्देश्य से की गई थी?
(A) सार्वजनिक रूप से कारोबार करने वाली खनन कंपनियों के शेयर बाजार मूल्यों को विनियमित और निगरानी करना
(B) सभी सेवानिवृत्त खदान श्रमिकों को व्यापक पेंशन फंड का प्रबंधन और वितरण करना
(C) अफ्रीका से महत्वपूर्ण दुर्लभ मृदा खनिजों के रणनीतिक आयात की निगरानी और अनुमोदन करना
(D) देश भर में विस्तृत खनिज अन्वेषण को बढ़ावा देना

32. खनन के पर्यावरणीय प्रभावों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. खनन गतिविधियों से अक्सर उत्खनन क्षेत्रों में भूमि का क्षरण और वनों की कटाई होती है।

Downloaded from www.pdf.tube

II. अम्ल खदान जल-निकासी कोयला और धातु खनन से जुड़ी एक महत्वपूर्ण जल प्रदूषण समस्या है।
III. भूमिगत खनन से भूमि धंसने का जोखिम पूरी तरह से समाप्त हो जाता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I
(D) I, II और III

33. 'रैट-होल खनन' के रूप में जानी जाने वाली प्रथा, जिसमें कोयला निकालने के लिए संकीर्ण सुरंगें खोदना शामिल है, एक गंभीर पर्यावरणीय और सुरक्षा खतरा है जो मुख्य रूप से किस राज्य से जुड़ी है?
(A) राजस्थान
(B) मेघालय
(C) गुजरात
(D) केरल

34. भारत का कौन-सा राज्य समग्र रूप से धात्विक खनिजों का सबसे बड़ा उत्पादक है, जो काफी हद तक इसके विशाल लौह अयस्क और बॉक्साइट उत्पादन से संचालित है?
(A) राजस्थान
(B) कर्नाटक
(C) महाराष्ट्र
(D) ओडिशा

35. राजस्थान कई अधात्विक खनिजों का अग्रणी उत्पादक है। निम्नलिखित में से कौन-सा कथन राजस्थान की खनिज संपदा की गलत विशेषता बताता है?
(A) इसमें धातुकर्म गोंडवाना कोयले के प्रमुख भंडार शामिल हैं।
(B) इसे भारत में सीसा और जस्ता अयस्कों के अग्रणी राष्ट्रीय उत्पादक के रूप में मान्यता प्राप्त है।
(C) इसके पास सीमेंट-ग्रेड चूना पत्थर के विशाल और व्यावसायिक रूप से महत्वपूर्ण भंडार हैं।
(D) यह उच्च-ग्रेड औद्योगिक जिप्सम और सजावटी संगमरमर का अत्यधिक प्रमुख उत्पादक है।

36. एक विविध खनिज आधार के बावजूद, भारत निम्नलिखित में से किस महत्वपूर्ण धात्विक खनिज के आयात पर अत्यधिक निर्भर है?
(A) लौह अयस्क
(B) बॉक्साइट
(C) तांबा
(D) मैंगनीज

37. भारत का कौन-सा प्रमुख समुद्री बंदरगाह लौह अयस्क निर्यात की उच्चतम मात्रा को संभालता है, जो मुख्य रूप से दुर्ग-बस्तर-चंद्रपुर पट्टी की आवश्यकताओं को पूरा करता है?
(A) विशाखापत्तनम
(B) कांडला
(C) कोच्चि
(D) हल्दीया

NODIA

38. भारत में दुर्लभ मृदा खनिजों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. तटीय क्षेत्रों में पाई जाने वाली मोनाजाइट बालू भारत में दुर्लभ मृदा तत्वों का एक प्राथमिक स्रोत है।
II. थोरियम, जो एक रेडियोधर्मी तत्व है, मोनाजाइट निक्षेपों से प्राप्त किया जा सकता है।
III. केरल और तमिलनाडु के तटीय बालू में दुर्लभ मृदा खनिज निक्षेपों की कमी है।
IV. इलेक्ट्रॉनिक्स और इलेक्ट्रिक वाहनों में उपयोग किए जाने वाले स्थायी चुंबक के निर्माण के लिए दुर्लभ मृदा खनिज महत्वपूर्ण हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I, II और IV
(B) केवल II, III और IV
(C) केवल I, III और IV
(D) I, II, III और IV

39. निम्नलिखित में से कौन-सा दुर्लभ मृदा तत्वों का विशिष्ट अनुप्रयोग नहीं है?
(A) स्मार्टफोन और डिस्प्ले का निर्माण
(B) मानक पोर्टलैंड सीमेंट का थोक निर्माण
(C) पवन टरबाइन के लिए उच्च शक्ति वाले स्थायी चुंबकों का उत्पादन
(D) एयरोस्पेस घटक और रक्षा प्रौद्योगिकियां

40. पन्ना हीरा खनन पट्टी, जो भारत के कुल घरेलू हीरा उत्पादन का लगभग पूरा हिस्सा है, कहाँ स्थित है?
(A) राजस्थान (B) कर्नाटक
(C) मध्य प्रदेश (D) आंध्र प्रदेश

41. भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण, जो भूवैज्ञानिक मानचित्रण और क्षेत्रीय खनिज संसाधन मूल्यांकन के लिए उत्तरदायी प्रमुख एजेंसी है, का मुख्यालय कहाँ स्थित है?
(A) नई दिल्ली
(B) मुंबई
(C) हैदराबाद
(D) कोलकाता

42. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I : खनिज पट्टी
P. उत्तर-पूर्वी पठारी क्षेत्र
Q. दक्षिण-पश्चिमी पठारी क्षेत्र
R. उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र
S. हिमालयी पट्टी

सूची II : प्रमुख विशेषताएं
1. तांबा, जस्ता और अधात्विक खनिजों से समृद्ध
2. कोयला, लौह अयस्क, मैंगनीज और बॉक्साइट से अत्यंत समृद्ध

3. इसमें तांबा, सीसा, जस्ता, कोबाल्ट और टंगस्टन शामिल हैं लेकिन गहरे जुड़ाव की कमी है
4. लौह अयस्क और बॉक्साइट से समृद्ध लेकिन कोयला निक्षेपों का पूर्णतः अभाव

(A) P-2, Q-4, R-1, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

43. जबकि भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण अन्वेषण के लिए उत्तरदायी है, खानों और खनिज विकास का नियमन (कोयला, पेट्रोलियम और परमाणु खनिजों को छोड़कर) मुख्य रूप से किस वैधानिक निकाय द्वारा विनियमित किया जाता है?
(A) राष्ट्रीय हरित अधिकरण
(B) भारतीय खान ब्यूरो
(C) तेल और प्राकृतिक गैस निगम
(D) वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद

44. संयुक्त राष्ट्र समुद्री कानून संधि के तहत, भारत जैसे तटीय देशों के पास अपने अनन्य आर्थिक क्षेत्र में कितनी दूरी तक खनिज संसाधनों का अन्वेषण और दोहन करने का अनन्य अधिकार है?
(A) आधार रेखा से 12 समुद्री मील
(B) आधार रेखा से 200 समुद्री मील
(C) आधार रेखा से 100 समुद्री मील
(D) आधार रेखा से 500 समुद्री मील

45. भारत ने मध्य हिंद महासागर बेसिन में बहुधात्विक नोड्यूल्स के खनन के लिए अंतर्राष्ट्रीय समुद्रतल प्राधिकरण से अन्वेषण अधिकार प्राप्त किए हैं। ये नोड्यूल्स मुख्य रूप से किससे समृद्ध हैं?
(A) मैंगनीज, निकेल, तांबा, कोबाल्ट
(B) उच्च श्रेणी का प्राकृतिक सोना, परिष्कृत चांदी और प्लैटिनम समूह के तत्व
(C) यूरेनियम, संवर्धित थोरियम और प्लूटोनियम के रेडियोधर्मी निक्षेप
(D) कोयला, कच्चे पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस सहित ज्वलनशील जीवाश्म ईंधन

46. धातु विज्ञान के अलावा मैंगनीज का व्यापक रूप से निम्नलिखित में से किस उद्योग में उपयोग किया जाता है?
(A) संश्लेषित नाइट्रोजन युक्त कृषि उर्वरकों का औद्योगिक उत्पादन
(B) आधुनिक परमाणु ऊर्जा रिएक्टरों में प्राथमिक ऊष्मा-विनिमय शीतलक प्रणाली
(C) शुष्क सेल बैटरी और ब्लीचिंग पाउडर निर्माण
(D) भारी औद्योगिक रबर निर्माण में रासायनिक वल्कनीकरण प्रक्रियाएं

47. लोहा और इस्पात उद्योग में, चूना पत्थर का मूलभूत रूप से किस रूप में उपयोग किया जाता है?
(A) वात्या भट्टी में तापीय ऊष्मा उत्पन्न करने के लिए उपयोग किया जाने वाला प्राथमिक उच्च-ऊर्जा ईंधन स्रोत
(B) आवश्यक संरचनात्मक कठोरता कारक जो सीधे पिघले हुए इस्पात में मिश्रित होता है
(C) कच्चे हेमेटाइट से बंधे ऑक्सीजन को हटाने के लिए उपयोग किया जाने वाला प्राथमिक रासायनिक अपचायक
(D) सिलिका अशुद्धियों को हटाने के लिए गालक (फ्लक्स)

48. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A) : भारत अपनी पेट्रोलियम आवश्यकताओं के एक बड़े हिस्से का आयात करता है।
कारण (R) : तलछटी बेसिनों से भारत का घरेलू पेट्रोलियम उत्पादन इसकी तेजी से बढ़ती औद्योगिक और परिवहन मांगों को पूरा करने के लिए अपर्याप्त है।
उपयुक्त कथनों के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

49. निम्नलिखित विकल्पों में से उस खनिज की पहचान कीजिए जिसे अधात्विक, कार्बनिक और दहनशील के रूप में वर्गीकृत किया गया है।
(A) सल्फर (गंधक)
(B) कोयला
(C) ग्रेफाइट
(D) अभ्रक

50. भारत में पाए जाने वाले निम्नलिखित कोयले के प्रकारों को उनकी निश्चित कार्बन सामग्री के आरोही क्रम (निम्नतम से उच्चतम) में व्यवस्थित कीजिए:
I. बिटुमिनस
II. लिग्नाइट
III. पीठ
IV. एन्थ्रेसाइट
(A) III, II, I, IV
(B) II, III, I, IV
(C) III, I, II, IV
(D) I, II, III, IV

51. छत्तीसगढ़ में बैलाडिला पहाड़ी श्रृंखला उच्च श्रेणी के लौह अयस्क निक्षेपों के लिए प्रसिद्ध है। विशाखापत्तनम बंदरगाह के माध्यम से यह अयस्क मुख्य रूप से किस देश को निर्यात किया जाता है?
(A) जापान
(B) यूनाइटेड किंगडम
(C) संयुक्त राज्य अमेरिका

Click Here to Buy book on Amazon

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs,
you are wasting valuable time.

Research shows that learning from
PRINTED BOOKS has up to
4× HIGHER RETENTION
than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS**
move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND**
in competition.

In competitive exams,
being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

(D) ऑस्ट्रेलिया

52. बेल्लारी-चित्रदुर्ग-चिक्कमगलुरु-तुमकुरु लौह अयस्क पट्टी बड़े पैमाने पर किस राज्य में स्थित है?
(A) आंध्र प्रदेश
(B) तेलंगाना
(C) कर्नाटक
(D) तमिलनाडु

53. यद्यपि मध्य प्रदेश भारत में मैंगनीज अयस्क का सबसे बड़ा उत्पादक है, लेकिन किस राज्य के पास मैंगनीज भंडार का सबसे बड़ा हिस्सा है?
(A) ओडिशा
(B) राजस्थान
(C) गुजरात
(D) बिहार

54. बॉक्साइट के औद्योगिक उपयोगों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. बॉक्साइट एल्युमिना का उत्पादन करने के लिए उपयोग किया जाने वाला मुख्य अयस्क है, जिसे बाद में एल्युमीनियम में पिघलाया जाता है।
II. मिश्र धातु बनने पर इसके हल्के वजन और उच्च सामर्थ्य के कारण विमानन उद्योग में एल्युमीनियम को प्राथमिकता दी जाती है।
III. बॉक्साइट खनन का पर्यावरणीय प्रभाव न्यूनतम है क्योंकि यह सामान्यतः सतही निक्षेपों के बजाय भूमिगत गहराई में पाया जाता है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

55. उच्च गुणवत्ता वाले मस्कोवाइट अभ्रक के उत्पादन के लिए प्रसिद्ध नेल्लोर अभ्रक पट्टी किस राज्य में स्थित है?
(A) झारखंड
(B) आंध्र प्रदेश
(C) राजस्थान
(D) कर्नाटक

56. राजस्थान में, प्रमुख अभ्रक उत्पादक क्षेत्र मुख्य रूप से किन जिलों के आसपास केंद्रित है?
(A) जैसलमेर और बाड़मेर
(B) कोटा और बूंदी
(C) भीलवाड़ा और अजमेर
(D) बीकानेर और चूरु

57. झरिया कोयला क्षेत्र, जिसे व्यापक रूप से अत्यंत मूल्यवान धातुकर्म कोयले के साथ भारत का सबसे महत्वपूर्ण और सबसे बड़ा कोयला क्षेत्र माना जाता है, कहाँ स्थित है?
(A) पश्चिम बंगाल
(B) छत्तीसगढ़
(C) मध्य प्रदेश
(D) झारखंड

58. तमिलनाडु के नेवेली में लिग्नाइट (भूरा कोयला) के महत्वपूर्ण निक्षेप पाए जाते हैं। राजस्थान में, प्रमुख लिग्नाइट निक्षेप प्रसिद्ध रूप से निम्नलिखित में से किस स्थान से निकाले जाते हैं?
(A) पलाना और बरसिंगसर
(B) जावर और राजपुरा दरीबा
(C) खेतड़ी और सिंघाना
(D) मोरीजा और बानोल

59. निम्नलिखित में से कौन-सा भारत का सबसे पुराना तेल उत्पादक राज्य है?
(A) गुजरात
(B) असम
(C) महाराष्ट्र
(D) तमिलनाडु

60. भारत में प्राकृतिक गैस के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. कोयले की तुलना में कम कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन के कारण प्राकृतिक गैस को एक पर्यावरण अनुकूल ईंधन माना जाता है।
II. हजीरा-विजयपुर-जगदीशपुर एचवीजे पाइपलाइन भारत की पहली अंतर-राज्यीय गैस पाइपलाइन थी।
III. प्राकृतिक गैस स्वतंत्र रूप से नहीं पाई जा सकती; यह हमेशा तेल क्षेत्रों में कच्चे तेल के साथ जुड़ी पाई जाती है।
IV. शहरी प्रदूषण को कम करने के लिए परिवहन क्षेत्र में संपीड़ित प्राकृतिक गैस (सीएनजी) का उपयोग तेजी से बढ़ रहा है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल I, II और IV
(C) केवल II, III और IV
(D) केवल I, III और IV

NODIA

61. प्राकृतिक गैस का प्राथमिक घटक, जो इसे एक कुशल ईंधन स्रोत बनाता है, वह है:
(A) मीथेन
(B) प्रोपेन
(C) ब्यूटेन
(D) एथेन

62. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I : तेल/गैस क्षेत्र
P. अंकलेश्वर
Q. डिगबोई
R. मंगला

S. बेसिन (वसई)

सूची II : राज्य

1. राजस्थान
2. असम
3. अपतटीय महाराष्ट्र
4. गुजरात

(A) P-4, Q-2, R-1, S-3
(B) P-2, Q-4, R-3, S-1
(C) P-4, Q-1, R-2, S-3
(D) P-1, Q-2, R-4, S-3

63. मलांजखंड निक्षेप, जो भारत के तांबा उत्पादन के एक बड़े हिस्से का प्रतिनिधित्व करते हैं, कहाँ स्थित हैं?
(A) राजस्थान
(B) झारखंड
(C) छत्तीसगढ़
(D) मध्य प्रदेश

64. प्रसिद्ध हट्टी और कोलार खदानें ऐतिहासिक रूप से किस अलोह खनिज के निष्कर्षण से जुड़ी हैं?
(A) चांदी
(B) प्लैटिनम
(C) सोना
(D) तांबा

65. चूना पत्थर सामान्यतः निम्नलिखित में से किस प्रकार की चट्टानों से जुड़ा हुआ पाया जाता है?
(A) बहिर्भेदी और अंतर्भेदी आग्नेय चट्टान संरचनाएं
(B) अवसादी चट्टानें
(C) क्वार्टजाइट और शिस्ट सहित कायांतरित चट्टान संरचनाएं
(D) लावा प्रवाह से प्राप्त ज्वालामुखीय बेसाल्ट संरचनाएं

66. भारत की वर्तमान खनिज नीति और प्रत्यक्ष विदेशी निवेश दिशानिर्देशों के तहत, गैर-धातु और गैर-ईंधन अयस्कों के खनन और अन्वेषण के लिए स्वचालित मार्ग के तहत अनुमत प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की अधिकतम सीमा क्या है?
(A) 49%
(B) 74%
(C) 51%
(D) 100%

67. खान एवं खनिज (विकास एवं विनियमन) संशोधन अधिनियम ने खनिज रियायतों को प्रदान करने के तरीके में एक बड़ा संरचनात्मक बदलाव पेश किया। मुख्य खनिज ब्लॉकों के आवंटन के लिए वर्तमान अनिवार्य तरीका क्या है?
(A) पारदर्शी प्रतिस्पर्धी ई-नीलामी
(B) 'पहले आओ, पहले पाओ' के आधार पर
(C) मुख्यमंत्री द्वारा विवेकाधीन आवंटन
(D) भारतीय खान ब्यूरो द्वारा आयोजित लॉटरी प्रणाली

68. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A) : अभ्रक का उपयोग संधारित्रों (कैपेसिटर) और विद्युत रोधियों के निर्माण में बड़े पैमाने पर किया जाता है।
कारण (R) : अभ्रक उच्च वोल्टेज का सामना कर सकता है और इसमें उत्कृष्ट परावैद्युत गुण होते हैं।
उपयुक्त कथनों के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

69. अम्ल खदान जल-निकासी, जो खनन का एक गंभीर पर्यावरणीय परिणाम है, सबसे आमतौर पर किसके खनन से जुड़ा है?
(A) कोयला और सल्फाइड अयस्क
(B) बॉक्साइट
(C) चूना पत्थर और डोलोमाइट
(D) जिप्सम

70. भारत के पूर्वी तट के साथ उत्तर से दक्षिण की ओर निम्नलिखित प्रमुख लौह अयस्क निर्यात बंदरगाहों का सही भौगोलिक क्रम चुनिए:
(A) पारादीप, विशाखापत्तनम, चेन्नई
(B) विशाखापत्तनम, पारादीप, चेन्नई
(C) चेन्नई, विशाखापत्तनम, पारादीप
(D) पारादीप, चेन्नई, विशाखापत्तनम

71. कोयले और भारी खनिज निक्षेपों की सघन सांद्रता के कारण भारत में किस भू-आकृतिक क्षेत्र को अक्सर "भारत का रूर" कहा जाता है?
(A) मालवा का पठार
(B) छोटानागपुर का पठार
(C) दक्कन ट्रैप
(D) शिलांग का पठार

72. भारत में खनिजों की आयात-निर्यात स्थिति के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सबसे सटीक है?
(A) भारत कच्चे अपरिष्कृत पेट्रोलियम के लिए एक प्रमुख शुद्ध निर्यातक देश के रूप में कार्य करता है।
(B) भारत तांबा संसाधनों में पूर्ण आत्मनिर्भरता बनाए रखता है और सभी आयातों से बचता है।
(C) भारत लौह अयस्क का निर्यात करता है लेकिन कोकिंग कोयले का आयात करता है।
(D) बढ़ती घरेलू मांग को पूरा करने के लिए भारत अभ्रक के विदेशी आयात पर अत्यधिक निर्भर है।

73. आवर्त सारणी में, अधिकांश दुर्लभ मृदा तत्व निम्नलिखित में से किस श्रेणी से संबंधित हैं?

Downloaded from www.pdf.tube

(A) एक्टिनाइड्स
(B) हैलोजन
(C) क्षार धातुएं
(D) लैंथेनाइड्स

74. परमाणु ऊर्जा विभाग के तहत कौन-सा सार्वजनिक क्षेत्र का उपक्रम भारत में तटीय बालू निक्षेपों से दुर्लभ मृदा खनिजों के खनन और प्रसंस्करण के लिए मुख्य रूप से उत्तरदायी है?
(A) इंडिया रेयर अर्थ्स लिमिटेड
(B) राष्ट्रीय खनिज विकास निगम
(C) हिंदुस्तान कॉपर लिमिटेड
(D) मिनरल एक्सप्लोरेशन कॉरपोरेशन लिमिटेड

75. भारत में, प्राथमिक हीरा निक्षेप आमतौर पर किस भूवैज्ञानिक संरचना में पाए जाते हैं:
(A) बेसाल्टिक डाइक
(B) किम्बरलाइट पाइप्स
(C) क्वार्टज शिराएं
(D) बॉक्साइट लेटेराइट

76. भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण की भूमिका के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण मैक्रो-स्तरीय भूवैज्ञानिक मानचित्रण और खनिज संसाधनों का मूल्यांकन करता है।
II. भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण निजी कंपनियों को व्यावसायिक खनन पट्टे प्रदान करता है।
III. भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण भूवैज्ञानिक मानचित्र और रिपोर्ट प्रकाशित करता है जो प्रारंभिक खनिज अन्वेषण में सहायता करते हैं।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल I और III
(C) केवल II और III
(D) I, II और III

77. भारत की ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए विदेशों में तेल और गैस संपत्तियों का अधिग्रहण करने में मुख्य रूप से कौन-सी भारतीय इकाई संलग्न है?
(A) ओएनजीसी विदेश लिमिटेड
(B) ऑयल इंडिया लिमिटेड
(C) गेल (इंडिया) लिमिटेड
(D) रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड

78. बॉक्साइट के औद्योगिक प्रसंस्करण में, एल्युमीनियम में अपचयित होने से पहले निम्नलिखित में से कौन-सा मध्यवर्ती उत्पाद पहले निकाला जाता है?
(A) जटिल एल्युमीनियम सिलिकेट यौगिक
(B) उच्च घनत्व एल्युमीनियम कार्बाइड मैट्रिक्स
(C) एल्युमिना
(D) संश्लेषित पिघला हुआ क्रायोलाइट गालक घोल

79. निम्नलिखित में से किस अधात्विक खनिज को वात्या भट्टी में एक अग्निसह सामग्री (बिना पिघले उच्च तापमान सहन करने में सक्षम) के रूप में अत्यधिक मूल्यवान माना जाता है?
(A) जिप्सम
(B) सेंधा नमक
(C) अभ्रक
(D) फायरक्ले (अग्निसह मिट्टी)

80. कुद्रेमुख खदानों से लौह अयस्क को निर्यात के लिए मंगलुरु बंदरगाह तक मुख्य रूप से कैसे ले जाया जाता है?
(A) समर्पित बहु-लेन एक्सप्रेस राजमार्गों के माध्यम से
(B) विशेष रूप से घरेलू नदी नेविगेशन द्वारा
(C) पाइपलाइन के माध्यम से स्लरी (घोल) के रूप में
(D) हवाई रज्जुमार्ग (रोपवे) द्वारा

NODIA

81. इस्पात निर्माण में इसके प्राथमिक उपयोग के अलावा, मैंगनीज किसके उत्पादन के लिए भी एक आवश्यक कच्चा माल है:
(A) सांद्र सल्फ्यूरिक अम्ल उत्पादन
(B) ब्लीचिंग पाउडर
(C) उच्च ग्रेड पोर्टलैंड सीमेंट निर्माण
(D) उच्च-ऑक्टेन विमानन ईंधन शोधन

82. कोयले के प्रकारों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. पीठ में उच्चतम कार्बन सामग्री और उच्चतम तापीय मान होता है।
II. लिग्नाइट एक निम्न श्रेणी का भूरा कोयला है, जो उच्च नमी सामग्री के साथ नरम होता है।
III. बिटुमिनस कोयला व्यावसायिक अनुप्रयोगों में सबसे व्यापक रूप से इस्तेमाल किया जाने वाला कोयला है।
IV. एन्थ्रेसाइट कार्बन के उच्चतम प्रतिशत के साथ सबसे कठोर कोयला है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल II, III और IV
(C) केवल I, III और IV
(D) I, II, III और IV

83. भारत में पेट्रोलियम शोधन के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?
(A) भारत कच्चे तेल का आयात करते हुए परिष्कृत पेट्रोलियम उत्पादों का निर्यात करता है।
(B) भारत में संचालित सभी पेट्रोलियम शोधन सुविधाएं सख्ती से केंद्र सरकार के स्वामित्व और प्रबंधन में हैं।
(C) जामनगर रिफाइनरी परिसर भारत में सबसे बड़ी सार्वजनिक क्षेत्र की तेल रिफाइनरी सुविधा के रूप में कार्य करता है।
(D) भारतीय औद्योगिक सुविधाओं में कुल कच्चा तेल शोधन क्षमता 2000 के बाद से लगातार स्थिर बनी हुई है।

84. जब प्राकृतिक गैस भूमिगत जलाशयों में कच्चे तेल से पूरी तरह मुक्त पाई जाती है, तो इसे किस नाम से जाना जाता है?

(A) पेट्रोलियम-संबद्ध जलाशय गैस
(B) हाइड्रोजन सल्फाइड युक्त खारी गैस
(C) गैर-संबद्ध गैस
(D) गैर-पारंपरिक शेल गैस भंडार

85. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची I : खनन केंद्र
P. कोरबा
Q. खेतड़ी
R. बैलाडिला
S. मकराना

सूची II : निकाला गया खनिज
1. लौह अयस्क
2. बॉक्साइट / कोयला
3. तांबा
4. संगमरमर

(A) P-2, Q-3, R-1, S-4
(B) P-3, Q-1, R-2, S-4
(C) P-4, Q-3, R-1, S-2
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

86. राजस्थान में चंदेरिया और देबारी प्रगलन परिसर मुख्य रूप से किसके प्रसंस्करण से जुड़े हैं?
(A) तांबा और सोना
(B) लोहा और इस्पात
(C) एल्युमीनियम
(D) सीसा और जस्ता

87. उच्च श्रेणी के चूना पत्थर की विशेष रूप से निम्नलिखित में से किस औद्योगिक अनुप्रयोग में आवश्यकता होती है?
(A) भारी भट्ठी में पकी ईंटों के निर्माण के लिए एक प्राथमिक संरचनात्मक कच्चे माल के रूप में
(B) लोहे के प्रगलन में गालक (फ्लक्स) के रूप में
(C) वाणिज्यिक ग्रेड प्लास्टर ऑफ पेरिस निर्माण सामग्री का उत्पादन करने के लिए
(D) संश्लेषित पेट्रोकेमिकल उद्योग में एक बुनियादी कार्बनिक घटक के रूप में

88. संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क वर्गीकरण दिशानिर्देशों के अनुसार खनिज अन्वेषण के मानक अनुक्रमिक चरणों को शुरुआत से अंत के क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. सामान्य अन्वेषण (G2)
II. प्राथमिक सर्वेक्षण (G4)
III. विस्तृत अन्वेषण (G1)
IV. अन्वेषण / प्रोस्पेक्टिंग (G3)

(A) II, IV, I, III
(B) IV, II, I, III
(C) II, I, IV, III
(D) I, II, III, IV

89. खान मंत्रालय द्वारा लागू की गई 'खानों की स्टार रेटिंग' प्रणाली का उद्देश्य खनन के किस पहलू का मूल्यांकन और संवर्धन करना है?
(A) खदान की समग्र व्यावसायिक लाभप्रदता और वार्षिक शुद्ध राजस्व सृजन
(B) सभी भूमिगत शाफ्ट की कुल ऊर्ध्वाधर गहराई और इंजीनियरिंग सुरक्षा
(C) खनन कंपनी द्वारा प्राप्त प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का अनुपात
(D) टिकाऊ और पर्यावरण के अनुकूल खनन प्रथाएं

90. वर्तमान खनन नियमों के तहत, पट्टेदार द्वारा 'खदान बंद करने की योजना' तैयार की जानी चाहिए। इस योजना का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?
(A) खनन किए गए क्षेत्र का पुनर्वास करना और उत्खनन के बाद के नुकसान को कम करना
(B) आगे बिना किसी परिचालन या वित्तीय लागत के सभी सक्रिय खनन शाफ्टों को सुरक्षित रूप से छोड़ना
(C) मौजूदा खनन पट्टे के स्वामित्व को सीधे किसी विदेशी वाणिज्यिक इकाई को स्वचालित रूप से स्थानांतरित करना
(D) पूरे उत्खनित खनन क्षेत्र को स्थायी रूप से पुनर्नियोजित करना और एक शहरी आवासीय क्षेत्र में बदलना

www.nodia.in

Click Here to Buy book on Flipkart

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) वह खनिज जो पिघलाने पर धातु प्रदान करता है और सामान्यतः चमकदार दिखाई देता है
धात्विक खनिज वे अकार्बनिक प्राकृतिक पदार्थ हैं जिन्हें उच्च तापमान पर पिघलाने से धातुएं प्राप्त होती हैं। ये खनिज सामान्यतः कठोर, चमकदार तथा तापीय और विद्युत चालकता से युक्त होते हैं। इनमें लचीलापन और आघातवर्धनीयता पाई जाती है, जिससे इन्हें तार या चादर में ढाला जा सकता है। लोहा, तांबा, सोना और एल्युमीनियम इसके प्रमुख उदाहरण हैं, जो विश्व भर में औद्योगिक विकास तथा बुनियादी ढांचे में सहायक हैं।

2. (D) अभ्रक, चूना पत्थर, जिप्सम
अधात्विक खनिजों में धातुओं की उपस्थिति नहीं होती है और इन्हें पिघलाने पर कोई नई धातु प्राप्त नहीं की जा सकती है। अभ्रक, चूना पत्थर तथा जिप्सम पूर्णतः अधात्विक खनिजों के वर्ग में आते हैं। अभ्रक का उपयोग विद्युत उद्योग में विद्युतरोधी के रूप में, चूना पत्थर का निर्माण कार्य एवं सीमेंट निर्माण में और जिप्सम का उपयोग उर्वरक उत्पादन में किया जाता है। ये अवसादी शैलों में मिलते हैं।

3. (A) प्लैटिनम
धात्विक खनिजों को लौह, अलौह और बहुमूल्य धातुओं में विभाजित किया जाता है। प्लैटिनम एक अत्यधिक दुर्लभ, उच्च आर्थिक मूल्य वाला और बहुमूल्य धात्विक खनिज है। इसका उपयोग मुख्य रूप से आभूषण निर्माण, औद्योगिक उत्प्रेरक, रासायनिक प्रक्रियाओं तथा इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों में किया जाता है। प्लैटिनम अपनी जंग-रोधी क्षमता, उच्च गलनांक और असाधारण स्थायित्व के लिए जाना जाता है। सोने और चांदी की तरह यह बहुमूल्य धातु है।

4. (C) मैग्नेटाइट
मैग्नेटाइट सर्वश्रेष्ठ गुणवत्ता वाला लौह अयस्क है, जिसमें लोहे की मात्रा 70% तक होती है। इसमें प्राकृतिक रूप से उत्कृष्ट चुंबकीय गुण पाए जाते हैं, जिसके कारण इसका उपयोग विद्युत और इलेक्ट्रॉनिक उद्योगों में चुंबकीय घटकों के निर्माण हेतु व्यापक स्तर पर किया जाता है। इसका रंग गहरा काला होता है। भारत में हेमेटाइट के बाद मैग्नेटाइट का तकनीकी और औद्योगिक महत्व अत्यधिक अधिक माना जाता है।

5. (A) ओडिशा-झारखंड पट्टी
बादामपहाड़ खदानें ओडिशा के मयूरभंज जिले में स्थित हैं, जो भारत की प्रसिद्ध ओडिशा-झारखंड लौह अयस्क पट्टी का एक अभिन्न अंग हैं। इस क्षेत्र में उच्च श्रेणी का हेमेटाइट लौह अयस्क प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। झारखंड के सिंहभूम जिले की खदानें भी इसी पट्टी के अंतर्गत आती हैं। यह संरचना देश के इस्पात उद्योग के लिए कच्चे माल का प्राथमिक स्रोत प्रदान करती है।

6. (D) कर्नाटक
कुद्रेमुख लौह अयस्क निक्षेप भारत के कर्नाटक राज्य के चिक्कमगलुरु जिले में पश्चिमी घाट की पहाड़ियों में स्थित हैं। 'कुद्रेमुख' नाम घोड़े के मुख के समान आकृति के कारण पड़ा है। यह विश्व के सबसे बड़े लौह अयस्क निक्षेपों में से एक माना जाता है। यहाँ से निकाला जाने वाला अयस्क निर्यात किया जाता है, जिसे पाइपलाइन द्वारा मंगलुरु बंदरगाह तक पहुँचाया जाता है।

7. (B) इस्पात और मिश्र धातु निर्माण
मैंगनीज एक अत्यधिक महत्वपूर्ण धात्विक खनिज है, जिसका मुख्य उपयोग इस्पात तथा फेरो-मैंगनीज मिश्र धातुओं के निर्माण में किया जाता है। एक टन इस्पात बनाने के लिए लगभग 10 किलोग्राम मैंगनीज की आवश्यकता होती है। यह इस्पात को मजबूती, कठोरता और जंग-रोधी क्षमता प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त, मैंगनीज का उपयोग ब्लीचिंग पाउडर, शुष्क सेल बैटरियों और कांच उद्योग में भी व्यापक स्तर पर होता है।

8. (C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
भारत अपने समृद्ध भंडार से उच्च श्रेणी के लौह अयस्क का निर्यात जापान तथा दक्षिण कोरिया जैसे देशों को करता है। इसलिए पहला कथन सत्य है। हालांकि, भारत के पास अपनी विशाल घरेलू इस्पात निर्माण क्षमता और कई बड़े इस्पात संयंत्र उपलब्ध हैं। घरेलू क्षमता की कमी का दावा असत्य है, क्योंकि भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा कच्चा इस्पात उत्पादक देश माना जाता है।

9. (D) मध्य प्रदेश
भारत में मध्य प्रदेश मैंगनीज अयस्क का सबसे बड़ा उत्पादक राज्य है, जो देश के कुल उत्पादन में उच्चतम हिस्सेदारी रखता है। मध्य प्रदेश के बालाघाट और छिंदवाड़ा जिले मैंगनीज के विशाल खनन क्षेत्रों के लिए प्रसिद्ध हैं। बालाघाट की भारवेली खदान एशिया की सबसे बड़ी भूमिगत मैंगनीज खदान मानी जाती है। यहाँ का अयस्क उच्च गुणवत्ता का होता है, जिसका उपयोग उद्योगों में होता है।

10. (A) केवल I और II
बॉक्साइट एल्युमीनियम का प्राथमिक अयस्क है, जो एल्युमीनियम सिलिकेट से समृद्ध चट्टानों के अपक्षय और अपघटन से निर्मित होता है। मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में स्थित अमरकंटक पठार, मैकाल पहाड़ियां तथा कटनी क्षेत्र प्रमुख उत्पादक क्षेत्र हैं। भारत में ओडिशा बॉक्साइट का सबसे बड़ा उत्पादक राज्य है, जबकि राजस्थान में इसका उत्पादन

Downloaded from www.pdf.tube

नहीं होता है। अतः पहला तथा दूसरा विवरण ही पूर्णतः सत्य माना जाता है।

11. (B) बॉक्साइट
ओडिशा के कोरापुट जिले में स्थित पंचपतमाली निक्षेप भारत के सबसे महत्वपूर्ण और समृद्ध बॉक्साइट संसाधनों में से एक हैं। यह क्षेत्र उच्च श्रेणी के बॉक्साइट अयस्क का विशाल भंडार प्रदान करता है, जिसका उपयोग राष्ट्रीय एल्युमीनियम कंपनी द्वारा एल्युमिना शोधन तथा एल्युमीनियम उत्पादन के लिए व्यापक रूप से किया जाता है। ओडिशा भारत में कुल उत्पादन में प्रथम स्थान पर बना हुआ है।

12. (B) सस्ती बिजली की नियमित और व्यापक आपूर्ति
एल्युमीनियम प्रगलन एक अत्यधिक ऊर्जा-गहन प्रक्रिया है, जिसमें एक टन एल्युमीनियम का उत्पादन करने के लिए भारी मात्रा में विद्युत की आवश्यकता होती है। इसलिए, सस्ती, नियमित और प्रचुर मात्रा में विद्युत आपूर्ति एल्युमीनियम संयंत्र की स्थापना के लिए सबसे प्राथमिक कारक है। जलविद्युत या तापीय विद्युत केंद्रों की निकटता इस उद्योग की लागत को कम करने तथा सफल संचालन के लिए आवश्यक होती है।

13. (A) उच्च परावैद्युत सामर्थ्य और निम्न शक्ति क्षति के कारण
अभ्रक एक अधात्विक खनिज है जो पतली पट्टियों में आसानी से विभाजित हो सकता है। इसमें असाधारण उच्च परावैद्युत सामर्थ्य, कम शक्ति क्षति गुणांक, उच्च वोल्टेज प्रतिरोधकता और उत्कृष्ट विद्युतरोधी गुण पाए जाते हैं। इन्हीं विशिष्ट भौतिक गुणों के कारण अभ्रक को विद्युत एवं इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योग में संधारित्र, ट्रांसफार्मर तथा उच्च-वोल्टेज उपकरणों के निर्माण में एक अनिवार्य कच्चे माल के रूप में प्रयोग किया जाता है।

14. (C) अभ्रक
झारखंड और बिहार के सीमावर्ती क्षेत्रों में विस्तृत कोडरमा-गया-हजारीबाग पट्टी भारत में अभ्रक का प्रमुख उत्पादक क्षेत्र है। इसे ऐतिहासिक रूप से विश्व की सर्वश्रेष्ठ गुणवत्ता वाले अभ्रक के उत्पादन के लिए जाना जाता है। कोडरमा जिला भारत की अभ्रक राजधानी के रूप में प्रसिद्ध रहा है। यहाँ से उत्पादित अभ्रक का उपयोग विद्युत, इलेक्ट्रॉनिक्स तथा अन्य उद्योगों की मांग पूरी करने में होता है।

15. (D) केवल IV
भारत में एन्थ्रेसाइट कोयले के भंडार अत्यंत सीमित हैं और यह प्रायद्वीपीय भारत के सभी राज्यों में नहीं पाया जाता। भारत में एन्थ्रेसाइट का एकमात्र महत्वपूर्ण निक्षेप जम्मू और कश्मीर के कालाकोट क्षेत्र में स्थित है। इसके विपरीत, गोंडवाना कोयला दामोदर घाटी में तथा टर्शियरी कोयला पूर्वोत्तर भारत में पाया जाता है। अतः चौथा विवरण गलत है, जिसके आधार पर सही उत्तर का चयन हुआ है।

16. (C) गोंडवाना प्रणाली
भारत का लगभग 98% कोयला भंडार और उत्पादन का अधिकांश हिस्सा गोंडवाना संरचना प्रणाली से संबंधित है। यह कोयला लगभग 200 मिलियन वर्ष पुराना है। धातुकर्म ग्रेड कोयला मुख्य रूप से इसी गोंडवाना क्रम की शैल श्रेणियों में स्थित है, जो दामोदर, महानदी, गोदावरी और सोन नदी घाटियों में विस्तृत है। झरिया, रानीगंज और बोकारो गोंडवाना कोयला क्षेत्रों के प्रमुख उदाहरण माने जाते हैं।

17. (B) कालाकोट, जम्मू और कश्मीर
एन्थ्रेसाइट कोयला उच्चतम गुणवत्ता वाला, अत्यधिक कठोर और सर्वोच्च तापीय क्षमता वाला कोयला माना जाता है, जिसमें कार्बन की मात्रा 80% से 95% तक होती है। भारत में एन्थ्रेसाइट प्रकार के कोयले के एकमात्र उल्लेखनीय भंडार केंद्र शासित प्रदेश जम्मू और कश्मीर के रियासी जिले में स्थित कालाकोट क्षेत्र में पाए जाते हैं। यह क्षेत्र अपनी विशिष्ट संरचना के लिए जाना जाता है।

NODIA

18. (D) असम
डिगबोई, नाहरकटिया और मोरान-हुगरीजन भारत के सबसे पुराने और महत्वपूर्ण तेल क्षेत्र हैं, जो असम राज्य में ब्रह्मपुत्र घाटी में स्थित हैं। डिगबोई भारत ही नहीं बल्कि एशिया का पहला स्थान है जहाँ 1889 में कच्चे तेल की खोज की गई थी। ये तेल क्षेत्र पूर्वोत्तर भारत के खनिज तेल उत्पादन के मुख्य आधार हैं, जो देश के ऊर्जा क्षेत्र में योगदान देते हैं।

19. (A) भारत की केंद्र सरकार
मुंबई हाई तेल क्षेत्र मुंबई तट से लगभग 176 किलोमीटर दूर अरब सागर में स्थित एक विशाल अपतटीय Petroleum भंडार है। चूंकि यह क्षेत्र भारत के अनन्य आर्थिक क्षेत्र में स्थित है, इसलिए भारत के संविधान के अनुसार समुद्र तल में स्थित सभी खनिज संसाधन पूरी तरह से भारत की केंद्र सरकार के क्षेत्राधिकार और स्वामित्व के अंतर्गत आते हैं। इसका संचालन ओएनजीसी करता है।

20. (C) आंध्र प्रदेश
कृष्णा-गोदावरी बेसिन भारत के आंध्र प्रदेश राज्य के तटीय क्षेत्र और उससे लगे बंगाल की खाड़ी के अपतटीय क्षेत्र में स्थित एक अत्यंत समृद्ध भूवैज्ञानिक संरचना है। इस बेसिन में प्राकृतिक गैस और कच्चे तेल के विशाल भंडार मौजूद हैं। यहाँ की गई प्राकृतिक गैस की खोजों ने भारत के ऊर्जा क्षेत्र में परिवर्तन किया है, जो देश में गैस उत्पादन को बढ़ाता है।

21. (A) कर्नाटक में कुद्रेमुख
कर्नाटक का कुद्रेमुख क्षेत्र विशेष रूप से लौह अयस्क के विशाल निक्षेपों और खनन के लिए प्रसिद्ध है, न कि तांबे के लिए। दूसरी ओर, भारत में तांबा खनन के प्रमुख क्षेत्रों में राजस्थान की खेतड़ी खदानें, मध्य प्रदेश की मलांजखंड खदानें और झारखंड का पूर्वी सिंहभूम जिला शामिल हैं। इस प्रकार, कुद्रेमुख तांबा उत्खनन से संबंधित न होकर लौह अयस्क से संबद्ध है।

22. (A) P-2, Q-1, R-4, S-3
भारत के प्रमुख खनिजों का उनके उत्पादक राज्यों के साथ सही मिलान इस प्रकार है: तांबा उत्पादन में मध्य प्रदेश अग्रणी स्थान रखता है। बॉक्साइट का सबसे बड़ा उत्पादक राज्य ओडिशा है।

लिग्नाइट कोयले के सर्वाधिक निक्षेप और उत्पादन तमिलनाडु के नेवेली में होते हैं। वहीं, अभ्रक के उत्पादन में आंध्र प्रदेश देश में प्रथम स्थान पर है। यह वर्गीकरण भौगोलिक दृष्टि से सटीक है।

23. (B) झुंझुनू
हिंदुस्तान कॉपर लिमिटेड का प्रसिद्ध खेतड़ी तांबा परिसर राजस्थान के झुंझुनू जिले में अरावली पर्वत श्रेणी के क्षेत्र में स्थित है। यह क्षेत्र भारत की सबसे पुरानी और प्रमुख तांबा खनन पट्टियों में से एक है। यहाँ प्राचीन काल से ही तांबे का निष्कर्षण किया जाता रहा है। खेतड़ी में तांबा अयस्क के उत्खनन के साथ-साथ उसके प्रगलन के लिए सुविधाएं स्थापित की गई हैं।

24. (C) सीसा और जस्ता
राजस्थान में उदयपुर के निकट स्थित जावर खदानें भारत में सीसा और जस्ता अयस्कों के निष्कर्षण के लिए विश्व प्रसिद्ध हैं। इन खदानों का संचालन हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड द्वारा किया जाता है। जावर क्षेत्र में ऐतिहासिक खनन इतिहास रहा है। सीसा और जस्ता सामान्यतः प्राकृतिक रूप से एक साथ मिश्रित पाए जाते हैं। भारत में जस्ता उत्पादन में राजस्थान का लगभग एकाधिकार बना हुआ है।

25. (A) ओडिशा, आंध्र प्रदेश, गुजरात
भारत में कुल बॉक्साइट भंडार के आधार पर राज्यों का अवरोही क्रम ओडिशा, आंध्र प्रदेश और गुजरात है। ओडिशा देश के कुल बॉक्साइट संसाधनों का 50% से अधिक हिस्सा अपने पास रखता है, जिसमें पंचपतमाली जैसे विशाल भंडार शामिल हैं। इसके बाद आंध्र प्रदेश के तटीय क्षेत्र का स्थान आता है, जबकि गुजरात अपने भावनगर और जामनगर निक्षेपों के साथ तीसरे स्थान पर आता है।

26. (A) चूना पत्थर
चूना पत्थर सीमेंट उद्योग के निर्माण का सबसे मुख्य और आवश्यक बुनियादी कच्चा माल है। कुल सीमेंट उत्पादन में भारी मात्रा में चूना पत्थर की आवश्यकता होती है। इसके अतिरिक्त, लोहा और इस्पात उद्योग में वात्या भट्टी के भीतर लौह अयस्क को पिघलाने के दौरान सिलिका तथा अन्य अशुद्धियों को दूर करने के लिए चूना पत्थर का उपयोग गालक के रूप में किया जाता है।

27. (B) वोलास्टोनाइट और जास्पर
भारत में राजस्थान राज्य का कुछ विशिष्ट अधात्विक खनिजों के उत्पादन में लगभग शत-प्रतिशत एकाधिकार है। वोलास्टोनाइट और जास्पर ऐसे ही विशिष्ट अधात्विक खनिज हैं जिनका संपूर्ण राष्ट्रीय उत्पादन मुख्य रूप से राजस्थान में ही होता है। वोलास्टोनाइट का उपयोग मुख्य रूप से सेरामिक्स, पेंट और प्लास्टिक उद्योगों में किया जाता है, जबकि जास्पर सजावटी पत्थर के रूप में प्रयुक्त होता है। अतः यह सत्य है।

28. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।
एल्युमीनियम निष्कर्षण प्रक्रिया में बॉक्साइट से प्राप्त एल्युमिना को पिघलाकर विद्युत अपघटन द्वारा शुद्ध एल्युमीनियम प्राप्त किया जाता है। यह प्रक्रिया अत्यधिक ऊर्जा-गहन होती है और उत्पादन लागत में बड़ा योगदान केवल विद्युत ऊर्जा का होता है। यही कारण है कि एल्युमीनियम प्रगलन संयंत्र हमेशा सस्ती, प्रचुर और निर्बाध विद्युत आपूर्ति वाले स्रोतों के समीप ही स्थापित किए जाते हैं। अतः कथन और कारण दोनों सत्य हैं।

29. (A) निजी अन्वेषण और टिकाऊ खनन को बढ़ावा देना
राष्ट्रीय खनिज नीति 2019 भारत के खनन क्षेत्र में पारदर्शिता, नियमन और सतत विकास को बढ़ावा देने के उद्देश्य से लागू की गई थी। इस नीति का मुख्य ध्यान निजी क्षेत्र के निवेश को आकर्षित करना, आधुनिक तकनीकों के उपयोग से खनिज अन्वेषण को तेज करना तथा पर्यावरण की दृष्टि से टिकाऊ खनन प्रथाओं को लागू करना है। इसमें निजी भागीदारी पर बल दिया गया है।

30. (C) खनन प्रभावित व्यक्तियों और क्षेत्रों के हित में कार्य करना
खान एवं खनिज संशोधन अधिनियम के तहत प्रत्येक खनन प्रभावित जिले में जिला खनिज फाउंडेशन की स्थापना की गई है। यह एक ट्रस्ट है जिसका प्राथमिक उद्देश्य खनन गतिविधियों से प्रभावित स्थानीय समुदायों, विशेष रूप से जनजातीय आबादी के पुनर्वास, स्वास्थ्य, पेयजल, शिक्षा और सतत विकास हेतु कार्य करना है। खनन कंपनियों द्वारा इसमें अंशदान दिया जाता है, जो जनहित में उपयोग होता है।

31. (D) देश भर में विस्तृत खनिज अन्वेषण को बढ़ावा देना
राष्ट्रीय खनिज अन्वेषण ट्रस्ट की स्थापना संशोधन अधिनियम के तहत खान मंत्रालय के अधीन की गई थी। इस वैधानिक निकाय का प्राथमिक उद्देश्य पूरे देश में खनिज संसाधनों के विस्तृत, गहन और आधुनिक तकनीकों पर आधारित भूवैज्ञानिक अन्वेषण को बढ़ावा देना है। खनन पट्टाधारक अपनी रॉयल्टी का एक निश्चित प्रतिशत इस फंड में जमा करते हैं, जिसका उपयोग खोज कार्यों में किया जाता है।

32. (A) केवल I और II
खनन गतिविधियों से व्यापक स्तर पर भूमि का क्षरण, मृदा अपरदन और वनों की कटाई होती है। साथ ही सल्फाइड अयस्कों एवं कोयले के हवा व पानी के संपर्क में आने से अम्ल खदान जल-निकासी नामक गंभीर जल प्रदूषण समस्या पैदा होती है। हालांकि, भूमिगत खनन से भूमि धंसने का जोखिम बना रहता है, समाप्त नहीं होता। अतः प्रथम और द्वितीय कथन ही सत्य हैं।

33. (B) मेघालय
'रैट-होल खनन' प्रथा मुख्य रूप से भारत के पूर्वोत्तर राज्य मेघालय से जुड़ी हुई है। इस प्रक्रिया में कोयले की परतों तक पहुँचने के लिए अत्यंत संकीर्ण और असुरक्षित सुरंगें खोदी जाती हैं, जिनमें प्रवेश करके स्थानीय श्रमिक कोयला निकालते हैं। राष्ट्रीय हरित अधिकरण ने इस पर प्रतिबंध लगा दिया है,

Click Here to Buy book on Amazon

क्योंकि यह पर्यावरण और सुरक्षा की दृष्टि से अत्यधिक घातक मानी जाती है।

34. (D) ओडिशा
ओडिशा समग्र रूप से धात्विक खनिजों के उत्पादन के मामले में भारत का सबसे अग्रणी राज्य/ है। देश के कुल लौह अयस्क उत्पादन में ओडिशा की हिस्सेदारी अकेले 50% से अधिक है। इसके अतिरिक्त, ओडिशा भारत में बॉक्साइट, क्रोमाइट और मैंगनीज अयस्कों का भी सबसे बड़ा उत्पादक है। केओंझर और मयूरभंज जैसे जिले इसके प्रमुख खनिज क्षेत्र हैं, जो अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाते हैं।

35. (A) इसमें धातुकर्म गोंडवाना कोयले के प्रमुख भंडार शामिल हैं।
राजस्थान कई महत्वपूर्ण अधात्विक खनिजों का एक समृद्ध उत्पादक राज्य है, लेकिन इसमें धातुकर्म गोंडवाना कोयले के भंडार नहीं पाए जाते हैं। भारत में गोंडवाना कोयला मुख्य रूप से झारखंड, पश्चिम बंगाल और छत्तीसगढ़ की दामोदर घाटी में केन्द्रित है। राजस्थान केवल लिग्नाइट कोयले के उत्पादन के लिए जाना जाता है। अतः पहला कथन राजस्थान की खनिज संरचना का गलत विवरण प्रस्तुत करता है

36. (C) तांबा
यद्यपि भारत लौह अयस्क, बॉक्साइट और अभ्रक जैसे खनिजों में समृद्ध और आत्मनिर्भर है, लेकिन तांबे के घरेलू भंडार और उत्पादन की दृष्टि से अत्यधिक घाटे में है। भारत अपनी तांबे की विशाल औद्योगिक और विद्युत मांग को पूरी करने के लिए विदेशी आयातों पर अत्यधिक निर्भर रहता है। भारत में तांबे के निष्कर्षण की क्षमता घरेलू आवश्यकता की तुलना में कम है।

37. (A) विशाखापत्तनम
आंध्र प्रदेश में स्थित विशाखापत्तनम बंदरगाह भारत का एक प्रमुख और गहरा प्राकृतिक समुद्री बंदरगाह है जो लौह अयस्क के विशाल निर्यात को संभालता है। यह मुख्य रूप से छत्तीसगढ़ में स्थित बैलाडिला की खदानों से प्राप्त उच्च श्रेणी के लौह अयस्क को निर्यात करने का कार्य करता है। यह अयस्क विशेष रूप से जापान और दक्षिण कोरिया को भेजा जाता है।

38. (A) केवल I, II और IV
भारत में तटीय बालू निक्षेपों में मोनाजाइट पाया जाता है, जो दुर्लभ मृदा तत्वों और थोरियम का प्राथमिक स्रोत है। स्थायी चुंबक, स्मार्टफोन तथा इलेक्ट्रिक वाहनों के निर्माण में दुर्लभ मृदा खनिजों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। केरल और तमिलनाडु के तटीय बालू में ये खनिज प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं, इसलिए तीसरा कथन असत्य है तथा अन्य तीनों कथन पूर्णतः सही हैं।

39. (B) मानक पोर्टलैंड सीमेंट का थोक निर्माण
दुर्लभ मृदा तत्व उच्च तकनीक वाले आधुनिक अनुप्रयोगों के लिए जाने जाते हैं। इनका उपयोग स्मार्टफोन डिस्प्ले, पवन टर्बाइनों के स्थायी चुंबक, लेजर, एयरोस्पेस घटकों और रक्षा प्रणालियों के निर्माण में किया जाता है। मानक पोर्टलैंड सीमेंट का थोक निर्माण चूना पत्थर, मिट्टी और जिप्सम जैसे सामान्य अधात्विक खनिजों से किया जाता है, जिसमें दुर्लभ मृदा तत्वों का कोई उपयोग नहीं होता है।

40. (C) मध्य प्रदेश
भारत की प्रसिद्ध पन्ना हीरा खनन पट्टी मध्य प्रदेश राज्य के विंध्य क्षेत्र में विस्तृत है। पन्ना जिला भारत में हीरे के व्यावसायिक खनन और उत्पादन का एकमात्र स्वीकृत क्षेत्र है, जहाँ एनएमडीसी द्वारा मजगवां में हीरे की खानों का संचालन किया जाता है। ये हीरे प्राथमिक किम्बरलाइट पाइप्स तथा नदी घाटी के जलोढ़ निक्षेपों से प्राप्त किए जाते हैं।

41. (D) कोलकाता
भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण की स्थापना वर्ष 1851 में मुख्य रुप से कोयले के निक्षेपों की खोज हेतु की गई थी। यह भारत सरकार के खान मंत्रालय के तहत कार्यरत एक प्रमुख राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगठन माना जाता है। इसका केंद्रीय मुख्यालय पश्चिम बंगाल राज्य के कोलकाता में स्थित है। यह संस्था संपूर्ण देश में भूवैज्ञानिक मानचित्रण, खनिज अन्वेषण और भू-वैज्ञानिक अध्ययनों के निष्पादन के लिए उत्तरदायी सर्वोच्च संस्था है।

NODIA

42. (A) P-2, Q-4, R-1, S-3
भारत की खनिज पट्टियों का उनकी विशेषताओं से सही मिलान इस प्रकार है: उत्तर-पूर्वी पठारी क्षेत्र कोयला, लौह अयस्क और बॉक्साइट का सबसे समृद्ध केंद्र है। दक्षिण-पश्चिमी पठारी क्षेत्र लौह अयस्क और बॉक्साइट से समृद्ध है लेकिन कोयले का अभाव है। उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र तांबा, जस्ता और अधात्विक खनिजों में समृद्ध है। हिमालयी पट्टी में तांबा, सीसा और जस्ता के छितरे हुए खनिज निक्षेप पाए जाते हैं।

43. (B) भारतीय खान ब्यूरो
भारतीय खान ब्यूरो भारत सरकार के खान मंत्रालय के अधीन गठित एक शीर्ष नियामक संस्था है। इसकी स्थापना 1948 में की गई थी। आईबीएम का प्राथमिक कार्य देश में खानों के वैज्ञानिक एवं सतत विकास का विनियमन करना, पर्यावरण संरक्षण सुनिश्चित करना, खदान योजनाओं को मंजूरी देना तथा खनिज सांख्यिकी का संकलन एवं प्रकाशन करना है। यह प्राकृतिक संसाधनों का प्रबंधन करता है।

44. (B) आधार रेखा से 200 समुद्री मील
संयुक्त राष्ट्र समुद्री कानून संधि (यूएनसीएलओएस) के प्रावधानों के अनुसार, तटीय राष्ट्रों को अपनी प्रादेशिक समुद्र तट रेखा से 200 समुद्री मील (लगभग 370 किलोमीटर) की दूरी तक फैले अनन्य आर्थिक क्षेत्र में सभी जैविक और अजैविक संसाधनों, जिनमें खनिज संसाधन शामिल हैं, का अन्वेषण, दोहन, संरक्षण और प्रबंधन करने का पूर्ण संप्रभु अधिकार प्राप्त होता है। यह अंतरराष्ट्रीय कानून द्वारा मान्यता प्राप्त है।

45. (A) मैंगनीज, निकेल, तांबा, कोबाल्ट
मध्य हिंद महासागर बेसिन में गहरे समुद्र के तल पर पाए जाने वाले बहुधात्विक नोड्यूल्स आलू के आकार की खनिज गांठें

होती हैं। ये नोड्यूल्स मुख्य रूप से मैंगनीज, निकेल, तांबा और कोबाल्ट जैसी अत्यंत मूल्यवान एवं सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण धातुओं से समृद्ध होते हैं। भारत को अंतरराष्ट्रीय समुद्रतल प्राधिकरण द्वारा हिंद महासागर के इस क्षेत्र में संसाधनों के अन्वेषण का विशेष अधिकार प्राप्त हुआ है।

46. (C) शुष्क सेल बैटरी और ब्लीचिंग पाउडर निर्माण
इस्पात तथा मिश्र धातुओं के निर्माण के अलावा मैंगनीज रासायनिक उद्योग में एक प्रमुख घटक के रूप में कार्य करता है। मैंगनीज डाइऑक्साइड का उपयोग शुष्क सेल बैटरियों में प्राथमिक रूप से किया जाता है। इसके अतिरिक्त, मैंगनीज का उपयोग ब्लीचिंग पाउडर के औद्योगिक उत्पादन, कांच उद्योग, कीटनाशक रसायनों के निर्माण तथा पेंट और वार्निश उद्योगों में सुखाने वाले एजेंट के रूप में बहुतायत से होता है।

47. (D) सिलिका अशुद्धियों को हटाने के लिए गालक (फ्लक्स)
लोहा और इस्पात उद्योग में वात्या भट्टी के भीतर लौह अयस्क को पिघलाते समय चूना पत्थर का उपयोग एक गालक के रूप में किया जाता है। उच्च तापमान पर चूना पत्थर टूटकर कैल्शियम ऑक्साइड बनाता है, जो अयस्क में मौजूद सिलिका और अन्य अशुद्धियों के साथ प्रतिक्रिया करके तरल धातुमल बनाता है। यह धातुमल पिघले लोहे से आसानी से अलग कर दिया जाता है।

48. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।
भारत अपनी कच्चे तेल की कुल खपत का लगभग 85% हिस्सा अंतरराष्ट्रीय बाजारों से आयात करता है। भारत में तलछटी बेसिनों से घरेलू कच्चे तेल का उत्पादन देश की तेजी से बढ़ती आबादी, औद्योगिकीकरण और परिवहन क्षेत्र की व्यापक ईंधन मांगों को पूरी करने के लिए अत्यंत अपर्याप्त है। अतः कथन और कारण दोनों पूर्णतः सही हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

49. (B) कोयला
कोयला एक अधात्विक, कार्बनिक और दहनशील जीवाश्म ईंधन खनिज है। यह लाखों वर्षों पूर्व दलदली क्षेत्रों में वनस्पतियों और प्राचीन पेड़-पौधों के दाब एवं ताप के प्रभाव में दबे रहने तथा जैविक अपघटन के परिणामस्वरूप निर्मित हुआ है। चूंकि इसमें उच्च प्रतिशत में कार्बन पाया जाता है, इसलिए यह जलकर अत्यधिक तापीय ऊर्जा उत्पन्न करता है। इसका उपयोग तापीय विद्युत उत्पादन में होता है।

50. (A) III, II, I, IV
कोयले में निश्चित कार्बन सामग्री के आधार पर आरोही क्रम इस प्रकार है: पीठ सबसे प्राथमिक रूप है जिसमें उच्च नमी होती है। लिग्नाइट भूरा कोयला है जिसमें कार्बन कम होता है। बिटुमिनस व्यावसायिक रूप से व्यापक उपयोग में आने वाला कोयला है। एन्थ्रेसाइट उच्चतम कार्बन सामग्री और सर्वोच्च गुणवत्ता वाला कठोर कोयला माना जाता है। अतः सही क्रम III, II, I, IV है।

51. (A) जापान
छत्तीसगढ़ के दंतेवाड़ा जिले में स्थित बैलाडिला पहाड़ी श्रृंखला अपने अति-उच्च श्रेणी के हेमेटाइट लौह अयस्क निक्षेपों के लिए प्रसिद्ध है। 'बैलाडिला' का नाम बैल के कूबड़ जैसी इसकी प्राकृतिक आकृति के कारण पड़ा है। यहाँ की खदानों से निकाले जाने वाले उच्च गुणवत्ता वाले लौह अयस्क को विशाखापत्तनम बंदरगाह द्वारा मुख्य रूप से जापान और दक्षिण कोरिया जैसे देशों को निर्यात किया जाता है।

52. (C) कर्नाटक
बेल्लारी-चित्रदुर्ग-चिक्कमगलुरु-तुमकुरु पट्टी भारत की एक अत्यंत समृद्ध और विशाल लौह अयस्क उत्पादक पट्टी है, जो पूरी तरह से कर्नाटक राज्य में स्थित है। इस क्षेत्र में उच्च श्रेणी के हेमेटाइट और मैग्नेटाइट लौह अयस्क के प्रचुर भंडार पाए जाते हैं। चिक्कमगलुरु जिले में स्थित कुद्रेमुख की खदानें और बेल्लारी क्षेत्र इस पट्टी के मुख्य खनन केंद्र हैं, जो उद्योगों को कच्चा माल देते हैं।

53. (A) ओडिशा
यद्यपि वर्तमान वार्षिक उत्पादन के आंकड़ों में मध्य प्रदेश मैंगनीज अयस्क का सबसे बड़ा उत्पादक राज्य है, लेकिन भारत में कुल मैंगनीज अयस्क संसाधनों और भंडार का सबसे बड़ा हिस्सा ओडिशा राज्य के पास उपलब्ध है। ओडिशा के पास देश के कुल मैंगनीज अयस्क भंडार का लगभग 44% हिस्सा है। केओंझर, सुंदरगढ़, कोरापुट और बोलंगीर जिले ओडिशा के प्रमुख मैंगनीज खनन क्षेत्र माने जाते हैं।

54. (A) केवल I और II
बॉक्साइट एल्युमीनियम का प्राथमिक अयस्क है, जिससे पहले रासायनिक प्रक्रिया द्वारा एल्युमिना और फिर विद्युत अपघटन से एल्युमीनियम प्राप्त किया जाता है। मिश्र धातु बनने पर एल्युमीनियम की हल्की प्रकृति और उच्च सामर्थ्य के कारण इसका उपयोग विमानन और ऑटोमोबाइल उद्योगों में होता है। बॉक्साइट सामान्यतः भूपर्पटी के निकट सतही चट्टानों के अपक्षय से बनता है, अतः तीसरा विवरण गलत माना जाता है।

55. (B) आंध्र प्रदेश
नेल्लोर अभ्रक पट्टी भारत के आंध्र प्रदेश राज्य में स्थित है, जो उच्च गुणवत्ता वाले मस्कोवाइट अभ्रक के उत्पादन के लिए पूरे देश में प्रसिद्ध है। आंध्र प्रदेश भारत का सबसे बड़ा अभ्रक उत्पादक राज्य है। नेल्लोर जिले की अभ्रक पट्टी में उत्तम श्रेणी के हल्के हरे और रँगहीन अभ्रक के भंडार पाए जाते हैं। यहाँ से उत्पादित अभ्रक का उपयोग उद्योगों में होता है।

56. (C) भीलवाड़ा और अजमेर
राजस्थान में अभ्रक का उत्पादन मुख्य रूप से अरावली पर्वत श्रेणी के साथ स्थित भीलवाड़ा, अजमेर, उदयपुर और जयपुर जिलों के आसपास केंद्रित है। भीलवाड़ा जिला राजस्थान का प्रमुख अभ्रक खनन केंद्र है, जिसे राजस्थान की अभ्रक नगरी भी कहा जाता है। यहाँ पेग्माटाइट शैल संरचनाओं में अभ्रक पाया जाता है। उत्पादित अभ्रक का उपयोग विद्युत रोधी सामग्री और इलेक्ट्रॉनिक पुर्जों में होता है।

Downloaded from www.pdf.tube

57. (D) झारखंड
झरिया कोयला क्षेत्र भारत के झारखंड राज्य के धनबाद जिले में स्थित है। यह भारत का सबसे बड़ा, सबसे पुराना और सर्वाधिक महत्वपूर्ण कोयला क्षेत्र है। झरिया भारत में धातुकर्म ग्रेड कोयले का एकमात्र प्राथमिक स्रोत है, जो इस्पात उद्योग के संचालन के लिए अनिवार्य है। दामोदर नदी घाटी में स्थित यह क्षेत्र अपनी विशाल उत्पादन क्षमता और गुणवत्ता के लिए जाना जाता है।

58. (A) पलाना और बरसिंगसर
राजस्थान में लिग्नाइट के प्रमुख और समृद्ध निक्षेप बीकानेर जिले के पलाना और बरसिंगसर क्षेत्रों में स्थित हैं। इसके अतिरिक्त बाड़मेर जिले के कपूरडी तथा नागौर जिले के मेड़ता रोड में भी लिग्नाइट पाया जाता है। तमिलनाडु के नेवेली के बाद राजस्थान भारत में लिग्नाइट का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक राज्य है। यहाँ से प्राप्त लिग्नाइट का उपयोग विद्युत उत्पादन में किया जाता है।

59. (B) असम
असम भारत का सबसे पुराना खनिज तेल उत्पादक राज्य है। भारत में सर्वप्रथम खनिज तेल की खोज 1889 में असम के डिगबोई क्षेत्र में हुई थी, तथा 1901 में डिगबोई में ही एशिया की पहली तेल रिफाइनरी की स्थापना की गई थी। इसके बाद नाहरकटिया और मोरान जैसे तेल क्षेत्रों की खोज असम में हुई। असम का तेल इतिहास अत्यंत समृद्ध माना जाता है।

60. (B) केवल I, II और IV
प्राकृतिक गैस कोयले और तेल की तुलना में बहुत कम कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जित करती है, इसलिए इसे स्वच्छ एवं पर्यावरण अनुकूल ईंधन माना जाता है। एचवीजे भारत की पहली अंतर-राज्यीय गैस पाइपलाइन थी। परिवहन क्षेत्र में सीएनजी का प्रयोग प्रदूषण घटाने में सहायक है। प्राकृतिक गैस स्वतंत्र गैस क्षेत्रों में भी पाई जा सकती है, इसलिए तीसरा विवरण असत्य माना जाता है। अतः विकल्प B सही है।

61. (A) मीथेन
प्राकृतिक गैस का प्राथमिक और सबसे मुख्य रासायनिक घटक मीथेन होता है, जो इसकी कुल संरचना का लगभग 70% से 90% तक हिस्सा बनाता है। मीथेन एक अत्यंत स्वच्छ, गंधहीन और रंगहीन हाइड्रोकार्बन गैस है, जो जलने पर बहुत कम अवशेष छोड़ती है और उच्च ऊष्मीय मान प्रदान करती है। इसमें इथेन, प्रोपेन और ब्यूटेन जैसी अन्य गैसें भी कम मात्रा में मौजूद रहती हैं।

62. (A) P-4, Q-2, R-1, S-3
भारत के प्रमुख तेल और गैस क्षेत्रों का उनके संबंधित राज्यों से सही मिलान इस प्रकार है: अंकलेश्वर गुजरात का प्रसिद्ध तेल क्षेत्र है। डिगबोई असम का ऐतिहासिक और सबसे पुराना तेल क्षेत्र है। मंगला तेल क्षेत्र राजस्थान के बाड़मेर जिले में स्थित एक विशाल तेल खोज है। वहीं, वसई क्षेत्र महाराष्ट्र के तट के पास अरब सागर में स्थित अपतटीय क्षेत्र है।

63. (D) मध्य प्रदेश
मलांजखंड तांबा निक्षेप मध्य प्रदेश राज्य के बालाघाट जिले में स्थित एक विशाल तांबा खनन क्षेत्र है। यह भारत में तांबा अयस्क का सबसे बड़ा एकल भंडार माना जाता है, जो देश के कुल तांबा संसाधनों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा प्रदान करता है। इसका संचालन हिंदुस्तान कॉपर लिमिटेड द्वारा किया जाता है। यहाँ का तांबा अयस्क मुख्य रूप से चालकोपायराइट के रूप में मिलता है।

64. (C) सोना
हट्टी और कोलार की खदानें भारत के कर्नाटक राज्य में स्थित ऐतिहासिक एवं प्रसिद्ध स्वर्ण खनन केंद्र हैं। कर्नाटक में स्थित कोलार गोल्ड फील्ड्स दुनिया की सबसे गहरी सोने की खदानों में से एक रही है, हालांकि अब यह बंद हो चुकी है। रायचूर जिले में स्थित हट्टी सोने की खदान भारत में वर्तमान में व्यावसायिक सोने का उत्पादन करने वाली सक्रिय खदान है।

65. (B) अवसादी चट्टानें
चूना पत्थर मुख्य रूप से अवसादी प्रकार की शैल संरचनाओं में पाया जाने वाला एक अधात्विक खनिज है। यह समुद्रों, झीलों और नदियों की तलहटी में जैविक अवशेषों जैसे शंख, प्रवाल और जीवों के कंकालों के जमाव तथा रासायनिक अवक्षेपण की प्रक्रिया द्वारा निर्मित होता है। कड़प्पा और विंध्य काल की अवसादी चट्टानें भारत में चूना पत्थर के प्रमुख भंडार स्थल मानी जाती हैं।

66. (D) 100%
भारत सरकार की वर्तमान प्रत्यक्ष विदेशी निवेश नीति के तहत गैर-धातु खनिजों, गैर-ईंधन खनिजों और धातुओं के खनन तथा अन्वेषण गतिविधियों के लिए स्वचालित मार्ग के माध्यम से 100% एफडीआई की अनुमति प्रदान की गई है। इस नीतिगत निर्णय का मुख्य उद्देश्य खनन क्षेत्र में आधुनिक प्रौद्योगिकियों, वैश्विक पूंजी और उन्नत अन्वेषण तकनीकों को आकर्षित करना है ताकि संसाधनों का दोहन हो सके।

NODIA

67. (A) पारदर्शी प्रतिस्पर्धी ई-नीलामी
खान एवं खनिज संशोधन अधिनियम 2015 ने भारत में खनिज पट्टों के आवंटन की प्रक्रिया में बड़ा पारदर्शी सुधार पेश किया। इसके तहत विवेकाधीन व्यवस्था तथा 'पहले आओ, पहले पाओ' की पुरानी प्रणाली को समाप्त कर मुख्य खनिजों के सभी खनन पट्टों के आवंटन के लिए पारदर्शी प्रतिस्पर्धी ई-नीलामी प्रक्रिया को अनिवार्य कानूनी माध्यम बना दिया गया है, जिससे क्षेत्र में निष्पक्षता बढ़ी है।

68. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।
अभ्रक का उपयोग संधारित्रों तथा विद्युत रोधियों के निर्माण में बड़े पैमाने पर किया जाता है। इसका कारण यह है कि अभ्रक में असाधारण रूप से उच्च परावैद्युत सामर्थ्य, उच्च वोल्टेज प्रतिरोधकता, निम्न शक्ति क्षति गुणांक और उच्च तापीय सहनशीलता पाई जाती है। यह बिना पिघले अत्यधिक उच्च

वोल्टेज को आसानी से सहन कर सकता है। अतः कथन और कारण दोनों पूर्णतः सत्य हैं।

69. (A) कोयला और सल्फाइड अयस्क
अम्ल खदान जल-निकासी एक अति गंभीर पर्यावरणीय जल प्रदूषण समस्या है जो मुख्य रूप से कोयला और सल्फाइड अयस्कों के उत्खनन से जुड़ी है। जब ये सल्फाइड खनिज उत्खनन के दौरान जल और वायुमंडलीय ऑक्सीजन के संपर्क में आते हैं, तो रासायनिक प्रतिक्रिया द्वारा सल्फ्यूरिक अम्ल और घुलनशील भारी धातुओं का निर्माण होता है, जो जल स्रोतों को अत्यधिक अम्लीय और दूषित बनाता है।

70. (A) पारादीप, विशाखापत्तनम, चेन्नई
भारत के पूर्वी तट पर स्थित प्रमुख लौह अयस्क निर्यात बंदरगाहों का उत्तर से दक्षिण की ओर सही भौगोलिक क्रम पारादीप, विशाखापत्तनम और चेन्नई है। पारादीप बंदरगाह मुख्य रूप से ओडिशा और झारखंड के लौह अयस्क को संभालता है। विशाखापत्तनम छत्तीसगढ़ के बैलाडिला अयस्क का निर्यात करता है। जबकि चेन्नई बंदरगाह दक्षिण-पूर्वी क्षेत्रों के व्यापार की आवश्यकताओं को पूरा करने का कार्य करता है।

71. (B) छोटानागपुर का पठार
छोटानागपुर के पठार को अपनी अत्यधिक समृद्ध खनिज संपदा, विशेषकर कोयला, लौह अयस्क, मैंगनीज, बॉक्साइट, अभ्रक और तांबे के विशाल निक्षेपों के कारण "भारत का रूर" कहा जाता है। यह नाम जर्मनी के प्रसिद्ध रूर क्षेत्र के नाम पर रखा गया है, जो कोयला और खनिज संसाधनों के लिए जाना जाता है। यह पठार भारत के प्रमुख भारी उद्योगों का मुख्य आधार है।

72. (C) भारत लौह अयस्क का निर्यात करता है लेकिन कोकिंग कोयले का आयात करता है।
भारत के पास लौह अयस्क के विशाल भंडार मौजूद हैं, जिसके कारण यह चीन, जापान और दक्षिण कोरिया जैसे देशों को लौह अयस्क का व्यापक निर्यात करता है। इसके विपरीत, भारत के पास उच्च गुणवत्ता वाले धातुकर्म कोकिंग कोयले के भंडार अत्यंत सीमित हैं जो इस्पात निर्माण हेतु आवश्यक हैं। इसलिए भारत को ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों से कोकिंग कोयले का आयात करना पड़ता है।

73. (D) लैंथेनाइड्स
आवर्त सारणी में 17 दुर्लभ मृदा तत्वों में से 15 तत्व मुख्य रूप से लैंथेनाइड श्रृंखला से संबंधित हैं। इनके साथ स्कैंडियम और येट्रियम को भी समान रासायनिक गुणों के कारण दुर्लभ मृदा श्रेणी में शामिल किया जाता है। ये तत्व आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक्स, उत्प्रेरक तथा स्थायी चुंबकों के निर्माण में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और विभिन्न उच्च-तकनीकी क्षेत्रों में प्रयुक्त होते हैं।

74. (A) इंडिया रेयर अर्थ्स लिमिटेड
इंडिया रेयर अर्थ्स लिमिटेड (आईआरईएल) परमाणु ऊर्जा विभाग के प्रशासनिक नियंत्रण के तहत कार्यरत भारत सरकार का एक मिनीरत्न सार्वजनिक क्षेत्र का प्रमुख उपक्रम है। इसकी स्थापना 1950 में की गई थी। इस संस्था का मुख्य कार्य भारत के तटीय भारी बालू निक्षेपों का उत्खनन, पृथक्करण और प्रसंस्करण करना है, जिससे दुर्लभ मृदा यौगिकों और परमाणु-ग्रेड खनिजों का उत्पादन किया जाता है।

75. (B) किम्बरलाइट पाइप्स
प्राकृतिक हीरे प्राथमिक रूप से किम्बरलाइट पाइप्स और लैम्प्रोलाइट नामक शैल संरचनाओं में पाए जाते हैं। ये पाइप्स अत्यधिक गहराई, उच्च दाब और उच्च तापमान वाली परिस्थितियों में निर्मित ज्वालामुखी नलिकाएं होती हैं जो मेंटल से हीरे को भूपर्पटी तक लाती हैं। मध्य प्रदेश के पन्ना में स्थित मजगवां खदान भारत में किम्बरलाइट पाइप प्रकार के प्राथमिक हीरा निक्षेप का प्रमुख उदाहरण है।

76. (B) केवल I और III
भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण का मुख्य कार्य देश भर में मैक्रो-स्तरीय भूवैज्ञानिक मानचित्रण करना, क्षेत्रीय खनिज निक्षेपों का मूल्यांकन करना तथा भूवैज्ञानिक मानचित्र एवं शोध रिपोर्ट प्रकाशित करना है। जीएसआई एक अन्वेषण निकाय है, यह निजी कंपनियों को व्यावसायिक खनन पट्टे प्रदान नहीं करता है। व्यावसायिक खनन पट्टे देने का अधिकार राज्य सरकारों के पास होता है। अतः पहला और तीसरा कथन सत्य है।

77. (A) ओएनजीसी विदेश लिमिटेड
ओएनजीसी विदेश लिमिटेड (ओवीएल) भारत की राष्ट्रीय तेल कंपनी 'तेल एवं प्राकृतिक गैस निगम' की पूर्ण स्वामित्व वाली प्रमुख विदेशी शाखा है। इसका प्राथमिक रणनीतिक उद्देश्य भारत से बाहर विदेशी राज्यों में कच्चे तेल और प्राकृतिक गैस परिसंपत्तियों का अधिग्रहण, अन्वेषण और विकास करना है। यह कंपनी विभिन्न देशों में तेल एवं गैस परियोजनाओं में हिस्सेदारी रखकर भारत की ऊर्जा सुरक्षा को सुदृढ़ बनाती है।

78. (C) एल्युमिना
बॉक्साइट से शुद्ध एल्युमीनियम धातु प्राप्त करने की प्रक्रिया दो मुख्य चरणों में पूरी होती है। पहले चरण में 'बेयर प्रक्रम' द्वारा कच्चे बॉक्साइट अयस्क का रासायनिक शोधन करके एक सफेद चूर्ण के रूप में मध्यवर्ती उत्पाद एल्युमिना प्राप्त किया जाता है। इसके पश्चात दूसरे चरण में हॉल-हेरोल्ट प्रक्रम द्वारा पिघले हुए एल्युमिना का विद्युत अपघटन करके शुद्ध एल्युमीनियम धातु का निष्कर्षण किया जाता है।

79. (D) फायरक्ले (अग्निसह मिट्टी)
फायरक्ले एक अधात्विक अवसादी मृत्तिका खनिज है जो मुख्य रूप से एल्युमीनियम सिलिकेट से निर्मित होता है। इसमें अत्यधिक उच्च तापमान सहन करने की असाधारण क्षमता होती है बिना पिघले या नरम हुए। इसी अग्निसह गुण के कारण वात्या भट्टी, कांच की भट्टियों, सीमेंट भट्टियों और कोक ओवन की आंतरिक दीवारों को अस्तर देने हेतु फायरक्ले ईंटों का व्यापक उपयोग किया जाता है।

Click Here to Buy book on Flipkart

80. (C) पाइपलाइन के माध्यम से स्लरी (घोल) के रूप में
कर्नाटक के कुद्रेमुख में स्थित खदानों से निकाले जाने वाले लौह अयस्क को निर्यात हेतु पश्चिमी तट पर स्थित मंगलुरु बंदरगाह तक पहुँचाने के लिए एक विशेष पाइपलाइन प्रणाली का उपयोग किया जाता है। इसमें लौह अयस्क को महीन पीसकर पानी के साथ मिलाकर एक तरल स्लरी के रूप में परिवर्तित किया जाता है और फिर पाइपलाइन द्वारा बंदरगाह तक पंप किया जाता है।

81. (B) ब्लीचिंग पाउडर
मैंगनीज का उपयोग न केवल इस्पात और फेरो-मिश्र धातु उद्योग में मजबूती प्रदान करने के लिए किया जाता है, बल्कि यह रासायनिक उद्योग में ब्लीचिंग पाउडर के निर्माण हेतु भी एक अति आवश्यक कच्चा माल है। इसके अलावा, मैंगनीज डाइऑक्साइड का उपयोग कांच उद्योग में, शुष्क सेल बैटरियों, कीटनाशकों, पेंट और वार्निश में शोषक एजेंट के रूप में बहुतायत से किया जाता है।

82. (B) केवल II, III और IV
पीठ कोयला निर्माण का पहला चरण है जिसमें कार्बन की मात्रा सबसे कम और नमी का प्रतिशत सर्वाधिक होता है, अतः पहला कथन गलत है। लिग्नाइट उच्च नमी वाला निम्न श्रेणी का भूरा कोयला है। बिटुमिनस व्यावसायिक एवं औद्योगिक रूप से सर्वाधिक उपयोग किया जाने वाला कोयला है। एन्थ्रेसाइट कार्बन की उच्चतम मात्रा के साथ सबसे कठोर और उत्तम कोयला है। अतः विकल्प B सही है।

83. (A) भारत कच्चे तेल का आयात करते हुए परिष्कृत पेट्रोलियम उत्पादों का निर्यात करता है।
भारत की घरेलू कच्चा तेल शोधन क्षमता इसकी अपनी कच्चे तेल की खपत की तुलना में अधिक है। भारत विदेशों से भारी मात्रा में कच्चे तेल का आयात करता है और अपनी आधुनिक रिफाइनरियों में उसका प्रसंस्करण करके पेट्रोल, डीजल और अन्य ईंधन जैसे परिष्कृत पेट्रोलियम उत्पादों का बड़े पैमाने पर अंतरराष्ट्रीय बाजारों में निर्यात करता है, जिससे विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है।

84. (C) गैर-संबद्ध गैस
जब भूगर्भीय संरचनाओं या चट्टानी परतों के बीच प्राकृतिक गैस भूमिगत जलाशयों में बिना किसी कच्चे तेल की उपस्थिति के स्वतंत्र रूप से पाई जाती है, तो उसे 'गैर-संबद्ध प्राकृतिक गैस' कहा जाता है। इसके विपरीत, जो प्राकृतिक गैस कच्चे तेल की परतों के ऊपर या उसमें घुली हुई स्थिति में पाए जाती है, उसे 'संबद्ध गैस' के रूप में जाना जाता है।

85. (A) P-2, Q-3, R-1, S-4
खनन केंद्रों और निष्पादित खनिजों का सही मिलान इस प्रकार है: कोरबा कोयला और बॉक्साइट निक्षेपों के लिए प्रसिद्ध है। खेतड़ी भारत का प्रमुख तांबा खनन केंद्र है। बैलाडिला उच्च श्रेणी के हेमेटाइट लौह अयस्क के लिए प्रसिद्ध है। मकराना अपनी अद्वितीय सफ़ेद संगमरमर की खदानों के लिए विश्व भर में प्रसिद्ध है, जिसका उपयोग ताजमहल निर्माण में हुआ था।

86. (D) सीसा और जस्ता
राजस्थान में स्थित चंदेरिया और देबारी प्रगलन परिसर भारत में सीसा और जस्ता धातुओं के निष्कर्षण एवं शोधन के मुख्य केंद्र हैं। चित्तौड़गढ़ जिले में स्थित चंदेरिया स्मेल्टर दुनिया के सबसे बड़े सीसा-जस्ता प्रगलन परिसरों में से एक माना जाता है। उदयपुर में स्थित देबारी स्मेल्टर भी इसी श्रृंखला का भाग है। इन परिसरों का संचालन हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड द्वारा कुशलतापूर्वक किया जाता है।

87. (B) लोहे के प्रगलन में गालक (फ्लक्स) के रूप में
उच्च श्रेणी का चूना पत्थर लोहा और इस्पात उद्योग में वात्या भट्टी के भीतर धात्विक लोहे के प्रगलन हेतु एक गालक के रूप में अत्यंत आवश्यक है। यह पिघलने की प्रक्रिया के दौरान लौह अयस्क में उपस्थित सिलिका, एल्युमिना और अन्य अशुद्धियों के साथ रासायनिक क्रिया करके हल्का धातुमल बनाता है, जो पिघली धातु के ऊपर तैरता है और अलग हो जाता है।

NODIA

88. (A) II, IV, I, III
संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क वर्गीकरण दिशानिर्देशों के अनुसार खनिज संसाधनों के अन्वेषण का मानक अनुक्रमिक क्रम इस प्रकार है: सबसे पहले प्राथमिक सर्वेक्षण (G4) द्वारा खनिज उपस्थिति का पता लगाया जाता है, फिर प्रोस्पेक्टिंग (G3) द्वारा संभावित भंडार का अनुमान होता है, इसके बाद सामान्य अन्वेषण (G2) में डेटा जुटाया जाता है, और अंत में विस्तृत अन्वेषण (G1) द्वारा सटीक मात्रा का निर्धारण होता है।

89. (D) टिकाऊ और पर्यावरण के अनुकूल खनन प्रथाएं
भारत सरकार के खान मंत्रालय द्वारा लागू की गई 'खानों की स्टार रेटिंग' प्रणाली का प्राथमिक उद्देश्य देश में सतत, पर्यावरण अनुकूल और जिम्मेदार खनन प्रथाओं को बढ़ावा देना है। यह रेटिंग प्रणाली खदान पट्टाधारकों का मूल्यांकन वैज्ञानिक खनन प्रथाओं के पालन, पर्यावरण संरक्षण उपायों, वृक्षारोपण, शून्य-अपशिष्ट खनन, स्थानीय समुदायों के कल्याणकारी कार्यों तथा पारदर्शी योजनाओं के क्रियान्वयन के आधार पर प्रदान करती है।

90. (A) खनन किए गए क्षेत्र का पुनर्वास करना और उत्खनन के बाद के नुकसान को कम करना
वर्तमान खनन नियमों के तहत प्रत्येक पट्टाधारक के लिए 'खदान बंद करने की योजना' तैयार करना और उसे भारतीय खान ब्यूरो द्वारा अनुमोदित कराना अनिवार्य है। इस योजना का प्राथमिक उद्देश्य खनन गतिविधियों के समाप्त होने के पश्चात उत्खनित खदान क्षेत्र का वैज्ञानिक पुनर्वास करना, पर्यावरण क्षति को न्यूनतम करना, गड्ढों को भरना तथा क्षेत्र को सुरक्षित सामाजिक-आर्थिक उपयोगों के योग्य बनाना है।

अध्याय 07
भारत के ऊर्जा संसाधन

1. निम्नलिखित में से किस ऊर्जा स्रोत को भारत में पारंपरिक और वाणिज्यिक ऊर्जा स्रोत के रूप में वर्गीकृत किया गया है?
(A) सौर ऊर्जा
(B) कोयला
(C) जलाऊ लकड़ी
(D) बायोगैस

2. पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(A) इनमें पवन, ज्वारीय और भू-तापीय ऊर्जा सम्मिलित हैं।
(B) ये सामान्यतः समाप्य प्रकृति के होते हैं।
(C) इनका दीर्घकालिक उपयोग ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में महत्वपूर्ण योगदान देता है।
(D) ये पारंपरिक रूप से भारत के विद्युत उत्पादन के लिए बेस लोड बनाते रहे हैं।

3. ग्रामीण भारत में निम्नलिखित में से किसे गैर-वाणिज्यिक किंतु पारंपरिक ऊर्जा स्रोत माना जाता है?
(A) प्राकृतिक गैस
(B) पेट्रोलियम
(C) पशु का गोबर
(D) लिग्नाइट

4. गैर-पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों की मुख्य विशेषता क्या है?
(A) इनका उपयोग केवल भारी औद्योगिक अनुप्रयोगों के लिए ही किया जा सकता है।
(B) ये विशुद्ध रूप से जीवाश्मीकृत पादप और जीव-जंतुओं के पदार्थों से प्राप्त होते हैं।
(C) औद्योगिक क्रांति के बाद से इनका उपयोग विद्युत उत्पादन के लिए बड़े पैमाने पर किया जाता रहा है।
(D) ये प्राकृतिक प्रक्रियाओं द्वारा निरंतर पुनर्भरण योग्य होते हैं और सामान्यतः अक्षय होते हैं।

5. निम्नलिखित में से कौन गैर-पारंपरिक ऊर्जा संसाधनों की श्रेणी में नहीं आता है?
(A) फोटोवोल्टिक सौर ऊर्जा प्रणालियाँ
(B) फास्ट ब्रीडर परमाणु रिएक्टर प्रणालियाँ
(C) प्राकृतिक गैस कंबाइंड साइकिल संयंत्र
(D) महासागरीय तापीय ऊर्जा रूपांतरण प्रणालियाँ

6. भारत में गैर-पारंपरिक ऊर्जा संसाधनों की ओर रणनीतिक नीतिगत बदलाव क्यों हो रहा है?
(A) सभी प्रमुख खनन क्षेत्रों में घरेलू कोयला भंडार के पूर्णतः समाप्त हो जाने के कारण।
(B) दीर्घकालिक ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करने, ईंधन आयात पर निर्भरता घटाने और जलवायु लक्ष्यों को पूरा करने के लिए।
(C) क्योंकि गैर-पारंपरिक ऊर्जा प्रतिष्ठानों के लिए न्यूनतम पूंजी और परिचालन निवेश की आवश्यकता होती है।
(D) क्योंकि पारंपरिक जीवाश्म ईंधन विद्युत संयंत्र तकनीकी रूप से ग्रिड लोड का समर्थन करने में असमर्थ हैं।

7. ऊर्जा स्रोत और उसके वर्गीकरण के सही युग्म की पहचान कीजिए।
(A) पेट्रोलियम - गैर-पारंपरिक, वाणिज्यिक
(B) सौर - पारंपरिक, वाणिज्यिक
(C) पीट कोयला - गैर-पारंपरिक, गैर-वाणिज्यिक
(D) पवन - गैर-पारंपरिक, वाणिज्यिक

NODIA

8. भारत के किस राज्य में कोयले का सबसे बड़ा भंडार है, किंतु वह वार्षिक कोयला उत्पादन में प्रायः अन्य राज्यों से पीछे रह जाता है?
(A) झारखंड (B) छत्तीसगढ़
(C) ओडिशा (D) मध्य प्रदेश

9. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A) : भारत की कुल स्थापित विद्युत उत्पादन क्षमता में तापीय ऊर्जा का हिस्सा सबसे बड़ा है।
कारण (R) : भारत के पास उच्च श्रेणी के एंथ्रेसाइट कोयले के विशाल भूगर्भीय भंडार हैं, जो इसे तापीय ऊर्जा के लिए एक अत्यधिक कुशल आधार बनाते हैं।
निम्नलिखित में से सही विकल्प का चयन कीजिए:
(A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(B) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) अभिकथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) अभिकथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

10. भारत सरकार की अल्ट्रा मेगा पावर प्रोजेक्ट्स (UMPP) योजना के तहत, किसी परियोजना को UMPP के रूप में अहर्ताप्राप्त होने के लिए न्यूनतम अनिवार्य स्थापित क्षमता कितनी है?
(A) 1000 MW
(B) 2000 MW
(C) 4000 MW

(D) 5000 MW

11. सूरतगढ़ सुपर थर्मल पावर स्टेशन, जो राजस्थान में बेस लोड पावर का एक प्रमुख योगदानकर्ता है, मुख्य रूप से किस प्रकार के ईंधन का उपयोग करता है?
(A) प्राकृतिक गैस
(B) लिग्नाइट कोयला
(C) संवर्धित यूरेनियम
(D) बिटुमिनस कोयला

12. भारत में जलविद्युत के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. ब्रह्मपुत्र बेसिन भारत में उच्चतम वाणिज्यिक रूप से दोहन योग्य जलविद्युत क्षमता रखता है।
II. जलविद्युत संयंत्रों का उपयोग सामान्यतः उनकी त्वरित शुरुआत और बंद होने की क्षमता के कारण पीक लोड मांग को पूरा करने के लिए किया जाता है।
III. 25 MW क्षमता तक की लघु जलविद्युत परियोजनाओं को नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय के तहत नवीकरणीय ऊर्जा के रूप में वर्गीकृत किया गया है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

13. भारत का सबसे ऊँचा कार्यात्मक जलविद्युत बाँध कौन-सा है, जिसमें महत्वपूर्ण पंप्ड-स्टोरेज क्षमता सम्मिलित है?
(A) भाखड़ा बाँध
(B) हीराकुड बाँध
(C) टिहरी बाँध
(D) सरदार सरोवर बाँध

14. जलविद्युत के संदर्भ में "रन-ऑफ-द-रिवर" परियोजना का सामान्यतः क्या अर्थ है?
(A) नौकायन के लिए मुख्य नदी धारा को समर्पित कृत्रिम नहरों में मोड़ने के लिए निर्मित एक विद्युत परियोजना।
(B) एक जलविद्युत संयंत्र जो केवल भारी मानसून के मौसम में संचालित होता है जब नदी के चैनल जलमग्न होते हैं।
(C) गहरे जलभृतों से भूजल को पास की सतही नदियों में पंप करने के लिए निर्मित एक विशेष परियोजना।
(D) एक ऐसी सुविधा जो जल भंडारण के बिना या न्यूनतम भंडारण के साथ नदी के प्राकृतिक प्रवाह का उपयोग करके विद्युत उत्पन्न करती है।

15. निम्नलिखित में से कौन-सी जलविद्युत परियोजना राजस्थान द्वारा साझा नहीं की जाती है या राजस्थान में स्थित नहीं है?
(A) नाथपा झाकड़ी
(B) माही बजाज सागर
(C) राणा प्रताप सागर
(D) जवाहर सागर

16. भारत में परमाणु ऊर्जा संयंत्रों के संबंध में सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए:
सूची I : परमाणु ऊर्जा संयंत्र
P. रावतभाटा
Q. काकरापार
R. कैगा
S. कुडनकुलम
सूची II : राज्य
1. कर्नाटक
2. तमिलनाडु
3. राजस्थान
4. गुजरात
सही कूट का चयन कीजिए:
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

17. राजस्थान का रावतभाटा परमाणु ऊर्जा संयंत्र मुख्य रूप से किस प्रकार की रिएक्टर तकनीक पर कार्य करता है?
(A) बॉइलिंग वॉटर रिएक्टर (BWR)
(B) दाबित भारी जल रिएक्टर (PHWR)
(C) फास्ट ब्रीडर न्यूक्लियर रिएक्टर (FBR)
(D) लाइट वॉटर ग्रेफाइट-मॉडरेटेड रिएक्टर (LWGR)

18. कुल स्थापित क्षमता के संदर्भ में भारत का सबसे बड़ा परमाणु ऊर्जा स्टेशन कौन-सा है?
(A) कुडनकुलम परमाणु ऊर्जा स्टेशन
(B) तारापुर परमाणु ऊर्जा स्टेशन
(C) राजस्थान परमाणु ऊर्जा स्टेशन
(D) नरोरा परमाणु ऊर्जा स्टेशन

19. भारत में परमाणु ऊर्जा के संबंध में गलत कथन पहचानिए।
(A) परमाणु ऊर्जा वर्तमान में भारत में वाणिज्यिक विद्युत उत्पादन के पांचवें सबसे बड़े प्राथमिक स्रोत के रूप में कार्य करती है।
(B) भारत ने अंतरराष्ट्रीय परमाणु अप्रसार संधि (NPT) के गैर-हस्ताक्षरकर्ता देश के रूप में अपनी स्थिति बनाए रखी है।
(C) घरेलू परमाणु रिएक्टरों के लिए यूरेनियम का खनन पूरी तरह से भारत के भीतर ही किया जाता है, जिससे आयात पर कोई निर्भरता नहीं रहती है।
(D) भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र (BARC) भारत का प्रमुख बहु-विषयक परमाणु अनुसंधान केंद्र है।

20. निम्नलिखित में से किसने भारत के त्रि-स्तरीय परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम को तैयार किया था?
(A) ए. पी. जे. अब्दुल कलाम
(B) विक्रम साराभाई
(C) सतीश धवन
(D) होमी जे. भाभा

Downloaded from www.pdf.tube

21. भारत के त्रि-स्तरीय परमाणु कार्यक्रम के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. चरण 1 में प्राकृतिक यूरेनियम से संचालित दाबित भारी जल रिएक्टरों (PHWR) का उपयोग सम्मिलित है।
II. चरण 2 में चरण 1 से निकाले गए प्लूटोनियम का उपयोग करने वाले फास्ट ब्रीडर रिएक्टर कार्यरत हैं।
III. चरण 3 विखंडनीय यूरेनियम-233 का उत्पादन करने के लिए थोरियम-232 का उपयोग करने वाले उन्नत भारी जल रिएक्टरों पर केंद्रित है।
IV. भारत ने वर्तमान में चरण 3 का पूरी तरह से व्यावसायीकरण कर लिया है और अपनी अधिकांश परमाणु ऊर्जा थोरियम से उत्पन्न करता है।
उपर्युक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल I, III और IV
(C) केवल II, III और IV
(D) I, II, III और IV

22. भारत में थोरियम के विशाल भंडार हैं, जो इसके परमाणु कार्यक्रम के तीसरे चरण के लिए आवश्यक हैं। यह खनिज मुख्य रूप से कहाँ पाया जाता है?
(A) झारखंड के व्यापक कोयला खनन क्षेत्रों में
(B) केरल के तटीय क्षेत्र की मोनाज़ाइट बालू में
(C) तमिलनाडु के प्रमुख लिग्नाइट खनिज निक्षेपों में
(D) राजस्थान में खेतड़ी की समृद्ध तांबे की खदानों में

23. जवाहरलाल नेहरु राष्ट्रीय सौर मिशन (JNNSM) भारत को सौर ऊर्जा में वैश्विक नेता के रूप में स्थापित करने के उद्देश्य से किस वर्ष प्रारंभ किया गया था?
(A) 2008
(B) 2010
(C) 2014
(D) 2015

24. भारत सरकार द्वारा वर्ष 2022 तक प्राप्त की जाने वाली स्थापित सौर ऊर्जा क्षमता का संशोधित लक्ष्य क्या था?
(A) 20 GW
(B) 50 GW
(C) 100 GW
(D) 175 GW

25. नवीन आंकड़ों के अनुसार निम्नलिखित में से कौन-सा अनुक्रम कुल स्थापित सौर ऊर्जा क्षमता के आधार पर भारतीय राज्यों के सही अवरोही क्रम को दर्शाता है?
(A) गुजरात, राजस्थान, तमिलनाडु, कर्नाटक
(B) राजस्थान, गुजरात, कर्नाटक, तमिलनाडु
(C) कर्नाटक, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र
(D) राजस्थान, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, गुजरात

26. भादला सोलर पार्क, जिसे विश्व के सबसे बड़े सोलर पार्कों में से एक माना जाता है, राजस्थान के किस जिले में स्थित है?
(A) जोधपुर
(B) जैसलमेर
(C) बीकानेर
(D) बाड़मेर

NODIA

27. पावागड़ा सोलर पार्क, जो 2000 MW से अधिक विद्युत उत्पन्न करने में सक्षम एक विशाल परियोजना है, किस राज्य में स्थित है?
(A) आंध्र प्रदेश
(B) तेलंगाना
(C) महाराष्ट्र
(D) कर्नाटक

28. प्रमुख सोलर पार्कों और उनके संबंधित राज्यों के संबंध में गलत युग्म पहचानिए।
(A) कर्नूल अल्ट्रा मेगा सोलर पार्क - आंध्र प्रदेश
(B) कामुथी सोलर पावर प्रोजेक्ट - राजस्थान
(C) रीवा अल्ट्रा मेगा सोलर - मध्य प्रदेश
(D) चरंका सोलर पार्क - गुजरात

29. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A) : राजस्थान में भारत की सबसे अधिक स्थापित सौर ऊर्जा क्षमता है।
कारण (R) : राजस्थान को उच्च सौर विकिरण, न्यून वर्षा और सोलर पार्कों के लिए उपयुक्त बंजर भूमि के विशाल भूभाग की उपलब्धता का लाभ मिलता है।
निम्नलिखित में से सही विकल्प का चयन कीजिए:
(A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(B) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) अभिकथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) अभिकथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

30. मुप्पंतल विंड फार्म, जो भारत में सबसे बड़ा चालू तटवर्ती पवन फार्म है, कहाँ स्थित है?
(A) गुजरात
(B) महाराष्ट्र
(C) केरल
(D) तमिलनाडु

31. पवन टर्बाइनों का उपयोग करके वाणिज्यिक रूप से विद्युत उत्पन्न करने के लिए आवश्यक न्यूनतम औसत पवन गति सामान्यतः कितनी मानी जाती है?
(A) 1 - 2 m/s
(B) 4 - 5 m/s
(C) 10 - 12 m/s
(D) 15 - 20 m/s

32. भारत में पवन ऊर्जा के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सबसे सटीक है?
(A) भारत की भौगोलिक पवन ऊर्जा क्षमता लगभग विशेष

रूप से उच्च ऊँचाई वाले हिमालयी क्षेत्र में केंद्रित है।
(B) कुल स्थापित पवन ऊर्जा क्षमता में गुजरात और तमिलनाडु लगातार शीर्ष दो राज्यों में बने हुए हैं।
(C) भारतीय राज्यों में पवन ऊर्जा उत्पादन कैलेंडर वर्ष के सभी महीनों में स्थिर और एकसमान रहता है।
(D) अपतटीय (ऑफशोर) पवन ऊर्जा प्रतिष्ठान वर्तमान में भारत के कुल समग्र पवन ऊर्जा उत्पादन के 50% से अधिक हिस्से के लिए उत्तरदायी हैं।

33. ग्लोबल विंड एनर्जी काउंसिल के नवीन आकलनों के अनुसार, कुल स्थापित पवन ऊर्जा क्षमता के संदर्भ में भारत वैश्विक स्तर पर किस स्थान पर है?
(A) प्रथम
(B) चतुर्थ
(C) सप्तम
(D) दशम

34. बायोमास गैसीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जो ठोस बायोमास को एक दहनशील गैस मिश्रण में परिवर्तित करती है। इस परिणामी गैस मिश्रण को सामान्यतः किस नाम से जाना जाता है?
(A) प्रोड्यूसर गैस (सिनगैस)
(B) प्राकृतिक गैस
(C) द्रवीकृत पेट्रोलियम गैस
(D) संपीड़ित प्राकृतिक गैस

35. भारत में बायोमास ऊर्जा के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. शर्करा उद्योग का एक सह-उत्पाद, खोई (बगास), विद्युत के सह-उत्पादन के लिए बड़े पैमाने पर उपयोग किया जाता है।
II. बायोमास विद्युत उत्पादन सौर या पवन ऊर्जा के विपरीत विद्युत की निरंतर आपूर्ति प्रदान करता है।
III. खुले खेतों में बायोमास अवशेषों को सीधे जलाना ग्रिड से जुड़ी विद्युत उत्पन्न करने का सबसे कुशल तरीका है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I
(B) केवल I और II
(C) केवल II और III
(D) I, II और III

36. कौन-सा तत्व सभी बायोमास ऊर्जा संसाधनों का प्राथमिक रासायनिक आधार बनाता है?
(A) सिलिकॉन
(B) नाइट्रोजन
(C) फास्फोरस
(D) कार्बन

37. कार्बनिक पदार्थों के अवायवीय पाचन के माध्यम से उत्पन्न बायोगैस का मुख्य दहनशील घटक क्या है?
(A) हाइड्रोजन सल्फाइड
(B) कार्बन डाइऑक्साइड
(C) मीथेन
(D) अमोनिया

38. भोजन पकाने के ईंधन और प्रकाश व्यवस्था प्रदान करने के अतिरिक्त, एक ग्रामीण बायोगैस संयंत्र का एक महत्वपूर्ण द्वितीयक कृषि लाभ क्या है?
(A) यह आधुनिक कृषि ट्रैक्टर इंजनों को चलाने के लिए उपयुक्त स्थिर उच्च दाब वाली भाप उत्पन्न करता है।
(B) अवशेष (डाइजेस्टेट स्लरी) मृदा के लिए एक मूल्यवान नाइट्रोजन-समृद्ध जैविक उर्वरक के रूप में कार्य करता है।
(C) यह अत्यधिक खारे भूमिगत जल स्रोतों को पूरी तरह से शुद्ध करता है जिससे वे खेत की सिंचाई के लिए उपयुक्त हो जाते हैं।
(D) यह सीधे प्रभावी संश्लेषित कीटनाशक और रासायनिक यौगिक प्रदान करता है जो खड़ी फसलों की रक्षा करते हैं।

39. जैव-ऊर्जा प्रक्रियाओं के संबंध में सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए:
सूची I : जैव-ऊर्जा प्रक्रिया
P. अवायवीय पाचन
Q. पायरोलिसिस
R. किण्वन
S. प्रत्यक्ष दहन
सूची II : विवरण
1. ऊष्मा उत्पन्न करने के लिए वायु की उपस्थिति में बायोमास का जलना
2. ऑक्सीजन की अनुपस्थिति में जीवाणुओं द्वारा कार्बनिक पदार्थों का अपघटन
3. बायो-ऑयल और चार का उत्पादन करने के लिए ऑक्सीजन की पूर्ण अनुपस्थिति में बायोमास का तापीय अपघटन
4. शर्करा को इथेनॉल में परिवर्तित करने वाली जैविक प्रक्रिया
सही कूट का चयन कीजिए:
(A) P-2, Q-3, R-4, S-1
(B) P-3, Q-2, R-1, S-4
(C) P-2, Q-4, R-3, S-1
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

40. भारत के किस क्षेत्र में अपनी बड़ी ज्वारीय सीमाओं के कारण ज्वारीय ऊर्जा उत्पादन की उच्चतम अनुमानित क्षमता है?
(A) खंभात की खाड़ी
(B) मन्नार की खाड़ी
(C) पाक जलडमरूमध्य
(D) चिल्का झील

41. ज्वारीय ऊर्जा उत्पादन किस विशिष्ट चंद्र कला के दौरान सबसे अधिक प्रभावी होता है, जब ज्वारीय सीमा अपने अधिकतम स्तर पर होती है?
(A) चतुर्थांश चंद्रमाओं के दौरान लघु ज्वार

Click Here to Buy book on Amazon

(B) केवल चंद्र ग्रहण के दौरान
(C) पूर्णिमा और अमावस्या के दौरान वृहत ज्वार
(D) ऊर्जा उत्पादन के लिए ज्वार चंद्र कलाओं से अप्रभावित रहते हैं

42. भारत में निम्नलिखित स्थानों को उनकी अनुमानित ज्वारीय ऊर्जा क्षमता के अवरोही क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. कच्छ की खाड़ी
2. सुंदरबन डेल्टा
3. खंभात की खाड़ी

निम्नलिखित में से कौन-सा सही क्रम है?
(A) 3, 1, 2
(B) 1, 3, 2
(C) 3, 2, 1
(D) 2, 1, 3

43. पूगा घाटी, जिसे भारत में सबसे आशाजनक भू-तापीय ऊर्जा स्थलों में से एक के रूप में जाना जाता है, कहाँ स्थित है?
(A) हिमाचल प्रदेश
(B) उत्तराखंड
(C) सिक्किम
(D) लद्दाख

44. भू-तापीय ऊर्जा के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(A) यह निरंतर विद्युत शक्ति उत्पादन के लिए पृथ्वी के आंतरिक भाग में संग्रहीत तापीय ऊष्मा का उपयोग करती है।
(B) यह दैनिक मौसम के बदलावों और परिवेशी सौर विकिरण पर अत्यधिक निर्भर है।
(C) भू-तापीय ऊर्जा प्रतिष्ठान ग्रिड विद्युत की एक विश्वसनीय और स्थिर बेस लोड आपूर्ति प्रदान करते हैं।
(D) भारत की कुल संभावित भू-तापीय ऊर्जा क्षमता मोटे तौर पर लगभग 10,000 MW अनुमानित है।

45. मणिकर्ण भू-तापीय क्षेत्र, जो अपने उष्ण स्रोतों (हॉट स्प्रिंग्स) और बाइनरी साइकिल पावर प्लांटों की संभावनाओं के लिए जाना जाता है, किस राज्य में स्थित है?
(A) जम्मू और कश्मीर
(B) अरुणाचल प्रदेश
(C) हिमाचल प्रदेश
(D) मेघालय

46. भारत में संभावित भू-तापीय स्थलों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. तत्तापानी भू-तापीय क्षेत्र छत्तीसगढ़ में स्थित है।
II. कैम्बे ग्रेबेन गुजरात में एक प्रमुख भू-तापीय प्रांत है।
III. चुमाथांग हिमालय में एक मान्यता प्राप्त भू-तापीय स्थल है।
IV. राजस्थान में थार मरुस्थल भारत के सबसे बड़े सक्रिय गीज़र रखता है।

उपर्युक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल I, III और IV
(C) केवल II, III और IV
(D) I, II, III और IV

47. भारत की कुल स्थापित विद्युत क्षमता में, किस क्षेत्र की हिस्सेदारी सर्वाधिक बनी हुई है?
(A) तापीय (कोयला, लिग्नाइट, गैस, डीजल)
(B) गैर-जलविद्युत नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत
(C) ग्रिड से जुड़ी जलविद्युत परियोजनाएं
(D) वाणिज्यिक परमाणु ऊर्जा स्टेशन

NODIA

48. भारत में कुल वाणिज्यिक विद्युत खपत में किस क्षेत्र की हिस्सेदारी सबसे अधिक प्रतिशत में है?
(A) कृषि
(B) औद्योगिक
(C) घरेलू / आवासीय
(D) वाणिज्यिक / सेवाएं

49. निम्नलिखित में से कौन-सा पिछले एक दशक में भारत के बदलते ऊर्जा मिश्रण का सबसे सटीक चित्रण है?
(A) पूरे भारत में सभी चालू कोयला आधारित तापीय विद्युत उत्पादन संयंत्रों का पूर्ण और तत्काल चरणबद्ध समापन।
(B) सौर और पवन क्षमता में तीव्र विस्तार के साथ-साथ जीवाश्म ईंधन हिस्सेदारी में क्रमिक गिरावट।
(C) कुल नवीकरणीय ऊर्जा प्रतिष्ठानों में लगातार गिरावट के साथ परमाणु क्षमता में भारी वृद्धि।
(D) प्राकृतिक गैस और पेट्रोलियम पावर प्लांटों का ज्वारीय और महासागरीय ऊर्जा प्रणालियों द्वारा पूर्ण संरचनात्मक प्रतिस्थापन।

50. विद्युत उत्पादन के संदर्भ में, कौन-सा युग्म क्रमशः एक विशिष्ट बेस-लोड पावर स्रोत और पीक-लोड पावर स्रोत का उचित प्रतिनिधित्व करता है?
(A) कोयला आधारित तापीय और पंप्ड हाइड्रो स्टोरेज
(B) सौर फोटोवोल्टिक और परमाणु ऊर्जा
(C) यूटिलिटी-स्केल पवन और बायोमास संयंत्र
(D) रन-ऑफ-द-रिवर हाइड्रो और भू-तापीय प्रणालियाँ

51. भारत सरकार द्वारा ऊर्जा दक्षता के लिए एक कानूनी ढांचा स्थापित करते हुए किस वर्ष ऊर्जा संरक्षण अधिनियम अधिनियमित किया गया था?
(A) 1995
(B) 2001
(C) 2010
(D) 2015

52. विद्युत उपकरणों के लिए अनिवार्य स्टार लेबलिंग कार्यक्रम, जो ऊर्जा दक्षता पर उपभोक्ताओं का मार्गदर्शन करता है, किस वैधानिक निकाय द्वारा प्रशासित किया जाता है?
(A) भारतीय मानक ब्यूरो (BIS)
(B) केंद्रीय विद्युत नियामक आयोग (CERC)
(C) नीति आयोग (NITI Aayog)

(D) ऊर्जा दक्षता ब्यूरो (BEE)

53. भारत में कार्यान्वित PAT (परफॉर्म, अचीव एंड ट्रेड) योजना का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?
(A) सभी पंजीकृत लघु ग्रामीण उद्योगों को पूरी तरह से रियायती सौर ऊर्जा प्रतिष्ठान और ऊर्जा उपकरण प्रदान करना।
(B) सभी राज्यों के कृषि और वानिकी क्षेत्रों को अपनी अधिशेष फसल अवशेष बायोमास का खुले बाजारों में व्यापार करने के लिए अनिवार्य करना।
(C) ऊर्जा बचत प्रमाण पत्रों के लिए बाजार आधारित व्यापार तंत्र के माध्यम से औद्योगिक ऊर्जा दक्षता को बढ़ावा देना।
(D) सभी पड़ोसी एशियाई देशों के साथ सीमा पार उच्च-वोल्टेज ग्रिड विद्युत व्यापार समझौतों को विनियमित और सुव्यवस्थित करना।

54. ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में सार्वभौमिक घरेलू विद्युतीकरण प्राप्त करने के लिए प्रारंभ की गई 'प्रधानमंत्री सहज बिजली हर घर योजना' लोकप्रिय रूप से किस नाम से जानी जाती है?
(A) उदय योजना
(B) सौभाग्य योजना
(C) पीएम-कुसुम योजना
(D) उजाला योजना

55. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A) : दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना (DDUGJY) विशेष रूप से कृषि और गैर-कृषि फीडरों के पृथक्करण पर जोर देती है।
कारण (R) : फीडर पृथक्करण विद्युत के विवेकपूर्ण रोस्टरिंग की अनुमति देता है, जिससे किसानों को पर्याप्त आपूर्ति और ग्रामीण घरों को निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित होती है।
निम्नलिखित में से सही विकल्प का चयन कीजिए:
(A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(B) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) अभिकथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) अभिकथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

56. पीएम-कुसुम योजना मुख्य रूप से किस महत्वपूर्ण क्षेत्र के साथ नवीकरणीय ऊर्जा को एकीकृत करने पर केंद्रित है?
(A) कृषि क्षेत्र (सौर पंप और सौर ऊर्जा उत्पादन)
(B) भारी औद्योगिक विनिर्माण और वाणिज्यिक प्रसंस्करण सुविधाएं
(C) शहरी इलेक्ट्रिक मास ट्रांजिट और नगर निगम सार्वजनिक परिवहन
(D) वाणिज्यिक विमानन और हवाई अड्डा बुनियादी ढांचा विकास क्षेत्र

57. किस पूर्व ग्रामीण विद्युतीकरण योजना को दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना (DDUGJY) में सम्मिलित किया गया था?
(A) जवाहर ग्राम समृद्धि योजना
(B) इंदिरा आवास योजना
(C) राजीव गांधी ग्रामीण विद्युतीकरण योजना (RGGVY)
(D) संपूर्ण ग्रामीण रोजगार योजना

58. भारत की जलवायु प्रतिबद्धताओं के संबंध में सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए:
सूची I : जलवायु प्रतिबद्धता
P. शुद्ध-शून्य कार्बन उत्सर्जन प्राप्त करना
Q. 500 GW का गैर-जीवाश्म ऊर्जा क्षमता लक्ष्य
R. अर्थव्यवस्था की कार्बन तीव्रता को 45% तक कम करना
S. गैर-जीवाश्म ईंधन आधारित ऊर्जा संसाधनों से 50% संचयी विद्युत शक्ति स्थापित क्षमता प्राप्त करना
सूची II : लक्षित वर्ष
1. 2030 तक
2. 2070 तक
सही कूट का चयन कीजिए:
(A) P-2, Q-1, R-1, S-1
(B) P-1, Q-2, R-1, S-2
(C) P-2, Q-2, R-1, S-1
(D) P-1, Q-1, R-2, S-2

59. COP26 शिखर सम्मेलन में, भारत ने 2030 तक अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं का कितना प्रतिशत नवीकरणीय ऊर्जा से पूरा करने की प्रतिबद्धता जताई थी?
(A) 30%
(B) 40%
(C) 50%
(D) 75%

60. संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन (COP26) में भारत द्वारा प्रस्तुत 'पंचामृत' लक्ष्यों में से कौन-सा एक सम्मिलित नहीं है?
(A) 2030 तक 500 GW की गैर-जीवाश्म ऊर्जा क्षमता तक पहुंचना।
(B) 2040 तक कोयला तापीय संयंत्रों को पूर्णतः समाप्त करना।
(C) अब से 2030 तक कुल अनुमानित कार्बन उत्सर्जन में एक अरब टन की कमी करना।
(D) 2070 तक नेट जीरो का लक्ष्य हासिल करना।

61. पेरिस समझौते के तहत भारत के राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान (NDCs) के संबंध में सबसे सटीक कथन की पहचान कीजिए।
(A) भारत ने समग्र उत्सर्जन को रोकने के लिए औद्योगिक आर्थिक विकास को रोकने के लिए अंतर्राष्ट्रीय संधियों के तहत औपचारिक रूप से संकल्प लिया है।
(B) NDCs कानूनी रूप से राज्य सरकार के निकायों

Downloaded from www.pdf.tube

को अंतर्राष्ट्रीय जलवायु अनुकूलन पहलों को सीधे वित्तपोषित करने का आदेश देते हैं।
(C) भारत ने 2030 की समय सीमा से काफी पहले 40% गैर-जीवाश्म ईंधन स्थापित क्षमता का अपना शुरुआती लक्ष्य हासिल कर लिया।
(D) भारत के आधिकारिक लक्ष्य प्राथमिक ऊर्जा क्षेत्र को छोड़कर विशेष रूप से वनीकरण कार्यक्रमों पर केंद्रित हैं।

62. भारत में सकल तकनीकी और वाणिज्यिक (AT&C) हानियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. तकनीकी हानियां पारेषण (ट्रांसमिशन) और वितरण नेटवर्क में विद्युत के प्रवाह के कारण होती हैं।
II. वाणिज्यिक हानियां मुख्य रूप से चोरी, हेरफेर और गलत मीटरिंग के कारण होती हैं।
III. भारत विश्व भर में लगभग 1% के साथ सबसे कम AT&C हानि का दावा करता है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

63. भारत के बिजली वितरण क्षेत्र के संदर्भ में, AT&C का पूर्ण रूप क्या है?
(A) एग्रीगेट टेक्निकल एंड कमर्शियल (Aggregate Technical and Commercial)
(B) एवरेज टैरिफ एंड कंजम्पशन रेट्स (Average Tariff and Consumption Rates)
(C) एनुअल ट्रांसमिशन एंड कॉस्ट एनालिसिस (Annual Transmission and Cost Analysis)
(D) असेस्ड थर्मल एंड कोल कैपेसिटी (Assessed Thermal and Coal Capacity)

64. भारत सरकार द्वारा उज्ज्वल डिस्कॉम एश्योरेंस योजना (UDAY) मुख्य रूप से किस विशिष्ट उद्देश्य के लिए शुरू की गई थी?
(A) देश भर में ग्रामीण गरीबी रेखा से नीचे (BPL) के परिवारों को मुफ्त रूफटॉप सोलर लैंप और लाइटिंग सिस्टम प्रदान करने के लिए।
(B) बिजली वितरण कंपनियों (DISCOMs) के वित्तीय कायाकल्प और परिचालन पुनरुद्धार के लिए।
(C) नए वाणिज्यिक परमाणु रिएक्टरों के राष्ट्रीय निर्माण और ग्रिड एकीकरण को सीधे वित्तपोषित करने के लिए।
(D) केवल कृषि सिंचाई जल पंपों को चलाने के लिए उपयोग किए जाने वाले डीजल ईंधन की खरीद पर भारी सब्सिडी देने के लिए।

65. भारत अपनी कच्चे तेल की आवश्यकता का लगभग कितना प्रतिशत आयात करता है, जो उसकी ऊर्जा सुरक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती को रेखांकित करता है?
(A) 20-25%
(B) 40-45%
(C) 60-65%
(D) 80-85%

66. आपूर्ति में व्यवधान को कम करने और ऊर्जा सुरक्षा बढ़ाने के लिए, भारत ने रणनीतिक पेट्रोलियम भंडार (SPRs) का निर्माण किया है। निम्नलिखित में से किस स्थान पर भूमिगत SPR सुविधा मौजूद है?
(A) मंगलुरु, कर्नाटक
(B) सूरत जिला, गुजरात
(C) हल्दिया, पश्चिम बंगाल
(D) चेन्नई शहर, तमिलनाडु

67. ऊर्जा क्षेत्र में अपनी भारी आयात निर्भरता को कम करने के लिए भारत के लिए निम्नलिखित में से कौन-सी सबसे व्यापक दीर्घकालिक रणनीति का प्रतिनिधित्व करती है?
(A) एक ही प्राथमिक मध्य पूर्वी तेल उत्पादक राष्ट्र के साथ विशेष दीर्घकालिक कच्चे तेल व्यापार समझौतों पर हस्ताक्षर करना।
(B) देश भर में सभी आंतरिक दहन इंजन वाहनों के आयात और बिक्री पर तत्काल कानूनी प्रतिबंध लागू करना।
(C) नवीकरणीय ऊर्जा का विस्तार, इलेक्ट्रिक गतिशीलता को अपनाना और घरेलू जैव ईंधन सम्मिश्रण को बढ़ावा देना।
(D) सभी उपयोगिता बिजली उत्पादन संयंत्रों को विशेष रूप से आयातित डीजल जनरेटर पर चलाने के लिए परिवर्तित करना।

NODIA

68. भारत में प्राकृतिक गैस के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसे सबसे स्वच्छ जलने वाला जीवाश्म ईंधन माना जाता है।
II. इसका प्राथमिक घटक प्रोपेन है।
III. कृष्णा-गोदावरी (KG) बेसिन में प्रमुख प्राकृतिक गैस भंडार हैं।
IV. घरों में पाइप्ड नेचुरल गैस (PNG) प्रदान करने के लिए सिटी गैस डिस्ट्रीब्यूशन (CGD) नेटवर्क का विस्तार हो रहा है।
उपर्युक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल I, III और IV
(C) केवल II, III और IV
(D) I, II, III और IV

69. तटवर्ती (ऑनशोर) क्षेत्रों में, कौन-सा भारतीय राज्य ऐतिहासिक रूप से तटवर्ती पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस का अग्रणी उत्पादक रहा है, जहाँ डिगबोई और नहरकटिया क्षेत्र स्थित हैं?
(A) महाराष्ट्र
(B) पंजाब

(C) असम
(D) केरल

70. भारत में, कृष्णा-गोदावरी (KG) बेसिन, जो हाल के गहरे पानी के प्राकृतिक गैस की खोजों के लिए बहुत प्रसिद्ध है, किस राज्य के तट पर स्थित है?
(A) गुजरात
(B) आंध्र प्रदेश
(C) महाराष्ट्र
(D) ओडिशा

71. कुल प्राकृतिक गैस की खपत के आधार पर भारत में क्षेत्रों के सही अवरोही क्रम की पहचान कीजिए।
(A) उर्वरक, बिजली, सिटी गैस डिस्ट्रीब्यूशन
(B) सिटी गैस डिस्ट्रीब्यूशन, बिजली, उर्वरक
(C) बिजली, उर्वरक, सिटी गैस डिस्ट्रीब्यूशन
(D) सिटी गैस डिस्ट्रीब्यूशन, उर्वरक, बिजली

72. उभरती हुई हाइड्रोजन अर्थव्यवस्था में, "ग्रीन हाइड्रोजन" को विशेष रूप से क्या परिभाषित करता है?
(A) नवीकरणीय बिजली द्वारा संचालित जल इलेक्ट्रोलीसिस के माध्यम से उत्पादित हाइड्रोजन।
(B) पारंपरिक स्टीम मीथेन रिफॉर्मिंग प्रक्रियाओं का उपयोग करके प्राकृतिक गैस से उत्पादित हाइड्रोजन।
(C) परिवेशी वायुमंडलीय हवा की धाराओं से सीधे और पूरी तरह से निकाली गई हाइड्रोजन।
(D) कार्बन कैप्चर प्रणालियों के साथ जोड़े गए औद्योगिक कोयला गैसीकरण से उत्पादित हाइड्रोजन।

73. राष्ट्रीय ग्रीन हाइड्रोजन मिशन 2030 तक प्रति वर्ष कम से कम कितनी ग्रीन हाइड्रोजन उत्पादन क्षमता विकसित करने का लक्ष्य निर्धारित करता है?
(A) 1 MMT (मिलियन मीट्रिक टन)
(B) 5 MMT
(C) 15 MMT
(D) 50 MMT

74. निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प हाइड्रोजन के "रंग" को उसके उत्पादन के माध्यम के साथ सही ढंग से जोड़ता है?
(A) पिंक हाइड्रोजन - परमाणु ऊर्जा द्वारा उत्पन्न बिजली का उपयोग करके उत्पादित।
(B) ब्लू हाइड्रोजन - बिना कार्बन कैप्चर के कोयले से उत्पादित।
(C) ग्रे हाइड्रोजन - कार्बन कैप्चर और स्टोरेज के साथ प्राकृतिक गैस से उत्पादित।
(D) ग्रीन हाइड्रोजन - बायोमास दहन से उत्पादित।

75. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A) : इस्पात और नौवहन जैसे कठिनता से कार्बन-मुक्त होने वाले क्षेत्रों को डीकार्बोनाइज करने के लिए ग्रीन हाइड्रोजन को एक महत्वपूर्ण ऊर्जा वाहक माना जाता है।
कारण (R) : फ्यूल सेल में ग्रीन हाइड्रोजन के दहन या उपयोग से केवल जल वाष्प का उत्पादन होता है, जिसमें शून्य कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन होता है।
निम्नलिखित में से सही विकल्प का चयन कीजिए:
(A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(B) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) अभिकथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) अभिकथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

76. नवीन आंकड़ों के अनुसार, कौन-सा राज्य भारत में कुल स्थापित नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता में लगातार प्रथम स्थान पर है?
(A) गुजरात
(B) राजस्थान
(C) तमिलनाडु
(D) महाराष्ट्र

77. किस भारतीय राज्य ने हाल ही में तमिलनाडु को पीछे छोड़कर उच्चतम स्थापित पवन ऊर्जा क्षमता वाला राज्य बनने का गौरव प्राप्त किया?
(A) राजस्थान
(B) महाराष्ट्र
(C) गुजरात
(D) कर्नाटक

78. जैव-ऊर्जा उत्पादन में भारत में कौन-सा राज्य अग्रणी है, जो विशेष रूप से अपने व्यापक शर्करा उद्योग से खोई (बगास) के सह-उत्पादन का उपयोग करता है?
(A) उत्तर प्रदेश
(B) केरल
(C) पंजाब
(D) महाराष्ट्र

79. राजस्थान के तुलनात्मक ऊर्जा प्रोफाइल को दर्शाने वाले सही कथन की पहचान कीजिए।
(A) राजस्थान की कुल स्थापित नवीकरणीय क्षमता का सबसे बड़ा एकल घटक सौर ऊर्जा है।
(B) राजस्थान का समग्र नवीकरणीय ऊर्जा पोर्टफोलियो मुख्य रूप से छोटी जलविद्युत परियोजनाओं के प्रभुत्व में है।
(C) राजस्थान ग्रिड बिजली के लिए पारंपरिक कोयला आधारित तापीय बिजली संयंत्रों पर शून्य परिचालन निर्भरता बनाए रखता है।
(D) राजस्थान में पवन ऊर्जा क्षमता उसकी ग्रिड से जुड़ी बायोमास उत्पादन क्षमता से काफी कम है।

80. एक अकादमिक और नीतिगत संदर्भ में, भारत जैसे राष्ट्र के लिए 'ऊर्जा सुरक्षा' की निम्नलिखित में से कौन-सी सबसे उपयुक्त परिभाषा है?
(A) पड़ोसी भागीदार देशों को लगातार अधिशेष ग्रिड बिजली

Click Here to Buy book on Flipkart

निर्यात करने की नीतिगत क्षमता।
(B) सस्ती बाजार कीमत पर प्राथमिक ऊर्जा स्रोतों की निर्बाध उपलब्धता।
(C) सभी घरेलू ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए स्वदेशी रूप से खनन किए गए कोयले के भंडार पर 100% विशेष रूप से निर्भर रहना।
(D) राष्ट्रीय ग्रिड में पूर्ण शून्य तकनीकी और वाणिज्यिक संचरण हानियों को प्राप्त करना और बनाए रखना।

81. भारत में ऊर्जा सुरक्षा बढ़ाने के उद्देश्य से निम्नलिखित उपायों पर विचार कीजिए:
I. किसी एक भू-राजनीतिक क्षेत्र पर अत्यधिक निर्भरता को रोकने के लिए ऊर्जा आयात स्रोतों का विविधीकरण।
II. ओपन एक्रेज लाइसेंसिंग पॉलिसी (OALP) के तहत घरेलू अन्वेषण को बढ़ावा देना।
III. सरकारी खर्च में कटौती के लिए रणनीतिक पेट्रोलियम भंडार की क्षमता को घटाना।
ऊर्जा सुरक्षा बढ़ाने के लिए उपर्युक्त में से कौन-सा/से उपाय तार्किक रूप से सही है/हैं?
(A) केवल I और II (B) केवल II और III
(C) केवल I और III (D) I, II और III

82. प्राथमिक ऊर्जा खपत के संदर्भ में, भारत वर्तमान में विश्व स्तर पर किस स्थान पर है?
(A) सबसे बड़ा उपभोक्ता
(B) दूसरा सबसे बड़ा उपभोक्ता
(C) तीसरा सबसे बड़ा उपभोक्ता
(D) पांचवां सबसे बड़ा उपभोक्ता

83. भारत में नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा से संबंधित सभी मामलों के लिए नोडल मंत्रालय, नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय (MNRE) का नाम किस वर्ष बदलकर उसके वर्तमान नाम पर रखा गया था?
(A) 1992
(B) 2006
(C) 2014
(D) 2020

84. ऊर्जा क्षेत्र के संगठनों के संबंध में सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए:
सूची I : एजेंसी / संगठन
P. BEE
Q. SECI
R. IREDA
S. CEA
सूची II : मुख्य कार्य / क्षेत्र
1. विद्युत मंत्रालय का तकनीकी और योजना सलाहकार
2. नवीकरणीय परियोजनाओं के लिए ऋण प्रदान करने वाला वित्तीय संस्थान
3. सौर और पवन ऊर्जा परियोजनाओं को लागू करने के लिए नोडल एजेंसी
4. ऊर्जा दक्षता मानकों को विनियमित करने वाला वैधानिक निकाय
सही कूट का चयन कीजिए:
(A) P-4, Q-3, R-2, S-1
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-4, Q-2, R-3, S-1
(D) P-1, Q-3, R-2, S-4

85. MNRE के तहत कौन-सा केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रम मुख्य रूप से रिवर्स नीलामी आयोजित करने और राष्ट्रीय सौर मिशन को लागू करने के लिए उत्तरदायी है?
(A) पावर ग्रिड कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (PGCIL)
(B) नेशनल थर्मल पावर कॉर्पोरेशन (NTPC)
(C) सोलर एनर्जी कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया (SECI)
(D) रूरल इलेक्ट्रिफिकेशन कॉर्पोरेशन (REC)

86. केंद्रीय विद्युत प्राधिकरण (CEA) से जुड़े निम्नलिखित कार्यों पर विचार कीजिए:
I. राष्ट्रीय विद्युत योजना तैयार करना।
II. विद्युत संयंत्रों के निर्माण के लिए तकनीकी मानक निर्दिष्ट करना।
III. व्यक्तिगत ग्रामीण घरों के लिए खुदरा बिजली शुल्क (टैरिफ) तय करना।
IV. बिजली के उत्पादन और संचरण से संबंधित डेटा एकत्र करना और रिकॉर्ड करना।
उपर्युक्त में से कौन-से कथन CEA के कार्यों की सही पहचान करते हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल I, II और IV
(C) केवल II, III और IV
(D) केवल I, III और IV

87. वह मूलभूत विशेषता क्या है जो एक "स्मार्ट ग्रिड" को एक पारंपरिक विद्युत ग्रिड से अलग करती है?
(A) एक स्मार्ट ग्रिड प्रत्यावर्ती धारा (AC) के बजाय विशेष रूप से उच्च-वोल्टेज प्रत्यक्ष धारा (DC) संचरण नेटवर्क पर काम करता है।
(B) यह राष्ट्रीय ग्रिड बिजली उत्पादन की मांग को पूरा करने के लिए पूरी तरह से अपतटीय पवन फार्मों और समुद्री नवीकरणीय प्रणालियों पर निर्भर करता है।
(C) यह लंबी दूरी पर वायरलेस तरीके से बिजली संचारित करके भौतिक संचरण लाइनों की आवश्यकता को समाप्त करता है।
(D) यह ऊर्जा उपयोग की निगरानी और प्रबंधन के लिए उपयोगिता और ग्राहकों के बीच दो-तरफा डिजिटल संचार को शामिल करता है।

88. पंप्ड हाइड्रो स्टोरेज (PHS) आधुनिक ऊर्जा भंडारण का एक महत्वपूर्ण घटक है। यह सामान्यतः कैसे कार्य करता है?
(A) यह कम मांग (ऑफ-पीक) के घंटों के दौरान जल को एक ऊपरी जलाशय में पंप करता है और उच्च मांग (पीक) के दौरान टर्बाइनों के माध्यम से इसे छोड़ता है।
(B) यह विशाल भूमिगत तरल लिथियम जलाशयों के भीतर

Downloaded from www.pdf.tube

उपयोगिता-स्तरीय विद्युत ऊर्जा को रासायनिक रूप से सीधे संग्रहीत करता है।
(C) यह विस्तारित कम ग्रिड मांग अवधि के दौरान प्राकृतिक रूप से सील भूमिगत भूगर्भीय गुफाओं में परिवेशी वायु को संपीड़ित करता है।
(D) यह विलंबित उच्च-तापमान तापीय पुनर्प्राप्ति के लिए ग्रेफाइट के विशाल ठोस ब्लॉकों को गर्म करने के लिए अधिशेष ऑफ-पीक बिजली का उपयोग करता है।

89. उपभोक्ता से उपयोगिता (यूटिलिटी) तक डेटा प्रवाह के विशिष्ट तार्किक अनुक्रम में एक स्मार्ट ग्रिड में एडवांस्ड मीटरिंग इंफ्रास्ट्रक्चर (AMI) के निम्नलिखित घटकों को व्यवस्थित कीजिए:
1. डेटा प्रबंधन प्रणाली (MDMS)
2. उपभोक्ता परिसर में स्मार्ट मीटर
3. डेटा कंसंट्रेटर यूनिट (DCU)
4. हेड एंड सिस्टम (HES)

निम्नलिखित में से कौन-सा सही क्रम है?
(A) 2, 3, 4, 1
(B) 2, 4, 3, 1
(C) 1, 4, 3, 2
(D) 3, 2, 1, 4

90. बड़े पैमाने पर बैटरी एनर्जी स्टोरेज सिस्टम (BESS) विकसित करने पर भारत के ध्यान केंद्रित करने के पीछे मुख्य प्रेरणा क्या है?
(A) सौर और पवन ऊर्जा उत्पादन की परिवर्तनशील प्रकृति को प्रबंधित करना, जिससे समग्र ग्रिड स्थिरता सुनिश्चित हो सके।
(B) देश भर में चल रहे सभी बड़े पैमाने के जलविद्युत बांधों को व्यवस्थित रूप से बंद करना और अंततः बदलना।
(C) पारंपरिक जीवाश्म-ईंधन तापीय बिजली संयंत्रों की निरंतर बेस लोड उत्पादन आवश्यकताओं को कृत्रिम रूप से बढ़ाना।
(D) बहुपक्षीय अंतर्राष्ट्रीय सौर ऊर्जा गठबंधन स्थापित करने की रणनीतिक आवश्यकता को पूरी तरह से दरकिनार करना और समाप्त करना।

NODIA

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) कोयला
कोयला भारत में एक प्रमुख पारंपरिक और वाणिज्यिक ऊर्जा स्रोत है, जिसका उपयोग बड़े पैमाने पर तापीय विद्युत उत्पादन और औद्योगिक प्रक्रियाओं में किया जाता है। यह वर्षों से देश की मुख्य आधारभूत विद्युत आवश्यकताओं की पूर्ति करता आ रहा है। भारत के ऊर्जा क्षेत्र में कोयले का महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि यह व्यावसायिक स्तर पर आसानी से उपलब्ध है, हालांकि इसके अत्यधिक उपयोग से पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

2. (A) इनमें पवन, ज्वारीय और भू-तापीय ऊर्जा सम्मिलित हैं।
पारंपरिक ऊर्जा स्रोत वे होते हैं जिनका उपयोग दीर्घकाल से व्यावसायिक एवं घरेलू स्तर पर किया जा रहा है, जैसे कोयला, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस। इसके विपरीत, पवन ऊर्जा, ज्वारीय ऊर्जा तथा भू-तापीय ऊर्जा गैर-पारंपरिक या नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों की श्रेणी में आते हैं। गैर-पारंपरिक स्रोत प्राकृतिक रूप से पुनर्भरण योग्य होते हैं और इनसे पर्यावरण प्रदूषण कम होता है। पारंपरिक स्रोत सामान्यतः समाप्य प्रकृति के होते हैं।

3. (C) पशु का गोबर
ग्रामीण भारत में पशु का गोबर एक पारंपरिक और गैर-वाणिज्यिक ऊर्जा स्रोत माना जाता है, जिसका उपयोग मुख्यतः कंडे बनाकर खाना पकाने और ईंधन के रूप में किया जाता है। यह स्रोत स्थानीय स्तर पर आसानी से बिना किसी आर्थिक मूल्य के उपलब्ध होता है, इसलिए इसे वाणिज्यिक नहीं माना जाता। जीवाश्म ईंधन जैसे पेट्रोलियम, प्राकृतिक गैस और लिग्नाइट वाणिज्यिक श्रेणी में आते हैं क्योंकि इनका बाज़ार में क्रय-विक्रय होता है।

4. (D) ये प्राकृतिक प्रक्रियाओं द्वारा निरंतर पुनर्भरण योग्य होते हैं और सामान्यतः अक्षय होते हैं।
गैर-पारंपरिक ऊर्जा स्रोत उन स्रोतों को कहा जाता है जो प्राकृतिक प्रक्रियाओं द्वारा स्वतः और निरंतर पुनर्भरण योग्य होते हैं। इन्हें अक्षय ऊर्जा भी कहा जाता है क्योंकि इनका उपयोग करने पर ये समाप्त नहीं होते। सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, जलविद्युत और भू-तापीय ऊर्जा इसके प्रमुख उदाहरण हैं। ये स्रोत पर्यावरण के अनुकूल होते हैं और पारंपरिक जीवाश्म ईंधनों की तुलना में कार्बन डाइऑक्साइड तथा अन्य हानिकारक गैसों का बहुत कम उत्सर्जन करते हैं।

5. (C) प्राकृतिक गैस कंबाइंड साइकिल संयंत्र
प्राकृतिक गैस कंबाइंड साइकिल संयंत्र एक पारंपरिक और वाणिज्यिक ऊर्जा उत्पादन प्रणाली है जो जीवाश्म ईंधन पर आधारित होती है। प्राकृतिक गैस एक समाप्य भूगर्भीय संसाधन है, इसलिए इसे गैर-पारंपरिक ऊर्जा संसाधनों की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता। इसके विपरीत फोटोवोल्टिक सौर प्रणालियाँ, फास्ट ब्रीडर परमाणु रिएक्टर और महासागरीय तापीय ऊर्जा रूपांतरण जैसी प्रौद्योगिकियाँ गैर-पारंपरिक तथा उन्नत ऊर्जा स्रोतों के अंतर्गत आती हैं जिनका उद्देश्य सतत शक्ति उत्पादन प्रदान करना है।

6. (B) दीर्घकालिक ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करने, ईंधन आयात पर निर्भरता घटाने और जलवायु लक्ष्यों को पूरा करने के लिए।
भारत तेजी से गैर-पारंपरिक ऊर्जा संसाधनों की ओर कदम बढ़ा रहा है ताकि दीर्घकालिक ऊर्जा सुरक्षा स्थापित की जा सके। जीवाश्म ईंधनों की सीमित उपलब्धता और अंतरराष्ट्रीय कच्चे तेल के आयात पर अत्यधिक निर्भरता देश की अर्थव्यवस्था पर दबाव डालती है। गैर-पारंपरिक और नवीकरणीय स्रोतों को अपनाने से विदेशी ईंधन पर निर्भरता कम होती है, व्यापार घाटा घटता है और वैश्विक जलवायु प्रतिबद्धताओं तथा कार्बन तटस्थता लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद मिलती है।

7. (D) पवन - गैर-पारंपरिक, वाणिज्यिक
पवन ऊर्जा एक गैर-पारंपरिक और वाणिज्यिक ऊर्जा स्रोत है क्योंकि यह प्राकृतिक रूप से अक्षय है और इसका उपयोग व्यावसायिक स्तर पर विद्युत उत्पन्न करके ग्रिड को बेचने के लिए किया जाता है। पेट्रोलियम और कोयला पारंपरिक वाणिज्यिक स्रोत हैं, जबकि सौर ऊर्जा भी एक गैर-पारंपरिक स्रोत है। वाणिज्यिक स्रोतों का तात्पर्य उन ऊर्जा रूपों से है जिनका बाज़ार में क्रय-विक्रय होता है और जिनका आर्थिक मूल्य निर्धारित होता है।

8. (A) झारखंड
झारखंड भारत में कोयले का सबसे बड़ा भूगर्भीय भंडार रखने वाला राज्य है, जहाँ झरिया, बोकारो और गिरिडीह जैसे प्रसिद्ध कोयला क्षेत्र स्थित हैं। हालांकि, परिचालन संबंधी चुनौतियों, भूमि अधिग्रहण में देरी और अवसंरचनात्मक मुद्दों के कारण इसका वार्षिक कोयला उत्पादन अक्सर ओडिशा और छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों से पीछे रह जाता है। इसके बावजूद, भारत की समग्र ऊर्जा सुरक्षा और तापीय विद्युत उत्पादन की दृष्टि से झारखंड के कोयला संसाधन अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

9. (C) अभिकथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
भारत की कुल स्थापित विद्युत उत्पादन क्षमता में तापीय ऊर्जा का योगदान सर्वाधिक है, जिससे यह देश का प्राथमिक बिजली स्रोत बनता है। हालांकि, भारत में मुख्य रूप से निम्न से मध्यम श्रेणी का बिटुमिनस और लिग्नाइट कोयला पाया जाता है, जिसमें राख की मात्रा अधिक होती है। उच्च श्रेणी का एंथ्रेसाइट कोयला भारत में अत्यंत सीमित मात्रा में, मुख्य रूप से जम्मू और कश्मीर में मिलता है, इसलिए दूसरा कथन तथ्यात्मक रूप से असत्य है।

Click Here to Buy book on Amazon

10. (C) 4000 MW
भारत सरकार की अल्ट्रा मेगा पावर प्रोजेक्ट योजना के अंतर्गत किसी तापीय विद्युत परियोजना को इस श्रेणी में शामिल होने के लिए कम से कम 4000 मेगावाट की स्थापित क्षमता होना अनिवार्य है। इस योजना का मुख्य उद्देश्य बड़े पैमाने पर तापीय ऊर्जा संयंत्र स्थापित करके बड़े आकार की अर्थव्यवस्था का लाभ उठाना और सस्ती दर पर निर्बाध बिजली प्रदान करना है। ये परियोजनाएं सुपरक्रिटिकल तकनीक का उपयोग करके ईंधन दक्षता में सुधार करती हैं।

11. (D) बिटुमिनस कोयला
राजस्थान के श्रीगंगानगर जिले में स्थित सूरतगढ़ सुपर थर्मल पावर स्टेशन राज्य में बेस लोड बिजली उत्पादन का एक प्रमुख केंद्र है। यह संयंत्र मुख्य रूप से बिटुमिनस कोयले का उपयोग ईंधन के रूप में करता है, जो इसे भारत के विभिन्न कोयला क्षेत्रों से रेल के माध्यम से आपूर्ति किया जाता है। यद्यपि राजस्थान में लिग्नाइट के बड़े भंडार हैं, परंतु सूरतगढ़ संयंत्र की डिज़ाइनिंग और क्षमता बिटुमिनस कोयले के दहन पर आधारित है।

12. (D) I, II और III
भारत में ब्रह्मपुत्र बेसिन में सबसे अधिक दोहन योग्य जलविद्युत क्षमता मौजूद है। जलविद्युत संयंत्रों को आवश्यकता पड़ने पर तुरंत चालू और बंद किया जा सकता है, जिससे ये पीक लोड मांग को संभालने में बहुत उपयोगी सिद्ध होते हैं। इसके अतिरिक्त, 25 मेगावाट तक की क्षमता वाली छोटी जलविद्युत परियोजनाओं को नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय के अधीन नवीकरणीय ऊर्जा की श्रेणी में रखा गया है, जो पर्यावरण-अनुकूल विकास को प्रोत्साहित करता है।

13. (C) टिहरी बाँध
उत्तराखंड में भागीरथी नदी पर बना टिहरी बांध भारत का सबसे ऊँचा कार्यात्मक जलविद्युत बांध है। इस परिसर में एक महत्वपूर्ण पंप्ड-स्टोरेज जलविद्युत परियोजना भी शामिल है, जो ग्रिड की स्थिरता बनाए रखने और पीक मांग के दौरान त्वरित बिजली आपूर्ति करने में सक्षम है। यह बांध न केवल वृहद मात्रा में विद्युत उत्पादन करता है, बल्कि सिंचाई और पेयजल आपूर्ति के लिए एक विशाल जलाशय का निर्माण भी करता है, जो क्षेत्रीय विकास में सहायक है।

14. (D) एक ऐसी सुविधा जो जल भंडारण के बिना या न्यूनतम भंडारण के साथ नदी के प्राकृतिक प्रवाह का उपयोग करके विद्युत उत्पन्न करती है।
जलविद्युत के संदर्भ में "रन-ऑफ-द-रिवर" परियोजना उस प्रणाली को संदर्भित करती है जो नदी के प्राकृतिक जल प्रवाह का उपयोग बिना विशाल जलाशय बनाए या न्यूनतम भंडारण के साथ बिजली उत्पन्न करने के लिए करती है। इस प्रकार की परियोजनाओं में विशाल क्षेत्रों को जलमग्न करने की आवश्यकता नहीं होती, जिससे पर्यावरणीय और सामाजिक प्रभाव अपेक्षाकृत बहुत कम पड़ता है। हालाँकि, इनका उत्पादन मौसम और नदी में उपलब्ध पानी की मात्रा पर निर्भर करता है।

15. (A) नाथपा झाकड़ी
नाथपा झाकड़ी जलविद्युत परियोजना हिमाचल प्रदेश में सतलुज नदी पर स्थित है और इसका राजस्थान के साथ प्रत्यक्ष स्वामित्व या स्थान संबंधी संबंध नहीं है। इसके विपरीत, माही बजाज सागर परियोजना राजस्थान और गुजरात की संयुक्त बहुउद्देशीय परियोजना है, जबकि राणा प्रताप सागर तथा जवाहर सागर बांध राजस्थान में चंबल नदी पर स्थित प्रमुख जलविद्युत संयंत्र हैं। ये तीनों परियोजनाएं राजस्थान राज्य को सिंचाई और बिजली उत्पादन में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं।

NODIA

16. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
भारत के प्रमुख परमाणु ऊर्जा संयंत्रों का राज्यवार वितरण इस प्रकार है: रावतभाटा परमाणु संयंत्र राजस्थान में स्थित है, काकरापार परमाणु संयंत्र गुजरात में संचालित है, कैगा परमाणु ऊर्जा स्टेशन कर्नाटक में स्थित है तथा कुडनकुलम परमाणु ऊर्जा संयंत्र तमिलनाडु राज्य में स्थित है। ये सभी परमाणु स्टेशन भारत की परमाणु ऊर्जा निगम द्वारा संचालित किए जाते हैं और देश को स्वच्छ तथा निर्बाध बेस-लोड विद्युत प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

17. (B) दाबित भारी जल रिएक्टर (PHWR)
राजस्थान के रावतभाटा में स्थित परमाणु ऊर्जा स्टेशन मुख्य रूप से दाबित भारी जल रिएक्टर तकनीक पर कार्य करता है। इस तकनीक में प्राकृतिक यूरेनियम का उपयोग ईंधन के रूप में किया जाता है और भारी जल (ड्यूटेरियम ऑक्साइड) को मंदक तथा शीतलक दोनों रूपों में प्रयुक्त किया जाता है। यह भारत के स्वदेशी त्रि-स्तरीय परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम के पहले चरण की मुख्य आधारशिला है, जो स्थिर और सुरक्षित विद्युत उत्पादन सुनिश्चित करती है।

18. (A) कुडनकुलम परमाणु ऊर्जा स्टेशन
तमिलनाडु में स्थित कुडनकुलम परमाणु ऊर्जा स्टेशन कुल स्थापित क्षमता के मामले में भारत का सबसे बड़ा परमाणु ऊर्जा केंद्र है। यह संयंत्र रूसी सहयोग से निर्मित उन्नत दाबयुक्त जल रिएक्टरों का उपयोग करता है। इसकी प्रत्येक परिचालन इकाई की क्षमता 1000 मेगावाट है। यह स्टेशन दक्षिण भारत के राज्यों को भारी मात्रा में बेस-लोड विद्युत की आपूर्ति करता है और देश में परमाणु ऊर्जा उत्पादन क्षमता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

19. (C) घरेलू परमाणु रिएक्टरों के लिए यूरेनियम का खनन पूरी तरह से भारत के भीतर ही किया जाता है, जिससे आयात पर कोई निर्भरता नहीं रहती है।
भारत अपने घरेलू परमाणु रिएक्टरों के संचालन के लिए यूरेनियम का पर्याप्त मात्रा में आयात करता है, क्योंकि घरेलू यूरेनियम संसाधन सीमित हैं। भारत कजाकिस्तान, कनाडा और रूस जैसे देशों से यूरेनियम आयात करता है। यद्यपि जादुगुड़ा जैसी खदानों में स्वदेशी खनन होता है, फिर भी आयात पर निर्भरता बनी हुई है। भारत परमाणु अप्रसार संधि का गैर-हस्ताक्षरकर्ता है और भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र देश की प्रमुख परमाणु वैज्ञानिक संस्था के रूप में कार्यरत है।

20. (D) होमी जे. भाभा
डॉ. होमी जहांगीर भाभा को भारत के परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम का जनक माना जाता है। उन्होंने ही देश की दीर्घकालिक ऊर्जा आत्मनिर्भरता के लिए त्रि-स्तरीय परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम की रणनीति तैयार की थी। इस दूरदर्शी योजना का मुख्य उद्देश्य भारत के सीमित यूरेनियम भंडारों का कुशलतापूर्वक उपयोग करना और अंततः देश में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध थोरियम भंडारों का उपयोग करके वृहद स्तर पर विद्युत उत्पादन की क्षमता विकसित करना था।

21. (A) केवल I, II और III
भारत के त्रि-स्तरीय परमाणु कार्यक्रम के प्रथम चरण में प्राकृतिक यूरेनियम आधारित दाबित भारी जल रिएक्टर शामिल हैं। द्वितीय चरण में प्लूटोनियम चालित फास्ट ब्रीडर रिएक्टर कार्य करते हैं, जबकि तृतीय चरण थोरियम से प्राप्त यूरेनियम-233 पर आधारित है। भारत वर्तमान में मुख्य रूप से पहले चरण में है और दूसरे चरण का विकास कर रहा है; तीसरे चरण का अभी पूर्ण व्यावसायिक स्तर पर कार्यान्वयन नहीं हुआ है, इसलिए चौथा कथन असत्य है।

22. (B) केरल के तटीय क्षेत्र की मोनाज़ाइट बालू में
भारत में थोरियम के विश्व प्रसिद्ध विशाल भंडार मुख्यतः केरल और ओडिशा के तटीय क्षेत्रों की मोनाज़ाइट बालू में पाए जाते हैं। मोनाज़ाइट एक थोरियम-युक्त खनिज है जो तटीय प्लेसर निक्षेपों में प्रचुरता से मिलता है। यह संसाधन भारत के त्रि-स्तरीय परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम के तीसरे चरण के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, जिसके माध्यम से भविष्य में थोरियम को विखंडनीय यूरेनियम-233 में बदलकर विशाल मात्रा में स्वच्छ ऊर्जा उत्पन्न करने की योजना है।

23. (B) 2010
जवाहरलाल नेहरू राष्ट्रीय सौर मिशन को वर्ष 2010 में आधिकारिक रूप से प्रारंभ किया गया था। यह भारत सरकार की राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन कार्य योजना की एक प्रमुख पहल थी। इस मिशन का प्राथमिक उद्देश्य देश में सौर ऊर्जा के विकास को तेजी से बढ़ावा देना, नीतिगत ढांचा तैयार करना, प्रौद्योगिकीय लागत को कम करना और भारत को वैश्विक सौर ऊर्जा परिदृश्य में एक अग्रणी राष्ट्र के रूप में स्थापित करना था।

24. (C) 100 GW
भारत सरकार ने वर्ष 2015 में राष्ट्रीय सौर मिशन के तहत 2022 तक प्राप्त किए जाने वाले सौर ऊर्जा लक्ष्य को संशोधित करके 20 गिगावाट से बढ़ाकर 100 गिगावाट कर दिया था। इस वृहद लक्ष्य में 60 गिगावाट यूटिलिटी-स्केल ग्रीड-कनेक्टेड सोलर पार्क और 40 गिगावाट रूफटॉप सोलर सिस्टम शामिल थे। इस नीतिगत निर्णय ने देश में सौर अवसंरचना और निजी निवेश के तीव्र विस्तार को अभूतपूर्व प्रोत्साहन प्रदान किया।

25. (B) राजस्थान, गुजरात, कर्नाटक, तमिलनाडु
कुल स्थापित सौर ऊर्जा क्षमता के मामले में भारतीय राज्यों का सही क्रम राजस्थान, गुजरात, कर्नाटक और तमिलनाडु है। राजस्थान अपनी विशाल बंजर भूमि और उच्च सौर विकिरण के कारण देश में पहले स्थान पर है, जिसके बाद गुजरात का स्थान आता है। कर्नाटक और तमिलनाडु ने भी बड़े पैमाने पर सोलर पार्कों के निर्माण और अनुकूल राज्य नीतियों के माध्यम से सौर ऊर्जा के क्षेत्र में उल्लेखनीय स्थापित क्षमता हासिल की है।

26. (A) जोधपुर
विश्व के सबसे बड़े सोलर पार्कों में शामिल भादला सोलर पार्क राजस्थान के जोधपुर जिले में स्थित है। यह विशाल सौर परियोजना 14,000 एकड़ से अधिक बंजर भूमि में फैली हुई है और इसकी कुल स्थापित क्षमता 2245 मेगावाट से अधिक है। इस क्षेत्र में उच्च सौर विकिरण और शुष्क जलवायु परिस्थितियाँ पाई जाती हैं, जो इसे सौर ऊर्जा उत्पादन के लिए अत्यंत उपयुक्त और अत्यधिक कुशल स्थान बनाती हैं।

27. (D) कर्नाटक
पावागड़ा सोलर पार्क, जिसे शक्ति स्थल भी कहा जाता है, कर्नाटक के तुमकुरु जिले में स्थित एक अत्यंत विशाल सौर ऊर्जा परियोजना है। इसकी कुल उत्पादन क्षमता 2000 मेगावाट से अधिक है और यह एशिया की प्रमुख सौर ऊर्जा सुविधाओं में से एक है। इस पार्क का विकास राज्य सरकार की नीतियों और स्थानीय किसानों से भूमि लीज पर लेकर किया गया था, जिससे कर्नाटक की नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता में भारी वृद्धि हुई।

28. (B) कामुथी सोलर पावर प्रोजेक्ट - राजस्थान
कामुथी सोलर पावर प्रोजेक्ट राजस्थान में नहीं, बल्कि तमिलनाडु के रामनाथपुरम जिले में स्थित है। यह एकल स्थान पर निर्मित विश्व के सबसे बड़े सौर ऊर्जा संयंत्रों में से एक है। अन्य सभी सुमेलित युग्म सही हैं: कर्नूल सोलर पार्क आंध्र प्रदेश में स्थित है, रीवा सोलर प्रोजेक्ट मध्य प्रदेश में संचालित है और चरंका सोलर पार्क गुजरात का एक प्रसिद्ध और आरंभिक वृहद सौर ऊर्जा परिसर है।

29. (A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
राजस्थान भारत में स्थापित सौर ऊर्जा क्षमता के मामले में अग्रणी राज्य है। इसका मुख्य कारण यहाँ उपलब्ध भौगोलिक लाभ हैं, जैसे देश में सर्वाधिक सौर विकिरण दर, वर्ष में 325 से अधिक धूप वाले दिन, नगण्य बादल और भादला जैसे वृहद सोलर पार्कों की स्थापना के लिए प्रचुर मात्रा में सस्ती बंजर भूमि। इस प्रकार, राज्य की भौगोलिक और जलवापीय परिस्थितियाँ इसकी उच्च सौर उत्पादन क्षमता को सीधे स्पष्ट करती हैं।

30. (D) तमिलनाडु
मुप्पंतल विंड फार्म भारत का सबसे बड़ा चालू तटवर्ती पवन ऊर्जा फार्म है, जो तमिलनाडु के कन्याकुमारी जिले में स्थित है। यह क्षेत्र पश्चिमी घाट के पर्वतीय दर्रों से आने वाली तीव्र और निरंतर पवन धाराओं का लाभ उठाता है। मुप्पंतल की पवन टर्बाइनों की कुल स्थापित क्षमता 1500 मेगावाट से अधिक है, जो तमिलनाडु को भारत में पवन ऊर्जा उत्पादन के अग्रणी केंद्र के रूप में स्थापित करती है।

Downloaded from www.pdf.tube

31. (B) 4 - 5 m/s
पवन टर्बाइनों का उपयोग करके व्यावसायिक स्तर पर बिजली उत्पन्न करने के लिए न्यूनतम औसत पवन गति सामान्यतः 4 से 5 मीटर प्रति सेकंड मानी जाती है। इस गति को कट-इन स्पीड कहा जाता है, जहाँ से पवन टर्बाइन के ब्लेड घूमना शुरु करते हैं और बिजली का उत्पादन संभव होता है। इससे कम हवा की गति में टर्बाइन को चालू रखना या पर्याप्त विद्युत उत्पन्न करना आर्थिक रूप से व्यावहारिक नहीं होता।

32. (B) कुल स्थापित पवन ऊर्जा क्षमता में गुजरात और तमिलनाडु लगातार शीर्ष दो राज्यों में बने हुए हैं।
गुजरात और तमिलनाडु भारत में कुल स्थापित पवन ऊर्जा क्षमता के मामले में शीर्ष दो राज्यों के रूप में निरंतर अग्रणी बने हुए हैं। इन राज्यों में लंबी तटरेखा, अनुकूल वायु दिशाएँ और तटीय क्षेत्रों में निरंतर हवा का प्रवाह उपलब्ध है। भारत में अधिकांश पवन ऊर्जा तटवर्ती क्षेत्रों में केंद्रित है, जबकि अपतटीय पवन ऊर्जा अभी भी शुरुआती चरण में है और मौसमी हवाओं के कारण उत्पादन पूरे वर्ष एकसमान नहीं रहता।

33. (B) चतुर्थ
ग्लोबल विंड एनर्जी काउंसिल के आंकड़ों के अनुसार, भारत कुल स्थापित पवन ऊर्जा क्षमता के मामले में विश्व स्तर पर चौथे स्थान पर आता है। चीन, संयुक्त राज्य अमेरिका और जर्मनी के बाद भारत की स्थिति आती है। देश ने अपनी विस्तृत तटरेखा और पश्चिमी राज्यों में अनुकूल पवन स्थितियों के कारण पवन टर्बाइनों की स्थापना में उल्लेखनीय प्रगति की है, जो इसकी हरित ऊर्जा प्रतिबद्धता को मजबूत बनाती है।

34. (A) प्रोड्यूसर गैस (सिनगैस)
बायोमास गैसीकरण उच्च तापमान पर नियंत्रित ऑक्सीजन या वाष्प की उपस्थिति में ठोस बायोमास को दहनशील गैस मिश्रण में बदलने की एक तापीय प्रक्रिया है। इस परिणामी गैस मिश्रण को प्रोड्यूसर गैस या सिंथेसिस गैस (सिनगैस) कहा जाता है। इसमें मुख्यतः कार्बन मोनोऑक्साइड, हाइड्रोजन और मीथेन गैसें शामिल होती हैं। इस गैस का उपयोग प्रत्यक्ष दहन, इंजन चलाने और विद्युत उत्पादन करने के लिए ईंधन के रूप में किया जाता है।

35. (B) केवल I और II
चीनी उद्योग का सह-उत्पाद खोई (बगास) भारत में बिजली के सह-उत्पादन के लिए वृहद रूप से प्रयुक्त होता है। बायोमास आधारित विद्युत उत्पादन सौर या पवन ऊर्जा की तुलना में स्थिर और निरंतर आपूर्ति प्रदान कर सकता है। हालांकि, खुले खेतों में बायोमास अवशेषों को जलाना अत्यधिक प्रदूषण फैलाता है और अत्यंत अक्षम है; इसलिए तीसरा कथन गलत है। वैज्ञानिक बायोमास संयंत्रों में दहन या गैसीकरण अधिक कुशल माना जाता है।

36. (D) कार्बन
कार्बन सभी बायोमास ऊर्जा संसाधनों का प्राथमिक रासायनिक आधार बनाता है। पौधे प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया द्वारा वायुमंडल से कार्बन डाइऑक्साइड और जल का उपयोग करके कार्बनिक पदार्थों का निर्माण करते हैं, जिसमें सौर ऊर्जा रासायनिक रूप में संग्रहीत होती है। जब बायोमास, जैसे लकड़ी, कृषि अवशेष या अपशिष्ट को जलाया जाता है या संसाधित किया जाता है, तो यही संग्रहीत कार्बन ऊर्जा मुक्त करता है, जो जैव-ऊर्जा का मुख्य आधार बनता है।

37. (C) मीथेन
बायोगैस का मुख्य दहनशील घटक मीथेन गैस है, जो कुल गैस मिश्रण का लगभग 50 से 70 प्रतिशत हिस्सा होती है। बायोगैस का निर्माण ऑक्सीजन की अनुपस्थिति में सूक्ष्मजीवों द्वारा गोबर, कृषि अपशिष्ट और खाद्य अवशेष जैसे कार्बनिक पदार्थों के अवायवीय अपघटन से होता है। मीथेन की उच्च दहनशीलता के कारण ही बायोगैस एक अत्यंत प्रभावी ईंधन बनती है जिसका उपयोग खाना पकाने और बिजली उत्पन्न करने में होता है।

38. (B) अवशेष (डाइजेस्टेट स्लरी) मृदा के लिए एक मूल्यवान नाइट्रोजन-समृद्ध जैविक उर्वरक के रूप में कार्य करता है।
ग्रामीण बायोगैस संयंत्रों से मिलने वाला एक प्रमुख कृषि लाभ बायोगैस उत्पादन के बाद बचा हुआ अवशेष या स्लरी है। यह अवशेष नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटेशियम जैसे आवश्यक पोषक तत्वों से भरपूर एक उत्कृष्ट जैविक उर्वरक होता है। फसलों में इसके प्रयोग से मिट्टी की उर्वरता और जल धारण क्षमता में सुधार होता है, जिससे किसानों की रासायनिक उर्वरकों पर निर्भरता घटती है और कृषि लागत में कमी आती है।

39. (A) P-2, Q-3, R-4, S-1
अवायवीय पाचन ऑक्सीजन की अनुपस्थिति में जीवाणुओं द्वारा कार्बनिक पदार्थों का विघटन है। पायरोलिसिस ऑक्सीजन की पूर्ण अनुपस्थिति में बायोमास का उच्च तापीय अपघटन है, जिससे बायो-ऑयल और चार प्राप्त होता है। किण्वन शर्करा को इथेनॉल में बदलने वाली जैविक प्रक्रिया है, जबकि प्रत्यक्ष दहन ऊष्मा और भाप उत्पन्न करने के लिए हवा की उपस्थिति में बायोमास को सीधे जलाने की सबसे सरल और पारम्परिक प्रक्रिया को कहा जाता है।

40. (A) खंभात की खाड़ी
गुजरात में स्थित खंभात की खाड़ी भारत में सर्वाधिक अनुमानित ज्वारीय ऊर्जा क्षमता वाला क्षेत्र है। इस खाड़ी की विशिष्ट कीपाकार संरचना और उच्च ज्वारीय सीमा के कारण यहाँ महासागरीय जल का बड़ा उभार उत्पन्न होता है, जो ज्वारीय टर्बाइनों को चलाने के लिए आदर्श परिस्थितियाँ प्रदान करता है। भारत की कुल ज्वारीय क्षमता का एक बड़ा हिस्सा इसी क्षेत्र में केंद्रित है, जो समुद्री ऊर्जा विकास की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

41. (C) पूर्णिमा और अमावस्या के दौरान वृहत ज्वार
ज्वारीय ऊर्जा उत्पादन पूर्णिमा और अमावस्या की तिथियों पर सबसे अधिक प्रभावी होता है, जब सूर्य, पृथ्वी और चंद्रमा एक सीधी रेखा में होते हैं। इस खगोलीय स्थिति के कारण समुद्र में वृहत् ज्वार उत्पन्न होते हैं, जिससे उच्च और निम्न ज्वार के बीच का अंतर (ज्वारीय सीमा) अपने उच्चतम स्तर पर पहुँच जाता है। ज्वारीय सीमा जितनी अधिक होगी, जल का दबाव और टर्बाइनों से उत्पादित बिजली उतनी ही अधिक होगी।

NODIA

42. (A) 3, 1, 2
भारत में अनुमानित ज्वारीय ऊर्जा क्षमता के आधार पर स्थानों का सही घटता क्रम खंभात की खाड़ी, कच्छ की खाड़ी और सुंदरबन डेल्टा है। खंभात की खाड़ी में इसकी भौगोलिक आकृति के कारण सबसे अधिक ज्वारीय क्षमता पाई जाती है, जिसके बाद गुजरात का कच्छ क्षेत्र आता है। पश्चिम बंगाल का सुंदरबन डेल्टा तीसरे स्थान पर है, जहाँ संकीर्ण खाड़ियों और मुहानों में कम क्षमता की ज्वारीय परियोजनाएं संभव हैं।

43. (D) लद्दाख
पूगा घाटी केंद्रशासित प्रदेश लद्दाख के लेह जिले में स्थित है और यह भारत में भू-तापीय ऊर्जा अनुसंधान तथा विकास का सबसे प्रमुख क्षेत्र है। यह घाटी अपने गर्म जल के झरनों, गीज़र और उच्च भू-तापीय प्रवणता के लिए जानी जाती है। यहाँ भारतीय तेल निगम और अन्य एजेंसियों द्वारा भारत की पहली भू-तापीय विद्युत परियोजना विकसित की जा रही है, जिसका उद्देश्य दूरस्थ हिमालयी क्षेत्रों को स्वच्छ ऊर्जा प्रदान करना है।

44. (B) यह दैनिक मौसम के बदलावों और परिवेशी सौर विकिरण पर अत्यधिक निर्भर है।
भू-तापीय ऊर्जा पृथ्वी के आंतरिक भाग में संग्रहीत तापीय ऊष्मा का उपयोग करती है, इसलिए यह दैनिक मौसम, सूर्य के प्रकाश या वर्षा जैसी बाह्य वायुमंडलीय परिस्थितियों से पूरी तरह स्वतंत्र होती है। यह सौर या पवन ऊर्जा की तरह परिवर्तनशील नहीं है, बल्कि वर्ष के 24 घंटे और 365 दिन निर्बाध रुप से उपलब्ध रहती है। अतः भू-तापीय प्रणाली को मौसम-निर्भर बताना पूरी तरह से गलत और असत्य कथन है।

45. (C) हिमाचल प्रदेश
मणिकर्ण भू-तापीय क्षेत्र हिमाचल प्रदेश के कुल्लू जिले में पार्वती नदी घाटी में स्थित है। यह स्थान अपने प्राकृतिक गर्म पानी के कुंडों और उच्च भू-तापीय संभावनाओं के लिए पूरे देश में प्रसिद्ध है। यहाँ भू-गर्भीय ऊष्मा का उपयोग बाइनरी चक्र विद्युत प्रणालियों और प्रत्यक्ष तापीय अनुप्रयोगों के लिए करने के अध्ययन किए गए हैं, जो राज्य में पर्यावरण-अनुकूल स्वच्छ ऊर्जा का एक महत्वपूर्ण और संभाव्य स्रोत है।

46. (A) केवल I, II और III
तत्तापानी भू-तापीय क्षेत्र छत्तीसगढ़ के बलरामपुर जिले में स्थित है, कैम्बे ग्रेबेन गुजरात में एक स्थापित भू-तापीय प्रांत है, और चुमाथांग लद्दाख (हिमालय) में स्थित एक प्रमुख भू-तापीय स्थल है। चौथा कथन गलत है क्योंकि राजस्थान के थार मरुस्थल में सक्रिय गीज़र नहीं पाए जाते हैं; भारत में अधिकांश सक्रिय गर्म पानी के झरने और भू-तापीय क्षेत्र हिमालयी पट्टी और टेक्टोनिक दरारों में पाए जाते हैं।

47. (A) तापीय (कोयला, लिग्नाइट, गैस, डीजल)
भारत की कुल स्थापित विद्युत उत्पादन क्षमता में तापीय ऊर्जा क्षेत्र की हिस्सेदारी अब भी सर्वाधिक बनी हुई है। तापीय ऊर्जा में मुख्य रूप से कोयला आधारित बिजली संयंत्र शामिल हैं, जिनके साथ लिग्नाइट, प्राकृतिक गैस और डीजल संयंत्र भी योगदान देते हैं। यद्यपि नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का तेजी से विस्तार हो रहा है, फिर भी देश की बेस-लोड बिजली मांग को निरंतर पूरा करने के लिए तापीय शक्ति मुख्य आधार बनी हुई है।

48. (B) औद्योगिक
भारत में कुल वाणिज्यिक विद्युत खपत में औद्योगिक क्षेत्र की हिस्सेदारी सर्वाधिक है। भारी विनिर्माण उद्योग, इस्पात संयंत्र, कपड़ा मिलें, रसायन कारखाने और बुनियादी ढांचा इकाइयाँ संचालन के लिए व्यापक मात्रा में बिजली का उपभोग करते हैं। यद्यपि घरेलू और कृषि क्षेत्रों में भी बिजली की मांग में तेजी से वृद्धि हुई है, फिर भी कुल वाणिज्यिक और ग्रिड-सप्लाई की गई बिजली की खपत के प्रतिशत में उद्योग क्षेत्र सबसे आगे है।

49. (B) सौर और पवन क्षमता में तीव्र विस्तार के साथ-साथ जीवाश्म ईंधन हिस्सेदारी में क्रमिक गिरावट।
पिछले दशक में भारत के ऊर्जा मिश्रण में सौर और पवन क्षमता का अभूतपूर्व और तीव्र विस्तार देखा गया है। सरकार की प्रोत्साहन नीतियों, गिरती सौर पैनल लागतों और निवेश के कारण नवीकरणीय ऊर्जा का प्रतिशत लगातार बढ़ा है। यद्यपि कोयले से चलने वाले संयंत्र अभी भी बेस लोड प्रदान करते हैं, लेकिन देश की कुल बिजली क्षमता में जीवाश्म ईंधनों की आनुपातिक हिस्सेदारी में क्रमिक गिरावट दर्ज की गई है।

50. (A) कोयला आधारित तापीय और पंप्ड हाइड्रो स्टोरेज
कोयला आधारित तापीय विद्युत संयंत्र निरंतर और स्थिर बिजली उत्पादन प्रदान करते हैं, जिससे वे एक आदर्श बेस-लोड ऊर्जा स्रोत का कार्य करते हैं। इसके विपरीत, पंप्ड हाइड्रो स्टोरेज प्रणालियाँ त्वरित शुरुआत और बंद होने की क्षमता रखती हैं, जिससे वे पीक-लोड घंटों के दौरान अचानक बढ़ी हुई बिजली मांग को तुरंत पूरा करने के लिए अत्यंत उपयुक्त होती हैं। इस प्रकार यह युग्म क्रमशः बेस और पीक लोड का सटीक उदाहरण है।

51. (B) 2001
भारत सरकार ने देश में ऊर्जा दक्षता और संरक्षण के लिए एक वैधानिक कानूनी ढांचा प्रदान करने हेतु वर्ष 2001 में ऊर्जा संरक्षण अधिनियम लागू किया था। इस अधिनियम के तहत ऊर्जा उपयोग को सुव्यवस्थित करने, औद्योगिक क्षेत्रों के लिए मानक तय करने तथा उपभोक्ताओं को जागरुक करने के लिए कानूनी प्रावधान किए गए। इसी अधिनियम के प्रावधानों के अंतर्गत ऊर्जा दक्षता ब्यूरो की स्थापना भी की गई थी।

52. (D) ऊर्जा दक्षता ब्यूरो (BEE)
विद्युत उपकरणों के लिए अनिवार्य और स्वैच्छिक स्टार लेबलिंग कार्यक्रम का संचालन ऊर्जा दक्षता ब्यूरो द्वारा किया जाता है। यह भारत सरकार के विद्युत मंत्रालय के तहत एक वैधानिक निकाय है। इस स्टार रेटिंग प्रणाली का मुख्य उद्देश्य उपभोक्ताओं को उपकरणों की बिजली खपत की दक्षता के बारे में सही जानकारी देना है, जिससे ऊर्जा की बचत होती है और उपकरणों के चयन में पारदर्शिता और जागरुकता को बढ़ावा मिलता है।

Click Here to Buy book on Flipkart

53. (C) ऊर्जा बचत प्रमाण पत्रों के लिए बाजार आधारित व्यापार तंत्र के माध्यम से औद्योगिक ऊर्जा दक्षता को बढ़ावा देना।
परफॉर्म, अचीव एंड ट्रेड (PAT) योजना भारत के राष्ट्रीय संवर्धित ऊर्जा दक्षता मिशन का एक प्रमुख घटक है। इसका प्राथमिक उद्देश्य ऊर्जा-गहन उद्योगों में विशिष्ट ऊर्जा खपत को कम करना है। यह योजना ऊर्जा बचत प्रमाण पत्रों के बाज़ार-आधारित व्यापार तंत्र का उपयोग करती है, जिसके तहत निर्धारित लक्ष्यों से अधिक बचत करने वाली औद्योगिक इकाइयाँ अपने प्रमाण पत्र उन इकाइयों को बेच सकती हैं जो लक्ष्य चूक जाती हैं।

54. (B) सौभाग्य योजना
प्रधानमंत्री सहज बिजली हर घर योजना को लोकप्रिय रूप से सौभाग्य योजना के नाम से जाना जाता है। इस महत्वाकांक्षी योजना का मुख्य उद्देश्य देश के ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में सभी शेष गैर-विद्युतीकृत घरों को अंतिम छोर तक बिजली कनेक्टिविटी और मुफ्त या रियायती बिजली कनेक्शन प्रदान करके सार्वभौमिक घरेलू विद्युतीकरण का लक्ष्य प्राप्त करना था, जिससे समावेशी सामाजिक-आर्थिक विकास सुनिश्चित किया जा सके।

55. (A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना में ग्रामीण बिजली वितरण अवसंरचना को सुधारने के लिए कृषि और गैर-कृषि बिजली फीडरों को अलग करने पर विशेष बल दिया गया है। फीडर पृथक्करण से बिजली कंपनियों को कृषि पंपों के लिए निर्धारित घंटों में निर्बाध आपूर्ति देने और साथ ही ग्रामीण घरों एवं व्यावसायिक प्रतिष्ठानों को 24 घंटे निरंतर बिजली प्रदान करने में मदद मिलती है। अतः कारण, अभिकथन की बिल्कुल सही व्याख्या करता है।

56. (A) कृषि क्षेत्र (सौर पंप और सौर ऊर्जा उत्पादन)
पीएम-कुसुम योजना मुख्य रूप से कृषि क्षेत्र को स्वच्छ और नवीकरणीय ऊर्जा से जोड़ने पर केंद्रित है। इस योजना के माध्यम से किसानों को डीजल सिंचाई पंपों के स्थान पर सौर ऊर्जा से चलने वाले कृषि पंप स्थापित करने के लिए वित्तीय सहायता दी जाती है। इसके साथ ही, किसान अपनी बंजर भूमि पर छोटे सौर ऊर्जा संयंत्र लगाकर ग्रिड को बिजली बेच सकते हैं, जिससे उनकी आय में भी सुधार होता है।

57. (C) राजीव गांधी ग्रामीण विद्युतीकरण योजना (RGGVY)
पूर्व में संचालित राजीव गांधी ग्रामीण विद्युतीकरण योजना को भारत सरकार द्वारा दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना में शामिल कर लिया गया था। इस एकीकरण का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में बिजली वितरण अवसंरचना को अधिक सुदृढ़ बनाना, कृषि एवं गैर-कृषि फीडरों का पृथक्करण करना तथा उप-पारेषण एवं वितरण प्रणालियों में सुधार करके ग्रामीण भारत को गुणवत्तापूर्ण विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित करना था।

58. (A) P-2, Q-1, R-1, S-1
भारत की अंतर्राष्ट्रीय जलवायु प्रतिबद्धताओं के अनुसार, देश ने वर्ष 2070 तक शुद्ध-शून्य कार्बन उत्सर्जन हासिल करने का लक्ष्य रखा है। इसके अतिरिक्त, वर्ष 2030 तक 500 गिगावाट गैर-जीवाश्म ऊर्जा क्षमता प्राप्त करना, अपनी अर्थव्यवस्था की कार्बन तीव्रता को 45 प्रतिशत तक घटाना और कुल स्थापित बिजली क्षमता का 50 प्रतिशत हिस्सा गैर-जीवाश्म ईंधन आधारित स्रोतों से प्राप्त करने के लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं।

NODIA

59. (C) 50%
ग्लासगो में आयोजित जलवायु शिखर सम्मेलन में भारत ने घोषणा की थी कि वह वर्ष 2030 तक अपनी कुल ऊर्जा आवश्यकताओं का 50 प्रतिशत हिस्सा नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों से पूरा करेगा। यह प्रतिबद्धता भारत के पंचामृत जलवायु संकल्पों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा थी, जिसका उद्देश्य जीवाश्म ईंधनों पर निर्भरता को कम करना, हरित प्रौद्योगिकियों को बढ़ावा देना और वैश्विक स्तर पर उत्सर्जन में तेजी से कमी लाना था।

60. (B) 2040 तक कोयला तापीय संयंत्रों को पूर्णतः समाप्त करना।
भारत के पंचामृत लक्ष्यों में 2040 तक कोयला संयंत्रों को पूरी तरह बंद करने की कोई समय सीमा या प्रतिबद्धता शामिल नहीं थी। भारत ने स्पष्ट किया है कि उसकी विकासशील अर्थव्यवस्था के लिए कोयला वर्तमान में बेस-लोड बिजली का आवश्यक आधार है। अन्य सभी विकल्प—जैसे 500 गिगावाट गैर-जीवाश्म क्षमता, 1 अरब टन कार्बन उत्सर्जन में कमी और 2070 तक नेट-जीरो—पंचामृत संकल्प में शामिल थे।

61. (C) भारत ने 2030 की समय सीमा से काफी पहले 40% गैर-जीवाश्म ईंधन स्थापित क्षमता का अपना शुरुआती लक्ष्य हासिल कर लिया।
पेरिस समझौते के अंतर्गत भारत ने 2030 तक अपनी कुल स्थापित विद्युत क्षमता का 40 प्रतिशत हिस्सा गैर-जीवाश्म ईंधन स्रोतों से प्राप्त करने का शुरुआती लक्ष्य रखा था। भारत ने अभूतपूर्व प्रगति करते हुए इस राष्ट्रीय लक्ष्य को निर्धारित समय-सीमा (2030) से लगभग नौ वर्ष पहले ही 2021 में हासिल कर लिया। इसके बाद भारत ने इस लक्ष्य को बढ़ाकर 50 प्रतिशत तक कर दिया है।

62. (A) केवल I और II
तकनीकी हानियाँ पारेषण और वितरण नेटवर्क के भौतिक प्रतिरोध और उपकरणों में ऊर्जा ह्रास के कारण होती हैं। वाणिज्यिक हानियाँ बिजली की चोरी, मीटर में गड़बड़ी, दोषपूर्ण बिलिंग और असंग्रहित राजस्व के कारण होती हैं। तीसरा कथन असत्य है क्योंकि भारत की हानियाँ वैश्विक स्तर पर सबसे कम (1%) नहीं हैं, बल्कि यह 15 से 20 प्रतिशत के आसपास हैं जिन्हें घटाने के प्रयास किए जा रहे हैं।

63. (A) एग्रीगेट टेक्निकल एंड कमर्शियल (Aggregate Technical and Commercial)
बिजली वितरण क्षेत्र में AT&C का पूर्ण रूप सकल तकनीकी और वाणिज्यिक हानियाँ है। यह मान पारेषण एवं वितरण के दौरान होने वाली भौतिक ऊर्जा हानि तथा राजस्व संग्रह में होने वाली अक्षमता का संयुक्त योग प्रस्तुत करता है। यह सूचकांक बिजली वितरण कंपनियों की समग्र वित्तीय और परिचालन

दक्षता को मापने का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और मानक पैमाना माना जाता है।

64. (B) बिजली वितरण कंपनियों (DISCOMs) के वित्तीय कायाकल्प और परिचालन पुनरुद्धार के लिए।
उज्ज्वल डिस्कॉम एश्योरेंस योजना (उदय) भारत सरकार द्वारा राज्य के स्वामित्व वाली बिजली वितरण कंपनियों के वित्तीय पुनरुद्धार और परिचालन सुधार के लिए शुरु की गई थी। इस योजना के तहत राज्यों को डिस्कॉम के बकाये ऋण का बड़ा हिस्सा अपने ऊपर लेने और ब्याज दर घटाने की अनुमति दी गई, साथ ही एटीएंडसी हानियों को कम करने और स्मार्ट मीटरिंग जैसी परिचालन दक्षताओं को अपनाने के लक्ष्य निर्धारित किए गए।

65. (D) 80-85%
भारत अपनी घरेलू कच्चे तेल की कुल आवश्यकता का लगभग 80 से 85 प्रतिशत हिस्सा विदेशी आयात के माध्यम से पूरा करता है। यह अत्यधिक आयात निर्भरता देश के चालू खाता घाटे और विदेशी मुद्रा भंडार पर भारी दबाव डालती है। यही कारण है कि भारत सरकार नवीकरणीय ऊर्जा, बायो-ईंधन सम्मिश्रण, इलेक्ट्रिक वाहनों और ग्रीन हाइड्रोजन को बढ़ावा देकर अपनी ऊर्जा सुरक्षा और आत्मनिर्भरता को मजबूत करने के प्रयास कर रही है।

66. (A) मंगलुरु, कर्नाटक
कर्नाटक का मंगलुरु उन चुनिंदा स्थानों में से एक है जहाँ भारत सरकार ने आपातकालीन स्थितियों से निपटने के लिए रणनीतिक पेट्रोलियम भंडार की भूमिगत गुफा सुविधा निर्मित की है। यह अवसंरचना इंडियन स्ट्रैटेजिक पेट्रोलियम रिज़र्व्स लिमिटेड द्वारा प्रबंधित की जाती है। इसका उद्देश्य वैश्विक आपूर्ति में व्यवधान या युद्ध जैसी परिस्थितियों के दौरान देश की ऊर्जा सुरक्षा और तेल की निरंतर आपूर्ति को कुछ हफ्तों तक बनाए रखना है।

67. (C) नवीकरणीय ऊर्जा का विस्तार, इलेक्ट्रिक गतिशीलता को अपनाना और घरेलू जैव ईंधन सम्मिश्रण को बढ़ावा देना।
ऊर्जा क्षेत्र में विदेशी आयात निर्भरता को कम करने के लिए सबसे प्रभावी और व्यापक रणनीति नवीकरणीय ऊर्जा की क्षमता बढ़ाना, परिवहन क्षेत्र में इलेक्ट्रिक वाहनों को तेजी से अपनाना और एथेनॉल एवं बायो-डीजल के सम्मिश्रण को प्रोत्साहित करना है। यह बहुआयामी दृष्टिकोण न केवल कच्चे तेल के आयात बिल को काफी हद तक कम करता है, बल्कि पर्यावरण प्रदूषण नियंत्रण और सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति में भी सहायक है।

68. (B) केवल I, III और IV
प्राकृतिक गैस सबसे स्वच्छ जीवाश्म ईंधन है क्योंकि यह दहन पर न्यूनतम प्रदूषक उत्सर्जित करती है। कृष्णा-गोदावरी बेसिन भारत में प्राकृतिक गैस का बड़ा केंद्र है, और शहरों में पाइप्ड गैस वितरण नेटवर्क का विस्तार हो रहा है। हालाँकि, कथन II असत्य है क्योंकि प्राकृतिक गैस का प्राथमिक घटक मीथेन (80-95%) होता है, न कि प्रोपेन; प्रोपेन और ब्यूटेन मुख्यतः द्रवीकृत पेट्रोलियम गैस में पाए जाते हैं।

69. (C) असम
असम भारत में तटवर्ती पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस का ऐतिहासिक रूप से सबसे पुराना और अग्रणी उत्पादक राज्य रहा है। देश का पहला व्यावसायिक तेल कुआँ 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में डिगबोई में खोदा गया था। इसके अलावा नहरकटिया, मोरान और हुगरीजन जैसे प्रसिद्ध तेल एवं गैस क्षेत्र इसी राज्य में स्थित हैं, जो भारत के पूर्वी क्षेत्र की ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

70. (B) आंध्र प्रदेश
कृष्णा-गोदावरी बेसिन भारत के पूर्वी तट पर आंध्र प्रदेश राज्य के तटीय और अपतटीय क्षेत्रों में स्थित एक विशाल भूगर्भीय बेसिन है। यह क्षेत्र हाल के वर्षों में गहरे पानी में प्राकृतिक गैस और कच्चे तेल की विशाल खोजों के लिए अत्यंत प्रसिद्ध रहा है। रिलायंस और ओएनजीसी जैसी कंपनियों द्वारा इस बेसिन से गैस का व्यावसायिक उत्खनन देश की स्वच्छ ऊर्जा आपूर्ति को मजबूत करता है।

71. (A) उर्वरक, बिजली, सिटी गैस डिस्ट्रीब्यूशन
भारत में कुल प्राकृतिक गैस की खपत के आधार पर विभिन्न क्षेत्रों का सही अवरोही क्रम उर्वरक उद्योग, बिजली क्षेत्र और सिटी गैस डिस्ट्रीब्यूशन है। उर्वरक उद्योग, विशेष रूप से यूरिया निर्माण में प्राकृतिक गैस का उपयोग मुख्य कच्चे माल के रूप में किया जाता है, इसलिए इसकी खपत सर्वाधिक है। इसके बाद तापीय गैस आधारित बिजली संयंत्रों और तत्पश्चात सीएनजी व पीएनजी आपूर्ति वाले सिटी गैस नेटवर्क का स्थान आता है।

72. (A) नवीकरणीय बिजली द्वारा संचालित जल इलेक्ट्रोलीसिस के माध्यम से उत्पादित हाइड्रोजन।
ग्रीन हाइड्रोजन को उस हाइड्रोजन के रूप में परिभाषित किया जाता है जो नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों, जैसे सौर या पवन ऊर्जा से उत्पन्न बिजली का उपयोग करके जल के इलेक्ट्रोलीसिस (विद्युत-अपघटन) द्वारा उत्पादित की जाती है। इस उत्पादन प्रक्रिया में जल के अणुओं को हाइड्रोजन और ऑक्सीजन में विभाजित किया जाता है, जिससे शून्य कार्बन उत्सर्जन होता है। यह भविष्य के स्वच्छ और टिकाऊ ऊर्जा परिदृश्य का एक प्रमुख आधार है।

73. (B) 5 MMT
भारत सरकार के राष्ट्रीय ग्रीन हाइड्रोजन मिशन के अंतर्गत वर्ष 2030 तक प्रति वर्ष कम से कम 5 मिलियन मीट्रिक टन (MMT) ग्रीन हाइड्रोजन उत्पादन क्षमता विकसित करने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इस मिशन का उद्देश्य भारत को ग्रीन हाइड्रोजन और इसके डेरिवेटिव के उत्पादन, उपयोग और निर्यात का एक वैश्विक केंद्र बनाना है, जिससे औद्योगिक डीकार्बोनाइजेशन और ऊर्जा आत्मनिर्भरता को बढ़ावा मिलेगा।

74. (A) पिंक हाइड्रोजन - परमाणु ऊर्जा द्वारा उत्पन्न बिजली का उपयोग करके उत्पादित।
पिंक हाइड्रोजन उस हाइड्रोजन को कहा जाता है जिसका उत्पादन परमाणु ऊर्जा से प्राप्त बिजली के माध्यम से जल के

NODIA

इलेक्ट्रोलीसिस द्वारा किया जाता है। अन्य विकल्प गलत सुमेलित हैं: बिना कार्बन कैप्चर के कोयले से उत्पादित हाइड्रोजन को ब्लैक या ब्राउन हाइड्रोजन कहते हैं, जबकि कार्बन कैप्चर के साथ प्राकृतिक गैस से उत्पादित हाइड्रोजन को ब्लू हाइड्रोजन और बिना कार्बन कैप्चर वाली प्राकृतिक गैस से उत्पादित हाइड्रोजन को ग्रे हाइड्रोजन कहा जाता है।

75. (A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
इस्पात, उर्वरक और भारी नौवहन जैसे उद्योगों को आसानी से विद्युतीकृत नहीं किया जा सकता, इसलिए इन्हें कार्बन-मुक्त करने में ग्रीन हाइड्रोजन अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। फ्यूल सेल में ग्रीन हाइड्रोजन के दहन या रासायनिक उपयोग के दौरान उप-उत्पाद के रूप में केवल जल वाष्प बनती है, जिससे शून्य कार्बन उत्सर्जन होता है। अतः कारण, अभिकथन में दी गई बात का बिल्कुल सटीक वैज्ञानिक स्पष्टीकरण प्रस्तुत करता है।

76. (B) राजस्थान
नवीनतम आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, राजस्थान भारत में कुल स्थापित नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता के मामले में लगातार पहले स्थान पर बना हुआ है। राज्य की इस उपलब्धि का मुख्य कारण इसकी विशाल सौर ऊर्जा क्षमता और तेजी से बढ़ता पवन ऊर्जा ढांचा है। थार मरुस्थल में सौर विकिरण की अनुकूल स्थिति और विशाल बंजर भूमि की उपलब्धता ने राजस्थान को देश के स्वच्छ ऊर्जा परिदृश्य का सबसे बड़ा केंद्र बना दिया है।

77. (C) गुजरात
गुजरात ने हाल ही में स्थापित पवन ऊर्जा क्षमता के मामले में तमिलनाडु को पीछे छोड़ते हुए भारत में पहला स्थान प्राप्त कर लिया है। गुजरात के तटीय क्षेत्रों में निरंतर बहने वाली तीव्र हवाओं, अनुकूल राज्य औद्योगिक नीतियों और बड़े पैमाने पर पवन पार्कों के निर्माण ने इस उपलब्धि में मुख्य भूमिका निभाई है। गुजरात सौर और पवन दोनों ही नवीकरणीय स्रोतों के विकास में देश का अग्रणी राज्य बनकर उभरा है।

78. (D) महाराष्ट्र
महाराष्ट्र भारत में बायो-ऊर्जा और खोई (बगास) पर आधारित सह-उत्पादन बिजली के क्षेत्र में अग्रणी राज्य है। महाराष्ट्र में एक विशाल और संगठित चीनी उद्योग मौजूद है, जहाँ गन्ना पेराई प्रक्रिया के बाद भारी मात्रा में खोई उप-उत्पाद के रूप में प्राप्त होती है। चीनी मिलें इस बगास का उपयोग अपनी तापीय और विद्युत आवश्यकताओं को पूरा करने के साथ-साथ राज्य ग्रिड को अधिशेष बिजली बेचने के लिए सफलतापूर्वक करती हैं।

79. (A) राजस्थान की कुल स्थापित नवीकरणीय क्षमता का सबसे बड़ा एकल घटक सौर ऊर्जा है।
राजस्थान के ऊर्जा प्रोफाइल में कुल स्थापित नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता का सबसे बड़ा एकल घटक सौर ऊर्जा है। भादला सोलर पार्क जैसी विशाल परियोजनाओं के बल पर राजस्थान ने देश में सर्वाधिक सौर क्षमता हासिल की है। यद्यपि राज्य में पवन ऊर्जा का भी योगदान है, लेकिन सौर ऊर्जा का प्रभुत्व सबसे अधिक है। इसके अतिरिक्त, राजस्थान बेस-लोड के लिए तापीय कोयला संयंत्रों पर भी निर्भरता बनाए रखता है।

80. (B) सस्ती बाजार कीमत पर प्राथमिक ऊर्जा स्रोतों की निर्बाध उपलब्धता।
एक अकादमिक और नीतिगत संदर्भ में, ऊर्जा सुरक्षा का अर्थ देश के सभी नागरिकों और आर्थिक क्षेत्रों के लिए सस्ती बाजार दरों पर प्राथमिक ऊर्जा स्रोतों की निर्बाध, पर्याप्त और विश्वसनीय उपलब्धता सुनिश्चित करना है। इसमें आपूर्ति श्रृंखला के जोखिमों को कम करना, ऊर्जा स्रोतों का विविधीकरण करना तथा बाह्य झटकों या वैश्विक मूल्य अस्थिरता से अर्थव्यवस्था को सुरक्षित रखना शामिल है, ताकि सतत आर्थिक विकास निरंतर बाधित न हो।

81. (A) केवल I और II
ऊर्जा आयात स्रोतों का विविधीकरण भू-राजनीतिक जोखिमों को कम करता है, और ओपन एक्रेज लाइसेंसिंग नीति से घरेलू तेल व गैस अन्वेषण को प्रोत्साहन मिलता है, जो ऊर्जा सुरक्षा बढ़ाते हैं। तीसरा उपाय गलत है क्योंकि आपातकालीन आपूर्ति बनाए रखने के लिए रणनीतिक पेट्रोलियम भंडारों की क्षमता को बढ़ाना आवश्यक होता है, न कि घटाना। अतः केवल पहला और दूसरा उपाय ही देश की ऊर्जा सुरक्षा को सुदृढ़ करने के लिए तार्किक हैं।

82. (C) तीसरा सबसे बड़ा उपभोक्ता
प्राथमिक ऊर्जा खपत के मामले में भारत वर्तमान में चीन और संयुक्त राज्य अमेरिका के बाद विश्व में तीसरे स्थान पर है। तेजी से होती आर्थिक वृद्धि, शहरीकरण, औद्योगिक विकास और जीवन स्तर में सुधार के कारण देश में ऊर्जा की मांग निरंतर बढ़ रही है। इस बढ़ती खपत को पूरा करने के लिए भारत अपने ऊर्जा स्रोतों में तेजी से नवीकरणीय और स्वच्छ विकल्पों को शामिल कर रहा है।

83. (B) 2006
नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय को इसका वर्तमान नाम वर्ष 2006 में दिया गया था। इससे पहले इसे 'गैर-पारंपरिक ऊर्जा स्रोत मंत्रालय' के रूप में जाना जाता था। नाम में यह परिवर्तन भारत सरकार की नवीकरणीय ऊर्जा के प्रति बदलती प्राथमिकताओं और इस क्षेत्र को देश की मुख्यधारा की ऊर्जा नीति में एक महत्वपूर्ण और आधुनिक स्थान देने की दृष्टि को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

84. (A) P-4, Q-3, R-2, S-1
ऊर्जा क्षेत्र की प्रमुख संस्थाओं के कार्य इस प्रकार हैं: ऊर्जा दक्षता ब्यूरो (BEE) ऊर्जा मानकों का नियमन करता है। भारतीय सौर ऊर्जा निगम (SECI) सौर/पवन परियोजनाओं के कार्यान्वयन की नोडल एजेंसी है। भारतीय नवीकरणीय ऊर्जा विकास एजेंसी (IREDA) परियोजनाओं के लिए वित्तीय ऋण देती है। केंद्रीय विद्युत प्राधिकरण (CEA) विद्युत मंत्रालय के मुख्य तकनीकी और योजना सलाहकार के रूप में कार्य करता है।

Downloaded from www.pdf.tube

85. (C) सोलर एनर्जी कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया (SECI)
नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय के अंतर्गत 'सोलर एनर्जी कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया' (SECI) मुख्य नोडल एजेंसी है जो राष्ट्रीय सौर मिशन को लागू करने के लिए उत्तरदायी है। यह संस्था देश में बड़े पैमाने पर सौर और पवन ऊर्जा परियोजनाओं के लिए प्रतिस्पर्धी रिवर्स नीलामी आयोजित करती है, बिजली खरीद समझौते करती है और डेवलपर्स तथा राज्य डिस्कॉम के बीच एक महत्वपूर्ण मध्यस्थ की भूमिका निभाती है।

86. (B) केवल I, II और IV
केंद्रीय विद्युत प्राधिकरण एक वैधानिक संस्था है जो राष्ट्रीय विद्युत योजना तैयार करती है, विद्युत संयंत्रों और ग्रिड अवसंरचना के लिए तकनीकी मानक तय करती है, तथा उत्पादन एवं संचरण से जुड़ा डेटा एकत्र करती है। हालाँकि, व्यक्तिगत उपभोक्ताओं के लिए खुदरा बिजली दरें (टैरिफ) तय करना इसका कार्य नहीं है; यह कार्य राज्य विद्युत नियामक आयोगों द्वारा किया जाता है। अतः तीसरा कथन सही नहीं है।

87. (D) यह ऊर्जा उपयोग की निगरानी और प्रबंधन के लिए उपयोगिता और ग्राहकों के बीच दो-तरफा डिजिटल संचार को शामिल करता है।
एक स्मार्ट ग्रिड की मुख्य मूलभूत विशेषता यह है कि यह बिजली वितरण कंपनी और उपभोक्ताओं के बीच दो-तरफा डिजिटल संचार और वास्तविक समय डेटा विनिमय का उपयोग करता है। यह प्रणाली स्वचालित सेंसरों, स्मार्ट मीटरों और उन्नत सॉफ्टवेयर के माध्यम से बिजली की मांग, आपूर्ति, लोड संतुलन और फॉल्ट का खुद प्रबंधन करती है, जो इसे पारंपरिक एकतरफा बिजली ग्रिड की तुलना में अधिक कुशल बनाती है।

88. (A) यह कम मांग (ऑफ-पीक) के घंटों के दौरान जल को एक ऊपरी जलाशय में पंप करता है और उच्च मांग (पीक) के दौरान टर्बाइनों के माध्यम से इसे छोड़ता है।
पंप्ड हाइड्रो स्टोरेज प्रणाली में दो अलग-अलग ऊँचाई पर स्थित जल जलाशय होते हैं। कम मांग या अधिशेष बिजली उत्पादन के दौरान, पानी को निचले जलाशय से ऊपरी जलाशय में पंप करके गुरुत्वीय स्थितिज ऊर्जा के रूप में संग्रहीत किया जाता है। फिर उच्च बिजली मांग (पीक घंटों) के समय इस पानी को टर्बाइनों से नीचे छोड़कर त्वरित बिजली उत्पन्न की जाती है, जो ग्रिड को संतुलन प्रदान करती है।

89. (A) 2, 3, 4, 1
स्मार्ट ग्रिड में एडवांस्ड मीटरिंग इंफ्रास्ट्रक्चर के माध्यम से डेटा प्रवाह का सही क्रम है: सबसे पहले उपभोक्ता परिसर में स्थित स्मार्ट मीटर डेटा रिकॉर्ड करते हैं। इसके बाद यह डेटा डेटा कंसंट्रेटर यूनिट द्वारा एकत्र किया जाता है। फिर हेड एंड सिस्टम इस संचार को संसाधित करके अंत में मीटर डेटा प्रबंधन प्रणाली तक पहुँचाता है, जहाँ बिलिंग और विश्लेषण की प्रक्रिया पूरी होती है।

90. (A) सौर और पवन ऊर्जा उत्पादन की परिवर्तनशील प्रकृति को प्रबंधित करना, जिससे समग्र ग्रिड स्थिरता सुनिश्चित हो सके।
भारत में बड़े पैमाने पर बैटरी एनर्जी स्टोरेज सिस्टम विकसित करने का मुख्य उद्देश्य सौर और पवन ऊर्जा की परिवर्तनशील प्रकृति का प्रबंधन करना है। चूंकि सूर्य और हवा से उत्पादन निरंतर एकसमान नहीं रहता, इसलिए अधिशेष हरित बिजली को बैटरियों में संग्रहीत किया जाता है। इस संग्रहीत ऊर्जा का उपयोग आपूर्ति घटने या मांग बढ़ने पर ग्रिड में करके ग्रिड की आवृत्ति और स्थिरता बनाई रखी जाती है।

www.nodia.in

NODIA

अध्याय 08

भारत के प्रमुख उद्योग और औद्योगिक क्षेत्र

1. निम्नलिखित में से उद्योगों का कौन-सा समूह भारत में विशेष रूप से कृषि-आधारित उद्योगों के रूप में वर्गीकृत है?
   (A) ऊनी वस्त्र, रेशम, सीमेंट और चमड़ा
   (B) सूती वस्त्र, जूट, चीनी और खाद्य तेल
   (C) रबर, चाय, लोहा और इस्पात तथा डेयरी
   (D) कागज, उर्वरक, पेट्रोकेमिकल्स और कॉफी

2. उद्योगों का आधारभूत या मुख्य उद्योगों के रूप में वर्गीकरण प्राथमिक रूप से निम्नलिखित में से किस विशेषता द्वारा निर्धारित होता है?
   (A) उद्योग विशेष रूप से भारी और स्थूल कच्चे माल का उपयोग करता है।
   (B) उद्योग पूरी तरह से केंद्र सरकार के स्वामित्व और प्रबंधन के अधीन है।
   (C) उद्योग में कम पूंजी निवेश की आवश्यकता होती है, किंतु यह अधिक रोजगार सृजित करता है।
   (D) उद्योग के उत्पाद अन्य वस्तुओं के निर्माण के लिए कच्चे माल के रूप में कार्य करते हैं।

3. खनिज-आधारित उद्योगों के संदर्भ में, कच्चा माल और उसके संबंधित उद्योग का निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म सुमेलित नहीं है?
   (A) नेफ्था - लोहा एवं इस्पात उद्योग
   (B) बॉक्साइट - एल्युमीनियम उद्योग
   (C) चूना पत्थर - सीमेंट उद्योग
   (D) सिलिका बालू - कांच उद्योग

4. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन फुटलूस (स्वच्छंद) उद्योग का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
   (A) एक ऐसा उद्योग जो भार-ह्रास वाले कच्चे माल पर अत्यधिक निर्भर है।
   (B) एक ऐसा उद्योग जो बड़े पैमाने पर असंगठित और प्रवासी कार्यबल को नियोजित करता है।
   (C) एक ऐसा उद्योग जिसे लागत में बिना किसी विशेष अंतर के विभिन्न स्थानों पर स्थापित किया जा सकता है।
   (D) एक ऐसा उद्योग जो विशेष रूप से निर्यात बाजारों को लक्षित करता है और तटीय क्षेत्रों में संचालित होता है।

5. भारत में पहली सफल मशीनीकृत सूती वस्त्र मिल किस वर्ष और किस स्थान पर स्थापित की गई थी?
   (A) 1818 में फोर्ट ग्लॉस्टर, कोलकाता
   (B) 1854 में मुंबई
   (C) 1861 में अहमदाबाद
   (D) 1874 में कानपुर

6. निम्नलिखित में से कौन-सा कारक मुंबई-अहमदाबाद क्षेत्र में सूती वस्त्र उद्योग के ऐतिहासिक संकेंद्रण का प्राथमिक कारण नहीं माना जाता है?
   (A) उपजाऊ काली सूती मिट्टी वाले उत्पादक क्षेत्रों से निकटता।
   (B) आर्द्र समुद्री जलवायु जो कताई के दौरान धागे को टूटने से बचाती है।
   (C) औद्योगिक मशीनरी के आयात के लिए उत्कृष्ट बंदरगाह सुविधाएं।
   (D) सस्ते परिवहन के लिए विस्तृत अंतर्देशीय जलमार्ग नेटवर्क।

7. भारत में जूट उद्योग के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   I. भारत विश्व में कच्चे जूट और जूट के सामान का सबसे बड़ा उत्पादक है।
   II. यह उद्योग पश्चिम बंगाल के हुगली बेसिन में अत्यधिक संकेंद्रित है।
   III. राष्ट्रीय जूट बोर्ड का मुख्यालय नई दिल्ली में स्थित है।
   उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
   (A) केवल I और II
   (B) केवल II और III
   (C) केवल I और III
   (D) I, II और III

8. 1947 में भारत के विभाजन के तुरंत बाद भारतीय जूट उद्योग पर सबसे महत्वपूर्ण प्रतिकूल प्रभाव क्या पड़ा था?
   (A) सभी प्रमुख जूट मिलों को पूर्वी पाकिस्तान में स्थानांतरित कर दिया गया था।
   (B) कृत्रिम (सिंथेटिक) रेशों के आविष्कार के कारण जूट की वैश्विक मांग पूरी तरह से समाप्त हो गई थी।
   (C) प्रमुख जूट उत्पादक क्षेत्र पूर्वी पाकिस्तान में चले गए, जबकि मिलें भारत में ही रह गईं।
   (D) ब्रिटिश सरकार ने भारतीय जूट निर्यात पर प्रतिबंध लगा दिया था।

9. राजस्थान में सूती वस्त्र उद्योग के संदर्भ में, किस जिले को उसके प्रमुख वस्त्र क्षेत्र के कारण व्यापक रूप से 'राजस्थान का मैनचेस्टर' कहा जाता है?
   (A) जयपुर
   (B) पाली

Click Here to Buy book on Amazon

(C) जोधपुर
(D) भीलवाड़ा

10. भारत के प्रमुख एकीकृत इस्पात संयंत्रों में से एक, भिलाई इस्पात संयंत्र की स्थापना किस देश के तकनीकी सहयोग से की गई थी?
(A) सोवियत संघ (USSR)
(B) यूनाइटेड किंगडम
(C) पश्चिम जर्मनी
(D) संयुक्त राज्य अमेरिका

11. सूची I के लोहा एवं इस्पात संयंत्रों को सूची II के सहयोगी देशों के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I : लोहा एवं इस्पात संयंत्र
P. राउरकेला इस्पात संयंत्र
Q. दुर्गापुर इस्पात संयंत्र
R. बोकारो इस्पात संयंत्र
S. विशाखापट्टनम इस्पात संयंत्र
सूची II : सहयोगी देश
1. सोवियत संघ (USSR)
2. यूनाइटेड किंगडम
3. जर्मनी
4. स्वदेशी प्रौद्योगिकी (बाद में सोवियत सहायता)
(A) P-3, Q-2, R-1, S-1
(B) P-2, Q-3, R-1, S-4
(C) P-3, Q-2, R-4, S-1
(D) P-1, Q-2, R-3, S-4

12. निम्नलिखित में से किस कच्चे माल को सबसे महत्वपूर्ण भार-ह्रास वाला आगत (इनपुट) माना जाता है, जो भारत में एकीकृत लोहा और इस्पात संयंत्रों की अवस्थिति को अत्यधिक प्रभावित करता है?
(A) उच्च श्रेणी का मैंगनीज अयस्क
(B) धातुकर्मीय कोकिंग कोयला
(C) उच्च गुणवत्तायुक्त गालक (फ्लक्स) चूना पत्थर
(D) कच्चा अपवर्तक (रिफैक्ट्री) डोलोमाइट

13. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन एकीकृत इस्पात संयंत्र और मिनी इस्पात संयंत्र के बीच मुख्य अंतर को सही ढंग से दर्शाता है?
(A) एकीकृत संयंत्र एक ही परिसर में कच्चे माल से इस्पात निर्माण तक का कार्य करते हैं, जबकि मिनी संयंत्र स्क्रैप या स्पंज आयरन के लिए इलेक्ट्रिक आर्क भट्ठी का उपयोग करते हैं।
(B) मिनी इस्पात संयंत्र धमन भट्ठी (ब्लास्ट फर्नेस) में लौह अयस्क से सीधे कच्चा लोहा उत्पादित करते हैं, जबकि एकीकृत संयंत्र विशेष रूप से पुनर्चक्रित स्क्रैप आयरन का प्रसंस्करण करते हैं।
(C) एकीकृत संयंत्रों की तुलना में मिनी इस्पात संयंत्रों को काफी अधिक प्रारंभिक पूंजी निवेश और व्यापक अवसंरचना की आवश्यकता होती है।
(D) एकीकृत इस्पात संयंत्र पूरी तरह से निजी क्षेत्र के स्वामित्व और संचालन में हैं, जबकि मिनी इस्पात संयंत्र केवल सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के रूप में कार्य करते हैं।

14. जमशेदपुर स्थित टाटा आयरन एंड स्टील कंपनी (TISCO) किन दो नदियों के संगम पर स्थित है?
(A) दामोदर और बराकर नदियां
(B) महानदी और ब्राह्मणी नदियां
(C) स्वर्णरेखा और खरकाई नदियां
(D) हुगली और रुपनारायण नदियां

15. चेन्नई ने मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किस उद्योग के संकेंद्रण के कारण 'भारत का डेट्रॉयट' उपनाम प्राप्त किया है?
(A) सूचना प्रौद्योगिकी सेवाएं
(B) सूती वस्त्र निर्माण
(C) पेट्रोकेमिकल प्रसंस्करण
(D) ऑटोमोबाइल निर्माण

16. भारत में पेट्रोकेमिकल उद्योग के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. पेट्रोकेमिकल्स मुख्य रूप से पेट्रोलियम शोधन और प्राकृतिक गैस प्रसंस्करण से प्राप्त होते हैं।
II. नेफ्था और एथिलीन पेट्रोकेमिकल उद्योग के लिए महत्वपूर्ण कच्चे माल (फीडस्टॉक) हैं।
III. इंडियन पेट्रोकेमिकल्स कॉर्पोरेशन लिमिटेड (IPCL) ने वडोदरा में पहला प्रमुख पेट्रोकेमिकल कॉम्प्लेक्स स्थापित किया।
IV. यह उद्योग विशेष रूप से तटीय बंदरगाहों से दूर भू-आबद्ध (लैंडलॉक्ड) क्षेत्रों में स्थित होता है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही नहीं है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल III और IV
(C) केवल IV
(D) I, III और IV

17. निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प भारत में प्रमुख एकीकृत इस्पात संयंत्रों की स्थापना का सही कालानुक्रमिक क्रम दर्शाता है?
(A) टिस्को जमशेदपुर, इस्को बर्नपुर, भिलाई इस्पात संयंत्र, बोकारो इस्पात संयंत्र
(B) इस्को बर्नपुर, टिस्को जमशेदपुर, बोकारो इस्पात संयंत्र, भिलाई इस्पात संयंत्र
(C) टिस्को जमशेदपुर, भिलाई इस्पात संयंत्र, इस्को बर्नपुर, बोकारो इस्पात संयंत्र
(D) भिलाई इस्पात संयंत्र, टिस्को जमशेदपुर, बोकारो इस्पात संयंत्र, इस्को बर्नपुर

18. गुजरात का जामनगर विश्व के सबसे बड़े ग्रासरूट रिफाइनरी और पेट्रोकेमिकल्स कॉम्प्लेक्स के लिए वैश्विक स्तर पर प्रसिद्ध है। यह किस कॉर्पोरेट संस्था के स्वामित्व और संचालन में है?
(A) इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड (IOCL)
(B) ऑयल एंड नेचुरल गैस कॉर्पोरेशन (ONGC)

NODIA

(C) भारत पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड (BPCL)
(D) रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड (RIL)

19. भारत में सूचना प्रौद्योगिकी (IT) और बिजनेस प्रोसेस आउटसोर्सिंग (BPO) उद्योग के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
(A) एक आईटी हब के रूप में बेंगलुरु का विकास शुरुआती सार्वजनिक क्षेत्र की उच्च-तकनीकी (हाई-टेक) इकाइयों और तकनीकी शैक्षणिक संस्थानों द्वारा प्रेरित था।
(B) भारत में आईटी उद्योग की विशेषता औद्योगिक इस्पात और एल्युमीनियम जैसे आयातित भौतिक कच्चे माल पर अत्यधिक परिचालन निर्भरता है।
(C) भारत के सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी पार्क (STPI) की स्थापना मुख्य रूप से स्वदेशी सॉफ्टवेयर प्रौद्योगिकियों के निर्यात को प्रतिबंधित और अत्यधिक विनियमित करने के लिए की गई थी।
(D) अंतरराष्ट्रीय पर्यटन क्षेत्र की सीधे तुलना में भारत के कुल सेवा निर्यात में आईटी उद्योग केवल न्यूनतम हिस्सेदारी का योगदान देता है।

20. महाराष्ट्र में एक प्रमुख सूचना प्रौद्योगिकी हब के रूप में पुणे का उभार मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किस समर्पित आईटी पार्क के आसपास केंद्रित है?
(A) हैदराबाद हाइटेक सिटी
(B) बेंगलुरु इलेक्ट्रॉनिक सिटी
(C) हिंजवाड़ी इंफोटेक पार्क
(D) गुरुग्राम मिलेनियम सिटी

21. तेलंगाना का कौन-सा शहर अपनी हाइटेक सिटी (हैदराबाद इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी एंड इंजीनियरिंग कंसल्टेंसी सिटी) टाउनशिप के लिए व्यापक रूप से जाना जाता है?
(A) हैदराबाद
(B) वारंगल
(C) सिकंदराबाद
(D) निज़ामाबाद

22. मुंबई-पुणे औद्योगिक क्षेत्र के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
कथन (A) : मुंबई-पुणे औद्योगिक क्षेत्र ने धीरे-धीरे सूती वस्त्र उद्योग से इंजीनियरिंग, रसायन और ऑटोमोबाइल उद्योगों की ओर अपना प्रभुत्व स्थानांतरित कर लिया है।
कारण (R) : विकेंद्रीकृत पावरलूम की शुरुआत और शहरी विस्तार की भौतिक बाधाओं ने पुरानी कपड़ा मिलों को बंद करने या स्थानांतरित करने के लिए बाध्य किया।
निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प सही है?
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

23. हुगली औद्योगिक क्षेत्र मुख्य रूप से हुगली नदी के तट पर फैला हुआ है। कौन-से दो नगर सामान्यतः इसकी उत्तरी और दक्षिणी सीमाओं को निर्धारित करते हैं?
(A) आसनसोल से हल्दिया
(B) बांसबेरिया से बिड़लानगर
(C) दुर्गापुर से कोलकाता
(D) खड़गपुर से डायमंड हार्बर

24. अपने समृद्ध कोयला भंडारों तथा लोहा एवं इस्पात उद्योगों के उच्च संकेंद्रण के कारण निम्नलिखित में से किस क्षेत्र को पारंपरिक रूप से 'भारत का रूर' कहा जाता है?
(A) गुजरात औद्योगिक क्षेत्र
(B) गुरुग्राम-दिल्ली-मेरठ क्षेत्र
(C) छोटानागपुर पठार क्षेत्र
(D) कोल्लम-तिरुवनंतपुरम क्षेत्र

25. बेंगलुरु-चेन्नई औद्योगिक क्षेत्र में हाल के दशकों में तेजी से वृद्धि देखी गई है। निम्नलिखित में से कौन-सा इस क्षेत्र का विशेष लक्षण नहीं है?
(A) यह क्षेत्र वैमानिकी, मशीन टूल्स और उन्नत इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योगों का मजबूत संकेंद्रण बनाए हुए है।
(B) पायकारा जलविद्युत परियोजना ने क्षेत्रीय औद्योगिक विकास को सुगम बनाने के लिए शुरुआती महत्वपूर्ण बिजली सहायता प्रदान की।
(C) इस क्षेत्र ने ऑटोमोटिव क्षेत्र में काफी मात्रा में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को सफलतापूर्वक आकर्षित किया है।
(D) यह बिजली उत्पादन के लिए प्रचुर मात्रा में स्थानीय कोयला भंडारों पर अत्यधिक निर्भर था।

26. भारत में निम्नलिखित में से किस औद्योगिक नीति को आधिकारिक रूप से मिश्रित अर्थव्यवस्था के ढांचे को स्थापित करने, उद्योगों को सार्वजनिक, निजी और संयुक्त क्षेत्रों में विभाजित करने का श्रेय दिया जाता है?
(A) औद्योगिक नीति संकल्प, 1948
(B) 1956 का औद्योगिक नीति संकल्प
(C) 1977 का औद्योगिक नीति वक्तव्य
(D) 1991 की नई औद्योगिक नीति

27. 1956 का औद्योगिक नीति संकल्प किस आर्थिक नियोजन मॉडल से अत्यधिक प्रभावित था?
(A) हैरोड-डोमर मॉडल
(B) महालनोबिस मॉडल
(C) गांधी-नारायण मॉडल
(D) पुरा (PURA) मॉडल

28. 1956 के औद्योगिक नीति संकल्प के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसने उद्योगों को तीन श्रेणियों या अनुसूचियों (अनुसूची A, B और C) में वर्गीकृत किया।
II. अनुसूची A में वे उद्योग शामिल थे जिनका भावी विकास राज्य की अनन्य जिम्मेदारी होगी।
III. इसने लघु और कुटीर उद्योगों के विकास को दृढ़ता से हतोत्साहित किया।

Downloaded from www.pdf.tube

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

29. 1991 की नई औद्योगिक नीति ने भारत में व्यापक आर्थिक सुधारों की शुरुआत की। निम्नलिखित में से कौन-सा इस नीति का प्रमुख लक्षण नहीं था?
(A) बिना किसी अपवाद के सभी परियोजनाओं के लिए औद्योगिक लाइसेंसिंग का उन्मूलन।
(B) केवल सार्वजनिक क्षेत्र के लिए आरक्षित उद्योगों की संख्या में महत्वपूर्ण कमी।
(C) प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) के नियमों का उदारीकरण।
(D) एकाधिकार तथा प्रतिबंधात्मक व्यापार व्यवहार (MRTP) अधिनियम के प्रतिबंधों में छूट।

30. 1970 के दशक के दौरान भारत के औद्योगिक परिदृश्य में 'संयुक्त क्षेत्र' (जॉइंट सेक्टर) की अवधारणा को शुरु करने में किस समिति की सिफारिशों का गहरा प्रभाव था?
(A) वित्तीय क्षेत्र के सुधारों पर सी. रंगराजन समिति
(B) बैंकिंग क्षेत्र सुधारों पर एम. नरसिम्हम समिति
(C) औद्योगिक लाइसेंसिंग पर दत्त समिति
(D) सार्वजनिक-निजी भागीदारी पर विजय केलकर समिति

31. 1991 की नई औद्योगिक नीति ने सार्वजनिक क्षेत्र के लिए आरक्षित उद्योगों की सूची को काफी कम कर दिया। वर्तमान में, निम्नलिखित में से कौन-सा क्षेत्र विशेष रूप से सार्वजनिक क्षेत्र के लिए आरक्षित है?
(A) वाणिज्यिक एयरोस्पेस निर्माण
(B) भारी अर्थ-मूविंग मशीनरी
(C) दूरसंचार अवसंरचना
(D) परमाणु ऊर्जा

32. भारत में विशेष आर्थिक क्षेत्रों (SEZs) की स्थापना के पीछे मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) घरेलू विनिर्माण उद्योगों को विदेशी प्रतिस्पर्धा और वैश्विक बाजार की ताकतों से सख्ती से अलग करना।
(B) स्थानीय ग्रामीण आबादी को अत्यधिक सब्सिडी वाली आवश्यक उपभोक्ता वस्तुएं व्यवस्थित रूप से प्रदान करना।
(C) शुल्क-मुक्त क्षेत्रों के माध्यम से निर्यात को बढ़ावा देना, विदेशी निवेश को आकर्षित करना और रोजगार उत्पन्न करना।
(D) अत्यधिक प्रदूषण फैलाने वाली सभी औद्योगिक इकाइयों को शहरी आबादी के केंद्रों से दूर जबरन स्थानांतरित करना।

33. विशेष आर्थिक क्षेत्र (SEZ) अधिनियम, जो भारत में एसईजेड की स्थापना के लिए कानूनी ढांचा प्रदान करता है, संसद द्वारा किस वर्ष पारित किया गया था?
(A) 1991
(B) 2000
(C) 2005
(D) 2014

NODIA

34. सूची I में दिए गए प्रमुख परिचालन विशेष आर्थिक क्षेत्रों (SEZs) / निर्यात प्रसंस्करण क्षेत्रों (EPZs) को सूची II में उनके संबंधित राज्यों से सुमेलित कीजिए।
सूची I : विशेष आर्थिक क्षेत्र / निर्यात प्रसंस्करण क्षेत्र
P. कांडला
Q. सीप्स (SEEPZ)
R. मीप्स (MEPZ)
S. फालटा
सूची II : राज्य
1. महाराष्ट्र
2. तमिलनाडु
3. पश्चिम बंगाल
4. गुजरात
(A) P-4, Q-1, R-2, S-3
(B) P-1, Q-4, R-3, S-2
(C) P-4, Q-2, R-1, S-3
(D) P-3, Q-1, R-2, S-4

35. भारत (और एशिया) का पहला निर्यात प्रसंस्करण क्षेत्र (EPZ) 1965 में किस स्थान पर स्थापित करने का श्रेय दिया जाता है?
(A) कांडला, गुजरात
(B) सांताक्रूज़, मुंबई
(C) नोएडा, उत्तर प्रदेश
(D) कोचीन, केरल

36. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन भारत में एक निर्यात प्रसंस्करण क्षेत्र (EPZ) और एक विशेष आर्थिक क्षेत्र (SEZ) के बीच मौलिक अंतर को सही ढंग से दर्शाता है?
(A) व्यापार संचालन के लिए ईपीजेड को विदेशी क्षेत्र माना जाता है, जबकि एसईजेड सख्ती से घरेलू सीमा शुल्क और कानूनों से बंधे रहते हैं।
(B) ईपीजेड विशेष रुप से निजी डेवलपर्स द्वारा संचालित होते हैं, जबकि एसईजेड केवल केंद्र सरकार द्वारा सीधे स्थापित किए जा सकते हैं।
(C) एसईजेड में निर्माण, व्यापार और सेवाएं शामिल हैं, जबकि ईपीजेड मुख्य रूप से निर्यात निर्माण तक सीमित थे।
(D) एसईजेड में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश सख्ती से प्रतिबंधित है, जबकि ईपीजेड में इसे अत्यधिक बढ़ावा और प्रोत्साहन दिया जाता है।

37. 'मेक इन इंडिया' पहल भारत सरकार द्वारा 2014 में शुरु की गई थी। सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में विनिर्माण क्षेत्र के योगदान के संबंध में इसका शुरुआती लक्ष्य क्या था?
(A) 2020 तक राष्ट्रीय जीडीपी में विनिर्माण क्षेत्र के योगदान को बढ़ाकर 15% करना।
(B) 2022 तक जीडीपी में विनिर्माण की हिस्सेदारी बढ़ाकर 25% करना।

(C) 2025 तक कुल राष्ट्रीय जीडीपी के 35% तक पहुँचने के लिए विनिर्माण क्षेत्र की हिस्सेदारी का तेजी से विस्तार करना।
(D) यह अनिवार्य करना कि विनिर्माण क्षेत्र कुल राष्ट्रीय निर्यात मूल्य का ठीक 50% योगदान दे।

38. 'मेक इन इंडिया' पहल के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
कथन (A) : मेक इन इंडिया पहल का उद्देश्य निवेश को सुगम बनाना, नवाचार को बढ़ावा देना और सर्वोत्तम विनिर्माण अवसंरचना का निर्माण करना है।
कारण (R) : विशाल जनसांख्यिकी लाभांश को खपाने और आयातित वस्तुओं पर निर्भरता कम करने के लिए विनिर्माण आधार को बढ़ाना आवश्यक है।
निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प सही है?
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

39. मेक इन इंडिया पहल के संदर्भ में, सरकार ने विनिर्माण को बढ़ावा देने के लिए कई क्षेत्रों को मान्यता दी है। निम्नलिखित में से किसे आमतौर पर इस विशिष्ट पहल के तहत मुख्य फोकस क्षेत्र के रूप में रेखांकित नहीं किया गया है?
(A) ऑटोमोबाइल और ऑटो घटक
(B) खुदरा किराना वितरण
(C) विमानन और रक्षा निर्माण
(D) फार्मास्यूटिकल्स और बायोटेक्नोलॉजी

40. दिल्ली-मुंबई औद्योगिक गलियारा (DMIC) दुनिया की सबसे बड़ी अवसंरचना परियोजनाओं में से एक है। इसे किस देश की साझेदारी में विकसित किया जा रहा है?
(A) संयुक्त राज्य अमेरिका
(B) दक्षिण कोरिया
(C) जापान
(D) जर्मनी

41. दिल्ली-मुंबई औद्योगिक गलियारे (DMIC) का संरेखण प्राथमिक रूप से किस प्रमुख परिवहन अवसंरचना परियोजना के संरेखण पर आधारित है?
(A) स्वर्णिम चतुर्भुज राष्ट्रीय राजमार्ग परियोजना
(B) ईस्टर्न डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर (EDFC)
(C) भारतमाला परियोजना सड़क नेटवर्क
(D) वेस्टर्न डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर (WDFC)

42. दिल्ली-मुंबई औद्योगिक गलियारा (DMIC) भारत के कई राज्यों से होकर गुजरता है। निम्नलिखित में से कौन-सा राज्य डीएमआईसी प्रभाव क्षेत्र के अंतर्गत नहीं आता है?
(A) बिहार
(B) हरियाणा
(C) राजस्थान
(D) गुजरात

43. राजस्थान पर डीएमआईसी के प्रभाव के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. वेस्टर्न डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर का लगभग 39% हिस्सा राजस्थान से होकर गुजरता है।
II. खुशखेड़ा-भिवाड़ी-नीमराना को राजस्थान में डीएमआईसी के तहत एक प्रमुख निवेश क्षेत्र के रूप में विकसित किया जा रहा है।
III. जोधपुर-पाली-मारवाड़ की पहचान प्रथम चरण में विकसित किए जाने वाले औद्योगिक क्षेत्रों में से एक के रूप में की गई है।
IV. डीएमआईसी पश्चिमी राजस्थान के शुष्क क्षेत्रों से गुजरने से पूरी तरह बचता है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही नहीं है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल III
(C) केवल IV
(D) केवल II और IV

44. जुलाई 2020 से प्रभावी सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (MSMEs) के संशोधित समग्र वर्गीकरण के तहत, एक "सूक्ष्म" (माइक्रो) उद्यम के लिए निवेश और वार्षिक टर्नओवर की सीमाएं क्या हैं?
(A) 1 करोड़ रुपये तक का निवेश और 5 करोड़ रुपये तक का टर्नओवर।
(B) 5 करोड़ रुपये तक का निवेश और 25 करोड़ रुपये तक का टर्नओवर।
(C) 10 करोड़ रुपये तक का निवेश और 50 करोड़ रुपये तक का टर्नओवर।
(D) 25 लाख रुपये तक का निवेश और 1 करोड़ रुपये तक का टर्नओवर।

45. भारत में एमएसएमई परिभाषा के 2020 के संशोधन में पेश किया गया प्रमुख अवधारणात्मक बदलाव क्या था?
(A) इसने विनिर्माण और सेवा क्षेत्र के उद्यमों के बीच के अंतर को समाप्त कर दिया।
(B) इसने टर्नओवर के मानदंड को पूरी तरह से समाप्त कर दिया और केवल संयंत्र तथा मशीनरी में निवेश पर निर्भर रहा।
(C) इसने एमएसएमई का दर्जा केवल ग्रामीण क्षेत्रों में संचालित उद्यमों तक सीमित कर दिया।
(D) इसने अनिवार्य किया कि एमएसएमई के पास न्यूनतम 50% विदेशी इक्विटी होनी चाहिए।

46. भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए एमएसएमई क्षेत्र अत्यधिक महत्व रखता है। निम्नलिखित में से कौन-सा कथन हाल के वर्षों में भारत के कुल निर्यात में इसके अनुमानित योगदान का सही वर्णन करता है?
(A) लगभग 10-15%
(B) लगभग 40-45%

Click Here to Buy book on Flipkart

(C) लगभग 75-80%
(D) 5% से कम

47. निम्नलिखित में से किसे भारत में एमएसएमई क्षेत्र द्वारा सामना की जाने वाली सबसे महत्वपूर्ण और निरंतर चुनौती माना जाता है?
(A) उच्च कुशल तकनीकी श्रम की अत्यधिक अधिक आपूर्ति के कारण अत्यधिक वेतन वृद्धि।
(B) कम ब्याज वाली औपचारिक ऋण तंत्र तक अप्रतिबंधित और पूरी तरह से सहज पहुँच।
(C) अत्यधिक महंगे और अत्याधुनिक स्वचालित तंत्रों पर व्यापक निर्भरता।
(D) बड़े खरीदारों और सरकारी संस्थाओं से भुगतान में देरी।

48. निम्नलिखित एमएसएमई वर्गीकरण श्रेणियों की उनकी निर्धारित निवेश सीमाओं के आधार पर बढ़ते क्रम में व्यवस्थित सही अनुक्रम क्या है?
I. मध्यम उद्यम
II. सूक्ष्म उद्यम
III. लघु उद्यम
(A) I, II, III
(B) II, I, III
(C) II, III, I
(D) III, II, I

49. भारत सरकार द्वारा उद्यम पंजीकरण पोर्टल मुख्य रूप से किस उद्देश्य से शुरू किया गया था?
(A) बड़ी फर्मों के लिए कॉर्पोरेट आयकर रिटर्न के वार्षिक विवरण दाखिल करने की प्रक्रिया को सुगम बनाना।
(B) स्व-घोषणा के आधार पर निःशुल्क ऑनलाइन कागजरहित एमएसएमई पंजीकरण प्रदान करना।
(C) बड़ी विनिर्माण इकाइयों में कारखाने के श्रमिकों की दैनिक पाली उपस्थिति को डिजिटल रूप से ट्रैक करना।
(D) सरकारी स्वामित्व वाली भूमि की सीधे भारी औद्योगिक इकाइयों को सार्वजनिक नीलामी का प्रबंधन करना।

50. औद्योगिक प्रदूषण एक प्रमुख पर्यावरणीय चिंता है। वह परिघटना जिसमें उद्योग अत्यधिक गर्म जल सीधे नदियों या जल निकायों में छोड़ते हैं, जिससे घुलित ऑक्सीजन का स्तर कम हो जाता है और जलीय जीवन को क्षति पहुंचती है, विशेष रूप से किस रूप में जानी जाती है?
(A) रासायनिक प्रदूषण
(B) सुपोषण (यूट्रोफिकेशन)
(C) जैविक आवर्धन (बायोलॉजिकल मैग्निफिकेशन)
(D) तापीय प्रदूषण (थर्मल पोल्यूशन)

51. सूची I में दिए गए प्रदूषणकारी उद्योगों को सूची II में उनसे संबंधित प्रमुख पर्यावरणीय चिंताओं के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I : उद्योग
P. चमड़ा शोधनागार (टैनरी)
Q. तापीय विद्युत संयंत्र
R. वस्त्र रंगाई
S. ईंट के भट्टे
सूची II : पर्यावरणीय चिंता
1. फ्लाई अश का भारी उत्सर्जन
2. जल निकायों में अत्यधिक विषैले क्रोमियम और भारी धातुओं का निष्कासन
3. भारी कणीय पदार्थों का उत्सर्जन और ऊपरी मिट्टी का क्षरण
4. रंगीन अपशिष्ट का निष्कासन जो जलीय पौधों की प्रकाश संश्लेषण गतिविधि को परिवर्तित करता है
(A) P-2, Q-1, R-4, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

52. औद्योगिक सततता में 'शून्य तरल निर्वहन' (ZLD) की अवधारणा के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. जेडएलडी का उद्देश्य पर्यावरण में तरल औद्योगिक कचरे के निर्वहन को पूरी तरह से समाप्त करना है।
II. इसमें औद्योगिक प्रक्रियाओं के दौरान उत्पन्न सभी अपशिष्ट जल का उपचार, पुनर्चक्रण और पुनः उपयोग शामिल है।
III. यह उद्योगों को अनुपचारित अपशिष्टों को सीधे गहरे भूमिगत जलभृतों में पंप करने के लिए प्रोत्साहित करता है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

53. भारत में प्रदूषण नियंत्रण के लिए शीर्ष वैधानिक निकाय, केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (CPCB) का गठन मूल रूप से निम्नलिखित में से किस अधिनियम के तहत किया गया था?
(A) 1981 में पारित वायु (प्रदूषण निवारण और नियंत्रण) अधिनियम
(B) जल (प्रदूषण निवारण एवं नियंत्रण) अधिनियम, 1974
(C) 1986 में संसद द्वारा पारित पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम
(D) 2010 में संसद द्वारा पारित राष्ट्रीय हरित अधिकरण अधिनियम

54. सतत औद्योगिक संचालन के लिए अपशिष्ट उपचार संयंत्र (ETPs) अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। एक ईटीपी का प्राथमिक कार्य क्या है?
(A) कारखाने की चिमनियों से छोड़े जाने से पहले धुएं और विषैली गैसीय उत्सर्जन को लगातार फ़िल्टर करना।
(B) शहरी ठोस नगरपालिका कचरे को व्यवस्थित रूप से एकत्र करना और समृद्ध जैविक खाद में परिवर्तित करना।
(C) गैर-जोखिम वाले औद्योगिक ठोस कचरे का उपयोग करके बड़े पैमाने पर नवीकरणीय बिजली उत्पन्न करना।

Downloaded from www.pdf.tube

(D) औद्योगिक अपशिष्ट जल का उपचार करना और निपटान या पुनः उपयोग से पहले उसकी विषाक्तता को कम करना।

55. निम्नलिखित में से कौन-सा क्षेत्र ऐतिहासिक रूप से गंगा नदी बेसिन में, विशेष रूप से कानपुर के आसपास, औद्योगिक जल प्रदूषण में सबसे अधिक योगदानकर्ताओं में से एक माना जाता है?
(A) इलेक्ट्रॉनिक्स असेंबली
(B) चमड़ा शोधन (टैनिंग)
(C) ऑटोमोबाइल निर्माण
(D) सूचना प्रौद्योगिकी

56. सूची I में दिए गए प्रमुख औषधि (फार्मास्युटिकल) निर्माण हब को सूची II में उनके संबंधित राज्यों से सुमेलित कीजिए।
सूची I : औषधि निर्माण हब
P. बद्दी
Q. विशाखापट्टनम
R. अहमदाबाद
S. सिक्किम (पाकयोंग/रंगपो)
सूची II : राज्य
1. गुजरात
2. हिमाचल प्रदेश
3. पूर्वोत्तर हब
4. आंध्र प्रदेश
(A) P-2, Q-4, R-1, S-3
(B) P-1, Q-3, R-4, S-2
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-4, Q-2, R-1, S-3

57. भारत का औषधि (फार्मास्युटिकल) उद्योग एक मजबूत वैश्विक स्थिति रखता है। निम्नलिखित में से कौन-सा कथन इसकी वैश्विक स्थिति को सटीक रूप से दर्शाता है?
(A) भारत निर्मित जेनेरिक दवाओं के दुनिया के सबसे बड़े आयातकों में से एक है।
(B) भारतीय औषधि क्षेत्र पूरी तरह से सक्रिय औषधि घटकों (APIs) के लिए घरेलू स्रोतों पर निर्भर है और शून्य कच्चे माल का आयात करता है।
(C) भारत किफायती जेनेरिक दवाओं के बजाय मुख्य रूप से पेटेंट वाली ब्रांडेड दवाओं का निर्यात करता है।
(D) भारत मात्रा के आधार पर औषधि उत्पादन में दुनिया भर में तीसरे स्थान पर है।

58. भारत सरकार ने मुख्य रूप से किस प्रमुख रणनीतिक संवेदनशीलता से निपटने के लिए औषधि क्षेत्र के लिए उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन (PLI) योजना शुरू की है?
(A) प्रमुख शुरुआती सामग्रियों और सक्रिय औषधि घटकों (APIs) के लिए उच्च आयात निर्भरता।
(B) ग्रामीण सरकारी सार्वजनिक अस्पतालों में काम करने वाले प्रमाणित और कुशल फार्मासिस्टों की भारी कमी।
(C) विदेशों में उन्नत बहु-स्तरीय नैदानिक परीक्षण आयोजित करने से जुड़ा अत्यधिक व्यय।
(D) खुदरा फार्मेसी श्रृंखलाओं में प्रवाह वाले प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का पूर्ण अभाव।

59. उत्तर भारत में निम्नलिखित में से किस क्षेत्र को 'मेडिकल डिवाइसेस पार्क' और बल्क ड्रग निर्माण के लिए एक प्रमुख आगामी हब के रूप में तीव्र गति से बढ़ावा दिया जा रहा है?
(A) पश्चिम बंगाल में दार्जिलिंग जिला
(B) बद्दी-नालागढ़
(C) राजस्थान में जैसलमेर जिला
(D) छत्तीसगढ़ में बस्तर जिला

60. भारत में इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
कथन (A) : भारत में इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण क्षेत्र में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है, लेकिन कुल उत्पादन मूल्य की तुलना में देश के भीतर मूल्य संवर्धन अपेक्षाकृत कम बना हुआ है।
कारण (R) : भारत में इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण का एक बड़ा हिस्सा वर्तमान में अंतिम असेंबली प्रक्रियाओं तक सीमित है, जो आयातित उच्च मूल्य वाले इलेक्ट्रॉनिक घटकों पर अत्यधिक निर्भर है।
निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प सही है?
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

NODIA

61. किस भारतीय शहर को अपनी अग्रणी भूमिका और इलेक्ट्रॉनिक तथा आईटी हार्डवेयर उद्योगों के उच्च संकेंद्रण के कारण ऐतिहासिक रूप से 'भारत की इलेक्ट्रॉनिक्स राजधानी' कहा जाता है?
(A) बेंगलुरु
(B) पुणे शहर
(C) नोएडा शहर
(D) चेन्नई शहर

62. राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक्स नीति (NPE) 2019 को भारत को इलेक्ट्रॉनिक्स सिस्टम डिजाइन एंड मैन्युफैक्चरिंग (ESDM) के लिए एक वैश्विक हब के रूप में स्थापित करने के दृष्टिकोण के साथ पेश किया गया था। निम्नलिखित में से कौन-सा इस नीति का मुख्य उद्देश्य है?
(A) 2025 तक सभी इलेक्ट्रॉनिक सामानों के आयात पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगाना।
(B) सभी इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण को पूरी तरह से सार्वजनिक क्षेत्र में स्थानांतरित करना।
(C) ESDM की संपूर्ण मूल्य श्रृंखला में घरेलू विनिर्माण और निर्यात को बढ़ावा देना।
(D) उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स के बजाय भारी विद्युत मशीनरी के उत्पादन पर विशेष रूप से ध्यान केंद्रित करना।

63. भारतीय औद्योगिक क्षेत्र में वर्तमान प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) नीति के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(A) ग्रीनफील्ड फार्मास्युटिकल परियोजनाओं के लिए स्वचालित मार्ग के तहत 100% एफडीआई की अनुमति है।
(B) सिगार, चेरूट और सिगरेट के निर्माण में एफडीआई पूरी तरह से प्रतिबंधित है।
(C) विशेष आर्थिक क्षेत्रों की स्थापना के लिए स्वचालित मार्ग के तहत 100% एफडीआई की अनुमति है।
(D) चिकित्सा उपकरणों और सर्जिकल उपकरणों के विनिर्माण में एफडीआई प्रतिबंधित है।

64. एफडीआई के संदर्भ में, औद्योगिक क्षेत्र में 'ग्रीनफील्ड' निवेश और 'ब्राउनफील्ड' निवेश के बीच मुख्य अंतर क्या है?
(A) ग्रीनफील्ड का अर्थ विशेष रूप से पर्यावरण-अनुकूल सतत उद्योगों में निवेश है, जबकि ब्राउनफील्ड प्रदूषणकारी भारी उद्योगों में निवेश को दर्शाता है।
(B) ग्रीनफील्ड का संदर्भ विशेष रूप से कॉर्पोरेट कृषि निवेश से है, जबकि ब्राउनफील्ड का संदर्भ केवल वाणिज्यिक अचल संपत्ति उपक्रमों से है।
(C) ग्रीनफील्ड शून्य से नई सुविधाएं निर्मित करता है, जबकि ब्राउनफील्ड मौजूदा परिचालन सुविधाओं का अधिग्रहण या लीज पर लेता है।
(D) ग्रीनफील्ड निवेश को हमेशा सरकारी मार्ग से भेजा जाना चाहिए, जबकि ब्राउनफील्ड निवेश स्वचालित रूप से संसाधित होते हैं।

65. एफडीआई नीति बनाने और लागू करने के साथ-साथ भारत में औद्योगिक विकास को बढ़ावा देने के लिए नोडल सरकारी विभाग वर्तमान में किस नाम से जाना जाता है?
(A) वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के तहत वाणिज्य विभाग
(B) उद्योग संवर्धन और आंतरिक व्यापार विभाग (DPIIT)
(C) वित्त मंत्रालय के तहत आर्थिक कार्य विभाग
(D) निवेश और सार्वजनिक संपत्ति प्रबंधन विभाग (DIPAM)

66. भारत की वर्तमान एफडीआई व्यवस्था के तहत, स्वचालित मार्ग के तहत रक्षा निर्माण क्षेत्र में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की अधिकतम अनुमेय सीमा (कुछ शर्तों के अधीन) क्या है?
(A) 26%
(B) 49%
(C) 74%
(D) 100%

67. निम्नलिखित में से कौन-सा राज्यों का सही क्रम दर्शाता है जिन्हें भारत में उनकी कुल एमएसएमई इकाइयों (सामान्य उद्यम पंजीकरण रुझानों के अनुसार) के घटते क्रम में व्यवस्थित किया गया है?
(A) महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, तमिलनाडु
(B) सिक्किम, गोवा, मिजोरम
(C) पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश
(D) केरल, बिहार, ओडिशा

68. एमएसएमई को सहायता देने के लिए भारत की औद्योगिक नीति में 'क्लस्टर विकास' की अवधारणा का व्यापक उपयोग किया जाता है। निम्नलिखित में से कौन-सा एक औद्योगिक क्लस्टर को सबसे अच्छी तरह परिभाषित करता है?
(A) एक बहुराष्ट्रीय निगम द्वारा विशेष रूप से स्वामित्व और संचालित एक एकल, विशाल एकीकृत औद्योगिक कारखाने का परिसर।
(B) आयातित विदेशी वस्तुओं को बढ़ावा देने के लिए विशेष रूप से स्थापित एक अस्थायी, मौसमी वाणिज्यिक प्रदर्शनी सुविधा।
(C) किसी विशेष क्षेत्र में आपस में जुड़ी फर्मों, आपूर्तिकर्ताओं और संबंधित संस्थानों का एक स्थानिक समूह।
(D) एक कड़ाई से विनियमित जोनिंग क्षेत्र जहां प्राकृतिक पारिस्थितिकी को संरक्षित करने के लिए औद्योगिक विनिर्माण गतिविधि प्रतिबंधित है।

69. भारत में ऑटोमोबाइल क्षेत्र के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. 1991 से पहले यह क्षेत्र कड़े लाइसेंसिंग और मात्रात्मक प्रतिबंधों के अधीन था।
II. उदारीकरण के बाद, इस क्षेत्र में कई वैश्विक ऑटोमोटिव कंपनियों का प्रवेश देखा गया।
III. राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (NCR), विशेष रूप से गुरुग्राम-मानेसर, पैसेंजर कार निर्माण का एक प्रमुख क्लस्टर है।
IV. यह क्षेत्र किसी भी प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) की अनुमति नहीं देता है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) I, II और IV
(B) II, III और IV
(C) I, II और III
(D) केवल I और III

70. पारंपरिक उद्योगों और कारीगरों को समूहों (क्लस्टरों) में संगठित करने के लिए 'पारंपरिक उद्योगों के पुनरुत्थान के लिए कोष की योजना' (SFURTI) शुरू की गई थी। यह योजना मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किस वर्ग को लाभ पहुंचाती है?
(A) भारी इंजीनियरिंग और धातुकर्म
(B) उन्नत इलेक्ट्रॉनिक्स और सेमीकंडक्टर फैब्रिकेशन
(C) पेट्रोकेमिकल्स और पॉलिमर प्रसंस्करण
(D) कोयर, खादी और ग्रामोद्योग

71. निम्नलिखित में से कौन-सा उत्तर से दक्षिण की ओर दिल्ली-मुंबई औद्योगिक गलियारे (DMIC) के प्रमुख नोड्स का सही क्रम दर्शाता है?
(A) दिघी पोर्ट नोड, पीथमपुर-धार-महू नोड, खुशखेड़ा-भिवाड़ी-नीमराना नोड
(B) खुशखेड़ा-भिवाड़ी-नीमराना नोड, पीथमपुर-धार-महू नोड, दिघी पोर्ट नोड
(C) पीथमपुर-धार-महू नोड, खुशखेड़ा-भिवाड़ी-नीमराना नोड, दिघी पोर्ट नोड

Click Here to Buy book on Amazon

(D) खुशखेड़ा-भिवाड़ी-नीमराना नोड, दिघी पोर्ट नोड, पीथमपुर-धार-महू नोड

72. भारत में एमएसएमई क्षेत्र से संबंधित चुनौतियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. समय पर और पर्याप्त औपचारिक ऋण प्राप्त करने में असमर्थता।
II. अप्रचलित तकनीक पर निर्भरता और तकनीकी उन्नयन का अभाव।
III. आसान अनुपालन और किसी भी विनियामक बोझ का अभाव।
IV. वैश्विक बाजारों और आधुनिक विपणन रणनीतियों तक पहुंच की कमी।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से एमएसएमई द्वारा सामना की जाने वाली प्रमुख बाधाओं की सही पहचान करता है/करते हैं?

(A) I, II, और IV
(B) I, III, और IV
(C) II, III, और IV
(D) केवल I और II

73. भारत में औद्योगिक गलियारों की स्थापना का एक मुख्य उद्देश्य प्रमुख औद्योगिक क्लस्टरों को मजबूत परिवहन नेटवर्क के साथ एकीकृत करना है। इन गलियारों के विकास के लिए जिम्मेदार नोडल एजेंसी कौन-सी है?

(A) नीति आयोग (NITI Aayog)
(B) भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (NHAI, सड़क परिवहन मंत्रालय)
(C) भारतीय रिजर्व बैंक (RBI, केंद्रीय मौद्रिक प्राधिकरण)
(D) राष्ट्रीय औद्योगिक गलियारा विकास निगम (NICDC)

74. निम्नलिखित औद्योगिक केंद्रों और उनके प्रमुख उद्योग में से गलत युग्म की पहचान कीजिए:

(A) अलीगढ़ - पेट्रोकेमिकल्स
(B) सूरत - हीरा तराशना और सिंथेटिक वस्त्र
(C) मुरादाबाद - पीतल के बर्तन (ब्रासवेयर)
(D) लुधियाना - होजरी और साइकिल

75. निम्नलिखित में से किस राज्य को सामान्यतः भारत में इलेक्ट्रॉनिक्स के निर्माण और निर्यात में अग्रणी राज्य माना जाता है, जहाँ अक्सर वैश्विक स्मार्टफोन ब्रांडों के लिए प्रमुख अनुबंध निर्माण सुविधाएं स्थित हैं?

(A) असम
(B) तमिलनाडु
(C) झारखंड
(D) छत्तीसगढ़

76. सूची I की प्रमुख भारतीय औद्योगिक नीतियों/अधिनियमों को सूची II में उनके संबंधित मुख्य फोकस या परिणाम के साथ सुमेलित कीजिए।

सूची I : नीति / अधिनियम

P. औद्योगिक नीति संकल्प 1948
Q. औद्योगिक नीति संकल्प 1956
R. एमआरटीपी (MRTP) अधिनियम 1969
S. नई औद्योगिक नीति 1991

सूची II : मुख्य फोकस / परिणाम

1. आर्थिक शक्ति के संकेंद्रण को रोकना
2. अधिकांश क्षेत्रों के लिए औद्योगिक लाइसेंसिंग का उन्मूलन
3. मिश्रित अर्थव्यवस्था मॉडल को परिभाषित किया
4. सार्वजनिक क्षेत्र का विस्तार करते हुए 'भारत का आर्थिक संविधान' कहा गया

(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-1, Q-2, R-3, S-4

77. एल्युमीनियम स्मेल्टिंग (प्रगलन) उद्योग के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:

कथन (A) : एल्युमीनियम स्मेल्टिंग उद्योग आमतौर पर प्रचुर और सस्ती बिजली के स्रोतों के पास स्थित होता है।

कारण (R) : विद्युत अपघटन (इलेक्ट्रोलीसिस) के माध्यम से एल्युमिना से एल्युमीनियम निकालने की प्रक्रिया अत्यधिक ऊर्जा-गहन है, जो निर्बाध बिजली को एक महत्वपूर्ण अवस्थिति कारक बनाती है।

निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प सही है?

(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

NODIA

78. औद्योगिक भूगोल के संदर्भ में, 'समूह अर्थव्यवस्थाएं' (Agglomeration Economies) शब्द किसे संदर्भित करता है?

(A) अत्यधिक शहरी अति-जनसंख्या के कारण विनिर्माण उद्योगों को होने वाले कुल वित्तीय नुकसान।
(B) सख्त नगरपालिका जोनिंग कानून और पर्यावरणीय नियम जो उद्योगों को शहर की सीमाओं से बाहर करने के लिए मजबूर करते हैं।
(C) किसी निकटवर्ती क्षेत्र में एक साथ स्थित होने से फर्मों को प्राप्त होने वाले लागत लाभ।
(D) मशीनीकृत कारखाने की प्रतिस्पर्धा के परिणामस्वरूप पारंपरिक हस्तशिल्प उद्योगों की क्रमिक आर्थिक गिरावट।

79. हाल के दशकों में चीनी उद्योग के उत्तर भारत (यूपी, बिहार) से धीरे-धीरे प्रायद्वीपीय भारत (महाराष्ट्र, कर्नाटक) की ओर स्थानांतरित होने का सबसे उपयुक्त कारण निम्नलिखित में से कौन-सा है?

(A) उत्तर भारत के सभी प्रमुख कृषि जिलों में कृषि भूजल भंडारों का पूरी तरह समाप्त होना।

(B) गेहूं उत्पादन को प्राथमिकता देने के लिए सरकार ने उत्तर भारत में गन्ने की खेती पर वैधानिक प्रतिबंध लगा दिया।
(C) गंगा के मैदानों में मिट्टी की लवणता में अचानक, व्यापक वृद्धि ने भूमि को गन्ने के लिए पूरी तरह से अनुपयुक्त बना दिया।
(D) प्रायद्वीपीय भारत की जलवायु उच्च सुक्रोज उपज और लंबी पेराई अवधि प्रदान करती है।

80. निम्नलिखित सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों में से उनके मुख्य औद्योगिक क्षेत्र के आधार पर भिन्न (विषम) विकल्प की पहचान कीजिए।
(A) सेल (SAIL)
(B) आरआईएनएल (RINL)
(C) भेल (BHEL)
(D) इस्को (IISCO)

81. सूची I में दिए गए 'महारत्न' केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों (CPSEs) को सूची II में उनके प्राथमिक औद्योगिक क्षेत्र के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I : CPSE
P. ओएनजीसी (ONGC)
Q. एनटीपीसी (NTPC)
R. सेल (SAIL)
S. गेल (GAIL)
सूची II : औद्योगिक क्षेत्र
1. बिजली उत्पादन
2. प्राकृतिक गैस प्रसंस्करण और वितरण
3. तेल और प्राकृतिक गैस अन्वेषण
4. लोहा और इस्पात उत्पादन
(A) P-3, Q-1, R-4, S-2
(B) P-1, Q-3, R-2, S-4
(C) P-4, Q-2, R-1, S-3
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

82. निम्नलिखित में से कौन भारत में एमएसएमई क्षेत्र के प्रचार, वित्तपोषण और विकास के लिए मुख्य रूप से समर्पित शीर्ष वित्तीय संस्थान के रूप में कार्य करता है?
(A) नाबार्ड (NABARD)
(B) एग्ज़िम बैंक (EXIM Bank)
(C) एनएचबी (NHB)
(D) सिडबी (SIDBI)

83. भारत में सूती वस्त्र उद्योग के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
कथन (A) : भारत में सूती वस्त्र उद्योग ने हाल के दशकों में विकेंद्रीकरण की ओर एक मजबूत प्रवृत्ति दिखाई है।
कारण (R) : कपास एक शुद्ध कच्चा माल है (निर्माण के दौरान इसका वजन कम नहीं होता है), और बिजली की व्यापक उपलब्धता मिलों को केवल कच्चे माल के स्रोतों के बजाय बाजारों के करीब स्थित होने की अनुमति देती है।
निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प सही है?
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

84. भारत का निम्नलिखित में से कौन-सा औद्योगिक क्षेत्र मुख्य रूप से जूट उद्योग और इंजीनियरिंग सामानों के उच्च संकेंद्रण के लिए जाना जाता है, लेकिन अतीत में औद्योगिक रुग्णता (सिक्नेस) से पीड़ित रहा है?
(A) गुजरात औद्योगिक क्षेत्र
(B) मदुरै-कोयंबटूर-बेंगलुरु क्षेत्र
(C) हुगली औद्योगिक क्षेत्र
(D) राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (NCR)

85. भारत में उर्वरक उद्योग के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. भारत नाइट्रोजनयुक्त, फॉस्फेटिक और पोटाशिक उर्वरकों के उत्पादन में पूरी तरह से आत्मनिर्भर है।
II. यह उद्योग तेल रिफाइनरियों या प्राकृतिक गैस पाइपलाइनों के पास अत्यधिक संकेंद्रित है।
III. यूरिया के उत्पादन के लिए प्राकृतिक गैस प्राथमिक कच्चे माल (फीडस्टॉक) के रूप में कार्य करती है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

86. सीमेंट उत्पादन की अपनी कुल स्थापित क्षमता (हाल के सामान्य रुझानों के अनुसार) के घटते क्रम में व्यवस्थित निम्नलिखित प्रमुख भारतीय राज्यों का सही क्रम क्या है?
I. मध्य प्रदेश
II. आंध्र प्रदेश
III. राजस्थान
(A) III, II, I
(B) I, II, III
(C) II, III, I
(D) III, I, II

87. सतत औद्योगीकरण के ढांचे के तहत, 'विस्तारित उत्पादक उत्तरदायित्व' (EPR) मुख्य रूप से निर्माताओं पर क्या दायित्व सौंपता है?
(A) स्थानीय ग्राम पंचायत प्रशासन को सीधे वार्षिक कॉर्पोरेट लाभ के एक निश्चित प्रतिशत का अनिवार्य भुगतान।
(B) उपभोक्ता द्वारा उपयोग के बाद के निपटान सहित, उत्पादों के संपूर्ण जीवन-चक्र के दौरान उनके पर्यावरणीय प्रभाव का प्रबंधन करना।
(C) कारखाने के 10 किमी के कड़े दायरे में रहने वाले स्थानीय निवासी श्रमिकों को विशेष रोजगार के अवसरों की गारंटी देना।
(D) अपने निर्मित उत्पादों का उपयोग करने वाले सभी अंतिम

Downloaded from www.pdf.tube

उपभोक्ताओं को व्यापक और मुफ़्त चिकित्सा स्वास्थ्य बीमा कवर प्रदान करना।

88. मेक इन इंडिया पहल के तहत निवेश के लिए लक्षित निम्नलिखित क्षेत्रों पर विचार कीजिए:
I. अंतरिक्ष
II. नवीकरणीय ऊर्जा
III. जैव प्रौद्योगिकी
IV. खनन
उपर्युक्त में से कौन-से क्षेत्र 'मेक इन इंडिया 2.0' कार्य योजना के तहत स्पष्ट रुप से शामिल हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II, III, और IV
(C) केवल I, III, और IV
(D) I, II, III, और IV

89. औद्योगिक निवेश के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन 'ब्राउनफील्ड' परियोजना का सही वर्णन करता है?
(A) कृषि भूमि पर एक नई विनिर्माण सुविधा का निर्माण करना।
(B) केवल पर्यावरण के अनुकूल सतत उद्योगों में निवेश करना।
(C) एक चालू उद्योग को शहरी क्षेत्र से ग्रामीण क्षेत्र में स्थानांतरित करना।
(D) किसी मौजूदा औद्योगिक सुविधा का उन्नयन, विस्तार या संशोधन करना।

90. भारत के औद्योगिक इतिहास से संबंधित निम्नलिखित प्रमुख घटनाओं को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. मेक इन इंडिया पहल का शुभारंभ
II. नई औद्योगिक नीति का कार्यान्वयन
III. विशेष आर्थिक क्षेत्र अधिनियम का अधिनियमन
IV. एमएसएमई के लिए उद्यम पंजीकरण पोर्टल का शुभारंभ
सही क्रम का चयन कीजिए:
(A) II, III, I, IV
(B) I, II, III, IV
(C) III, II, IV, I
(D) II, I, III, IV

NODIA

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) सूती वस्त्र, जूट, चीनी और खाद्य तेल
कृषि-आधारित उद्योग वे उद्योग हैं जो अपने कच्चे माल के लिए प्रत्यक्ष रूप से कृषि उत्पादों पर निर्भर करते हैं। सूती वस्त्र उद्योग के लिए कपास, जूट उद्योग के लिए कच्चा जूट, चीनी उद्योग के लिए गन्ना तथा खाद्य तेल उद्योग के लिए तिलहन प्राथमिक कृषि आगत प्रदान करते हैं। यह औद्योगिक वर्ग ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने तथा कृषि क्षेत्र में रोजगार बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

2. (D) उद्योग के उत्पाद अन्य वस्तुओं के निर्माण के लिए कच्चे माल के रूप में कार्य करते हैं।
आधारभूत या मुख्य उद्योग वे उद्योग होते हैं जिनके उत्पाद अन्य उद्योगों के निर्माण और उत्पादन कार्यों के लिए आवश्यक कच्चे माल के रूप में उपयोग किए जाते हैं। लोहा और इस्पात उद्योग इसका सबसे प्रमुख उदाहरण है, क्योंकि इसका उत्पाद विभिन्न प्रकार की मशीनों, औजारों, अवसंरचना और परिवहन साधनों के निर्माण में प्रयोग होता है। ऐसे उद्योग किसी भी अर्थव्यवस्था की औद्योगिक नींव का निर्माण करते हैं।

3. (A) नेफ्था - लोहा एवं इस्पात उद्योग
नेफ्था एक पेट्रोलियम उप-उत्पाद है, जिसका उपयोग मुख्य रूप से पेट्रोकेमिकल उद्योग और उर्वरक उत्पादन में कच्चे माल के रूप में किया जाता है, न कि लोहा और इस्पात उद्योग में। इसके विपरीत, बॉक्साइट एल्युमीनियम निष्कर्षण के लिए मुख्य अयस्क है, चूना पत्थर सीमेंट निर्माण का प्राथमिक कच्चा माल है, तथा सिलिका बालू कांच निर्माण उद्योग का आधार है। इसलिए रासायनिक और खनिज वर्गीकरण के अनुसार यह सुमेलित नहीं है।

4. (C) एक ऐसा उद्योग जिसे लागत में बिना किसी विशेष अंतर के विभिन्न स्थानों पर स्थापित किया जा सकता है।
स्वच्छंद या फुटलूस उद्योग वे उद्योग होते हैं जिनकी अवस्थिति किसी विशिष्ट कच्चे माल या बाजार के स्रोतों से मजबूती से बंधी नहीं होती है। ये उद्योग संघटक पुर्जों पर निर्भर करते हैं जो कहीं भी आसानी से उपलब्ध होते हैं और इनके कच्चे माल तथा अंतिम उत्पाद का वजन घटता-बढ़ता नहीं है। इन्हें लागत में अधिक भिन्नता के बिना किसी भी स्थान पर आसानी से स्थापित किया जा सकता है।

5. (B) 1854 में मुंबई
भारत में पहली आधुनिक और सफल मशीनीकृत सूती वस्त्र मिल की स्थापना 1854 में मुंबई में कावासजी डाबर द्वारा की गई थी। इसे बॉम्बे स्पिनिंग एंड वीविंग कंपनी के नाम से स्थापित किया गया था। यद्यपि प्रथम प्रयास 1818 में कोलकाता के पास फोर्ट ग्लॉस्टर में किया गया था, परंतु वह वित्तीय विफलताओं के कारण सफल नहीं हो सका था। मुंबई में स्थापित मिल ने भारत में आधुनिक वस्त्र उद्योग की नींव रखी।

6. (D) सस्ते परिवहन के लिए विस्तृत अंतर्देशीय जलमार्ग नेटवर्क।
मुंबई-अहमदाबाद क्षेत्र में सूती वस्त्र उद्योग के संकेंद्रण का मुख्य कारण अंतर्देशीय जलमार्ग नहीं, बल्कि अन्य अनुकूल भौगोलिक और आर्थिक कारक थे। दक्कन के पठार की काली मिट्टी का क्षेत्र कपास उत्पादन के लिए आदर्श है। तटीय आर्द्र जलवायु कताई के दौरान सूती धागे को टूटने से बचाती है। इसके अतिरिक्त, मुंबई बंदरगाह के माध्यम से कच्चे माल के आयात, मशीनरी प्राप्ति और निर्मित माल के निर्यात की सुविधा उपलब्ध थी।

7. (A) केवल I और II
भारत विश्व में कच्चे जूट और जूट उत्पादों का सबसे बड़ा उत्पादक देश है, और यह उद्योग पश्चिम बंगाल में हुगली नदी के किनारे अत्यधिक संकेंद्रित है। हुगली बेसिन में प्रचुर जल, कच्चे माल की निकटता और सस्ते श्रम की उपलब्धता इसे आदर्श बनाती है। हालांकि, राष्ट्रीय जूट बोर्ड का मुख्यालय नई दिल्ली में नहीं, बल्कि कोलकाता में स्थित है। अतः जूट उद्योग से संबंधित प्रथम दो कथन पूरी तरह सही हैं।

8. (C) प्रमुख जूट उत्पादक क्षेत्र पूर्वी पाकिस्तान में चले गए, जबकि मिलें भारत में ही रह गईं।
1947 में भारत के विभाजन ने भारतीय जूट उद्योग को गंभीर रूप से प्रभावित किया क्योंकि लगभग तीन-चौथाई जूट उत्पादक कृषि क्षेत्र पूर्वी पाकिस्तान में चले गए, जबकि अधिकांश जूट प्रसंस्करण मिलें पश्चिम बंगाल में ही रह गईं। इसके परिणामस्वरूप भारतीय जूट मिलों को कच्चे जूट की भारी कमी का सामना करना पड़ा। इस असंतुलन को दूर करने के लिए भारत को अपने घरेलू जूट उत्पादन क्षेत्र का तेजी से विस्तार करना पड़ा।

9. (D) भीलवाड़ा
राजस्थान के भीलवाड़ा जिले को राज्य की मुख्य कपड़ा और सिंथेटिक यार्न उत्पादन इकाइयों के संकेंद्रण के कारण व्यापक रूप से 'राजस्थान का मैनचेस्टर' कहा जाता है। यह शहर कताई, बुनाई और प्रसंस्करण इकाइयों का एक प्रमुख केंद्र है, जहाँ से देश-विदेश में वस्त्र निर्यात किए जाते हैं। वस्त्र निर्माण के क्षेत्र में इसके उत्कृष्ट योगदान और विशाल औद्योगिक आधार के कारण इसे 'टेक्सटाइल टाउन ऑफ एक्सीलेंस' का दर्जा भी दिया गया है।

10. (A) सोवियत संघ (USSR)
छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले में स्थित भिलाई इस्पात संयंत्र भारत का पहला और प्रमुख एकीकृत इस्पात संयंत्र है, जिसे सोवियत संघ (USSR) के तकनीकी और वित्तीय सहयोग से स्थापित किया गया था। इसकी स्थापना दूसरी पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत की गई थी और 1959 में उत्पादन शुरु हुआ था। यह

Click Here to Buy book on Flipkart

संयंत्र मध्य और दक्षिण भारत में रेलवे पटरियों तथा भारी संरचनात्मक इस्पात के उत्पादन के लिए अत्यंत प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण है।

11. (A) P-3, Q-2, R-1, S-1
भारत के सार्वजनिक क्षेत्र के एकीकृत इस्पात संयंत्रों की स्थापना विदेशी सहयोग से हुई थी। ओडिशा का राउरकेला इस्पात संयंत्र जर्मनी के सहयोग से निर्मित किया गया था। पश्चिम बंगाल का दुर्गापुर इस्पात संयंत्र यूनाइटेड किंगडम की सहायता से स्थापित हुआ था। झारखंड का बोकारो इस्पात संयंत्र सोवियत संघ के सहयोग से बना था। इसी प्रकार, आंध्र प्रदेश के विशाखापट्टनम इस्पात संयंत्र का निर्माण भी सोवियत संघ की तकनीकी सहायता से पूरा किया गया था।

12. (B) धातुकर्मीय कोकिंग कोयला
धातुशोधन योग्य कोकिंग कोयला एकीकृत लोहा और इस्पात संयंत्रों की अवस्थिति को निर्धारित करने वाला सबसे महत्वपूर्ण भार-ह्रास वाला आगत है। धमन भट्ठी में एक टन कच्चा लोहा उत्पादित करने के लिए लौह अयस्क की तुलना में अत्यधिक मात्रा में कोकिंग कोयले की आवश्यकता होती है। चूंकि जलने पर कोयले का वजन पूरी तरह समाप्त हो जाता है, इसलिए परिवहन लागत घटाने हेतु इस्पात संयंत्रों को दामोदर घाटी जैसे कोयला क्षेत्रों के पास स्थापित किया जाता है।

13. (A) एकीकृत संयंत्र एक ही परिसर में कच्चे माल से इस्पात निर्माण तक का कार्य करते हैं, जबकि मिनी संयंत्र स्क्रैप या स्पंज आयरन के लिए इलेक्ट्रिक आर्क भट्ठी का उपयोग करते हैं।
एकीकृत इस्पात संयंत्र बड़े आकार के होते हैं जो कच्चे माल एकत्र करने से लेकर इस्पात बनाने और रोलिंग तक की सभी प्रक्रियाएं एक ही परिसर में करते हैं। ये धमन भट्ठी का उपयोग करते हैं। इसके विपरीत, मिनी इस्पात संयंत्र छोटे होते हैं और पुनर्चक्रित स्क्रैप या स्पंज आयरन का उपयोग करके इलेक्ट्रिक आर्क या इंडक्शन भट्ठियों में इस्पात बनाते हैं। मिनी संयंत्रों को कम पूंजी की आवश्यकता होती है और ये स्थानीय मांगों को पूरा करते हैं।

14. (C) स्वर्णरेखा और खरकाई नदियां
जमशेदपुर में स्थित टाटा आयरन एंड स्टील कंपनी (टिस्को) भारत का पहला निजी एकीकृत इस्पात संयंत्र है, जो स्वर्णरेखा और खरकाई नदियों के संगम पर स्थित है। इन दोनों नदियों से संयंत्र को निरंतर और प्रचुर मात्रा में जल की आपूर्ति प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त, इस स्थान को निकटवर्ती नोवामुंडी से लौह अयस्क, झरिया से कोकिंग कोयला और सुंदरगढ़ से चूना पत्थर आसानी से प्राप्त होता है, जो इसके संचालन के लिए अनुकूल हैं।

15. (D) ऑटोमोबाइल निर्माण
चेन्नई को भारत का 'डेट्रॉयट' कहा जाता है क्योंकि यह देश के सबसे बड़े ऑटोमोबाइल और ऑटो-कंपोनेंट निर्माण हब के रूप में विकसित हुआ है। अमेरिका के डेट्रॉयट शहर की भांति, चेन्नई में कई प्रमुख वैश्विक और घरेलू वाहन निर्माताओं के विनिर्माण संयंत्र स्थित हैं। भारत के कुल ऑटोमोबाइल उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा इस क्षेत्र से आता है। उत्कृष्ट बंदरगाह अवसंरचना और कुशल श्रम ने इस क्षेत्र के विकास को बढ़ावा दिया है।

16. (C) केवल IV
पेट्रोकेमिकल उद्योग प्राकृतिक गैस प्रसंस्करण और पेट्रोलियम शोधन के उप-उत्पादों जैसे नेफ्था और एथिलीन पर निर्भर करता है। वडोदरा में आईपीसीएल द्वारा भारत का पहला बड़ा कॉम्प्लेक्स स्थापित किया गया था। यह उद्योग भू-आबद्ध क्षेत्रों में स्थित होने के लिए बाध्य नहीं है, बल्कि यह कच्चे माल की उपलब्धता के कारण तटीय रिफाइनरियों और बंदरगाहों के पास अत्यधिक संकेंद्रित होता है। तटीय अवस्थिति आयातित कच्चे तेल तक आसान पहुंच और पेट्रोकेमिकल्स के परिवहन को सुगम बनाती है।

17. (A) टिस्को जमशेदपुर, इस्को बर्नपुर, भिलाई इस्पात संयंत्र, बोकारो इस्पात संयंत्र
भारत में एकीकृत इस्पात संयंत्रों की स्थापना का सही कालानुक्रमिक क्रम इस प्रकार है: सबसे पहले 1907 में जमशेदपुर में निजी क्षेत्र में टिस्को की स्थापना हुई। इसके बाद 1918 में बर्नपुर में इस्को का गठन हुआ। स्वतंत्रता के बाद, दूसरी पंचवर्षीय योजना के दौरान 1955 में भिलाई इस्पात संयंत्र सोवियत सहयोग से स्थापित किया गया। तत्पश्चात, तीसरी पंचवर्षीय योजना के दौरान 1964 में बोकारो इस्पात संयंत्र की नींव रखी गई और परिचालन शुरु हुआ।

18. (D) रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड (RIL)
गुजरात के जामनगर में स्थित दुनिया का सबसे बड़ा ग्रासरूट पेट्रोकेमिकल और पेट्रोलियम शोधन परिसर रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड के निजी स्वामित्व और संचालन में है। इस परिसर में प्रतिदिन लाखों बैरल कच्चे तेल का प्रसंस्करण किया जाता है। यहाँ अत्याधुनिक तकनीक का उपयोग करके विभिन्न पेट्रोकेमिकल्स, प्लास्टिक, पॉलिमर और ईंधन का उत्पादन होता है। इसकी तटीय अवस्थिति कच्चे तेल के आयात और परिष्कृत पेट्रोकेमिकल उत्पादों के वैश्विक निर्यात को आसान बनाती है।

NODIA

19. (A) एक आईटी हब के रूप में बेंगलुरु का विकास शुरुआती सार्वजनिक क्षेत्र की उच्च-तकनीकी (हाई-टेक) इकाइयों और तकनीकी शैक्षणिक संस्थानों द्वारा प्रेरित था।
बेंगलुरु का भारत की सिलिकॉन वैली के रूप में विकास 1950 के दशक में स्थापित सार्वजनिक क्षेत्र के उच्च-तकनीकी उद्योगों तथा प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थानों से शुरु हुआ था। इस मजबूत तकनीकी आधार और अनुकूल जलवायु ने आईटी कंपनियों को आकर्षित किया। आईटी उद्योग भौतिक कच्चे माल पर निर्भर नहीं है, बल्कि कुशल ज्ञान-आधारित मानव संसाधन पर कार्य करता है। यह भारत के कुल सेवा निर्यात में सबसे प्रमुख योगदानकर्ता के रूप में कार्य करता है।

20. (C) हिंजवाड़ी इंफोटेक पार्क
महाराष्ट्र में पुणे एक प्रमुख सूचना प्रौद्योगिकी और सॉफ्टवेयर विकास केंद्र के रूप में उभरा है, जिसका मुख्य आधार हिंजवाड़ी

में स्थित राजीव गांधी इंफोटेक पार्क है। यह समर्पित पार्क अत्याधुनिक अवसंरचना, उत्कृष्ट कनेक्टिविटी और विशाल कार्यस्थान प्रदान करता है, जहाँ कई राष्ट्रीय और बहुराष्ट्रीय सॉफ्टवेयर कंपनियां कार्यरत हैं। पुणे की शैक्षणिक प्रतिष्ठा, सुखद जलवायु और मुंबई से निकटता ने इसे भारत के सबसे तेजी से बढ़ते आईटी हब में बदल दिया है।

21. (A) हैदराबाद
तेलंगाना की राजधानी हैदराबाद अपने समर्पित सॉफ्टवेयर और प्रौद्योगिकी क्षेत्र 'हाइटेक सिटी' के लिए वैश्विक स्तर पर प्रसिद्ध है। 1990 के दशक के उत्तरार्ध में विकसित यह टाउनशिप भारत के प्रमुख सूचना प्रौद्योगिकी और इंजीनियरिंग सेवा केंद्रों में से एक बन गई है। यहाँ वैश्विक प्रौद्योगिकी दिग्गजों के विशाल परिसर स्थित हैं। हाइटेक सिटी के विकास ने हैदराबाद को भारत की ज्ञान अर्थव्यवस्था के अग्रणी शहरों में मजबूती से स्थापित कर दिया है।

22. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
मुंबई-पुणे औद्योगिक क्षेत्र पारंपरिक रूप से सूती वस्त्रों का गढ़ था, परंतु भूमि की उच्च लागत, शहरी संकुलन और विकेंद्रीकृत पावरलूमों से कड़ी प्रतिस्पर्धा के कारण कई पुरानी कपड़ा मिलें बंद हो गईं। इसके परिणामस्वरूप, इस क्षेत्र का औद्योगिक ढांचा इंजीनियरिंग, रसायन, फार्मास्युटिकल और ऑटोमोबाइल निर्माण जैसे उच्च मूल्य वर्धित उद्योगों की ओर स्थानांतरित हो गया। बुनियादी ढांचे की उपलब्धता और कुशल कार्यबल ने इस परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

23. (B) बांसबेरिया से बिड़लानगर
पश्चिम बंगाल में हुगली नदी के दोनों किनारों पर फैला हुगली औद्योगिक क्षेत्र भारत के सबसे पुराने औद्योगिक क्षेत्रों में से एक है। भौगोलिक रूप से यह औद्योगिक पट्टी उत्तर में बांसबेरिया से लेकर दक्षिण में बिड़लानगर तक लगभग 100 किलोमीटर की दूरी में फैली हुई है। यह क्षेत्र ऐतिहासिक रूप से जूट प्रसंस्करण, भारी इंजीनियरिंग, कागज, रसायन और दैनिक उपभोग की वस्तुओं के निर्माण का एक प्रमुख केंद्र रहा है।

24. (C) छोटानागपुर पठार क्षेत्र
छोटानागपुर पठार क्षेत्र को प्रचुर खनिज संसाधनों विशेष रूप से उच्च श्रेणी के कोयले, लौह अयस्क, मैंगनीज और बॉक्साइट के विशाल भंडारों के कारण 'भारत का रूर' कहा जाता है। जर्मनी के प्रसिद्ध रूर औद्योगिक क्षेत्र की तरह, यह क्षेत्र भारत में लोहा और इस्पात, भारी मशीनरी और धातुकर्म उद्योगों का सबसे बड़ा केंद्र है। जमशेदपुर, बोकारो, राउरकेला और दुर्गापुर जैसे प्रमुख एकीकृत इस्पात संयंत्र इसी समृद्ध खनिज पट्टी में स्थित हैं।

25. (D) यह बिजली उत्पादन के लिए प्रचुर मात्रा में स्थानीय कोयला भंडारों पर अत्यधिक निर्भर था।
बेंगलुरु-चेन्नई औद्योगिक क्षेत्र में स्थानीय स्तर पर कोयले के भंडार उपलब्ध नहीं हैं। इसके शुरुआती औद्योगिक विकास को तमिलनाडु की पायकारा जलविद्युत परियोजना और कोयले के समुद्री परिवहन द्वारा ऊर्जा सहायता मिली थी। वर्तमान में यह क्षेत्र परमाणु, नवीकरणीय ऊर्जा और राष्ट्रीय ग्रिड पर निर्भर है। यह क्षेत्र कोयला-आधारित उद्योगों के स्थान पर एयरोस्पेस, दूरसंचार, इलेक्ट्रॉनिक्स, ऑटोमोबाइल निर्माण और ज्ञान-आधारित प्रौद्योगिकी उद्योगों के उच्च संकेंद्रण के लिए प्रसिद्ध है।

26. (A) औद्योगिक नीति संकल्प, 1948
स्वतंत्र भारत की पहली औद्योगिक नीति संकल्प 1948 ने देश में मिश्रित अर्थव्यवस्था के मॉडल की औपचारिक नींव रखी। इसने उद्योगों को सार्वजनिक, निजी और संयुक्त क्षेत्रों में विभाजित किया। इसमें रणनीतिक महत्व के उद्योगों जैसे अस्त्र-शस्त्र, परमाणु ऊर्जा और रेल परिवहन को राज्य के एकाधिकार में रखा गया, जबकि अन्य क्षेत्रों में निजी उद्यमों को कार्य करने की अनुमति दी गई। इसने संतुलित क्षेत्रीय विकास और कुटीर उद्योगों के संरक्षण पर जोर दिया।

27. (B) महालनोबिस मॉडल
1956 का औद्योगिक नीति संकल्प प्रसिद्ध अर्थशास्त्री प्रो. पी. सी. महालनोबिस द्वारा विकसित विकास मॉडल पर आधारित था। यह मॉडल दूसरी पंचवर्षीय योजना का आधार बना, जिसमें भारी और बुनियादी उद्योगों, जैसे इस्पात, भारी मशीनरी और रसायन के विकास पर विशेष बल दिया गया था। महालनोबिस मॉडल का मुख्य उद्देश्य सार्वजनिक क्षेत्र का तेजी से विस्तार करके पूंजीगत वस्तुओं के क्षेत्र को सुदृढ़ करना तथा दीर्घकालिक आत्मनिर्भरता प्राप्त करना था।

28. (A) केवल I और II
1956 के औद्योगिक नीति संकल्प ने उद्योगों को तीन अनुसूचियों में विभाजित किया। अनुसूची A के 17 उद्योग पूरी तरह राज्य के अधीन थे, अनुसूची B में राज्य और निजी क्षेत्र दोनों शामिल थे, तथा अनुसूची C निजी क्षेत्र के लिए खुली थी। इस नीति ने लघु और कुटीर उद्योगों को हतोत्साहित नहीं किया, बल्कि रोजगार सृजन और स्थानीय संसाधनों के उपयोग हेतु उनके विकास का समर्थन किया। इसे 'भारत का आर्थिक संविधान' भी कहा जाता है।

29. (A) बिना किसी अपवाद के सभी परियोजनाओं के लिए औद्योगिक लाइसेंसिंग का उन्मूलन।
1991 की नई औद्योगिक नीति ने बड़े पैमाने पर उदारीकरण की शुरुआत की और अधिकांश उद्योगों के लिए लाइसेंसिंग व्यवस्था को समाप्त कर दिया। हालांकि, यह उन्मूलन बिना किसी अपवाद के पूरी तरह से नहीं था। सुरक्षा, रणनीतिक महत्व और पर्यावरणीय चिंताओं से जुड़े कुछ विशिष्ट उद्योगों (जैसे अल्कोहल, सिगरेट, खतरनाक रसायन और औद्योगिक विस्फोटक) के लिए अनिवार्य लाइसेंसिंग को बनाए रखा गया था। इसके साथ ही प्रत्यक्ष विदेशी निवेश नियमों को उदार बनाया गया।

30. (C) औद्योगिक लाइसेंसिंग पर दत्त समिति
1969 में गठित औद्योगिक लाइसेंसिंग नीति जांच समिति, जिसे दत्त समिति के रूप में जाना जाता है, ने भारत में 'संयुक्त क्षेत्र' की अवधारणा की सिफारिश की थी। इस मॉडल का

NODIA

उद्देश्य सार्वजनिक वित्तीय संस्थानों द्वारा प्रदान की गई पूंजी के साथ निजी प्रबंधन की दक्षता को जोड़ना था। दत्त समिति की सिफारिशों ने लाइसेंसिंग प्रणाली की कमियों को दूर करने और बड़े व्यापारिक घरानों द्वारा आर्थिक शक्ति के अत्यधिक संकेंद्रण को नियंत्रित करने में मदद की।

31. (D) परमाणु ऊर्जा
1991 के आर्थिक सुधारों के बाद, सार्वजनिक क्षेत्र के लिए आरक्षित उद्योगों की संख्या को क्रमिक रूप से घटा दिया गया है। वर्तमान में केवल दो क्षेत्र विशेष रूप से केंद्र सरकार/सार्वजनिक क्षेत्र के नियंत्रण के लिए आरक्षित हैं: परमाणु ऊर्जा का उत्पादन व प्रसंस्करण, और रेलवे परिवहन का संचालन। वाणिज्यिक एयरोस्पेस, भारी मशीनरी और दूरसंचार जैसे अन्य सभी क्षेत्रों को निजी और विदेशी निवेश के लिए पूरी तरह से खोल दिया गया है।

32. (C) शुल्क-मुक्त क्षेत्रों के माध्यम से निर्यात को बढ़ावा देना, विदेशी निवेश को आकर्षित करना और रोजगार उत्पन्न करना।
विशेष आर्थिक क्षेत्र स्थापित करने का मुख्य उद्देश्य देश में निर्यात-उन्मुख विनिर्माण और सेवाओं को बढ़ावा देना है। ये कड़ाई से परिभाषित शुल्क-मुक्त परिक्षेत्र होते हैं जिन्हें व्यापार संचालन के लिए विदेशी क्षेत्र माना जाता है। यहाँ व्यवसायों को कर प्रोत्साहन, एकल-खिड़की मंजूरी, उत्कृष्ट अवसंरचना और सरलीकृत नियम प्रदान किए जाते हैं, जिससे प्रत्यक्ष विदेशी निवेश आकर्षित होता है, विश्वस्तरीय अवसंरचना बनती है और बड़े पैमाने पर रोजगार के अवसर निर्मित होते हैं।

33. (C) 2005
भारत में विशेष आर्थिक क्षेत्रों की स्थापना, संचालन और प्रबंधन के लिए एक स्थिर और दीर्घकालिक कानूनी ढांचा प्रदान करने हेतु संसद द्वारा मई 2005 में विशेष आर्थिक क्षेत्र अधिनियम पारित किया गया था। यह अधिनियम फरवरी 2006 में लागू हुआ था। इसका मुख्य उद्देश्य व्यापार बाधाओं को दूर करना, राजकोषीय छूट प्रदान करना, अवसंरचनात्मक सुविधाओं का विस्तार करना और भारत को वैश्विक विनिर्माण तथा निर्यात का एक प्रमुख केंद्र बनाना था।

34. (A) P-4, Q-1, R-2, S-3
भारत के प्रमुख विशेष आर्थिक क्षेत्र और पूर्व निर्यात प्रसंस्करण क्षेत्र विभिन्न राज्यों में स्थित हैं। कांडला गुजरात के कच्छ जिले में स्थित है। सांताक्रूज़ इलेक्ट्रॉनिक्स एक्सपोर्ट प्रोसेसिंग ज़ोन मुंबई, महाराष्ट्र में स्थित है। मद्रास एक्सपोर्ट प्रोसेसिंग ज़ोन चेन्नई, तमिलनाडु में कार्य करता है। फालटा विशेष आर्थिक क्षेत्र पश्चिम बंगाल के दक्षिण 24 परगना जिले में स्थित है। ये सभी क्षेत्र निर्यात संवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

35. (A) कांडला, गुजरात
भारत ने निर्यात संवर्धन के लिए भौगोलिक परिक्षेत्रों के महत्व को बहुत पहले पहचान लिया था। वर्ष 1965 में गुजरात के कांडला में स्थापित कांडला निर्यात प्रसंस्करण क्षेत्र न केवल भारत का, बल्कि पूरे एशिया महाद्वीप का पहला निर्यात प्रसंस्करण क्षेत्र था। इस मॉडल को बाद में दुनिया भर में अपनाया गया। वर्ष 2000 में घोषित नीति के तहत कांडला निर्यात प्रसंस्करण क्षेत्र को विशेष आर्थिक क्षेत्र में परिवर्तित कर दिया गया।

36. (C) एसईजेड में निर्माण, व्यापार और सेवाएं शामिल हैं, जबकि ईपीजेड मुख्य रूप से निर्यात निर्माण तक सीमित थे।
निर्यात प्रसंस्करण क्षेत्र मुख्य रूप से केवल विनिर्माण और निर्यात गतिविधियों पर केंद्रित सीमित परिक्षेत्र थे। इसके विपरीत, विशेष आर्थिक क्षेत्र एक व्यापक अवधारणा है, जिसमें विनिर्माण, व्यापार, सूचना प्रौद्योगिकी, वित्तीय सेवाएं और आवासीय बुनियादी ढांचा शामिल है। विशेष आर्थिक क्षेत्र को व्यापारिक परिचालन के लिए एक विदेशी क्षेत्र माना जाता है, जिसमें सरलीकृत कानून, कर प्रोत्साहन और एकीकृत विश्वस्तरीय सुविधाएं प्रदान की जाती हैं।

37. (B) 2022 तक जीडीपी में विनिर्माण की हिस्सेदारी बढ़ाकर 25% करना।
भारत सरकार द्वारा सितंबर 2014 में शुरू की गई 'मेक इन इंडिया' पहल का एक प्रमुख शुरुआती लक्ष्य राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में विनिर्माण क्षेत्र के योगदान को बढ़ाकर 25% तक पहुंचाना था। इसके अलावा, इसका उद्देश्य विनिर्माण क्षेत्र में 100 मिलियन अतिरिक्त नौकरियां पैदा करना और भारत को एक वैश्विक विनिर्माण हब में बदलना था। इस पहल के तहत निवेश को आसान बनाने और व्यापार करने की सुगमता में सुधार पर बल दिया गया।

38. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
'मेक इन इंडिया' पहल का मुख्य उद्देश्य भारत में निवेश को सुगम बनाना, नवाचार को बढ़ावा देना, बौद्धिक संपदा की रक्षा करना और अत्याधुनिक औद्योगिक अवसंरचना का निर्माण करना है। भारत की विशाल युवा आबादी को रोजगार प्रदान करने और आयात पर अत्यधिक निर्भरता को कम करने के लिए एक मजबूत विनिर्माण आधार आवश्यक है। इसलिए, जनसांख्यिकी लाभांश का लाभ उठाने और आर्थिक आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के लिए विनिर्माण क्षेत्र का विस्तार करना अपरिहार्य है।

39. (B) खुदरा किराना वितरण
'मेक इन इंडिया' पहल मुख्य रूप से विनिर्माण, अवसंरचना और उच्च प्रौद्योगिकी वाले औद्योगिक क्षेत्रों पर केंद्रित है। इसमें ऑटोमोबाइल, एयरोस्पेस, रक्षा निर्माण, फार्मास्यूटिकल्स, बायोटेक्नोलॉजी, इलेक्ट्रॉनिक्स और नवीकरणीय ऊर्जा जैसे 25 प्रमुख क्षेत्रों को प्राथमिकता दी गई है। स्थानीय खुदरा किराना वितरण मुख्य रूप से एक असंगठित घरेलू सेवा गतिविधि है, इसलिए इसे मेक इन इंडिया विनिर्माण अभियान के प्राथमिक औद्योगिक फोकस क्षेत्रों में शामिल नहीं किया गया है।

40. (C) जापान
दिल्ली-मुंबई औद्योगिक गलियारा भारत की सबसे महत्वाकांक्षी अवसंरचना परियोजनाओं में से एक है, जिसे जापान सरकार और जापानी कंपनियों के वित्तीय व तकनीकी सहयोग से विकसित किया जा रहा है। जापान इंटरनेशनल

Downloaded from www.pdf.tube

कोऑपरेशन एजेंसी और जापानी बैंक इस परियोजना के लिए दीर्घकालिक वित्तीय सहायता प्रदान कर रहे हैं। इस गलियारे का उद्देश्य भारत के औद्योगिक बुनियादी ढांचे का आधुनिकीकरण करना और विश्वस्तरीय स्मार्ट औद्योगिक शहरों का निर्माण करना है।

41. (D) वेस्टर्न डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर (WDFC)
दिल्ली-मुंबई औद्योगिक गलियारे का विकास वेस्टर्न डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर के संरेखण पर आधारित है। यह समर्पित माल ढुलाई गलियारा दादरी (उत्तर प्रदेश) से जवाहरलाल नेहरू पोर्ट ट्रस्ट (मुंबई) तक लगभग 1500 किलोमीटर लंबा है। इस रेल नेटवर्क के दोनों ओर 150 किलोमीटर के प्रभाव क्षेत्र में औद्योगिक क्षेत्रों, स्मार्ट शहरों, लॉजिस्टिक्स पार्कों और अवसंरचनात्मक नोड्स का विकास किया जा रहा है ताकि माल का तीव्र परिवहन हो सके।

42. (A) बिहार
दिल्ली-मुंबई औद्योगिक गलियारा प्रभाव क्षेत्र भारत के छह प्रमुख राज्यों: उत्तर प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात और महाराष्ट्र के साथ-साथ दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र से होकर गुजरता है। यह गलियारा भारत के पश्चिमी और उत्तरी भागों को जोड़ता है। बिहार पूर्वी भारत में स्थित है और यह दिल्ली-मुंबई औद्योगिक गलियारा परियोजना के भौगोलिक प्रभाव क्षेत्र के अंतर्गत नहीं आता है। पूर्वी राज्यों को जोड़ने के लिए ईस्टर्न डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर बनाया जा रहा है।

43. (C) केवल IV
राजस्थान में दिल्ली-मुंबई औद्योगिक गलियारे का गहरा प्रभाव है क्योंकि वेस्टर्न डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर का लगभग 39% हिस्सा राज्य से गुजरता है। इसके अंतर्गत खुशखेड़ा-भिवाड़ी-नीमराना को एक विशाल निवेश क्षेत्र के रूप में और जोधपुर-पाली-मारवाड़ को प्रथम चरण के औद्योगिक क्षेत्र के रूप में विकसित किया जा रहा है। यह कहना गलत है कि यह पश्चिमी राजस्थान से बचता है; वास्तव में यह परियोजना राज्य के शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में औद्योगिक विकास को बढ़ावा दे रही है।

44. (A) 1 करोड़ रुपये तक का निवेश और 5 करोड़ रुपये तक का टर्नओवर।
1 जुलाई 2020 से लागू सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों के संशोधित वर्गीकरण के अनुसार, एक 'सूक्ष्म' उद्यम वह है जिसमें संयंत्र और मशीनरी या उपकरणों में निवेश 1 करोड़ रुपये से अधिक नहीं होता है और उसका वार्षिक टर्नओवर 5 करोड़ रुपये से अधिक नहीं होता है। यह सीमा विनिर्माण और सेवा दोनों क्षेत्रों के उद्यमों पर समान रूप से लागू होती है, जिससे छोटे व्यवसायों को सहायता मिलती है।

45. (A) इसने विनिर्माण और सेवा क्षेत्र के उद्यमों के बीच के अंतर को समाप्त कर दिया।
2020 में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों की परिभाषा में सबसे बड़ा बदलाव यह था कि इसने विनिर्माण और सेवा क्षेत्र के बीच के पुराने अंतर को पूरी तरह समाप्त कर दिया। नई व्यवस्था के तहत दोनों क्षेत्रों के लिए एक समान मानदंड लागू किए गए। इसके अतिरिक्त, वर्गीकरण में केवल संयंत्र और मशीनरी में निवेश के पारंपरिक मानदंड के साथ-साथ वार्षिक टर्नओवर का एक नया संयुक्त मानदंड भी जोड़ा गया, जिससे व्यावसायिक पारदर्शिता में सुधार हुआ।

46. (B) लगभग 40-45%
सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम क्षेत्र भारतीय अर्थव्यवस्था का एक अत्यंत महत्वपूर्ण स्तंभ है। आधिकारिक आंकड़ों और सामान्य आर्थिक रुझानों के अनुसार, यह क्षेत्र भारत के कुल मर्चेंडाइज निर्यात में लगभग 40 से 45 प्रतिशत का विशाल योगदान देता है। इसके अलावा, यह क्षेत्र सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 30% का योगदान देता है और कृषि के बाद देश में दूसरा सबसे बड़ा रोजगार प्रदान करने वाला क्षेत्र है।

47. (D) बड़े खरीदारों और सरकारी संस्थाओं से भुगतान में देरी।
भारतीय सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों द्वारा सामना की जाने वाली सबसे गंभीर और निरंतर समस्याओं में से एक बड़े कॉर्पोरेट खरीदारों, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों और सरकारी विभागों से समय पर भुगतान न मिलना है। विलंबित भुगतान के कारण इन छोटे उद्यमों की कार्यशील पूंजी समाप्त हो जाती है, जिससे दैनिक परिचालन बाधित होता है और तरलता का संकट पैदा होता है। इससे कई सक्षम इकाइयां वित्तीय तनाव में आ जाती हैं और अक्सर रुग्ण हो जाती हैं।

NODIA

48. (C) II, III, I
2020 के नए मानदंडों के अनुसार सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम वर्गीकरण की निवेश सीमा का बढ़ता क्रम है: सूक्ष्म उद्यम (1 करोड़ रुपये तक निवेश), लघु उद्यम (10 करोड़ रुपये तक निवेश), और मध्यम उद्यम (50 करोड़ रुपये तक निवेश)। टर्नओवर के संदर्भ में भी यही क्रम लागू होता है: सूक्ष्म (5 करोड़ रुपये), लघु (50 करोड़ रुपये), और मध्यम (250 करोड़ रुपये)। अतः सही आरोही अनुक्रम सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम है।

49. (B) स्व-घोषणा के आधार पर निःशुल्क ऑनलाइन कागजरहित एमएसएमई पंजीकरण प्रदान करना।
भारत सरकार के सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय द्वारा जुलाई 2020 में शुरू किया गया 'उद्यम पंजीकरण पोर्टल' एक निःशुल्क, पूरी तरह से डिजिटल और कागजरहित प्लेटफॉर्म है। इसका मुख्य उद्देश्य सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों का पंजीकरण सरल बनाना है। व्यवसायों को स्व-घोषणा के आधार पर केवल आधार नंबर का उपयोग करके आसानी से पंजीकृत किया जा सकता है। यह प्रणाली आयकर और जीएसटी नेटवर्क से स्वचालित रूप से एकीकृत होकर आंकड़े प्राप्त करती है।

50. (D) तापीय प्रदूषण (थर्मल पोल्यूशन)
तापीय प्रदूषण तब होता है जब औद्योगिक इकाइयां, विशेष रूप से तापीय विद्युत संयंत्र और विनिर्माण कारखाने, प्रक्रियाओं में ठंडा करने के लिए उपयोग किए गए अत्यधिक गर्म पानी को बिना ठंडा किए सीधे प्राकृतिक जल निकायों में छोड़ देते

हैं। पानी के तापमान में अचानक वृद्धि होने से उसमें घुलित ऑक्सीजन की सांद्रता तेजी से घट जाती है। ऑक्सीजन की कमी और तापमान का झटका जलीय जीवों, मछलियों और संवेदनशील जल पारिस्थिकी तंत्र के लिए घातक सिद्ध होता है।

51. (A) P-2, Q-1, R-4, S-3
विभिन्न उद्योग अलग-अलग पर्यावरणीय खतरे पैदा करते हैं। चमड़ा शोधनागार जल निकायों में विषैले क्रोमियम और भारी धातुओं का निष्कासन करते हैं। तापीय विद्युत संयंत्रों से भारी मात्रा में फ्लाई अश निकलती है। वस्त्र रंगाई उद्योग रंगीन अपशिष्ट छोड़ते हैं जो जल में प्रकाश संश्लेषण को बाधित करते हैं। ईंट के भट्टे वायु में कणीय पदार्थों का उत्सर्जन करते हैं और ऊपरी उपजाऊ मिट्टी का क्षरण करते हैं, जिससे पर्यावरण को भारी क्षति पहुंचती है।

52. (A) केवल I और II
'शून्य तरल निर्वहन' एक उन्नत अपशिष्ट जल उपचार रणनीति है जिसका उद्देश्य पर्यावरण में किसी भी तरल कचरे के निर्वहन को पूरी तरह रोकना है। इसमें कारखाने के भीतर ही अपशिष्ट जल का शोधन, पुनर्चक्रण और पुनः उपयोग किया जाता है। यह नीति अनुपचारित अपशिष्ट को भूमिगत जलभृतों या नदियों में फेंकने को सख्ती से प्रतिबंधित करती है। यह जल संसाधनों का संरक्षण करती है और उद्योगों को अधिक टिकाऊ तथा पर्यावरण-अनुकूल बनाती है।

53. (B) जल (प्रदूषण निवारण एवं नियंत्रण) अधिनियम, 1974
केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड भारत का एक शीर्ष वैधानिक संगठन है। इसका गठन मूल रुप से जल (प्रदूषण निवारण एवं नियंत्रण) अधिनियम, 1974 के तहत सितंबर 1974 में किया गया था। बाद में, इसे वायु (प्रदूषण निवारण और नियंत्रण) अधिनियम, 1981 के तहत शक्तियां और कार्य सौंपे गए। यह बोर्ड पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय को तकनीकी सलाह प्रदान करता है तथा देश में वायु और जल गुणवत्ता के मानकों को लागू करता है।

54. (D) औद्योगिक अपशिष्ट जल का उपचार करना और निपटान या पुनः उपयोग से पहले उसकी विषाक्तता को कम करना।
अपशिष्ट उपचार संयंत्र का मुख्य कार्य औद्योगिक कारखानों से निकलने वाले दूषित और विषैले जल का रासायनिक, भौतिक और जैविक प्रक्रियाओं द्वारा शोधन करना है। यह संयंत्र अपशिष्ट जल में से हानिकारक रसायनों, भारी धातुओं और कार्बनिक प्रदूषकों को हटाता है ताकि उपचारित जल को सुरक्षित रुप से प्राकृतिक जल निकायों में छोड़ा जा सके या कारखाने में पुनः उपयोग किया जा सके। यह जल प्रदूषण को नियंत्रित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

55. (B) चमड़ा शोधन (टैनिंग)
उत्तर प्रदेश का कानपुर शहर ऐतिहासिक रुप से अपने विशाल चमड़ा शोधन उद्योग के लिए जाना जाता है। हालांकि, यह उद्योग गंगा नदी में अत्यधिक प्रदूषण के लिए सबसे प्रमुख जिम्मेदार कारकों में से एक रहा है। चमड़े के प्रसंस्करण में प्रयुक्त विषैले रसायन जैसे क्रोमियम, सल्फेट और उच्च कार्बनिक कचरा सीधे गंगा में बहाया जाता रहा है, जिससे नदी का पारिस्थितिकी तंत्र गंभीर रुप से प्रभावित हुआ है और जल गुणवत्ता खराब हुई है।

56. (A) P-2, Q-4, R-1, S-3
भारत के विभिन्न राज्यों में प्रमुख औषधि निर्माण हब स्थित हैं। हिमाचल प्रदेश का बद्दी एशिया के सबसे बड़े फार्मास्युटिकल हब में से एक है। आंध्र प्रदेश का विशाखापट्टनम जवाहरलाल नेहरु फार्मा सिटी के लिए प्रसिद्ध है। गुजरात का अहमदाबाद लंबे समय से स्थापित औषधीय विनिर्माण केंद्रों का प्रतिनिधित्व करता है। सिक्किम में पाकयोंग और रंगपो पूर्वोत्तर भारत के प्रमुख फार्मास्युटिकल हब के रुप में उभरे हैं, जहाँ कई विनिर्माण इकाइयां स्थापित हैं।

57. (D) भारत मात्रा के आधार पर औषधि उत्पादन में दुनिया भर में तीसरे स्थान पर है।
भारत को 'विश्व की फार्मेसी' कहा जाता है। मात्रा के आधार पर भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा औषधि उत्पादक देश है, जबकि मूल्य के मामले में यह 14वें स्थान पर है। भारत सस्ती और उच्च गुणवत्ता वाली जेनेरिक दवाओं, टीकों और आवश्यक औषधियों का वैश्विक स्तर पर सबसे बड़ा आपूर्तिकर्ता है। वैश्विक स्तर पर कुल टीका मांग का 60% से अधिक हिस्सा भारत द्वारा पूरा किया जाता है, जो इसकी औद्योगिक क्षमता को दर्शाता है।

58. (A) प्रमुख शुरुआती सामग्रियों और सक्रिय औषधि घटकों (APIs) के लिए उच्च आयात निर्भरता।
भारत में औषधि उद्योग भले ही जेनेरिक दवाओं के निर्माण में अग्रणी हो, लेकिन यह दवाओं के निर्माण में प्रयुक्त होने वाले कच्चे माल यानी सक्रिय औषधि घटकों और मुख्य शुरुआती सामग्रियों के लिए आयात पर अत्यधिक निर्भर रहा है। इस रणनीतिक जोखिम को कम करने और घरेलू आपूर्ति श्रृंखला को मजबूत करने के लिए भारत सरकार ने फार्मास्युटिकल क्षेत्र के लिए उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन (पीएलआई) योजना शुरु की है।

59. (B) बद्दी-नालागढ़
हिमाचल प्रदेश के सोलन जिले में स्थित बद्दी-नालागढ़ क्षेत्र उत्तर भारत में फार्मास्युटिकल विनिर्माण, बल्क ड्रग्स और 'मेडिकल डिवाइसेस पार्क' के प्रमुख हब के रुप में विकसित किया जा रहा है। सरकार द्वारा प्रदान किए गए कर प्रोत्साहनों और सुदृढ़ औद्योगिक बुनियादी ढांचे के कारण यहाँ सैकड़ों घरेलू व बहुराष्ट्रीय दवा कंपनियों ने अपनी इकाइयां स्थापित की हैं। यह क्षेत्र भारत के कुल दवा उत्पादन में एक विशाल हिस्सेदारी का योगदान देता है।

60. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
भारत में इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण में हाल के वर्षों में तेजी से वृद्धि हुई है, लेकिन कुल उत्पादन मूल्य की तुलना में घरेलू मूल्य संवर्धन काफी कम है। इसका मुख्य कारण यह है कि भारत में अधिकांश परिचालन अभी भी केवल अंतिम असेंबली

Click Here to Buy book on Amazon

और पैकेजिंग तक सीमित हैं। सेमीकंडक्टर चिप्स, प्रिंटेड सर्किट बोर्ड और डिस्प्ले जैसे उच्च मूल्य वाले घटक विदेशों से आयात किए जाते हैं, जिससे स्थानीय मूल्य संवर्धन की गुंजाइश सीमित रह जाती है।

61. (A) बेंगलुरु
कर्नाटक की राजधानी बेंगलुरु को भारत की 'इलेक्ट्रॉनिक्स राजधानी' तथा 'सिलिकॉन वैली' कहा जाता है। 1970 के दशक में इलेक्ट्रॉनिक सिटी के विकास के साथ ही यहाँ सार्वजनिक उपक्रमों और शिक्षण संस्थानों ने एक मजबूत आधार तैयार किया। इसके बाद देश-विदेश की प्रमुख इलेक्ट्रॉनिक्स, आईटी हार्डवेयर और सेमीकंडक्टर डिजाइन कंपनियों ने बेंगलुरु को अपना मुख्य परिचालन केंद्र बनाया, जिससे इसे भारत की इलेक्ट्रॉनिक्स राजधानी के रूप में ऐतिहासिक पहचान हासिल हुई।

62. (C) ESDM की संपूर्ण मूल्य श्रृंखला में घरेलू विनिर्माण और निर्यात को बढ़ावा देना।
राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक्स नीति 2019 का मुख्य उद्देश्य भारत को इलेक्ट्रॉनिक्स सिस्टम डिजाइन एंड मैन्युफैक्चरिंग क्षेत्र में एक वैश्विक केंद्र बनाना है। यह नीति चिपसेट डिजाइनिंग, सेमीकंडक्टर फैब्रिकेशन और घटक निर्माण सहित संपूर्ण मूल्य श्रृंखला में घरेलू उत्पादन को प्रोत्साहित करती है। इसका लक्ष्य वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ावा देना, बौद्धिक संपदा का विकास करना, निर्यात बढ़ाना और इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण क्षेत्र में लाखों नए रोजगार के अवसर पैदा करना है।

63. (D) चिकित्सा उपकरणों और सर्जिकल उपकरणों के विनिर्माण में एफडीआई प्रतिबंधित है।
भारत की वर्तमान एफडीआई नीति के तहत चिकित्सा उपकरणों और शल्य चिकित्सा उपकरणों के विनिर्माण में स्वचालित मार्ग के अंतर्गत 100% प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की अनुमति है, इसलिए यह कहना गलत है कि यह प्रतिबंधित है। सरकार ने स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में अत्याधुनिक तकनीक और निवेश को आकर्षित करने के लिए इसे उदार बनाया है। इसके विपरीत, तंबाकू उत्पाद जैसे सिगार और सिगरेट के निर्माण में एफडीआई पर पूर्ण प्रतिबंध लगा हुआ है।

64. (C) ग्रीनफील्ड शून्य से नई सुविधाएं निर्मित करता है, जबकि ब्राउनफील्ड मौजूदा परिचालन सुविधाओं का अधिग्रहण या लीज पर लेता है।
प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में 'ग्रीनफील्ड' और 'ब्राउनफील्ड' के बीच मुख्य अंतर उनकी स्थापना की प्रकृति में है। ग्रीनफील्ड निवेश का तात्पर्य किसी नई जगह पर शून्य से पूरी तरह नई उत्पादन सुविधाओं, कारखानों या बुनियादी ढांचे के निर्माण से होता है। इसके विपरीत, ब्राउनफील्ड निवेश का अर्थ किसी मौजूदा चालू कंपनी, संयंत्र या परिचालन परिसंपत्ति का अधिग्रहण करना, उसमें हिस्सेदारी खरीदना या उसका विस्तार और आधुनिकीकरण करना होता है।

65. (B) उद्योग संवर्धन और आंतरिक व्यापार विभाग (DPIIT)
भारत सरकार के वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के तहत कार्य करने वाला उद्योग संवर्धन और आंतरिक व्यापार विभाग (DPIIT) देश में एफडीआई नीति बनाने, उसे लागू करने तथा औद्योगिक विकास को बढ़ावा देने के लिए नोडल विभाग है। यह विभाग व्यापार करने की सुगमता में सुधार, औद्योगिक गलियारों के विकास, बौद्धिक संपदा अधिकारों के प्रशासन और स्टार्ट-अप पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करने के लिए भी जिम्मेदार है।

66. (C) 74%
भारत की वर्तमान एफडीआई नीति के अनुसार, रक्षा निर्माण क्षेत्र में स्वचालित मार्ग के तहत 74% तक प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की अनुमति दी गई है। 74% से अधिक एफडीआई के लिए सरकारी मंजूरी की आवश्यकता होती है, जहाँ आधुनिक और अत्याधुनिक तकनीक प्राप्त होने की संभावना हो। इस नीतिगत बदलाव का मुख्य उद्देश्य रक्षा उत्पादन में स्वदेशीकरण को बढ़ावा देना, विदेशी पूंजी आकर्षित करना और आयात पर निर्भरता को कम करना है।

67. (A) महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, तमिलनाडु
भारत में पंजीकृत और कार्यरत सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम इकाइयों की कुल संख्या के मामले में महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश और तमिलनाडु अग्रणी राज्यों में शामिल हैं। उद्यम पोर्टल के पंजीकरण रुझानों के अनुसार, महाराष्ट्र विशाल औद्योगिक आधार के कारण शीर्ष पर है, इसके बाद घनी आबादी और कुटीर उद्योगों वाले उत्तर प्रदेश का स्थान आता है, जबकि तमिलनाडु तीसरे स्थान पर मजबूत एमएसएमई पारिस्थितिकी तंत्र रखता है।

NODIA

68. (C) किसी विशेष क्षेत्र में आपस में जुड़ी फर्मों, आपूर्तिकर्ताओं और संबंधित संस्थानों का एक स्थानिक समूह।
एक औद्योगिक क्लस्टर भौगोलिक रूप से एक ही क्षेत्र में स्थित आपस में जुड़ी कंपनियों, विशिष्ट कच्चे माल के आपूर्तिकर्ताओं, सेवा प्रदाताओं और संबंधित शैक्षणिक संस्थानों का एक समूह होता है। यह निकटता फर्मों को संसाधनों, कुशल श्रम, साझा बुनियादी ढाँचे और प्रौद्योगिकियों को साझा करने की अनुमति देती है। क्लस्टर में काम करने से उत्पादन लागत घटती है, नवाचार बढ़ता है और छोटी इकाइयों की वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता में सुधार होता है।

69. (C) I, II और III
भारत में ऑटोमोबाइल क्षेत्र 1991 के सुधारों से पहले सख्त लाइसेंसिंग के तहत था, परंतु उदारीकरण के बाद स्वचालित मार्ग से 100% एफडीआई की अनुमति दिए जाने से कई वैश्विक दिग्गज भारत आए। गुरुग्राम-मानेसर, चेन्नई, पुणे और संनद प्रमुख ऑटो हब बने। अतः यह कथन गलत है कि इसमें एफडीआई की अनुमति नहीं है। वर्तमान में ऑटोमोबाइल क्षेत्र प्रत्यक्ष विदेशी निवेश और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण का एक प्रमुख प्राप्तकर्ता है।

70. (D) कोयर, खादी और ग्रामोद्योग
'पारंपरिक उद्योगों के पुनरुत्थान के लिए कोष की योजना' सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय द्वारा शुरु की गई एक प्रमुख पहल है। इसका मुख्य उद्देश्य खादी, ग्रामोद्योग, हस्तशिल्प,

(A) प्रमुख व्यापार और उत्पादन मार्गों पर माल आवाजाही दक्षता को अनुकूलित करना
(B) 500 से अधिक जनसंख्या वाले प्रत्येक गाँव को सीधे जिला केंद्रों से जोड़ने वाली बारहमासी कनेक्टिविटी प्रदान करना
(C) केवल मौसमी कृषि परिवहन के लिए आरक्षित विशेष भारी क्षमता वाले राजमार्ग नेटवर्क का निर्माण करना
(D) मौजूदा पारंपरिक रेलवे नेटवर्क को व्यवस्थित रूप से समाप्त करना और उन्हें सड़क एक्सप्रेसवे से बदलना

63. अवसंरचना परियोजनाओं और उनके नोडल कार्यान्वयन मंत्रालयों के संबंध में गलत सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए:
(A) भारतमाला परियोजना — सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय
(B) सागरमाला परियोजना — बंदरगाह, नौवहन और जलमार्ग मंत्रालय
(C) PMGSY — पंचायती राज मंत्रालय
(D) उड़ान (UDAN) योजना — नागरिक उड्डयन मंत्रालय

64. जयपुर मेट्रो के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह भारत की छठी संचालित मेट्रो रेल प्रणाली है।
II. इसमें एक अद्वितीय डबल-डेक्ड एलिवेटेड रोड और मेट्रो ट्रैक कॉरिडोर (अजमेर रोड) है।
III. पूरा नेटवर्क वर्तमान में पूरी तरह से भूमिगत रूप से संचालित होता है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से गलत है/हैं?
(A) केवल I
(B) केवल II
(C) केवल III
(D) केवल I और II

65. राजस्थान जैसे सामान्य राज्यों के लिए उड़ान योजना के मानक फंडिंग पैटर्न के तहत, व्यवहार्यता अंतर वित्तपोषण (VGF) केंद्र और राज्य के बीच किस अनुपात में साझा किया जाता है?
(A) 50:50
(B) 60:40
(C) 80:20
(D) 90:10

66. भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण (AAI), जो देश में नागरिक उड्डयन अवसंरचना का प्रबंधन करता है, को किस वर्ष एक वैधानिक निकाय के रूप में स्थापित किया गया था?
(A) 1947
(B) 1985
(C) 1995
(D) 2005

67. निम्नलिखित में से कौन भारत में नव विकसित 'ग्रीनफील्ड' हवाई अड्डे का उदाहरण नहीं है?
(A) मोपा हवाई अड्डा (मनोहर अंतर्राष्ट्रीय), गोवा
(B) सिंधुदुर्ग हवाई अड्डा, महाराष्ट्र
(C) डोनी पोलो हवाई अड्डा, ईटानगर
(D) जयपुर अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा, राजस्थान

68. भारत के नागरिक उड्डयन के संदर्भ में 'ओपन स्काई नीति' का तात्पर्य है:
(A) हस्ताक्षरकर्ता देशों के बीच असीमित उड़ानों की अनुमति देने वाले द्विपक्षीय समझौते
(B) अंतर्राष्ट्रीय वाहकों को प्रमुख भारतीय शहरों में घरेलू मार्गों पर उड़ान भरने के लिए अप्रतिबंधित पहुंच प्रदान करना
(C) वाणिज्यिक कार्गो उड़ानों के लिए सभी हवाई यातायात नियंत्रण दिशानिर्देशों और ऊंचाई प्रतिबंधों को हटाना
(D) केवल सैन्य परिवहन और रक्षा विमानों पर वैधानिक यात्री सीट सीमाओं को माफ करना

69. निम्नलिखित भारतीय शहरों द्वारा अपनी पहली मेट्रो रेल लाइन संचालित करने का सही कालानुक्रम (प्राचीनतम से नवीनतम) चुनिए:
(A) दिल्ली, कोलकाता, बेंगलुरु, जयपुर
(B) कोलकाता, दिल्ली, बेंगलुरु, जयपुर
(C) कोलकाता, बेंगलुरु, दिल्ली, जयपुर
(D) दिल्ली, बेंगलुरु, कोलकाता, जयपुर

70. भारत के प्रमुख समुद्री बंदरगाहों में से किसे सबसे गहरे भू-बद्ध (स्थल-रुद्ध) और सुरक्षित बंदरगाह के रूप में जाना जाता है?
(A) विशाखापटनम बंदरगाह
(B) चेन्नई बंदरगाह, तमिलनाडु
(C) मुंबई बंदरगाह, महाराष्ट्र
(D) तूतीकोरिन बंदरगाह, तमिलनाडु

71. निम्नलिखित में से कौन-सा भारत का एकमात्र प्रमुख नदीय बंदरगाह है?
(A) पारादीप पोर्ट ट्रस्ट
(B) मोर्मूगाओ पोर्ट अथॉरिटी
(C) कोचीन पोर्ट अथॉरिटी
(D) हल्दिया/कोलकाता बंदरगाह

72. निम्नलिखित में से किसे वर्तमान में भारत में संचालित सबसे लंबी कच्चे तेल की पाइपलाइन के रूप में मान्यता प्राप्त है?
(A) नाहरकटिया-बरौनी पाइपलाइन
(B) मुंद्रा-पानीपत पाइपलाइन
(C) सलाया-मथुरा पाइपलाइन
(D) मुंबई हाई-उरण पाइपलाइन

73. प्रमुख बंदरगाह ट्रस्ट अधिनियम / प्रमुख बंदरगाह प्राधिकरण अधिनियम द्वारा विनियमित प्रमुख बंदरगाहों के रूप में उनकी स्थिति के आधार पर निम्नलिखित में से बेमेल को पहचानिए:
(A) जवाहरलाल नेहरू पोर्ट (JNPT)
(B) कामराजार पोर्ट (एन्नौर)
(C) पीपावाव पोर्ट
(D) न्यू मंगलोर पोर्ट

Downloaded from www.pdf.tube

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs,
you are wasting valuable time.

Research shows that learning from
PRINTED BOOKS has up to
4× HIGHER RETENTION
than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS**
move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND**
in competition.

In competitive exams,
being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

स्टील कंपनी (इस्को) सभी मुख्य रूप से लोहा और इस्पात उत्पादन क्षेत्र के सार्वजनिक उपक्रम हैं। इसलिए भेल का औद्योगिक क्षेत्र अलग है।

81. (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
भारत के 'महारत्न' सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यम अलग-अलग क्षेत्रों से संबंधित हैं। तेल और प्राकृतिक गैस निगम (ONGC) मुख्य रूप से कच्चे तेल और प्राकृतिक गैस अन्वेषण में कार्यरत है। एनटीपीसी (NTPC) देश की सबसे बड़ी बिजली उत्पादन कंपनी है। स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड (SAIL) लोहा और इस्पात निर्माण का कार्य करती है। भारतीय गैस प्राधिकरण लिमिटेड (GAIL) प्राकृतिक गैस के प्रसंस्करण, परिवहन और वितरण में अग्रणी है।

82. (D) सिडबी (SIDBI)
भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (सिडबी) भारत में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम क्षेत्र के संवर्धन, वित्तपोषण और विकास के लिए समर्पित शीर्ष वित्तीय संस्थान है। 1990 में स्थापित यह बैंक छोटे व्यवसायों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष ऋण सुविधाएं प्रदान करता है। सिडबी एमएसएमई क्षेत्र की वित्तीय जरूरतों को पूरा करने, प्रौद्योगिकी उन्नयन को सुगम बनाने और इस क्षेत्र को अधिक प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए विभिन्न योजनाएं संचालित करता है।

83. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
सूती वस्त्र उद्योग अब केवल कपास उत्पादक क्षेत्रों तक सीमित नहीं है, बल्कि देश भर में फैल गया है। इसका कारण यह है कि कपास एक 'शुद्ध' कच्चा माल है जिसका वजन कताई और बुनाई के दौरान कम नहीं होता है। इसके अतिरिक्त, देश भर में बिजली की व्यापक उपलब्धता और सस्ते परिवहन के कारण नई कपड़ा मिलें अब कच्चे माल के स्रोतों के स्थान पर प्रमुख उपभोक्ता बाजारों के पास स्थापित हो रही हैं।

84. (C) हुगली औद्योगिक क्षेत्र
पश्चिम बंगाल का हुगली औद्योगिक क्षेत्र पारंपरिक रूप से जूट मिलों, भारी इंजीनियरिंग और मशीनरी निर्माण के उच्च संकेंद्रण के लिए जाना जाता है। हालांकि, विभाजन के बाद कच्चे माल की कमी, पुरानी तकनीक, श्रम अशांति और बुनियादी ढाँचे की कमियों के कारण यह क्षेत्र लंबे समय तक औद्योगिक रुग्णता से जूझता रहा। वर्तमान में इस क्षेत्र के आधुनिकीकरण और पुनरुद्धार के लिए विविध औद्योगिक गतिविधियों को बढ़ावा दिया जा रहा है।

85. (B) केवल II और III
भारत में उर्वरक उद्योग प्राकृतिक गैस और नेफ्था पाइपलाइनों तथा तेल शोधनागारों के पास स्थित है क्योंकि यूरिया उत्पादन के लिए प्राकृतिक गैस मुख्य कच्चा माल है। यह कहना गलत है कि भारत पोटाशिक उर्वरकों में आत्मनिर्भर है; वास्तव में, भारत अपने पोटाश उर्वरक की 100% आवश्यकता के लिए पूरी तरह से विदेशों से आयात पर निर्भर है, जबकि नाइट्रोजनयुक्त उर्वरक उत्पादन में भारत काफी हद तक आत्मनिर्भर है।

86. (A) III, II, I
सीमेंट उत्पादन और स्थापित क्षमता के संदर्भ में प्रमुख भारतीय राज्यों का घटता क्रम है: राजस्थान, आंध्र प्रदेश और मध्य प्रदेश। राजस्थान प्रचुर मात्रा में उच्च गुणवत्ता वाले चूना पत्थर के भंडारों के कारण सीमेंट उत्पादन क्षमता में देश में शीर्ष स्थान पर है। इसके बाद आंध्र प्रदेश और मध्य प्रदेश का स्थान आता है। सीमेंट उद्योग भारी और भार-ह्रास वाले कच्चे माल पर निर्भर होने के कारण चूना पत्थर खदानों के पास स्थित होता है।

NODIA

87. (B) उपभोक्ता द्वारा उपयोग के बाद के निपटान सहित, उत्पादों के संपूर्ण जीवन-चक्र के दौरान उनके पर्यावरणीय प्रभाव का प्रबंधन करना।
'विस्तारित उत्पादक उत्तरदायित्व' एक पर्यावरणीय नीतिगत दृष्टिकोण है जो निर्माताओं पर उनके द्वारा बाजार में बेचे गए उत्पादों के जीवन-चक्र के अंत तक का प्रबंधन करने का कानूनी और वित्तीय दायित्व डालता है। इसके तहत ब्रांड मालिकों और निर्माताओं को उपयोग के बाद प्लास्टिक कचरे, ई-कचरे और अन्य अपशिष्टों को वापस एकत्र करने, पुनर्चक्रित करने या सुरक्षित रूप से निपटाने का प्रबंध करना होता है, ताकि पर्यावरण को क्षति न पहुंचे।

88. (D) I, II, III, और IV
'मेक इन इंडिया 2.0' कार्य योजना के तहत विनिर्माण और सेवा क्षेत्रों के अंतर्गत कई महत्वपूर्ण क्षेत्रों को ध्यान केंद्रित करने के लिए चुना गया है। इनमें अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी, नवीकरणीय ऊर्जा, जैव प्रौद्योगिकी तथा खनन और खनिज निष्कर्षण क्षेत्र स्पष्ट रूप से शामिल हैं। इन सभी क्षेत्रों का उद्देश्य भारत को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाना, उच्च मूल्य संवर्धन प्राप्त करना और उन्नत प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देना है।

89. (D) किसी मौजूदा औद्योगिक सुविधा का उन्नयन, विस्तार या संशोधन करना।
औद्योगिक निवेश में 'ब्राउनफील्ड' परियोजना का अर्थ किसी पूर्व-मौजूदा व्यावसायिक या औद्योगिक सुविधा में निवेश करने से है। इसमें किसी स्थापित कारखाने, संयंत्र या बुनियादी ढाँचे का विस्तार, पुनरुद्धार, आधुनिकीकरण या संशोधन शामिल होता है। इसमें पूरी तरह से नई भूमि पर शून्य से निर्माण करने के बजाय मौजूदा भूमि, भवनों और बुनियादी ढांचे का उपयोग किया जाता है, जिससे शुरुआती निर्माण समय और मंजूरी की लागत कम हो जाती है।

90. (A) II, III, I, IV
भारतीय औद्योगिक इतिहास की इन घटनाओं का सही कालानुक्रमिक क्रम इस प्रकार है: सबसे पहले जुलाई 1991 में नई औद्योगिक नीति लागू की गई। इसके बाद मई 2005 में विशेष आर्थिक क्षेत्र अधिनियम पारित हुआ। सितंबर 2014 में 'मेक इन इंडिया' पहल का शुभारंभ किया गया। अंत में, सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों के पंजीकरण को सरल बनाने के लिए जुलाई 2020 में 'उद्यम पंजीकरण पोर्टल' का शुभारंभ किया गया। अतः सही क्रम II, III, I, IV है।

हथकरघा और कोयर (नारियल जटा) जैसे पारंपरिक उद्योगों और कारीगरों को क्लस्टरों में संगठित करना है। यह योजना इन पारंपरिक कारीगरों को आधुनिक उपकरण, कौशल विकास, बेहतर डिजाइन और बाजार पहुंच प्रदान करके प्रतिस्पर्धी बनाती है।

71. (B) खुशखेड़ा-भिवाड़ी-नीमराना नोड, पीथमपुर-धार-महू नोड, दिघी पोर्ट नोड
दिल्ली-मुंबई औद्योगिक गलियारा उत्तर से दक्षिण दिशा की ओर कई प्रमुख औद्योगिक नोड्स को जोड़ता है। भौगोलिक स्थिति के अनुसार इनका सही क्रम है: सबसे उत्तर में राजस्थान का खुशखेड़ा-भिवाड़ी-नीमराना नोड स्थित है, इसके बाद मध्य प्रदेश का पीथमपुर-धार-महू नोड आता है, और सबसे दक्षिण में महाराष्ट्र के तटीय क्षेत्र में स्थित दिघी पोर्ट इंडस्ट्रियल नोड आता है। यह संरेखण माल परिवहन को अत्यधिक सुगम बनाता है।

72. (A) I, II, और IV
भारतीय सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम क्षेत्र को कई प्रमुख बाधाओं का सामना करना पड़ता है। इनमें समय पर और पर्याप्त औपचारिक बैंक ऋण की कमी, पुरानी तकनीक पर अत्यधिक निर्भरता, तथा वैश्विक बाजारों और आधुनिक विपणन नेटवर्क तक सीमित पहुंच शामिल हैं। यह कहना गलत है कि उनके पास विनियामक बोझ नहीं है; वास्तव में, अत्यधिक कागजी कार्रवाई और अनुपालन का बोझ छोटे व्यवसायों के विकास में एक बड़ी रुकावट बना रहता है।

73. (D) राष्ट्रीय औद्योगिक गलियारा विकास निगम (NICDC)
भारत में औद्योगिक गलियारा कार्यक्रमों के विकास, समन्वय और कार्यान्वयन के लिए जिम्मेदार शीर्ष नोडल एजेंसी राष्ट्रीय औद्योगिक गलियारा विकास निगम (NICDC) है। यह एजेंसी दिल्ली-मुंबई, अमृतसर-कोलकाता और चेन्नई-बेंगलुरु जैसे विभिन्न औद्योगिक गलियारों के तहत स्मार्ट औद्योगिक शहरों और बुनियादी ढांचा परियोजनाओं की योजना बनाती है तथा उन्हें लागू करती है। इसका उद्देश्य देश में विश्वस्तरीय औद्योगिक अवसंरचना का निर्माण करना है।

74. (A) अलीगढ़ - पेट्रोकेमिकल्स
उत्तर प्रदेश का अलीगढ़ शहर विश्व प्रसिद्ध ताला निर्माण और हार्डवेयर उद्योग के लिए जाना जाता है, न कि पेट्रोकेमिकल्स के लिए। इसके विपरीत, गुजरात का सूरत शहर हीरा तराशने, पॉलिश करने और सिंथेटिक वस्त्रों का वैश्विक केंद्र है। मुरादाबाद को उत्कृष्ट पीतल के बर्तनों और हस्तशिल्प के लिए 'पीतल नगरी' कहा जाता है। पंजाब का लुधियाना शहर होजरी, ऊनी कपड़े और साइकिल निर्माण उद्योग का प्रमुख केंद्र है।

75. (B) तमिलनाडु
तमिलनाडु भारत में इलेक्ट्रॉनिक्स वस्तुओं का सबसे बड़ा उत्पादक और निर्यातक राज्य बन गया है। श्रीपेरंबदूर और चेय्यार जैसे प्रमुख औद्योगिक क्षेत्रों में फॉक्सकॉन, पेगाट्रॉन और सालाकंपस जैसी वैश्विक अनुबंध निर्माण दिग्गज कंपनियों के विशाल विनिर्माण परिसर स्थित हैं। ये संयंत्र विश्वप्रसिद्ध स्मार्टफोन ब्रांडों और इलेक्ट्रॉनिक घटकों का बड़े पैमाने पर उत्पादन और वैश्विक निर्यात करते हैं, जिससे तमिलनाडु इस क्षेत्र में अग्रणी राज्य बना हुआ है।

76. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
भारत की औद्योगिक नीतियों का ऐतिहासिक महत्व है। 1948 के औद्योगिक नीति संकल्प ने मिश्रित अर्थव्यवस्था का मॉडल तैयार किया। 1956 के संकल्प ने सार्वजनिक क्षेत्र का विस्तार किया और इसे 'भारत का आर्थिक संविधान' कहा गया। 1969 का एमआरटीपी अधिनियम बड़े घरानों में आर्थिक शक्ति के संकेंद्रण को रोकने हेतु लागू हुआ। 1991 की नई औद्योगिक नीति ने लाइसेंसिंग व्यवस्था को समाप्त कर अर्थव्यवस्था का उदारीकरण किया।

77. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
एल्युमीनियम प्रगलन एक अत्यधिक ऊर्जा-गहन प्रक्रिया है, जिसमें विद्युत अपघटन द्वारा एल्युमिना से एल्युमीनियम धातु को पृथक किया जाता है। एक टन एल्युमीनियम के उत्पादन में लगभग 18,000 से 20,000 किलोवाट-घंटे बिजली की खपत होती है। इसलिए, उत्पादन लागत को कम रखने के लिए एल्युमीनियम संयंत्र हमेशा प्रचुर, सस्ती और निर्बाध बिजली आपूर्ति के स्रोतों, जैसे तापीय या जलविद्युत संयंत्रों के निकट ही स्थापित किए जाते हैं।

78. (C) किसी निकटवर्ती क्षेत्र में एक साथ स्थित होने से फर्मों को प्राप्त होने वाले लागत लाभ।
'समूह अर्थव्यवस्थाएं' उस आर्थिक और लागत लाभ को संदर्भित करती हैं जो विभिन्न फर्मों, उद्योगों और आपूर्तिकर्ताओं के एक ही स्थान या क्षेत्र में संकेंद्रित होने से प्राप्त होते हैं। पास-पास स्थित होने से कंपनियों को कुशल श्रम, बुनियादी ढांचे, परिवहन नेटवर्क और बाजार की जानकारी आसानी से साझा करने का अवसर मिलता है। इससे परिचालन और उत्पादन लागत घटती है तथा उद्योगों की ओवरऑल कार्यकुशलता में सुधार होता है।

79. (D) प्रायद्वीपीय भारत की जलवायु उच्च सुक्रोज उपज और लंबी पेराई अवधि प्रदान करती है।
चीनी उद्योग का उत्तर भारत से प्रायद्वीपीय भारत (विशेषकर महाराष्ट्र और कर्नाटक) की ओर स्थानांतरण का मुख्य कारण प्रायद्वीपीय भारत की समुद्री आर्द्र जलवायु है। यहाँ उगाए जाने वाले गन्ने में सुक्रोज की मात्रा अधिक होती है, जिससे चीनी का निष्कर्षण अधिक होता है। इसके अलावा, यहाँ पेराई का मौसम उत्तर भारत की तुलना में काफी लंबा होता है। प्रायद्वीप में सहकारी चीनी मिलों का बेहतर प्रबंधन भी एक अन्य कारक है।

80. (C) भेल (BHEL)
भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड (भेल) अन्य तीनों से भिन्न है क्योंकि यह भारी विद्युत उपकरण, बिजली संयंत्र घटकों और इंजीनियरिंग निर्माण क्षेत्र में कार्य करता है। इसके विपरीत, स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड (सेल), राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड (आरआईएनएल), और इंडियन आयरन एंड

Click Here to Buy book on Flipkart

10. केंद्र सरकार की उड़ान (UDAN - उड़े देश का आम नागरिक) योजना के तहत परिचालन शुरू करने वाला राजस्थान का पहला हवाई अड्डा कौन-सा था?
(A) महाराणा प्रताप हवाई अड्डा, उदयपुर
(B) नाल हवाई अड्डा, बीकानेर
(C) जोधपुर सिविल हवाई अड्डा
(D) किशनगढ़ हवाई अड्डा, अजमेर

11. उड़ान (UDAN) योजना के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(A) हवाई किराया पूरी तरह से बाजार-संचालित है और किसी भी सीट पर कोई मूल्य सीमा नहीं है
(B) इसका उद्देश्य असंपर्कित और अल्प-सेवित हवाई अड्डों में क्षेत्रीय हवाई संपर्क में सुधार करना है
(C) इस योजना में भाग लेने वाली एयरलाइंस को व्यवहार्यता अंतर वित्तपोषण (VGF) प्रदान किया जाता है
(D) इस योजना में केंद्र और राज्य दोनों सरकारों का वित्तीय योगदान शामिल है

12. वर्तमान नागरिक उड्डयन वर्गीकरण के अनुसार, राजस्थान में कितने संचालित अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे हैं?
(A) एक
(B) दो
(C) तीन
(D) चार

13. भारत की परिवहन अवसंरचना परियोजनाओं में व्यवहार्यता अंतर वित्तपोषण (VGF) तंत्र का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?
(A) गैर-व्यावसायिक समाज कल्याण अवसंरचना परियोजनाओं के लिए कुल पूंजीगत व्यय को कवर करना
(B) आर्थिक रूप से व्यावहारिक लेकिन वित्तीय रूप से अव्यावहारिक पीपीपी परियोजनाओं के लिए अनुदान निधि प्रदान करना
(C) प्रशासनिक और भूमि अधिग्रहण परियोजना व्यय के लिए राज्य सरकारों की प्रतिपूर्ति करना
(D) राज्य परिवहन उपक्रमों के परिचालन और रखरखाव व्यय को सब्सिडी देना

14. भारत में अंतर्देशीय जलमार्गों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण (IWAI) का गठन 1986 में किया गया था।
II. राष्ट्रीय जलमार्ग 1 (NW-1) ब्रह्मपुत्र नदी पर स्थित है।
III. राष्ट्रीय जलमार्ग 2 (NW-2) सदिया को धुबरी से जोड़ता है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल I और III
(C) केवल II और III
(D) I, II और III

15. भारत की पहली अंतर-राज्यीय गैस पाइपलाइन, हजीरा-विजयपुर-जगदीशपुर (HVJ) पाइपलाइन, राजस्थान के निम्नलिखित में से किस जिले से होकर गुजरती है?
(A) जैसलमेर और बाड़मेर
(B) जयपुर और अजमेर
(C) कोटा और बारां
(D) बीकानेर और चूरू

16. जामनगर-लोनी एलपीजी पाइपलाइन नेटवर्क राजस्थान राज्य से होकर गुजरता है। सड़क परिवहन की तुलना में पाइपलाइन के माध्यम से एलपीजी के परिवहन का प्राथमिक लाभ निम्नलिखित में से कौन-सा है?
(A) इसके निर्माण के दौरान काफी कम शुरुआती पूंजीगत व्यय की आवश्यकता होती है
(B) यह स्थानीय बॉटलिंग सुविधाओं के संचालन की आवश्यकता को पूरी तरह से समाप्त कर देता है
(C) यह परिवहन के दौरान गतिशील मार्ग परिवर्तनों के लिए अधिक लचीलापन प्रदान करता है
(D) यह थोक परिवहन का एक सुरक्षित, निरंतर और किफायती साधन प्रदान करता है

17. भारतमाला परियोजना के तहत विकसित अमृतसर-जामनगर एक्सप्रेसवे राजस्थान के कई जिलों से होकर गुजरता है। निम्नलिखित में से कौन-सा उन जिलों में शामिल नहीं है?
(A) श्रीगंगानगर
(B) बीकानेर
(C) उदयपुर
(D) बाड़मेर

18. बाड़मेर-सलाया पाइपलाइन के माध्यम से मुख्य रूप से किस वस्तु का परिवहन किया जाता है?
(A) तरलीकृत पेट्रोलियम गैस (LPG)
(B) कच्चा तेल
(C) प्राकृतिक गैस
(D) विमानन टरबाइन ईंधन (ATF)

19. भारत के पश्चिमी तट पर स्थित निम्नलिखित प्रमुख बंदरगाहों का उत्तर से दक्षिण की ओर सही भौगोलिक क्रम चुनिए:
(A) कांडला, मुंबई, मंगलुरु, कोच्चि
(B) मुंबई, कांडला, कोच्चि, मंगलुरु
(C) कांडला, मंगलुरु, मुंबई, कोच्चि
(D) कोच्चि, मंगलुरु, मुंबई, कांडला

20. सागरमाला परियोजना का मुख्य रणनीतिक उद्देश्य क्या है?
(A) बंदरगाह-आधारित विकास को बढ़ावा देना और देश में समग्र लॉजिस्टिक्स लागत को कम करना
(B) तटीय राज्यों में सभी प्रमुख प्रायद्वीपीय नदी बेसिनों को आपस में जोड़ना
(C) भारत के गहरे समुद्र में वाणिज्यिक मत्स्यन बेड़े का पूरी तरह से आधुनिकीकरण करना और सब्सिडी देना
(D) सैन्य तैनाती के लिए एक उच्च गति वाले तटीय ट्रंक राजमार्ग का निर्माण करना

Downloaded from www.pdf.tube

हुई है

43. जयपुर स्थित एक व्यवसाय को 24 घंटे के भीतर यूरोपीय बाजारों में अति-शीघ्र नष्ट होने वाले कृषि उत्पादों का निर्यात करने की आवश्यकता है। बहु-मॉडल परिवहन का कौन-सा संयोजन सबसे उपयुक्त व्यावहारिक विकल्प है?
(A) दिल्ली अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के लिए प्रशीतित ट्रक, फिर एयर कार्गो
(B) जयपुर से मुंबई बंदरगाह तक प्रशीतित ट्रक, फिर समुद्री नौवहन
(C) कांडला के लिए समर्पित मालवहन गलियारा ट्रेन, फिर तटीय नौवहन
(D) कोलकाता के लिए अंतर्देशीय जलमार्ग, फिर एयर कार्गो

44. राजस्थान के निम्नलिखित रोपवे को उनकी स्थापना के कालानुक्रम के अनुसार व्यवस्थित कीजिए (प्राचीनतम से नवीनतम):
1. सुंधा माता रोपवे, जालौर
2. मंशापूर्णा करणी माता रोपवे, उदयपुर
3. सावित्री माता रोपवे, पुष्कर
4. सामोद हनुमानजी रोपवे, जयपुर

सही क्रम चुनिए:
(A) 1, 2, 3, 4
(B) 2, 1, 3, 4
(C) 1, 3, 2, 4
(D) 4, 3, 2, 1

45. उत्तर में श्रीनगर से दक्षिण में कन्याकुमारी तक जाने वाला निम्नलिखित में से कौन-सा वर्तमान में भारत का सबसे लंबा राष्ट्रीय राजमार्ग है?
(A) NH 27
(B) NH 44
(C) NH 48
(D) NH 52

46. पुरानी संख्यांकन प्रणाली के तहत, राष्ट्रीय राजमार्ग 15 (NH 15) राजस्थान के लिए रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण था क्योंकि यह:
(A) थार मरुस्थल में भारत-पाक सीमा के समानांतर चलता था
(B) जयपुर को सीधे मुंबई बंदरगाह सुविधाओं से जोड़ने वाले प्राथमिक औद्योगिक गलियारे के रूप में कार्य करता था
(C) अरावली पर्वत के सभी रणनीतिक दर्रों को पार करने वाले एकमात्र उच्च ऊँचाई वाले राजमार्ग के रूप में कार्य करता था
(D) राजस्थान के भीतर सभी प्रमुख शहरी झील प्रणालियों और विरासत पर्यटक परिपथों को आपस में जोड़ता था

47. स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(A) यह चार प्रमुख महानगरों: दिल्ली, मुंबई, चेन्नई और कोलकाता को जोड़ता है
(B) यह भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (NHAI) द्वारा प्रबंधित किया जाता है
(C) स्वर्णिम चतुर्भुज नेटवर्क की कुल लंबाई ठीक 12,500 किमी है
(D) इसका एक महत्वपूर्ण भाग राजस्थान राज्य से होकर गुजरता है

NODIA

48. भारत में राष्ट्रीय राजमार्गों के विकास, रखरखाव और प्रबंधन के लिए मुख्य रूप से कौन-सा वैधानिक निकाय उत्तरदायी है?
(A) सीमा सड़क संगठन (BRO)
(B) केंद्रीय लोक निर्माण विभाग (CPWD)
(C) राष्ट्रीय परिवहन विकास परिषद (NTDC)
(D) भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (NHAI)

49. प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना (PMGSY) के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा प्रशासित है।
II. यह योजना सख्ती से मौजूदा राष्ट्रीय राजमार्गों की मरम्मत और रखरखाव को कवर करती है।
III. राजस्थान में PMGSY के कार्यान्वयन के लिए निधि साझा करने का पैटर्न सामान्यतः केंद्र और राज्य के बीच 60:40 है।
IV. यह ग्रामीण सड़कों के नियोजन के लिए कोर नेटवर्क दृष्टिकोण का उपयोग करता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल I, III और IV
(C) केवल II, III और IV
(D) I, II, III और IV

50. राजस्थान राज्य सड़क परिवहन निगम (RSRTC) की स्थापना सड़क परिवहन निगम अधिनियम, 1950 के तहत किस वर्ष की गई थी?
(A) 1956
(B) 1964
(C) 1972
(D) 1984

51. भारत के संवैधानिक और प्रशासनिक ढांचे में, राज्य राजमार्गों के विकास और रखरखाव का उत्तरदायित्व सामान्यतः किस पर होता है?
(A) केंद्रीय स्तर पर कार्यरत केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय
(B) केंद्रीय क्षेत्राधिकार के तहत स्वायत्त भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण
(C) स्थानीय जिला पंचायतें और ग्रामीण स्थानीय स्वशासन संस्थाएं
(D) संबंधित राज्य सरकार का लोक निर्माण विभाग (PWD)

52. राजस्थान में 'मेगा हाईवे प्रोजेक्ट' को प्रमुख राज्य मार्गों को दो-लेन, टोल-आधारित सड़कों में बदलने के लिए सफलतापूर्वक

राष्ट्रीयकरण और सुदृढ़ीकरण करना
(B) सभी वाणिज्यिक लॉजिस्टिक्स में इलेक्ट्रिक वाहनों की विशेष तैनाती को अनिवार्य करना
(C) भारत में राष्ट्रीय लॉजिस्टिक्स लागत को वैश्विक मानक स्तरों के अनुरूप कम करना
(D) सभी लंबी दूरी के राष्ट्रीय माल यातायात को सड़क मार्ग से हटाकर जबरन रेल मार्ग पर स्थानांतरित करना

34. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A) : भारत में, रेल परिवहन की तुलना में माल और यात्री आवाजाही में सड़क परिवहन का हिस्सा अधिक है।
कारण (R) : सड़क परिवहन द्वार-से-द्वार सेवा और मार्ग चयन में लचीलापन प्रदान करता है जो रेलवे स्वाभाविक रूप से प्रदान नहीं कर सकता।
उपर्युक्त कथनों के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
(A) (A) और (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है
(B) (A) और (R) दोनों सही हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है
(C) (A) सही है लेकिन (R) गलत है
(D) (A) गलत है लेकिन (R) सही है

35. निम्नलिखित में से कौन-सा राजस्थान में स्थापित पहला यात्री रोपवे है?
(A) मंशापूर्णा करणी माता रोपवे, उदयपुर
(B) सावित्री माता रोपवे, पुष्कर
(C) सामोद हनुमानजी रोपवे, जयपुर
(D) सुंधा माता रोपवे, जालौर

36. भारत सरकार की 'पर्वतमाला परियोजना' विशेष रूप से किस प्रकार के परिवहन अवसंरचना के विकास के लिए तैयार की गई है?
(A) राष्ट्रीय रोपवे
(B) अत्यधिक ऊँचाई वाली सुरंगें
(C) पर्वतीय रेलवे
(D) सीमावर्ती राजमार्ग

37. मोटर वाहन (संशोधन) अधिनियम, 2019 ने 'गुड समैरिटन' (नेक व्यक्ति) के लिए वैधानिक संरक्षण प्रदान किया। निम्नलिखित में से कौन इस संदर्भ में एक 'गुड समैरिटन' को सबसे अच्छी तरह परिभाषित करता है?
(A) आपातकालीन दुर्घटना स्थल पर यातायात नियंत्रण का प्रबंधन करने वाला अधिकृत यातायात प्रवर्तन अधिकारी
(B) किसी सरकारी अस्पताल के आपातकालीन विभाग में आधिकारिक ड्यूटी पर तैनात एक पंजीकृत चिकित्सा अधिकारी
(C) बिना किसी पुरस्कार या प्रतिफल की आशा के सड़क दुर्घटना पीड़ित को स्वेच्छा से तत्काल आपातकालीन सहायता प्रदान करने वाला व्यक्ति
(D) दुर्घटना दावे के निपटान में जीवित परिवार के सदस्यों की सहायता करने वाला एक लाइसेंस प्राप्त बीमा प्रतिनिधि

38. वैश्विक स्तर पर आधुनिक सड़क सुरक्षा रणनीतियाँ '4 E' पर आधारित हैं। निम्नलिखित में से कौन-सा सड़क सुरक्षा के मानक '4 E' में शामिल नहीं है?
(A) इकॉनमी
(B) एजुकेशन
(C) एनफोर्समेंट
(D) इंजीनियरिंग

39. भारतीय सड़क निर्माण में सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP) मॉडलों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. बिल्ड-ऑपरेट-ट्रांसफर (BOT) टोल मॉडल में, निजी डेवलपर यातायात और राजस्व का जोखिम उठाता है।
II. इंजीनियरिंग, प्रोक्योरमेंट एंड कंस्ट्रक्शन (EPC) मॉडल में, सरकार परियोजना को पूरी तरह से वित्तपोषित करती है।
III. हाइब्रिड वार्षिकी मॉडल (HAM) में निजी डेवलपर को अग्रिम रूप से परियोजना का 100% वित्तपोषण करना होता है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

40. राष्ट्रीय लॉजिस्टिक्स नीति (NLP) के तहत, भारत सरकार का लक्ष्य 2030 तक जीडीपी के प्रतिशत के रूप में लॉजिस्टिक्स लागत को किस स्तर तक कम करना है?
(A) जीडीपी के 2% से 3% के बीच
(B) एकल अंक (लगभग 8-9%)
(C) जीडीपी के 15% से 16% के बीच
(D) ठीक शून्य प्रतिशत

41. राष्ट्रीय लॉजिस्टिक्स नीति के तहत एक प्रमुख डिजिटल पहल ULIP है। ULIP का पूर्ण रूप क्या है?
(A) यूनिवर्सल लॉजिस्टिक्स इंफॉर्मेशन पोर्टल
(B) यूनाइटेड लैंड एंड इनलैंड पोर्ट्स
(C) यूनिफाइड लॉजिस्टिक्स इंटरफेस प्लेटफॉर्म
(D) अनइंटरप्टेड लॉजिस्टिक्स इंटरमॉडल पाथवे

42. पिछले कुछ दशकों में, देश के कुल माल यातायात में भारतीय रेलवे की हिस्सेदारी में निम्नलिखित में से कौन-सी प्रवृत्ति देखी गई है?
(A) इसमें लगातार और नाटकीय रूप से वृद्धि हुई है, जिससे घरेलू सड़क परिवहन पर इसका प्रभुत्व बढ़ा है
(B) यह 1990 के बाद से सभी प्रमुख क्षेत्रों में पूरी तरह से अपरिवर्तित और स्थिर रहा है
(C) यह पूरी तरह से ध्वस्त हो गया है, जो कुल राष्ट्रीय माल ढुलाई के पांच प्रतिशत से भी कम हो गया है
(D) समय के साथ इसमें लगातार गिरावट आई है, और सड़क परिवहन की तुलना में माल बाजार की हिस्सेदारी कम

Click Here to Buy book on Amazon

अध्याय 09
भारत का परिवहन

NODIA

1. कौन-सा राष्ट्रीय राजमार्ग दिल्ली और मुंबई को जोड़ता है, जो व्यापक रूप से राजस्थान से होकर गुजरता है तथा स्वर्णिम चतुर्भुज का एक महत्वपूर्ण भाग बनाता है?
(A) NH 27 (B) NH 52
(C) NH 48 (D) NH 44

2. राजस्थान सड़क अवसंरचना विकास कंपनी (RIDCOR) की स्थापना मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किस उद्देश्य के लिए की गई थी?
(A) PMGSY के तहत ग्रामीण सड़कों का निर्माण करने के लिए
(B) राज्य में मेगा राजमार्ग परियोजना को लागू करने के लिए
(C) जयपुर मेट्रो का प्रबंधन और संचालन करने के लिए
(D) राष्ट्रीय राजमार्गों के विकास की देखरेख करने के लिए

3. नई राष्ट्रीय राजमार्ग संख्यांकन प्रणाली के तहत, सम संख्या वाले राजमार्ग सामान्यतः निम्नलिखित में से किस भौगोलिक दिशा-विन्यास को दर्शाते हैं?
(A) उत्तर-दक्षिण संरेखण
(B) पूर्व-पश्चिम संरेखण
(C) प्रमुख बंदरगाहों को जोड़ने वाला विकर्ण संरेखण
(D) महानगरों के चारों ओर वृत्ताकार वलय मार्ग

4. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए।
सूची I : प्रमुख बंदरगाह
P. कांडला
Q. मोर्मूगाओ
R. पारादीप
S. एन्नौर
सूची II : राज्य
1. तमिलनाडु
2. गुजरात
3. गोवा
4. ओडिशा
(A) P-2, Q-3, R-4, S-1
(B) P-3, Q-2, R-1, S-4
(C) P-2, Q-4, R-3, S-1
(D) P-1, Q-3, R-4, S-2

5. उत्तर पश्चिम रेलवे (NWR) जोन का मुख्यालय, जो राजस्थान में रेलवे नेटवर्क के अधिकांश हिस्से को आच्छादित करता है, किस शहर में स्थित है?
(A) जोधपुर
(B) बीकानेर
(C) जयपुर
(D) अजमेर

6. पश्चिमी समर्पित मालवहन गलियारे (WDFC) का लगभग कितना प्रतिशत हिस्सा राजस्थान राज्य से होकर गुजरता है, जो इसे औद्योगिक विकास का एक महत्वपूर्ण केंद्र बनाता है?
(A) 15%
(B) 25%
(C) 39%
(D) 55%

7. निम्नलिखित में से किस रेलवे जोन का राजस्थान राज्य के भीतर कोई क्षेत्रीय क्षेत्राधिकार नहीं है?
(A) उत्तर पश्चिम रेलवे
(B) पश्चिम मध्य रेलवे
(C) पश्चिम रेलवे
(D) दक्षिण मध्य रेलवे

8. भारतीय अर्थव्यवस्था के संदर्भ में, भारतीय रेलवे द्वारा ढोए जाने वाले कुल राजस्व-अर्जित माल यातायात में निम्नलिखित में से किस वस्तु की हिस्सेदारी सर्वाधिक है?
(A) खाद्यान्न
(B) कोयला
(C) लौह अयस्क
(D) सीमेंट

9. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A) : पश्चिमी समर्पित मालवहन गलियारे से राजस्थान के औद्योगीकरण को महत्वपूर्ण बढ़ावा मिलने की उम्मीद है।
कारण (R) : यह गलियारा राज्य के भीतर अपने विस्तृत मार्ग के साथ लॉजिस्टिक्स पार्क और औद्योगिक नोड्स के निर्माण को सक्षम बनाएगा।
उपर्युक्त कथनों के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
(A) (A) और (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है
(B) (A) और (R) दोनों सही हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है
(C) (A) सही है लेकिन (R) गलत है
(D) (A) गलत है लेकिन (R) सही है

लागू किया गया था। इसके लिए प्राथमिक नोडल एजेंसी कौन-सी थी?
(A) RIDCOR
(B) RSRTC
(C) NHAI
(D) RUDF

53. निर्बाध परिवहन सुनिश्चित करने के लिए भारतीय टोल प्लाजा पर अनिवार्य रूप से लागू की गई फास्टैग प्रणाली निम्नलिखित में से किस तकनीक का उपयोग करके कार्य करती है?
(A) ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम (जीपीएस) सैटेलाइट ट्रैकिंग
(B) नियर फील्ड कम्युनिकेशन (एनएफसी) संपर्क रहित तकनीक
(C) रेडियो फ्रीक्वेंसी आइडेंटिफिकेशन (आरएफआईडी)
(D) ब्लूटूथ लो एनर्जी शॉर्ट-रेंज वायरलेस

54. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए।
सूची I : रेलवे जोन
P. पश्चिम मध्य रेलवे
Q. दक्षिण पश्चिम रेलवे
R. पूर्व तट रेलवे
S. उत्तर पश्चिम रेलवे
सूची II : मुख्यालय
1. हुब्बल्ली
2. भुवनेश्वर
3. जयपुर
4. जबलपुर
(A) P-4, Q-1, R-2, S-3
(B) P-3, Q-1, R-2, S-4
(C) P-4, Q-2, R-1, S-3
(D) P-1, Q-4, R-3, S-2

55. पूर्वी समर्पित मालवहन गलियारा (EDFC) मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किस अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थान द्वारा वित्तपोषित है?
(A) एशियाई विकास बैंक (ADB)
(B) जापान इंटरनेशनल कोऑपरेशन एजेंसी (JICA)
(C) न्यू डेवलपमेंट बैंक (NDB)
(D) विश्व बैंक

56. पश्चिमी समर्पित मालवहन गलियारा (WDFC), जो राजस्थान को अत्यधिक लाभ पहुंचाता है, अपनी प्राथमिक बाह्य फंडिंग किस एजेंसी से प्राप्त करता है?
(A) इंटरनेशनल बैंक फॉर रिकंस्ट्रक्शन एंड डेवलपमेंट (विश्व बैंक समूह)
(B) जापान इंटरनेशनल कोऑपरेशन एजेंसी (JICA)
(C) अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष वित्तीय सहायता ढांचा (IMF)
(D) एशियन इंफ्रास्ट्रक्चर इन्वेस्टमेंट बैंक बहुपक्षीय फंडिंग शाखा (AIIB)

57. पश्चिमी समर्पित मालवहन गलियारा किन दो प्राथमिक टर्मिनल नोड्स को जोड़ता है?
(A) लुधियाना अंतर्देशीय टर्मिनल और दानकुनी पूर्वी बंदरगाह नोड
(B) दिल्ली उत्तरी जंक्शन और चेन्नई दक्षिणी समुद्री हब
(C) दादरी और जवाहरलाल नेहरू पोर्ट ट्रस्ट (JNPT)
(D) अहमदाबाद औद्योगिक केंद्र और मुंबई तटीय टर्मिनल

58. आम जनता के लिए समर्पित मालवहन गलियारों (DFCs) को चालू करने का एक मुख्य परिचालन लाभ क्या है?
(A) समर्पित DFC रेल गलियारों पर विशेष रूप से अति-उच्च-गति वाली बुलेट ट्रेनों की तत्काल तैनाती
(B) सभी समानांतर राष्ट्रीय एक्सप्रेसवे पर टोल टैक्स की पूर्ण छूट और संरचनात्मक समाप्ति
(C) सभी वर्तमान फ्रेट रोलिंग स्टॉक का स्थायी पुनर्वर्गीकरण और यात्री डिब्बों में परिवर्तन
(D) यात्री ट्रेनों की आवृत्ति और समय की पाबंदी में सुधार के लिए मौजूदा पटरियों से भारी माल ढुलाई को हटाना

59. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A) : सड़क और रेल की तुलना में भारत में कुल माल आवाजाही में अंतर्देशीय जल परिवहन का हिस्सा बहुत कम है।
कारण (R) : भारत में अधिकांश प्रायद्वीपीय नदियां मौसमी हैं और उनमें जल स्तर में अत्यधिक उतार-चढ़ाव होता है, जिससे पूरे वर्ष नौवहन कठिन हो जाता है।
उपर्युक्त कथनों के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
(A) (A) और (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है
(B) (A) और (R) दोनों सही हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है
(C) (A) सही है लेकिन (R) गलत है
(D) (A) गलत है लेकिन (R) सही है

60. भारतमाला परियोजना के चरण-I के तहत विकास के लिए लक्षित सड़कों की लगभग कुल लंबाई कितनी है?
(A) 10,000 किमी
(B) 24,800 किमी
(C) 34,800 किमी
(D) 55,000 किमी

61. सागरमाला परियोजना प्रमुख बंदरगाहों के आधुनिकीकरण पर बल देती है। निम्नलिखित में से किसे केंद्र सरकार के क्षेत्राधिकार के तहत प्रमुख बंदरगाह के बजाय गैर-प्रमुख बंदरगाह (गौण बंदरगाह) के रूप में वर्गीकृत किया गया है?
(A) दीनदयाल बंदरगाह (कांडला)
(B) मुंद्रा बंदरगाह
(C) विशाखापटनम बंदरगाह
(D) श्यामा प्रसाद मुखर्जी बंदरगाह (कोलकाता)

62. भारतमाला परियोजना के तहत 'आर्थिक गलियारों' को विकसित करने का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?

Downloaded from www.pdf.tube

21. जयपुर मेट्रो चरण 1A राजस्थान में चालू होने वाली पहली मेट्रो लाइन थी। उसने शुरुआत में किन दो स्टेशनों को जोड़ा था?
(A) बड़ी चौपड़ से चांदपोल
(B) मानसरोवर से बड़ी चौपड़
(C) मानसरोवर से चांदपोल
(D) सिंधी कैंप से सीतापुरा

22. भारत में मेट्रो रेल नेटवर्क के संदर्भ में, निम्नलिखित में से किस शहर में वर्तमान में कोई संचालित मेट्रो रेल प्रणाली नहीं है?
(A) जोधपुर (B) लखनऊ
(C) कानपुर (D) कोच्चि

23. जयपुर मेट्रो सहित भारत में अधिकांश आधुनिक मेट्रो रेल प्रणालियाँ निम्नलिखित में से किस रेलवे गेज का उपयोग करके निर्मित की गई हैं?
(A) भारतीय ब्रॉड गेज
(B) मीटर गेज प्रणाली
(C) नैरो गेज प्रणाली
(D) मानक गेज

24. मुंबई-अहमदाबाद हाई-स्पीड रेल (MAHSR) परियोजना के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह भारत की पहली हाई-स्पीड रेल लाइन है जो वर्तमान में निर्माणाधीन है।
II. यह परियोजना जापानी शिंकनसेन तकनीक का उपयोग करती है।
III. यह मुख्य रूप से विश्व बैंक द्वारा वित्तपोषित है।
IV. इस ट्रेन के लिए नियोजित अधिकतम परिचालन गति 320 किमी/घंटा है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल II, III और IV
(C) केवल I, II और IV
(D) केवल I, III और IV

25. भारत में कुल माल आवाजाही (टन-किलोमीटर के संदर्भ में) में किस परिवहन साधन की हिस्सेदारी सर्वाधिक है?
(A) रेलवे (B) अंतर्देशीय जलमार्ग
(C) सड़क मार्ग (D) तटीय नौवहन

26. असंपर्कित गाँवों को बारहमासी सड़क संपर्क प्रदान करने के उद्देश्य से शुरू की गई प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना (PMGSY) किस वर्ष शुरू की गई थी?
(A) 1998 (B) 2000
(C) 2005 (D) 2014

27. PMGSY के मूल दिशानिर्देशों के तहत, मैदानी क्षेत्रों में किसी असंपर्कित बसावट को सड़क संपर्क के लिए पात्र होने हेतु न्यूनतम जनसंख्या मानदंड क्या था?
(A) 250 व्यक्ति
(B) 500 व्यक्ति
(C) 1000 व्यक्ति
(D) 2000 व्यक्ति

28. भारत के मुख्य राजमार्ग नेटवर्क वर्गीकरण के संदर्भ में निम्नलिखित में से किसे सामान्यतः 'बेमेल' माना जाता है?
(A) राष्ट्रीय राजमार्ग
(B) ग्रामीण पगडंडियाँ
(C) राज्य राजमार्ग
(D) मुख्य जिला सड़कें

29. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए।
सूची I : हवाई अड्डे
P. राजीव गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा
Q. वीर सावरकर अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा
R. डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा
S. लाल बहादुर शास्त्री अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा
सूची II : शहर
1. नागपुर
2. वाराणसी
3. हैदराबाद
4. पोर्ट ब्लेयर
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-3, Q-1, R-4, S-2
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

30. सीमा सड़क संगठन (BRO), जो भारत के सीमावर्ती क्षेत्रों में सड़क नेटवर्क का विकास और रखरखाव करता है, किस मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण के तहत कार्य करता है?
(A) रक्षा मंत्रालय
(B) गृह मंत्रालय
(C) सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय
(D) ग्रामीण विकास मंत्रालय

31. सीमा सड़क संगठन (BRO) द्वारा क्रियान्वित एक महत्वपूर्ण अवसंरचना विकास परियोजना 'प्रोजेक्ट चेतक', मुख्य रूप से किस राज्य में सीमावर्ती सड़कों के निर्माण एवं रखरखाव पर केंद्रित है?
(A) अरुणाचल प्रदेश (B) उत्तराखंड
(C) राजस्थान (D) सिक्किम

32. LEADS (विभिन्न राज्यों में लॉजिस्टिक्स सुगमता) सूचकांक, जो भारतीय राज्यों के लॉजिस्टिक्स अवसंरचना और सेवाओं का आकलन करता है, किस संस्था द्वारा प्रकाशित किया जाता है?
(A) नीति आयोग
(B) सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय
(C) भारतीय रिज़र्व बैंक
(D) वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

33. 2022 में शुरू की गई राष्ट्रीय लॉजिस्टिक्स नीति (NLP) का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) भारत में संचालित सभी निजी माल परिवहन उद्यमों का

NODIA

74. पीएम गति शक्ति राष्ट्रीय मास्टर प्लान के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. इसका उद्देश्य विभागीय साइलो को तोड़ना और बहु-मॉडल कनेक्टिविटी लाना है।

II. इसमें भारतमाला और सागरमाला सहित विभिन्न मंत्रालयों की अवसंरचना योजनाओं को शामिल किया गया है।

III. यह विकास के 7 इंजनों द्वारा संचालित है, जिनमें सड़कें, रेलवे और हवाई अड्डे शामिल हैं।

IV. यह विशेष रूप से ग्रामीण कच्ची सड़कों पर ध्यान केंद्रित करता है और शहरी परिवहन को पूरी तरह से बाहर करता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल I, II और III
(B) केवल II, III और IV
(C) केवल I और III
(D) I, II, III और IV

75. राजमार्गों में सार्वजनिक-निजी भागीदारी के बिल्ड-ऑपरेट-ट्रांसफर (BOT) टोल मॉडल में, अपेक्षा से कम टोल राजस्व का जोखिम कौन उठाता है?

(A) निजी रियायतग्राही (निजी डेवलपर)
(B) ऋण देने वाले बैंक
(C) राज्य सरकार
(D) भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (NHAI)

76. भारत में राजमार्ग विकास के लिए उपयोग किए जाने वाले हाइब्रिड वार्षिकी मॉडल (HAM) में, निर्माण अवधि के दौरान परियोजना लागत का कितना प्रतिशत सरकार द्वारा भुगतान किया जाता है?

(A) 20%
(B) 40%
(C) 60%
(D) 100%

77. पीएम गति शक्ति पहल लॉजिस्टिक्स दक्षता को बढ़ावा देने के लिए कई प्रमुख 'इंजनों' की पहचान करती है। इस मास्टर प्लान के तहत औपचारिक रूप से ऐसे कितने इंजनों की पहचान की गई है?

(A) 4
(B) 5
(C) 7
(D) 9

78. राजस्थान जैसे राज्यों में मल्टी-मॉडल लॉजिस्टिक्स पार्क (MMLP) स्थापित करने का सबसे प्रत्यक्ष लाभ निम्नलिखित में से कौन-सा है?

(A) हैंडलिंग लागत को कम करने के लिए परिवहन साधनों में निर्बाध माल स्थानांतरण
(B) सभी राज्य एक्सप्रेसवे पर लंबी दूरी के भारी वाणिज्यिक ट्रकिंग संचालन का पूर्ण उन्मूलन
(C) कृषि जिंसों के लिए पूरी तरह से सब्सिडी वाले दीर्घकालिक भंडारण की सुविधा प्रदान करना
(D) पूरे राज्य की यात्री रेलवे ग्रिड को आपूर्ति करने के लिए ऑफ-ग्रिड नवीकरणीय बिजली का उत्पादन

79. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए।

सूची I : राष्ट्रीय जलमार्ग

P. NW-1
Q. NW-2
R. NW-3
S. NW-4

सूची II : नदियां / नहर प्रणालियां

1. ब्रह्मपुत्र नदी
2. वेस्ट कोस्ट केनाल
3. गंगा-भागीरथी-हुगली नदी
4. कृष्णा-गोदावरी नदियां

(A) P-3, Q-1, R-2, S-4
(B) P-1, Q-3, R-4, S-2
(C) P-3, Q-2, R-1, S-4
(D) P-2, Q-4, R-3, S-1

80. राजस्थान राज्य सड़क परिवहन निगम (RSRTC) का प्राथमिक जनादेश क्या है?

(A) राज्य एक्सप्रेसवे के सिविल इंजीनियरिंग निर्माण और रखरखाव की देखरेख करना
(B) सभी जिलों में मोटर वाहन यातायात नियमों को लागू करना और जुर्माना वसूलना
(C) ड्राइविंग लाइसेंस जारी करना, फिटनेस परीक्षण आयोजित करना और निजी मोटर वाहनों का पंजीकरण करना
(D) किफायती, विश्वसनीय और कुशल यात्री सड़क परिवहन सेवाएं प्रदान करना

81. सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय द्वारा शुरु किए गए 'बीएच' (BH) श्रृंखला वाहन पंजीकरण का प्राथमिक लाभ क्या है?

(A) यह भारत के सभी राष्ट्रीय एक्सप्रेसवे पर टोल टैक्स देनदारियों को स्थायी रूप से समाप्त करता है
(B) यह विशेष रूप से व्यक्तिगत इलेक्ट्रिक और हाइब्रिड वाहनों के लिए पर्याप्त कर छूट अनिवार्य करता है
(C) वाहन मालिकों द्वारा एक राज्य से दूसरे राज्य में स्थानांतरित होने पर यह पुनः पंजीकरण की आवश्यकता को समाप्त करता है
(D) यह अनिवार्य आवधिक प्रदूषण परीक्षण और प्रमाणन से पूर्ण छूट प्रदान करता है

82. संयुक्त राष्ट्र महासभा ने सड़क दुर्घटना में होने वाली मौतों और चोटों को कम से कम कितना कम करने के लक्ष्य के साथ 'सड़क सुरक्षा के लिए कार्रवाई का दशक 2021-2030' घोषित किया है?

(A) 25%
(B) 50%
(C) 75%

Click Here to Buy book on Flipkart

80. (D) किफायती, विश्वसनीय और कुशल यात्री सड़क परिवहन सेवाएं प्रदान करना
राजस्थान राज्य सड़क परिवहन निगम का प्राथमिक जनादेश राज्य के नागरिकों को किफायती, विश्वसनीय, सुलभ और सुरक्षित यात्री सड़क परिवहन सेवाएं प्रदान करना है। यह निगम राजस्थान के सभी जिलों तथा पड़ोसी राज्यों के बीच अपनी यात्री बसों का विस्तृत नेटवर्क संचालित करता है। सड़क निर्माण या वाहन पंजीकरण जैसे प्रशासनिक कार्य अन्य सरकारी विभागों के क्षेत्राधिकार में आते हैं।

81. (C) वाहन मालिकों द्वारा एक राज्य से दूसरे राज्य में स्थानांतरित होने पर यह पुनः पंजीकरण की आवश्यकता को समाप्त करता है
भारत सीरीज (BH-सीरीज) वाहन पंजीकरण का मुख्य लाभ यह है कि यह वाहन मालिक का एक राज्य से दूसरे राज्य में स्थानांतरण होने पर बार-बार नया पंजीकरण कराने की अनिवार्यता को समाप्त करता है। स्थानांतरणीय नौकरियों वाले कर्मचारियों को नए राज्य में पुनः अनापत्ति प्रमाण पत्र लेने और कर भुगतान करने की जटिल प्रक्रिया से पूर्ण राहत मिल जाती है।

82. (B) 50%
संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 'सड़क सुरक्षा के लिए कार्रवाई का दशक 2021-2030' घोषित किया है। इस वैश्विक अभियान का मुख्य लक्ष्य वर्ष 2030 तक सड़क दुर्घटनाओं के कारण होने वाली अकाल मौतों और गंभीर चोटों की संख्या को कम से कम 50 प्रतिशत तक घटाना है। भारत सहित दुनिया भर के देश इस लक्ष्य को हासिल करने हेतु ठोस कदम उठा रहे हैं।

83. (D) गति सीमा, हेलमेट नियमों और सीटबेल्ट अनुपालन का कड़ाई से प्रवर्तन
राष्ट्रीय राजमार्गों पर सड़क दुर्घटनाओं के कारण होने वाली मौतों को कम करने में सांख्यिकीय रूप से सबसे प्रभावी प्रशासनिक उपाय गति सीमा, अनिवार्य हेलमेट और सीटबेल्ट नियमों का कड़ाई से प्रवर्तन करना है। नियम उल्लंघन पर सख्त निगरानी और चालान व्यवस्था से चालक अनुशासित होते हैं, जिससे सड़क दुर्घटनाओं की तीव्रता और मृत्यु दर में प्रत्यक्ष भारी कमी दर्ज की जाती है।

84. (D) (A) गलत है लेकिन (R) सही है
PMGSY के तहत निर्मित सड़कें ग्रामीण सड़कों की श्रेणी में आती हैं, उन्हें राष्ट्रीय राजमार्ग नहीं कहा जाता, इसलिए अभिकथन पूरी तरह असत्य है। इसके विपरीत, कारण सत्य है क्योंकि PMGSY वास्तव में ग्रामीण बसावटों को सभी मौसमों में पक्की सड़क कनेक्टिविटी देने हेतु प्रारंभ की गई एक केंद्र प्रायोजित योजना है। अतः अभिकथन गलत तथा कारण सही ठहरता है।

85. (C) यह एक स्व-प्रणोदित, सेमी-हाई-स्पीड ट्रेन सेट है जिसमें किसी अलग इंजन (लोकोमोटिव) की आवश्यकता नहीं होती है
वंदे भारत एक्सप्रेस भारतीय रेलवे में एक प्रमुख तकनीकी बदलाव का प्रतिनिधित्व करती है क्योंकि यह एक स्व-प्रणोदित सेमी-हाई-स्पीड ट्रेन सेट है। इस ट्रेन में खींचने के लिए किसी अलग इंजन की आवश्यकता नहीं होती, बल्कि इसके डिब्बों में ही एकीकृत मोटरें लगी होती हैं। इससे ट्रेन को त्वरित गति और ब्रेक लगाने में आसानी होती है तथा समय बचता है।

86. (A) डेक्कन ओडिसी
डेक्कन ओडिसी मुख्य रूप से महाराष्ट्र राज्य और उसके आसपास के पर्यटन परिपथों पर संचालित होने वाली एक लक्जरी पर्यटक ट्रेन है। इसके विपरीत, पैलेस ऑन व्हील्स, रॉयल राजस्थान ऑन व्हील्स तथा महाराजा एक्सप्रेस जैसी प्रसिद्ध लक्जरी ट्रेनें मुख्य रूप से राजस्थान की शाही विरासत और किलों की यात्रा पर केंद्रित हैं। अतः डेक्कन ओडिसी इस सूची में अलग है।

87. (D) I, II और III
सीमा सड़क संगठन रक्षा मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में कार्य करता है। इसका प्राथमिक कार्य भारत की अंतरराष्ट्रीय सीमाओं के पास सड़कों का निर्माण और रखरखाव करना है। इसके साथ ही, यह संस्था भूटान और अफगानिस्तान जैसे मित्र पड़ोसी देशों में भी बुनियादी सड़क परियोजनाओं का निर्माण करती है। इस प्रकार दिए गए तीनों कथन पूर्णतः सत्य एवं प्रासंगिक हैं।

88. (B) भरे हुए वाणिज्यिक ट्रकों को फ्लैटबेड रेल वैगनों पर सीधे गंतव्य तक पहुंचाना
लॉजिस्टिक्स और बहु-मॉडल परिवहन के संदर्भ में रो-रो (RO-RO) सेवा का अर्थ माल से लदे ट्रकों को सीधे रेलवे फ्लैटबेड वैगनों पर चढ़ाकर रेल द्वारा गंतव्य तक ले जाना है। गंतव्य स्टेशन पर उतरकर ट्रक पुनः सड़क मार्ग से अंतिम डिलीवरी करते हैं। यह सेवा सड़क परिवहन के लचीलेपन और रेल के किफायती लंबे सफर का उत्कृष्ट संयोजन प्रस्तुत करती है।

89. (A) 3, 1, 2
भारत की ऐतिहासिक बीस-वर्षीय सड़क विकास योजनाओं का सही कालानुक्रमिक क्रम इस प्रकार है। प्रथम बीस-वर्षीय योजना नागपुर प्लान (1943-1963) थी। द्वितीय योजना बॉम्बे प्लान (1961-1981) बनाई गई थी। इसके पश्चात तृतीय बीस-वर्षीय सड़क योजना के रूप में लखनऊ प्लान (1981-2001) को लागू किया गया था। यह ऐतिहासिक क्रम देश में व्यवस्थित सड़क नियोजन के क्रमिक चरणों को प्रदर्शित करता है।

90. (D) I, II, III और IV
राष्ट्रीय राजमार्ग विकास परियोजना के चरण I में स्वर्णिम चतुर्भुज तथा चरण II में उत्तर-दक्षिण और पूर्व-पश्चिम गलियारे शामिल थे। उत्तर-दक्षिण गलियारा श्रीनगर को कन्याकुमारी से तथा पूर्व-पश्चिम गलियारा पोरबंदर को सिलचर से जोड़ता है। यह परियोजना देश के प्रमुख भौगोलिक और आर्थिक क्षेत्रों को जोड़ने वाला मुख्य ढांचा है, अतः दिए गए चारों कथन पूर्णतः सही सिद्ध होते हैं।

NODIA

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (C) NH 48
राष्ट्रीय राजमार्ग 48 भारत के प्रमुख राष्ट्रीय राजमार्गों में से एक है, जो देश की राजधानी दिल्ली को आर्थिक राजधानी मुंबई से जोड़ता है। यह राजमार्ग स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना का एक अत्यंत महत्वपूर्ण घटक है। यह मार्ग राजस्थान राज्य के जयपुर, अजमेर, भीलवाड़ा तथा उदयपुर जैसे प्रमुख औद्योगिक एवं सांस्कृतिक शहरों से होकर गुजरता है। यह नेटवर्क राजस्थान में क्षेत्रीय व्यापार, पर्यटन तथा माल परिवहन को सुचारु बनाता है।

2. (B) राज्य में मेगा राजमार्ग परियोजना को लागू करने के लिए
राजस्थान सड़क अवसंरचना विकास कंपनी लिमिटेड की स्थापना मुख्य रूप से राजस्थान राज्य में मेगा राजमार्ग परियोजना को क्रियान्वित करने के उद्देश्य से की गई थी। यह राजस्थान सरकार और एक निजी वित्तीय संस्थान के बीच सार्वजनिक-निजी भागीदारी का एक प्रमुख उदाहरण है। इसका प्राथमिक कार्य राज्य के महत्वपूर्ण सड़क गलियारों को उच्च गुणवत्ता वाले टोल मार्गों में उन्नत करना, भारी यातायात का प्रबंधन करना तथा रखरखाव सुनिश्चित करना है।

3. (A) उत्तर-दक्षिण संरेखण
भारत में राष्ट्रीय राजमार्गों की नई संख्यांकन प्रणाली के अनुसार, सभी सम संख्या वाले राजमार्ग उत्तर-दक्षिण भौगोलिक दिशा-विन्यास को दर्शाते हैं। इसके विपरीत, सभी विषम संख्या वाले राजमार्ग पूर्व-पश्चिम दिशा में संरेखित होते हैं। सम संख्या वाले राजमार्गों का आवंटन उत्तर से दक्षिण की ओर बढ़ते हुए क्रम में किया जाता है, जहाँ पूर्वी भारत में कम तथा पश्चिमी भारत में उच्च संख्याएँ आवंटित होती हैं।

4. (A) P-2, Q-3, R-4, S-1
भारत के प्रमुख बंदरगाहों का सही भौगोलिक सुमेल उनकी संबंधित राज्य सीमाओं से आधारित है। कांडला बंदरगाह गुजरात राज्य के कच्छ क्षेत्र में स्थित है। मोर्मूगाओ बंदरगाह गोवा राज्य में जुआरी नदी के मुहाने पर स्थित एक प्राकृतिक पोताश्रय है। पारादीप बंदरगाह ओडिशा राज्य के जगतसिंहपुर जिले में स्थित है। एन्नौर बंदरगाह, जिसे कामराजार बंदरगाह भी कहते हैं, तमिलनाडु राज्य के तट पर स्थित है।

5. (C) जयपुर
उत्तर पश्चिम रेलवे जोन का मुख्यालय जयपुर में स्थित है। इस रेलवे जोन का गठन 1 अक्टूबर 2002 को हुआ था और इसमें चार रेल मण्डल जयपुर, अजमेर, बीकानेर तथा जोधपुर शामिल हैं। यह जोन राजस्थान राज्य के अधिकांश रेलवे नेटवर्क के संचालन, रखरखाव और प्रशासनिक नियंत्रण की जिम्मेदारी संभालता है। यह रेल प्रणाली राज्य के प्रमुख व्यापारिक तथा रणनीतिक क्षेत्रों को देश से जोड़ती है।

6. (C) 39%
पश्चिमी समर्पित मालवहन गलियारा भारत की एक महत्वाकांक्षी मालभाड़ा रेल परियोजना है, जिसका लगभग 39 प्रतिशत हिस्सा राजस्थान राज्य से होकर गुजरता है। राजस्थान में इसकी कुल लंबाई 560 किलोमीटर से अधिक है। यह गलियारा राज्य के विभिन्न औद्योगिक क्षेत्रों को जवाहरलाल नेहरु पोर्ट तथा गुजरात के प्रमुख बंदरगाहों से सीधा परिवहन लिंक प्रदान करता है। इससे राजस्थान में लॉजिस्टिक्स लागत घटेगी और निवेश बढ़ेगा।

7. (D) दक्षिण मध्य रेलवे
राजस्थान में मुख्य रूप से उत्तर पश्चिम रेलवे जोन और पश्चिम मध्य रेलवे जोन का क्षेत्राधिकार फैला हुआ है, जबकि पश्चिम रेलवे का भी कुछ नेटवर्क राजस्थान को स्पर्श करता है। इसके विपरीत, दक्षिण मध्य रेलवे का क्षेत्राधिकार मुख्य रूप से तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र और कर्नाटक तक ही सीमित है। दक्षिण मध्य रेलवे का राजस्थान में कोई क्षेत्रीय क्षेत्राधिकार मौजूद नहीं है।

8. (B) कोयला
भारतीय रेलवे द्वारा ढोए जाने वाले कुल राजस्व-अर्जित माल यातायात में कोयला की हिस्सेदारी सर्वाधिक है। देश के विभिन्न तापीय विद्युत गृहों, इस्पात संयंत्रों और सीमेंट कारखानों तक कोयले की आपूर्ति के लिए भारतीय रेलवे प्राथमिक परिवहन साधन का कार्य करती है। रेलवे की कुल माल ढुलाई आय का लगभग आधा हिस्सा अकेले कोयला परिवहन से ही प्राप्त होता है। यह राजस्व का आधार है।

9. (A) और (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है
पश्चिमी समर्पित मालवहन गलियारे का बड़ा हिस्सा राजस्थान से गुजरता है। इस गलियारे के समानांतर राज्य में लॉजिस्टिक्स पार्क, एकीकृत टर्मिनल और नए औद्योगिक नोड्स विकसित किए जा रहे हैं। तीव्र और निर्बाध माल परिवहन की सुविधा से कच्चे माल की आवक और तैयार माल की निकासी आसान हो जाती है। यह विकास राजस्थान के औद्योगीकरण को गति देता है, अतः दोनों व्याख्यात्मक रूप से सही हैं।

10. (D) किशनगढ़ हवाई अड्डा, अजमेर
अजमेर जिले में स्थित किशनगढ़ हवाई अड्डा केंद्र सरकार की उड़ान योजना के तहत व्यावसायिक परिचालन शुरु करने वाला राजस्थान का पहला हवाई अड्डा था। अक्टूबर 2017 में इस हवाई अड्डे से उड़ानों का नियमित संचालन प्रारंभ हुआ था। किशनगढ़ को संगमरमर मंडी के रूप में जाना जाता है, तथा पास में पुष्कर धार्मिक स्थल होने से इसका अत्यधिक व्यापारिक एवं क्षेत्रीय महत्व है।

NODIA

फंडिंग जापान इंटरनेशनल कोऑपरेशन एजेंसी (JICA) द्वारा दीर्घकालिक सॉफ्ट लोन के रूप में प्रदान की गई है। राजस्थान में इस गलियारे का लगभग 39 प्रतिशत हिस्सा आता है, जिससे जापानी वित्तीय सहयोग का प्रत्यक्ष लाभ राजस्थान के बुनियादी ढांचे और उद्योगों को मिला है।

57. (C) दादरी और जवाहरलाल नेहरू पोर्ट ट्रस्ट (JNPT)
पश्चिमी समर्पित मालवहन गलियारा दो मुख्य टर्मिनलों को आपस में जोड़ता है। इसका उत्तरी टर्मिनल दादरी (उत्तर प्रदेश) है तथा दक्षिणी टर्मिनल जवाहरलाल नेहरू पोर्ट ट्रस्ट (मुंबई) है। यह समर्पित रेल मार्ग हरियाणा, राजस्थान, गुजरात और महाराष्ट्र से होकर गुजरता है। यह देश के आंतरिक औद्योगिक क्षेत्रों को प्रमुख पश्चिमी समुद्री बंदरगाह से सीधे और तीव्र गति से जोड़ता है।

58. (D) यात्री ट्रेनों की आवृत्ति और समय की पाबंदी में सुधार के लिए मौजूदा पटरियों से भारी माल ढुलाई को हटाना
समर्पित मालवहन गलियारे बनाने का सबसे बड़ा लाभ यह है कि भारी मालगाड़ियों को सामान्य रेल पटरियों से हटाकर अलग पटरियों पर चलाया जाता है। इससे मौजूदा रेलवे नेटवर्क पर भीड़-भाड़ कम होती है, जिससे यात्री ट्रेनों की गति, समयबद्धता और संख्या में सुधार होता है। इसके अलावा माल परिवहन भी पहले की तुलना में काफी तेज और सुगम हो जाता है।

59. (A) और (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है
भारत में कुल माल आवाजाही में अंतर्देशीय जल परिवहन का योगदान अत्यंत कम है। इसका मुख्य भौगोलिक कारण यह है कि भारत की अधिकांश प्रायद्वीपीय नदियां मौसमी हैं जिनमें जल प्रवाह अनिश्चित रहता है। गर्मी के दिनों में जल स्तर अत्यधिक कम हो जाने से वाणिज्यिक नौवहन कठिन हो जाता है। अतः अभिकथन और कारण दोनों सत्य तथा परस्पर व्याख्यात्मक हैं।

60. (C) 34,800 किमी
भारतमाला परियोजना देश का एक प्रमुख राजमार्ग विकास कार्यक्रम है। इसके प्रथम चरण के अंतर्गत कुल 34,800 किलोमीटर लंबी सड़कों और एक्सप्रेसवे के निर्माण तथा उन्नयन का लक्ष्य तय किया गया था। इसमें आर्थिक गलियारे, सीमावर्ती सड़कें, फीडर रूट तथा तटीय बंदरगाह कनेक्टिविटी सड़कें शामिल हैं, जो देश में निर्बाध माल एवं यात्री परिवहन को बढ़ावा देने हेतु लक्षित हैं।

61. (B) मुंद्रा बंदरगाह
भारत में प्रमुख बंदरगाह केंद्र सरकार के प्रशासनिक नियंत्रण में आते हैं। इसके विपरीत, गुजरात में स्थित मुंद्रा बंदरगाह देश का सबसे बड़ा निजी वाणिज्यिक बंदरगाह है, जिसे राज्य समुद्री बोर्ड के तहत गैर-प्रमुख (गौण) बंदरगाह के रूप में वर्गीकृत किया गया है। कांडला, विशाखापटनम और कोलकाता केंद्र द्वारा संचालित वैधानिक प्रमुख बंदरगाहों की श्रेणी में शामिल आते हैं।

62. (A) प्रमुख व्यापार और उत्पादन मार्गों पर माल आवाजाही दक्षता को अनुकूलित करना
भारतमाला परियोजना के तहत आर्थिक गलियारों का विकास करने का मुख्य उद्देश्य देश के प्रमुख औद्योगिक एवं उत्पादन केंद्रों के बीच माल परिवहन की दक्षता को बढ़ाना है। ये गलियारे भारी माल ढुलाई वाले मुख्य व्यापारिक मार्गों पर लॉजिस्टिक्स बाधाओं को दूर करते हैं, जिससे यात्रा का समय कम होता है और माल परिवहन लागत में भारी कमी आती है।

63. (C) PMGSY — पंचायती राज मंत्रालय
अवसंरचनात्मक परियोजनाओं के प्रशासनिक वर्गीकरण में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा प्रशासित की जाती है, न कि पंचायती राज मंत्रालय द्वारा, अतः यह युग्म बेमेल है। अन्य विकल्प पूर्णतः सही हैं: भारतमाला सड़क परिवहन मंत्रालय, सागरमाला बंदरगाह एवं जलमार्ग मंत्रालय तथा उड़ान योजना नागरिक उड्डयन मंत्रालय द्वारा संचालित होती है, जो सही नोडल मंत्रालयों को दर्शाती हैं।

64. (C) केवल III
जयपुर मेट्रो भारत की छठी संचालित मेट्रो रेल प्रणाली है। अजमेर रोड पर इसमें एक अद्वितीय एलिवेटेड डबल-डेकर सड़क और मेट्रो ट्रैक निर्मित किया गया है। हालाँकि, तीसरा कथन गलत है क्योंकि पूरा नेटवर्क भूमिगत नहीं है, बल्कि इसका अधिकांश भाग एलिवेटेड है तथा केवल परकोटे का कुछ भाग ही भूमिगत है, जिससे केवल तीसरा कथन ही असत्य सिद्ध होता है।

65. (C) 80:20
उड़ान योजना के दिशा-निर्देशों के अनुसार, राजस्थान जैसे सामान्य राज्यों के लिए व्यवहार्यता अंतर वित्तपोषण (VGF) की राशि केंद्र और राज्य सरकार के बीच 80:20 के अनुपात में साझा की जाती है। इसमें केंद्र सरकार 80 प्रतिशत वित्तीय भार वहन करती है जबकि राज्य सरकार 20 प्रतिशत का अंशदान देती है। पूर्वोत्तर राज्यों के लिए यह अनुपात 90:10 निर्धारित किया गया है।

66. (C) 1995
भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण की स्थापना 1 अप्रैल 1995 को संसद के एक अधिनियम द्वारा एक वैधानिक निकाय के रूप में की गई थी। यह निकाय पूर्ववर्ती राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय विमानपत्तन प्राधिकरणों के विलय से निर्मित हुआ था। यह संस्था भारत में नागरिक उड्डयन अवसंरचना के निर्माण, हवाई अड्डों के प्रबंधन तथा हवाई यातायात नियंत्रण के लिए जिम्मेदार मुख्य राष्ट्रीय प्राधिकरण है।

67. (D) जयपुर अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा, राजस्थान
ग्रीनफील्ड हवाई अड्डा वह कहलाता है जो अप्रयुक्त भूमि पर पूर्णतः नए सिरे से विकसित किया जाता है। गोवा का मनोहर अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा, सिंधुदुर्ग तथा डोनी पोलो हवाई अड्डे नए ग्रीनफील्ड प्रोजेक्ट हैं। इसके विपरीत, जयपुर अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा दशकों पुराना चालू हवाई अड्डा है जो ब्राउनफील्ड श्रेणी में आता है, अतः यह ग्रीनफील्ड हवाई अड्डों का उदाहरण नहीं माना जाता है।

Downloaded from www.pdf.tube

22. (A) जोधपुर
उत्तर प्रदेश के लखनऊ तथा कानपुर शहरों में आधुनिक मेट्रो रेल प्रणालियों का सफल संचालन किया जा रहा है। इसी प्रकार केरल के कोच्चि शहर में भी मेट्रो सफलतापूर्वक संचालित है। इसके विपरीत, राजस्थान के जोधपुर शहर में वर्तमान में कोई संचालित मेट्रो रेल प्रणाली मौजूद नहीं है। जोधपुर में शहरी परिवहन मुख्य रूप से सड़क आधारित साधनों द्वारा ही संचालित होता है।

23. (D) मानक गेज
जयपुर मेट्रो सहित भारत की अधिकांश आधुनिक शहरी मेट्रो रेल प्रणालियों में मानक गेज का उपयोग किया जाता है। मानक गेज का उपयोग करने से वैश्विक स्तर पर उपलब्ध आधुनिक डिब्बों, सिग्नलिंग प्रणालियों और उन्नत प्रौद्योगिकियों का सीधा अपनाना आसान हो जाता है। यद्यपि पुरानी प्रणालियों में ब्रॉड गेज था, परंतु वर्तमान में नई प्रणालियाँ मानक गेज पर आधारित बनाई जाती हैं।

24. (C) केवल I, II और IV
मुंबई-अहमदाबाद हाई-स्पीड रेल परियोजना भारत की पहली निर्माणाधीन बुलेट ट्रेन परियोजना है, जो जापानी शिंकनसेन तकनीक पर आधारित है। इस ट्रेन की अधिकतम नियोजित परिचालन गति 320 किलोमीटर प्रति घंटा तय की गई है। यह परियोजना विश्व बैंक द्वारा नहीं, बल्कि जापान इंटरनेशनल कोऑपरेशन एजेंसी द्वारा वित्तपोषित है, जिससे प्रथम, द्वितीय एवं चतुर्थ कथन सही ठहरते हैं और तीसरा असत्य सिद्ध होता है।

25. (C) सड़क मार्ग
भारत में कुल माल परिवहन में सड़क मार्ग की हिस्सेदारी सर्वाधिक है, जो कुल माल यातायात का लगभग 60 से 65 प्रतिशत कवर करता है। यद्यपि लंबी दूरी के भारी माल परिवहन के लिए रेलवे अधिक उपयुक्त माना जाता है, लेकिन सड़क परिवहन द्वारा प्रदान की जाने वाली द्वार-से-द्वार सेवा और मार्ग चयन के लचीलेपन के कारण इसका प्रभुत्व सबसे अधिक बना हुआ है।

26. (B) 2000
प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना को भारत सरकार द्वारा 25 दिसंबर 2000 को शुरू किया गया था। यह योजना ग्रामीण विकास में क्रांतिकारी बदलाव लाने के लिए बनाई गई थी। इसका मुख्य उद्देश्य देश के ग्रामीण क्षेत्रों में असंपर्कित बसावटों को योग्य जनसंख्या मानदंडों के आधार पर सभी मौसमों में कार्य करने योग्य पक्की सड़क संपर्क द्वारा मुख्य नेटवर्क से जोड़ना सुनिश्चित करना रहा है।

27. (B) 500 व्यक्ति
प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के मूल दिशा-निर्देशों के अनुसार, मैदानी क्षेत्रों में सड़क संपर्क के लिए पात्र होने हेतु किसी असंपर्कित बसावट की न्यूनतम जनसंख्या 500 व्यक्ति तय की गई थी। इसके विपरीत, पहाड़ी क्षेत्रों, मरुस्थलीय क्षेत्रों तथा जनजाति क्षेत्रों के लिए यह न्यूनतम जनसंख्या सीमा घटाकर 250 व्यक्ति रखी गई थी ताकि दुर्गम इलाकों में भी अवसंरचना का निर्माण किया जा सके।

28. (B) ग्रामीण पगडंडियाँ
भारत में आधिकारिक सड़क वर्गीकरण प्रणाली के तहत सड़कों को राष्ट्रीय राजमार्ग, राज्य राजमार्ग, मुख्य ज़िला सड़कें, अन्य जिला सड़कें तथा ग्रामीण पक्की सड़कों में बाँटा जाता है। इस योजनाबद्ध ढाँचे में कच्ची ग्रामीण पगडंडियाँ आधिकारिक राजमार्ग वर्गीकरण का हिस्सा नहीं मानी जातीं। ये गैर-इंजीनियर्ड और अनगढ़ रास्ते होते हैं जो औपचारिक नेटवर्क से भिन्न होने के कारण असंगत या बेमेल ठहरते हैं।

29. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
भारत के प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डों का सही सुमेल उनके संबंधित शहरों के साथ इस प्रकार है। राजीव गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा हैदराबाद में स्थित है। वीर सावरकर अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा पोर्ट ब्लेयर में स्थित है। डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा नागपुर में तथा लाल बहादुर शास्त्री अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा वाराणसी में स्थित है, जो इस सही विकल्प को पूर्णतः प्रमाणित करता है।

30. (A) रक्षा मंत्रालय
सीमा सड़क संगठन भारत के सीमावर्ती क्षेत्रों तथा मित्र पड़ोसी देशों में बुनियादी सड़क ढाँचे का निर्माण और रखरखाव करने वाला प्रमुख निकाय है। यद्यपि पूर्व में इसका दोहरा नियंत्रण था, परंतु वर्ष 2015 से इसे पूर्णतः रक्षा मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में स्थानांतरित कर दिया गया है। इसका मुख्य कार्य सीमावर्ती सुरक्षा और रणनीतिक संपर्क को सुदृढ़ करना है।

NODIA

31. (C) राजस्थान
प्रोजेक्ट चेतक सीमा सड़क संगठन की एक अत्यंत महत्वपूर्ण परियोजना है, जो मुख्य रूप से राजस्थान राज्य में भारत-पाक सीमा के निकट रणनीतिक सड़कों के निर्माण और रखरखाव पर केंद्रित है। इसकी स्थापना 1962 में की गई थी और इसका मुख्यालय बीकानेर में स्थित है। यह परियोजना थार मरुस्थल के सीमावर्ती क्षेत्रों में सुरक्षा बलों की आवाजाही को सुगम बनाती है।

32. (D) वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय
विभिन्न राज्यों में लॉजिस्टिक्स सुगमता सूचकांक वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के आंतरिक व्यापार विभाग द्वारा जारी की जाने वाली एक वार्षिक रिपोर्ट है। यह सूचकांक भारत के राज्यों तथा केंद्र शासित प्रदेशों में लॉजिस्टिक्स बुनियादी ढाँचे, सेवाओं तथा प्रशासनिक सुगमता का व्यापक मूल्यांकन करता है। इसका मुख्य उद्देश्य लॉजिस्टिक्स दक्षता को बढ़ाकर व्यापारिक लागत को कम करना और प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाना है।

33. (C) भारत में राष्ट्रीय लॉजिस्टिक्स लागत को वैश्विक मानक स्तरों के अनुरूप कम करना
सितंबर 2022 में शुरू की गई राष्ट्रीय लॉजिस्टिक्स नीति का प्राथमिक उद्देश्य भारत में लॉजिस्टिक्स लागत को सकल घरेलू उत्पाद के वर्तमान उच्च स्तर से घटाकर वैश्विक मानक स्तरों के

11. (A) हवाई किराया पूरी तरह से बाजार-संचालित है और किसी भी सीट पर कोई मूल्य सीमा नहीं है
उड़ान योजना का मुख्य उद्देश्य देश के छोटे, असंपर्कित और कम उपयोग वाले हवाई अड्डों को आपस में जोड़ना और हवाई यात्रा को किफायती बनाना है। योजना के अंतर्गत चयनित मार्गों पर लगभग 50 प्रतिशत सीटों के लिए किराए की एक निश्चित अधिकतम सीमा तय की जाती है। एयरलाइंस को इस घाटे की भरपाई हेतु सरकारों द्वारा वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है।

12. (A) एक
वर्तमान नागरिक उड्डयन वर्गीकरण के अनुसार, राजस्थान में जयपुर स्थित जयपुर अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा एकमात्र पूर्णतः संचालित अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा है। इसे अंतर्राष्ट्रीय उड़ानों के सीधे संचालन, सीमा शुल्क और आप्रवासन सुविधाओं से सुसज्जित किया गया है। यद्यपि उदयपुर तथा जोधपुर हवाई अड्डों से भी विस्तार योजनाएँ जुड़ी हैं, परंतु वर्तमान में पूर्ण क्रियात्मक अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा केवल जयपुर ही दर्ज है।

13. (B) आर्थिक रूप से व्यावहारिक लेकिन वित्तीय रूप से अव्यावहारिक पीपीपी परियोजनाओं के लिए अनुदान निधि प्रदान करना
व्यवहार्यता अंतर वित्तपोषण बुनियादी ढांचा क्षेत्र में सार्वजनिक-निजी भागीदारी परियोजनाओं को समर्थन देने के लिए सरकार द्वारा दिया जाने वाला वित्तीय अनुदान है। कई परिवहन परियोजनाएं समाज और अर्थव्यवस्था के लिए अत्यधिक आवश्यक और आर्थिक रूप से व्यावहारिक होती हैं, लेकिन निजी निवेशकों के लिए व्यावसायिक रूप से कम लाभदायक होती हैं। VGF इस वित्तीय अंतर को पाटकर निवेश को संभव बनाता है।

14. (B) केवल I और III
भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण की स्थापना 1986 में अंतर्देशीय जलमार्गों के विकास और विनियमन हेतु की गई थी। राष्ट्रीय जलमार्ग 2 ब्रह्मपुत्र नदी पर स्थित है, जो असम में सदिया से धुबरी तक फैली हुई है। राष्ट्रीय जलमार्ग 1 ब्रह्मपुत्र पर नहीं बल्कि गंगा-भागीरथी-हुगली नदी प्रणाली पर प्रयागराज से हल्दीया तक स्थित है, जिससे पहला और तीसरा कथन पूर्णतः सत्य सिद्ध होते हैं।

15. (C) कोटा और बारां
हजीरा-विजयपुर-जगदीशपुर गैस पाइपलाइन भारत की पहली अंतर-राज्यीय प्राकृतिक गैस पाइपलाइन है। यह विशाल पाइपलाइन गुजरात के हजीरा से शुरू होकर मध्य प्रदेश के विजयपुर होते हुए उत्तर प्रदेश के जगदीशपुर तक जाती है। अपने मार्ग में यह पाइपलाइन दक्षिण-पूर्वी राजस्थान के कोटा और बारां जिलों से होकर गुजरती है, जहाँ यह स्थानीय उर्वरक संयंत्रों तथा उद्योगों को ईंधन आपूर्ति प्रदान करती है।

16. (D) यह थोक परिवहन का एक सुरक्षित, निरंतर और किफायती साधन प्रदान करता है
जामनगर-लोनी एलपीजी पाइपलाइन भारत की प्रमुख एलपीजी परिवहन प्रणालियों में से एक है, जो राजस्थान से होकर गुजरती है। सड़क टैंकरों की तुलना में पाइपलाइन द्वारा एलपीजी का परिवहन अत्यधिक सुरक्षित, पर्यावरण-अनुकूल और किफायती होता है। यह मौसम संबंधी बाधाओं से मुक्त होकर वर्ष भर निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित करता है। इससे सड़क दुर्घटनाओं का जोखिम घटता है और परिवहन लागत कम होती है।

17. (C) उदयपुर
अमृतसर-जामनगर आर्थिक गलियारा भारतमाला परियोजना के तहत विकसित किया जा रहा 6-लेन एक्सप्रेसवे है। यह उत्तर-पश्चिमी भारत के प्रमुख औद्योगिक एवं तेल रिफाइनरी केंद्रों को जोड़ता है। राजस्थान में यह एक्सप्रेसवे हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर, बीकानेर, जोधपुर, बाड़मेर और जालौर जिलों से होकर गुजरता है। यह मार्ग राजस्थान के दक्षिणी जिले उदयपुर से होकर नहीं गुजरता है, अतः उदयपुर इसके संरेखण में शामिल नहीं है।

18. (B) कच्चा तेल
बाड़मेर-सलाया पाइपलाइन का उपयोग मुख्य रूप से बाड़मेर के तेल क्षेत्रों से निकाले गए कच्चे तेल के परिवहन के लिए किया जाता है। यह विश्व की सबसे लंबी तापित पाइपलाइन प्रणालियों में से एक है। चूंकि बाड़मेर का कच्चा तेल मोमी प्रकृति का होता है, इसलिए इसे प्रवाह योग्य बनाए रखने के लिए पाइपलाइन को गर्म रखा जाता है ताकि गुजरात तक सुरक्षित आपूर्ति हो।

19. (A) कांडला, मुंबई, मंगलुरु, कोच्चि
भारत के पश्चिमी तट पर स्थित प्रमुख बंदरगाहों का उत्तर से दक्षिण की ओर भौगोलिक क्रम अत्यंत स्पष्ट है। सबसे उत्तर में गुजरात का कांडला बंदरगाह स्थित है। इसके दक्षिण में महाराष्ट्र का मुंबई बंदरगाह आता है। और दक्षिण की ओर बढ़ने पर कर्नाटक का न्यू मंगलुरु बंदरगाह स्थित है, जबकि सबसे अंत में केरल का कोच्चि बंदरगाह स्थित है। यह सही क्रम है।

20. (A) बंदरगाह-आधारित विकास को बढ़ावा देना और देश में समग्र लॉजिस्टिक्स लागत को कम करना
सागरमाला परियोजना भारत सरकार का एक प्रमुख कार्यक्रम है जिसका उद्देश्य देश की लंबी तटरेखा का उपयोग करके बंदरगाह-आधारित विकास को बढ़ावा देना है। इसका मुख्य रणनीतिक लक्ष्य बंदरगाहों का आधुनिकीकरण, तटीय नौवहन का विस्तार, बंदरगाह कनेक्टिविटी में सुधार और औद्योगिक समूहों की स्थापना करना है। इन पहलों से व्यापारिक परिवहन और लॉजिस्टिक्स लागत में भारी कमी लाने में सफलता मिलती है।

21. (C) मानसरोवर से चांदपोल
जयपुर मेट्रो के प्रथम चरण की शुरुआत जून 2015 में हुई थी, जो राजस्थान की पहली मेट्रो सेवा बनी। इस चरण के अंतर्गत मेट्रो का व्यावसायिक परिचालन मानसरोवर से चांदपोल के बीच शुरू किया गया था। इस मार्ग की कुल लंबाई लगभग 9.63 किलोमीटर थी, जिसमें मानसरोवर से चांदपोल तक कुल नौ स्टेशन शामिल किए गए थे, जिससे शहरी यातायात को राहत मिली।

Click Here to Buy book on Amazon

क्रम राज्य में पहाड़ी क्षेत्रों में बुनियादी परिवहन सुविधाओं के चरणबद्ध विस्तार को स्पष्ट रुप से दर्शाता है।

45. (B) NH 44
राष्ट्रीय राजमार्ग 44 वर्तमान में भारत का सबसे लंबा राष्ट्रीय राजमार्ग है। यह उत्तर में जम्मू-कश्मीर के श्रीनगर से प्रारंभ होकर दक्षिण में तमिलनाडु के कन्याकुमारी तक फैला हुआ है। इस विशाल राजमार्ग की कुल लंबाई लगभग 3,745 किलोमीटर है। यह मार्ग भारत के 11 राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों से होकर गुजरता है तथा देश का मुख्य ट्रंक मार्ग निर्मित करता है।

46. (A) थार मरुस्थल में भारत-पाक सीमा के समानांतर चलता था
पुरानी राजमार्ग संख्यांकन प्रणाली के तहत, NH 15 राजस्थान का एक अत्यंत रणनीतिक राजमार्ग था। यह राजमार्ग थार मरुस्थल में भारत-पाकिस्तान अंतर्राष्ट्रीय सीमा के समानांतर होकर गुजरता था। यह श्रीगंगानगर, बीकानेर, जैसलमेर और बाड़मेर जैसे सीमावर्ती जिलों को आपस में जोड़ता था। रक्षा तैयारियों, सैन्य आवाजाही तथा पश्चिमी मरुस्थलीय क्षेत्र के आर्थिक विकास में इसकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और निर्णायक रही है।

47. (C) स्वर्णिम चतुर्भुज नेटवर्क की कुल लंबाई ठीक 12,500 किमी है
स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना भारत का एक प्रसिद्ध राजमार्ग नेटवर्क है जो देश के चार प्रमुख महानगरों दिल्ली, मुंबई, चेन्नई और कोलकाता को जोड़ता है। इस नेटवर्क की कुल लंबाई 5,846 किलोमीटर है, न कि 12,500 किलोमीटर। इसका प्रबंधन भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण द्वारा किया जाता है तथा इसका एक बड़ा हिस्सा राजस्थान से होकर गुजरता है, जिससे कथन असत्य सिद्ध होता है।

48. (D) भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (NHAI)
भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण संसद के एक अधिनियम द्वारा गठित एक स्वायत्त वैधानिक निकाय है। यह सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय के तहत कार्य करता है। NHAI भारत में राष्ट्रीय राजमार्ग नेटवर्क के विकास, रखरखाव, प्रबंधन तथा टोल संचालन के लिए प्राथमिक रुप से जिम्मेदार संस्था है। यह देश भर में प्रमुख एक्सप्रेसवे और राष्ट्रीय गलियारों का निर्माण तथा नियमन करती है।

49. (B) केवल I, III और IV
प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा संचालित है और नियोजन के लिए कोर नेटवर्क दृष्टिकोण अपनाती है। राजस्थान में इसके लिए वित्तीय अनुपात 60:40 है। यह योजना ग्रामीण सड़कों के निर्माण से संबंधित है, राष्ट्रीय राजमार्गों के रखरखाव से नहीं, जिससे दूसरा कथन गलत हो जाता है। परिणाम स्वरुप पहला, तीसरा तथा चौथा कथन पूरी तरह से सही एवं तर्कसंगत हैं।

50. (B) 1964
राजस्थान राज्य सड़क परिवहन निगम की स्थापना सड़क परिवहन निगम अधिनियम, 1950 के प्रावधानों के तहत 1 अक्टूबर 1964 को की गई थी। इसकी स्थापना का प्राथमिक उद्देश्य राज्य के भीतर और अंतर-राज्यीय मार्गों पर यात्रियों को किफायती, सुरक्षित तथा विश्वसनीय बस परिवहन सेवाएं प्रदान करना था। यह निगम राज्य में सार्वजनिक परिवहन का सबसे बड़ा संगठित निकाय बना हुआ है।

51. (D) संबंधित राज्य सरकार का लोक निर्माण विभाग (PWD)
भारत के संवैधानिक और प्रशासनिक ढांचे में राज्य राजमार्गों के विकास एवं रखरखाव का दायित्व संबंधित राज्य सरकार के लोक निर्माण विभाग का होता है। राज्य राजमार्ग राज्य के भीतर महत्वपूर्ण जिला मुख्यालयों और व्यापारिक केंद्रों को जोड़ते हैं। केंद्रीय निकाय जैसे NHAI केवल राष्ट्रीय राजमार्गों तक सीमित रहते हैं, जबकि राज्य के भीतर मुख्य सड़कें राज्य PWD द्वारा बनाई जाती हैं।

52. (A) RIDCOR
राजस्थान में 'मेगा हाईवे प्रोजेक्ट' को सफलतापूर्वक लागू करने के लिए प्राथमिक नोडल एजेंसी RIDCOR (रिडकोर) थी। इस कंपनी का गठन राज्य सरकार और निजी वित्तीय साझेदारों द्वारा किया गया था। इस परियोजना के माध्यम से राजस्थान के मुख्य राज्य मार्गों को उच्च गुणवत्ता वाली टोल-आधारित पक्की सड़कों में उन्नत किया गया, जिससे राज्य में यातायात और परिवहन अत्यधिक सुगम हुआ।

53. (C) रेडियो फ्रीक्वेंसी आइडेंटिफिकेशन (आरएफआईडी)
फास्टैग भारतीय टोल प्लाजा पर इलेक्ट्रॉनिक टोल संग्रह की एक स्वचालित प्रणाली है, जो रेडियो फ्रीक्वेंसी आइडेंटिफिकेशन (RFID) तकनीक पर काम करती है। वाहन की कांच पर चिपकाया गया टैग टोल प्लाजा के स्कैनर द्वारा बिना गाड़ी रोके पढ़ लिया जाता है। इससे डिजिटल भुगतान होता है, समय और ईंधन की बचत होती है तथा प्लाजा पर जाम से मुक्ति मिलती है।

54. (A) P-4, Q-1, R-2, S-3
भारतीय रेलवे के विभिन्न जोनों का उनके मुख्यालयों के साथ सही सुमेल इस प्रकार है। पश्चिम मध्य रेलवे का मुख्यालय जबलपुर में स्थित है। दक्षिण पश्चिम रेलवे का मुख्यालय हुब्बल्ली में स्थित है। पूर्व तट रेलवे का मुख्यालय भुवनेश्वर में तथा उत्तर पश्चिम रेलवे का मुख्यालय जयपुर में स्थित है, जो प्रशासनिक रुप से पूर्णतः सही एवं सटीक सुमेल को प्रदर्शित करता है।

NODIA

55. (D) विश्व बैंक
पूर्वी समर्पित मालवहन गलियारा भारत की एक प्रमुख रेल परियोजना है जो लुधियाना से दानकुनी तक निर्मित की जा रही है। इस विशाल पूर्वी गलियारे का प्राथमिक बाह्य वित्तपोषण विश्व बैंक द्वारा प्रदान किए गए ऋण के माध्यम से किया गया है। इसका मुख्य उद्देश्य पूर्वी और उत्तरी भारत के बीच भारी माल ढुलाई को तेज एवं किफायती बनाना है।

56. (B) जापान इंटरनेशनल कोऑपरेशन एजेंसी (JICA)
पश्चिमी समर्पित मालवहन गलियारा दादरी से जवाहरलाल नेहरु पोर्ट तक विस्तृत है। इस परियोजना की मुख्य बाह्य

अनुरुप 8-9 प्रतिशत तक लाना है। यह नीति देश में निर्बाध माल आवाजाही सुनिश्चित करने, आपूर्ति श्रृंखला दक्षता में सुधार करने तथा व्यापारिक प्रतिस्पर्धात्मकता को सुदृढ़ करने हेतु लक्षित है।

34. (A) और (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है
भारत में माल और यात्री आवाजाही दोनों में सड़क परिवहन की हिस्सेदारी रेल परिवहन से अधिक है। सड़क परिवहन की यह प्रमुखता इसकी अद्वितीय क्षमताओं के कारण है, जैसे कि यह द्वार-से-द्वार सीधी पहुँच और लचीला मार्ग चयन प्रदान करता है, जिसे रेलवे अपने निश्चित पटरियों के ढाँचे के कारण प्रदान नहीं कर सकता। अतः कथन और कारण दोनों सत्य एवं संबद्ध हैं।

35. (D) सुंधा माता रोपवे, जालौर
जालौर जिले में स्थित सुंधा माता रोपवे राजस्थान का पहला यात्री रोपवे है, जिसका उद्घाटन दिसंबर 2006 में किया गया था। यह रोपवे पहाड़ियों पर स्थित प्रसिद्ध सुंधा माता मंदिर तक पहुँचने के लिए एक सुलभ और सुरक्षित माध्यम प्रदान करता है। इस प्रथम सफल रोपवे परियोजना के पश्चात राज्य के अन्य प्रमुख पहाड़ी धार्मिक एवं पर्यटन स्थलों पर भी रोपवे विकसित हुए।

36. (A) राष्ट्रीय रोपवे
भारत सरकार की पर्वतमाला परियोजना का मुख्य उद्देश्य देश के पहाड़ी और दुर्गम क्षेत्रों में आधुनिक राष्ट्रीय रोपवे बुनियादी ढाँचे का विकास करना है। यह कार्यक्रम सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय द्वारा संचालित किया जाता है। यह कठिन भौगोलिक परिस्थितियों वाले क्षेत्रों में पारंपरिक सड़कों के एक टिकाऊ विकल्प के रूप में काम करता है तथा पर्यटन को बढ़ावा देता है।

37. (C) बिना किसी पुरस्कार या प्रतिफल की आशा के सड़क दुर्घटना पीड़ित को स्वेच्छा से तत्काल आपातकालीन सहायता प्रदान करने वाला व्यक्ति
मोटर वाहन संशोधन अधिनियम में नेक व्यक्ति को वैधानिक संरक्षण प्रदान किया गया है। इसके अनुसार, ऐसा व्यक्ति जो बिना किसी पुरस्कार या वित्तीय लाभ की आशा के सड़क दुर्घटना पीड़ित को स्वेच्छा से तत्काल आपातकालीन सहायता प्रदान करता है, वह नेक व्यक्ति कहलाता है। यह प्रावधान कानूनी अड़चनों के भय को समाप्त कर लोगों को घायलों की मदद के लिए प्रेरित करता है।

38. (A) इकॉनमी
वैश्विक स्तर पर मानक सड़क सुरक्षा रणनीतियाँ '4 E' के व्यापक सिद्धांत पर आधारित होती हैं। इन चार स्तंभों के अंतर्गत इंजीनियरिंग (सड़क एवं वाहन डिज़ाइन), एजुकेशन (सुरक्षा नियमों के प्रति जागरुकता), एनफोर्समेंट (कानूनों का कड़ाई से प्रवर्तन) तथा इमरजेंसी केयर (त्वरित आपातकालीन चिकित्सा देखभाल) शामिल हैं। इस स्थापित सड़क सुरक्षा ढाँचे में इकॉनमी को शामिल नहीं किया गया है।

39. (A) केवल I और II
बीओटी टोल मॉडल में निजी डेवलपर निर्माण लागत लगाता है और टोल वसूली से निवेश निकालता है, अतः वह यातायात जोखिम स्वयं वहन करता है। ईपीसी मॉडल में सरकार परियोजना का शत-प्रतिशत वित्तपोषण करती है। हाइब्रिड वार्षिकी मॉडल में सरकार निर्माण दौरान 40 प्रतिशत वित्तपोषित करती है तथा डेवलपर को 100 प्रतिशत वित्तपोषण नहीं करना पड़ता, जिससे पहला और दूसरा कथन सही हैं।

40. (B) एकल अंक (लगभग 8-9%)
वर्ष 2022 में घोषित राष्ट्रीय लॉजिस्टिक्स नीति का मुख्य लक्ष्य भारत में लॉजिस्टिक्स लागत को सकल घरेलू उत्पाद के वर्तमान उच्च स्तर से घटाकर वर्ष 2030 तक एकल अंक (लगभग 8 से 9 प्रतिशत) में लाना है। यह लक्ष्य विकसित अर्थव्यवस्थाओं के समकक्ष प्रतिस्पर्धी स्थिति प्राप्त करने के लिए आवश्यक माना गया है। इससे निर्यात एवं आंतरिक व्यापार को गति मिलेगी।

41. (C) यूनिफाइड लॉजिस्टिक्स इंटरफेस प्लेटफॉर्म
ULIP का पूर्ण रुप यूनिफाइड लॉजिस्टिक्स इंटरफेस प्लेटफॉर्म है। यह राष्ट्रीय लॉजिस्टिक्स नीति के तहत विकसित एक महत्वपूर्ण डिजिटल पहल है। यह मंच विभिन्न मंत्रालयों और विभागों के डिजिटल डेटाबेस को एक ही स्थान पर एकीकृत करता है। इसका प्राथमिक उद्देश्य सभी हितधारकों को वास्तविक समय में माल ट्रैकिंग, कागजी कार्रवाई के सरलीकरण तथा लॉजिस्टिक्स क्षेत्र में पारदर्शिता प्रदान करना है।

42. (D) समय के साथ इसमें लगातार गिरावट आई है, और सड़क परिवहन की तुलना में माल बाजार की हिस्सेदारी कम हुई है
स्वतंत्रता के समय भारत में कुल माल परिवहन में रेलवे की हिस्सेदारी अत्यधिक उच्च थी। हालांकि, पिछले कुछ दशकों में राजमार्ग नेटवर्क के तीव्र विस्तार और सड़क परिवहन द्वारा प्रदान की जाने वाली सीधी सेवा के कारण रेलवे की माल बाजार हिस्सेदारी में लगातार गिरावट दर्ज की गई है। वर्तमान में माल परिवहन का अधिकांश भाग सड़क मार्गों द्वारा संचालित हो रहा है।

43. (A) दिल्ली अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के लिए प्रशीतित ट्रक, फिर एयर कार्गो
जयपुर से यूरोपीय बाजारों में शीघ्र नष्ट होने वाले कृषि उत्पादों के 24 घंटे के भीतर सफल निर्यात हेतु समय-संवेदनशील परिवहन अनिवार्य है। प्रशीतित ट्रक उत्पादों की गुणवत्ता बनाए रखते हुए उन्हें तेजी से दिल्ली अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे तक पहुँचा सकते हैं, जहाँ से एयर कार्गो की उड़ानों द्वारा उन्हें गंतव्य तक भेजा जा सकता है। अन्य जल या समुद्री माध्यम अत्यधिक समय लेते हैं।

44. (A) 1, 2, 3, 4
राजस्थान में स्थापित प्रमुख यात्री रोपवे परियोजनाओं का कालानुक्रमिक क्रम उनकी स्थापना के आधार पर है। सुंधा माता रोपवे जालौर राज्य का पहला रोपवे (2006) था। इसके पश्चात मंशापूर्णा करणी माता उदयपुर (2008), सावित्री माता पुष्कर (2016) तथा सामोद हनुमानजी जयपुर (2019) चालू हुए। यह

Downloaded from www.pdf.tube

68. (A) हस्ताक्षरकर्ता देशों के बीच असीमित उड़ानों की अनुमति देने वाले द्विपक्षीय समझौते
नागरिक उड्डयन के संदर्भ में 'ओपन स्काई नीति' दो या अधिक देशों के बीच ऐसे द्विपक्षीय समझौतों को संदर्भित करती है जो दोनों देशों की एयरलाइंस को असीमित उड़ानों के संचालन की स्वतंत्रता प्रदान करते हैं। इस नीति का प्राथमिक लक्ष्य अंतर्राष्ट्रीय हवाई परिवहन में सरकारी प्रतिबंधों को हटाना, व्यापारिक प्रतिस्पर्धा बढ़ाना तथा यात्रियों के लिए किराया किफायती बनाना होता है।

69. (B) कोलकाता, दिल्ली, बेंगलुरु, जयपुर
भारत के विभिन्न शहरों में पहली मेट्रो लाइन शुरु होने का सही कालानुक्रमिक क्रम इस प्रकार है। देश की प्रथम मेट्रो कोलकाता में 1984 में चालू हुई थी। तत्पश्चात दिल्ली में 2002 में, बेंगलुरु में 2011 में तथा जयपुर में 2015 में मेट्रो रेल सेवा का शुभारंभ हुआ। यह ऐतिहासिक क्रम देश में शहरी मेट्रो परिवहन के चरणबद्ध विकास को स्पष्ट प्रदर्शित करता है।

70. (A) विशाखापटनम बंदरगाह
आंध्र प्रदेश के तट पर स्थित विशाखापटनम बंदरगाह भारत का सबसे गहरा, भू-बद्ध और सुरक्षित प्राकृतिक बंदरगाह माना जाता है। यह बंदरगाह 'डॉल्फिन नोज़' नामक एक विशाल पहाड़ी द्वारा समुद्र की तेज लहरों और चक्रवाती तूफानों से सुरक्षित रहता है। इसकी प्राकृतिक गहराई और सुरक्षित बनावट इसे बड़े जहाजों के आवागमन तथा नौसैनिक गतिविधियों हेतु देश का सर्वोत्कृष्ट बंदरगाह बनाती है।

71. (D) हल्दिया/कोलकाता बंदरगाह
कोलकाता एवं हल्दीया बंदरगाह कॉम्प्लेक्स भारत का एकमात्र प्रमुख नदीय बंदरगाह है। यह बंदरगाह प्रत्यक्ष समुद्री तट पर स्थित न होकर हुगली नदी के किनारे निर्मित किया गया है। समुद्री जहाजों को बंगाल की खाड़ी से नदी मार्ग के माध्यम से बंदरगाह तक लाया जाता है। यह पूर्वी तथा उत्तर-पूर्वी भारत के विदेशी व्यापार के लिए एक महत्वपूर्ण प्रवेश द्वार प्रदान करता है।

72. (B) मुंद्रा-पानीपत पाइपलाइन
गुजरात के मुंद्रा बंदरगाह से हरियाणा स्थित पानीपत रिफाइनरी तक बिछाई गई मुंद्रा-पानीपत पाइपलाइन भारत की सबसे लंबी कच्चे तेल की पाइपलाइन है। इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन द्वारा संचालित यह विशाल पाइपलाइन आयातित कच्चे तेल को तटीय बंदरगाहों से उत्तरी भारत की रिफाइनरियों तक सुरक्षित और निरंतर पहुँचाने का कार्य करती है, जिससे देश के आंतरिक क्षेत्रों में ईंधन आपूर्ति सुचारु बनी रहती है।

73. (C) पीपावाव पोर्ट
गुजरात का पीपावाव बंदरगाह निजी क्षेत्र का एक गैर-प्रमुख बंदरगाह है जो गुजरात मैरिटाइम बोर्ड के अधीन आता है। इसके विपरीत, जवाहरलाल नेहरू पोर्ट, कामराजार पोर्ट तथा न्यू मंगलोर पोर्ट भारत सरकार के प्रमुख बंदरगाह प्राधिकरण अधिनियम के तहत विनियमित होने वाले केंद्र शासित प्रमुख बंदरगाह हैं। अतः स्वामित्व और वैधानिक स्थिति के आधार पर पीपावाव बंदरगाह अन्य तीनों से बेमेल है।

74. (A) केवल I, II और III
पीएम गति शक्ति मास्टर प्लान का उद्देश्य विभागीय साइलो को समाप्त कर बहु-मॉडल कनेक्टिविटी लाना है। इसमें भारतमाला एवं सागरमाला जैसी योजनाएँ शामिल हैं और यह सड़कों, रेलवे तथा हवाई अड्डों सहित सात मुख्य इंजनों पर आधारित है। चौथा कथन असत्य है क्योंकि यह योजना शहरी परिवहन को बाहर नहीं करती, अतः केवल प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय कथन ही सही पाए जाते हैं।

75. (A) निजी रियायतग्राही (निजी डेवलपर)
सार्वजनिक-निजी भागीदारी के BOT टोल मॉडल में निजी डेवलपर सड़क निर्माण का पूरा खर्च उठाता है और टोल वसूली से अपनी लागत निकालता है। इस व्यवस्था में यदि सड़क पर यातायात अपेक्षा से कम रहता है और टोल आय घटती है, तो इस वित्तीय घाटे एवं राजस्व जोखिम का संपूर्ण भार केवल निजी रियायतग्राही को ही वहन करना पड़ता है।

76. (B) 40%
हाइब्रिड वार्षिकी मॉडल (HAM) में सड़क निर्माण अवधि के दौरान परियोजना की कुल लागत का 40 प्रतिशत हिस्सा सरकार द्वारा किस्तों में दिया जाता है। शेष 60 प्रतिशत पूंजी निजी डेवलपर द्वारा लगाई जाती है। निर्माण कार्य पूर्ण होने के बाद सरकार निजी डेवलपर को शेष राशि का भुगतान छमाही वार्षिकी किस्तों के रूप में ब्याज सहित नियमित रूप से करती है।

77. (C) 7
पीएम गति शक्ति राष्ट्रीय मास्टर प्लान देश में बुनियादी ढांचे और लॉजिस्टिक्स क्षेत्र को मजबूत करने हेतु औपचारिक रूप से 7 प्रमुख इंजनों द्वारा संचालित होता है। इन सात इंजनों में सड़कें, रेलवे, हवाई अड्डे, बंदरगाह, सार्वजनिक परिवहन, जलमार्ग तथा लॉजिस्टिक्स अवसंरचना शामिल हैं। ये सभी सात घटक मिलकर देश में निर्बाध बहु-मॉडल कनेक्टिविटी का सफल निर्माण सुनिश्चित करते हैं।

78. (A) हैंडलिंग लागत को कम करने के लिए परिवहन साधनों में निर्बाध माल स्थानांतरण
मल्टी-मॉडल लॉजिस्टिक्स पार्क स्थापित करने का सबसे प्रत्यक्ष और मुख्य लाभ सड़क, रेल तथा अन्य परिवहन साधनों के बीच माल का निर्बाध और त्वरित स्थानांतरण सुनिश्चित करना है। यह एकीकृत अवसंरचना माल की चढ़ाई-उतराई और भंडारण प्रक्रिया को अत्यधिक कुशल बनाती है, जिससे हैंडलिंग लागत कम होती है तथा राज्य के व्यापारियों को तीव्र आपूर्ति श्रृंखला का सीधा लाभ मिलता है।

NODIA

79. (A) P-3, Q-1, R-2, S-4
भारत के प्रमुख राष्ट्रीय जलमार्गों का उनकी संबंधित नदी प्रणालियों के साथ सही सुमेल इस प्रकार है। NW-1 गंगा-भागीरथी-हुगली नदी पर, NW-2 ब्रह्मपुत्र नदी पर, NW-3 केरल की वेस्ट कोस्ट नहर पर तथा NW-4 कृष्णा और गोदावरी नदियों पर स्थित है। यह सुमेल भारत के प्रमुख अंतर्देशीय जलमार्ग नेटवर्क की सही भौगोलिक स्थिति को पूर्णतः स्पष्ट एवं सत्य प्रदर्शित करता है।

(D) 100%

83. भारतीय राष्ट्रीय राजमार्गों पर सड़क दुर्घटनाओं के कारण होने वाली मौतों को कम करने में सांख्यिकीय रूप से निम्नलिखित में से कौन-सा प्रशासनिक हस्तक्षेप सबसे प्रभावी है?
(A) सभी राष्ट्रीय मुख्य राजमार्गों का न्यूनतम आठ लेन तक अनिवार्य विस्तार
(B) गति कम करने के लिए प्रत्येक दस किलोमीटर के अंतराल पर टोल वसूली प्लाजा का निर्माण
(C) रात के समय वाणिज्यिक माल परिवहन की आवाजाही पर पूर्ण प्रतिबंध
(D) गति सीमा, हेलमेट नियमों और सीटबेल्ट अनुपालन का कड़ाई से प्रवर्तन

84. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A) : PMGSY के तहत निर्मित सड़कों को आधिकारिक तौर पर राष्ट्रीय राजमार्गों के रूप में वर्गीकृत और अनुरक्षित किया जाता है।
कारण (R) : PMGSY असंपर्कित ग्रामीण बसावटों को बारहमासी सड़क संपर्क प्रदान करने के लिए शुरु की गई एक केंद्र प्रायोजित योजना है।
उपर्युक्त कथनों के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
(A) (A) और (R) दोनों सही हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है
(B) (A) और (R) दोनों सही हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है
(C) (A) सही है लेकिन (R) गलत है
(D) (A) गलत है लेकिन (R) सही है

85. 'वंदे भारत एक्सप्रेस' (शुरुआत में ट्रेन 18 के रूप में जानी जाती थी), जो राजस्थान सहित कई मार्गों पर संचालित होती है, भारतीय रेलवे के लिए एक महत्वपूर्ण तकनीकी बदलाव का प्रतिनिधित्व करती है क्योंकि:
(A) यह देश की पहली पूरी तरह से आयातित चुंबकीय उत्प्लावन यात्री सेवा का प्रतिनिधित्व करती है
(B) यह विशेष रूप से संकीर्ण-गेज पर्वतीय विरासत गलियारों के साथ संचालन के लिए बनाई गई है
(C) यह एक स्व-प्रणोदित, सेमी-हाई-स्पीड ट्रेन सेट है जिसमें किसी अलग इंजन (लोकोमोटिव) की आवश्यकता नहीं होती है
(D) यह मुख्य रूप से एक उच्च क्षमता वाली समर्पित डबल-स्टैक कंटेनर मालगाड़ी के रूप में कार्य करती है

86. राजस्थान अपनी लक्जरी पर्यटक ट्रेनों के लिए प्रसिद्ध है जो विरासत पर्यटन प्रदान करती हैं। निम्नलिखित में से कौन-सी लक्जरी ट्रेन मुख्य रूप से राजस्थान के भीतर संचालित नहीं होती है या राजस्थान पर केंद्रित नहीं है?
(A) डेक्कन ओडिसी
(B) पैलेस ऑन व्हील्स
(C) रॉयल राजस्थान ऑन व्हील्स
(D) महाराजा एक्सप्रेस

87. सीमा सड़क संगठन (BRO) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह रक्षा मंत्रालय के तहत कार्य करता है।
II. यह मुख्य रूप से भारत के सीमावर्ती क्षेत्रों में सड़क नेटवर्क का विकास करता है।
III. यह भूटान और अफगानिस्तान जैसे मित्र पड़ोसी देशों में सड़क निर्माण परियोजनाएं भी चलाता है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

88. भारत में बहु-मॉडल लॉजिस्टिक्स के संदर्भ में, 'RO-RO' (रोल-ऑन/रोल-ऑफ) सेवा का आमतौर पर क्या अर्थ है?
(A) NHAI द्वारा प्रमुख एक्सप्रेसवे निर्माण पहलों की निरंतर शुरुआत और रोलआउट
(B) भरे हुए वाणिज्यिक ट्रकों को फ्लैटबेड रेल वैगनों पर सीधे गंतव्य तक पहुंचाना
(C) शहरी मेट्रो रेल प्रणालियों और नगरपालिका बस मार्गों के बीच निर्बाध यात्री पारगमन स्थानांतरण
(D) समुद्री मालवाहक जहाज जो विशेष ओवरहेड गैन्ट्री क्रेन का उपयोग करके कंटेनरयुक्त माल लोड करते हैं

89. भारत की निम्नलिखित ऐतिहासिक 20-वर्षीय सड़क विकास योजनाओं को उनकी शुरुआत के सही कालानुक्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. बॉम्बे प्लान
2. लखनऊ प्लान
3. नागपुर प्लान
सही क्रम चुनिए:
(A) 3, 1, 2
(B) 1, 3, 2
(C) 3, 2, 1
(D) 2, 1, 3

90. राष्ट्रीय राजमार्ग विकास परियोजना (NHDP) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. स्वर्णिम चतुर्भुज को NHDP के चरण I के तहत लागू किया गया था।
II. उत्तर-दक्षिण और पूर्व-पश्चिम गलियारों को NHDP के चरण II के तहत लागू किया गया था।
III. उत्तर-दक्षिण गलियारा श्रीनगर को कन्याकुमारी से जोड़ता है।
IV. पूर्व-पश्चिम गलियारा पोरबंदर को सिलचर से जोड़ता है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल I, III और IV
(C) केवल II, III और IV
(D) I, II, III और IV

Click Here to Buy book on Flipkart

अध्याय 10
भारत का व्यापार

1. स्वतंत्रता के बाद से भारत के व्यापार संतुलन की ऐतिहासिक प्रवृत्ति का सबसे सटीक वर्णन निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प करता है?
(A) लगातार व्यापार अधिशेष
(B) प्रत्येक वर्ष लगातार व्यापार घाटा
(C) कभी-कभार व्यापार अधिशेष, लेकिन अधिकांशतः व्यापार घाटा
(D) समान आयात और निर्यात जिसके परिणामस्वरूप संतुलित व्यापार हो

2. भारत की निर्यात वस्तुओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. भारत के कुल वस्तु निर्यात में इंजीनियरिंग सामान की हिस्सेदारी लगातार सबसे अधिक रहती है।
II. परिष्कृत पेट्रोलियम उत्पाद भारत की शीर्ष पांच निर्यात वस्तुओं में शामिल हैं।
III. राजस्थान मुख्य रूप से भारी मशीनरी और कच्चे तेल के निर्यात में योगदान देता है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

3. यदि वैश्विक कच्चे तेल की कीमतों में तीव्र वृद्धि होती है, तो भारत की आयात संरचना को देखते हुए, इसके समष्टि अर्थशास्त्र सूचकांकों पर निम्नलिखित में से कौन-सा सबसे प्रत्यक्ष और तात्कालिक प्रभाव पड़ेगा?
(A) कुल व्यापार अधिशेष में उल्लेखनीय वृद्धि
(B) भारतीय रुपये के मूल्य में तीव्र मूल्यवृद्धि
(C) घरेलू मूल्य मुद्रास्फीति में तत्काल कमी
(D) चालू खाता घाटे (सीएडी) का बढ़ना

4. भारत के कुल वस्तु निर्यात में हिस्सेदारी के आधार पर निम्नलिखित देशों को अवरोही (घटते) क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. संयुक्त राज्य अमेरिका
2. संयुक्त अरब अमीरात
3. चीन
4. यूनाइटेड किंगडम
(A) 1, 2, 3, 4
(B) 1, 3, 2, 4
(C) 2, 1, 3, 4
(D) 3, 1, 2, 4

5. किसी देश के व्यापार संतुलन को विशुद्ध रूप से किसके अंतर के रूप में परिभाषित किया जाता है?
(A) विदेशी मुद्रा भंडार के कुल आवक और जावक प्रेषण प्रवाह
(B) निर्यात की गई सेवाओं और आयातित सेवा व्यापार का कुल व्यावसायिक मूल्य
(C) वस्तु निर्यात और वस्तु आयात का कुल मूल्य
(D) वस्तुओं और सेवाओं के विदेशी निर्यात और आयात का संयुक्त बाजार मूल्य

6. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A) : किसी देश के व्यापार संतुलन में घाटा हो सकता है, लेकिन फिर भी उसके चालू खाते में अधिशेष हो सकता है।
कारण (R) : चालू खाते में वस्तुओं और सेवाओं के व्यापार के साथ-साथ निवल आय और निवल चालू हस्तांतरण शामिल होते हैं।
(A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) अभिकथन (A) सही है, लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) अभिकथन (A) गलत है, लेकिन कारण (R) सही है।

7. भारत की विदेश व्यापार नीति (एफटीपी) 2023 निर्यात प्रोत्साहन के दृष्टिकोण को किसमें परिवर्तित करती है?
(A) प्रत्यक्ष नकद सब्सिडी से वैधानिक कर छूट में
(B) मात्रात्मक कोटा से घरेलू शुल्क बाधाओं में
(C) अधिमान्य द्विपक्षीय व्यापार से बहुपक्षीय व्यापार में
(D) प्रोत्साहन-आधारित व्यवस्था से शुल्क छूट और माफी-आधारित व्यवस्था में

8. भारत में विशेष आर्थिक क्षेत्रों (एसईज़ेड) के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?
(A) एसईज़ेड की इकाइयां घरेलू बिक्री पर वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) से पूरी तरह मुक्त हैं।
(B) एसईज़ेड को विशुद्ध रूप से व्यापार संचालन और शुल्कों के उद्देश्य से विदेशी क्षेत्र माना जाता है।
(C) भारत में सभी एसईज़ेड विशेष रूप से केंद्र सरकार द्वारा स्थापित और प्रबंधित किए जाते हैं।

Downloaded from www.pdf.tube

कम हो जाएगी।

43. भारत के वस्तु व्यापार घाटे के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. आयातित कच्चे तेल की उच्च घरेलू खपत।
II. आभूषण निर्माण और निवेश के लिए सोने का अत्यधिक आयात।
III. भारत के आईटी और सॉफ्टवेयर सेवा निर्यात में मजबूत वृद्धि।
IV. आयातित एक्टिव फार्मास्युटिकल इंग्रेडिएंट्स (एपीआई) और इलेक्ट्रॉनिक्स पर उच्च निर्भरता।
उपर्युक्त में से कौन-से कथन भारत के वस्तु व्यापार घाटे में योगदान देने वाले संरचनात्मक कारण हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल I, II और IV
(C) केवल II, III और IV
(D) केवल I, III और IV

44. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I : विदेश व्यापार महानिदेशालय (डीजीएफटी) आयातक-निर्यातक कोड (आईईसी) जारी करता है, जो भारत में आयात/निर्यात व्यवसाय शुरु करने के लिए अनिवार्य है।
कथन II : राष्ट्रीय सुरक्षा और पर्यावरण संरक्षण के हित में डीजीएफटी के पास कुछ वस्तुओं के आयात और निर्यात को विनियमित, प्रतिबंधित या प्रतिबंधित करने का अधिकार है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।

45. भारत के द्विपक्षीय वस्तु व्यापार संतुलन के संबंध में निम्नलिखित देशों में से विषम की पहचान कीजिए (जहां भारत आमतौर पर तीन के साथ व्यापार घाटे में रहता है, लेकिन एक के साथ अधिशेष में रहता है):
(A) चीन
(B) संयुक्त राज्य अमेरिका
(C) सऊदी अरब
(D) इराक

46. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन विदेश व्यापार पर विनिमय दर के प्रभाव का सही वर्णन करता है?
(A) रुपये का मूल्यह्रास भारत में आयात की अंतिम (लैंडेड) लागत को बढ़ाता है।
(B) एक अतिमूल्यांकित घरेलू विनिमय दर विदेशी आयातों को हतोत्साहित करते हुए निर्यात को व्यवस्थित रुप से प्रोत्साहित करती है।
(C) रणनीतिक मुद्रा अवमूल्यन प्राथमिक रूप से किसी देश के कुल आयात को बढ़ावा देने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला एक मौद्रिक तंत्र है।
(D) निरंतर विनिमय दर में उतार-चढ़ाव का अंतरराष्ट्रीय व्यापार की मात्रा या कुल मूल्य पर कोई संरचनात्मक प्रभाव नहीं पड़ता है।

NODIA

47. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए:
सूची I : (व्यापार वित्त/बीमा शब्द)
P. व्यावसायिक जोखिम
Q. राजनीतिक जोखिम
R. निर्यात ऋण बीमा
S. शिपमेंट से पूर्व वित्तपोषण
सूची II : (विवरण)
1. निर्यात से पहले सामान के विनिर्माण या पैकिंग के लिए बैंकों द्वारा निर्यातकों को प्रदान किया जाने वाला ऋण
2. खरीदार के दिवालियापन या लंबे समय तक भुगतान न करने (चूक) से उत्पन्न होने वाला जोखिम
3. विदेशी खरीदारों द्वारा भुगतान में चूक के खिलाफ सुरक्षा
4. खरीदार के देश में युद्ध, अचानक आयात प्रतिबंध, या विदेशी मुद्रा प्रतिबंधों से उत्पन्न होने वाला जोखिम
(A) P-4, Q-2, R-1, S-3
(B) P-2, Q-4, R-1, S-3
(C) P-2, Q-4, R-3, S-1
(D) P-3, Q-1, R-2, S-4

48. 'कलादान मल्टी-मॉडल ट्रांजिट ट्रांसपोर्ट प्रोजेक्ट' का उद्देश्य भारत और किस पड़ोसी देश के बीच व्यापार और कनेक्टिविटी को सुगम बनाना है?
(A) बांग्लादेश
(B) भूटान
(C) नेपाल
(D) म्यांमार

49. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रुप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A) : बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा 'चाइना प्लस वन' रणनीति अपनाने से भारत के निर्यात क्षेत्र के लिए महत्वपूर्ण अवसर पैदा हुए हैं।
कारण (R) : वैश्विक निगम आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधानों को कम करने के लिए किसी एक देश पर अत्यधिक निर्भरता से हटकर अपनी आपूर्ति श्रृंखलाओं का विविधीकरण करना चाहते हैं।
(A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) अभिकथन (A) सही है, लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) अभिकथन (A) गलत है, लेकिन कारण (R) सही है।

50. भारत के सेवा निर्यात टोकरी में, ऐतिहासिक रूप से किस क्षेत्र का प्रभुत्व रहा है, जिससे सेवा व्यापार खाते में लगातार अधिशेष सुनिश्चित हुआ है?
(A) अंतरराष्ट्रीय यात्रा और पर्यटन सेवाएं
(B) सॉफ्टवेयर और आईटी-सक्षम सेवाएं
(C) वैश्विक परिवहन और माल वाहक सेवाएं
(D) वाणिज्यिक वित्तीय और बीमा सेवाएं

51. 1991 के आर्थिक सुधारों से पहले भारत की विदेश व्यापार नीतियों के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए:

गलियारे (डीएफसी)

17. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I : मुक्त व्यापार समझौतों (एफटीए) का मूल उद्देश्य सदस्य देशों के बीच शुल्क (टैरिफ) और गैर-शुल्क बाधाओं को समाप्त करना या कम करना है।
कथन II : भारत ने अपने घरेलू विनिर्माण और कृषि क्षेत्रों को सस्ते आयात में संभावित वृद्धि से बचाने के लिए क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक भागीदारी (आरसीईपी) से बाहर निकलने का विकल्प चुना।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।

18. भारत के व्यापार घाटे के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए:
(A) व्यापार घाटा तब होता है जब किसी दी गई अवधि में आयात का मूल्य निर्यात के मूल्य से अधिक हो जाता है।
(B) लगातार बढ़ता वस्तु व्यापार घाटा हमेशा चालू खाता अधिशेष की ओर ले जाता है।
(C) आयातित कच्चे तेल पर भारत की संरचनात्मक निर्भरता इसके लगातार बने रहने वाले व्यापार घाटे में एक प्रमुख योगदानकर्ता है।
(D) सोने और इलेक्ट्रॉनिक्स का आयात वस्तु व्यापार घाटे में योगदान देने वाले महत्वपूर्ण कारक हैं।

19. विदेश व्यापार महानिदेशालय (डीजीएफटी), जो भारत की विदेश व्यापार नीति का निर्माण और कार्यान्वयन करता है, किस मंत्रालय के तहत एक सम्बद्ध कार्यालय के रूप में कार्य करता है?
(A) वित्त मंत्रालय
(B) विदेश मंत्रालय
(C) सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय
(D) वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

20. हाल के वित्तीय वर्षों में, कौन-सा देश लगातार भारत के वस्तु आयात का सबसे बड़ा स्रोत रहा है?
(A) चीन
(B) संयुक्त राज्य अमेरिका
(C) रूस
(D) सऊदी अरब

21. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A) : भारतीय रुपये में भारी मूल्यह्रास सामान्यतः वैश्विक बाजार में भारतीय निर्यात को अधिक प्रतिस्पर्धी बनाता है।

कारण (R) : मूल्यह्रास से निर्यात-उन्मुख विनिर्माण में उपयोग किए जाने वाले आयातित कच्चे माल की लागत कम हो जाती है।
(A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) अभिकथन (A) सही है, लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) अभिकथन (A) गलत है, लेकिन कारण (R) सही है।

22. भारतीय निर्यात ऋण गारंटी निगम (ईसीजीसी) का प्राथमिक कार्य क्या है?
(A) निर्यातकों को भुगतान जोखिमों के विरुद्ध ऋण बीमा प्रदान करना
(B) छोटे पैमाने के निर्यातकों को प्रत्यक्ष नकद सब्सिडी और वित्तीय अनुदान प्रदान करना
(C) अंतरराष्ट्रीय कृषि निर्यात के लिए गुणवत्ता मानकों का निर्माण और कार्यान्वयन करना
(D) केंद्रीय बैंक के कुल विदेशी मुद्रा भंडार को विनियमित और प्रबंधित करना

23. पड़ोसी देशों के साथ भारत के व्यापारिक संबंधों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. बांग्लादेश दक्षिण एशिया में भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार है।
II. नेपाल से निर्मित वस्तुओं के अधिक आयात के कारण भारत का नेपाल के साथ व्यापार घाटा बना हुआ है।
III. स्थानीय द्विपक्षीय व्यापार को बढ़ावा देने के लिए भारत-बांग्लादेश सीमा पर 'बॉर्डर हाट' स्थापित किए गए हैं।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल I और III
(C) केवल II और III
(D) I, II और III

24. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए:
सूची I : (वैश्विक व्यापार परिघटना)
P. पश्चिमी बाजारों में वैश्विक मंदी
Q. लाल सागर नौवहन (शिपिंग) मार्गों में व्यवधान
R. यूएस फेडरल रिजर्व की ब्याज दरों में वृद्धि
S. आईटी सेवाओं में वैश्विक उछाल
सूची II : (भारतीय व्यापार पर सम्भावित प्रभाव)
1. भारत के सॉफ्टवेयर निर्यात राजस्व में वृद्धि
2. पूंजी का बहिर्वाह और रुपये का मूल्यह्रास
3. भाड़ा (फ्रेट) लागत में वृद्धि और शिपमेंट में देरी
4. भारतीय कपड़ा और हीरे के निर्यात की मांग में गिरावट
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-4, Q-2, R-3, S-1
(D) P-1, Q-3, R-4, S-2

25. भारत अपने प्रवासी समुदाय द्वारा भेजे गए प्रेषण (रेमिटेंस) पर अत्यधिक निर्भर है। भुगतान संतुलन (बीओपी) लेखांकन में, विदेशों से भारतीयों द्वारा प्राप्त व्यक्तिगत प्रेषण दर्ज किए जाते हैं:
(A) प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के रूप में पूंजी खाते के अंतर्गत
(B) बाह्य वाणिज्यिक उधार के रूप में पूंजी खाते के अंतर्गत

Click Here to Buy book on Amazon

60. विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) के तहत विवाद निपटान निकाय (डीएसबी) का प्राथमिक कार्य क्या है?
(A) भुगतान संतुलन संकट का सामना कर रहे विकासशील देशों को वित्तीय ऋण प्रदान करना
(B) डब्ल्यूटीओ समझौतों के आधार पर सदस्य देशों के बीच व्यापार विवादों का निर्णय (अधिनिर्णयन) करना
(C) सदस्य देशों की घरेलू मुद्रा विनिमय दरों को सख्ती से विनियमित करना
(D) कच्चे तेल और बहुमूल्य धातुओं के लिए वैश्विक कीमतें निर्धारित करना

61. यदि भारत आसियान गुट के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर करता है जो आसियान देशों से उत्पन्न होने वाले इलेक्ट्रॉनिक सामानों पर आयात शुल्क को काफी कम करता है, तो 'उत्पत्ति के नियम' (रूल्स ऑफ ओरिजिन) खंड मुख्य रूप से किसे रोकने के लिए डिज़ाइन किया गया है?
(A) सदस्य आसियान देशों को घरेलू भारतीय बाजारों में प्राथमिक कृषि उपज का निर्यात करने से रोकना।
(B) गैर-सदस्यों को कम शुल्क का लाभ उठाने के लिए आसियान के माध्यम से सामान भेजने से रोकना।
(C) घरेलू भारतीय निर्माताओं को प्रतिस्पर्धी वैश्विक बाजारों में अपनी निर्यात बिक्री का विस्तार करने से रोकना।
(D) द्विपक्षीय अंतरराष्ट्रीय व्यापार में विदेशी मुद्रा का उपयोग सख्ती से रोकना।

62. भारत की कृषि थोक व्यापार संरचना में निम्नलिखित में से कौन-सी सबसे महत्वपूर्ण बाधा है?
(A) बाजार का विखंडन, उच्च कमीशन शुल्क और खराब कोल्ड स्टोरेज सुविधाएं
(B) अत्यधिक उन्नत और महंगी कंप्यूटरीकृत छंटाई (सॉर्टिंग) प्रणालियों पर संरचनात्मक अत्यधिक निर्भरता
(C) विदेशी बहुराष्ट्रीय निगमों द्वारा खेतों से सीधे कच्ची फसलों की अत्यधिक खरीद
(D) थोक कृषि उपज व्यापार में निजी उद्यम की भागीदारी पर पूर्ण वैधानिक प्रतिबंध

63. भारत के खुदरा वर्गीकरण में, कौन-सा प्रारूप विशेष रूप से विभिन्न श्रेणियों में कई ब्रांडों के उत्पादों को बेचने वाले एक ही कॉर्पोरेट इकाई द्वारा स्वामित्व और संचालित स्टोरों को संदर्भित करता है?
(A) सिंगल-ब्रांड कॉर्पोरेट रिटेल
(B) पारंपरिक किराना असंगठित खुदरा
(C) मल्टी-ब्रांड रिटेल
(D) डायरेक्ट सेलिंग नेटवर्क मार्केटिंग

64. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन भारत में ई-कॉमर्स के लिए वर्तमान नियामक ढांचे को सटीक रूप से दर्शाता है?
(A) मार्केटप्लेस मॉडल के तहत काम करने वाले ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म तीसरे पक्ष के विक्रेताओं द्वारा बेचे जाने वाले सामानों की गुणवत्ता के लिए कानूनी रूप से उत्तरदायी हैं।
(B) विदेशी स्वामित्व वाली ई-कॉमर्स संस्थाओं को अपने स्वयं के धन से स्थायी रूप से अत्यधिक अनुचित छूट देने की अनुमति है।
(C) एफडीआई वाले इन्वेंट्री-आधारित ई-कॉमर्स मॉडल अपने इन-हाउस ब्रांडों का पक्ष लेने के लिए सर्च एल्गोरिदम में हेरफेर करने के लिए स्वतंत्र हैं।
(D) स्वचालित मार्ग के तहत ई-कॉमर्स के मार्केटप्लेस मॉडल में 100% प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) की अनुमति है।

65. उस बंदरगाह की पहचान कीजिए जो प्रमुख बंदरगाह न्यास अधिनियम, 1963 के तहत केंद्र सरकार द्वारा सीधे प्रशासित 'प्रमुख बंदरगाहों' की श्रेणी में नहीं आता है:
(A) चेन्नई पोर्ट
(B) कोचीन पोर्ट
(C) मुंद्रा पोर्ट
(D) मोर्मुगाओ पोर्ट

66. भारत के व्यापार रसद (लॉजिस्टिक्स) और सीमा शुल्क (कस्टम्स) बुनियादी ढांचे के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए:
(A) राष्ट्रीय आइसगेट पोर्टल भारतीय सीमा शुल्क संचालन के लिए केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिक डेटा इंटरचेंज नेटवर्क के रूप में कार्य करता है।
(B) एईओ कार्यक्रम ने निर्यातकों के लिए सीमा शुल्क निकासी को धीमा कर दिया है।
(C) नामित अंतर्देशीय कंटेनर डिपो (आईसीडी) कार्यात्मक शुष्क बंदरगाहों के रूप में कार्य करते हैं जो अंतर्देशीय सीमा शुल्क निकासी को सक्षम बनाते हैं।
(D) समर्पित माल गलियारे (डीएफसी) भारी माल की आवाजाही को यात्री रेलवे यातायात से अलग करते हैं।

67. ऐतिहासिक 'भारत-यूएई व्यापक आर्थिक भागीदारी समझौता' (सीईपीए), जो 2022 में लागू हुआ, विशेष रूप से पांच वर्षों में द्विपक्षीय गैर-तेल व्यापार को किस लक्ष्य मूल्य तक बढ़ाने का लक्ष्य रखता है?
(A) 10 अरब अमेरिकी डॉलर
(B) 50 अरब अमेरिकी डॉलर
(C) 500 अरब अमेरिकी डॉलर
(D) 100 अरब अमेरिकी डॉलर

68. एक निरंतर उच्च व्यापार घाटा आमतौर पर घरेलू मुद्रा के मूल्य पर गिरावट का दबाव डालता है। ऐसी स्थितियों में भारतीय रुपये के अत्यधिक अचानक मूल्यह्रास को रोकने के लिए मानक केंद्रीय बैंक हस्तक्षेप क्या है?
(A) विदेशी मुद्रा भंडार से डॉलर बेचना
(B) अतिरिक्त घरेलू मुद्रा नोटों की अनियंत्रित छपाई
(C) सभी विदेशी आयातों पर तत्काल, पूर्ण प्रतिबंध लगाना
(D) केंद्रीय बैंक की ब्याज दरों को घटाकर शून्य प्रतिशत करना

69. निम्नलिखित में से कौन-सा कार्य विदेश व्यापार महानिदेशालय (डीजीएफटी) द्वारा नहीं किया जाता है?

NODIA

34. रत्न एवं आभूषण निर्यात प्रोत्साहन परिषद (जीजेईपीसी) भारत के निर्यात में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जीजेईपीसी द्वारा समर्थित बहुमूल्य रत्नों की कटाई और पॉलिशिंग का काम मुख्य रूप से किन दो शहरों के युग्म में केंद्रित है?
(A) लुधियाना और पानीपत
(B) सूरत और जयपुर
(C) कोयंबटूर और मदुरै
(D) कानपुर और आगरा

35. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A) : भारत अक्सर विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) में 'पीस क्लॉज़' का आह्वान करता है।
कारण (R) : पीस क्लॉज़ विकासशील देशों को तत्काल कानूनी कार्रवाई का सामना किए बिना खाद्य सुरक्षा कार्यक्रमों के लिए खरीदे गए कृषि उत्पादों के लिए डब्ल्यूटीओ की सब्सिडी सीमाओं का उल्लंघन करने की अनुमति देता है।
(A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) अभिकथन (A) सही है, लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) अभिकथन (A) गलत है, लेकिन कारण (R) सही है।

36. अंतरराष्ट्रीय व्यापार समझौतों के संदर्भ में, व्यापक आर्थिक भागीदारी समझौता (सीईपीए) एक मानक मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) से किस प्रकार भिन्न है?
(A) सीईपीए वस्तुओं पर शुल्क (टैरिफ) कटौती के अलावा सेवाओं, निवेश और सहयोग को भी शामिल करता है।
(B) सीईपीए सेवाओं के व्यापार और निवेश को स्पष्ट रूप से बाहर रखते हुए केवल भौतिक वस्तुओं को शामिल करता है।
(C) सीईपीए कानूनी रूप से सदस्य संप्रभु राष्ट्रों को गैर-सदस्य तीसरे देशों के साथ द्विपक्षीय व्यापार करने से रोकता है।
(D) सीईपीए आर्थिक शुल्क में कमी के प्रावधानों को शामिल किए बिना विशुद्ध रूप से एक सैन्य रक्षा गठबंधन के रूप में कार्य करता है।

37. भारत के घरेलू कृषि बाजार ढांचे के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म गलत सुमेलित है?
(A) एपीएमसी - कृषि उपज मंडी समिति
(B) ई-नाम - कृषि जिंसों के लिए राष्ट्रीय ऑनलाइन व्यापार मंच
(C) एमएसपी - निजी व्यापारियों के लिए कानूनी रूप से अनिवार्य अधिकतम बिक्री मूल्य
(D) एफसीआई - केंद्रीय स्तर पर खाद्यान्नों की खरीद के लिए प्राथमिक एजेंसी

38. भारत में खुदरा संरचना के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. भारत में खुदरा व्यापार में असंगठित क्षेत्र का अत्यधिक बहुमत है।
II. किराना दुकानों और स्थानीय स्ट्रीट वेंडरों को संगठित खुदरा के तहत वर्गीकृत किया गया है।
III. यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (यूपीआई) को अपनाने से असंगठित खुदरा क्षेत्र में लेन-देन का महत्वपूर्ण रूप से डिजिटलीकरण हुआ है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल I और III
(C) केवल II और III
(D) I, II और III

39. भारत सरकार द्वारा बढ़ावा दिए जा रहे 'डिजिटल कॉमर्स के लिए ओपन नेटवर्क' (ओएनडीसी) का निम्नलिखित में से कौन-सा उद्देश्य नहीं है?
(A) डिजिटल या इलेक्ट्रॉनिक नेटवर्क पर वस्तुओं और सेवाओं के आदान-प्रदान के लिए खुले नेटवर्क को बढ़ावा देना
(B) सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) को डिजिटल कॉमर्स परिदृश्य में एकीकृत करना
(C) विशिष्ट ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्मों से स्वतंत्र होकर उपभोक्ताओं को अधिक विकल्प प्रदान करना
(D) भारत में सभी ई-कॉमर्स संचालन पर पूर्ण सरकारी एकाधिकार स्थापित करना

40. पूर्वी तट के साथ उत्तर से दक्षिण की ओर भारत के निम्नलिखित प्रमुख बंदरगाहों के सही क्रम की पहचान कीजिए:
(A) हल्दिया - पारादीप - विशाखापत्तनम - चेन्नई
(B) पारादीप - हल्दिया - चेन्नई - विशाखापत्तनम
(C) हल्दिया - विशाखापत्तनम - पारादीप - चेन्नई
(D) विशाखापत्तनम - हल्दिया - पारादीप - चेन्नई

41. लॉजिस्टिक्स लागत को कम करने और कार्गो आवाजाही की दक्षता में सुधार के लिए, भारत सरकार ने मल्टी-मॉडल कनेक्टिविटी के लिए एक प्रमुख मास्टर प्लान शुरू किया, जिसे कहा जाता है:
(A) पीएम किसान संपदा योजना
(B) मेक इन इंडिया
(C) पीएम गति शक्ति
(D) विशुद्ध रूप से विमानन के लिए सागरमाला चरण II

42. यदि भारत किसी प्रमुख विकसित अर्थव्यवस्था के साथ मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) पर हस्ताक्षर करता है जो विदेशी ऑटोमोबाइल पर आयात शुल्क को तुरंत समाप्त कर देता है, तो भारतीय घरेलू बाजार के लिए सबसे सम्भावित तात्कालिक चुनौती क्या होगी?
(A) उस विकसित अर्थव्यवस्था में भारतीय ऑटोमोबाइल निर्यात में तत्काल भारी वृद्धि होगी।
(B) विदेशी आरक्षित मुद्राओं की तुलना में घरेलू मुद्रा के मूल्य में तुरंत 20 प्रतिशत की वृद्धि होगी।
(C) प्राथमिक कृषि और खाद्य क्षेत्र में खुदरा मूल्य मुद्रास्फीति अत्यधिक बढ़ जाएगी।
(D) घरेलू ऑटो कंपनियों को भारी कीमत प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ेगा, जिससे उनकी बाजार हिस्सेदारी

Downloaded from www.pdf.tube

(D) एसईज़ेड इकाइयों को किसी भी परिस्थिति में घरेलू शुल्क क्षेत्र (डीटीए) में अपने उत्पाद बेचने की अनुमति नहीं है।

9. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए:
सूची I : (निर्यात प्रोत्साहन परिषद/बोर्ड)
P. एपीडा
Q. एमपीडा
R. ईईपीसी
S. एफआईईओ
सूची II : (संबंधित वस्तु/क्षेत्र)
1. इंजीनियरिंग सामान
2. निर्यात प्रोत्साहन संगठनों का शीर्ष निकाय
3. कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद
4. समुद्री उत्पाद
(A) P-4, Q-3, R-1, S-2
(B) P-3, Q-4, R-2, S-1
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-1, Q-2, R-3, S-4

10. विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) में भारत की भागीदारी विभिन्न समझौतों द्वारा निर्देशित होती है। निम्नलिखित में से कौन-सा डब्ल्यूटीओ का समझौता नहीं है?
(A) ट्रिप्स (बौद्धिक संपदा अधिकारों के व्यापार संबंधी पहलू)
(B) ट्रिम्स (व्यापार संबंधी निवेश उपाय)
(C) गैट्स (सेवाओं में व्यापार पर सामान्य समझौता)
(D) नाफ्टा (उत्तर अमेरिकी मुक्त व्यापार समझौता)

11. निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प भारत द्वारा संबंधित क्षेत्रीय/व्यापक आर्थिक समझौतों पर हस्ताक्षर करने का सही कालानुक्रमिक क्रम दर्शाता है?
(A) दक्षिण एशियाई मुक्त व्यापार क्षेत्र (साफ्टा) - भारत-आसियान वस्तु व्यापार समझौता - भारत-यूएई सीईपीए
(B) भारत-आसियान वस्तु व्यापार समझौता - दक्षिण एशियाई मुक्त व्यापार क्षेत्र (साफ्टा) - भारत-यूएई सीईपीए
(C) दक्षिण एशियाई मुक्त व्यापार क्षेत्र (साफ्टा) - भारत-यूएई सीईपीए - भारत-आसियान वस्तु व्यापार समझौता
(D) भारत-यूएई सीईपीए - दक्षिण एशियाई मुक्त व्यापार क्षेत्र (साफ्टा) - भारत-आसियान वस्तु व्यापार समझौता

12. राजस्थान में कृषि जिंसों के घरेलू थोक व्यापार के संदर्भ में, ई-नाम (राष्ट्रीय कृषि बाजार) के कार्यान्वयन का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?
(A) देश भर में मौजूदा न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) ढांचे को पूरी तरह से समाप्त करना
(B) एपीएमसी मंडियों को इलेक्ट्रॉनिक रूप से जोड़कर एक एकीकृत बाजार का निर्माण करना
(C) घरेलू किसानों को स्थानीय भौतिक मंडियों के बाहर बेचने से रोकना
(D) बड़े निजी कॉर्पोरेट खरीदारों को थोक कृषि व्यापार में भाग लेने से प्रतिबंधित करना

13. भारत के खुदरा व्यापार की संरचना के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म सही सुमेलित है?
(A) असंगठित खुदरा - बड़े राष्ट्रीय श्रृंखला सुपरमार्केट और हाइपरमार्केट का व्यावसायिक संचालन
(B) प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) - सिंगल ब्रांड रिटेल में स्वचालित मार्ग के माध्यम से 100% तक अनुमति
(C) संगठित खुदरा - पारंपरिक आस-पड़ोस की किराना दुकानों की अनौपचारिक स्थापना
(D) मल्टी-ब्रांड रिटेल - बिना किसी प्रतिबंध के सभी व्यावसायिक क्षेत्रों में स्वचालित मार्ग से 100% तक अनुमति

14. भारत के व्यापार परिदृश्य में ई-कॉमर्स की भूमिका के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. भारत की एफडीआई नीति ई-कॉमर्स के मार्केटप्लेस मॉडल में स्वचालित मार्ग के तहत 100% एफडीआई की अनुमति देती है।
II. इन्वेंट्री-आधारित मॉडल के तहत काम करने वाली ई-कॉमर्स संस्थाओं को 100% एफडीआई की पूरी अनुमति है।
III. ई-कॉमर्स ने राजस्थान के जीआई (भौगोलिक संकेत) उत्पादों जैसे ब्लू पॉटरी और बगरू प्रिंट के निर्यात को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ावा दिया है।
IV. डिजिटल कॉमर्स के लिए ओपन नेटवर्क (ओएनडीसी) ई-कॉमर्स का लोकतंत्रीकरण करने और एकाधिकार को समाप्त करने की एक पहल है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) I, II और IV
(B) I, III और IV
(C) II, III और IV
(D) I, II, III और IV

15. भारत के निम्नलिखित प्रमुख समुद्री बंदरगाहों में से उनकी तटीय स्थिति के आधार पर विषम की पहचान कीजिए:
(A) दीनदयाल पोर्ट (कांडला)
(B) जवाहरलाल नेहरु पोर्ट (न्हावा शेवा)
(C) पारादीप पोर्ट
(D) न्यू मंगलोर पोर्ट

NODIA

16. राजस्थान की भू-आबद्ध (लैंडलॉक्ड) भौगोलिक स्थिति को देखते हुए, इसके अंतरराष्ट्रीय वस्तु व्यापार को सुगम बनाने के लिए निम्नलिखित में से कौन-सा व्यापार बुनियादी ढांचा घटक सबसे महत्वपूर्ण है?
(A) समुद्री सीमाओं के साथ विशेषीकृत तटीय आर्थिक क्षेत्र (सीईज़ेड)
(B) राज्य की क्षेत्रीय सीमाओं के भीतर स्थापित गहरे पानी के वाणिज्यिक बंदरगाह
(C) नदी के माध्यम से थोक माल परिवहन के लिए नामित व्यापक अंतर्देशीय राष्ट्रीय जलमार्ग
(D) अंतर्देशीय कंटेनर डिपो (आईसीडी) और समर्पित माल

(A) राष्ट्रीय व्यापार व्यवस्था की मुख्य विशेषता उच्च शुल्क (टैरिफ) और मात्रात्मक आयात प्रतिबंध थे।
(B) घरेलू बाजार उद्योगों की सुरक्षा के लिए व्यवस्थित आयात प्रतिस्थापन प्राथमिक आर्थिक रणनीति थी।
(C) राष्ट्रीय निर्यात टोकरी में चाय, जूट और सूती वस्त्र जैसी पारंपरिक वस्तुओं का बोलबाला था।
(D) एफडीआई को सक्रिय रूप से प्रोत्साहित किया जाता था और सभी क्षेत्रों में 100% तक की अनुमति थी।

52. भारत के कृषि क्षेत्र के निर्यात प्रदर्शन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. बासमती चावल और मसाले भारत की प्रमुख कृषि निर्यात वस्तुओं में शामिल हैं।
II. पिछले एक दशक से लगातार भारत वैश्विक बाजार में गेहूं का सबसे बड़ा निर्यातक है।
III. एपीडा अनुसूचित कृषि उत्पादों के निर्यात को बढ़ावा देने के लिए शीर्ष निकाय के रूप में कार्य करता है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

53. भारत सरकार द्वारा कोकिंग कोल और फेरोनिकल पर आयात शुल्क में अचानक कटौती का मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित में से किस घरेलू उद्योग को प्रत्यक्ष लाभ पहुंचाना है?
(A) वाणिज्यिक कपड़ा और परिधान क्षेत्र
(B) राष्ट्रीय फार्मास्युटिकल अनुसंधान क्षेत्र
(C) इस्पात विनिर्माण उद्योग
(D) निर्यात रत्न और आभूषण कटाई क्षेत्र

54. कुल वस्तु व्यापार मात्रा के संदर्भ में निम्नलिखित यूरोपीय देशों में से कौन-सा देश पारंपरिक रूप से यूरोपीय संघ (ईयू) के भीतर भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार है?
(A) जर्मनी
(B) फ्रांस
(C) इटली
(D) स्पेन

55. भारत के व्यापार संतुलन (बीओटी) के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. व्यापार संतुलन केवल मूर्त वस्तुओं के आयात और निर्यात पर केंद्रित है।
II. ऋणात्मक बीओटी यह दर्शाता है कि किसी देश का वस्तुओं का आयात उसकी वस्तुओं के निर्यात से अधिक है।
III. 1990 के बाद से अधिकांश वर्षों में भारत का बीओटी ऐतिहासिक रूप से धनात्मक (अधिशेष) रहा है।
IV. सॉफ्टवेयर सेवाओं के व्यापार को बीओटी की गणना से बाहर रखा गया है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) I, II और III
(B) I, II और IV
(C) II, III और IV
(D) I, III और IV

56. भुगतान संतुलन के संदर्भ में, 'विदेशी मुद्रा भंडार' में मुख्य रूप से क्या शामिल होता है?
(A) भारत भर के वाणिज्यिक बैंकों द्वारा रखे गए भौतिक स्वर्ण भंडार और अल्पकालिक विदेशी मुद्रा परिसंपत्तियां
(B) विदेशी मुद्रा परिसंपत्तियां (एफसीए), आरबीआई का स्वर्ण भंडार, विशेष आहरण अधिकार (एसडीआर), और आईएमएफ रिज़र्व ट्रेंच स्थिति
(C) विदेशी ऋणदाताओं से भारत सरकार द्वारा संचित कुल संप्रभु बाह्य ऋण साधन
(D) घरेलू भारतीय कंपनियों द्वारा प्रतिवर्ष पूरे किए गए सभी वस्तु निर्यातों का संचयी मौद्रिक मूल्य

57. विदेश व्यापार नीति (एफटीपी) 2023 कई नई अवधारणाएं पेश करती है। निम्नलिखित में से कौन-सा एफटीपी 2023 के मुख्य स्तंभों में से एक नहीं है?
(A) प्रोत्साहन से छूट की ओर बदलाव
(B) प्रौद्योगिकी के माध्यम से व्यापार सुगमता (ईज ऑफ डूइंग बिजनेस) को बढ़ावा देना
(C) सभी निर्यात परिचालनों का पूर्ण राष्ट्रीयकरण
(D) निर्यातकों, राज्यों और जिलों के माध्यम से सहयोगात्मक दृष्टिकोण

58. भारत के एसईज़ेड ढांचे से संबंधित निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म गलत सुमेलित है?
(A) घरेलू शुल्क क्षेत्र (डीटीए) - भारत के भीतर का वह क्षेत्र जो विशेष आर्थिक क्षेत्रों के बाहर है
(B) निवल विदेशी मुद्रा कमाई - एक निर्दिष्ट अवधि में धनात्मक संतुलन प्राप्त करने के लिए एसईज़ेड इकाइयों हेतु एक अनिवार्य आवश्यकता
(C) एसईज़ेड अधिनियम, 2005 - भारत में एसईज़ेड को कानूनी ढांचा प्रदान करने वाला केंद्रीय कानून
(D) निर्यात-उन्मुख इकाई (ईओयू) - एक ऐसी योजना जो कड़ाई से केवल निर्दिष्ट एसईज़ेड की भौतिक सीमाओं के भीतर संचालन तक सीमित है

59. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I : भारत में निर्यात प्रोत्साहन परिषदें (ईपीसी) केंद्र सरकार की वित्तीय सहायता द्वारा समर्थित गैर-लाभकारी संगठन हैं।
कथन II : निर्यातकों को विदेश व्यापार नीति के तहत लाभ उठाने के लिए संबंधित ईपीसी की सदस्यता और पंजीकरण-सह-सदस्यता प्रमाण पत्र (आरसीएमसी) प्राप्त करना अनिवार्य है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।

Click Here to Buy book on Flipkart

(C) एकपक्षीय हस्तांतरण के रूप में चालू खाते के अंतर्गत
(D) वस्तु व्यापार के रूप में चालू खाते के अंतर्गत

26. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन उदारीकरण के बाद (1991 के बाद) के युग में भारत की विदेश व्यापार संरचना की सही विशेषता बताता है?
(A) कुल निर्यात में प्राथमिक कृषि उत्पादों की हिस्सेदारी में भारी वृद्धि हुई है और यह निर्मित वस्तुओं से आगे निकल गई है।
(B) कुल निर्यात में सॉफ्टवेयर और आईटी-सक्षम सेवाओं की हिस्सेदारी में महत्वपूर्ण गिरावट आई है।
(C) भारत के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के प्रतिशत के रूप में इसके विदेशी व्यापार की मात्रा में लगातार गिरावट आई है।
(D) निर्यात की संरचना में निर्मित वस्तुओं और सेवाओं की ओर महत्वपूर्ण बदलाव आया है।

27. निम्नलिखित में से कौन-सा विशिष्ट क्षेत्र राजस्थान से कुल निर्यात मूल्य में उच्चतम प्रतिशत योगदान देता है?
(A) इंजीनियरिंग, कपड़ा, और रत्न एवं आभूषण
(B) विश्व स्तर पर निर्यात किए जाने वाले प्रसंस्कृत और जमे हुए समुद्री खाद्य उत्पाद
(C) उच्च तकनीक सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) हार्डवेयर घटक
(D) निष्कर्षण किया गया अपरिष्कृत कच्चा तेल और पेट्रोलियम उत्पाद

28. भारत की प्रमुख आयातित वस्तुओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. सोना और चांदी भारत के गैर-तेल आयात का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।
II. भारत खाद्य तेलों में पूरी तरह से आत्मनिर्भर है और इनके आयात पर कड़ा प्रतिबंध लगाता है।
III. इलेक्ट्रॉनिक सामान भारत की आयात टोकरी में सबसे तेजी से बढ़ते क्षेत्रों में से एक है।
IV. भारत में बड़े घरेलू कोयला भंडार होने के बावजूद कोयला, कोक और ब्रिकेट प्रमुख आयात वस्तुएं हैं।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से गलत है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II
(C) केवल III और IV
(D) केवल I, III और IV

29. भारत के कुल वस्तु निर्यात में हिस्सेदारी के आधार पर निम्नलिखित आर्थिक गुटों/क्षेत्रों को आरोही क्रम में (सबसे कम से सबसे अधिक) व्यवस्थित कीजिए:
1. सीआईएस (स्वतंत्र राज्यों का राष्ट्रकुल)
2. आसियान (दक्षिण-पूर्वी एशियाई राष्ट्रों का संगठन)
3. उत्तरी अमेरिका (यूएसए और कनाडा)
(A) 1, 2, 3
(B) 3, 2, 1
(C) 2, 1, 3
(D) 1, 3, 2

30. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I : व्यापार संतुलन चालू खाते की तुलना में एक व्यापक अवधारणा है क्योंकि इसमें वस्तुएं और सेवाएं दोनों शामिल हैं।
कथन II : कोई देश निवल अदृश्य मदों (सेवाएं, हस्तांतरण और आय) में अधिशेष के माध्यम से अपने व्यापार संतुलन घाटे की भरपाई कर सकता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।

31. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए:
सूची I : (लेन-देन)
P. आईटी सेवाओं का निर्यात
Q. एक भारतीय स्टार्ट-अप में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई)
R. विदेशी ऋण के मूलधन का पुनर्भुगतान
S. कच्चे तेल का आयात
सूची II : (भारत के भुगतान संतुलन में लेखांकन श्रेणी)
1. पूंजी खाता (अंतर्वाह)
2. चालू खाता (वस्तुओं में व्यापार)
3. चालू खाता (सेवाओं में व्यापार)
4. पूंजी खाता (बहिर्वाह)
(A) P-2, Q-1, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

32. भारत की विदेश व्यापार नीति के तहत 'निर्यात उत्कृष्ट शहर' (टीईई) पहल का सबसे उपयुक्त वर्णन निम्नलिखित में से कौन-सा है?
(A) ₹100 करोड़ से अधिक मूल्य की वस्तुओं का निर्यात करने वाले किसी भी निर्दिष्ट शहर को पूर्ण आयकर छूट प्रदान करता है।
(B) चयनित शहरों को सख्त विदेशी स्वामित्व नियमों के साथ स्थायी रूप से विशेष आर्थिक क्षेत्रों में परिवर्तित करता है।
(C) निर्दिष्ट निर्यात शहरों में स्थित सभी विनिर्माण इकाइयों के लिए घरेलू शुल्क क्षेत्र में बिक्री को सख्ती से प्रतिबंधित करता है।
(D) विशेषीकृत निर्यात सहायता प्रदान करने के लिए प्रमुख उत्पादक शहरों को मान्यता प्रदान करता है।

NODIA

33. सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी) के आधार पर राजस्थान में विकसित प्रमुख बहु-उत्पाद विशेष आर्थिक क्षेत्र (एसईज़ेड) निम्नलिखित में से कौन-सा है?
(A) बोरानाडा औद्योगिक एसईज़ेड, जोधपुर
(B) सीतापुरा औद्योगिक एसईज़ेड, जयपुर
(C) महिंद्रा वर्ल्ड सिटी
(D) नीमराणा औद्योगिक जापानी ज़ोन

(A) नए निर्यातकों के मार्गदर्शन के लिए 'निर्यात बंधु योजना' का प्रशासन करना
(B) प्रतिबंधित वस्तुओं के आयात के लिए दिशा-निर्देश जारी करना
(C) सभी अंतरराष्ट्रीय समुद्री बंदरगाहों पर सीधे सीमा शुल्क एकत्र करना
(D) विदेश व्यापार नीति का निर्माण और घोषणा करना

70. हाल के व्यापार परिदृश्य के आधार पर 'देश - भारत को प्रमुख आयात' का निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म गलत सुमेलित है?
(A) संयुक्त राज्य अमेरिका - कपड़ा और कच्चा जूट
(B) स्विट्जरलैंड - अनगढ़ सोना और बहुमूल्य धातुएं
(C) इराक - उच्च मात्रा में कच्चे पेट्रोलियम का आयात
(D) इंडोनेशिया - थर्मल कोयला और खाद्य पाम तेल

71. अंतरराष्ट्रीय व्यापार में, 'वास्तविक प्रभावी विनिमय दर' (आरईईआर) क्या मापती है?
(A) बहुपक्षीय समझौतों द्वारा स्थापित दो संप्रभु मुद्राओं के बीच निश्चित आधिकारिक विनिमय दर
(B) वैश्विक विदेशी विनिमय में प्रतिवर्ष लेन-देन की जाने वाली कुल भौतिक मुद्रा मात्रा
(C) बाहरी मुद्राओं के सापेक्ष घरेलू विनिमय का अनौपचारिक बाजार मूल्यांकन
(D) एक व्यापार टोकरी (बास्केट) के विरुद्ध मुद्रा का मुद्रास्फीति-समायोजित भारित औसत मूल्य

72. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I : ईसीजीसी लिमिटेड पूरी तरह से भारत सरकार के स्वामित्व में है और वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण के तहत कार्य करता है।
कथन II : ईसीजीसी बीमा पूरी तरह से व्यावसायिक जोखिमों जैसे खरीदार के दिवालियापन को कवर करता है, लेकिन स्पष्ट रूप से खरीदार के देश में युद्ध या नागरिक अशांति जैसे राजनीतिक जोखिमों को बाहर करता है।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।

73. श्रीलंका के साथ भारत के व्यापारिक संबंध आईएसएफटीए द्वारा संचालित होते हैं। यदि श्रीलंका गंभीर संप्रभु ऋण संकट और अत्यधिक डॉलर की कमी का सामना करता है, तो भारतीय व्यापार के लिए सबसे तात्कालिक नकारात्मक प्रतिक्रिया क्या होगी?
(A) श्रीलंका को द्विपक्षीय सॉफ्टवेयर सेवाओं के निर्यात में अभूतपूर्व, भारी विस्तार
(B) श्रीलंका से उत्पन्न होने वाले प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के अंतर्वाह में अचानक, तीव्र वृद्धि
(C) डॉलर की तरलता में कमी और भुगतान में चूक के कारण श्रीलंका को कम निर्यात
(D) भारतीय रुपये की तुलना में श्रीलंकाई रुपये के बाजार मूल्य में लगातार वृद्धि

74. यूरोपीय संघ द्वारा शुरू किए गए 'कार्बन बॉर्डर एडजस्टमेंट मैकेनिज्म' (सीबीएएम) का भारतीय व्यापार पर क्या प्रभाव पड़ता है?
(A) यूरोपीय संघ के बाजारों में प्रवेश करने वाले कार्बन-गहन सामानों के लिए प्रत्यक्ष रूप से पर्याप्त सब्सिडी का प्रावधान
(B) गैर-यूरोपीय संघ के विकासशील देशों से निर्मित वाणिज्यिक वस्तुओं के आयात पर पूर्ण वैधानिक प्रतिबंध
(C) मानक सीमा शुल्क निकासी के बिना शून्य-उत्सर्जन वाहनों के लिए शुल्क-मुक्त व्यापार गलियारे की स्थापना
(D) इस्पात और एल्युमीनियम जैसे कार्बन-गहन आयातों पर कर लगाता है, जिससे निर्यात प्रभावित होता है

NODIA

75. भारत के सेवा व्यापार के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?
(A) चिकित्सा पर्यटन (मेडिकल टूरिज्म), शिक्षा और परामर्श बढ़ते हुए सेवा निर्यात हैं।
(B) भारत वैश्विक सॉफ्टवेयर अनुप्रयोगों और आईटी सेवाओं के निवल संरचनात्मक आयातकर्ता के रूप में कार्य करता है।
(C) भारत ने पिछले एक दशक में सेवाओं के लिए अपने कुल व्यापार संतुलन में लगातार घाटा दर्ज किया है।
(D) विदेशी अनिवासी नागरिकों से व्यक्तिगत प्रेषण भारत के वस्तु व्यापार अधिशेष का मुख्य कारण है।

76. भारत के आर्थिक भूगोल के संदर्भ में, राजस्थान राज्य निम्नलिखित में से किस श्रेणी में राष्ट्रीय निर्यात टोकरी में महत्वपूर्ण योगदान देता है?
(A) भारी समुद्री जहाज निर्माण और वाणिज्यिक समुद्री खाद्य निर्यात
(B) इमारती पत्थर (डायमेंशनल पत्थर), हस्तशिल्प और कृषि उत्पाद
(C) उन्नत एयरोस्पेस और वाणिज्यिक विमानन उपकरण विनिर्माण
(D) अपतटीय समुद्री कच्चे तेल का निष्कर्षण और गहरे समुद्र में अन्वेषण

77. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I : 'निर्यात हब के रूप में जिले' पहल का उद्देश्य निर्यात हब के रूप में अपनी क्षमता हासिल करने के लिए भारत के प्रत्येक जिले की क्षमता जुटाना है।
कथन II : इस पहल के तहत, राजस्थान के सभी जिलों के लिए निर्यात क्षमता वाले विशिष्ट उत्पादों की पहचान की गई है, जैसे जयपुर से ब्लू पॉटरी।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।

78. निम्नलिखित में से किसे आमतौर पर भारत के लिए 'पूंजीगत वस्तुएं' आयात के रूप में वर्गीकृत नहीं किया जाता है?
(A) कच्चा सूरजमुखी तेल और पाम तेल
(B) भारी औद्योगिक मशीनरी
(C) मशीन टूल्स और विशेष इंजन
(D) वाणिज्यिक विमान और परिवहन उपकरण

79. पिछले कुछ वर्षों में, व्यापक आर्थिक भागीदारी समझौते द्वारा समर्थित होकर किस मध्य पूर्वी देश ने भारत के तीसरे सबसे बड़े व्यापारिक भागीदार के रूप में अपनी स्थिति मजबूत की है?
(A) ईरान
(B) कतर
(C) संयुक्त अरब अमीरात (यूएई)
(D) कुवैत

80. यदि भारत किसी विशिष्ट देश से आयातित सस्ते इलेक्ट्रॉनिक सामानों पर उच्च एंटी-डंपिंग शुल्क लगाता है, तो भारत के व्यापार संतुलन पर इसका क्या प्रत्यक्ष प्रभाव लक्षित है?
(A) उस भागीदार देश को भेजे जाने वाले घरेलू निर्मित निर्यातों को महत्वपूर्ण रूप से कम करना।
(B) बाहरी कारकों की परवाह किए बिना चालू खाता संतुलन में एक टिकाऊ संरचनात्मक अधिशेष की स्वचालित गारंटी देना।
(C) सभी आवक वैश्विक आयातों के संचयी मूल्य का जानबूझकर विस्तार करना।
(D) व्यापार घाटे को कम करने के लिए कम लागत वाले कृत्रिम आयातों पर अंकुश लगाना।

81. निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प 'चालू खाता घाटा' (सीएडी) का सही वर्णन करता है?
(A) जब एक वित्तीय वर्ष के भीतर कुल वैधानिक सरकारी राजकोषीय व्यय कुल राजस्व प्राप्तियों से अधिक हो जाता है।
(B) जब वस्तुओं, सेवाओं और हस्तांतरण का कुल राष्ट्रीय आयात कुल निर्यात से कम रहता है।
(C) जब वस्तुओं, सेवाओं और निवल जावक आय का आयात कुल निर्यात से अधिक हो जाता है।
(D) जब कोई संप्रभु देश कुल बाह्य ऋण की तुलना में अधिक विदेशी मुद्रा भंडार सफलतापूर्वक जमा कर लेता है।

82. भारत की विदेश व्यापार नीति के तहत 'आरओडीटीईपी' योजना ने पूर्ववर्ती एमईआईएस योजना का स्थान लिया। 'आरओडीटीईपी' का पूर्ण रूप क्या है?
(A) रिमिशन ऑफ डायरेक्ट टैक्सेस फॉर एक्सपोर्ट प्रमोशन
(B) रिबेट ऑफ ड्यूटीज एंड टैक्सेस ऑन एक्सपोर्टेड प्रोडक्ट्स
(C) रिफंड ऑफ डोमेस्टिक टैरिफ्स ऑन एक्सपोर्ट प्राइसिंग
(D) रेगुलेशन ऑफ ड्यूटीज एंड ट्रेड फॉर एक्सपोर्ट प्रॉफिट

83. एसईज़ेड शब्दावली में, वह क्षेत्र जो विशुद्ध रूप से विनिर्माण, व्यापार या सेवाएं प्रदान करने के लिए समर्पित है, और जहां विशिष्ट कर अवकाश (टैक्स हॉलिडे) लागू होते हैं, उसे कार्यात्मक रूप से क्या कहा जाता है?
(A) गैर-प्रसंस्करण क्षेत्र
(B) घरेलू शुल्क क्षेत्र
(C) बफर जोन
(D) प्रसंस्करण क्षेत्र

84. भारत में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) के लिए निर्यात प्रोत्साहन परिषदें (ईपीसी) क्यों महत्वपूर्ण मानी जाती हैं?
(A) वे बाजार आसूचना (मार्केट इंटेलिजेंस), व्यापार मेलों तक पहुंच और अनुपालन में सहायता प्रदान करती हैं।
(B) वे एमएसएमई द्वारा उत्पादित निर्यात उत्पादों के लिए सभी प्राथमिक विनिर्माण लागतों को पूरी तरह से सब्सिडी देती हैं और वहन करती हैं।
(C) उनके पास भारतीय निर्यातकों को भुगतान में देरी करने वाले अंतरराष्ट्रीय खरीदारों को दंडित करने का वैधानिक कानूनी अधिकार है।
(D) वे स्थानीय बाजारों में उत्पाद बेचने के लिए आवश्यक अनिवार्य घरेलू कर पंजीकरण सीधे जारी करती हैं।

85. डब्ल्यूटीओ ढांचे के तहत, यदि भारत किसी अन्य सदस्य देश को 'मोस्ट फेवर्ड नेशन' (एमएफएन - सर्वाधिक तरजीही राष्ट्र) का दर्जा देता है, तो इसका तात्पर्य है कि:
(A) भारत को केवल उस देश से उत्पन्न होने वाले सामानों को विशेष, शून्य-शुल्क बाजार पहुंच प्रदान करनी होगी।
(B) संप्रभु व्यापार नियम उस निर्दिष्ट व्यापारिक भागीदार को सभी घरेलू पर्यावरण और रोजगार नियमों से छूट देते हैं।
(C) भारत को डब्ल्यूटीओ के सभी सदस्य देशों को समान व्यापार रियायतें प्रदान करनी होंगी।
(D) अनिवार्य नियम यह निर्देश देते हैं कि भारत को द्विपक्षीय व्यापार निपटान के लिए विशेष रूप से उस भागीदार देश की मुद्रा का उपयोग करना चाहिए।

86. 'दक्षिण एशियाई मुक्त व्यापार क्षेत्र' (साफ्टा) समझौता अनिवार्य रूप से किस भू-राजनीतिक संगठन के सदस्यों के बीच क्षेत्रीय व्यापार को बढ़ावा देने के लिए बनाया गया था?
(A) सार्क
(B) आसियान
(C) बिम्स्टेक
(D) ब्रिक्स

87. उस संस्था/मंच की पहचान कीजिए जो मुख्य रूप से भारत में घरेलू थोक कृषि व्यापार के सुविधाप्रदाता या नियामक के रूप में कार्य नहीं करता है:
(A) कृषि उपज मंडी समिति (एपीएमसी मंडियां)
(B) राष्ट्रीय कृषि बाजार (ई-नाम ऑनलाइन पोर्टल)
(C) भारतीय खाद्य निगम (एफसीआई केंद्रीय खरीद)
(D) भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी)

Downloaded from www.pdf.tube

88. निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प भारत में मल्टी-ब्रांड रिटेल ट्रेडिंग में वर्तमान एफडीआई सीमा का सटीक प्रतिनिधित्व करता है (विशिष्ट सरकारी अनुमोदनों और शर्तों के अधीन)?
(A) 0% (पूरी तरह से प्रतिबंधित)
(B) 51% तक
(C) 74% तक
(D) स्वचालित मार्ग के तहत 100% तक

89. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन I : ई-कॉमर्स लॉजिस्टिक्स के कारण भारत में प्रमुख टियर-1 और टियर-2 शहरों के पास वेयरहाउसिंग क्लस्टर का तेजी से विकास हुआ है।
कथन II : भारत में ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म उपभोक्ता संरक्षण (ई-कॉमर्स) नियम, 2020 से पूरी तरह मुक्त हैं।
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।

90. भारतीय सीमा शुल्क द्वारा 'सिंगल विंडो इंटरफेस फॉर फैसिलिटेटिंग ट्रेड' (स्वीफ्ट) के कार्यान्वयन ने मुख्य रूप से किसके माध्यम से विदेशी व्यापार परिदृश्य को प्रभावित किया है?
(A) कार्गो के भौतिक सीमा शुल्क सत्यापन के लिए आवश्यक प्रशासनिक कागजी कार्रवाई को काफी बढ़ाकर।
(B) सभी सामानों के लिए भारत में एक एकल निर्दिष्ट अंतरराष्ट्रीय समुद्री बंदरगाह पर वैधानिक निरीक्षण अनिवार्य करके।
(C) तीसरे पक्ष के रसद (लॉजिस्टिक्स) सेवा प्रदाताओं को अंतरराष्ट्रीय समुद्री व्यापार के भीतर काम करने से पूरी तरह से प्रतिबंधित करके।
(D) एक एकल इलेक्ट्रॉनिक घोषणा के माध्यम से प्रतीक्षा समय और लागत को कम करके।

NODIA

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (C) कभी-कभार व्यापार अधिशेष, लेकिन अधिकांशतः व्यापार घाटा
स्वतंत्रता के पश्चात भारत की ऐतिहासिक व्यापार प्रवृत्ति मुख्य रूप से व्यापार घाटे की स्थिति को प्रदर्शित करती है। केवल 1972-73 तथा 1976-77 के दो वित्तीय वर्षों में भारत ने व्यापार अधिशेष दर्ज किया था। इसके अतिरिक्त अन्य सभी वर्षों में आयात का कुल मूल्य निर्यात मूल्य की तुलना में लगातार अधिक बना रहा। कच्चे तेल, पूंजीगत उपकरणों तथा बहुमूल्य धातुओं की उच्च मांग इस दीर्घकालिक व्यापार घाटे के कारण हैं।

2. (A) केवल I और II
भारत के वस्तु निर्यात में इंजीनियरिंग सामान की हिस्सेदारी सर्वाधिक रहती है, जो विनिर्माण क्षेत्र की मजबूती को दर्शाती है। इसके अतिरिक्त परिष्कृत पेट्रोलियम उत्पाद भी भारत की शीर्ष निर्यात वस्तुओं की श्रेणी में निरंतर शामिल हैं। दूसरी ओर, राजस्थान राज्य मुख्य रूप से हस्तशिल्प, वस्त्र, रत्न एवं आभूषण तथा डाइमेंशनल पत्थरों का निर्यात करता है, न कि भारी मशीनरी अथवा कच्चे तेल का। इसलिए राजस्थान संबंधी कथन अनुचित है।

3. (D) चालू खाता घाटे (सीएडी) का बढ़ना
भारत अपनी कच्चा तेल आवश्यकताओं के 80 प्रतिशत से अधिक हिस्से का आयात करता है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतों में तीव्र वृद्धि होने से भारत का आयात बिल तेजी से बढ़ जाता है। विदेशी मुद्रा के अधिक बहिर्वाह के कारण व्यापार घाटा गहरा जाता है, जिसका सीधा और तात्कालिक प्रभाव चालू खाता घाटे के बढ़ने के रूप में दिखाई देता है। इससे आर्थिक संतुलन पर दबाव बनता है।

4. (A) 1, 2, 3, 4
भारत के वस्तु निर्यात गंतव्यों में संयुक्त राज्य अमेरिका सबसे बड़ा भागीदार बना हुआ है। इसके पश्चात संयुक्त अरब अमीरात दूसरे स्थान पर तथा चीन तीसरे स्थान पर आता है। यूनाइटेड किंगडम इस क्रम में आगे आता है। भारतीय वस्तुओं जैसे इंजीनियरिंग सामान, परिधान, औषधियों तथा बहुमूल्य रत्नों की मांग इन देशों में अत्यधिक रहती है, जिसके कारण यह अवरोही क्रम व्यापारिक आंकड़ों के अनुसार पूर्णतः सत्य सिद्ध होता है।

5. (C) वस्तु निर्यात और वस्तु आयात का कुल मूल्य
व्यापार संतुलन अर्थशास्त्र में केवल दृश्य अथवा भौतिक वस्तुओं के कुल निर्यात मूल्य और कुल आयात मूल्य के अंतर को निरुपित करता है। जब दृश्य वस्तुओं का निर्यात आयात से अधिक होता है तो उसे अनुकूल व्यापार संतुलन कहते हैं, जबकि इसके विपरीत होने पर प्रतिकूल व्यापार संतुलन या व्यापार घाटा होता है। सेवाओं, प्रेषण तथा आय जैसे अदृश्य मदों को व्यापार संतुलन में शामिल नहीं किया जाता है।

6. (A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
व्यापार संतुलन केवल दृश्य वस्तुओं के व्यापार तक सीमित होता है। इसके विपरीत, चालू खाते में वस्तुओं के व्यापार के साथ-साथ अदृश्य मदें जैसे सेवाएं, विदेशी प्रेषण और आय प्रवाह भी शामिल होते हैं। यदि कोई देश वस्तु व्यापार में घाटा झेल रहा हो, लेकिन सेवा निर्यात तथा विदेश से प्राप्त होने वाले प्रेषण का अधिशेष उस घाटे से अधिक हो, तो चालू खाता अधिशेष प्रदर्शित कर सकता है।

7. (D) प्रोत्साहन-आधारित व्यवस्था से शुल्क छूट और माफी-आधारित व्यवस्था में
नई विदेश व्यापार नीति 2023 निर्यात वृद्धि को बढ़ावा देने के लिए एक मूलभूत दृष्टिकोणीय बदलाव लाती है। यह पारंपरिक प्रत्यक्ष वित्तीय सब्सिडी या प्रोत्साहन-आधारित व्यवस्था के स्थान पर कर व शुल्क छूट तथा माफी-आधारित व्यवस्था को अपनाती है। इस नीति का उद्देश्य वैश्विक व्यापार नियमों का अनुपालन सुनिश्चित करते हुए भारतीय निर्यातकों की लागत दक्षता में सुधार करना और प्रतिस्पर्धी क्षमता में वृद्धि करना है।

8. (B) एसईज़ेड को विशुद्ध रूप से व्यापार संचालन और शुल्कों के उद्देश्य से विदेशी क्षेत्र माना जाता है।
विशेष आर्थिक क्षेत्र (एसईज़ेड) देश के भीतर भौगोलिक रूप से नामित ऐसे क्षेत्र होते हैं जिन्हें सीमा शुल्क और व्यापार कानूनों के प्रयोजन हेतु एक अलग विदेशी भूभाग माना जाता है। इस व्यवस्था से इन इकाइयों को कच्चे माल और पूंजीगत सामान के शुल्क-मुक्त आयात की अनुमति मिलती है। यद्यपि घरेलू बिक्री पर सामान्य सीमा शुल्क और कर लागू होते हैं, फिर भी यह अत्यंत प्रभावी व्यवस्था है।

9. (C) P-3, Q-4, R-1, S-2
एपीडा कृषि तथा प्रसंस्कृत खाद्य उत्पादों के विकास और निर्यात संवर्धन का कार्य करता है। एमपीडा विशेष रूप से समुद्री उत्पादों और मत्स्य पालन उद्योग से संबंधित निर्यात को प्रोत्साहन प्रदान करता है। ईईपीसी देश से विभिन्न प्रकार के इंजीनियरिंग सामानों के निर्यात को गति देता है। एफआईईओ भारत में स्थापित विभिन्न निर्यात निकायों तथा परिषदों के शीर्ष एकीकृत संगठन के रूप में कार्य करता है।

10. (D) नाफ्टा (उत्तर अमेरिकी मुक्त व्यापार समझौता)
ट्रिप्स, ट्रिम्स तथा गैट्स विश्व व्यापार संगठन के बहुपक्षीय वैधानिक समझौतों के प्रमुख अंग हैं जो बौद्धिक संपदा, निवेश उपायों और सेवाओं के व्यापार को नियंत्रित करते हैं। इसके विपरीत, नाफ्टा (उत्तर अमेरिकी मुक्त व्यापार समझौता) केवल

Click Here to Buy book on Amazon

संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा तथा मेक्सिको के मध्य संपन्न एक क्षेत्रीय व्यापार समझौता है। नाफ्टा का विश्व व्यापार संगठन की संरचना से संबंध नहीं है।

11. (A) दक्षिण एशियाई मुक्त व्यापार क्षेत्र (साफ्टा) - भारत-आसियान वस्तु व्यापार समझौता - भारत-यूएई सीईपीए
भारत के क्षेत्रीय व्यापार समझौतों का ऐतिहासिक कालानुक्रमिक क्रम साफ्टा से आरंभ होता है, जिस पर वर्ष 2004 में हस्ताक्षर किए गए थे और यह 2006 से प्रभावी हुआ। तत्पश्चात, भारत-आसियान वस्तु व्यापार समझौता वर्ष 2009 में हस्ताक्षरित हुआ। सबसे हाल ही में, भारत और संयुक्त अरब अमीरात के मध्य व्यापक आर्थिक भागीदारी समझौता (सीईपीए) वर्ष 2022 में संपन्न हुआ।

12. (B) एपीएमसी मंडियों को इलेक्ट्रॉनिक रूप से जोड़कर एक एकीकृत बाजार का निर्माण करना
ई-नाम पहल का प्राथमिक ध्येय राज्य और देश भर की कृषि उपज मंडी समितियों (एपीएमसी) को एक एकीकृत इलेक्ट्रॉनिक मंच से जोड़ना है। यह मंच पारदर्शी बोली प्रक्रिया, वास्तविक समय में मूल्य खोज तथा ऑनलाइन भुगतान प्रणालियां उपलब्ध कराता है। इससे बिचौलियों पर निर्भरता समाप्त होती है, प्रतिस्पर्धा बढ़ती है और किसानों को अपनी उपज का उचित मूल्य प्राप्त होता है।

13. (B) प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) - सिंगल ब्रांड रिटेल में स्वचालित मार्ग के माध्यम से 100% तक अनुमति
भारत की वर्तमान प्रत्यक्ष विदेशी निवेश नीति के अंतर्गत सिंगल ब्रांड रिटेल ट्रेडिंग क्षेत्र में स्वचालित मार्ग से 100 प्रतिशत एफडीआई की अनुमति दी गई है। इसके विपरीत, मल्टी-ब्रांड रिटेल में कड़े प्रतिबंधों तथा शर्तों के साथ केवल 51 प्रतिशत तक एफडीआई संभव है। असंगठित खुदरा क्षेत्र में मुख्य रूप से छोटी अनौपचारिक किराना दुकानें आती हैं, न कि बड़े आधुनिक स्टोर्स।

14. (B) I, III और IV
मार्केटप्लेस मॉडल के अंतर्गत स्वचालित मार्ग से 100 प्रतिशत एफडीआई स्वीकृत है, जबकि इन्वेंट्री-आधारित ई-कॉमर्स में एफडीआई की अनुमति बिल्कुल नहीं है। ई-कॉमर्स माध्यमों ने राजस्थान के हस्तशिल्प और जीआई उत्पादों जैसे ब्लू पॉटरी तथा बगरू प्रिंट को वैश्विक बाजार उपलब्ध कराया है। इसके अतिरिक्त ओएनडीसी पहल ई-कॉमर्स का लोकतंत्रीकरण करने तथा बाजार प्रतिस्पर्धा बढ़ाने की महत्वपूर्ण राष्ट्रीय पहल मानी जाती है।

15. (C) पारादीप पोर्ट
भारत के भौगोलिक तटवर्तीय वर्गीकरण में दीनदयाल पोर्ट (कांडला), जवाहरलाल नेहरु पोर्ट (न्हावा शेवा) तथा न्यू मंगलोर पोर्ट देश के पश्चिमी समुद्र तट पर स्थित हैं। इसके विपरीत, पारादीप पोर्ट ओडिशा राज्य में भारत के पूर्वी समुद्र तट पर स्थित एक प्रमुख प्राकृतिक बंदरगाह है। अतः तटीय स्थिति के आधार पर पारादीप पोर्ट पश्चिमी तट पर स्थित अन्य तीन बंदरगाहों से भिन्न है।

16. (D) अंतर्देशीय कंटेनर डिपो (आईसीडी) और समर्पित माल गलियारे (डीएफसी)
राजस्थान एक भू-आबद्ध राज्य है, जिसकी कोई प्रत्यक्ष समुद्री तटरेखा नहीं है। अंतरराष्ट्रीय वस्तु व्यापार को सुचारु बनाने के लिए राज्य में अंतर्देशीय कंटेनर डिपो तथा समर्पित माल गलियारे अत्यंत आवश्यक हैं। ये सुविधाएं सीमा शुल्क निकासी, माल भंडारण तथा तटीय बंदरगाहों तक तेजी से माल परिवहन सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इससे राज्य का व्यापार सुलभ होता है।

17. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
मुक्त व्यापार समझौतों का मूल उद्देश्य प्रतिभागी राष्ट्रों के बीच वस्तुओं और सेवाओं पर लगने वाले शुल्कों तथा गैर-शुल्क बाधाओं को दूर करना होता है। भारत ने क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक भागीदारी से स्वयं को अलग कर लिया क्योंकि उसे भय था कि अनुचित मूल्य स्पर्धा के कारण उसके घरेलू कृषि, डेयरी तथा विनिर्माण क्षेत्र प्रभावित होंगे और व्यापार घाटा अत्यधिक बढ़ जाएगा।

18. (B) लगातार बढ़ता वस्तु व्यापार घाटा हमेशा चालू खाता अधिशेष की ओर ले जाता है।
व्यापार घाटा तब उत्पन्न होता है जब आयात का कुल मूल्य निर्यात मूल्य से अधिक हो जाता है। कच्चा तेल, सोना और इलेक्ट्रॉनिक्स सामान भारत के वस्तु आयात बिल में सबसे बड़ा योगदान देते हैं। निरंतर बढ़ता हुआ वस्तु व्यापार घाटा देश के चालू खाते पर नकारात्मक दबाव डालता है, जिससे चालू खाता घाटा बढ़ता है, न कि चालू खाता अधिशेष की स्थिति निर्मित होती है।

19. (D) वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय
विदेश व्यापार महानिदेशालय (डीजीएफटी) भारत सरकार के वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के अधीन कार्य करने वाला एक संलग्न कार्यालय है। यह संगठन देश की विदेश व्यापार नीति के निर्धारण, कार्यान्वयन तथा संशोधन के लिए मुख्य रूप से उत्तरदायी है। इसके अतिरिक्त, यह आयातकों व निर्यातकों को आयातक-निर्यातक कोड जारी करता है और व्यापार सुगमता को बढ़ावा देने का कार्य करता है।

20. (A) चीन
हाल के वर्षों के व्यापारिक आंकड़ों के अनुसार चीन लगातार भारत के वस्तु आयात का सबसे बड़ा स्रोत देश बना हुआ है। भारत चीन से बड़ी मात्रा में इलेक्ट्रॉनिक घटक, एक्टिव फार्मास्युटिकल सामग्री, औद्योगिक मशीनरी तथा रसायन आयात करता है। यद्यपि रूस से कच्चे तेल के आयात में वृद्धि हुई है, फिर भी कुल आयात में चीन शीर्ष स्थान पर कायम है।

21. (C) अभिकथन (A) सही है, लेकिन कारण (R) गलत है।
जब भारतीय रुपये का विदेशी मुद्राओं की तुलना में मूल्यह्रास होता है, तो अंतरराष्ट्रीय खरीदारों के लिए भारतीय वस्तुएं सस्ती हो जाती हैं, जिससे वैश्विक बाजार में निर्यात प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ती है। हालांकि, रुपये के मूल्यह्रास से आयातित कच्चे माल और इनपुट अधिक महंगे हो जाते हैं, जिससे उत्पादन

NODIA

लागत बढ़ती है न कि घटती है। अतः अभिकथन सही है परंतु कारण गलत है।

22. (A) निर्यातकों को भुगतान जोखिमों के विरुद्ध ऋण बीमा प्रदान करना
भारतीय निर्यात ऋण गारंटी निगम (ईसीजीसी) एक सरकारी स्वामित्व वाली संस्था है जिसका प्राथमिक उद्देश्य भारतीय निर्यातकों को ऋण जोखिम बीमा सुरक्षा प्रदान करना है। यह निगम विदेशी खरीदारों द्वारा भुगतान में चूक, दिवालियापन या राजनीतिक कारणों से उत्पन्न नुकसान के विरुद्ध कवर प्रदान करता है। इससे निर्यातकों को नए बाजारों में व्यापार विस्तार करने में सहायता और प्रोत्साहन मिलता है।

23. (B) केवल I और III
बांग्लादेश दक्षिण एशिया में भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार है, जहां भारत मुख्य रूप से निर्मित सामान और कच्चे माल का निर्यात करता है। सीमावर्ती क्षेत्रों में स्थानीय व्यापार और आजीविका को बढ़ावा देने के लिए भारत-बांग्लादेश सीमा पर 'बॉर्डर हाट' संचालित किए जा रहे हैं। भारत का नेपाल के साथ लगातार व्यापार अधिशेष बना हुआ है, इसलिए दूसरा कथन गलत है।

24. (B) P-4, Q-3, R-2, S-1
पश्चिमी बाजारों में मंदी से भारतीय कपड़ा और हीरे के निर्यात की मांग घटती है। लाल सागर मार्गों में व्यवधान से माल भाड़ा लागत बढ़ती है और शिपमेंट में देरी होती है। यूएस फेड द्वारा दरों में वृद्धि से पूंजी बहिर्वाह तथा रुपये में गिरावट आती है। इसके विपरीत वैश्विक स्तर पर आईटी सेवाओं की मांग भारत के सॉफ्टवेयर निर्यात में वृद्धि लाती है।

25. (C) एकपक्षीय हस्तांतरण के रूप में चालू खाते के अंतर्गत
विदेशी भूमि पर कार्यरत भारतीय प्रवासियों द्वारा स्वदेश भेजे जाने वाले प्रेषण को भुगतान संतुलन के चालू खाते के अंतर्गत एकपक्षीय हस्तांतरण के रूप में दर्ज किया जाता है। चूंकि इस मौद्रिक अंतर्वाह के बदले में कोई प्रत्यक्ष वस्तु या सेवा प्रदान नहीं की जाती और न कोई देनदारी बनती है, इसलिए इसे चालू खाते में शामिल किया जाता है।

26. (D) निर्यात की संरचना में निर्मित वस्तुओं और सेवाओं की ओर महत्वपूर्ण बदलाव आया है।
1991 के आर्थिक उदारीकरण के पश्चात भारत की विदेश व्यापार संरचना में बड़ा गुणात्मक परिवर्तन देखा गया। देश का निर्यात रुख पारंपरिक प्राथमिक कृषि वस्तुओं से हटकर निर्मित वस्तुओं, इंजीनियरिंग सामानों, औषधियों तथा सॉफ्टवेयर एवं आईटी सेवाओं की ओर तेजी से स्थानांतरित हुआ। इसके साथ ही, भारत के सकल घरेलू उत्पाद में अंतरराष्ट्रीय व्यापार का योगदान भी काफी अधिक बढ़ा है।

27. (A) इंजीनियरिंग, कपड़ा, और रत्न एवं आभूषण
राजस्थान के कुल वस्तु निर्यात मूल्य में इंजीनियरिंग सामान, वस्त्र तथा परिधान, और रत्न एवं आभूषण क्षेत्र का संयुक्त योगदान सर्वाधिक है। जयपुर का रत्न व आभूषण उद्योग, भीलवाड़ा का वस्त्र उद्योग तथा जोधपुर व जयपुर के इंजीनियरिंग क्लस्टर राज्य के निर्यात प्रदर्शन में प्रमुख आधार हैं। हस्तशिल्प और पत्थरों का भी राज्य से अत्यधिक मात्रा में निर्यात किया जाता है।

28. (B) केवल II
भारत खाद्य तेलों के मामले में आत्मनिर्भर नहीं है, बल्कि अपनी घरेलू खपत का लगभग 50 से 60 प्रतिशत हिस्सा आयात के माध्यम से पूरा करता है। अतः दूसरा कथन गलत है। सोना और चांदी भारत के गैर-तेल आयात के प्रमुख घटक हैं, जबकि इलेक्ट्रॉनिक्स सामान तथा कोयले का बड़े पैमाने पर आयात कुल आयात बिल को अत्यधिक बढ़ाता है।

29. (A) 1, 2, 3
भारत के वस्तु निर्यात में विभिन्न आर्थिक क्षेत्रों की हिस्सेदारी का आरोही क्रम सीआईएस देश, आसियान गुट, तथा उत्तरी अमेरिका है। सीआईएस देशों की हिस्सेदारी सबसे कम रहती है, जबकि आसियान देशों के साथ व्यापार मध्यम स्तर का है। संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा को मिलाकर उत्तरी अमरीकी क्षेत्र भारत के वस्तु निर्यात का सबसे बड़ा हिस्सा प्राप्त करता है।

30. (D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
व्यापार संतुलन केवल दृश्य वस्तुओं के आयात और निर्यात को शामिल करता है, जबकि चालू खाता वस्तुओं के साथ-साथ सेवाओं, हस्तांतरण और आय को शामिल करने वाली व्यापक अवधारणा है। इसलिए पहला कथन गलत है। दूसरा कथन सत्य है क्योंकि कोई देश सेवा निर्यात और प्रेषण जैसे अदृश्य मदों में अधिशेष प्राप्त करके वस्तु व्यापार घाटे की भरपाई कर सकता है।

31. (C) P-3, Q-1, R-4, S-2
आईटी सेवाओं का निर्यात चालू खाते के अंतर्गत सेवाओं के व्यापार में दर्ज किया जाता है। एक भारतीय स्टार्ट-अप में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश पूंजी खाते में वित्तीय अंतर्वाह के रूप में दर्ज होता है। विदेशी ऋण का पुनर्भुगतान पूंजी खाते के अंतर्गत पूंजी बहिर्वाह की श्रेणी में आता है। कच्चे तेल का आयात चालू खाते में वस्तुओं के आयात में शामिल है।

32. (D) विशेषीकृत निर्यात सहायता प्रदान करने के लिए प्रमुख उत्पादक शहरों को मान्यता प्रदान करता है।
विदेश व्यापार नीति के तहत 'निर्यात उत्कृष्ट शहर' पहल का प्राथमिक उद्देश्य ऐसे शहरों को मान्यता देना है जो विशिष्ट वस्तुओं के उत्पादन और निर्यात में उच्च क्षमता रखते हैं। इस दर्जे के माध्यम से इन शहरों को ढांचागत सुधारों, विपणन सहायता, और निर्यात संवर्धन योजनाओं के अंतर्गत प्राथमिकता से लाभ प्रदान किया जाता है ताकि वैश्विक पहुंच बढ़ सके।

33. (C) महिंद्रा वर्ल्ड सिटी
जयपुर के निकट स्थित महिंद्रा वर्ल्ड सिटी सार्वजनिक-निजी भागीदारी मॉडल पर आधारित राजस्थान का एक प्रमुख बहु-उत्पाद विशेष आर्थिक क्षेत्र है। यह परियोजना रीको तथा महिंद्रा समूह का एक संयुक्त उद्यम है। इस क्षेत्र में आईटी, हस्तशिल्प, इंजीनियरिंग तथा अन्य उद्योगों के लिए आधुनिक

Downloaded from www.pdf.tube

विश्वस्तरीय बुनियादी ढांचा उपलब्ध कराया गया है, जो राज्य के निर्यात को गति प्रदान करता है।

34. (B) सूरत और जयपुर
भारत के बहुमूल्य रत्नों और आभूषणों के प्रसंस्करण और निर्यात उद्योग में सूरत तथा जयपुर दो सबसे प्रमुख केंद्र हैं। गुजरात का सूरत शहर विश्व में हीरों की कटाई और पॉलिशिंग का मुख्य हब माना जाता है, जबकि राजस्थान का जयपुर शहर रंगीन कीमती एवं अर्ध-कीमती रत्नों की कटाई और आभूषण निर्माण के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध केंद्र माना जाता है।

35. (A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
भारत विश्व व्यापार संगठन में खाद्य सुरक्षा उद्देश्यों के लिए कृषि उपज की सरकारी खरीद पर सब्सिडी सीमा का उल्लंघन होने की स्थिति में 'पीस क्लॉज़' का सहारा लेता है। यह प्रावधान विकासशील देशों के सार्वजनिक स्टॉकहोल्डिंग कार्यक्रमों को कानूनी विवादों से सुरक्षा प्रदान करता है। अतः अभिकथन और कारण दोनों पूरी तरह सही हैं और सही व्याख्या करते हैं।

36. (A) सीईपीए वस्तुओं पर शुल्क (टैरिफ) कटौती के अलावा सेवाओं, निवेश और सहयोग को भी शामिल करता है।
व्यापक आर्थिक भागीदारी समझौता एक मानक मुक्त व्यापार समझौते की तुलना में अधिक व्यापक व्यवस्था है। एक सामान्य व्यापार समझौता मुख्य रूप से केवल भौतिक वस्तुओं के शुल्कों में कटौती तक सीमित होता है, जबकि यह समझौता वस्तुओं के व्यापार के साथ-साथ सेवाओं में व्यापार, निवेश, बौद्धिक संपदा तथा द्विपक्षीय आर्थिक सहयोग के विस्तृत दायरों को भी पूर्ण रूप से समाहित करता ही है।

37. (C) एमएसपी - निजी व्यापारियों के लिए कानूनी रूप से अनिवार्य अधिकतम बिक्री मूल्य
न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) वह दर है जिस पर सरकार किसानों से उनकी फसल की खरीद की गारंटी देती है, ताकि उन्हें बाजार में मूल्य गिरावट से सुरक्षा मिले। एमएसपी कोई ऐसा कानूनी रूप से अनिवार्य अधिकतम मूल्य नहीं है जो निजी व्यापारियों के लिए बिक्री की ऊपरी सीमा तय करता हो। अतः यह युग्म सुमेलित नहीं माना जाता है।

38. (B) केवल I और III
भारत के कुल खुदरा व्यापार में असंगठित क्षेत्र का अत्यधिक बहुमत और प्रभुत्व है। यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (यूपीआई) जैसी प्रणालियों के प्रसार ने छोटे किराना स्टोरों और स्थानीय विक्रेताओं में लेन-देन का बड़े पैमाने पर डिजिटलीकरण किया है। चूंकि स्थानीय किराना दुकानों को असंगठित क्षेत्र में वर्गीकृत किया जाता है, इसलिए दूसरा कथन पूरी तरह गलत सिद्ध होता ही है।

39. (D) भारत में सभी ई-कॉमर्स संचालन पर पूर्ण सरकारी एकाधिकार स्थापित करना
'डिजिटल कॉमर्स के लिए ओपन नेटवर्क' (ओएनडीसी) एक खुला नेटवर्क प्लेटफॉर्म है जिसका उद्देश्य ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्मों के एकाधिकार को समाप्त करना है। यह पहल छोटे व्यापारियों तथा एमएसएमई को डिजिटल नेटवर्क से जुड़ने का अवसर देती है और उपभोक्ताओं को व्यापक विकल्प प्रदान करती है। इसका उद्देश्य सरकारी एकाधिकार बनाना नहीं बल्कि बाजार में निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देना है।

40. (A) हल्दिया - पारादीप - विशाखापत्तनम - चेन्नई
भारत के पूर्वी समुद्र तट पर स्थित प्रमुख बंदरगाहों का उत्तर से दक्षिण दिशा की ओर सही भौगोलिक क्रम हल्दिया, पारादीप, विशाखापत्तनम तथा चेन्नई है। पश्चिम बंगाल का हल्दिया बंदरगाह सबसे उत्तर में स्थित है। इसके दक्षिण में ओडिशा का पारादीप बंदरगाह, इसके पश्चात विशाखापत्तनम तथा सबसे दक्षिण में तमिलनाडु का चेन्नई बंदरगाह आता है। यह क्रम भारत के मानचित्र के अनुसार सही है।

41. (C) पीएम गति शक्ति
पीएम गति शक्ति राष्ट्रीय मास्टर प्लान भारत सरकार द्वारा शुरु की गई एक प्रमुख महत्वाकांक्षी पहल है जिसका मुख्य उद्देश्य लॉजिस्टिक्स लागत को घटाना तथा बहु-मॉडल कनेक्टिविटी में सुधार करना है। यह योजना विभिन्न मंत्रालयों जैसे रेलवे, सड़क, बंदरगाहों तथा नागरिक उड्डयन को एकीकृत करके परियोजनाओं के त्वरित क्रियान्वयन और निर्बाध माल आवाजाही को बढ़ावा कार्यान्वित करती है।

42. (D) घरेलू ऑटो कंपनियों को भारी कीमत प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ेगा, जिससे उनकी बाजार हिस्सेदारी कम हो जाएगी।
यदि भारत किसी विकसित देश के साथ एफटीए करके विदेशी ऑटोमोबाइल पर आयात शुल्क समाप्त कर देता है, तो विकसित देश की गाड़ियां घरेलू बाजार में काफी कम दरों पर उपलब्ध हो जाएंगी। इसके परिणामस्वरूप भारतीय ऑटो निर्माताओं को तीव्र कीमत प्रतिस्पर्धा झेलनी पड़ेगी, जिससे घरेलू कंपनियों के मुनाफा मार्जिन तथा बाजार हिस्सेदारी पर प्रतिकूल प्रभाव होना हो जाता है।

43. (B) केवल I, II और IV
भारत के वस्तु व्यापार घाटे के पीछे मुख्य संरचनात्मक कारणों में कच्चे तेल की उच्च खपत, आभूषण तथा निवेश के लिए सोने का अत्यधिक आयात, तथा इलेक्ट्रॉनिक्स व एक्टिव फार्मास्युटिकल सामग्री पर निर्भरता शामिल है। इसके विपरीत, भारत का मजबूत सॉफ्टवेयर तथा आईटी सेवा निर्यात इस व्यापार घाटे को कम करने में सहायता करता है, न कि इसे बढ़ाता है।

44. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
आयातक-निर्यातक कोड (आईईसी) भारत से वस्तुओं और सेवाओं के आयात व निर्यात व्यवसाय में संलग्न होने के लिए डीजीएफटी द्वारा जारी किया जाने वाला अनिवार्य दस्तावेज है। इसके अतिरिक्त, डीजीएफटी के पास राष्ट्रीय सुरक्षा, पर्यावरण संरक्षण तथा घरेलू उपलब्धता सुनिश्चित करने हेतु विशिष्ट वस्तुओं के व्यापार को प्रतिबंधित या विनियमित करने का पूरा अधिकार प्राप्त रहता है।

NODIA

अध्याय 11
राजस्थान की भौतिक संरचना

1. राजस्थान की भौतिक/भू-आकृतिक संरचना को मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किस प्राचीन भूगर्भीय इकाई का अवशेष माना जाता है?
(A) अंगारालैंड और टेथिस सागर
(B) गोंडवानालैंड और टेथिस सागर
(C) अंगारालैंड और पैंथलासा
(D) लौरेशिया और टेथिस सागर

2. राजस्थान के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का कितना प्रतिशत भाग पश्चिमी रेतीले मैदान द्वारा आच्छादित है?
(A) लगभग 55.11%
(B) लगभग 61.11%
(C) लगभग 66.11%
(D) लगभग 71.11%

3. राजस्थान की सबसे ऊँची चोटी गुरु शिखर माउंट आबू क्षेत्र में स्थित है। माध्य समुद्र तल से इसकी सटीक ऊँचाई कितनी है?
(A) 1722 मीटर
(B) 1597 मीटर
(C) 1431 मीटर
(D) 1380 मीटर

4. राजस्थान के भू-आकृतिक स्वरूप के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन-सा अरावली पर्वतमाला की सामान्य दिशा/विस्तार का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व
(B) पूर्व से पश्चिम
(C) दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व
(D) उत्तर से दक्षिण

5. माही नदी और उसकी सहायक नदियों द्वारा निर्मित उपजाऊ मैदान, जो 56 गाँवों या प्रवाही नालों के समूह द्वारा अभिलक्षित है, स्थानीय रूप से किस नाम से जाना जाता है?
(A) छप्पन का मैदान
(B) भोराट का पठार
(C) कांठल का मैदान
(D) ऊपरमाल का पठार

6. भूगर्भीय दृष्टि से, अरावली पर्वत श्रृंखला की उत्पत्ति निम्नलिखित में से किस महाकल्प/युग से संबंधित है?
(A) प्री-कैम्ब्रियन युग
(B) पेलियोजोइक युग (पुराजीव महाकल्प)
(C) मेसोजोइक युग (मध्यजीव महाकल्प)
(D) सेनोजोइक युग (नवजीव महाकल्प)

7. अरावली पर्वतमाला राजस्थान में एक प्रमुख जल-विभाजक के रूप में कार्य करती है। निम्नलिखित में से कौन-सा कथन इस परिघटना की सबसे अच्छी व्याख्या करता है?
(A) यह मानसूनी हवाओं को पूर्वी मैदानों के शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों तक पहुँचने से रोकती है।
(B) यह बंगाल की खाड़ी और अरब सागर के अपवाह तंत्रों को अलग करने वाले अवरोध के रूप में कार्य करती है।
(C) यह राज्य की सभी बारहमासी और मौसमी नदियों के प्राथमिक उद्गम स्थल के रूप में कार्य करती है।
(D) यह थार मरुस्थल के सभी मौसमी आंतरिक अपवाह तंत्रों को लूनी नदी में मोड़ती है।

8. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।
सूची I : (अरावली शिखर)
P. तारागढ़
Q. रघुनाथगढ़
R. जरगा
S. अचलगढ़
सूची II : (जिला)
1. सीकर
2. सिरोही
3. उदयपुर
4. अजमेर
(A) P-1, Q-4, R-3, S-2
(B) P-4, Q-1, R-2, S-3
(C) P-4, Q-1, R-3, S-2
(D) P-3, Q-1, R-4, S-2

9. दक्षिण-पूर्वी पठार (हाडोती का पठार) भूगर्भीय रूप से निम्नलिखित में से किस शैल समूह की उपस्थिति द्वारा अभिलक्षित होता है?
(A) आग्नेय ग्रेनाइट और कायांतरित नीस चट्टानें
(B) कायांतरित शिस्ट और क्वार्टज़ाइट शैल पट्टियाँ
(C) मालानी आग्नेय समूह का ज्वालामुखीय शैल द्रव्यमान
(D) बेसाल्टिक लावा निक्षेप और विंध्यन बलुआ पत्थर

10. राजस्थान के पूर्वी मैदानों में चंबल बेसिन अत्यधिक 'उत्खात भूमि' (बैडलैंड) स्थलाकृति द्वारा अभिलक्षित है। इन गहरे बीहड़ों को वर्णित करने के लिए किस स्थानीय शब्द का प्रयोग किया जाता है?
(A) उत्खात
(B) खडीन

Click Here to Buy book on Flipkart

57. (C) सभी निर्यात परिचालनों का पूर्ण राष्ट्रीयकरण
विदेश व्यापार नीति 2023 के प्रमुख आधारों में प्रत्यक्ष प्रोत्साहनों के स्थान पर कर छूट, प्रौद्योगिकी द्वारा व्यापार सुगमता, तथा निर्यातकों व जिलों के साथ सहयोगात्मक भागीदारी शामिल हैं। यह नीति व्यापार को निजी क्षेत्र के लिए सुलभ बनाने पर बल देती है। इसमें निर्यात परिचालनों के पूर्ण राष्ट्रीयकरण का कोई प्रावधान या प्रस्ताव शामिल नहीं किया गया ही है।

58. (D) निर्यात-उन्मुख इकाई (ईओयू) - एक ऐसी योजना जो कड़ाई से केवल निर्दिष्ट एसईज़ेड की भौतिक सीमाओं के भीतर संचालन तक सीमित है
निर्यात-उन्मुख इकाई योजना के तहत स्थापित विनिर्माण या सेवा इकाइयां किसी भौतिक एसईज़ेड परिसर के बाहर देश में कहीं भी स्थापित हो सकती हैं। ये इकाइयां अपने संपूर्ण उत्पादन का निर्यात करने के उद्देश्य से कर व शुल्क छूट का लाभ प्राप्त करती हैं। अतः ईओयू को एसईज़ेड की सीमाओं में सीमित बताना गलत और असत्य कथन सिद्ध होता है।

59. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
भारत में निर्यात प्रोत्साहन परिषदें सरकार की सहायता से समर्थित गैर-लाभकारी संस्थाएं हैं जो विभिन्न क्षेत्रों में निर्यात संवर्धन हेतु कार्य करती हैं। विदेश व्यापार नीति के तहत सरकारी निर्यात योजनाओं तथा कर छूटों का लाभ प्राप्त करने के लिए निर्यातकों हेतु संबंधित परिषद से पंजीकरण-सह-सदस्यता प्रमाण पत्र प्राप्त करना एक अनिवार्य कानूनी शर्त के रूप में लागू किया गया है।

60. (B) डब्ल्यूटीओ समझौतों के आधार पर सदस्य देशों के बीच व्यापार विवादों का निर्णय (अधिनिर्णयन) करना
विश्व व्यापार संगठन के अंतर्गत विवाद निपटान निकाय का प्राथमिक दायित्व सदस्य देशों के बीच उत्पन्न होने वाले अंतरराष्ट्रीय व्यापार विवादों को सुलझाना है। जब कोई सदस्य देश यह मानता है कि किसी अन्य देश ने नियमों का उल्लंघन किया है, तो यह निकाय बहुपक्षीय नियमों के आधार पर मामलों की सुनवाई करके न्यायसंगत निर्णय निष्पक्षता से प्रदान करता है।

61. (B) गैर-सदस्यों को कम शुल्क का लाभ उठाने के लिए आसियान के माध्यम से सामान भेजने से रोकना।
व्यापार समझौतों में 'उत्पत्ति के नियम' का मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना होता है कि केवल भागीदार देशों में उत्पादित वस्तुओं को ही रियायती आयात शुल्कों का प्रत्यक्ष लाभ मिले। यह महत्वपूर्ण प्रावधान गैर-सदस्य तीसरे देशों को अपना सामान भागीदार देश के माध्यम से कम शुल्क पर भारतीय बाजार में डंप करने से रोकने के लिए बनाया गया एक कानूनी ढांचा है।

62. (A) बाजार का विखंडन, उच्च कमीशन शुल्क और खराब कोल्ड स्टोरेज सुविधाएं
भारत के घरेलू कृषि थोक व्यापार में कई गंभीर अवसंरचनात्मक और संस्थागत चुनौतियां विद्यमान हैं। मंडियों का विखंडन, अत्यधिक बिचौलिए, उच्च कमीशन शुल्क तथा पारदर्शी मूल्य खोज तंत्र का अभाव इसके प्रमुख उदाहरण हैं। इसके अतिरिक्त, शीत भंडारण सुविधाओं तथा लॉजिस्टिक्स नेटवर्क की कमी के कारण कटाई के बाद बड़ी मात्रा में कृषि उपज व्यर्थ नष्ट हो जाया करती है।

63. (C) मल्टी-ब्रांड रिटेल
भारतीय खुदरा क्षेत्र में मल्टी-ब्रांड रिटेल उस व्यापारिक प्रारूप को संदर्भित करता है जहां एक ही छत के नीचे एक व्यावसायिक इकाई द्वारा विभिन्न श्रेणियों में कई ब्रांडों के उत्पाद बेचे जाते हैं। बड़े सुपरमार्केट और हाइपरमार्केट मल्टी-ब्रांड रिटेल के उदाहरण हैं जो ग्राहकों को एक ही स्थान पर विभिन्न प्रकार के खरीदारी विकल्प आसानी से उपलब्ध कराते आए हैं।

64. (D) स्वचालित मार्ग के तहत ई-कॉमर्स के मार्केटप्लेस मॉडल में 100% प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) की अनुमति है।
भारत की एफडीआई नीति के अनुसार ई-कॉमर्स के मार्केटप्लेस मॉडल में स्वचालित मार्ग के अंतर्गत 100 प्रतिशत एफडीआई की स्वीकृति दी गई है। मार्केटप्लेस मॉडल में कंपनी केवल खरीदारों और विक्रेताओं को जोड़ने हेतु मंच उपलब्ध कराती है। इसके विपरीत, विदेशी निवेश वाली संस्थाओं को स्वयं माल का स्टॉक रखने तथा अत्यधिक अनुचित छूट देने की अनुमति बिल्कुल नहीं होती है।

65. (C) मुंद्रा पोर्ट
भारत में समुद्री बंदरगाहों को प्रमुख और गैर-प्रमुख श्रेणियों में विभाजित किया गया है। चेन्नई, कोचीन तथा मोर्मुगाओ पोर्ट केंद्र सरकार के अधिनियम के तहत सीधे केंद्र द्वारा प्रशासित प्रमुख बंदरगाह हैं। इसके विपरीत, गुजरात में स्थित मुंद्रा पोर्ट भारत का सबसे बड़ा निजी वाणिज्यिक बंदरगाह है, जो निजी कंपनी द्वारा संचालित तथा सफलतापूर्वक प्रबंधित किया जाने वाला बंदरगाह है।

66. (B) एईओ कार्यक्रम ने निर्यातकों के लिए सीमा शुल्क निकासी को धीमा कर दिया है।
अधिकृत आर्थिक ऑपरेटर (एईओ) कार्यक्रम अंतरराष्ट्रीय आपूर्ति श्रृंखला को मजबूत करने और निर्यातकों व आयातकों के लिए सीमा शुल्क निकासी को तीव्र व आसान बनाने के लिए बनाया गया है। एईओ दर्जा प्राप्त संस्थाओं को शीघ्रता से प्राथमिकता के आधार पर क्लीयरेंस तथा प्रशासनिक छूट मिलती है। अतः सीमा शुल्क निकासी को धीमा बताने वाला कथन गलत सिद्ध होता है।

67. (D) 100 अरब अमेरिकी डॉलर
भारत और संयुक्त अरब अमीरात के बीच मई 2022 से लागू हुए व्यापक आर्थिक भागीदारी समझौते (सीईपीए) का मुख्य लक्ष्य पांच वर्षों के भीतर दोनों देशों के मध्य द्विपक्षीय गैर-तेल वस्तु व्यापार को 100 अरब अमेरिकी डॉलर तक पहुंचाना है। यह समझौता शुल्कों को कम करके दोनों देशों के मध्य व्यापार, निवेश और आर्थिक सहयोग को अत्यधिक मजबूती प्रदान करता है।

Downloaded from www.pdf.tube

68. (A) विदेशी मुद्रा भंडार से डॉलर बेचना
उच्च व्यापार घाटे के कारण जब मुद्रा बाजार में डॉलर की मांग अत्यधिक बढ़ जाती है और रुपये में मूल्यह्रास होने लगता है, तब भारतीय रिजर्व बैंक हस्तक्षेप करता है। केंद्रीय बैंक अपने विदेशी मुद्रा भंडार से डॉलर बेचकर बाजार में डॉलर की आपूर्ति बढ़ाता है, जिससे रुपये की विनिमय दर को स्थायित्व प्रदान किया जाता ही है।

69. (C) सभी अंतरराष्ट्रीय समुद्री बंदरगाहों पर सीधे सीमा शुल्क एकत्र करना
विदेश व्यापार महानिदेशालय विदेश व्यापार नीति का निर्माण करने, 'निर्यात बंधु योजना' द्वारा नए निर्यातकों को मार्गदर्शन देने तथा व्यापारिक दिशा-निर्देश जारी करने का कार्य करता है। बंदरगाहों पर सीधे सीमा शुल्क एकत्र करने का कार्य वित्त मंत्रालय के केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर और सीमा शुल्क बोर्ड द्वारा निष्पादित किया जाता आ रहा है।

70. (A) संयुक्त राज्य अमेरिका - कपड़ा और कच्चा जूट
संयुक्त राज्य अमेरिका से भारत मुख्य रुप से कच्चा तेल, तरलीकृत प्राकृतिक गैस, विमान, बहुमूल्य धातुएं तथा उच्च तकनीक उपकरण आयात करता है। इसके विपरीत, भारत स्वयं कपड़ा, परिधान तथा जूट निर्मित उत्पादों का एक बड़ा निर्यातक देश है। अतः अमेरिका से कपड़ा और जूट आयात करने संबंधी पहला युग्म गलत तथा अनुचित माना जाता ही है।

71. (D) एक व्यापार टोकरी (बास्केट) के विरुद्ध मुद्रा का मुद्रास्फीति-समायोजित भारित औसत मूल्य
'वास्तविक प्रभावी विनिमय दर' प्रमुख व्यापारिक साझेदार देशों की मुद्राओं की टोकरी के मुकाबले किसी देश की मुद्रा का मुद्रास्फीति-समायोजित भारित औसत मूल्य दर्शाती है। इसका उपयोग देश की अंतरराष्ट्रीय व्यापारिक प्रतिस्पर्धात्मकता का सटीक मूल्यांकन करने हेतु किया जाता है। आरईईआर में वृद्धि यह संकेत देती है कि देश के निर्यात वैश्विक बाजार में अपेक्षाकृत महंगे तथा कम प्रतिस्पर्धी हो रहे हैं।

72. (C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
ईसीजीसी लिमिटेड वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में पूर्णतः भारत सरकार के स्वामित्व वाली संस्था है। ईसीजीसी का मुख्य कार्य भारतीय निर्यातकों को व्यावसायिक जोखिमों के साथ-साथ राजनीतिक जोखिमों जैसे युद्ध, नागरिक अशांति या मुद्रा प्रतिबंधों दोनों के खिलाफ बीमा कवर प्रदान करना है। अतः राजनीतिक जोखिमों को बाहर बताने वाला दूसरा कथन गलत सिद्ध होता है।

73. (C) डॉलर की तरलता में कमी और भुगतान में चूक के कारण श्रीलंका को कम निर्यात
यदि श्रीलंका गंभीर संप्रभु ऋण संकट और विदेशी मुद्रा की तीव्र कमी का सामना करता है, तो श्रीलंकाई आयातक भारतीय निर्यातकों को समय पर भुगतान करने में असमर्थ हो जाते हैं। डॉलर तरलता संकट के कारण श्रीलंका द्वारा आयात पर प्रतिबंध लगाने से भारत से श्रीलंका को होने वाले वस्तु निर्यात में गिरावट आएगी और भुगतान चूक का जोखिम बढ़ेगा।

74. (D) इस्पात और एल्युमीनियम जैसे कार्बन-गहन आयातों पर कर लगाता है, जिससे निर्यात प्रभावित होता है
यूरोपीय संघ का 'कार्बन बॉर्डर एडजस्टमेंट मैकेनिज्म' गैर-यूरोपीय संघ देशों से आयातित इस्पात, एल्युमीनियम तथा सीमेंट जैसी कार्बन-गहन वस्तुओं पर सीमा कार्बन कर आरोपित करता है। इसका मुख्य उद्देश्य कार्बन उत्सर्जन को कम करना है। हालांकि, इस कर के कारण भारतीय इस्पात व एल्युमीनियम निर्यातकों की लागत बढ़ेगी जिससे यूरोपीय बाजार में उनका निर्यात प्रतिकूल रूप से प्रभावित हो सकता है।

75. (A) चिकित्सा पर्यटन (मेडिकल टूरिज्म), शिक्षा और परामर्श बढ़ते हुए सेवा निर्यात हैं।
भारत के सेवा व्यापार बास्केट में पारंपरिक आईटी तथा सॉफ्टवेयर सेवाओं के अलावा चिकित्सा पर्यटन, उच्च शिक्षा, वित्तीय सेवाएं तथा व्यावसायिक परामर्श सेवाएं तेजी से बढ़ते हुए नए क्षेत्र हैं। भारत सॉफ्टवेयर व परामर्श सेवाओं का एक निवल निर्यातक देश है और भारत का सेवा व्यापार संतुलन ऐतिहासिक रुप से निरंतर सफल होता आया है।

76. (B) इमारती पत्थर (डायमेंशनल पत्थर), हस्तशिल्प और कृषि उत्पाद
भारत के आर्थिक मानचित्र में राजस्थान राज्य मुख्यतः इमारती पत्थरों जैसे संगमरमर व ग्रैनाइट, उत्कृष्ट पारंपरिक हस्तशिल्प सामान तथा विशिष्ट कृषि उत्पादों जैसे जीरा व ग्वार गम के निर्यात में राष्ट्रीय स्तर पर अग्रणी भूमिका निभाता है। यह विविध उत्पाद क्षेत्र राज्य के कुल वस्तु निर्यात बास्केट में सर्वाधिक योगदान देने वाले प्राथमिक घटकों में से एक माने जाते हैं।

77. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
'निर्यात हब के रूप में जिले' पहल का मुख्य उद्देश्य भारत के प्रत्येक जिले की स्थानिक विनिर्माण तथा कृषि क्षमता की पहचान करके उसे निर्यात केंद्र के रूप में विकसित करना है। इस राष्ट्रीय योजना के तहत राजस्थान के जिलों में निर्यात योग्य विशिष्ट उत्पादों की पहचान की गई है, जैसे जयपुर से ब्लू पॉटरी। अतः दोनों कथन सही हैं।

78. (A) कच्चा सूरजमुखी तेल और पाम तेल
पूंजीगत वस्तुओं के अंतर्गत ऐसी परिसंपत्तियां आती हैं जिनका उपयोग अन्य वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में किया जाता है, जैसे भारी मशीनरी, मशीन टूल्स तथा परिवहन उपकरण। इसके विपरीत, कच्चा सूरजमुखी तेल और पाम तेल प्राथमिक कृषि व उपभोक्ता खाद्य उत्पाद हैं। अतः इन्हें पूंजीगत वस्तुओं की श्रेणी में वर्गीकृत नहीं किया जाना अर्थशास्त्र के अनुसार सही नहीं है।

79. (C) संयुक्त अरब अमीरात (यूएई)
संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) मध्य पूर्व का एक प्रमुख देश है जो अमेरिका और चीन के बाद भारत का तीसरा सबसे बड़ा वैश्विक व्यापारिक भागीदार बना हुआ है। वर्ष 2022 में लागू हुए व्यापक आर्थिक भागीदारी समझौते के पश्चात दोनों देशों के मध्य गैर-तेल व्यापार, निवेश तथा आर्थिक सहयोग में अत्यधिक वृद्धि दर्ज की जाती आ रही ही है।

NODIA

80. (D) व्यापार घाटे को कम करने के लिए कम लागत वाले कृत्रिम आयातों पर अंकुश लगाना।
एंटी-डंपिंग शुल्क एक व्यापार सुरक्षात्मक उपाय है जो सरकार द्वारा तब लगाया जाता है जब कोई देश अपने घरेलू मूल्य से कम दर पर भारत में सामान डंप करता है। इस शुल्क का प्रत्यक्ष उद्देश्य कम लागत वाले अनुचित आयातों पर अंकुश लगाना, घरेलू उद्योगों की रक्षा करना तथा देश के वस्तु व्यापार घाटे को कम करना ही होता है।

81. (C) जब वस्तुओं, सेवाओं और निवल जावक आय का आयात कुल निर्यात से अधिक हो जाता है।
चालू खाता घाटा भुगतान संतुलन का एक प्रमुख समष्टि अर्थशास्त्र सूचक है। यह स्थिति तब उत्पन्न होती है जब किसी देश द्वारा एक निश्चित अवधि में वस्तुओं, सेवाओं तथा जावक आय का कुल आयात उसके कुल निर्यात से अधिक हो जाता है। यह अंतर देश की बाह्य वित्तीय निर्भरता और देनदारियों में होने वाली वृद्धि को प्रदर्शित करता ही है।

82. (B) रिबेट ऑफ ड्यूटीज एंड टैक्सेस ऑन एक्सपोर्टेड प्रोडक्ट्स
भारत की विदेश व्यापार नीति में पूर्ववर्ती एमईआईएस योजना के स्थान पर 'आरओडीटीईपी' योजना लागू की गई। इसका पूरा नाम 'रिबेट ऑफ ड्यूटीज एंड टैक्सेस ऑन एक्सपोर्टेड प्रोडक्ट्स' है। इस योजना का मुख्य उद्देश्य निर्यातित वस्तुओं के उत्पादन में लगे उन केंद्रीय व स्थानीय करों और शुल्कों की वापसी सुनिश्चित करना है जो अन्यथा छूट मुक्त रह जाते आए हैं।

83. (D) प्रसंस्करण क्षेत्र
विशेष आर्थिक क्षेत्र की भूमि संरचना को दो मुख्य भागों में विभाजित किया जाता है: प्रसंस्करण क्षेत्र और गैर-प्रसंस्करण क्षेत्र। प्रसंस्करण क्षेत्र वह भाग है जो विशुद्ध रूप से माल के विनिर्माण, व्यापार या सेवाएं प्रदान करने के लिए समर्पित होता है। एसईज़ेड अधिनियम के तहत मिलने वाले प्रत्यक्ष कर अवकाश व शुल्क छूट मुख्यतः इसी क्षेत्र में लागू होते हैं।

84. (A) वे बाजार आसूचना (मार्केट इंटेलिजेंस), व्यापार मेलों तक पहुंच और अनुपालन में सहायता प्रदान करती हैं।
भारत के सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों के लिए निर्यात प्रोत्साहन परिषदें अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। चूंकि एमएसएमई के पास अंतरराष्ट्रीय बाजारों की जानकारी कम होती है, ईपीसी उन्हें मूल्यवान बाजार आसूचना, वैश्विक व्यापार मेलों में भागीदारी, अनुपालन में सहायता तथा विदेशी खरीदारों से जुड़ने के अवसर निरंतर प्रदान करती हैं। इससे उनका निर्यात व्यवसाय काफी सुलभ होता है।

85. (C) भारत को डब्ल्यूटीओ के सभी सदस्य देशों को समान व्यापार रियायतें प्रदान करनी होंगी।
विश्व व्यापार संगठन का 'मोस्ट फेवर्ड नेशन' नियम गैर-भेदभाव के सिद्धांत पर आधारित है। यदि भारत किसी एक सदस्य देश को व्यापार में कोई विशेष शुल्क छूट या रियायत प्रदान करता है, तो एमएफएन सिद्धांत के तहत वही समान अनुकूल व्यापार रियायतें बिना किसी भेदभाव के संगठन के अन्य सभी सदस्य देशों पर भी स्वतः ही लागू हो जाती हैं।

86. (A) सार्क
'दक्षिण एशियाई मुक्त व्यापार क्षेत्र' समझौता दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (सार्क) के आठ सदस्य राष्ट्रों के बीच संपन्न एक ऐतिहासिक क्षेत्रीय व्यापार समझौता है। इस समझौते का मुख्य ध्येय दक्षिण एशियाई क्षेत्र में सदस्य देशों के मध्य व्यापार को बढ़ावा देना, सीमा शुल्कों को चरणबद्ध रूप से घटाना तथा आर्थिक व क्षेत्रीय व्यापारिक सहयोग को सुदृढ़ बनाना रहा है।

87. (D) भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी)
एपीएमसी मंडियां, ई-नाम व्यापार मंच तथा भारतीय खाद्य निगम सीधे भारत के कृषि विपणन तथा थोक कृषि उपज व्यापार ढांचे से संबंधित संस्थाएं हैं। इसके विपरीत, भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) भारत में पूंजी बाजार और शेयर बाजार का नियामक निकाय है। सेबी का भौतिक कृषि थोक व्यापार के संचालन या नियमन से कोई संबंध नहीं होता ही है।

88. (B) 51% तक
भारत की एफडीआई नीति के अनुसार विशिष्ट शर्तों और सरकारी अनुमोदन मार्ग के अंतर्गत मल्टी-ब्रांड रिटेल ट्रेडिंग में 51 प्रतिशत तक एफडीआई की अनुमति दी गई है। इन शर्तों में न्यूनतम 100 मिलियन डॉलर का निवेश, 50 प्रतिशत हिस्सा बैक-एंड इंफ्रास्ट्रक्चर में लगाना तथा 30 प्रतिशत सामान स्थानीय छोटे उद्यमों से खरीदना वैधानिक रूप से अनिवार्य किया गया होता है।

89. (C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
भारत में ई-कॉमर्स गतिविधियों की तीव्र वृद्धि ने टियर-1 और टियर-2 शहरों के पास वेयरहाउसिंग क्लस्टरों के विकास को अत्यधिक प्रेरित किया है। अतः पहला कथन सत्य है। दूसरा कथन गलत है क्योंकि भारत में सभी ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म उपभोक्ता संरक्षण नियम, 2020 के अंतर्गत कानूनी रूप से बाध्य हैं और नियमों का पालन करने के लिए उत्तरदायी माने जाते हैं।

90. (D) एक एकल इलेक्ट्रॉनिक घोषणा के माध्यम से प्रतीक्षा समय और लागत को कम करके।
भारतीय सीमा शुल्क द्वारा शुरू किए गए 'स्वीफ्ट' पोर्टल ने अंतरराष्ट्रीय व्यापार सुगमता को अत्यधिक बढ़ावा दिया है। यह प्रणाली आयातक-निर्यातकों को विभिन्न शासकीय एजेंसियों से अलग-अलग मंजूरी लेने के बजाय एक ही मंच पर एकीकृत इलेक्ट्रॉनिक घोषणा दाखिल करने की सुविधा देती है, जिससे सीमा शुल्क पर लगने वाला प्रतीक्षा समय तथा व्यापारिक लागत में भारी कमी आती है।

www.nodia.in

Click Here to Buy book on Amazon

45. (B) संयुक्त राज्य अमेरिका
भारत का चीन, सऊदी अरब तथा इराक जैसे देशों के साथ अत्यधिक वस्तु व्यापार घाटा रहता है क्योंकि भारत चीन से बड़े पैमाने पर निर्मित सामान तथा मध्य-पूर्व से कच्चा तेल आयात करता है। इसके विपरीत, संयुक्त राज्य अमेरिका उन प्रमुख वैश्विक व्यापारिक भागीदारों में से एक है जिसके साथ भारत निरंतर अनुकूल वस्तु व्यापार अधिशेष बनाए रखता आया है।

46. (A) रुपये का मूल्यह्रास भारत में आयात की अंतिम (लैंडेड) लागत को बढ़ाता है।
विनिमय दर में परिवर्तन विदेशी व्यापार को अत्यधिक प्रभावित करता है। जब भारतीय रुपये का विदेशी मुद्राओं की तुलना में मूल्यह्रास होता है, तो विदेशी वस्तुओं को खरीदने के लिए अधिक रुपये देने पड़ते हैं, जिससे आयात की अंतिम लागत बढ़ जाती है। इसके विपरीत, एक अतिमूल्यांकित घरेलू मुद्रा आयातों को सस्ता बनाती है और निर्यात प्रतिस्पर्धा को घटाती है।

47. (C) P-2, Q-4, R-3, S-1
व्यावसायिक जोखिम खरीदार द्वारा चूक या दिवालियापन से संबंधित होता है। राजनीतिक जोखिम खरीदार के देश में युद्ध या मुद्रा प्रतिबंध जैसी स्थितियों से उत्पन्न होता है। निर्यात ऋण बीमा विदेशी खरीदारों द्वारा भुगतान न करने के नुकसान के खिलाफ सुरक्षा देता है। शिपमेंट से पूर्व वित्तपोषण निर्माण व पैकिंग के लिए दिया जाने वाला बैंक ऋण माना जाता है।

48. (D) म्यांमार
कलादान मल्टी-मॉडल ट्रांजिट ट्रांसपोर्ट प्रोजेक्ट भारत और म्यांमार के बीच एक प्रमुख द्विपक्षीय बुनियादी ढांचा पहल है। इसका उद्देश्य भारत के कोलकाता बंदरगाह को म्यांमार के सितवे बंदरगाह से समुद्री मार्ग द्वारा जोड़ना है, और तत्पश्चात कलादान नदी मार्ग व सड़क नेटवर्क के माध्यम से भारत के मिजोरम राज्य तक निर्बाध माल परिवहन सुलभ तथा तेजी से सुनिश्चित करना है।

49. (A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
बहुराष्ट्रीय कंपनियां वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में किसी एक देश पर अत्यधिक निर्भरता के जोखिम को कम करने के लिए 'चाइना प्लस वन' रणनीति अपना रही हैं। इस रणनीति के अंतर्गत कंपनियां विनिर्माण का विविविधीकरण कर भारत जैसे देशों में निवेश बढ़ा रही हैं। इससे भारत के विनिर्माण और निर्यात क्षेत्र के लिए व्यापक अवसर निर्मित हुए हैं। अतः दोनों सही हैं।

50. (B) सॉफ्टवेयर और आईटी-सक्षम सेवाएं
भारत के सेवा निर्यात बास्केट में ऐतिहासिक रूप से सॉफ्टवेयर और सूचना प्रौद्योगिकी-सक्षम सेवाओं का वर्चस्व रहा है। इस क्षेत्र की उच्च वैश्विक मांग और प्रतिस्पर्धात्मकता के कारण भारत लगातार अपने सेवा व्यापार खाते में एक मजबूत तथा टिकाऊ अधिशेष बनाए रखने में सफल रहा है। यह सेवा अधिशेष भारत के वस्तु व्यापार घाटे की आंशिक भरपाई भी करता है।

51. (D) एफडीआई को सक्रिय रूप से प्रोत्साहित किया जाता था और सभी क्षेत्रों में 100% तक की अनुमति थी।
1991 के आर्थिक सुधारों से पूर्व भारत एक बंद और संरक्षणवादी अर्थव्यवस्था के रूप में कार्य करता था, जहाँ उच्च आयात शुल्कों, लाइसेंस राज तथा आयात प्रतिस्थापन की नीतियों का बोलबाला था। उस दौर में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) पर अत्यंत कड़े वैधानिक प्रतिबंध थे और अधिकांश क्षेत्रों में 100% एफडीआई की अनुमति नहीं थी। अतः कथन अनुचित सिद्ध होता है।

52. (C) केवल I और III
बासमती चावल, मसाले, चीनी तथा कपास भारत की प्रमुख कृषि निर्यात वस्तुओं में शामिल हैं। एपीडा भारत में अनुसूचित कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पादों के निर्यात संवर्धन हेतु नोडल संस्था के रूप में कार्य करता है। हालांकि, भारत वैश्विक गेहूं निर्यात में शीर्ष स्थान पर नहीं है क्योंकि भारत अपनी घरेलू खाद्य सुरक्षा को प्राथमिकता से पूरा करता ही है।

53. (C) इस्पात विनिर्माण उद्योग
कोकिंग कोल और फेरोनिकल इस्पात विनिर्माण प्रक्रिया में उपयोग किए जाने वाले दो अति आवश्यक प्राथमिक कच्चे माल हैं। भारत अपनी कोकिंग कोल की उच्च आवश्यकताओं के लिए आयात पर अत्यधिक निर्भर है। इन कच्चे मालों पर आयात शुल्क में कटौती करने से घरेलू इस्पात निर्माताओं की लागत काफी कम हो जाती है, जिससे इस्पात उद्योग अधिक प्रतिस्पर्धी बनता है।

54. (A) जर्मनी
यूरोपीय संघ के सदस्य राष्ट्रों में जर्मनी ऐतिहासिक रूप से भारत का सबसे बड़ा वस्तु व्यापारिक भागीदार रहा है। भारत और जर्मनी के बीच व्यापक द्विपक्षीय व्यापारिक संबंध हैं, जिनमें भारत मुख्यतः जर्मनी से उच्च तकनीक वाली मशीनरी, ऑटोमोबाइल घटक तथा रसायन आयात करता है और वस्त्र, रासायनिक उत्पाद तथा इंजीनियरिंग सामान का बड़े पैमाने पर निर्यात करते आ रहे हैं।

55. (B) I, II और IV
व्यापार संतुलन केवल मूर्त या भौतिक वस्तुओं के आयात और निर्यात का लेखा-जोखा होता है। यदि वस्तुओं का आयात निर्यात से अधिक हो तो यह ऋणात्मक व्यापार घाटा दर्शाता है। सॉफ्टवेयर सेवाओं के व्यापार को इसमें शामिल न करके चालू खाते में रखा जाता है। भारत का व्यापार संतुलन 1990 के बाद अधिकांश वर्षों में घाटे में ही रहा है।

56. (B) विदेशी मुद्रा परिसंपत्तियां (एफसीए), आरबीआई का स्वर्ण भंडार, विशेष आहरण अधिकार (एसडीआर), और आईएमएफ रिज़र्व ट्रेंच स्थिति
भारत के आधिकारिक विदेशी मुद्रा भंडार का प्रबंधन भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा किया जाता है। इस भंडार में मुख्य रूप से चार घटक शामिल होते हैं: विदेशी मुद्रा परिसंपत्तियां, स्वर्ण भंडार, आईएमएफ में विशेष आहरण अधिकार, और रिज़र्व ट्रेंच स्थिति। यह विशाल भंडार देश को मजबूत सुरक्षा एवं स्थायित्व प्रदान करने में सहायता करता है।

NODIA

(C) रोही
(D) जोहड़

11. जैसलमेर जिले में 'लाठी सीरीज़' मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किस कारण से महत्त्वपूर्ण है?
(A) यह उच्च श्रेणी के तांबा अयस्क निक्षेपों का एक प्रमुख समृद्ध स्रोत है।
(B) यह मरुस्थलीय क्षेत्र में एक प्रमुख भूगर्भीय भूमिगत जलभृत है।
(C) यह सक्रिय बरखान बालुका स्तूपों की एक लंबी, निरंतर पट्टी है।
(D) यह थार मरुस्थल को पार करने वाला एक प्राचीन व्यापारिक मार्ग है।

12. राजस्थान में 'बरखान' बालुका स्तूपों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. ये अत्यधिक गतिशील प्रकृति वाले अर्धचंद्राकार बालुका स्तूप हैं।
II. ये मुख्य रूप से शेखावाटी और चुरु क्षेत्रों में पाए जाते हैं।
III. ये स्थिर बालुका स्तूप हैं जो मरुस्थलीकरण के प्रसार को रोकते हैं।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल II और III
(B) केवल I और II
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

13. अरावली पर्वतमाला में कुंभलगढ़ और गोगुंदा के बीच स्थित उच्च, विषमांग पठारी क्षेत्र को किस नाम से जाना जाता है?
(A) भोराट का पठार
(B) उड़िया का पठार
(C) मेसा का पठार
(D) लसाड़िया का पठार

14. पश्चिमी राजस्थान में पाई जाने वाली निम्नलिखित भू-आकृतिक विशेषताओं में से असंगत को पहचानिए।
(A) बरखान
(B) सीफ
(C) खडीन
(D) पैराबोलिक

15. निम्नलिखित अरावली पर्वत शिखरों का सर्वोच्च से न्यूनतम ऊँचाई का सही क्रम चुनिए।
(A) सेर, गुरु शिखर, जरगा, दिलवाड़ा
(B) गुरु शिखर, दिलवाड़ा, सेर, जरगा
(C) गुरु शिखर, सेर, जरगा, दिलवाड़ा
(D) गुरु शिखर, सेर, दिलवाड़ा, जरगा

16. राजस्थान के चार प्रमुख भौतिक/भू-आकृतिक विभागों में से किस विभाग का भौगोलिक क्षेत्रफल सबसे कम है?
(A) पश्चिमी रेतीला मैदानी प्रदेश
(B) मध्य अरावली पर्वतीय प्रदेश
(C) दक्षिण-पूर्वी हाडोती पठार
(D) पूर्वी कृषि मैदानी प्रदेश

17. घग्गर के मैदान के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन असत्य है?
(A) इसमें सबसे उत्तरी जिले श्री गंगानगर और हनुमानगढ़ शामिल हैं।
(B) यह दक्षिणी राजस्थान में लूनी नदी बेसिन का एक प्रमुख भाग बनाता है।
(C) इस मैदान का निर्माण प्राचीन सरस्वती नदी तंत्र के जलोढ़ निक्षेपों द्वारा हुआ है।
(D) इसे स्थानीय रुप से 'नाली' क्षेत्र कहा जाता है।

18. कौन-सी समवर्षा रेखा राजस्थान राज्य को मोटे तौर पर दो अलग-अलग भौगोलिक भागों में विभाजित करती है, जो शुष्क/अर्ध-शुष्क पश्चिम और उप-आर्द्र पूर्व के बीच एक सीमा के रूप में कार्य करती है?
(A) 25 सेमी समवर्षा रेखा
(B) 50 सेमी समवर्षा रेखा
(C) 75 सेमी समवर्षा रेखा
(D) 100 सेमी समवर्षा रेखा

19. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A) : दक्षिण-पश्चिम मानसून के मौसम के दौरान पश्चिमी राजस्थान में बहुत कम वर्षा होती है।
कारण (R) : अरावली पर्वतमाला का विस्तार मानसून की अरब सागर शाखा की दिशा के समानांतर है।
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

20. पालनपुर (गुजरात) से रायसीना पहाड़ी (दिल्ली) तक अरावली पर्वतमाला की कुल लंबाई लगभग 692 किमी है। राजस्थान की राज्य सीमाओं के भीतर इसकी अनुमानित लंबाई कितनी है?
(A) 450 किमी
(B) 550 किमी
(C) 600 किमी
(D) 650 किमी

21. जैसलमेर के शुष्क क्षेत्रों में, बालुका स्तूपों के बीच निचले गर्त जहाँ वर्षा का जल अस्थायी रुप से एकत्र होता है, पालीवाल ब्राह्मणों द्वारा कृषि के लिए संशोधित किए जाते हैं। इन संरचनाओं को कहा जाता है:
(A) खडीन
(B) जोहड़
(C) बावड़ी
(D) टोबा

Downloaded from www.pdf.tube

85. प्रचलित पवन की दिशा के समानांतर बनने वाले बालुका स्तूप, जो आमतौर पर एकल फिसलन वाले फलक के साथ लंबे और संकरे होते हैं, मरुस्थलीय भू-आकारिकी में कहलाते हैं:
(A) सीफ स्तूप
(B) अनुप्रस्थ बालुका स्तूप
(C) अर्धचंद्राकार बरखान स्तूप
(D) बहु-बिंदु तारा स्तूप

86. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A) : नागौर और अजमेर के बीच फैले भौगोलिक क्षेत्र को स्थानीय रूप से 'बाँका पट्टी' (कुबड़ पट्टी) कहा जाता है।
कारण (R) : इस विशिष्ट क्षेत्र के भूजल में फ्लोराइड का असामान्य रूप से उच्च स्तर होता है, जिससे आबादी में कंकाल फ्लोरोसिस होता है।
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

87. राजस्थान के पूर्वी मैदानों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. ये राज्य के भौगोलिक क्षेत्रफल के लगभग 23.3% भाग को आच्छादित करते हैं।
II. ये मुख्य रूप से बनास, चंबल और माही जैसी नदियों के निक्षेपण कार्य द्वारा निर्मित हैं।
III. यह क्षेत्र इसके दक्षिणी छोर पर छप्पन बेसिन का घर है।
IV. उपजाऊ मिट्टी के कारण यह राज्य की लगभग 39% जनसंख्या का पोषण करता है।
उपर्युक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) I, II, III और IV
(C) केवल II, III और IV
(D) केवल I, III और IV

88. माउंट आबू, जो संरचनात्मक रूप से अरावली पर्वतमाला की मुख्य वलित कटकों से अलग है, एक विशाल भूगर्भीय बैथोलिथ माना जाता है। इसकी प्राथमिक शैल संरचना क्या है?
(A) बलुआ पत्थर
(B) चूना पत्थर
(C) ग्रेनाइट
(D) बेसाल्ट

89. राजस्थान की निम्नलिखित प्रमुख नदियों में से किसका उद्गम अरावली की पहाड़ियों से नहीं होता है?
(A) लूनी
(B) बनास
(C) साबरमती
(D) घग्गर

NODIA

90. पश्चिमी रेतीले निक्षेपों और कुछ पूर्वी जलोढ़ को छोड़कर, राजस्थान की समग्र संरचनात्मक नींव को मूलभूत रूप से किस प्रमुख भारतीय भौतिक विभाग का उत्तर-पश्चिमी विस्तार माना जाता है?
(A) प्रायद्वीपीय पठार
(B) हिमालय पर्वत प्रणाली
(C) उत्तरी विशाल मैदानी प्रदेश
(D) भारत के तटीय मैदान

www.nodia.in

3. अरावली पर्वतीय प्रदेश
4. दक्षिण-पूर्वी पठार (हाडोती)

सही कूट का चयन कीजिए:
(A) 1, 3, 2, 4
(B) 2, 1, 3, 4
(C) 1, 2, 3, 4
(D) 1, 2, 4, 3

33. कौन-सी समवर्षा रेखा मुख्य रूप से पश्चिमी रेतीले मैदान को शुष्क 'मरुस्थली' और अर्ध-शुष्क 'राजस्थान बांगर' में विभाजित करती है?
(A) 10 सेमी समवर्षा रेखा
(B) 25 सेमी समवर्षा रेखा
(C) 50 सेमी समवर्षा रेखा
(D) 75 सेमी समवर्षा रेखा

34. पारिस्थितिक दृष्टिकोण से, राजस्थान के पर्यावरण में अरावली पर्वतमाला की सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका क्या है?
(A) यह सिंधु नदी तंत्र की ऊपरी सहायक नदियों के प्राथमिक उद्गम स्थल के रूप में कार्य करती है।
(B) यह शुष्क जैसलमेर जिले में भारी वार्षिक पर्वतीय वर्षा को प्रेरित करती है।
(C) यह उत्तर भारत में उष्णकटिबंधीय सदाबहार वनों के लिए प्राथमिक पारिस्थितिक क्षेत्र के रूप में कार्य करती है।
(D) यह थार मरुस्थल के पूर्व की ओर प्रसार के विरुद्ध एक भौतिक अवरोध के रूप में कार्य करती है।

35. पश्चिमी राजस्थान के 'मरुस्थली' उप-क्षेत्र के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह राज्य के सबसे शुष्क और मरुस्थलीकृत भू-भाग का प्रतिनिधित्व करता है।
II. यह व्यापक बालुका स्तूप संरचनाओं और अत्यंत कम वार्षिक वर्षा द्वारा अभिलक्षित है।
III. यह बारहमासी नदियों के सघन जाल और सघन चौड़ी पत्ती वाले वनों का पोषण करता है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन असत्य है/हैं?
(A) केवल III
(B) केवल I और II
(C) केवल I और III
(D) केवल II

36. राजस्थान का सबसे ऊँचा पठार उड़िया पठार है। माध्य समुद्र तल से इसकी अनुमानित ऊँचाई कितनी है?
(A) 1200 मीटर
(B) 1360 मीटर
(C) 1431 मीटर
(D) 1722 मीटर

37. निम्नलिखित में से कौन-सा बालुका स्तूप का प्रकार सामान्यतः राजस्थान के थार मरुस्थल में नहीं पाया जाता है?
(A) ड्रमलिन
(B) अनुदैर्ध्य (सीफ)
(C) पैराबोलिक
(D) बरखान

38. अरावली की तलहटी की भू-आकृति में, विशेष रूप से बनास बेसिन में देवगढ़ के आसपास, एक ऊँचे, अवशिष्ट अपरदनात्मक मैदान को क्या कहा जाता है?
(A) पेडिमेंट सतह
(B) हमदा
(C) बजादा
(D) पीडमोंट मैदान

39. राजस्थान में मरुस्थलीय भू-आकृति के संदर्भ में, 'हमदा' शब्द विशेष रूप से किसे संदर्भित करता है?
(A) एक अत्यधिक गतिशील और स्थानांतरित होने वाली अर्धचंद्राकार बालुका स्तूप कटक।
(B) बालू से मुक्त एक बंजर, चट्टानी और पथरीला मरुस्थलीय मैदान।
(C) मरुस्थलीय अवनमन के भीतर निर्मित एक अस्थायी लवणीय प्लाया झील।
(D) खजूर के वृक्ष और स्थानीय फसल कृषि को सहारा देने वाला मरुद्यान।

40. दक्षिण-पूर्वी पठार के विंध्यन कगार मुख्य रूप से किस प्रकार की अवसादी चट्टानों से बने हैं?
(A) क्रिस्टलीय ग्रेनाइट और नीस चट्टानें
(B) पत्रित (फोलिएटेड) शिस्ट और फाइलाइट पट्टियाँ
(C) अवसादी बलुआ पत्थर और चूना पत्थर
(D) ज्वालामुखीय रियोलाइट और टफ निक्षेप

41. पश्चिमी राजस्थान की भू-आकृति इसके कृषि फसल प्रतिरूप को प्रत्यक्ष रूप से कैसे प्रभावित करती है?
(A) ज्वालामुखीय मिट्टी वाली चट्टानी बेसाल्टिक भूमि पूरे क्षेत्र में व्यापक कपास की खेती के अनुकूल है।
(B) बारहमासी नदियों का सघन जाल वर्ष भर व्यापक धान और गेहूं की खेती का समर्थन करता है।
(C) उच्च ऊँचाई वाले ठंडे पठार व्यावसायिक सेब के बागों के लिए एक आदर्श वातावरण प्रदान करते हैं।
(D) रेतीली मिट्टी और कम नमी धारण क्षमता बाजरा जैसी शुष्कता-रोधी फसलों के अनुकूल है।

42. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A) : पूर्वी मैदान राजस्थान का सबसे सघन आबादी वाला भौतिक विभाग है।
कारण (R) : इस क्षेत्र में नदियों द्वारा निक्षेपित अत्यधिक उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी पाई जाती है और कृषि के लिए पर्याप्त जल उपलब्ध है।
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

Click Here to Buy book on Flipkart

22. अरावली पर्वतमाला के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसे एक अवशिष्ट पर्वत प्रणाली के रूप में वर्गीकृत किया गया है।
II. यह मुख्य रूप से अवसादी शैल संरचनाओं द्वारा अभिलक्षित है।
III. इसने ऐतिहासिक रूप से थार मरुस्थल के पूर्व की ओर प्रसार को रोका।
IV. इसका निर्माण प्री-कैम्ब्रियन विवर्तनिक गतिविधियों के दौरान हुआ था।
उपर्युक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) I, II और III
(B) II, III और IV
(C) I, II और IV
(D) I, III और IV

23. राजस्थान के भू-आकृतिक स्वरूप में 'गिरवा' शब्द का संदर्भ है:
(A) चंबल नदी के किनारे अत्यधिक अपरदित और बीहड़ भू-भाग।
(B) उदयपुर नगर को घेरने वाली पहाड़ियों की तश्तरीनुमा श्रृंखला।
(C) नागौर उच्च भूमि में पाई जाने वाली अत्यधिक लवणीय सतही गर्त।
(D) जालौर क्षेत्र में स्थित पृथक, तीव्र ढाल वाली ग्रेनाइट पहाड़ियाँ।

24. निम्नलिखित में से कौन-सी चोटी मध्य अरावली क्षेत्र की सर्वोच्च चोटी का प्रतिनिधित्व करती है?
(A) रघुनाथगढ़
(B) अचलगढ़
(C) तारागढ़
(D) बबाई

25. निम्नलिखित में से कौन-सा जिला राजस्थान के दक्षिण-पूर्वी पठार (हाडोती क्षेत्र) के अंतर्गत नहीं आता है?
(A) कोटा
(B) बूंदी
(C) बारां
(D) दौसा

26. राजस्थान का महान सीमा भ्रंश किन जिलों की पर्वत श्रृंखलाओं के लगभग समानांतर फैला है?
(A) बूंदी और सवाई माधोपुर
(B) उदयपुर और राजसमंद जिले
(C) जालौर और सिरोही जिले
(D) सीकर और झुंझुनू जिले

27. बिजोलिया (भीलवाड़ा) और भैंसरोड़गढ़ (चित्तौड़गढ़) के बीच स्थित उच्च पठारी क्षेत्र पारंपरिक रूप से किस नाम से जाना जाता है?
(A) भोराट
(B) ऊपरमाल
(C) खैराड़
(D) छप्पन

28. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।
सूची I : (स्थानीय नाम/क्षेत्र)
P. गोडवाड़
Q. थली
R. नाली
S. बीड़
सूची II : (भौतिक-भू-आकृतिक विशेषता)
1. लूनी नदी बेसिन
2. बीकानेर और चुरू के उत्तरी भाग
3. घग्गर नदी का पाट (प्रवाह मार्ग)
4. शेखावाटी क्षेत्र में चरागाह भूमि
(A) P-2, Q-1, R-4, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-1, Q-3, R-2, S-4
(D) P-3, Q-2, R-1, S-4

29. प्रचलित विवर्तनिक सिद्धांतों के अनुसार, भारत की सबसे बड़ी अंतर्देशीय लवण झील, सांभर झील के निर्माण का श्रेय किस भूगर्भीय परिघटना को दिया जाता है?
(A) अरावली में विवर्तनिक भ्रंशन द्वारा निर्मित संरचनात्मक अवनमन।
(B) तीव्र पवन अपरदन प्रक्रियाओं द्वारा निर्मित एक विशाल अपवाहन गर्त।
(C) प्लाइस्टोसीन युग के दौरान एक प्रमुख उल्कापिंड प्रभाव की घटना।
(D) दक्कन ट्रैप निर्माण से एक प्राचीन ज्वालामुखीय क्रेटर के अवशेष।

30. राजस्थान के पूर्वी मैदानों के संदर्भ में निम्नलिखित नदी बेसिनों में से असंगत को पहचानिए।
(A) बनास बेसिन
(B) माही बेसिन
(C) लूनी बेसिन
(D) चंबल बेसिन

31. राजस्थान में दक्कन ट्रैप शैल समूह, जो बेसाल्टिक लावा निक्षेपों और काली मिट्टी द्वारा अभिलक्षित हैं, मुख्य रूप से किन जिलों में सीमित हैं?
(A) जोधपुर, बीकानेर और नागौर
(B) उदयपुर, डूंगरपुर और बांसवाड़ा
(C) अलवर, भरतपुर और धौलपुर
(D) कोटा, झालावाड़ और बारां

32. राजस्थान के चार प्रमुख भौतिक विभागों को राज्य के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल में उनके प्रतिशत हिस्से के आधार पर अवरोही क्रम (घटते क्रम) में व्यवस्थित कीजिए।
1. पश्चिमी रेतीला मैदान
2. पूर्वी मैदान

NODIA

54. राजस्थान की भू-आकृति के आधार पर खनिज संसाधनों के सामान्य वितरण के संबंध में असंगत युग्म को पहचानिए।
(A) तांबा (अरावली क्षेत्र)
(B) सीसा और जस्ता (अरावली क्षेत्र)
(C) जिप्सम (पश्चिमी रेतीला मैदान)
(D) लिग्नाइट कोयला (पूर्वी मैदान)

55. अरावली पर्वतमाला की निम्नलिखित पर्वत चोटियों को भौगोलिक दृष्टि से उत्तर से दक्षिण के क्रम में व्यवस्थित कीजिए।
1. रघुनाथगढ़
2. तारागढ़
3. कुंभलगढ़
4. गुरु शिखर

सही कूट का चयन कीजिए:
(A) 2, 1, 3, 4
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 1, 3, 2, 4
(D) 4, 3, 2, 1

56. जनसांख्यिकीय आँकड़ों से संकेत मिलता है कि पश्चिमी रेतीला मैदान विश्व स्तर पर सबसे अधिक जनसंख्या वाला मरुस्थल है। राजस्थान की कुल जनसंख्या का लगभग कितना प्रतिशत इस क्षेत्र में निवास करता है?
(A) 30%
(B) 40%
(C) 50%
(D) 61%

57. 'खैराड़' क्षेत्र, जो अपनी विषम और तरंगित मैदानी स्थलाकृति के लिए जाना जाता है, किस नदी बेसिन का एक हिस्सा है?
(A) माही बेसिन
(B) लूनी बेसिन
(C) साबरमती बेसिन
(D) बनास बेसिन

58. लूनी नदी बेसिन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसे सामान्यतः दक्षिण-पश्चिमी राजस्थान में गोडवाड़ क्षेत्र कहा जाता है।
II. इसमें कृषि के लिए उपयुक्त उपजाऊ जलोढ़ और दोमट मिट्टी पाई जाती है।
III. यह पूरे दक्षिण-पूर्वी पठार (हाडोती) के लिए प्राथमिक अपवाह प्रणाली के रूप में कार्य करता है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

59. पश्चिमी रेतीले मैदान के शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में मुख्य रूप से किस प्रकार का मृदा गण पाया जाता है?
(A) अल्फ़ीसोल्स
(B) एरिडिसोल्स
(C) इनसेप्टीसोल्स
(D) वर्टीसोल्स

60. अनुप्रस्थ, अर्धचंद्राकार बालुका स्तूप जो राजस्थान में बस्तियों और कृषि के लिए सक्रिय मरुस्थलीकरण का सबसे अधिक खतरा पैदा करते हैं, कहलाते हैं:
(A) अनुदैर्ध्य सीफ स्तूप
(B) अर्धचंद्राकार बरखान स्तूप
(C) बहु-बिंदु तारा (स्टार) स्तूप
(D) झाड़ी-स्थिर नेबखा स्तूप

61. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A) : हाडोती का पठार सोयाबीन और धनिया जैसी नकदी फसलों की खेती के एक प्रमुख केंद्र के रूप में उभरा है।
कारण (R) : यह पठार बेसाल्टिक लावा प्रवाह के अपक्षय से निर्मित नमी-धारण करने वाली काली मिट्टी (वर्टीसोल्स) से आच्छादित है।
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

NODIA

62. निम्नलिखित में से किसे राजस्थान के पूर्वी मैदानों के उप-विभाग के रूप में मान्यता नहीं दी गई है?
(A) बनास बेसिन
(B) छप्पन बेसिन (माही)
(C) गोडवाड़ क्षेत्र
(D) चंबल बेसिन

63. उच्चतम चोटी 1722 मीटर तक पहुँचने के बावजूद, राजस्थान में अरावली पर्वतमाला की अनुमानित औसत ऊँचाई क्या मानी जाती है?
(A) 600 मीटर (B) 930 मीटर
(C) 1220 मीटर (D) 1500 मीटर

64. शेखावाटी क्षेत्र में व्यापक रूप से पाई जाने वाली झाड़ीदार वनस्पति से युक्त पारंपरिक चरागाह भूमि को स्थानीय रूप से क्या कहा जाता है?
(A) भिंड
(B) खडीन
(C) बीड़
(D) जोहड़

65. अपनी विशिष्ट भौगोलिक और सांस्कृतिक पहचान के लिए जाना जाने वाला 'कांठल' क्षेत्र दक्षिणी राजस्थान में किस नदी के तट पर स्थित है?
(A) सोम

(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

43. राजस्थान के निम्नलिखित पर्वतीय दर्रों (नाल) में से असंगत को पहचानिए।
(A) देसूरी की नाल
(B) मुकुंदरा दर्रा
(C) सोमेश्वर की नाल
(D) हाथीगुड़ा की नाल

44. लसाड़िया का पठार, जो अत्यधिक विच्छेदित और बीहड़ भू-भाग द्वारा अभिलक्षित है, किस प्रमुख झील के पूर्व में स्थित है?
(A) ऐतिहासिक पुष्कर झील
(B) जयसमंद झील
(C) पिछोला झील
(D) नक्की झील (माउंट आबू)

45. ऐतिहासिक चित्तौड़गढ़ दुर्ग भौगोलिक रूप से निम्नलिखित में से किस पठार पर स्थित है?
(A) मेसा का पठार
(B) भोराट का पठार
(C) ऊपरमाल का पठार
(D) खैराड़ का पठार

46. पश्चिमी राजस्थान के बाड़मेर-सांचौर बेसिन में खोजे गए पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस के समृद्ध भंडार मुख्य रूप से किस भूगर्भीय काल की चट्टानों से संबंधित हैं?
(A) प्री-कैम्ब्रियन और आर्कियन
(B) टर्शियरी और मेसोजोइक
(C) क्वाटरनरी
(D) कार्बोनिफेरस

47. राजस्थान की मरुस्थलीय शब्दावली में, 'थोब', 'बाप' और 'पचपदरा' जैसी आकृतियाँ किसके उदाहरण हैं?
(A) प्राकृतिक मीठे जल के झरने और बावड़ी
(B) वनस्पति-स्थिर अनुप्रस्थ बालुका स्तूप
(C) पृथक ग्रेनाइट पर्वतीय टीले या इन्सेलबर्ग
(D) लवणीय अवनमन या मरुस्थलीय प्लाया झीलें

48. निम्नलिखित भौगोलिक उप-क्षेत्रों पर विचार कीजिए:
I. लूनी बेसिन (गोडवाड़ क्षेत्र)
II. नागौर उच्च भूमि
III. शेखावाटी आंतरिक अपवाह क्षेत्र
IV. घग्गर का मैदान
उपर्युक्त में से कौन-से उप-क्षेत्र राजस्थान बांगर (अर्ध-शुष्क मैदान) के भाग हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल II, III और IV
(C) I, II, III और IV
(D) केवल I, III और IV

49. निम्नलिखित में से कौन-सी अरावली पर्वत चोटी दक्षिणी अरावली क्षेत्र में स्थित नहीं है?
(A) जरगा चोटी
(B) रघुनाथगढ़
(C) अचलगढ़ चोटी
(D) दिलवाड़ा चोटी

50. राजस्थान में लागू मृदा वर्गीकरण के अनुसार, 'वर्टीसोल्स' मुख्य रूप से किस भौतिक प्रदेश से संबंधित हैं?
(A) पश्चिमी रेतीला मैदानी प्रदेश
(B) मध्य अरावली पर्वतीय प्रदेश
(C) पूर्वी कृषि मैदानी प्रदेश
(D) दक्षिण-पूर्वी हाडोती पठार

51. नागौर उच्च भूमि राजस्थान के भू-आकृतिक स्वरूप में निम्नलिखित में से किस विशेषता के लिए विशिष्ट रूप से जानी जाती है?
(A) अंतर्देशीय लवण झीलें और फ्लोराइड युक्त भूजल पट्टी
(B) गहरे जलोढ़ बीहड़ और सघन पर्णपाती वन
(C) व्यापक बेसाल्टिक लावा प्रवाह और काली मिट्टी
(D) अर्धचंद्राकार बरखान स्तूपों का उच्चतम संकेंद्रण

52. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।
सूची I : (भूगर्भीय समूह)
P. लाठी सीरीज़
Q. मालानी आग्नेय समूह
R. भीलवाड़ा सुपरग्रुप
S. विंध्यन प्रणाली
सूची II : (प्रमुख विशेषता/संसाधन)
1. सबसे प्राचीन आर्कियन आधारभूत चट्टानों में से एक
2. बलुआ पत्थर और चूना पत्थर के निक्षेप
3. पश्चिमी राजस्थान में रियोलाइट और ग्रेनाइट चट्टानें
4. उत्पादक भूजल जलभृत
(A) P-3, Q-4, R-2, S-1
(B) P-4, Q-1, R-3, S-2
(C) P-4, Q-3, R-1, S-2
(D) P-1, Q-2, R-4, S-3

53. राजस्थान में मरुस्थलीकरण पूर्वी जिलों को तेजी से प्रभावित कर रहा है। भू-आकृतिक दृष्टिकोण से, इस प्रसार को मुख्य रूप से किसके द्वारा सुगम बनाया गया है?
(A) सांभर दर्रे जैसे अरावली के अंतरालों के माध्यम से रेत ले जाने वाला पवन अपरदन।
(B) पूर्वी मैदानी क्षेत्र में हाल ही में हुआ विवर्तनिक उत्थान और संरचनात्मक भ्रंशन।
(C) चंबल नदी का पश्चिमी शुष्क क्षेत्रों की ओर बदलता मार्ग।
(D) अरावली शिखरों में उच्च-ऊँचाई वाले हिमनदों का पिघलना।

Downloaded from www.pdf.tube

75. राजस्थान के पश्चिमी मरुस्थल में महत्त्वपूर्ण पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस के भंडारों की उपस्थिति का मूलभूत कारण क्या है?
(A) दक्कन ट्रैप निर्माण काल के दौरान होने वाली व्यापक बेसाल्टिक ज्वालामुखीय विस्फोट गतिविधि।
(B) टर्शियरी काल के दौरान टेथिस सागर के अवशेषों द्वारा निर्मित समुद्री अवसादी बेसिन।
(C) अरावली की जड़ों में गहराई पर अत्यधिक क्षेत्रीय कायांतरित संपीडन और विरूपण।
(D) सेनोजोइक महाकल्प के दौरान होने वाली बड़े पैमाने पर आकाशीय उल्कापिंड प्रभाव की घटनाएँ।

76. निम्नलिखित में से कौन-सा सामान्यतः राजस्थान के शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों से संबंधित अपरदनात्मक भू-रूप नहीं है?
(A) इन्सेलबर्ग
(B) बरखान
(C) यारडांग
(D) ज़्यूगेन

77. राजस्थान के शुष्क परिदृश्य में पीछे हटते हुए पर्वत या पहाड़ी के आधार पर पाए जाने वाले मंद ढाल वाले बेडरॉक धरातल को भू-आकारिकी में क्या कहा जाता है?
(A) पेडिमेंट
(B) प्लाया झील
(C) बजादा मैदान
(D) अर्ग मरुस्थल

78. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A) : बनास नदी बेसिन ग्रामीण कृषि बस्तियों का एक सघन प्रतिरूप प्रदर्शित करता है।
कारण (R) : यह बेसिन घने पर्णपाती वनों से आच्छादित अत्यधिक बीहड़, पर्वतीय भू-भाग द्वारा अभिलक्षित है।
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

79. जलोढ़ मैदानों के संदर्भ में, वर्तमान बाढ़ की सीमाओं से ऊपर स्थित पुराना, उच्च जलोढ़ 'बांगर' के रूप में जाना जाता है। राजस्थान में, नवीन जलोढ़ (खादर) किस नदी के साथ गहरे बीहड़ों में सबसे प्रमुखता से कटा हुआ है?
(A) लूनी
(B) साबरमती
(C) घग्गर
(D) चंबल

80. दक्षिणी अरावली क्षेत्र का विषम भू-भाग मुख्य रूप से स्थानीय ग्रामीण बसावट प्रतिरूप को कैसे प्रभावित करता है?
(A) यह ग्रिड प्रणाली में व्यवस्थित अत्यधिक संकेंद्रित, सघन गाँवों को प्रोत्साहित करता है।
(B) इसके परिणामस्वरूप केवल प्रमुख राज्य राजमार्गों के साथ विशुद्ध रूप से रेखीय बस्तियाँ स्थापित होती हैं।
(C) यह ढलानों और घाटी क्षेत्रों में प्रकीर्णित बस्तियों ('फला' या 'ढाणी') को जन्म देता है।
(D) यह स्थायी मानव निवास को रोकता है, जिससे स्थानीय समुदायों को पूरी तरह से खानाबदोश जीवन शैली अपनाने के लिए मजबूर होना पड़ता है।

81. घग्गर के मैदान के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह प्राचीन सरस्वती/दृषद्वती नदी तंत्र के जलोढ़ और वातोढ़ निक्षेपों द्वारा निर्मित है।
II. इस क्षेत्र में घग्गर नदी के पाठ (प्रवाह मार्ग) को स्थानीय रूप से 'नाली' कहा जाता है।
III. विशाल चट्टानी बहिर्शैल के कारण यह मैदान किसी भी कृषि गतिविधि से पूरी तरह रहित है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल II और III
(B) केवल I और II
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

NODIA

82. पश्चिमी राजस्थान की पारंपरिक जल संचयन प्रणालियों में, 'अगोर' या 'पायतान' शब्द का संदर्भ है:
(A) केंद्रीय गहरा निष्कर्षण कुआं जिससे संग्रहित जल हाथों से निकाला जाता है।
(B) बावड़ियों पर की गई जटिल, अलंकृत वास्तुशिल्पीय नक्काशी।
(C) फसलों की सिंचाई के लिए पानी उठाने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला एक पारंपरिक लकड़ी का यांत्रिक उपकरण।
(D) संरचना में सतही जल प्रवाह एकत्र करने के लिए निर्मित कैचमेंट (आगोर) क्षेत्र।

83. अरावली पर्वतमाला की मुख्य रीढ़, विशेष रूप से उत्तरी और मध्य भागों में शिखरों का निर्माण करने वाली प्रमुख कटकें, मुख्य रूप से किस समूह की चट्टानों से बनी हैं?
(A) दिल्ली सुपरग्रुप की चट्टानें
(B) मालानी आग्नेय समूह की संरचनाएँ
(C) विंध्यन सुपरग्रुप की अवसादी चट्टानें
(D) मारवाड़ सुपरग्रुप के अवसादी निक्षेप

84. राजस्थान के पश्चिमी रेतीले मैदान को वर्गीकृत करने के लिए सामान्यतः उपयोग किए जाने वाले निम्नलिखित उप-क्षेत्रों में से असंगत को पहचानिए।
(A) मरुस्थली
(B) गोडवाड़ क्षेत्र
(C) मेरवाड़ा क्षेत्र
(D) शेखावाटी क्षेत्र

(B) माही
(C) जाखम
(D) अनास

66. दक्षिण-पूर्वी पठार (हाडोती) के संबंध में निम्नलिखित विशेषताओं पर विचार कीजिए:
I. इसे भूगर्भीय रूप से मालवा के पठार का उत्तर-पश्चिमी विस्तार माना जाता है।
II. इसमें मुकुंदरा की पहाड़ियाँ और अर्धचंद्राकार कटक शामिल हैं।
III. यह राज्य के कुल क्षेत्रफल का लगभग 23.3% भाग बनाता है।
IV. यह मुख्य रूप से चंबल नदी और उसकी सहायक नदियों द्वारा अपवाहित होता है।
उपर्युक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) केवल II, III और IV
(B) केवल I, III और IV
(C) केवल I, II और III
(D) केवल I, II और IV

67. वनस्पति की बाधाओं के पीछे रेत के संचयन से निर्मित 'हेयरपिन' के आकार के बालुका स्तूप, जो थार मरुस्थल में सबसे व्यापक प्रकार के स्तूप हैं, कहलाते हैं:
(A) पैराबोलिक बालुका स्तूप
(B) अनुप्रस्थ बालुका स्तूप
(C) अनुदैर्ध्य बालुका स्तूप
(D) तारा बालुका स्तूप

68. शेखावाटी क्षेत्र में अंतर्देशीय अपवाह तंत्र की व्यापकता का प्राथमिक भू-आकृतिक कारण क्या है?
(A) यह क्षेत्र पूरी तरह से निरंतर ऊँची अरावली श्रृंखलाओं से घिरा है जो किसी भी मौसमी नदी को बाहर समुद्र की ओर बहने से रोकती हैं।
(B) अत्यधिक उच्च सतही तापमान और कम आपेक्षिक आर्द्रता के कारण प्रवाह बनने से पहले ही सारा जल तुरंत वाष्पित हो जाता है।
(C) एक अपारगम्य उप-सतही कैल्क्रिट (कंकर) परत की उपस्थिति संक्षिप्त मौसमी सतही प्रवाह को बाध्य करती है जो रेतीली मिट्टी में जल्दी समाप्त हो जाता है।
(D) हाल ही में हुए विवर्तनिक उत्थान ने क्षेत्रीय स्थलाकृति को भीतर की ओर झुका दिया है, जिससे एक बंद आंतरिक अपवाह अवनमन बन गया है।

69. राजस्थान की पहाड़ी स्थलाकृति के संदर्भ में, 'नाल' शब्द क्या दर्शाता है?
(A) अरावली पर्वतमाला को पार करने वाला एक संकरा पर्वतीय दर्रा या खड्ड।
(B) हाडोती क्षेत्र में नदियों के किनारे बनने वाला एक प्रमुख जलप्रपात।
(C) मरुस्थल में खोदा गया एक गहरा कुआं या पारंपरिक जल जलाशय।
(D) पठारी क्षेत्र में एक ऊँचा, सपाट शिखर वाला मेसा।

70. वह भूगर्भीय संधि-स्थल जहाँ राजस्थान में अरावली पर्वतमाला मोटे तौर पर विंध्यन पर्वतमाला से मिलती है, किसके समीप स्थित है?
(A) सिरोही जिले में स्थित माउंट आबू क्षेत्र
(B) राजसमंद जिले में स्थित कुंभलगढ़ क्षेत्र
(C) दक्षिण-पूर्वी हाडोती क्षेत्र में झालावाड़ क्षेत्र
(D) सवाई माधोपुर जिले में रणथंभौर क्षेत्र

71. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।
सूची I : (पठार)
P. उड़िया पठार
Q. भोराट पठार
R. मेसा पठार
S. ऊपरमाल पठार
सूची II : (प्रमुख जिला/क्षेत्र)
1. चित्तौड़गढ़
2. सिरोही
3. भीलवाड़ा से चित्तौड़गढ़
4. राजसमंद से उदयपुर
(A) P-4, Q-2, R-3, S-1
(B) P-2, Q-4, R-1, S-3
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

72. राजस्थान में भू-आकृतिक उत्पत्ति और जल की विशेषताओं के आधार पर निम्नलिखित झीलों में से असंगत को पहचानिए।
(A) सांभर झील (B) डीडवाना झील
(C) नक्की झील (D) पचपदरा झील

73. शेखावाटी क्षेत्र में भूजल पुनर्भरण और मवेशियों के उपयोग के लिए वर्षा के जल को एकत्र करने हेतु विशेष रूप से बनाए गए पारंपरिक कच्चे बाँध या तालाब कहलाते हैं:
(A) बावड़ी
(B) टोबा
(C) खडीन
(D) जोहड़

74. राजस्थान में पाई जाने वाली निम्नलिखित भूगर्भीय शैल प्रणालियों का प्राचीनतम से नवीनतम का सही कालानुक्रमिक क्रम चुनिए।
(A) भीलवाड़ा सुपरग्रुप, अरावली सुपरग्रुप, दिल्ली सुपरग्रुप, विंध्यन प्रणाली
(B) विंध्यन प्रणाली, दिल्ली सुपरग्रुप, अरावली सुपरग्रुप, भीलवाड़ा सुपरग्रुप
(C) अरावली सुपरग्रुप, भीलवाड़ा सुपरग्रुप, विंध्यन प्रणाली, दिल्ली सुपरग्रुप
(D) दिल्ली सुपरग्रुप, विंध्यन प्रणाली, भीलवाड़ा सुपरग्रुप, अरावली सुपरग्रुप

Click Here to Buy book on Amazon

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) गोंडवानालैंड और टेथिस सागर
राजस्थान की भू-आकृतिक संरचना प्राचीन भूगर्भीय इकाइयों का अवशेष मानी जाती है। राज्य का अरावली पर्वतीय प्रदेश तथा दक्षिण-पूर्वी हाडोती पठार प्राचीन गोंडवानालैंड के अंग हैं। वहीं पश्चिमी रेतीला मरुस्थलीय प्रदेश एवं पूर्वी मैदानी भाग प्राचीन टेथिस सागर के अवशेष के रूप में स्थित हैं। निरंतर भूगर्भीय परिवर्तनों और निक्षेपण प्रक्रियाओं के कारण इस क्षेत्र की वर्तमान स्थलाकृति का विकास हुआ, जो क्षेत्रीय पर्यावरण को प्रभावित करती है।

2. (B) लगभग 61.11%
राजस्थान के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल में विशाल मरुस्थलीय भाग सम्मिलित है। राज्य का पश्चिमी रेतीला मैदान लगभग 61.11% भू-भाग को आच्छादित करता है। यह थार मरुस्थल का भाग है, जो व्यापक बालुका स्तूपों तथा शुष्क जलवायु परिस्थितियों द्वारा अभिलक्षित है। इस विस्तृत क्षेत्र में मुख्य रूप से रेतीली मृदा पाई जाती है। यहाँ राज्य की लगभग 40% जनसंख्या निवास करती है, जो मुख्यतः पशुपालन और कृषि पर निर्भर है।

3. (A) 1722 मीटर
राजस्थान में अरावली पर्वतमाला की सर्वोच्च चोटी गुरु शिखर है, जो सिरोही जिले के माउंट आबू क्षेत्र में स्थित है। माध्य समुद्र तल से इसकी सटीक ऊँचाई 1722 मीटर है। कर्नल जेम्स टॉड ने इस उच्च शिखर को 'संतों का शिखर' कहा था। यह पर्वत चोटी न केवल भौतिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है, बल्कि यहाँ स्थित दत्तात्रेय मंदिर और प्राकृतिक वनस्पति इसे प्रमुख पर्यटन केंद्र बनाती हैं।

4. (C) दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व
राजस्थान में अरावली पर्वतमाला का भौगोलिक विस्तार दक्षिण-पश्चिम में सिरोही जिले से उत्तर-पूर्व में झुंझुनू जिले तक विस्तृत है। यह पर्वत श्रृंखला कर्णवत रूप में फैली हुई है और राज्य को दो असमान भागों में विभाजित करती है। इसकी यह दिशात्मक स्थिति दक्षिण-पश्चिम मानसूनी हवाओं के प्रवाह पथ के समानांतर पड़ती है, जिसके कारण मानसून बिना अवरोध के उत्तर की ओर बढ़ जाता है और कम वर्षा होती है।

5. (A) छप्पन का मैदान
दक्षिणी राजस्थान में माही नदी और उसकी सहायक नदियों द्वारा निर्मित उपजाऊ मैदानी भाग को छप्पन का मैदान कहा जाता है। यह क्षेत्र बांसवाड़ा, प्रतापगढ़ और डूंगरपुर जिलों के मध्य स्थित है। इस भू-भाग का यह नाम 56 गाँवों अथवा 56 प्रवाही नदी-नालों के समूह के कारण पड़ा है। यहाँ की मृदा अत्यंत उपजाऊ लाल-लोमी प्रकृति की है, जो विभिन्न फसलों की खेती के लिए उपयुक्त है।

6. (A) प्री-कैम्ब्रियन युग
भूगर्भीय इतिहास की दृष्टि से अरावली पर्वत श्रृंखला विश्व की प्राचीनतम वलित पर्वत प्रणालियों में से एक है। इसकी उत्पत्ति भूगर्भीय कालक्रम के प्री-कैम्ब्रियन युग में लगभग 600 से 700 मिलियन वर्ष पूर्व हुई थी। उस समय यह एक विशाल मोड़दार पर्वत के रूप में उभरी थी। लंबे समय से निरंतर हो रहे अपरदन की प्रक्रियाओं के कारण आज यह अवशिष्ट पर्वत के रूप में विद्यमान है।

7. (B) यह बंगाल की खाड़ी और अरब सागर के अपवाह तंत्रों को अलग करने वाले अवरोध के रूप में कार्य करती है।
अरावली पर्वतमाला राजस्थान की जल-विभाजक रेखा के रूप में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह पर्वत श्रृंखला राज्य की नदियों के अपवाह को दो स्पष्ट दिशाओं में विभाजित करती है। इसके पूर्व से निकलने वाली नदियाँ जैसे बनास, चंबल बंगाल की खाड़ी के अपवाह तंत्र में जल ले जाती हैं, जबकि पश्चिम की नदियाँ जैसे लूनी अरब सागर के अपवाह तंत्र में जल प्रवाहित करती हैं।

8. (C) P-4, Q-1, R-3, S-2
राजस्थान में अरावली पर्वत श्रृंखला की विभिन्न शिखरों का प्रादेशिक वितरण सुस्पष्ट है। तारागढ़ चोटी मध्य अरावली का हिस्सा है और अजमेर जिले में स्थित है। उत्तरी अरावली की प्रमुख चोटी रघुनाथगढ़ सीकर जिले में स्थित है। दक्षिणी अरावली की विशाल चोटी जरगा उदयपुर जिले में पाई जाती है। इसके अतिरिक्त अचलगढ़ चोटी सिरोही जिले के आबू पर्वतखंड में स्थित है। यह वितरण ऊँचाई भेद दर्शाता है।

9. (D) बेसाल्टिक लावा निक्षेप और विंध्यन बलुआ पत्थर
राजस्थान का दक्षिण-पूर्वी हाडोती पठार भूगर्भीय दृष्टि से मालवा के पठार का ही उत्तर-पश्चिमी विस्तार है। यह क्षेत्र मुख्य रूप से दो प्रमुख शैल संरचनाओं द्वारा निर्मित है। पहला भाग बेसाल्टिक लावा के जमने से बना है, जिसने यहाँ काली मृदा का निर्माण किया है। दूसरा भाग विंध्यन कगार भूमि है, जो विशाल अवसादी बलुआ पत्थर और चूना पत्थर की परतों से निर्मित है। यहाँ खनन कार्य होता है।

10. (A) उत्खात
पूर्वी राजस्थान में चंबल नदी और उसकी सहायक नदियों द्वारा तीव्र अवनालिका अपरदन के कारण अत्यधिक बीहड़ स्थलाकृति का निर्माण हुआ है। भू-आकृति विज्ञान में इस कटावदार और विषम भू-भाग को 'उत्खात भूमि' या 'उत्खात' स्थलाकृति कहा जाता है। स्थानिक भाषा में इन्हें बीहड़ क्षेत्र भी कहते हैं। यह क्षेत्र गहरे खड्डों और संकीर्ण घाटियों से निर्मित हुआ है, जिससे कृषि करना यहाँ कठिन होता है।

NODIA

11. (B) यह मरुस्थलीय क्षेत्र में एक प्रमुख भूगर्भीय भूमिगत जलभृत है।
जैसलमेर जिले में पोकरण से मोहनगढ़ तक विस्तृत 'लाठी सीरीज़' एक विशिष्ट भूगर्भीय जलीय पट्टी है। यह क्षेत्र थार मरुस्थल के भूमिगत भू-भाग में मीठे जल के विशाल जलभृत का प्रतिनिधित्व करता है। माना जाता है कि यह प्राचीन सरस्वती नदी के अवशेष पर स्थित है। इस पट्टी में पर्याप्त नमी के कारण सेवण जैसी पौष्टिक घास उगती है, जो पशुपालन के लिए अत्यंत लाभदायक है।

12. (B) केवल I और II
राजस्थान के थार मरुस्थल में 'बरखान' एक प्रमुख गतिशील बालुका स्तूप का प्रकार है। पवन की दिशा के लंबवत निर्मित होने वाले ये अर्धचंद्राकार टीले अत्यंत परिवर्तनशील होते हैं और तीव्र वायु वेग के साथ आगे बढ़ते हैं। ये स्तूप मुख्य रूप से शेखावाटी, चुरु और सीकर क्षेत्रों में दिखाई देते हैं। इनकी अत्यधिक गतिशीलता के कारण ये कृषि भूनियों को ढँककर मरुस्थलीकरण को बढ़ावा देते हैं।

13. (A) भोराट का पठार
दक्षिणी अरावली क्षेत्र में राजसमंद जिले के कुंभलगढ़ और उदयपुर जिले के गोगुंदा के मध्य स्थित उच्च भू-भाग को भोराट का पठार कहा जाता है। यह पठारी क्षेत्र औसतन 1220 मीटर की ऊँचाई पर अवस्थित है। अपनी विच्छेदित और विषम स्थलाकृति के कारण यह पठार जल-विभाजक के रुप में कार्य करता है। यहाँ से कई नदियाँ निकलकर विभिन्न दिशाओं में प्रवाहित होती हैं।

14. (C) खडीन
पश्चिमी राजस्थान की भू-आकृति में पवन निर्मित स्थलाकृतियों का बाहुल्य है। बरखान, सीफ और पैराबोलिक वायु अपरदन तथा निक्षेपण द्वारा निर्मित बालुका स्तूपों के प्रकार हैं। इसके विपरीत, खडीन कोई बालुका स्तूप नहीं बल्कि जैसलमेर क्षेत्र में विकसित एक पारंपरिक जल संचयन और कृषि प्रणाली है। इसमें अस्थायी गर्त में वर्षा जल रोककर संरक्षित नमी के आधार पर फसलों की खेती की जाती है।

15. (D) गुरु शिखर, सेर, दिलवाड़ा, जरगा
राजस्थान में अरावली पर्वतमाला की प्रमुख शिखरों का सर्वोच्च से न्यूनतम ऊँचाई के क्रम में संरेखण अत्यंत स्पष्ट है। गुरु शिखर 1722 मीटर ऊँचाई के साथ प्रथम स्थान पर है। इसके बाद सेर चोटी 1597 मीटर के साथ द्वितीय स्थान पर आती है। दिलवाड़ा चोटी 1442 मीटर की ऊँचाई के साथ तीसरे स्थान पर तथा जरगा चोटी 1431 मीटर ऊँचाई के साथ चौथे स्थान पर स्थित है।

16. (C) दक्षिण-पूर्वी हाडोती पठार
राजस्थान को चार मुख्य भौतिक विभागों में बाँटा गया है। इनमें सबसे कम क्षेत्रफल दक्षिण-पूर्वी हाडोती पठारी प्रदेश के अंतर्गत आता है, जो राज्य के कुल भू-भाग का मात्र लगभग 6.89% हिस्सा बनाता है। इसके विपरीत पश्चिमी रेतीला मैदान सर्वाधिक 61.11% भू-भाग घेरे हुए है। पूर्वी कृषि मैदान लगभग 23.3% तथा अरावली पर्वतीय प्रदेश लगभग 9% क्षेत्रफल पर स्थित है। हाडोती पठार में काली मिट्टी मिलती है।

17. (B) यह दक्षिणी राजस्थान में लूनी नदी बेसिन का एक प्रमुख भाग बनाता है।
घग्गर का मैदान राजस्थान के उत्तर-पश्चिमी भाग में स्थित श्री गंगानगर और हनुमानगढ़ जिलों में फैला हुआ है। इसका निर्माण प्राचीन सरस्वती और दृषद्वती नदियों के निक्षेपों द्वारा हुआ है। घग्गर नदी के शुष्क पाट को स्थानीय भाषा में 'नाली' कहा जाता है। यह मैदान उत्तरी राजस्थान का हिस्सा है, इसलिए इसका दक्षिणी राजस्थान के लूनी बेसिन से कोई संबंध नहीं है। यहाँ गहन कृषि होती है।

18. (B) 50 सेमी समवर्षा रेखा
राजस्थान में 50 सेमी समवर्षा रेखा राज्य को दो प्रमुख जलवायु और भौगोलिक क्षेत्रों में विभाजित करती है। यह रेखा अरावली पर्वतमाला के विस्तार के लगभग समानांतर गुजरती है। इसके पश्चिम का भाग शुष्क एवं अर्ध-शुष्क मरुस्थलीय परिस्थितियों को प्रदर्शित करता है, जबकि इसके पूर्व का भाग उप-आर्द्र जलवायु तथा सघन कृषि और वनस्पति से समृद्ध मैदानी व पठारी भू-भाग का प्रतिनिधित्व करता है।

19. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या है।
दक्षिण-पश्चिम मानसून के मौसम में अरब सागर से उठने वाली मानसूनी हवाएं राजस्थान में प्रवेश करती हैं। परंतु अरावली पर्वतमाला की स्थिति दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व की ओर होने के कारण यह मानसूनी हवाओं के प्रवाह की दिशा के समानांतर स्थित है। अरावली में पर्याप्त ऊँचाई न होने के कारण यह हवाओं को रोककर वर्षा कराने में असमर्थ रहती है, जिसके परिणामस्वरुप पश्चिमी राजस्थान में वर्षा कम होती है।

20. (B) 550 किमी
प्राचीन अरावली पर्वतमाला की कुल लंबाई गुजरात के पालनपुर से दिल्ली स्थित रायसीना पहाड़ी तक लगभग 692 किलोमीटर है। इस संपूर्ण पर्वत प्रणाली का अधिकांश भाग राजस्थान राज्य की सीमाओं के भीतर स्थित है। राजस्थान में इसका विस्तार सिरोही से झुंझुनू तक लगभग 550 किलोमीटर है। यह कुल अरावली श्रृंखला की लंबाई का लगभग 80% भाग है और राज्य की प्रमुख भौगोलिक रीढ़ माना जाता है।

21. (A) खडीन
जैसलमेर के शुष्क मरुस्थलीय क्षेत्रों में बालुका स्तूपों के बीच निर्मित निचले प्राकृतिक गर्तों में वर्षा जल एकत्र हो जाता है। 15वीं शताब्दी में पालीवाल ब्राह्मणों ने इस जल को रोककर संरक्षित करने हेतु मिट्टी की संरचना बनाई जिसे खडीन कहा जाता है। वर्षा जल के सूखने के पश्चात इस गर्त में नमी बची रहती है, जिससे फसलों की बिना सिंचाई के खेती की जाती है।

22. (D) I, III और IV
अरावली पर्वतमाला प्री-कैम्ब्रियन काल में निर्मित प्राचीनतम वलित पर्वत श्रृंखला है। निरंतर अपरदन के कारण वर्तमान में

Downloaded from www.pdf.tube

यह एक अवशिष्ट पर्वत के रूप में स्थित है। इसने थार मरुस्थल के पूर्व की ओर प्रसार को रोकने में अवरोधक का कार्य किया है। भूगर्भीय रूप से यह अवसादी चट्टानों के बजाय कायांतरित और क्रिस्टलीय चट्टानों जैसे क्वार्ट्ज़ाइट और नीस से बनी है, जो इसे मजबूती प्रदान करती हैं।

23. (B) उदयपुर नगर को घेरने वाली पहाड़ियों की तश्तरीनुमा श्रृंखला।
दक्षिणी राजस्थान के उदयपुर बेसिन में उदयपुर नगर के चारों ओर तश्तरी के आकार में फैली हुई तीखी ढाल वाली पहाड़ियों की श्रृंखला को स्थानीय बोली में 'गिरवा' कहा जाता है। गिरवा का शाब्दिक अर्थ 'पहाड़ियों की मेखला' होता है। यह पहाड़ी संरचना उदयपुर शहर को प्राकृतिक सुरक्षा और जल संचयन की अनुकूल परिस्थितियाँ प्रदान करती है। यहाँ कई मीठे जल की झीलें स्थित हैं।

24. (C) तारागढ़
मध्य अरावली क्षेत्र का विस्तार मुख्य रूप से अजमेर जिले में स्थित पहाड़ियों के रूप में है। इस क्षेत्र की प्रमुख पर्वत शिखरों में तारागढ़ और टॉडगढ़ शामिल हैं। तारागढ़ चोटी की ऊँचाई लगभग 870 मीटर है और यह अजमेर शहर के पास स्थित मध्य अरावली का प्रमुख भौगोलिक केंद्र बनाती है। इसके विपरीत रघुनाथगढ़ उत्तरी अरावली तथा अचलगढ़ दक्षिणी अरावली में स्थित प्रमुख पर्वत शिखर हैं।

25. (D) दौसा
राजस्थान का दक्षिण-पूर्वी पठार, जिसे हाडोती का पठार कहा जाता है, राज्य के दक्षिण-पूर्वी हिस्से में स्थित है। इस क्षेत्र में मुख्य रूप से कोटा, बूंदी, बारां और झालावाड़ जिले सम्मिलित हैं। यह क्षेत्र अपनी काली मृदा और चंबल नदी तंत्र के लिए जाना जाता है। दौसा जिला पूर्वी मैदानी भाग के अंतर्गत आता है, इसलिए यह हाडोती पठारी क्षेत्र में शामिल नहीं माना जाता है।

26. (A) बूंदी और सवाई माधोपुर
राजस्थान का महान सीमा भ्रंश एक प्रमुख भूगर्भीय संरचनात्मक संधि रेखा है। यह भ्रंश रेखा राजस्थान में दक्षिण-पूर्व से उत्तर-पूर्व की ओर फैली हुई है। यह मुख्यतः चित्तौड़गढ़, बूंदी, सवाई माधोपुर और धौलपुर जिलों में पहाड़ियों के समानांतर गुजरती है। यह सीमा भ्रंश प्राचीन अरावली पर्वतमाला को विंध्यन पर्वतमाला शैल समूहों से अलग करता है, जो क्षेत्र की भूगर्भीय जटिलता को प्रदर्शित करता है।

27. (B) ऊपरमाल
राजस्थान के दक्षिण-पूर्वी पठारी प्रदेश में भीलवाड़ा जिले के बिजोलिया से चित्तौड़गढ़ जिले के भैंसरोड़गढ़ तक फैले उच्च पठारी भू-भाग को स्थानीय रूप से 'ऊपरमाल' के नाम से जाना जाता है। यह पठार विंध्यन पठार का ही एक पथरीला और ऊँचा विस्तार है। इस क्षेत्र में चूना पत्थर और बलुआ पत्थर के निक्षेप पाए जाते हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से यह क्षेत्र काफी प्रसिद्ध रहा है।

28. (B) P-1, Q-2, R-3, S-4
राजस्थान की भू-आकृतिक शब्दावली में विभिन्न क्षेत्रों के विशिष्ट नाम हैं। लूनी नदी और उसकी सहायक नदियों के अपवाह क्षेत्र को गोडवाड़ प्रदेश कहा जाता है। बीकानेर और चुरु के उत्तरी भाग को थली नाम से जाना जाता है। घग्गर नदी के प्रवाह मार्ग को नाली कहा जाता है। इसके अतिरिक्त शेखावाटी क्षेत्र में पाई जाने वाली पारंपरिक चरागाह भूमि को बीड़ कहा जाता है।

29. (A) अरावली में विवर्तनिक भ्रंशन द्वारा निर्मित संरचनात्मक अवनमन।
भारत की सबसे बड़ी अंतर्देशीय खारे पानी की झील सांभर झील राजस्थान में स्थित है। भूगर्भीय अध्ययनों और विवर्तनिक सिद्धांतों के अनुसार इसका निर्माण अरावली पर्वत श्रृंखला के आंतरिक भ्रंशन तथा संरचनात्मक अवनमन के कारण हुआ है। इस प्राकृतिक द्रोणी में चारों ओर से बहने वाली नदियाँ जल एवं खनिज लवण लाकर एकत्र करती हैं, जिससे लवणीय जल का संचयन यहाँ होता है।

30. (C) लूनी बेसिन
राजस्थान का पूर्वी मैदानी प्रदेश मुख्य रूप से तीन प्रमुख नदी बेसिनों द्वारा निर्मित है: बनास, चंबल और दक्षिण में माही बेसिन। ये नदियाँ उपजाऊ जलोढ़ मृदा का निक्षेपण करती हैं। इसके विपरीत लूनी बेसिन राजस्थान के पश्चिमी शुष्क और अर्ध-शुष्क मरुस्थलीय प्रदेश का एक भाग है। लूनी नदी अरावली से निकलकर पश्चिम की ओर बहने वाली मुख्य नदी मानी जाती है।

31. (D) कोटा, झालावाड़ और बारां
राजस्थान में दक्कन ट्रैप का निर्माण ज्वालामुखी विस्फोट के बाद बेसाल्टिक लावा के प्रवाह और उसके जमने से हुआ था। यह शैल समूह मुख्य रूप से राज्य के दक्षिण-पूर्वी हाडोती पठारी प्रदेश में सीमित है, जिसमें कोटा, झालावाड़ और बारां शामिल हैं। इन बेसाल्टिक चट्टानों के अपक्षय से इस क्षेत्र में नमी धारण करने वाली गहरी काली मृदा का विकास हुआ है।

32. (C) 1, 2, 3, 4
राजस्थान के चार प्रमुख भौतिक विभागों का उनके क्षेत्रफल के प्रतिशत के आधार पर घटता क्रम अत्यंत सुव्यवस्थित है। सबसे बड़ा भू-भाग पश्चिमी रेतीला मैदान है जो लगभग 61.11% भाग पर स्थित है। दूसरे स्थान पर पूर्वी मैदानी प्रदेश आता है जो लगभग 23.3% भाग घेरता है। तीसरे स्थान पर अरावली पर्वतीय प्रदेश है जो लगभग 9% भाग पर फैला है। सबसे कम क्षेत्रफल हाडोती पठार का है।

33. (B) 25 सेमी समवर्षा रेखा
राजस्थान के विशाल पश्चिमी रेतीले मैदान को 25 सेमी समवर्षा रेखा दो स्पष्ट उप-विभागों में विभाजित करती है। इस रेखा के पश्चिम में स्थित भाग को अत्यधिक शुष्क 'मरुस्थली' कहा जाता है, जहाँ वर्षा 25 सेमी से कम होती है। इसके पूर्व में स्थित भाग को अर्ध-शुष्क 'राजस्थान बांगर' कहा जाता है, जहाँ वर्षा 25 से 50 सेमी के मध्य दर्ज की जाती है।

NODIA

34. (D) यह थार मरुस्थल के पूर्व की ओर प्रसार के विरुद्ध एक भौतिक अवरोध के रूप में कार्य करती है।
राजस्थान के पारिस्थितिक संतुलन में अरावली पर्वतमाला की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। यह पर्वत श्रृंखला दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व दिशा में विस्तृत होकर थार मरुस्थल की रेत को पूर्व की ओर बढ़ने से रोकती है। यदि अरावली यहाँ विद्यमान न होती, तो थार मरुस्थल का निरंतर पूर्व की ओर प्रसार होता और राज्य के उपजाऊ मैदानी क्षेत्र भी मरुस्थलीकरण की चपेट में आ जाते।

35. (A) केवल III
राजस्थान का 'मरुस्थली' उप-क्षेत्र पश्चिमी रेतीले मैदान का अत्यधिक शुष्क भाग है। यहाँ की जलवायु अत्यंत कठोर है और वार्षिक वर्षा 20 सेमी से कम होती है। यह क्षेत्र व्यापक बालुका स्तूपों, खारे पानी की झीलों और वाष्पीकरण द्वारा पहचाना जाता है। अत्यधिक शुष्कता के कारण यहाँ बारहमासी नदियाँ और सघन चौड़ी पत्ती वाले वन पूर्णतः अनुपस्थित हैं, जिससे तीसरा कथन गलत सिद्ध होता है।

36. (B) 1360 मीटर
राजस्थान का सर्वोच्च पठार उड़िया पठार है, जो सिरोही जिले में माउंट आबू क्षेत्र में स्थित है। माध्य समुद्र तल से इसकी ऊँचाई लगभग 1360 मीटर है। यह पठार गुरु शिखर चोटी के ठीक नीचे अवस्थित है। अपनी अत्यधिक ऊँचाई और विशिष्ट भू-आकृतिक संरचना के कारण यहाँ का तापमान राज्य के अन्य भागों की तुलना में काफी कम रहता है, जो इसे खास बनाता है।

37. (A) ड्रमलिन
थार मरुस्थल में पवन अपरदन और निक्षेपण की प्रक्रियाओं द्वारा विभिन्न प्रकार के बालुका स्तूप निर्मित होते हैं, जिनमें सीफ, पैराबोलिक और बरखान प्रमुख हैं। इसके विपरीत, 'ड्रमलिन' एक हिमानी निक्षेपण द्वारा निर्मित भू-आकृति है, जो उल्टी नाव के आकार की दिखाई देती है। चूँकि राजस्थान में हिमानी गतिविधियाँ नहीं पाए जाने के कारण ड्रमलिन का निर्माण यहाँ संभव नहीं माना जाता है।

38. (D) पीडमोंट मैदान
अरावली पर्वतमाला के तलहटी वाले क्षेत्रों में दीर्घकालिक अपरदन की प्रक्रियाओं द्वारा निर्मित अवशिष्ट मैदान को पीडमोंट मैदान कहा जाता है। राजस्थान में इसका सर्वोत्तम उदाहरण बनास नदी बेसिन में देवगढ़ के आसपास दिखाई देता है। यह एक उच्च और अवशिष्ट मैदान है जहाँ जगह-जगह कठोर चट्टानों के टीले उभरे हुए दिखाई देते हैं। यह धरातल अपरदन का प्रत्यक्ष परिणाम माना जाता है।

39. (B) बालू से मुक्त एक बंजर, चट्टानी और पथरीला मरुस्थलीय मैदान।
थार मरुस्थल को धरातलीय स्वरूप के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है। 'हमदा' शब्द विशेष रूप से ऐसे मरुस्थलीय भू-भाग को संदर्भित करता है जो रेत के टीलों से रहित होता है और पथरीले धरातल से ढका होता है। राजस्थान के जैसलमेर, बाड़मेर और जोधपुर जिलों के मध्य हमदा मरुस्थल का विस्तार पाया जाता है, जहाँ हवा अपरदन से सतह नग्न हो जाती है।

40. (C) अवसादी बलुआ पत्थर और चूना पत्थर
राजस्थान के दक्षिण-पूर्वी हाडोती पठार में स्थित विंध्यन कगार भूमि भूगर्भीय रूप से विंध्यन सुपरग्रुप की चट्टानों से निर्मित है। यह कगार मुख्यतः अवसादी शैल संरचनाओं जैसे बलुआ पत्थर और चूना पत्थर की परतों से बना है। ये कगार तीव्र ढाल बनाते हैं और चंबल नदी की घाटी के समानांतर स्थित हैं। इस क्षेत्र का बलुआ पत्थर भवन निर्माण हेतु काफी प्रसिद्ध माना जाता है।

41. (D) रेतीली मिट्टी और कम नमी धारण क्षमता बाजरा जैसी शुष्कता-रोधी फसलों के अनुकूल है।
पश्चिमी राजस्थान का भू-आकृतिक स्वरूप अत्यधिक रेतीली मृदा और कम वर्षा से प्रभावित है। इस क्षेत्र की रेतीली मृदा में जल धारण क्षमता अत्यंत कम होती है। इस कठोर भू-आकृतिक वातावरण में केवल कम जल और अधिक तापमान सहने वाली शुष्कता-रोधी फसलों की खेती होती है। यही कारण है कि यहाँ व्यापक रूप से बाजरा, ग्वार और मोठ जैसी फसलों का उत्पादन किया जाता है।

42. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या है।
पूर्वी मैदानी प्रदेश राजस्थान का सर्वाधिक सघन जनघनत्व वाला भौतिक प्रदेश है। राज्य के मात्र 23.3% भू-भाग पर फैले होने के बावजूद यहाँ लगभग 39% जनसंख्या निवास करती है। इसका मुख्य कारण यह है कि नदियों द्वारा निक्षेपित जलोढ़ मिट्टी अत्यंत उपजाऊ है। इसके अतिरिक्त समतल धरातल और पर्याप्त जल उपलब्धता कृषि विकास तथा सघन मानव बसाव को प्रोत्साहित करते हैं, जो अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

43. (B) मुकुंदरा दर्रा
अरावली पर्वतमाला को पार करने वाले प्राकृतिक पर्वतीय दर्रों को राजस्थान में 'नाल' कहा जाता है। देसूरी की नाल, सोमेश्वर की नाल और हाथीगुड़ा की नाल अरावली श्रृंखला में स्थित प्रमुख दर्रे हैं। इसके विपरीत, मुकुंदरा दर्रा अरावली में नहीं बल्कि दक्षिण-पूर्वी पठारी प्रदेश में कोटा और झालावाड़ के बीच स्थित मुकुंदरा पहाड़ियों का एक दर्रा है, जो हाडोती क्षेत्र में स्थित है।

44. (B) जयसमंद झील
राजस्थान में लसाड़िया का पठार उदयपुर जिले में जयसमंद झील के पूर्व की ओर स्थित है। यह पठार अत्यधिक कटा-फटा, विच्छेदित और बीहड़ पहाड़ियों से आच्छादित भू-भाग है। यह अरावली के दक्षिणी भाग की एक विशिष्ट भू-आकृतिक संरचना है जो अपनी विषम ढालों के लिए जाती है। जयसमंद झील के पास स्थित होने के कारण यहाँ से छोटे नाले झील में प्रवेश करते हैं।

45. (A) मेसा का पठार
राजस्थान का प्रसिद्ध ऐतिहासिक चित्तौड़गढ़ दुर्ग मेसा के पठार पर अवस्थित है। यह पठार चित्तौड़गढ़ जिले में लगभग 620

Click Here to Buy book on Flipkart

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs,
you are wasting valuable time.

Research shows that learning from
PRINTED BOOKS has up to
4× HIGHER RETENTION
than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS**
move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND**
in competition.

In competitive exams,
being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

मीटर की ऊँचाई पर स्थित एक सपाट शीर्ष वाला पठार है। यह गंभीरी और बेड़च नदियों के संगम के पास स्थित है। मेसा का पठार अपनी तीव्र ढालों के कारण ऐतिहासिक रूप से सैन्य दुर्गों के निर्माण के लिए अत्यंत उपयुक्त माना जाता था।

46. (B) टर्शियरी और मेसोजोइक
पश्चिमी राजस्थान का बाड़मेर-सांचौर बेसिन पेट्रोलियम के विशाल भंडारों के लिए प्रसिद्ध है। भूगर्भीय दृष्टि से इस बेसिन का निर्माण मेसोजोइक और टर्शियरी काल में प्राचीन टेथिस सागर के अवसादन से हुआ था। इस अवधि में जैविक मलबे के दबने तथा ताप-दाब के कारण पेट्रोलियम का निर्माण हुआ। यहाँ मंगला और भाग्यम जैसे समृद्ध तेल क्षेत्र विद्यमान हैं, जो अत्यंत महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं।

47. (D) लवणीय अवनमन या मरुस्थलीय प्लाया झीलें
राजस्थान के पश्चिमी शुष्क मरुस्थलीय क्षेत्र में 'थोब', 'बाप' और 'पचपदरा' जैसी संरचनाएं लवणीय अवनमन या अस्थायी प्लाया झीलों के उदाहरण हैं। मरुस्थल के निचले गर्तों में जहाँ जल एकत्र होता है, अत्यधिक वाष्पीकरण के कारण लवण की परतें जम जाती हैं। पचपदरा और डीडवाना झीलों से व्यापारिक स्तर पर नमक का उत्पादन किया जाता है, जो अर्थव्यवस्था को संबल देता है।

48. (C) I, II, III और IV
राजस्थान के पश्चिमी रेतीले मैदान को 25 और 50 सेमी समवर्षा रेखाओं के मध्य अर्ध-शुष्क मैदान या 'राजस्थान बांगर' कहा जाता है। यह क्षेत्र चार प्रमुख उप-विभागों में बंटा है: लूनी बेसिन, नागौर उच्च भूमि, शेखावाटी का आंतरिक अपवाह क्षेत्र तथा घग्गर का मैदान। ये चारों उप-क्षेत्र मिलकर राजस्थान बांगर प्रदेश की पूर्ण भौगोलिक संरचना का निर्माण करते हैं, जो अत्यंत विशिष्ट है।

49. (B) रघुनाथगढ़
अरावली पर्वतमाला का प्रादेशिक वर्गीकरण उत्तर, मध्य और दक्षिण तीन भागों में किया जाता है। रघुनाथगढ़ चोटी, जिसकी ऊँचाई 1055 मीटर है, सीकर जिले में स्थित उत्तरी अरावली की सर्वोच्च चोटी है। इसके विपरीत, जरगा, अचलगढ़ और दिलवाड़ा चोटियाँ सिरोही एवं उदयपुर जिलों में स्थित हैं, जो दक्षिणी अरावली का भाग हैं। अतः रघुनाथगढ़ उत्तरी भाग में स्थित प्रमुख शिखर माना जाता है।

50. (D) दक्षिण-पूर्वी हाडोती पठार
मृदा वर्गीकरण के अनुसार 'वर्टीसोल्स' गहरे रंग की काली मिट्टी को संदर्भित करती है। राजस्थान में वर्टीसोल्स मृदा मुख्य रूप से दक्षिण-पूर्वी हाडोती पठारी प्रदेश में पाई जाती है, जिसमें कोटा, बूंदी, बारां और झालावाड़ शामिल हैं। यह मृदा बेसाल्टिक लावा से बनी है। इसमें नमी धारण करने की उच्च क्षमता होती है जो कपास और सोयाबीन की खेती के लिए अत्यंत उपयुक्त मानी जाती है।

51. (A) अंतर्देशीय लवण झीलें और फ्लोराइड युक्त भूजल पट्टी
राजस्थान के नागौर उच्च भूमि क्षेत्र अपनी दो विशिष्ट विशेषताओं के लिए जाना जाता है। पहला, यहाँ सांभर, डीडवाना और कुचामन जैसी प्रमुख खारे पानी की झीलें स्थित हैं। दूसरा, अजमेर और नागौर के मध्य भूजल में फ्लोराइड की अत्यधिक मात्रा पाए जाने के कारण लोगों में कंकाल फ्लोरोसिस रोग होता है, जिसे स्थानीय स्तर पर 'बाँका पट्टी' के नाम से जाना जाता है।

52. (C) P-4, Q-3, R-1, S-2
राजस्थान की भूगर्भीय संरचना में विभिन्न शैल समूहों की विशिष्ट भूमिका है। लाठी सीरीज़ एक उत्पादक जलभृत का निर्माण करती है। मालानी आग्नेय समूह रियोलाइट और ग्रेनाइट चट्टानों द्वारा निरुपित होता है। भीलवाड़ा सुपरग्रुप प्राचीनतम आर्कियन आधारभूत शैल समूह का प्रतिनिधित्व करता है। विंध्यन प्रणाली बलुआ पत्थर और चूना पत्थर के निक्षेपों के लिए प्रसिद्ध है, जो व्यापारिक दृष्टि से उपयोगी है।

53. (A) सांभर दर्रे जैसे अरावली के अंतरालों के माध्यम से रेत ले जाने वाला पवन अपरदन।
राजस्थान में अरावली पर्वतमाला मरुस्थल के प्रसार को रोकने वाली दीवार है। परंतु निरंतर खनन और क्षरण के कारण अरावली में कई स्थानों पर अंतराल बन गए हैं, जैसे सांभर दर्रा। तीव्र पश्चिमी हवाएं इन अंतरालों के माध्यम से रेत को पूर्व के उपजाऊ मैदानी जिलों की ओर उड़ाकर ले जाती हैं, जिससे पूर्वी भागों में मरुस्थलीकरण की समस्या तेजी से बढ़ रही है।

54. (D) लिग्नाइट कोयला (पूर्वी मैदान)
राजस्थान का खनिज वितरण इसके भौतिक प्रदेशों पर आधारित है। अरावली पर्वतीय प्रदेश कायांतरित चट्टानों के कारण तांबा, सीसा और जस्ता जैसे धात्विक खनिजों के लिए प्रसिद्ध है। पश्चिमी रेतीला मैदानी प्रदेश अवसादी निक्षेपों के कारण जिप्सम और लिग्नाइट कोयला का स्रोत है। लिग्नाइट कोयला मुख्यतः बाड़मेर, बीकानेर और नागौर में पाया जाता है, न कि पूर्वी मैदानी प्रदेश में। अतः यह असंगत युग्म है।

55. (B) 1, 2, 3, 4
अरावली पर्वतमाला की शिखरों का उत्तर से दक्षिण दिशा में संरेखण सुस्पष्ट है। सबसे उत्तर में रघुनाथगढ़ चोटी सीकर जिले में अवस्थित है। इसके दक्षिण में अजमेर जिले में तारागढ़ चोटी आती है। और दक्षिण में राजसमंद जिले में कुंभलगढ़ चोटी पाई जाती है। सबसे दक्षिण में सिरोही जिले में स्थित गुरु शिखर अवस्थित है। यह उत्तर से दक्षिण का सही भौगोलिक क्रम दर्शाता है।

56. (B) 40%
विश्व के सभी मरुस्थलीय प्रदेशों की तुलना में थार मरुस्थल सर्वाधिक जनघनत्व वाला मरुस्थल माना जाता है। राजस्थान का पश्चिमी रेतीला मैदान राज्य के 61.11% भाग पर विस्तृत है। जनसांख्यिकीय दृष्टि से, इस विशाल और कठिन क्षेत्र में राज्य की कुल जनसंख्या का लगभग 40% भाग निवास करता है।

Downloaded from www.pdf.tube

ढाल और समतल भूमि की कमी के कारण यहाँ सघन बस्तियाँ नहीं बस पातीं। इसके परिणामस्वरूप स्थानीय ग्रामीण आबादी छोटी तथा बिखरी हुई बस्तियों के रूप में पहाड़ियों की ढलानों और घाटियों में निवास करती है, जिन्हें स्थानीय भाषा में 'फला' या 'ढाणी' कहा जाता है।

81. (B) केवल I और II
घग्गर का मैदान राजस्थान के उत्तर-पश्चिमी भाग में हनुमानगढ़ और श्री गंगानगर जिलों में फैला है। यह मैदान प्राचीन सरस्वती नदी प्रणाली के निक्षेपों द्वारा निर्मित हुआ है। घग्गर नदी के प्रवाह मार्ग को स्थानीय भाषा में 'नाली' कहा जाता है। यह मैदान अत्यधिक उपजाऊ मिट्टी से ढका है और इंदिरा गांधी नहर द्वारा सिंचित होकर प्रमुख कृषि क्षेत्र है, जिससे तीसरा कथन गलत है।

82. (D) संरचना में सतही जल प्रवाह एकत्र करने के लिए निर्मित कैचमेंट (आगोर) क्षेत्र।
पश्चिमी राजस्थान की पारंपरिक जल संचयन प्रणालियों जैसे टांका या नाडी में 'अगोर' या 'पायतान' शब्द उस साफ किए गए जलग्रहण क्षेत्र को संदर्भित करता है जो वर्षा जल को बहकर भंडारण संरचना में एकत्र होने में मदद करता है। इस आगोर क्षेत्र को साफ और ढालदार रखा जाता है ताकि वर्षा का जल सीधे जल कुंड में आसानी से प्रवाहित हो सके।

83. (A) दिल्ली सुपरग्रुप की चट्टानें
अरावली पर्वतमाला की मुख्य रीढ़ और इसकी प्रमुख कटकों का निर्माण मुख्य रूप से दिल्ली सुपरग्रुप की कायांतरित शैल संरचनाओं द्वारा हुआ है। दिल्ली सुपरग्रुप की चट्टानें मुख्यतः प्री-कैम्ब्रियन युग में निर्मित हुई थीं, जिनमें क्वार्टज़ाइट और मार्बल की परतें शामिल हैं। दिल्ली सुपरग्रुप का समूह अरावली की उत्तरी तथा मध्य श्रृंखलाओं में ऊँची पर्वत शिखरों का प्रमुखता से निर्माण करता है।

84. (C) मेरवाड़ा क्षेत्र
राजस्थान का पश्चिमी रेतीला मैदान चार प्रमुख उप-क्षेत्रों में विभाजित है: मरुस्थली, गोडवाड़ क्षेत्र, नागौर उच्च भूमि और शेखावाटी क्षेत्र। ये सभी उप-क्षेत्र मरुस्थलीय परिस्थितियों को निरुपित करते हैं। इसके विपरीत, 'मेरवाड़ा क्षेत्र' अरावली पर्वतीय प्रदेश के मध्य भाग (मुख्यतः अजमेर के पहाड़ी क्षेत्र) का प्रतिनिधित्व करता है, जो मारवाड़ को मेवाड़ से अलग करता है। अतः यह असंगत विकल्प माना जाता है।

85. (A) सीफ स्तूप
मरुस्थलीय भू-आकृति विज्ञान में 'सीफ' अनुदैर्ध्य बालुका स्तूप का ही एक प्रकार है। इनका निर्माण तब होता है जब पवन की दिशा में परिवर्तन होता है और बरखान की एक भुजा कट जाती है। इसके परिणामस्वरूप पवन की दिशा के समानांतर एक लंबी, संकारी कटक का निर्माण होता है जिसे सीफ कहा जाता है। यह जैसलमेर और बाड़मेर में पाए जाते हैं।

86. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या है।
राजस्थान में अजमेर और नागौर जिलों के मध्य स्थित भौगोलिक पट्टी को 'बाँका पट्टी' कहा जाता है। इसका मुख्य कारण यह है कि इस क्षेत्र के भूजल में फ्लोराइड की मात्रा अत्यधिक पाई जाती है। निरंतर इस फ्लोराइड युक्त जल का सेवन करने से यहाँ के निवासियों की हड्डियों में टेढ़ापन और कंकाल फ्लोरोसिस की गंभीर समस्या उत्पन्न हो जाती है।

87. (B) I, II, III और IV
राजस्थान का पूर्वी मैदानी प्रदेश राज्य के क्षेत्रफल के लगभग 23.3% भाग पर स्थित है। इस मैदान का निर्माण बनास, चंबल और माही जैसी नदियों द्वारा निक्षेपित जलोढ़ मिट्टी से हुआ है। इस मैदानी प्रदेश के दक्षिणी हिस्से में छप्पन बेसिन अवस्थित है। अत्यंत उपजाऊ मिट्टी और जल की प्रचुरता के कारण यह क्षेत्र राज्य की लगभग 39% जनसंख्या का पोषण करता है।

NODIA

88. (C) ग्रेनाइट
सिरोही जिले में स्थित माउंट आबू पर्वतखंड अरावली की मुख्य श्रृंखलाओं की तुलना में एक विशाल उत्खंड के रूप में अवस्थित है। भूगर्भीय दृष्टि से यह आबू ब्लॉक मुख्यतः विशाल क्रिस्टलीय ग्रेनाइट और नीस चट्टानों से निर्मित है। इसे 'एरिनपुरा ग्रेनाइट' शैल समूह का भाग माना जाता है। इस कठोर ग्रेनाइट संरचना के कारण ही यह अपक्षय के प्रति प्रतिरोध प्रदर्शित करता है।

89. (D) घग्गर
राजस्थान की प्रमुख नदियों के उद्गम स्थलों में अंतर पाया जाता है। लूनी नदी अजमेर की नाग पहाड़ियों से, बनास नदी खमनौर की पहाड़ियों से और साबरमती उदयपुर की पहाड़ियों से निकलती हैं, जो अरावली का भाग हैं। इसके विपरीत, घग्गर नदी अरावली से नहीं बल्कि हिमाचल प्रदेश में शिवालिक श्रेणी की कालका पहाड़ियों से निकलती है, जो उत्तरी नदी माना जाती है।

90. (A) प्रायद्वीपीय पठार
भूगर्भीय संरचना और विवर्तनिक इतिहास के अनुसार, राजस्थान का अधिकांश भू-भाग प्राचीन गोंडवानालैंड के अंतर्गत प्रायद्वीपीय भारत के पठार का ही उत्तर-पश्चिमी विस्तार माना जाता है। राज्य के दो प्रमुख भौतिक प्रदेश, अरावली पर्वतीय प्रदेश और दक्षिण-पूर्वी हाडोती पठार, सीधे तौर पर भारतीय प्रायद्वीपीय पठार के ही हिस्से हैं। बाद के कालों में हुए निक्षेपण से अन्य मैदानी भागों का विकास हुआ।

जल गहराई में नहीं रिसता और रेतीले धरातल पर बहता है। अत्यधिक वाष्पीकरण और रेतीली मिट्टी के कारण यह जल समुद्र तक पहुँचे बिना मरुस्थल में ही समाहित होकर समाप्त हो जाता है।

69. (A) अरावली पर्वतमाला को पार करने वाला एक संकरा पर्वतीय दर्रा या खड्ड।
राजस्थान की पर्वत प्रणाली, विशेषकर अरावली पर्वतीय प्रदेश की स्थानिक शब्दावली में 'नाल' शब्द पहाड़ियों के मध्य स्थित किसी संकीर्ण प्राकृतिक दर्रे को निरूपित करता है। ये नाल या दर्रे पर्वत को पार करने के लिए मार्ग प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए, देसूरी की नाल तथा हाथीगुड़ा की नाल प्रसिद्ध भौगोलिक दर्रे माने जाते हैं, जो मार्ग सुगम बनाते हैं।

70. (D) सवाई माधोपुर जिले में रणथंभौर क्षेत्र
राजस्थान में भूगर्भीय दृष्टि से दो प्राचीनतम पर्वत प्रणालियों, अरावली और विंध्यन का संधि-स्थल सवाई माधोपुर जिले के रणथंभौर क्षेत्र में अवस्थित है। इस विशिष्ट क्षेत्र में अरावली के कायांतरित शैल समूह विंध्यन के अवसादी शैल समूहों से मिलते हैं। इसी मिलन बिंदु पर 'महान सीमा भ्रंश' गुजरता है, जो राजस्थान के भूगर्भीय इतिहास का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण भ्रंश माना जाता है।

71. (B) P-2, Q-4, R-1, S-3
राजस्थान के विभिन्न पठार अपनी विशिष्ट भौगोलिक अवस्थिति के लिए जाने जाते हैं। उड़िया का पठार सिरोही जिले में स्थित राज्य का सबसे ऊँचा पठार है। भोराट का पठार राजसमंद और उदयपुर के मध्य अवस्थित है। मेसा का पठार चित्तौड़गढ़ जिले में स्थित है। ऊपरमाल का पठार भीलवाड़ा से चित्तौड़गढ़ तक फैले उच्च भू-भाग को निरूपित करता है, जो काफी प्रसिद्ध है।

72. (C) नक्की झील
राजस्थान में झीलों को जल की प्रकृति के आधार पर विभाजित किया जाता है। सांभर, डीडवाना और पचपदरा पश्चिमी मरुस्थल में स्थित खारे पानी की प्राकृतिक झीलें हैं, जिनका निर्माण वाष्पीकरण से हुआ है। इसके विपरीत नक्की झील माउंट आबू में स्थित मीठे पानी की झील है। यह एक विवर्तनिक झील मानी जाती है जो अत्यधिक ऊँचाई पर अवस्थित मानी जाती है।

73. (D) जोहड़
राजस्थान के शेखावाटी क्षेत्र में वर्षा जल संचयन तथा भूजल पुनर्भरण के लिए बनाए गए पारंपरिक कच्चे कुओं को स्थानीय भाषा में 'जोहड़' कहा जाता है। ये संरचनाएं मुख्यतः वर्षा जल को रोककर मवेशियों के पानी की पूर्ति करती हैं और भूजल स्तर को बढ़ाती हैं। जोहड़ शेखावाटी के ग्रामीण जल प्रबंधन की प्राचीन परंपरा का हिस्सा माने जाते हैं, जो उपयोगी हैं।

74. (A) भीलवाड़ा सुपरग्रुप, अरावली सुपरग्रुप, दिल्ली सुपरग्रुप, विंध्यन प्रणाली
राजस्थान की भूगर्भीय शैल प्रणालियों का कालानुक्रमिक क्रम इतिहास को दर्शाता है। सबसे प्राचीन भीलवाड़ा सुपरग्रुप की आधारभूत चट्टानें हैं। इसके पश्चात अरावली सुपरग्रुप का निर्माण हुआ। इसके बाद दिल्ली सुपरग्रुप की पर्वत श्रृंखला बनी। सबसे अंत में अवसादी चट्टानों से युक्त विंध्यन प्रणाली का विकास हुआ। अतः यह क्रम प्राचीनतम से नवीनतम की सही भूगर्भीय समय-सारणी प्रस्तुत करता है, जो सटीक है।

75. (B) टर्शियरी काल के दौरान टेथिस सागर के अवशेषों द्वारा निर्मित समुद्री अवसादी बेसिन।
पश्चिमी राजस्थान के थार मरुस्थल में प्राकृतिक गैस और पेट्रोलियम के निक्षेप पाए जाते हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि टर्शियरी काल में यह क्षेत्र टेथिस सागर के अंतर्गत एक अवसादी बेसिन था। लाखों वर्षों तक समुद्री वनस्पतियों के अवसाद में दबने और उच्च ताप-दाब में जैविक अपघटन होने से यहाँ हाइड्रोकार्बन के विशाल भंडार निर्मित हुए, जो अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं।

76. (B) बरखान
शुष्क भू-आकृति विज्ञान में पवन के कार्यों को अपरदनात्मक और निक्षेपनात्मक श्रेणियों में बाँटा जाता है। इन्सेलबर्ग, यारडांग और ज़्यूगेन वायु अपरदन द्वारा निर्मित अपरदनात्मक भू-रूप हैं। इसके विपरीत, 'बरखान' एक निक्षेपनात्मक भू-आकृति है, जो पवन द्वारा बालू के कणों को जमा करने से निर्मित बालुका स्तूप है। अतः बरखान अपरदनात्मक भू-रूप न होकर निक्षेपनात्मक भू-रूप का एक प्रमुख उदाहरण माना जाता है।

77. (A) पेडिमेंट
राजस्थान के शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में पर्वत या पहाड़ियों के आधारों पर निर्मित मंद ढाल वाले चट्टानी धरातल को 'पेडिमेंट' कहा जाता है। यह भू-आकृति मुख्य रूप से जल और वायु के अपरदन कार्य द्वारा निर्मित होती है। पेडिमेंट पहाड़ियों के तलहटी क्षेत्र में एक नग्न सतह के रूप में दिखाई देती है, जिसके आगे बजादा मैदान का निर्माण होता है।

78. (C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
बनास नदी बेसिन राजस्थान के पूर्वी मैदानी भाग का एक प्रमुख कृषि क्षेत्र है। यह बेसिन जलोढ़ और भूरी दोमट मिट्टी से ढका उपजाऊ मैदान है, जहाँ पर्याप्त सिंचाई सुविधाओं के कारण सघन ग्रामीण बस्तियाँ पाई जाती हैं। कारण गलत है क्योंकि यह क्षेत्र बीहड़ या पर्वतीय भू-भाग नहीं है तथा घने वनों से आच्छादित नहीं है। अतः कथन पूर्णतः सही है।

79. (D) चंबल
जलोढ़ मैदानों में प्राचीन जलोढ़ को 'बांगर' और नवीन जलोढ़ को 'खादर' कहा जाता है। राजस्थान में नवीन जलोढ़ का सबसे प्रमुख और गहरा कटाव चंबल नदी द्वारा देखने को मिलता है। चंबल नदी के तीव्र प्रवाह तथा अपरदन के कारण कोटा, सवाई माधोपुर और धौलपुर जिलों में विशाल खड्डों और बीहड़ों का निर्माण हुआ है, जो अत्यंत विशिष्ट माना जाता है।

80. (C) यह ढलानों और घाटी क्षेत्रों में प्रकीर्णित बस्तियों ('फला' या 'ढाणी') को जन्म देता है।
दक्षिणी अरावली क्षेत्र का भू-भाग अत्यधिक उबड़-खाबड़ और विच्छेदित पहाड़ियों द्वारा अभिलक्षित है। इस विषम पर्वतीय

Click Here to Buy book on Amazon

यहाँ का जनघनत्व अन्य मरुस्थलों की तुलना में काफी अधिक पाया जाता है।

57. (D) बनास बेसिन
राजस्थान में 'खैराड़' क्षेत्र भीलवाड़ा जिले की जहाजपुर तहसील और टोंक जिले के निकटवर्ती तरंगित मैदानी भाग को संदर्भित करता है। यह भू-आकृतिक क्षेत्र बनास नदी और उसकी सहायक नदियों द्वारा अपवाहित बनास बेसिन का एक भाग है। बनास नदी के अपरदन कार्य से निर्मित इस मैदान में उबड़-खाबड़ धरातल पाया जाता है। यहाँ की मिट्टी भूरी दोमट प्रकार की मानी जाती है।

58. (A) केवल I और II
लूनी नदी बेसिन राजस्थान के दक्षिण-पश्चिमी अर्ध-शुष्क मैदान का हिस्सा है, जिसे पारंपरिक रूप से 'गोडवाड़ क्षेत्र' कहा जाता है। इस बेसिन में पाली और जालौर शामिल हैं, जहाँ उपजाऊ दोमट मृदा पाई जाती है जो कृषि के लिए उपयुक्त है। परंतु यह क्षेत्र हाडोती पठार की अपवाह प्रणाली नहीं है, क्योंकि हाडोती चंबल नदी तंत्र द्वारा अपवाहित होता है, जिससे तीसरा कथन गलत है।

59. (B) एरिडिसोल्स
मृदा वर्गीकरण की आधुनिक प्रणाली के अनुसार, राजस्थान के पश्चिमी शुष्क और अर्ध-शुष्क मरुस्थलीय क्षेत्रों में 'एरिडिसोल्स' मृदा गण विस्तृत रूप से पाया जाता है। यह मृदा शुष्क जलवायु, उच्च वाष्पीकरण और कम वर्षा वाले क्षेत्रों की विशेषता है। इस मृदा में खनिज लवणों का संचयन अधिक होता है तथा जैविक पदार्थों की मात्रा कम पाई जाती है, जो इसे विशिष्ट बनाती है।

60. (B) अर्धचंद्राकार बरखान स्तूप
थार मरुस्थल में 'बरखान' प्रकार के बालुका स्तूप सर्वाधिक गतिशील और विनाशकारी माने जाते हैं। पवन की दिशा में निर्मित होने वाले ये अर्धचंद्राकार टीले तेजी से आगे बढ़ते हैं। पवन का वेग अधिक होने पर ये बालुका स्तूप विस्थापित होकर पास के खेतों और सड़क मार्गों को रेत से ढक लेते हैं। इस कारण बरखान राजस्थान में मरुस्थलीकरण के लिए उत्तरदायी माने जाते हैं।

61. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या है।
दक्षिण-पूर्वी हाडोती का पठार राजस्थान में सोयाबीन और धनिया जैसी फसलों का प्रमुख केंद्र है। इसका प्राथमिक कारण यह है कि यह पठारी क्षेत्र लावा के क्षरण से निर्मित काली मृदा से आच्छादित है। काली मिट्टी में जल रोकने की उच्च क्षमता होती है, जो दीर्घकालिक नमी की आवश्यकता वाली सोयाबीन और अन्य व्यावसायिक फसलों के उत्पादन हेतु उत्तम वातावरण प्रदान करती है।

62. (C) गोडवाड़ क्षेत्र
राजस्थान के पूर्वी मैदानी प्रदेश को मुख्यतः तीन उप-विभागों में विभाजित किया जाता है: बनास बेसिन, छप्पन का मैदान और चंबल बेसिन। ये तीनों विभाग नदियों के निक्षेपों द्वारा बने हैं। इसके विपरीत, गोडवाड़ क्षेत्र राजस्थान के पश्चिमी अर्ध-शुष्क मैदान का उप-विभाग है, जो लूनी नदी और उसकी सहायक नदियों द्वारा अपवाहित क्षेत्र को निरूपित करता है, न कि पूर्वी मैदान को।

63. (B) 930 मीटर
यद्यपि अरावली पर्वतमाला का उच्चतम बिंदु गुरु शिखर 1722 मीटर की ऊँचाई पर अवस्थित है, परंतु पूरी पर्वत श्रृंखला की समुद्र तल से औसतन ऊँचाई लगभग 930 मीटर मानी जाती है। यह औसत ऊँचाई उत्तरी कम ऊँची पहाड़ियों से लेकर दक्षिण की ऊँची चोटियों के मध्य का संतुलन प्रदर्शित करती है। निरंतर अपरदन के कारण इस पर्वत की ऊँचाई घटती रही है।

64. (C) बीड़
शेखावाटी क्षेत्र में झुंझुनू, सीकर और चुरु जिलों के अंतर्गत पाई जाने वाली पारंपरिक चरागाह भूमियों को स्थानीय रूप से 'बीड़' कहा जाता है। इन क्षेत्रों में मुख्य रूप से कंटीली झाड़ियाँ और खेजड़ी उगती हैं। बीड़ स्थानीय पशुपालकों के लिए मवेशियों के चराने का आधार होती हैं। झुंझुनू जिले में स्थित बीड़ क्षेत्र को कंजर्वेशन रिजर्व भी घोषित किया गया है।

65. (B) माही
दक्षिणी राजस्थान के प्रतापगढ़ और आसपास के भू-भाग को स्थानीय भाषा में 'कांठल' के नाम से जाना जाता है। कांठल शब्द का अर्थ 'किनारा' होता है। यह क्षेत्र माही नदी के किनारे पर अवस्थित है। माही नदी विंध्याचल श्रेणी से निकलकर राजस्थान के दक्षिणी क्षेत्र में प्रवाहित होती है और कांठल के मैदान का निर्माण करती है, जो उपजाऊ माना जाता है।

66. (D) केवल I, II और IV
दक्षिण-पूर्वी हाडोती पठार प्रायद्वीपीय भारत के मालवा पठार का भाग है, जो चंबल नदी द्वारा अपवाहित होता है। इस क्षेत्र में मुकुंदरा की पहाड़ियाँ और अर्धचंद्राकार कटक पाए जाते हैं। हालांकि, यह पठार राज्य के कुल क्षेत्रफल का मात्र लगभग 6.89% भाग बनाता है, न कि 23.3% जो पूर्वी मैदान का हिस्सा है। अतः तीसरा कथन यहाँ पूर्णतः असत्य सिद्ध होता है।

67. (A) पैराबोलिक बालुका स्तूप
राजस्थान के थार मरुस्थल में 'पैराबोलिक बालुका स्तूप' सर्वाधिक विस्तृत क्षेत्र में पाए जाने वाले बालुका स्तूप हैं। इनका निर्माण मरुस्थलीय वनस्पति की रुकावट के कारण वायु निक्षेपण से होता है। इनका आकार हेयरपिन के समान होता है। इनमें पवन की दिशा में अवतल ढाल तथा विपरीत दिशा में उत्तल ढाल बनती है। ये स्तूप लगभग सभी मरुस्थलीय जिलों में पाए जाते हैं।

68. (C) एक अपारगम्य उप-सतही कैल्क्रिट (कंकर) परत की उपस्थिति संक्षिप्त मौसमी सतही प्रवाह को बाध्य करती है जो रेतीली मिट्टी में जल्दी समाप्त हो जाता है।
शेखावाटी प्रदेश में आंतरिक अपवाह प्रणाली की व्यापकता का कारण धरातल के नीचे पाया जाने वाला कंकर का स्तर है। वर्षा के दौरान जब मौसमी नदियाँ प्रवाहित होती हैं, तो

NODIA

अध्याय 12

राजस्थान की जलवायु

1. राजस्थान का अक्षांशीय एवं देशांतरीय विस्तार इसकी जलवायु को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है। कर्क रेखा के संबंध में राजस्थान की अक्षांशीय स्थिति का सही वर्णन निम्नलिखित में से कौन-सा कथन करता है?
   (A) कर्क रेखा सबसे उत्तरी जिलों से होकर गुजरती है, जिससे पूरा राज्य उष्णकटिबंधीय बन जाता है।
   (B) कर्क रेखा बांसवाड़ा और डूंगरपुर के दक्षिणी जिलों से होकर गुजरती है, जिससे राज्य का अधिकांश भाग उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्र में आता है।
   (C) कर्क रेखा राजस्थान को दो बराबर भागों में विभाजित करती है, जिससे समरूप उष्णकटिबंधीय जलवायु सुनिश्चित होती है।
   (D) राजस्थान पूरी तरह से कर्क रेखा के दक्षिण में स्थित है, जिसके परिणामस्वरुप यहाँ पूर्णतः विषुवतीय जलवायु पाई जाती है।

2. राजस्थान की जलवायु के संबंध में निम्नलिखित कारकों पर विचार कीजिए:
   I. समुद्र से दूरी
   II. अरावली पर्वतों की दिशा और संरेखण
   III. अरब सागर में ठंडी महासागरीय धाराएँ
   दिए गए कारकों के संयोजनों में से कौन-सा उन कारकों का सही प्रतिनिधित्व करता है जो राजस्थान की जलवायु को सीधे प्रभावित करते हैं?
   (A) केवल I और II
   (B) केवल II और III
   (C) केवल I और III
   (D) I, II और III

3. बंगाल की खाड़ी की तुलना में अरब सागर के अधिक निकट होने के बावजूद, राजस्थान में मानसून की अरब सागर शाखा से कम वर्षा होती है। इसका प्राथमिक वैचारिक कारण क्या है?
   (A) अरावली पर्वतमाला अरब सागर की मानसूनी पवनों की दिशा के समानांतर स्थित है, जो पर्वतीय अवरोध के रुप में कार्य करने में विफल रहती है।
   (B) राजस्थान पहुँचने से पहले अरब सागर शाखा को पश्चिमी घाट द्वारा पूरी तरह से रोक लिया जाता है।
   (C) थार मरुस्थल की अत्यधिक गर्मी अरब सागर शाखा की आर्द्रता को तुरंत वाष्पीकृत कर देती है।
   (D) अरब सागर शाखा मानसून के मौसम के दौरान केवल शुष्क पवनें लाती है।

4. सूची I में कोपेन के वर्गीकरण के अनुसार राजस्थान के जलवायु प्रदेशों का सूची II में उनके प्रतिनिधि जिलों के साथ मिलान कीजिए:
   सूची I : (जलवायु प्रदेश)
   P. Aw
   Q. BShw
   R. BWhw
   S. Cwg
   सूची II : (प्रतिनिधि जिला)
   1. बांसवाड़ा
   2. जैसलमेर
   3. नागौर
   4. टोंक
   (A) P-1, Q-2, R-3, S-4
   (B) P-4, Q-3, R-2, S-1
   (C) P-1, Q-3, R-2, S-4
   (D) P-2, Q-4, R-1, S-3

5. थॉर्नथवेट के राजस्थान के जलवायु वर्गीकरण में, 'EA'd' प्रदेश मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किस क्षेत्र से संबंधित है?
   (A) शुष्क पश्चिमी मरुस्थल
   (B) आर्द्र दक्षिण-पूर्वी पठार
   (C) उप-आर्द्र पूर्वी मैदान
   (D) अर्ध-शुष्क संक्रमणकालीन मैदान

6. ट्रिवाथा के जलवायु वर्गीकरण के संशोधन के अनुसार, राजस्थान का कौन-सा क्षेत्र 'BSh' कोड द्वारा निर्दिष्ट किया गया है?
   (A) वास्तविक शुष्क मरुस्थलीय क्षेत्र
   (B) उप-आर्द्र जलवायु क्षेत्र
   (C) उष्णकटिबंधीय आर्द्र जलवायु क्षेत्र
   (D) अर्ध-शुष्क / स्टेपी क्षेत्र

7. दिए गए कथन (A) और कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा सही विकल्प का चयन कीजिए।
   कथन (A) : कोपेन ने राजस्थान की जलवायु को चार प्रमुख प्रदेशों: Aw, BShw, BWhw, और Cwg में वर्गीकृत किया।
   कारण (R) : जलवायु वर्गीकरण के लिए कोपेन का प्राथमिक और एकमात्र आधार वर्षा के स्तर में वार्षिक भिन्नता थी।
   (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
   (B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं है।

Downloaded from www.pdf.tube

(C) कथन (A) सही है परंतु कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है परंतु कारण (R) सही है।

8. निम्नलिखित में से कौन-सी समवर्षा रेखा सामान्यतः पश्चिमी राजस्थान में वास्तविक शुष्क जलवायु प्रदेश (मरुस्थल) की पूर्वी सीमा मानी जाती है, जो इसे अर्ध-शुष्क प्रदेश से अलग करती है?
(A) 10 सेमी समवर्षा रेखा
(B) 25 सेमी समवर्षा रेखा
(C) 50 सेमी समवर्षा रेखा
(D) 75 सेमी समवर्षा रेखा

9. पश्चिमी राजस्थान के शुष्क प्रदेश में तापमान के प्रतिरूप के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I : पश्चिमी राजस्थान का शुष्क प्रदेश अत्यधिक उच्च दैनिक तापांतर का अनुभव करता है।
कथन II : इस क्षेत्र की रेतीली मृदा दिन के समय सौर विकिरण को तेज़ी से अवशोषित करती है और रात में पार्थिव विकिरण के माध्यम से तेज़ी से ऊष्मा का ह्रास करती है।
निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, तथा कथन II, कथन I की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, परंतु कथन II, कथन I की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन I सही है, परंतु कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, परंतु कथन II सही है।

10. राजस्थान के BWhw जलवायु प्रदेश के संबंध में निम्नलिखित विशेषताओं पर विचार कीजिए:
I. यह उष्ण मरुस्थलीय जलवायु का प्रतिनिधित्व करता है।
II. औसत वार्षिक वर्षा सामान्यतः 20 सेमी से कम होती है।
III. प्राकृतिक वनस्पति में मुख्य रूप से सघन, चौड़ी पत्ती वाले सदाबहार वृक्ष शामिल हैं।
IV. संभाव्य वाष्पोत्सर्जन की दर अत्यधिक उच्च होती है।
उपरोक्त कथनों का कौन-सा संयोजन सही है?
(A) I, II और III
(B) I, II और IV
(C) II, III और IV
(D) I, III और IV

11. निम्नलिखित में से कौन-सा जिला मुख्य रूप से राजस्थान की वास्तविक शुष्क (मरुस्थलीय) जलवायु के अंतर्गत नहीं आता है?
(A) जैसलमेर
(B) झालावाड़
(C) बीकानेर
(D) श्रीगंगानगर

12. लसियुरस सिंडिकस (सेवण) जैसी छोटी घासों और कंटीली झाड़ियों की विशेषता वाली स्टेपी प्रकार की वनस्पति राजस्थान के किस जलवायु प्रदेश की प्रमुख प्राकृतिक वनस्पति है?
(A) शुष्क प्रदेश
(B) अर्ध-शुष्क प्रदेश
(C) उप-आर्द्र प्रदेश
(D) अति-आर्द्र प्रदेश

13. राजस्थान के अर्ध-शुष्क प्रदेश (BShw) की जलवायु के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?
(A) यह एक संक्रमणकालीन क्षेत्र के रूप में लूनी बेसिन और शेखावाटी क्षेत्र को आच्छादित करता है।
(B) इसमें सभी जिलों में आमतौर पर 100 सेमी से अधिक भारी वार्षिक वर्षा होती है।
(C) इस पूरे क्षेत्र में शीतकालीन पाले का पूर्णतः अभाव रहता है।
(D) यह संपूर्ण परिदृश्य में सघन उष्णकटिबंधीय वर्षावन वनस्पति द्वारा परिभाषित होता है।

NODIA

14. प्राथमिक जलवायु वर्गीकरण (शुष्क बनाम अर्ध-शुष्क) के आधार पर निम्नलिखित जिलों में से असंगत का चयन कीजिए:
(A) सीकर
(B) झुंझुनू
(C) जैसलमेर
(D) नागौर

15. राजस्थान के अर्ध-शुष्क जलवायु प्रदेश के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसकी पश्चिमी सीमा 25 सेमी समवर्षा रेखा और पूर्वी सीमा 50 सेमी समवर्षा रेखा द्वारा निर्धारित होती है।
II. यहाँ वर्षा-आधारित कृषि की जाती है, परंतु यह क्षेत्र कृषि सूखे के प्रति अत्यधिक संवेदनशील है।
III. यह क्षेत्र स्थानांतरणशील बालुका स्तूपों के प्रभावों से काफी हद तक सुरक्षित है।
निम्नलिखित में से कौन-सा संयोजन सही कथनों का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

16. राजस्थान के आर्द्र जलवायु प्रदेश (पूर्वी एवं दक्षिण-पूर्वी मैदान) में औसत वार्षिक वर्षा का मानक परास (रेंज) क्या है?
(A) 20 सेमी से 40 सेमी
(B) 40 सेमी से 60 सेमी
(C) 60 सेमी से 80 सेमी
(D) 100 सेमी से 150 सेमी

17. सूची I के जलवायु प्रदेशों का सूची II में उनके संबंधित विशिष्ट जिलों के साथ मिलान कीजिए:
सूची I : (जलवायु प्रदेश)
P. शुष्क जलवायु
Q. अर्ध-शुष्क जलवायु

R. उप-आर्द्र जलवायु
S. अति-आर्द्र जलवायु

सूची II : (विशिष्ट जिला)

1. जयपुर
2. माउंट आबू
3. पाली
4. बीकानेर

(A) P-4, Q-1, R-3, S-2
(B) P-4, Q-3, R-1, S-2
(C) P-2, Q-3, R-1, S-4
(D) P-3, Q-4, R-2, S-1

18. दिए गए कथन (A) और कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन (A) : माउंट आबू में राजस्थान के आसपास के क्षेत्रों से भिन्न, एक विशिष्ट 'अति-आर्द्र' जलवायु पाई जाती है।
कारण (R) : माउंट आबू की अधिक ऊँचाई आर्द्रता से भरी पवनों का महत्वपूर्ण पर्वतीय उत्थान करती है, जिसके परिणामस्वरूप अधिक वर्षा होती है।
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन (A) सही है परंतु कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है परंतु कारण (R) सही है।

19. राजस्थान के दक्षिण-पूर्वी क्षेत्र (हाड़ौती पठार) में अपेक्षाकृत अधिक वर्षा होने का सबसे उपयुक्त प्राथमिक कारण क्या है?
(A) बंगाल की खाड़ी की मानसूनी शाखा का प्रभाव एवं क्षेत्रीय पर्वतीय स्थलाकृति।
(B) ग्रीष्मकाल के दौरान पश्चिमी विक्षोभों का बिना किसी बाधा के वायुमंडलीय प्रवेश।
(C) राज्य के दक्षिणी क्षेत्र में अरावली पर्वतमाला की पूर्ण संरचनात्मक अनुपस्थिति।
(D) भूमध्य सागर से उत्पन्न होने वाले निरंतर चक्रवातीय निम्न-दाब अवदाब।

20. राजस्थान में निम्नलिखित स्थानों पर विचार कीजिए:
I. बांसवाड़ा
II. जयपुर
III. श्रीगंगानगर
निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प दक्षिण-पश्चिम मानसून के सामान्य आगमन (सबसे पहले से सबसे बाद) के सही कालानुक्रमिक क्रम को दर्शाता है?
(A) I, II, III
(B) III, II, I
(C) I, III, II
(D) II, I, III

21. भारतीय मानसून प्रणाली की कौन-सी शाखा राजस्थान में सर्वाधिक वर्षा के लिए उत्तरदायी है?
(A) बंगाल की खाड़ी की शाखा
(B) अरब सागर की शाखा
(C) भूमध्यसागरीय चक्रवातीय शाखा
(D) लौटते मानसून की शाखा

22. राजस्थान में मानसून प्रणाली के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. मानसून सामान्यतः मध्य जून से जुलाई के प्रारंभ तक राजस्थान पहुँचता है।
II. वर्षा की तीव्रता सामान्यतः दक्षिण-पूर्व से उत्तर-पश्चिम की ओर घटती है।
III. लौटता हुआ मानसून नवंबर में पश्चिमी राजस्थान में भारी वर्षा लाता है।
IV. मानसूनी वर्षा में भिन्नता के कारण राज्य में बार-बार सूखा पड़ता है।
उपरोक्त कथनों का कौन-सा संयोजन सही है?
(A) I, II और IV
(B) I, II और III
(C) II, III और IV
(D) I, III और IV

23. मानसून की बंगाल की खाड़ी शाखा पश्चिमी राजस्थान पहुँचने तक काफी कम वर्षा क्यों प्रदान करती है?
(A) पवनें पूरी तरह से हिमालय पर्वतमाला द्वारा अवरुद्ध हो जाती हैं और सीधे मध्य एशिया की ओर मुड़ जाती हैं।
(B) राज्य में पहुँचने से पूर्व उत्तरी मैदानों से गुजरते समय पवनों की आर्द्रता कम हो जाती है।
(C) अरावली पर्वतमाला की ऊँची चोटियाँ इन पवनों को राज्य की सीमाओं में प्रवेश करने से रोकती हैं।
(D) पश्चिमी राजस्थान में तीव्र निम्न वायुमंडलीय दाब तापीय प्रणाली आर्द्र पवनों को प्रतिकर्षित करती है।

24. मानसून के आगमन से पूर्व, राजस्थान में सामान्यतः कौन-सा महीना सबसे गर्म होता है, जिसमें उच्चतम माध्य अधिकतम तापमान दर्ज किया जाता है?
(A) अप्रैल
(B) मई
(C) जून
(D) जुलाई

25. राजस्थान में शीतकालीन तापमान के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(A) जनवरी सामान्यतः राज्य का सबसे ठंडा महीना होता है।
(B) उत्तरी और उत्तर-पश्चिमी राजस्थान के रेतीले भूभागों में कभी-कभी धरातलीय पाला देखा जाता है।
(C) शीत लहरें अक्सर चूरू और सीकर में रात के तापमान को हिमांक बिंदु के पास या उससे नीचे गिरा देती हैं।
(D) शीतकाल में थार मरुस्थल में दैनिक तापांतर अत्यधिक कम रहता है।

26. दिए गए कथन (A) और कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन (A) : राजस्थान के पूर्वी मैदानों की तुलना में थार

Click Here to Buy book on Flipkart

मरुस्थलीय क्षेत्र में उच्च दैनिक तापांतर पाया जाता है।
कारण (R) : उच्च एल्बीडो, मेघाच्छादन का अभाव, तथा शिथिल रेत की कम विशिष्ट ऊष्मा क्षमता दिन में तेज़ी से गर्म होने और रात में तेज़ी से ठंडा होने में सहायता करती है।
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन (A) सही है परंतु कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है परंतु कारण (R) सही है।

27. अत्यधिक ऊँचाई के कारण शीत ऋतु के दौरान राजस्थान का कौन-सा स्थान सामान्यतः सबसे कम न्यूनतम तापमान दर्ज करता है?
(A) चूरू
(B) माउंट आबू
(C) फलोदी
(D) फतेहपुर

28. राजस्थान की जलवायु के संदर्भ में, 50 सेमी समवर्षा रेखा का भौगोलिक महत्व क्या है?
(A) यह भारत और पाकिस्तान के ठीक मध्य स्थित अंतरराष्ट्रीय भौगोलिक सीमा संरेखण को चिह्नित करती है।
(B) यह अरावली के समानांतर चलती है, जो राज्य को पश्चिमी शुष्क और पूर्वी आर्द्र क्षेत्रों में विभाजित करती है।
(C) यह राज्य के उप-आर्द्र और अति-आर्द्र जलवायु क्षेत्रों को पृथक करने वाली क्षेत्रीय सीमा को परिभाषित करती है।
(D) यह सक्रिय पश्चिमी विक्षोभों द्वारा लाई गई 50 सेमी से अधिक शीतकालीन वर्षा प्राप्त करने वाले क्षेत्रों को दर्शाती है।

29. पश्चिम से पूर्व की ओर नगरों का सही क्रम निम्नलिखित में से कौन-सा है, जो औसत वार्षिक वर्षा में सामान्य वृद्धि को दर्शाता है?
(A) जैसलमेर, जोधपुर, अजमेर, टोंक
(B) जोधपुर, जैसलमेर, टोंक, अजमेर
(C) अजमेर, टोंक, जैसलमेर, जोधपुर
(D) टोंक, अजमेर, जोधपुर, जैसलमेर

30. जलवायु विभाजक के रूप में अरावली पर्वतमाला के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह पश्चिमी मरुस्थल के पूर्वी मैदानों की ओर विस्तार को रोकती है।
II. यह अरब सागर की मानसूनी शाखा को ढलानों पर अधिकतम आर्द्रता बरसाने के लिए बाध्य करती है।
III. यह बंगाल की खाड़ी के अपवाह तंत्र और अरब सागर के अपवाह तंत्र के मध्य एक प्रमुख जल विभाजक के रूप में कार्य करती है।
उपरोक्त कथनों का कौन-सा संयोजन सही है?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

31. यदि अरावली पर्वतमाला दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व के स्थान पर पूर्व से पश्चिम की ओर स्थित होती, तो राजस्थान की जलवायु पर क्या प्रभाव पड़ने की सर्वाधिक संभावना होती?
(A) पूरा राज्य सभी जिलों में बारहमासी पाले की स्थिति के साथ एक ठंडी टुंड्रा जलवायु प्रणाली का साक्षी बनता।
(B) थार मरुस्थल पूरी तरह से समाप्त हो जाता क्योंकि बंगाल की खाड़ी शाखा पूरे राज्य में समान वर्षा वितरित करती।
(C) राजस्थान में शून्य वर्षा होती क्योंकि सभी मौसमी मानसूनी पवनें राज्य की सीमाओं के बाहर ही रुक जातीं।
(D) अरब सागर की शाखा लंबवत टकराती, जिससे दक्षिण में भारी वर्षा होती और उत्तरी भाग शुष्क रह जाता।

32. भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (IMD) के अनुसार, मानसून के मौसम के दौरान किसी क्षेत्र के लिए वर्षा की कमी दीर्घकालिक औसत (LPA) के कितने प्रतिशत से अधिक होने पर मौसम संबंधी सूखे को 'गंभीर' वर्गीकृत किया जाता है?
(A) 15%
(B) 25%
(C) 50%
(D) 75%

NODIA

33. राजस्थान में ऐतिहासिक रूप से विनाशकारी अकाल और विक्रम संवत कैलेंडर में उसके संबंधित वर्ष का प्रतिनिधित्व करने वाले सही युग्म की पहचान कीजिए:
(A) सहसा मोड़सा — विक्रम संवत 2001
(B) छप्पनिया अकाल — विक्रम संवत 1956
(C) मकाड़िया अकाल — विक्रम संवत 1980
(D) पंचकाल — विक्रम संवत 1899

34. राजस्थान में सूखे के प्रकारों को परिभाषित करने वाले निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. मौसम संबंधी सूखा वर्षण में महत्वपूर्ण कमी से अभिलक्षित होता है।
II. जलवैज्ञानिक सूखा सतही और उप-सतही जल संसाधनों की कमी को संदर्भित करता है।
III. कृषि सूखा तब होता है जब फसल की वृद्धि के लिए मृदा की नमी अपर्याप्त होती है।
IV. सामाजिक-आर्थिक सूखा केवल तब होता है जब राज्य की प्रति व्यक्ति आय में गिरावट आती है।
किस संयोजन में सही परिभाषाएँ शामिल हैं?
(A) I, II और III
(B) II, III और IV
(C) I, III और IV
(D) I, II और IV

35. दिए गए कथन (A) और कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन (A) : पश्चिमी राजस्थान में कृषि सूखे की उच्च आवृत्ति पाई जाती है।

कारण (R) : वर्षा की उच्च परिवर्तनशीलता, रेतीली मृदा की कम जल धारण क्षमता और उच्च वाष्पीकरण दर फसल के मौसम के दौरान मृदा की नमी को गंभीर रूप से सीमित करती है।
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन (A) सही है परंतु कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है परंतु कारण (R) सही है।

36. राजस्थान के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का लगभग कितना प्रतिशत मरुस्थलीकरण और भूमि अवनयन की प्रक्रियाओं से प्रभावित है?
(A) 35%
(B) 47%
(C) 67%
(D) 85%

37. पश्चिमी राजस्थान में मरुस्थलीकरण को बढ़ाने वाला सबसे महत्वपूर्ण मानवजनित कारण किसे माना जाता है?
(A) पशुधन द्वारा अतिचारण और वनोन्मूलन
(B) व्यापक नहर सिंचाई जिसके कारण जलभराव होता है
(C) सीमेंट कारखानों से औद्योगिक प्रदूषण
(D) जैविक खेती तकनीकों का अत्यधिक उपयोग

38. राजस्थान में मरुस्थलीकरण की प्रक्रियाओं के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(A) वायु अपरदन पश्चिमी राजस्थान में मरुस्थलीकरण की सबसे प्रमुख प्रक्रिया है।
(B) जल अपरदन चंबल बेसिन क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमि अवनयन का कारण बनता है।
(C) लवणता और क्षारीयता की समस्याएँ मुख्यतः IGNP जैसी प्रमुख सिंचाई परियोजनाओं के कमान क्षेत्रों से जुड़ी हैं।
(D) राजस्थान में मरुस्थलीकरण पूरी तरह से एक प्राकृतिक परिघटना है जिसमें मानव का कोई प्रभाव नहीं है।

39. सूची I के मरुस्थलीकरण नियंत्रण संस्थानों/कार्यक्रमों का सूची II में उनके स्थापना वर्ष या केंद्रीय स्थान से मिलान कीजिए:
सूची I : (संस्थान/कार्यक्रम)
P. CAZRI (केंद्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान)
Q. AFRI (शुष्क वन अनुसंधान संस्थान)
R. DPAP (सूखा संभावित क्षेत्र कार्यक्रम)
S. DDP (मरुस्थल विकास कार्यक्रम)
सूची II : (स्थापना वर्ष / स्थान)
1. 1977-78 में प्रारंभ
2. 1973-74 में प्रारंभ
3. जोधपुर (स्थापना 1959)
4. जोधपुर (स्थापना 1985)
(A) P-4, Q-3, R-1, S-2
(B) P-3, Q-4, R-2, S-1
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

40. राजस्थान पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I : प्रेक्षण आंकड़े राजस्थान में चरम मौसमी घटनाओं, जैसे तीव्र उष्ण लहरों (लू) और अनिश्चित, मूसलाधार वर्षा के दौर की बढ़ती आवृत्ति को इंगित करते हैं।
कथन II : जलवायु परिवर्तन ने मानसून के प्रतिरूप को स्थिर कर दिया है, जिसके परिणामस्वरूप सभी जिलों में समान रूप से वार्षिक वर्षा का वितरण होता है।
निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है परंतु कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है परंतु कथन II सही है।

41. दीर्घकालिक जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में, राजस्थान में 'शुष्क क्षेत्र की सीमा के स्थानांतरण' का क्या तात्पर्य है?
(A) वायुमंडलीय कार्बन डाइऑक्साइड के बढ़ने के कारण थार मरुस्थल स्थायी रूप से एक आर्द्र वन क्षेत्र में परिवर्तित हो रहा है।
(B) शुष्क मरुस्थलीय क्षेत्र तेज़ी से सिकुड़ रहा है और पाकिस्तान के साथ अंतरराष्ट्रीय सीमा रेखा की ओर पीछे हट रहा है।
(C) पूरे क्षेत्र में सभी सक्रिय बालुका स्तूपों की गतिविधियों पर पूर्ण राज्यव्यापी रोक और स्थायी स्थिरता।
(D) शुष्कता और मरुस्थलीय स्थितियां पूर्व की ओर अर्ध-शुष्क और उप-आर्द्र जिलों में विस्तार कर रही हैं।

42. निम्नलिखित में से कौन-सा राजस्थान के कृषि क्षेत्र पर जलवायु परिवर्तन का संभावित नकारात्मक प्रभाव नहीं है?
(A) मानसून का अनुमानित समय पर आगमन जिससे पारंपरिक खरीफ फसलों में अधिक उपज होती है।
(B) उच्च मौसमी तापमान के कारण शीतकालीन रबी फसलों के लिए कुल संवर्धन अवधि में कमी।
(C) उच्च संभाव्य वाष्पोत्सर्जन दरों द्वारा संचालित फसलों के लिए कृषि जल आवश्यकता में उल्लेखनीय वृद्धि।
(D) तापमान और आर्द्रता में उतार-चढ़ाव के कारण कृषि कीटों और पादप रोगों की घटनाओं में उल्लेखनीय वृद्धि।

43. तुलनात्मक क्षेत्रीय आंकड़ों के अनुसार, राजस्थान के किस जिले में सामान्यतः उच्चतम औसत वार्षिक वर्षा दर्ज की जाती है?
(A) बीकानेर
(B) झालावाड़
(C) उदयपुर
(D) जयपुर

NODIA

44. राजस्थान के निम्नलिखित जिलों पर विचार कीजिए:
I. झालावाड़
II. बांसवाड़ा
III. जयपुर
IV. जोधपुर

निम्नलिखित में से कौन-सा जिलों की औसत वार्षिक वर्षा के अवरोही क्रम का सही अनुक्रम दर्शाता है?
(A) I, II, III, IV
(B) II, I, III, IV
(C) I, III, II, IV
(D) IV, III, II, I

45. निम्नलिखित में से कौन-सा जिला राजस्थान में वार्षिक रूप से सर्वाधिक वर्षा के दिनों की संख्या (लगभग 40 दिन) दर्ज करता है?
(A) झालावाड़
(B) सिरोही
(C) कोटा
(D) बांसवाड़ा

46. दीर्घकालिक जलवायु आंकड़ों के आधार पर, जैसलमेर जिला लगभग कितनी औसत वार्षिक वर्षा प्राप्त करता है?
(A) 5 - 10 सेमी
(B) 10 - 15 सेमी
(C) 25 - 30 सेमी
(D) 40 - 50 सेमी

47. राजस्थान में सामान्यतः किस महीने में सापेक्षिक आर्द्रता का स्तर सबसे अधिक होता है?
(A) मई
(B) अगस्त
(C) नवंबर
(D) जनवरी

48. पश्चिमी राजस्थान की जलवायु के संदर्भ में 'संभाव्य वाष्पोत्सर्जन (PET)' शब्द क्या दर्शाता है?
(A) सभी प्रमुख खुले जल निकायों और झीलों से प्रतिवर्ष वाष्पीकृत सतही जल की कुल वास्तविक मात्रा।
(B) वायुमंडलीय वाष्पीकरण प्रक्रियाओं को प्रारंभ करने के लिए आवश्यक न्यूनतम आधारभूत तापमान सीमा।
(C) असीमित जल उपलब्धता की स्थिति में वाष्पीकरण और वाष्पोत्सर्जन के माध्यम से जल की अधिकतम संभावित हानि।
(D) भूमिगत जलभृतों में गहरे रिसाव के कारण स्थायी रूप से नष्ट हुई मौसमी वर्षा का कुल अनुपात।

49. राजस्थान के शुष्क क्षेत्र में आर्द्रता और वाष्पीकरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I : पश्चिमी राजस्थान में वास्तविक वाष्पीकरण दर उपलब्ध सतही नमी की कमी के कारण संभाव्य वाष्पोत्सर्जन दर से कम है।
कथन II : ग्रीष्मकाल के दौरान उच्च पवन वेग और उच्च तापमान संभाव्य वाष्पोत्सर्जन को तेज़ी से बढ़ाते हैं।
निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, तथा कथन II, कथन I का सही कारण है।
(B) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, परंतु वे स्वतंत्र तथ्य हैं।
(C) कथन I सही है, परंतु कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, परंतु कथन II सही है।

50. राजस्थान के जलवायु विज्ञान में 'लू' क्या है?
(A) एक स्थानीय तीव्र शीतकालीन चक्रवातीय अवदाब जिसके परिणामस्वरूप उत्तरी मैदानों में गंभीर रात्रिकालीन पाला पड़ता है।
(B) एक अत्यधिक तीव्र स्थानीय धूल भरी आँधी जो परिवेशी तापमान में बिना किसी महत्वपूर्ण परिवर्तन के आती है।
(C) ग्रामीण समुदायों में व्यापक रूप से निर्मित एक पारंपरिक वर्षाजल-संचयन भूमिगत जल ढांचा।
(D) ग्रीष्मकाल में दोपहर के समय चलने वाली गर्म एवं शुष्क पछुआ पवन।

51. भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (IMD) के अनुसार, राजस्थान के मैदानी क्षेत्रों में 'उष्ण लहर' (लू) घोषित करने के लिए मानक आधारभूत तापमान सीमा क्या है?
(A) जब किसी केंद्र पर दर्ज किया गया निरपेक्ष दैनिक अधिकतम सतही तापमान कम से कम 35°C की आधारभूत सीमा तक पहुँच जाता है।
(B) जब सामान्य से उल्लेखनीय विचलन के साथ अधिकतम तापमान 40°C तक पहुँच जाता है।
(C) जब निगरानी जिले में न्यूनतम रात्रिकालीन तापमान लगातार 30°C की सीमा से अधिक हो जाता है।
(D) जब दर्ज किया गया दैनिक अधिकतम तापमान सात दिनों की अवधि में लगातार 50°C की सीमा को पार कर जाता है।

52. राजस्थान में शीत लहर और धरातलीय पाले के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. शीत लहरें मुख्य रूप से पश्चिमी विक्षोभों के गुजरने के पश्चात हिम आच्छादित हिमालयी क्षेत्र से चलने वाली ठंडी पवनों के कारण होती हैं।
II. धरातलीय पाला उत्तरी जिलों में सरसों और चने जैसी फसलों को बार-बार नुकसान पहुँचाता है।
III. बांसवाड़ा जैसे दक्षिणी जिले राज्य में धरातलीय पाले की उच्चतम आवृत्ति का अनुभव करते हैं।
उपरोक्त कथनों का कौन-सा संयोजन सही है?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

53. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन राजस्थान में तीव्र शीत लहरों के प्रभाव की सही पहचान करता है?
(A) ये अंतःकोशिकीय जल को जमा देती हैं, जिससे रबी फसलों की कोशिकाओं का विनाश और पाले से क्षति होती है।
(B) ये सभी मौसमी खरीफ फसलों में तेज़ी से जैविक विकास और त्वरित समग्र वृद्धि दर को प्रेरित करती हैं।
(C) ये शुष्क मरुस्थलीय जिलों में भूमिगत जल स्तर में

Downloaded from www.pdf.tube

उल्लेखनीय और तीव्र वृद्धि में योगदान देती हैं।
(D) ये दक्षिण-पश्चिम मानसून के शीघ्र क्षेत्रीय आगमन के लिए प्राथमिक मौसम संबंधी कारक के रूप में कार्य करती हैं।

54. मानसून-पूर्व ग्रीष्मकालीन महीनों के दौरान राजस्थान के किस जिले में सर्वाधिक धूल भरी आंधियों (आँधी) का अनुभव होता है?
(A) जैसलमेर
(B) बीकानेर
(C) बाड़मेर
(D) श्रीगंगानगर

55. वैचारिक रूप से, राजस्थान में उष्ण लहर (लू) की तुलना में मानसून-पूर्व धूल भरी आँधी अपने तात्कालिक स्थानीय प्रभाव में किस प्रकार भिन्न होती है?
(A) एक मानसून-पूर्व धूल भरी आँधी लगातार व्यापक आकस्मिक बाढ़ लाती है, जबकि उष्ण लहर लंबे समय तक क्षेत्रीय सूखे का कारण बनती है।
(B) धूल भरी आँधी अस्थायी रूप से परिवेशी तापमान को गिरा देती है, जबकि लू अत्यधिक तापन को बनाए रखती है।
(C) एक मानसून-पूर्व धूल भरी आँधी केवल शीतकाल के महीनों में आती है, जबकि उष्ण लहर केवल भीषण ग्रीष्मकाल के दौरान प्रकट होती है।
(D) कोई वैज्ञानिक अंतर नहीं है; दोनों मौसम संबंधी शब्द एक ही वायुमंडलीय परिघटना का वर्णन करते हैं।

56. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I : राजस्थान में धूल भरी आंधियां काफी हद तक तीव्र स्थानीय तापन और वायुमंडलीय अस्थिरता द्वारा उत्पन्न संवहनीय परिघटनाएं हैं।
कथन II : वे सौर विकिरण के अस्थायी अवरोध और साथ में हल्की अधोमुखी पवनों के कारण भीषण गर्मी से आंशिक राहत प्रदान करती हैं।
निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, तथा कथन II, कथन I का सही परिणाम है।
(B) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, परंतु उनके मध्य कोई संबंध नहीं है।
(C) कथन I सही है, परंतु कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, परंतु कथन II सही है।

57. चूरू अक्सर राजस्थान के मैदानी क्षेत्रों में ग्रीष्मकाल में उच्चतम अधिकतम तापमान और शीतकाल में न्यूनतम तापमान दर्ज करता है। इस अत्यधिक भिन्नता का प्राथमिक भौगोलिक कारण क्या है?
(A) अरावली श्रृंखलाओं से प्रत्यक्ष भौगोलिक निकटता जो गर्मी और सर्दी दोनों को भौतिक रूप से अवरुद्ध कर लेती है।
(B) उच्च स्थानीय औद्योगिक उत्सर्जन और प्रदूषण जो एक सांद्रित वायुमंडलीय ग्रीनहाउस गैस परत के रूप में कार्य करता है।
(C) कर्क रेखा पर स्थित इसकी सटीक भौगोलिक स्थिति, जो वर्ष भर प्रत्यक्ष सौर आतपन को अधिकतम करती है।
(D) विरल वनस्पति और चूनेदार रेतीली मृदा जो ऊष्मा को तेज़ी से अवशोषित और उत्सर्जित करती है।

58. माउंट आबू के ग्रीष्मकालीन माध्य तापमान की तुलना फलोदी से करने पर, जलवायु विज्ञान का कौन-सा सिद्धांत इस अंतर की सबसे अच्छी व्याख्या करता है?
(A) ऊँचाई के साथ तापमान की सामान्य ह्रास दर।
(B) समुद्र से दूरी या महाद्वीपीयता का प्रभाव।
(C) तटीय महासागरीय धाराओं का मौसमी प्रभाव।
(D) स्थानों की भिन्न अक्षांशीय स्थिति।

59. निम्नलिखित जिलों में से असंगत की पहचान कीजिए, विशेष रूप से अत्यधिक शीतकालीन ठंड और शीत लहर की स्थितियों से इसकी सामान्य छूट के संबंध में:
(A) चूरू
(B) डूंगरपुर
(C) सीकर
(D) फतेहपुर (सीकर)

60. दिए गए कथन (A) और कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन (A) : जोधपुर और बीकानेर जैसे राजस्थान के आंतरिक जिले अत्यधिक महाद्वीपीय प्रकार की जलवायु का अनुभव करते हैं।
कारण (R) : वे किसी भी प्रमुख जल निकाय या समुद्र के समकारी प्रभाव से बहुत दूर स्थित हैं।
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन (A) सही है परंतु कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है परंतु कारण (R) सही है।

61. राजस्थान में शीतकालीन वर्षा, जिसे स्थानीय रूप से 'मावठ' कहा जाता है, पश्चिमी विक्षोभों के कारण होती है। इन बहिरुष्णकटिबंधीय चक्रवातों की उत्पत्ति कहाँ होती है?
(A) भूमध्य सागर
(B) अरब सागर
(C) बंगाल की खाड़ी
(D) दक्षिण चीन सागर

NODIA

62. राजस्थान में 'मावठ' के कृषि लाभ के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा सबसे उपयुक्त कथन है?
(A) यह बाजरा जैसी खरीफ फसलों की प्रारंभिक ग्रीष्मकालीन बुआई के लिए आवश्यक शुरुआती नमी प्रदान करती है।
(B) यह अत्यधिक शुष्क महीनों के दौरान तरबूज जैसी गर्म ग्रीष्मकालीन जायद फसलों के लिए एक आवश्यक मौसमी जल स्रोत के रूप में कार्य करती है।
(C) यह गेहूं और चने जैसी शीतकालीन रबी फसलों को सिंचित करती है, जिसे 'गोल्डन ड्रॉप्स' (स्वर्ण बूंदें) कहा

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) कर्क रेखा बांसवाड़ा और डूंगरपुर के दक्षिणी जिलों से होकर गुजरती है, जिससे राज्य का अधिकांश भाग उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्र में आता है।
कर्क रेखा राजस्थान के दक्षिणी छोर से बांसवाड़ा और डूंगरपुर जिलों से होकर गुजरती है। बांसवाड़ा शहर कर्क रेखा के सर्वाधिक निकट स्थित है। इस भौगोलिक स्थिति के कारण केवल राज्य का अत्यंत दक्षिणी भाग ही उष्णकटिबंधीय क्षेत्र में आता है, जबकि राजस्थान का अधिकांश विशाल भूभाग अक्षांशीय दृष्टि से उपोष्णकटिबंधीय कटिबंध में स्थित है। यह स्थिति राज्य की तापीय प्रवृत्तियों को सीधे प्रभावित करती है।

2. (A) केवल I और II
राजस्थान की भौगोलिक जलवायु पर समुद्र से अत्यधिक दूरी और अरावली पर्वतमाला के विशिष्ट संरेखण का सीधा प्रभाव पड़ता है। समुद्र से दूर होने के कारण राज्य महाद्वीपीय जलवायु का अनुभव करता है, जहाँ तापांतर अधिक रहता है। अरावली की दिशा दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व की ओर मानसूनी पवनों के समानांतर होने से वर्षा कम होती है। अरब सागर की ठंडी जलधारा का इससे सीधा संबंध नहीं है।

3. (A) अरावली पर्वतमाला अरब सागर की मानसूनी पवनों की दिशा के समानांतर स्थित है, जो पर्वतीय अवरोध के रूप में कार्य करने में विफल रहती है।
अरब सागर की मानसूनी शाखा दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व दिशा में गति करती है। राजस्थान में स्थित अरावली पर्वत श्रृंखला की भौगोलिक दिशा भी दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व की ओर ही फैली हुई है। इस समानांतर स्थिति के कारण आर्द्र मानसूनी पवनों के मार्ग में कोई प्रभावी पर्वतीय अवरोध उत्पन्न नहीं हो पाता है। परिणामस्वरूप, ये पवनें बिना पर्याप्त वर्षा किए राज्य के ऊपर से सीधे गुज़र जाती हैं।

4. (C) P-1, Q-3, R-2, S-4
कोपेन के जलवायु वर्गीकरण में विभिन्न प्रतीकों का विशिष्ट क्षेत्रीय प्रतिनिधित्व है। Aw प्रतीक अति-आर्द्र दक्षिणी क्षेत्र जैसे बांसवाड़ा को दर्शाता है। BShw कोड अर्ध-शुष्क स्टेपी क्षेत्र का प्रतीक है जिसमें नागौर सम्मिलित है। BWhw कोड अत्यधिक शुष्क मरुस्थलीय जिले जैसलमेर को निरुपित करता है। Cwg प्रतीक पूर्वी एवं मध्यवर्ती मैदानी क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है, जिसके अंतर्गत टोंक जिला सम्मिलित होता है।

5. (A) शुष्क पश्चिमी मरुस्थल
थॉर्नथवेट के जलवायु वर्गीकरण प्रणाली में 'EA'd' प्रदेश उष्णकटिबंधीय अत्यधिक शुष्क अथवा मरुस्थलीय जलवायु का प्रतिनिधित्व करता है। यह क्षेत्र न्यूनतम वर्षा, अत्यधिक उच्च संभाव्य वाष्पोत्सर्जन दर तथा सघन वनस्पति के अभाव से अभिलक्षित होता है। राजस्थान के संदर्भ में यह विशिष्ट जलवायु प्रदेश मुख्य रूप से थार मरुस्थल के अत्यधिक शुष्क पश्चिमी सीमावर्ती जिलों में विस्तृत है, जहाँ जल का तीव्र अभाव रहता है।

6. (D) अर्ध-शुष्क / स्टेपी क्षेत्र
ट्रिवाथा के जलवायु वर्गीकरण संशोधन में राजस्थान के अर्ध-शुष्क अथवा स्टेपी जलवायु क्षेत्र को 'BSh' कोड द्वारा निरुपित किया गया है। यह क्षेत्र पश्चिमी अत्यंत शुष्क मरुस्थल और पूर्वी आर्द्र मैदानी प्रदेश के मध्य एक संक्रमणकालीन पट्टी के रूप में फैला हुआ है। यहाँ कम से मध्यम वर्षा होती है तथा प्राकृतिक वनस्पति के रूप में छोटी घास और कंटीली झाड़ियाँ मुख्य रूप से पाई जाती हैं।

7. (C) कथन (A) सही है परंतु कारण (R) गलत है।
कोपेन ने राजस्थान की जलवायु को Aw, BShw, BWhw और Cwg नामक चार प्रमुख प्रदेशों में विभाजित किया है। हालाँकि, उनका यह वर्गीकरण केवल वर्षा के स्तर पर आधारित नहीं था, बल्कि उन्होंने तापमान और वनस्पति के स्वरुप को भी प्रमुख आधार बनाया था। वनस्पति को जलवायु का सबसे प्रामाणिक सूचक माना गया था। अतः वर्गीकरण का आधार केवल वर्षा नहीं होने के कारण संबंधित कारण गलत सिद्ध होता है।

8. (B) 25 सेमी समवर्षा रेखा
25 सेमी की समवर्षा रेखा पश्चिमी राजस्थान को दो स्पष्ट जलवायुवीय विभागों में विभाजित करती है। यह रेखा अत्यधिक शुष्क मरुस्थलीय क्षेत्र (जैसलमेर, बाड़मेर, बीकानेर) की पूर्वी सीमा का निर्धारण करती है और इसे अर्ध-शुष्क स्टेपी क्षेत्र से अलग करती है। इस रेखा के पश्चिम में वार्षिक वर्षा 25 सेमी से कम होती है, जबकि इसके पूर्व में वर्षा की मात्रा में धीरे-धीरे क्रमिक वृद्धि दर्ज की जाती है।

9. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, तथा कथन II, कथन I की सही व्याख्या करता है।
पश्चिमी राजस्थान के शुष्क मरुस्थलीय क्षेत्र में अत्यधिक उच्च दैनिक तापांतर पाया जाता है। इसका प्रमुख कारण यहाँ फैली रेतीली मृदा की भौतिक विशेषता है। रेत की विशिष्ट ऊष्मा क्षमता कम होने के कारण यह सूर्य के विकिरण से दिन में अति शीघ्र गर्म हो जाती है। रात्रि के समय बादलों के अभाव में पार्थिव विकिरण द्वारा ऊष्मा का तीव्र गति से ह्रास होता है, जिससे रातें ठंडी हो जाती हैं।

10. (B) I, II और IV
BWhw जलवायु प्रदेश उष्ण एवं शुष्क मरुस्थल का प्रतिनिधित्व करता है, जहाँ औसत वार्षिक वर्षा 20 सेमी से कम होती है और संभाव्य वाष्पोत्सर्जन की दर अत्यधिक उच्च

Click Here to Buy book on Amazon

जम जाता है और फैल जाता है, जिससे कोशिका भित्ति फट जाती है और पादप ऊतक नष्ट हो जाते हैं।
निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, तथा कथन II, कथन I की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, परंतु कथन II, कथन I की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन I सही है, परंतु कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है, परंतु कथन II सही है।

72. राजस्थान की शुष्क जलवायु के अनुकूल निम्नलिखित फसल अनुकूलनों पर विचार कीजिए:
I. उप-सतही नमी प्राप्त करने के लिए गहरी जड़ प्रणालियाँ।
II. संक्षिप्त मानसून अवधि के दौरान वृद्धि पूरी करने के लिए छोटा जीवन चक्र।
III. वाष्पोत्सर्जन को अधिकतम करने के लिए बड़ी, चौड़ी पत्तियाँ।
कौन-सा संयोजन मरुस्थलीय फसलों (जैसे बाजरा और ग्वार) के सही अनुकूलन को दर्शाता है?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

73. राजस्थान के लिए भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (IMD) का मुख्य मौसम विज्ञान केंद्र कहाँ स्थित है?
(A) जोधपुर (B) उदयपुर
(C) बीकानेर (D) जयपुर

74. गर्जन के साथ तूफान और धूल भरी आंधियों जैसी चरम मौसमी घटनाओं के पूर्वानुमान में सुधार के लिए राजस्थान में डॉप्लर वेदर रडार (DWR) स्थापित किए गए हैं। राज्य में पहला DWR कहाँ प्रारंभ किया गया था?
(A) जयपुर (B) जैसलमेर
(C) माउंट आबू (D) कोटा

75. जब IMD राजस्थान के किसी जिले के लिए आधारभूत औसत वर्षा की गणना करता है, तो वे दीर्घकालिक औसत (LPA) का उपयोग करते हैं। इस सामान्य वर्षा को निर्धारित करने के लिए उपयोग की जाने वाली मानक समय सीमा क्या है?
(A) पिछले 10 वर्षों में दर्ज किए गए वार्षिक वर्षण का गणितीय माध्य।
(B) पिछले 20 वर्षों में दर्ज किए गए वार्षिक वर्षण का गणितीय माध्य।
(C) एक मानक 30 से 50 वर्ष का ऐतिहासिक जलवायु औसत।
(D) केवल पिछले वर्ष के दौरान दर्ज किया गया कुल वार्षिक वर्षा का आंकड़ा।

76. तुलनात्मक जलवायु आंकड़ों के अनुसार, राजस्थान का कौन-सा जिला अपनी वार्षिक वर्षा में उच्चतम परिवर्तनशीलता गुणांक (उच्चतम अप्रत्याशितता) प्रदर्शित करता है?
(A) बांसवाड़ा
(B) जैसलमेर
(C) झालावाड़
(D) अलवर

77. निम्नलिखित में से कौन-सा अनुक्रम जिलों को उनके शुष्कता सूचकांक के बढ़ते क्रम (सबसे कम शुष्क से सबसे अधिक शुष्क) में दर्शाता है?
(A) झालावाड़, जयपुर, जोधपुर, जैसलमेर
(B) जैसलमेर, जोधपुर, जयपुर, झालावाड़
(C) जयपुर, झालावाड़, जैसलमेर, जोधपुर
(D) जोधपुर, जैसलमेर, झालावाड़, जयपुर

78. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन बांसवाड़ा और हनुमानगढ़ जिलों के जलवायु आंकड़ों की सही तुलना करता है?
(A) हनुमानगढ़ में बांसवाड़ा की तुलना में काफी अधिक वार्षिक वर्षा और उच्च औसत आर्द्रता होती है।
(B) ये दोनों प्रशासनिक जिले Aw (उष्णकटिबंधीय सवाना) जलवायु वर्गीकरण क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं।
(C) बांसवाड़ा में हनुमानगढ़ की तुलना में अधिक वर्षा और कम तीव्र शीतकालीन स्थितियां पाई जाती हैं।
(D) बांसवाड़ा ग्रीष्मकालीन धूल भरी आंधियों के प्रति अत्यधिक संवेदनशील है, जबकि हनुमानगढ़ जिले में यह कभी नहीं आती हैं।

79. दिए गए कथन (A) और कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन (A) : यद्यपि जैसलमेर में राजस्थान में सबसे कम औसत वार्षिक वर्षा दर्ज की जाती है, फिर भी यहाँ लगातार उच्चतम निरपेक्ष अधिकतम ग्रीष्मकालीन तापमान दर्ज नहीं किया जाता है।
कारण (R) : चूरू जैसे जिले वनस्पति की कमी और अपनी रेतीली, चूनेदार मृदा के विशिष्ट तापीय गुणों के कारण अक्सर उच्च अधिकतम तापमान दर्ज करते हैं।
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन (A) सही है परंतु कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है परंतु कारण (R) सही है।

NODIA

80. राजस्थान में, राज्य स्तर पर सूखा प्रबंधन और राहत कार्यों के लिए कौन-सा विभाग प्राथमिक नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करता है?
(A) पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग
(B) कृषि, उद्यानिकी एवं किसान कल्याण विभाग
(C) आपदा प्रबंधन, सहायता एवं नागरिक सुरक्षा विभाग
(D) जल संसाधन एवं सिंचाई अवसंरचना विभाग

81. राजस्थान में गंभीर जलवायु-प्रेरित सूखे के दौरान राज्य आपदा मोचन निधि (SDRF) के उपयोग के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

जाता है।
(D) यह संपूर्ण दक्षिण में जलभराव वाली मृदा से संचित अतिरिक्त लवणों को निक्षालित करने में मुख्य भूमिका निभाती है।

63. राजस्थान में मावठ (शीतकालीन वर्षा) के संबंध में निम्नलिखित विशेषताओं पर विचार कीजिए:
I. यह मुख्य रुप से दिसंबर और फरवरी के मध्य होती है।
II. यह सरसों और गेहूं की फसलों के लिए अत्यधिक लाभदायक है।
III. इसे पछुआ जेट स्ट्रीम द्वारा भारत में लाया जाता है।
IV. यह राजस्थान की कुल वार्षिक वर्षा का 50% से अधिक हिस्सा बनाती है।
उपरोक्त कथनों का कौन-सा संयोजन सही है?
(A) I, II और IV
(B) I, II और III
(C) II, III और IV
(D) I, III और IV

64. राजस्थान में पश्चिमी विक्षोभ (मावठ) के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(A) ये सर्दियों के दौरान दैनिक दिन के तापमान में गिरावट के साथ नियमित रूप से बादलों से घिरा मौसम लाते हैं।
(B) मावठ से प्राप्त कुल वर्षा की मात्रा उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व राजस्थान की ओर सामान्यतः घटने की प्रवृत्ति दर्शाती है।
(C) मावठ के कारण भारी मूसलाधार वर्षा और व्यापक गंभीर बाढ़ आती है।
(D) ये पश्चिम एशिया में पूर्व की ओर यात्रा करने वाले उथले मध्य-अक्षांश चक्रवातीय निम्न-दाब अवदाब के रूप में उत्पन्न होते हैं।

65. कृषि नियोजन और संसाधन प्रबंधन के उद्देश्य से राजस्थान को कितने कृषि-जलवायु क्षेत्रों में विभाजित किया गया है?
(A) 5
(B) 10
(C) 15
(D) 20

66. सूची I के कृषि-जलवायु क्षेत्र कोडों का सूची II में उनके वर्णनात्मक नामों के साथ मिलान कीजिए:
सूची I : (कृषि-जलवायु क्षेत्र कोड)
P. क्षेत्र IA
Q. क्षेत्र IIA
R. क्षेत्र IIIB
S. क्षेत्र V
सूची II : (वर्णनात्मक नाम)
1. अंतःस्थलीय प्रवाह का संक्रमणकालीन मैदान
2. आर्द्र दक्षिण-पूर्वी मैदान
3. शुष्क पश्चिमी मैदान
4. बाढ़ संभाव्य पूर्वी मैदान
(A) P-1, Q-3, R-2, S-4
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-4, Q-2, R-3, S-1
(D) P-3, Q-1, R-4, S-2

67. निम्नलिखित में से कौन-सा कृषि-जलवायु क्षेत्र राजस्थान में सबसे बड़े भौगोलिक क्षेत्र को आच्छादित करता है?
(A) क्षेत्र IC (अति-शुष्क आंशिक सिंचित क्षेत्र)
(B) क्षेत्र IA (शुष्क पश्चिमी मैदान)
(C) क्षेत्र IVA (उप-आर्द्र दक्षिणी मैदान और अरावली पहाड़ियाँ)
(D) क्षेत्र V (आर्द्र दक्षिण-पूर्वी मैदान)

68. औसत वर्षा के आधार पर सबसे शुष्क (पश्चिम) से सबसे आर्द्र (दक्षिण-पूर्व) की ओर बढ़ते हुए कृषि-जलवायु क्षेत्रों का सही अनुक्रम निम्नलिखित में से कौन-सा है?
(A) शुष्क पश्चिमी मैदान (IA) → अर्ध-शुष्क पूर्वी मैदान (IIIA) → आर्द्र दक्षिण-पूर्वी मैदान (V)
(B) आर्द्र दक्षिण-पूर्वी मैदान (V) → शुष्क पश्चिमी मैदान (IA) → अर्ध-शुष्क पूर्वी मैदान (IIIA)
(C) अर्ध-शुष्क पूर्वी मैदान (IIIA) → शुष्क पश्चिमी मैदान (IA) → आर्द्र दक्षिण-पूर्वी मैदान (V)
(D) शुष्क पश्चिमी मैदान (IA) → आर्द्र दक्षिण-पूर्वी मैदान (V) → अर्ध-शुष्क पूर्वी मैदान (IIIA)

69. अर्ध-शुष्क राजस्थान में फसल प्रतिरुप पर जलवायु के प्रभाव के संदर्भ में, मध्य जुलाई से आगे मानसून में विलंब होने पर क्या परिवर्तन आता है?
(A) कृषक बाजरा से कम अवधि वाली दालों जैसे मूंग या मोठ की ओर स्थानांतरित हो जाते हैं।
(B) कृषक सभी मौसमी खरीफ फसल खेती गतिविधियों को पूरी तरह से छोड़ देते हैं और खेतों को केवल रबी के लिए आरक्षित करते हैं।
(C) कृषक विलंब से होने वाली वर्षा को अवशोषित करने के लिए धान जैसी जल-गहन खाद्यान्न फसलों को बोने लगते हैं।
(D) कृषक मानसून पर ध्यान न देकर तुरंत शीतकालीन गेहूं की बुआई के लिए प्रारंभिक भूमि की तैयारी शुरु कर देते हैं।

70. राजस्थान के जलवायु प्रदेश को उसकी सर्वाधिक उपयुक्त पारंपरिक फसलों से मिलाने वाले सही युग्म की पहचान कीजिए:
(A) शुष्क प्रदेश — गन्ना और चावल
(B) आर्द्र प्रदेश — बाजरा और मोठ
(C) उप-आर्द्र प्रदेश — चाय और कॉफी
(D) अर्ध-शुष्क प्रदेश — ज्वार और ग्वार

71. राजस्थान में कृषि पर अत्यधिक ठंड के प्रभाव के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I : जनवरी में पाले का प्रकोप उत्तरी राजस्थान में सरसों और चने की फसलों को भारी नुकसान पहुँचाता है।
कथन II : पाले के कारण पादप कोशिकाओं के अंदर का द्रव

Downloaded from www.pdf.tube

रूप से बदल दिया है।
(C) इसने स्थानीय स्तर पर आर्द्रता और वनस्पति में वृद्धि की, परंतु इसके कारण जलभराव और मृदा लवणता की समस्या उत्पन्न हुई।
(D) इसने शीतकाल में अत्यधिक क्षेत्रीय शीतलन प्रेरित किया है, जिसके परिणामस्वरूप बीकानेर जिले में नियमित रूप से मापने योग्य हिमपात की घटनाएं होती हैं।

89. पिछली शताब्दी में दीर्घकालिक मौसम संबंधी प्रेक्षणों के आधार पर राजस्थान की जलवायु में देखे गए रुझानों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. माध्य न्यूनतम तापमान में एक स्पष्ट वृद्धि।
II. उच्च-तीव्रता, कम-अवधि की वर्षा की घटनाओं के साथ वर्षा के प्रतिरूप में बदलाव।
III. जलवायु परिवर्तन के कारण सूखे की घटनाओं पर पूर्ण विराम।
उपरोक्त कथनों का कौन-सा संयोजन सही है?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

90. राजस्थान के लिए दीर्घकालिक जलवायु प्रवृत्तियों, मरुस्थलीकरण को समझने और जलवायु-अनुकूलनशील कृषि विकसित करने के लिए महत्वपूर्ण कौन-सा प्रमुख अनुसंधान संस्थान जोधपुर में स्थित है?
(A) केंद्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान (CAZRI)
(B) भारतीय उष्णकटिबंधीय मौसम विज्ञान संस्थान (IITM)
(C) राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान (NIH)
(D) भारतीय वन सर्वेक्षण (FSI)

NODIA

I. यह 33% से अधिक फसल नुकसान वाले किसानों को इनपुट सब्सिडी प्रदान करता है।
II. यह मवेशी शिविरों की स्थापना और संचालन का वित्तपोषण करता है।
III. इसका उपयोग दीर्घकालिक औद्योगिक परियोजनाओं के तहत रोजगार सृजन के लिए किया जाता है।
IV. यह गंभीर रूप से प्रभावित ग्रामीण क्षेत्रों में टैंकरों के माध्यम से पेयजल आपूर्ति की सुविधा प्रदान करता है।

उपरोक्त कथनों का कौन-सा संयोजन सही है?
(A) I, II और IV
(B) I, II और III
(C) II, III और IV
(D) I, III और IV

82. ग्रामीण राजस्थान में बार-बार पड़ने वाले सूखे के प्रभाव को कम करने के लिए निम्नलिखित में से किसे सबसे प्रभावी दीर्घकालिक शमन रणनीति माना जाता है?
(A) अनिश्चित काल के लिए सभी जिलों में ग्रामीण परिवारों को निरंतर निःशुल्क आपातकालीन खाद्यान्न आपूर्ति वितरित करना।
(B) थार मरुस्थल में रहने वाली संपूर्ण ग्रामीण आबादी को स्थायी रूप से पूर्वी कृषि मैदानों में स्थानांतरित करना।
(C) पूरे राज्य में कृषि फसल खेती के सभी मौजूदा रूपों पर एक सख्त पूर्ण वैधानिक प्रतिबंध लगाना।
(D) विकेंद्रीकृत वर्षा जल संचयन (खड़ीन, जोहड़) और जलसम्भर प्रबंधन।

83. राजस्थान में ऐतिहासिक अकाल प्रबंधन के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(A) राज्य के सूखा मैनुअल पूरी तरह से आपदा के बाद की प्रतिक्रिया पर निर्भर करते हैं और पूर्व चेतावनी प्रणालियों की उपेक्षा करते हैं।
(B) मूल रूप से ब्रिटिश काल के दौरान तैयार किए गए अकाल कोड ने सूखा राहत के लिए प्राथमिक प्रारंभिक प्रशासनिक ढांचा बनाया।
(C) ऐतिहासिक अकाल राहत उपायों का मुख्य ध्यान किलों और बांधों के निर्माण जैसे सार्वजनिक निर्माण कार्यों में मजदूरी रोजगार देने पर केंद्रित था।
(D) केंद्र सरकार द्वारा 2016 में जारी आधिकारिक सूखा प्रबंधन मैनुअल वर्तमान सूखा घोषणा प्रक्रियाओं को नियंत्रित करता है।

84. वैचारिक रूप से, राजस्थान के जिलों में वार्षिक वर्षा की मात्रा और इसके परिवर्तनशीलता गुणांक (CV) के मध्य क्या संबंध है?
(A) उच्च औसत वार्षिक वर्षा दर्ज करने वाले जिले लगातार उच्च सांख्यिकीय परिवर्तनशीलता गुणांक प्रदर्शित करते हैं।
(B) वार्षिक वर्षा की कुल मात्रा पर ध्यान दिए बिना परिवर्तनशीलता गुणांक सभी जिलों में 10% पर पूरी तरह से तय रहता है।
(C) कम औसत वर्षा उच्च CV और अनिश्चितता के अनुरूप होती है।
(D) कुल वार्षिक वर्षा की मात्रा और इसकी भिन्नता के मध्य कोई सांख्यिकीय या भौगोलिक संबंध नहीं है।

85. राजस्थान में मानसूनी वर्षा के प्रतिरूप पर एक तीव्र अल नीनो (ENSO धनात्मक चरण) का सामान्य प्रभाव क्या होता है?
(A) यह मानसूनी वर्षा को कम करता है, जिससे सूखे की संभावना बढ़ जाती है।
(B) यह संपूर्ण थार क्षेत्र में पर्याप्त अत्यधिक वर्षा और व्यापक मरुस्थलीय बाढ़ की विश्वसनीय गारंटी देता है।
(C) यह वायुमंडलीय परिसंचरण को तेज़ी से बढ़ाता है, जिससे मौसमी मानसून ठीक एक महीने पहले आने के लिए बाध्य होता है।
(D) यह केवल शीतकालीन वर्षा (मावठ) को प्रभावित करता है जबकि ग्रीष्मकालीन मानसून पर कोई प्रभाव नहीं डालता।

86. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I : धनात्मक हिंद महासागर द्विध्रुव (Positive IOD) का सामान्यतः राजस्थान में दक्षिण-पश्चिम मानसून के प्रदर्शन पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है।
कथन II : एक धनात्मक IOD कभी-कभी अल नीनो के नकारात्मक प्रभावों का मुकाबला कर सकता है, जिससे राज्य में सामान्य या सामान्य के निकट वर्षा हो सकती है।
निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है परंतु कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है परंतु कथन II सही है।

87. शुष्क राजस्थान में दीर्घकालिक जल और जलवायु नियोजन के संदर्भ में, 'आभासी जल' (Virtual Water) के निर्यात को कम करने की रणनीति का क्या अर्थ है?
(A) विशेष रासयनिक परत का उपयोग करके प्रमुख जलाशयों से सतही जल के वाष्पीकरण पर राज्यव्यापी पूर्ण कानूनी प्रतिबंध लागू करना।
(B) शुष्क क्षेत्रों से धान या गन्ने जैसी जल-गहन फसलों के निर्यात को हतोत्साहित करना।
(C) उच्च-संकल्प डिजिटल जल-भूवैज्ञानिक मानचित्रण और सभी भूमिगत जलभृत माध्यमों की वास्तविक समय में निगरानी को बढ़ावा देना।
(D) अत्यधिक वर्षा वाले बाढ़ के मौसम के दौरान पड़ोसी राज्यों में समर्पित रेलवे टैंकरों के माध्यम से अधिशेष जल को भौतिक रूप से निर्यात करना।

88. पश्चिमी राजस्थान पर इंदिरा गांधी नहर परियोजना (IGNP) के सूक्ष्म-जलवायु प्रभाव के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?
(A) इसने सभी पश्चिमी मरुस्थलीय जिलों में मानसून-पूर्व तीव्र धूल भरी आंधियों के मौसमी प्रकोप को पूरी तरह से समाप्त कर दिया है।
(B) इसने प्राचीन अरावली पर्वतमाला के भौतिक संरेखण और व्यापक-जलवायु विभाजक को मौलिक और स्थायी

रहती है। इस कठोर शुष्क वातावरण में सघन चौड़ी पत्ती वाले सदाबहार वृक्षों का उगना प्राकृतिक रूप से असंभव है। यहाँ केवल मरुद्भिद प्रकार की कंटीली झाड़ियाँ और छोटी घास ही पाई जाती हैं, इसलिए अन्य विशेषताएँ पूरी तरह सत्य हैं।

11. (B) झालावाड़
झालावाड़ जिला राजस्थान के दक्षिण-पूर्वी हाड़ौती पठारी क्षेत्र में स्थित है और यह राज्य की अति-आर्द्र जलवायु श्रेणी के अंतर्गत आता है। इसके विपरीत, जैसलमेर, बीकानेर और श्रीगंगानगर जिले राज्य के पश्चिमी एवं उत्तर-पश्चिमी शुष्क तथा अति-शुष्क मरुस्थलीय जलवायु प्रदेश के अंग हैं। झालावाड़ में वार्षिक वर्षा का औसत 100 सेमी से अधिक रहता है, जो इसे वास्तविक मरुस्थलीय जलवायु से पूरी तरह भिन्न बनाता है।

12. (B) अर्ध-शुष्क प्रदेश
लसियुरस सिंडिकस अर्थात् सेवण घास और कंटीली झाड़ियों से युक्त स्टेपी प्रकार की वनस्पति मुख्य रूप से अर्ध-शुष्क जलवायु प्रदेश की पहचान है। यह जलवायु क्षेत्र अति-शुष्क मरुस्थल और उप-आर्द्र पूर्वी मैदानों के मध्य स्थित है। इस क्षेत्र में वर्षा की मात्रा मध्यम रहती है, जो कठोर मरुद्भिद वनस्पतियों और छोटी घासों की वृद्धि के लिए अनुकूल वातावरण निर्मित करती है। यह पशुपालन हेतु भी अत्यधिक उपयोगी क्षेत्र है।

13. (A) यह एक संक्रमणकालीन क्षेत्र के रूप में लूनी बेसिन और शेखावाटी क्षेत्र को आच्छादित करता है।
राजस्थान का अर्ध-शुष्क (BShw) जलवायु प्रदेश एक प्रमुख संक्रमणकालीन भौगोलिक क्षेत्र है। यह लूनी नदी के प्रवाह बेसिन, नागौरी उच्चभूमि तथा शेखावाटी के अंतःस्थलीय अपवाह क्षेत्र को आच्छादित करता है। इस क्षेत्र में वार्षिक वर्षा का औसत सामान्यतः 25 से 50 सेमी के मध्य रहता है। यहाँ सघन वर्षावन या भारी वर्षा नहीं होती, बल्कि स्टेपी प्रकार की कंटीली वनस्पतियाँ और घास के मैदान बहुतायत में पाए जाते हैं।

14. (C) जैसलमेर
सीकर, झुंझुनू और नागौर जिले राजस्थान के अर्ध-शुष्क जलवायु प्रदेश (BShw) अथवा बांगर क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं, जहाँ औसत वर्षा 25 से 50 सेमी होती है। इसके विपरीत, जैसलमेर जिला पूरी तरह से वास्तविक अति-शुष्क मरुस्थलीय जलवायु प्रदेश (BWhw) के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है, जहाँ वार्षिक वर्षा 25 सेमी से काफी कम होती है। अतः भौगोलिक एवं जलवायुवीय आधार पर जैसलमेर अन्य से असंगत है।

15. (A) केवल I और II
अर्ध-शुष्क जलवायु प्रदेश की सीमाएँ 25 सेमी और 50 सेमी समवर्षा रेखाओं द्वारा निर्धारित होती हैं। यह क्षेत्र वर्षा पर आधारित बारानी कृषि पर निर्भर है और मानसूनी अनिश्चितता के कारण कृषि सूखे से ग्रस्त रहता है। यह क्षेत्र पवन अपरदन और स्थानांतरणशील बालुका स्तूपों से मुक्त नहीं है, बल्कि इनके प्रभाव में रहता है। अतः पहली दोनों विशेषताएँ पूर्णतः सत्य हैं जबकि तीसरी धारणा गलत है।

16. (C) 60 सेमी से 80 सेमी
राजस्थान का आर्द्र जलवायु प्रदेश मुख्यतः पूर्वी एवं दक्षिण-पूर्वी मैदानी भागों में विस्तृत है। इस क्षेत्र में औसत वार्षिक वर्षा का मानक परास 60 सेमी से 80 सेमी के मध्य दर्ज किया जाता है। यहाँ का वातावरण अपेक्षाकृत अधिक नमीयुक्त रहता है और ग्रीष्मकाल में तापमान पश्चिमी मरुस्थलीय क्षेत्रों की तुलना में नियंत्रित रहता है। कृषि की दृष्टि से यह क्षेत्र अत्यंत उपजाऊ और सघन बसा हुआ है।

17. (B) P-4, Q-3, R-1, S-2
राजस्थान के विभिन्न जिले अपनी विशिष्ट जलवायु श्रेणियों से जुड़े हैं। बीकानेर जिला अत्यधिक शुष्क मरुस्थलीय श्रेणी में आता है। पाली जिला अरावली के पश्चिम में अर्ध-शुष्क संक्रमणकालीन क्षेत्र का हिस्सा है। जयपुर जिला उप-आर्द्र पूर्वी मैदानी जलवायु क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है। माउंट आबू अपनी अत्यधिक ऊँचाई और सर्वाधिक वर्षा के कारण राज्य के अति-आर्द्र जलवायु क्षेत्र का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है।

18. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
सिरोही जिले में स्थित माउंट आबू राजस्थान का एकमात्र ऐसा पर्वतीय स्थल है जो अति-आर्द्र जलवायु प्रदर्शित करता है। इसका मुख्य कारण इसकी समुद्र तल से अत्यधिक ऊँचाई है। जब आर्द्र मानसूनी पवनें अरावली की इन ऊँची पहाड़ियों से टकराती हैं, तो उनका तीव्र पर्वतीय उत्थान होता है। इसके फलस्वरूप वायु ठंडी होकर सघन संगठन बनाती है और भारी मात्रा में पर्वतीय वर्षा का कारण बनती है।

19. (A) बंगाल की खाड़ी की मानसूनी शाखा का प्रभाव एवं क्षेत्रीय पर्वतीय स्थलाकृति।
राजस्थान का दक्षिण-पूर्वी हाड़ौती पठार राज्य में सर्वाधिक वर्षा प्राप्त करने वाले क्षेत्रों में से एक है। इसका प्रमुख कारण यह है कि यह क्षेत्र बंगाल की खाड़ी से आने वाली मानसूनी पवनों के प्रत्यक्ष प्रवेश मार्ग पर स्थित है। इसके अतिरिक्त, मुकुंदरा पहाड़ियों और पठारी स्थलाकृति के कारण आर्द्र पवनों को पर्याप्त उत्थान मिलता है, जिससे सघन बादल बनते हैं और इस क्षेत्र में वर्षा की मात्रा अधिक रहती है।

20. (A) I, II, III
राजस्थान में दक्षिण-पश्चिम मानसून का प्रवेश दक्षिण एवं दक्षिण-पूर्वी दिशा से होता है। सर्वप्रथम मानसून जून के उत्तरार्ध में बांसवाड़ा जिले में प्रवेश करता है। इसके पश्चात् यह मध्य और पूर्वी भागों जैसे जयपुर की ओर अग्रसर होता है। अंत में, जुलाई के प्रथम या द्वितीय सप्ताह तक मानसून राज्य के सुदूर उत्तर-पश्चिमी जिले श्रीगंगानगर तक पहुँच पाता है। अतः आगमन का सही कालानुक्रमिक क्रम यही है।

21. (A) बंगाल की खाड़ी की शाखा
यद्यपि अरब सागर की मानसूनी शाखा राजस्थान में पहले पहुँचती है, परंतु अरावली के समानांतर होने के कारण यह बिना अधिक वर्षा किए निकल जाती है। इसके विपरीत, बंगाल की खाड़ी की शाखा उत्तर भारत के मैदानों से होती हुई राजस्थान में

Downloaded from www.pdf.tube

पूर्व और दक्षिण-पूर्व दिशा से प्रवेश करती है। यह शाखा राज्य में होने वाली कुल मानसूनी वर्षा का अधिकांश भाग (लगभग 90 प्रतिशत) प्रदान करने के लिए उत्तरदायी है।

22. (A) I, II और IV
राजस्थान में दक्षिण-पश्चिम मानसून सामान्यतः मध्य जून से जुलाई के प्रारंभ तक पहुँचता है तथा वर्षा की मात्रा दक्षिण-पूर्व से उत्तर-पश्चिम की ओर क्रमशः घटती जाती है। मानसूनी वर्षा की भारी अनिश्चितता राज्य में बार-बार सूखे का कारण बनती है। लौटता हुआ मानसून नवंबर में पश्चिमी मरुस्थल में वर्षा नहीं लाता, बल्कि उस समय मौसम शुष्क और साफ रहता है। अतः केवल कथन I, II और IV सही हैं।

23. (B) राज्य में पहुँचने से पूर्व उत्तरी मैदानों से गुजरते समय पवनों की आर्द्रता कम हो जाती है।
बंगाल की खाड़ी से उठने वाली मानसूनी पवनें विशाल गंगा-ब्रह्मपुत्र के मैदानी भागों से होकर राजस्थान की ओर लंबी दूरी तय करती हैं। इस लंबी यात्रा के दौरान वे मार्ग में निरंतर वर्षा करती हुई आगे बढ़ती हैं। फलस्वरुप, जब तक ये पवनें पश्चिमी राजस्थान के आंतरिक भागों तक पहुँचती हैं, तब तक इनकी आद्रता और जलवाष्प धारण क्षमता में भारी कमी आ चुकी होती है, जिससे नगण्य वर्षा होती है।

24. (C) जून
मानसून के आगमन से ठीक पूर्व जून का महीना राजस्थान में अत्यधिक उष्ण होता है। इस अवधि में सूर्य की किरणें कर्क रेखा पर लगभग सीधी पड़ती हैं, जिसके कारण राज्य भर में उच्चतम माध्य अधिकतम तापमान दर्ज किया जाता है। जून के महीने में तीव्र सौर आतपन और शुष्क पछुआ पवनों के प्रभाव से मरुस्थलीय क्षेत्रों में तापमान प्रायः 45°C से 48°C तक पहुँच जाता है, जो भीषण गर्मी पैदा करता है।

25. (D) शीतकाल में थार मरुस्थल में दैनिक तापांतर अत्यधिक कम रहता है।
शीतकाल में जनवरी राज्य का सबसे ठंडा महीना होता है तथा चूरु व सीकर जैसे उत्तरी जिलों में हिमांक बिंदु तक तापमान गिर जाता है। रेतीली मृदा के कारण थार मरुस्थल में शीत ऋतु में भी दैनिक तापांतर अत्यधिक उच्च बना रहता है, न कि कम। दिन में धूप के कारण तापमान सुहाना रहता है जबकि रात्रिकालीन विकिरण से रातें अत्यधिक ठंडी हो जाती हैं। अतः यह कथन असत्य है।

26. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
पूर्वी मैदानी भागों की तुलना में थार मरुस्थल में अत्यधिक उच्च दैनिक तापांतर दर्ज किया जाता है। इसका मुख्य कारण यहाँ की रेतीली मृदा की भौतिक प्रकृति है। शिथिल रेत की विशिष्ट ऊष्मा धारिता कम होने के कारण यह सौर विकिरण से दिन में अति शीघ्र गर्म होती है। रात में साफ आकाश और मेघाच्छादन के अभाव में पार्थिव विकिरण द्वारा ऊष्मा का तीव्र ह्रास होता है, जिससे तापमान अचानक गिर जाता है।

27. (B) माउंट आबू
सिरोही जिले में स्थित माउंट आबू राजस्थान का सर्वोच्च पर्वतीय स्थल है। सामान्य ताप ह्रास दर के नियमानुसार समुद्र तल से अत्यधिक ऊँचाई होने के कारण शीत ऋतु में यहाँ का तापमान राज्य के अन्य सभी मैदानी और मरुस्थलीय स्थानों की तुलना में सबसे कम दर्ज किया जाता है। यहाँ रात्रिकालीन न्यूनतम तापमान प्रायः शून्य से नीचे चला जाता है, जिससे जलाशयों पर बर्फ की परतें जम जाती हैं।

28. (B) यह अरावली के समानांतर चलती है, जो राज्य को पश्चिमी शुष्क और पूर्वी आर्द्र क्षेत्रों में विभाजित करती है।
50 सेमी समवर्षा रेखा राजस्थान के मध्य भाग से अरावली पर्वतमाला के संरेखण के लगभग समानांतर गुजरती है। यह रेखा राज्य को दो प्रमुख जलवायु विभागों में विभाजित करने वाली एक महत्वपूर्ण भौगोलिक सीमा है। इस रेखा के पश्चिम में स्थित भाग शुष्क तथा अर्ध-शुष्क मरुस्थलीय वातावरण प्रदर्शित करता है, जबकि इसके पूर्व में स्थित भूभाग अपेक्षाकृत अधिक वर्षा प्राप्त करने वाला उप-आर्द्र एवं आर्द्र क्षेत्र है।

29. (A) जैसलमेर, जोधपुर, अजमेर, टोंक
राजस्थान में पश्चिम से पूर्व दिशा की ओर बढ़ने पर मानसूनी पवनों की आर्द्रता बढ़ने के कारण औसत वार्षिक वर्षा में क्रमिक वृद्धि होती है। सुदूर पश्चिम में स्थित जैसलमेर में न्यूनतम वर्षा होती है, इसके पूर्व में जोधपुर में मध्यम-शुष्क वर्षा, मध्यवर्ती अरावली क्षेत्र में स्थित अजमेर में मध्यम वर्षा तथा और पूर्व में स्थित टोंक जिले में अधिक वर्षा दर्ज की जाती है। अतः यह क्रम वर्षा वृद्धि को सही दर्शाता है।

NODIA

30. (C) केवल I और III
अरावली पर्वतमाला थार मरुस्थल के पूर्व की ओर प्रसार को भौतिक रुप से रोकने में सहायक है और यह बंगाल की खाड़ी तथा अरब सागर अपवाह तंत्रों के मध्य मुख्य जल विभाजक का कार्य करती है। हालाँकि, यह अरब सागर की मानसूनी शाखा की दिशा के समानांतर स्थित है, जिसके कारण यह पवनों को रोककर ढलानों पर भारी वर्षा कराने में असमर्थ रहती है। अतः कथन I और III ही सही हैं।

31. (D) अरब सागर की शाखा लंबवत टकराती, जिससे दक्षिण में भारी वर्षा होती और उत्तरी भाग शुष्क रह जाता।
यदि अरावली की स्थिति पूर्व से पश्चिम दिशा में होती, तो दक्षिण-पश्चिम से आने वाली अरब सागर की मानसूनी पवनें इस पर्वतमाला से सीधे समकोण पर टकरातीं। इस अवरोध के कारण अरावली के दक्षिणी ढलानों पर अत्यधिक पर्वतीय वर्षा होती। परंतु, पर्वतमाला के उत्तर में स्थित भाग वृष्टि-छाया क्षेत्र बन जाता, जिसके फलस्वरुप उत्तरी और उत्तर-पश्चिमी राजस्थान पूरी तरह शुष्क और जलविहीन रह जाता।

32. (C) 50%
भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (IMD) के मानकों के अनुसार, जब मानसून के मौसम में किसी भौगोलिक क्षेत्र में वास्तविक वर्षा की कमी उसके दीर्घकालिक औसत (LPA) की तुलना में 50 प्रतिशत से अधिक हो जाती है, तो उस स्थिति को 'गंभीर

मौसम संबंधी सूखा' माना जाता है। 25 से 50 प्रतिशत के मध्य की कमी को मध्यम सूखा तथा 25 प्रतिशत तक की कमी को सामान्य सूखा माना जाता है।

33. (B) छप्पनिया अकाल — विक्रम संवत 1956
राजस्थान के लोक इतिहास में विक्रम संवत 1956 (ईस्वी सन 1899-1900) में पड़ा अकाल 'छप्पनिया अकाल' के नाम से कुख्यात है। यह राज्य के इतिहास का सर्वाधिक विनाशकारी त्रिकाल था, जिसमें अन्न, जल और चारे का अभूतपूर्व संकट उत्पन्न हुआ था। विक्रम संवत के वर्ष 1956 में घटित होने के कारण ही इसे जनसामान्य द्वारा 'छप्पनिया अकाल' की संज्ञा दी गई थी।

34. (A) I, II और III
मौसम संबंधी सूखा वर्षा में कमी से, जलवैज्ञानिक सूखा जल निकायों के सूखने से और कृषि सूखा मृदा नमी की कमी से परिभाषित होता है। सामाजिक-आर्थिक सूखा तब होता है जब जल की कमी का सीधा असर समाज और उसकी आर्थिक गतिविधियों पर पड़ता है, यह केवल प्रति व्यक्ति आय से नहीं जुड़ा है। अतः पहली तीन परिभाषाएँ वैज्ञानिक रूप से पूर्णतः सही और प्रासंगिक हैं।

35. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
पश्चिमी राजस्थान में कृषि सूखे की आवृत्ति अत्यधिक उच्च रहती है। इसका मुख्य कारण यहाँ होने वाली मानसूनी वर्षा की तीव्र अनिश्चितता और परिवर्तनशीलता है। इसके साथ ही, यहाँ की रेतीली मृदा की जल धारण क्षमता अत्यंत क्षीण होती है तथा उच्च तापमान के कारण वाष्पीकरण की दर बहुत तेज़ रहती है। ये सभी कारक मिलकर फसल चक्र के दौरान मृदा की नमी को गंभीर रूप से घटा देते हैं।

36. (C) 67%
भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) और मरुस्थलीकरण एटलस के आंकड़ों के अनुसार, राजस्थान के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का लगभग 67 प्रतिशत भाग मरुस्थलीकरण और भूमि अवनयन की विभिन्न प्रक्रियाओं से प्रभावित है। इसमें पवन अपरदन सर्वाधिक प्रमुख कारक है, जिसके कारण मरुस्थलीय स्थितियां लगातार बनी रहती हैं और उपजाऊ भूमि की उर्वरता का क्षरण होता है।

37. (A) पशुधन द्वारा अतिचारण और वनोन्मूलन
पश्चिमी राजस्थान में मरुस्थलीकरण को गति देने वाला सबसे प्रमुख मानवजनित कारण अत्यधिक पशुचारण और वनों की अनियंत्रित कटाई है। पशुओं के अतिचारण से संवेदनशील रेतीली मृदा का प्राकृतिक वनस्पतिक आवरण नष्ट हो जाता है, जिससे ऊपरी मृदा ढीली हो जाती है। इसके परिणामस्वरुप तीव्र मरुस्थलीय पवनें उपजाऊ कणों को आसानी से उड़ा ले जाती हैं और मरुस्थल का विस्तार होता है।

38. (D) राजस्थान में मरुस्थलीकरण पूरी तरह से एक प्राकृतिक परिघटना है जिसमें मानव का कोई प्रभाव नहीं है।
मरुस्थलीकरण केवल एक प्राकृतिक प्रक्रिया नहीं है, बल्कि इसमें अनुचित मानवीय गतिविधियों जैसे अतिचारण, वनों की कटाई, दोषपूर्ण कृषि पद्धतियों और जल के अत्यधिक दोहन की महत्वपूर्ण भूमिका है। पश्चिमी राजस्थान में वायु अपरदन, चंबल में जल अपरदन तथा नहरी क्षेत्रों में सेम की समस्या प्रमुख कारक हैं। अतः मरुस्थलीकरण को मानव प्रभाव से पूरी तरह मुक्त मानना वैज्ञानिक रुप से गलत है।

39. (B) P-3, Q-4, R-2, S-1
काजरी (CAZRI) संस्थान जोधपुर में 1959 में स्थापित हुआ था। आफरी (AFRI) संस्थान की स्थापना 1985 में जोधपुर में की गई थी। सूखा सम्भाव्य क्षेत्र कार्यक्रम (DPAP) की शुरुआत 1973-74 में हुई थी तथा मरुस्थल विकास कार्यक्रम (DDP) का प्रारंभ 1977-78 में किया गया था। ये सभी संस्थान और कार्यक्रम राजस्थान में मरुस्थलीकरण और शुष्कता के प्रभावों को नियंत्रित करने हेतु समर्पित हैं।

40. (C) कथन I सही है परंतु कथन II गलत है।
राजस्थान में जलवायु परिवर्तन के स्पष्ट प्रभाव देखे जा रहे हैं, जिनमें ग्रीष्मकाल में तीव्र 'लू' तथा कम समय में मूसलाधार वर्षा जैसी चरम मौसमी घटनाओं की आवृत्ति बढ़ी है। हालाँकि, जलवायु परिवर्तन ने मानसून को स्थिर नहीं किया है, बल्कि इसने वर्षा के प्रतिरुप को और अधिक अनिश्चित, असमान और परिवर्तनशील बना दिया है। अतः पहला कथन सही है जबकि दूसरा कथन पूरी तरह असत्य है।

41. (D) शुष्कता और मरुस्थलीय स्थितियां पूर्व की ओर अर्ध-शुष्क और उप-आर्द्र जिलों में विस्तार कर रही हैं।
जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में 'शुष्क क्षेत्र की सीमा के स्थानांतरण' का तात्पर्य मरुस्थलीय और शुष्क स्थितियों के पूर्व की ओर खिसकने से है। बढ़ते तापमान, अनिश्चित वर्षा और भूमि अवनयन के कारण पश्चिमी थार मरुस्थल की शुष्क जलवायु परिस्थितियां अब अरावली के पूर्वी ओर स्थित अर्ध-शुष्क तथा उप-आर्द्र जिलों की ओर फैल रही हैं, जिससे उन क्षेत्रों में भी जल संकट बढ़ रहा है।

42. (A) मानसून का अनुमानित समय पर आगमन जिससे पारंपरिक खरीफ फसलों में अधिक उपज होती है।
समय पर मानसून का आगमन और फसलों की अधिक उपज जलवायु परिवर्तन का नकारात्मक प्रभाव नहीं बल्कि एक सकारात्मक स्थिति है। जलवायु परिवर्तन के कारण वास्तव में अनिश्चित मानसून, रबी फसलों के संवर्धन काल में कमी, उच्च वाष्पोत्सर्जन दर के कारण जल की मांग में वृद्धि और कीटों व रोगों का प्रकोप बढ़ने जैसे गंभीर प्रतिकूल प्रभाव पड़ते हैं। अतः यह विकल्प नकारात्मक प्रभावों में शामिल नहीं है।

43. (B) झालावाड़
राजस्थान के प्रशासनिक जिलों में झालावाड़ जिला सर्वाधिक औसत वार्षिक वर्षा (लगभग 100 सेमी से अधिक) प्राप्त करता है। दक्षिण-पूर्वी हाड़ौती पठार में स्थित होने के कारण यह बंगाल की खाड़ी की मानसूनी शाखा से प्रचुर आर्द्रता प्राप्त करता है। झालावाड़ को अपनी इसी विशिष्ट जलवायवीय विशेषता और सर्वाधिक वर्षा के कारण प्रायः 'राजस्थान का चेरापूंजी' भी कहा जाता है।

Click Here to Buy book on Amazon

(B) तरुण भारत संघ
(C) जल भागीरथी फाउंडेशन
(D) फाउंडेशन फॉर इकोलॉजिकल सिक्योरिटी

29. निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प केवल राजस्थान के भीतर उनके कुल अपवाह क्षेत्र के आधार पर दी गई नदी बेसिनों के सही अवरोही क्रम को दर्शाता है?
(A) लूनी, बनास, चंबल, माही
(B) बनास, लूनी, चंबल, माही
(C) चंबल, बनास, लूनी, माही
(D) बनास, चंबल, लूनी, माही

30. राजस्थान सरकार द्वारा शुरू किए गए 'मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन अभियान' (MJSA) का मुख्य उद्देश्य क्या था?
(A) केवल जलविद्युत उत्पन्न करने के लिए प्रमुख मौसमी नदियों पर बड़े बांधों का निर्माण करना।
(B) राज्य भर के सभी शहरी और उप-शहरी परिवारों में उन्नत जल शोधन प्रणालियों को अनिवार्य करना।
(C) विकेंद्रीकृत जल संचयन और सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से गाँवों को जल क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाना।
(D) राज्य भर की बाह्य अपवाह नदियों को एक अंतर्देशीय नौगम्य नहर तंत्र से जोड़ना।

31. आंतरिक प्रवाह प्रणाली की एक महत्वपूर्ण नदी, कांतली नदी पूरी तरह से राजस्थान के किस विशिष्ट ऐतिहासिक क्षेत्र से होकर बहती है?
(A) मेवाड़ ऐतिहासिक क्षेत्र
(B) मारवाड़ ऐतिहासिक क्षेत्र
(C) हाड़ौती ऐतिहासिक क्षेत्र
(D) शेखावाटी क्षेत्र

32. राजस्थान में चंबल नदी पर बने बांधों में सबसे अधिक जल भराव क्षमता वाला राणा प्रताप सागर बांध कहाँ स्थित है?
(A) कोटा नगर
(B) चौरासीगढ़
(C) रावतभाटा
(D) मांडलगढ़

33. गोमती नदी पर बांध बनाकर जयसमंद झील का निर्माण कराया गया था। मेवाड़ के कौन-से शासक इस झील के निर्माण के लिए उत्तरदायी थे?
(A) महाराणा राज सिंह
(B) महाराणा जय सिंह
(C) महाराणा फतेह सिंह
(D) महाराणा कुंभा

34. सोम और जाखम नदियाँ महत्वपूर्ण सहायक नदियाँ हैं जो किस प्रमुख नदी तंत्र में मिलती हैं?
(A) साबरमती नदी तंत्र
(B) लूनी नदी तंत्र
(C) बनास नदी तंत्र
(D) माही नदी तंत्र

35. पारंपरिक जल संरचनाओं में अंतर करते हुए, 'जोहड़' मुख्य रूप से 'टांका' से किस प्रकार भिन्न है?
(A) जोहड़ भूजल पुनर्भरण के लिए एक कच्चा चेक डैम है, जबकि टांका एक भूमिगत कुंड है।
(B) जोहड़ एक भूमिगत बेलनाकार भंडारण टैंक है, जबकि टांका एक खुला सतही कच्चा तालाब है।
(C) जोहड़ चट्टानी मरुस्थलीय भूभाग में एक प्राकृतिक गर्त है, जबकि टांका नदी के तलों में कृत्रिम रूप से खोदा जाता है।
(D) जोहड़ विशेष रूप से आर्द्र दक्षिणी जिलों में बनाया जाता है, जबकि टांका पूर्वी मैदानों में बनाया जाता है।

36. राजसमंद झील की नौचौकी पाल पर 25 काले संगमरमर के शिलालेखों पर उत्कीर्ण कौन-सा प्रसिद्ध ऐतिहासिक ग्रंथ भारत में सबसे लंबे शिलालेख के रूप में माना जाता है?
(A) कुंभलगढ़ प्रशस्ति
(B) बिजोलिया शिलालेख
(C) राज प्रशस्ति
(D) कीर्ति स्तंभ प्रशस्ति

37. वाकल, हथमती, मेषवा और वेत्रक किस नदी की प्रमुख सहायक नदियाँ हैं?
(A) साबरमती
(B) माही नदी तंत्र
(C) लूनी नदी तंत्र
(D) चंबल नदी तंत्र

NODIA

38. राजस्थान में जल संरक्षण पहलों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. देवास जल परियोजना अंतर-बेसिन जल स्थानांतरण के माध्यम से उदयपुर शहर की पेयजल मांगों को पूरा करने के लिए लागू की गई थी।
II. शहरी क्षेत्रों में 300 वर्ग मीटर से बड़े भूखंडों पर सभी नए निर्मित भवनों के लिए वर्षा जल संचयन कानूनी रूप से अनिवार्य कर दिया गया है।
III. अटल भूजल योजना पूरी तरह से राज्य द्वारा वित्त पोषित बड़े पैमाने पर बांध निर्माणों के माध्यम से संचालित होती है।
IV. 'अरवरी संसद' जैसे समुदाय द्वारा प्रबंधित संस्थान सफल सहभागी नदी बेसिन प्रबंधन का प्रदर्शन करते हैं।
दिए गए कथनों में से कौन-सा/से गलत है/हैं?
(A) केवल I और II (B) केवल III
(C) केवल II और IV (D) केवल I और III

39. किस पारंपरिक कृषि पद्धति में एक कच्चे बांध के पीछे निचले इलाके में बहते जल को एकत्र किया जाता है, उसे रिसाव करने दिया जाता है, और फिर नमी से समृद्ध मृदा पर फसलें उगाई जाती हैं?
(A) झूमिंग
(B) खडीन
(C) धोरा
(D) पायतन

5°C तक की गिरावट लाती है। इसके विपरीत, 'लू' एक निरंतर बहने वाली अत्यंत शुष्क एवं गर्म वायु प्रवाह है, जो परिवेशी तापमान को अत्यधिक उच्च स्तर पर बनाए रखती है।

56. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, तथा कथन II, कथन I का सही परिणाम है।
राजस्थान में ग्रीष्मकालीन धूल भरी आंधियाँ अत्यधिक स्थानीय तापन और निम्न दाब के कारण उत्पन्न संवहनीय परिघटनाएं हैं। जब ये आंधियाँ उठती हैं, तो धूल के बादलों के कारण सूर्य का प्रकाश रुक जाता है और साथ ही अधोमुखी वायु प्रवाह होता है। इसके परिणामस्वरुप भीषण गर्मी से अस्थायी राहत मिलती है तथा तापमान में गिरावट दर्ज की जाती है। अतः दोनों कथन पूरी तरह तर्कसंगत हैं।

57. (D) विरल वनस्पति और चूनेदार रेतीली मृदा जो ऊष्मा को तेज़ी से अवशोषित और उत्सर्जित करती है।
चूरू जिले में ग्रीष्मकाल में अत्यधिक उच्च (लगभग 50°C) और शीतकाल में अत्यंत कम (हिमांक से नीचे) तापमान दर्ज होने का मुख्य कारण यहाँ पाई जाने वाली चूनेदार रेतीली मृदा और विरल वनस्पति है। चूने व रेत की परतों की विशिष्ट तापीय भौतिकी के कारण यह दिन/गर्मी में सौर ऊष्मा का तीव्र अवशोषण करती है तथा रात/सर्दी में विकिरण द्वारा ऊष्मा का अति शीघ्र उत्सर्जन कर अत्यधिक ठंडी हो जाती है।

58. (A) ऊँचाई के साथ तापमान की सामान्य ह्रास दर।
फलोदी और माउंट आबू के ग्रीष्मकालीन तापमान में बड़ा अंतर पाया जाता है। इसका वैज्ञानिक कारण 'सामान्य ताप ह्रास दर' का नियम है, जिसके अनुसार क्षोभमंडल में प्रति 165 मीटर की ऊँचाई पर तापमान में 1°C की कमी आती है। माउंट आबू अरावली की ऊँची पहाड़ियों (1200 मीटर से अधिक) पर स्थित है, जबकि फलोदी मैदानी मरुस्थल में है, इसलिए माउंट आबू ग्रीष्मकाल में भी ठंडा रहता है।

59. (B) डूंगरपुर
चूरू, सीकर और फतेहपुर राजस्थान के उत्तरी तथा शेखावाटी क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं जहाँ शीतकाल में भीषण शीत लहर चलती है और रात्रिकालीन तापमान प्रायः शून्य से नीचे चला जाता है। इसके विपरीत, डूंगरपुर जिला राज्य के सुदूर दक्षिण में स्थित है, जहाँ अक्षांशीय स्थिति और कर्क रेखा से निकटता के कारण शीतकालीन ठंड की तीव्रता काफी कम रहती है और यह गंभीर शीत लहर से मुक्त रहता है।

60. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
जोधपुर और बीकानेर जैसे आंतरिक जिलों में विषम महाद्वीपीय प्रकार की जलवायु पाई जाती है, जहाँ ग्रीष्मकाल अत्यधिक उष्ण और शीतकाल अत्यधिक ठंडी होती है। इसका मुख्य भौगोलिक कारण इनकी किसी भी महासागर या बड़े जल निकाय से अत्यधिक दूरी है। जल निकायों के समकारी प्रभाव के अभाव के कारण महाद्वीपीयता का प्रभाव बढ़ता है, जिससे तापांतर बहुत अधिक दर्ज किया जाता है।

61. (A) भूमध्य सागर
राजस्थान में शीत ऋतु में होने वाली वर्षा को स्थानीय भाषा में 'मावठ' कहा जाता है। इस वर्षा का मुख्य कारण पश्चिमांचल से आने वाले 'पश्चिमी विक्षोभ' हैं। ये बहिरुष्णकटिबंधीय चक्रवातीय अवदाब मूल रूप से भूमध्य सागर और कैस्पियन सागर के ऊपर उत्पन्न होते हैं। वहाँ से उपोष्णकटिबंधीय पछुआ जेट स्ट्रीम इन नमीयुक्त चक्रवातों को पश्चिम एशिया से होते हुए उत्तर-पश्चिम भारत तक लाती है।

62. (C) यह गेहूं और चने जैसी शीतकालीन रबी फसलों को सिंचित करती है, जिसे 'गोल्डन ड्रॉप्स' (स्वर्ण बूंदें) कहा जाता है।
मावठ की वर्षा शीतकाल (दिसंबर-जनवरी) में होती है, जो रबी की प्रमुख फसलों जैसे गेहूं, चना, जौ और सरसों के लिए अति आवश्यक प्राकृतिक सिंचाई प्रदान करती है। इस समय होने वाली बूंदाबांदी इन फसलों की पैदावार और गुणवत्ता में अभूतपूर्व वृद्धि करती है। कृषि में इसके अत्यधिक आर्थिक और पोषण संबंधी महत्व के कारण मावठ की बूंदों को 'गोल्डन ड्रॉप्स' (अमृत/स्वर्ण बूंदें) कहा जाता है।

63. (B) I, II और III
मावठ दिसंबर से फरवरी के मध्य होती है, रबी की फसलों के लिए बहुत लाभदायक है तथा इसे पछुआ जेट स्ट्रीम भारत लाती है। यह राजस्थान की कुल वार्षिक वर्षा का मात्र 5 से 10 प्रतिशत हिस्सा ही बनाती है, न कि 50 प्रतिशत से अधिक। अतः कथन IV गलत है, जबकि कथन I, II और III पूरी तरह सत्य और प्रासंगिक हैं।

64. (C) मावठ के कारण भारी मूसलाधार वर्षा और व्यापक गंभीर बाढ़ आती है।
मावठ सामान्यतः हल्की से मध्यम बूंदाबांदी अथवा धीमी वर्षा के रूप में होती है, जो फसलों में धीरे-धीरे समाहित हो जाती है। यह कभी भी विनाशकारी मूसलाधार वर्षा या व्यापक बाढ़ का कारण नहीं बनती है। यह भूमध्य सागर से आने वाले उथले चक्रवातीय अवदाबों से होती है और शीतकालीन बादलों के साथ तापमान में हल्की गिरावट लाती है। अतः बाढ़ संबंधी कथन पूरी तरह असत्य है।

65. (B) 10
कृषि नियोजन, मृदा की विशेषताओं, वर्षा की मात्रा और तापीय भिन्नताओं के आधार पर राजस्थान को योजना आयोग एवं कृषि विभाग द्वारा कुल 10 कृषि-जलवायु क्षेत्रों (Agro-Climatic Zones) में वर्गीकृत किया गया है। इन क्षेत्रों को IA से लेकर V तक के संकेतकों द्वारा निरुपित किया जाता है ताकि प्रत्येक विशिष्ट क्षेत्र की जलवायु के अनुसार क्षेत्रीय कृषि नीतियाँ और फसल योजनाएँ बनाई जा सकें।

66. (D) P-3, Q-1, R-4, S-2
क्षेत्र IA शुष्क पश्चिमी मैदानी क्षेत्र (बाड़मेर, जोधपुर) का प्रतिनिधित्व करता है। क्षेत्र IIA अंतःस्थलीय अपवाह के संक्रमणकालीन मैदान (शेखावाटी) को दर्शाता है। क्षेत्र IIIB बाढ़ संभाव्य पूर्वी मैदानी क्षेत्र (अलवर, भरतपुर) का प्रतीक है।

Downloaded from www.pdf.tube

(C) केवल I और III
(D) I, II और III

9. राजस्थान में पारंपरिक जल संरक्षण के संदर्भ में, 'टांका' का प्राथमिक कार्य क्या है?
(A) मृदा अपरदन को रोकने के लिए मौसमी धारा पर निर्मित एक खुला कच्चा बांध।
(B) सामुदायिक सभाओं और अनुष्ठानों के लिए ऐतिहासिक शासकों द्वारा निर्मित एक बावड़ी।
(C) खेत तक नदी का पानी लाने के लिए निर्मित पक्की जल मार्ग (डायवर्जन नहर)।
(D) वर्षा जल के एकत्रण और भंडारण के लिए निर्मित एक भूमिगत कुंड (हौज)।

10. राजस्थान में माही नदी बेसिन मुख्य रूप से राज्य के किस भौगोलिक क्षेत्र में स्थित है?
(A) उत्तरी राजस्थान
(B) पूर्वी मैदान
(C) पश्चिमी शुष्क क्षेत्र
(D) दक्षिणी राजस्थान

11. निम्नलिखित में से कौन-सा राजस्थान में भूजल संसाधनों के व्यापक दोहन और 'डार्क जोन' के निर्माण का सबसे प्रमुख कारण है?
(A) प्रमुख शहरी विनिर्माण केंद्रों में अत्यधिक औद्योगिक जल उपभोग।
(B) कृषि नलकूप सिंचाई के लिए अत्यधिक भूजल निष्कर्षण।
(C) अरावली श्रेणी में मौसमी धाराओं के साथ प्राकृतिक सतही प्रवाह में कमी।
(D) बड़े पक्के बांधों का निर्माण जो प्राकृतिक रिसाव को गंभीर रूप से प्रतिबंधित करते हैं।

12. चंबल नदी पर निर्मित निम्नलिखित प्रमुख बांधों को उद्गम से मुहाने (दक्षिण से उत्तर) के सही क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. जवाहर सागर बांध
2. गांधी सागर बांध
3. कोटा बैराज
4. राणा प्रताप सागर बांध

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही क्रम का चयन कीजिए:
(A) 2, 4, 1, 3
(B) 4, 2, 1, 3
(C) 2, 1, 4, 3
(D) 4, 1, 2, 3

13. एशिया की सबसे बड़ी कृत्रिम मीठे पानी की झीलों में से एक, जयसमंद झील में कई बसे हुए द्वीप हैं। इस झील के सबसे बड़े द्वीप का नाम क्या है?
(A) बाबा का भाकड़ा
(B) प्यारी
(C) जग मंदिर
(D) नटनी का चबूतरा

14. राजस्थान में उद्गम के बाद, साबरमती नदी समुद्र में गिरने से पहले मुख्य रूप से किस पड़ोसी राज्य से होकर बहती है?
(A) मध्य प्रदेश
(B) हरियाणा
(C) गुजरात
(D) महाराष्ट्र

15. इंदिरा गांधी नहर परियोजना (IGNP) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह सतलुज और ब्यास नदियों के संगम पर स्थित हरिके बैराज से जल प्राप्त करती है।
II. पश्चिमी राजस्थान के शुष्क क्षेत्रों के कायाकल्प के लिए इसकी परिकल्पना अभियंता कंवर सैन ने की थी।
III. यह नहर प्रणाली केवल सिंचाई के लिए जल प्रदान करती है और इसे नगर निगम पेयजल आपूर्ति के लिए अभिकल्पित नहीं किया गया है।
IV. इसके कमान क्षेत्र में व्यापक सिंचाई के कारण जलभराव (सेम की समस्या) और मृदा लवणता जैसी स्थानीय पारिस्थितिक समस्याएं उत्पन्न हुई हैं।

दिए गए कथनों में से कौन-सा/से गलत है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल III
(C) केवल II और IV
(D) केवल III और IV

NODIA

16. राजस्थान में पारंपरिक जल प्रबंधन की शब्दावली में 'नाड़ी' क्या है?
(A) स्थानीय जल निष्कर्षण के लिए एक सूखी नदी के तल के पास खोदा गया एक गहरा, संकीर्ण कुआं।
(B) मुख्य रूप से जलविद्युत उत्पन्न करने के लिए किसी नदी पर निर्मित एक भारी पक्का भंडारण बांध।
(C) अपने जलग्रहण क्षेत्र से सतही अपवाह को संचित करने के लिए निर्मित एक ग्रामीण तालाब।
(D) धार्मिक समारोहों के लिए उपयोग की जाने वाली भूमिगत मंजिलों वाली एक अलंकृत स्थापत्य बावड़ी।

17. जवाई बांध, जिसे अक्सर 'मारवाड़ का अमृत सरोवर' कहा जाता है, जवाई नदी पर बना है। जवाई नदी किस अपवाह तंत्र की एक प्रमुख सहायक नदी है?
(A) चंबल नदी तंत्र
(B) लूनी नदी तंत्र
(C) बनास नदी तंत्र
(D) Mahi नदी तंत्र

18. निम्नलिखित में से नदियों का कौन-सा समूह बनास नदी की प्रमुख सहायक नदियों का सही प्रतिनिधित्व करता है?
(A) सोम, जाखम, अनास और मोरेन
(B) पार्वती, काली सिंध, आहू और निवाज़
(C) सुकड़ी, बांडी, जवाई और जोजरी
(D) बेड़च, कोठारी, खारी और मोरेल

के निकट होने से शीतकाल सामान्य रहता है। इसके विपरीत, उत्तरी सीमा पर स्थित हनुमानगढ़ जिला अर्ध-शुष्क/शुष्क श्रेणी में आता है जहाँ वर्षा कम होती है तथा शीतकाल में तीव्र शीत लहर और पाले का प्रभाव रहता है। अतः यह तुलना पूरी तरह सटीक है।

79. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
यद्यपि जैसलमेर में न्यूनतम वर्षा होती है, फिर भी राज्य का उच्चतम निरपेक्ष तापमान अक्सर चूरू जैसे जिलों में दर्ज होता है। इसका कारण चूरू की रेतीली और चूनेदार मृदा की विशिष्ट तापीय भौतिकी है, जो सौर विकिरण को तीव्र गति से अवशोषित करती है। साथ ही स्थानीय वनस्पति आवरण का अभाव और विशेष वायुमंडलीय स्थितियाँ चूरू के तापमान को अत्यधिक उच्च स्तर तक पहुँचा देती हैं।

80. (C) आपदा प्रबंधन, सहायता एवं नागरिक सुरक्षा विभाग
राजस्थान में राज्य स्तर पर प्राकृतिक आपदाओं, विशेष रुप से बार-बार पड़ने वाले सूखे के प्रबंधन, गिरदावरी रिपोर्ट के आधार पर अकाल घोषणा, राहत शिविरों के संचालन और प्रभावितों को क्षतिपूर्ति सहायता राशि वितरित करने के लिए 'आपदा प्रबंधन, सहायता एवं नागरिक सुरक्षा विभाग' प्राथमिक नोडल एजेंसी और शीर्ष प्रशासनिक निकाय के रूप में कार्य करता है।

81. (A) I, II और IV
राज्य आपदा मोचन निधि (SDRF) का उपयोग गंभीर सूखे के दौरान किसानों को फसल क्षति पर इनपुट सब्सिडी देने, मवेशियों की रक्षा हेतु पशु शिविर चलाने और पेयजल संकट से ग्रस्त गाँवों में टैंकरों से जल पहुँचाने के लिए किया जाता है। इसका उपयोग दीर्घकालिक औद्योगिक विकास परियोजनाओं या स्थायी रोजगार सृजन के वित्तपोषण में नहीं किया जा सकता। अतः केवल कथन I, II और IV सही हैं।

82. (D) विकेंद्रीकृत वर्षा जल संचयन (खड़ीन, जोहड़) और जलसम्भर प्रबंधन।
ग्रामीण राजस्थान में सूखे के दीर्घकालिक शमन के लिए पारंपरिक विकेंद्रीकृत वर्षा जल संचयन ढांचों (जैसे खड़ीन, जोहड़, टांका) के पुनरुद्धार और वैज्ञानिक जलसम्भर (वाटरशेड) विकास को सबसे प्रभावी रणनीति माना जाता है। यह स्थानीय स्तर पर भूजल पुनर्भरण को बढ़ावा देता है, मृदा नमी को बनाए रखता है और मानसूनी अनिश्चितता के दौरान भी पेयजल तथा कृषि सुरक्षा सुनिश्चित करता है।

83. (A) राज्य के सूखा मैनुअल पूरी तरह से आपदा के बाद की प्रतिक्रिया पर निर्भर करते हैं और पूर्व चेतावनी प्रणालियों की उपेक्षा करते हैं।
राजस्थान के आधुनिक सूखा प्रबंधन मैनुअल केवल आपदा के बाद की राहत पर निर्भर नहीं हैं, बल्कि वे उपग्रह निगरानी, मौसम पूर्वानुमान और प्रारंभिक चेतावनी प्रणालियों का व्यापक उपयोग करते हैं। ब्रिटिश काल के अकाल कोड ने शुरुआती ढांचा दिया था तथा ऐतिहासिक रूप से राहत हेतु सार्वजनिक निर्माण कार्य कराए जाते थे। अतः पूर्व चेतावनी की उपेक्षा से संबंधित कथन पूरी तरह गलत है।

84. (C) कम औसत वर्षा उच्च CV और अनिश्चितता के अनुरूप होती है।
राजस्थान के जलवायु विज्ञान में वर्षा की कुल मात्रा और इसके परिवर्तनशीलता गुणांक (CV) के मध्य विपरीत संबंध होता है। जिन जिलों (जैसे जैसलमेर, बाड़मेर) में औसत वार्षिक वर्षा की मात्रा जितनी कम होती है, वहाँ वर्षा का परिवर्तनशीलता गुणांक (CV) उतना ही अधिक दर्ज किया जाता है। इसका अर्थ यह है कि कम वर्षा वाले क्षेत्रों में वर्षा की अनिश्चितता और अप्रत्याशितता बहुत अधिक होती है।

85. (A) यह मानसूनी वर्षा को कम करता है, जिससे सूखे की संभावना बढ़ जाती है।
प्रशांत महासागर में उत्पन्न होने वाली 'अल नीनो' की घटना का राजस्थान की दक्षिण-पश्चिम मानसूनी प्रणाली पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। तीव्र अल नीनो के कारण भारतीय उपमहाद्वीप में मानसूनी पवनों का प्रवाह कमजोर पड़ जाता है। इसके परिणामस्वरुप राजस्थान में सामान्य से काफी कम वर्षा होती है, मानसून में लंबा अंतराल आता है और राज्य में गंभीर सूखे तथा अकाल की संभावना अत्यधिक बढ़ जाती है।

86. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
हिंद महासागर में निर्मित होने वाला 'धनात्मक हिंद महासागर द्विध्रुव' (Positive IOD) भारतीय मानसून के लिए अत्यधिक अनुकूल माना जाता है। यह हिंद महासागर से प्रचुर जलवाष्पयुक्त पवनों को भारत और राजस्थान की ओर धकेलता है। जब यह स्थिति उत्पन्न होती है, तो यह प्रशांत महासागर के अल नीनो के नकारात्मक प्रभावों को निष्प्रभावी कर राज्य में सामान्य या अच्छी वर्षा कराने में सक्षम होती है।

87. (B) शुष्क क्षेत्रों से धान या गन्ने जैसी जल-गहन फसलों के निर्यात को हतोत्साहित करना।
'आभासी जल' (Virtual Water) से तात्पर्य किसी उत्पाद या फसल के उत्पादन में प्रयुक्त होने वाले जल की कुल अदृश्य मात्रा से है। शुष्क राजस्थान में आभासी जल निर्यात घटाने की रणनीति का मुख्य उद्देश्य शुष्क व जल-संकट ग्रस्त क्षेत्रों में अत्यधिक जल खपत वाली फसलों (जैसे धान, गन्ना) की खेती और उनके अंतर-राज्यीय निर्यात को हतोत्साहित करना है, ताकि सीमित जल संसाधनों को संरक्षित रखा जा सके।

88. (C) इसने स्थानीय स्तर पर आर्द्रता और वनस्पति में वृद्धि की, परंतु इसके कारण जलभराव और मृदा लवणता की समस्या उत्पन्न हुई।
इंदिरा गांधी नहर परियोजना (IGNP) ने पश्चिमी राजस्थान के शुष्क परिदृश्य में जल की उपलब्धता बढ़ाकर स्थानीय सूक्ष्म-जलवायु में आर्द्रता और हरियाली को बढ़ाया है। परंतु, अत्यधिक और अनियंत्रित सिंचाई के कारण नहरी कमान क्षेत्रों (विशेषकर हनुमानगढ़, बीकानेर) में जलभराव (सेम) और मृदा लवणता की गंभीर पारिस्थितिक समस्याएँ भी उत्पन्न हुई हैं, जिसने कृषि भूमि को प्रभावित किया है।

Click Here to Buy book on Flipkart

89. (A) केवल I और II
दीर्घकालिक मौसम प्रेक्षणों से स्पष्ट है कि राजस्थान में माध्य न्यूनतम रात्रिकालीन तापमान में वृद्धि दर्ज की गई है और वर्षा के प्रतिरुप में बदलाव आया है, जिसमें कम समय में अत्यधिक तीव्र वर्षा की घटनाएँ शामिल हैं। जलवायु परिवर्तन के कारण सूखे का अंत नहीं हुआ है, बल्कि इसकी आवृत्ति और अनिश्चितता और अधिक जटिल हो गई है। अतः केवल कथन I और II सही हैं।

90. (A) केंद्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान (CAZRI)
जोधपुर में स्थित 'केंद्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान' (CAZRI) भारत का एक प्रमुख वैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान है। इसकी स्थापना 1959 में शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में मरुस्थलीकरण के नियंत्रण, मृदा और जल संरक्षण, तथा जलवायु परिवर्तन के अनुकूल टिकाऊ मरुस्थलीय कृषि तकनीकों और वानिकी पद्धतियों के विकास के लिए की गई थी। यह संस्थान इस दिशा में निरंतर प्रयासरत है।

www.nodia.in

NODIA

अध्याय 13

राजस्थान की जल निकासी प्रणाली और जल संरक्षण

1. निम्नलिखित में से कौन राजस्थान के संदर्भ में अंतःस्थलीय अपवाह तंत्र (आंतरिक प्रवाह प्रणाली) को सर्वोत्तम रुप से परिभाषित करता है?
(A) एक ऐसी नदी प्रणाली जहाँ धाराएँ मैदानों से निकलती हैं और किसी प्रमुख नदी में मिले बिना सीधे समुद्र में गिरती हैं।
(B) एक ऐसा अपवाह प्रतिरूप जहाँ नदियाँ और धाराएँ किसी महासागर या समुद्र तक पहुँचने में विफल रहती हैं और इसके बजाय किसी आंतरिक बेसिन, झील में गिरती हैं या रेत में विलुप्त हो जाती हैं।
(C) पेयजल आपूर्ति के लिए कई आंतरिक नदी बेसिनों को जोड़ने के लिए निर्मित कृत्रिम नहरों की एक प्रणाली।
(D) भूमिगत नदियों का एक जाल जो अंततः भूजल जलभृतों में विलीन हो जाता है और तटीय झरनों के रूप में उभरता है।

2. राजस्थान के कुल अपवाह क्षेत्र का लगभग कितना प्रतिशत भाग आंतरिक प्रवाह प्रणाली के अंतर्गत वर्गीकृत है?
(A) 20 प्रतिशत
(B) 40 प्रतिशत
(C) 60 प्रतिशत
(D) 80 प्रतिशत

3. निम्नलिखित में से किस नदी को राजस्थान की बाह्य (समुद्री) अपवाह प्रणाली के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है?
(A) चंबल
(B) कांतली
(C) साबी
(D) काकनेय

4. सूची-I (नदी) को सूची-II (उद्गम स्थल) से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर का चयन कीजिए:
सूची I : (नदी)
P. बनास
Q. लूनी
R. साबी
S. कांतली
सूची II : (उद्गम स्थल)
1. सेवर की पहाड़ियाँ
2. खंडेला की पहाड़ियाँ
3. खमनोर की पहाड़ियाँ
4. नाग पहाड़
(A) P-4, Q-3, R-2, S-1
(B) P-3, Q-1, R-4, S-2
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-1, Q-4, R-3, S-2

5. 'खडीन' के नाम से जानी जाने वाली पारंपरिक वर्षा जल संचयन और कृषि प्रणाली राजस्थान के किस जिले में मुख्य रूप से अपनाई जाती है?
(A) जैसलमेर
(B) बांसवाड़ा
(C) झालावाड़
(D) भरतपुर

6. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A) : साँभर झील भारत की सबसे बड़ी अंतःस्थलीय (आंतरिक) खारे पानी की झील है।
कारण (R) : इसमें मेंथा, रुपनगढ़, खारी और खंडेला जैसी कई मौसमी नदियों का पानी आता है, जो इस गर्त (बेसिन) में घुले हुए लवण लाती हैं।
(A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) अभिकथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) अभिकथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

7. राजस्थान की एकमात्र बारहमासी (सदावाहिनी) नदी, चंबल नदी निम्नलिखित में से किस स्थान से निकलती है?
(A) उदयपुर में गोगुंदा की पहाड़ियाँ
(B) मध्य प्रदेश में जनापाव की पहाड़ियाँ
(C) चित्तौड़गढ़ में विंध्यन कगार
(D) अजमेर में अरावली श्रेणी

8. लूनी नदी के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह अजमेर जिले में नाग पहाड़ से निकलती है।
II. बालोतरा तक इसका जल मीठा रहता है, जिसके बाद यह अत्यधिक खारा हो जाता है।
III. यह अंततः अपने जल का विसर्जन खंभात की खाड़ी में करती है।
दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III

NODIA

44. (A) I, II, III, IV
औसत वार्षिक वर्षा के अवरोही क्रम में झालावाड़ सबसे ऊपर है (100 सेमी से अधिक), इसके बाद बांसवाड़ा (लगभग 90 सेमी), तत्पश्चात मध्य-पूर्वी मैदानी जिला जयपुर (लगभग 50-60 सेमी) और अंत में पश्चिमी शुष्क जिला जोधपुर (लगभग 30-40 सेमी) आता है। दक्षिण-पूर्व से उत्तर-पश्चिम की ओर बढ़ते हुए वर्षा की मात्रा में यह क्रमिक कमी राजस्थान का एक स्पष्ट जलवायुवीय नियम है।

45. (A) झालावाड़
झालावाड़ जिला राजस्थान में प्रतिवर्ष सर्वाधिक वर्षा वाले दिनों की संख्या दर्ज करता है, जहाँ औसतन लगभग 40 दिन वर्षा होती है। इसके विपरीत, सुदूर पश्चिमी जिले जैसलमेर में वर्षा के दिनों की औसत संख्या मात्र 5 से 7 दिन रहती है। माउंट आबू स्थान के रूप में सर्वाधिक वर्षा वाले दिन (लगभग 48 दिन) दर्ज करता है, परंतु जिले के रूप में झालावाड़ शीर्ष पर है।

46. (B) 10 - 15 सेमी
जैसलमेर राजस्थान का सबसे शुष्क जिला है, जहाँ दीर्घकालिक आंकड़ों के अनुसार औसत वार्षिक वर्षा मात्र 10 से 15 सेमी (100 से 150 मिमी) के मध्य ही दर्ज की जाती है। इस जिले के पश्चिमी सीमावर्ती क्षेत्रों जैसे सम में तो वार्षिक वर्षा का औसत 5 सेमी से भी कम रहता है। अत्यधिक कम वर्षा के कारण यहाँ वास्तविक मरुस्थलीय परिस्थितियां पाई जाती हैं।

47. (B) अगस्त
राजस्थान में सापेक्षिक आर्द्रता का उच्चतम स्तर सामान्यतः अगस्त के महीने में दर्ज किया जाता है। इस समय दक्षिण-पश्चिम मानसून राज्य में पूरी तरह सक्रिय रहता है और वायुमंडल में जलवाष्प की सांद्रता अपने चरम पर होती है। अगस्त में लगातार मानसूनी पवनों के प्रवाह और वर्षा के कारण हवा में नमी का प्रतिशत अधिक बना रहता है, जिससे आर्द्र मौसम का अनुभव होता है।

48. (C) असीमित जल उपलब्धता की स्थिति में वाष्पीकरण और वाष्पोत्सर्जन के माध्यम से जल की अधिकतम संभावित हानि।
संभाव्य वाष्पोत्सर्जन (PET) उस जल की अधिकतम संभावित मात्रा को दर्शाता है जो पर्याप्त जल उपलब्धता की स्थिति में वाष्पीकरण और पौधों के वाष्पोत्सर्जन द्वारा वायुमंडल में विलीन हो सकती है। पश्चिमी राजस्थान में अत्यधिक तापमान, तीव्र सौर विकिरण और तेज शुष्क पवनों के कारण संभाव्य वाष्पोत्सर्जन की दर वास्तविक वर्षा की तुलना में कई गुना अधिक होती है, जो उच्च शुष्कता पैदा करती है।

49. (B) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, परंतु वे स्वतंत्र तथ्य हैं।
पश्चिमी राजस्थान में वास्तविक वाष्पीकरण की मात्रा धरातल पर जल और नमी की कमी के कारण संभाव्य वाष्पोत्सर्जन दर (PET) से काफी कम होती है। दूसरी ओर, ग्रीष्मकाल में चलने वाली तेज पवनें और उच्च तापमान वातावरण में संभाव्य वाष्पोत्सर्जन की क्षमता को बढ़ा देते हैं। ये दोनों वैज्ञानिक तथ्य अपनी-अपनी जगह पूर्णतः सही हैं और शुष्क पारिस्थितिकी को परिभाषित करते हैं।

50. (D) ग्रीष्मकाल में दोपहर के समय चलने वाली गर्म एवं शुष्क पछुआ पवन।
'लू' राजस्थान में ग्रीष्म ऋतु (विशेषकर मई और जून) में दोपहर के समय चलने वाली अत्यंत गर्म, शुष्क और कष्टदायक स्थानीय पछुआ पवन है। थार मरुस्थल के तीव्र तापन के कारण उत्पन्न होने वाली यह पवन वातावरण के तापमान को बहुत अधिक बढ़ा देती है। इसका मानव स्वास्थ्य, पशुओं और वनस्पतियों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है और इससे शरीर में जल की तीव्र कमी हो जाती है।

51. (B) जब सामान्य से उल्लेखनीय विचलन के साथ अधिकतम तापमान 40°C तक पहुँच जाता है।
भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (IMD) के अनुसार मैदानी क्षेत्रों में 'उष्ण लहर' या लू तब घोषित की जाती है जब किसी स्थान का अधिकतम तापमान कम से कम 40°C तक पहुँच जाए और वह उस क्षेत्र के सामान्य औसत तापमान से 4.5°C से 6.4°C अधिक दर्ज किया जाए। यदि तापमान निरपेक्ष रूप से 45°C या उससे अधिक हो जाए, तब भी लू की आधिकारिक घोषणा की जाती है।

52. (A) केवल I और II
राजस्थान में शीत लहरें पश्चिमी विक्षोभों के बाद उत्तरी बर्फबारी वाले क्षेत्रों से आने वाली ठंडी पवनों से चलती हैं, जो उत्तरी जिलों में पाले से सरसों और चने को भारी क्षति पहुँचाती हैं। बाँसवाड़ा राज्य का सबसे दक्षिणी जिला है जहाँ शीतकालीन पाले की आवृत्ति नगण्य होती है, जबकि उत्तरी जिलों में यह सर्वाधिक होती है। अतः केवल कथन I और II ही सत्य हैं।

53. (A) ये अंतःकोशिकीय जल को जमा देती हैं, जिससे रबी फसलों की कोशिकाओं का विनाश और पाले से क्षति होती है।
तीव्र शीत लहरों के दौरान जब तापमान हिमांक बिंदु (0°C) से नीचे चला जाता है, तो पौधों की अंतःकोशिकीय संरचनाओं में उपस्थित जल जम जाता है। जल के बर्फ में बदलने से उसका आयतन बढ़ता है, जिससे पादप कोशिका भित्तियाँ फट जाती हैं और ऊतक पूरी तरह नष्ट हो जाते हैं। इसे ही फसलों में 'पाला मारना' कहा जाता है, जिससे रबी फसलों को भारी नुकसान होता है।

54. (D) श्रीगंगानगर
मानसून-पूर्व ग्रीष्मकालीन महीनों (मई-जून) में राजस्थान का श्रीगंगानगर जिला सर्वाधिक धूल भरी आंधियों (आँधी) का अनुभव करता है। यहाँ वर्ष में औसतन सर्वाधिक दिन (लगभग 27 दिन) आंधियाँ चलती हैं। इसका मुख्य कारण इस उत्तर-पश्चिमी जिले में तीव्र स्थानीय संवहनीय धाराओं का बनना तथा वायुमंडलीय अस्थिरता और रेतीले भूभाग की उपस्थिति है, जो धूल के बवंडर निर्मित करती है।

55. (B) धूल भरी आँधी अस्थायी रूप से परिवेशी तापमान को गिरा देती है, जबकि लू अत्यधिक तापन को बनाए रखती है।
मानसून-पूर्व धूल भरी आँधी तीव्र संवहनीय धाराओं द्वारा उत्पन्न होती है, जो अपने साथ ऊपर से ठंडी हवा नीचे लाती है और सौर विकिरण को रोककर अस्थायी रूप से तापमान में 2°C से

Downloaded from www.pdf.tube

19. सूची-I (झील) को सूची-II (जिला/स्थान) से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर का चयन कीजिए:

सूची I : (झील)
P. पुष्कर झील
Q. राजसमंद झील
R. जयसमंद झील
S. साँभर झील

सूची II : (जिला/स्थान)
1. उदयपुर
2. अजमेर
3. जयपुर ग्रामीण / नागौर सीमा
4. राजसमंद

(A) P-2, Q-4, R-1, S-3
(B) P-4, Q-2, R-1, S-3
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

20. पुष्कर झील को भारत की सबसे पवित्र झीलों में से एक माना जाता है। पुष्कर झील की सफाई और संरक्षण परियोजना के लिए किस देश ने राज्य सरकार के साथ भागीदारी की थी?
(A) जापान
(B) फ्रांस
(C) कनाडा
(D) जर्मनी

21. राजस्थान का कौन-सा नदी बेसिन अत्यधिक अवनालिका अपरदन के लिए कुख्यात है, जिसके परिणामस्वरूप गहरे बीहड़ों या उत्खात भूमि (बैडलैंड स्थलाकृति) का निर्माण होता है?
(A) चंबल बेसिन
(B) लूनी नदी बेसिन
(C) बनास नदी बेसिन
(D) माही नदी बेसिन

22. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A) : राजस्थान के भौगोलिक वर्गीकरण के अंतर्गत, लूनी नदी का अध्ययन एक आंतरिक अपवाह नदी के रूप में किया जाता है।
कारण (R) : लूनी नदी खुले महासागर तक पहुँचने में विफल रहती है और अंततः कच्छ के रण के दलदली क्षेत्र में विलुप्त हो जाती है।
(A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) अभिकथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) अभिकथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

NODIA

23. पूर्वी राजस्थान नहर परियोजना (ERCP) एक प्रमुख अंतर-बेसिन जल स्थानांतरण पहल है। इसका प्राथमिक उद्देश्य क्या है?
(A) माही बेसिन से अतिरिक्त बाढ़ के पानी को मारवाड़ के सूखाग्रस्त क्षेत्रों में स्थानांतरित करना।
(B) चंबल बेसिन से मानसून के अतिरिक्त पानी को जल की कमी वाले नदी बेसिनों में स्थानांतरित करना।
(C) सतलुज नदी से बारहमासी हिमालयी जल को सीधे लूनी बेसिन में मोड़ना।
(D) घग्गर नदी के मौसमी बाढ़ के पानी को इंदिरा गांधी नहर प्रणाली में भेजना।

24. राजस्थान में कौन-सी पारंपरिक जल संरक्षण संरचना न केवल जल भंडारण के लिए बल्कि अपनी जटिल वास्तुकला, बहु-स्तरीय भूमिगत मंजिलों और सांस्कृतिक व सामाजिक मिलन स्थल की भूमिका के लिए प्रसिद्ध है?
(A) टांका
(B) जोहड़
(C) बावड़ी
(D) खडीन

25. माही नदी पर एक प्रमुख बहुउद्देशीय परियोजना, माही बजाज सागर बांध राजस्थान के किस जिले में स्थित है?
(A) डूंगरपुर
(B) प्रतापगढ़
(C) उदयपुर
(D) बांसवाड़ा

26. बनास नदी के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह सबसे लंबी नदी है जिसका संपूर्ण प्रवाह मार्ग राजस्थान की सीमाओं के भीतर स्थित है।
II. यह राजसमंद जिले की खमनोर पहाड़ियों से निकलती है।
III. यह आगरा के पास सीधे यमुना नदी में मिल जाती है।
दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

27. बीसलपुर बांध का निर्माण मुख्य रूप से राजस्थान के किन प्रमुख शहरी केंद्रों को विश्वसनीय पेयजल आपूर्ति प्रदान करने के लिए किया गया था?
(A) जोधपुर, पाली और बाड़मेर
(B) जयपुर, अजमेर और टोंक
(C) उदयपुर, राजसमंद और भीलवाड़ा
(D) कोटा, बूंदी और बारां

28. 'भारत के जलपुरुष' राजेंद्र सिंह के नेतृत्व वाले किस प्रमुख गैर-सरकारी संगठन ने जोहड़ के सामुदायिक निर्माण के माध्यम से राजस्थान में सूखी नदियों को पुनर्जीवित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई?
(A) नर्मदा बचाओ आंदोलन

क्षेत्र V आर्द्र दक्षिण-पूर्वी मैदानी क्षेत्र (हाड़ौती) का प्रतिनिधित्व करता है। अतः यह सुमेलित विकल्प पूरी तरह से सही है।

67. (A) क्षेत्र IC (अति-शुष्क आंशिक सिंचित क्षेत्र)
राजस्थान में 'क्षेत्र IC' (अति-शुष्क आंशिक सिंचित क्षेत्र) भौगोलिक क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा कृषि-जलवायु क्षेत्र है। इसके अंतर्गत जैसलमेर, बीकानेर और चूरू जिलों के विशाल मरुस्थलीय क्षेत्र सम्मिलित हैं। इस विशाल क्षेत्र की मुख्य विशेषता अत्यधिक कम वर्षा, उच्च तापमान, रेतीली मृदा और नहरी सिंचाई (इरागाप्र) का सीमित व आंशिक विस्तार होना है।

68. (A) शुष्क पश्चिमी मैदान (IA) → अर्ध-शुष्क पूर्वी मैदान (IIIA) → आर्द्र दक्षिण-पूर्वी मैदान (V)
सबसे शुष्क से सबसे आर्द्र की ओर बढ़ते हुए सही अनुक्रम शुष्क पश्चिमी मैदान (IA) से प्रारंभ होता है जहाँ न्यूनतम वर्षा होती है। इसके पश्चात मध्यम वर्षा वाला अर्ध-शुष्क पूर्वी मैदान (IIIA) आता है जिसमें जयपुर और अजमेर सम्मिलित हैं। अंत में सर्वाधिक वर्षा प्राप्त करने वाला आर्द्र दक्षिण-पूर्वी मैदान (V) आता है जिसमें कोटा और झालावाड़ शामिल हैं।

69. (A) कृषक बाजरा से कम अवधि वाली दालों जैसे मूंग या मोठ की ओर स्थानांतरित हो जाते हैं।
अर्ध-शुष्क राजस्थान में यदि मानसून मध्य जुलाई के बाद विलंब से आता है, तो बाजरा जैसी पारंपरिक फसलों की परिपक्वता के लिए पर्याप्त समय नहीं बचता। ऐसे में कृषक जलवायु-अनुकूलन रणनीति अपनाते हुए कम अवधि में तैयार होने वाली दलहनी फसलों जैसे मूंग, मोठ या ग्वार की बुआई की ओर स्थानांतरित हो जाते हैं, जो कम नमी में भी शीघ्र उपज देने में सक्षम होती हैं।

70. (D) अर्ध-शुष्क प्रदेश — ज्वार और ग्वार
अर्ध-शुष्क जलवायु प्रदेश में जहाँ वर्षा मध्यम होती है, ज्वार और ग्वार जैसी कम जल माँग वाली फसलें सर्वाधिक उपयुक्त पाई जाती हैं। इसके विपरीत, शुष्क प्रदेश में गन्ना व चावल उगाना या आर्द्र में बाजरा उगाना भौगोलिक दृष्टि से असंगत है। ग्वार और ज्वार की फसलें अर्ध-शुष्क क्षेत्र की मृदा नमी और तापीय परिस्थितियों के पूर्णतः अनुकूल होती हैं।

71. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं, तथा कथन II, कथन I की सही व्याख्या करता है।
जनवरी के महीने में पड़ने वाला तीव्र पाला उत्तरी राजस्थान में उगाई जाने वाली रबी फसलों, विशेषकर सरसों और चने को व्यापक नुकसान पहुँचाता है। इसका जैविक कारण यह है कि तापमान हिमांक से नीचे जाने पर पादप कोशिकाओं के भीतर उपस्थित द्रव जमकर फैल जाता है। इस आयतन वृद्धि से कोशिका भित्ति फट जाती है और ऊतक नष्ट हो जाते हैं। अतः दोनों कथन पूरी तरह सत्य हैं।

72. (A) केवल I और II
राजस्थान की शुष्क जलवायु में उगने वाली फसलों में उप-सतही नमी सोखने हेतु गहरी जड़ें तथा संक्षिप्त वर्षा में जीवन चक्र पूरा करने का गुण होता है। चौड़ी पत्तियाँ वाष्पोत्सर्जन बढ़ाती हैं जो मरुस्थलीय अनुकूलन के विपरीत है; अतः मरुस्थलीय पौधों में पत्तियाँ छोटी या कांटों में रुपांतरित होती हैं। इसलिए केवल पहला और दूसरा अनुकूलन ही पूरी तरह सही है।

73. (D) जयपुर
भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (IMD) का राजस्थान राज्य के लिए मुख्य मौसम विज्ञान केंद्र (Meteorological Centre) राज्य की राजधानी जयपुर में स्थित है। यह केंद्र पूरे राज्य के लिए मौसम पूर्वानुमान, मानसूनी चेतावनियाँ, तापमान और वर्षा के आंकड़े एकत्र करने तथा आपदा प्रबंधन हेतु मौसम संबंधी बुलेटिन जारी करने के लिए अधिकृत प्राथमिक संस्थान के रूप में कार्य करता है।

74. (A) जयपुर
राजस्थान में गर्जन के साथ आंधी, मूसलाधार वर्षा और धूल भरी आंधियों जैसी अप्रत्याशित चरम मौसमी घटनाओं का सटीक व तात्कालिक पूर्वानुमान (Nowcasting) लगाने के लिए पहला डॉप्लर वेदर रडार (DWR) जयपुर में स्थापित किया गया था। यह रडार 100 किमी से अधिक त्रिज्या के वायुमंडलीय आवरण में होने वाले सूक्ष्म परिवर्तनों और बादलों की हलचल की निरंतर वास्तविक समय में निगरानी करता है।

75. (C) एक मानक 30 से 50 वर्ष का ऐतिहासिक जलवायु औसत।
भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (IMD) द्वारा किसी स्थान की सामान्य वर्षा या जलवायुवीय मानकों को निर्धारित करने के लिए दीर्घकालिक औसत (LPA) का प्रयोग किया जाता है। इसके तहत कम से कम 30 से 50 वर्षों की एक मानक लंबी अवधि के ऐतिहासिक वर्षा और तापमान आंकड़ों का सांख्यिकीय माध्य निकाला जाता है, जिससे वार्षिक और मानसूनी विचलन का सटीक मूल्यांकन संभव होता है।

76. (B) जैसलमेर
सांख्यिकीय जलवायु आंकड़ों के अनुसार राजस्थान का जैसलमेर जिला अपनी वार्षिक वर्षा में उच्चतम 'परिवर्तनशीलता गुणांक' (Coefficient of Variation) प्रदर्शित करता है। इसका तात्पर्य यह है कि यहाँ की वर्षा अत्यधिक अनिश्चित और अप्रत्याशित होती है। किसी वर्ष यहाँ नाममात्र की वर्षा होती है तो किसी वर्ष एकाएक अतिवृष्टि हो जाती है। वर्षा में यह भारी अनिश्चितता इसे सर्वाधिक जोखिमयुक्त बनाती है।

77. (A) झालावाड़, जयपुर, जोधपुर, जैसलमेर
शुष्कता सूचकांक के बढ़ते क्रम (कम शुष्क से अत्यधिक शुष्क) का सही अनुक्रम झालावाड़ से प्रारंभ होता है, जो अति-आर्द्र होने के कारण सबसे कम शुष्क है। इसके बाद उप-आर्द्र जयपुर, फिर अर्ध-शुष्क जोधपुर और अंत में अत्यधिक शुष्क मरुस्थलीय जैसलमेर आता है। पूर्व और दक्षिण-पूर्व से पश्चिम की ओर बढ़ने पर शुष्कता की मात्रा निरंतर बढ़ती जाती है।

78. (C) बांसवाड़ा में हनुमानगढ़ की तुलना में अधिक वर्षा और कम तीव्र शीतकालीन स्थितियां पाई जाती हैं।
बांसवाड़ा राज्य के सुदूर दक्षिण में स्थित अति-आर्द्र जिला है जहाँ वर्षा अत्यधिक (लगभग 90 सेमी) होती है और कर्क रेखा

Click Here to Buy book on Amazon

40. राजस्थान के कई जिलों में भूजल गंभीर रुप से दूषित है, जिससे एक ऐसा भौगोलिक क्षेत्र बन गया है जिसे ऐतिहासिक रुप से 'बांका पट्टी' या 'कुबड़ पट्टी' कहा जाता है। यह क्षेत्र मुख्य रुप से किस खनिज की अधिकता से प्रभावित है?
(A) आर्सेनिक यौगिक
(B) घुला हुआ लोहा
(C) फ्लोराइड
(D) उच्च नाइट्रेट सामग्री

41. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A) : बनास नदी को बोलचाल की भाषा में 'वर्णाशा' या 'वन की आशा' कहा जाता है।
कारण (R) : यह राजस्थान की एकमात्र नदी है जो थार मरुस्थल से होकर वर्ष भर गहरा बारहमासी प्रवाह बनाए रखती है।
(A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) अभिकथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) अभिकथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

42. माही नदी किस भौगोलिक स्थान से निकलती है?
(A) मध्य प्रदेश की विंध्य श्रेणी में मेहद झील
(B) राजस्थान की उत्तरी अरावली श्रेणी में बैराठ की पहाड़ियाँ
(C) मालवा पठार क्षेत्र में स्थित जनापाव की पहाड़ियाँ
(D) गुजरात के जूनागढ़ जिले में स्थित गिरनार की पहाड़ियाँ

43. पवित्र पुष्कर झील के चारों ओर पारंपरिक रूप से कितने स्नान घाट बने हुए हैं?
(A) 24 (B) 52
(C) 108 (D) 1001

44. जवाई बांध पश्चिमी राजस्थान के सूखाग्रस्त क्षेत्रों को महत्वपूर्ण सिंचाई और पेयजल आपूर्ति प्रदान करता है। यह भौगोलिक रूप से किस जिले में स्थित है?
(A) जोधपुर
(B) पाली
(C) बाड़मेर
(D) जालौर

45. सूची-I (पारंपरिक जल संरचना) को सूची-II (संबंधित प्राथमिक क्षेत्र/समुदाय) से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर का चयन कीजिए:
सूची I : (पारंपरिक जल संरचना)
P. खडीन
Q. जोहड़
R. टांका
S. झालरा
सूची II : (संबंधित प्राथमिक क्षेत्र/समुदाय)
1. शेखावाटी क्षेत्र
2. जोधपुर/मारवाड़ (सामुदायिक कुंड)
3. जैसलमेर के पालीवाल ब्राह्मण
4. पश्चिमी शुष्क आवास
(A) P-3, Q-1, R-4, S-2
(B) P-1, Q-3, R-4, S-2
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

NODIA

46. घग्गर नदी आंतरिक प्रवाह प्रणाली का एक प्रमुख उदाहरण है। हनुमानगढ़ और श्रीगंगानगर जिलों में इस नदी का उपजाऊ, समतल पाट (तल) स्थानीय रूप से किस नाम से जाना जाता है?
(A) खादर
(B) रोही
(C) नाली
(D) मगरा

47. निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प राजस्थान में चंबल नदी में इसके दाएँ तट से मिलने वाली नदियों की सही पहचान करता है?
(A) बनास, मेज, कोठारी और खारी
(B) सोम, जाखम, अनास और मोरेन
(C) सुकड़ी, बांडी, जवाई और गुहिया
(D) काली सिंध, पार्वती और आहू

48. मुख्य नदी के साथ उनके संगम बिंदुओं के आधार पर लूनी नदी की निम्नलिखित सहायक नदियों को उत्तर से दक्षिण के सही क्रमानुसार व्यवस्थित कीजिए:
1. जवाई
2. बांडी
3. सुकड़ी
4. जोजरी
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही क्रम का चयन कीजिए:
(A) 4, 2, 3, 1
(B) 2, 4, 1, 3
(C) 4, 3, 2, 1
(D) 3, 2, 4, 1

49. महान ऐतिहासिक महत्व की एक कृत्रिम जल निकाय, राजसमंद झील में मुख्य रूप से किस नदी के पानी को मोड़कर जल पहुँचाया गया था?
(A) कोठारी
(B) गोमती
(C) बेड़च
(D) खारी

50. एक पारंपरिक खडीन की संरचनात्मक रूपरेखा में, जल को रोकने के लिए ढलान वाली भूमि के निचले किनारे पर बनाए गए मुख्य कच्चे बांध का वर्णन करने के लिए किस शब्द का प्रयोग किया जाता है?
(A) अगोर
(B) पायतन

Q. माही बजाज सागर बांध
R. जवाई बांध
S. राणा प्रताप सागर बांध

सूची II : (नदी)
1. माही
2. चंबल
3. बनास
4. जवाई

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

73. किस आधुनिक अंतरराज्यीय नहर परियोजना ने अनुकूलतम जल संरक्षण सुनिश्चित करने के लिए राजस्थान में अपने सभी कमान क्षेत्रों के लिए सूक्ष्म सिंचाई (फव्वारा और ड्रिप प्रणाली) को अनिवार्य कर दिया?
(A) इंदिरा गांधी नहर परियोजना
(B) गंग नहर परियोजना
(C) राजीव गांधी लिफ्ट नहर
(D) नर्मदा नहर परियोजना

74. निम्नलिखित में से कौन अलवर और शेखावाटी क्षेत्रों में प्रचलित 'जोहड़' की संरचना का सटीक वर्णन करता है?
(A) भूजल पुनर्भरण के लिए सतही अपवाह को रोकने हेतु ढलान पर बनाया गया एक कच्चा चेक डैम।
(B) पूरी तरह से बारीक नक्काशीदार पीले बलुआ पत्थर के खंडों से निर्मित एक बहुमंजिला भूमिगत सीढ़ीदार कुआं।
(C) गहरे संकीर्ण जलभृतों से प्राचीन जल निकालने के लिए अभिकल्पित एक गहरी नलकूप प्रणाली।
(D) अलग-अलग खेतों में जल के प्रवाह को विनियमित करने के लिए उपयोग किया जाने वाला एक ऊँचा पक्का नहर वितरण मंच।

75. केंद्रीय भूजल बोर्ड (CGWB) के वर्गीकरण के अनुसार, जब राजस्थान में किसी भूजल खंड को 'अति-दोहित' के रूप में वर्गीकृत किया जाता है, तो इसका क्या अर्थ है?
(A) भूजल औद्योगिक अपशिष्ट से अत्यधिक दूषित है जिससे यह किसी भी उपयोग के अयोग्य हो गया है।
(B) वार्षिक भूजल निष्कर्षण वार्षिक शुद्ध भूजल पुनर्भरण से अधिक है।
(C) खंड में प्राकृतिक उत्श्रुत कुएँ हैं जो लगातार बहते रहते हैं।
(D) भूजल स्तर इतना गहरा है कि आधुनिक बेधन तकनीक उस तक नहीं पहुँच सकती।

76. 'सुजलाम सुफलाम' जल संरक्षण अभियान मुख्य रूप से किस नदी बेसिन के नदी तलों और जल निकायों को पुनर्जीवित करने से संबंधित था?
(A) लूनी बेसिन
(B) माही बेसिन
(C) बनास बेसिन
(D) घग्गर बेसिन

77. बीसलपुर बांध के अलावा, निम्नलिखित में से कौन-सा बांध भी बनास नदी पर बनाया गया है?
(A) नंदसमंद बांध
(B) मेजा भंडारण बांध
(C) मोरेल सिंचाई बांध
(D) पांचना पक्का बांध

78. निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प उन जिलों के सही क्रम को दर्शाता है जिनसे होकर चंबल नदी राजस्थान में प्रवेश बिंदु से उत्तर प्रदेश की ओर निकास बिंदु तक बहती है?
(A) चित्तौड़गढ़, बूंदी, कोटा, करौली, सवाई माधोपुर, धौलपुर
(B) चित्तौड़गढ़, झालावाड़, बारां, कोटा, सवाई माधोपुर, धौलपुर
(C) चित्तौड़गढ़, कोटा, बूंदी, सवाई माधोपुर, करौली, धौलपुर
(D) चित्तौड़गढ़, उदयपुर, कोटा, बूंदी, भरतपुर, धौलपुर

79. नदियों का कौन-सा समूह साँभर झील में घुले हुए लवण लाने वाले जल का प्राथमिक स्रोत है?
(A) लूनी, सुकड़ी, बांडी, जवाई और गुहिया
(B) बनास, बेड़च, मेनाल, कोठारी और खारी
(C) साबी, सोटा, दोहान, साहिबी और कृष्णावती
(D) मेंथा, रुपनगढ़, खारी और खंडेला

80. राजसमंद झील के बांध (पाल) पर स्थित जटिल संगमरमर के मंडपों और अलंकृत मेहराबों को सामूहिक रुप से क्या कहा जाता है?
(A) छतरी बाग
(B) सहेलियों की बाड़ी
(C) नौचौकी पाल
(D) बड़ा बाग

81. जयसमंद झील के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह गोमती नदी पर बांध बनाकर बनाई गई एक कृत्रिम झील है।
II. इसमें कई द्वीप हैं जो मूल भील और मीणा जनजातियों द्वारा बसे हुए हैं।
III. राणकपुर जैन मंदिर सीधे इसके मुख्य द्वीप पर स्थित हैं।

दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

82. रुपारेल नदी, जो आंतरिक अपवाह प्रणाली का हिस्सा है और ऐतिहासिक रुप से लोहागढ़ किले की खाई को भरने के लिए महत्वपूर्ण थी, मुख्य रूप से किन जिलों से होकर बहती है?
(A) जोधपुर और पाली

Downloaded from www.pdf.tube

IV. राष्ट्रीय चंबल अभयारण्य अति संकटग्रस्त घड़ियाल के संरक्षण के लिए समर्पित है।

दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(A) केवल I, II और IV
(B) केवल II और III
(C) केवल I, III और IV
(D) केवल I और IV

61. टांका निर्माण में, पारंपरिक रूप से जलग्रहण क्षेत्र (अगोर) पर राख, बजरी और चूने जैसी सामग्रियाँ का उपयोग मुख्य रूप से किस लिए किया जाता था?

(A) सतही अपवाह को अधिकतम करने और रिसाव को रोकने के लिए मिट्टी के छिद्रों को बंद करना।
(B) संरचना के समग्र सौंदर्य और सांस्कृतिक सजावट को बढ़ाना।
(C) स्थानीय धरातलीय तापमान में परिवर्तन करके सूक्ष्म स्तर पर कृत्रिम वर्षा कराना।
(D) शुष्क वायुमंडलीय वर्षा में प्राकृतिक रूप से मौजूद अत्यधिक अम्लीय यौगिकों को बेअसर करना।

62. राजस्थान की कौन-सी प्रमुख नदी राजसमंद जिले में अरावली श्रेणी के पूर्वी ढलानों से, विशेष रूप से कुंभलगढ़ के पास से निकलती है?

(A) चंबल (B) लूनी
(C) बनास (D) साबरमती

63. चंबल नदी पर बने बांधों की श्रृंखला में से कौन-सा बांध मध्य प्रदेश में स्थित है, न कि राजस्थान में?

(A) राणा प्रताप सागर बांध
(B) जवाहर सागर बांध
(C) कोटा बैराज
(D) गांधी सागर बांध

64. साबरमती नदी गुजरात के लिए एक महत्वपूर्ण जलमार्ग है, लेकिन इसका बेसिन राजस्थान के किस जिले से निकलता है?

(A) सिरोही
(B) डूंगरपुर
(C) उदयपुर
(D) बांसवाड़ा

65. दक्षिण-पश्चिमी राजस्थान में उपजाऊ सामाजिक-सांस्कृतिक और भौगोलिक पट्टी जिससे होकर लूनी नदी और उसकी सहायक नदियाँ बहती हैं, पारंपरिक रूप से क्या कहलाती है?

(A) वागड़ क्षेत्र
(B) गोडवाड़ क्षेत्र
(C) मेवात क्षेत्र
(D) मेरवाड़ा क्षेत्र

66. जयसमंद झील को एक अन्य लोकप्रिय ऐतिहासिक नाम से भी जाना जाता है। वह क्या है?

(A) पिछोला झील
(B) नक्की झील
(C) आना सागर झील
(D) ढेबर झील

NODIA

67. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।

अभिकथन (A) : इंदिरा गांधी नहर परियोजना ने उत्तर-पश्चिमी राजस्थान में कृषि उत्पादकता में भारी वृद्धि की है।

कारण (R) : IGNP कमान क्षेत्र में पर्याप्त जल निकासी के बिना गहन नहर सिंचाई के परिणामस्वरूप कई स्थानों पर गंभीर जलजमाव और मृदा लवणता उत्पन्न हुई है।

(A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) अभिकथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) अभिकथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

68. पवित्र पुष्कर झील में किस हिंदू चंद्र मास के दौरान विश्व प्रसिद्ध मेला आयोजित होता है, जिसमें हजारों श्रद्धालु और पशु व्यापारी आते हैं?

(A) चैत्र
(B) श्रावण
(C) कार्तिक
(D) माघ

69. आंतरिक अपवाह प्रणाली की एक महत्वपूर्ण मौसमी धारा साबी नदी, सेवर की पहाड़ियों से निकलती है। यह मुख्य रूप से किस राज्य की ओर बहती है और कहाँ समाप्त होती है?

(A) हरियाणा
(B) गुजरात
(C) मध्य प्रदेश
(D) पंजाब

70. निम्नलिखित में से कौन-सी नदी लूनी नदी की सहायक नदी नहीं है?

(A) जोजरी
(B) सुकड़ी
(C) गुहिया
(D) सोम

71. परवन, निवाज़ और आहू राजस्थान में किस विस्तृत नदी बेसिन से जुड़ी महत्वपूर्ण उप-सहायक नदियाँ हैं?

(A) लूनी नदी बेसिन तंत्र
(B) चंबल बेसिन
(C) साबरमती नदी बेसिन तंत्र
(D) माही नदी बेसिन तंत्र

72. सूची-I (बांध/परियोजना) को सूची-II (नदी) से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर का चयन कीजिए:

सूची I : (बांध/परियोजना)

P. बीसलपुर बांध

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) एक ऐसा अपवाह प्रतिरुप जहाँ नदियाँ और धाराएँ किसी महासागर या समुद्र तक पहुँचने में विफल रहती हैं और इसके बजाय किसी आंतरिक बेसिन, झील में गिरती हैं या रेत में विलुप्त हो जाती हैं।
अंतःस्थलीय अपवाह प्रणाली से तात्पर्य ऐसे अपवाह प्रतिरुप से है जिसमें नदियाँ तथा मौसमी जलधाराएँ अपना जल किसी महासागर या समुद्र तक नहीं पहुँचा पाती हैं। इस प्रणाली की नदियाँ किसी आंतरिक गर्त, झील में गिरती हैं या मरुस्थलीय रेत में विलुप्त हो जाती हैं। राजस्थान में शुष्क जलवायु तथा बालुका स्तूपों के विस्तार के कारण यह प्रणाली राज्य के विशाल भूभाग पर पाई जाती है।

2. (C) 60 प्रतिशत
राजस्थान का जल अपवाह तंत्र तीन मुख्य श्रेणियों में विभाजित है, जिनमें आंतरिक प्रवाह प्रणाली सबसे विस्तृत है। राज्य के कुल अपवाह क्षेत्र का लगभग 60% भाग इसी आंतरिक प्रवाह प्रणाली के अंतर्गत वर्गीकृत है। राजस्थान के अरावली पर्वतमाला के पश्चिमी तथा उत्तरी भागों में वर्षा की कमी और रेतीली मिट्टी के अधिक विस्तार के कारण अधिकांश नदियाँ समुद्र तक पहुँचे बिना ही धरातल में समाहित हो जाती हैं।

3. (A) चंबल
चंबल नदी राजस्थान की बाह्य या समुद्री अपवाह प्रणाली का एक महत्वपूर्ण भाग है। यह नदी अंततः यमुना नदी में मिलती है, जो आगे चलकर गंगा नदी के साथ मिलकर बंगाल की खाड़ी में अपना जल विसर्जित करती है। इसके विपरीत, कांतली, साबी और काकनेय नदियाँ राजस्थान के आंतरिक अपवाह तंत्र की नदियाँ हैं, जो किसी भी समुद्र में गिरे बिना राज्य की सीमाओं में विलुप्त हो जाती हैं।

4. (C) P-3, Q-4, R-1, S-2
राजस्थान की प्रमुख नदियों के उद्गम स्थल भौगोलिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। बनास नदी का उद्गम राजसमंद जिले में स्थित खमनोर की पहाड़ियों से होता है। लूनी नदी अजमेर जिले की नाग पहाड़ियों से निकलती है। साबी नदी का उद्गम जयपुर क्षेत्र में सेवर की पहाड़ियों से होता है, जबकि कांतली नदी सीकर जिले में स्थित खंडेला की पहाड़ियों से निकलकर शेखावाटी क्षेत्र में बहती है।

5. (A) जैसलमेर
खडीन एक पारंपरिक वर्षा जल संचयन तथा शुष्क कृषि प्रणाली है, जिसे मुख्य रूप से राजस्थान के जैसलमेर जिले में अपनाया जाता है। इस प्रणाली का विकास 15वीं शताब्दी में पालीवाल ब्राह्मणों द्वारा किया गया था। इसमें ढलानदार धरातल पर बहते वर्षा जल को रोककर कृषि भूमि की नमी बढ़ाई जाती है, जिससे शुष्क मरुस्थलीय वातावरण में भी बिना अतिरिक्त सिंचाई के रबी की फसलें उगाई जा सकती हैं।

6. (A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
साँभर झील भारत की सबसे बड़ी अंतःस्थलीय खारे पानी की झील है, जो प्राकृतिक रूप से एक विस्तृत बेसिन में स्थित है। इस झील में मेंथा, रुपनगढ़, खारी और खंडेला जैसी कई मौसमी नदियाँ चारों ओर के जलस्राव क्षेत्रों से पानी लाती हैं। ये नदियाँ अपने साथ आसपास की चट्टानों और मिट्टी से घुले हुए लवण बहाकर लाती हैं, जिसके कारण झील के जल में लवणता का स्तर अत्यधिक बढ़ जाता है।

7. (B) मध्य प्रदेश में जनापाव की पहाड़ियाँ
चंबल नदी का उद्गम मध्य प्रदेश में महू के निकट विंध्य श्रेणी की जनापाव पहाड़ियों से होता है। यह राजस्थान की एकमात्र ऐसी नदी है जो वर्ष भर निरंतर बहती है, इसीलिए इसे सदावाहिनी या बारहमासी नदी कहा जाता है। पौराणिक साहित्य में इस नदी को चर्मण्वती के नाम से भी जाना जाता है। राजस्थान में यह चित्तौड़गढ़ जिले के चौरासीगढ़ के समीप प्रवेश करती है।

8. (A) केवल I और II
लूनी नदी का उद्गम अजमेर जिले की नाग पहाड़ से होता है। अपने प्रवाह क्रम में बालोतरा तक इसका जल मीठा रहता है, किंतु तत्पश्चात मृदा में लवण की उपस्थिति के कारण यह अत्यधिक खारा हो जाता है। यह नदी अपना जल खंभात की खाड़ी में विसर्जित न करके कच्छ के रण के दलदली क्षेत्र में विलुप्त हो जाती है, इसलिए यह आंतरिक अपवाह की श्रेणी में आती है।

9. (D) वर्षा जल के एकत्रण और भंडारण के लिए निर्मित एक भूमिगत कुंड (हौज)।
टांका पश्चिमी राजस्थान के शुष्क एवं अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में वर्षा जल संचयन की एक पारंपरिक भूमिगत संरचना है। यह पक्की ढकी हुई एक गोलाकार या आयताकार टंकी होती है, जिसमें घरों अथवा छतों से एकत्र होने वाले वर्षा जल को भविष्य में पीने के लिए संग्रहीत किया जाता है। इसका निर्माण मुख्य रुप से जल संकट के समय शुद्ध एवं शीतल पेयजल की उपलब्धता बनाए रखने के लिए किया जाता है।

10. (D) दक्षिणी राजस्थान
राजस्थान में माही नदी का बेसिन मुख्य रुप से राज्य के दक्षिणी भौगोलिक क्षेत्र में स्थित है। यह नदी मध्य प्रदेश से निकलकर राजस्थान के बांसवाड़ा तथा डूंगरपुर जिलों से होकर बहती है और तत्पश्चात गुजरात में प्रवेश करती है। इस नदी बेसिन को वागड़ क्षेत्र या छप्पन का मैदान भी कहा जाता है। यह क्षेत्र

Click Here to Buy book on Flipkart

(B) सीकर और झुंझुनूं
(C) जैसलमेर और बाड़मेर
(D) अलवर और भरतपुर

83. मध्य प्रदेश से चंबल नदी किस विशिष्ट भौगोलिक स्थान पर राजस्थान की राज्य सीमा में प्रवेश करती है?
(A) चौरासीगढ़
(B) रावतभाटा
(C) खातोली
(D) केशोरायपाटन

84. जल अपवाह कृषि की उत्कृष्ट 'खडीन' प्रणाली को 15वीं शताब्दी में जैसलमेर क्षेत्र में किस समुदाय द्वारा ऐतिहासिक रूप से सबसे पहले शुरू और परिपूर्ण किया गया था?
(A) मारवाड़ का बिश्नोई समुदाय
(B) लोक संगीतकार मांगणयार समुदाय
(C) पालीवाल ब्राह्मण
(D) पारंपरिक लंगा संगीतकार

85. राजस्थान में पारंपरिक जल संरक्षण तकनीकों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. टांका एक भूमिगत कुंड है जो मुख्य रूप से पश्चिमी राजस्थान में वर्षा जल संचयन के लिए बनाया जाता है।
II. जोहड़ आमतौर पर एक कच्चा चेक डैम होता है जो अपवाह को रोकने और भूजल को पुनर्भृत करने के लिए बनाया जाता है।
III. खडीन पारंपरिक रूप से जैसलमेर के पालीवाल ब्राह्मणों द्वारा विकसित की गई थी।
IV. नाड़ी विशेष रूप से इंदिरा गांधी नहर परियोजना के दौरान शुरू की गई एक आधुनिक कंक्रीट संरचना है।
दिए गए कथनों में से कौन-सा/से गलत है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल III और IV
(C) केवल IV
(D) केवल II और IV

86. साबरमती नदी राजस्थान में केवल थोड़ी दूरी तय करती है। यह किस स्थान पर गुजरात राज्य में प्रवेश करती है?
(A) खेड़ब्रह्मा सीमा चौकी
(B) दांता वन क्षेत्र सीमा
(C) ईडर घाटी सीमा क्षेत्र
(D) कोटड़ा सीमा

87. लूनी नदी की कुल लंबाई लगभग 495 किमी है। गुजरात में प्रवेश करने से पहले इस कुल लंबाई का लगभग कितना अनुपात राजस्थान की सीमाओं के भीतर बहता है?
(A) 20% से कम
(B) लगभग 40%
(C) लगभग 65%
(D) 90% से अधिक

88. राजस्थान के कई जिलों में लागू की गई 'अटल भूजल योजना' मुख्य रूप से जल प्रबंधन के किस विशिष्ट पहलू पर केंद्रित है?
(A) सभी प्रमुख बारहमासी नदियों पर बड़े पैमाने पर जलविद्युत बांधों का निर्माण करना।
(B) क्षेत्रीय पेयजल उद्देश्यों के लिए साँभर झील के आंतरिक खारे पानी को अलवणीकृत करना।
(C) भूजल की कमी को रोकने के लिए सहभागी भूजल प्रबंधन को बढ़ावा देना।
(D) उच्च क्षमता वाले भूमिगत पाइपलाइन जाल के माध्यम से प्रमुख नदी प्रणालियों को आपस में जोड़ना।

89. बनास नदी भीलवाड़ा जिले के बीगोद के पास एक प्रसिद्ध 'त्रिवेणी संगम' (तीन नदियों का संगम) बनाती है। इस विशिष्ट संगम पर कौन-सी दो नदियाँ बनास में मिलती हैं?
(A) सोम और जाखम
(B) कोठारी और खारी
(C) डाई और ढील
(D) बेड़च और मेनाल

90. सिंचाई बुनियादी ढांचे के जीर्णोद्धार और जल उपयोगकर्ता संघों को सशक्त बनाने के उद्देश्य से 'राजस्थान जल क्षेत्र आजीविका सुधार परियोजना' (RWSLIP) को किस अंतरराष्ट्रीय एजेंसी द्वारा वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है?
(A) जापान इंटरनेशनल कॉर्पोरेशन एजेंसी (JICA)
(B) विश्व बैंक समूह अंतर्राष्ट्रीय विकास संघ
(C) एशियाई विकास बैंक क्षेत्रीय अवसंरचना प्रभाग
(D) संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम वैश्विक जल सुविधा

www.nodia.in

Downloaded from www.pdf.tube

22. (A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
भौगोलिक अध्ययन में लूनी नदी को प्रायः आंतरिक अपवाह श्रेणी में शामिल किया जाता है क्योंकि यह नदी किसी भी खुले महासागर या समुद्र तक पहुँचने में समर्थ नहीं है। अजमेर के नाग पहाड़ से निकलने के बाद यह पश्चिमी राजस्थान के मरुस्थलीय मैदानी भाग में बहती है और अंततः गुजरात राज्य में स्थित कच्छ के रण की दलदली और रेतीली भूमि में विलीन होकर समाप्त हो जाती है।

23. (B) चंबल बेसिन से मानसून के अतिरिक्त पानी को जल की कमी वाले नदी बेसिनों में स्थानांतरित करना।
पूर्वी राजस्थान नहर परियोजना (ERCP) राज्य की एक महत्वाकांक्षी जल प्रबंधन और अंतर-बेसिन स्थानांतरण पहल है। इसका प्राथमिक उद्देश्य मानसून के दौरान चंबल नदी बेसिन और उसकी सहायक नदियों में उपलब्ध अतिरिक्त जल को मोड़कर दक्षिणी एवं पूर्वी राजस्थान के जल संकट से जूझ रहे 13 जिलों में पहुँचाना है। इससे इन क्षेत्रों में पेयजल आपूर्ति तथा फसलों की सिंचाई हेतु पर्याप्त जल उपलब्धता सुनिश्चित की जा सकेगी।

24. (C) बावड़ी
बावड़ी (सीढ़ीदार कुआं) राजस्थान की एक ऐसी पारंपरिक जल वास्तुकला है जो न केवल वर्षा जल संचयन के काम आती है, बल्कि अपने बहुस्तरीय भूमिगत स्थापत्य और कलात्मक नक्काशी के लिए भी जानी जाती है। प्राचीन काल में ये बावड़ियाँ विश्राम स्थलों, सामाजिक संवाद और सांस्कृतिक आयोजनों के प्रमुख केंद्र के रूप में कार्य करती थीं। बूंदी और आभानेरी की बावड़ियाँ इसके बेजोड़ स्थापत्य के उदाहरण हैं।

25. (D) बांसवाड़ा
माही बजाज सागर बांध राजस्थान के बांसवाड़ा जिले के बोरखेड़ा गाँव के समीप माही नदी पर निर्मित एक विशाल बहुउद्देशीय जल विद्युत एवं सिंचाई परियोजना है। यह बांध राज्य के दक्षिणी भाग में सिंचाई सुविधाओं के विस्तार, पेयजल आपूर्ति तथा विद्युत उत्पादन का एक प्रमुख माध्यम है। स्वतंत्रता सेनानी जमनालाल बजाज के नाम पर नामांकित यह बांध आदिवासी बहुल क्षेत्र के विकास का मुख्य आधार स्तंभ माना जाता है।

26. (A) केवल I और II
बनास नदी का उद्गम राजसमंद जिले में स्थित कुंभलगढ़ के पास खमनोर की पहाड़ियों से होता है। यह राजस्थान की सीमा के भीतर बहने वाली सबसे लंबी नदी है, जिसका संपूर्ण प्रवाह क्षेत्र राज्य के अंदर ही सीमित है। यह नदी सीधे यमुना में नहीं मिलती, बल्कि सवाई माधोपुर जिले के रामेश्वरम नामक स्थान पर चंबल नदी में विलीन हो जाती है, जहाँ एक प्रसिद्ध संगम बनता है।

27. (B) जयपुर, अजमेर और टोंक
बीसलपुर बांध टोंक जिले की देवली तहसील में बनास नदी पर निर्मित एक प्रसिद्ध गुरुत्वीय बांध है। इस बांध परियोजना का प्राथमिक उद्देश्य राजस्थान के मध्य-पूर्वी जिलों में पेयजल संकट का समाधान करना है। यह बांध विशेष रूप से जयपुर, अजमेर और टोंक शहरों के साथ-साथ मार्ग में आने वाले सैकड़ों गाँवों को दैनिक उपभोग के लिए निरंतर और सुरक्षित पेयजल की आपूर्ति प्रदान करता है।

28. (B) तरुण भारत संघ
राजस्थान में जल संरक्षण एवं पर्यावरण संवर्धन के क्षेत्र में 'तरुण भारत संघ' नामक गैर-सरकारी संगठन ने असाधारण कार्य किया है। प्रसिद्ध जल संरक्षणवादी और 'भारत के जलपुरुष' मैग्सेसे पुरस्कार विजेता राजेंद्र सिंह के नेतृत्व में इस संस्था ने स्थानीय ग्रामीणों को एकजुट कर हजारों पारंपरिक 'जोहड़' का निर्माण कराया। इसके माध्यम से अलवर और शेखावाटी क्षेत्र की कई सूखी नदियाँ पुनः जीवित हो गईं।

29. (B) बनास, लूनी, चंबल, माही
राजस्थान राज्य की सीमाओं के भीतर नदी बेसिनों के कुल अपवाह क्षेत्र के आधार पर उनका सही घटता हुआ क्रम बनास, लूनी, चंबल और माही है। बनास नदी का पूरा बेसिन क्षेत्र केवल राजस्थान के भीतर ही विस्तृत है, जिससे इसका राज्यस्तरीय अपवाह क्षेत्रफल सर्वाधिक है। इसके बाद लूनी नदी बेसिन का स्थान आता है, जबकि चंबल और माही नदियों के बेसिन अन्य पड़ोसी राज्यों में भी फैले हैं।

30. (C) विकेंद्रीकृत जल संचयन और सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से गाँवों को जल क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाना।
राजस्थान सरकार द्वारा शुरू किए गए 'मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन अभियान' (MJSA) का मूल उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में विकेंद्रीकृत जल प्रबंधन और सामुदायिक सहयोग के माध्यम से जल आत्मनिर्भरता हासिल करना था। इस योजना के तहत पारंपरिक जल निकायों जैसे तालाबों, बावड़ियों, जोहड़ों के पुनर्निर्माण तथा नए एनिकटों के निर्माण पर बल दिया गया ताकि वर्षा जल का अधिकतम संचयन हो सके और भूजल स्तर में सुधार हो।

31. (D) शेखावाटी क्षेत्र
कांतली नदी राजस्थान के आंतरिक अपवाह तंत्र की एक प्रमुख मौसमी नदी है, जो सीकर जिले की खंडेला पहाड़ियों से निकलती है। यह नदी पूरी तरह से राज्य के शेखावाटी भौगोलिक क्षेत्र (सीकर, नीम का थाना और झुंझुनूं) में प्रवाहित होती है। कांतली नदी का प्रवाह क्षेत्र स्थानीय रूप से 'तोरावाटी' कहलाता है। अंततः यह नदी चूरू जिले की सीमा के निकट बालुका स्तूपों में समाकर समाप्त हो जाती है।

32. (C) रावतभाटा
चंबल नदी पर निर्मित राणा प्रताप सागर बांध राजस्थान के चित्तौड़गढ़ जिले के रावतभाटा नामक स्थान पर स्थित है। जल भराव क्षमता और भराव आयतन की दृष्टि से यह राजस्थान का सबसे बड़ा बांध माना जाता है। इस बांध के साथ एक विशाल जलविद्युत उत्पादन केंद्र भी स्थापित है। रावतभाटा अपने परमाणु ऊर्जा संयंत्र और इस विशाल जलाशय के कारण राज्य का एक प्रमुख औद्योगिक केंद्र है।

NODIA

अपनी विशिष्ट स्थलाकृति और समृद्ध जनजातीय संस्कृति के लिए जाना जाता है।

11. (B) कृषि नलकूप सिंचाई के लिए अत्यधिक भूजल निष्कर्षण।
राजस्थान में भूजल संसाधनों के तीव्र दोहन और 'डार्क जोन' की समस्या का प्रमुख कारण कृषि कार्यों के लिए नलकूपों द्वारा अत्यधिक मात्रा में जल निष्कर्षण है। सीमित वर्षा और सतही जल निकायों की कमी के कारण किसान सिंचाई आवश्यकताओं के लिए भूजल पर निर्भर हैं। इस अनियंत्रित दोहन से प्राकृतिक पुनर्भरण की तुलना में निष्कर्षण की दर बहुत अधिक हो गई है, जिससे भूजल स्तर गिर गया है।

12. (A) 2, 4, 1, 3
चंबल नदी पर निर्मित प्रमुख बांधों का दक्षिण से उत्तर यानी उद्गम से मुहाने की ओर क्रम इस प्रकार है। सबसे पहले मध्य प्रदेश में गांधी सागर बांध आता है, उसके बाद राजस्थान के चित्तौड़गढ़ में राणा प्रताप सागर बांध स्थित है। इसके आगे कोटा जिले में जवाहर सागर बांध तथा अंत में कोटा शहर के निकट कोटा बैराज स्थित है, जिसका उपयोग केवल सिंचाई नहरों के संचालन हेतु किया जाता है।

13. (A) बाबा का भाकड़ा
जयसमंद झील, जिसे ढेबर झील भी कहा जाता है, एशिया की विशालतम कृत्रिम मीठे पानी की झीलों में से एक है। इस झील के जल क्षेत्र में कुल सात छोटे-बड़े द्वीप स्थित हैं। इन द्वीपों में से सबसे बड़े द्वीप का नाम 'बाबा का भाकड़ा' है, जबकि सबसे छोटे द्वीप को 'प्यारी' कहा जाता है। इन द्वीपों पर स्थानीय भील एवं मीणा समुदाय के लोग निवास करते हैं।

14. (C) गुजरात
साबरमती नदी का उद्गम राजस्थान के उदयपुर जिले की अरावली पहाड़ियों में स्थित झाड़ोल तहसील से होता है। राजस्थान में केवल कुछ दूरी तक बहने के पश्चात यह नदी दक्षिण दिशा की ओर बहते हुए गुजरात राज्य में प्रवेश करती है। यह गुजरात की प्रमुख नदियों में से एक है, जहाँ इसके तट पर अहमदाबाद और गांधीनगर जैसे प्रमुख शहर बसे हैं, और अंततः यह खंभात की खाड़ी में गिरती है।

15. (B) केवल III
इंदिरा गांधी नहर परियोजना का मुख्य उद्देश्य केवल कृषि सिंचाई तक सीमित नहीं है, बल्कि यह पश्चिमी राजस्थान के शुष्क जिलों में बड़े पैमाने पर नगर निगमों तथा ग्रामीण बस्तियों को पेयजल आपूर्ति भी प्रदान करती है। यह नहर पंजाब के हरिके बैराज से निकलती है और इसे कंवर सैन ने परिकल्पित किया था। इसके कमान क्षेत्र में अत्यधिक सिंचाई के कारण जलभराव एवं लवणता जैसी समस्याएं उत्पन्न हुई हैं।

16. (C) अपने जलग्रहण क्षेत्र से सतही अपवाह को संचित करने के लिए निर्मित एक ग्रामीण तालाब।
राजस्थान की पारंपरिक जल प्रबंधन प्रणाली में 'नाड़ी' एक छोटा कच्चा ग्रामीण तालाब होता है, जिसे स्थानीय जलग्रहण क्षेत्र से आने वाले सतही अपवाह जल को एकत्र करने के लिए बनाया जाता है। यह संरचना ग्रामीण इलाकों में मनुष्यों तथा मवेशियों के लिए जल का प्राथमिक स्रोत रही है। नाड़ी का निर्माण आमतौर पर बलुई या मरुस्थलीय मैदानी क्षेत्रों में प्राकृतिक ढलान वाले स्थानों पर किया जाता है।

17. (B) लूनी नदी तंत्र
जवाई नदी पश्चिमी राजस्थान में प्रवाहित होने वाली लूनी नदी की एक मुख्य सहायक नदी है। इसका उद्गम पाली जिले की बाली तहसील के गोरिया गाँव की पहाड़ियों से होता है। इस नदी पर पाली जिले के सुमेरपुर के पास जवाई बांध बनाया गया है, जिसे 'मारवाड़ का अमृत सरोवर' कहा जाता है। यह बांध जोधपुर, पाली तथा आसपास के सूखाग्रस्त क्षेत्रों में जल आपूर्ति का प्रमुख आधार है।

18. (D) बेड़च, कोठारी, खारी और मोरेल
बनास नदी अरावली की पहाड़ियों से निकलकर राजस्थान के मध्य-पूर्वी भाग में बहती है। इसकी मुख्य सहायक नदियों में बेड़च, कोठारी, खारी, मेनाल, ढील, सोहादरा और मोरेल नदियाँ शामिल हैं। ये सभी नदियाँ मिलकर बनास नदी बेसिन का निर्माण करती हैं। दूसरी ओर, सोम और जाखम नदियाँ माही नदी तंत्र की तथा सुकड़ी और बांडी नदियाँ लूनी नदी तंत्र की प्रमुख सहायक नदियाँ मानी जाती हैं।

19. (A) P-2, Q-4, R-1, S-3
राजस्थान की प्रसिद्ध झीलों का उनके संबंधित जिलों के साथ सही मिलान इस प्रकार है। ऐतिहासिक एवं धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण पुष्कर झील अजमेर जिले में स्थित है। प्रसिद्ध राजसमंद झील राजसमंद जिले में स्थित है। एशिया की विशाल कृत्रिम मीठे पानी की जयसमंद झील उदयपुर जिले में आती है, जबकि भारत की प्रसिद्ध खारे पानी की साँभर झील जयपुर ग्रामीण तथा नागौर की सीमा पर स्थित है।

20. (C) कनाडा
अजमेर जिले में स्थित प्रसिद्ध धार्मिक स्थल पुष्कर की प्राकृतिक झील में प्रदूषण नियंत्रण और गाद हटाने के लिए एक विशेष संरक्षण परियोजना चलाई गई थी। इस झील की सफाई तथा समग्र जीर्णोद्धार योजना में कनाडा सरकार के तकनीकी व वित्तीय सहयोग से कार्य शुरु किया गया था। इस अंतरराष्ट्रीय साझेदारी का मुख्य उद्देश्य झील के जल की गुणवत्ता में सुधार करना और इसके पारिस्थितिक संतुलन को पुनर्स्थापित करना था।

21. (A) चंबल बेसिन
राजस्थान में चंबल नदी का बेसिन तीव्र जल प्रवाह और मिट्टी के स्वभाव के कारण अत्यधिक अवनालिका अपरदन के लिए कुख्यात है। निरंतर अपरदन के कारण इस क्षेत्र में गहरी खाइयाँ, कंदराएँ तथा बीहड़ भूमि का निर्माण हो गया है, जिसे भौगोलिक भाषा में उत्खात भूमि या 'बैडलैंड स्थलाकृति' कहा जाता है। यह बीहड़ क्षेत्र मुख्य रुप से कोटा, बूंदी, सवाई माधोपुर, करौली और धौलपुर जिलों में विस्तृत है।

Click Here to Buy book on Amazon

(C) कुई
(D) धोरा

51. काकनेय (जिसे मसूरदी भी कहा जाता है) नदी राजस्थान की आंतरिक अपवाह प्रणाली की सबसे छोटी नदी है। रेत में विलुप्त होने से पहले यह किस स्थानीय झील का निर्माण करती है?
(A) बुझ झील
(B) पचपदरा झील
(C) लूणकरणसर झील
(D) ताल छापर झील

52. इंदिरा गांधी नहर तंत्र 'लिफ्ट नहरों' का बड़े पैमाने पर उपयोग करता है। इस परियोजना में लिफ्ट नहरों के उपयोग को आवश्यक बनाने वाला प्राथमिक भौगोलिक कारण क्या है?
(A) हरिके बैराज पर जल स्रोत की ऊँचाई पश्चिमी थार मरुस्थल के मैदान से काफी नीचे स्थित है।
(B) मुख्य नहर मार्ग अरावली श्रेणी के तीव्र शिखरों को काटता है जहाँ अत्यधिक जल-उत्तोलन की आवश्यकता होती है।
(C) मरुस्थल का प्राकृतिक ढाल पश्चिम की ओर है, जिसके कारण पूर्वी ऊँचे क्षेत्रों में जल पहुँचाने के लिए जल-उत्तोलन की आवश्यकता होती है।
(D) बहती नहर के जल का उच्च वेग लिफ्ट केंद्रों को संरचनात्मक अवरोधक के रूप में कार्य करने के लिए आवश्यक बनाता है।

53. साँभर झील के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह जयपुर, अजमेर और नागौर जिलों के त्रि-संगम पर स्थित है।
II. यह भारत के कुल नमक उत्पादन के 8% से अधिक का योगदान देती है।
III. भूवैज्ञानिक रूप से, यह प्लीज्तोसीन युग के दौरान उल्कापिंड के प्रभाव से बनी एक क्रेटर झील है।
दिए गए कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

54. लूनी नदी को अक्सर अर्ध-शुष्क पश्चिमी राजस्थान की जीवनरेखा माना जाता है। अजमेर के पास इसके उद्गम स्थल पर, पुष्कर में सरस्वती धारा से मिलने से पहले इसे शुरु में किस नाम से जाना जाता है?
(A) लवणवती
(B) मरुद्वृधा
(C) चर्मण्वती
(D) सागरमती

55. बीसलपुर बांध किस नदी पर निर्मित एक गुरुत्वीय बांध है?
(A) चंबल
(B) बनास
(C) लूनी
(D) माही

56. एक पारंपरिक 'टांका' के चारों ओर वैज्ञानिक रूप से निर्मित कृत्रिम जलग्रहण क्षेत्र के लिए निर्धारित शब्द क्या है, जिसे वर्षा जल को केंद्रीय कुंड में भेजने के लिए चिकना और ढलुआ बनाया जाता है?
(A) नाड़ी जलग्रहण बेसिन
(B) बावड़ी संरचना
(C) अगोर
(D) झालरा बाड़ा

57. सटीक ज्यामितीय स्वरुप के लिए जानी जाने वाली भारत की सबसे गहरी और सबसे बड़ी बावड़ियों में से एक, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध 'चांद बावड़ी' राजस्थान के किस कस्बे में स्थित है?
(A) बूंदी
(B) ओसियां
(C) राणकपुर
(D) आभानेरी

58. 'अरवरी संसद' राजस्थान में गठित एक अनूठा जन-स्तरीय संस्थान है। इसका प्राथमिक उद्देश्य है:
(A) पुनर्जीवित नदी के जल का सामुदायिक प्रबंधन और न्यायसंगत वितरण सुनिश्चित करना।
(B) राजस्थान और पड़ोसी राज्य हरियाणा के बीच अंतरराज्यीय नदी जल बंटवारे के जटिल विवादों में मध्यस्थता करना।
(C) राज्य के नगर निगमों में शहरी पेयजल दरों को विनियमित और मानकीकृत करना।
(D) सूखे से गंभीर रूप से प्रभावित छोटे किसानों को आपातकालीन वित्तीय सूक्ष्म ऋण प्रदान करना।

59. राजस्थान और भारत के मानचित्र में माही नदी एक अनूठी भौगोलिक विशेषता रखती है। निम्नलिखित में से कौन-सा कथन इस विशेषता का सर्वोत्तम वर्णन करता है?
(A) यह भारत की एकमात्र नदी है जो पूरी तरह से पूर्व से पश्चिम की ओर बहती है।
(B) यह राजस्थान की एकमात्र नदी है जो कर्क रेखा को दो बार पार करती है।
(C) यह भारत और पाकिस्तान के बीच सबसे लंबी प्राकृतिक अंतरराष्ट्रीय सीमा बनाती है।
(D) यह राजस्थान से निकलने वाली एकमात्र नदी है जो सीधे गंगा में मिलती है।

NODIA

60. चंबल नदी तंत्र के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह चित्तौड़गढ़ जिले के चौरासीगढ़ में राजस्थान में प्रवेश करती है।
II. यह एक गहरी खड्ड (गॉर्ज) से होकर बहती है और राजस्थान तथा मध्य प्रदेश के बीच सीमा बनाती है।
III. इसके प्राकृतिक अभयारण्य की स्थिति को बनाए रखने के लिए नदी बेसिन किसी भी प्रमुख जलविद्युत परियोजना से पूरी तरह रहित है।

33. (B) महाराणा जय सिंह
मेवाड़ के शासक महाराणा जय सिंह ने 17वीं शताब्दी (1685-1691 ईस्वी) में गोमती नदी पर पत्थर और चूने का विशाल बांध बनवाकर जयसमंद झील का निर्माण करवाया था। शासक के नाम पर ही इस भव्य झील का नाम जयसमंद रखा गया, जिसे स्थानीय रूप से ढेबर झील भी कहा जाता है। यह विशाल जलाशय अरावली की पहाड़ियों के मध्य स्थित है और उदयपुर जिले में जल का प्रमुख स्रोत है।

34. (D) माही नदी तंत्र
सोम और जाखम नदियाँ राजस्थान के दक्षिणी भाग में प्रवाहित होने वाली माही नदी की दो अत्यंत महत्वपूर्ण सहायक नदियाँ हैं। सोम नदी उदयपुर की बीछामेड़ा पहाड़ियों से निकलती है, जबकि जाखम नदी प्रतापगढ़ जिले की छोटी सादड़ी से निकलती है। ये दोनों नदियाँ डूंगरपुर जिले के बेणेश्वर नामक स्थान पर माही नदी से मिलती हैं, जहाँ प्रसिद्ध पवित्र 'त्रिवेणी संगम' का निर्माण होता है।

35. (A) जोहड़ भूजल पुनर्भरण के लिए एक कच्चा चेक डैम है, जबकि टांका एक भूमिगत कुंड है।
पारंपरिक जल संरचनाओं में 'जोहड़' मुख्य रूप से एक कच्चा चेक डैम या छोटा मिट्टी का बांध होता है जो वर्षा के बहते जल को रोककर भूजल तालिका को पुनर्भृत करता है। इसके विपरीत, 'टांका' एक पक्का ढका हुआ भूमिगत कुंड होता है जिसका निर्माण विशेष रूप से स्वच्छ वर्षा जल को सीधे संग्रहीत करके सुरक्षित पेयजल के रूप में वर्षों तक उपयोग करने हेतु किया जाता है।

36. (C) राज प्रशस्ति
राजसमंद झील की उत्तर-पूर्वी पाल, जिसे 'नौचौकी पाल' कहा जाता है, पर 25 काले संगमरमर के शिलालेख स्थापित हैं। इन पर संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण ऐतिहासिक ग्रंथ को 'राज प्रशस्ति' कहा जाता है। रणछोड़ भट्ट तैलंग द्वारा रचित यह प्रशस्ति विश्व की सबसे बड़ी शिलालेखीय रचनाओं में से एक है, जिसमें मेवाड़ राजवंश का विस्तृत इतिहास और झील निर्माण का ऐतिहासिक विवरण दर्ज है।

37. (A) साबरमती
वाकल, हथमती, मेषवा, वेत्रक और माजम नदियाँ साबरमती नदी तंत्र की प्रमुख सहायक नदियाँ हैं। इन नदियों का उद्गम मुख्य रूप से राजस्थान के दक्षिणी अरावली पर्वतीय क्षेत्रों (विशेषकर उदयपुर जिले) से होता है। राजस्थान से बहते हुए ये नदियाँ गुजरात की सीमा में प्रवेश करती हैं और साबरमती की मुख्य धारा में मिलकर उसे एक व्यापक जल प्रवाह प्रणाली का रूप प्रदान करती हैं।

38. (B) केवल III
अटल भूजल योजना राज्य द्वारा पूर्ण वित्त पोषित केवल बड़े बांध निर्माणों पर आधारित नहीं है, बल्कि यह केंद्र सरकार और विश्व बैंक के सहयोग से संचालित एक सामुदायिक भूजल प्रबंधन योजना है। देवास परियोजना उदयपुर में जल आपूर्ति करती है, शहरी भवनों हेतु वर्षा जल संचयन अनिवार्य है और अरवरी संसद सहभागी प्रबंधन का उदाहरण प्रस्तुत करती है। अतः केवल तीसरा विवरण असत्य है।

39. (B) खडीन
खडीन एक पारंपरिक जल संचयन और शुष्क कृषि पद्धति है। इसमें ढलान वाली भूमि के निचले हिस्से में एक मिट्टी का कच्चा बांध बना दिया जाता है, जिससे बहता हुआ वर्षा जल एकत्रित हो जाता है। जल को मिट्टी में रिसने दिया जाता है और जब तालाब सूखता है, तो नमी से भरपूर भूमि पर बिना अतिरिक्त सिंचाई के गेहूं, चना जैसी रबी की फसलें उगाई जाती हैं।

40. (C) फ्लोराइड
राजस्थान के नागौर और अजमेर जिलों के सीमावर्ती क्षेत्रों में भूजल में फ्लोराइड खनिज का अत्यधिक उच्च सांद्रण पाया जाता है। फ्लोराइड युक्त जल के निरंतर सेवन से स्थानीय निवासियों में हड्डियों की गंभीर बीमारी स्टीओ-फ्लोरोसिस हो जाती है, जिससे रीढ़ की हड्डी टेढ़ी हो जाती है और पीठ पर कुबड़ निकल आता है। इसी भौगोलिक विशेषता के कारण इस पट्टी को स्थानीय रूप से 'कुबड़ पट्टी' कहा जाता है।

41. (C) अभिकथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
बनास नदी को प्राचीन संस्कृत साहित्य एवं स्थानीय लोक भाषा में 'वर्णाशा' या 'वन की आशा' के नाम से जाना जाता है। हालाँकि, यह नदी थार मरुस्थल से होकर नहीं बहती और न ही यह एक बारहमासी नदी है, बल्कि यह एक मौसमी नदी है जो मुख्यतः मानसून के दौरान बहती है तथा अरावली की पहाड़ियों से निकलकर मेवाड़ और मध्य-पूर्वी मैदानों से प्रवाहित होती है।

42. (A) मध्य प्रदेश की विंध्य श्रेणी में मेहद झील
माही नदी का उद्गम मध्य प्रदेश के धार जिले में सरदारपुर के पास विंध्याचल पर्वत श्रेणी में स्थित मेहद झील से होता है। यह नदी मध्य प्रदेश से उत्तर दिशा की ओर बहते हुए राजस्थान के बांसवाड़ा जिले के खांदू गाँव के निकट प्रवेश करती है। राजस्थान के दक्षिणी हिस्से में एक उल्टा 'U' आकार का प्रवाह मार्ग बनाने के पश्चात यह नदी गुजरात में प्रवेश कर खंभात की खाड़ी में गिरती है।

43. (B) 52
अजमेर जिले में स्थित प्रसिद्ध और पवित्र पुष्कर झील चारों ओर से सुंदर एवं ऐतिहासिक स्नान घाटों से घिरी हुई है। इस झील के तट पर कुल 52 घाट बने हुए हैं, जहाँ श्रद्धालु धार्मिक अवसरों और मेलों के दौरान पवित्र स्नान करते हैं। इन घाटों में वराह घाट, ब्रह्मा घाट और गऊ घाट अत्यंत प्रसिद्ध हैं। प्रत्येक वर्ष कार्तिक पूर्णिमा पर यहाँ विशाल धार्मिक मेला आयोजित होता है।

44. (B) पाली
जवाई बांध भौगोलिक रूप से राजस्थान के पाली जिले की सुमेरपुर तहसील में जवाई नदी पर स्थित है। इस विशाल बांध का निर्माण जोधपुर के महाराजा उम्मेद सिंह ने शुरु करवाया था। यह बांध मारवाड़ क्षेत्र का सबसे बड़ा जल भंडारण ढांचा है, जो पाली, जालौर और जोधपुर जिलों को सिंचाई हेतु जल

Downloaded from www.pdf.tube

तथा पेयजल की अति आवश्यक आपूर्ति प्रदान करता है, जिससे इसे 'मारवाड़ का अमृत सरोवर' कहते हैं।

45. (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
राजस्थान की पारंपरिक जल संरचनाओं का उनसे संबंधित क्षेत्रों के साथ सही मिलान इस प्रकार है। खडीन कृषि प्रणाली का विकास जैसलमेर के पालीवाल ब्राह्मणों ने किया था। जोहड़ मुख्य रूप से शेखावाटी क्षेत्र की पहचान हैं। टांका पश्चिमी शुष्क आवासों में वर्षा जल संचयन की मुख्य विधि है, जबकि झालरा जोधपुर एवं मारवाड़ क्षेत्र में निर्मित स्थापत्य कला युक्त सामुदायिक कुंड होते हैं।

46. (C) नाली
घग्गर नदी अरावली के उत्तर में स्थित राजस्थान की प्रमुख आंतरिक अपवाह नदी है। हनुमानगढ़ और श्रीगंगानगर जिलों में इस नदी का समतल, उपजाऊ और चौड़ा पाट (नदी तल) स्थानीय भाषा में 'नाली' के नाम से जाना जाता है। इस नाली क्षेत्र की जलोढ़ मिट्टी अत्यंत उपजाऊ होती है, जहाँ चावल, गेहूं और कपास की उन्नत खेती की जाती है। मानसून के समय यहाँ बाढ़ की स्थिति भी बनती है।

47. (D) काली सिंध, पार्वती और आहू
चंबल नदी राजस्थान में दक्षिण से उत्तर-पूर्व की ओर बहती है। अपने प्रवाह मार्ग के दौरान इसके दाएँ तट (दक्षिण-पूर्वी दिशा) से आकर मिलने वाली मुख्य सहायक नदियों में काली सिंध, पार्वती, आहू और निवाज़ शामिल हैं, जो मालवा के पठार से निकलती हैं। इसके विपरीत बनास और मेज जैसी नदियाँ अरावली की ओर से आकर चंबल के बाएँ तट पर मिलती हैं।

48. (A) 4, 2, 3, 1
लूनी नदी में मिलने वाली सहायक नदियों का उत्तर से दक्षिण की ओर सही क्रम इस प्रकार है। सबसे उत्तर में जोजरी नदी मिलती है, जो लूनी के दाएँ तट पर मिलने वाली एकमात्र सहायक नदी है। इसके बाद क्रमशः बांडी नदी, सुकड़ी नदी और अंत में सबसे दक्षिण में जवाई नदी आकर लूनी की मुख्य धारा में मिलती है। यह क्रम लूनी नदी के प्रवाह तंत्र की प्रमुख विशेषता है।

49. (B) गोमती
राजसमंद झील मेवाड़ के इतिहास की एक अत्यंत महत्वपूर्ण कृत्रिम झील है। इसका निर्माण महाराणा राज सिंह ने 17वीं शताब्दी में बाढ़ और अकाल राहत कार्यों के दौरान कराया था। इस विशाल झील में मुख्य रूप से गोमती नदी के जल को मोड़कर संचित किया गया था। इसके अतिरिक्त ताल और केलवा जैसी छोटी मौसमी नदियों का जल भी इस सुंदर जलाशय की जल आपूर्ति का स्रोत बनता है।

50. (D) धोरा
पारंपरिक खडीन प्रणाली के स्थापत्य में कृषि योग्य ढलानदार भूमि के निचले किनारे पर मिट्टी का एक पक्का या कच्चा बांध बनाया जाता है, जो वर्षा के बहते पानी को रोकता है। इस रोकने वाले मुख्य कच्चे बांध या मेड़ को स्थानीय भाषा में 'धोरा' कहा जाता है। धोरा के कारण पानी एकत्र होकर मिट्टी में समा जाता है, जिससे भूमि में फसल बोने हेतु नमी बनी रहती है।

51. (A) बुझ झील
काकनेय नदी, जिसे स्थानीय रूप से मसूरदी नदी भी कहा जाता है, जैसलमेर जिले में बहने वाली राजस्थान के आंतरिक अपवाह तंत्र की सबसे छोटी नदी है। यह नदी जैसलमेर के कोटड़ी गाँव की पहाड़ियों से निकलती है और केवल कुछ किलोमीटर बहने के बाद एक प्राकृतिक गर्त में गिरकर 'बुझ झील' का निर्माण करती है। अत्यधिक शुष्क मौसम में यह झील के बाद रेत में ही विलुप्त हो जाती है।

52. (C) मरुस्थल का प्राकृतिक ढाल पश्चिम की ओर है, जिसके कारण पूर्वी ऊँचे क्षेत्रों में जल पहुँचाने के लिए जल-उत्तोलन की आवश्यकता होती है।
इंदिरा गांधी नहर परियोजना में लिफ्ट नहरों का निर्माण मुख्य रूप से भौगोलिक ढाल की विशिष्टता के कारण किया गया है। पश्चिमी थार मरुस्थल का प्राकृतिक धरातलीय ढलान पूर्व से पश्चिम और उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम की ओर है। मुख्य नहर के बाएँ या पूर्वी ओर स्थित क्षेत्र तुलनात्मक रूप से ऊँचे हैं, इसलिए उन ऊँचे स्थानों तक पानी पहुँचाने के लिए पंपों द्वारा जल-उत्तोलन (लिफ्ट) करना अनिवार्य हो जाता है।

53. (A) केवल I और II
साँभर झील जयपुर ग्रामीण, अजमेर और नागौर जिलों के सीमावर्ती संगम पर स्थित है और यह भारत के कुल नमक उत्पादन का लगभग 8% से अधिक भाग उत्पादित करती है। हालाँकि, भूवैज्ञानिक साक्ष्यों के अनुसार यह उल्कापिंड के प्रभाव से बनी क्रेटर झील नहीं है, बल्कि यह एक प्राकृतिक संरचनात्मक आंतरिक बेसिन झील है जो नदियों द्वारा लाए गए लवणों से निर्मित हुई है।

54. (D) सागरमती
लूनी नदी का प्रारंभिक उद्गम अजमेर जिले की नाग पहाड़ियों से होता है, जहाँ इसे शुरुआत में 'सागरमती' के नाम से जाना जाता है। जब यह नदी आगे बहते हुए गोविंदगढ़ के निकट पुष्कर की पहाड़ियों से आने वाली 'सरस्वती' नामक धारा से मिलती है, तब इन दोनों धाराओं के संयुक्त प्रवाह को 'लूनी' नाम प्राप्त होता है। इसके पश्चात यह पश्चिमी राजस्थान के मरुस्थलीय मैदानी भाग में बहती है।

55. (B) बनास
बीसलपुर बांध राजस्थान के टोंक जिले की देवली तहसील में बनास नदी पर निर्मित एक विशाल कंक्रीट गुरुत्वीय बांध है। इस बांध का निर्माण 1990 के दशक में शुरू हुआ था। यह बांध राज्य के सबसे बड़े पेयजल स्रोतों में से एक है, जो जयपुर, अजमेर, टोंक और भीलवाड़ा जिलों के कई शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों को निरंतर स्वच्छ पेयजल तथा कृषि सिंचाई हेतु जल उपलब्ध कराता है।

56. (C) अगोर
राजस्थान में पारंपरिक टांका निर्माण में इसके चारों ओर एक विशेष वृत्ताकार या ढलुआ पक्का जलग्रहण क्षेत्र बनाया जाता है, जिसे स्थानीय भाषा में 'अगोर' या 'पायतन' कहा जाता है। अगोर की सतह को साफ, चिकना और ढलुआ रखा जाता है

NODIA

ताकि वर्षा जल बिना मिट्टी या गंदगी के तेजी से बहकर मध्य में स्थित भूमिगत टांके में जमा हो सके। यह जल संरक्षण की एक वैज्ञानिक तकनीक है।

57. (D) आभानेरी
अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध और स्थापत्य कला का अद्भुत नमूना 'चांद बावड़ी' राजस्थान के दौसा जिले के आभानेरी कस्बे में स्थित है। नवीं शताब्दी में राजा चांद द्वारा निर्मित यह बावड़ी भारत की सबसे गहरी और सबसे सुंदर सीढ़ीदार संरचनाओं में से एक है। इसकी दीवारों पर उकेरी गई ज्यामितीय सीढ़ियाँ और स्तंभ राजपूत वास्तुकला तथा प्राचीन जल प्रबंधन तकनीक की भव्यता को दर्शाते हैं।

58. (A) पुनर्जीवित नदी के जल का सामुदायिक प्रबंधन और न्यायसंगत वितरण सुनिश्चित करना।
'अरवरी संसद' राजस्थान के अलवर जिले में गठित एक अनूठा जन-स्तरीय और सामुदायिक जल प्रबंधन संस्थान है। तरुण भारत संघ के प्रयासों से पुनर्जीवित हुई अरवरी नदी के जल का सतत, न्यायसंगत और नियमबद्ध उपयोग सुनिश्चित करने के लिए 72 गाँवों के प्रतिनिधियों ने मिलकर इस संसद का गठन किया था। यह संस्था नदी के जल वितरण, मछली पकड़ने और सिंचाई नियमों का निर्धारण खुद करती है।

59. (B) यह राजस्थान की एकमात्र नदी है जो कर्क रेखा को दो बार पार करती है।
माही नदी राजस्थान और भारत के भूगोल में एक अत्यंत विशिष्ट स्थान रखती है। यह भारत की एकमात्र ऐसी नदी है जो उत्तरी अयन वृत्त यानी 'कर्क रेखा' (23.5° उत्तरी अक्षांश) को दो बार काटती है। मध्य प्रदेश से निकलकर यह दक्षिण-पूर्व राजस्थान में प्रवेश करती है और एक विशाल चाप (उल्टा 'U' आकार) बनाते हुए दक्षिण की ओर मुड़कर गुजरात में प्रवेश कर जाती है।

60. (A) केवल I, II और IV
चंबल नदी राजस्थान में चौरासीगढ़ के पास प्रवेश करती है, गहरी घाटियों से बहती हुई अंतरराज्यीय सीमा बनाती है तथा इसका अभयारण्य घड़ियाल संरक्षण हेतु प्रसिद्ध है। हालाँकि, यह कहना गलत है कि यह नदी जलविद्युत परियोजनाओं से रहित है, क्योंकि चंबल नदी पर गांधी सागर, राणा प्रताप सागर और जवाहर सागर जैसे तीन प्रमुख जलविद्युत बांध निर्मित हैं जिनसे बड़ी मात्रा में बिजली का उत्पादन होता है।

61. (A) सतही अपवाह को अधिकतम करने और रिसाव को रोकने के लिए मिट्टी के छिद्रों को बंद करना।
पश्चिमी राजस्थान में टांका के जलग्रहण क्षेत्र (अगोर) की सतह को तैयार करते समय पारंपरिक रूप से राख, बजरी, चिकनी मिट्टी और चूने के मिश्रण का लेप किया जाता था। इस लेप का मुख्य वैज्ञानिक उद्देश्य मिट्टी के सूक्ष्म छिद्रों को बंद करना होता था, जिससे वर्षा का जल जमीन के अंदर रिसे बिना पूरी गति से बहकर केंद्रीय टांके में एकत्र हो सके और जल हानि न्यूनतम हो।

62. (C) बनास
बनास नदी राजस्थान की एक प्रमुख नदी है, जिसका उद्गम राजसमंद जिले में अरावली पर्वत श्रेणी के पूर्वी ढलानों पर स्थित कुंभलगढ़ के पास खमनोर की पहाड़ियों से होता है। यह नदी मेवाड़ के मैदानों से होती हुई चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा, शाहपुरा, टोंक और सवाई माधोपुर जिलों में बहती है। अंततः सवाई माधोपुर में रामेश्वरम के निकट यह नदी चंबल की मुख्य धारा में विलीन हो जाती है।

63. (D) गांधी सागर बांध
चंबल नदी की बहुउद्देशीय परियोजना के तहत कुल चार प्रमुख बांध बनाए गए हैं। इनमें से गांधी सागर बांध मध्य प्रदेश के मंदसौर जिले में स्थित है, जो इस श्रृंखला का पहला बांध है। शेष तीन बांध- राणा प्रताप सागर बांध (चित्तौड़गढ़), जवाहर सागर बांध (कोटा) और कोटा बैराज (कोटा)- राजस्थान राज्य की भौगोलिक सीमाओं के भीतर निर्मित हैं, जो सिंचाई और जलविद्युत प्रदान करते हैं।

64. (C) उदयपुर
साबरमती नदी का जलग्रहण क्षेत्र और उद्गम स्थल राजस्थान के उदयपुर जिले की झाड़ोल तहसील में अरावली की पहाड़ियों में स्थित है। यद्यपि इस नदी का अधिकांश प्रवाह मार्ग और आर्थिक उपयोगिता गुजरात राज्य में है, किंतु इसका उद्गम उदयपुर जिले से ही होता है। उदयपुर की कोटड़ा और झाड़ोल पहाड़ियों से निकलकर कई छोटी धाराओं के मिलने के बाद यह नदी गुजरात में प्रवेश करती है।

65. (B) गोडवाड़ क्षेत्र
दक्षिण-पश्चिमी राजस्थान का वह क्षेत्र जिससे होकर लूनी नदी और उसकी सहायक नदियाँ प्रवाहित होती हैं, ऐतिहासिक और भौगोलिक रूप से 'गोडवाड़ क्षेत्र' कहलाता है। इस क्षेत्र में मुख्य रूप से पाली, सिरोही, जालौर और बाड़मेर जिलों के भाग शामिल हैं। गोडवाड़ अपनी विशिष्ट संस्कृति, उपजाऊ जलोढ़ मैदानों और बोली के लिए जाना जाता है, जो अरावली के पश्चिम में लूनी नदी का मुख्य प्रवाह क्षेत्र है।

66. (D) ढेबर झील
उदयपुर जिले में स्थित प्रसिद्ध जयसमंद झील को ऐतिहासिक रूप से 'ढेबर झील' के नाम से भी जाना जाता है। इस झील का निर्माण 17वीं शताब्दी में मेवाड़ के महाराणा जय सिंह द्वारा ढेबर दर्रे के पास गोमती नदी पर बांध बनाकर कराया गया था। दर्रे के नाम पर ही इसे ढेबर झील कहा गया। यह झील राजस्थान में मीठे पानी की सबसे बड़ी कृत्रिम झील है।

67. (B) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
इंदिरा गांधी नहर ने शुष्क थार मरुस्थल को हरे-भरे खेतों में बदलकर कृषि उत्पादकता में अभूतपूर्व वृद्धि की है। दूसरी ओर, अत्यधिक सिंचाई और नहरी जल के रिसाव के कारण कमान क्षेत्रों में जलभराव एवं लवणता जैसी गंभीर पारिस्थितिक समस्याएँ भी पैदा हुई हैं। हालाँकि दोनों तथ्य अपने स्थान पर सत्य हैं, परंतु जलजमाव की समस्या नहर द्वारा कृषि उत्पादकता बढ़ाने का सही व्याख्यात्मक कारण नहीं है।

Click Here to Buy book on Flipkart

अध्याय 14
राजस्थान की प्राकृतिक वनस्पति

1. भारत वन स्थिति रिपोर्ट 2021 के अनुसार, राजस्थान के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का लगभग कितना प्रतिशत भाग कुल वनावरण के अंतर्गत आता है?
(A) 7.42% (B) 4.87%
(C) 9.60% (D) 12.35%

2. राजस्थान के प्रमुख वन प्रकारों (सूची I) को उनके प्रमुख क्षेत्रों (सूची II) के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I : (वन प्रकार)
P. उपोष्ण कटिबंधीय सदाबहार वन
Q. उष्णकटिबंधीय शुष्क सागौन वन
R. उष्णकटिबंधीय कांटेदार वन
S. मिश्रित पर्णपाती वन
सूची II : (क्षेत्र/जिला)
1. बांसवाड़ा और डूंगरपुर
2. जैसलमेर और बाड़मेर
3. माउंट आबू
4. चित्तौड़गढ़ और राजसमंद
(A) P-1, Q-3, R-2, S-4 (B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3 (D) P-3, Q-1, R-2, S-4

3. पश्चिमी राजस्थान में मुख्य रूप से पाई जाने वाली मरुद्भिद वनस्पति की प्राथमिक पारिस्थितिक विशेषता क्या है?
(A) वाष्पोत्सर्जन को कम करने के लिए गहरी मूसला जड़ें, कांटेदार शाखाएं और छोटी पत्तियां
(B) विशेष रूप से सूर्य के प्रकाश के अवशोषण को अधिकतम करने के लिए निर्मित चौड़ी, पतली पत्तियां
(C) उच्च वायुमंडलीय आर्द्रता से सीधे नमी को अवशोषित करने के लिए अनुकूलित वायवीय जड़ें
(D) स्थायी रूप से जलभराव वाली मृदा में जीवित रहने के लिए अनुकूलित मुलायम, स्पंजी तने

4. राजस्थान के दक्षिण-पूर्व में उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वनों से उत्तर-पश्चिम में उष्णकटिबंधीय कांटेदार वनों के परिवर्तन के लिए प्राथमिक रूप से कौन-सा भौगोलिक कारक उत्तरदायी है?
(A) मध्यवर्ती मैदानों में मृदा के pH स्तर में क्रमिक वृद्धि
(B) पश्चिमी मरुस्थलीय मृदा में भारी विषैली धातुओं की उच्च सांद्रता
(C) पूर्व से पश्चिम की ओर जाने पर औसत वार्षिक वर्षा में तीव्र कमी
(D) पश्चिमी जिलों में अत्यधिक शीतकालीन पाले की बढ़ती आवृत्ति

5. राजस्थान के उष्णकटिबंधीय कांटेदार वनों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. ये मुख्य रूप से पश्चिमी राजस्थान के शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में पाए जाते हैं।
II. वनस्पति में मुख्य रूप से सूखा-प्रतिरोधी प्रजातियां जैसे खेजड़ी, रोहिड़ा और फोग सम्मिलित हैं।
III. इन वनों को 100 सेमी से अधिक की औसत वार्षिक वर्षा की आवश्यकता होती है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

6. निम्नलिखित में से कौन-सा राजस्थान के थार मरुस्थल क्षेत्र में पाई जाने वाली प्राकृतिक वनस्पति का अनुकूलन लक्षण नहीं है?
(A) व्यापक और गहरी जड़ प्रणाली
(B) मोटी छाल और बौना विकास
(C) पत्तियों का कांटों में रूपांतरण
(D) अत्यधिक रंध्रों वाली चौड़ी पत्तियां

7. राजस्थान की प्राकृतिक वनस्पति के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन (A) : अरावली पर्वत श्रृंखला राजस्थान के पश्चिमी मैदानों की तुलना में अपेक्षाकृत सघन और अधिक विविध प्राकृतिक वनस्पति का समर्थन करती है।
कारण (R) : अरावली पहाड़ियों में अधिक औसत वर्षा होती है और यहाँ अधिक अनुकूल उपोष्ण कटिबंधीय जलवायु पाई जाती है।
सही उत्तर चुनिए:
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

8. भारत वन स्थिति रिपोर्ट 2021 के अनुसार, राजस्थान के किस जिले में सर्वाधिक कुल वनावरण क्षेत्र है?
(A) प्रतापगढ़ (B) अलवर
(C) उदयपुर (D) बारां

NODIA

की चट्टानों एवं मृदा से घुले हुए सोडियम क्लोराइड तथा अन्य लवणों को बहाकर इस झील के गर्त में जमा करती हैं।

80. (C) नौचौकी पाल
राजसमंद झील के उत्तरी भाग में स्थित विशाल बांध पर सफेद संगमरमर से निर्मित भव्य मंडपों, सीढ़ियों और अलंकृत मेहराबदार छतरियों को सामूहिक रूप से 'नौचौकी पाल' कहा जाता है। इस स्थान पर नौ नक्काशीदार चौकियाँ बनी होने के कारण इसे यह नाम मिला है। इसी पाल पर मेवाड़ का इतिहास दर्शाने वाली प्रसिद्ध 'राज प्रशस्ति' के 25 शिलालेख भी स्थापित हैं।

81. (A) केवल I और II
जयसमंद झील गोमती नदी पर महाराणा जय सिंह द्वारा बनाई गई एक कृत्रिम झील है, जिसमें स्थित द्वीपों पर भील और मीणा जनजातियाँ निवास करती हैं। हालाँकि, प्रसिद्ध राणकपुर जैन मंदिर इस झील के द्वीप पर नहीं, बल्कि पाली जिले की देसूरी तहसील में मघई नदी के तट पर स्थित हैं। अतः केवल पहला और दूसरा कथन भौगोलिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से सही हैं।

82. (D) अलवर और भरतपुर
रूपारेल नदी (जिसे वराह या लसवारी नदी भी कहते हैं) आंतरिक अपवाह तंत्र की एक प्रमुख नदी है। यह नदी अलवर जिले की थानागाजी तहसील में उदयनाथ की पहाड़ियों से निकलती है। इसके बाद यह अलवर और भरतपुर जिलों के विस्तृत मैदानी क्षेत्रों में बहती है। भरतपुर के ऐतिहासिक लोहागढ़ किले के चारों ओर बनी सुरक्षा खाई (सुजान गंगा नहर) को जल उपलब्ध कराने में इसका ऐतिहासिक योगदान रहा है।

83. (A) चौरासीगढ़
चंबल नदी मध्य प्रदेश में मालवा पठार की जनापाव पहाड़ियों से निकलकर उत्तर दिशा की ओर बहती है। यह नदी राजस्थान राज्य की सीमा में चित्तौड़गढ़ जिले के 'चौरासीगढ़' नामक ऐतिहासिक स्थान के निकट प्रवेश करती है। चौरासीगढ़ के पास ही चंबल नदी एक गहरी घाटी में प्रवेश करती है, जहाँ इसके बाद प्रसिद्ध चूलिया प्रपात तथा राणा प्रताप सागर बांध स्थित हैं।

84. (C) पालीवाल ब्राह्मण
राजस्थान के शुष्क मरुस्थलीय जिले जैसलमेर में 15वीं शताब्दी के दौरान 'खडीन' नामक जल संचयन और कृषि प्रणाली की शुरुआत पालीवाल ब्राह्मणों द्वारा की गई थी। पालीवाल ब्राह्मणों ने मरुस्थल की विषम परिस्थितियों के अनुकूल यह अनूठी तकनीकी विकसित की, जिसमें वर्षा जल को एक स्थान पर रोककर भूमि में नमी बढ़ाई जाती थी और रबी की फसलों की बिना सिंचाई के खेती की जाती थी।

85. (C) केवल IV
राजस्थान की पारंपरिक जल संचयन संरचनाओं में टांका, जोहड़ और खडीन प्राचीन लोक बुद्धिमत्ता के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। इसके विपरीत, 'नाड़ी' कोई आधुनिक कंक्रीट संरचना नहीं है, बल्कि यह भी एक प्राचीन पारंपरिक ग्रामीण कच्चा तालाब है, जिसे वर्षा जल एकत्र करने के लिए बनाया जाता था। इंदिरा गांधी नहर परियोजना का निर्माण नाड़ी परंपरा से कोई सीधा संबंध नहीं रखता है।

86. (D) कोटड़ा सीमा
साबरमती नदी का उद्गम राजस्थान के उदयपुर जिले की अरावली श्रेणियों से होता है। राजस्थान के पहाड़ी भूभाग में लगभग 44 किलोमीटर की दूरी तय करने के पश्चात यह नदी उदयपुर जिले की कोटड़ा तहसील की सीमा पर राजस्थान से बाहर निकलकर गुजरात राज्य में प्रवेश करती है। इसके बाद यह गुजरात के मैदानी भागों में प्रवाहित होते हुए अंततः खंभात की खाड़ी में विलीन हो जाती है।

87. (C) लगभग 65%
लूनी नदी पश्चिमी राजस्थान की सबसे महत्वपूर्ण नदी है, जिसकी कुल प्रवाह लंबाई लगभग 495 किलोमीटर है। अजमेर की नाग पहाड़ियों से निकलने के बाद यह नदी राजस्थान के छः जिलों में प्रवाहित होती है। गुजरात के कच्छ के रण में विलीन होने से पहले इसकी कुल लंबाई का लगभग 65 प्रतिशत भाग (लगभग 330 किलोमीटर) राजस्थान की भौगोलिक सीमाओं के भीतर ही प्रवाहित होता है।

88. (C) भूजल की कमी को रोकने के लिए सहभागी भूजल प्रबंधन को बढ़ावा देना।
'अटल भूजल योजना' भारत सरकार और विश्व बैंक के सहयोग से शुरू की गई एक महत्वाकांक्षी योजना है। राजस्थान के जल संकट से जूझ रहे चयनित जिलों में लागू इस योजना का प्राथमिक उद्देश्य गिरते भूजल स्तर को रोकना है। यह योजना संस्थागत ढाँचे को मजबूत करने और स्थानीय ग्रामीणों तथा किसानों की सक्रिय भागीदारी के माध्यम से सतत भूजल प्रबंधन पर केंद्रित है।

89. (D) बेड़च और मेनाल
भीलवाड़ा जिले के मांडलगढ़ के पास स्थित बीगोद नामक स्थान पर बनास नदी एक ऐतिहासिक 'त्रिवेणी संगम' बनाती है। इस पवित्र स्थान पर बेड़च और मेनाल नदियाँ आकर बनास की मुख्य धारा में मिलती हैं। इन तीन नदियों के मिलन बिंदु को धार्मिक दृष्टि से अत्यंत पवित्र माना जाता है, जहाँ प्रत्येक वर्ष श्रद्धालु स्नान एवं पूजा-अर्चना के लिए एकत्र होते हैं।

90. (A) जापान इंटरनेशनल कॉर्पोरेशन एजेंसी (JICA)
'राजस्थान जल क्षेत्र आजीविका सुधार परियोजना' (RWSLIP) राज्य में पुरानी सिंचाई प्रणालियों के पुनर्वास, जल उपयोग दक्षता में वृद्धि और जल उपभोक्ता संगमों के सशक्तीकरण हेतु चलाई जा रही है। इस व्यापक परियोजना को जापान सरकार की अंतरराष्ट्रीय विकास एजेंसी 'जापान इंटरनेशनल कॉर्पोरेशन एजेंसी' (JICA) द्वारा बाह्य वित्तीय एवं तकनीकी सहायता प्रदान की जा रही है, जिससे राज्य के किसानों को लाभ मिल रहा है।

NODIA

68. (C) कार्तिक
पवित्र पुष्कर झील के तट पर हिंदू पंचांग के कार्तिक मास में विश्व प्रसिद्ध पुष्कर मेला आयोजित होता है। यह मेला कार्तिक शुक्ल एकादशी से शुरु होकर कार्तिक पूर्णिमा तक चलता है। इस दौरान देश-विदेश से लाखों श्रद्धालु झील में आस्था की डुबकी लगाने आते हैं। इसके साथ ही यहाँ राजस्थान का सबसे बड़ा पारंपरिक ऊँट व पशु मेला भी आयोजित किया जाता है।

69. (A) हरियाणा
साबी (या साहिबी) नदी राजस्थान की आंतरिक अपवाह प्रणाली की एक प्रमुख मौसमी नदी है, जो जयपुर-जयपुर ग्रामीण क्षेत्र में सेवर की पहाड़ियों से निकलती है। यह नदी कोटपूतली-बहरोड़ और खैरथल-तिजारा जिलों से होकर उत्तर दिशा की ओर बहती है और राजस्थान की सीमा पार करके हरियाणा राज्य में प्रवेश करती है। हरियाणा के गुड़गाँव (गुरुग्राम) जिले के रेवाड़ी मैदानी क्षेत्र में जाकर यह विलुप्त हो जाती है।

70. (D) सोम
सोम नदी लूनी नदी तंत्र की सहायक नदी नहीं है, बल्कि यह दक्षिणी राजस्थान में प्रवाहित होने वाली माही नदी की एक प्रमुख सहायक नदी है। सोम नदी का उद्गम उदयपुर जिले के बीछामेड़ा पहाड़ियों से होता है। इसके विपरीत जोजरी, सुकड़ी और गुहिया नदियाँ अरावली एवं मारवाड़ क्षेत्र से निकलकर पश्चिमी राजस्थान में लूनी नदी की मुख्य धारा में मिलती हैं।

71. (B) चंबल बेसिन
परवन, निवाज़ और आहू नदियाँ राजस्थान के हाड़ौती क्षेत्र (झालावाड़, बारां और कोटा) में बहने वाली नदियाँ हैं, जो काली सिंध नदी की सहायक नदियाँ हैं। काली सिंध स्वयं चंबल नदी की एक मुख्य सहायक नदी है, इसलिए ये सभी नदियाँ विस्तृत चंबल नदी बेसिन तंत्र का ही हिस्सा हैं। ये नदियाँ मध्य प्रदेश के मालवा पठार से निकलकर राजस्थान में प्रवेश करती हैं।

72. (C) P-3, Q-1, R-4, S-2
राजस्थान के प्रमुख बांधों और उनसे संबंधित नदियों का सही मिलान इस प्रकार है। बीसलपुर बांध टोंक जिले में बनास नदी पर निर्मित है। माही बजाज सागर बांध बांसवाड़ा में माही नदी पर स्थित है। प्रसिद्ध जवाई बांध पाली जिले में जवाई नदी पर बनाया गया है, जबकि राणा प्रताप सागर बांध चित्तौड़गढ़ जिले के रावतभाटा में चंबल नदी पर निर्मित एक विशाल बांध है।

73. (D) नर्मदा नहर परियोजना
राजस्थान की नर्मदा नहर परियोजना राज्य की पहली ऐसी सिंचाई परियोजना है, जिसमें पानी की बचत और वैज्ञानिक उपयोग हेतु संपूर्ण कमान क्षेत्र में फव्वारा (ड्रिप एवं स्प्रिंकलर) सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली को कानूनी रूप से अनिवार्य बनाया गया है। यह नहर गुजरात के सरदार सरोवर बांध से निकलकर राजस्थान के जालौर और बाड़मेर जिलों में प्रवेश करती है, जिससे शुष्क क्षेत्रों में जल संरक्षण संभव हुआ है।

74. (A) भूजल पुनर्भरण के लिए सतही अपवाह को रोकने हेतु ढलान पर बनाया गया एक कच्चा चेक डैम।
राजस्थान के शेखावाटी और अलवर क्षेत्रों में 'जोहड़' वर्षा जल संचयन का एक पारंपरिक ढांचा है। यह मुख्य रूप से प्राकृतिक ढलान वाले स्थानों पर मिट्टी से बनाया गया एक कच्चा चेक डैम या छोटा तालाब होता है। इसका प्राथमिक कार्य वर्षा के दौरान बहने वाले सतही जल को रोकना और धीरे-धीरे जमीन के अंदर रिसाव कराकर आसपास के कुओं एवं भूजल स्तर को पुनर्भृत करना है।

75. (B) वार्षिक भूजल निष्कर्षण वार्षिक शुद्ध भूजल पुनर्भरण से अधिक है।
केंद्रीय भूजल बोर्ड के मानकों के अनुसार, जब किसी भूवैज्ञानिक क्षेत्र या प्रशासनिक खंड (ब्लॉक) में पूरे वर्ष के दौरान नलकूपों द्वारा निकाला गया कुल भूजल, प्राकृतिक वर्षा द्वारा भूमि में होने वाले शुद्ध भूजल पुनर्भरण की मात्रा से अधिक हो जाता है, तो उस खंड को 'अति-दोहित' (ओवर-एक्सप्लॉइटेड) या 'डार्क जोन' के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। राजस्थान में ऐसे कई खंड मौजूद हैं।

76. (B) माही बेसिन
'सुजलाम सुफलाम' क्रांति एवं जल संरक्षण अभियान मुख्य रूप से दक्षिणी राजस्थान में स्थित माही नदी बेसिन की नदियों और जल निकायों के कायाकल्प से संबंधित था। इस अभियान का उद्देश्य माही नदी तथा उसकी सहायक नदियों के अपवाह क्षेत्रों में गाद हटाना, जलधारण क्षमता बढ़ाना और स्थानीय जनजातीय क्षेत्रों में जल संसाधनों का न्यायसंगत व सतत विकास सुनिश्चित करना था।

77. (A) नंदसमंद बांध
बनास नदी पर टोंक के प्रसिद्ध बीसलपुर बांध के अलावा राजसमंद जिले के नाथद्वारा के पास 'नंदसमंद बांध' भी निर्मित किया गया है। इसे राजसमंद जिले की जीवनरेखा माना जाता है। इसके विपरीत, मेजा बांध भीलवाड़ा में कोठारी नदी पर, मोरेल बांध सवाई माधोपुर-दौसा सीमा पर मोरेल नदी पर तथा पांचना बांध करौली में पाँच भद्रावती आदि नदियों के संगम पर स्थित है।

78. (C) चित्तौड़गढ़, कोटा, बूंदी, सवाई माधोपुर, करौली, धौलपुर
चंबल नदी राजस्थान में चित्तौड़गढ़ जिले के चौरासीगढ़ से प्रवेश करती है। इसके बाद यह कोटा और बूंदी जिलों की सीमा बनाती हुई बहती है। आगे बढ़कर यह नदी सवाई माधोपुर, करौली और धौलपुर जिलों से प्रवाहित होती हुई राजस्थान और मध्य प्रदेश की प्राकृतिक सीमा का निर्धारण करती है। अंततः धौलपुर के बाद यह उत्तर प्रदेश में प्रवेश कर यमुना नदी में मिल जाती है।

79. (D) मेंथा, रुपनगढ़, खारी और खंडेला
साँभर झील एक बंद अंतःस्थलीय खारे पानी की झील है। इसमें जल का मुख्य स्रोत चार प्रमुख मौसमी नदियाँ हैं: मेंथा (जो उत्तर से आती है), रुपनगढ़ (जो दक्षिण से आती है), तथा खारी और खंडेला नदियाँ। ये सभी नदियाँ अपने जलग्रहण क्षेत्रों

Downloaded from www.pdf.tube

9. भारत वन स्थिति रिपोर्ट 2021 के अनुसार, राजस्थान के निम्नलिखित जिलों को उनके कुल वनावरण क्षेत्र के आधार पर अवरोही क्रम (घटते क्रम) में व्यवस्थित कीजिए:
1. प्रतापगढ़
2. उदयपुर
3. बारां
4. अलवर

निम्नलिखित में से सही अनुक्रम कौन-सा है?
(A) 2, 4, 1, 3
(B) 2, 1, 4, 3
(C) 4, 2, 3, 1
(D) 2, 4, 3, 1

10. निम्नलिखित में से किस वृक्ष प्रजाति का मूल्य मुख्य रूप से गैर-इमारती लकड़ी वन उत्पाद की अपेक्षा उच्च गुणवत्ता वाली इमारती लकड़ी के लिए है?
(A) सागौन
(B) तेंदू
(C) खैर
(D) महुआ

11. राजस्थान की वनस्पति के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़िए:
कथन I : शुष्क पर्णपाती वन नमी संरक्षण के लिए शुष्क ग्रीष्मकाल के दौरान अपनी पत्तियां गिरा देते हैं।
कथन II : पश्चिमी राजस्थान में उच्च भूजल स्तर के कारण उष्णकटिबंधीय कांटेदार वन वर्ष भर हरे-भरे रहते हैं।
सही विकल्प चुनिए:
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है और कथन II सही है।

12. राजस्थान के राज्य पुष्प 'रोहिड़ा' का वैज्ञानिक नाम क्या है?
(A) प्रोसोपिस सिनेरेरिया
(B) टेकोमेला उंडुलता
(C) ब्यूटिया मोनोस्पर्मा
(D) अकेशिया नीलोटिका

13. राजस्थान के राज्य वृक्ष और राज्य पुष्प के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. खेजड़ी को 1983 में राजस्थान का राज्य वृक्ष घोषित किया गया था।
II. रोहिड़ा को 1983 में राजस्थान का राज्य पुष्प घोषित किया गया था।
III. दोनों प्रजातियां राज्य के शुष्क और अर्ध-शुष्क पारिस्थितिकी तंत्र में स्वाभाविक रूप से पनपती हैं।
IV. राज्य वृक्ष का वैज्ञानिक नाम प्रोसोपिस जुलिफ्लोरा है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल I, II और IV
(C) केवल II, III और IV
(D) I, II, III और IV

NODIA

14. जैसलमेर और बीकानेर जिलों में चौड़ी पत्ती वाले पर्णपाती वनों की वृद्धि को कौन-सा कारक सबसे अधिक सीमित करता है?
(A) अत्यधिक आर्द्रता और कवक रोग
(B) उच्च ऊंचाई और तीव्र ढलान
(C) वर्षा की कमी और वाष्पीकरण की उच्च दर
(D) मृदा का अत्यधिक संतृप्त होना जिससे जलभराव होता है

15. राजस्थान में उपोष्ण कटिबंधीय सदाबहार वन, वन क्षेत्र का सबसे कम प्रतिशत भाग घेरते हैं। ये विशेष रूप से कहाँ पाए जाते हैं?
(A) सीतामाता वन्यजीव अभयारण्य
(B) रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान
(C) राष्ट्रीय मरु उद्यान
(D) माउंट आबू क्षेत्र

16. राजस्थान की प्राकृतिक वनस्पति के संदर्भ में असत्य कथन की पहचान कीजिए:
(A) सालर वन मुख्य रूप से उदयपुर, राजसमंद और चित्तौड़गढ़ की अरावली श्रृंखलाओं में पाए जाते हैं।
(B) राजस्थान में सागौन के वन उत्तर में अत्यधिक शीतकालीन तापमान के कारण दक्षिणी जिलों तक ही सीमित हैं।
(C) बांस को मुख्य इमारती लकड़ी के रूप में वर्गीकृत किया गया है और सभी परिस्थितियों में इसका निष्कर्षण प्रतिबंधित है।
(D) धोक राज्य में सबसे व्यापक रूप से पाई जाने वाली वृक्ष प्रजाति है।

17. राजस्थान का बिश्नोई समाज ऐतिहासिक रूप से प्रकृति और वन्यजीव संरक्षण के लिए प्रसिद्ध है। इस समाज के संस्थापक कौन थे?
(A) जसनाथ जी
(B) जाम्भोजी
(C) दादू दयाल जी
(D) रामदेव जी

18. राजस्थान की कानूनी वन श्रेणियों का उनके कुल क्षेत्रफल प्रतिशत के आधार पर अवरोही क्रम में सही अनुक्रम कौन-सा है?
(A) आरक्षित वन, संरक्षित वन, अवर्गीकृत वन
(B) संरक्षित वन, आरक्षित वन, अवर्गीकृत वन
(C) अवर्गीकृत वन, संरक्षित वन, आरक्षित वन
(D) संरक्षित वन, अवर्गीकृत वन, आरक्षित वन

19. राजस्थान में वनों और वन उपज के परिवहन से संबंधित कानूनों को समेकित करने के लिए व्यापक राजस्थान वन अधिनियम किस वर्ष लागू किया गया था?
(A) 1949 (B) 1953
(C) 1972 (D) 1980

20. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन राजस्थान में संयुक्त वन प्रबंधन कार्यक्रम के प्राथमिक उद्देश्य का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) निगमों द्वारा व्यावसायिक लकड़ी निष्कर्षण के लिए सार्वजनिक वन भूमि का निजीकरण करना
(B) पारिस्थितिक पर्यटन के लिए संरक्षित क्षेत्रों से स्वदेशी जनजातीय आबादी को बेदखल करना
(C) निम्नीकृत वन भूमि की सुरक्षा और प्रबंधन में स्थानीय समुदायों को सम्मिलित करना
(D) बड़े पैमाने पर कृषि फार्मों के विस्तार के लिए प्राकृतिक वन क्षेत्रों को साफ़ करना

21. वसंत ऋतु में अपने चमकीले लाल फूलों की विशेषता वाली किस वृक्ष प्रजाति को राजस्थान में व्यापक रूप से "जंगल की ज्वाला" के रूप में जाना जाता है?
(A) ब्यूटिया मोनोस्पर्मा (पलाश/ढाक)
(B) बोसवेलिया सेराटा (सालर)
(C) टेक्टोना ग्रैंडिस (सागौन)
(D) डायोस्पायरोस मेलानोक्साइलॉन (तेंदू)

22. वृक्षों के वानस्पतिक नामों (सूची I) को राजस्थान में उनके सामान्य स्थानीय नामों (सूची II) के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I : (वानस्पतिक नाम)
P. प्रोसोपिस सिनेरेरिया
Q. टेकोमेला उंडुलता
R. ब्यूटिया मोनोस्पर्मा
S. अकेशिया कैटेचू
सूची II : (सामान्य नाम)
1. रोहिड़ा
2. खैर
3. खेजड़ी
4. पलाश
(A) P-1, Q-3, R-2, S-4
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-4, Q-2, R-3, S-1
(D) P-3, Q-1, R-4, S-2

23. भारत वन स्थिति रिपोर्ट 2021 के अनुसार, राजस्थान के किस जिले में सबसे कम कुल वनावरण क्षेत्र दर्ज किया गया है?
(A) जोधपुर
(B) चूरू
(C) हनुमानगढ़
(D) गंगानगर

24. राजस्थान में सालर (बोसवेलिया सेराटा) वनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?
(A) ये मुख्य रूप से इंदिरा गांधी नहर क्षेत्र के साथ जलभराव वाले मैदानों में पाए जाते हैं।
(B) सालर की लकड़ी अत्यधिक कठोर होती है और इसका उपयोग विशेष रूप से भारी संरचनात्मक निर्माण के लिए किया जाता है।
(C) ये मुख्य रूप से दक्षिणी राजस्थान में अरावली पहाड़ियों के ऊपरी शिखरों पर केंद्रित हैं।
(D) सालर के वृक्ष लवणोद्भिद हैं जो विशेष रूप से सांभर झील की अत्यधिक लवणीय मृदा में उगते हैं।

25. राजस्थान में ओरण और गोचर भूमि के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. ओरण स्थानीय देवी-देवताओं को समर्पित पवित्र उपवन हैं जहाँ पेड़ों की कटाई सांस्कृतिक रूप से वर्जित है।
II. गोचर का तात्पर्य स्थानीय मवेशियों के भरण-पोषण के लिए सामूहिक चराई भूमि से है।
III. ओरण और गोचर दोनों भूमियों का उपयोग राज्य सरकार द्वारा व्यावसायिक लकड़ी की कटाई के लिए भारी मात्रा में किया जाता है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल I और III
(C) केवल II और III
(D) I, II और III

26. निम्नलिखित में से कौन-सी गतिविधि राजस्थान की प्राकृतिक वनस्पति और वनावरण के लिए खतरा नहीं मानी जाती है?
(A) वनवर्धन और वृक्षारोपण पद्धतियों का कार्यान्वयन
(B) स्थानीय पशुधनों द्वारा अनियंत्रित चराई
(C) कृषि विस्तार के लिए अतिक्रमण
(D) प्रोसोपिस जुलिफ्लोरा जैसी आक्रामक विदेशी प्रजातियों का प्रसार

27. राजस्थान में मरुस्थलीय वनस्पति अनुकूलन के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन (A) : राजस्थान के पश्चिमी शुष्क क्षेत्र के वृक्षों में आमतौर पर लंबी मूसला जड़ें, मोटी छाल और छोटी या मोमी पत्तियां होती हैं।
कारण (R) : ये संरचनात्मक अनुकूलन अत्यधिक ग्रीष्मकालीन गर्मी के दौरान वनस्पति को वाष्पोत्सर्जन और जल की हानि को अधिकतम करने में मदद करते हैं।
सही उत्तर चुनिए:
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

28. राजस्थान और पूरे भारत में पेड़ लगाने के बारे में जागरूकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली 'वन महोत्सव' पहल की शुरुआत 1950 में किस नेता द्वारा की गई थी?
(A) सुंदरलाल बहुगुणा
(B) के.एम. मुंशी
(C) विनोबा भावे
(D) मेधा पाटकर

29. राजस्थान के राज्य वृक्ष खेजड़ी का वैज्ञानिक नाम क्या है?

Click Here to Buy book on Amazon

(A) प्रोसोपिस सिनेरेरिया
(B) टेकोमेला उंडुलता
(C) अकेशिया नीलोटिका
(D) जिजिफस मौरिशियाना

30. राजस्थान में पशुधन चराई के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I : राजस्थान के पश्चिमी जिलों में अतिचारण से मृदा संघनन होता है और वायु अपरदन की संवेदनशीलता बढ़ती है।
कथन II : निर्धारित चरागाह भूमि पर प्रतिबंधित चक्रीय चराई पारिस्थितिक पुनर्स्थापन और सतत चारा आपूर्ति में मदद करती है।
सही विकल्प चुनिए:
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है और कथन II सही है।

31. लीवन (सीवण), धामण, करड़ और अंजन मुख्य रूप से किसके नाम हैं?
(A) शुष्क मरुस्थलीय बस्तियों में निर्मित पारंपरिक वर्षा जल संरक्षण संरचनाएं
(B) माउंट आबू अभयारण्य में विशेष रूप से पाई जाने वाली दुर्लभ औषधीय वृक्ष प्रजातियां
(C) प्राचीन वृक्ष पूजा अनुष्ठानों से सीधे जुड़े पारंपरिक स्थानीय त्योहार
(D) शुष्क और अर्ध-शुष्क राजस्थान क्षेत्रों में पाई जाने वाली अत्यधिक पौष्टिक घासें

32. वृक्षों और उनके संबंधित सामान्य नामों का निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म गलत सुमेलित है?
(A) बोसवेलिया सेराटा - सालर
(B) एनोजिसस पेंडुला - धोक
(C) डायोस्पायरोस मेलानोक्साइलॉन - रोहिड़ा
(D) अकेशिया कैटेचू - खैर

33. राजस्थान के उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वनों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. ये मुख्य रूप से राज्य के दक्षिणी और दक्षिण-पूर्वी भागों में केंद्रित हैं।
II. प्रमुख वृक्ष प्रजातियों में सागौन, धोक और सालर सम्मिलित हैं।
III. ये 50 सेमी से 100 सेमी के बीच औसत वार्षिक वर्षा प्राप्त करने वाले क्षेत्रों में पनपते हैं।
IV. ये वन राजस्थान में आरक्षित वन क्षेत्र के सबसे बड़े अनुपात का प्रतिनिधित्व करते हैं।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल II, III और IV
(C) केवल I, III और IV
(D) I, II, III और IV

34. राजस्थान में कई मरुस्थलीय पौधे "गर्तित रंध्र" प्रदर्शित करते हैं। इस अनुकूलन का प्राथमिक पारिस्थितिक उद्देश्य क्या है?
(A) रात के दौरान प्रकाश संश्लेषण की दर को बढ़ाना
(B) सतह पर जमी ओस के त्वरित अवशोषण को आसान बनाना
(C) क्षारीय मृदा से अवशोषित अतिरिक्त लवणों को बाहर निकालना
(D) वाष्पोत्सर्जन के माध्यम से जल की हानि की दर को कम करना

NODIA

35. 700 मीटर से 1000 मीटर की ऊंचाई पर अरावली पर्वतों के ढलानों पर किस विशिष्ट प्रकार की वनस्पति का प्रभुत्व है?
(A) मिश्रित उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वन
(B) उपोष्ण कटिबंधीय उच्च ऊंचाई वाले सदाबहार वन
(C) खुले उष्णकटिबंधीय मरुस्थलीय झाड़ीदार वनस्पति
(D) आर्द्र अल्पाइन घास के मैदान और पर्वतीय घास के मैदान

36. राजस्थान में वनों के कानूनी वर्गीकरण के तहत, कुल दर्ज वन क्षेत्र का लगभग कितना प्रतिशत "आरक्षित वन" श्रेणी के अंतर्गत आता है?
(A) 6%
(B) 25%
(C) 37%
(D) 56%

37. राजस्थान में समुदाय द्वारा संरक्षित ओरण का सबसे महत्वपूर्ण पारिस्थितिक योगदान क्या है?
(A) ये सूक्ष्म-संरक्षित क्षेत्र के रूप में कार्य करते हैं जो जैव विविधता का संरक्षण करते हैं और भूजल पुनर्भरण में सहायता करते हैं।
(B) ये राज्य के राजस्व के लिए व्यावसायिक लकड़ी उत्पादन के प्राथमिक स्रोत के रूप में कार्य करते हैं।
(C) ये पंचायतों द्वारा गहन कृषि खेती के लिए विशेष रूप से आरक्षित हैं।
(D) ये विदेशी वृक्ष प्रजातियों को बढ़ावा देने के लिए देसी घासों के प्राकृतिक प्रसार को रोकते हैं।

38. निम्नलिखित में से किस जिले में प्राकृतिक उष्णकटिबंधीय शुष्क सागौन वन पाए जाने की संभावना सबसे कम है?
(A) बांसवाड़ा (B) डूंगरपुर
(C) प्रतापगढ़ (D) बीकानेर

39. निम्नलिखित में से कौन-सा मुख्य रूप से राजस्थान के वनों में प्राकृतिक रूप से पाए जाने वाले औषधीय पौधे के रूप में नहीं जाना जाता है?
(A) अश्वगंधा (B) तेंदू
(C) गुग्गल (D) सोनाम

40. राजस्थान की वनस्पति पर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I : औसत परिवेशी तापमान में वृद्धि और लंबी शुष्क

57. अरावली बेल्ट में पाया जाने वाला सालर वृक्ष (बोसवेलिया सेराटा) मुख्य रूप से किसके निष्कर्षण के लिए आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण है?
(A) व्यावसायिक पान उत्पादन में प्रयुक्त प्रसंस्कृत कत्था अर्क
(B) समुद्री जहाज निर्माण के लिए उपयोग की जाने वाली उच्च श्रेणी की संरचनात्मक इमारती लकड़ी
(C) बेहतरीन इत्र के लिए अत्यधिक सांद्रित सुगंधित आवश्यक तेल
(D) पैकिंग के डिब्बे बनाने के लिए प्राकृतिक राल (गोंद) और मुलायम लकड़ी

58. भारत वन स्थिति रिपोर्ट 2021 के अनुसार, सबसे कम वनावरण क्षेत्र वाले राजस्थान के जिलों के सही अनुक्रम की पहचान आरोही क्रम (सबसे कम से अधिक) में कीजिए:
(A) हनुमानगढ़, चूरू, जोधपुर, गंगानगर
(B) चूरू, हनुमानगढ़, जोधपुर, गंगानगर
(C) चूरू, जोधपुर, हनुमानगढ़, गंगानगर
(D) जोधपुर, चूरू, हनुमानगढ़, गंगानगर

59. महुआ के पेड़ का वैज्ञानिक नाम क्या है, जिसके फूल दक्षिणी राजस्थान की जनजातीय आबादी के लिए सांस्कृतिक और आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण हैं?
(A) एजार्डिरक्टा इंडिका
(B) मधुका लोंगीफोलिया
(C) फाइकस बेंगालेंसिस
(D) इमली

60. निम्नलिखित में से कौन-सी प्रजाति विषम है, क्योंकि यह एक वृक्ष प्रजाति है, जबकि अन्य राजस्थान के शुष्क क्षेत्रों में पाई जाने वाली प्रमुख घासें हैं?
(A) सीवण (B) रोहिड़ा
(C) धामण (D) करड़

61. गैर-इमारती लकड़ी वन उत्पाद और इसके स्रोत पौधे का निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म गलत सुमेलित है?
(A) कत्था – ब्यूटिया मोनोस्पर्मा (पलाश)
(B) गोंद – अकेशिया सेनेगल (कुम्मट)
(C) बीड़ी आवरण – डायोस्पायरोस मेलानोक्साइलॉन (तेंदू)
(D) सुगंधित जड़ – क्रिसोपोगोन जिजैनियोइड्स (खस)

62. राजस्थान के प्रमुख वन्यजीव अभयारण्यों/उद्यानों (सूची I) को उनके संबंधित जिले (सूची II) के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I : (अभयारण्य/उद्यान)
P. सीतामाता वन्यजीव अभयारण्य
Q. सरिस्का टाइगर रिजर्व
R. केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान
S. राष्ट्रीय मरु उद्यान
सूची II : (जिला)
1. अलवर
2. जैसलमेर
3. प्रतापगढ़
4. भरतपुर
(A) P-1, Q-3, R-2, S-4
(B) P-4, Q-2, R-1, S-3
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

63. पश्चिमी राजस्थान की नाजुक मरुस्थलीय वनस्पति और घास के मैदानों के सामने वर्तमान में सबसे गंभीर मानवजनित खतरा क्या है?
(A) गंभीर क्षेत्रीय औद्योगिक रासायनिक प्रदूषण के कारण अम्लीय वर्षा
(B) उच्च गुणवत्ता वाली निर्यात लकड़ी के लिए पेड़ों की बड़े पैमाने पर अवैध कटाई
(C) स्थानांतरी कृषि (झूम खेती) की प्रथाओं के कारण मूल वनस्पति का तेजी से विनाश
(D) पारिस्थितिकी तंत्र की वहन क्षमता से अधिक मवेशियों के झुंडों द्वारा अतिचारण

64. राजस्थान में निम्नीकृत भूमि पर शुरू की गई पारिस्थितिक पुनर्स्थापन परियोजनाओं का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?
(A) विशेष आर्थिक क्षेत्र स्थापित करने के लिए भूमि से सभी जंगली वनस्पतियों को साफ करना
(B) सुंदरता में सुधार के लिए स्थायी रूप से विदेशी सजावटी पौधों को लगाना
(C) मूल पारिस्थितिकी तंत्र की संरचनात्मक और कार्यात्मक अखंडता को पुनः स्थापित करना
(D) सभी अर्ध-शुष्क घास के मैदानों को अत्यधिक पानी की खपत वाले कृषि फार्मों में बदलना

65. राजस्थान में संयुक्त वन प्रबंधन कार्यक्रम के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसका उद्देश्य स्थानीय समुदायों के साथ भागीदारी करके निम्नीकृत वनों का पुनर्वास करना है।
II. ग्राम वन सुरक्षा एवं प्रबंधन समितियां संस्थागत निकाय हैं जो जमीनी स्तर पर संयुक्त वन प्रबंधन को निष्पादित करती हैं।
III. यह कार्यक्रम सुरक्षा के प्रोत्साहन के रूप में स्थानीय लोगों द्वारा सूखी ईंधन की लकड़ी या गौण वन उपज एकत्र करने पर कड़ाई से रोक लगाता है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल I और III
(C) केवल II और III
(D) I, II और III

66. राजस्थान में खेजड़ी के पेड़ को अत्यधिक सम्मानित माना जाता है और पारंपरिक रूप से किस प्रमुख त्योहार के दौरान इसकी पूजा की जाती है?
(A) होली
(B) दिवाली
(C) मकर संक्रांति
(D) दशहरा (विजयादशमी)

Downloaded from www.pdf.tube

(B) एक राष्ट्रीय उद्यान मुख्य रूप से व्यावसायिक इमारती लकड़ी पर केंद्रित है, जबकि एक ओरण पूरी तरह से पारिस्थितिक पर्यटन को बढ़ावा देता है।
(C) एक राष्ट्रीय उद्यान को राज्य का कानूनी संरक्षण प्राप्त है, जबकि एक ओरण को सामुदायिक आस्था के माध्यम से संरक्षित किया जाता है।
(D) एक राष्ट्रीय उद्यान में केवल सदाबहार वन होते हैं, जबकि एक ओरण में विशेष रूप से मरुस्थलीय झाड़ीदार भूमि होती है।

49. राजस्थान में संयुक्त वन प्रबंधन संरचना के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(A) यह ग्राम वन सुरक्षा एवं प्रबंधन समितियों के माध्यम से कार्य करता है।
(B) स्थानीय समुदायों को संरक्षित वन भूमि को निजी बिल्डरों को बेचने का पूर्ण स्वामित्व और अधिकार दिया जाता है।
(C) यह वन विभाग और स्थानीय समुदाय के बीच एक सहभागितापूर्ण दृष्टिकोण है।
(D) वन सुरक्षा के बदले समुदायों को गैर-इमारती लकड़ी वन उत्पाद और लकड़ी की उपज से होने वाले लाभों में हिस्सा मिलता है।

50. बीड़ी उद्योग के लिए दक्षिणी राजस्थान में स्थानीय वनवासियों द्वारा किस पौधे की पत्तियां व्यापक रूप से एकत्र की जाती हैं?
(A) धोक
(B) पलाश
(C) खैर
(D) तेंदू

51. अरावली पहाड़ियों पर वनस्पति के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I : अरावली पहाड़ियों के पूर्वी ढलान आमतौर पर पश्चिमी ढलानों की तुलना में सघन और लंबी वनस्पति का समर्थन करते हैं।
कथन II : वृष्टि-छाया वाले पश्चिमी ढलानों की तुलना में पूर्वी ढलानों में दक्षिण-पश्चिम मानसून से अधिक मात्रा में वर्षा होती है।
सही विकल्प चुनिए:
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है और कथन II सही है।

52. राजस्थान के मरुस्थलीय पारिस्थितिकी तंत्र और वनस्पति के अध्ययन और प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाला केंद्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान (काजरी) किस शहर में स्थित है?
(A) बीकानेर
(B) जयपुर
(C) जोधपुर
(D) उदयपुर

53. राजस्थान के औषधीय पौधों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. गुग्गल को इसके औषधीय राल के लिए अत्यधिक महत्व दिया जाता है, जिसमें सूजन-रोधी गुण होते हैं।
II. पारंपरिक चिकित्सा में उपयोग के लिए अश्वगंधा की जड़ों की व्यावसायिक रूप से खेती और संग्रह किया जाता है।
III. एलोवेरा (ग्वारपाठा) अर्ध-शुष्क जलवायु के अनुकूल है और इसके लिए न्यूनतम सिंचाई की आवश्यकता होती है।
IV. पश्चिमी शुष्क क्षेत्रों में निर्यात उद्देश्यों के लिए सोनाम व्यापक रूप से उगाई जाती है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल I, III और IV
(C) केवल II, III और IV
(D) I, II, III और IV

54. निम्नलिखित में से कौन-सी वृक्ष प्रजाति राजस्थान के प्राकृतिक शुष्क पर्णपाती वन पारिस्थितिकी तंत्र का हिस्सा नहीं है?
(A) सालर
(B) धोक
(C) सागौन
(D) सुंदरी

55. राजस्थान में वानिकी अनुसंधान के लिए एक महत्वपूर्ण संस्थान, शुष्क वन अनुसंधान संस्थान (आफरी) का मुख्यालय कहाँ स्थित है?
(A) जैसलमेर
(B) जोधपुर
(C) बीकानेर
(D) अजमेर

56. दक्षिणी राजस्थान में चौड़ी पत्ती वाले वृक्षों और पश्चिमी राजस्थान में छोटी पत्ती वाले या कांटेदार पौधों की उपस्थिति की व्याख्या कौन-सा पारिस्थितिक सिद्धांत करता है?
(A) दक्षिण में चौड़ी पत्तियां मृदा की भारी धातुओं के विषाक्त पदार्थों को अवशोषित करती हैं, जबकि पश्चिमी मरुस्थलीय मृदा पूरी तरह से विष-मुक्त है।
(B) दक्षिणी पहाड़ियों पर तेज हवा की गति के लिए संरचनात्मक वायुगतिकीय स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए चौड़ी पत्तियों की आवश्यकता होती है।
(C) चौड़ी पत्तियां नमी के साथ प्रकाश संश्लेषण को अनुकूलित करती हैं, जबकि छोटी पत्तियां शुष्क क्षेत्रों में पानी की कमी को रोकती हैं।
(D) पश्चिम में छोटी पत्तियां गंभीर शीतकालीन बर्फबारी का विरोध करने के लिए एक विशेष संरचनात्मक अनुकूलन के रूप में कार्य करती हैं।

NODIA

अवधि से वनस्पति क्षेत्रों में बदलाव हो सकता है, जिससे सूखा-संवेदनशील प्रजातियों को खतरा हो सकता है।
कथन II : जलवायु परिवर्तन से थार मरुस्थल में उपोष्ण कटिबंधीय सदाबहार वनों के घनत्व में अत्यधिक वृद्धि होने की उम्मीद है।
सही विकल्प चुनिए:
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है और कथन II सही है।

41. ऐतिहासिक खेजरली नरसंहार, जिसमें अमृता देवी के नेतृत्व में 363 बिश्नोइयों ने खेजड़ी के पेड़ों की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी थी, किस वर्ष हुआ था?
(A) 1604
(B) 1730
(C) 1857
(D) 1972

42. राजस्थान के गैर-इमारती लकड़ी वन उत्पादों (सूची I) को उनके प्राथमिक आर्थिक उपयोग (सूची II) के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I : (उत्पाद)
P. तेंदू के पत्ते
Q. खस घास
R. खैर लकड़ी का अर्क
S. महुआ के फूल
सूची II : (प्राथमिक उपयोग)
1. बीड़ी निर्माण
2. सुगंधित तेल और ठंडक देने वाली चटाइयां
3. कत्था उत्पादन
4. देशी मदिरा और खाद्य उपयोग
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-1, R-4, S-3
(C) P-1, Q-3, R-2, S-4
(D) P-3, Q-2, R-1, S-4

43. इत्र और ठंडक देने वाली चटाइयां बनाने में उपयोग की जाने वाली सुगंधित जड़ों के लिए प्रसिद्ध खस घास, राजस्थान के किस जिला समूह में मुख्य रूप से पाई जाती है?
(A) जैसलमेर, बाड़मेर, बीकानेर
(B) सवाई माधोपुर, भरतपुर, टोंक
(C) उदयपुर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा
(D) सीकर, झुंझुनूं, चूरू

44. राजस्थान में प्रोसोपिस जुलिफ्लोरा (विलायती बबूल) के व्यापक रोपण से जुड़ी प्राथमिक पारिस्थितिक चिंता क्या है?
(A) यह अपने व्यावसायिक लकड़ी के मूल्य के कारण व्यापक अवैध कटाई गतिविधियों को आकर्षित करता है।
(B) यह एक आक्रामक प्रजाति है जो देशी वनस्पतियों को दबाती है और भूजल स्तर को कम करती है।
(C) इसके लिए अत्यधिक कृत्रिम सतही सिंचाई की आवश्यकता होती है, जिससे नहर का पानी गंभीर रूप से समाप्त हो जाता है।
(D) इसकी पत्तियों में अत्यधिक विषैले तत्व होते हैं जो घरेलू मवेशियों के लिए तुरंत घातक होते हैं।

45. राजस्थान में गैर-इमारती लकड़ी वन उत्पाद के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. बीड़ी उद्योग में तेंदू के पत्तों का उपयोग मुख्य रूप से आवरण के रूप में किया जाता है।
II. कत्था पारंपरिक रूप से काथोड़ी जनजाति द्वारा खैर के पेड़ की छाल और लकड़ी के मध्य भाग से निकाला जाता है।
III. वनों के क्षरण को रोकने के लिए राज्य सरकार स्थानीय जनजातियों द्वारा गौण वन उपज के संग्रह को प्रतिबंधित करती है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल I और III
(C) केवल II और III
(D) I, II और III

46. खेजड़ी के वृक्ष और रोहिड़ा के फूल दोनों को आधिकारिक तौर पर क्रमशः राजस्थान का राज्य वृक्ष और राज्य पुष्प किस वर्ष घोषित किया गया था?
(A) 1972
(B) 1983
(C) 1988
(D) 1992

47. राजस्थान में वन पुनर्स्थापन के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन (A) : अरावली वृक्षारोपण परियोजना अरावली श्रृंखलाओं के साथ निम्नीकृत वन भूमि को बहाल करने में महत्वपूर्ण थी।
कारण (R) : इस परियोजना का उद्देश्य मरुस्थलीकरण को रोकना, स्थानीय समुदायों की ईंधन और चारे की आवश्यकताओं को पूरा करना और पारिस्थितिक स्थिरता को बढ़ाना था।
सही उत्तर चुनिए:
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

48. राजस्थान में एक राष्ट्रीय उद्यान और एक पवित्र उपवन (ओरण) के बीच निम्नलिखित में से कौन-सा सबसे सटीक अंतर है?
(A) एक राष्ट्रीय उद्यान अनियंत्रित मानव बस्तियों की अनुमति देता है, जबकि एक ओरण मानवीय उपस्थिति को पूरी तरह से प्रतिबंधित करता है।

Click Here to Buy book on Flipkart

67. राजस्थान में मरुस्थलीय पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन (A) : बालुका स्तूप स्थिरीकरण पश्चिमी राजस्थान में पारिस्थितिक पुनर्स्थापन का एक महत्वपूर्ण घटक है।
कारण (R) : सीवण घास और मरुद्भिद झाड़ियों जैसी वनस्पति के साथ बालुका स्तूपों को स्थिर करने से मरुस्थल के पूर्व की ओर प्रसार को रोका जा सकता है।
सही उत्तर चुनिए:
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

68. यदि कोई वनस्पतिशास्त्री जैसलमेर से बांसवाड़ा की यात्रा करती है, तो वह मुख्य प्राकृतिक वनस्पति प्रकारों के किस सामान्यीकृत अनुक्रम का अवलोकन करने की सबसे अधिक संभावना रखती है?
(A) उष्णकटिबंधीय शुष्क सागौन वन → उपोष्ण कटिबंधीय सदाबहार वन → उष्णकटिबंधीय कांटेदार वन
(B) उष्णकटिबंधीय कांटेदार वन → मिश्रित पर्णपाती वन → उष्णकटिबंधीय शुष्क सागौन वन
(C) मिश्रित पर्णपाती वन → उष्णकटिबंधीय कांटेदार वन → उपोष्ण कटिबंधीय सदाबहार वन
(D) उष्णकटिबंधीय कांटेदार वन → उपोष्ण कटिबंधीय सदाबहार वन → मिश्रित पर्णपाती वन

69. राजस्थान में वन क्षेत्र के कानूनी वर्गीकरण के आधार पर, कौन-सी श्रेणी राज्य के कुल दर्ज वन क्षेत्र के उच्चतम प्रतिशत को कवर करती है?
(A) संरक्षित वन
(B) आरक्षित वन
(C) अवर्गीकृत वन
(D) सामुदायिक वन

70. वन महोत्सव के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I : वन महोत्सव हरित आवरण को बढ़ावा देने के लिए जुलाई के पहले सप्ताह में पूरे भारत में मनाया जाने वाला एक वार्षिक वृक्षारोपण उत्सव है।
कथन II : राजस्थान में, इस उत्सव में वृक्षारोपण अभियानों में नागरिकों, गैर सरकारी संगठनों और वन विभाग की बड़े पैमाने पर भागीदारी सम्मिलित है।
सही विकल्प चुनिए:
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है और कथन II सही है।

71. निम्नलिखित में से कौन-सा राजस्थान में सामाजिक वानिकी पहलों का प्राथमिक उद्देश्य नहीं है?
(A) ईंधन, चारे और छोटी संरचनात्मक लकड़ी की तत्काल स्थानीय मांगों को पूरा करना
(B) निर्यात बाजारों के लिए विशेष व्यावसायिक लकड़ी का एकल-कृषि वृक्षारोपण स्थापित करना
(C) स्थानीय शहरी और ग्रामीण आबादी के लिए सार्वजनिक मनोरंजक हरित पट्टियों का निर्माण करना
(D) प्राकृतिक, पारंपरिक रूप से संरक्षित वन भंडारों पर मानवीय दबाव को कम करना

72. अपनी अत्यधिक सामाजिक-आर्थिक और पारिस्थितिक उपयोगिता के कारण किस सहनशील वृक्ष को 'थार मरुस्थल का कल्पवृक्ष' कहा जाता है?
(A) रोहिड़ा
(B) बबूल
(C) खेजड़ी
(D) नीम

73. भारत वन स्थिति रिपोर्ट 2021 के अनुसार राजस्थान के वन आंकड़ों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. राजस्थान का कुल वनावरण इसके भौगोलिक क्षेत्रफल का 4.87% है।
II. उदयपुर जिले में राज्य में अधिकतम वनावरण क्षेत्र है।
III. चूरू जिले में राज्य में न्यूनतम वनावरण क्षेत्र है।
IV. राज्य की सभी कानूनी वन श्रेणियों में अवर्गीकृत वनों का प्रतिशत सबसे अधिक है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल II, III और IV
(C) केवल I, III और IV
(D) I, II, III और IV

74. राजस्थान की पारंपरिक भूमि-उपयोग प्रणालियों के संदर्भ में, 'गोचर' भूमि का प्राथमिक कार्य क्या है?
(A) पशुधन चराई के लिए बनाए रखी गई गांव की सामान्य भूमि
(B) राज्य सरकार द्वारा सीधे लीज पर दिए गए व्यावसायिक कृषि क्षेत्र
(C) पवित्र आध्यात्मिक क्षेत्र जहां किसी भी मानवीय प्रवेश या गतिविधि पर पूरी तरह से प्रतिबंध है
(D) पत्थर निष्कर्षण के लिए आरक्षित राज्य-निर्दिष्ट औद्योगिक खनन क्षेत्र

75. गरीबी उन्मूलन और पारिस्थितिक पुनर्स्थापन के उद्देश्य से 'राजस्थान वानिकी एवं जैव विविधता परियोजना' को किस अंतरराष्ट्रीय एजेंसी की वित्तीय सहायता से कार्यान्वित किया गया था?
(A) विश्व बैंक
(B) जापान इंटरनेशनल कोऑपरेशन एजेंसी (जाइका)
(C) एशियाई विकास बैंक (ADB)
(D) संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP)

Downloaded from www.pdf.tube

76. राजस्थान की वन प्रोफाइल के संदर्भ में गलत कथन की पहचान कीजिए:
(A) राज्य में वनावरण का अत्यधिक असमान वितरण है, जिसमें पश्चिमी जिलों में नगण्य वन हैं।
(B) अत्यधिक सघन वन क्षेत्र में राजस्थान भारत के शीर्ष राज्यों में शुमार है।
(C) बांसवाड़ा और डूंगरपुर जिले शुष्क सागौन वनावरण के प्रमुख क्षेत्रों के रूप में कार्य करते हैं।
(D) अरावली पर्वत श्रृंखला मरुस्थलीय वनस्पति के पूर्व की ओर प्रसार को रोकने के लिए एक अवरोधक के रूप में कार्य करती है।

77. ब्यूटिया मोनोस्पर्मा राजस्थान में एक पारिस्थितिक रूप से महत्वपूर्ण वृक्ष है। इसे सबसे अधिक किस स्थानीय नाम से जाना जाता है?
(A) पलाश / ढाक
(B) खेजड़ी / शमी
(C) खैर / कत्था
(D) धोक

78. निम्नलिखित में से कौन-सा जिला विषम है, क्योंकि यह शुष्क पर्णपाती और सागौन वनों की विशेषता वाले प्रमुख दक्षिणी राजस्थान वन प्रभाग के अंतर्गत नहीं आता है?
(A) उदयपुर
(B) बांसवाड़ा
(C) जैसलमेर
(D) डूंगरपुर

79. राजस्थान में औषधीय प्रजातियों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I : गुग्गल (Commiphora wightii) राजस्थान के शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में पाया जाने वाला एक अत्यंत संकटग्रस्त औषधीय पौधा है।
कथन II : इसके ओलेयो-गम राल को निकालने की अवैज्ञानिक और विनाशकारी तकनीकों के कारण इसकी प्राकृतिक आबादी में भारी गिरावट आई है।
सही विकल्प चुनिए:
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है और कथन II सही है।

80. मुख्य रूप से जैसलमेर जिले के लाठी सीरीज़ क्षेत्र में पाई जाने वाली एक विशेष प्रकार की अत्यधिक पौष्टिक घास, जो मवेशियों के लिए उत्कृष्ट चरागाह बनाती है, कहलाती है:
(A) खस
(B) बांस
(C) सीवण
(D) मूंज

81. खैर के पेड़ (Acacia catechu) की मध्य लकड़ी का उपयोग राजस्थान में स्थानीय जनजातीय समुदायों द्वारा ऐतिहासिक और व्यावसायिक रूप से किस वस्तु का उत्पादन करने के लिए किया जाता है?
(A) गोंद
(B) कत्था
(C) बीड़ी
(D) आवश्यक तेल

82. राजस्थान वन विभाग द्वारा वर्गीकृत "अवर्गीकृत वनों" की सबसे सटीक परिभाषा क्या है?
(A) वे वन जो पूरी तरह से निजी अंतरराष्ट्रीय निगमों के स्वामित्व और प्रत्यक्ष प्रबंधन में हैं
(B) वे वन जो सार्वजनिक प्रवेश से पूरी तरह से प्रतिबंधित हैं, जहाँ किसी मानवीय हस्तक्षेप या चराई की अनुमति नहीं है
(C) आधिकारिक तौर पर मान्यता प्राप्त राष्ट्रीय उद्यानों और अभयारण्यों के भीतर स्थित वनाच्छादित भूमि क्षेत्र
(D) बिना दर्ज कानूनी वन जहाँ प्रतिबंधित न होने तक चराई और पेड़ों की कटाई की अनुमति होती है

83. राजस्थान में वृक्षारोपण और संरक्षण पहलों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म गलत सुमेलित है?
(A) राजस्थान में प्रोजेक्ट टाइगर का शुभारंभ – 2010
(B) वन महोत्सव – 1950 में शुरू किया गया
(C) अरावली वृक्षारोपण परियोजना – जापान द्वारा सहायता प्राप्त
(D) खेजड़ी को राज्य वृक्ष घोषित किया गया – 1983

84. पश्चिमी राजस्थान की प्राकृतिक वनस्पति पर अनियंत्रित अतिचारण का सबसे प्रत्यक्ष परिणाम निम्नलिखित में से कौन-सा है?
(A) उपोष्ण कटिबंधीय पर्वतीय सदाबहार प्रजातियों का अनियंत्रित त्वरित पुनरुद्भवन
(B) मवेशियों के अत्यधिक गोबर के कारण जैविक मृदा उर्वरता में महत्वपूर्ण दीर्घकालिक वृद्धि
(C) घास के आवरण का नुकसान जिसके कारण गंभीर मृदा अपरदन और मरुस्थलीकरण होता है
(D) स्थानीय अप्रतिबद्ध क्षेत्रीय भूजल स्तर में अत्यधिक कृत्रिम वृद्धि

85. हालांकि राजस्थान में 'अत्यधिक सघन वन' बहुत कम हैं, लेकिन भारत वन स्थिति रिपोर्ट 2021 के अनुसार राज्य के किस जिले में अत्यधिक सघन वन का अधिकतम क्षेत्रफल है?
(A) अलवर
(B) चूरू
(C) जैसलमेर
(D) बाड़मेर

86. निम्नलिखित में से कौन-सी विदेशी या आक्रामक प्रजाति आमतौर पर राजस्थान के पारंपरिक, अच्छी तरह से संरक्षित पवित्र उपवनों (ओरण) में प्राकृतिक रूप से पनपती हुई नहीं पाई जाती है?
(A) खेजड़ी

NODIA

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs, you are wasting valuable time.

Research shows that learning from **PRINTED BOOKS** has up to **4× HIGHER RETENTION** than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS** move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND** in competition.

In competitive exams, being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

(B) पीपल
(C) बरगद
(D) विलायती बबूल

87. 'हरित राजस्थान' अभियान का मूल उद्देश्य क्या था?
(A) कृषि क्षेत्रों में सिंथेटिक हरित जैव-उर्वरकों को व्यवस्थित रूप से बढ़ावा देना
(B) बड़े पैमाने पर सार्वजनिक वृक्षारोपण अभियानों के माध्यम से राज्य के वनावरण को बढ़ाना
(C) पड़ोसी राज्य के बाजारों में अतिरिक्त लकड़ी की उपज का सीधे संग्रह और निर्यात करना
(D) बेहतर थर्मल इंसुलेशन के लिए सभी सरकारी कार्यालय भवनों को हरे रंग से पेंट करना

88. राजस्थान में अरावली श्रृंखला के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I : अरावली पहाड़ियां थार मरुस्थल के पूर्व की ओर बढ़ने को रोकते हुए एक महत्वपूर्ण पारिस्थितिक विभाजक के रूप में कार्य करती हैं।
कथन II : अरावली श्रृंखलाओं में व्यापक वनों की कटाई और खनन के कटाव पूर्वी मैदानों में मरुस्थलीकरण की प्रक्रिया को तेज कर रहे हैं।
सही विकल्प चुनिए:
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(C) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है और कथन II सही है।

89. राजस्थान में वन और पर्यावरण संरक्षण से संबंधित निम्नलिखित घटनाओं को कालानुक्रमिक क्रम (सबसे पहले से नवीनतम) में व्यवस्थित कीजिए:
1. पेड़ों को बचाने के लिए खेजरली गांव का नरसंहार
2. खेजड़ी को राज्य वृक्ष घोषित करना
3. व्यापक राजस्थान वन अधिनियम का अधिनियमन
4. अरावली वृक्षारोपण परियोजना का शुभारंभ
निम्नलिखित में से सही अनुक्रम कौन-सा है?
(A) 1, 3, 2, 4
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 3, 1, 2, 4
(D) 1, 3, 4, 2

90. चैंपियन और सेठ के वन प्रकारों के वर्गीकरण (1968) के अनुसार, राजस्थान की प्राकृतिक वनस्पति को मोटे तौर पर कितने प्रमुख वन प्रकार समूहों में वर्गीकृत किया गया है?
(A) पांच
(B) दो
(C) तीन
(D) आठ

Click Here to Buy book on Amazon

65. (A) केवल I और II
संयुक्त वन प्रबंधन का उद्देश्य स्थानीय ग्रामीण समुदायों के सहयोग से निम्नीकृत वन क्षेत्रों का पुनरुद्धार और संरक्षण करना है। इस कार्यक्रम को धरातल पर संचालित करने के लिए ग्राम वन सुरक्षा एवं प्रबंधन समितियां बनाई जाती हैं। सुरक्षा के बदले ग्रामीणों को सूखी लकड़ियां, चारा और गौण वन उपज एकत्र करने की छूट दी जाती है। अतः तीसरा बिंदु गलत है।

66. (D) दशहरा (विजयादशमी)
राजस्थान की सांस्कृतिक परंपराओं में खेजड़ी के वृक्ष को अत्यधिक पवित्र और पूजनीय माना गया है। विजयादशमी यानी दशहरा पर्व के अवसर पर खेजड़ी के वृक्ष की विशेष पूजा-अर्चना करने की प्राचीन परंपरा रही है। पौराणिक मान्यताओं और संस्कृति के अनुसार दशहरे पर शमी पूजन को विजय और समृद्धि का प्रतीक माना जाता है। यह एक पावन धार्मिक परंपरा मानी जाती है।

67. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
पश्चिमी राजस्थान में बालुका स्तूपों का स्थिरीकरण पारिस्थितिक पुनर्स्थापन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण घटक है। सीवण घास, फोग, केर और अन्य मरुद्भिद झाड़ियों जैसी वनस्पति के रोपण द्वारा रेत के टीलों को स्थिर किया जाता है, जिससे तीव्र हवाओं द्वारा होने वाला मृदा क्षरण रुकता है। यह प्रक्रिया थार मरुस्थल के पूर्व की ओर हो रहे प्रसार को रोकने में प्रभावी सिद्ध होती है।

68. (B) उष्णकटिबंधीय कांटेदार वन → मिश्रित पर्णपाती वन → उष्णकटिबंधीय शुष्क सागौन वन
जैसलमेर से बांसवाड़ा की ओर यात्रा करते समय उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व दिशा में वर्षा की मात्रा और आर्द्रता में निरंतर वृद्धि होती है। जैसलमेर के अत्यंत शुष्क क्षेत्र में उष्णकटिबंधीय कांटेदार वन पाए जाते हैं। मध्य अरावली क्षेत्र में वर्षा बढ़ने पर मिश्रित पर्णपाती वन मिलते हैं। अंततः अधिक वर्षा वाले दक्षिणी जिले बांसवाड़ा पहुँचने पर उष्णकटिबंधीय शुष्क सागौन वनों का बाहुल्य दिखाई देता है।

69. (A) संरक्षित वन
राजस्थान में वनों के कानूनी वर्गीकरण के अनुसार राज्य के कुल दर्ज वन क्षेत्र में सर्वाधिक प्रतिशत भाग "संरक्षित वन" श्रेणी का है। संरक्षित वन कुल वन क्षेत्र का लगभग 56 प्रतिशत हिस्सा कवर करते हैं। इन वनों में नियमों के तहत स्थानीय ग्रामीणों को सीमित मात्रा में चराई तथा सूखी लकड़ियां एकत्र करने की अनुमति दी जाती है। यह विशाल भाग है।

70. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
वन महोत्सव भारत में हरित आवरण तथा वनावरण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष जुलाई माह के प्रथम सप्ताह में मनाया जाने वाला एक राष्ट्रीय वृक्षारोपण उत्सव है। राजस्थान में इस अवसर पर राज्य सरकार के वन विभाग, गैर-सरकारी संगठनों, शिक्षण संस्थाओं और आम नागरिकों द्वारा बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण अभियान चलाए जाते हैं। यह पहल जन-जागरूकता बढ़ाने और पर्यावरण सुधारने में अत्यंत सहायक है।

71. (B) निर्यात बाजारों के लिए विशेष व्यावसायिक लकड़ी का एकल-कृषि वृक्षारोपण स्थापित करना
सामाजिक वानिकी का मूल दर्शन स्थानीय जनता की तात्कालिक आवश्यकताओं की पूर्ति करना है। इसका मुख्य उद्देश्य ईंधन, चारे, छोटे काष्ठ की मांगों को पूरा करना, हरित पट्टियां विकसित करना तथा प्राकृतिक वनों पर मानवीय दबाव को घटाना है। निर्यात बाजारों हेतु व्यावसायिक लकड़ी का एकल-कृषि वृक्षारोपण करना सामाजिक वानिकी का प्राथमिक उद्देश्य कदापि नहीं है, बल्कि यह व्यापारिक वानिकी का हिस्सा है।

NODIA

72. (C) खेजड़ी
खेजड़ी को थार मरुस्थल की अत्यधिक सामाजिक, आर्थिक और पारिस्थितिक उपयोगिता के कारण "थार का कल्पवृक्ष" कहा जाता है। यह वृक्ष मरुस्थल की विषम और शुष्क जलवायु परिस्थितियों में भी जीवित रहता है। इसकी जड़ें नाइट्रोजन स्थिरीकरण करके मृदा की उर्वरता बढ़ाती हैं। इसके फल, पत्तियां और लकड़ी स्थानीय निवासियों के लिए अत्यधिक उपयोगी सिद्ध होते हैं। यह वरदान माना जाता है।

73. (A) केवल I, II और III
भारत वन स्थिति रिपोर्ट 2021 के अनुसार राजस्थान का कुल वनावरण इसके भौगोलिक क्षेत्रफल का 4.87 प्रतिशत है। उदयपुर जिला सर्वाधिक वनावरण क्षेत्र वाला तथा चूरू जिला न्यूनतम वनावरण वाला है। राज्य में सर्वाधिक प्रतिशत हिस्सा 'संरक्षित वनों' का है, न कि अवर्गीकृत वनों का। अवर्गीकृत वनों का हिस्सा केवल 6 से 7 प्रतिशत ही दर्ज है, अतः चौथा कथन असत्य है।

74. (A) पशुधन चराई के लिए बनाए रखी गई गांव की सामान्य भूमि
राजस्थान की पारंपरिक ग्रामीण भूमि-उपयोग प्रणालियों में 'गोचर' भूमि से तात्पर्य गांव की उस सार्वजनिक भूमि से है, जिसे विशेष रूप से मवेशियों और पशुधनों के चराई स्थल के रूप में आरक्षित रखा जाता है। गोचर भूमियों पर कृषि कार्य या निर्माण प्रतिबंधित होता है। यह भूमि स्थानीय पशुपालन आधारित अर्थव्यवस्था और ग्रामीण पारिस्थितिकी के संतुलन को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

75. (B) जापान इंटरनेशनल कोऑपरेशन एजेंसी (जाइका)
'राजस्थान वानिकी एवं जैव विविधता परियोजना' राज्य में निम्नीकृत वनों के पुनर्स्थापन, मरुस्थलीकरण नियंत्रण, जैव विविधता संरक्षण तथा निर्धनता उन्मूलन के मुख्य उद्देश्यों से प्रारंभ की गई थी। इस महत्वाकांक्षी परियोजना को अंतरराष्ट्रीय संस्था 'जापान इंटरनेशनल कोऑपरेशन एजेंसी' (जाइका) की वित्तीय सहायता से कार्यान्वित किया गया था। इससे राज्य के वनावरण और सामुदायिक सहभागिता में अत्यधिक सकारात्मक वृद्धि दर्ज की गई।

10. (A) सागौन
सागौन एक अत्यंत मूल्यवान व्यावसायिक वृक्ष प्रजाति है, जिसकी लकड़ी अपनी मजबूती, स्थायित्व और दीमक-रोधी गुणों के लिए जानी जाती है। इसका मुख्य उपयोग उच्च गुणवत्ता वाली इमारती लकड़ी और नक्काशीदार फर्नीचर बनाने में होता है। इसके विपरीत, तेंदू, खैर और महुआ जैसी अन्य प्रजातियां मुख्य रूप से गैर-इमारती वन उत्पादों जैसे पत्तों, कत्था और फूलों के संग्रह के लिए प्रसिद्ध हैं। अतः सागौन का आर्थिक मूल्य इमारती काष्ठ से संबंधित है।

11. (C) कथन I सही है और कथन II गलत है।
शुष्क पर्णपाती वन ग्रीष्मकाल में वाष्पोत्सर्जन द्वारा होने वाले जल ह्रास को रोकने के लिए अपनी पत्तियां गिरा देते हैं। पश्चिमी राजस्थान में अत्यधिक कम वर्षा और भूजल स्तर काफी गहरा होने के कारण उष्णकटिबंधीय कांटेदार वन वर्ष भर हरे-भरे नहीं रहते, बल्कि वे अत्यधिक शुष्क परिस्थितियों के कारण विरल और शुष्क बने रहते हैं। अतः भूजल स्तर अधिक होने तथा पूरे वर्ष हरा-भरा रहने की बात पूरी तरह से असत्य और आधारहीन है।

12. (B) टेकोमेला उंडुलता
राजस्थान के राज्य पुष्प 'रोहिड़ा' का वैज्ञानिक नाम टेकोमेला उंडुलता है। यह मुख्य रूप से राज्य के शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में पाया जाने वाला एक सुंदर पुष्प-धारी वृक्ष है। वसंत ऋतु के दौरान इस पर आकर्षक नारंगी और पीले रंग के फूल खिलते हैं। इसकी सुंदर लकड़ी का उपयोग नक्काशीदार फर्नीचर बनाने में किया जाता है, जिसके कारण इसे 'मरुस्थल की सागौन' अथवा 'मरुशोभा' के नाम से भी जाना जाता है।

13. (A) केवल I, II और III
राजस्थान सरकार ने वर्ष 1983 में राज्य के पारिस्थितिक महत्व को देखते हुए खेजड़ी को राज्य वृक्ष तथा रोहिड़ा को राज्य पुष्प घोषित किया था। ये दोनों ही प्रजातियां राज्य के शुष्क और अर्ध-शुष्क पारिस्थितिकी तंत्र में स्वाभाविक रूप से पनपती हैं। राज्य वृक्ष खेजड़ी का वैज्ञानिक नाम प्रोसोपिस सिनेरेरिया है, न कि प्रोसोपिस जुलिफ्लोरा। प्रोसोपिस जुलिफ्लोरा विलायती बबूल का नाम है, जो एक आक्रामक प्रजाति मानी जाती है।

14. (C) वर्षा की कमी और वाष्पीकरण की उच्च दर
जैसलमेर और बीकानेर जिले थार मरुस्थल के अत्यधिक शुष्क भाग में स्थित हैं, जहाँ औसत वार्षिक वर्षा बहुत कम होती है और तापमान अत्यधिक उच्च रहता है। इस तीव्र गर्मी के कारण जल का वाष्पीकरण बहुत उच्च दर से होता है। चौड़ी पत्ती वाले पर्णपाती वृक्षों को पनपने के लिए प्रचुर जल और नमी की आवश्यकता होती है। जल की भारी कमी तथा उच्च वाष्पीकरण के कारण यहाँ ऐसे वनों का विकास नहीं हो पाता।

15. (D) माउंट आबू क्षेत्र
राजस्थान में उपोष्ण कटिबंधीय सदाबहार वन राज्य के कुल वन क्षेत्र के अत्यंत सूक्ष्म भाग पर पाए जाते हैं। यह विशिष्ट प्रकार की वनस्पति केवल सिरोही जिले में स्थित माउंट आबू के पर्वतीय क्षेत्रों में पाई जाती है। अत्यधिक ऊंचाई, कम तापमान और 150 सेंटीमीटर से अधिक वर्षा होने के कारण यहाँ सदाबहार वनस्पति अनुकूल वातावरण प्राप्त करती है। आम, जामुन, बांस और कल्पवृक्ष जैसी प्रजातियां यहाँ विशेष रुप से मिलती हैं।

16. (C) बांस को मुख्य इमारती लकड़ी के रूप में वर्गीकृत किया गया है और सभी परिस्थितियों में इसका निष्कर्षण प्रतिबंधित है।
भारतीय वन अधिनियम में संशोधन के पश्चात बांस को वृक्षों की श्रेणी से हटाकर घास की श्रेणी में वर्गीकृत किया गया है। इसका उद्देश्य स्थानीय निवासियों तथा आदिवासियों को बांस के सतत उपयोग और आर्थिक व्यापार की अनुमति प्रदान करना था। अतः बांस को मुख्य इमारती लकड़ी मानना तथा सभी परिस्थितियों में इसका निष्कर्षण प्रतिबंधित बताना पूरी तरह गलत है। धोक राज्य का सर्वाधिक विस्तृत वृक्ष है।

17. (B) जाम्भोजी
राजस्थान का बिश्नोई समाज अपने महान संत गुरु जाम्भोजी (गुरु जंभेश्वर) के आदर्शों का पालन करता है। जाम्भोजी ने 15वीं शताब्दी में बिश्नोई संप्रदाय की स्थापना की थी और अपने अनुयायियों को 29 नियम दिए थे। इन नियमों में जीवों पर दया करना, हरे वृक्षों (विशेष रूप से खेजड़ी) को न काटना तथा प्रकृति का संरक्षण करना अनिवार्य कर्तव्य माना गया है। बिश्नोई समाज आज भी पर्यावरण रक्षा हेतु समर्पित माना जाता है।

18. (B) संरक्षित वन, आरक्षित वन, अवर्गीकृत वन
राजस्थान में प्रशासनिक एवं कानूनी आधार पर वनों को तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया है। राज्य के कुल वन क्षेत्र में सर्वाधिक हिस्सा संरक्षित वनों (लगभग 56 प्रतिशत) का है, जहाँ सीमित मानवीय गतिविधियों की अनुमति होती है। इसके पश्चात आरक्षित वन (लगभग 37 प्रतिशत) आते हैं, जो पूर्णतः सरकारी नियंत्रण में होते हैं। सबसे कम हिस्सा अवर्गीकृत वनों (लगभग 6-7 प्रतिशत) का है, जहाँ नियमों का पालन करते हुए चराई संभव है।

19. (B) 1953
राजस्थान राज्य के गठन के पश्चात वन संपदा के प्रबंधन, संरक्षण तथा वन उपज के परिवहन को विनिमित करने के उद्देश्य से 'राजस्थान वन अधिनियम' वर्ष 1953 में लागू किया गया था। इस अधिनियम के माध्यम से राज्य सरकार को वनों को आरक्षित, संरक्षित तथा अवर्गीकृत श्रेणियों में अधिसूचित करने और वन अपराधों के लिए दंड निर्धारित करने के विधिक अधिकार प्राप्त हुए। यह अधिनियम राज्य में वानिकी प्रशासन की मुख्य कानूनी संरचना प्रस्तुत करता है।

20. (C) निम्नीकृत वन भूमि की सुरक्षा और प्रबंधन में स्थानीय समुदायों को सम्मिलित करना
संयुक्त वन प्रबंधन कार्यक्रम का प्राथमिक उद्देश्य निम्नीकृत वन क्षेत्रों के संरक्षण, पुनरुद्धार और सतत प्रबंधन में स्थानीय ग्रामीण और जनजातीय समुदायों की सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित करना है। इसके अंतर्गत वन विभाग और स्थानीय

Downloaded from www.pdf.tube

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) 4.87%
भारत वन स्थिति रिपोर्ट 2021 के अनुसार राजस्थान का कुल वनावरण 16654.96 वर्ग किलोमीटर दर्ज किया गया है। यह राज्य के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का लगभग 4.87 प्रतिशत हिस्सा है। राज्य में वनावरण मुख्य रूप से अरावली पर्वत श्रृंखला और उसके आसपास के दक्षिणी तथा पूर्वी जिलों में पाया जाता है। पश्चिमी शुष्क मरुस्थलीय जिलों में जल की कमी के कारण वनावरण का घनत्व अत्यधिक कम देखने को मिलता है।

2. (D) P-3, Q-1, R-2, S-4
राजस्थान में भौगोलिक विविधता के कारण विभिन्न प्रकार के वन पाए जाते हैं। उपोष्ण कटिबंधीय सदाबहार वन केवल माउंट आबू के उच्च पर्वतीय क्षेत्र में मिलते हैं। उष्णकटिबंधीय शुष्क सागौन वन मुख्य रूप से बांसवाड़ा और डूंगरपुर जैसे दक्षिणी जिलों में सीमित हैं। अत्यधिक शुष्क जलवायु के कारण पश्चिमी मरुस्थलीय जिलों जैसलमेर और बाड़मेर में उष्णकटिबंधीय कांटेदार वन पाए जाते हैं। मिश्रित पर्णपाती वन चित्तौड़गढ़ और राजसमंद जिलों के अरावली क्षेत्रों में विस्तृत रूप से विस्तारित हैं।

3. (A) वाष्पोत्सर्जन को कम करने के लिए गहरी मूसला जड़ें, कांटेदार शाखाएं और छोटी पत्तियां
पश्चिमी राजस्थान में कठोर शुष्क जलवायु और जल की अत्यधिक कमी पाई जाती है। यहाँ उगने वाली मरुद्भिद वनस्पति में जीवित रहने के लिए विशेष शारीरिक अनुकूलन पाया जाता है। इन पौधों की मूसला जड़ें गहराई में जाकर भूमिगत जल तक पहुँचती हैं। इनकी पत्तियां बहुत छोटी होती हैं अथवा कांटों में रूपांतरित हो जाती हैं। यह संरचना वाष्पोत्सर्जन द्वारा होने वाली जल हानि को नियंत्रित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

4. (C) पूर्व से पश्चिम की ओर जाने पर औसत वार्षिक वर्षा में तीव्र कमी
राजस्थान के दक्षिण-पूर्व से उत्तर-पश्चिम दिशा की ओर जाने पर औसत वार्षिक वर्षा में उल्लेखनीय गिरावट दर्ज की जाती है। दक्षिणी-पूर्वी क्षेत्रों में पर्याप्त वर्षा होने के कारण सघन उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वन पाए जाते हैं। इसके विपरीत, अरावली के पश्चिम में अनावृष्टि तथा मरुस्थलीय परिस्थितियों के कारण वनस्पति का स्वरूप बदलकर कांटेदार झाड़ियों में परिवर्तित हो जाता है। अतः वर्षा की मात्रा में यह अंतर प्राथमिक उत्तरदायी कारक है।

5. (A) केवल I और II
उष्णकटिबंधीय कांटेदार वन राजस्थान के शुष्क एवं अर्ध-शुष्क पश्चिमी भूभागों में विस्तृत हैं। इन क्षेत्रों में वर्षा की वार्षिक मात्रा सामान्यतः 50 सेंटीमीटर से कम होती है, इसलिए यहाँ 100 सेंटीमीटर से अधिक वर्षा की आवश्यकता नहीं होती। इन वनों में मुख्य रूप से सूखा सहने वाली प्रजातियां जैसे खेजड़ी, रोहिड़ा, केर, बेर और फोग बहुतायत में पाई जाती हैं। यह वनस्पति स्थानीय पारिस्थितिकी का संतुलन बनाए रखने में अत्यधिक सहायक सिद्ध होती है।

6. (D) अत्यधिक रंध्रों वाली चौड़ी पत्तियां
थार मरुस्थल की वनस्पति में जल संरक्षण हेतु विशेष शारीरिक विशेषताएं पाई जाती हैं। यहाँ पाई जाने वाली प्रजातियों में गहरी जड़ें, मोटी छाल, छोटा आकार तथा पत्तियों का कांटों में बदलना शामिल है। अत्यधिक रंध्रों वाली चौड़ी पत्तियां मरुस्थलीय पौधों में नहीं पाई जातीं, क्योंकि इनसे वाष्पोत्सर्जन की दर में अत्यधिक वृद्धि हो जाएगी जिससे पौधे जल की कमी के कारण नष्ट हो जाएंगे।

NODIA

7. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
अरावली पर्वत श्रृंखला पश्चिमी मरुस्थलीय मैदानी भूभागों की तुलना में काफी अधिक वर्षा प्राप्त करती है। पर्वतीय ढलानों पर अनुकूल उपोष्ण कटिबंधीय तथा आर्द्र जलवायु परिस्थितियों के कारण सघन, विविध और समृद्ध प्राकृतिक वनस्पति पनपती है। पश्चिमी मैदानी भागों में अत्यधिक शुष्कता और कम वर्षा के कारण केवल विरल कांटेदार वनस्पति पाई जाती है। अतः अरावली की अनुकूल जलवायु और अधिक वर्षा ही वहाँ अधिक सघन वन आवरण तथा विविधता का मुख्य कारण है।

8. (C) उदयपुर
भारत वन स्थिति रिपोर्ट 2021 के नवीनतम आंकड़ों के अनुसार राजस्थान में सर्वाधिक वनावरण क्षेत्रफल वाला जिला उदयपुर है। उदयपुर अरावली पर्वतमाला के दक्षिणी भाग में स्थित है, जहाँ अनुकूल वर्षा, आद्रता और पर्वतीय भू-आकृति के कारण सघन वनस्पति पाई जाती है। इस जिले में लगभग 2753.39 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में वनावरण विस्तृत है। यह राज्य के कुल वन संसाधनों में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान देता है तथा जैव विविधता की दृष्टि से समृद्ध है।

9. (A) 2, 4, 1, 3
भारत वन स्थिति रिपोर्ट 2021 के अनुसार राजस्थान के जिलों में वनावरण के क्षेत्रफल का घटता क्रम देखा जाए तो उदयपुर प्रथम स्थान पर आता है, जहाँ सर्वाधिक वनावरण दर्ज है। इसके पश्चात अलवर जिला दूसरे स्थान पर आता है। प्रतापगढ़ जिला तीसरे स्थान पर तथा बारां जिला चौथे स्थान पर आता है। अरावली क्षेत्र तथा पूर्वी मैदानी ढलानों पर स्थित होने के कारण इन जिलों में राज्य के अन्य जिलों की तुलना में अधिक वन आवरण विद्यमान है।

तत्वों से भरपूर होती हैं, जो दुधारू पशुओं के भरण-पोषण और दुग्ध उत्पादन में वृद्धि के लिए अत्यधिक लाभदायक मानी जाती हैं। विशेष रूप से जैसलमेर के लाठी सीरीज़ क्षेत्र में सीवण घास विस्तृत क्षेत्र में पाई जाती है।

32. (C) डायोस्पायरोस मेलानोक्साइलॉन - रोहिड़ा
डायोस्पायरोस मेलानोक्साइलॉन 'तेंदू' के वृक्ष का वैज्ञानिक नाम है, जिसकी पत्तियों का उपयोग बीड़ी निर्माण में किया जाता है। इसके विपरीत रोहिड़ा का वैज्ञानिक नाम टेकोमेला उंडुलता है। अतः यह युग्म अशुद्ध और गलत सुमेलित है। अन्य सभी सुमेलित नाम बिल्कुल सही हैं: बोसवेलिया सेराटा को सालर, एनोजिसस पेंडुला को धोक तथा अकेशिया कैटेचू को खैर कहा जाता है।

33. (D) I, II, III और IV
राजस्थान में उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वन दक्षिणी एवं दक्षिण-पूर्वी जिलों जैसे बांसवाड़ा, डूंगरपुर, उदयपुर, चित्तौड़गढ़ और कोटा में संकेंद्रित हैं। इन वनों में सागौन, धोक, सालर और खैर जैसी प्रमुख वृक्ष प्रजातियां पाई जाती हैं। यह वन क्षेत्र 50 से 100 सेंटीमीटर औसत वार्षिक वर्षा प्राप्त करता है। इसके अतिरिक्त, राज्य के कानूनी आरक्षित वन क्षेत्रों का बड़ा अनुपात भी इन्हीं वनों का प्रतिनिधित्व करता है।

34. (D) वाष्पोत्सर्जन के माध्यम से जल की हानि की दर को कम करना
गर्तित रंध्र (धंसे हुए रंध्र) मरुस्थलीय पौधों का एक अत्यंत महत्वपूर्ण पारिस्थितिक और शारीरिक अनुकूलन है। शुष्क वातावरण में तीव्र धूप और गर्म हवाओं के कारण वाष्पोत्सर्जन द्वारा पौधों से जल का ह्रास बहुत तेजी से होता है। रंध्रों के बाह्य त्वचा की सतह से नीचे गर्त में धंसे होने के कारण वायु का सीधा संपर्क कम हो जाता है, जिससे वाष्पोत्सर्जन की दर काफी घट जाती है और पौधा नमी बचा पाता है।

35. (A) मिश्रित उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वन
अरावली पर्वतमाला के ढलानों पर 700 मीटर से 1000 मीटर की मध्यम ऊंचाई वाले क्षेत्रों में मुख्य रूप से मिश्रित उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वन पाए जाते हैं। इन वनों में धोक, सालर, खैर, पलाश और तेंदू जैसी वृक्ष प्रजातियों की प्रचुरता होती है। ये वन ग्रीष्मकाल में जल संरक्षण हेतु अपनी पत्तियां गिरा देते हैं तथा वर्षा ऋतु में पुनः पूरी तरह हरे-भरे हो जाते हैं।

36. (C) 37%
राजस्थान में वनों के कानूनी और प्रशासनिक वर्गीकरण के अंतर्गत दर्ज वन क्षेत्र का लगभग 37 प्रतिशत भाग "आरक्षित वन" श्रेणी में आता है। आरक्षित वन पूरी तरह से राज्य सरकार के प्रत्यक्ष नियंत्रण में होते हैं। इन वनों में किसी भी प्रकार की लकड़ी की कटाई, मवेशियों की चराई अथवा अन्य मानवीय गतिविधियों पर कानून द्वारा पूर्ण प्रतिबंध होता है, ताकि प्राकृतिक जैव विविधता का समुचित संरक्षण हो सके।

37. (A) ये सूक्ष्म-संरक्षित क्षेत्र के रूप में कार्य करते हैं जो जैव विविधता का संरक्षण करते हैं और भूजल पुनर्भरण में सहायता करते हैं।
राजस्थान में 'ओरण' स्थानीय समुदायों द्वारा धार्मिक आस्था के आधार पर संरक्षित किए जाने वाले पवित्र उपवन हैं। इनका सबसे बड़ा पारिस्थितिक योगदान यह है कि ये प्राकृतिक सूक्ष्म-संरक्षित क्षेत्रों के रूप में कार्य करते हैं। यहाँ पेड़ों की कटाई और शिकार वर्जित होने के कारण देशी वनस्पति और वन्यजीव सुरक्षित रहते हैं। इसके अतिरिक्त, ये वर्षा जल को रोककर स्थानीय भूजल स्तर को पुनः संवर्धित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

38. (D) बीकानेर
उष्णकटिबंधीय शुष्क सागौन वन राजस्थान के केवल दक्षिणी जिलों जैसे बांसवाड़ा, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, झालावाड़ और उदयपुर में पाए जाते हैं, जहाँ औसत वार्षिक वर्षा 75 से 110 सेंटीमीटर होती है। बीकानेर जिला थार मरुस्थल के अत्यधिक शुष्क भाग में स्थित है, जहाँ बहुत कम वर्षा होती है। अतः बीकानेर जिले में प्राकृतिक रूप से उष्णकटिबंधीय शुष्क सागौन वनों के पाए जाने की संभावना नगण्य है।

39. (B) तेंदू
तेंदू को प्राथमिक रूप से एक आर्थिक और व्यावसायिक वन उपज के रूप में जाना जाता है, जिसकी पत्तियों का उपयोग बीड़ी निर्माण उद्योग में आवरण के रूप में किया जाता है। अश्वगंधा, गुग्गल और सोनाम जैसे पौधे मुख्य रूप से अपने विशिष्ट औषधीय गुणों और आयुर्वेदिक प्रयोग के लिए जाने जाते हैं। अतः तेंदू को प्राकृतिक रूप से प्रमुख औषधीय पौधे के रूप में नहीं माना जाता है।

40. (C) कथन I सही है और कथन II गलत है।
जलवायु परिवर्तन के कारण बढ़ते तापमान और लंबी होती शुष्क अवधियों से राजस्थान के वनस्पति क्षेत्रों पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा, जिससे कई प्रजातियों के अस्तित्व को खतरा होगा। हालांकि, जलवायु परिवर्तन के कारण थार मरुस्थल की शुष्कता बढ़ेगी, न कि वहाँ उपोष्ण कटिबंधीय सदाबहार वनों के घनत्व में वृद्धि होगी। थार मरुस्थल में सदाबहार वनों का पनपना पारिस्थितिक रूप से सर्वथा असंभव है।

41. (B) 1730
ऐतिहासिक खेजरली नरसंहार वर्ष 1730 में जोधपुर जिले के खेजरली गांव में घटित हुआ था। जोधपुर के महाराजा अभय सिंह के आदेश पर जब महल निर्माण हेतु खेजड़ी के पेड़ों को काटा जा रहा था, तब अमृता देवी बिश्नोई के नेतृत्व में 363 बिश्नोइयों ने पेड़ों से लिपटकर अपने प्राणों की आहुति दी थी। यह घटना विश्व इतिहास में पर्यावरण संरक्षण का अनुपम उदाहरण है।

42. (A) P-1, Q-2, R-3, S-4
राजस्थान में विभिन्न गैर-इमारती वन उत्पादों का महत्वपूर्ण आर्थिक उपयोग होता है। तेंदू के पत्तों का प्रयोग मुख्य रूप से बीड़ी बनाने में किया जाता है। खस घास की सुगंधित जड़ों

Click Here to Buy book on Flipkart

ग्रामीणों की संयुक्त समितियां बनाई जाती हैं। सुरक्षा के बदले ग्रामीणों को गैर-इमारती वन उपज तथा कटी हुई लकड़ी के लाभांश में हिस्सेदारी प्रदान की जाती है, जिससे वनों पर दबाव कम होता है और आजीविका सुधरती है।

21. (A) ब्यूटिया मोनोस्पर्मा (पलाश/ढाक)
ब्यूटिया मोनोस्पर्मा, जिसे स्थानीय भाषा में पलाश या ढाक कहा जाता है, वसंत ऋतु में खिलने वाले अपने गहरे लाल और नारंगी फूलों के लिए सुप्रसिद्ध है। जब इस वृक्ष पर सामूहिक रूप से फूल खिलते हैं, तो ऐसा प्रतीत होता है मानो जंगल में आग लग गई हो, इसलिए इसे "जंगल की ज्वाला" या 'फ्लेम ऑफ द फॉरेस्ट' कहा जाता है। यह वृक्ष राजस्थान के अरावली और पूर्वी क्षेत्रों में व्यापक रूप से पाया जाता है।

22. (D) P-3, Q-1, R-4, S-2
राजस्थान में पाए जाने वाले मुख्य वृक्षों के वानस्पतिक और स्थानीय नामों में सीधा संबंध है। प्रोसोपिस सिनेरेरिया को स्थानीय रूप से खेजड़ी कहा जाता है, जो राज्य वृक्ष है। टेकोमेला उंडुलता को रोहिड़ा कहा जाता है, जो राज्य पुष्प है। ब्यूटिया मोनोस्पर्मा को पलाश अथवा ढाक के नाम से जाना जाता है। अकेशिया कैटेचू को स्थानीय भाषा में खैर कहा जाता है, जिसका उपयोग कत्था बनाने में होता है।

23. (B) चूरू
भारत वन स्थिति रिपोर्ट 2021 के अनुसार राजस्थान के चूरू जिले में सबसे कम कुल वनावरण क्षेत्र दर्ज किया गया है। चूरू जिला अत्यधिक शुष्क जलवायु, बालुका स्तूपों की बाहुलता तथा कम औसत वार्षिक वर्षा वाला क्षेत्र है। यहाँ मात्र 82 वर्ग किलोमीटर भूभाग में वनावरण पाया जाता है। वृक्षों के विकास के लिए प्रतिकूल भौगोलिक और जलवायु परिस्थितियों के कारण यहाँ प्राकृतिक वन आवरण बहुत सीमित है।

24. (C) ये मुख्य रूप से दक्षिणी राजस्थान में अरावली पहाड़ियों के ऊपरी शिखरों पर केंद्रित हैं।
सालर वृक्ष मुख्य रूप से राजस्थान के अरावली पर्वतीय ढलानों तथा ऊपरी पहाड़ी शिखरों पर पाए जाते हैं। यह प्रजाति विशेष रूप से उदयपुर, राजसमंद, अलवर और चित्तौड़गढ़ के पहाड़ी क्षेत्रों में संकेंद्रित है। सालर की लकड़ी का उपयोग पैकिंग के डिब्बे बनाने तथा गोंद निष्कर्षण के लिए किया जाता है। यह लवणोद्भिद पौधा नहीं है और न ही नहर के जलभराव वाले मैदानी क्षेत्रों में पाया जाता है।

25. (A) केवल I और II
राजस्थान में 'ओरण' स्थानीय लोक देवताओं के नाम पर छोड़े गए पवित्र उपवन हैं, जहाँ वृक्षों की कटाई धार्मिक रूप से वर्जित होती है। 'गोचर' भूमि गांव के पशुओं के चराने के लिए समर्पित सामुदायिक चारागाह होती है। इन पवित्र ओरणों और गोचर भूमियों का उपयोग राज्य सरकार द्वारा व्यावसायिक लकड़ी की कटाई के लिए कदापि नहीं किया जाता, बल्कि इनका संरक्षण सामुदायिक आस्था द्वारा होता है।

26. (A) वनवर्धन और वृक्षारोपण पद्धतियों का कार्यान्वयन
वनवर्धन और वृक्षारोपण पद्धतियों का कार्यान्वयन वनों के वैज्ञानिक प्रबंधन, संवर्धन और विस्तार में अत्यधिक सहायक होता है। यह प्रक्रिया प्राकृतिक वनस्पति तथा वनावरण को बढ़ाने में सकारात्मक भूमिका निभाती है, न कि उसके लिए खतरा उत्पन्न करती है। इसके विपरीत, अनियंत्रित पशु चराई, कृषि हेतु अतिक्रमण और विलायती बबूल जैसी आक्रामक विदेशी प्रजातियों का प्रसार प्राकृतिक वनों के लिए गंभीर खतरा बने हुए हैं।

27. (C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
राजस्थान के पश्चिमी शुष्क क्षेत्रों में पाए जाने वाले वृक्षों में लंबी मूसला जड़ें, मोटी छाल तथा छोटी एवं कांटेदार पत्तियां होती हैं। यह कथन पूर्णतः सत्य है। हालांकि, ये शारीरिक अनुकूलन वाष्पोत्सर्जन तथा जल की हानि को बढ़ाने के लिए नहीं, बल्कि जल हानि को कम करने और नमी को सुरक्षित रखने के लिए होते हैं। अतः कारण में वाष्पोत्सर्जन और जल हानि को अधिकतम करने की बात सर्वथा असत्य है।

28. (B) के.एम. मुंशी
भारत में वृक्षारोपण और पर्यावरण संरक्षण के प्रति जन-जागरुकता बढ़ाने के उद्देश्य से वर्ष 1950 में 'वन महोत्सव' की शुरुआत तत्कालीन केंद्रीय कृषि एवं खाद्य मंत्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी (के.एम. मुंशी) द्वारा की गई थी। यह उत्सव प्रतिवर्ष जुलाई माह के प्रथम सप्ताह में मनाया जाता है। राजस्थान सहित पूरे देश में इस दौरान व्यापक स्तर पर वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं ताकि हरित आवरण में वृद्धि की जा सके।

29. (A) प्रोसोपिस सिनेरेरिया
राजस्थान के राज्य वृक्ष खेजड़ी का वैज्ञानिक नाम प्रोसोपिस सिनेरेरिया है। इसे स्थानीय भाषा में 'शमी' या 'जांटी' भी कहा जाता है। यह वृक्ष थार मरुस्थल की विषम परिस्थितियों में अत्यंत सहनशील है और बिना सिंचाई के भी जीवित रहता है। इसकी फलियां (सांगरी) सब्जी बनाने के काम आती हैं तथा इसकी पत्तियां (लूम) पशुओं के लिए पौष्टिक चारे का कार्य करती हैं। इसे थार का कल्पवृक्ष माना जाता है।

30. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
पश्चिमी राजस्थान में पशुधनों द्वारा अत्यधिक और अनियंत्रित अतिचारण करने से मृदा का ऊपरी आवरण नष्ट हो जाता है, जिससे मृदा संघनन बढ़ता है तथा वायु अपरदन की दर में तीव्र वृद्धि होती है। वहीं दूसरी ओर, यदि चरागाह भूमि पर योजनाबद्ध तरीके से नियंत्रित एवं चक्रीय चराई लागू की जाए तो यह घास के मैदानों के पुनरुद्धार, मृदा संरक्षण और सतत चारा आपूर्ति को सुनिश्चित करने में अत्यंत प्रभावी सिद्ध होती है।

31. (D) शुष्क और अर्ध-शुष्क राजस्थान क्षेत्रों में पाई जाने वाली अत्यधिक पौष्टिक घासें
सीवण, धामण, करड़ और अंजन राजस्थान के शुष्क एवं अर्ध-शुष्क मरुस्थलीय क्षेत्रों में प्राकृतिक रूप से उगने वाली प्रमुख और अत्यधिक पौष्टिक घासों की प्रजातियां हैं। ये घासें पोषक

NODIA

शक्तिवर्धक औषधियों में किया जाता है। एलोवेरा कम जल की आवश्यकता के कारण आसानी से पनपता है। इसके अतिरिक्त सोनाम की पत्तियों का उत्पादन और निर्यात पश्चिमी शुष्क क्षेत्रों से किया जाता है।

54. (D) सुंदरी
सुंदरी मैंग्रोव वनस्पति की एक प्रमुख वृक्ष प्रजाति है, जो केवल तटीय दलदली भूभागों तथा सुंदरवन जैसे नदी डेल्टा क्षेत्रों में पाई जाती है। सालर, धोक और सागौन राजस्थान के शुष्क पर्णपाती वन पारिस्थितिकी तंत्र की स्वाभाविक प्रजातियां हैं। राजस्थान में कोई भी समुद्री तट या दलदली क्षेत्र न होने के कारण सुंदरी वृक्ष यहाँ की प्राकृतिक वनस्पति का हिस्सा नहीं है।

55. (B) जोधपुर
शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जिसे संक्षेप में आफरी कहा जाता है, राजस्थान के जोधपुर जिले में स्थित है। यह संस्थान भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद का एक घटक है। इस संस्थान का मुख्य कार्य राजस्थान के शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में वानिकी अनुसंधान, वैज्ञानिक वृक्षारोपण तथा मरुस्थलीकरण नियंत्रण हेतु नवीन पद्धतियां विकसित करना है, ताकि पर्यावरणीय संतुलन बना रहे।

56. (C) चौड़ी पत्तियां नमी के साथ प्रकाश संश्लेषण को अनुकूलित करती हैं, जबकि छोटी पत्तियां शुष्क क्षेत्रों में पानी की कमी को रोकती हैं।
यह पारिस्थितिक सिद्धांत पौधों के जल संतुलन और अनुकूलन को दर्शाता है। दक्षिणी राजस्थान में पर्याप्त वर्षा और आर्द्रता उपलब्ध होने के कारण चौड़ी पत्तियां प्रकाश संश्लेषण की दर को अनुकूलित करती हैं। इसके विपरीत, पश्चिमी राजस्थान के शुष्क वातावरण में पौधे छोटी या कांटेदार पत्तियों को अपनाते हैं ताकि वाष्पोत्सर्जन को घटाकर जल हानि को रोका जा सके। यह आवश्यक है।

57. (D) पैकिंग के डिब्बे बनाने के लिए प्राकृतिक राल (गोंद) और मुलायम लकड़ी
अरावली पर्वतमाला की पहाड़ियों पर बहुतायत में पाया जाने वाला सालर वृक्ष अत्यधिक उपयोगी है। इसकी लकड़ी हल्की और मुलायम होती है, जिसका उपयोग सामान की पैकिंग के डिब्बे बनाने में किया जाता है। इसके अतिरिक्त, सालर के तने से प्राप्त प्राकृतिक गोंद का उपयोग औषधि और धूप उद्योग में किया जाता है। यह अत्यंत उपयोगी माना जाता है।

58. (B) चूरु, हनुमानगढ़, जोधपुर, गंगानगर
भारत वन स्थिति रिपोर्ट 2021 के अनुसार राजस्थान में न्यूनतम वनावरण क्षेत्रफल वाले जिलों का आरोही क्रम (सबसे कम से अधिक) चूरु, हनुमानगढ़, जोधपुर और गंगानगर है। इस रिपोर्ट के अनुसार चूरु में सबसे कम वनावरण दर्ज किया गया है। इसके पश्चात क्रमशः हनुमानगढ़, जोधपुर तथा गंगानगर जिले आते हैं। ये सभी जिले राज्य के उत्तर-पश्चिमी शुष्क एवं मैदानी भागों में स्थित हैं।

59. (B) मधुका लोंगीफोलिया
महुआ के पेड़ का वानस्पतिक नाम मधुका लोंगीफोलिया है। यह वृक्ष दक्षिणी राजस्थान के जनजातीय बहुल जिलों जैसे उदयपुर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा और प्रतापगढ़ में प्रचुरता में पाया जाता है। महुआ के मीठे फूल जनजातीय समुदायों द्वारा एकत्र किए जाते हैं, जिनका उपयोग खाद्य पदार्थ तथा देशी मदिरा बनाने में होता है। इसके बीजों से तेल भी निकाला जाता है। यह उपयोगी है।

60. (B) रोहिड़ा
रोहिड़ा एक महत्वपूर्ण वृक्ष प्रजाति है, जबकि सीवण, धामण और करड़ राजस्थान के शुष्क क्षेत्रों में उगने वाली प्रमुख और पौष्टिक घासें हैं। रोहिड़ा राजस्थान का राज्य पुष्प देने वाला वृक्ष है, जो अपनी गुणवत्तापूर्ण लकड़ी के लिए जाना जाता है। अन्य तीनों विकल्प मरुस्थलीय पशुधन चराई के लिए उपयोगी घासों के नाम हैं, इसलिए रोहिड़ा इस समूह में पूरी तरह भिन्न है।

61. (A) कत्था – ब्यूटिया मोनोस्पर्मा (पलाश)
कत्था का निर्माण अकेशिया कैटेचू (खैर) के पेड़ की मध्य काष्ठ के अर्क से किया जाता है, न कि ब्यूटिया मोनोस्पर्मा (पलाश) से। ब्यूटिया मोनोस्पर्मा को पलाश कहा जाता है, जिसके फूलों से प्राकृतिक रंग तथा पत्तियों से पत्तल बनाए जाते हैं। अतः कत्था और पलाश का यह युग्म अशुद्ध है। अन्य सभी विकल्प जैसे कुम्मट से गोंद, तेंदू से बीड़ी और खस से सुगंधित जड़ सही हैं।

NODIA

62. (C) P-3, Q-1, R-4, S-2
राजस्थान के प्रमुख अभयारण्यों और उनके संबंधित जिलों में सीधा संबंध है। सीतामाता वन्यजीव अभयारण्य प्रतापगढ़ जिले में स्थित है, जो उड़न गिलहरी हेतु विख्यात है। सरिस्का टाइगर रिजर्व अलवर जिले में स्थित है। केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान भरतपुर जिले में स्थित पक्षी अभयारण्य है। राष्ट्रीय मरु उद्यान जैसलमेर जिले में विस्तृत एक विशाल संरक्षित क्षेत्र माना जाता है। यह सही सुमेलित क्रम है।

63. (D) पारिस्थितिकी तंत्र की वहन क्षमता से अधिक मवेशियों के झुंडों द्वारा अतिचारण
पश्चिमी राजस्थान का मरुस्थलीय पारिस्थितिकी तंत्र अत्यंत संवेदनशील है। वर्तमान में यहाँ की प्राकृतिक वनस्पति और पौष्टिक घासों पर सबसे बड़ा मानवजनित खतरा क्षेत्र की वहन क्षमता से अधिक मवेशियों द्वारा किया जाने वाला अतिचारण है। अत्यधिक चराई के कारण प्राकृतिक घास का आवरण नष्ट हो जाता है, जिससे तीव्र वायु अपरदन होता है और मरुस्थलीकरण की प्रक्रिया तेजी से बढ़ती है।

64. (C) मूल पारिस्थितिकी तंत्र की संरचनात्मक और कार्यात्मक अखंडता को पुनः स्थापित करना
राजस्थान में क्षरित या निम्नीकृत भूभागों पर कार्यान्वित पारिस्थितिक पुनर्स्थापन परियोजनाओं का प्राथमिक उद्देश्य प्राकृतिक रूप से नष्ट हुई भूमि को उसके मूल स्वरुप में लाना है। इसके तहत देशी वृक्षों और घासों के रोपण द्वारा मूल पारिस्थितिकी तंत्र की संरचनात्मक और कार्यात्मक अखंडता को पुनः स्थापित किया जाता है। इससे मृदा क्षरण रुकता है और जैव विविधता पुनः समृद्ध होती है।

से तेल निकाला जाता है तथा ठंडक देने वाली चटाइयां बनाई जाती हैं। खैर की लकड़ी से कत्था उत्पादित होता है। महुआ के फूलों का उपयोग देशी मदिरा तथा खाद्य सामग्री बनाने के लिए बहुतायत में किया जाता है।

43. (B) सवाई माधोपुर, भरतपुर, टोंक
खस घास राजस्थान के सवाई माधोपुर, भरतपुर और टोंक जिलों में बहुतायत में प्राकृतिक रूप से पाई जाती है। इस घास की जड़ों में एक विशेष सुगंध होती है। इनकी जड़ों से मूल्यवान सुगंधित तेल और इत्र निकाला जाता है तथा ग्रीष्मकाल में ठंडक प्रदान करने वाली चटाइयां बनाई जाती हैं। यह इन पूर्वी जिलों की एक अत्यंत महत्वपूर्ण और लाभदायक गौण वन उपज है।

44. (B) यह एक आक्रामक प्रजाति है जो देशी वनस्पतियों को दबाती है और भूजल स्तर को कम करती है।
प्रोसोपिस जुलिफ्लोरा, जिसे स्थानीय भाषा में 'विलायती बबूल' कहा जाता है, एक विदेशी आक्रामक प्रजाति है। इसे प्रारंभ में मरुस्थल प्रसार रोकने हेतु लाया गया था। परंतु यह तेजी से फैलकर खेजड़ी जैसी देशी वनस्पति की प्रजातियों को दबा देती है। इसके अतिरिक्त, इसकी गहरी जड़ें अत्यधिक जल का अवशोषण करके भूजल स्तर को गंभीर रूप से कम कर देती हैं, जो पारिस्थितिकी के प्रतिकूल है।

45. (A) केवल I और II
राजस्थान में बीड़ी उद्योग के अंतर्गत तेंदू के पत्तों का प्रयोग आवरण सामग्री के रूप में किया जाता है। कत्थे का निर्माण पारंपरिक रूप से उदयपुर और चित्तौड़गढ़ जिलों में निवास करने वाली काथोड़ी जनजाति द्वारा खैर के पेड़ की लकड़ी से किया जाता है। राज्य सरकार स्थानीय जनजातियों के जीवन-यापन हेतु गौण वन उपज के संग्रह को प्रतिबंधित नहीं करती, बल्कि अधिकार प्रदान करती है। अतः तीसरा कथन असत्य है।

46. (B) 1983
राजस्थान सरकार ने राज्य के शुष्क पारिस्थितिकी तंत्र में खेजड़ी के अद्वितीय योगदान तथा रोहिड़ा के पुष्पों की उपयोगिता को सम्मानित करने के लिए वर्ष 1983 में एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक निर्णय लिया। इसके तहत खेजड़ी को राजस्थान का राज्य वृक्ष और रोहिड़ा को राज्य पुष्प घोषित किया गया। ये दोनों प्रतीक राज्य की मरुस्थलीय प्राकृतिक पहचान के अत्यंत अभिन्न अंग माने जाते हैं।

47. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
राजस्थान में अरावली पहाड़ियों के क्षरण को रोकने के लिए अरावली वृक्षारोपण परियोजना शुरू की गई थी, जिसने निम्नीकृत वन भूमि को पुनर्स्थापित करने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य मरुस्थलीकरण को रोकना, स्थानीय आबादी की ईंधन तथा चारे की आवश्यकताओं की पूर्ति करना और पारिस्थितिक संतुलन स्थापित करना था। अतः कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

48. (C) एक राष्ट्रीय उद्यान को राज्य का कानूनी संरक्षण प्राप्त है, जबकि एक ओरण को सामुदायिक आस्था के माध्यम से संरक्षित किया जाता है।
राष्ट्रीय उद्यान और ओरण के मध्य मूल अंतर उनके संरक्षण तंत्र में निहित है। एक राष्ट्रीय उद्यान कानून के तहत अधिसूचित एक विधिक क्षेत्र होता है, जहाँ वनों और जीवों का प्रबंधन सरकारी नियमों द्वारा किया जाता है। इसके विपरीत, एक ओरण लोक देवता के नाम समर्पित पवित्र भूमि होती है, जिसे किसी विधिक कानून के बिना केवल स्थानीय समुदाय की धार्मिक आस्था और परंपराओं द्वारा संरक्षित किया जाता है।

49. (B) स्थानीय समुदायों को संरक्षित वन भूमि को निजी बिल्डरों को बेचने का पूर्ण स्वामित्व और अधिकार दिया जाता है।
राजस्थान में संयुक्त वन प्रबंधन कार्यक्रम का मूल आधार वन विभाग और स्थानीय निवासियों के मध्य सहभागिता है। यह ग्राम समितियों के माध्यम से क्रियान्वित होता है। इस व्यवस्था में वनों की सुरक्षा के बदले ग्रामीणों को गैर-इमारती उपज प्राप्त करने का अधिकार मिलता है। परंतु सार्वजनिक वन भूमि का स्वामित्व कभी भी समुदायों को स्थानांतरित नहीं किया जाता और न ही उसे निजी बिल्डरों को बेचने का अधिकार होता है।

50. (D) तेंदू
दक्षिणी राजस्थान में निवास करने वाले जनजातीय और ग्रामीण वनवासियों द्वारा तेंदू के वृक्ष की पत्तियों का बड़े पैमाने पर एकत्रीकरण किया जाता है। तेंदू के पत्तों में मोड़ सहने की क्षमता होती है, जिससे इनका उपयोग बीड़ी उद्योग में आवरण के रूप में किया जाता है। ग्रीष्मकालीन महीनों में तेंदू पत्ता संग्रहण राज्य के जनजातीय लोगों की आजीविका और आय का एक प्रमुख मौसमी साधन बनता है।

51. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
अरावली पर्वतमाला की भौगोलिक अवस्थिति के कारण इसके पूर्वी ढलान दक्षिण-पश्चिम मानसून की बंगाल की खाड़ी शाखा से अधिक मात्रा में वर्षा प्राप्त करते हैं। पर्याप्त वर्षा और आर्द्रता मिलने के कारण पूर्वी ढलानों पर सघन, समृद्ध और लंबी वनस्पति पाई जाती है। इसके विपरीत, पश्चिमी ढलान वृष्टि-छाया क्षेत्र में आने के कारण कम वर्षा प्राप्त करते हैं, जिससे वहाँ विरल वनस्पति मिलती है।

52. (C) जोधपुर
केंद्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जिसे संक्षेप में काजरी कहा जाता है, राजस्थान के जोधपुर शहर में स्थित है। इसकी स्थापना वर्ष 1959 में की गई थी। इस प्रमुख शोध संस्थान का प्राथमिक उद्देश्य शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में मरुस्थलीकरण को रोकना, मृदा संरक्षण करना तथा मरुस्थलीय पारिस्थितिकी तंत्र एवं वनस्पति के सतत प्रबंधन हेतु वैज्ञानिक तकनीकें और समाधान प्रदान करना है।

53. (D) I, II, III और IV
राजस्थान में विविध प्रकार के औषधीय पौधे पाए जाते हैं। गुग्गल के राल में सूजन-रोधी गुण होते हैं, जो आयुर्वेद में अत्यधिक उपयोगी है। अश्वगंधा की जड़ों का उपयोग

Downloaded from www.pdf.tube

76. (B) अत्यधिक सघन वन क्षेत्र में राजस्थान भारत के शीर्ष राज्यों में शुमार है।
राजस्थान में अत्यधिक सघन वन का क्षेत्रफल बहुत ही कम (लगभग 78 वर्ग किमी) है। शुष्क एवं अर्ध-शुष्क जलवायु परिस्थितियों के कारण राज्य में खुले वन और झाड़ियां ही मुख्य रूप से पाई जाती हैं। अतः अत्यधिक सघन वन क्षेत्र में राजस्थान का देश के शीर्ष राज्यों में शामिल होना पूरी तरह असत्य कथन है। राज्य में वनावरण का असमान वितरण देखा जाता है।

77. (A) पलाश / ढाक
ब्यूटिया मोनोस्पर्मा राजस्थान के मिश्रित पर्णपाती वनों में पाया जाने वाला एक पारिस्थितिक रूप से महत्वपूर्ण वृक्ष है। इसे स्थानीय भाषा में मुख्य रूप से पलाश या ढाक कहा जाता है। वसंत ऋतु में जब इस वृक्ष पर चमकीले लाल और नारंगी रंग के सुंदर फूल आते हैं, तो यह पूरे जंगल को सुशोभित कर देता है। इसी अद्भुत सुंदरता के कारण इसे "जंगल की ज्वाला" कहा जाता है।

78. (C) जैसलमेर
उदयपुर, बांसवाड़ा और डूंगरपुर जिले राजस्थान के दक्षिणी वन प्रभाग के अंतर्गत आते हैं, जहाँ पर्याप्त वर्षा होने के कारण शुष्क पर्णपाती और सागौन वनों का विस्तार पाया जाता है। इसके विपरीत, जैसलमेर जिला पश्चिमी शुष्क मरुस्थलीय क्षेत्र का हिस्सा है, जहाँ केवल उष्णकटिबंधीय कांटेदार वनस्पति पाई जाती है। अतः जैसलमेर इस दक्षिणी वन प्रभाग समूह से पूरी तरह पृथक और विषम जिला है।

79. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
गुग्गल राजस्थान के शुष्क एवं अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में पाया जाने वाला एक बहुमूल्य तथा अत्यधिक संकटग्रस्त औषधीय पौधा है। इसके ओलेयो-गम राल में उच्च औषधीय गुण होते हैं। अत्यधिक व्यावसायिक मांग के कारण इसके तनों से अवैज्ञानिक और विनाशकारी तकनीकों द्वारा राल निकालने की पद्धतियां अपनाई गईं, जिसके परिणामस्वरूप इसकी प्राकृतिक आबादी में भारी गिरावट आई है। अतः दोनों कथन बिल्कुल सत्य हैं।

80. (C) सीवण
राजस्थान के जैसलमेर जिले के 'लाठी सीरीज़' भूवैज्ञानिक क्षेत्र में पाई जाने वाली विशेष पौष्टिक घास 'सीवण' कहलाती है। यह घास मरुस्थलीय जलवायु के अनुकूलित है तथा पोषक तत्वों एवं प्रोटीन से भरपूर होती है। यह स्थानीय मवेशियों, विशेष रूप से थारपारकर नस्ल की गायों के लिए एक उत्कृष्ट चरागाह बनाती है। सीवण घास थार मरुस्थल में पशुधन हेतु चारा सुरक्षा में अत्यंत सहायक है।

81. (B) कत्था
खैर के पेड़ (अकेशिया कैटेचू) की आंतरिक मध्य लकड़ी का उपयोग राजस्थान में कत्था उत्पादन के लिए किया जाता है। दक्षिणी राजस्थान के चित्तौड़गढ़ और उदयपुर क्षेत्रों में निवास करने वाली 'काथोड़ी' जनजाति पारंपरिक रूप से खैर की लकड़ी को छीलकर और उबालकर कत्था तैयार करने में निपुण है। इस कत्थे का व्यावसायिक उपयोग पान तथा औषधि उद्योगों में व्यापक रूप से किया जाता है।

82. (D) बिना दर्ज कानूनी वन जहाँ प्रतिबंधित न होने तक चराई और पेड़ों की कटाई की अनुमति होती है
अवर्गीकृत वन राजस्थान वन विभाग द्वारा वर्गीकृत वनों की वह श्रेणी है जो आरक्षित या संरक्षित वनों के कड़े नियमों के अंतर्गत नहीं आती। ये ऐसी वन भूमियां होती हैं जिन पर पेड़ों की कटाई और पशु चराई पर कोई विशेष प्रतिबंध नहीं होता। जब तक सरकार द्वारा रोक न लगाई जाए, तब तक आम जनता नियमों का पालन करते हुए इनका उपयोग कर सकती है।

83. (A) राजस्थान में प्रोजेक्ट टाइगर का शुभारंभ – 2010
भारत में प्रोजेक्ट टाइगर की शुरुआत 1973 में हुई थी और राजस्थान के रणथंभौर को 1973 में ही टाइगर रिजर्व बनाया गया था। अतः राजस्थान में प्रोजेक्ट टाइगर का शुभारंभ 2010 दर्शाने वाला युग्म पूरी तरह अशुद्ध है। अन्य सभी सुमेलित तथ्य सही हैं: वन महोत्सव की शुरुआत 1950 में हुई, अरावली परियोजना जाइका द्वारा सहायता प्राप्त है तथा खेजड़ी 1983 में राज्य वृक्ष बना।

84. (C) घास के आवरण का नुकसान जिसके कारण गंभीर मृदा अपरदन और मरुस्थलीकरण होता है
पश्चिमी राजस्थान की पारिस्थितिकी अत्यंत नाजुक है। जब मरुस्थलीय क्षेत्रों में मवेशियों द्वारा अनियंत्रित अतिचारण किया जाता है, तो भूतल को ढकने वाला प्राकृतिक घास का आवरण नष्ट हो जाता है। घास के हटने से मृदा की ऊपरी परत अनावृत हो जाती है और तीव्र मरुस्थलीय हवाएं मिट्टी को उड़ा ले जाती हैं। इस अपरदन के कारण उपजाऊ क्षमता घटकर मरुस्थलीकरण की प्रक्रिया तेज हो जाती है।

85. (A) अलवर
भारत वन स्थिति रिपोर्ट 2021 के आंकड़ों के अनुसार राजस्थान में 'अत्यधिक सघन वन' का कुल क्षेत्रफल बहुत ही सीमित है। राज्य में अत्यधिक सघन वन वाले जिलों में अलवर जिला प्रथम स्थान पर है, जहाँ इसका सर्वाधिक क्षेत्रफल दर्ज किया गया है। अरावली पहाड़ियों, पर्याप्त वर्षा और सरिस्का क्षेत्र के कारण अलवर में सघन वनस्पति का विस्तार देखने को मिलता है।

86. (D) विलायती बबूल
राजस्थान के पारंपरिक और समुदाय द्वारा संरक्षित 'ओरण' में मुख्य रूप से देशी और पवित्र वृक्ष प्रजातियां जैसे खेजड़ी, पीपल, बरगद और रोहिड़ा प्राकृतिक रूप से पनपते हैं। विलायती बबूल एक आक्रामक विदेशी प्रजाति है जो देशी वनस्पति को नुकसान पहुंचाती है। अतः विलायती बबूल पारंपरिक रूप से संरक्षित पवित्र ओरणों में प्राकृतिक रूप से पनपती हुई नहीं पाई जाती है।

NODIA

87. (B) बड़े पैमाने पर सार्वजनिक वृक्षारोपण अभियानों के माध्यम से राज्य के वनावरण को बढ़ाना
राजस्थान सरकार द्वारा संचालित 'हरित राजस्थान' अभियान का मूल उद्देश्य बड़े पैमाने पर जन-भागीदारी और प्रशासनिक समन्वय से सघन वृक्षारोपण करना था। इस अभियान के माध्यम से राज्य के वनावरण को बढ़ाने, निम्नीकृत भूभागों को पुनः हरा-भरा करने, मरुस्थलीकरण पर नियंत्रण पाने तथा

(A) सरिस्का टाइगर रिजर्व
(B) रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान
(C) मुकुंदरा हिल्स टाइगर रिजर्व
(D) केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान

29. सरिस्का टाइगर रिजर्व के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसमें ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण कांकरणवाड़ी किला स्थित है।
II. इसे वर्ष 1978 में टाइगर रिजर्व घोषित किया गया था।
III. यह पश्चिमी राजस्थान के अत्यधिक शुष्क मरुस्थलीय जैव-भौगोलिक क्षेत्र में स्थित है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

30. वर्ष 2008 में सरिस्का में बाघ का पहला सफल पुनर्वास रणथंभौर से स्थानांतरित किए गए एक नर बाघ से संबंधित था। इस पहले पुनर्वासित बाघ का आधिकारिक संकेतांक क्या था?
(A) T-16 (मछली)
(B) T-24 (उस्ताद)
(C) ST-6
(D) ST-1

31. केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान को आर्द्रभूमियों के संरक्षण के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय संधि के तहत मान्यता प्राप्त है। इसे किस वर्ष रामसर स्थल (Ramsar site) घोषित किया गया था?
(A) 1971
(B) 1981
(C) 1990
(D) 2002

32. केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान के यूनेस्को (UNESCO) विश्व धरोहर स्थल के दर्जे के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन असत्य है?
(A) इसे इसके असाधारण आर्द्रभूमि पारिस्थितिकी तंत्र के लिए वर्ष 1985 में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल के रूप में सूचीबद्ध किया गया था।
(B) उद्यान के भीतर स्थित भरतपुर किले के कारण इसे एक मिश्रित (mixed) स्थल के रूप में सूचीबद्ध किया गया था।
(C) यह वर्तमान में संपूर्ण राजस्थान राज्य में एकमात्र नामित प्राकृतिक यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल है।
(D) इसे स्व-स्थाने (in-situ) जैव विविधता संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण प्राकृतिक आवासों की मेज़बानी के वैश्विक मानदंडों के तहत अंकित किया गया था।

33. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A) : राष्ट्रीय मरु उद्यान गोडावण (ग्रेट इंडियन बस्टर्ड) की आबादी के ह्रास के प्रति अत्यधिक संवेदनशील है।
कारण (R) : उद्यान के आसपास के क्षेत्रों में उच्च-तनाव (हाई-टेंशन) विद्युत पारेषण लाइनों से टकराना इन भारी उड़ने वाले पक्षियों की मृत्यु का प्रमुख कारण है।
उपर्युक्त दोनों कथनों के संदर्भ में, सही विकल्प का चयन कीजिए:
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है, लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है, लेकिन कारण (R) सही है।

34. राजस्थान सरकार ने गोडावण (ग्रेट इंडियन बस्टर्ड) की आबादी बढ़ाने के लिए विशेष रूप से एक कृत्रिम प्रजनन केंद्र स्थापित किया है। यह केंद्र कहाँ स्थित है?
(A) सम (जैसलमेर)
(B) फलोदी (जोधपुर)
(C) ताल छापर (चूरू)
(D) गजनेर (बीकानेर)

35. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I (वन्यजीव अभयारण्य)
P. सीतामाता अभयारण्य
Q. राष्ट्रीय चंबल अभयारण्य
R. माउंट आबू अभयारण्य
S. कुंभलगढ़ अभयारण्य
सूची II (प्रमुख प्रजाति/विशेषता)
1. घड़ियाल (गेवियालिस गैंगेटिकस)
2. भारतीय भेड़िया (केनिस लुपस पेलिपेस)
3. उड़न गिलहरी
4. डिक्लीप्टेरा आबूएनसिस (स्थानिक पौधा)
(A) P-3, Q-1, R-4, S-2
(B) P-1, Q-3, R-2, S-4
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

36. किस विशिष्ट प्रकार की घास, जो अपने उच्च पोषण मूल्य के लिए जानी जाती है, मुख्य रूप से ताल छापर अभयारण्य में पाई जाती है और वहाँ के कृष्णमृगों (काले हिरणों) का प्राथमिक आहार बनाती है?
(A) धामण (सेंक्रस सिलियारिस)
(B) सेवण (लसियुरस सिंडिकस)
(C) कराड़ (डिकैन्थियम एन्युलेटम)
(D) मोथिया (साइपरस रोटंडस)

37. राजस्थान के निम्नलिखित वन्यजीव अभयारण्यों पर विचार कीजिए और उत्तर से दक्षिण की ओर उनका सही भौगोलिक क्रम चुनिए:
I. ताल छापर अभयारण्य

Click Here to Buy book on Amazon

अध्याय 15

राजस्थान के वन्यजीव अभयारण्य

1. निम्नलिखित में से कौन-सा जैव-भौगोलिक क्षेत्र राजस्थान के सबसे बड़े क्षेत्र को आच्छादित करता है, जो राज्य के पश्चिमी वन्यजीव अभयारण्यों में पाई जाने वाली वनस्पतियों और जीवों को गहराई से प्रभावित करता है?
(A) अर्ध-शुष्क क्षेत्र
(B) भारतीय मरुस्थल क्षेत्र
(C) अरावली पहाड़ी क्षेत्र
(D) गंगा का मैदानी क्षेत्र

2. रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान के शुष्क पर्णपाती वनों में पाई जाने वाली प्रमुख वृक्ष प्रजाति कौन-सी है, जो ग्रीष्मकाल में अपनी पत्तियाँ गिरा देती है और प्राथमिक वनस्पति आवरण का निर्माण करती है?
(A) धोक (एनोगेसुस पेंडुला)
(B) सागौन (टेक्टोना ग्रैंडिस)
(C) साल (शोरीया रोबस्टा)
(D) खेजड़ी (प्रोसॉपिस सिनेगेरिया)

3. रणथंभौर के संरक्षण इतिहास के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह मूल रूप से 1955 में सवाई माधोपुर शिकार अभयारण्य के रूप में स्थापित किया गया था।
II. इसे 1973 में भारत के प्रोजेक्ट टाइगर के पहले चरण में शामिल किया गया था।
III. इसे वर्ष 1980 में राष्ट्रीय उद्यान का दर्जा दिया गया था।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

4. सरिस्का टाइगर रिजर्व रणनीतिक रूप से अरावली की पहाड़ियों में स्थित है। राजस्थान का कौन-सा जिला इस रिजर्व के प्राथमिक कोर क्षेत्र की मेजबानी करता है?
(A) सवाई माधोपुर
(B) भरतपुर
(C) करौली
(D) अलवर

5. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A) : राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण ने वर्ष 2008 में सरिस्का में बाघ पुनर्वास कार्यक्रम शुरू किया।
कारण (R) : मुख्य रूप से अत्यधिक शिकार और आवास के दबाव के कारण 2005 तक सरिस्का में जंगली बाघों की पूरी मूल आबादी समाप्त हो गई थी।
उपर्युक्त दोनों कथनों के संदर्भ में, सही विकल्प का चयन कीजिए:
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है, लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है, लेकिन कारण (R) सही है।

6. केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान मूलतः भरतपुर के महाराजाओं के लिए शिकारगाह के रूप में बनाया गया था। इस उद्यान की कृत्रिम आर्द्रभूमि को जल की आपूर्ति मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किस बांध से होती है?
(A) बीसलपुर बांध
(B) अजान बांध
(C) जवाई बांध
(D) राणा प्रताप सागर बांध

7. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I (वन्यजीव अभयारण्य)
P. बंध बरेठा
Q. फुलवारी की नाल
R. शेरगढ़
S. टॉडगढ़ रावली
सूची II (स्थान/जिला)
1. उदयपुर
2. बारां
3. भरतपुर
4. अजमेर, पाली, राजसमंद
(A) P-3, Q-1, R-2, S-4
(B) P-1, Q-3, R-4, S-2
(C) P-3, Q-2, R-1, S-4
(D) P-2, Q-1, R-3, S-4

NODIA

8. जैसलमेर में स्थित राष्ट्रीय मरु उद्यान न केवल अपने वन्यजीवों के लिए बल्कि अपने भूवैज्ञानिक महत्त्व के लिए भी प्रसिद्ध है। निम्नलिखित में से किसे इस उद्यान की सीमाओं के भीतर संरक्षित किया गया है?
(A) प्राचीन काष्ठ जीवाश्मों वाला आकल वुड फॉसिल पार्क

46. केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान किस गंभीर रूप से संकटग्रस्त प्रवासी पक्षी का ऐतिहासिक शीतकालीन प्रवास स्थल होने के लिए प्रसिद्ध है, जिसे वर्ष 2002 के बाद से इस उद्यान में नहीं देखा गया है?
(A) ग्रेटर फ्लेमिंगो (हंसराज)
(B) डैमोइसेल क्रेन (कुरंजा)
(C) अमूर फाल्कन
(D) साइबेरियाई क्रेन

47. निम्नलिखित में से किस प्रजाति को छोड़कर अन्य सभी को वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 की अनुसूची I के तहत वर्गीकृत किया गया है (उन्हें पूर्ण संरक्षण प्रदान किया गया है)?
(A) नीलगाय
(B) गोडावण (ग्रेट इंडियन बस्टर्ड)
(C) भारतीय तेंदुआ
(D) कृष्णमृग (काला हिरण)

48. दिए गए अभयारण्य की संरक्षण स्थिति या विशेषता के संबंध में गलत युग्म की पहचान कीजिए:
(A) ताल छापर — समतल लवण गर्त और घास का मैदान
(B) राष्ट्रीय मरु उद्यान — आर्द्र सदाबहार वन
(C) सीतामाता — सागौन के साथ मिश्रित पर्णपाती वन
(D) राष्ट्रीय चंबल अभयारण्य — नदीय पारिस्थितिकी तंत्र

49. वन्यजीव संरक्षण जागरूकता और स्थानीय पारिस्थितिक-पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए, राजस्थान सरकार ने वर्ष 2022-23 में 'लव कुश वाटिकाओं' की स्थापना की घोषणा की। इस पहल का प्राथमिक प्रशासनिक पैमाना क्या है?
(A) प्रत्येक ग्राम पंचायत में एक
(B) प्रत्येक जिले में एक
(C) प्रत्येक संभाग में एक
(D) केवल प्रत्येक टाइगर रिजर्व के निकट एक

50. राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (NTCA) प्रोजेक्ट टाइगर को वैधानिक निगरानी प्रदान करता है। NTCA का गठन किस अधिनियम के तहत किया गया था?
(A) वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972
(B) वन (संरक्षण) अधिनियम, 1980
(C) पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986
(D) जैव विविधता अधिनियम, 2002

51. विश्व की सबसे अधिक फोटो खिंचवाने वाली बाघिन, जिसे 'मछली' (T-16) के नाम से जाना जाता है, ने राजस्थान में पारिस्थितिक-पर्यटन को लोकप्रिय बनाने में प्रमुख भूमिका निभाई। वह किस राष्ट्रीय उद्यान की प्रमुख बाघिन थी?
(A) सरिस्का टाइगर रिजर्व
(B) मुकुंदरा हिल्स टाइगर रिजर्व
(C) रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान
(D) केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान

52. राजस्थान की जैव विविधता के संबंध में असत्य कथन की पहचान कीजिए:
(A) राजस्थान में शुष्क और अर्ध-शुष्क दोनों जैव-भौगोलिक क्षेत्र शामिल हैं।
(B) अरावली पर्वतमाला एक पारिस्थितिक बाधा के रूप में कार्य करती है, जो इसके पूर्वी और पश्चिमी हिस्सों में अलग-अलग आवास बनाती है।
(C) राज्य खेजड़ी और रोहिड़ा जैसी अत्यधिक विशिष्ट शुष्कता-रोधी वनस्पतियों का प्राकृतिक पर्यावास है।
(D) राज्य में भारत के सघन उष्णकटिबंधीय वर्षावन आवरण का उच्चतम प्रतिशत है।

53. 'मॉन्ट्रो रिकॉर्ड' (Montreux Record) उन आर्द्रभूमि स्थलों की एक सूची है जहाँ पारिस्थितिक स्वरूप में परिवर्तन हुए हैं, हो रहे हैं या होने की संभावना है। राजस्थान का कौन-सा अभयारण्य/उद्यान वर्तमान में मॉन्ट्रो रिकॉर्ड में सूचीबद्ध है?
(A) सांभर झील
(B) जवाई बांध संरक्षण रिजर्व
(C) केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान
(D) ताल छापर अभयारण्य

54. केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसका नाम इसकी सीमाओं के भीतर स्थित एक स्थानीय शिव मंदिर के नाम पर रखा गया है।
II. प्रसिद्ध पक्षीविज्ञानी डॉ. सलीम अली ने इसके संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
III. यह लाखों वर्ष पहले बिना किसी मानवीय हस्तक्षेप के प्राकृतिक रूप से आर्द्रभूमि के रूप में बना था।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

55. वन्यजीव शब्दावली में, "संरक्षण रिजर्व" (Conservation Reserve) क्या है, जैसा कि कानूनी रूप से परिभाषित किया गया है और राजस्थान में अक्सर स्थापित किया जाता है (जैसे बीसलपुर या जवाई बांध)?
(A) व्यावसायिक प्रजनन कार्यों के लिए निजी व्यक्तियों या न्यासों के अनन्य स्वामित्व वाला एक विशाल वन क्षेत्र।
(B) पर-स्थाने (ex-situ) पशु प्रदर्शनों के लिए केंद्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण द्वारा मान्यता प्राप्त और निगरानी की जाने वाली एक सार्वजनिक प्राणि उद्यान।
(C) राज्य वन नियमन से मुक्त ग्रामीणों द्वारा पूरी तरह से प्रबंधित एक पारंपरिक सामुदायिक स्वामित्व वाला पवित्र उपवन (ओरण)।
(D) बफर या प्रवास गलियारे के रूप में कार्य करने वाला एक संरक्षित राज्य क्षेत्र।

56. तेंदुओं के संरक्षण और मानव-तेंदुआ संघर्ष को कम करने के उद्देश्य से राजस्थान में 'प्रोजेक्ट लेपर्ड' विशेष रूप से

Downloaded from www.pdf.tube

(A) राष्ट्रीय मरु उद्यान
(B) केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान
(C) सज्जनगढ़ वन्यजीव अभयारण्य
(D) ताल छापर अभयारण्य

19. वन्यजीव संरक्षण में सामुदायिक भागीदारी राजस्थान में ऐतिहासिक रूप से गहराई से जुड़ी हुई है। वर्ष 1730 का प्रसिद्ध खेजड़ली बलिदान, जहाँ वृक्षों की रक्षा के लिए 363 लोगों ने अपने प्राणों की आहुति दी थी, किस समुदाय से संबंधित है?
(A) भील
(B) मीणा
(C) बिश्नोई
(D) गरासिया

20. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I (प्रवासी पक्षी)
P. डैमोइसेल क्रेन (कुरंजा)
Q. साइबेरियाई क्रेन
R. बार-हेडेड गूज़ (पट्टीदार हंस)
S. ग्रेटर फ्लेमिंगो (हंसराज)
सूची II (राजस्थान में प्रमुख शीतकालीन प्रवास स्थल)
1. केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान
2. खींचन गांव (जोधपुर)
3. सांभर झील
4. जवाई बांध (पाली)
(A) P-2, Q-1, R-4, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-2, Q-1, R-3, S-4
(D) P-1, Q-2, R-4, S-3

21. राजस्थान में वन्यजीवों पर लागू कानूनी संरक्षण के संबंध में कथन I और कथन II पर विचार कीजिए:
कथन I : देशी प्रजातियों के शिकार को दंडित करने के लिए राजस्थान वन विभाग द्वारा वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 लागू किया जाता है।
कथन II : कृष्णमृग (काला हिरण) को इस अधिनियम की अनुसूची V के तहत सूचीबद्ध किया गया है, जो राजस्थान में स्थानीय किसानों द्वारा इसके चयनात्मक शिकार की अनुमति देता है।
निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प सही है?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है

22. मुख्य वन्यजीव अभयारण्यों पर दबाव कम करने के लिए राजस्थान में विकसित किए गए पारिस्थितिक-पर्यटन जैविक उद्यानों में निम्नलिखित में से कौन-सा शामिल नहीं है?
(A) जयपुर में स्थित नाहरगढ़ जैविक उद्यान
(B) कैला देवी जैविक उद्यान
(C) जोधपुर के पास माचिया जैविक उद्यान
(D) कोटा क्षेत्र में अभेड़ा जैविक उद्यान

23. राजस्थान वन विभाग के प्रशासनिक ढांचे के तहत, राज्य में वन्यजीव संरक्षण के प्रबंधन और निर्देशन के लिए उत्तरदायी शीर्ष पद निम्नलिखित में से कौन-सा है?
(A) मुख्य वन संरक्षक (CCF)
(B) प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन बल प्रमुख)
(C) क्षेत्र निदेशक, प्रोजेक्ट टाइगर
(D) मुख्य वन्यजीव प्रतिपालक (CWLW)

24. राजस्थान के अभयारण्यों पर लागू होने वाले निम्नलिखित पर्यावरण नियमों और परियोजनाओं के प्रारंभ के सही कालानुक्रमिक क्रम (प्राचीनतम से नवीनतम) का चयन कीजिए:
1. प्रोजेक्ट टाइगर की शुरुआत
2. वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम का अधिनियमन
3. पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम
4. राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (NTCA) की अधिसूचना
(A) 2, 1, 3, 4 (B) 1, 2, 4, 3
(C) 2, 3, 1, 4 (D) 1, 3, 2, 4

25. डैमोइसेल क्रेन (कुरंजा) के संरक्षण के लिए राजस्थान में निम्नलिखित में से किसे सबसे सफल स्थानीय सामुदायिक संरक्षण मॉडलों में से एक माना जाता है?
(A) जैसलमेर जिले में पारंपरिक ओरण (पवित्र उपवन) संरक्षण
(B) गुड़ा बिश्नोइयान में बिश्नोई समुदाय की संरक्षण पद्धतियाँ
(C) खींचन गांव की पक्षी चुग्गा (दाना) पहल
(D) रणथंभौर रिजर्व के आसपास पारिस्थितिकी-विकास समितियां

NODIA

26. राजस्थान के राज्य प्रतीक और उसके वैज्ञानिक नाम का निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म असंगत है?
(A) राज्य पक्षी - पावो क्रिस्टेटस
(B) राज्य वृक्ष - प्रोसॉपिस सिनेगेरिया
(C) राज्य पुष्प - टेकोमेला अंडुलेटा
(D) राज्य पशु (जंगली) - गज़ेला बेनेटी

27. राजस्थान के वन्यजीव अभयारण्यों से जुड़ी नदी प्रणालियों के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए:
(A) बनास नदी राष्ट्रीय मरु उद्यान की दक्षिणी सीमा बनाती है।
(B) लूनी नदी केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान के लिए प्राथमिक जल स्रोत है।
(C) माही नदी केवल रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान से होकर गुजरती है।
(D) चंबल नदी मुकुंदरा हिल्स टाइगर रिजर्व से होकर बहती है।

28. जोगी महल और पदम तलाव प्रमुख विरासत और पारिस्थितिक स्थल हैं, जो निम्नलिखित में से किस वन्यजीव रिजर्व के भीतर स्थित हैं?

पर्यावरण संतुलन स्थापित करने का प्रयास किया गया। इसके तहत प्रदेश भर में व्यापक स्तर पर पौधे रोपे गए।

88. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
अरावली पर्वतमाला राजस्थान में विस्तृत है और यह थार मरुस्थल के पूर्व की ओर प्रसार को रोकने के लिए एक प्राकृतिक पारिस्थितिक अवरोधक का कार्य करती है। हालांकि, हाल के दशकों में अरावली क्षेत्र में अत्यधिक अवैध खनन और वनों की कटाई के कारण क्षरण हुआ है, जिससे पूर्वी मैदानी भागों में मरुस्थलीकरण की प्रक्रिया तेज हो रही है। अतः दोनों कथन सत्य हैं।

89. (A) 1, 3, 2, 4
राजस्थान में पर्यावरण एवं वन संरक्षण से जुड़ी घटनाओं का सही कालानुक्रम इस प्रकार है: सर्वप्रथम ऐतिहासिक खेजरली नरसंहार वर्ष 1730 में घटित हुआ था। इसके उपरांत व्यापक राजस्थान वन अधिनियम वर्ष 1953 में लागू किया गया। तत्पश्चात खेजड़ी को राज्य वृक्ष का दर्जा वर्ष 1983 में प्रदान किया गया। अंत में अरावली वृक्षारोपण परियोजना वर्ष 1992 में प्रारंभ की गई थी।

90. (A) पांच
प्रसिद्ध वनस्पतिशास्त्री चैंपियन और सेठ के वर्गीकरण (1968) के अनुसार राजस्थान की प्राकृतिक वनस्पति को मोटे तौर पर पांच प्रमुख वन प्रकार समूहों में वर्गीकृत किया गया है। इन पांच समूहों में शुष्क पर्णपाती, कांटेदार, उपोष्ण सदाबहार, शुष्क सागौन और मिश्रित पर्णपाती वन शामिल हैं। यह वर्गीकरण वर्षा और जलवायु की परिस्थितियों के आधार पर आधारित माना जाता है। यह सर्वमान्य है।

Click Here to Buy book on Flipkart

II. सीतामाता अभयारण्य
III. सरिस्का टाइगर रिजर्व
IV. कुंभलगढ़ अभयारण्य
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही क्रम का चयन कीजिए:
(A) I, III, IV, II
(B) III, I, IV, II
(C) I, IV, III, II
(D) III, IV, I, II

38. राजस्थान में निम्नलिखित में से कौन-सा वन्यजीव अभयारण्य तीन जिलों: अजमेर, पाली और राजसमंद की सीमाओं में फैला हुआ है?
(A) बस्सी वन्यजीव अभयारण्य
(B) टॉडगढ़ रावली अभयारण्य
(C) जमवा रामगढ़ अभयारण्य
(D) रामगढ़ विषधारी अभयारण्य

39. मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किस व्यावहारिक संरक्षण चुनौती का समाधान करने के लिए ऊँट को राजस्थान का राज्य पशु (पशुधन श्रेणी) घोषित किया गया था?
(A) जंगली तेंदुओं और बाघों के शिकार हेतु पालतू ऊँटों को कोर अभयारण्य क्षेत्रों में छोड़ना।
(B) राज्य वन विभाग को राष्ट्रीय वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972 की अनुसूची I के तहत ऊँटों को वर्गीकृत करने में सक्षम बनाना।
(C) राष्ट्रीय मरु उद्यान के अंदर विनियमित जंगली ऊँट सफारी अभियानों का आयोजन करके राज्य के पारिस्थितिक-पर्यटन को बढ़ावा देना।
(D) ऊँटों की घटती संख्या को रोकना तथा उनके वध एवं अवैध परिवहन/निर्यात पर रोक लगाना।

40. राजस्थान में गोडावण (ग्रेट इंडियन बस्टर्ड) संरक्षण प्रयासों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. राजस्थान में इसे स्थानीय रूप से 'गोडावण' के नाम से जाना जाता है।
II. यह मुख्य रूप से घास के मैदान का पक्षी है जो घने वनों से दूर रहता है।
III. 'माई हैचलिंग' पहल के तहत कृत्रिम ऊष्मायन (इन्क्यूबेशन) के लिए जंगलों से गोडावण के अंडे एकत्र करना शामिल था।
IV. राजस्थान में गोडावण की जनसंख्या वर्तमान में 1,000 से अधिक है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल II, III और IV
(C) केवल I और II
(D) I, II, III और IV

41. नव-अधिसूचित धौलपुर-करौली टाइगर रिजर्व राजस्थान में बाघ संरक्षण परिदृश्य का विस्तार करता है। यह मुख्य रूप से एक निरंतर गलियारा (कॉरिडोर) बनाने के लिए क्षेत्र के किस निकटवर्ती प्रमुख टाइगर रिजर्व से जुड़ता है?
(A) मुकुंदरा हिल्स टाइगर रिजर्व
(B) सरिस्का टाइगर रिजर्व
(C) रणथंभौर टाइगर रिजर्व
(D) रामगढ़ विषधारी टाइगर रिजर्व

42. मानव-वन्यजीव संघर्ष को कम करने और अभयारण्य की सीमाओं की रक्षा करने के लिए, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय राष्ट्रीय उद्यानों के चारों ओर बफर क्षेत्रों को अधिसूचित करता है। भारतीय संदर्भ में इन क्षेत्रों के लिए तकनीकी शब्द क्या है?
(A) पारिस्थितिक रूप से संवेदनशील क्षेत्र (Eco-Sensitive Zone - ESZ)
(B) प्रतिबंधित वन क्षेत्र (RFZ)
(C) बायोस्फीयर रिजर्व (BR)
(D) संरक्षण रिजर्व (CR)

43. राजस्थान में सामुदायिक संरक्षण के संबंध में कथन I और कथन II पर विचार कीजिए:
कथन I : ओरण पारंपरिक रूप से राजस्थान में स्थानीय समुदायों द्वारा संरक्षित पवित्र उपवन हैं, जो अक्सर किसी स्थानीय देवता को समर्पित होते हैं।
कथन II : ओरण के भीतर पेड़ काटना या पशुओं को मारना सांस्कृतिक रूप से सख्त वर्जित है, जो एक विकेंद्रीकृत संरक्षण माध्यम के रूप में कार्य करता है।
निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प सही है?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है

44. निम्नलिखित स्थानों में से कौन-सा राजस्थान में आधिकारिक तौर पर टाइगर रिजर्व के रूप में नामित न होने के संदर्भ में असंगत है?
(A) रणथंभौर
(B) कुंभलगढ़
(C) मुकुंदरा हिल्स
(D) रामगढ़ विषधारी

45. राजस्थान में वन्यजीव प्रबंधन के संदर्भ में, 'पगमार्क तकनीक' (Pugmark technique) शब्द का क्या अर्थ है?
(A) ग्रीष्म ऋतु के दौरान जंगली जानवरों के लिए कृत्रिम जलस्रोत और पगमार्क ट्रैक बनाने की एक प्रबंधन विधि।
(B) वनों में छोड़ने से पहले स्थानांतरित बाघ को अचेत करने और रेडियो-कॉलर लगाने की विशेष पशु चिकित्सा प्रक्रिया।
(C) पदचिह्नों का उपयोग करने वाली एक पारंपरिक वन्यजीव गणना (जनसंख्या आकलन) विधि।
(D) WPA, 1972 कानून के तहत संगठित वन्यजीव शिकार अपराध को दर्ज करने के लिए आवश्यक एक औपचारिक कानूनी प्रक्रिया।

Downloaded from www.pdf.tube

64. राजस्थान के निम्नलिखित टाइगर रिजर्वों पर विचार कीजिए और उनके कुल अधिसूचित क्षेत्र (कोर + बफर) के अवरोही क्रम (घटते क्रम) में व्यवस्थित करने पर सही क्रम का चयन कीजिए:

1. रणथंभौर टाइगर रिजर्व
2. सरिस्का टाइगर रिजर्व
3. मुकुंदरा हिल्स टाइगर रिजर्व

(A) 1, 2, 3
(B) 2, 1, 3
(C) 1, 3, 2
(D) 3, 2, 1

65. राजस्थान में वन्यजीव प्रबंधन रणनीति "कैमरा ट्रैप" (कैमरा ट्रैप) का बड़े पैमाने पर उपयोग करती है। रणथंभौर और सरिस्का जैसे अभयारण्यों में इस तकनीक का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?

(A) सभी पंजीकृत पर्यटक सफारी वाहनों की वास्तविक समय (रियल-टाइम) उपग्रह जीपीएस स्थिति को ट्रैक और अनुवीक्षित करना।
(B) अद्वितीय धारीदार प्रतिरूपों (धारीदार पैटर्न) का उपयोग करके अलग-अलग बाघों की पहचान करना।
(C) घने वनों में वायुमंडलीय आर्द्रता, वर्षा के स्तर और तापमान के उतार-चढ़ाव को मापना।
(D) सूखे के दौरान पूरे अभयारण्य में भूमिगत जलभृत जल भंडार की गहराई को मापना।

66. राजस्थान के अभयारण्यों की पारिस्थितिक विशेषताओं के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन असंगत है?

(A) केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान पूरी तरह से प्राकृतिक, वर्षा से पोषित आर्द्रभूमि पारिस्थितिकी तंत्र है।
(B) सीतामाता अभयारण्य में भारत में सागौन के वनों की सबसे उत्तरी सीमा शामिल है।
(C) ताल छापर अभयारण्य एक समतल लवण गर्त पर स्थित है।
(D) माउंट आबू अभयारण्य राजस्थान में एकमात्र ऐसा स्थान है जहाँ पौधा डिक्लीप्टेरा आबूएनसिस स्थानिक है।

67. जैव विविधता संरक्षण में "स्थानिकता" (Endemism) शब्द का अक्सर उपयोग किया जाता है। राजस्थान के वन्यजीवों के संदर्भ में, एक 'स्थानिक प्रजाति' (endemic species) का क्या अर्थ है?

(A) लंबी दूरी की प्रवासी पक्षी प्रजाति जो शीतकाल के दौरान विशेष रूप से पश्चिमी राजस्थान की यात्रा करती है।
(B) कोई भी जंगली प्रजाति जिसे सरकार द्वारा प्रबंधित प्रजनन सुविधाओं और चिड़ियाघरों के भीतर सफलतापूर्वक प्रजनित किया गया है।
(C) एक प्रजाति जो प्राकृतिक रूप से किसी विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र तक ही सीमित होती है।
(D) एक पूर्व देशी प्रजाति जो हाल ही में राज्य की प्रशासनिक सीमाओं के भीतर पूरी तरह से विलुप्त हो गई है।

68. मुकुंदरा हिल्स टाइगर रिजर्व के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. यह कोटा, बूंदी, चित्तौड़गढ़ और झालावाड़ जिलों में फैला हुआ है।
II. इसमें दर्रा वन्यजीव अभयारण्य शामिल है।
III. यह भारतीय भेड़िये के लिए एक महत्वपूर्ण आवास के रूप में कार्य करता है।
IV. इसे मुख्य रूप से राज्य में तीसरी अलग बाघ आबादी स्थापित करने के लिए एक टाइगर रिजर्व के रूप में नामित किया गया था।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(A) केवल I, II और III
(B) केवल II, III और IV
(C) केवल I, II और IV
(D) I, II, III और IV

69. एक वन्यजीव शोधकर्ता राजस्थान में गंभीर रूप से संकटग्रस्त घड़ियाल के आवास का अध्ययन करना चाहता है। निम्नलिखित में से कौन-सा अभयारण्य इस व्यावहारिक अनुसंधान के लिए सबसे उपयुक्त स्थान है?

(A) जयसमंद वन्यजीव अभयारण्य
(B) बस्सी वन्यजीव अभयारण्य
(C) राष्ट्रीय चंबल अभयारण्य
(D) जमवा रामगढ़ अभयारण्य

NODIA

70. राजस्थान में वन्यजीव अभयारण्यों के आसपास 'फसल क्षति/विनाश' की समस्या के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए:

(A) जंगली बाघों और तेंदुओं जैसे शीर्ष शिकारियों द्वारा सीधे फसल का नुकसान रिजर्व के पास कृषि हानि का सबसे लगातार कारण है।
(B) राज्य नीति जंगली शाकाहारी जीवों द्वारा फसल क्षति के लिए किसानों को क्षतिपूर्ति प्रदान करती है।
(C) 1972 के वन्यजीव संरक्षण अधिनियम में सख्त कानूनी प्रावधान शामिल हैं जो अभयारण्यों की सीमा से लगे निजी कृषि भूमि के आसपास किसी भी प्रकार की बाड़बंदी को प्रतिबंधित करते हैं।
(D) राष्ट्रीय मरु उद्यान के आसपास वन्यजीवों द्वारा फसल क्षति पूरी तरह से अनुपस्थित है क्योंकि इस क्षेत्र में पारंपरिक कृषि गतिविधियां अनुपस्थित हैं।

71. महाराजा सवाई माधो सिंह प्रथम द्वारा निर्मित ऐतिहासिक शिकारगाह, जो अब रणथंभौर के भीतर एक प्रमुख ऐतिहासिक और पारिस्थितिक स्थल है, को किस नाम से जाना जाता है?

(A) कांकरणवाड़ी किला
(B) अभेड़ा महल
(C) सिलीसेढ़ पैलेस
(D) जोगी महल

72. राज्य में संगठित वन्यजीव अपराध और शिकार गतिविधियों पर अंकुश लगाने के लिए विशेष रूप से राजस्थान वन विभाग द्वारा किस प्रमुख वन्यजीव संरक्षण बल की स्थापना की गई थी?

(A) शिकार विरोधी कार्यबल (अवैध शिकार-रोधी कार्य बल)

निम्नलिखित में से किस नगर-समीपवर्ती वन क्षेत्र में शुरू किया गया था?
(A) झालाना और आमागढ़
(B) जोधपुर नगर के पास स्थित माचिया सफारी पार्क
(C) उदयपुर जिले में सज्जनगढ़ वन्यजीव अभयारण्य
(D) कोटा वन क्षेत्र में अभेड़ा जैविक उद्यान

57. राजस्थान में कौन-सा अभयारण्य विशिष्ट रूप से सबसे अधिक ऊंचाई पर स्थित है, जो जंगली गुलाब जैसी उप-उष्णकटिबंधीय सदाबहार प्रजातियों के लिए एक आवास प्रदान करता है और उच्च स्थानिकता (endemism) दर्शाता है?
(A) कुंभलगढ़ वन्यजीव अभयारण्य
(B) सीतामाता वन्यजीव अभयारण्य
(C) माउंट आबू अभयारण्य
(D) फुलवारी की नाल वन्यजीव अभयारण्य

58. राजस्थान में शिकार और कानूनी ढांचे के संबंध में कथन I और कथन II पर विचार कीजिए:
कथन I : गुरु जंभेश्वर द्वारा स्थापित बिश्नोई समुदाय के सामाजिक-धार्मिक सिद्धांत सभी वन्यजीवों की सुरक्षा का आदेश देते हैं, जो पश्चिमी राजस्थान में शिकार विरोधी सजगता को गहराई से प्रभावित करते हैं।
कथन II : कृष्णमृग (काले हिरण) और चिंकारा के शिकार से संबंधित राजस्थान के हाई-प्रोफाइल कानूनी मामलों पर मुख्य रूप से वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 के बजाय भारतीय दंड संहिता के तहत मुकदमा चलाया गया है।
निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प सही है?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है

59. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A) : रामगढ़ विषधारी को अधिसूचना के समय बहुत कम निवासी बाघ होने के बावजूद टाइगर रिजर्व के रूप में नामित किया गया था।
कारण (R) : यह रणथंभौर और मुकुंदरा हिल्स की बाघों की आबादी को जोड़ने वाले एक महत्वपूर्ण प्राकृतिक गलियारे के रूप में कार्य करता है।
उपर्युक्त दोनों कथनों के संदर्भ में, सही विकल्प का चयन कीजिए:
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है, लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है, लेकिन कारण (R) सही है।

60. निम्नलिखित में से कौन-सा वर्तमान में रणथंभौर टाइगर रिजर्व के भीतर बाघों की आबादी के समक्ष सबसे महत्वपूर्ण मानवजनित खतरा है?
(A) राज्य सरकार के विभागों द्वारा सीधे प्रबंधित बड़े पैमाने पर काष्ठ निष्कर्षण के लिए व्यापक व्यावसायिक वनों की कटाई।
(B) पशुधन चराई और अवैध जलाऊ लकड़ी के संग्रह का अत्यधिक दबाव।
(C) कोर पार्क सीमा के भीतर अनधिकृत तांबा और संगमरमर खनन कार्य।
(D) संरक्षित पदम तलाव आर्द्रभूमि पारिस्थितिकी तंत्र के अंदर अधिकृत व्यावसायिक मछली पकड़ने का कार्य।

61. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I (जीव-जंतु/वनस्पति)
P. उड़न गिलहरी
Q. गोडावण (ग्रेट इंडियन बस्टर्ड)
R. बाघ
S. कृष्णमृग (काला हिरण)
सूची II (अभयारण्य)
1. राष्ट्रीय मरु उद्यान
2. रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान
3. सीतामाता अभयारण्य
4. ताल छापर अभयारण्य
(A) P-3, Q-1, R-2, S-4
(B) P-1, Q-3, R-2, S-4
(C) P-3, Q-2, R-1, S-4
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

62. राजस्थान का निम्नलिखित में से कौन-सा प्रतीक आधिकारिक रूप से 'राज्य पुष्प' के रूप में मान्यता प्राप्त है और इसके शुष्क तथा अर्ध-शुष्क वन्यजीव आवासों में महत्वपूर्ण पारिस्थितिक मूल्य रखता है?
(A) पलाश (ब्यूटिया मोनोस्पर्मा)
(B) कमल (निलुम्बो न्यूसीफेरा)
(C) खेजड़ी (प्रोसॉपिस सिनेगेरिया)
(D) रोहिड़ा (टेकोमेला अंडुलेटा)

63. निम्नलिखित में से किसे छोड़कर अन्य सभी राष्ट्रीय मरु उद्यान की विशिष्ट विशेषताएं हैं?
(A) यहाँ राजस्थान में सबसे अधिक वार्षिक वर्षा दर्ज की जाती है।
(B) यह भौगोलिक रूप से जैसलमेर और बाड़मेर जिलों के शुष्क क्षेत्रों में फैला हुआ है।
(C) विशाल स्थानांतरित बालुका स्तूप (रेत के टीले) इसके कुल परिदृश्य क्षेत्र का एक बहुत महत्वपूर्ण हिस्सा बनाते हैं।
(D) यह स्थानिक भारतीय स्पाइनी-टेल्ड छिपकली (सांडा) प्रजाति के लिए एक आवश्यक प्राकृतिक आवास के रूप में कार्य करता है।

Click Here to Buy book on Amazon

(B) अरावली काल के प्रागैतिहासिक शैलचित्र
(C) गणेश्वर संस्कृति से संबंधित प्राचीन तांबा गलाने के स्थल
(D) भारत में उल्कापिंड द्वारा निर्मित सबसे प्राचीन क्रेटर

9. मुकुंदरा हिल्स टाइगर रिजर्व के संबंध में असत्य कथन की पहचान कीजिए:
(A) इसका गठन दर्रा, जवाहर सागर और राष्ट्रीय चंबल अभयारण्यों को मिलाकर किया गया था।
(B) इसे 2013 में राजस्थान का तीसरा टाइगर रिजर्व घोषित किया गया था।
(C) यह रिजर्व विशेष रूप से उदयपुर जिले में स्थित है।
(D) यह गागरोनी तोते (अलेक्जेंड्राइन पैराकीट) के लिए प्रसिद्ध है।

10. राजस्थान के निम्नलिखित टाइगर रिजर्वों पर विचार कीजिए और उन्हें प्रोजेक्ट टाइगर के तहत आधिकारिक अधिसूचना के कालानुक्रमिक क्रम में (प्राचीनतम से नवीनतम) व्यवस्थित कीजिए:
I. मुकुंदरा हिल्स
II. सरिस्का
III. रामगढ़ विषधारी
IV. रणथंभौर
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही क्रम का चयन कीजिए:
(A) IV, II, I, III
(B) II, IV, I, III
(C) IV, II, III, I
(D) II, I, IV, III

11. चूरू जिले का ताल छापर अभयारण्य किस विशिष्ट पशु प्रजाति के संरक्षण के लिए व्यापक रूप से जाना जाता है?
(A) भारतीय तेंदुआ
(B) रीछ (स्लॉथ बियर)
(C) भारतीय भेड़िया
(D) कृष्णमृग (काला हिरण)

12. सीतामाता वन्यजीव अभयारण्य पारिस्थितिक रूप से अद्वितीय है क्योंकि यह अरावली, विंध्य और मालवा पठार पारिस्थितिकी तंत्र के संगम का प्रतिनिधित्व करता है। यह राजस्थान में किस प्रजाति की सर्वाधिक सघनता के लिए प्रसिद्ध है?
(A) गोडावण (ग्रेट इंडियन बस्टर्ड)
(B) उड़न गिलहरी
(C) भारतीय पैंगोलिन
(D) कैराकल (स्याहगोश)

13. राजस्थान के राज्य पशुओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. चिंकारा (भारतीय गज़ेल) को 1981 में राज्य पशु घोषित किया गया था।
II. ऊँट को 2014 में पशुधन श्रेणी में राज्य पशु घोषित किया गया था।
III. चिंकारा को वैज्ञानिक रूप से 'गज़ेला बेनेटी' (Gazella bennettii) के नाम से जाना जाता है।
IV. दोनों जीव वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972 की अनु**सूची I** के तहत सूचीबद्ध हैं।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल I, II और IV
(C) केवल II, III और IV
(D) I, II, III और IV

14. राजस्थान के राज्य पक्षी गोडावण (ग्रेट इंडियन बस्टर्ड) का वैज्ञानिक नाम क्या है?
(A) पावो क्रिस्टेटस
(B) क्लैमाइडोटिस मैकक्वीनी
(C) ग्रस ल्यूकोगेरेनस
(D) आर्डियोटिस नाइग्रिसेप्स

15. राजस्थान सरकार ने अपने राज्य पक्षी की घटती संख्या को रोकने के लिए 'प्रोजेक्ट ग्रेट इंडियन बस्टर्ड' शुरू किया। यह राज्य स्तरीय संरक्षण परियोजना आधिकारिक तौर पर किस वर्ष शुरू की गई थी?
(A) 2001
(B) 2013
(C) 2018
(D) 2021

16. निम्नलिखित में से किस वन्यजीव रिजर्व को मई 2022 में राजस्थान के चौथे टाइगर रिजर्व के रूप में आधिकारिक तौर पर अधिसूचित किया गया था?
(A) कुंभलगढ़ वन्यजीव अभयारण्य आरक्षित वन क्षेत्र
(B) रामगढ़ विषधारी टाइगर रिजर्व
(C) धौलपुर-करौली टाइगर रिजर्व
(D) जमवा रामगढ़ अभयारण्य

17. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A) : रणथंभौर और सरिस्का रिजर्व की परिधियों के आसपास मानव-वन्यजीव संघर्ष विशेष रूप से अधिक है।
कारण (R) : ये रिजर्व आवास विखंडन और बढ़ते कृषि विस्तार से ग्रसित हैं जो प्राकृतिक वन्यजीव गलियारों को सीमित करते हैं।
उपर्युक्त दोनों कथनों के संदर्भ में, सही विकल्प का चयन कीजिए:
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है, लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है, लेकिन कारण (R) सही है।

18. राजस्थान के निम्नलिखित वन्यजीव अभयारण्यों में से, कोर क्षेत्र के संदर्भ में भौगोलिक दृष्टि से सबसे बड़ा कौन-सा है?

NODIA

(B) सशस्त्र कांस्टेबुलरी वन्यजीव संरक्षण विंग
(C) राज्य वन आपदा मोचन बटालियन
(D) सीमा सुरक्षा बल विशेष वन्यजीव प्रभाग

73. राजस्थान के अभयारण्यों के वन संसाधनों पर स्थानीय समुदायों की निर्भरता को कम करने के लिए निम्नलिखित में से कौन-सा सबसे प्रभावी और व्यापक रूप से बढ़ावा दिया जाने वाला उपाय है?
(A) संरक्षित वन सीमाओं से कम से कम 100 किलोमीटर दूर सभी परिधीय मानव बस्तियों और कृषि गांवों को स्थायी रूप से स्थानांतरित करना।
(B) नामित कोर बाघ आवासों में सभी घरेलू और विदेशी पर्यटकों के प्रवेश पर पूर्ण कानूनी प्रतिबंध लागू करना।
(C) स्थानीय आजीविका का समर्थन करने के लिए पारिस्थितिकी-विकास समितियों (पर्यावरण-विकास समितियां) का गठन करना।
(D) अभयारण्यों के आसपास के सभी प्रशासनिक बफर क्षेत्रों को व्यवस्थित रूप से गहन व्यावसायिक कृषि योग्य भूमि में परिवर्तित करना।

74. वनस्पतियों और जीवों के संरक्षण तथा पारिस्थितिक-पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए स्थापित माचिया जैविक उद्यान (माचिया बायोलॉजिकल पार्क) राजस्थान के किस जिले में स्थित है?
(A) जोधपुर
(B) जयपुर
(C) उदयपुर
(D) बीकानेर

75. राजस्थान में दिए गए पर्यावरण संबंधी मील के पत्थरों के स्थापना या अधिसूचना वर्ष के संबंध में सही युग्म की पहचान कीजिए:
(A) रणथंभौर को राष्ट्रीय उद्यान घोषित किया गया — 1973
(B) केवलादेव को विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया — 1995
(C) प्रोजेक्ट ग्रेट इंडियन बस्टर्ड शुरू किया गया — 2005
(D) मुकुंदरा हिल्स को टाइगर रिजर्व घोषित किया गया — 2013

76. निम्नलिखित में से किसे छोड़कर अन्य सभी राष्ट्रीय मरु उद्यान में गोडावण (ग्रेट इंडियन बस्टर्ड) की घटती जनसंख्या के मान्यता प्राप्त कारण हैं?
(A) पारंपरिक घास के मैदानों के पारिस्थितिकी तंत्र में गहन कृषि गतिविधियों का तेजी से अतिक्रमण और विस्तार।
(B) अंतरराष्ट्रीय पालतू जीवों के व्यापार के लिए जनजातीय शिकार।
(C) प्रमुख पक्षी उड्डयन गलियारों से गुजरने वाली उच्च-तनाव विद्युत पारेषण लाइनों से घातक टकराव।
(D) आवारा कुत्तों, सियार और मरुस्थलीय लोमड़ियों द्वारा असुरक्षित ज़मीनी घोंसलों और अंडों का व्यापक शिकार।

77. राजस्थान के वन विभाग के संदर्भ में 'कैम्पा' (CAMPA - प्रतिपूरक वनीकरण कोष प्रबंधन और योजना प्राधिकरण) निधि के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?
(A) यह एक विशेष संरक्षण कोष है जो राज्य के टाइगर रिजर्व में आने वाले विदेशी पर्यटकों पर कर से एकत्र किया जाता है।
(B) यह गंभीर मानव-वन्यजीव संघर्ष की घटनाओं से प्रभावित स्थानीय किसानों को वितरित किया जाने वाला एक प्रत्यक्ष वित्तीय नकद सब्सिडी कार्यक्रम है।
(C) यह गैर-वन उपयोग के लिए परिवर्तित वन भूमि की भरपाई के लिए वनीकरण का वित्तपोषण करता है।
(D) यह एक अंतरराष्ट्रीय संयुक्त राष्ट्र अनुदान है जो केवल गोडावण प्रजाति के आपातकालीन आवास संरक्षण के लिए समर्पित है।

78. एक छात्र राजस्थान में वन्यजीव संरक्षण की सफलता की कहानियों का विश्लेषण कर रहा है। निम्नलिखित में से कौन-सी घटना वर्ष 2008 के बाद सरिस्का टाइगर रिजर्व के लिए एक बड़ी सफलता का प्रतिनिधित्व करती है?
(A) मध्य प्रदेश से एक बाघ का प्राकृतिक प्रवास।
(B) बाघ की एक पूर्व अज्ञात उप-प्रजाति की खोज।
(C) पूरे अलवर जिले से सभी मानव बस्तियों का पूर्ण विस्थापन।
(D) स्थानांतरित बाघों से जंगली बाघ के शावकों का सफल प्रजनन और जन्म।

79. राजस्थान में कौन-सा वन्यजीव अभयारण्य चंबल नदी पर एक गहरी खड्ड (गॉर्ज) की उपस्थिति से विशिष्ट रूप से पहचाना जाता है और मगरमच्छों तथा घड़ियालों से समृद्ध है?
(A) राष्ट्रीय चंबल अभयारण्य
(B) रामगढ़ विषधारी अभयारण्य
(C) दर्रा अभयारण्य
(D) शेरगढ़ अभयारण्य

80. राजस्थान में राज्य वन्यजीव बोर्ड (SBWL) राज्य स्तर पर वन्यजीव संरक्षण के मामलों में सर्वोच्च सलाहकार निकाय है। इस बोर्ड का वैधानिक अध्यक्ष कौन होता है?
(A) पर्यावरण एवं वन मंत्री, राजस्थान
(B) राजस्थान के मुख्यमंत्री
(C) राजस्थान के मुख्य वन्यजीव प्रतिपालक
(D) राजस्थान के राज्यपाल

81. पाली जिले के जवाई बांध क्षेत्र के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसे आधिकारिक तौर पर तेंदुआ (लेपर्ड) संरक्षण रिजर्व के रूप में नामित किया गया है।
II. यह जंगली तेंदुओं और स्थानीय रबारी पशुपालक समुदाय के बीच शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के लिए प्रसिद्ध है।
III. यह कुंभलगढ़ राष्ट्रीय उद्यान के कोर क्षेत्र का निर्माण करता है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III

Downloaded from www.pdf.tube

किसी जीव को नुकसान पहुँचाना पूरी तरह वर्जित होता है। यह प्रथा बिना सरकारी हस्तक्षेप के स्थानीय स्तर पर जैव विविधता और वनों की रक्षा करने का एक उत्कृष्ट माध्यम है। अतः दोनों कथन सत्य हैं।

44. (B) कुंभलगढ़
दिए गए स्थलों में से रणथंभौर, मुकुंदरा हिल्स और रामगढ़ विषधारी को आधिकारिक रूप से टाइगर रिजर्व के रूप में अधिसूचित किया जा चुका है। इसके विपरीत कुंभलगढ़ वर्तमान में एक वन्यजीव अभयारण्य है और इसे आधिकारिक रूप से टाइगर रिजर्व घोषित नहीं किया गया है। यद्यपि इसे टाइगर रिजर्व बनाने के प्रस्ताव पर विचार किया जाता रहा है, फिर भी इसका वर्तमान दर्जा अभयारण्य का ही है। अतः कुंभलगढ़ असंगत विकल्प है।

45. (C) पदचिह्नों का उपयोग करने वाली एक पारंपरिक वन्यजीव गणना (जनसंख्या आकलन) विधि।
राजस्थान के वन प्रबंधन में 'पगमार्क तकनीक' वन्यजीवों, विशेषकर बाघों और तेंदुओं की गणना और उपस्थिति दर्ज करने की एक पारंपरिक वैज्ञानिक विधि है। इसमें जानवर के पंजे के निशानों की छाप प्लास्टर ऑफ पेरिस या पगमार्क ट्रेकर से ली जाती है। इन निशानों की अनूठी बनावट और आकार का विश्लेषण करके अलग-अलग जीवों की पहचान और उनकी संभावित संख्या का आकलन किया जाता है। यह गणना का एक महत्वपूर्ण आधार रही है।

46. (D) साइबेरियाई क्रेन
भरतपुर का केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान गंभीर रूप से संकटग्रस्त साइबेरियाई क्रेन का एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक शीतकालीन प्रवास स्थल रहा है। यह पक्षी सुदूर साइबेरिया से हज़ारों किलोमीटर की यात्रा करके यहाँ सर्दियों में आता था। हालाँकि, प्रवास मार्गों पर शिकार और आवासों के विनाश के कारण वर्ष 2002 के बाद से इस दुर्लभ पक्षी को केवलादेव में नहीं देखा गया है। इस पक्षी की अनुपस्थिति इसके विलुप्त होने के खतरे को दर्शाती है।

47. (A) नीलगाय
भारत के वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 के तहत सर्वोच्च स्तर का कानूनी संरक्षण प्रदान करने के लिए गंभीर रूप से संकटग्रस्त जीवों को अनुसूची I में रखा गया है। गोडावण, भारतीय तेंदुआ और कृष्णमृग सभी अनुसूची I के अंतर्गत पूरी तरह से संरक्षित हैं। इसके विपरीत नीलगाय को इस अनुसूची में शामिल नहीं किया गया है, क्योंकि इसकी आबादी पर्याप्त है और यह फसलों को नुकसान पहुँचाती है। अतः नीलगाय विकल्प असंगत है।

48. (B) राष्ट्रीय मरु उद्यान — आर्द्र सदाबहार वन
दिए गए अभयारण्यों और उनकी पारिस्थितिक विशेषताओं के युग्मों में राष्ट्रीय मरु उद्यान का आर्द्र सदाबहार वन के साथ मेल पूरी तरह गलत है। राष्ट्रीय मरु उद्यान जैसलमेर और बाड़मेर में स्थित एक अत्यंत शुष्क मरुस्थलीय पारिस्थितिकी तंत्र है, जहाँ काँटेदार झाड़ियाँ और मरुद्भिद वनस्पतियाँ पाई जाती हैं। आर्द्र सदाबहार वन अत्यधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में पाए जाते हैं। अन्य सभी युग्म अपनी विशेषताओं के अनुसार बिल्कुल सही हैं।

49. (B) प्रत्येक जिले में एक
राजस्थान सरकार ने राज्य में वन्यजीव संरक्षण के प्रति जन-जागरुकता बढ़ाने और स्थानीय स्तर पर पर्यावरण-पर्यटन को गति देने के लिए बजट 2022-23 में 'लव कुश वाटिका' विकसित करने की घोषणा की थी। इस योजना के तहत प्रशासनिक पैमाने पर राज्य के प्रत्येक जिले में इन वाटिकाओं को स्थापित करने का प्रावधान किया गया था। ये वाटिकाएं प्राकृतिक हरियाली से परिपूर्ण होंगी, जहाँ लोग प्रकृति और स्थानीय वनस्पतियों के बारे में सीख सकेंगे।

50. (A) वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972
राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (NTCA) भारत में प्रोजेक्ट टाइगर और बाघ अभयारण्यों की निगरानी करने वाली एक सर्वोच्च वैधानिक संस्था है। इस प्राधिकरण की स्थापना वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 में वर्ष 2006 के संशोधन द्वारा किए गए प्रावधानों के तहत की गई थी। यह निकाय राज्य सरकारों को बाघ संरक्षण योजनाओं के निर्माण और कार्यान्वयन में दिशा-निर्देश प्रदान करता है तथा कानूनी अनुपालन सुनिश्चित करता है। अतः इसका आधार 1972 का अधिनियम है।

51. (C) रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान
'मछली' (T-16) नाम की विश्व प्रसिद्ध बाघिन रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान की एक प्रमुख और ऐतिहासिक बाघिन थी। अपनी अदम्य शक्ति, मगरमच्छों के साथ संघर्षों और पर्यटकों के सामने निर्भीक व्यवहार के कारण उसे दुनिया की सबसे अधिक फोटो खिंचवाने वाली बाघिन माना जाता था। उसने रणथंभौर में वन्यजीव पर्यटन को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय बनाने में योगदान दिया और उद्यान में कई नई बाघ पीढ़ियों को जन्म देकर संख्या बढ़ाई।

52. (D) राज्य में भारत के सघन उष्णकटिबंधीय वर्षावन आवरण का उच्चतम प्रतिशत है।
राजस्थान की जलवायु मुख्य रूप से शुष्क और अर्ध-शुष्क है, जिसके कारण यहाँ काँटेदार वन और मरुस्थलीय वनस्पतियाँ पाई जाती हैं। सघन उष्णकटिबंधीय वर्षावन अत्यधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में पाए जाते हैं। राजस्थान में वर्षावन आवरण का उच्चतम प्रतिशत होना पूर्णतः असत्य कथन है। अन्य सभी बातें जैसे अरावली का पारिस्थितिक प्रभाव और शुष्कता-रोधी पौधे खेजड़ी व रोहिड़ा की उपस्थिति राजस्थान के लिए बिल्कुल सही तथ्य हैं।

53. (C) केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान
मॉन्ट्रो रिकॉर्ड अंतर्राष्ट्रीय महत्व की उन रामसर आर्द्रभूमियों की सूची है जहाँ पारिस्थितिक स्वरूप में प्रतिकूल परिवर्तन हुए हैं या होने की संभावना है। राजस्थान का केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान वर्तमान में इस मॉन्ट्रो रिकॉर्ड में शामिल है। इसका मुख्य कारण उद्यान में पानी की कमी और आक्रामक विदेशी वनस्पतियों का प्रसार रहा है। इस सूची में शामिल होने से इस अनूठे पक्षी

NODIA

(A) आक्रामक पौधों को हटाकर और देशी घास को पुनर्जीवित करके आवास का पुनर्स्थापन (Habitat restoration)।
(B) बड़े मांसाहारियों के लिए नियमित रूप से पूरक कृत्रिम भोजन केंद्र प्रदान करना ताकि जंगली शिकार पर उनकी प्राकृतिक निर्भरता को कम किया जा सके।
(C) बफर पारिस्थितिकी तंत्र को तुरंत आबादी से भरने के लिए आस-पास के राज्य रिजर्व से सैकड़ों शाकाहारी जीवों को स्थानांतरित करना।
(D) मांसाहारियों को बफर भूमि में जाने से रोकने के लिए अभयारण्य की सीमाओं के साथ निरंतर ऊंची कंक्रीट परिधि दीवारें बनाना।

www.nodia.in

Click Here to Buy book on Flipkart

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) भारतीय मरुस्थल क्षेत्र
राजस्थान का अधिकांश पश्चिमी भाग भारतीय मरुस्थल जैव भौगोलिक क्षेत्र के अंतर्गत आता है। यह क्षेत्र राज्य के सबसे विशाल भूभाग को आच्छादित करता है और यहाँ की जलवायु अत्यधिक शुष्क है। इस विशिष्ट भौगोलिक स्थिति के कारण यहाँ पाई जाने वाली वनस्पतियाँ और जीव मरुस्थलीय पारिस्थितिकी तंत्र के अनुसार अनुकूलित हैं। पश्चिमी अभयारण्यों में मरुस्थलीय प्रजातियों की प्रधानता पाई जाती है जो इस विशाल क्षेत्र के प्रभाव को स्पष्ट रूप से दर्शाती है।

2. (A) धोक (एनोगेसुस पेंडुला)
रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान के शुष्क पर्णपाती वनों में धोक वृक्ष मुख्य रूप से पाया जाता है। यह प्रजाति इस उद्यान के 60% से अधिक वन आवरण का निर्माण करती है। ग्रीष्मकाल में जल की कमी से बचने के लिए यह अपनी पत्तियाँ गिरा देता है। यह कठोर परिस्थितियों को सहन करने में सक्षम है और स्थानीय वन्यजीवों के लिए एक प्राथमिक आवास तथा भोजन का स्रोत प्रदान करता है।

3. (D) I, II और III
रणथंभौर का संरक्षण इतिहास अत्यंत समृद्ध और महत्वपूर्ण रहा है। इसे प्रारंभिक चरण में वर्ष 1955 में सवाई माधोपुर शिकार अभयारण्य के रूप में स्थापित किया गया था। तत्पश्चात बाघों के संरक्षण हेतु वर्ष 1973 में शुरू किए गए प्रोजेक्ट टाइगर के प्रथम चरण में इसे शामिल किया गया। पारिस्थितिक महत्व को देखते हुए वर्ष 1980 में इसे राष्ट्रीय उद्यान का दर्जा दिया गया। अतः तीनों कथन पूर्णतः सत्य हैं।

4. (D) अलवर
सरिस्का टाइगर रिजर्व राजस्थान के अलवर जिले में अरावली की पर्वत श्रृंखलाओं के मध्य स्थित है। यह क्षेत्र उत्तर-पूर्वी राजस्थान का एक प्रमुख वन्यजीव आवास है, जो शुष्क पर्णपाती वनों और विविध जैव विविधता से समृद्ध है। अरावली पहाड़ियों का यह मुख्य भाग बाघों और तेंदुओं के लिए अत्यंत उपयुक्त प्राकृतिक वातावरण प्रदान करता है। इस रिजर्व का प्राथमिक कोर क्षेत्र पूर्ण रूप से अलवर जिले में आता है।

5. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
वर्ष 2005 तक अवैध शिकार और मानवीय गतिविधियों के अत्यधिक दबाव के कारण सरिस्का में बाघों की मूल आबादी पूरी तरह समाप्त हो गई थी। इस संकट से निपटने के लिए राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण ने वर्ष 2008 में सरिस्का में बाघ पुनर्वास कार्यक्रम की शुरुआत की। इसके तहत रणथंभौर से बाघों को स्थानांतरित किया गया। अतः बाघों का विलोपन ही पुनर्वास कार्यक्रम की शुरुआत का मुख्य कारण बना।

6. (B) अजान बांध
केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान एक कृत्रिम आर्द्रभूमि पारिस्थितिकी तंत्र है, जिसे जल की निरंतर आपूर्ति की आवश्यकता होती है। इस उद्यान को जल की मुख्य आपूर्ति अजान बांध से होती है, जो बाणगंगा और गंभीर नदियों के संगम पर निर्मित है। नहरों के माध्यम से पानी उद्यान में पहुँचाया जाता है। जल की यह उपलब्धता ही यहाँ आने वाले हज़ारों प्रवासी पक्षियों के लिए एक अनुकूल और समृद्ध जलीय आवास निर्मित करती है।

7. (A) P-3, Q-1, R-2, S-4
राजस्थान के विभिन्न वन्यजीव अभयारण्य विशिष्ट जिलों में विस्तृत हैं। बंध बरेठा अभयारण्य भरतपुर जिले में स्थित है जो पक्षियों के लिए प्रसिद्ध है। फुलवारी की नाल अभयारण्य उदयपुर जिले में स्थित है जो अरावली से घिरा है। शेरगढ़ अभयारण्य बारां जिले में परवन नदी के तट पर स्थित है। टॉडगढ़ रावली अभयारण्य अजमेर, पाली और राजसमंद जिलों में फैला है। इस प्रकार अभयारण्यों और जिलों का मिलान सही है।

8. (A) प्राचीन काष्ठ जीवाश्मों वाला आकल वुड फॉसिल पार्क
जैसलमेर स्थित राष्ट्रीय मरु उद्यान में आकल वुड फॉसिल पार्क शामिल है, जो अपने प्रागैतिहासिक काष्ठ जीवाश्मों के लिए जाना जाता है। यहाँ लगभग 180 मिलियन वर्ष पुराने जुरासिक काल के वृक्षों के जीवाश्म संरक्षित हैं। यह स्थान उस समय के सुदूर अतीत में उपस्थित विशाल उष्णकटिबंधीय वनों के साक्ष्य प्रस्तुत करता है। यह भूवैज्ञानिक धरोहर मरुस्थलीय पारिस्थितिकी तंत्र के प्राचीन विकास को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

NODIA

(C) यह रिजर्व विशेष रूप से उदयपुर जिले में स्थित है।
मुकुंदरा हिल्स टाइगर रिजर्व उदयपुर जिले में स्थित नहीं है, बल्कि यह कोटा, बूंदी, चित्तौड़गढ़ और झालावाड़ जिलों के विस्तृत क्षेत्र में फैला हुआ है। इसका निर्माण दर्रा, जवाहर सागर और राष्ट्रीय चंबल अभयारण्य के भागों को मिलाकर किया गया था। इसे वर्ष 2013 में राज्य का तीसरा टाइगर रिजर्व बनाया गया था। यह क्षेत्र गागरोनी तोते के लिए प्रसिद्ध है। अतः इसे उदयपुर में बताना गलत है।

10. (A) IV, II, I, III
राजस्थान में प्रोजेक्ट टाइगर के तहत टाइगर रिजर्वों की आधिकारिक अधिसूचना का कालानुक्रमिक क्रम उनके गठन पर आधारित है। रणथंभौर को सबसे पहले 1973 में टाइगर रिजर्व घोषित किया गया था। इसके पश्चात सरिस्का को 1978 में यह दर्जा प्राप्त हुआ। मुकुंदरा हिल्स को वर्ष 2013 में तीसरे टाइगर रिजर्व के रूप में अधिसूचित किया गया, जबकि रामगढ़ विषधारी को वर्ष 2022 में चौथा टाइगर रिजर्व बनाया गया।

11. (D) कृष्णमृग (काला हिरण)
चूरू जिले में स्थित ताल छापर अभयारण्य मुख्य रूप से कृष्णमृग यानी काले हिरणों के संरक्षण के लिए जाना जाता है। यह अभयारण्य एक समतल लवण गर्त और विशेष प्रकार के प्राकृतिक घास के मैदानों से आच्छादित है। यहाँ पाई जाने वाली विशेष मोथिया घास इन कृष्णमृगों का मुख्य आहार बनती है। यह स्थान इन जीवों के लिए एक सुरक्षित प्राकृतिक आवास प्रदान करता है, जहाँ वे विचरण करते हैं।

12. (B) उड़न गिलहरी
सीतामाता वन्यजीव अभयारण्य अरावली, विंध्याचल और मालवा के पठार का एक अनूठा पारिस्थितिक संगम स्थल है। यह अभयारण्य राजस्थान में उड़न गिलहरी की सर्वाधिक सघनता और उपस्थिति के लिए प्रसिद्ध है। यह रात्रिचर जीव महुआ के वृक्षों पर निवास करता है और शाम को एक वृक्ष से दूसरे वृक्ष तक छलांग लगाता है। यहाँ के सघन सागौन वन इस दुर्लभ जीव की उत्तरजीविता के लिए अनुकूल आवास प्रदान करते हैं।

13. (A) केवल I, II और III
राजस्थान में चिंकारा को 1981 में राज्य पशु घोषित किया गया था, जिसका वैज्ञानिक नाम गज़ेला बेनेटी है। वर्ष 2014 में ऊंट को पशुधन श्रेणी में राज्य पशु का दर्जा दिया गया था। वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972 के तहत चिंकारा को अनुसूची I में स्थान प्राप्त है, जबकि ऊंट एक पालतू पशु होने के कारण इसमें शामिल नहीं है। इसलिए प्रथम तीन कथन सत्य हैं, जबकि चौथा कथन असत्य है।

14. (D) आर्डियोटिस नाइग्रिसेप्स
राजस्थान के राज्य पक्षी गोडावण का वैज्ञानिक नाम आर्डियोटिस नाइग्रिसेप्स है। इसे अंग्रेजी में ग्रेट इंडियन बस्टर्ड के नाम से जाना जाता है। यह पक्षी शुष्क और अर्ध-शुष्क घास के मैदानों का एक विशालकाय और दुर्लभ पक्षी है। वर्तमान में आवास विखंडन के कारण यह प्रजाति गंभीर रूप से संकटग्रस्त श्रेणी में आती है। इसके संरक्षण के लिए जैसलमेर के राष्ट्रीय मरु उद्यान में विशेष प्रयास किए जा रहे हैं।

15. (B) 2013
राजस्थान सरकार ने राज्य पक्षी गोडावण की तेज़ी से घटती आबादी को संरक्षित करने के उद्देश्य से वर्ष 2013 में 'प्रोजेक्ट ग्रेट इंडियन बस्टर्ड' की शुरुआत की थी। ऐसा करने वाला राजस्थान भारत का पहला राज्य बना था। इस परियोजना का मुख्य लक्ष्य गोडावण के प्राकृतिक आवासों का पुनर्वास और कृत्रिम प्रजनन को बढ़ावा देना है। यह महत्वाकांक्षी पहल मुख्य रूप से जैसलमेर के मरु उद्यान क्षेत्र में संचालित है।

16. (B) रामगढ़ विषधारी टाइगर रिजर्व
मई 2022 में रामगढ़ विषधारी वन्यजीव अभयारण्य को आधिकारिक रूप से राजस्थान के चौथे टाइगर रिजर्व के रूप में अधिसूचित किया गया था। यह बूंदी जिले में स्थित है और रणथंभौर तथा मुकुंदरा हिल्स टाइगर रिजर्व के बीच एक महत्वपूर्ण पारिस्थितिक गलियारे के रूप में कार्य करता है। इस क्षेत्र में बाघों के अलावा तेंदुओं और अन्य वन्यजीवों का समृद्ध आवास स्थित है। इससे बाघ संरक्षण का दायरा बढ़ा है।

NODIA

17. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
रणथंभौर और सरिस्का टाइगर रिजर्व की सीमाओं के आसपास मानव और वन्यजीवों के बीच संघर्ष बढ़ रहा है। इसका मुख्य कारण आवासों का विखंडन, बढ़ती कृषि गतिविधियाँ और मानवीय आबादी का विस्तार है। इन कारणों से वन्यजीवों के प्राकृतिक आवागमन के गलियारे बाधित हो रहे हैं, जिससे हिंसक जीव अभयारण्य से बाहर आ जाते हैं। अतः कारण, कथन की सटीक व्याख्या करता है और दोनों कथन पूर्णतः सत्य हैं।

18. (A) राष्ट्रीय मरु उद्यान
राजस्थान के संरक्षित क्षेत्रों में कोर और कुल भौगोलिक क्षेत्रफल की दृष्टि से राष्ट्रीय मरु उद्यान सबसे बड़ा अभयारण्य है। यह जैसलमेर और बाड़मेर जिलों में लगभग 3,162 वर्ग किलोमीटर के विशाल मरुस्थलीय क्षेत्र में फैला हुआ है। अन्य सभी उद्यान इसकी तुलना में आकार में बहुत छोटे हैं। यह उद्यान मरुस्थलीय पारिस्थितिकी तंत्र और दुर्लभ वन्यजीवों जैसे गोडावण के संरक्षण के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण प्राकृतिक शरणस्थल है।

19. (C) बिश्नोई
वर्ष 1730 में जोधपुर के खेजड़ली गाँव में हरे वृक्षों को कटने से बचाने के लिए अमृता देवी के नेतृत्व में 363 लोगों ने अपने प्राणों का बलिदान दिया था। यह ऐतिहासिक घटना बिश्नोई समुदाय से संबंधित है। बिश्नोई समाज अपने धार्मिक और सामाजिक नियमों के तहत सभी प्रकार के वन्यजीवों तथा वृक्षों की रक्षा के लिए तत्पर रहता है। यह बलिदान पर्यावरण और वन्यजीव संरक्षण का महान उदाहरण माना जाता है।

20. (A) P-2, Q-1, R-4, S-3
प्रवासी पक्षी राजस्थान के विभिन्न स्थलों पर शीतकाल में आते हैं। कुरंजा (डैमोइसेल क्रेन) का मुख्य शीतकालीन प्रवास स्थल जोधपुर का खींचन गांव है। साइबेरियाई क्रेन का ऐतिहासिक आवास केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान रहा है। पट्टीदार हंस (बार-हेडेड गूज़) पाली के जवाई बांध क्षेत्र में आते हैं, जबकि हंसराज (ग्रेटर फ्लेमिंगो) सांभर झील के खारे पानी में एकत्रित होते हैं। इस प्रकार पक्षियों और स्थलों का मिलान सही है।

21. (C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है
राजस्थान वन विभाग वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 के तहत अवैध शिकार को रोकने और अपराधियों को दंडित करने का कार्य करता है। कृष्णमृग (काला हिरण) इस अधिनियम की अनुसूची I में सूचीबद्ध है, जो इसे उच्चतम स्तर का कानूनी संरक्षण प्रदान करता है। इस प्रजाति का शिकार किसी भी परिस्थिति में पूरी तरह से वर्जित है। अतः कथन I पूरी तरह सत्य है, जबकि कथन II में दिए गए शिकार के तथ्य गलत हैं।

(D) I, II और III

82. राजस्थान में प्रमुख शहरी केंद्रों के बाहर "जैविक उद्यान" (जैसे उदयपुर के पास सज्जनगढ़ जैविक उद्यान) स्थापित करने के पीछे प्राथमिक पारिस्थितिक तर्क क्या है?
(A) बचाव (रेस्क्यू), पर-स्थाने (ex-situ) संरक्षण और जन शिक्षा का समर्थन करना।
(B) राज्य के गणमान्य व्यक्तियों और विदेशी मेहमानों के लिए विशेष रूप से आरक्षित शिकार क्षेत्र स्थापित करना।
(C) राज्य के औषधीय निर्माण उद्योगों को आपूर्ति के लिए संकटग्रस्त वनस्पतियों और औषधीय जड़ी-बूटियों की व्यावसायिक खेती करना।
(D) मानव-वन्यजीव संघर्ष क्षेत्रों से स्थानांतरित समस्याग्रस्त जंगली बाघों के लिए बड़े पैमाने पर खुले जंगल के रूप में कार्य करना।

83. अरावली पर्वतमाला राजस्थान में एक प्रमुख पारिस्थितिक रीढ़ का निर्माण करती है। निम्नलिखित में से कौन-सा वन्यजीव अभयारण्य अरावली पर्वतमाला के भीतर या उसके साथ स्थित नहीं है?
(A) कुंभलगढ़ अभयारण्य
(B) टॉडगढ़ रावली अभयारण्य
(C) राष्ट्रीय मरु उद्यान
(D) माउंट आबू अभयारण्य

84. टाइगर रिजर्व के कानूनी ढांचे के संबंध में कथन I और कथन II पर विचार कीजिए:
कथन I : वन्यजीव संरक्षण अधिनियम के तहत टाइगर रिजर्व की घोषणा के लिए एक 'कोर' या 'क्रिटिकल टाइगर हैबिटेट' और एक परिधीय 'बफर' क्षेत्र के सीमांकन की आवश्यकता होती है।
कथन II : राजस्थान में, सभी टाइगर रिजर्व के कोर और बफर दोनों क्षेत्रों में पर्यटन और कृषि गतिविधियों पर पूरी तरह से प्रतिबंध है।
निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प सही है?
(A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है
(D) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है

85. राजस्थान वन विभाग द्वारा उपयोग की जाने वाली शब्दावली में, अभयारण्य के भीतर निर्मित "एन्क्लोजर" (Enclosure) (जैसे कि राष्ट्रीय मरु उद्यान में गोडावण के लिए उपयोग किया जाता है) को मुख्य रूप से किस रूप में परिभाषित किया गया है?
(A) वन रक्षकों को शिकार नेटवर्क से बचाने के लिए कोर वन क्षेत्रों के भीतर निर्मित एक प्रशासनिक चौकी।
(B) स्थायी रूप से घायल या बीमार जंगली जानवरों को रखने के लिए पशु चिकित्सा विभाग द्वारा निर्मित एक बाड़ा सुविधा।
(C) एक बाड़युक्त, परभक्षी-रोधी (predator-proof) क्षेत्र जो जंगली प्रजनन आबादी की रक्षा करता है।
(D) आगंतुकों के लिए सुरक्षित रूप से वन्यजीवों का अवलोकन करने के लिए निर्मित एक ऊंचा मंच और पर्यटक दीर्घा।

86. राजस्थान में कौन-सा छोटा वन्यजीव अभयारण्य एक पठार पर स्थित है और ऐतिहासिक रूप से महाराणा प्रताप के जन्म स्थान किले के आसपास के घने जंगलों के लिए जाना जाता है?
(A) जमवा रामगढ़ अभयारण्य
(B) कुंभलगढ़ अभयारण्य
(C) सज्जनगढ़ अभयारण्य
(D) जयसमंद अभयारण्य

87. 'पाइथन पॉइंट' (Python Point), शीतकालीन महीनों के दौरान धूप सेंकते हुए बड़े भारतीय रॉक पाइथन (अजगर) को देखने का एक प्रसिद्ध स्थान, किस उद्यान/अभयारण्य के भीतर एक लोकप्रिय आकर्षण है?
(A) रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान
(B) सरिस्का टाइगर रिजर्व
(C) ताल छापर अभयारण्य
(D) केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान

88. रामगढ़ विषधारी टाइगर रिजर्व के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह भारत में अधिसूचित होने वाला 52वां टाइगर रिजर्व था।
II. यह मुख्य रूप से बूंदी जिले में फैला हुआ है।
III. चंबल की सहायक नदी मेज नदी इस रिजर्व से होकर गुजरती है।
IV. यह उत्तर-पूर्व में रणथंभौर टाइगर रिजर्व को दक्षिण की तरफ मुकुंदरा हिल्स टाइगर रिजर्व से जोड़ता है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल II, III और IV
(C) केवल I, III और IV
(D) I, II, III और IV

89. राजस्थान में निम्नलिखित में से कौन-सा वन्यजीव अभयारण्य भौगोलिक रूप से राज्य की राजधानी जयपुर के सबसे करीब है और कभी जयपुर के महाराजाओं का शिकारगाह था?
(A) शेरगढ़ अभयारण्य
(B) बंध बरेठा अभयारण्य
(C) जमवा रामगढ़ अभयारण्य
(D) दर्रा अभयारण्य

90. एक वन्यजीव प्रबंधक यह देखता है कि एक नए नामित बफर क्षेत्र में शिकार घनत्व (prey density) कोर क्षेत्र की तुलना में काफी कम है। राजस्थान में लागू आधुनिक वन्यजीव प्रबंधन सिद्धांतों के अनुसार, शिकार के आधार (prey base) में सुधार के लिए निम्नलिखित में से कौन-सा हस्तक्षेप सबसे उपयुक्त पहला कदम है?

Downloaded from www.pdf.tube

33. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
राष्ट्रीय मरु उद्यान में गोडावण पक्षी की आबादी गंभीर संकट का सामना कर रही है। इसका एक मुख्य कारण उद्यान के आसपास बिछाई गई उच्च-तनाव वाली विद्युत पारेषण लाइनें हैं। गोडावण एक भारी शरीर वाला पक्षी है, जिसकी सामने की दृष्टि सीमित होती है, जिससे उड़ते समय तारों से टकराकर इसकी मृत्यु हो जाती है। अतः यह कारण गोडावण की घटती संख्या की सटीक व्याख्या करता है और दोनों कथन सत्य हैं।

34. (A) सम (जैसलमेर)
राजस्थान सरकार ने भारतीय वन्यजीव संस्थान के सहयोग से राज्य पक्षी गोडावण की आबादी को विलुप्त होने से बचाने के लिए जैसलमेर जिले के सम क्षेत्र में एक विशेष संरक्षण एवं कृत्रिम प्रजनन केंद्र स्थापित किया है। यहाँ जंगली आवासों से सुरक्षित रूप से एकत्र किए गए अंडों का कृत्रिम ऊष्मायन किया जाता है। इस केंद्र की सफलता के परिणामस्वरूप कई चूज़ों का जन्म हुआ है, जो इस संकटग्रस्त प्रजाति के लिए महत्वपूर्ण है।

35. (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
राजस्थान के विभिन्न अभयारण्य अपनी विशिष्ट जैविक प्रजातियों के लिए जाने जाते हैं। सीतामाता अभयारण्य उड़न गिलहरियों के लिए प्रसिद्ध है। राष्ट्रीय चंबल अभयारण्य घड़ियालों के संरक्षण हेतु मुख्य नदीय आवास है। माउंट आबू अभयारण्य में स्थानिक वनस्पति प्रजाति 'डिक्लीप्टेरा आबूएनसिस' पाई जाती है। कुंभलगढ़ अभयारण्य भारतीय भेड़ियों के आवास के लिए जाना जाता है। इस प्रकार अभयारण्यों और उनकी मुख्य प्रजातियों का यह मिलान सही और सटीक है।

36. (D) मोथिया (साइपरस रोटंडस)
चूरू जिले में स्थित ताल छापर अभयारण्य में 'मोथिया' नामक विशेष प्रकार की मीठी और पौष्टिक घास बहुतायत में पाई जाती है। इस घास की जड़े स्वादिष्ट होती हैं और यह प्रोटीन से भरपूर मानी जाती है। यह घास इस अभयारण्य में रहने वाले कृष्णमृगों यानी काले हिरणों का प्राथमिक और पसंदीदा आहार बनती है। मोथिया घास की प्रचुरता ही इस लवण गर्त क्षेत्र में कृष्णमृगों की घनी आबादी को बनाए रखती है।

37. (A) I, III, IV, II
राजस्थान के दिए गए वन्यजीव अभयारण्यों को उत्तर से दक्षिण के भौगोलिक क्रम में व्यवस्थित करने पर सबसे उत्तर में चूरू का ताल छापर अभयारण्य आता है। इसके दक्षिण में अलवर स्थित सरिस्का टाइगर रिजर्व आता है। इसके और दक्षिण में पाली तथा राजसमंद की सीमाओं पर कुंभलगढ़ अभयारण्य स्थित है। सबसे दक्षिण में प्रतापगढ़ जिले का सीतामाता अभयारण्य स्थित है। अतः इनका सही भौगोलिक क्रम I, III, IV, II है।

38. (B) टॉडगढ़ रावली अभयारण्य
टॉडगढ़ रावली वन्यजीव अभयारण्य राजस्थान के अरावली पर्वत क्षेत्र में एक विशिष्ट भौगोलिक स्थिति रखता है। यह अभयारण्य मुख्य रूप से तीन जिलों: अजमेर, पाली और राजसमंद के त्रि-संगम क्षेत्र में फैला हुआ है। यह अभयारण्य शुष्क पर्णपाती वनों, पैंथर, भालू और विविध शाकाहारी वन्यजीवों का एक सुरक्षित स्थान है। तीन अलग-अलग प्रशासनिक जिलों की सीमाओं में फैला होने के कारण इसका प्रबंधकीय महत्व राज्य में अत्यधिक विशिष्ट माना जाता है।

39. (D) ऊँटों की घटती संख्या को रोकना तथा उनके वध एवं अवैध परिवहन/निर्यात पर रोक लगाना।
राजस्थान में ऊँटों की तेज़ी से घटती जनसंख्या, मशीनीकरण और अवैध परिवहन तथा वध जैसी गंभीर समस्याओं को ध्यान में रखते हुए वर्ष 2014 में ऊँट को राज्य पशु (पशुधन श्रेणी) घोषित किया गया था। इस घोषणा का मुख्य उद्देश्य ऊँटों के संरक्षण के लिए कड़े कानूनी नियम बनाना, उनके अवैध परिवहन पर रोक लगाना तथा इस मरुस्थलीय पशु को लुप्त होने से बचाना था। यह निर्णय राज्य की धरोहर की सुरक्षा हेतु लिया गया।

40. (A) केवल I, II और III
राजस्थान में गोडावण को स्थानीय रूप से इसी नाम से पुकारा जाता है और यह सघन वनों के बजाय खुले शुष्क घास के मैदानों में रहना पसंद करता है। 'माई हैचलिंग' जैसी पहलों से इसके अंडों का सुरक्षित कृत्रिम ऊष्मायन संभव हुआ है। हालाँकि, इसकी कुल जनसंख्या वर्तमान में 1,000 से काफी कम (लगभग 150 के आसपास) बची है। इसलिए प्रथम तीन कथन पूर्णतः सत्य हैं, जबकि चौथा कथन असत्य है।

41. (C) रणथंभौर टाइगर रिजर्व
नव-अधिसूचित धौलपुर-करौली टाइगर रिजर्व राजस्थान में बाघों के निर्बाध आवागमन और प्राकृतिक आवास के विस्तार की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह रिजर्व भौगोलिक रूप से प्रसिद्ध रणथंभौर टाइगर रिजर्व से सीधे जुड़ता है। इस जुड़ाव के कारण बाघों को बिना किसी मानवीय बाधा के एक वन क्षेत्र से दूसरे में जाने के लिए एक विशाल और सुरक्षित गलियारा प्राप्त होता है, जिससे बाघों की आनुवंशिक विविधता में सुधार होगा।

42. (A) पारिस्थितिक रूप से संवेदनशील क्षेत्र (Eco-Sensitive Zone - ESZ)
राष्ट्रीय उद्यानों और अभयारण्यों के चारों ओर मानवीय गतिविधियों और औद्योगिक दबाव को नियंत्रित करने के लिए पर्यावरण मंत्रालय द्वारा बफर क्षेत्र अधिसूचित किए जाते हैं। भारतीय कानूनी संदर्भ में इन सुरक्षित क्षेत्रों को 'पारिस्थितिक रूप से संवेदनशील क्षेत्र' (इको-सेंसिटिव जोन) कहा जाता है। इनका मुख्य कार्य मुख्य वन्यजीव आवासों के चारों ओर एक सुरक्षात्मक आवरण बनाना है, ताकि विकासात्मक गतिविधियों के दुष्परिणामों को रोककर वन्यजीवों की रक्षा की जा सके।

43. (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
ओरण राजस्थान की पारंपरिक सांस्कृतिक और पारिस्थितिक धरोहर हैं, जो स्थानीय समुदायों द्वारा किसी लोक देवता या देवी को समर्पित करके संरक्षित किए जाते हैं। धार्मिक आस्था के कारण ओरण भूमि के भीतर हरे पेड़ों की कटाई करना या

NODIA

64. (A) 1, 2, 3
कुल अधिसूचित क्षेत्र (कोर तथा बफर दोनों को मिलाकर) के आधार पर राजस्थान के टाइगर रिजर्वों को घटते क्रम में व्यवस्थित करने पर रणथंभौर टाइगर रिजर्व सबसे विशाल क्षेत्रफल वाला रिजर्व है। इसके पश्चात सरिस्का टाइगर रिजर्व का स्थान आता है जो अरावली में विस्तृत है। मुकुंदरा हिल्स टाइगर रिजर्व का क्षेत्रफल इन दोनों की तुलना में कम है। अतः कुल भौगोलिक आवरण के आधार पर इनका अवरोही क्रम 1, 2, 3 सही है।

65. (B) अद्वितीय धारीदार प्रतिरूपों (stripe patterns) का उपयोग करके अलग-अलग बाघों की पहचान करना।
रणथंभौर और सरिस्का जैसे अभयारण्यों में वन विभाग द्वारा 'कैमरा ट्रैप' तकनीक का उपयोग मुख्य रूप से बाघों की व्यक्तिगत पहचान के लिए किया जाता है। प्रत्येक बाघ के शरीर पर बनी धारियों का प्रतिरूप अनूठा होता है। स्वचालित कैमरों से प्राप्त तस्वीरों में इन धारियों का विश्लेषण करके बाघों की सटीक संख्या, उनकी आवाजाही और स्वास्थ्य पर नज़र रखी जाती है। यह आधुनिक वन्यजीव गणना का मुख्य आधार है।

66. (A) केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान पूरी तरह से प्राकृतिक, वर्षा से पोषित आर्द्रभूमि पारिस्थितिकी तंत्र है।
केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान पूरी तरह से प्राकृतिक आर्द्रभूमि नहीं है, बल्कि यह अजान बांध से पानी प्राप्त करने वाला एक मानव निर्मित जलीय पारिस्थितिकी तंत्र है। इसलिए इसे वर्षा से पोषित प्राकृतिक स्थल बताना असंगत है। अन्य सभी कथन पूरी तरह सत्य हैं: सीतामाता अभयारण्य में सागौन वनों की उत्तरी सीमा है, ताल छापर लवण गर्त पर स्थित है और 'डिक्लीप्टेरा आबूएनसिस' पौधा केवल माउंट आबू अभयारण्य में ही पाया जाता है।

67. (C) एक प्रजाति जो प्राकृतिक रूप से किसी विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र तक ही सीमित होती है।
जैव विविधता और वन्यजीव संरक्षण के संदर्भ में 'स्थानिक प्रजाति' (एंडेमिक स्पीशीज़) उस जीव या वनस्पति को कहा जाता है जो प्राकृतिक रूप से किसी विशेष भौगोलिक क्षेत्र या विशिष्ट पारिस्थितिकी तंत्र तक ही सीमित होती है और दुनिया में कहीं और नहीं पाई जाती। उदाहरण के लिए माउंट आबू में पाया जाने वाला पौधा डिक्लीप्टेरा आबूएनसिस केवल उसी पर्वत क्षेत्र तक सीमित है। अतः यह परिभाषा स्थानिकता को स्पष्ट करती है।

68. (D) I, II, III और IV
मुकुंदरा हिल्स टाइगर रिजर्व कोटा, बूंदी, चित्तौड़गढ़ और झालावाड़ जिलों में विस्तृत है। इसमें पूर्ववर्ती दर्रा वन्यजीव अभयारण्य का क्षेत्र शामिल है। यह अभयारण्य भारतीय भेड़िये के प्राकृतिक आवास के रूप में भी जाना जाता है। इस रिजर्व को अधिसूचित करने का मुख्य लक्ष्य राजस्थान में रणथंभौर और सरिस्का के अलावा बाघों की एक तीसरी स्वतंत्र आबादी स्थापित करना था। अतः दिए गए सभी चार कथन पूर्णतः सत्य हैं।

69. (C) राष्ट्रीय चंबल अभयारण्य
गंभीर रूप से संकटग्रस्त घड़ियाल (गेवियालिस गैंगेटिकस) के प्राकृतिक आवास का अध्ययन करने के लिए राष्ट्रीय चंबल अभयारण्य सबसे उपयुक्त स्थान है। यह त्रि-राज्यीय अभयारण्य चंबल नदी के साथ फैला हुआ है और विश्व में घड़ियालों की सबसे बड़ी प्रजनन आबादी की मेज़बानी करता है। यहाँ का स्वच्छ, बहता नदी जल और रेतीले तट घड़ियालों के घोंसले बनाने और धूप सेंकने के लिए आदर्श वातावरण प्रदान करते हैं।

70. (B) राज्य नीति जंगली शाकाहारी जीवों द्वारा फसल क्षति के लिए किसानों को क्षतिपूर्ति प्रदान करती है।
राजस्थान के वन्यजीव अभयारण्यों की सीमाओं से लगे कृषि क्षेत्रों में जंगली शाकाहारी जीवों जैसे नीलगाय और जंगली सूअरों द्वारा फसलों को भारी नुकसान पहुँचाया जाता है। इस समस्या से निपटने और किसानों के असंतोष को कम करने के लिए राज्य सरकार की नीति के तहत प्रभावित किसानों को वित्तीय क्षतिपूर्ति देने का प्रावधान है। यह उपाय मानव-वन्यजीव संघर्ष को रोकने और स्थानीय समुदायों को संरक्षण में सहयोग देने के लिए कारगर है।

71. (D) जोगी महल
रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान के भीतर स्थित जोगी महल का निर्माण मूल रूप से जयपुर के महाराजा सवाई माधो सिंह प्रथम द्वारा एक ऐतिहासिक शिकारगाह के रूप में कराया गया था। यह महल उद्यान के मुख्य प्रवेश द्वार और पदम तलाव के किनारे स्थित है। वर्तमान में यह एक प्रमुख ऐतिहासिक और पारिस्थितिक स्थल है, जहाँ से पर्यटक आसपास के प्राकृतिक सौंदर्य और वन्यजीवों को देख सकते हैं। यह समृद्ध अतीत का प्रतीक है।

72. (A) शिकार विरोधी कार्यबल (Anti-Poaching Task Force)
राजस्थान में संगठित गिरोहों द्वारा होने वाले वन्यजीव अपराधों और शिकार की घटनाओं पर प्रभावी रोक लगाने के लिए राज्य वन विभाग द्वारा विशेष 'शिकार विरोधी कार्यबल' (एंटी-पोचिंग टास्क फोर्स) का गठन किया गया था। यह बल आधुनिक हथियारों और सूचना तंत्र से लैस होता है। इसका प्राथमिक कार्य संरक्षित वन क्षेत्रों की सीमाओं पर निरंतर निगरानी रखना, शिकारियों के नेटवर्क को ध्वस्त करना और वन्यजीवों के अंगों के अवैध व्यापार पर अंकुश लगाना है।

73. (C) स्थानीय आजीविका का समर्थन करने के लिए पारिस्थितिकी-विकास समितियों (Eco-Development Committees) का गठन करना।
अभयारण्यों के वन संसाधनों पर स्थानीय ग्रामीणों की निर्भरता को कम करने का सबसे प्रभावी तरीका पारिस्थितिकी-विकास समितियों (EDC) का गठन करना है। ये समितियाँ वन सीमाओं पर रहने वाले लोगों को वैकल्पिक आजीविका, स्वरोजगार, गैस कनेक्शन और पारिस्थितिक-पर्यटन में रोजगार के अवसर प्रदान करती हैं। जब स्थानीय लोगों को संरक्षण से लाभ मिलता है, तो वे जंगलों से लकड़ी काटने और चराई करने के बजाय वनों और जीवों की रक्षा में सहयोग करते हैं।

Click Here to Buy book on Amazon

आवास के वैज्ञानिक प्रबंधन और जल पुनर्बहाली पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

54. (A) केवल I और II
केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान का नाम इसके परिसर में स्थित एक प्राचीन शिव मंदिर 'केवलादेव' के नाम पर रखा गया है। प्रसिद्ध पक्षीविज्ञानी डॉ. सलीम अली ने इसके संरक्षण और इसे राष्ट्रीय उद्यान घोषित करवाने में अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। यह उद्यान पूरी तरह से प्राकृतिक नहीं है, बल्कि इसे अजान बांध के माध्यम से एक मानव निर्मित आर्द्रभूमि के रूप में विकसित किया गया था। अतः प्रथम दो कथन सत्य हैं।

55. (D) बफर या प्रवास गलियारे के रूप में कार्य करने वाला एक संरक्षित राज्य क्षेत्र।
वन्यजीव कानून के तहत 'संरक्षण रिजर्व' (कंजर्वेशन रिजर्व) ऐसा संरक्षित क्षेत्र होता है जो सरकारी स्वामित्व वाली भूमि पर स्थित होता है और अक्सर दो राष्ट्रीय उद्यानों या अभयारण्यों के बीच बफर या वन्यजीव प्रवास गलियारे के रूप में कार्य करता है। यह स्थानीय समुदायों के अधिकारों को बाधित किए बिना वनस्पतियों और जीवों को सुरक्षा प्रदान करता है। राजस्थान में बीसलपुर और जवाई बांध इसके प्रमुख और सफल उदाहरण माने जाते हैं।

56. (A) झालाना और आमागढ़
राजस्थान में तेंदुओं के संरक्षण और शहरी सीमाओं के पास बढ़ते मानव-तेंदुआ संघर्ष को रोकने के उद्देश्य से 'प्रोजेक्ट लेपर्ड' शुरु किया गया था। यह परियोजना विशेष रूप से जयपुर नगर के समीप स्थित झालाना और आमागढ़ वन क्षेत्रों में शुरु की गई थी। इन क्षेत्रों में तेंदुओं की घनी आबादी है। इस परियोजना के माध्यम से उनके आवास को सुरक्षित किया गया, बाड़बंदी की गई और पर्यटकों के लिए नियंत्रित सफारी सुविधाएं विकसित की गईं।

57. (C) माउंट आबू अभयारण्य
माउंट आबू वन्यजीव अभयारण्य राजस्थान में सर्वाधिक ऊँचाई पर स्थित अभयारण्य है। अत्यधिक ऊँचाई और अनुकूल जलवायु के कारण यहाँ राज्य के एकमात्र उप-उष्णकटिबंधीय सदाबहार वन पाए जाते हैं। यहाँ जंगली गुलाब और कई दुर्लभ जड़ी-बूटियाँ प्राकृतिक रूप से उगती हैं। यह अभयारण्य उच्च स्थानिकता को दर्शाता है, जहाँ 'डिक्लीप्टेरा आबूएनसिस' जैसी प्रजातियाँ केवल इसी क्षेत्र में पाई जाती हैं। इसलिए यह पारिस्थितिक दृष्टि से एक विशिष्ट संरक्षित क्षेत्र है।

58. (C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है
गुरु जंभेश्वर के सिद्धांतों का पालन करने वाला बिश्नोई समाज राजस्थान में वन्यजीवों की रक्षा के लिए तत्पर रहता है, जिससे पश्चिमी राजस्थान में शिकार पर रोक लगती है। हालाँकि, कृष्णमृग और चिंकारा के शिकार से जुड़े सभी मुकदमों की सुनवाई विशेष रूप से वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 के कड़े प्रावधानों के तहत ही की गई है, न कि केवल भारतीय दंड संहिता के तहत। अतः कथन I सही और कथन II असत्य है।

59. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
रामगढ़ विषधारी को टाइगर रिजर्व घोषित करते समय वहाँ निवासी बाघों की संख्या बहुत कम थी। इसके बावजूद इसे यह कानूनी दर्जा दिया गया क्योंकि यह रणथंभौर टाइगर रिजर्व और मुकुंदरा हिल्स टाइगर रिजर्व के बीच एक प्राकृतिक वन्यजीव गलियारे का निर्माण करता है। इस गलियारे के बिना बाघों का एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में सुरक्षित आवागमन असंभव था। अतः कारण पूरी तरह से कथन का औचित्य स्पष्ट करता है।

60. (B) पशुधन चराई और अवैध जलाऊ लकड़ी के संग्रह का अत्यधिक दबाव।
रणथंभौर टाइगर रिजर्व में बाघों और उनके आवास के समक्ष सबसे प्रमुख मानवजनित खतरा आसपास के गाँवों द्वारा किया जाने वाला अत्यधिक पशुधन चराई और अवैध जलाऊ लकड़ी का संग्रह है। इससे वनों का प्राकृतिक पुनरोत्पादन बाधित होता है और शाकाहारी जीवों के लिए भोजन घट जाता है। व्यावसायिक कटाई या खनन कोर क्षेत्र में प्रतिबंधित हैं, परंतु चराई और लकड़ी काटने का दबाव वनीय पारिस्थितिकी तंत्र को नुकसान पहुँचा रहा है।

61. (A) P-3, Q-1, R-2, S-4
राजस्थान की प्रमुख वन्यजीव प्रजातियाँ विशेष अभयारण्यों से जुड़ी हुई हैं। उड़न गिलहरी प्रतापगढ़ जिले के सीतामाता अभयारण्य में पाई जाती है। गोडावण पक्षी मुख्य रूप से जैसलमेर के राष्ट्रीय मरु उद्यान में निवास करता है। बाघों की प्रसिद्ध आबादी सवाई माधोपुर के रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान में स्थित है। कृष्णमृग यानी काले हिरणों की विशाल संख्या चूरू के ताल छापर अभयारण्य में सुरक्षित है। अतः इन प्रजातियों का सही मिलान विकल्प A है।

NODIA

62. (D) रोहिड़ा (टेकोमेला अंडुलेटा)
रोहिड़ा का वृक्ष, जिसका वैज्ञानिक नाम टेकोमेला अंडुलेटा है, राजस्थान का आधिकारिक 'राज्य पुष्प' है। इसे मरुस्थल का सागौन भी कहा जाता है। मार्च-अप्रैल के महीनों में इस वृक्ष पर सुंदर नारंगी और पीले रंग के फूल खिलते हैं, जो मरुस्थलीय परिदृश्य को आकर्षक बनाते हैं। इसके फूल और वृक्ष शुष्क तथा अर्ध-शुष्क पारिस्थितिकी तंत्र में मृदा अपरदन को रोकते हैं और स्थानीय वन्यजीवों के लिए आश्रय का कार्य करते हैं।

63. (A) यहाँ राजस्थान में सबसे अधिक वार्षिक वर्षा दर्ज की जाती है।
राष्ट्रीय मरु उद्यान जैसलमेर और बाड़मेर जिलों के अत्यंत शुष्क क्षेत्र में स्थित है, जहाँ राज्य की सबसे कम वार्षिक वर्षा होती है। इसलिए सर्वाधिक वर्षा दर्ज होने का कथन पूरी तरह से गलत है। यह उद्यान विशाल बालुका स्तूपों से ढका हुआ है और मरुस्थलीय पारिस्थितिकी का प्रतिनिधित्व करता है। यह स्पाइनी-टेल्ड छिपकली और गोडावण का प्रमुख प्राकृतिक आवास है। अतः पहली विशेषता को छोड़कर अन्य सभी लक्षण सही हैं।

22. (B) कैला देवी जैविक उद्यान
राजस्थान में पारिस्थितिक-पर्यटन को बढ़ावा देने और प्राकृतिक अभयारण्यों पर दबाव कम करने के उद्देश्य से कई जैविक उद्यान विकसित किए गए हैं। इनमें जयपुर का नाहरगढ़, जोधपुर का माचिया और कोटा का अभेड़ा जैविक उद्यान शामिल हैं। इसके विपरीत कैला देवी का क्षेत्र एक वन्यजीव अभयारण्य है, इसे जैविक उद्यान के रूप में विकसित नहीं किया गया है। इसलिए दिए गए विकल्पों में कैला देवी जैविक उद्यान शामिल नहीं है।

23. (D) मुख्य वन्यजीव प्रतिपालक (CWLW)
राजस्थान वन विभाग के प्रशासनिक ढांचे के अंतर्गत राज्य में वन्यजीवों के संरक्षण, प्रबंधन और नीतिगत निर्णयों के संचालन के लिए मुख्य वन्यजीव प्रतिपालक शीर्ष वैधानिक पद है। यह अधिकारी वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972 के तहत शक्तियों का प्रयोग करता है। राष्ट्रीय उद्यानों, अभयारण्यों के प्रशासन और वन्यजीवों की सुरक्षा की निगरानी इसी अधिकारी के प्रत्यक्ष निर्देशन में होती है। अतः यह पद संरक्षण प्रबंधन का मुख्य केंद्र है।

24. (A) 2, 1, 3, 4
भारत में पर्यावरण एवं वन्यजीव संरक्षण से जुड़े कानूनों और परियोजनाओं का कालानुक्रमिक क्रम उनके पारित होने के वर्ष पर निर्भर करता है। सर्वप्रथम वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम वर्ष 1972 में लागू हुआ। इसके पश्चात प्रोजेक्ट टाइगर की शुरुआत वर्ष 1973 में की गई। पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम वर्ष 1986 में अधिनियमित किया गया था, जबकि राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण का वैधानिक गठन वर्ष 2006 में हुआ था। अतः सही क्रम 2, 1, 3, 4 है।

25. (C) खींचन गांव की पक्षी चुग्गा (दाना) पहल
जोधपुर जिले का खींचन गांव प्रवासी पक्षी डैमोइसेल क्रेन यानी कुरंजा के संरक्षण के लिए विश्व भर में प्रसिद्ध है। यहाँ के स्थानीय ग्रामीणों द्वारा चलाई जाने वाली पक्षी चुग्गा पहल के तहत इन पक्षियों को नियमित रूप से दाना और पानी उपलब्ध कराया जाता है। यह प्रयास स्थानीय सामुदायिक संरक्षण का एक उत्कृष्ट मॉडल प्रस्तुत करता है। इस पहल की वजह से प्रतिवर्ष हज़ारों की संख्या में कुरंजा पक्षी यहाँ प्रवास करते हैं।

26. (A) राज्य पक्षी - पावो क्रिस्टेटस
राजस्थान के राज्य प्रतीकों के वैज्ञानिक नाम निर्दिष्ट हैं। राज्य पक्षी गोडावण का वैज्ञानिक नाम आर्डियोटिस नाइग्रिसेप्स है, जबकि 'पावो क्रिस्टेटस' भारत के राष्ट्रीय पक्षी मोर का वैज्ञानिक नाम है। अन्य सभी विकल्प संगत हैं; जैसे राज्य वृक्ष प्रोसॉपिस सिनेगेरिया (खेजड़ी), राज्य पुष्प टेकोमेला अंडुलेटा (रोहिड़ा) और राज्य वन्यजीव गज़ेला बेनेटी (चिंकारा) हैं। अतः राज्य पक्षी और पावो क्रिस्टेटस का यह युग्म असंगत है।

27. (D) चंबल नदी मुकुंदरा हिल्स टाइगर रिजर्व से होकर बहती है।
चंबल नदी राजस्थान के मुकुंदरा हिल्स टाइगर रिजर्व के मध्य से होकर प्रवाहित होती है और इस क्षेत्र की जलीय तथा वनीय जैव विविधता को जल प्रदान करती है। यह नदी इस टाइगर रिजर्व के पारिस्थितिकी तंत्र के लिए एक जीवनरेखा का कार्य करती है। अन्य नदियाँ मरु उद्यान या केवलादेव के प्राथमिक जल स्रोत नहीं हैं। इसलिए मुकुंदरा हिल्स से चंबल नदी के प्रवाहित होने का कथन भौगोलिक दृष्टि से सत्य है।

28. (B) रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान
जोगी महल और पदम तलाव प्रसिद्ध ऐतिहासिक और पारिस्थितिक स्थल हैं, जो रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान के परिसर में स्थित हैं। जोगी महल एक प्राचीन शिकारगाह और विश्राम गृह है, जबकि पदम तलाव उद्यान की सबसे बड़ी झील है। यह झील जल पक्षियों और बाघों के लिए एक प्रमुख जल स्रोत है। इस झील के किनारे वन्यजीवों की आवाजाही देखी जाती है, जो इस राष्ट्रीय उद्यान की ऐतिहासिक धरोहर को बढ़ाती है।

29. (A) केवल I और II
सरिस्का टाइगर रिजर्व में ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण कांकरणवाड़ी का किला स्थित है। इस रिजर्व को वर्ष 1978 में भारत के प्रोजेक्ट टाइगर के अंतर्गत टाइगर रिजर्व घोषित किया गया था। यह रिजर्व अलवर जिले में अरावली की पहाड़ियों में स्थित है, न कि पश्चिमी राजस्थान के मरुस्थलीय क्षेत्र में। इसलिए पहला और दूसरा कथन पूर्णतः सत्य हैं, जबकि तीसरा कथन भौगोलिक स्थिति के संदर्भ में गलत होने के कारण अमान्य है।

30. (D) ST-1
वर्ष 2008 में जब सरिस्का टाइगर रिजर्व में बाघों की समाप्त हो चुकी आबादी को पुनर्जीवित करने के लिए रणथंभौर से एक नर बाघ को स्थानांतरित किया गया, तो उस बाघ को आधिकारिक रूप से 'ST-1' का संकेतांक प्रदान किया गया था। यह भारत में एक टाइगर रिजर्व से दूसरे टाइगर रिजर्व में बाघ के वैज्ञानिक स्थानांतरण का पहला सफल प्रयोग था, जिसने वन्यजीव संरक्षण के क्षेत्र में एक नया इतिहास रचा।

31. (B) 1981
भरतपुर में स्थित केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान अंतर्राष्ट्रीय महत्व की आर्द्रभूमियों के संरक्षण हेतु रामसर सम्मेलन के तहत नामांकित एक प्रमुख स्थल है। इसे आधिकारिक तौर पर वर्ष 1981 में रामसर स्थल घोषित किया गया था। यह आर्द्रभूमि हज़ारों विदेशी और देशी पक्षियों के लिए एक महत्वपूर्ण केंद्र है। रामसर स्थल का दर्जा मिलने से इसके जलीय पारिस्थितिकी तंत्र और जैव विविधता के संरक्षण को वैश्विक स्तर पर मान्यता प्राप्त हुई।

32. (B) उद्यान के भीतर स्थित भरतपुर किले के कारण इसे एक मिश्रित (mixed) स्थल के रूप में सूचीबद्ध किया गया था।
केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान को वर्ष 1985 में यूनेस्को द्वारा केवल प्राकृतिक श्रेणी के अंतर्गत विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया था, न कि किसी किले के कारण मिश्रित श्रेणी में। यह उद्यान अपनी अद्वितीय जलीय जैव विविधता और पक्षी आबादी के लिए वैश्विक पहचान रखता है। यह वर्तमान में राजस्थान का एकमात्र प्राकृतिक यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल है। इसलिए इसे भरतपुर किले के आधार पर मिश्रित बताना असत्य है।

Downloaded from www.pdf.tube

74. (A) जोधपुर
माचिया जैविक उद्यान राजस्थान के जोधपुर जिले में कायलाना झील के पास स्थित है। इस उद्यान की स्थापना पर-स्थाने (ex-situ) संरक्षण, वन्यजीव पुनरुद्धार और जन-शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से की गई थी। यहाँ मरुस्थलीय जीवों जैसे मरुस्थलीय लोमड़ी, कृष्णमृग, चिंकारा और विभिन्न प्रकार के पक्षियों तथा सरीसृपों को उनके प्राकृतिक वातावरण जैसे विशाल बाड़ों में रखा गया है। यह पर्यटकों के लिए एक प्रमुख आकर्षण केंद्र है।

75. (D) मुकुंदरा हिल्स को टाइगर रिजर्व घोषित किया गया — 2013
दिए गए पर्यावरण संबंधी मील के पत्थरों में मुकुंदरा हिल्स को वर्ष 2013 में राजस्थान का तीसरा टाइगर रिजर्व घोषित करने का युग्म पूर्णतः सही है। रणथंभौर को 1980 में राष्ट्रीय उद्यान बनाया गया था और केवलादेव को 1985 में यूनेस्को विश्व धरोहर का दर्जा मिला था। प्रोजेक्ट ग्रेट इंडियन बस्टर्ड 2013 में शुरू हुआ था। अतः मुकुंदरा हिल्स को 2013 में टाइगर रिजर्व बनाए जाने का कथन ही तिथियों के अनुसार सत्य है।

76. (B) अंतरराष्ट्रीय पालतू जीवों के व्यापार के लिए जनजातीय शिकार।
राष्ट्रीय मरु उद्यान में गोडावण पक्षी की संख्या घटने के प्रमुख कारणों में कृषि विस्तार से घास के मैदानों का विनाश, पारेषण लाइनों से टकराना और आवारा कुत्तों द्वारा अंडों को नष्ट करना शामिल है। अंतरराष्ट्रीय पालतू जीवों के व्यापार के लिए जनजातीय शिकार का कोई प्रामाणिक साक्ष्य नहीं है और यह गोडावण के पतन का स्वीकृत कारण नहीं है। अतः इस कारण को छोड़कर शेष सभी परिस्थितियाँ गोडावण के लिए खतरा बनी हुई हैं।

77. (C) यह गैर-वन उपयोग के लिए परिवर्तित वन भूमि की भरपाई के लिए वनीकरण का वित्तपोषण करता है।
कैम्पा (CAMPA) यानी प्रतिपूरक वनीकरण कोष प्रबंधन और योजना प्राधिकरण का प्राथमिक उद्देश्य गैर-वन उपयोगों जैसे खनन या बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के लिए परिवर्तित की गई वन भूमि की भरपाई करना है। इसके तहत विकास एजेंसियों से प्राप्त धनराशि का उपयोग किसी अन्य स्थान पर नए वन लगाने, मौजूदा वनों के संरक्षण, वन्यजीव आवास सुधार और जैव विविधता को बढ़ावा देने के लिए किया जाता है। यह वन विभाग का एक वित्तीय तंत्र है।

78. (D) स्थानांतरित बाघों से जंगली बाघ के शावकों का सफल प्रजनन और जन्म।
वर्ष 2008 में सरिस्का टाइगर रिजर्व में बाघों की विलुप्त आबादी को पुनर्जीवित करने के लिए रणथंभौर से बाघ स्थानांतरित किए गए थे। सरिस्का के लिए सबसे बड़ी सफलता तब मिली जब इन स्थानांतरित बाघों ने नए वातावरण को अपनाते हुए सफलतापूर्वक प्रजनन किया और नए शावकों को जन्म दिया। इस घटना ने साबित कर दिया कि बाघ स्थानांतरण कार्यक्रम सफल रहा है, जिससे सरिस्का में बाघों का वंश आगे बढ़ सका।

79. (A) राष्ट्रीय चंबल अभयारण्य
राष्ट्रीय चंबल अभयारण्य अपनी अनूठी भौगोलिक संरचना के लिए जाना जाता है, जहाँ चंबल नदी गहरे खड्डों (गॉर्ज) और बीहड़ों से होकर बहती है। यह अभयारण्य मीठे पानी के मगरमच्छों, घड़ियालों और संकटग्रस्त गंगा डॉल्फ़िन का एक समृद्ध प्राकृतिक शरणस्थल है। नदी के किनारे बने खड्ड और शांत गहरे पानी के क्षेत्र इन जलीय जीवों के पनपने और प्रजनन के लिए सर्वथा अनुकूल वातावरण प्रदान करते हैं। यह एक प्रमुख नदीय अभयारण्य है।

80. (B) राजस्थान के मुख्यमंत्री
राज्य वन्यजीव बोर्ड (SBWL) राज्य स्तर पर वन्यजीवों के संरक्षण, अभयारण्यों के प्रबंधन और पर्यावरण संबंधी नीतियों के निर्धारण के लिए सर्वोच्च वैधानिक सलाहकार संस्था है। वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 के प्रावधानों के अनुसार, संबंधित राज्य के मुख्यमंत्री इस बोर्ड के पदेन अध्यक्ष होते हैं। मुख्यमंत्री की अध्यक्षता बोर्ड के निर्णयों को प्रशासनिक मजबूती प्रदान करती है, जिससे राज्य में संरक्षण योजनाओं का त्वरित और प्रभावी कार्यान्वयन संभव होता है।

81. (A) केवल I और II
पाली जिले में स्थित जवाई बांध क्षेत्र को आधिकारिक रूप से जवाई बांध लेपर्ड कंजर्वेशन रिजर्व घोषित किया गया है। यह क्षेत्र पहाड़ियों में रहने वाले तेंदुओं और स्थानीय रबारी पशुपालक समुदाय के बीच बिना किसी हिंसक टकराव के शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के लिए विश्व भर में प्रसिद्ध है। हालाँकि, यह कुंभलगढ़ राष्ट्रीय उद्यान का कोर क्षेत्र नहीं है। अतः पहला और दूसरा कथन पूरी तरह सत्य हैं, जबकि तीसरा कथन अमान्य है।

82. (A) बचाव (रेस्क्यू), पर-स्थाने (ex-situ) संरक्षण और जन शिक्षा का समर्थन करना।
राजस्थान में शहरी केंद्रों के समीप जैविक उद्यान (जैसे सज्जनगढ़ जैविक उद्यान) स्थापित करने का मुख्य पारिस्थितिक तर्क घायल या अनाथ वन्यजीवों का बचाव करना, पर-स्थाने (ex-situ) संरक्षण को बढ़ावा देना और आम जनता को जैव विविधता के प्रति जागरूक करना है। ये उद्यान वन्यजीवों को प्राकृतिक वातावरण जैसा बाड़ा प्रदान करते हैं, जहाँ वैज्ञानिक अनुसंधान और जन-शिक्षा का कार्य सुचारु रूप से होता है। यह प्राकृतिक आवासों पर दबाव कम करता है।

83. (C) राष्ट्रीय मरु उद्यान
अरावली पर्वतमाला राजस्थान को उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम की ओर विभाजित करती है। कुंभलगढ़, टॉडगढ़ रावली और माउंट आबू अभयारण्य पूरी तरह से अरावली पर्वत श्रृंखला की पहाड़ियों के भीतर स्थित हैं। इसके विपरीत राष्ट्रीय मरु उद्यान अरावली पर्वतमाला से बहुत दूर पश्चिमी मरुस्थलीय मैदानी भाग में जैसलमेर और बाड़मेर जिलों में स्थित है। अतः राष्ट्रीय मरु उद्यान अरावली पर्वतमाला के अंतर्गत या उसके साथ स्थित नहीं है।

NODIA

84. (C) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है
वन्यजीव संरक्षण अधिनियम के अनुसार प्रत्येक टाइगर रिजर्व में एक 'क्रिटिकल टाइगर हैबिटेट' (कोर क्षेत्र) और एक बाहरी 'बफर क्षेत्र' होना अनिवार्य है। कोर क्षेत्र में मानवीय हस्तक्षेप और व्यावसायिक गतिविधियाँ पूरी तरह प्रतिबंधित होती हैं। हालाँकि, बफर क्षेत्र में पारिस्थितिक-पर्यटन, विनियमित कृषि और स्थानीय समुदायों का निवास सीमित नियमों के साथ स्वीकृत होता है। इसलिए कथन I पूरी तरह सत्य है, जबकि बफर में भी पूर्ण प्रतिबंध बताने वाला कथन II असत्य है।

85. (C) एक बाड़युक्त, परभक्षी-रोधी (शिकारियों से सुरक्षित) क्षेत्र जो जंगली प्रजनन आबादी की रक्षा करता है।
राजस्थान के वन विभाग द्वारा राष्ट्रीय मरु उद्यान जैसे क्षेत्रों में निर्मित "एन्क्लोजर" का तात्पर्य एक विशेष रूप से बाड़युक्त, परभक्षी-रोधी सुरक्षित क्षेत्र से है। इस बाड़े के भीतर कुत्ते, लोमड़ी या सियार प्रवेश नहीं कर पाते, जिससे गोडावण जैसे संकटग्रस्त पक्षियों के अंडों और नवजात चूज़ों को परभक्षियों से पूर्ण सुरक्षा मिलती है। यह एन्क्लोजर संकटग्रस्त प्रजातियों की प्राकृतिक प्रजनन दर बढ़ाने और उनकी सुरक्षित उत्तरजीविता सुनिश्चित करने का एक प्रबंधकीय उपाय है।

86. (B) कुंभलगढ़ अभयारण्य
कुंभलगढ़ वन्यजीव अभयारण्य अरावली की पहाड़ियों के एक उच्च पठारी भाग पर स्थित है। यह अभयारण्य ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण कुंभलगढ़ किले के आसपास के सघन जंगलों को आच्छादित करता है। यह दुर्ग मेवाड़ के महान योद्धा महाराणा प्रताप की जन्मस्थली के रूप में प्रसिद्ध है। इस अभयारण्य के प्राकृतिक पर्णपाती वन न केवल ऐतिहासिक किले को सुरक्षा और सौंदर्य प्रदान करते हैं, बल्कि भेड़ियों और तेंदुओं जैसे जीवों के लिए सुरक्षित घर हैं।

87. (D) केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान
'पाइथन पॉइंट' भरतपुर के प्रसिद्ध केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान के भीतर स्थित एक अत्यंत लोकप्रिय स्थल है। सर्दियों के महीनों में यहाँ विशालकाय भारतीय रॉक पाइथन (अजगर) अपने बिलों से बाहर निकलकर घास और चट्टानों पर धूप सेंकते हुए दिखाई देते हैं। इस उद्यान में आने वाले पक्षी प्रेमी और पर्यटक इस स्थल पर बड़ी संख्या में अजगरों को प्राकृतिक आवास में देखने आते हैं। यह इस आर्द्रभूमि उद्यान के प्रमुख आकर्षणों में से एक है।

88. (D) I, II, III और IV
रामगढ़ विषधारी टाइगर रिजर्व भारत का 52वां अधिसूचित टाइगर रिजर्व था, जो मुख्य रूप से बूंदी जिले में स्थित है। इस रिजर्व के जंगलों से होकर चंबल की सहायक नदी मेज नदी प्रवाहित होती है, जो यहाँ के जीवों को जल उपलब्ध कराती है। यह रिजर्व उत्तर-पूर्व में रणथंभौर को दक्षिण में मुकुंदरा हिल्स से जोड़ने वाले एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्राकृतिक गलियारे के रूप में कार्य करता है। अतः दिए गए सभी चारों कथन पूर्णतः सत्य हैं।

89. (C) जमवारामगढ़ अभयारण्य
जमवारामगढ़ वन्यजीव अभयारण्य भौगोलिक रूप से राजस्थान की राजधानी जयपुर के सबसे निकट स्थित अभयारण्य है। ऐतिहासिक काल में यह क्षेत्र जयपुर के कछवाहा पूर्व महाराजाओं का एक प्रमुख और सुरक्षित शिकारगाह हुआ करता था। यह अभयारण्य अरावली की पहाड़ियों से घिरा हुआ है और यहाँ जमवारामगढ़ बांध भी स्थित है। यह क्षेत्र विभिन्न प्रकार के वन्यजीवों, वनस्पतियों और पक्षी प्रजातियों के लिए एक महत्वपूर्ण प्राकृतिक आवास प्रदान करता है।

90. (A) आक्रामक पौधों को हटाकर और देशी घास को पुनर्जीवित करके आवास का पुनर्स्थापन (Habitat restoration)।
किसी बफर क्षेत्र में शाकाहारी जीवों यानी शिकार घनत्व को प्राकृतिक रूप से बढ़ाने के लिए सबसे वैज्ञानिक और स्थायी उपाय आवास का पुनर्स्थापन है। इसके अंतर्गत आक्रामक अवांछित पौधों जैसे विलायती बबूल को हटाकर स्थानीय पौष्टिक घासों और वनस्पतियों को पुनर्जीवित किया जाता है। जब प्राकृतिक भोजन और पानी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होगा, तो शाकाहारी जीवों की संख्या स्वयं बढ़ेगी, जिससे मांसाहारियों के लिए एक मजबूत और समृद्ध शिकार आधार तैयार हो सकेगा।

www.nodia.in

Click Here to Buy book on Flipkart

अध्याय 16
राजस्थान की मिट्टी

1. राजस्थान राज्य में किस प्रकार की मृदा सबसे बड़े भौगोलिक क्षेत्र को आच्छादित करती है?
(A) जलोढ़ मृदा
(B) मरुस्थलीय (बलुई) मृदा
(C) काली (रेगुर) मृदा
(D) लाल और पीली मृदा

2. केंद्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान (काजरी - CAZRI), जो मृदा स्थिरीकरण और मरुस्थलीकरण के अध्ययन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, की स्थापना किस वर्ष और किस शहर में हुई थी?
(A) 1952, बीकानेर
(B) 1959, जोधपुर
(C) 1965, जयपुर
(D) 1972, जैसलमेर

3. इंदिरा गांधी नहर परियोजना के कमान क्षेत्रों में प्रायः देखी जाने वाली 'सेम' की समस्या का प्राथमिक कारण क्या है?
(A) नहर टूट जाने से होने वाला तीव्र अवनालिका अपरदन
(B) ऊपरी मृदा का तीव्र पवन वेग द्वारा अपरदन
(C) जलभराव और भूजल स्तर का ऊपर उठना
(D) जैविक खाद का अत्यधिक उपयोग

4. राजस्थान के मृदा विज्ञान (Pedology) के संदर्भ में, 'रेगुर' शब्द का प्रयोग पारंपरिक रुप से किस प्रकार की मृदा के वर्णन के लिए किया जाता है?
(A) लूनी बेसिन की अत्यधिक लवणीय मृदा
(B) दक्षिणी जनजातीय क्षेत्र की लाल लोमी मृदा
(C) थार मरुस्थल के पवन-निर्मित बालुका स्तूप
(D) हाड़ौती क्षेत्र में पाई जाने वाली काली मृदा

5. सूची I में दिए गए मृदा के प्रकारों को सूची II में राजस्थान में उनके प्रमुख उपस्थिति क्षेत्रों के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I : (मृदा का प्रकार)
P. जलोढ़ मृदा
Q. काली मृदा
R. मरुस्थलीय मृदा
S. लाल लोमी मृदा
सूची II : (प्रमुख उपस्थिति क्षेत्र)
1. पश्चिमी राजस्थान
2. दक्षिणी राजस्थान
3. पूर्वी मैदान
4. दक्षिण-पूर्वी पठार
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-4, Q-3, R-1, S-2
(C) P-3, Q-4, R-2, S-1
(D) P-1, Q-2, R-3, S-4

6. भारत के प्रधानमंत्री ने फरवरी 2015 में राजस्थान के किस स्थान से राष्ट्रव्यापी मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना का शुभारंभ किया था?
(A) पोकरण, जैसलमेर
(B) सूरतगढ़, श्रीगंगानगर
(C) नोखा, बीकानेर
(D) फलोदी, जोधपुर

7. निम्नलिखित में से किस जिले की मुख्य विशेषता लाल और पीली मृदा की उपस्थिति नहीं है?
(A) सवाई माधोपुर
(B) भीलवाड़ा
(C) अजमेर
(D) जैसलमेर

8. हाड़ौती क्षेत्र की मध्यम काली मृदा को बलुई मृदा की तुलना में आमतौर पर कम बार सिंचाई की आवश्यकता होती है, इसका मुख्य कारण क्या है?
(A) इनमें मृत्तिका (क्ले) की मात्रा अधिक होती है, जो इन्हें उत्कृष्ट नमी धारण क्षमता प्रदान करती है।
(B) ये निचले नदी बेसिनों में स्थित हैं जहाँ प्रायः सदावाहिनी नदियों से बाढ़ आती है।
(C) इनमें अत्यधिक मृदा पारगम्यता होती है, जिससे जल शीघ्रता से पौधों की जड़ों तक पहुँच जाता है।
(D) इनमें उच्च प्राकृतिक मृदा लवणता होती है, जो पौधों की वाष्पोत्सर्जन दर को कम करती है।

9. बांसवाड़ा जिले का एक किसान अपनी फसल चक्र की योजना बना रहा है। इस जिले में प्राकृतिक रूप से पाई जाने वाली लाल लोमी मृदा को देखते हुए, निम्नलिखित में से कौन सी फसल पारंपरिक रुप से यहाँ की कृषि के लिए सबसे अधिक उपयुक्त है?
(A) सरसों
(B) बाजरा
(C) मक्का
(D) ईसबगोल

10. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।

Downloaded from www.pdf.tube

(C) यूरिया और म्यूरिएट ऑफ पोटाश उर्वरकों का भारी रासायनिक प्रयोग
(D) असंसाधित सतही नहरी जल का उपयोग करके निरंतर प्लावन सिंचाई करना

50. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A) : पूर्वी राजस्थान की जलोढ़ मृदा अत्यधिक उत्पादक है और गहन कृषि का समर्थन करती है।
कारण (R) : इनमें संतुलित दोमट बनावट होती है, हानिकारक लवणों की कमी होती है, और ये नदीय क्रिया द्वारा समय-समय पर नवीनीकृत होती रहती हैं।
(A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) अभिकथन (A) सही है परंतु कारण (R) गलत है।
(D) अभिकथन (A) गलत है परंतु कारण (R) सही है।

51. अंतरिक्ष उपयोग केंद्र (SAC) और काजरी (CAZRI) के आधिकारिक अनुमानों के अनुसार, राजस्थान के कुल भौगोलिक क्षेत्र का लगभग कितना प्रतिशत भाग मरुस्थलीकरण और भूमि निम्नीकरण से प्रभावित है?
(A) 20% से कम
(B) लगभग 35%
(C) लगभग 45%
(D) 60% से अधिक

52. पश्चिम से पूर्व की ओर जिलों के उस सही भौगोलिक क्रम का चयन कीजिए जो राजस्थान में मरुस्थलीय मृदा से जलोढ़ मृदा के संक्रमण (transition) को दर्शाता है।
(A) जैसलमेर → जोधपुर → जयपुर → भरतपुर
(B) भरतपुर → जयपुर → जोधपुर → जैसलमेर
(C) जैसलमेर → भरतपुर → जयपुर → जोधपुर
(D) जोधपुर → जैसलमेर → भरतपुर → जयपुर

53. राजस्थान के लिए मानचित्रित USDA मृदा वर्गीकरण के संदर्भ में, 'एन्टीसोल्स' (Entisols) मुख्य रूप से किस पारंपरिक श्रेणी के समानार्थी हैं?
(A) स्पष्ट रूप से विकसित परिच्छेदिका (profile) संस्तरों वाली परिपक्व जलोढ़ मृदा
(B) बेसाल्ट के अपक्षय से निर्मित गहरी काली मृत्तिका युक्त मृदा
(C) परिच्छेदिका विकास से रहित नवीन बलुई मरुस्थलीय मृदा
(D) पहाड़ी ढालों पर पाई जाने वाली अत्यधिक प्रक्षालित लाल लोमी मृदा

54. राज्य सरकार का प्रमुख जलविभाजक (वाटरशेड) कार्यक्रम, "मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन अभियान" (MJSA), अप्रत्यक्ष लेकिन महत्वपूर्ण रूप से मृदा स्वास्थ्य को मुख्य रूप से किस प्रकार लाभ पहुँचाता है?
(A) स्थानीय किसानों के लिए रासायनिक नाइट्रोजन उर्वरकों और संश्लेषित कीटनाशकों पर अनुदान देकर
(B) नमी बनाए रखने और मृदा अपरदन को रोकने के लिए जल संचयन संरचनाओं का निर्माण करके
(C) सभी जिलों में उच्च उपज देने वाले सूखा-प्रतिरोधी बीजों का निःशुल्क वितरण करके
(D) सीमांत कृषि भूमियों को आधिकारिक तौर पर अधिसूचित राज्य वन आरक्षित क्षेत्रों में परिवर्तित करके

NODIA

55. राजस्थान की लाल लोमी मृदा के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. ये मुख्य रूप से डूंगरपुर और बांसवाड़ा जिलों में पाई जाती हैं।
II. ये प्राचीन क्रिस्टलीय और कायांतरित चट्टानों के अपक्षय से निर्मित हुई हैं।
III. ये अत्यधिक क्षारीय pH द्वारा पहचानी जाती हैं, जो इन्हें कृषि के लिए अनुपयुक्त बनाती हैं।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और III
(B) केवल II और III
(C) केवल I और II
(D) I, II और III

56. राजस्थान में धूसर-भूरी (सिरोजम) मृदा के संबंध में असत्य कथन की पहचान कीजिए।
(A) ये मुख्य रूप से दक्षिणी राजस्थान के मेवाड़ क्षेत्र में पाई जाती हैं।
(B) ये लूनी बेसिन के संक्रमणकालीन मैदानों में व्यापक रूप से पाई जाती हैं।
(C) इनकी उपमृदा में एक कठोर कंकड़ परत की उपस्थिति सामान्य है।
(D) पर्याप्त सिंचाई के साथ, ये सरसों और गेहूं की अच्छी उपज देती हैं।

57. राजस्थान की बलुई मृदा के फसल चक्र में फलीदार फसलों (जैसे मूंग या मोठ) को शामिल करने की मुख्य कृषि-वैज्ञानिक भूमिका क्या है?
(A) जलभराव को रोकने के लिए उपमृदा के जल भंडार को समाप्त करना
(B) अनचाही खरपतवार वृद्धि को रोकने के लिए ऊपरी मृदा की लवणता को बढ़ाना
(C) सहजीवी रूप से वायुमंडलीय नाइट्रोजन का स्थिरीकरण करना और उर्वरता में सुधार करना
(D) जड़ों के प्रवेश के माध्यम से कठोर कैल्सिक उपमृदा परतों को यांत्रिक रूप से तोड़ना

58. उच्च पवन अपरदन की आशंका वाले राजस्थान के शुष्क क्षेत्रों में, कृषि विशेषज्ञ किसानों को कटाई के बाद खेत में फसल की नरई (stubble) छोड़ने की सलाह देते हैं। इसका वैज्ञानिक आधार क्या है?
(A) यह मृदा की सतह पर वायु के वेग को कम करती है और मृदा के कणों को बांधती है।

(A) केवल I, II और III
(B) केवल I, II और IV
(C) केवल II, III और IV
(D) केवल I, III और IV

21. USDA मृदा वर्गीकरण के अनुसार राजस्थान का कौन सा जिला मुख्य रूप से 'अल्फीसोल्स' (Alfisols) से आच्छादित है?
(A) जैसलमेर
(B) बीकानेर
(C) जयपुर
(D) डूंगरपुर

22. पश्चिमी राजस्थान में मरुस्थलीकरण और मृदा निम्नीकरण मुख्य रूप से किन कारकों के संयोजन से संचालित होते हैं?
(A) अत्यधिक वनीकरण परियोजनाएं और कम पशुधन चराई दबाव
(B) अतिचारण, वनोन्मूलन और पवन अपरदन
(C) बार-बार नदी बाढ़ के साथ भारी रासायनिक उर्वरकीकरण
(D) भूमि का विवर्तनिक धंसाव और अचानक समुद्री अतिक्रमण

23. हनुमानगढ़ और श्रीगंगानगर जिलों के घग्गर मैदानों में किस प्रकार की मृदा की प्रधानता है?
(A) मोंटमोराइलोनाइट खनिजों से समृद्ध गहरी काली मृत्तिका युक्त मृदा
(B) लौह-समृद्ध बेसाल्ट चट्टानों से निर्मित लाल लेटेराइट मृदा
(C) मुख्य रूप से चट्टानी ढलानों पर पाई जाने वाली उथली कंकालीय मृदा
(D) लवणीय चकत्तों वाली भूरी जलोढ़ मृदा

24. राजस्थान के गहरी काली (रेगुर) मृदा क्षेत्र में सम्मिलित न होने वाले जिले की पहचान कीजिए।
(A) बाड़मेर
(B) कोटा
(C) बारां
(D) झालावाड़

25. सूची I में दिए गए USDA मृदा गणों (Soil Orders) को सूची II में राजस्थान के उस प्रतिनिधि जिले के साथ सुमेलित कीजिए जहाँ वे प्रमुखता से पाए जाते हैं।
सूची I : (USDA मृदा गण)
P. अरिडिसोल्स
Q. इनसेप्टिसोल्स
R. अल्फीसोल्स
S. वर्टिसोल्स
सूची II : (प्रतिनिधि जिला)
1. बारां
2. बीकानेर
3. भरतपुर
4. उदयपुर

(A) P-2, Q-4, R-3, S-1
(B) P-1, Q-3, R-4, S-2
(C) P-2, Q-3, R-4, S-1
(D) P-4, Q-2, R-1, S-3

26. राजस्थान के पूर्वी मैदानों के संदर्भ में, 'खादर' से क्या तात्पर्य है?
(A) आवधिक बाढ़ द्वारा निक्षेपित नवीन जलोढ़ मृदा
(B) मोटे चूनेदार कंकड़ ग्रन्थिकाओं वाली पुरानी जलोढ़ मृदा
(C) अत्यधिक क्षारीय और अनुपजाऊ बंजर भूमि के बड़े क्षेत्र
(D) मुख्य रूप से गिरिपाद (Piedmont) क्षेत्रों में पाई जाने वाली लाल और पीली मृदा

27. पश्चिमी राजस्थान के शुष्क क्षेत्रों में बालुका स्तूप स्थिरीकरण के लिए निम्नलिखित में से कौन सा यांत्रिक या वानस्पतिक उपाय सबसे प्रभावी माना जाता है?
(A) पहाड़ी की तीव्र ढालों पर समोच्च खाई बनाना
(B) टीलों के साथ कंक्रीट की बड़ी रक्षक दीवारों का निर्माण करना
(C) भीषण ग्रीष्मकालीन महीनों के दौरान ट्रैक्टर से निरंतर गहरी जुताई करना
(D) रक्षक मेखला (आश्रय-पट्टियाँ) और वात-रोधक (वायुरोधक) लगाना

28. लूनी बेसिन में मृदा लवणता इसके निचले हिस्सों (जैसे बालोतरा और उससे आगे) की ओर बढ़ती जाती है, इसका मुख्य कारण क्या है?
(A) स्थानीय किसान केवल जल-निकासी रहित नहर जल का उपयोग करते हैं, जिससे लवण का तीव्र संचयन होता है।
(B) उच्च वाष्पीकरण के कारण केशिका क्रिया उपमृदा के लवणों को सतह पर लाती है।
(C) यह क्षेत्र राजस्थान में सबसे अधिक वार्षिक वर्षा प्राप्त करता है, जिससे तीव्र खनिज प्रक्षालन होता है।
(D) स्थानीय किसानों द्वारा जैविक खाद का अत्यधिक प्रयोग निरंतर किया जाता है।

29. राजस्थान में विभिन्न सरकारी मृदा स्वास्थ्य सुधार कार्यक्रमों के तहत, किसानों को रियायती दरों पर सामग्री प्रदान की जाती है। मृदा में जस्ते (जिंक) की कमी को दूर करने के लिए मुख्य रूप से किसका वितरण किया जाता है?
(A) म्यूरिएट ऑफ पोटाश
(B) डाई-अमोनियम फॉस्फेट (DAP)
(C) जिंक सल्फेट
(D) कैल्शियम कार्बोनेट

30. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A) : राजस्थान के दक्षिण-पूर्वी जिले सोयाबीन और कपास की खेती के लिए अत्यधिक उपयुक्त हैं।
कारण (R) : इन जिलों में मध्यम से गहरी काली मृदा पाई जाती है, जिसमें जल धारण क्षमता अधिक होती है और यह कैल्शियम से समृद्ध होती है।

Click Here to Buy book on Amazon

अभिकथन (A) : पश्चिमी राजस्थान में पवन अपरदन, मृदा अपरदन का सबसे प्रमुख और विनाशकारी रुप है।

कारण (R) : पश्चिमी राजस्थान में शुष्क जलवायु परिस्थितियाँ, विरल वनस्पति आवरण और तीव्र पवन वेग विद्यमान हैं।

(A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) अभिकथन (A) सही है परंतु कारण (R) गलत है।
(D) अभिकथन (A) गलत है परंतु कारण (R) सही है।

11. लिथोसॉल्स जो उथली गहराई और पथरीली बनावट के लिए जानी जाती हैं, मुख्य रूप से राजस्थान के किस भौगोलिक प्रदेश में पाई जाती हैं?
(A) घग्गर नदी के मैदान
(B) चम्बल घाटी के खड्ड (बीहड़)
(C) लूनी नदी बेसिन
(D) अरावली पहाड़ियाँ

12. अमेरिकी कृषि विभाग (USDA) के मृदा वर्गीकरण के व्यापक वर्गीकरण के तहत, 'अरिडिसोल्स' (Aridisols) मुख्य रूप से राजस्थान के किस जलवायु क्षेत्र से संबंधित हैं?
(A) आर्द्र दक्षिणी क्षेत्र
(B) शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्र
(C) उप-आर्द्र पूर्वी मैदान
(D) अति-आर्द्र दक्षिण-पूर्वी पठार

13. राजस्थान में लागू USDA मृदा वर्गीकरण के अनुसार, किस पारंपरिक मृदा प्रकार को मुख्य रूप से 'वर्टिसोल्स' (Vertisols) के रूप में वर्गीकृत किया गया है?
(A) भूरी बलुई मृदा
(B) जलोढ़ मृदा
(C) काली मृदा
(D) लाल और पीली मृदा

14. क्षारीय (सोडिक) मृदा के सुधार के लिए राजस्थान सरकार द्वारा किस प्राकृतिक खनिज पर अनुदान (सब्सिडी) प्रदान किया जाता है?
(A) रॉक फॉस्फेट (B) लिग्नाइट
(C) चूना पत्थर (D) जिप्सम

15. राजस्थान में मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह किसानों को उनकी मृदा की पोषक तत्व स्थिति की जानकारी के साथ-साथ पोषक तत्वों की उपयुक्त मात्रा की सिफारिशें भी प्रदान करता है।
II. यह pH जैसे भौतिक मापदंडों की उपेक्षा करते हुए, केवल नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटेशियम जैसे मुख्य पोषक तत्वों के लिए मृदा का परीक्षण करता है।
III. इसका उद्देश्य उर्वरकों के संतुलित और एकीकृत उपयोग को बढ़ावा देना है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल I और III
(C) केवल II और III
(D) I, II और III

16. अवनालिका अपरदन, जिसके कारण गहरे बीहड़ों या उत्खात भूमि (badland topography) का निर्माण होता है, राजस्थान में किस नदी के बेसिन में सबसे गंभीर है?
(A) माही नदी
(B) चम्बल नदी
(C) लूनी नदी
(D) बनास नदी

17. राजस्थान के विषमांगी भूभागों में समोच्च बंध (कंटूर बांध) के निर्माण का प्राथमिक कृषि-वैज्ञानिक उद्देश्य क्या है?
(A) खेतों में वायु की गति को बढ़ाना
(B) सतही जल के बहाव (run off) को कम करना और मृदा अपरदन को रोकना
(C) धान की खेती के लिए मृदा को स्थायी रुप से जलमग्न करना
(D) कंद फसलों की गहरी यांत्रिक कटाई को सुगम बनाना

18. निम्नलिखित में से किस सूक्ष्म पोषक तत्व की कमी पश्चिमी राजस्थान की हल्की बनावट वाली बलुई मृदा में सबसे अधिक पाई जाती है?
(A) जस्ता (जिंक)
(B) मॉलिब्डेनम
(C) कोबाल्ट
(D) तांबा (कॉपर)

19. जैविक खेती और राजस्थान की मृदा पर इसके प्रभाव के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
(A) यह व्यवस्थित फसल चक्र पद्धतियों की आवश्यकता को स्थायी रुप से समाप्त कर देती है।
(B) यह उपमृदा में एक कठोर, अभेद्य कैल्शियम परत (calcic pan) का तीव्रता से निर्माण करती है।
(C) यह जीवांश (ह्यूमस) जोड़कर मृदा की संरचना और नमी धारण क्षमता में सुधार करती है।
(D) यह ग्रीष्मकाल में ऊपरी मृदा के कणों को अत्यधिक ढीला करके पवन अपरदन को तीव्र करती है।

20. राजस्थान में धूसर-भूरी (सिरोजम) मृदा के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह मुख्य रूप से लूनी बेसिन तथा पाली, नागौर और जालोर जैसे जिलों में पाई जाती है।
II. इनमें कैल्शियम की मध्यम मात्रा होती है और सिंचित होने पर ये सामान्यतः उपजाऊ होती हैं।
III. इनमें जैविक पदार्थ और जीवांश (ह्यूमस) का उच्च संचयन होता है।
IV. ये बाजरा और मोठ जैसी सूखा-प्रतिरोधी फसलों के लिए अत्यधिक उपयुक्त हैं।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

NODIA

II. ये सामान्यतः पोटाश से समृद्ध होती हैं लेकिन इनमें प्रायः फास्फोरिक अम्ल और जीवांश की कमी होती है।
III. इनमें मरुस्थलीय बलुई मृदा की तुलना में अधिक नमी-धारण क्षमता होती है।
IV. ये संपूर्ण थार मरुस्थल की प्रमुख मृदा का निर्माण करती हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल I, III और IV
(C) केवल II, III और IV
(D) केवल I, II और IV

41. राजस्थान में, स्थिर और चल (mobile) राज्य मृदा परीक्षण प्रयोगशालाओं का नेटवर्क मुख्य रूप से किस विभाग के प्रशासनिक नियंत्रण में कार्य करता है?
(A) खान एवं भूविज्ञान विभाग
(B) जल संसाधन और सिंचाई विभाग
(C) कृषि विभाग
(D) राजस्थान राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड

42. राजस्थान के शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों की उपमृदा में कठोर 'कंकड़' परत (कैल्शियम कार्बोनेट परत) के निर्माण के लिए मुख्य रूप से कौन सी मृदा-जनन (pedogenic) प्रक्रिया उत्तरदायी है?
(A) कैल्शियम का नीचे की ओर प्रक्षालन और उसके पश्चात वाष्पीकरण से अवक्षेपण
(B) उच्च उष्णकटिबंधीय वर्षा और अपक्षय द्वारा संचालित तीव्र लैटेराइटीकरण
(C) शीतल आर्द्र वन सूक्ष्म-जलवायु के तहत होने वाला पॉडज़ोलीकरण
(D) नदी की बाढ़ द्वारा सिलिकेट्स और मृत्तिका का भारी वार्षिक निक्षेपण

43. इंदिरा गांधी नहर परियोजना (IGNP) कमान क्षेत्र के कुछ हिस्सों में किस दोहरी समस्या से निपटने के लिए विशेष रूप से उप-सतही जल निकासी प्रणालियाँ सक्रिय रूप से स्थापित की जा रही हैं?
(A) गंभीर पवन अपरदन और ऊपरी मृदा का पपड़ीदार होना
(B) सूक्ष्म पोषक तत्वों की विषाक्तता और मृदा का अम्लीकरण
(C) गंभीर अवनालिका अपरदन और उपजाऊ ऊपरी मृदा का क्षरण
(D) जलभराव और लवणीकरण

44. निम्नलिखित में से कौन सी कृषि पद्धति मृदा की उर्वरता और संरचना में सुधार करने के बजाय उसे निम्नीकृत करती है?
(A) फलीदार पौधों के साथ फसल चक्र
(B) निरंतर एकधा सस्यन / एकल-फसली कृषि (Monocropping)
(C) गोबर की खाद का प्रयोग
(D) ढेंचा के साथ हरी खाद का प्रयोग

45. सूची I में राजस्थान की प्रमुख वाणिज्यिक फसलों को सूची II में उनकी खेती के लिए सबसे अनुकूल मृदा के प्रकार के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I : (वाणिज्यिक फसलें)
P. सरसों
Q. कपास
R. बाजरा
S. मक्का
सूची II : (मृदा का प्रकार)
1. लाल लोमी मृदा
2. काली मृदा
3. जलोढ़ मृदा
4. मरुस्थलीय/बलुई मृदा
(A) P-3, Q-2, R-4, S-1
(B) P-4, Q-2, R-3, S-1
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-3, R-1, S-4

46. राज्य के सुदूर संवेदन (रिमोट सेंसिंग) आंकड़ों के आधार पर, राजस्थान के किस जिले में अवनालिका अपरदन की सबसे अधिक गंभीरता और इससे प्रभावित सबसे बड़ा क्षेत्र दिखाई देता है?
(A) जोधपुर
(B) बांसवाड़ा
(C) चूरू
(D) धौलपुर

47. राजस्थान में कार्यान्वित आधिकारिक मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना के तहत एक विशिष्ट मृदा के नमूने में निम्नलिखित में से कौन सा मापदंड परीक्षित नहीं किया जाता है?
(A) मृदा सूक्ष्मजीव डीएनए प्रोफाइलिंग
(B) विद्युत चालकता (EC)
(C) हाइड्रोजन विभव (pH)
(D) जैविक कार्बन (OC)

48. सवाई माधोपुर और भीलवाड़ा जैसे जिलों की लाल और पीली मृदा में देखा जाने वाला लाल रंग वैज्ञानिक रूप से किसके कारण होता है?
(A) अपघटित जैविक जीवांश की उच्च सांद्रता
(B) मृदा में फेरिक ऑक्साइड का प्रसार और जलयोजन
(C) अनावक्षयित काले बेसाल्टिक चट्टानों की व्यापक उपस्थिति
(D) संश्लेषित नाइट्रोजन युक्त उर्वरकों का अत्यधिक दीर्घकालिक उपयोग

49. बीकानेर की बलुई मृदा में जैविक कार्बन सामग्री को स्थायी रूप से बढ़ाने और जल-धारण क्षमता में सुधार करने के लिए कौन सी पद्धति वैज्ञानिक रूप से सबसे अधिक उचित है?
(A) ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई के साथ फसल के अवशेषों को पूरी तरह से हटाना
(B) गोबर की खाद डालना और फसल अवशेषों को मृदा में मिलाना

Downloaded from www.pdf.tube

67. निम्नलिखित में से कौन सा राजस्थान के नहर कमान क्षेत्रों में द्वितीयक लवणीकरण (secondary salinization) का प्राथमिक कारण नहीं है?
(A) कच्चे नहर नेटवर्क से जल का रिसाव
(B) अत्यधिक सतही प्लावन सिंचाई पद्धतियाँ
(C) जैविक गोबर की खाद का प्रयोग करना
(D) अपर्याप्त उप-सतही मृदा जल निकासी

68. एक किसान जिप्सम क्रय करने हेतु अनुदान के लिए राजस्थान कृषि विभाग में आवेदन करता है। इस आवश्यकता के आधार पर, उसकी कृषि भूमि सर्वाधिक संभावित रूप से किस समस्या से ग्रस्त है?
(A) असामान्य रूप से कम pH स्तर के साथ उच्च मृदा अम्लता
(B) गंभीर नाइट्रोजन और जैविक पदार्थ की कमी
(C) बिना किसी सतही लवण संचयन के जलभराव
(D) उच्च मृदा क्षारीयता (सोडिक मृदा)

69. 'भूरी' बलुई मृदा, जो लूनी बेसिन की धूसर-भूरी मृदा से भिन्न है, राजस्थान में मुख्य रूप से किस नदी के जलग्रहण क्षेत्र से संबंधित है?
(A) चम्बल
(B) माही
(C) बनास
(D) घग्गर

70. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A) : दक्षिणी और मध्य राजस्थान की लाल और पीली मृदा में उच्च फसल उपज बनाए रखने के लिए आमतौर पर उर्वरकों के नियमित और संतुलित प्रयोग की आवश्यकता होती है।
कारण (R) : ये मृदा समय के साथ प्रक्षालन से प्रभावित हुई हैं और इनमें प्राकृतिक रूप से नाइट्रोजन, फास्फोरस और जीवांश (ह्यूमस) की कमी होती है।
(A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) अभिकथन (A) सही है परंतु कारण (R) गलत है।
(D) अभिकथन (A) गलत है परंतु कारण (R) सही है।

71. राजस्थान में मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना के कार्यान्वयन के संबंध में, किसान स्तर पर इसका प्राथमिक परिचालन लक्ष्य क्या है?
(A) विशिष्ट फसल चक्र को अनिवार्य बनाना जिसे स्थानीय किसानों को प्रत्येक मौसम में उगाना आवश्यक हो
(B) कृषि भूमि पंजीकरण के लिए आवश्यक एक आधिकारिक कानूनी स्वामित्व दस्तावेज के रूप में कार्य करना
(C) सीधे बैंक खातों में कम ब्याज वाले कृषि नकद ऋणों को स्वचालित रूप से वितरित करना
(D) मृदा पोषक तत्व स्थिति की रिपोर्ट करना और उर्वरक मात्रा की सिफारिश करना

72. हाड़ौती पठार (कोटा, बूंदी, बारां, झालावाड़) की मृदा के संबंध में असत्य कथन की पहचान कीजिए।
(A) ये प्राकृतिक रूप से नाइट्रोजन और जैविक पदार्थों से अत्यधिक समृद्ध होती हैं।
(B) ग्रीष्मकाल में गहरी दरारें पड़ने के कारण इनमें स्वतः-जुताई (self-ploughing) की विशेषताएं होती हैं।
(C) ये नमी को बनाए रखने में अत्यधिक सक्षम होती हैं।
(D) ये विशेष रूप से कपास और सोयाबीन जैसी नकदी फसलों के लिए उपयुक्त हैं।

73. आंतरिक जल निकासी बेसिनों और खारी झीलों की उपस्थिति के कारण निम्नलिखित में से किस जिले में प्राकृतिक रूप से पाए जाने वाले लवण-प्रभावित (लवणीय) मृदा के बड़े क्षेत्र सम्मिलित हैं?
(A) बांसवाड़ा
(B) डूंगरपुर
(C) नागौर
(D) प्रतापगढ़

NODIA

74. राजस्थान के शुष्क भूमि कृषि क्षेत्रों के लिए 'मल्चिंग' (Mulching) की कृषि पद्धति की अत्यधिक सिफारिश की जाती है क्योंकि यह मुख्य रूप से सहायता करती है:
(A) मृदा की नमी बनाए रखने और तापमान को नियंत्रित करने में
(B) ऊपरी मृदा के सतही वाष्पीकरण की दर को तेजी से बढ़ाने में
(C) अनचाही खेत खरपतवारों की अनियंत्रित वृद्धि को प्रोत्साहित करने में
(D) मृदा परिच्छेदिका के समग्र स्थूल घनत्व (bulk density) को बढ़ाने में

75. राजस्थान में लवणीय मृदा के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इनमें सोडियम, कैल्शियम और मैग्नीशियम के क्लोराइड तथा सल्फेट जैसे घुलनशील लवणों की उच्च सांद्रता होती है।
II. पर्याप्त जल निकासी का प्रावधान और अच्छी गुणवत्ता वाले जल से प्रक्षालन इनके सुधार में मदद करता है।
III. ये मुख्य रूप से चम्बल नदी के गहरे बीहड़ों में पाई जाती हैं।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और III
(B) केवल I और II
(C) केवल II और III
(D) I, II और III

76. राज्य सरकार द्वारा संचालित "राजीव गांधी जल संचय योजना" (RGJSY) का मुख्य उद्देश्य मृदा स्वास्थ्य और कृषि उत्पादकता में सुधार करना किसके माध्यम से है?

(B) यह हानिकारक कवक जनित पौधों के रोगजनकों के खिलाफ ऊपरी मृदा की परत को रोगाणुरहित करती है।
(C) यह सौर विकिरण को परावर्तित करती है और परिवेश के तापमान को कम करती है।
(D) यह समय के साथ उपमृदा परतों की समग्र रासायनिक क्षारीयता को धीरे-धीरे बढ़ाती है।

59. 'चल मृदा परीक्षण वैन' तैनात करने की राजस्थान की पहल मुख्य रूप से किस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए शुरू की गई थी?
(A) काटी गई कृषि फसलों को दूरस्थ ग्रामीण गांवों से शहरी मंडियों तक परिवहन करना
(B) अन्वेषण बोरवेल खोदना और मौसमी भूजल स्तर के उतार-चढ़ाव को मापना
(C) छोटे विखंडित जोतों पर उगाई गई फसलों की कटाई और प्रसंस्करण करना
(D) दूरस्थ क्षेत्रों के किसानों को ऑन-साइट (स्थल पर) मृदा विश्लेषण और त्वरित परामर्श प्रदान करना

60. केंद्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान (CAZRI) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसकी औपचारिक स्थापना वर्ष 1959 में हुई थी।
II. इसका मुख्यालय जोधपुर में स्थित है।
III. इसका प्राथमिक उद्देश्य अति-आर्द्र उष्णकटिबंधीय कृषि का अध्ययन करना है।
IV. यह बालुका स्तूप स्थिरीकरण और शुष्क भूमि कृषि तकनीकों पर व्यापक अनुसंधान करता है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल I, II और IV
(C) केवल II, III और IV
(D) केवल I, III और IV

61. अरावली गिरिपाद (foothills) के अंतर-विभाजन क्षेत्रों में किस श्रेणी की मृदा की प्रधानता है, जहाँ वायु और जल अपरदन दोनों सक्रिय रूप से महीन कणों को बहा ले जाते हैं, जिससे मोटा पदार्थ पीछे छूट जाता है?
(A) जैविक पीठमय (Peaty) मृदा
(B) गहरी काली मृत्तिका युक्त मृदा
(C) लिथोसॉल्स
(D) उपजाऊ जलोढ़ दोमट मृदा

62. निम्नलिखित USDA भूमि क्षमता वर्गों (Land Capability Classes) को नियमित गहन कृषि के लिए सबसे उपयुक्त से लेकर सबसे कम उपयुक्त (सबसे प्रतिबंधित) के क्रम में व्यवस्थित कीजिए।
1. वर्ग III
2. वर्ग I
3. वर्ग VIII
4. वर्ग II
(A) 2, 4, 1, 3
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 2, 1, 4, 3
(D) 4, 3, 2, 1

63. हरी खाद की फसलों, विशेष रूप से ढेंचा (Sesbania) को शामिल करने की सिफारिश राज्य कृषि विभाग द्वारा मुख्य रूप से किस प्रकार की मृदा के सुधार के लिए की जाती है?
(A) लवणीय मृदा
(B) गहरी काली मृत्तिका युक्त मृदा
(C) लाल लोमी मृदा
(D) पथरीली लिथोसॉल्स मृदा

64. राजस्थान की निम्नीकृत भूमियों पर लागू मृदा संरक्षण उपायों के संदर्भ में, 'एग्रोस्टोलॉजी' (Agrostology) शब्द किसे संदर्भित करता है?
(A) मौसमी नाले की अवनालिकाओं के पार पत्थरों के चेक डैम का निर्माण
(B) मृदा को बांधने और अपरदन को रोकने के लिए घास की खेती और चारागाह विकास
(C) फसल की बुवाई से पहले कृषि बीजों का रासायनिक उपचार
(D) उपग्रह चित्रों का उपयोग करके मृदा निम्नीकरण प्रारूप का स्थानिक मानचित्रण

65. सूची I में राजस्थान में मृदा और भूमि से संबंधित स्थानीय शब्दावलियों को सूची II में उनके सही अर्थों के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I : (स्थानीय शब्दावली)
P. खडीन
Q. सेम
R. छप्पी / पपड़ी
S. कंकड़
सूची II : (अर्थ)
1. उपमृदा में कैल्शियम कार्बोनेट की ग्रंथिकाएं
2. पारंपरिक जल-बहाव कृषि और मृदा नमी संरक्षण प्रणाली
3. जलभराव और बढ़ते भूजल स्तर की समस्या
4. कठोर सतह की पपड़ी का निर्माण जो बीज अंकुरण में बाधा डालता है
(A) P-2, Q-3, R-4, S-1
(B) P-3, Q-2, R-1, S-4
(C) P-4, Q-1, R-2, S-3
(D) P-2, Q-4, R-3, S-1

66. पश्चिमी राजस्थान की अत्यधिक पारगम्य बलुई दोमट मृदा में मृदा अपरदन और जलभराव दोनों को कम करने के लिए कृषि वैज्ञानिकों द्वारा सिंचाई की किस विधि की सबसे अधिक सिफारिश की जाती है?
(A) टपकन (ड्रिप) प्रणाली
(B) अनियंत्रित प्लावन सिंचाई
(C) पारंपरिक कूंड़ (furrow) सिंचाई
(D) पारंपरिक क्यारी सिंचाई

Click Here to Buy book on Flipkart

(A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं परंतु R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) अभिकथन (A) सही है परंतु कारण (R) गलत है।
(D) अभिकथन (A) गलत है परंतु कारण (R) सही है।

31. 'भूमि क्षमता वर्गीकरण' प्रणाली मुख्य रूप से राजस्थान के कृषि और मृदा संरक्षण नियोजन में किस प्रकार सहायता करती है?
(A) यह मृदा निम्नीकरण को रोकने के लिए विशिष्ट उपयोगों हेतु भूमि की उपयुक्तता का आकलन करती है।
(B) यह विभिन्न मृदाओं पर उगाई जाने वाली कृषि फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य को तय करती है।
(C) यह केवल मापी गई मृदा की गहराई के आधार पर नहरी सिंचाई के अधिकारों का आवंटन करती है।
(D) यह सरकारी अनुदान के लिए कृषि परिवारों को सामाजिक-आर्थिक आय वर्गों में वर्गीकृत करती है।

32. राजस्थान में जल अपरदन के निम्नलिखित चरणों को प्रारंभिक प्रभाव से लेकर उन्नत निम्नीकरण तक के सही क्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए।
1. रिल अपरदन (Rill erosion)
2. बौछार अपरदन (Splash erosion)
3. अवनालिका अपरदन (Gully erosion)
4. परत अपरदन (Sheet erosion)
(A) 2, 4, 1, 3
(B) 2, 1, 4, 3
(C) 4, 2, 1, 3
(D) 1, 2, 3, 4

33. व्यापक मृदा सर्वेक्षण करने और भूमि निम्नीकरण के लिए सुदूर संवेदन (रिमोट सेंसिंग) मानचित्र तैयार करने के लिए कौन सी राष्ट्रीय संस्था राजस्थान के कृषि विभाग के साथ व्यापक सहयोग करती है?
(A) राष्ट्रीय समुद्र विज्ञान संस्थान (NIO)
(B) राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण एवं भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो (NBSS&LUP)
(C) भारतीय उष्णदेशीय मौसम विज्ञान संस्थान (IITM)
(D) भारतीय वन सर्वेक्षण (FSI)

34. राजस्थान में मृदा के प्रकार और उसकी अत्यधिक उपयुक्त पारंपरिक फसल के संबंध में सही सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए।
(A) लाल लोमी मृदा - मक्का
(B) जलोढ़ मृदा - ईसबगोल
(C) काली मृदा - बाजरा
(D) बलुई मरुस्थलीय मृदा - कपास

35. राजस्थान की काली मृदा के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इनका निर्माण बेसाल्टिक चट्टानों के अपक्षय से हुआ है।
II. इनमें प्राकृतिक रूप से नाइट्रोजन, फास्फोरस और जैविक पदार्थ की कमी होती है।
III. ये मुख्य रूप से शेखावाटी क्षेत्र में पाई जाती हैं।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

NODIA

36. राजस्थान की मृदा के संदर्भ में स्थानीय शब्द 'कल्लर', 'रेह' या 'ऊसर' किसे संदर्भित करते हैं?
(A) अत्यधिक उपजाऊ, बाढ़-निक्षेपित जलोढ़ क्षेत्र
(B) दक्षिणी पहाड़ी क्षेत्रों की विशिष्ट लाल लोमी मृदा
(C) मरुस्थलीय क्षेत्रों में पवन-निर्मित स्थानांतरित बालुका स्तूप
(D) लवणीय और क्षारीय मृदा के क्षेत्र

37. 'परंपरागत कृषि विकास योजना' (PKVY) राजस्थान में मृदा के दीर्घकालिक स्वास्थ्य के लिए विशेष महत्व रखती है क्योंकि यह मुख्य रूप से बढ़ावा देती है:
(A) आनुवंशिक रूप से परिवर्तित बीजों को अपनाने और उच्च घनत्व वाले रोपण को
(B) निम्नीकृत कृषि भूमि का व्यावसायिक सौर ऊर्जा उत्पादन में व्यवस्थित परिवर्तन को
(C) रसायन-मुक्त जैविक खेती और प्राकृतिक खाद (कंपोस्ट) को
(D) भारी रासायनिक उर्वरकीकरण द्वारा समर्थित गहन एकल-फसल कृषि पद्धतियों को

38. निम्नलिखित में से कौन सी राजस्थान में मृदा संरक्षण की वैज्ञानिक रूप से मान्यता प्राप्त और प्रोत्साहित विधि नहीं है?
(A) वात-रोधक (Windbreaks) और रक्षक मेखला (Shelterbelts)
(B) स्थानांतरित कृषि (Shifting cultivation)
(C) समोच्च पट्टीदार खेती (Contour strip cropping)
(D) संरक्षी नरई आच्छादन (Stubble mulching)

39. पूर्वी मैदानों (जैसे टोंक जिला) से लिया गया मृदा का एक नमूना बालू, गाद (silt) और मृत्तिका (clay) का समान मिश्रण दर्शाता है, तथा सिंचित होने पर अत्यधिक उपजाऊ है। इस मृदा को सर्वाधिक संभावित रूप से किस प्रकार वर्गीकृत किया जाएगा?
(A) अरिडिसोल मृदा
(B) गहरी लेटेराइट मृदा
(C) पीठमय (Peaty) जैविक मृदा
(D) दोमट मृदा

40. राजस्थान में जलोढ़ मृदा के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. ये बनास, बाणगंगा और उनकी सहायक नदियों जैसी नदी प्रणालियों द्वारा बहाकर लाई एवं निक्षेपित की जाती हैं।

(A) निम्नीकृत कृषि भूमियों पर तरल उर्वरकों का व्यापक छिड़काव करके
(B) वर्षा जल संचयन और जलविभाजक (वाटरशेड) प्रबंधन द्वारा
(C) बाहरी क्षेत्रों से उपजाऊ ऊपरी मृदा का बड़े पैमाने पर आयात करके
(D) शुष्क बलुई क्षेत्रों में सभी निजी कृषि गतिविधियों को प्रतिबंधित करके

77. राजस्थान के शुष्क पश्चिमी जिलों में किस प्रकार की मृदा संरचना भौतिक रूप से पवन अपरदन के प्रति सबसे अधिक संवेदनशील है?
(A) सु-समुचित कणिकामय (granular) और भुरभुरी (crumb) संरचना
(B) कोणीय और उप-कोणीय खंडीय (blocky) संरचना
(C) एकल-कणीय (Single-grained) बलुई मृदा
(D) स्तंभकार और प्रिज्मीय मृदा संरचना

78. भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) द्वारा अपनाए गए मृदा के व्यापक 8-समूह आनुवंशिक वर्गीकरण के तहत, पश्चिमी राजस्थान की विशाल मरुस्थलीय मृदा मुख्य रूप से किस श्रेणी के अंतर्गत आती है?
(A) लेटेराइट मृदा
(B) पीठमय और दलदली मृदा
(C) पर्वतीय और वन मृदा
(D) शुष्क और मरुस्थलीय मृदा

79. राजस्थान के धूसर-भूरी और जलोढ़ मृदा क्षेत्रों के लिए कृषि विश्वविद्यालयों द्वारा ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई की सिफारिश क्यों की जाती है?
(A) मृदा जनित कीटों, प्यूपा और खरपतवार के बीजों को तीव्र सौर ताप के संपर्क में लाने के लिए
(B) जल स्तर से लवणीय जल को सतह पर लाने के लिए
(C) बुवाई के लिए मृदा को पूरी तरह से बारीक करने के लिए
(D) मृदा के जैविक पदार्थ को नष्ट करने के लिए

80. राजस्थान में मृदा अपरदन प्रक्रियाओं के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. परत अपरदन ढलान पर समान रूप से मृदा की ऊपरी उपजाऊ परत को हटा देता है।
II. रिल अपरदन, अवनालिका अपरदन का एक उन्नत, अधिक विनाशकारी चरण है।
III. पवन अपरदन शुष्क क्षेत्रों में मृदा निम्नीकरण की प्रमुख भू-आकृतिक प्रक्रिया है।
IV. अनियंत्रित वनोन्मूलन और अतिचारण पवन तथा जल अपरदन दोनों को तीव्र करते हैं।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल I, III और IV
(C) केवल II, III और IV
(D) केवल I, II और IV

81. राजस्थान की काली मृदा के संगठन में कौन सा विशिष्ट मृत्तिका खनिज प्रधान है, जो उन्हें सिकुड़ने और फूलने का विशिष्ट गुण प्रदान करता है?
(A) केओलिनाइट मृत्तिका खनिज
(B) मोंटमोराइलोनाइट
(C) इलाइट मृत्तिका खनिज
(D) क्लोराइट मृत्तिका खनिज

82. राजस्थान की सामान्यीकृत मृदा प्रकारों को उनकी सापेक्ष जल धारण क्षमता के आधार पर उच्चतम से निम्नतम के सही क्रम में चुनिए।
(A) मरुस्थलीय मृदा > जलोढ़ मृदा > काली मृदा
(B) काली मृदा > जलोढ़ मृदा > मरुस्थलीय मृदा
(C) जलोढ़ मृदा > काली मृदा > मरुस्थलीय मृदा
(D) काली मृदा > मरुस्थलीय मृदा > जलोढ़ मृदा

83. राजस्थान के एक प्रमुख क्षेत्र और उसकी प्रमुख मृदा बनावट (texture) के सही सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए।
(A) मारवाड़ क्षेत्र - मृत्तिका दोमट बनावट
(B) मेवाड़ क्षेत्र - बलुई बनावट
(C) हाड़ौती क्षेत्र - मृत्तिका युक्त बनावट
(D) शेखावाटी क्षेत्र - गाद युक्त मृत्तिका बनावट

84. निम्नलिखित पोषक तत्वों में से असंगत की पहचान कीजिए। इनमें से कौन सा एक मुख्य पोषक तत्व (macronutrient) है न कि मानक मृदा स्वास्थ्य प्रयोगशालाओं में परीक्षित सूक्ष्म पोषक तत्व (micronutrient)?
(A) लोहा (आयरन)
(B) मैंगनीज
(C) तांबा (कॉपर)
(D) नाइट्रोजन

NODIA

85. पश्चिमी राजस्थान की सीमांत बलुई मृदा में यांत्रिक जुताई का उपयोग करके गहन कृषि के विस्तार का प्राथमिक पारिस्थितिक प्रभाव क्या है?
(A) यह मरुस्थलीय क्षेत्रों में स्थानांतरित बालुका स्तूपों को स्थायी रूप से स्थिर करता है।
(B) यह उप-सतही भूजल स्तर में तीव्र और निरंतर वृद्धि का कारण बनता है।
(C) यह ऊपरी मृदा को ढीला करता है, जिससे पवन अपरदन और मरुस्थलीकरण तीव्र होता है।
(D) यह स्वाभाविक रूप से बलुई मृदा को उपजाऊ मृत्तिका दोमट में परिवर्तित करता है।

86. वैज्ञानिक शब्द 'पेडोजेनेसिस' (Pedogenesis) किसे संदर्भित करता है?
(A) फसल प्रारूप का मानचित्रण
(B) मृदा निर्माण और विकास की प्रक्रिया
(C) जलमग्न भूमियों की कृत्रिम जल-निकासी
(D) प्राचीन चट्टानी संरचनाओं का अध्ययन

87. यदि पर्याप्त उप-सतही जल निकासी के प्रावधान के बिना जैसलमेर के मरुस्थलीय क्षेत्रों में व्यापक नहर सिंचाई शुरु की जाती है, तो मृदा पर सबसे संभावित दीर्घकालिक पर्यावरणीय प्रभाव क्या होगा?
(A) हल्की बलुई मृदा समय के साथ स्वाभाविक रूप से उपजाऊ काली कपास मृदा में परिवर्तित हो जाएगी।
(B) संपूर्ण मृदा परिच्छेदिका तीव्र रासायनिक प्रक्षालन और लैटेराइटीकरण से गुजरेगी।
(C) क्षारकों के तीव्र प्रक्षालन के कारण ऊपरी मृदा की परतें अत्यधिक अम्लीय हो जाएंगी।
(D) मृदा द्वितीयक लवणता और जलभराव से ग्रस्त हो जाएगी।

88. राजस्थान में कौन सी पारंपरिक शुष्क भूमि कृषि पद्धति मृदा की नमी संरक्षण या अपरदन नियंत्रण में योगदान नहीं देती है?
(A) ग्रीष्मकालीन महीनों के दौरान जुताई की गई भूमि को खुला छोड़ना
(B) स्थानीय रुप से खडीन के नाम से जाने जाने वाले पारंपरिक मिट्टी के तटबंधों का निर्माण करना
(C) गहरी जड़ों वाली फलीदार फसलों और उथली जड़ों वाली फसलों को मिलाकर मिश्रित खेती करना
(D) मानसून शुरु होने से पहले भली-भांति अपघटित गोबर की खाद डालना

89. पश्चिमी राजस्थान में लगाई गई रक्षक मेखला (Shelterbelts) मृदा संरक्षण के लिए तब सबसे अधिक प्रभावी होती हैं जब वे इस प्रकार उन्मुख होती हैं:
(A) प्रचलित हवाओं की मुख्य दिशा के पूर्णतः समानांतर
(B) विशेष रुप से मौसमी और अल्पकालिक नदियों के तटों के साथ
(C) प्रचलित पवन दिशा के लंबवत (Perpendicular)
(D) पूरी तरह से यादृच्छिक और असंगठित बिखरे हुए प्रारुप में

90. मृदा मूल्यांकन के लिए उपयोग की जाने वाली भूमि क्षमता वर्गीकरण प्रणाली के तहत, राजस्थान में वर्ग I और वर्ग II भूमियाँ—जिनके उपयोग को प्रतिबंधित करने वाली कम सीमाएं हैं—मुख्य रुप से किस भौगोलिक क्षेत्र में पाई जाती हैं?
(A) पूर्वी और दक्षिण-पूर्वी जलोढ़ मैदान
(B) अति-शुष्क पश्चिमी मरुस्थलीय स्तूप परिदृश्य
(C) मध्य अरावली श्रेणियों के तीव्र, पथरीले ढाल
(D) लूनी नदी बेसिन के निचले लवणीय गर्त (depressions)

Downloaded from www.pdf.tube

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) मरुस्थलीय (बलुई) मृदा
राजस्थान में मरुस्थलीय अथवा बलुई मृदा का विस्तार सबसे बड़े भौगोलिक क्षेत्र पर पाया जाता है। यह राज्य के 60 प्रतिशत से अधिक भूभाग को आच्छादित करती है। थार मरुस्थल के पश्चिमी जिलों में फैली इस मृदा में बालू के मोटे कणों की प्रधानता होती है। इसमें जल धारण क्षमता बहुत कम होती है। नाइट्रोजन एवं जैविक पदार्थों की कमी के कारण इसकी प्राकृतिक उर्वरता निम्न मानी जाती है।

2. (B) 1959, जोधपुर
केंद्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान की स्थापना वर्ष 1959 में जोधपुर में की गई थी। यह संस्थान भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अधीन एक प्रमुख शोध निकाय है। इसका मुख्य कार्य शुष्क तथा अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में मरुस्थलीकरण को रोकना, मृदा का स्थिरीकरण करना, बालुका स्तूपों का नियंत्रण एवं शुष्क कृषि तकनीकों का विकास करना है। यह संस्थान थार मरुस्थल की पारिस्थितिकी सुधार हेतु कार्य करता है।

3. (C) जलभराव और भूजल स्तर का ऊपर उठना
इंदिरा गांधी नहर के कमान क्षेत्रों में जलभराव तथा भूजल स्तर के निरंतर ऊपर उठने की परिघटना को स्थानीय भाषा में सेम कहा जाता है। अत्यधिक सिंचाई, नहरों से निरंतर जल रिसाव तथा उपमृदा में जिप्सम अथवा चिकनी मिट्टी की अभेद्य परतों की उपस्थिति के कारण अतिरिक्त जल धरातल पर एकत्र हो जाता है। इससे मिट्टी लवणीय एवं क्षारीय होकर कृषि उत्पादन हेतु अनुपयुक्त हो जाती है।

4. (D) हाड़ौती क्षेत्र में पाई जाने वाली काली मृदा
राजस्थान के हाड़ौती पठारी क्षेत्र जैसे कोटा, बूंदी, बारां तथा झालावाड़ में पाई जाने वाली मध्यम काली मृदा को पारंपरिक रूप से रेगुर कहा जाता है। यह बेसाल्टिक लावा चट्टानों के विखंडन तथा अपक्षय से निर्मित हुई है। इस मिट्टी में बारीक मृत्तिका कणों की बहुलता पाई जाती है, जिसके कारण इसमें जल धारण करने की उत्कृष्ट क्षमता होती है। ग्रीष्मकाल में सूखने पर इसमें गहरी दरारें पड़ जाती हैं।

5. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
राजस्थान के पूर्वी मैदानों में नदियों द्वारा बहाकर लाई गई उपजाऊ जलोढ़ मृदा विस्तृत है। दक्षिण-पूर्वी हाड़ौती पठार में ज्वालामुखी लावा से निर्मित काली मृदा पाई जाती है। पश्चिमी राजस्थान के विशाल शुष्क मरुस्थलीय प्रदेश में बलुई अथवा मरुस्थलीय मृदा का जमाव देखा जाता है। दक्षिणी राजस्थान के डूंगरपुर तथा बांसवाड़ा जिलों में प्राचीन कायांतरित चट्टानों के क्षरण से निर्मित लाल लोमी मृदा की प्रधानता पाई जाती है।

NODIA

6. (B) सूरतगढ़, श्रीगंगानगर
भारत के प्रधानमंत्री द्वारा 19 फरवरी 2015 को राजस्थान के श्रीगंगानगर जिले स्थित सूरतगढ़ से राष्ट्रीय मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना का शुभारंभ किया गया था। इस योजना का मुख्य ध्येय वाक्य "स्वस्थ धरा, खेत हरा" है। इसका उद्देश्य देश के किसानों को भूमि की पोषक स्थिति का विवरण देना तथा संतुलित उर्वरक प्रयोग को प्रोत्साहित करके मृदा उत्पादकता में वृद्धि करना है।

7. (D) जैसलमेर
लाल और पीली मृदा मुख्य रूप से राजस्थान के अजमेर, भीलवाड़ा, सवाई माधोपुर, सिरोही तथा उदयपुर जिलों में पाई जाती है। फेरिक ऑक्साइड के जल-योजन के कारण इस मृदा का रंग पीला दिखाई देता है। इसके विपरीत जैसलमेर जिला अत्यधिक शुष्क मरुस्थलीय जलवायु क्षेत्र में स्थित है, जहाँ मुख्य रूप से बलुई अथवा रेतीली मरुस्थलीय मृदा पाई जाती है। यहाँ वायु अपरदन के कारण विशाल बालुका स्तूप स्थित हैं।

8. (A) इनमें मृत्तिका (क्ले) की मात्रा अधिक होती है, जो इन्हें उत्कृष्ट नमी धारण क्षमता प्रदान करती है।
हाड़ौती क्षेत्र की मध्यम काली मृदा में मृत्तिका अथवा क्ले की मात्रा अत्यधिक पाई जाती है। मृत्तिका के अत्यंत सूक्ष्म कणों के कारण इस मृदा की जलधारण एवं नमी रोपण क्षमता बहुत अधिक होती है। इसके विपरीत बलुई मृदा के कण मोटे होने से जल शीघ्रता से नीचे चला जाता है। उच्च नमी धारण क्षमता के कारण काली मृदा में फसलों को बार-बार सिंचाई देने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

9. (C) मक्का
दक्षिण राजस्थान के बांसवाड़ा तथा डूंगरपुर जिलों में लाल लोमी मृदा का विस्तृत क्षेत्र पाया जाता है। यह मृदा प्राचीन क्रिस्टलीय चट्टानों के क्षरण से निर्मित हुई है तथा इसमें लौह तत्त्व की उपस्थिति के कारण इसका रंग लाल होता है। इस मिट्टी में नमी धारण की मध्यम क्षमता होती है जो मक्का की फसल की वृद्धि हेतु अत्यधिक उपयुक्त है। अतः इस क्षेत्र में मक्का प्रमुख खाद्य फसल है।

10. (A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
पश्चिमी राजस्थान थार मरुस्थल का हिस्सा है जहाँ अति-शुष्क जलवायु पाई जाती है। वर्षा की कमी, उच्च तापमान और विरल वनस्पति आवरण के कारण मिट्टी के कण ढीले एवं असंगठित रहते हैं। तेज गति से चलने वाली हवाएं ऊपरी उपजाऊ मिट्टी की परत को आसानी से उड़ा ले जाती हैं, जिससे पवन अपरदन इस क्षेत्र में मृदा निम्नीकरण का सबसे प्रमुख और विनाशकारी कारण बनता है।

अलग बिखरे रहते हैं तथा इनमें परस्पर बांधने वाले मृत्तिका या ह्यूमस जैसे कार्बनिक योजक अनुपस्थित होते हैं। कणों में संसंजक बल का अभाव होने के कारण तीव्र हवाएं इन्हें धरातल से उठाकर सुगमतापूर्वक दूर बहा ले जाती हैं।

78. (D) शुष्क और मरुस्थलीय मृदा
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा स्वीकृत भारत के आठ प्रमुख मृदा वर्गों के अंतर्गत पश्चिमी राजस्थान की विशाल बालुका युक्त मिट्टी को शुष्क एवं मरुस्थलीय मृदा की श्रेणी में वर्गीकृत किया गया है। यह मिट्टी अरावली के पश्चिम में स्थित 12 शुष्क जिलों में फैली हुई है। इसमें विरल वनस्पति, अत्यधिक पारगम्यता, उच्च लवणता तथा अत्यंत निम्न जैविक कार्बन सामग्री जैसी प्रमुख विशेषताएं पाई जाती हैं।

79. (A) मृदा जनित कीटों, प्यूपा और खरपतवार के बीजों को तीव्र सौर ताप के संपर्क में लाने के लिए
राजस्थान के कृषि विश्वविद्यालयों द्वारा ग्रीष्मकाल में जून माह के दौरान खेतों की गहरी जुताई करने की सलाह दी जाती है। ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई से मिट्टी के नीचे छिपे कवक, हानिकारक कीटों के अंडे, प्यूपा तथा खरपतवारों के बीज धरातल पर आ जाते हैं। राजस्थान की भीषण मई-जून की धूप और सौर ताप से ये कीट एवं खरपतवार के बीज नष्ट हो जाते हैं, जिससे फसल की सुरक्षा होती है।

80. (B) केवल I, III और IV
परत अपरदन ढलान पर एक समान परत के रूप में ऊपरी उपजाऊ मिट्टी को बहा ले जाता है। शुष्क पश्चिमी राजस्थान में पवन अपरदन मिट्टी के निम्नीकरण का सबसे प्रमुख भू-आकृतिक कारक है। अनियंत्रित वनोन्मूलन तथा अतिचारण से वनस्पति नष्ट होती है जिससे जल एवं वायु अपरदन तीव्र होता है। रिल अपरदन, अवनालिका अपरदन की प्रारंभिक अवस्था है न कि उन्नत चरण।

81. (B) मोंटमोराइलोनाइट
राजस्थान के हाड़ौती क्षेत्र में विस्तृत काली मिट्टी में मोंटमोराइलोनाइट समूह के मृत्तिका खनिजों की प्रधानता होती है। यह खनिज अत्यधिक फैलने और सिकुड़ने के विशिष्ट भौतिक गुण के लिए जाना जाता है। जल के संपर्क में आने पर यह खनिज जल अवशोषित करके अत्यधिक फूल जाता है और मिट्टी चिपचिपी हो जाती है। वहीं शुष्क मौसम में पानी वाष्पीकृत होने पर इसमें व्यापक दरारें पड़ जाती हैं।

82. (B) काली मृदा > जलोढ़ मृदा > मरुस्थलीय मृदा
राजस्थान की मिट्टियों की जल धारण क्षमता उनमें मौजूद मृत्तिका कणों पर निर्भर करती है। हाड़ौती की काली मृदा में क्ले की अत्यधिक सांद्रता होने के कारण जल धारण क्षमता उच्चतम होती है। मैदानी भागों की जलोढ़ मृदा में दोमट मिश्रण होने से मध्यम जल धारण क्षमता पाई जाती है। वहीं थार मरुस्थल की बलुई मिट्टी के कण बड़े होने के कारण इसकी जल धारण क्षमता न्यूनतम होती है।

83. (C) हाड़ौती क्षेत्र - मृत्तिका युक्त बनावट
राजस्थान का हाड़ौती क्षेत्र कोटा, बूंदी, बारां तथा झालावाड़ जिलों से मिलकर बना है। यह क्षेत्र बेसाल्टिक लावा के विखंडन से निर्मित मध्यम से गहरी काली मिट्टी से आच्छादित है। इस मिट्टी की मुख्य विशेषता इसकी बारीक मृत्तिका युक्त अथवा क्लेय बनावट है। इस मृत्तिका बनावट के कारण इस मिट्टी में जल धारण की असाधारण क्षमता होती है और यह कपास तथा सोयाबीन उत्पादन हेतु सर्वोत्तम मानी जाती है।

84. (D) नाइट्रोजन
पादप पोषण हेतु तत्वों को प्राथमिक मुख्य पोषक तत्व, द्वितीयक पोषक तत्व तथा सूक्ष्म पोषक तत्वों में बाँटा जाता है। नाइट्रोजन, फास्फोरस तथा पोटेशियम पौधों हेतु प्राथमिक मुख्य पोषक तत्व हैं जिनकी आवश्यकता अधिक मात्रा में होती है। इसके विपरीत लोहा, मैंगनीज, तांबा, जस्ता तथा बोरॉन सूक्ष्म पोषक तत्व हैं जिनकी पौधों को अत्यंत अल्प मात्रा में आवश्यकता होती है, अतः नाइट्रोजन सूक्ष्म पोषक तत्व नहीं है।

85. (C) यह ऊपरी मृदा को ढीला करता है, जिससे पवन अपरदन और मरुस्थलीकरण तीव्र होता है।
पश्चिमी राजस्थान की मरुस्थलीय बालुका मिट्टी में ट्रैक्टरों द्वारा बार-बार यांत्रिक जुताई करने से मिट्टी की प्राकृतिक ऊपरी परत टूटकर पूरी तरह ढीला हो जाती है। शुष्क जलवायु एवं वनस्पतिविहीन क्षेत्रों में ढीली हुई बारीक मिट्टी ग्रीष्मकालीन तेज हवाओं के झोंकों द्वारा आसानी से उड़कर दूर चली जाती है। इससे उपजाऊ मिट्टी नष्ट होती है तथा मरुस्थलीकरण की प्रक्रिया अत्यंत तीव्र हो जाती है।

86. (B) मृदा निर्माण और विकास की प्रक्रिया
मृदा विज्ञान में पेडोजेनेसिस शब्द का प्रयोग प्राकृतिक कारकों द्वारा मृदा के निर्माण, उत्पत्ति तथा उसके क्रमिक विकास की समयावधि प्रक्रिया को निरूपित करने के लिए किया जाता है। इस प्रक्रिया में जनक चट्टानों का अपक्षय, जलवायु, आकृतियों का प्रभाव, जैविक घटकों का योगदान तथा समय शामिल हैं। इन सभी कारकों के परस्पर दीर्घकालिक प्रभाव से विभिन्न मृदा संस्तरों एवं परिच्छेदिकाओं का विकास संभव होता है।

87. (D) मृदा द्वितीयक लवणता और जलभराव से ग्रस्त हो जाएगी।
जैसलमेर जैसे अति-शुष्क क्षेत्रों में उप-सतही जल निकासी का प्रबंध किए बिना अत्यधिक नहर सिंचाई शुरु करने पर जलभराव की गंभीर समस्या पैदा हो जाएगी। शुष्क परिस्थितियों एवं अत्यधिक गर्मी के कारण भूमिगत जलस्तर तेजी से ऊपर उठेगा। तत्पश्चात केशिका क्रिया के माध्यम से गहराई में विद्यमान लवण धरातल पर आकर एकत्र हो जाएंगे, जिससे उपजाऊ भूमि द्वितीयक लवणता तथा सेम की समस्या से ग्रसित होकर बंजर बन जाएगी।

88. (A) ग्रीष्मकालीन महीनों के दौरान जुताई की गई भूमि को खुला छोड़ना
शुष्क क्षेत्रों में ग्रीष्मकाल में खेत की जुताई करके मिट्टी को पूरी तरह खुला छोड़ देना मृदा संरक्षण में योगदान नहीं देता

Click Here to Buy book on Amazon

22. (B) अतिचारण, वनोन्मूलन और पवन अपरदन
पश्चिमी राजस्थान में मरुस्थलीकरण तथा मृदा क्षरण का मुख्य कारण मानवीय एवं प्राकृतिक कारकों की परस्पर क्रिया है। प्राकृतिक रूप से तीव्र पवन वेग उपजाऊ कणों को उड़ा ले जाता है। वहीं अत्यधिक पशु चराई से भूमि का वनस्पति आवरण नष्ट हो जाता है तथा वनों की अंधाधुंध कटाई से मिट्टी की ऊपरी परत खुली और असंगठित हो जाती है। यह संयोजन मरुस्थल के प्रसार को तीव्र करता है।

23. (D) लवणीय चकत्तों वाली भूरी जलोढ़ मृदा
उत्तर-पश्चिमी राजस्थान के श्रीगंगानगर तथा हनुमानगढ़ जिलों में स्थित घग्गर नदी के मैदानी भाग में भूरी जलोढ़ मृदा पाई जाती है। प्राचीन सरस्वती और घग्गर नदियों द्वारा निक्षेपित यह मिट्टी अत्यंत बारीक कणों वाली एवं उपजाऊ है। परंतु अत्यधिक सिंचाई तथा शुष्क परिस्थितियों के कारण कहीं-कहीं भूमि की सतह पर घुलनशील लवणों के जमाव से लवणीय चकत्ते निर्मित हो गए हैं।

24. (A) बाड़मेर
राजस्थान में गहरी एवं मध्यम काली रेगुर मृदा मुख्यतः दक्षिण-पूर्वी हाड़ौती क्षेत्र के जिलों जैसे कोटा, बूंदी, बारां तथा झालावाड़ में विस्तृत है। यह मिट्टी बेसाल्टिक लावा के अपक्षय से निर्मित हुई है। इसके विपरीत बाड़मेर जिला अति-शुष्क मरुस्थलीय प्रदेश का हिस्सा है, जहाँ मुख्य रूप से बलुई मरुस्थलीय मिट्टी तथा लवणीय क्षारीय मिट्टी पाई जाती है, न कि काली कपास मिट्टी।

25. (A) P-2, Q-4, R-3, S-1
USDA मृदा वर्गीकरण के अनुसार अरिडिसोल्स शुष्क पश्चिमी जिलों जैसे बीकानेर में पाई जाती है। इनसेप्टिसोल्स आंशिक नमी वाले पहाड़ी एवं मैदानी क्षेत्रों जैसे उदयपुर में स्थित है। अल्फीसोल्स परिपक्व जलोढ़ मृदा के रूप में पूर्वी मैदानी जिलों जैसे भरतपुर में मिलती है। वहीं वर्टिसोल्स अत्यधिक मृत्तिका युक्त काली मृदा के रूप में हाड़ौती पठारी जिले बारां में बहुतायत से विस्तृत है।

26. (A) आवधिक बाढ़ द्वारा निक्षेपित नवीन जलोढ़ मृदा
राजस्थान के पूर्वी मैदानी क्षेत्र में नदियों द्वारा प्रत्येक वर्ष बाढ़ के जल के साथ बहाकर लाई गई नवीन उपजाऊ मिट्टी के निक्षेप को 'खादर' कहा जाता है। यह नवीन जलोढ़ मृदा सूक्ष्म कणों, पोटाश तथा आवश्यक खनिजों से परिपूर्ण होती है। निरंतर निक्षेपण के कारण इस मिट्टी का प्राकृतिक नवीनीकरण होता रहता है, जिससे यह कृषि उत्पादन की दृष्टि से अत्यंत उपजाऊ होती है।

27. (D) रक्षक मेखला (shelterbelts) और वात-रोधक (windbreaks) लगाना
थार मरुस्थल में बालुका स्तूपों के स्थानांतरण को रोकने तथा पवन अपरदन पर नियंत्रण हेतु रक्षक मेखला तथा वात-रोधक लगाना सबसे प्रभावी वानस्पतिक उपाय है। इसमें हवा की दिशा के लंबवत वृक्षों एवं झाड़ियों की पंक्तियाँ लगाई जाती हैं। ये वृक्ष हवा की गति को धीमा कर देते हैं, जिससे रेत के कण उड़ने से रुक जाते हैं और उपजाऊ मिट्टी संरक्षित बनी रहती है।

28. (B) उच्च वाष्पीकरण के कारण केशिका क्रिया (Capillary action) उपमृदा के लवणों को सतह पर लाती है।
लूनी नदी के निचले प्रवाह क्षेत्र में अत्यधिक शुष्क जलवायु एवं उच्च तापमान के कारण वाष्पीकरण की दर बहुत तीव्र होती है। इस स्थिति में केशिका क्रिया द्वारा उप-सतह में उपस्थित घुलनशील लवण धरातल पर खींचे चले आते हैं। जल के वाष्पीकृत हो जाने के पश्चात भूमि की ऊपरी सतह पर लवणों की एक सफेद पपड़ी जम जाती है, जिससे मिट्टी अत्यधिक लवणीय हो जाती है।

29. (C) जिंक सल्फेट
राजस्थान के शुष्क एवं बलुई क्षेत्रों की मृदा में सूक्ष्म पोषक तत्व जस्ते की कमी को दूर करने के लिए कृषि विभाग द्वारा किसानों को जिंक सल्फेट का वितरण अनुदानित दर पर किया जाता है। जिंक सल्फेट मिट्टी में जस्ता और सल्फर दोनों की आपूर्ति करता है। इससे पौधों में हरितलवक का निर्माण सुचारु होता है तथा फसलों की वृद्धि एवं उत्पादकता में वृद्धि दर्ज की जाती है।

NODIA

30. (A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
राजस्थान के दक्षिण-पूर्वी जिलों जैसे कोटा, बूंदी, बारां तथा झालावाड़ में ज्वालामुखी बेसाल्ट से निर्मित मध्यम से गहरी काली मिट्टी पाई जाती है। इस मृदा में सूक्ष्म क्ले कणों के कारण नमी धारण की उत्कृष्ट क्षमता होती है और यह कैल्शियम तथा मैग्नीशियम से भरपूर है। यह विशिष्ट रासायनिक एवं भौतिक संरचना सोयाबीन और कपास जैसी नकदी फसलों के उत्पादन के लिए अत्यधिक अनुकूल होती है।

31. (A) यह मृदा निम्नीकरण को रोकने के लिए विशिष्ट उपयोगों हेतु भूमि की उपयुक्तता का आकलन करती है।
भूमि क्षमता वर्गीकरण प्रणाली कृषि नियोजन की एक वैज्ञानिक विधि है जो भूमि को उसकी भौतिक विशेषताओं, ढलान, मृदा गहराई तथा निम्नीकरण के खतरों के आधार पर आठ वर्गों में विभाजित करती है। इसका मुख्य उद्देश्य भूमि की क्षमता के अनुसार ही उसके उपयोग को निर्धारित करना है ताकि अनियंत्रित भूमि उपयोग से होने वाले मृदा क्षरण, अवनालिका निर्माण तथा निम्नीकरण को प्रभावी रूप से रोका जा सके।

32. (A) 2, 4, 1, 3
जल द्वारा मृदा अपरदन का क्रमिक विकास वर्षा की बूंदों के मिट्टी पर प्रहार से शुरू होता है जिसे असंघात या बौछार अपरदन कहते हैं। इसके पश्चात बहता जल पतली समान परत के रूप में मिट्टी उड़ाता है जिसे परत अपरदन कहते हैं। जब जल छोटी नाली सदृश आकृतियाँ बनाता है तो उसे रिल अपरदन कहते हैं। यही रिल बढ़कर चौड़े गहरे खड्ड बनाती है जिसे अवनालिका अपरदन कहते हैं।

11. (D) अरावली पहाड़ियाँ
लिथोसॉल्स अथवा पर्वतीय मृदा पतली, उथली तथा पथरीली बनावट वाली मिट्टी होती है। राजस्थान में यह मिट्टी मुख्य रूप से अरावली पर्वत श्रेणी के ढलाणों एवं पहाड़ी क्षेत्रों में पाई जाती है। अत्यधिक ढलान होने के कारण इस मिट्टी में जल द्वारा निरंतर कटाव होता रहता है, जिससे मृदा परिच्छेदिका का पूर्ण विकास नहीं हो पाता। इसमें उर्वरता कम होती है तथा यह वानिकी हेतु उपयुक्त है।

12. (B) शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्र
नवीन मृदा वर्गीकरण के अनुसार अरिडिसोल्स शुष्क तथा अर्ध-शुष्क जलवायु क्षेत्रों की प्रमुख मृदा है। राजस्थान में यह मिट्टी अरावली के पश्चिमी भाग में आने वाले जिलों जैसे जैसलमेर, बाड़मेर, बीकानेर, जोधपुर, चुरू तथा सीकर में पाई जाती है। उच्च वाष्पीकरण, निम्न वर्षा तथा वनस्पति की कमी के कारण इस मिट्टी में घुलनशील लवणों तथा कैल्शियम कार्बोनेट की ग्रंथिकाओं का संचयन उपमृदा में पाया जाता है।

13. (C) काली मृदा
संयुक्त राज्य अमेरिका के कृषि विभाग के मृदा वर्गीकरण के अंतर्गत काली मृदा को वर्टिसोल्स वर्ग में रखा गया है। यह मृदा अत्यधिक चिकनी मिट्टी से युक्त होती है जिसमें मोंटमोराइलोनाइट खनिज प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। गीली होने पर यह चिपचिपी हो जाती है तथा सूखने पर इसमें अत्यधिक संकुचन के कारण गहरी दरारें पड़ जाती हैं। राजस्थान के हाड़ौती पठारी भाग में यह बहुतायत से मिलती है।

14. (D) जिप्सम
क्षारीय तथा सोडिक मृदा में विनिमयशील सोडियम की मात्रा अत्यधिक होती है, जिससे मिट्टी की संरचना खराब हो जाती है और उसकी जल पारगम्यता घट जाती है। जिप्सम अर्थात् कैल्शियम सल्फेट का प्रयोग क्षारीय मृदा के सुधार हेतु रासायनिक संशोधक के रूप में किया जाता है। जिप्सम से प्राप्त कैल्शियम सोडियम को विस्थापित कर देता है। इसलिए राजस्थान सरकार किसानों को अनुदानित दर पर जिप्सम उपलब्ध कराती है।

15. (B) केवल I और III
मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना किसानों को उनकी भूमि की पोषक तत्व स्थिति की सटीक जानकारी प्रदान करती है तथा फसलों हेतु आवश्यक पोषक तत्वों की अनुशंसित मात्रा बताती है। यह योजना मुख्य पोषक तत्वों जैसे नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटेशियम के साथ-साथ सूक्ष्म पोषक तत्वों, जैविक कार्बन तथा भौतिक मापदंडों जैसे pH और विद्युत चालकता का भी परीक्षण करती है। इसका उद्देश्य संतुलित उर्वरक प्रयोग को बढ़ाना है।

16. (B) चम्बल नदी
राजस्थान में चम्बल नदी बेसिन अवनालिका अपरदन से अत्यधिक ग्रसित क्षेत्र है। चम्बल और उसकी सहायक नदियों द्वारा जल कटाव के कारण गहरे खड्डों एवं उत्खात भूमि का निर्माण हुआ है, जिसे बीहड़ कहा जाता है। यह अपरदन धौलपुर, करौली, सवाई माधोपुर तथा कोटा जिलों में अत्यधिक व्यापक रूप से फैला है। इससे हजारों हेक्टेयर उपजाऊ कृषि भूमि नष्ट होकर अनुपयोगी बंजर भूमि में परिवर्तित हो गई है।

17. (B) सतही जल के बहाव (run off) को कम करना और मृदा अपरदन को रोकना
समोच्च बंध या कंटूर बंडिंग ढलाऊ भूमि पर समान ऊंचाई वाले बिंदुओं को जोड़ते हुए मेड़ बनाने की एक यांत्रिक विधि है। राजस्थान के असमान भूभागों में इसका निर्माण वर्षा के सतही जल के प्रवाह को धीमा करने के लिए किया जाता है। इससे जल को मिट्टी में रिसने का पर्याप्त समय मिलता है तथा बहते जल द्वारा होने वाले मिट्टी के कटाव को प्रभावी ढंग से रोका जाता है।

18. (A) जस्ता (जिंक)
पश्चिमी राजस्थान की रेतीली बलुई मृदा में सूक्ष्म पोषक तत्वों में जस्ते की कमी सर्वाधिक व्यापक रूप से पाई जाती है। हल्की बनावट, उच्च pH मान, कम जैविक कार्बन तथा अत्यधिक प्रक्षालन के कारण मिट्टी में जस्ते की उपलब्धता घट जाती है। फसलों में जिंक की कमी से पत्तियाँ पीली पड़ जाती हैं और पादप वृद्धि रुक जाती है। अतः जिंक सल्फेट का प्रयोग फसल उत्पादन बढ़ाने हेतु आवश्यक है।

19. (C) यह जीवांश (ह्यूमस) जोड़कर मृदा की संरचना और नमी धारण क्षमता में सुधार करती है।
जैविक खेती में रासायनिक उर्वरकों के स्थान पर कंपोस्ट खाद, हरी खाद तथा जैविक अवशेषों का उपयोग किया जाता है। ये जैविक पदार्थ अपघटित होकर मिट्टी में जीवांश या ह्यूमस का निर्माण करते हैं। जीवांश मिट्टी के कणों को परस्पर बांधकर उसकी कणिकामय संरचना को बेहतर बनाता है, जिससे मिट्टी की जल धारण क्षमता, वातन तथा लाभदायक सूक्ष्मजीवों की गतिविधियों में अभूतपूर्व सुधार होता है।

20. (B) केवल I, II और IV
धूसर-भूरी अथवा सिरोजम मृदा राजस्थान के अरावली के पश्चिमी ढलानों से लगे जिलों जैसे पाली, नागौर, जालोर, बाड़मेर तथा अजमेर में मिलती है। इस मिट्टी में कैल्शियम कार्बोनेट की मध्यम मात्रा पाई जाती है तथा सिंचित करने पर यह कृषि हेतु उपजाऊ सिद्ध होती है। शुष्क जलवायु एवं कम वनस्पति के कारण इसमें ह्यूमस की मात्रा बहुत कम होती है। यह बाजरा और मोठ हेतु आदर्श है।

21. (C) जयपुर
USDA के आधुनिक मृदा वर्गीकरण के तहत 'अल्फीसोल्स' वर्ग की मृदा परिपक्व जलोढ़ तथा मध्यम दोमट मिट्टी को निरूपित करती है। राजस्थान के उप-आर्द्र एवं मैदानी पूर्वी जिलों जैसे जयपुर, अलवर, भरतपुर, दौसा तथा टोंक में अल्फीसोल्स मुख्य रूप से पाई जाती है। इस मिट्टी में मृत्तिका का संचयन उप-सतह में देखा जाता है तथा इसकी उर्वरता एवं फसल उत्पादन क्षमता काफी उच्च श्रेणी की होती है।

Downloaded from www.pdf.tube

44. (B) निरंतर एकधा सस्यन / एकल-फसली कृषि (मोनोक्रॉपिंग)
एक ही कृषि भूमि पर वर्षों तक लगातार एक ही फसल उगाने की क्रिया को एकधा सस्यन कहते हैं। यह पद्धति मृदा की उर्वरता तथा जैविक स्वास्थ्य को गंभीर रूप से नुकसान पहुंचाती है। एक ही प्रकार की फसल द्वारा मिट्टी से विशिष्ट पोषक तत्वों का निरंतर दोहन होता है, जिससे पोषक संतुलन बिगड़ जाता है और मृदा संरचना तथा उत्पादकता में भारी गिरावट दर्ज की जाती है।

45. (A) P-3, Q-2, R-4, S-1
राजस्थान के पूर्वी जलोढ़ मैदानों की उपजाऊ दोमट मिट्टी सरसों की खेती के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है। दक्षिण-पूर्वी हाड़ौती की नमी-धारक काली मिट्टी कपास उत्पादन हेतु अनुकूल मानी जाती है। पश्चिमी राजस्थान की सूखी बलुई मिट्टी कम जल आवश्यकता वाली बाजरे की फसल हेतु आदर्श है। वहीं दक्षिणी पहाड़ियों की लाल लोमी मिट्टी मक्का की सफल खेती के लिए जानी जाती है।

46. (D) धौलपुर
राजस्थान में चम्बल नदी के बहाव क्षेत्र में स्थित धौलपुर जिला अवनालिका अपरदन की तीव्रता तथा बीहड़ भूमि के प्रसार के मामले में सबसे अधिक प्रभावित जिला है। यहाँ चम्बल नदी और उसकी सहायक धाराओं द्वारा वर्षा के जल से गहरे खड्डों एवं नालों का व्यापक निर्माण किया गया है, जिससे विशाल भूभाग उत्खात स्थलाकृति में बदल गया है तथा कृषि भूमि नष्ट हुई है।

47. (A) मृदा सूक्ष्मजीव डीएनए प्रोफाइलिंग
मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना के अंतर्गत प्रयोगशालाओं में मिट्टी के कुल 12 भौतिक तथा रासायनिक मापदंडों का परीक्षण किया जाता है। इनमें मुख्य पोषक तत्व नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटेशियम, द्वितीयक तत्व सल्फर, सूक्ष्म पोषक तत्व जस्ता, लोहा, तांबा, मैंगनीज, बोरॉन तथा pH, विद्युत चालकता एवं जैविक कार्बन शामिल हैं। इस योजना में मृदा सूक्ष्मजीव डीएनए प्रोफाइलिंग का परीक्षण शामिल नहीं किया जाता है।

48. (B) मृदा में फेरिक ऑक्साइड का प्रसार और जलयोजन
राजस्थान के सवाई माधोपुर, भीलवाड़ा, अजमेर तथा चित्तौड़गढ़ जिलों में पाई जाने वाली लाल और पीली मृदा का लाल रंग इसमें उपस्थित फेरिक ऑक्साइड के कारण होता है। जब यह फेरिक ऑक्साइड जल के साथ क्रिया करता है अर्थात् इसका जलयोजन हो जाता है, तो मिट्टी का रंग पीला दिखाई देने लगता है। यह मिट्टी कायांतरित चट्टानों के विखंडन से निर्मित हुई है।

49. (B) गोबर की खाद डालना और फसल अवशेषों को मृदा में मिलाना
बीकानेर की रेतीली बलुई मृदा में कणों का आकार बड़ा होने से जल धारण क्षमता बहुत कम होती है तथा जैविक कार्बन की भारी कमी पाई जाती है। मिट्टी में प्रचुर मात्रा में गोबर की खाद डालना, हरी खाद का उपयोग तथा फसल अवशेषों को जुताई द्वारा मिट्टी में मिलाना वैज्ञानिक उपाय है। इससे निर्मित ह्यूमस मिट्टी के कणों को बांधता है और जल धारण क्षमता बढ़ाता है।

50. (A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
पूर्वी राजस्थान के जिलों में पाई जाने वाली जलोढ़ मृदा अत्यंत उपजाऊ है जो राज्य की गहन कृषि व्यवस्था का मुख्य आधार है। इस मिट्टी की रचना नदियों द्वारा लाई गई मिट्टी से हुई है जिसमें बालू, गाद और क्ले का संतुलित दोमट मिश्रण होता है। इसमें हानिकारक लवणों की कमी पाई जाती है तथा मौसमी नदियों की क्रिया द्वारा समय-समय पर इसका प्राकृतिक नवीनीकरण होता रहता है।

51. (D) 60% से अधिक
अंतरिक्ष उपयोग केंद्र तथा काजरी के वैज्ञानिक अध्ययनों के अनुसार राजस्थान के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का लगभग 62 से 67 प्रतिशत भाग मरुस्थलीकरण एवं विभिन्न प्रकार के भूमि निम्नीकरण से प्रभावित है। राज्य के पश्चिमी 12 शुष्क जिलों में पवन अपरदन मरुस्थलीकरण का सबसे बड़ा कारक है। इसके अतिरिक्त जल अपरदन, जलभराव तथा लवणीकरण भी भूमि की उत्पादकता को लगातार क्षति पहुंचा रहे हैं।

52. (A) जैसलमेर → जोधपुर → जयपुर → भरतपुर
राजस्थान में पश्चिम से पूर्व दिशा की ओर बढ़ने पर मरुस्थलीय बालुका मिट्टी से जलोढ़ दोमट मिट्टी में परिवर्तन देखा जाता है। सुदूर पश्चिमी जिले जैसलमेर तथा जोधपुर में मरुस्थलीय रेतीली मिट्टी का प्रभुत्व है। अरावली पार करने पर मध्य-पूर्वी जिले जयपुर में परिपक्व जलोढ़ तथा दोमट मिट्टी मिलती है। अंततः सुदूर पूर्वी जिले भरतपुर में नदियों द्वारा निर्मित उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी पाई जाती है।

53. (C) परिच्छेदिका विकास से रहित नवीन बलुई मरुस्थलीय मृदा
USDA मृदा वर्गीकरण के तहत एन्टीसोल्स वर्ग उन नवीन मृदाओं को प्रदर्शित करता है जिनमें स्पष्ट मृदा परिच्छेदिका अथवा संस्तरों का विकास नहीं हो पाया है। राजस्थान में यह वर्ग पश्चिमी शुष्क मरुस्थलीय क्षेत्रों में पाई जाने वाली बलुई रेतीली मिट्टी का प्रतिनिधित्व करता है। हवा द्वारा निरंतर कणों का स्थानांतरण होने के कारण इस मिट्टी में क्षितिज विकास नहीं होता तथा यह अत्यंत ढीली संरचना वाली होती है।

54. (B) नमी बनाए रखने और मृदा अपरदन को रोकने के लिए जल संचयन संरचनाओं का निर्माण करके
मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन अभियान राजस्थान का एक बहुआयामी जलविभाजक प्रबंधन कार्यक्रम है। इस अभियान के तहत एनिकेट, जोहड़, खडीन तथा ट्रेंच जैसी जल संचयन संरचनाओं का निर्माण किया जाता है। ये संरचनाएं वर्षा जल के तेज बहाव को रोककर मिट्टी में नमी का संचयन बढ़ाती हैं। बहते पानी की गति धीमा होने से जल द्वारा मिट्टी के कटाव पर अंकुश लगता है और मृदा स्वास्थ्य में सुधार होता है।

55. (C) केवल I और II
राजस्थान की लाल लोमी मृदा दक्षिण-पश्चिमी जिलों डूंगरपुर, बांसवाड़ा तथा उदयपुर के कुछ भागों में विस्तृत है। इस मिट्टी का निर्माण प्राचीन क्रिस्टलीय तथा कायांतरित चट्टानों के

NODIA

क्षरण से हुआ है। इसमें लौह ऑक्साइड की उपस्थिति के कारण रंग लाल होता है। रासायनिक रुप से यह अम्लीय से उदासीन प्रकृति की होती है, न कि अत्यधिक क्षारीय। यह मक्का और चावल हेतु कृषि योग्य है।

56. (A) ये मुख्य रूप से दक्षिणी राजस्थान के मेवाड़ क्षेत्र में पाई जाती हैं।
धूसर-भूरी सिरोजम मृदा दक्षिणी मेवाड़ क्षेत्र में न पाकर अरावली के पश्चिमी ढलानी क्षेत्रों तथा लूनी नदी बेसिन में विस्तृत है। यह मिट्टी पाली, नागौर, जालोर, सिरोही तथा सीकर जिलों में पाई जाती है। इस मिट्टी की उपमृदा में कंकड़ परत पाई जाती है। उचित सिंचाई की व्यवस्था उपलब्ध होने पर सिरोजम मिट्टी में रबी की फसलों जैसे सरसों और गेहूं की अच्छी पैदावार प्राप्त की जाती है।

57. (C) सहजीवी रुप से वायुमंडलीय नाइट्रोजन का स्थिरीकरण करना और उर्वरता में सुधार करना
पश्चिमी राजस्थान की बलुई मृदा में नाइट्रोजन एवं जैविक पदार्थों की भारी कमी होती है। फसल चक्र में मूंग, मोठ अथवा ग्वार जैसी फलीदार दालों को शामिल करने से उनकी जड़ों में पाई जाने वाली राइजोबियम जीवाणु ग्रंथियाँ वायुमंडलीय नाइट्रोजन का मृदा में सहजीवी स्थिरीकरण करती हैं। इससे रासायनिक उर्वरकों पर निर्भरता घटती है तथा भूमि की प्राकृतिक उर्वरता एवं संरचना में उल्लेखनीय सुधार होता है।

58. (A) यह मृदा की सतह पर वायु के वेग को कम करती है और मृदा के कणों को बांधती है।
शुष्क क्षेत्रों में कटाई के पश्चात खेत में बची फसल की नरई या स्टबल छोड़ना पवन अपरदन रोकने का एक प्रभावी संरक्षी उपाय है। फसल के ये ठूंठ मिट्टी की सतह पर बहने वाली तेज हवा की गति को कम कर देते हैं। साथ ही फसलों की जड़े मिट्टी के कणों को आपस में बांधे रखती हैं, जिससे ग्रीष्मकालीन तेज आंधियों में भी ऊपरी उपजाऊ मिट्टी उड़ने से सुरक्षित रहती है।

59. (D) दूरस्थ क्षेत्रों के किसानों को ऑन-साइट (स्थल पर) मृदा विश्लेषण और त्वरित परामर्श प्रदान करना
राजस्थान सरकार द्वारा चल मृदा परीक्षण वैन की सेवा दूरदराज तथा ग्रामीण अंचलों के किसानों तक पहुँचने हेतु शुरू की गई है। प्रयोगशाला उपकरणों से लैस ये वैन सीधे किसानों के खेतों पर जाकर मिट्टी के नमूनों का त्वरित परीक्षण करती हैं। इस पहल का मुख्य उद्देश्य स्थल पर ही मृदा में उपलब्ध पोषक तत्वों का विश्लेषण करना तथा किसानों को तत्काल संतुलित उर्वरक उपयोग संबंधी परामर्श प्रदान करना है।

60. (B) केवल I, II और IV
केंद्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान की स्थापना वर्ष 1959 में जोधपुर में की गई थी। यह भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अंतर्गत कार्यरत है। इसका मुख्य उद्देश्य भारत के शुष्क तथा अर्ध-शुष्क पारिस्थितिकी तंत्र का अध्ययन करना है, न कि अति-आर्द्र कटिबंधीय क्षेत्रों का। यह संस्थान बालुका स्तूपों के स्थिरीकरण, चारागाह विकास, मरुस्थलीकरण नियंत्रण तथा शुष्क भूमि कृषि प्रौद्योगिकियों के विकास पर निरंतर अनुसंधान करता है।

61. (C) लिथोसॉल्स
अरावली पर्वतमाला के गिरिपाद क्षेत्रों में लिथोसॉल्स या पथरीली कंकालीय मृदा की प्रधानता पाई जाती है। ढलान युक्त भूभाग होने के कारण वर्षा का बहता जल और हवा मिट्टी के बारीक मृत्तिका एवं गाद के कणों को बहाकर निचले मैदानों में ले जाती है। इसके परिणामस्वरूप पहाड़ी ढलानों पर कंकड़, पत्थर तथा मोटे चट्टानी टुकड़ों वाली उथली लिथोसॉल्स मिट्टी ही अवशेष के रूप में शेष बचती है।

62. (A) 2, 4, 1, 3
भूमि क्षमता वर्गीकरण में वर्ग I से वर्ग VIII तक भूमियों को कृषि उपयुक्तता के घटते क्रम में वर्गीकृत किया जाता है। वर्ग I भूमि बिना किसी सीमा के गहन कृषि हेतु सर्वाधिक उपयुक्त होती है। वर्ग II में मामूली सीमाएं होती हैं। वर्ग III में मध्यम कृषि प्रतिबंध होते हैं। वर्ग VIII भूमि पर कृषि पूर्णतः असंभव होती है और यह केवल वन्यजीव तथा संरक्षण हेतु उपयुक्त होती है।

63. (A) लवणीय मृदा
लवणीय तथा क्षारीय मिट्टी के जैविक सुधार हेतु राज्य कृषि विभाग द्वारा ढेंचा जैसी हरी खाद की फसलों की बुवाई की सिफारिश की जाती है। ढेंचा की फसल मिट्टी में उगकर प्रचुर जैविक अम्ल उत्पन्न करती है। ये अम्ल मिट्टी में जमा अघुलनशील कार्बोनेटों को घोलने में मदद करते हैं। ढेंचा को खेत में जोतने से लवणीय मिट्टी का सुधार होता है तथा नाइट्रोजन एवं ह्यूमस बढ़ता है।

64. (B) मृदा को बांधने और अपरदन को रोकने के लिए घास की खेती और चारागाह विकास
एग्रोस्टोलॉजी घासों के अध्ययन तथा उनके वैज्ञानिक प्रबंधन का विज्ञान है। राजस्थान के निम्नीकृत भूभागों तथा मरुस्थलीय क्षेत्रों में मृदा संरक्षण हेतु एग्रोस्टोलॉजी का अनुप्रयोग किया जाता है। इसमें सेवण, धामण तथा करड़ जैसी बहुवर्षीय मरुस्थलीय घासों की खेती एवं चारागाह विकास किया जाता है। घासों की घनी जड़ें मिट्टी के ढीले कणों को आपस में बांधकर वायु तथा जल द्वारा होने वाले अपरदन को रोकती हैं।

65. (A) P-2, Q-3, R-4, S-1
राजस्थान में खडीन जैसलमेर क्षेत्र की पारंपरिक जल संचयन एवं नमी संरक्षण कृषि प्रणाली है। सेम नहरी क्षेत्रों में जलभराव तथा भूजल स्तर के ऊपर उठने की समस्या को कहते हैं। छप्पी या पपड़ी मिट्टी की ऊपरी सतह पर कठोर पपड़ी बनने की प्रक्रिया है जो अंकुरण में बाधा डालती है। कंकड़ उपमृदा में जमा कैल्शियम कार्बोनेट की ग्रंथिकाओं को कहा जाता है।

66. (A) टपकन (ड्रिप) प्रणाली
पश्चिमी राजस्थान की रेतीली बलुई दोमट मिट्टी में कण बड़े और असंगठित होने के कारण पारगम्यता अत्यधिक होती है। प्लावन या क्यारी सिंचाई करने पर जल का अधिकांश भाग

Click Here to Buy book on Flipkart

गहराई में रिस जाता है तथा जलभराव एवं लवणता पैदा होती है। टपकन या ड्रिप सिंचाई प्रणाली द्वारा जल सीधे पौधों की जड़ों में बूंद-बूंद करके दिया जाता है। इससे जल की बचत होती है तथा मिट्टी का अपरदन रुकता है।

67. (C) जैविक गोबर की खाद का प्रयोग करना
राजस्थान के नहर कमान क्षेत्रों में द्वितीयक लवणीकरण का मुख्य कारण कच्ची नहरों से जल का रिसाव, अत्यधिक प्लावन सिंचाई तथा खराब उप-सतही जल निकासी व्यवस्था है। इसके विपरीत जैविक गोबर की खाद का प्रयोग करने से मिट्टी में ह्यूमस का निर्माण होता है जो मिट्टी की संरचना सुधारता है और लवणता को नियंत्रित करने में सहायता करता है, अतः यह लवणीकरण का कारण नहीं है।

68. (D) उच्च मृदा क्षारीयता (सोडिक मृदा)
राजस्थान कृषि विभाग द्वारा क्षारीय या सोडिक मिट्टी की समस्या से ग्रस्त कृषि भूमियों के सुधार हेतु किसानों को रियायती दरों पर जिप्सम उपलब्ध कराया जाता है। सोडिक मिट्टी में विनिमयशील सोडियम की सांद्रता अधिक होती है जिसके कारण भूमि का pH मान 8.5 से अधिक हो जाता है। जिप्सम में उपस्थित कैल्शियम सोडियम आयनों को हटाकर मिट्टी की भौतिक संरचना एवं पारगम्यता को पुनर्जीवित करता है।

69. (C) बनास
राजस्थान के मध्य-पूर्वी मैदानों में मुख्य रुप से बनास नदी और उसकी सहायक धाराओं के जलग्रहण क्षेत्र में भूरी बलुई अथवा भूरी दोमट मिट्टी का प्रसार पाया जाता है। यह मिट्टी भीलवाड़ा, अजमेर, टोंक, सवाई माधोपुर तथा राजसमंद जिलों में विस्तृत है। इसमें पोटाश की मात्रा पर्याप्त पाई जाती है लेकिन फास्फोरस एवं जैविक जीवांश कम होता है। यह सिंचित कृषि हेतु उपजाऊ मानी जाती है।

70. (A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
दक्षिणी एवं मध्य राजस्थान के जिलों में मिलने वाली लाल और पीली मृदा का निर्माण प्राचीन चट्टानों के अपक्षय से हुआ है। लंबी अवधि से वर्षा के जल द्वारा क्षालन होने के कारण इस मिट्टी में प्राकृतिक रुप से नाइट्रोजन, फास्फोरस तथा ह्यूमस जैसे आवश्यक तत्वों की भारी कमी हो गई है। अतः इस मिट्टी में फसलों का उच्च उत्पादन प्राप्त करने हेतु नियमित रासायनिक तथा जैविक उर्वरकों का प्रयोग आवश्यक है।

71. (D) मृदा पोषक तत्व स्थिति की रिपोर्ट करना और उर्वरक मात्रा की सिफारिश करना
राजस्थान में मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना का मुख्य परिचालन लक्ष्य किसान स्तर पर उनके खेत की मिट्टी का प्रयोगशाला परीक्षण करके पोषक स्थिति की विस्तृत रिपोर्ट तैयार करना है। यह कार्ड किसानों को मिट्टी में विद्यमान 12 पोषक तत्वों की उपलब्धता की जानकारी देता है तथा उगाई जाने वाली फसलों के अनुसार उर्वरकों एवं खादों की आवश्यक और संतुलित मात्रा की सटीक सिफारिशें प्रदान करता है।

72. (A) ये प्राकृतिक रूप से नाइट्रोजन और जैविक पदार्थों से अत्यधिक समृद्ध होती हैं।
हाड़ौती पठार के जिलों में पाई जाने वाली मध्यम काली रेगुर मृदा बेसाल्टिक लावा के विखंडन से निर्मित हुई है। लगभग सभी भारतीय मृदाओं की तरह इस मिट्टी में भी प्राकृतिक रुप से नाइट्रोजन, फास्फोरस तथा जैविक जीवांश की कमी पाई जाती है। अतः यह कथन असत्य है कि यह मिट्टी इनसे अत्यधिक समृद्ध है। हालाँकि क्ले की उच्च मात्रा के कारण इसकी जल धारण क्षमता बहुत उत्कृष्ट होती है।

73. (C) नागौर
नागौर जिला राजस्थान के आंतरिक जल प्रवाह क्षेत्र में स्थित है जहाँ सांभर, कुचामन तथा डीडवाना जैसी अनेक खारी झीलें एवं अवसाद स्थित हैं। शुष्क जलवायु, उच्च वाष्पीकरण की दर तथा बंद आंतरिक जल निकासी व्यवस्था के कारण इस जिले के बड़े भूभाग की मिट्टी में सोडियम क्लोराइड एवं सोडियम सल्फेट जैसे घुलनशील लवण जमा हो गए हैं, जिससे यहाँ लवणीय मिट्टी के विस्तृत क्षेत्र पाए जाते हैं।

74. (A) मृदा की नमी बनाए रखने और तापमान को नियंत्रित करने में
मल्चिंग या भू-आच्छादन शुष्क कृषि की एक अत्यंत महत्वपूर्ण वैज्ञानिक तकनीक है जिसमें फसल अवशेषों, पुआल अथवा प्लास्टिक शीट से खेत की मिट्टी की सतह को ढक दिया जाता है। राजस्थान के शुष्क क्षेत्रों में मल्चिंग करने से सूर्य की किरणों का सीधा संपर्क मिट्टी से टूट जाता है, जिससे जल वाष्पीकरण रुकता है, मिट्टी की नमी सुरक्षित रहती है तथा मृदा तापमान नियंत्रित बना रहता है।

75. (B) केवल I और II
लवणीय मृदा में सोडियम, कैल्शियम तथा मैग्नीशियम के क्लोराइड एवं सल्फेट लवणों की अत्यधिक सांद्रता पाई जाती है जो पौधों के विकास को अवरुद्ध करती है। इस मिट्टी के सुधार हेतु जल निकासी का समुचित प्रबंध करके अच्छे गुणवत्ता वाले जल से प्रक्षालन किया जाता है। लवणीय मिट्टी मुख्यतः पश्चिमी राजस्थान के खारे गर्तों में मिलती है, न कि चम्बल के गहरे बीहड़ क्षेत्रों में।

76. (B) वर्षा जल संचयन और जलविभाजक (वाटरशेड) प्रबंधन द्वारा
राजीव गांधी जल संचय योजना राजस्थान सरकार की एक प्रमुख राज्य स्तरीय पहल है जिसका मुख्य उद्देश्य वर्षा जल का कुशल संचयन तथा वैज्ञानिक जलविभाजक प्रबंधन करना है। इस योजना के माध्यम से पारंपरिक जल स्रोतों का जीर्णोद्धार किया जाता है तथा नए एनिकेट एवं चेक डैम बनाए जाते हैं। इससे भूजल स्तर में वृद्धि होती है, मृदा नमी बढ़ती है तथा जल द्वारा होने वाला मिट्टी का कटाव रुकता है।

77. (C) एकल-कणीय (Single-grained) बलुई मृदा
राजस्थान के शुष्क पश्चिमी जिलों में पाई जाने वाली एकल-कणीय बलुई मृदा की भौतिक संरचना पवन अपरदन के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होती है। इस मिट्टी के कण अलग-

Downloaded from www.pdf.tube

33. (B) राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण एवं भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो (NBSS&LUP)
राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण एवं भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का एक प्रमुख राष्ट्रीय संस्थान है। यह संस्थान उपग्रह आधारित सुदूर संवेदन तकनीक एवं भौगोलिक सूचना प्रणाली का प्रयोग करके राजस्थान में व्यापक मृदा सर्वेक्षण संपादित करता है। यह संस्थान राज्य कृषि विभाग के सहयोग से डिजिटल मृदा मानचित्र, भूमि निम्नीकरण मानचित्र तथा भूमि क्षमता वर्गीकरण तैयार करने हेतु तकनीकी सहायता प्रदान करता है।

34. (A) लाल लोमी मृदा - मक्का
दक्षिणी राजस्थान के मेवाड़ एवं वागड़ अंचल में कायांतरित चट्टानों से निर्मित लाल लोमी मृदा का विस्तार पाया जाता है। इसमें लौह तत्व प्रचुर मात्रा में होता है तथा इसकी जल धारण क्षमता मध्यम श्रेणी की होती है। मक्का एक ऐसी फसल है जिसे उगने हेतु पर्याप्त नमी तथा अच्छी जल-निकासी वाली दोमट अथवा लोम मिट्टी की आवश्यकता होती है, अतः लाल लोमी मृदा मक्का हेतु सर्वोत्तम है।

35. (A) केवल I और II
राजस्थान की काली मृदा का निर्माण ज्वालामुखी बेसाल्टिक लावा चट्टानों के विखंडन तथा अपक्षय से हुआ है। अधिकांश भारतीय मृदाओं की भांति इस मिट्टी में भी प्राकृतिक रुप से नाइट्रोजन, फास्फोरस तथा जैविक जीवांश की कमी पाई जाती है। यह मृदा मुख्य रुप से दक्षिण-पूर्वी हाड़ौती पठार के जिलों कोटा, बूंदी, बारां और झालावाड़ में मिलती है, न कि उत्तर-पश्चिमी शेखावाटी क्षेत्र में।

36. (D) लवणीय और क्षारीय मृदा के क्षेत्र
राजस्थान में घुलनशील लवणों तथा विनिमयशील सोडियम से युक्त भूमि को स्थानीय भाषा में कल्लर, रेह अथवा ऊसर कहा जाता है। ऐसी मृदा में अत्यधिक लवण संचयन के कारण पौधों का विकास बाधित हो जाता है और सतह पर सफेद पपड़ी बन जाती है। यह समस्या पश्चिमी शुष्क जिलों तथा नहरी सिंचाई वाले क्षेत्रों में जलभराव एवं वाष्पीकरण के कारण व्यापक रुप से देखी जाती है।

37. (C) रसायन-मुक्त जैविक खेती और प्राकृतिक खाद (कंपोस्ट) को
परंपरागत कृषि विकास योजना भारत सरकार का एक प्रमुख कार्यक्रम है जिसे राजस्थान में मृदा के स्वास्थ्य को दीर्घकालिक रुप से सुरक्षित रखने हेतु लागू किया गया है। यह योजना रसायनों और संश्लेषित उर्वरकों के प्रयोग को घटाकर पारंपरिक जैविक खेती, कंपोस्ट, केंचुआ खाद तथा प्राकृतिक कीटनाशकों को बढ़ावा देती है। इससे मिट्टी की संरचना सुधरती है तथा भूमि में जैविक कार्बन का संचयन बढ़ता है।

38. (B) स्थानांतरित कृषि (Shifting cultivation)
स्थानांतरित कृषि या झूमिंग कृषि मृदा संरक्षण की विधि न होकर भूमि निम्नीकरण एवं मृदा अपरदन का एक प्रमुख कारण है। इस पद्धति में वनों को जलाकर कुछ वर्षों तक कृषि की जाती है, जिससे वनस्पति आवरण नष्ट हो जाता है तथा मिट्टी अपरदन हेतु संवेदनशील बन जाती है। इसके विपरीत वात-रोधक, समोच्च पट्टीदार खेती तथा नरई आच्छादन वैज्ञानिक रुप से स्वीकृत मृदा संरक्षण तकनीकें हैं।

39. (D) दोमट मृदा
बालू, गाद तथा मृत्तिका के संतुलित एवं समान अनुपातिक मिश्रण से निर्मित मिट्टी को दोमट मृदा कहा जाता है। राजस्थान के पूर्वी मैदानों जैसे टोंक, जयपुर और सवाई माधोपुर में यह मिट्टी बहुतायत से मिलती है। इसमें जल निकासी तथा नमी धारण क्षमता का आदर्श संतुलन पाया जाता है। सिंचित होने पर यह मृदा गेहूं, सरसों तथा अन्य फसलों के लिए अत्यंत उपजाऊ सिद्ध होती है।

40. (A) केवल I, II और III
राजस्थान में जलोढ़ मृदा चम्बल, बनास, बाणगंगा तथा उनकी सहायक नदियों द्वारा बहाकर लाई गई बारीक मिट्टियों के जमाव से निर्मित हुई है। इस मृदा में पोटाश प्रचुर मात्रा में पाया जाता है परंतु फास्फोरिक अम्ल तथा जीवांश की कमी होती है। इसमें मरुस्थलीय मिट्टी की तुलना में बेहतर नमी धारण क्षमता होती है। यह पूर्वी मैदानों में मिलती है, न कि थार मरुस्थल में।

41. (C) कृषि विभाग
राजस्थान में स्थिर एवं मोबाइल राज्य मृदा परीक्षण प्रयोगशालाओं का संपूर्ण प्रशासनिक संचालन तथा नियमन कृषि विभाग द्वारा किया जाता है। कृषि विभाग का प्राथमिक उद्देश्य किसानों के खेतों से मिट्टी के नमूने एकत्र करना, प्रयोगशालाओं में पोषक तत्वों का रासायनिक विश्लेषण करना तथा विश्लेषित आंकड़ों के आधार पर किसानों को मृदा स्वास्थ्य कार्ड जारी करके उचित उर्वरक उपयोग हेतु सलाह देना है।

42. (A) कैल्शियम का नीचे की ओर प्रक्षालन और उसके पश्चात वाष्पीकरण से अवक्षेपण
राजस्थान के शुष्क एवं अर्ध-शुष्क प्रदेशों में वर्षा ऋतु के दौरान जल के साथ कैल्शियम कार्बोनेट के कण उपमृदा में रिस्ते हैं। तत्पश्चात तीव्र ग्रीष्मकाल में अत्यधिक वाष्पीकरण होने पर यह घुलनशील कैल्शियम कार्बोनेट एक निश्चित गहराई पर अवक्षेपित होकर कठोर परत का रुप ले लेता है। इस प्रक्रिया से निर्मित कंकड़ या कैल्सिक परत जल के रिसाव तथा पौधों की जड़ों में बाधक बनती है।

43. (D) जलभराव और लवणीकरण
इंदिरा गांधी नहर कमान क्षेत्र में अत्यधिक नहरी सिंचाई, कच्ची नहरों से जल का रिसाव तथा उप-सतह में कठोर परतों के कारण जलभराव की गंभीर समस्या पैदा हुई है। जलस्तर ऊपर आने तथा तीव्र वाष्पीकरण होने से मिट्टी की सतह पर लवण जमा हो जाते हैं जिससे भूमि लवणीय हो जाती है। इस दोहरी समस्या से निपटने के लिए उप-सतही जल निकासी पाइपलाइनें स्थापित की जा रही हैं।

NODIA

है। तेज ग्रीष्मकालीन हवाओं तथा आंधियों के कारण खुली ढीली मिट्टी का हवा द्वारा भारी मात्रा में कटाव होता है। इसके विपरीत खडीन का निर्माण, फलीदार फसलों के साथ मिश्रित खेती तथा गोबर की खाद का प्रयोग मिट्टी की नमी बनाए रखने और अपरदन रोकने में योगदान देते हैं।

89. (C) प्रचलित पवन दिशा के लंबवत (Perpendicular)
पश्चिमी राजस्थान के शुष्क क्षेत्रों में वायु अपरदन को रोकने के लिए लगाई जाने वाली रक्षक मेखला तब सर्वाधिक प्रभावी सिद्ध होती है जब वृक्षों एवं झाड़ियों की पंक्तियाँ प्रचलित हवा की मुख्य दिशा के लंबवत रोपित की जाती हैं। लंबवत दिशा में स्थित वृक्षों की कतारें हवा के मार्ग में प्राकृतिक अवरोध उत्पन्न करती हैं, जिससे पवन का वेग घट जाता है और मिट्टी उड़ने से रुकती है।

90. (A) पूर्वी और दक्षिण-पूर्वी जलोढ़ मैदान
भूमि क्षमता वर्गीकरण प्रणाली के तहत वर्ग I तथा वर्ग II भूमियाँ कृषि हेतु सर्वोत्तम मानी जाती हैं जिनमें ढलान, मृदा गहराई तथा अपरदन संबंधी सीमाएं नगण्य अथवा अत्यंत कम होती हैं। राजस्थान में इस प्रकार की उच्च गुणवत्ता वाली कृषि भूमियाँ मुख्य रूप से पूर्वी तथा दक्षिण-पूर्वी जलोढ़ मैदानी जिलों में पाई जाती हैं। ये भूमि समतल, उपजाऊ दोमट मिट्टी से युक्त तथा प्रचुर सिंचाई सुविधाओं से संपन्न हैं।

www.nodia.in

Click Here to Buy book on Amazon

63. राजस्थान में एक फसल और उसके अत्यधिक उपयुक्त कृषि-जलवायु क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करने वाले सही युग्म की पहचान कीजिए:
(A) मक्का - शुष्क पश्चिमी मैदान
(B) सोयाबीन - आर्द्र दक्षिण-पूर्वी मैदान
(C) बाजरा - बाढ़ संभाव्य पूर्वी मैदान
(D) कपास - अति शुष्क आंशिक सिंचित क्षेत्र

64. राजस्थान में एक फसल और उसके प्रमुख उत्पादक जिले के संबंध में गलत युग्म की पहचान कीजिए:
(A) गेहूं - श्रीगंगानगर
(B) चना - बीकानेर
(C) मूंगफली - बीकानेर
(D) धनिया - जैसलमेर

65. राजस्थान में खरीफ तिलहनों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. सोयाबीन की खेती बड़े पैमाने पर हाड़ौती क्षेत्र में केंद्रित है।
II. मूंगफली के लिए बलुई दोमट मृदा की आवश्यकता होती है और यह बीकानेर तथा जोधपुर में प्रमुख है।
III. मेवाड़ क्षेत्र में रबी फसल के रूप में अरंडी व्यापक रूप से उगाई जाती है।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

66. बांसवाड़ा जिले का एक किसान स्थानीय लाल दोमट मृदा और उबड़-खाबड़ स्थलाकृति के लिए उपयुक्त खरीफ फसल बोना चाहता है। निम्नलिखित में से कौन सी फसल सबसे उपयुक्त सिफारिश है?
(A) सरसों
(B) जौ
(C) मक्का
(D) चना

67. हनुमानगढ़ जिले के एक किसान के पास IGNP से नहर सिंचाई की सुविधा है। इस क्षेत्र में निम्नलिखित में से कौन सा फसल चक्र सबसे व्यापक रूप से अपनाया जाता है और अत्यधिक लाभदायक है?
(A) कपास - गेहूं
(B) बाजरा - मोठ
(C) मक्का - चना
(D) ज्वार - तारामीरा

68. राजस्थान के किस जिले को औपचारिक रूप से पहला पूर्ण जैविक खेती वाला जिला घोषित किया गया था?
(A) जयपुर
(B) कोटा
(C) श्रीगंगानगर
(D) डूंगरपुर

69. राजस्थान की कृषि में उर्वरक उपयोग के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(A) उत्तरी सिंचित जिलों में रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग सर्वाधिक है।
(B) पश्चिमी शुष्क जिलों में प्रति हेक्टेयर उर्वरक की खपत सर्वाधिक है।
(C) गेहूं और सरसों जैसी रबी फसलों की बुआई के दौरान डीएपी (DAP) का भारी उपयोग किया जाता है।
(D) यूरिया सभी जिलों में सबसे अधिक उपयोग किया जाने वाला नाइट्रोजन युक्त उर्वरक है।

70. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A) : पिछले दो दशकों में राजस्थान में नकदी फसलों की खेती में तीव्र वृद्धि देखी गई है।
कारण (R) : सूक्ष्म-सिंचाई और नहर नेटवर्क के विस्तार ने व्यावसायिक कृषि से जुड़े जोखिम को कम किया है।
निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

NODIA

71. कृषि में फसल सघनता (Cropping Intensity) को किस रूप में परिभाषित किया जाता है?
(A) वर्षा आधारित कृषि क्षेत्र की तुलना में कुल सिंचित भूमि क्षेत्र का प्रतिशत अनुपात।
(B) कृषि भूमि के शुद्ध हेक्टेयर प्रति उत्पादित कुल परिमाणात्मक कृषि फसल उपज।
(C) खाद्यान्न फसलों की तुलना में व्यावसायिक नकदी फसलों को आवंटित भूमि का प्रतिशत।
(D) सकल फसल क्षेत्र का शुद्ध बोए गए क्षेत्र से गणितीय अनुपात, जिसे 100 से गुणा किया जाता है।

72. राजस्थान में, जल उपयोग दक्षता में सुधार के लिए किस प्रमुख योजना के अंतर्गत ड्रिप और स्प्रिंकलर (बूंद-बूंद एवं फव्वारा) सिंचाई प्रणालियों के कार्यान्वयन पर भारी सब्सिडी दी जाती है?
(A) प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना (PMKSY)
(B) प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (PMFBY)
(C) मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना (SHCS)
(D) राष्ट्रीय कृषि विकास योजना (RKVY)

73. निम्नलिखित में से कौन सी कृषि उपज आमतौर पर राजस्थान में राजफेड (RAJFED) द्वारा मूल्य समर्थन योजना (PSS) के तहत नहीं खरीदी जाती है?
(A) सरसों
(B) गन्ना
(C) चना
(D) लहसुन

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs,
you are wasting valuable time.

Research shows that learning from
PRINTED BOOKS has up to
4× HIGHER RETENTION
than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS**
move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND**
in competition.

In competitive exams,
being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

(C) श्रीगंगानगर
(D) जयपुर

10. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A) : राजस्थान भारत में सरसों का अग्रणी उत्पादक राज्य है।
कारण (R) : सरसों एक खरीफ फसल है जो अत्यधिक मानसूनी वर्षा वाली शुष्क रेतीली मृदा में अच्छी तरह फलती-फूलती है।
निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

11. निम्नलिखित में से कौन सा अनुक्रम राजस्थान में सरसों उत्पादन के घटते क्रम (अवरोही क्रम) में जिलों का सही क्रम दर्शाता है?
(A) अलवर > भरतपुर > श्रीगंगानगर
(B) श्रीगंगानगर > जैसलमेर > बाड़मेर
(C) उदयपुर > भीलवाड़ा > चित्तौड़गढ़
(D) बीकानेर > चूरू > जोधपुर

12. पश्चिमी राजस्थान में बाजरा की खेती अत्यधिक उपयुक्त होने का मुख्य कारण क्या है?
(A) इसके पूरे विकास चक्र के दौरान 100 सेमी से अधिक की उच्च वार्षिक वर्षा की आवश्यकता।
(B) उच्च जल आवश्यकता जिसके लिए गहन स्वचालित सूक्ष्म-सिंचाई प्रणालियों की आवश्यकता होती है।
(C) उच्च सूखा सहनशीलता और ग्रीष्मकाल में हल्की रेतीली मृदा के लिए उपयुक्तता।
(D) नहर कमान क्षेत्रों के भीतर जलभराव वाली मृदा स्थितियों के प्रति उच्च सहनशीलता।

13. राजस्थान में सामान्यतः कौन सा जिला बाजरे का सर्वाधिक उत्पादन करता है?
(A) उदयपुर
(B) कोटा
(C) बांसवाड़ा
(D) बाड़मेर

14. राजस्थान में ज्वार की खेती के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(A) यह मुख्य रूप से मध्य जिलों में वर्षा आधारित प्रमुख खरीफ फसल के रूप में उगाई जाती है।
(B) अजमेर, नागौर और पाली जिले इसके प्रमुख उत्पादक क्षेत्रों में से हैं।
(C) यह अत्यधिक तुषार (पाला) प्रतिरोधकता के कारण अति-शुष्क जैसलमेर में उगाई जाती है।
(D) इसका उपयोग पौष्टिक खाद्यान्न और हरे चारे दोनों के रूप में व्यापक रूप से किया जाता है।

15. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I : (फसल)
P. मक्का
Q. बाजरा
R. धनिया
S. किन्नू
सूची II : (राजस्थान में प्रमुख उत्पादक जिला/क्षेत्र)
1. बारां
2. श्रीगंगानगर
3. भीलवाड़ा
4. बाड़मेर
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-3, Q-4, R-2, S-1
(D) P-1, Q-2, R-3, S-4

16. राजस्थान में विकसित 'माही कंचन' और 'माही धवल' किस्मों का संबंध किस फसल से है?
(A) गेहूं
(B) चावल
(C) जौ
(D) मक्का

17. मेवाड़ क्षेत्र (उदयपुर, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़) की लाल दोमट मृदा किस प्रमुख खरीफ फसल की खेती के लिए अत्यधिक उपयुक्त है?
(A) मक्का
(B) चना
(C) सरसों
(D) जौ

18. 'बीकानेरी नरमा' राजस्थान में उगाई जाने वाली किस फसल की एक प्रसिद्ध किस्म है?
(A) मूंगफली
(B) ग्वार
(C) कपास
(D) गेहूं

19. राजस्थान में उनके विशिष्ट फसल मौसम के आधार पर निम्नलिखित फसलों में से भिन्न/विषम फसल की पहचान कीजिए:
(A) गेहूं
(B) कपास
(C) मूंगफली
(D) सोयाबीन

20. राजस्थान में कपास की खेती के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

Downloaded from www.pdf.tube

अध्याय 17

राजस्थान की रबी और खरीफ़ फ़सलें

1. राजस्थान में खरीफ की फसलों की बुआई सामान्यतः निम्नलिखित में से किस अवधि के दौरान की जाती है?
(A) जून से जुलाई
(B) अक्टूबर से नवंबर
(C) मार्च से अप्रैल
(D) जनवरी से फरवरी

2. निम्नलिखित में से कौन सा कथन राजस्थान में जायद फसल के मौसम को सबसे सही ढंग से परिभाषित करता है?
(A) शुष्क भूमि कृषि के लिए पूरी तरह से दक्षिण-पश्चिम मानसून पर निर्भर मौसम।
(B) मुख्य शीतकालीन फसल का मौसम जो अत्यधिक सिंचाई और उर्वरकों पर निर्भर है।
(C) ग्रीष्मकाल के दौरान रबी और खरीफ के मध्य की एक छोटी अवधि, जिसमें मुख्य रूप से सब्जियां, तरबूज, खरबूजे और चारा उगाया जाता है।
(D) शुष्क क्षेत्रों में विशेष रूप से दलहन की खेती के लिए एक लंबी अवधि का मौसम।

3. राजस्थान में गेहूं की खेती के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(A) यह एक प्रमुख रबी फसल है जिसकी खेती उत्तरी और पूर्वी राजस्थान के सिंचित मैदानों में बड़े पैमाने पर की जाती है।
(B) यह मुख्य रूप से शुष्क पश्चिमी जिलों में बिना किसी सिंचाई के उगाई जाती है।
(C) यह एक खरीफ फसल है जिसे अपनी कायिक वृद्धि के चरण के दौरान भारी वर्षा की आवश्यकता होती है।
(D) इसके पूरे जीवन चक्र के दौरान अम्लीय मृदा और उच्च आर्द्रता की आवश्यकता होती है।

4. राजस्थान के कुछ क्षेत्रों में किसानों द्वारा गेहूं की तुलना में अक्सर जौ को प्राथमिकता क्यों दी जाती है?
(A) जौ का न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) गेहूं की तुलना में काफी अधिक है।
(B) जौ को अधिक जल की आवश्यकता होती है लेकिन इसका फसल चक्र बहुत छोटा होता है।
(C) जौ राजस्थान में सभी ज्ञात कृषि कीटों के प्रति प्रतिरोधी है।
(D) जौ लवणीय मृदा के प्रति अधिक सहनशील है और इसे गेहूं की तुलना में कम सिंचाई की आवश्यकता होती है।

5. राजस्थान में गेहूं की खेती के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह मुख्य रूप से एक रबी फसल है जिसे कायिक वृद्धि के चरण के दौरान कम तापमान की आवश्यकता होती है।
II. श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ जिले इसके शीर्ष उत्पादकों में शामिल हैं।
III. 'मावट' के नाम से जानी जाने वाली शीतकालीन वर्षा इसकी वृद्धि के लिए अत्यधिक हानिकारक है।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

6. राजस्थान में चना मुख्य रूप से किस मौसम में उगाया जाता है?
(A) जायद
(B) खरीफ
(C) रबी
(D) मानसून-पूर्व

NODIA

7. निम्नलिखित में से किसे राजस्थान में रबी दलहनी फसल के रूप में वर्गीकृत नहीं किया गया है?
(A) चना
(B) मसूर
(C) मटर
(D) उड़द

8. भारत में सरसों उत्पादन में राजस्थान के प्रथम स्थान पर होने का प्राथमिक कारण क्या है?
(A) पूर्वी और उत्तरी जिलों में अनुकूल शीतकालीन मौसम तथा उपयुक्त मृदा।
(B) खेती के लिए आदर्श उच्च औसत वार्षिक वर्षा और वायुमंडलीय आर्द्रता का होना।
(C) मध्य मैदानों में उपजाऊ काली कपासी मृदा का व्यापक प्रसार।
(D) उच्च उपज वाली आनुवंशिक रूप से संवर्धित बीज किस्मों पर सरकार का एकाधिकार।

9. राजस्थान में सरसों अनुसंधान निदेशालय (DRMR) किस जिले में स्थित है?
(A) अलवर
(B) भरतपुर

कारण (R) : इंदिरा गांधी नहर तंत्र के प्रारंभ और विस्तार ने इस क्षेत्र में सुनिश्चित सिंचाई उपलब्ध कराई है।
निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

31. इंदिरा गांधी नहर परियोजना (IGNP) के प्रभाव से इसके कमान क्षेत्र में निम्नलिखित में से किस पारंपरिक फसल के क्षेत्र में सापेक्ष गिरावट देखी गई?
(A) गेहूं
(B) बाजरा और मोठ
(C) कपास
(D) सरसों

32. अनुकूल सूक्ष्म-जलवायु और नहर सिंचाई के कारण श्रीगंगानगर जिले में किस फल की फसल ने अत्यधिक व्यावसायिक सफलता प्राप्त की है?
(A) सेब
(B) आम
(C) अनानास
(D) किन्नू

33. जालौर और बाड़मेर जिले किस व्यावसायिक रूप से मूल्यवान बागवानी फसल की खेती के लिए प्रमुख केंद्र के रूप में उभरे हैं?
(A) अनार
(B) लीची
(C) नारियल
(D) कीवी

34. राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केंद्र (NRCSS) राजस्थान में किस स्थान पर स्थित है?
(A) मंडोर, जोधपुर
(B) बिछवाल, बीकानेर
(C) तबीजी, अजमेर
(D) दुर्गापुरा, जयपुर

35. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I : (मसाला फसल)
P. धनिया
Q. जीरा
R. मेथी
S. लहसुन
सूची II : (राजस्थान में प्रमुख उत्पादक जिला)
1. बारां
2. जालौर
3. नागौर
4. बारां/कोटा
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-2, R-3, S-1
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-3, R-1, S-4

36. किस जिले को राजस्थान का 'जीरे का कटोरा' कहा जाता है?
(A) बांसवाड़ा
(B) झुंझुनू
(C) धौलपुर
(D) जालौर

37. नागौर जिला भौगोलिक रूप से किस विशिष्ट मसाले के उत्पादन के लिए देश भर में प्रसिद्ध है?
(A) हल्दी
(B) मेथी (पान मेथी)
(C) इलायची
(D) काली मिर्च

38. राजस्थान की कृषि के संदर्भ में 'राजफेड' (RAJFED) की निर्धारित भूमिका क्या है?
(A) भूजल निष्कर्षण को विनियमित करना और कृषि ट्यूबवेल अनुमति पत्र जारी करना।
(B) व्यक्तिगत छोटे किसानों को प्रत्यक्ष अल्पकालिक फसल ऋण प्रदान करना।
(C) न्यूनतम समर्थन मूल्य के तहत कृषि उपज की खरीद करना।
(D) सभी जिलों में रासायनिक उर्वरकों का निर्माण और वितरण करना।

39. भारत में अधिसूचित फसलों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) की सिफारिश कौन सी केंद्रीय संस्था करती है, जो राजस्थान के किसानों पर भी लागू होती है?
(A) नीति आयोग
(B) भारतीय रिजर्व बैंक (RBI)
(C) भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR)
(D) कृषि लागत और मूल्य आयोग (CACP)

40. राजस्थान में प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (PMFBY) के कार्यान्वयन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. सभी खरीफ फसलों के लिए किसानों द्वारा देय प्रीमियम दर 2% है।
II. सभी रबी फसलों के लिए किसानों द्वारा देय प्रीमियम दर 1.5% है।
III. वार्षिक व्यावसायिक और बागवानी फसलों के लिए प्रीमियम दर 5% है।
IV. यह केवल कटाई के बाद के नुकसान को कवर करती है और खड़ी फसल के नुकसान को बाहर रखती है।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I, II और IV
(B) केवल I, II और III

Click Here to Buy book on Flipkart

(A) व्यावसायिक बागवानी और मसाला फसलें
(B) गेहूं और जौ जैसी प्रमुख खाद्यान्न फसलें
(C) मूंग और उड़द जैसी आवश्यक दलहनी फसलें
(D) ल्यूसर्न (रिजका) जैसी मौसमी हरा चारा फसलें

84. निम्नलिखित में से कौन सा राज्य वैश्विक स्तर पर ग्वार का सबसे बड़ा उत्पादक है, जो अंतर्राष्ट्रीय ग्वार गम की कीमतों को काफी प्रभावित करता है?
(A) गुजरात
(B) हरियाणा
(C) पंजाब
(D) राजस्थान

85. "राजस्थान मिलेट्स प्रोत्साहन मिशन" का प्राथमिक ध्यान किस पर है?
(A) तेजी से घटते भूजल को बचाने के लिए शुष्क क्षेत्रों में गेहूं की खेती को पूरी तरह से प्रतिबंधित करना।
(B) बाजरा और ज्वार जैसे प्रमुख मोटे अनाजों के उत्पादन, उपभोग, प्रसंस्करण और मूल्य संवर्धन को बढ़ावा देना।
(C) विशेष रूप से बाजरा कृषि के लिए समर्पित उच्च-तकनीक स्वचालित सूक्ष्म-सिंचाई अवसंरचना स्थापित करना।
(D) स्थानीय रूप से उत्पादित सभी जैविक मिलेट्स को अंतर्राष्ट्रीय यूरोपीय संघ के बाजारों में अनिवार्य रूप से निर्यात करना।

86. निम्नलिखित में से कौन सा रोग राजस्थान में बाजरे की फसल से व्यापक रूप से जुड़ा हुआ है, जिसके कारण सिट्टे (earhead) के स्थान पर हरी पत्ती जैसी संरचना बन जाती है?
(A) श्वेत किट्ट (White rust)
(B) लाल सड़न (Red rot)
(C) हरित बाल रोग / जोगिया (Green ear disease)
(D) टिक्का रोग (Tikka disease)

87. राजस्थान में कृषि के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए:
(A) राजस्थान भारत में चावल का सबसे बड़ा उत्पादक है।
(B) शुद्ध बोया गया क्षेत्र राज्य के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 10% से कम है।
(C) राज्य में प्रचुर मात्रा में सदावाही नदियां हैं जो सभी कृषि योग्य भूमि के लिए 100% नहर सिंचाई सुनिश्चित करती हैं।
(D) राजस्थान भारत में बाजरा, सरसों और ग्वार जैसी फसलों के उत्पादन में लगभग एकाधिकार रखता है।

88. श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ के कृषि क्षेत्रों में किस फसल को स्थानीय रूप से "सफेद सोना" कहा जाता है?
(A) कपास
(B) गेहूं
(C) चावल
(D) मूंगफली

89. निम्नलिखित में से राजस्थान की कौन सी प्रमुख खरीफ फसल सफेद लट (White Grub) के प्रकोप के प्रति अत्यधिक संवेदनशील है?
(A) गेहूं
(B) मूंगफली
(C) सरसों
(D) जौ

90. राजस्थान में किसानों को उचित मूल्य सुनिश्चित करने के लिए कृषि उपज मंडियों के विनियमन हेतु कौन सा वैधानिक निकाय उत्तरदायी है?
(A) राजस्थान राज्य औद्योगिक विकास एवं निवेश निगम (RIICO)
(B) राजस्थान राज्य कृषि विपणन बोर्ड (RSAMB)
(C) राजस्थान सहकारी डेयरी फेडरेशन (RCDF)
(D) राजस्थान वित्त निगम (RFC)

www.nodia.in

NODIA

52. रबी मौसम के दौरान राजस्थान के सिंचित क्षेत्रों में किस महत्वपूर्ण चारे की फसल की व्यापक खेती की जाती है, जिसे स्थानीय भाषा में 'रिजका' भी कहा जाता है?
(A) नेपियर घास
(B) ज्वार
(C) ग्वार
(D) ल्यूसर्न (रिजका)

53. हाड़ौती क्षेत्र (कोटा, बूंदी, बारां, झालावाड़) राजस्थान में किस प्रमुख खरीफ तिलहन का प्रमुख उत्पादक है?
(A) मूंगफली
(B) सोयाबीन
(C) अरंडी
(D) सूरजमुखी

54. राजस्थान में अलसी मुख्य रूप से उगाई जाती है:
(A) खरीफ दलहन के रूप में
(B) जायद सब्जी के रूप में
(C) रबी तिलहन के रूप में
(D) व्यावसायिक रेशेदार फसल के रूप में

55. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I : (कृषि अनुसंधान संस्थान/केंद्र)
P. केंद्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान (CAZRI)
Q. कृषि विश्वविद्यालय, कोटा
R. स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय
S. महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय
सूची II : (स्थित जिला)
1. उदयपुर
2. बीकानेर
3. कोटा
4. जोधपुर
(A) P-4, Q-3, R-2, S-1
(B) P-4, Q-2, R-3, S-1
(C) P-2, Q-3, R-4, S-1
(D) P-1, Q-3, R-2, S-4

56. राजस्थान में ईसबगोल की व्यावसायिक खेती के लिए मुख्य रूप से कौन सा जिला जाना जाता है?
(A) जालौर
(B) दौसा
(C) करौली
(D) राजसमंद

57. राजस्थान में तारामीरा सामान्यतः किन परिस्थितियों में बोया जाता है?
(A) मानसूनी खरीफ मौसम के दौरान उगाई जाने वाली अत्यधिक सिंचित उपजाऊ मृदा में।
(B) रबी मौसम के दौरान सीमांत और नमी के तनाव वाली मृदा परिस्थितियों में।
(C) पूरे वर्ष भर नियंत्रित ग्रीनहाउस कृषि वातावरण में।
(D) भारी मानसूनी बाढ़ के तुरंत बाद जलभराव वाली नदी बेसिन मृदा में।

58. राजस्थान में तिल मुख्य रूप से किस मौसम में उगाया जाता है?
(A) रबी
(B) खरीफ
(C) जायद
(D) शीतकाल

59. राजस्थान में पारंपरिक खाद्यान्न फसलों से व्यावसायिक फसलों की ओर परिवर्तन को व्यापक रूप से क्या कहा जाता है?
(A) कृषि का व्यावसायीकरण
(B) फसल चक्रण
(C) मिश्रित कृषि
(D) स्थानांतरी कृषि

60. राजस्थान में जायद फसलों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. ये मुख्य रूप से मार्च और जून के मध्य उगाई जाती हैं।
II. खरबूजा, तरबूज और खीरा प्रमुख जायद फसलें हैं।
III. ये सुनिश्चित सिंचाई सुविधाओं पर अत्यधिक निर्भर हैं क्योंकि मानसूनी वर्षा अनुपस्थित होती है।
IV. गेहूं और चना जायद मौसम के प्रमुख अनाज हैं।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल I, II और IV
(C) केवल II, III और IV
(D) केवल I, III और IV

61. निम्नलिखित राज्यों को उनके कुल सरसों उत्पादन के घटते क्रम (अवरोही क्रम) में व्यवस्थित कीजिए:
1. राजस्थान
2. मध्य प्रदेश
3. हरियाणा
4. उत्तर प्रदेश
निम्नलिखित में से कौन सा सही अनुक्रम है?
(A) 1, 2, 3, 4
(B) 1, 4, 2, 3
(C) 2, 1, 4, 3
(D) 1, 2, 4, 3

62. राजस्थान में छोटे और सीमांत किसानों के लिए कृषि बाजार तक पहुंच में निम्नलिखित में से किसे सबसे महत्वपूर्ण बाधा माना जाता है?
(A) पारंपरिक खाद्यान्न विपणन के लिए आधिकारिक व्यावसायिक निर्यात लाइसेंस की कमी।
(B) राज्य के बाहर कृषि जिंसों के व्यापार पर पूर्ण वैधानिक प्रतिबंध।
(C) अपर्याप्त ग्रामीण परिवहन अवसंरचना और APMC मंडियों से अधिक दूरी।
(D) व्यावसायिक जैविक उर्वरक उत्पादन पर लगाई गई भारी राज्य कराधान दरें।

NODIA

I. डोडे (boll) के पकने की अवस्था के दौरान स्वच्छ आकाश और प्रचुर धूप की आवश्यकता होती है।
II. श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ अमेरिकन कपास उत्पादक प्रमुख जिले हैं।
III. यह राज्य में विशेष रूप से रबी फसल के रूप में उगाई जाती है।
IV. यह गुलाबी सुंडी (Pink Bollworm) कीट के प्रति संवेदनशील है।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I, II और IV
(B) केवल I, III और IV
(C) केवल II, III और IV
(D) I, II, III और IV

21. निम्नलिखित प्रमुख कृषि राज्यों को उनके कुल बाजरा उत्पादन के घटते क्रम (अवरोही क्रम) में व्यवस्थित कीजिए:
1. उत्तर प्रदेश
2. राजस्थान
3. हरियाणा
4. महाराष्ट्र

निम्नलिखित में से कौन सा सही अनुक्रम है?
(A) 2, 1, 3, 4
(B) 1, 2, 4, 3
(C) 2, 4, 1, 3
(D) 1, 3, 2, 4

22. राजस्थान में अत्यधिक मूंगफली उत्पादन के कारण किस स्थान को "राजस्थान का राजकोट" कहा जाता है?
(A) सूरतगढ़
(B) फलोदी
(C) लूणकरणसर
(D) पोकरण

23. राजस्थान में मूंगफली की खेती मुख्य रूप से किस मौसम में की जाती है?
(A) रबी
(B) जायद
(C) वर्ष भर
(D) खरीफ

24. निम्नलिखित में से कौन सा जिला राजस्थान में मूंग का अग्रणी उत्पादक है?
(A) नागौर
(B) उदयपुर
(C) झालावाड़
(D) बारां

25. ग्वार की खेती के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. भारत के कुल ग्वार उत्पादन में राजस्थान का योगदान 70% से अधिक है।
II. यह एक फलीदार (लेग्युमिनस) फसल है जो मृदा की उर्वरता सुधारने में सहायता करती है।
III. ग्वार गम का उपयोग विश्व भर में शेल गैस निष्कर्षण उद्योग में भारी मात्रा में किया जाता है।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

26. बीकानेर विशेष रूप से किस सूखा-प्रतिरोधी दलहनी फसल की खेती के लिए प्रसिद्ध है, जिसका उपयोग प्रसिद्ध "भुजिया" उद्योग में व्यापक रूप से किया जाता है?
(A) उड़द
(B) मोठ
(C) अरहर
(D) मसूर

27. उड़द मुख्य रूप से राजस्थान के निम्नलिखित में से किस क्षेत्र में उगाई जाती है?
(A) दक्षिण-पूर्वी क्षेत्र (बूंदी, टोंक, कोटा)
(B) उत्तरी घग्गर मैदान (हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर)
(C) पश्चिमी शुष्क मैदान (जैसलमेर, बाड़मेर)
(D) लूनी बेसिन (जालौर, सिरोही)

28. राजस्थान में मूंग और मोठ जैसी दालों की खेती का निम्नलिखित में से कौन सा लाभ नहीं है?
(A) खाद्यान्न फसलों की तुलना में इन्हें काफी कम सिंचाई की आवश्यकता होती है।
(B) ये मृदा की समग्र उर्वरता बढ़ाने के लिए प्राकृतिक रूप से वायुमंडलीय नाइट्रोजन का स्थिरीकरण करती हैं।
(C) इन्हें पकने के लिए लंबी अवधि की आवश्यकता होती है तथा ये वर्ष भर खेत को घेरे रहती हैं।
(D) ये वायु द्वारा होने वाले मृदा अपरदन को रोकने के लिए प्रभावी आवरण फसलों के रूप में कार्य करती हैं।

29. भौगोलिक रूप से 'फसल प्रतिरूप' (Cropping Pattern) का क्या अर्थ है?
(A) फसल सिंचाई अनुप्रयोगों की निर्धारित समय-सारणी और मौसमी बारंबारता।
(B) राज्य के कृषि निर्यात और आयात के बीच आर्थिक संतुलन अनुपात।
(C) सब्सिडी युक्त प्रमाणित कृषि बीजों को वितरित करने की सरकारी प्रणाली।
(D) किसी निश्चित समय में विभिन्न फसलों के अंतर्गत क्षेत्रफल का अनुपात।

30. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A) : राजस्थान के उत्तर-पश्चिमी जिलों में फसल प्रतिरूप मोटे अनाजों से नकदी फसलों की ओर काफी हद तक परिवर्तित हुआ है।

Downloaded from www.pdf.tube

74. उनके वानस्पतिक वर्गीकरण और विशिष्ट उपयोग के आधार पर निम्नलिखित सूची में से भिन्न/विषम फसल का चयन कीजिए:
(A) मूंग
(B) ग्वार
(C) मोठ
(D) उड़द

75. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I : (कृषि योजना/पोर्टल)
P. ई-NAM
Q. पीएमएफबीवाई
R. मृदा स्वास्थ्य कार्ड
S. राज किसान साथी पोर्टल
सूची II : (मुख्य उद्देश्य)
1. प्राकृतिक आपदाओं के खिलाफ फसल बीमा
2. राजस्थान में किसानों के लिए एकल खिड़की डिजिटल प्लेटफॉर्म
3. बेहतर मूल्य खोज के लिए कृषि मंडियों का एकीकरण
4. पोषक तत्वों की स्थिति का आकलन और उर्वरक की सिफारिश
(A) P-3, Q-1, R-4, S-2
(B) P-1, Q-3, R-2, S-4
(C) P-4, Q-2, R-1, S-3
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

76. अत्यधिक सर्दी के महीनों के दौरान, राजस्थान में सरसों और चने जैसी फसलें अक्सर पाले से होने वाले नुकसान के प्रति संवेदनशील होती हैं। इससे बचाव के लिए निम्नलिखित में से कौन सा अनुशंसित कृषि अभ्यास है?
(A) पाला पड़ने से ठीक पहले नाइट्रोजन युक्त उर्वरक की भारी खुराक देना।
(B) ऊपरी मृदा को पूरी तरह से शुष्क रखने के लिए शीत लहर के दौरान सिंचाई पूरी तरह से रोक देना।
(C) 0.1% सल्फ्यूरिक अम्ल के तनु घोल का छिड़काव करना या खेत में हल्की सिंचाई करना।
(D) पूरी खड़ी फसल पर सांद्रित सर्वांगी (systemic) खरपतवारनाशकों का समान रूप से छिड़काव करना।

77. निम्नलिखित में से कौन सा विभाग/संस्थान पूरे राजस्थान में कृषि प्रसार सेवाओं और कृषि विज्ञान केंद्रों (KVKs) के संचालन के लिए सीधे उत्तरदायी है?
(A) राजस्थान राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (RSPCB)
(B) राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम (RSRTC)
(C) राज्य भूमि राजस्व और आपदा प्रबंधन विभाग
(D) राज्य कृषि विश्वविद्यालय (SAUs) और आईसीएआर (ICAR)

78. स्थिर मूल्यों पर राजस्थान के सकल राज्य मूल्य वर्धन (GSVA) में कृषि और संबद्ध क्षेत्र का अनुमानित योगदान कितना है (हालिया आर्थिक प्रवृत्तियों के अनुसार)?
(A) लगभग 5-10%
(B) लगभग 12-15%
(C) लगभग 28-30%
(D) लगभग 55-60%

79. राजस्थान में इष्टतम उपज के लिए निम्नलिखित में से किस फसल को प्रति हेक्टेयर नाइट्रोजन युक्त उर्वरक की उच्चतम मात्रा की आवश्यकता होती है?
(A) चना
(B) गेहूं
(C) मूंग
(D) मोठ

NODIA

80. राज्य की कृषि योजनाओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. 'राजस्थान मुख्यमंत्री कृषक साथी योजना' कृषि कार्यों के दौरान दुर्घटना में मृत्यु या दिव्यांगता की स्थिति में किसानों को वित्तीय सहायता प्रदान करती है।
II. PM-KUSUM योजना के तहत राज्य में सोलर वाटर पंपों को अत्यधिक बढ़ावा दिया जा रहा है।
III. 'तारबंदी' योजना आवारा पशुओं से फसलों की सुरक्षा के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करती है।
IV. राज्य सरकार प्रत्येक किसान को सभी रासायनिक उर्वरकों पर 100% सब्सिडी प्रदान करती है।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I, II और IV
(B) केवल I, II और III
(C) केवल II, III और IV
(D) केवल I, III और IV

81. राजस्थान के वर्षा आधारित क्षेत्रों में किसानों द्वारा अपनाई जाने वाली 'मिश्रित फसल' (Mixed Cropping) का सबसे उपयुक्त विवरण निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) बिना पंक्ति व्यवस्था के एक ही भूमि पर दो या दो से अधिक फसलों को एक साथ बोना।
(B) एक ही कृषि जोत पर खेत की फसलों की खेती और पशुपालन एक साथ करना।
(C) मृदा की उर्वरता बनाए रखने के लिए वर्षों के दौरान एक सुनियोजित अनुक्रम में विभिन्न फसलों की खेती करना।
(D) स्थानीय पारंपरिक बीजों के साथ उच्च उपज वाले आनुवंशिक रूप से संवर्धित बीजों को पास-पास बोना।

82. राजस्थान की कृषि के लिए कृषि-जलवायु चुनौती के स्थान पर निम्नलिखित में से किसे संस्थागत चुनौती माना जाता है?
(A) बार-बार सूखा पड़ना
(B) पश्चिमी जिलों में भूजल की उच्च लवणीयता
(C) कृषि जोतों का विखंडन
(D) उच्च दैनिक तापमान भिन्नता

83. पुनर्गठित मौसम आधारित फसल बीमा योजना (RWBCIS) राजस्थान में मुख्य रूप से किस श्रेणी की फसलों से जुड़े जोखिमों को कवर करने के लिए लागू की गई है?

(C) केवल II, III और IV
(D) केवल I, III और IV

41. राजस्थान की कृषि योजनाओं के संदर्भ में "बीज प्रतिस्थापन दर (SRR)" शब्द का क्या अर्थ है?
(A) किसानों को नि:शुल्क वितरित किए गए उच्च उपज वाले आनुवंशिक रूप से संवर्धित बीजों का प्रतिशत।
(B) खेत में सहेजे गए बीजों के स्थान पर प्रमाणित बीजों से बोए गए फसल क्षेत्र का प्रतिशत।
(C) वह दर जिस पर राज्य एजेंसियां गंभीर सूखे के दौरान क्षतिग्रस्त फसल बीजों को बदलती हैं।
(D) पड़ोसी राज्यों को निर्यात किए जाने वाले स्थानीय रूप से उत्पादित उच्च गुणवत्ता वाले बीजों का प्रतिशत।

42. राजस्थान में उच्च उपज वाली किस्मों (HYV) को अपनाना किस राज्य निगम के वितरण तंत्र पर अत्यधिक निर्भर है?
(A) रीको (RIICO)
(B) राजस्थान राज्य बीज निगम (RSSC)
(C) आरएसआरटीसी (RSRTC)
(D) राजसीको (RAJSIICO)

43. राष्ट्रीय औसत की तुलना में राजस्थान के पश्चिमी जिलों में कम फसल उत्पादकता का एक प्रमुख कारण निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) जल संसाधनों की गंभीर कमी और अनिश्चित वर्षा।
(B) जैविक उर्वरकों का अत्यधिक उपयोग जिससे मृदा विषैली हो जाती है।
(C) भूमि का अति-विखंडन जो ट्रैक्टरों के संचालन के लिए अनुपयुक्त है।
(D) लौटते मानसून के दौरान बाढ़ की उच्च बारंबारता।

44. IGNP कमान क्षेत्र में समुचित जल निकासी के बिना निरंतर और अत्यधिक नहर सिंचाई का प्राथमिक कृषि परिणाम क्या है?
(A) मृदा के अम्लीयता स्तर में तीव्र वृद्धि
(B) सक्रिय बाढ़ के मैदानों का मरुस्थलीकरण
(C) सेम (जलभराव) की समस्या और मृदा की लवणीयता/क्षारीयता
(D) वायुमंडलीय आर्द्रता स्तर में भारी कमी

45. राजस्थान में कृषि विविधीकरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. किसान तेजी से संरक्षित खेती तकनीकों जैसे ग्रीन-हाउस और शेड-नेट को अपना रहे हैं।
II. बीकानेर और श्रीगंगानगर में जैतून और खजूर जैसी गैर-पारंपरिक फसलों की खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है।
III. राज्य ने नकदी फसलों को बढ़ावा देने के लिए पारंपरिक अनाजों की खेती पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगा दिया है।
उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

46. कृषि विविधीकरण के अंतर्गत, राजस्थान ने किस स्थान पर जैतून तेल निष्कर्षण संयंत्र स्थापित किया है?
(A) सूरतगढ़
(B) फलोदी
(C) लूणकरणसर
(D) बस्सी

47. राजस्थान की कृषि के संदर्भ में, 'माही सुगंधा' और 'चंबल' क्या हैं?
(A) दुधारू पशुओं की देसी नस्लें
(B) उच्च उपज वाली चावल की किस्में
(C) विशेष रूप से पेयजल के लिए प्रमुख सिंचाई परियोजनाएं
(D) व्यावसायिक कपास की किस्में

48. वर्ष 2023 को संयुक्त राष्ट्र द्वारा अंतर्राष्ट्रीय मोटे अनाज (श्री अन्न) वर्ष घोषित किया गया था। राजस्थान में मोटे अनाज के क्षेत्रफल और उत्पादन में किस फसल का अत्यधिक प्रभुत्व है?
(A) रागी
(B) ज्वार
(C) कंगनी
(D) बाजरा

49. निम्नलिखित में से गेहूं की कौन सी किस्म राजस्थान के सिंचित क्षेत्रों में व्यापक रूप से अनुशंसित और उगाई जाती है?
(A) राज 3077
(B) पूसा बासमती
(C) सुजाता
(D) गीज़ा 7

50. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A) : राजस्थान में खरीफ कृषि उत्पादन रबी उत्पादन की तुलना में काफी अधिक अंतर-वार्षिक अस्थिरता दर्शाता है।
कारण (R) : ख़रीफ फसलें मुख्य रूप से वर्षा आधारित होती हैं और अत्यधिक अनिश्चित दक्षिण-पश्चिम मानसून पर सीधे निर्भर होती हैं।
निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

51. निम्नलिखित में से कौन सा अनुक्रम फसलों के विकास काल के दौरान उनकी औसत जल आवश्यकता के बढ़ते क्रम को सही ढंग से दर्शाता है?
(A) गेहूं < ग्वार < बाजरा < चावल
(B) ग्वार < बाजरा < गेहूं < चावल
(C) चावल < गेहूं < बाजरा < ग्वार
(D) बाजरा < गेहूं < चावल < ग्वार

Click Here to Buy book on Amazon

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (A) जून से जुलाई
राजस्थान में खरीफ फसलों की बुआई मुख्य रूप से दक्षिण-पश्चिम मानसून के आगमन के साथ होती है। यह अवधि सामान्यतः जून से जुलाई महीने के दौरान मानी जाती है। इस दौरान बाजरा, मक्का, मूंगफली, ग्वार और तिल जैसी प्रमुख फसलें बोई जाती हैं। मानसून की वर्षा इन फसलों के प्रारंभिक अंकुरण और विकास के लिए अत्यंत आवश्यक होती है। इन फसलों की कटाई मानसून के अंत में सितंबर से अक्टूबर माह के मध्य पूर्ण की जाती है।

2. (C) ग्रीष्मकाल के दौरान रबी और खरीफ के मध्य की एक छोटी अवधि, जिसमें मुख्य रूप से सब्जियां, तरबूज, खरबूजे और चारा उगाया जाता है।
राजस्थान में जायद एक विशेष कृषि मौसम है, जो रबी फसलों की कटाई के बाद और खरीफ फसलों की बुआई से पहले आता है। यह मार्च से जून के मध्य की अल्पकालिक अवधि होती है। इस मौसम में मुख्य रुप से उच्च जल सामग्री वाली फसलों जैसे तरबूज, खरबूजा, खीरा, ककड़ी और हरी सब्जियों की खेती की जाती है। इन फसलों की पैदावार के लिए निरंतर सिंचाई सुविधाओं का होना अनिवार्य होता है क्योंकि इस समय वर्षा अत्यंत नगण्य होती है।

3. (A) यह एक प्रमुख रबी फसल है जिसकी खेती उत्तरी और पूर्वी राजस्थान के सिंचित मैदानों में बड़े पैमाने पर की जाती है।
गेहूं राजस्थान की एक अति महत्वपूर्ण रबी खाद्यान्न फसल है, जिसकी बुआई अक्टूबर से नवंबर माह में की जाती है। इसकी अच्छी वृद्धि के लिए ठंडी जलवायु और पकते समय शुष्क तथा गर्म वातावरण की आवश्यकता होती है। राज्य के उत्तरी और पूर्वी भागों जैसे श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, कोटा, जयपुर और अलवर के सिंचित मैदानी क्षेत्रों में इसकी सघन खेती की जाती है। इन क्षेत्रों में नहरी और नलकूप सिंचाई की प्रचुर उपलब्धता से उच्च पैदावार प्राप्त होती है।

4. (D) जौ लवणीय मृदा के प्रति अधिक सहनशील है और इसे गेहूं की तुलना में कम सिंचाई की आवश्यकता होती है।
राजस्थान के शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में जौ की खेती को प्राथमिकता दी जाती है। जौ एक ऐसी रबी फसल है जो लवणीय तथा क्षारीय मृदा को सहन करने की असाधारण क्षमता रखती है। इसके अतिरिक्त, गेहूं की तुलना में जौ को कम सिंचाई और कम उर्वरकों की आवश्यकता होती है। सीमित जल संसाधनों वाले क्षेत्रों तथा मध्यम गुणवत्ता वाली मृदा में भी यह संतोषजनक उपज देने में सक्षम है। इसीलिए किसान विषम परिस्थितियों में जौ उत्पादन चुनते हैं।

5. (A) केवल I और II
गेहूं राजस्थान की एक प्रमुख रबी फसल है जिसके वानस्पतिक विकास के लिए कम तापमान और शीतल जलवायु की आवश्यकता होती है। राज्य में श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, कोटा और जयपुर इसके अग्रणी उत्पादक जिले हैं। शीतकाल में होने वाली पश्चिमी विक्षोभ की वर्षा, जिसे स्थानीय भाषा में 'मावट' कहा जाता है, गेहूं की फसल की वृद्धि के लिए अत्यंत लाभदायक मानी जाती है। इसलिए मावट को फसल के लिए हानिकारक मानना पूर्णतः असत्य है, बल्कि यह उपज को काफी बढ़ाती है।

6. (C) रबी
चना राजस्थान की एक अति महत्वपूर्ण दलहनी फसल है, जिसे रबी के मौसम में उगाया जाता है। इसकी बुआई अक्टूबर से नवंबर के महीनों में संपन्न की जाती है और कटाई मार्च से अप्रैल में होती है। चने की खेती के लिए शुष्क और ठंडी जलवायु अनुकूल मानी जाती है। राज्य के बीकानेर, हनुमानगढ़, चूरू और श्रीगंगानगर जिलों में चने का बड़े पैमाने पर उत्पादन किया जाता है। यह फसल वायुमंडलीय नाइट्रोजन का स्थिरीकरण करके मृदा उर्वरता भी बढ़ाती है।

7. (D) उड़द
राजस्थान में फसलों का वर्गीकरण उनके बुआई के मौसम के आधार पर किया जाता है। चना, मसूर और मटर रबी मौसम की प्रमुख दलहनी फसलें हैं, जिनकी खेती शीतकाल के दौरान की जाती है। इसके विपरीत, उड़द एक प्रमुख खरीफ दलहन फसल है, जिसकी बुआई मानसून के आगमन पर जून-जुलाई में की जाती है और कटाई सितंबर-अक्टूबर में होती है। अतः उड़द रबी दलहनी फसलों की श्रेणी में शामिल नहीं है, बल्कि यह खरीफ फसल का हिस्सा है।

8. (A) पूर्वी और उत्तरी जिलों में अनुकूल शीतकालीन मौसम तथा उपयुक्त मृदा।
राजस्थान भारत में सरसों उत्पादन में शीर्ष स्थान पर है। राज्य के पूर्वी और उत्तरी जिलों जैसे अलवर, भरतपुर, श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ में शीतकाल के दौरान ठंडी और शुष्क जलवायु उपलब्ध रहती है जो सरसों की उपज के लिए सर्वोत्तम है। इसके अतिरिक्त इन क्षेत्रों में पाई जाने वाली दोमट मृदा और सीमित सिंचाई की सुविधाएं सरसों के विकास को गति प्रदान करती हैं। इन अनुकूल भौगोलिक और पर्यावरणीय परिस्थितियों के कारण ही राजस्थान सरसों उत्पादन में अग्रणी है।

9. (B) भरतपुर
राजस्थान के भरतपुर जिले के सेवर नामक स्थान पर सरसों अनुसंधान निदेशालय स्थित है। इसकी स्थापना भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा वर्ष 1993 में राष्ट्रीय सरसों अनुसंधान

NODIA

30. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
इंदिरा गांधी नहर परियोजना के विकास से राजस्थान के उत्तर-पश्चिमी जिलों जैसे श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़ और बीकानेर की कृषि व्यवस्था में अभूतपूर्व परिवर्तन आया है। सुनिश्चित नहरी जल की निरंतर उपलब्धता के कारण किसानों ने पारंपरिक कम पानी वाली फसलों जैसे बाजरा, ग्वार और मोठ के स्थान पर अधिक लाभ देने वाली नकदी फसलों जैसे गेहूं, कपास, सरसों और मूंगफली की खेती शुरू कर दी है। अतः कथन और कारण दोनों सत्य हैं और कारण सही व्याख्या प्रस्तुत करता है।

31. (B) बाजरा और मोठ
इंदिरा गांधी नहर परियोजना के कमान क्षेत्र में सिंचाई सुविधाओं के विस्तार के परिणामस्वरूप पारंपरिक शुष्क फसलों के क्षेत्रफल में उल्लेखनीय गिरावट दर्ज की गई है। बाजरा और मोठ जैसी फसलें मुख्य रूप से वर्षा आधारित शुष्क परिस्थितियों के लिए अनुकूल थीं। नहरों द्वारा नियमित जलापूर्ति सुलभ होने के बाद किसानों ने इन मोटे अनाजों और दालों के स्थान पर उच्च उपज वाली नकदी फसलों जैसे गेहूं, कपास और सरसों की बुआई को बड़े पैमाने पर अपना लिया है।

32. (D) किन्नू
श्रीगंगानगर जिला अपनी विशिष्ट उपजाऊ दोमट मृदा, प्रचुर नहरी सिंचाई और अनुकूल सूक्ष्म-जलवायु के कारण किन्नू (साइट्रस फल) के व्यावसायिक उत्पादन का प्रमुख केंद्र बन गया है। पंजाब की सीमा से लगे इस क्षेत्र में किन्नू के विशाल बागान स्थापित हैं। यहाँ उत्पादित किन्नू अपनी मिठास, रसदार गुणवत्ता और बड़े आकार के लिए पूरे देश और विदेशों में निर्यात किया जाता है। इस सफलता के कारण श्रीगंगानगर को राज्य का प्रमुख फल उत्पादक जिला माना जाता है।

33. (A) अनार
राजस्थान के जालौर और बाड़मेर जिले हाल के वर्षों में उच्च गुणवत्ता वाले अनार की व्यावसायिक खेती के प्रमुख केंद्र के रूप में उभरे हैं। यहाँ विशेष रूप से ड्रिप (बूंद-बूंद) सिंचाई तकनीक और इजराइली कृषि पद्धति को अपनाकर अनार के बाग लगाए गए हैं। भगवा किस्म के अनार का उत्पादन इन शुष्क जिलों में अत्यधिक सफल रहा है। कम पानी में उच्च मूल्य वाली बागवानी फसल लेने का यह एक सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है जिससे किसानों की आय बढ़ी है।

34. (C) तबीजी, अजमेर
राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केंद्र राजस्थान के अजमेर जिले के तबीजी नामक स्थान पर स्थित है। इसकी स्थापना भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा वर्ष 2000 में बीजीय मसालों के उत्पादन, गुणवत्ता में सुधार और अनुसंधान को बढ़ावा देने के उद्देश्य से की गई थी। यह संस्थान जीरा, धनिया, सौंफ, मेथी और अजवाइन जैसी बीजीय मसाला फसलों पर उन्नत अनुसंधान कार्य करता है। यह केंद्र देश भर के मसाला उत्पादक किसानों को तकनीकी मार्गदर्शन भी प्रदान करता है।

35. (B) P-4, Q-2, R-3, S-1
राजस्थान में मसालों का उत्पादन विशिष्ट जिलों में केंद्रित है। धनिया का सर्वाधिक उत्पादन हाड़ौती क्षेत्र के बारां और कोटा जिलों में होता है। जीरे की खेती मुख्य रूप से पश्चिमी राजस्थान के जालौर और बाड़मेर जिलों में बड़े पैमाने पर की जाती है। नागौर जिला अपनी प्रसिद्ध सुगंधित पान मेथी के लिए देश भर में जाना जाता है। वहीं लहसुन का प्रमुख व्यावसायिक उत्पादन बारां जिले में अत्यधिक मात्रा में होता है जहाँ इसके लिए प्रमुख मंडी भी है।

36. (D) जालौर
जालौर जिले को राजस्थान का 'जीरे का कटोरा' कहा जाता है क्योंकि यह राज्य में जीरे का अग्रणी उत्पादक जिला है। जालौर की हलकी हल्की शुष्क मृदा और शीतकालीन जलवायु जीरे की संवेदनशील फसल के विकास के लिए अत्यंत आदर्श मानी जाती है। यद्यपि बाड़मेर और जोधपुर भी जीरा उगाते हैं, लेकिन जालौर का उत्पादन और बोया गया क्षेत्रफल ऐतिहासिक रूप से शीर्ष पर रहा है। जीरे की खेती से यहाँ के किसानों को भारी व्यावसायिक लाभ होता है।

37. (B) मेथी (पान मेथी)
नागौर जिला अपनी विशिष्ट सुगंधित 'पान मेथी' (कसूरी मेथी) के उत्पादन के लिए पूरे भारत में प्रसिद्ध है। नागौर के ताऊसर और आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों की जलवायु तथा मृदा पान मेथी में विशेष सुगंध और तेल सामग्री विकसित करने के लिए आदर्श मानी जाती है। इसकी सूखी पत्तियों का उपयोग भोजन में स्वाद बढ़ाने और औषधीय कार्यों के लिए व्यापक रूप से किया जाता है। नागौर की पान मेथी की मांग राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय दोनों बाजारों में है।

38. (C) न्यूनतम समर्थन मूल्य के तहत कृषि उपज की खरीद करना।
राजफेड (राजस्थान राज्य सहकारी क्रय-विक्रय संघ लिमिटेड) राज्य की शीर्ष सहकारी विपणन संस्था है। इसकी प्राथमिक निर्धारित भूमिका भारत सरकार और राज्य सरकार की ओर से न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) के तहत किसानों से कृषि जिंसों जैसे तिलहन और दलहन की सरकारी खरीद करना है। इसके अतिरिक्त राजफेड किसानों को उचित दरों पर प्रमाणित बीज, रासायनिक उर्वरक और कीटनाशक वितरित करने का कार्य भी करता है ताकि बाजार में बिचौलियों के शोषण से किसानों का बचाव हो सके।

39. (D) कृषि लागत और मूल्य आयोग (CACP)
भारत में अधिसूचित कृषि फसलों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) की सिफारिश 'कृषि लागत और मूल्य आयोग' द्वारा की जाती है। यह संस्था भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय का एक संलग्न कार्यालय है। आयोग उत्पादन लागत, बाजार मूल्य प्रवृत्तियों और मांग-पूर्ति के संतुलन का गहन विश्लेषण करने के बाद अपनी सिफारिशें सौंपता है। इसके आधार पर आर्थिक मामलों की कैबिनेट समिति अंतिम समर्थन मूल्यों की घोषणा करती है, जो राजस्थान में भी लागू होते हैं।

Downloaded from www.pdf.tube

हैं, जिनकी बुआई मानसून के आगमन पर जून-जुलाई में की जाती है। अतः गेहूं मौसम के संदर्भ में बेमेल या भिन्न विकल्प है।

20. (A) केवल I, II और IV
कपास राजस्थान की एक प्रमुख व्यावसायिक खरीफ फसल है, न कि रबी फसल। इसके डोडे पकने की अवस्था के दौरान स्वच्छ खिली धूप और ठंड से मुक्त मौसम की आवश्यकता होती है। श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ जिले नहरी सिंचाई के बल पर अमेरिकन कपास के प्रमुख उत्पादक केंद्र हैं। कपास की फसल गुलाबी सुंडी नामक कीट के प्रति काफी संवेदनशील होती है, जिससे भारी नुकसान होता है। अतः रबी फसल वाला कथन गलत है और शेष तीनों कथन सही हैं।

21. (A) 2, 1, 3, 4
भारत में बाजरा उत्पादन के मामले में राज्यों का सही अवरोही क्रम राजस्थान, उत्तर प्रदेश, हरियाणा और महाराष्ट्र है। देश के कुल बाजरा उत्पादन और बोए गए क्षेत्रफल दोनों ही दृष्टियों से राजस्थान प्रथम स्थान पर बना हुआ है। उत्तर प्रदेश दूसरे स्थान पर आता है जहाँ पश्चिमी मैदानी भागों में बाजरा उगाया जाता है। इसके पश्चात् हरियाणा तीसरे तथा महाराष्ट्र चौथे स्थान पर आते हैं। यह क्रम राष्ट्रीय कृषि सांख्यिकी आंकड़ों के पूर्णतः अनुरूप है।

22. (C) लूणकरणसर
बीकानेर जिले में स्थित लूणकरणसर को "राजस्थान का राजकोट" कहा जाता है। गुजरात का राजकोट शहर पूरे देश में अपने प्रचुर मूंगफली उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है। इसी तर्ज पर, इंदिरा गांधी नहर के आगमन के बाद लूणकरणसर और उसके आसपास के क्षेत्रों में मूंगफली की रिकॉर्ड पैदावार होने लगी है। यहाँ की हल्की रेतीली मृदा और नहरी सिंचाई का संगम मूंगफली की खेती के लिए अत्यंत आदर्श स्थिति उत्पन्न करता है, जिससे यह उपनाम मिला।

23. (D) खरीफ
राजस्थान में मूंगफली एक अति महत्वपूर्ण तिलहनी फसल है जिसकी खेती मुख्य रूप से खरीफ मौसम में की जाती है। इसकी बुआई मानसून की पहली वर्षा के साथ जून या जुलाई महीने में संपन्न होती है, जबकि इसकी खुदाई और कटाई अक्टूबर से नवंबर माह के दौरान की जाती है। मूंगफली के पौधे के विकास और फलियों के पकने के लिए गर्म जलवायु तथा बलुई दोमट मृदा की आवश्यकता होती है। राज्य के बीकानेर और जयपुर इसके प्रमुख केंद्र हैं।

24. (A) नागौर
नागौर जिला राजस्थान में मूंग (हरा चना) के उत्पादन और बोए गए क्षेत्रफल में लगातार शीर्ष स्थान पर रहता है। मूंग एक प्रमुख खरीफ दलहन है जो कम पानी और शुष्क जलवायु में भी अच्छी उपज देती है। नागौर का अर्ध-शुष्क मैदानी वातावरण और यहाँ की दोमट मृदा मूंग की खेती के लिए अत्यंत उपयुक्त है। इसके अतिरिक्त नागौर की मूंग अपनी गुणवत्ता और उच्च प्रोटीन सामग्री के लिए पूरे राज्य में जानी जाती है।

25. (D) I, II और III
ग्वार राजस्थान की एक अत्यधिक महत्वपूर्ण औद्योगिक और दलहनी फसल है। भारत के कुल ग्वार उत्पादन में अकेले राजस्थान का योगदान 70 प्रतिशत से भी अधिक है। एक फलीदार फसल होने के नाते यह अपनी जड़ों में वायुमंडलीय नाइट्रोजन का स्थिरीकरण करके मृदा की उर्वरता को स्वाभाविक रूप से बढ़ाती है। इसके अतिरिक्त, ग्वार के बीजों से निकाला जाने वाला ग्वार गम वैश्विक स्तर पर शेल गैस निष्कर्षण और हाइड्रोलिक फ्रैक्चरिंग उद्योगों में बड़े पैमाने पर इस्तेमाल किया जाता है।

26. (B) मोठ
मोठ राजस्थान के शुष्क पश्चिमी भाग की एक अत्यंत सूखा-प्रतिरोधी खरीफ दलहनी फसल है। बीकानेर जिला मोठ के उत्पादन में पूरे राज्य में अग्रिम पंक्ति में है। बीकानेर का विश्व प्रसिद्ध "भुजिया" उद्योग प्राथमिक कच्चे माल के रूप में मोठ के आटे का व्यापक उपयोग करता है, जिससे भुजिया को उसका विशिष्ट स्वाद और कुरकुरापन प्राप्त होता है। कम वर्षा और रेतीली मृदा में आसानी से पनपने की क्षमता मोठ को इस शुष्क क्षेत्र के लिए आदर्श फसल बनाती है।

27. (A) दक्षिण-पूर्वी क्षेत्र (बूंदी, टोंक, कोटा)
उड़द राजस्थान की एक प्रमुख खरीफ दलहन फसल है, जिसे मध्यम से भारी काली और दोमट मृदा की आवश्यकता होती है। राज्य में उड़द का उत्पादन मुख्य रूप से दक्षिण-पूर्वी पठारी और मैदानी क्षेत्रों जैसे बूंदी, टोंक, कोटा, झालावाड़ और बाड़मेर/चित्तौड़गढ़ में केंद्रित है। इन क्षेत्रों में पर्याप्त मानसूनी वर्षा और उपयुक्त मृदा संरचना पाई जाती है जो उड़द के पौधे की वृद्धि के लिए अनुकूल है। शुष्क पश्चिमी मरुस्थलीय जिलों में उड़द की खेती बहुत ही सीमित होती है।

NODIA

28. (C) इन्हें पकने के लिए लंबी अवधि की आवश्यकता होती है तथा ये वर्ष भर खेत को घेरे रहती हैं।
मूंग और मोठ अल्पकालिक खरीफ दलहनी फसलें हैं जो मात्र 60 से 90 दिनों में पककर तैयार हो जाती हैं। ये फसलें वर्ष भर खेत को नहीं घेरे रहतीं, बल्कि खेत को शीघ्र खाली कर देती हैं जिससे किसान अगली रबी फसल आसानी से बो सकते हैं। ये फसलें जल की कम खपत करती हैं, जड़ों द्वारा नाइट्रोजन का स्थिरीकरण कर मृदा की उर्वरता सुधारती हैं और भूमि को ढककर मृदा अपरदन को रोकती हैं। अतः लंबी अवधि वाला कथन असत्य है।

29. (D) किसी निश्चित समय में विभिन्न फसलों के अंतर्गत क्षेत्रफल का अनुपात।
भौगोलिक और कृषि विज्ञान के संदर्भ में 'फसल प्रतिरूप' का तात्पर्य किसी निश्चित समय या कृषि वर्ष के दौरान विभिन्न फसलों के अंतर्गत बोए गए भूमि क्षेत्रफल के आनुपातिक वितरण से है। यह इस बात को प्रदर्शित करता है कि किसी दिए गए क्षेत्र में कुल कृषि योग्य भूमि का कितना प्रतिशत भाग खाद्यान्न, तिलहन, दलहन या व्यावसायिक फसलों को आवंटित किया गया है। फसल प्रतिरूप जल उपलब्धता, मृदा की किस्म, तकनीक और बाजार मूल्य जैसे कारकों से प्रभावित होता है।

केंद्र के रूप में की गई थी। बाद में इसका नाम बदलकर सरसों अनुसंधान निदेशालय कर दिया गया। यह संस्थान सरसों और राई की नई उच्च उपज वाली किस्मों के विकास, रोग नियंत्रण तथा उत्पादन तकनीक में सुधार हेतु निरंतर उन्नत वैज्ञानिक अनुसंधान कार्य संपादित करता है।

10. (C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
राजस्थान भारत में सरसों और राई के उत्पादन में प्रथम स्थान रखता है और देश के कुल उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा योगदान देता है। सरसों एक प्रमुख रबी तिलहन फसल है, न कि खरीफ फसल। इसकी बुआई अक्टूबर-नवंबर में शीतकालीन परिस्थितियों में की जाती है और इसे मध्यम सिंचाई तथा शुष्क जलवायु की आवश्यकता होती है। यह अत्यधिक मानसूनी वर्षा में नष्ट हो जाती है। इसलिए पहला कथन सही है जबकि कारण का कथन वैज्ञानिक रूप से पूरी तरह गलत है।

11. (A) अलवर > भरतपुर > श्रीगंगानगर
राजस्थान में सरसों का उत्पादन मुख्य रूप से पूर्वी और उत्तरी मैदानी भागों में केंद्रित है। राज्य के कुल सरसों उत्पादन में अलवर जिला प्रथम स्थान पर है, जिसके बाद भरतपुर और श्रीगंगानगर का क्रम आता है। इन क्षेत्रों में पाई जाने वाली उपजाऊ दोमट मृदा, अनुकूल शीतकालीन तापमान और सिंचाई के साधन सरसों की खेती के लिए अत्यंत उपयुक्त वातावरण प्रदान करते हैं। यह अवरोही क्रम राज्य के आधिकारिक कृषि आंकड़ों और भौगोलिक उत्पादन रुझानों के बिल्कुल अनुरूप है।

12. (C) उच्च सूखा सहनशीलता और ग्रीष्मकाल में हल्की रेतीली मृदा के लिए उपयुक्तता।
पश्चिमी राजस्थान की जलवायु अत्यधिक शुष्क है जहाँ वार्षिक वर्षा बहुत कम होती है। बाजरा एक अत्यंत कठोर खरीफ फसल है जिसमें सूखे को सहने की असाधारण क्षमता होती है। यह फसल थार मरुस्थल की हल्की रेतीली मृदा और उच्च तापमान वाली परिस्थितियों में आसानी से विकसित हो जाती है। बाजरे को अपने पूरे जीवन चक्र में बहुत कम जल की आवश्यकता होती है। इन विशेषताओं के कारण यह पश्चिमी राजस्थान के शुष्क परिवेश में कृषि के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है।

13. (D) बाड़मेर
राजस्थान के पश्चिमी शुष्क मैदानी क्षेत्र में बाड़मेर जिला बाजरे के क्षेत्रफल और कुल उत्पादन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। बाड़मेर की रेतीली मृदा और कम वर्षा वाली जलवायु परिस्थितियाँ बाजरे की खेती के लिए स्वाभाविक रूप से अनुकूल हैं। यद्यपि राज्य के अन्य पश्चिमी जिलों में भी बाजरा उगाया जाता है, लेकिन बाड़मेर लगातार सर्वाधिक बोए गए क्षेत्र और उत्पादन आंकड़ों के साथ अग्रणी जिलों में शामिल रहता है। बाजरा यहाँ का मुख्य खाद्यान्न भी है।

14. (C) यह अत्यधिक तुषार (पाला) प्रतिरोधकता के कारण अति-शुष्क जैसलमेर में उगाई जाती है।
ज्वार राजस्थान की एक प्रमुख खरीफ फसल है जो मुख्य रूप से मध्यवर्ती जिलों जैसे अजमेर, नागौर, पाली और टोंक में बोई जाती है। यह वर्षा पर आधारित फसल है जिसका उपयोग खाद्यान्न और पशुओं के हरे चारे दोनों रूपों में किया जाता है। अति-शुष्क जैसलमेर जिले में ज्वार की खेती नगण्य है क्योंकि ज्वार तुषार या अत्यधिक सूखे के प्रति संवेदनशील होती है और जैसलमेर में बाजरे को प्राथमिकता दी जाती है। अतः जैसलमेर से संबंधित कथन गलत है।

15. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
राजस्थान में विभिन्न फसलों का उत्पादन विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्रों में केंद्रित है। भीलवाड़ा और मेवाड़ क्षेत्र में मक्का प्रमुख खरीफ फसल है। बाड़मेर पश्चिमी शुष्क क्षेत्र में बाजरे का विशाल उत्पादक है। दक्षिण-पूर्वी राजस्थान का बारां जिला धनिया और अन्य बीजीय मसालों के उत्पादन में राज्य में अग्रणी स्थान रखता है। वहीं उत्तरी सिंचित जिला श्रीगंगानगर अपने अनुकूल वातावरण और नहरी सिंचाई के कारण किन्नू जैसे साइट्रस फलों के उत्पादन के लिए पूरे देश में प्रसिद्ध है।

16. (D) मक्का
'माही कंचन' और 'माही धवल' मक्के की उच्च उपज देने वाली उन्नत किस्में हैं। इन्हें बांसवाड़ा में स्थित कृषि अनुसंधान केंद्र द्वारा विशेष रूप से राजस्थान की जलवायु परिस्थितियों के अनुकूल विकसित किया गया है। ये किस्में कम समय में पककर तैयार हो जाती हैं और दक्षिणी राजस्थान के जनजातीय तथा पहाड़ी क्षेत्रों के लिए अत्यंत उपयुक्त हैं। इन किस्मों के प्रयोग से राज्य के दक्षिणी जिलों जैसे बांसवाड़ा, डूंगरपुर और उदयपुर में मक्का की प्रति हेक्टेयर उत्पादकता में वृद्धि हुई है।

17. (A) मक्का
राजस्थान का मेवाड़ क्षेत्र, जिसमें उदयपुर, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़ और राजसमंद जिले शामिल हैं, लाल दोमट मृदा से समृद्ध है। यह मृदा जल धारण करने की मध्यम क्षमता रखती है और मक्का की जड़ प्रणाली के विकास के लिए अत्यंत उपयुक्त मानी जाती है। मक्का मेवाड़ के निवासियों का पारंपरिक मुख्य आहार भी है और इस क्षेत्र की पहाड़ी तथा ढलान वाली भूमि पर मानसूनी वर्षा के दौरान मक्के की सघन खरीफ खेती की जाती है।

18. (C) कपास
'बीकानेरी नरमा' राजस्थान में उगाई जाने वाली कपास की एक प्रमुख और उन्नत किस्म है। 'नरमा' शब्द का प्रयोग मुख्य रूप से मध्यम और लंबे रेशे वाली अमेरिकन कपास की किस्मों के लिए किया जाता है। उत्तरी राजस्थान के श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़ और बीकानेर जिलों में नहरी सिंचाई की सहायता से इस किस्म की व्यापक पैमाने पर खेती की जाती है। यह किस्म उच्च गुणवत्ता वाले सूती वस्त्र उद्योग के लिए आवश्यक लंबे और मजबूत रेशा प्रदान करने के लिए जानी जाती है।

19. (A) गेहूं
फसल मौसम के आधार पर वर्गीकरण करने पर गेहूं अन्य तीन फसलों से स्पष्ट रूप से भिन्न है। गेहूं एक प्रमुख रबी फसल है जिसकी बुआई शीतकाल के दौरान अक्टूबर-नवंबर में की जाती है और कटाई ग्रीष्मकाल के प्रारंभ में होती है। इसके विपरीत कपास, मूंगफली और सोयाबीन सभी खरीफ मौसम की फसलें

40. (B) केवल I, II और III
प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत किसानों के लिए निर्धारित प्रीमियम दरें निश्चित हैं। खरीफ फसलों के लिए प्रीमियम 2%, रबी फसलों के लिए 1.5% तथा वार्षिक व्यावसायिक एवं बागवानी फसलों के लिए 5% तय किया गया है। यह योजना बुआई से पूर्व के जोखिमों, खड़ी फसल के प्राकृतिक आपदाओं से नुकसान तथा कटाई के बाद के नुकसान - सभी को व्यापक बीमा कवर प्रदान करती है। अतः केवल चौथे कथन में खड़ी फसल को बाहर रखने की बात गलत है।

41. (B) खेत में सहेजे गए बीजों के स्थान पर प्रमाणित बीजों से बोए गए फसल क्षेत्र का प्रतिशत।
बीज प्रतिस्थापन दर (SRR) कृषि विज्ञान का एक महत्वपूर्ण संकेतक है। इसका तात्पर्य उस कुल फसल क्षेत्र के प्रतिशत से है जो पारंपरिक रुप से घर में सहेजे गए बीजों के स्थान पर certified या नींव बीजों का उपयोग करके बोया गया है। उच्च बीज प्रतिस्थापन दर फसल की उत्पादकता और उपज में सीधी वृद्धि करती है। राजस्थान सरकार विभिन्न बीज योजनाओं के माध्यम से किसानों को प्रमाणित बीज अपनाने के लिए प्रोत्साहित करती है ताकि राज्य में बीज प्रतिस्थापन दर बढ़ सके।

42. (B) राजस्थान राज्य बीज निगम (RSSC)
राजस्थान में उच्च उपज वाली किस्मों (HYV) के प्रामाणिक बीजों का उत्पादन, प्रसंस्करण और वितरण 'राजस्थान राज्य बीज निगम' द्वारा संचालित किया जाता है। इस निगम की स्थापना राष्ट्रीय बीज परियोजना के तहत राज्य के किसानों को किफायती दरों पर गुणवत्तापूर्ण और प्रमाणित बीज समय पर उपलब्ध कराने के उद्देश्य से की गई थी। निगम की विशाल वितरण प्रणाली राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों तक फैली हुई है, जो कृषि उत्पादकता और आधुनिक बीजों की पहुंच बढ़ाने में केंद्रीय भूमिका निभाती है।

43. (A) जल संसाधनों की गंभीर कमी और अनिश्चित वर्षा।
पश्चिमी राजस्थान के शुष्क जिलों में राष्ट्रीय औसत की तुलना में कम फसल उत्पादकता का सबसे प्रमुख कारण जल संसाधनों की अत्यधिक कमी और मानसूनी वर्षा की अनिश्चितता है। यह क्षेत्र थार मरुस्थल का हिस्सा है जहाँ वार्षिक वर्षा अत्यंत अल्प और विषम होती है। इसके अतिरिक्त भूजल तालिका अत्यंत गहराई पर है और अधिकांश स्थानों पर जल खारा है। सिंचाई के स्थायी साधनों के अभाव में फसलें पूरी तरह वर्षा पर निर्भर रहती हैं जिससे उत्पादकता प्रभावित होती है।

44. (C) सेम (जलभराव) की समस्या और मृदा की लवणीयता/क्षारीयता
इंदिरा गांधी नहर कमान क्षेत्र में समुचित जल निकासी व्यवस्था के बिना अत्यधिक और निरंतर सिंचाई करने से 'सेम' यानी जलभराव की गंभीर समस्या उत्पन्न हो गई है। रिसाव और अत्यधिक जल भराव के कारण भूजल स्तर सतह के बहुत निकट आ जाता है। इसके फलस्वरुप केशिका क्रिया द्वारा मृदा की ऊपरी परत पर लवणों का जमाव हो जाता है जिससे भूमि लवणीय और क्षारीय होकर अनुपजाऊ बन जाती है। यह प्रक्रिया कृषि योग्य भूमि को भारी क्षति पहुँचाती है।

45. (A) केवल I और II
राजस्थान में कृषि विविधीकरण को बढ़ावा देने के लिए संरक्षित खेती जैसे पॉलीहाउस, ग्रीनहाउस और शेड-नेट तकनीकों पर अनुदान दिया जा रहा है। साथ ही पश्चिमी जिलों में जैतून और खजूर जैसी गैर-पारंपरिक व्यावसायिक फसलों का सफल रोपण किया गया है। राज्य सरकार ने पारंपरिक अनाजों की खेती पर कोई प्रतिबंध नहीं लगाया है, बल्कि खाद्यान्न सुरक्षा बनाए रखते हुए विविधता को प्रोत्साहन दिया है। अतः पहला और दूसरा कथन सही हैं जबकि तीसरा कथन पूरी तरह गलत है।

46. (C) लूणकरणसर
राजस्थान में कृषि विविधीकरण परियोजना के अंतर्गत बीकानेर जिले के लूणकरणसर में देश का पहला जैतून तेल निष्कर्षण संयंत्र स्थापित किया गया है। राज्य में इजराइल के तकनीकी सहयोग से जैतून की खेती प्रारंभ की गई थी। लूणकरणसर और आसपास के क्षेत्रों में उत्पादित जैतून के फलों से तेल निकालने के लिए इस आधुनिक रिफाइनरी की स्थापना की गई। इस संयंत्र ने राजस्थान को जैतून उत्पादन और प्रसंस्करण के क्षेत्र में देश का अग्रणी राज्य बना दिया है।

47. (B) उच्च उपज वाली चावल की किस्में
'माही सुगंधा' और 'चंबल' राजस्थान में उगाई जाने वाली उच्च उपज देने वाली चावल (धान) की उन्नत किस्में हैं। माही सुगंधा किस्म विशेष रुप से कृषि अनुसंधान केंद्र बांसवाड़ा द्वारा विकसित की गई है, जो अपनी सुंगंध और लंबे दानों के लिए जानी जाती है तथा दक्षिणी राजस्थान के बांसवाड़ा और डूंगरपुर जिलों में लोकप्रिय है। वहीं चंबल किस्म कोटा और हाड़ौती कमान क्षेत्र में उगाई जाती है। ये दोनों किस्में राज्य में चावल उत्पादकता बढ़ाने में सहायक हैं।

48. (D) बाजरा
वर्ष 2023 के अंतर्राष्ट्रीय मोटे अनाज (श्री अन्न) वर्ष के दौरान राजस्थान में बाजरे की फसल का सबसे प्रमुख स्थान रहा। राज्य भारत में बाजरे के क्षेत्रफल और उत्पादन दोनों में प्रथम स्थान रखता है। बाजरा राजस्थान की जलवायु के सर्वाधिक अनुकूल मोटा अनाज है, जो कम पानी और उच्च तापमान में भी प्रचुर उपज देता है। राज्य के कुल मोटे अनाज के कुल क्षेत्रफल और उत्पादन में बाजरे का योगदान 80 प्रतिशत से अधिक का भारी प्रभुत्व दर्शाता है।

49. (A) राज 3077
'राज 3077' राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विशेष रुप से विकसित गेहूं की एक अत्यंत लोकप्रिय और उच्च उपज देने वाली किस्म है। यह किस्म राज्य के सिंचित क्षेत्रों में उगाने के लिए व्यापक रुप से अनुशंसित की जाती है। इसमें देरी से बुआई करने पर भी अच्छी उपज देने तथा गेरुआ (रस्ट) रोग और तुषार के प्रति सहनशीलता प्रदर्शित करने की क्षमता होती

Downloaded from www.pdf.tube

है। राजस्थान के सिंचित उत्तरी और पूर्वी मैदानों में किसान इस किस्म की खेती बड़े पैमाने पर करते हैं।

50. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
राजस्थान में खरीफ फसलों का उत्पादन रबी की तुलना में वर्ष दर वर्ष अत्यधिक उतार-चढ़ाव (अस्थिरता) दर्शाता है। इसका मुख्य कारण यह है कि खरीफ फसलें पूरी तरह दक्षिण-पश्चिम मानसून की वर्षा पर निर्भर होती हैं। यदि मानसून अनिश्चित, देर से आए या सूखा पड़ जाए तो खरीफ की पैदावार बुरी तरह प्रभावित होती है। इसके विपरीत रबी फसलें मुख्य रूप से नहरी या नलकूप सिंचाई पर आधारित होती हैं। अतः कथन और कारण दोनों सही हैं और व्याख्या भी सही है।

51. (B) ग्वार < बाजरा < गेहूं < चावल
विभिन्न फसलों की जल आवश्यकता उनके वानस्पतिक गुणों पर निर्भर करती है। ग्वार अत्यंत शुष्क फसल है जिसे न्यूनतम जल चाहिए। बाजरा भी कम जल खपत वाली फसल है किंतु ग्वार से थोड़ी अधिक वर्षा चाहती है। रबी की फसल गेहूं को इसके विकास चक्र के दौरान कई बार सिंचाई की आवश्यकता होती है। जबकि चावल (धान) एक जल-गहन फसल है जिसे पूरे मौसम खेत में पानी भरकर रखना पड़ता है। अतः जल आवश्यकता का बढ़ता क्रम बिल्कुल सही है।

52. (D) ल्यूसर्न (रिजका)
'ल्यूसर्न', जिसे स्थानीय भाषा में 'रिजका' कहा जाता है, राजस्थान के सिंचित क्षेत्रों में उगाई जाने वाली रबी मौसम की एक प्रमुख और बहुवर्षीय चारे की फसल है। यह दुधारू पशुओं के लिए एक अत्यंत पौष्टिक और सुपाच्य हरा चारा माना जाता है जिसमें प्रोटीन की मात्रा प्रचुर होती है। शीतकाल के दौरान इसकी बार-बार कटाई की जा सकती है। जयपुर, अलवर और अजमेर जिलों के सिंचित खेतों में डेयरी व्यवसाय को संबल देने के लिए रिजका व्यापक रूप से बोया जाता है।

53. (B) सोयाबीन
राजस्थान का हाड़ौती क्षेत्र (कोटा, बूंदी, बारां और झालावाड़ जिले) सोयाबीन के उत्पादन में राज्य में प्रथम स्थान रखता है। सोयाबीन एक प्रमुख खरीफ तिलहन और प्रोटीन समृद्ध फसल है। हाड़ौती क्षेत्र की मध्यम काली गहरी मृदा और प्रचुर मानसूनी वर्षा सोयाबीन की खेती के लिए अत्यंत उपयुक्त वातावरण निर्मित करती है। भारत के कुल सोयाबीन उत्पादन में मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र के बाद राजस्थान का भी महत्वपूर्ण स्थान है, जिसमें हाड़ौती का मुख्य योगदान है।

54. (C) रबी तिलहन के रूप में
अलसी राजस्थान में मुख्य रूप से रबी मौसम की तिलहनी फसल के रूप में उगाई जाती है। इसकी बुआई अक्टूबर-नवंबर में की जाती है और कटाई मार्च-अप्रैल में होती है। अलसी के बीजों से प्राप्त तेल का उपयोग खाद्य उद्देश्यों के साथ-साथ औद्योगिक कार्यों जैसे पेंट, वार्निश और छपाई की स्याही बनाने में किया जाता है। राज्य के दक्षिण-पूर्वी जिलों जैसे कोटा, झालावाड़, बूंदी और प्रतापगढ़ में अलसी की खेती प्रमुखता से देखने को मिलती है।

55. (A) P-4, Q-3, R-2, S-1
राजस्थान के प्रमुख कृषि अनुसंधान संस्थान विशिष्ट जिलों में स्थापित हैं। केंद्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान (CAZRI) जोधपुर में स्थित है। कृषि विश्वविद्यालय कोटा में स्थापित है। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय बीकानेर जिले में स्थित है जो राज्य का प्रथम कृषि विश्वविद्यालय था। वहीं महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय उदयपुर में स्थित है, जो दक्षिणी राजस्थान में कृषि शिक्षा एवं अनुसंधानों का संचालन करता है।

NODIA

56. (A) जालौर
जालौर जिला राजस्थान में ईसबगोल (घोड़ा जीरा) की व्यावसायिक खेती के लिए पूरे देश में प्रसिद्ध है। ईसबगोल एक महत्वपूर्ण औषधीय रबी फसल है जिसके बीजों के छिलके का उपयोग पाचन संबंधी दवाओं में किया जाता है। जालौर का शुष्क वातावरण और बलुई दोमट मृदा ईसबगोल की बेहतर गुणवत्ता के लिए अत्यंत अनुकूल है। जालौर के अतिरिक्त बाड़मेर और सिरोही जिलों में भी इसकी खेती की जाती है, परंतु जालौर इसमें अग्रणी उत्पादक केंद्र है।

57. (B) रबी मौसम के दौरान सीमांत और नमी के तनाव वाली मृदा परिस्थितियों में।
तारामीरा राजस्थान में उगाई जाने वाली एक अत्यंत कठोर रबी तिलहन फसल है। इसे प्रायः सीमांत, कम उपजाऊ और नमी के तनाव वाली मृदा परिस्थितियों में बोया जाता है जहाँ अन्य रबी फसलों का उगना कठिन होता है। यह फसल बहुत कम पानी और न्यूनतम देखभाल में भी पककर तैयार हो जाती है। नागौर, बीकानेर, जयपुर और चूरू जिलों में वर्षा आधारित या सीमित सिंचाई वाले खेतों में तारामीरा की खेती व्यापक रूप से की जाती है।

58. (B) खरीफ
राजस्थान में तिल एक प्रमुख पारंपरिक खरीफ तिलहन फसल है। इसकी बुआई मानसूनी वर्षा के प्रारंभ होते ही जून-जुलाई महीनों में की जाती है और कटाई सितंबर-अक्टूबर में की जाती है। तिल के पौधे को गर्म जलवायु और हल्की दोमट मृदा की आवश्यकता होती है। राज्य के पाली, सवाई माधोपुर, करौली और जोधपुर जिलों में तिल का बड़े पैमाने पर उत्पादन किया जाता है। इसके बीजों से उच्च गुणवत्ता वाला खाद्य तेल प्राप्त होता है।

59. (A) कृषि का व्यावसायीकरण
राजस्थान की कृषि प्रणाली में पारंपरिक जीवन-निर्वाह खाद्यान्न फसलों के स्थान पर बाजार-उन्मुख नकदी फसलों, तिलहनों, मसालों और बागवानी फसलों को अपनाने की प्रक्रिया को 'कृषि का व्यावसायीकरण' कहा जाता है। सिंचाई सुविधाओं के विस्तार, उन्नत तकनीकों के आगमन और बाजार तक बेहतर पहुंच ने किसानों को अधिक लाभ देने वाली फसलों की ओर आकर्षित किया है। यह परिवर्तन ग्रामीण अर्थव्यवस्था को

मजबूत बनाने और किसानों की आय में वृद्धि करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

60. (A) केवल I, II और III
जायद फसलें मुख्य रूप से रबी और खरीफ के मध्य मार्च से जून के शुष्क ग्रीष्मकालीन महीनों में उगाई जाती हैं। इन फसलों में खरबूजा, तरबूज, ककड़ी और खीरा जैसी उच्च जल सामग्री वाली फसलें शामिल हैं। चूंकि इस समय मानसून अनुपस्थित रहता है, इसलिए इनकी खेती पूरी तरह सुनिश्चित नहरी या नलकूप सिंचाई पर आश्रित होती है। गेहूं और चना रबी मौसम की फसलें हैं, जायद की नहीं। अतः प्रथम तीन कथन सही हैं।

61. (A) 1, 2, 3, 4
भारत में सरसों उत्पादन के घटते क्रम में अग्रणी राज्यों का सही अनुक्रम राजस्थान, मध्य प्रदेश, हरियाणा और उत्तर प्रदेश है। राजस्थान देश के कुल सरसों उत्पादन में 40% से अधिक योगदान के साथ निर्विवाद रूप से प्रथम स्थान पर है। इसके पश्चात् मध्य प्रदेश दूसरे स्थान पर तथा हरियाणा तीसरे स्थान पर आता है। उत्तर प्रदेश इस सूची में चौथे स्थान पर स्थित है। यह क्रम नवीनतम राष्ट्रीय कृषि आंकड़ों के पूर्णतः अनुकूल है।

62. (C) अपर्याप्त ग्रामीण परिवहन अवसंरचना और APMC मंडियों से अधिक दूरी।
राजस्थान में छोटे और सीमांत किसानों के लिए कृषि बाजार तक पहुँच में सबसे बड़ी बाधा अपर्याप्त ग्रामीण परिवहन साधन और APMC (कृषि उपज मंडी समिति) मंडियों का काफी दूर स्थित होना है। दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में पक्की सड़कों और किफायती परिवहन सुविधाओं के अभाव के कारण छोटे किसानों को अपनी उपज स्थानीय बिचौलियों को कम दामों पर बेचने के लिए मजबूर होना पड़ता है। इससे उन्हें अपनी फसल का उचित बाजार मूल्य नहीं मिल पाता है।

63. (B) सोयाबीन - आर्द्र दक्षिण-पूर्वी मैदान
राजस्थान में सोयाबीन की खेती मुख्य रूप से आर्द्र दक्षिण-पूर्वी मैदानी भाग (हाड़ौती क्षेत्र) में केंद्रित है, जहाँ पर्याप्त मानसूनी वर्षा और भारी काली मृदा पाई जाती है। इसके विपरीत मक्का शुष्क पश्चिमी मैदान के स्थान पर अर्ध-आर्द्र दक्षिणी राजस्थान में उगता है। बाजरा शुष्क पश्चिमी मैदानों की प्रमुख फसल है, न कि बाढ़ संभाव्य पूर्वी मैदानों की। वहीं कपास सिंचित उत्तरी मैदानों में उगाई जाती है। अतः सोयाबीन और आर्द्र दक्षिण-पूर्वी मैदान का युग्म सही है।

64. (D) धनिया - जैसलमेर
धनिया और जैसलमेर का युग्म पूरी तरह गलत है। धनिया एक प्रमुख बीजीय मसाला फसल है जिसकी सघन खेती राजस्थान के दक्षिण-पूर्वी जिलों जैसे बारां, कोटा और झालावाड़ में की जाती है। अति-शुष्क मरुस्थलीय जिला जैसलमेर धनिए के उत्पादन के लिए उपयुक्त नहीं है। अन्य दिए गए युग्म सही हैं: श्रीगंगानगर में गेहूं, बीकानेर में चना तथा बीकानेर में मूंगफली का भारी उत्पादन होता है। अतः धनिया-जैसलमेर गलत युग्म का प्रतिनिधित्व करता है।

65. (A) केवल I और II
राजस्थान में खरीफ तिलहनों में सोयाबीन और मूंगफली अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। सोयाबीन का सघन उत्पादन हाड़ौती क्षेत्र (कोटा, झालावाड़) में होता है। मूंगफली के लिए बलुई दोमट मृदा आवश्यक है और बीकानेर तथा जोधपुर इसके प्रमुख उत्पादक हैं। अरंडी भी एक खरीफ तिलहन फसल है, जो मुख्य रूप से पश्चिमी और उत्तरी राजस्थान में बोई जाती है, न कि मेवाड़ में रबी फसल के रूप में। अतः पहला और दूसरा कथन सही हैं जबकि तीसरा असत्य है।

66. (C) मक्का
बांसवाड़ा जिला दक्षिणी राजस्थान के उस क्षेत्र में स्थित है जहाँ लाल दोमट मृदा और उबड़-खाबड़ पहाड़ी स्थलाकृति पाई जाती है। इस भौगोलिक स्थिति में खरीफ मौसम के दौरान उगाने के लिए 'मक्का' सबसे उपयुक्त फसल है। मक्का ढलानदार भूमि पर अच्छी तरह विकसित होती है और लाल दोमट मृदा इसकी जड़ों के लिए अनुकूल वातावरण देती है। इसके अतिरिक्त मक्का इस क्षेत्र के जनजातीय किसानों का मुख्य पारंपरिक आहार भी है।

67. (A) कपास - गेहूं
हनुमानगढ़ जिला इंदिरा गांधी नहर कमान क्षेत्र का हिस्सा है जहाँ सुनिश्चित नहरी सिंचाई उपलब्ध है। इस सिंचित क्षेत्र में किसानों द्वारा अपनाया जाने वाला सबसे व्यापक और लाभदायक फसल चक्र 'कपास - गेहूं' है। किसान खरीफ मौसम के दौरान नकदी फसल के रूप में अमेरिकन कपास बोते हैं, जिसकी कटाई के बाद रबी मौसम में गेहूं की खेती करते हैं। यह चक्र भूमि का इष्टतम उपयोग करता है और किसानों को उच्च आर्थिक रिटर्न प्रदान करता है।

68. (D) डूंगरपुर
राजस्थान के डूंगरपुर जिले को आधिकारिक तौर पर राज्य का पहला पूर्ण जैविक खेती वाला जिला घोषित किया गया था। इस जिले में रासायनिक उर्वरकों और सिंथेटिक कीटनाशकों के प्रयोग को नियंत्रित करके प्राकृतिक और जैविक कृषि पद्धतियों को बड़े पैमाने पर बढ़ावा दिया गया। जनजातीय बहुल इस जिले की पारंपरिक कृषि प्रणालियों को जैविक प्रमाणीकरण से जोड़ा गया, जिससे पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ किसानों को उनकी उपज का बेहतर मूल्य प्राप्त करने में मदद मिली।

69. (B) पश्चिमी शुष्क जिलों में प्रति हेक्टेयर उर्वरक की खपत सर्वाधिक है।
पश्चिमी शुष्क जिलों में प्रति हेक्टेयर रासायनिक उर्वरक की खपत सर्वाधिक होने का कथन पूरी तरह असत्य है। वास्तव में पश्चिमी जिलों में वर्षा की कमी और सीमित सिंचाई के कारण उर्वरकों का उपयोग बहुत कम होता है। इसके विपरीत, उत्तरी सिंचित जिलों जैसे श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ तथा हाड़ौती क्षेत्र में प्रति हेक्टेयर उर्वरक खपत सबसे अधिक है। गेहूं और सरसों में डीएपी और यूरिया का भारी प्रयोग किया जाता है। अतः असत्य कथन स्पष्ट है।

Click Here to Buy book on Amazon

70. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
विगत दो दशकों में राजस्थान की कृषि में व्यावसायिक नकदी फसलों जैसे सरसों, कपास, मूंगफली और सोयाबीन की ओर तीव्र झुकाव देखा गया है। इस परिवर्तन का मुख्य कारण राज्य में ड्रिप-स्प्रिंकलर जैसी सूक्ष्म-सिंचाई प्रणालियों का प्रसार और नहरी नेटवर्क का विस्तार है। सुनिश्चित सिंचाई ने मानसूनी अनिश्चितता से होने वाले जोखिम को काफी हद तक कम कर दिया है। अतः कथन और कारण दोनों सत्य हैं तथा कारण सही व्याख्या प्रस्तुत करता है।

71. (D) सकल फसल क्षेत्र का शुद्ध बोए गए क्षेत्र से गणितीय अनुपात, जिसे 100 से गुणा किया जाता है।
कृषि भूगोल में फसल सघनता (Cropping Intensity) को सकल बोए गए क्षेत्रफल (Gross Cropped Area) और शुद्ध बोए गए क्षेत्रफल (Net Sown Area) के अनुपात के रूप में परिभाषित किया जाता है, जिसे प्रतिशत में व्यक्त करने के लिए 100 से गुणा किया जाता है। यह सूचकांक दर्शाता है कि एक कृषि वर्ष में एक ही भूमि पर कितनी बार फसलें उगाई गई हैं। उच्च फसल सघनता सिंचाई सुविधाओं की प्रचुरता और उन्नत कृषि तकनीकों की उपस्थिति का संकेत देती है।

72. (A) प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना (PMKSY)
राजस्थान में जल उपयोग दक्षता बढ़ाने और 'प्रति बूंद अधिक फसल' के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए 'प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना' लागू की गई है। इस योजना के अंतर्गत किसानों को ड्रिप (बूंद-बूंद) और स्प्रिंकलर (फव्वारा) सिंचाई प्रणालियों की स्थापना पर भारी राज्य एवं केंद्रीय सब्सिडी प्रदान की जाती है। राजस्थान जैसे शुष्क राज्य में, जहाँ भूजल सीमित है, यह योजना जल संरक्षण और कृषि उत्पादकता बढ़ाने में अत्यंत कारगर साबित हुई है।

73. (B) गन्ना
राजस्थान में राजफेड (RAJFED) द्वारा मूल्य समर्थन योजना (PSS) के अंतर्गत मुख्य रूप से अधिसूचित तिलहनों और दलहनों जैसे सरसों, चना, मूंग, उड़द और मूंगफली की खरीद की जाती है। गन्ना एक व्यावसायिक फसल है जिसकी खरीद राजफेड द्वारा PSS के तहत नहीं की जाती, बल्कि गन्ने के लिए सरकार द्वारा उचित और लाभकारी मूल्य (FRP) निर्धारित किया जाता है तथा चीनी मिलें सीधे किसानों से इसकी खरीद करती हैं। अतः गन्ना अलग है।

74. (B) ग्वार
वानस्पतिक वर्गीकरण और व्यावसायिक उपयोग की दृष्टि से ग्वार दिए गए समूह में भिन्न है। यद्यपि मूंग, मोठ और उड़द विशुद्ध रूप से पारंपरिक दलहनी (दाल) फसलें हैं जो मुख्य रूप से मानव उपभोग के लिए उगाई जाती हैं, ग्वार का प्राथमिक व्यावसायिक उपयोग इसके बीजों से ग्वार गम निकालने में होता है, जिसका भारी औद्योगिक महत्व है। यद्यपि ग्वार फलीदार है, परंतु इसका मुख्य उद्देश्य पेट्रोकेमिकल और खाद्य उद्योगों के लिए औद्योगिक कच्चा माल प्रदान करना है।

75. (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
राजस्थान की विभिन्न कृषि पहलें विशिष्ट उद्देश्यों की पूर्ति करती हैं। e-NAM राष्ट्रीय स्तर पर कृषि मंडियों को एकीकृत कर पारदर्शी मूल्य खोज की सुविधा देता है। PMFBY प्राकृतिक आपदाओं के कारण फसल क्षति के विरुद्ध बीमा सुरक्षा प्रदान करती है। मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना मिट्टी के पोषक तत्वों की स्थिति का आकलन कर संतुलित उर्वरक उपयोग की सिफारिश करती है। जबकि राज किसान साथी पोर्टल राज्य के किसानों के लिए समस्त सरकारी योजनाओं हेतु एकल खिड़की डिजिटल सेवा है।

76. (C) 0.1% सल्फ्यूरिक अम्ल के तनु घोल का छिड़काव करना या खेत में हल्की सिंचाई करना।
राजस्थान में शीतकाल के दौरान अत्यधिक ठंड से फसलों को पाले से बचाने के लिए 0.1% गंधक के अम्ल (सल्फ्यूरिक एसिड) के घोल का छिड़काव करना अत्यंत प्रभावी उपाय है। इसके अतिरिक्त पाला पड़ने की संभावना वाले दिनों में खेत में हल्की सिंचाई करने से मृदा का तापमान बढ़ जाता है जिससे पौधों के ऊतक जमने से बच जाते हैं। ये उपाय सरसों और चने जैसी रबी फसलों को पाले के घातक प्रभाव से सुरक्षित रखते हैं।

77. (D) राज्य कृषि विश्वविद्यालय (SAUs) और आईसीएआर (ICAR)
राजस्थान में कृषि प्रसार सेवाओं का संचालन और प्रत्येक जिले में स्थित कृषि विज्ञान केंद्रों (KVKs) का सीधे प्रबंधन राज्य कृषि विश्वविद्यालयों और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) के संयुक्त तत्वावधान में किया जाता है। ये संस्थान नवीन प्रयोगशाला अनुसंधानों को सीधे किसानों के खेतों तक पहुँचाने का कार्य करते हैं। कृषि विज्ञान केंद्र किसानों को उन्नत तकनीकों, प्रमाणित बीजों और आधुनिक कृषि पद्धतियों का प्रत्यक्ष प्रशिक्षण देकर ग्रामीण कृषि विकास में मुख्य भूमिका निभाते हैं।

NODIA

78. (C) लगभग 28-30%
राजस्थान के सकल राज्य मूल्य वर्धन (GSVA) में कृषि और संबद्ध क्षेत्रों (पशुपालन, वानिकी, मत्स्य पालन) का स्थिर मूल्यों पर अनुमानित योगदान लगभग 28 से 30 प्रतिशत के मध्य बना हुआ है। यह आंकड़ा दर्शाता है कि सेवा क्षेत्र और उद्योग क्षेत्र के बढ़ते प्रसार के बावजूद कृषि आज भी राजस्थान की अर्थव्यवस्था का एक अत्यंत सशक्त आधार स्तंभ है। राज्य की आधी से अधिक कार्यशील जनसंख्या अपनी आजीविका के लिए प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर है।

79. (B) गेहूं
गेहूं एक गैर-फलीदार खाद्यान्न फसल है जिसे इष्टतम उपज प्राप्त करने के लिए प्रति हेक्टेयर नाइट्रोजन युक्त उर्वरकों (जैसे यूरिया) की उच्च खुराक की आवश्यकता होती है। इसके विपरीत चना, मूंग और मोठ फलीदार (लेग्युमिनस) फसलें हैं, जिनकी जड़ों में राइज़ोबियम जीवाणु पाए जाते हैं। ये जीवाणु वायुमंडलीय नाइट्रोजन का प्राकृतिक रूप से स्थिरीकरण करते हैं। इसलिए दलहनी फसलों को बाहर से बहुत कम नाइट्रोजन

की आवश्यकता होती है, जबकि गेहूं को प्रचुर नाइट्रोजन चाहिए।

80. (B) केवल I, II और III
राजस्थान में मुख्यमंत्री कृषक साथी योजना कृषि दुर्घटनाओं में वित्तीय सुरक्षा देती है। PM-KUSUM योजना कृषि सौर पंपों की स्थापना में सहायता करती है तथा तारबंदी योजना फसलों की आवारा पशुओं से सुरक्षा हेतु अनुदान देती है। परंतु राज्य सरकार उर्वरकों पर 100% सब्सिडी प्रदान नहीं करती, बल्कि केंद्रीय उर्वरक सब्सिडी प्रणाली लागू होती है। अतः प्रथम तीन कथन पूरी तरह सत्य हैं जबकि चौथा कथन पूर्णतः असत्य है।

81. (A) बिना पंक्ति व्यवस्था के एक ही भूमि पर दो या दो से अधिक फसलों को एक साथ बोना।
राजस्थान के वर्षा आधारित शुष्क क्षेत्रों में अपनाई जाने वाली 'मिश्रित फसल' पद्धति का तात्पर्य एक ही खेत में बिना किसी निश्चित पंक्ति व्यवस्था के दो या दो से अधिक फसलों के बीजों को मिलाकर बोने से है। उदाहरण के लिए, किसान बाजरा, ग्वार और मोठ के बीजों को एक साथ मिलाकर बो देते हैं। यह पारंपरिक तकनीक मानसूनी अनिश्चितता के जोखिम को कम करती है; यदि वर्षा कम होने से एक फसल नष्ट हो जाए तो दूसरी फसल बच जाती है।

82. (C) कृषि जोतों का विखंडन
राजस्थान की कृषि के समक्ष सूखा, भूजल लवणीयता और तापांतर प्राकृतिक या कृषि-जलवायु संबंधी चुनौतियाँ हैं। इसके विपरीत 'कृषि जोतों का विखंडन' एक संस्थागत और सामाजिक-आर्थिक चुनौती है। उत्तराधिकार नियमों और भूमि विभाजन के कारण किसानों के पास भूमि का आकार लगातार छोटा और टुकड़ों में बँटता जा रहा है। छोटे और बिखरे हुए खेतों पर आधुनिक कृषि यंत्रों जैसे ट्रैक्टर और कंबाइन हार्वेस्टर का कुशलतापूर्वक संचालन करना अत्यंत कठिन एवं खर्चीला हो जाता है।

83. (A) व्यावसायिक बागवानी और मसाला फसलें
पुनर्गठित मौसम आधारित फसल बीमा योजना (RWBCIS) राजस्थान में मुख्य रूप से व्यावसायिक बागवानी और मसाला फसलों को सुरक्षा प्रदान करने के लिए लागू की गई है। यह योजना वर्षा, तापमान, आर्द्रता, पाला और हवा की गति जैसे मौसम घटकों में होने वाले प्रतिकूल परिवर्तनों के कारण होने वाली क्षति की भरपाई करती है। चूंकि बागवानी फसलें मौसमी उतार-चढ़ाव के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होती हैं, इसलिए यह योजना किसानों को वित्तीय जोखिम से बचाती है।

84. (D) राजस्थान
वैश्विक स्तर पर भारत ग्वार का सबसे बड़ा उत्पादक देश है और भारत के भीतर अकेले राजस्थान राज्य का ग्वार उत्पादन में एकाधिकार जैसा वर्चस्व है। राजस्थान देश के कुल ग्वार उत्पादन का लगभग 70 से 80 प्रतिशत हिस्सा उत्पादित करता है। राजस्थान में उत्पादित ग्वार के गम का अंतरराष्ट्रीय बाजार में व्यापक निर्यात किया जाता है। अतः राजस्थान में ग्वार की पैदावार का सीधा प्रभाव विश्व बाजार में ग्वार गम की कीमतों और आपूर्ति पर पड़ता है।

85. (B) बाजरा और ज्वार जैसे प्रमुख मोटे अनाजों के उत्पादन, उपभोग, प्रसंस्करण और मूल्य संवर्धन को बढ़ावा देना।
"राजस्थान मिलेट्स प्रोत्साहन मिशन" का प्राथमिक उद्देश्य राज्य में बाजरा और ज्वार जैसे प्रमुख मोटे अनाजों के उत्पादन, उपभोग, प्रसंस्करण और मूल्य संवर्धन को व्यापक रूप से बढ़ावा देना है। इस मिशन के तहत किसानों को उन्नत मिलेट्स बीजों के मिनीकिट वितरित किए जाते हैं और मिलेट्स आधारित प्रसंस्करण इकाइयों तथा स्टार्टअप्स की स्थापना के लिए वित्तीय प्रोत्साहन दिया जाता है। इसका लक्ष्य मिलेट्स के पोषण मूल्यों के प्रति जन-जागरुकता फैलाना और किसानों की आय बढ़ाना है।

86. (C) हरित बाल रोग / जोगिया (Green ear disease)
'हरित बाल रोग', जिसे स्थानीय भाषा में 'जोगिया' भी कहा जाता है, राजस्थान में बाजरे की फसल को प्रभावित करने वाला एक प्रमुख फफूंद जनित रोग है। इस रोग के कारण बाजरे के पौधे के सिट्टे (बालियों) के स्थान पर हरी पत्तियों जैसी असामान्य गुच्छेदार संरचनाएं बन जाती हैं, जिससे बीजों का निर्माण रुक जाता है। यह कवक जनित बीमारी बाजरे की उपज में भारी गिरावट का कारण बनती है और इसके नियंत्रण हेतु बीजोपचार की सलाह दी जाती है।

87. (D) राजस्थान भारत में बाजरा, सरसों और ग्वार जैसी फसलों के उत्पादन में लगभग एकाधिकार रखता है।
राजस्थान के कृषि परिदृश्य में बाजरा, सरसों और ग्वार फसलों का निर्विवाद प्रभुत्व है। राज्य भारत में इन तीनों फसलों के कुल उत्पादन और बोए गए क्षेत्र दोनों में प्रथम स्थान पर है और लगभग एकाधिकार जैसी स्थिति रखता है। इसके विपरीत, राजस्थान चावल का बड़ा उत्पादक नहीं है और न ही यहाँ प्रचुर सदावाही नदियां हैं। राज्य का शुद्ध बोया गया क्षेत्र भौगोलिक क्षेत्रफल के 50% से अधिक है। अतः एकाधिकार वाला कथन बिल्कुल सत्य है।

88. (A) कपास
राजस्थान के उत्तरी सिंचित जिलों विशेषकर श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ में कपास की फसल को स्थानीय रूप से "सफेद सोना" कहा जाता है। इन जिलों में इंदिरा गांधी और गंग नहर तंत्र की सहायता से अमेरिकन और देसी कपास की प्रचुर खेती की जाती है। कपास के खिलते हुए सफेद डोडे पूरे खेत को आच्छादित कर लेते हैं और इसके उच्च व्यावसायिक मूल्य तथा किसानों की आर्थिक समृद्धि में योगदान के कारण इसे यह विशेष उपनाम दिया गया है।

89. (B) मूंगफली
राजस्थान में मूंगफली की खरीफ फसल 'सफेद लट' (White Grub) नामक कीट के प्रकोप के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होती है। सफेद लट के कीड़े (भृंग के लार्वा) बलुई मृदा के भीतर रहकर मूंगफली के पौधों की जड़ों और विकसित हो रही फलियों को चबाकर नष्ट कर देते हैं। इससे पौधे सूख जाते हैं और फसल को व्यापक नुकसान पहुँचता है। जयपुर, बीकानेर और सीकर के मूंगफली उत्पादक क्षेत्रों में इस कीट का प्रकोप विशेष रूप से देखा जाता है।

Downloaded from www.pdf.tube

90. (B) राजस्थान राज्य कृषि विपणन बोर्ड (RSAMB)
राजस्थान राज्य कृषि विपणन बोर्ड (RSAMB) राज्य में कृषि उपज मंडी समितियों के प्रभावी विनियमन, विपणन अवसंरचना के विकास और किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य दिलाने के लिए उत्तरदायी वैधानिक निकाय है। इसकी स्थापना वर्ष 1974 में की गई थी। यह बोर्ड राज्य भर में आधुनिक कृषि मंडियों, गोंदामों और ग्रामीण हाट-बाजारों का निर्माण करता है ताकि मध्यस्थों के शोषण को समाप्त करके किसानों को विपणन की पारदर्शी प्रणाली सुलभ कराई जा सके।

www.nodia.in

NODIA

अध्याय 18

राजस्थान की जनसंख्या

1. 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत की कुल जनसंख्या में राजस्थान की जनसंख्या का अनुमानित हिस्सा कितना है?
   (A) 4.56 प्रतिशत
   (B) 5.66 प्रतिशत
   (C) 6.76 प्रतिशत
   (D) 10.41 प्रतिशत

2. जनगणना 2011 के अंतिम आंकड़ों के अनुसार, राजस्थान की कुल जनसंख्या कितनी है?
   (A) 5,65,07,188
   (B) 7,85,48,437
   (C) 8,10,34,221
   (D) 6,85,48,437

3. राजस्थान की जनसंख्या के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   कथन I : राजस्थान का जनघनत्व 2001 में 165 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी से बढ़कर 2011 में 200 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी हो गया।
   कथन II : 1991-2001 के दशक की तुलना में 2001-2011 के दशक में राजस्थान की दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर में वृद्धि दर्ज की गई।
   उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
   (A) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
   (B) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
   (C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
   (D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है

4. 2011 की जनगणना में राजस्थान के निम्नलिखित में से किस जिले में सर्वाधिक कुल (निरपेक्ष) जनसंख्या दर्ज की गई?
   (A) जोधपुर
   (B) अलवर
   (C) जयपुर
   (D) नागौर

5. 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान के निम्नलिखित में से किस जिले में सबसे कम कुल (निरपेक्ष) जनसंख्या दर्ज की गई?
   (A) जैसलमेर
   (B) प्रतापगढ़
   (C) सिरोही
   (D) बूंदी

6. राजस्थान के निम्नलिखित जिलों पर विचार कीजिए:
   I. बाड़मेर
   II. जोधपुर
   III. जैसलमेर
   IV. बांसवाड़ा
   निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प उनकी दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर (2001-2011) का सही अवरोही (घटता) क्रम दर्शाता है?
   (A) I, II, III, IV
   (B) I, III, II, IV
   (C) III, I, IV, II
   (D) I, III, IV, II

7. राजस्थान की जनसंख्या वृद्धि के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
   कथन (A) : राजस्थान के पश्चिमी मरुस्थलीय जिले सामान्यतः पूर्वी और दक्षिणी जिलों की तुलना में उच्च दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर प्रदर्शित करते हैं।
   कारण (R) : ऐतिहासिक रूप से इन जिलों का जनसंख्या आधार कम था, जिसके साथ उच्च जन्म दर और निम्न साक्षरता स्तर भी जुड़ा हुआ था।
   (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
   (B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
   (C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
   (D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

8. 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान का कुल जनघनत्व कितना है?
   (A) 165 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी
   (B) 382 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी
   (C) 200 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी
   (D) 400 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी

9. राजस्थान के उन जिलों के समूह की पहचान कीजिए जहाँ जनघनत्व 100 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर से कम है (जनगणना 2011)।
   (A) जैसलमेर, चूरू और जोधपुर
   (B) बीकानेर, बाड़मेर और जालोर
   (C) जैसलमेर, बाड़मेर और पाली
   (D) जैसलमेर, बीकानेर और बाड़मेर

Click Here to Buy book on Flipkart

(C) केवल I और III
(D) I, II और III

52. 2001-2011 के दौरान राजस्थान में शहरी जनसंख्या की दशकीय वृद्धि दर कितनी थी?
(A) 19.0 प्रतिशत
(B) 21.3 प्रतिशत
(C) 29.0 प्रतिशत
(D) 24.9 प्रतिशत

53. 1901 से राजस्थान में जनसंख्या वृद्धि की ऐतिहासिक प्रवृत्ति के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए:
(A) राज्य ने केवल 1911-1921 के दौरान ऋणात्मक दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर्ज की थी।
(B) 1901 के बाद से प्रत्येक जनगणना दशक में कुल जनसंख्या में निरंतर विस्तार हुआ।
(C) दशकीय जनसंख्या वृद्धि का अब तक का उच्चतम स्तर 1991-2001 की जनगणना में दर्ज किया गया था।
(D) 1951 के बाद राज्य की जनसंख्या की वार्षिक वृद्धि दर में निरंतर गिरावट आई।

54. स्वतंत्रता के बाद से राजस्थान ने किस दशक में अपनी उच्चतम ऐतिहासिक दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर दर्ज की?
(A) 1961-1971
(B) 1971-1981
(C) 1981-1991
(D) 1991-2001

55. राजस्थान के जिलों की दशकीय वृद्धि दर (2001-2011) के संबंध में सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए:
सूची I : जिला
P. श्रीगंगानगर
Q. झुंझुनूं
R. पाली
S. बूंदी
सूची II : दशकीय वृद्धि दर
1. 10.0%
2. 11.7%
3. 11.9%
4. 15.4%
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-1, R-4, S-3
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

56. भारत की जनगणना में, 'सीमांत श्रमिक' को उस व्यक्ति के रूप में परिभाषित किया जाता है जिसने कार्य किया हो:
(A) एक वर्ष में 183 दिनों से अधिक लेकिन 300 दिनों से कम।
(B) एक वर्ष में ठीक 365 दिन लेकिन न्यूनतम मजदूरी से कम कमाता हो।
(C) एक वर्ष में 183 दिनों (6 महीने) से कम।
(D) केवल कृषि कटाई के मौसम के दौरान अधिकतम 30 दिनों के लिए।

NODIA

57. जनगणना 2011 के अनुसार राजस्थान की कुल कार्यशील जनसंख्या में से 'मुख्य श्रमिकों' का अनुमानित प्रतिशत कितना है?
(A) 30.2 प्रतिशत
(B) 50.0 प्रतिशत
(C) 85.5 प्रतिशत
(D) 70.4 प्रतिशत

58. राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों से महिलाओं के बाह्य-प्रवास का मुख्य कारण कौन-सा समाजशास्त्रीय कारक है?
(A) विवाह के उपरांत पति के आवास पर बसने से जुड़े सामाजिक और वैवाहिक रिवाज।
(B) उन्नत तकनीकी उपाधि और उच्च शैक्षणिक शिक्षा की प्राप्ति।
(C) बड़े कृषि फार्मों पर दीर्घकालिक मजदूरी रोजगार प्राप्त करना।
(D) आधिकारिक प्रशासनिक पदस्थापन और सरकारी सेवाओं में स्थानांतरण।

59. राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों से बाह्य-प्रवास के लिए निम्नलिखित में से किसे 'आकर्षण कारक' के बजाय 'प्रतिकर्ष कारक' माना जाता है?
(A) शहरी औद्योगिक क्षेत्रों में बेहतर रोजगार के अवसर
(B) बार-बार पड़ने वाला सूखा और कृषि आय की कमी
(C) शहरों में उन्नत स्वास्थ्य और शैक्षणिक अवसंरचना
(D) गंतव्य क्षेत्रों में उच्च जीवन स्तर और आधुनिक सुविधाएं

60. किसी जनसंख्या के 'आश्रितता अनुपात' की गणना किसके अनुपात द्वारा की जाती है?
(A) कुल पुरुष कार्यबल के सापेक्ष आर्थिक रूप से सक्रिय कार्यशील महिलाओं की कुल संख्या।
(B) कार्यशील आयु की जनसंख्या (15-59 वर्ष) के सापेक्ष गैर-कार्यशील आयु की जनसंख्या (0-14 और 60+ वर्ष)।
(C) सक्रिय रूप से कार्यरत श्रमिकों के सापेक्ष बेरोजगार वयस्क व्यक्तियों की कुल संख्या।
(D) सेवा क्षेत्र में संलग्न शहरी जनसंख्या के सापेक्ष कृषि-आधारित ग्रामीण जनसंख्या।

61. राजस्थान के जनांकिकीय आंकड़ों की प्रमुख विशेषताओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. कुल साक्षरता दर 66.1% है।
II. शिशु लिंगानुपात 2001 में 909 से घटकर 2011 में 888 हो गया।
III. शहरी लिंगानुपात ग्रामीण लिंगानुपात से कम है।
IV. जैसलमेर ने राज्य में सबसे कम साक्षरता दर दर्ज की।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन असत्य है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III

(B) जनसंख्या नियंत्रण को बढ़ावा देने के लिए राज्य प्राधिकारियों द्वारा वितरित प्रत्यक्ष वित्तीय लाभ और कल्याणकारी प्रोत्साहन।
(C) तीव्र निरपेक्ष जनसंख्या वृद्धि के परिणामस्वरुप राजस्व विस्तार जो समय के साथ स्थानीय कर आधार को विस्तृत करता है।
(D) संरचनात्मक जनांकिकीय संक्रमण जो तब होता है जब ग्रामीण जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा शहरी केंद्रों में प्रवास करता है।

22. राजस्थान की कार्यशील जनसंख्या (जनगणना 2011) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. राज्य की कार्य सहभागिता दर लगभग 43.6 प्रतिशत है।
II. मुख्य श्रमिकों को उन व्यक्तियों के रूप में परिभाषित किया गया है जिन्होंने संदर्भ वर्ष में 183 दिन या उससे अधिक समय काम किया है।
III. सीमांत श्रमिकों ने संदर्भ वर्ष में 6 महीने से कम समय काम किया है।
IV. कृषक और कृषि मजदूर राज्य के कार्यबल का सबसे बड़ा हिस्सा हैं।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल II, III और IV
(C) केवल I, III और IV
(D) I, II, III और IV

23. राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों से पुरुषों के बाह्य-प्रवास का मुख्य कारण क्या माना गया है?
(A) उन्नत उच्च शिक्षा और विशेष तकनीकी प्रशिक्षण
(B) लाभकारी रोजगार और आर्थिक आजीविका के अवसर
(C) वैवाहिक संबंध और सामाजिक नातेदारी के दायित्व
(D) क्षेत्रीय राजनीतिक अस्थिरता और नागरिक शासन संबंधी संघर्ष

24. राजस्थान में आंतरिक प्रवास धाराओं के अंतर्गत, किस धारा में प्रवासियों की संख्या सर्वाधिक है?
(A) ग्रामीण से शहरी
(B) शहरी से शहरी
(C) ग्रामीण से ग्रामीण
(D) शहरी से ग्रामीण

25. राजस्थान के जनसंख्या संकेतकों की राष्ट्रीय औसत (जनगणना 2011) से तुलना करने वाले असत्य कथन की पहचान कीजिए:
(A) राजस्थान की दशकीय वृद्धि दर (21.3%) राष्ट्रीय औसत (17.7%) से अधिक थी।
(B) राजस्थान का जनघनत्व (200) राष्ट्रीय औसत (382) से काफी कम है।
(C) राजस्थान की कुल साक्षरता दर (66.1%) राष्ट्रीय औसत (73.0%) से कम है।
(D) राजस्थान का कुल लिंगानुपात (928) राष्ट्रीय औसत (943) से अधिक है।

26. राष्ट्रीय स्तर पर 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' (BBBP) योजना किस वर्ष शुरु की गई थी, जिसने कम शिशु लिंगानुपात के कारण राजस्थान के कई जिलों को विशेष रूप से लक्षित किया था?
(A) 2012
(B) 2014
(C) 2015
(D) 2018

27. राजस्थान में लागू 'मुख्यमंत्री राजश्री योजना' के तहत बालिकाओं के जन्म और शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। इस योजना के तहत प्रति बालिका कुल कितनी अधिकतम वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है?
(A) ₹ 21,000
(B) ₹ 50,000
(C) ₹ 30,000
(D) ₹ 1,00,000

28. राजस्थान में साक्षरता के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
कथन (A) : राजस्थान में महिला साक्षरता दर, पुरुष साक्षरता दर से काफी कम बनी हुई है।
कारण (R) : गहरी जड़ें जमा चुकी पितृसत्तात्मक व्यवस्थाएं, कम उम्र में विवाह और घरेलू श्रम का अत्यधिक बोझ ऐतिहासिक रुप से राज्य में महिला शिक्षा में बाधा रहे हैं।
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

29. जनगणना 2011 के अनुसार, राजस्थान की कुल जनसंख्या का कितना प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करता है?
(A) 75.1 प्रतिशत
(B) 68.8 प्रतिशत
(C) 80.5 प्रतिशत
(D) 82.3 प्रतिशत

30. निम्नलिखित में से किसे जनांकिकीय संक्रमण के सिद्धांत के एक मानक चरण के रूप में मान्यता नहीं दी गई है?
(A) उच्च स्थैतिक चरण (उच्च जन्म दर और उच्च मृत्यु दर)
(B) प्रारम्भिक विस्तार चरण (उच्च जन्म दर और घटती मृत्यु दर)
(C) विपरीत विस्तार चरण (निम्न जन्म दर और उच्च मृत्यु दर)
(D) उत्तरवर्ती विस्तार चरण (घटती जन्म दर और निम्न मृत्यु दर)

31. जन्म और मृत्यु दर की हाल की दशकों की प्रवृत्तियों के आधार पर, राजस्थान वर्तमान में जनांकिकीय संक्रमण मॉडल के किस चरण से गुजर रहा है?

NODIA

(A) 1
(B) 2
(C) 3
(D) 5

75. 2011 की जनगणना में राजस्थान का कौन-सा जिला 60 लाख (6 मिलियन) जनसंख्या का आंकड़ा पार कर सबसे अधिक आबादी वाला जिला बन गया?
(A) जोधपुर
(B) जयपुर
(C) अलवर
(D) नागौर

76. 2011 की जनगणना के अनुसार निम्नलिखित में से किस जिले की कुल जनसंख्या 10 लाख (1 मिलियन) से कम है?
(A) जैसलमेर
(B) सिरोही
(C) प्रतापगढ़
(D) उपर्युक्त सभी

77. राजस्थान में अनुसूचित जनजाति (ST) जनसंख्या की साक्षरता दर (जनगणना 2011) लगभग कितनी है?
(A) 52.8 प्रतिशत
(B) 34.5 प्रतिशत
(C) 66.1 प्रतिशत
(D) 72.4 प्रतिशत

78. राजस्थान के जनसंख्या संकेतकों की राष्ट्रीय औसत (जनगणना 2011) से तुलना करते हुए सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए:
सूची I : जनसंख्या संकेतक
P. कुल लिंगानुपात (928 बनाम 943)
Q. दशकीय वृद्धि दर (21.3 बनाम 17.7)
R. शिशु लिंगानुपात (888 बनाम 919)
S. साक्षरता दर (66.1 बनाम 73)
सूची II : राष्ट्रीय औसत से तुलना
1. राष्ट्रीय औसत से अधिक
2. राष्ट्रीय औसत से कम
(A) P-2, Q-1, R-2, S-2
(B) P-1, Q-2, R-1, S-1
(C) P-2, Q-2, R-1, S-2
(D) P-1, Q-1, R-2, S-2

79. राजस्थान में 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' योजना ने प्रारम्भ में विशेष रुप से किस जनांकिकीय मुद्दे को लक्षित किया था?
(A) प्रसव के दौरान अत्यधिक उच्च मातृ मृत्यु दर
(B) औपचारिक कार्यबल में महिलाओं की निरंतर कम भागीदारी
(C) वयस्क महिलाओं के लिए उच्च शिक्षा अवसंरचना की कमी
(D) चिन्हित लक्षित जिलों में तेजी से घटता शिशु लिंगानुपात

80. राजस्थान की जनसंख्या की आयु संरचना के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. 0-14 आयु वर्ग की जनसंख्या कुल जनसंख्या का 15 प्रतिशत से कम है।
II. कार्यशील आयु की जनसंख्या (15-59 वर्ष) कुल जनसंख्या का बहुसंख्यक हिस्सा है।
III. बेहतर जीवन प्रत्याशा के कारण वृद्ध जनसंख्या (60+ वर्ष) का अनुपात धीरे-धीरे बढ़ रहा है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

81. राजस्थान में प्रवास की प्रवृत्तियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. ग्रामीण-से-ग्रामीण प्रवास में प्रवासियों की संख्या सर्वाधिक है, जिसमें महिलाओं की प्रधानता है।
II. पुरुषों का प्रवास रोजगार के लिए मुख्य रुप से ग्रामीण से शहरी क्षेत्रों की ओर होता है।
III. राज्य के भीतर (अंतरा-राज्यीय) प्रवास की मात्रा अंतरराज्यीय प्रवास की तुलना में काफी अधिक है।
IV. पश्चिमी राजस्थान में मौसमी प्रवास के लिए सूखा एक महत्वपूर्ण प्रतिकर्ष कारक के रुप में कार्य करता है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II, III और IV
(C) केवल I, III और IV
(D) I, II, III और IV

82. राष्ट्रीय स्तर पर राजस्थान के भौगोलिक क्षेत्रफल और उसकी जनसंख्या के आकार के बीच के अंतर को निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प सर्वोत्तम रुप से दर्शाता है?
(A) यह कुल भू-भाग के लगभग 5.66% हिस्से का प्रतिनिधित्व करता है जबकि राष्ट्रीय जनसंख्या के 10.41% का पोषण करता है।
(B) यह कुल भू-भाग के लगभग 15.0% हिस्से का प्रतिनिधित्व करता है जबकि राष्ट्रीय जनसंख्या के 15.0% का पोषण करता है।
(C) यह कुल भू-भाग के लगभग 2.0% हिस्से का प्रतिनिधित्व करता है जबकि राष्ट्रीय जनसंख्या के 8.0% का पोषण करता है।
(D) यह राष्ट्रीय भू-भाग के लगभग 10.41% हिस्से का प्रतिनिधित्व करता है जबकि कुल जनसंख्या के लगभग 5.66% का पोषण करता है।

83. 2011 की जनगणना में राजस्थान के किस जिले में सर्वाधिक कार्य सहभागिता दर (कुल जनसंख्या के सापेक्ष कुल श्रमिकों का प्रतिशत) दर्ज की गई?
(A) प्रतापगढ़
(B) जयपुर
(C) कोटा
(D) बीकानेर

Downloaded from www.pdf.tube

(A) किसी निर्दिष्ट लक्षित जनसंख्या में प्रति हजार व्यक्तियों पर दर्ज किए गए जीवित जन्मों की सकल वार्षिक संख्या।
(B) वार्षिक जीवित जन्मों की तुलना सीधे संपूर्ण महिला जनसांख्यिकीय समूह से करने वाला सांख्यिकीय अनुपात।
(C) अशोधित (सकल) वार्षिक जन्म दर और कुल मृत्यु दर के बीच का अंतर।
(D) बच्चों की वह औसत कुल संख्या जो एक महिला अपने संपूर्ण प्रजनन काल के दौरान जन्म देती है।

42. हाल के राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS-5) के अनुसार, राजस्थान द्वारा प्राप्त अनुमानित कुल प्रजनन दर (TFR) कितनी है?
(A) 2.0
(B) 2.6
(C) 3.1
(D) 3.5

43. 2011 की जनगणना में राजस्थान के किस जिले में सर्वाधिक पुरुष साक्षरता दर दर्ज की गई?
(A) कोटा
(B) झुंझुनूं
(C) जयपुर
(D) सीकर

44. राजस्थान के निम्नलिखित जिलों पर विचार कीजिए:
I. जालोर
II. सिरोही
III. जैसलमेर
IV. बाड़मेर
निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प उनकी महिला साक्षरता दर (जनगणना 2011) का सही आरोही (बढ़ता) क्रम दर्शाता है?
(A) I, II, III, IV
(B) II, I, IV, III
(C) I, III, II, IV
(D) I, II, IV, III

45. 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान में शिशु लिंगानुपात (0-6 वर्ष) कितना है?
(A) 888
(B) 928
(C) 914
(D) 837

46. 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान के किस जिले में शिशु लिंगानुपात (0-6 वर्ष) सबसे कम है?
(A) सीकर
(B) धौलपुर
(C) झुंझुनूं
(D) भरतपुर

47. जनसंख्या नियंत्रण से जुड़े राज्य परिवार कल्याण कार्यक्रमों का मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित में से कौन-सा है?
(A) संपूर्ण राज्य के शहरी और ग्रामीण समुदायों में संक्रामक रोगों का तेजी से उन्मूलन करना।
(B) निरंतर औद्योगिक कार्यबल सुनिश्चित करने के लिए ग्रामीण-से-शहरी प्रवास प्रवाह को तेज करना।
(C) अनुकूल निर्भरता अनुपात बनाए रखने के लिए औसत जनसंख्या जीवन प्रत्याशा को कम करना।
(D) छोटे परिवार के मानदंडों को प्रोत्साहित करके और गर्भनिरोधक उपयोग को बढ़ाकर जनसंख्या वृद्धि को स्थिर करना।

48. राजस्थान की जनांकिकीय विशेषताओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
कथन (A) : जैसलमेर जिले का जनघनत्व राजस्थान में सबसे कम है।
कारण (R) : जैसलमेर में कठोर शुष्क जलवायु, अनुपयोगी मरुस्थल का विस्तृत फैलाव और जल संसाधनों की भारी कमी है।
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

49. 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान के किस जिले में उसकी कुल जनसंख्या की तुलना में शहरी जनसंख्या का अनुपात (प्रतिशत) सर्वाधिक है?
(A) जयपुर
(B) कोटा
(C) जोधपुर
(D) अजमेर

50. राजस्थान के किस जिले में उसकी कुल जनसंख्या की तुलना में ग्रामीण जनसंख्या का अनुपात (प्रतिशत) सर्वाधिक है?
(A) बाड़मेर
(B) प्रतापगढ़
(C) बांसवाड़ा
(D) डूंगरपुर

NODIA

51. राजस्थान में शहरीकरण की प्रवृत्तियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. पिछले कुछ दशकों में शहरीकरण में लगातार वृद्धि हो रही है।
II. जयपुर जिले में राज्य की सर्वाधिक कुल (निरपेक्ष) शहरी जनसंख्या है।
III. 2001 और 2011 के बीच शहरी दशकीय वृद्धि दर ग्रामीण दशकीय वृद्धि दर से कम थी।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) 5.66 प्रतिशत
2011 की जनगणना के अंतिम आंकड़ों के अनुसार भारत की कुल जनसांख्यिकी में राजस्थान का योगदान 5.66 प्रतिशत है। भौगोलिक विस्तार के संदर्भ में राजस्थान भारत का सबसे बड़ा राज्य है जो संपूर्ण देश के क्षेत्रफल का लगभग 10.41 प्रतिशत भाग घेरे हुए है। इस प्रकार राज्य का भौगोलिक आकार इसकी जनसांख्यिकीय हिस्सेदारी की तुलना में काफी विशाल है। यह स्थिति राज्य में विस्तृत भू-भाग और मध्यम जनघनत्व को दर्शाती है।

2. (D) 6,85,48,437
भारत की 2011 की जनगणना के अंतिम आंकड़ों के अनुसार राजस्थान की कुल जनसांख्यिकी 6,85,48,437 दर्ज की गई थी। इसमें 3,55,50,997 पुरुष तथा 3,29,97,440 महिलाएं सम्मिलित हैं। वर्ष 2001 से 2011 के दशक के दौरान राज्य में लगभग 1.20 करोड़ व्यक्तियों की निरपेक्ष वृद्धि दर्ज की गई। यह जनसांख्यिकीय आंकड़ा राज्य के नियोजन और विकासात्मक रणनीतियों के निर्माण के लिए एक मूलभूत आधार प्रदान करता है।

3. (C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
राजस्थान का जनसंख्या घनत्व 2001 में 165 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर से बढ़कर 2011 में 200 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर हो गया। हालाँकि वर्ष 1991 से 2001 के दशक में दर्ज 28.41 प्रतिशत की वृद्धि दर की तुलना में 2001 से 2011 के दौरान दशकीय वृद्धि दर घटकर 21.31 प्रतिशत रह गई। इस प्रकार वृद्धि दर में कमी दर्ज की गई है न कि वृद्धि। इसलिए केवल पहला विवरण पूर्णतः प्रामाणिक है।

4. (C) जयपुर
2011 की आधिकारिक जनगणना के अनुसार जयपुर राजस्थान का सर्वाधिक आबादी वाला जिला है जहाँ की कुल जनसांख्यिकी 66,26,178 दर्ज की गई थी। राज्य की राजधानी होने के कारण यहाँ तीव्र प्रशासनिक, औद्योगिक और शैक्षणिक विकास हुआ है जिसके कारण व्यापक अंतःप्रवास देखने को मिलता है। जयपुर के पश्चात जोधपुर और अलवर राज्य के अन्य प्रमुख आबादी वाले जिलों के रूप में आते हैं, किंतु जयपुर निरपेक्ष जनसंख्या में सर्वोच्च स्थान पर बना हुआ है।

5. (A) जैसलमेर
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार जैसलमेर राजस्थान का न्यूनतम निरपेक्ष आबादी वाला जिला है जिसकी कुल जनसंख्या मात्र 6,69,919 दर्ज की गई थी। थार मरुस्थल के हृदय में स्थित होने के कारण यहाँ की कठोर शुष्क जलवायु, जल संसाधनों की अत्यधिक कमी तथा अनुपयोगी रेतीला धरातल सघन बसावट के अनुकूल नहीं है। यही कारण है कि विशाल भौगोलिक क्षेत्रफल के बावजूद यहाँ जनसांख्यिकीय बसावट अत्यंत विरल पाई जाती है।

6. (B) I, III, II, IV
2001 से 2011 के दशक के दौरान राजस्थान में सर्वोच्च दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर बाड़मेर में 32.5 प्रतिशत दर्ज की गई थी। इसके पश्चात जैसलमेर में 31.8 प्रतिशत, जोधपुर में 27.7 प्रतिशत तथा बांसवाड़ा में 26.5 प्रतिशत वृद्धि दर्ज की गई। इस प्रकार घटते क्रम में बाड़मेर प्रथम स्थान पर, जैसलमेर द्वितीय स्थान पर, जोधपुर तृतीय स्थान पर और बांसवाड़ा चतुर्थ स्थान पर आता है। यह मरुस्थलीय क्षेत्रों में उच्च प्रजनन दर को प्रदर्शित करता है।

7. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
राजस्थान के पश्चिमी मरुस्थलीय जिले सामान्यतः पूर्वी तथा दक्षिणी जिलों की तुलना में अधिक दशकीय जनसांख्यिकीय वृद्धि दर प्रदर्शित करते हैं। इसका मुख्य कारण ऐतिहासिक रुप से इन क्षेत्रों में कम जनसंख्या आधार का होना है। इसके अतिरिक्त इन शुष्क क्षेत्रों में उच्च जन्म दर, पारंपरिक सामाजिक संरचना तथा साक्षरता का निम्न स्तर भी उच्च वृद्धि दर के लिए जिम्मेदार रहा है। अतः दिया गया कारण विषय की व्याख्या को पूर्णतः स्पष्ट करता है।

8. (C) 200 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान का औसतन जनघनत्व 200 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर दर्ज किया गया है। वर्ष 2001 की जनगणना में यह आंकड़ा 165 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर था, जिससे इसमें 35 अंकों की वृद्धि प्रदर्शित होती है। राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में जनघनत्व की अत्यधिक विविधता पाई जाती है, जहाँ पूर्वी मैदानी भागों में यह काफी अधिक है जबकि पश्चिमी शुष्क मरुस्थलीय जिलों में अत्यंत कम दर्ज किया गया है।

9. (D) जैसलमेर, बीकानेर और बाड़मेर
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान के केवल तीन जिलों में जनघनत्व 100 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर से कम दर्ज किया गया है। इनमें जैसलमेर में मात्र 17, बीकानेर में 78 तथा बाड़मेर में 92 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर जनघनत्व है। यह तीनों जिले थार मरुस्थल में स्थित हैं जहाँ की विकट भौगोलिक परिस्थितियाँ, जल की कमी तथा विशाल रेतीले टीले मानव बसाव को सीमित करते हैं जिसके कारण जनघनत्व न्यूनतम रहता है।

10. (A) कुल जनसंख्या का कुल क्षेत्रफल से अनुपात, जिसे प्रति वर्ग किलोमीटर में मापा जाता है।
जनसांख्यिकीय अध्ययन और संसाधन नियोजन में जनसंख्या घनत्व को किसी भौगोलिक क्षेत्र की कुल आबादी और उसके

Click Here to Buy book on Amazon

(C) केवल IV
(D) केवल III

62. 2011 की जनगणना में दर्ज राजस्थान में पुरुष और महिला साक्षरता दर के बीच का अंतर कितना है?
(A) 21.3 प्रतिशत अंक
(B) 24.8 प्रतिशत अंक
(C) 27.1 प्रतिशत अंक
(D) 32.5 प्रतिशत अंक

63. राजस्थान में धार्मिक संरचना प्रतिशत (जनगणना 2011) के संबंध में असत्य युग्म की पहचान कीजिए:
(A) हिन्दू - 88.49%
(B) मुस्लिम - 9.07%
(C) सिख - 1.27%
(D) जैन - 5.12%

64. जयपुर के अतिरिक्त, राजस्थान के किस अन्य जिले का जनघनत्व 500 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर से अधिक है?
(A) अलवर
(B) दौसा
(C) भरतपुर
(D) धौलपुर

65. राजस्थान में निम्नलिखित में से किस जिले में सबसे कम दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर (2001-2011) दर्ज की गई?
(A) झुंझुनूं
(B) श्रीगंगानगर
(C) पाली
(D) बूंदी

66. राजस्थान (जनगणना 2011) में न्यूनतम से उच्चतम जनघनत्व के अनुसार जिलों का सही क्रम चुनिए:
(A) जैसलमेर, बाड़मेर, बीकानेर, चूरू
(B) जैसलमेर, बीकानेर, बाड़मेर, चूरू
(C) बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर
(D) बाड़मेर, जैसलमेर, बीकानेर, जोधपुर

67. राजस्थान में जन्म के समय जीवन प्रत्याशा में पिछले दशकों में सुधार हुआ है। हाल के सामान्य अनुमानों (2015-19 के SRS आंकड़ों) के अनुसार, राजस्थान के लिए जन्म के समय कुल जीवन प्रत्याशा लगभग कितनी है?
(A) 68.7 वर्ष
(B) 55.4 वर्ष
(C) 62.1 वर्ष
(D) 74.2 वर्ष

68. जनगणना 2011 के अनुसार राजस्थान का ग्रामीण लिंगानुपात कितना है?
(A) 914
(B) 928
(C) 933
(D) 943

69. जनगणना 2011 के अनुसार राजस्थान का शहरी लिंगानुपात कितना है?
(A) 914
(B) 888
(C) 928
(D) 933

70. 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान के किस जिले में सर्वाधिक शिशु लिंगानुपात (0-6 वर्ष) है?
(A) डूंगरपुर
(B) प्रतापगढ़
(C) उदयपुर
(D) बांसवाड़ा

NODIA

71. राजस्थान द्वारा अपने जनांकिकीय लाभांश का अनुकूलतम उपयोग करने के लिए, अनुकूल आयु संरचना के साथ-साथ मुख्य रूप से किस स्थिति की आवश्यकता है?
(A) पूरे राज्य में कुल जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करने के लिए शिशु मृत्यु दर को उच्च बनाए रखना।
(B) उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा, तकनीकी कौशल विकास और रोजगार सृजन में रणनीतिक निवेश।
(C) शिक्षित कार्यशील युवाओं के अन्य राज्यों में बड़े पैमाने पर बाह्य-प्रवास को बढ़ावा देना।
(D) सभी क्षेत्रों में कुल प्रजनन दर में निरंतर दीर्घकालिक वृद्धि को बनाए रखना।

72. निम्नलिखित में से कौन-सा राजस्थान की जनसंख्या नीति का प्राथमिक दीर्घकालिक जनांकिकीय लक्ष्य है?
(A) बीस वर्षों के भीतर कुल जनसंख्या को आधा करना
(B) पूरे राज्य में सख्ती से एक-संतान नीति लागू करना
(C) प्रतिस्थापन स्तर की प्रजनन दर (2.1 की TFR) प्राप्त करना
(D) शहरी प्रवास को बढ़ावा देकर सभी ग्रामीण बस्तियों को समाप्त करना

73. अंतरराज्यीय प्रवास प्रवृत्तियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
कथन (A) : राजस्थान से अन्य औद्योगिक रूप से विकसित राज्यों में महत्वपूर्ण रूप से पुरुष-प्रधान बाह्य-प्रवास होता है।
कारण (R) : ग्रामीण राजस्थान की तुलना में गुजरात और महाराष्ट्र जैसे राज्यों में बेहतर आर्थिक अवसर, उच्च मजदूरी और औद्योगिक रोजगार संकेंद्रित हैं।
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

74. 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान के कितने शहरों (शहरी संकुलनों) की जनसंख्या 10 लाख (1 मिलियन) से अधिक थी?

10. संसाधन नियोजन के लिए मानक जनांकिकी शब्दावली में 'जनसंख्या घनत्व' (जनघनत्व) की अवधारणा को सर्वोत्तम रूप से परिभाषित किया गया है:
(A) कुल जनसंख्या का कुल क्षेत्रफल से अनुपात, जिसे प्रति वर्ग किलोमीटर में मापा जाता है।
(B) कुल जनसंख्या का वह अनुपात जो निर्दिष्ट शहरी केंद्रों में स्थायी रूप से निवास करता है।
(C) किसी दिए गए प्रशासनिक क्षेत्र के भीतर प्रति हजार व्यक्तियों पर जीवित जन्मों की वार्षिक संख्या।
(D) प्रति वर्ग किलोमीटर कृषि में संलग्न आर्थिक रूप से सक्रिय जनसंख्या का प्रतिशत।

11. 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान के किस जिले का जनघनत्व सर्वाधिक है?
(A) भरतपुर
(B) जयपुर
(C) दौसा
(D) अलवर

12. राजस्थान के जिलों के जनघनत्व (जनगणना 2011) के संबंध में सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए:
सूची I : जिला
P. जयपुर
Q. भरतपुर
R. दौसा
S. अलवर
सूची II : जनघनत्व
1. 503
2. 595
3. 438
4. 476
(A) P-2, Q-1, R-4, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-2, Q-4, R-1, S-3
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

13. 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान की कुल साक्षरता दर कितनी है?
(A) 66.1 प्रतिशत (B) 60.4 प्रतिशत
(C) 73.0 प्रतिशत (D) 79.2 प्रतिशत

14. जनगणना 2011 के अनुसार राजस्थान में साक्षरता दर में लैंगिक अंतर (पुरुष और महिला साक्षरता दर के बीच का अंतर) लगभग कितना है?
(A) 15.5 प्रतिशत
(B) 21.3 प्रतिशत
(C) 27.1 प्रतिशत
(D) 32.4 प्रतिशत

15. कुल साक्षरता दर (जनगणना 2011) के अवरोही क्रम में जिलों का सही क्रम चुनिए:
(A) कोटा, जयपुर, झुंझुनूं, सीकर
(B) जयपुर, कोटा, सीकर, झुंझुनूं
(C) कोटा, झुंझुनूं, जयपुर, सीकर
(D) झुंझुनूं, कोटा, जयपुर, सीकर

16. राजस्थान में साक्षरता के प्रमुख आंकड़ों (जनगणना 2011) के संबंध में सही युग्म की पहचान कीजिए:
(A) सर्वाधिक पुरुष साक्षरता - कोटा
(B) सर्वाधिक कुल साक्षरता - जयपुर
(C) न्यूनतम महिला साक्षरता - जालोर
(D) न्यूनतम पुरुष साक्षरता - बाड़मेर

17. जनगणना 2011 में कुल लिंगानुपात के अत्यधिक उच्च (990 से अधिक) होने के आधार पर निम्नलिखित जिलों में से विषम जिला छांटिए:
(A) डूंगरपुर
(B) धौलपुर
(C) राजसमंद
(D) प्रतापगढ़

18. राजस्थान के लिंगानुपात (जनगणना 2011) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. राज्य का कुल लिंगानुपात 1000 पुरुषों पर 928 महिलाएं है।
II. ग्रामीण लिंगानुपात (933) शहरी लिंगानुपात (914) से अधिक है।
III. शिशु लिंगानुपात (0-6 वर्ष) कुल लिंगानुपात से काफी अधिक है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

19. 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान का कुल लिंगानुपात (प्रति 1000 पुरुषों पर महिलाएं) कितना है?
(A) 928
(B) 943
(C) 914
(D) 888

20. 2011 की जनगणना में राजस्थान के किस जिले में सर्वाधिक कुल लिंगानुपात दर्ज किया गया?
(A) बांसवाड़ा
(B) राजसमंद
(C) डूंगरपुर
(D) पाली

21. राजस्थान की जनसंख्या के संदर्भ में 'जनांकिकीय लाभांश' से तात्पर्य है:
(A) आयु संरचना में परिवर्तन से उत्पन्न आर्थिक वृद्धि की संभावना, जब कार्यशील जनसंख्या आश्रितों की संख्या से अधिक हो जाती है।

Downloaded from www.pdf.tube

84. राजस्थान में राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन (NRHM) जैसी परिवार कल्याण और स्वास्थ्य योजनाओं का उद्देश्य निम्नलिखित में से कौन-सा नहीं है?
(A) शिशु मृत्यु दर (IMR) में कमी लाना
(B) मातृ मृत्यु अनुपात (MMR) में कमी लाना
(C) जनसंख्या वृद्धि को तेज करने के लिए अशोधित जन्म दर बढ़ाना
(D) समतापूर्ण, सस्ती और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं तक सार्वभौमिक पहुँच प्राप्त करना

85. मानक जनांकिकी में, किसी जनसंख्या की 'प्राकृतिक वृद्धि दर' को किस रूप में परिभाषित किया जाता है?
(A) अशोधित जन्म दर घटाव अशोधित मृत्यु दर।
(B) कुल दशकीय वृद्धि दर को दस से विभाजित करने पर प्राप्त दर।
(C) जन्म दर और अंतःप्रवास दर का योग।
(D) अंतःप्रवास और बाह्य-प्रवास के बीच का अंतर।

86. मुख्य रूप से अकाल और इन्फ्लूएंजा महामारी के कारण किस ऐतिहासिक दशक के दौरान राजस्थान की जनसंख्या में ऋणात्मक वृद्धि दर दर्ज की गई थी?
(A) 1901-1911
(B) 1911-1921
(C) 1941-1951
(D) 1961-1971

87. राजस्थान का निम्नलिखित में से कौन-सा जिला अंतःवर्ती (स्थल-रुद्ध - कोई अंतरराज्यीय या अंतरराष्ट्रीय सीमा नहीं) है, लेकिन फिर भी अपेक्षाकृत उच्च जनघनत्व (400 से अधिक) प्रदर्शित करता है?
(A) जैसलमेर
(B) दौसा
(C) बीकानेर
(D) झालावाड़

88. राजस्थान में लिंगानुपात की ऐतिहासिक प्रवृत्ति के संबंध में असत्य कथन की पहचान कीजिए:
(A) लिंगानुपात ऐतिहासिक रूप से महिलाओं के प्रतिकूल (1000 से कम) रहा है।
(B) कुल लिंगानुपात में 2001 में 922 से 2011 में 928 तक मामूली सुधार हुआ।
(C) शिशु लिंगानुपात 2001 में 909 से सुधरकर 2011 में 933 हो गया।
(D) ग्रामीण क्षेत्रों ने लगातार शहरी क्षेत्रों की तुलना में बेहतर लिंगानुपात बनाए रखा है।

89. पिछले दो दशकों में राजस्थान में शिशु मृत्यु दर (IMR) की मुख्य प्रवृत्ति क्या रही है?
(A) तीव्र अनियंत्रित शहरीकरण के कारण इसमें भारी और निरंतर वृद्धि देखी गई।
(B) समय के साथ बिना किसी संरचनात्मक परिवर्तन के यह व्यावहारिक रूप से स्थिर रहा।
(C) शुरुआती वर्षों में इसमें थोड़ी गिरावट आई लेकिन वर्तमान में यह प्रति वर्ष दोगुनी हो रही है।
(D) बेहतर संस्थागत प्रसव और स्वास्थ्य सेवाओं से प्रेरित होकर इसमें निरंतर गिरावट देखी गई।

90. भारत की जनगणना के अनुसार 'कार्यशील आयु की जनसंख्या' को किस आयु वर्ग के अंतर्गत आने वाले व्यक्तियों के रूप में परिभाषित किया जाता है?
(A) 15-59 वर्ष
(B) 18-65 वर्ष
(C) 21-60 वर्ष
(D) 15-45 वर्ष

www.nodia.in

NODIA

(A) प्रथम चरण (उच्च जन्म दर, उच्च मृत्यु दर)
(B) द्वितीय चरण (उच्च जन्म दर, तेजी से गिरती मृत्यु दर)
(C) तृतीय चरण (घटती जन्म दर, निम्न मृत्यु दर)
(D) चतुर्थ चरण (निम्न जन्म दर, निम्न मृत्यु दर जिससे जनसंख्या स्थिर होती है)

32. राजस्थान की अनुसूचित जाति (SC) जनसंख्या (जनगणना 2011) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. अनुसूचित जाति की जनसंख्या राज्य की कुल जनसंख्या का लगभग 17.8 प्रतिशत है।
II. श्रीगंगानगर जिले में अनुसूचित जाति की जनसंख्या का अनुपात (प्रतिशत) सर्वाधिक है।
III. डूंगरपुर जिले में अनुसूचित जाति की जनसंख्या का अनुपात (प्रतिशत) सबसे कम है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन असत्य है/हैं?
(A) केवल I
(B) केवल II और III
(C) केवल III
(D) उपर्युक्त में से कोई भी कथन असत्य नहीं है

33. 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान में अनुसूचित जाति (SC) जनसंख्या का अनुपात कितना है?
(A) 13.5 प्रतिशत
(B) 17.8 प्रतिशत
(C) 15.2 प्रतिशत
(D) 21.1 प्रतिशत

34. राजस्थान में अनुसूचित जनजाति (ST) जनसंख्या प्रतिशत (जनगणना 2011) के संबंध में सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए:
सूची I : जिला
P. बांसवाड़ा
Q. डूंगरपुर
R. प्रतापगढ़
S. उदयपुर
सूची II : ST जनसंख्या प्रतिशत
1. 76.4%
2. 70.8%
3. 63.4%
4. 49.7%
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-1, R-4, S-3
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-1, Q-3, R-2, S-4

35. राजस्थान के किस जिले में उसकी कुल जनसंख्या की तुलना में अनुसूचित जनजाति (ST) जनसंख्या का प्रतिशत सर्वाधिक है?
(A) बांसवाड़ा
(B) उदयपुर
(C) डूंगरपुर
(D) प्रतापगढ़

36. राजस्थान में किस जिले में अनुसूचित जाति (SC) जनसंख्या का प्रतिशत सबसे कम है?
(A) बांसवाड़ा
(B) बाड़मेर
(C) डूंगरपुर
(D) उदयपुर

37. 2011 की जनगणना में राजस्थान के किन दो जिलों में सबसे कम कुल अनुसूचित जनजाति (ST) जनसंख्या (और 0.3% का सबसे कम अनुपात) दर्ज की गई?
(A) बीकानेर और नागौर
(B) चूरू और हनुमानगढ़
(C) जोधपुर और जैसलमेर
(D) सीकर और झुंझुनूं

38. राजस्थान की जनसंख्या की धार्मिक संरचना (जनगणना 2011) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. हिन्दू जनसंख्या लगभग 88.5 प्रतिशत के साथ सबसे बड़ा धार्मिक समूह है।
II. मुस्लिम जनसंख्या लगभग 9.1 प्रतिशत के साथ दूसरा सबसे बड़ा धार्मिक समूह है।
III. सिख जनसंख्या कुल जनसंख्या का लगभग 1.3 प्रतिशत है।
IV. जैन जनसंख्या कुल जनसंख्या के 1 प्रतिशत से कम है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II, III और IV
(C) केवल I, III और IV
(D) I, II, III और IV

39. 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान के प्रमुख धार्मिक समुदायों में से किस समुदाय की साक्षरता दर सर्वाधिक दर्ज की गई?
(A) हिन्दू
(B) जैन
(C) मुस्लिम
(D) सिख

40. राजस्थान में संसाधन नियोजन की दृष्टि से, निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प वर्तमान जनसंख्या वितरण और वृद्धि से उत्पन्न सबसे गंभीर चुनौती को दर्शाता है?
(A) अधिशेष कृषि योग्य भूमि जिसके कारण ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि का व्यापक रूप से कम उपयोग हो रहा है।
(B) छोटे गांवों के भीतर उन्नत उच्च-तकनीकी औद्योगिक संयंत्रों का अत्यधिक संकेंद्रण।
(C) संपूर्ण पश्चिमी शुष्क क्षेत्रों में सीमित जल (पेयजल) संसाधनों पर अत्यधिक दबाव।
(D) प्रमुख जिलों में कुशल कार्यशील आयु वर्ग की जनसंख्या की भारी दीर्घकालिक कमी।

41. जनांकिकीय अध्ययनों में, 'कुल प्रजनन दर' (TFR) शब्द क्या दर्शाता है?

Click Here to Buy book on Flipkart

कुल भू-भाग के अनुपात के रूप में परिभाषित किया जाता है। इसे सामान्यतः प्रति वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल में निवास करने वाले व्यक्तियों की औसत संख्या के आधार पर व्यक्त किया जाता है। यह सूचकांक किसी विशिष्ट क्षेत्र में भूमि पर जनसांख्यिकीय दबाव और संसाधनों के वितरण तथा उपयोग की तीव्रता को मापने का एक महत्वपूर्ण जरिया है।

11. (B) जयपुर
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान में सर्वाधिक जनघनत्व जयपुर जिले में दर्ज किया गया है जहाँ प्रति वर्ग किलोमीटर में 595 व्यक्ति निवास करते हैं। इसके पश्चात भरतपुर 503 के साथ द्वितीय तथा दौसा 476 के साथ तृतीय स्थान पर है। जयपुर में कृषि योग्य समतल भूमि, बेहतर रोजगार, शैक्षणिक सुविधाएं, औद्योगिकीकरण तथा सुदृढ़ अवसंरचनात्मक विकास के कारण जनसांख्यिकीय संकेंद्रण सबसे अधिक देखने को मिलता है।

12. (A) P-2, Q-1, R-4, S-3
2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान के पूर्वी मैदानी जिलों में जनघनत्व सर्वाधिक है। आंकड़ों के अनुसार जयपुर में प्रति वर्ग किलोमीटर 595 व्यक्ति निवास करते हैं। भरतपुर जिले का जनघनत्व 503 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है। दौसा जिले में यह आंकड़ा 476 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर दर्ज किया गया है, जबकि अलवर का जनघनत्व 438 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है। इन सभी जिलों में उपजाऊ मृदा और सुलभ जल संसाधन उपलब्ध हैं।

13. (A) 66.1 प्रतिशत
जनगणना 2011 के अनुसार राजस्थान की कुल साक्षरता दर 66.1 प्रतिशत दर्ज की गई थी, जिसमें पुरुषों की साक्षरता 79.2 प्रतिशत और महिलाओं की साक्षरता 52.1 प्रतिशत रही। वर्ष 2001 में राज्य की साक्षरता दर 60.4 प्रतिशत थी, जिससे इसमें लगभग 5.7 प्रतिशत की सकारात्मक वृद्धि प्रदर्शित होती है। निरंतर शैक्षणिक अभियानों और योजनाओं के बावजूद राजस्थान की साक्षरता दर राष्ट्रीय औसत से अभी भी काफी नीचे बनी हुई है।

14. (C) 27.1 प्रतिशत
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान में पुरुष साक्षरता दर 79.2 प्रतिशत तथा महिला साक्षरता दर 52.1 प्रतिशत दर्ज की गई थी। इस प्रकार दोनों के बीच साक्षरता का लैंगिक अंतर 27.1 प्रतिशत अंक है। यह विशाल अंतर राज्य में ऐतिहासिक रूप से महिलाओं की शिक्षा के प्रति सामाजिक उपेक्षा, कम उम्र में विवाह तथा पितृसत्तात्मक मान्यताओं के प्रभाव को दर्शाता है, जिसके कारण महिला साक्षरता की दर पुरुषों से काफी पीछे रही।

15. (A) कोटा, जयपुर, झुंझुनूं, सीकर
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान में सर्वाधिक कुल साक्षरता दर वाले जिलों का घटता क्रम कोटा, जयपुर, झुंझुनूं तथा सीकर है। कोटा जिले में सर्वाधिक 76.6 प्रतिशत साक्षरता दर्ज की गई थी। इसके बाद जयपुर में 75.5 प्रतिशत, झुंझुनूं में 74.1 प्रतिशत और सीकर में 71.9 प्रतिशत साक्षरता पाई गई। कोटा में शैक्षणिक संस्थानों और कोचिंग केंद्रों की बहुलता के कारण साक्षरता दर राज्य में सर्वोच्च स्तर पर स्थित है।

16. (C) न्यूनतम महिला साक्षरता - जालोर
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार जालोर जिले में राज्य की न्यूनतम महिला साक्षरता दर 38.5 प्रतिशत दर्ज की गई थी। इसके विपरीत राज्य में सर्वाधिक पुरुष साक्षरता झुंझुनूं जिले में तथा सर्वाधिक कुल साक्षरता कोटा जिले में पाई गई। न्यूनतम पुरुष साक्षरता प्रतापगढ़ तथा बांसवाड़ा जिलों में पाई गई थी। जालोर में सामाजिक पिछड़ेपन और बुनियादी शैक्षणिक सुविधाओं की कमी के कारण महिलाओं की साक्षरता दर सबसे कम दर्ज की गई।

17. (B) धौलपुर
2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान के डूंगरपुर में 994, राजसमंद में 990 तथा प्रतापगढ़ में 983 लिंगानुपात दर्ज किया गया था, जो राज्य में अत्यधिक उच्च श्रेणी में आते हैं। इसके विपरीत धौलपुर जिले में लिंगानुपात मात्र 846 दर्ज किया गया जो संपूर्ण राजस्थान में सबसे कम है। अतः धौलपुर अन्य तीन दक्षिण-पूर्वी उच्च लिंगानुपात वाले जिलों की तुलना में स्पष्ट रुप से भिन्न और न्यूनतम लिंगानुपात वाला जिला प्रदर्शित होता है।

18. (A) केवल I और II
2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान का कुल लिंगानुपात 928 है, जिसमें ग्रामीण लिंगानुपात 933 और शहरी लिंगानुपात 914 दर्ज किया गया है। हालाँकि राज्य का शिशु लिंगानुपात (0-6 वर्ष) मात्र 888 है, जो कुल लिंगानुपात से काफी कम है न कि अधिक। इसलिए पहला और दूसरा विवरण पूर्णतः सत्य हैं, जबकि तीसरा विवरण असत्य साबित होता है। यह शिशु स्तर पर बालिका कन्या भ्रूण हत्या जैसी समस्याओं की ओर संकेत करता है।

19. (A) 928
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान का कुल लिंगानुपात 928 महिलाएं प्रति 1000 पुरुष दर्ज किया गया है। वर्ष 2001 की जनगणना में राज्य का लिंगानुपात 922 था, जिससे 2011 में 6 अंकों का मामूली सुधार दर्ज किया गया। यद्यपि इसमें वृद्धि हुई है, फिर भी यह राष्ट्रीय औसत 943 की तुलना में कम बना हुआ है। लिंगानुपात में सुधार हेतु राज्य में निरंतर सामाजिक व प्रशासनिक प्रयास चलाए जा रहे हैं।

20. (C) डूंगरपुर
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान में सर्वाधिक कुल लिंगानुपात डूंगरपुर जिले में दर्ज किया गया था जहाँ प्रति 1000 पुरुषों पर 994 महिलाएं हैं। इसके पश्चात राजसमंद 990 के साथ द्वितीय तथा पाली 987 के साथ तृतीय स्थान पर है। डूंगरपुर और दक्षिणी जनजातीय क्षेत्रों में पारंपरिक सामाजिक मान्यताओं तथा कन्या शिशुओं के प्रति बेहतर स्वीकार्यता के कारण राज्य के सामान्य औसतन आंकड़ों की तुलना में अधिक लिंगानुपात पाया जाता है।

Downloaded from www.pdf.tube

21. (A) आयु संरचना में परिवर्तन से उत्पन्न आर्थिक वृद्धि की संभावना, जब कार्यशील जनसंख्या आश्रितों की संख्या से अधिक हो जाती है।
जनांकिकीय लाभांश उस आर्थिक वृद्धि क्षमता को संदर्भित करता है जो किसी राज्य की आयु संरचना में परिवर्तन के परिणामस्वरूप उत्पन्न होती है। यह स्थिति तब निर्मित होती है जब कुल आबादी में कार्यशील आयु वर्ग (15 से 59 वर्ष) का अनुपात बाल तथा वृद्ध आश्रितों की तुलना में अधिक हो जाता है। राजस्थान में घटती जन्म दर और विशाल युवा आबादी के कारण यह अवसर निर्मित हो रहा है जो उत्पादकता बढ़ाने में सहायक है।

22. (D) I, II, III और IV
जनगणना 2011 के अनुसार राजस्थान की कार्य सहभागिता दर 43.6 प्रतिशत है। मुख्य श्रमिकों को वर्ष में 183 दिन या उससे अधिक कार्य करने वाले व्यक्तियों के रूप में परिभाषित किया जाता है, जबकि सीमांत श्रमिक वर्ष में 6 माह से कम कार्य करते हैं। इसके अतिरिक्त राज्य के कुल कार्यबल में कृषकों और कृषि मजदूरों की हिस्सेदारी सर्वाधिक बनी हुई है। अतः दिए गए सभी चारों जनांकिकीय विवरण पूरी तरह से प्रामाणिक और सही हैं।

23. (B) लाभकारी रोजगार और आर्थिक आजीविका के अवसर
राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों से पुरुषों के बाह्य-प्रवास का प्राथमिक कारण स्थानीय स्तर पर पर्याप्त लाभकारी रोजगार तथा स्थायी आजीविका के साधनों का अभाव है। शुष्क जलवायु, कृषि की मानसूनी निर्भरता और बार-बार पड़ने वाले सूखे के कारण ग्रामीण युवा रोजगार की तलाश में पड़ोसी राज्यों एवं औद्योगिक शहरों की ओर पलायन करते हैं। यह आर्थिक प्रवास ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर दबाव को कम करने और पारिवारिक आय बढ़ाने का मुख्य जरिया बनता है।

24. (C) ग्रामीण से ग्रामीण
राजस्थान में आंतरिक प्रवास धाराओं के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण से ग्रामीण प्रवास धारा में प्रवासियों की संख्या सर्वाधिक पाई जाती है। इस प्रकार के प्रवास में मुख्य रूप से महिलाओं का वर्चस्व होता है जिसका प्रमुख कारण विवाह के पश्चात सामाजिक रीति-रिवाजों के तहत होने वाला स्थानांतरण है। यद्यपि रोजगार के लिए ग्रामीण से शहरी प्रवास भी महत्वपूर्ण है, किंतु विवाह जनित प्रवास की कुल संख्या अत्यधिक होने से यह सर्वाधिक रहता है।

25. (D) राजस्थान का कुल लिंगानुपात (928) राष्ट्रीय औसत (943) से अधिक है।
2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान की दशकीय वृद्धि दर 21.3 प्रतिशत थी जो राष्ट्रीय औसत 17.7 प्रतिशत से अधिक थी। राज्य का जनघनत्व 200 तथा साक्षरता दर 66.1 प्रतिशत थी, जो राष्ट्रीय औसतों क्रमशः 382 और 73.0 प्रतिशत से कम थीं। हालाँकि राजस्थान का कुल लिंगानुपात 928 राष्ट्रीय औसत 943 से कम था, अधिक नहीं। अतः लिंगानुपात से संबंधित तुलनात्मक कथन पूरी तरह असत्य एवं गलत प्रदर्शित होता है।

26. (C) 2015
'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' योजना का शुभारंभ राष्ट्रीय स्तर पर जनवरी 2015 में किया गया था। इस योजना का मुख्य उद्देश्य गिरते बाल लिंगानुपात को सुधारना, कन्या भ्रूण हत्या की रोकथाम करना और बालिकाओं की शिक्षा एवं सशक्तिकरण को बढ़ावा देना है। राजस्थान के कई जिलों में शिशु लिंगानुपात चिंताजनक रूप से कम होने के कारण इस योजना को प्राथमिकता के आधार पर लागू किया गया ताकि सामाजिक सोच में बदलाव लाया जा सके।

27. (B) ₹ 50,000
राजस्थान में बालिकाओं के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने तथा उनके स्वास्थ्य और शिक्षा में सुधार के लिए मुख्यमंत्री राजश्री योजना संचालित की जा रही है। इस योजना के अंतर्गत 1 जून 2016 या उसके पश्चात जन्मी पात्र बालिकाओं को जन्म से लेकर कक्षा 12वीं उत्तीर्ण करने तक छह विभिन्न किस्तों में कुल 50,000 रुपये की वित्तीय प्रोत्साहन राशि प्रदान की जाती है। यह योजना बालिका बाल विवाह और ड्रॉपआउट रोकने में सहायक है।

28. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
राजस्थान में महिला साक्षरता दर 52.1 प्रतिशत है जो पुरुष साक्षरता दर 79.2 प्रतिशत से अत्यधिक कम है। इसका प्रमुख कारण राज्य में ऐतिहासिक रूप से व्याप्त पितृसत्तात्मक सामाजिक मान्यताएं, कम उम्र में विवाह की प्रथा, बालिकाओं की शिक्षा के प्रति उपेक्षा और घरेलू कामकाज का बोझ रहा है। इन सामाजिक बाधाओं ने महिलाओं की औपचारिक शिक्षा तक पहुँच को सीमित किया, जिससे दिया गया कारण कथन की सटीक व्याख्या करता है।

29. (A) 75.1 प्रतिशत
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान की कुल जनसंख्या का 75.1 प्रतिशत भाग ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करता है। इसका तात्पर्य है कि राज्य की तीन-चौथाई आबादी अपनी आजीविका और जीवन यापन के लिए कृषि, पशुपालन और ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर निर्भर है। मात्र 24.9 प्रतिशत आबादी ही शहरी निकायों में निवास करती है। यह आंकड़ा राजस्थान के ग्रामीण चरित्र और जनसांख्यिकीय संरचना की मौलिक प्रकृति को स्पष्ट रूप से उजागर करता है।

30. (C) विपरीत विस्तार चरण (निम्न जन्म दर और उच्च मृत्यु दर)
जनांकिकीय संक्रमण सिद्धांत के अंतर्गत तीन प्रमुख चरणों को मान्यता दी गई है: उच्च स्थैतिक चरण, प्रारम्भिक विस्तार चरण तथा उत्तरवर्ती विस्तार चरण। किसी भी मानक जनसांख्यिकीय मॉडल में 'विपरीत विस्तार चरण' नाम की कोई अवधारणा या अवस्था विद्यमान नहीं होती है जहाँ निम्न जन्म दर के साथ उच्च मृत्यु दर पाई जाए। अतः यह विकल्प जनसांख्यिकीय संक्रमण के सिद्धांतों और मानकों के सर्वथा प्रतिकूल एवं अप्रासंगिक है।

NODIA

31. (C) तृतीय चरण (घटती जन्म दर, निम्न मृत्यु दर)
जनांकिकीय संक्रमण मॉडल में राजस्थान वर्तमान में तृतीय चरण से गुजर रहा है। स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार से मृत्यु दर में उल्लेखनीय कमी आई है और यह निम्न स्तर पर बनी हुई है, जबकि जागरुकता और परिवार कल्याण कार्यक्रमों के प्रभाव से जन्म दर में भी निरंतर गिरावट दर्ज की जा रही है। इस चरण की विशेषता घटती जन्म दर और निम्न मृत्यु दर है, जो अंततः जनसंख्या स्थायित्व की ओर अग्रसर होने का संकेत देती है।

32. (D) उपर्युक्त में से कोई भी कथन असत्य नहीं है
जनगणना 2011 के अनुसार राजस्थान में अनुसूचित जाति की कुल जनसंख्या 17.83 प्रतिशत है। श्रीगंगानगर जिले में अनुसूचित जाति की आबादी का अनुपात सर्वाधिक 36.6 प्रतिशत दर्ज किया गया है, जबकि डूंगरपुर जिले में यह अनुपात सबसे कम 3.8 प्रतिशत है। इस प्रकार अनुसूचित जाति के वितरण से संबंधित दिए गए तीनों विवरण पूरी तरह से प्रामाणिक और सत्य हैं, इसलिए कोई भी कथन असत्य की श्रेणी में नहीं आता है।

33. (B) 17.8 प्रतिशत
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान की कुल जनसांख्यिकी में अनुसूचित जाति का अनुपात 17.83 प्रतिशत दर्ज किया गया था, जो निरपेक्ष रूप से लगभग 1.22 करोड़ के बराबर है। राज्य के उत्तरी मैदानी जिलों विशेषकर श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ में अनुसूचित जाति का प्रतिशत काफी अधिक पाया जाता है, जबकि दक्षिणी पर्वतीय एवं जनजातीय बहुल जिलों में इनकी अनुपातिक उपस्थिति तुलनात्मक रूप से कम दर्ज की गई है।

34. (A) P-1, Q-2, R-3, S-4
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान के दक्षिणी जिलों में अनुसूचित जनजाति की आबादी का संकेंद्रण अत्यधिक है। आंकड़ों के अनुसार बांसवाड़ा में अनुसूचित जनजाति का प्रतिशत सर्वाधिक 76.4 प्रतिशत है। डूंगरपुर जिले में यह अनुपात 70.8 प्रतिशत दर्ज किया गया है। प्रतापगढ़ जिले में अनुसूचित जनजाति की आबादी 63.4 प्रतिशत है, जबकि उदयपुर जिले में यह आंकड़ा 49.7 प्रतिशत है। यह राज्य का मुख्य जनजातीय बेल्ट है।

35. (A) बांसवाड़ा
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान के बांसवाड़ा जिले में उसकी कुल आबादी के अनुपात में अनुसूचित जनजाति का प्रतिशत सर्वाधिक दर्ज किया गया था, जो 76.4 प्रतिशत है। इसके पश्चात डूंगरपुर 70.8 प्रतिशत के साथ दूसरे और प्रतापगढ़ 63.4 प्रतिशत के साथ तीसरे स्थान पर है। अरावली पहाड़ी क्षेत्र और वनाच्छादित धरातल होने के कारण बांसवाड़ा जिले में जनजातीय आबादी का ऐतिहासिक और सामाजिक संकेंद्रण सबसे अधिक पाया जाता है।

36. (C) डूंगरपुर
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान के डूंगरपुर जिले में उसकी कुल आबादी की तुलना में अनुसूचित जाति का प्रतिशत सबसे कम मात्र 3.8 प्रतिशत दर्ज किया गया है। इसका मुख्य कारण डूंगरपुर में अनुसूचित जनजाति की भारी बहुलता होना है जो कुल आबादी का लगभग 70.8 प्रतिशत हिस्सा बनाती है। जनजातीय आबादी की इस विशाल उपस्थिति के कारण यहाँ अनुसूचित जाति का अनुपातिक प्रतिनिधित्व न्यूनतम स्तर पर रहता है।

37. (A) बीकानेर और नागौर
वर्ष 2011 की आधिकारिक जनगणना के अनुसार राजस्थान के बीकानेर और नागौर जिलों में अनुसूचित जनजाति की न्यूनतम निरपेक्ष जनसंख्या तथा न्यूनतम अनुपातिक हिस्सेदारी दर्ज की गई थी। इन दोनों जिलों में कुल आबादी में अनुसूचित जनजाति का अनुपात मात्र 0.3 प्रतिशत है। इन मरुस्थलीय एवं मैदानी क्षेत्रों में ऐतिहासिक रूप से जनजातीय समुदायों का निवास स्थान न होने के कारण यहाँ जनजातीय जनसांख्यिकी अत्यंत नगण्य पाई जाती है।

38. (D) I, II, III और IV
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान में हिन्दू धर्म के अनुयायी 88.49 प्रतिशत के साथ सबसे बड़ा धार्मिक समूह हैं। मुस्लिम आबादी 9.07 प्रतिशत के साथ दूसरा बड़ा समूह है। इसके अतिरिक्त सिख आबादी 1.27 प्रतिशत तथा जैन आबादी 0.91 प्रतिशत दर्ज की गई थी जो 1 प्रतिशत से कम है। अतः राज्य की धार्मिक संरचना के संदर्भ में दिए गए सभी चारों जनांकिकीय विवरण पूरी तरह से सत्य एवं प्रामाणिक हैं।

39. (B) जैन
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान के प्रमुख धार्मिक समुदायों में जैन समुदाय की साक्षरता दर सर्वाधिक दर्ज की गई थी, जो 93 प्रतिशत से भी अधिक है। व्यापारिक गतिविधियों में संलग्न होने, उच्च शहरीकरण तथा शिक्षा के प्रति ऐतिहासिक जागरुकता के कारण इस समुदाय में पुरुष और महिला दोनों वर्गों की साक्षरता दर राज्य के अन्य सभी धार्मिक समूहों की तुलना में अत्यधिक उन्नत और अग्रसर स्थिति में पाई जाती है।

40. (C) संपूर्ण पश्चिमी शुष्क क्षेत्रों में सीमित जल (पेयजल) संसाधनों पर अत्यधिक दबाव।
राजस्थान में संसाधन नियोजन के समक्ष सबसे गंभीर जनांकिकीय चुनौती पश्चिमी शुष्क क्षेत्रों में बढ़ती जनसंख्या का सीमित जल संसाधनों पर अत्यधिक दबाव है। राज्य में देश का 10.41 प्रतिशत भू-भाग है किंतु सतही जल संसाधनों का मात्र 1.16 प्रतिशत भाग ही उपलब्ध है। मरुस्थलीय जिलों में तीव्र जनसंख्या वृद्धि और घटते भूजल स्तर के कारण पेयजल, स्वच्छता और कृषि आजीविका के लिए अभूतपूर्व जल संकट की स्थिति निर्मित हो रही है।

41. (D) बच्चों की वह औसत कुल संख्या जो एक महिला अपने संपूर्ण प्रजनन काल के दौरान जन्म देती है।
जनांकिकी में कुल प्रजनन दर (टीएफआर) उस औसत कुल बच्चों की संख्या को व्यक्त करती है जो एक महिला अपने संपूर्ण प्रजनन काल (साधारणतः 15 से 49 वर्ष की आयु) के दौरान जीवित जन्म दे सकती है, यदि वह वर्तमान आयु-विशिष्ट

Click Here to Buy book on Amazon

राष्ट्रीय औसत की तुलना में कम जनघनत्व (200 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी) की स्थिति को स्पष्ट करता है।

83. (A) प्रतापगढ़
2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान में सर्वाधिक कार्य सहभागिता दर (डब्ल्यूपीआर) प्रतापगढ़ जिले में दर्ज की गई थी, जहाँ की कुल जनसंख्या का लगभग 55.5 प्रतिशत हिस्सा आर्थिक गतिविधियों में संलग्न श्रमिक वर्ग के रूप में दर्ज हुआ। इसके पश्चात चित्तौड़गढ़ दूसरे स्थान पर रहा। जनजातीय एवं ग्रामीण प्रधान जिलों में जीवन यापन के लिए महिलाओं और सीमांत श्रमिकों की कृषि तथा मजदूरी में उच्च भागीदारी के कारण कार्य सहभागिता दर अधिक पाई जाती है।

84. (C) जनसंख्या वृद्धि को तेज करने के लिए अशोधित जन्म दर बढ़ाना
राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन (एनआरएचएम) और परिवार कल्याण कार्यक्रमों का मुख्य उद्देश्य शिशु मृत्यु दर तथा मातृ मृत्यु अनुपात में कमी लाना, प्रजनन स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार करना तथा गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य तक सार्वभौमिक पहुँच प्रदान करना है। अशोधित जन्म दर को बढ़ाना किसी भी स्वास्थ्य मिशन का उद्देश्य नहीं है, बल्कि इसका लक्ष्य जन्म दर को नियंत्रित कर जनसंख्या को स्थायित्व प्रदान करना है। अतः यह विकल्प असंगत है।

85. (A) अशोधित जन्म दर घटाव अशोधित मृत्यु दर।
जनांकिकी में किसी भी क्षेत्र की 'प्राकृतिक वृद्धि दर' की गणना अशोधित जन्म दर (प्रति हजार पर जीवित जन्म) में से अशोधित मृत्यु दर (प्रति हजार पर मौतें) को घटाकर की जाती है। इसमें किसी भी प्रकार के अंतःप्रवास या बाह्य-प्रवास से होने वाले जनसांख्यिकीय परिवर्तनों को शामिल नहीं किया जाता है। यह सूचकांक केवल जैविक कारकों (जन्म और मृत्यु) के आधार पर जनसंख्या में होने वाले शुद्ध परिवर्तन की गति को प्रदर्शित करता है।

86. (B) 1911-1921
राजस्थान के जनांकिकीय इतिहास में 1911 से 1921 के दशक को महान विभाजक वर्ष के रूप में जाना जाता है, क्योंकि इस दौरान राज्य में ऋणात्मक जनसंख्या वृद्धि दर (-6.29%) दर्ज की गई थी। इस दशक में छप्पनिया अकाल के प्रभाव, अकाल जनित भुखमरी, संक्रामक बीमारियों तथा 1918 की विनाशकारी वैश्विक इन्फ्लूएंजा महामारी के कारण अत्यधिक मृत्यु दर दर्ज हुई थी जिसने राज्य की कुल आबादी को उल्लेखनीय रूप से घटा दिया था।

87. (B) दौसा
राजस्थान का दौसा जिला एक पूर्णतः अंतःवर्ती (स्थल-रुद्ध) जिला है, जिसकी सीमा किसी अन्य राज्य या देश से नहीं मिलती है। इसके बावजूद 2011 की जनगणना के अनुसार दौसा जिले का जनघनत्व 476 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर दर्ज किया गया है जो राज्य में तृतीय सर्वोच्च स्थान पर है। जयपुर के समीप स्थित होने, उपजाऊ मैदानी कृषि भूमि तथा बेहतर सड़क व रेल परिवहन संपर्क के कारण यहाँ जनसांख्यिकीय बसावट काफी सघन पाई जाती है।

88. (C) शिशु लिंगानुपात 2001 में 909 से सुधरकर 2011 में 933 हो गया।
राजस्थान में कुल लिंगानुपात हमेशा 1000 से कम रहा है और ग्रामीण लिंगानुपात शहरी लिंगानुपात से बेहतर बना हुआ है। 2001 से 2011 के दौरान कुल लिंगानुपात 922 से बढ़कर 928 हुआ। हालाँकि शिशु लिंगानुपात (0-6 वर्ष) में सुधार नहीं हुआ, बल्कि यह 2001 में 909 से घटकर 2011 में 888 हो गया। अतः शिशु लिंगानुपात में सुधार से संबंधित दिया गया विवरण पूरी तरह असत्य और आंकड़ों के सर्वथा विपरीत है।

89. (D) बेहतर संस्थागत प्रसव और स्वास्थ्य सेवाओं से प्रेरित होकर इसमें निरंतर गिरावट देखी गई।
पिछले दो दशकों में राजस्थान में शिशु मृत्यु दर (आईएमआर) में निरंतर और उल्लेखनीय गिरावट दर्ज की गई है। राज्य में राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के तहत संस्थागत प्रसवों को बढ़ावा देने, निःशुल्क दवा व जांच योजना लागू करने, नवजात शिशु देखभाल इकाइयों की स्थापना तथा व्यापक टीकाकरण अभियानों के संचालन से शिशु मृत्यु दर में भारी कमी संभव हो सकी है, जिससे बाल स्वास्थ्य सूचकांकों में निरंतर सुधार देखने को मिला है।

NODIA

90. (A) 15-59 वर्ष
भारत की जनगणना और अंतर्राष्ट्रीय जनांकिकीय मानकों के अनुसार 'कार्यशील आयु की जनसंख्या' को 15 से 59 वर्ष के आयु वर्ग में आने वाले व्यक्तियों के रूप में परिभाषित किया जाता है। इस आयु वर्ग के व्यक्तियों को आर्थिक रूप से सक्रिय तथा उत्पादक आबादी माना जाता है जो राज्य के उत्पादन, सेवाओं और अर्थव्यवस्था में योगदान देती है। इससे कम (0-14) या अधिक (60+) आयु के व्यक्तियों को सामान्यतः आश्रित आबादी की श्रेणी में रखा जाता है।

52. (C) 29.0 प्रतिशत
2001 से 2011 के दशक के दौरान राजस्थान में शहरी जनसंख्या की दशकीय वृद्धि दर 29.0 प्रतिशत दर्ज की गई थी। इसी अवधि में ग्रामीण जनसंख्या की दशकीय वृद्धि दर 19.0 प्रतिशत रही, जबकि राज्य की कुल औसत वृद्धि दर 21.3 प्रतिशत थी। शहरी क्षेत्रों में अधिक वृद्धि दर का मुख्य कारण ग्रामीण क्षेत्रों से बेहतर रोजगार, शिक्षा और आधुनिक सुविधाओं की तलाश में शहरों की ओर होने वाला तीव्र जनसांख्यिकीय स्थानांतरण एवं अंतःप्रवास है।

53. (A) राज्य ने केवल 1911-1921 के दौरान ऋणात्मक दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर्ज की थी।
राजस्थान के जनसांख्यिकीय इतिहास में केवल 1911 से 1921 के दशक में ऋणात्मक जनसंख्या वृद्धि दर (-6.29 प्रतिशत) दर्ज की गई थी। इसका मुख्य कारण उस दशक में पड़ा भीषण अकाल, खाद्यान्न संकट तथा प्रथम विश्व युद्ध के दौरान फैली वैश्विक इन्फ्लूएंजा महामारी थी जिसने व्यापक जनहानि पहुँचाई। इस ऐतिहासिक दशक के बाद से राज्य की जनसंख्या में प्रत्येक जनगणना में निरंतर धनात्मक वृद्धि ही दर्ज की जाती रही है।

54. (B) 1971-1981
स्वतंत्रता के पश्चात राजस्थान ने अपनी अब तक की उच्चतम दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर 1971 से 1981 के दशक में दर्ज की थी जो 32.97 प्रतिशत थी। इस अवधि में मृत्यु दर और शिशु मृत्यु दर में तीव्र गिरावट आई क्योंकि स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार हुआ, जबकि जन्म दर उच्च स्तर पर ही बनी रही। जन्म और मृत्यु दर के बीच इस विशाल अंतर के कारण राज्य में जनसांख्यिकीय विस्फोट की स्थिति निर्मित हुई।

55. (A) P-1, Q-2, R-3, S-4
2001-2011 के दौरान राजस्थान के विभिन्न जिलों में भिन्न-भिन्न दशकीय जनसंख्या वृद्धि दरें दर्ज की गईं। आंकड़ों के अनुसार श्रीगंगानगर में राज्य की न्यूनतम वृद्धि दर 10.0 प्रतिशत दर्ज की गई। झुंझुनूं जिले में यह दर 11.7 प्रतिशत रही। पाली जिले का आंकड़ा 11.9 प्रतिशत दर्ज किया गया, जबकि बूंदी जिले में दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर 15.4 प्रतिशत पाई गई थी। ये आंकड़े राज्य में क्षेत्रीय जनसांख्यिकीय भिन्नता दर्शाते हैं।

56. (C) एक वर्ष में 183 दिनों (6 महीने) से कम।
भारत की जनगणना में किसी व्यक्ति की आर्थिक गतिविधियों का आकलन करते समय उसे 'सीमांत श्रमिक' तब माना जाता है जब उसने संदर्भ वर्ष (अर्थात गणना से पूर्व के एक वर्ष) के दौरान कुल मिलाकर 183 दिनों या 6 महीनों से कम अवधि के लिए कोई लाभकारी कार्य किया हो। यदि कोई व्यक्ति 183 दिन या उससे अधिक कार्य करता है तो उसे जनगणना की मानक परिभाषा के अनुसार 'मुख्य श्रमिक' की श्रेणी में रखा जाता है।

57. (D) 70.4 प्रतिशत
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान की कुल कार्यशील जनसंख्या में से मुख्य श्रमिकों का प्रतिशत लगभग 70.4 प्रतिशत दर्ज किया गया था, जबकि शेष 29.6 प्रतिशत श्रमिक सीमांत श्रेणी में आते हैं। मुख्य श्रमिकों का तात्पर्य उन व्यक्तियों से है जिन्हें वर्ष में 183 दिन या उससे अधिक समय के लिए स्थायी अथवा नियमित रोजगार प्राप्त होता है। यह अनुपात राज्य में रोजगार की प्रकृति और आजीविका की स्थिरता का आकलन प्रस्तुत करता है।

58. (A) विवाह के उपरांत पति के आवास पर बसने से जुड़े सामाजिक और वैवाहिक रिवाज।
राजस्थान में ग्रामीण क्षेत्रों से महिलाओं के बाह्य-प्रवास का सबसे प्रमुख समाजशास्त्रीय कारण विवाह से जुड़ी सामाजिक परंपराएँ हैं। भारतीय समाज की पितृसत्तात्मक संरचना के अनुसार विवाह के पश्चात दुल्हन को अपना पैतृक स्थान छोड़कर पति के परिवार और निवास स्थान पर स्थानांतरित होना पड़ता है। यही कारण है कि महिलाओं के कुल प्रवास आंकड़ों में विवाह जनित प्रवास का हिस्सा सर्वाधिक होता है, जो आर्थिक कारणों की तुलना में कहीं अधिक व्यापक है।

59. (B) बार-बार पड़ने वाला सूखा और कृषि आय की कमी
प्रवास के सिद्धांतों में 'प्रतिकर्ष कारक' वे परिस्थितियाँ होती हैं जो किसी व्यक्ति को अपना मूल निवास स्थान छोड़ने पर मजबूर करती हैं। राजस्थान में बार-बार पड़ने वाला सूखा, जल संकट, कृषि उत्पादकता में गिरावट तथा आजीविका की अनिश्चितता प्रमुख प्रतिकर्ष कारक हैं। इसके विपरीत शहरों में बेहतर रोजगार, उच्च जीवन स्तर तथा उन्नत शैक्षणिक व स्वास्थ्य सुविधाएं 'आकर्षण कारक' कहलाती हैं जो लोगों को अपनी ओर आकर्षित करने का कार्य करती हैं।

60. (B) कार्यशील आयु की जनसंख्या (15-59 वर्ष) के सापेक्ष गैर-कार्यशील आयु की जनसंख्या (0-14 और 60+ वर्ष)।
किसी समाज का 'आश्रितता अनुपात' उस अर्थव्यवस्था पर गैर-उत्पादक आबादी के बोझ को मापता है। इसकी गणना आर्थिक रूप से निष्क्रिय एवं आश्रित आबादी (0 से 14 वर्ष के बच्चे तथा 60 वर्ष या उससे अधिक आयु के वृद्ध) की कुल संख्या को उत्पादक या कार्यशील आयु की जनसंख्या (15 से 59 वर्ष) से विभाजित करके की जाती है। कम आश्रितता अनुपात किसी भी राज्य के लिए आर्थिक लाभांश और समृद्धि का अवसर प्रदान करता है।

61. (C) केवल IV
2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान की साक्षरता 66.1 प्रतिशत और शिशु लिंगानुपात 888 दर्ज किया गया था। साथ ही शहरी लिंगानुपात (914) ग्रामीण लिंगानुपात (933) से कम था। हालाँकि न्यूनतम साक्षरता दर सिरोही या जालोर में पाई गई थी, जबकि जैसलमेर में न्यूनतम साक्षरता दर्ज नहीं हुई थी। अतः चौथा विवरण असत्य है, जबकि शेष तीनों विवरण प्रामाणिक हैं। इसलिए केवल चौथा विकल्प गलत सिद्ध होता है।

62. (C) 27.1 प्रतिशत अंक
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान में पुरुष साक्षरता दर 79.2 प्रतिशत तथा महिला साक्षरता दर 52.1 प्रतिशत

Downloaded from www.pdf.tube

दर्ज की गई थी। इस प्रकार दोनों लिंगों के बीच साक्षरता का अंतर 27.1 प्रतिशत अंक है। यह व्यापक अंतर राज्य में वर्षों से चली आ रही लैंगिक असमानता, सामाजिक रूढ़िवादिता और बालिकाओं की शिक्षा तक सीमित पहुँच को प्रदर्शित करता है। यद्यपि सुधार जारी है, फिर भी यह अंतर राष्ट्रीय स्तर की तुलना में अत्यधिक बना हुआ है।

63. (D) जैन - 5.12%
2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान में धार्मिक आबादी का प्रतिशत: हिन्दू 88.49%, मुस्लिम 9.07% तथा सिख 1.27% दर्ज किया गया था, जो पूरी तरह सही हैं। हालाँकि राज्य में जैन समुदाय की जनसंख्या का अनुपात 0.91 प्रतिशत दर्ज किया गया था, न कि 5.12 प्रतिशत। इसलिए जैन धर्म के जनसांख्यिकीय आंकड़े से संबंधित युग्म असत्य और त्रुटिपूर्ण है, जबकि अन्य सभी धार्मिक प्रतिशत आंकड़े जनगणना की रिपोर्ट से सटीक मेल खाते हैं।

64. (C) भरतपुर
2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान में केवल दो जिलों का जनघनत्व 500 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर से अधिक दर्ज किया गया है। पहला जयपुर जिला है जहाँ जनघनत्व 595 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है, और दूसरा भरतपुर जिला है जहाँ जनघनत्व 503 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है। पूर्वी मैदानी भाग में स्थित होने के कारण भरतपुर की उपजाऊ भूमि, समतल मैदानी धरातल तथा कृषि अनुकूलता के कारण यहाँ जनसांख्यिकीय बसावट अत्यंत सघन पाई जाती है।

65. (B) श्रीगंगानगर
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान के श्रीगंगानगर जिले में सबसे कम दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर (2001-2011) दर्ज की गई थी, जो मात्र 10.0 प्रतिशत थी। इसके पश्चात झुंझुनूं में 11.7 प्रतिशत तथा पाली में 11.9 प्रतिशत वृद्धि पाई गई। श्रीगंगानगर में इंदिरा गांधी नहर प्रणाली द्वारा कृषि समृद्धि, उच्च साक्षरता तथा सघन परिवार कल्याण जागरूकता के कारण जनसंख्या वृद्धि की गति राज्य में सबसे धीमी और नियंत्रित रही है।

66. (B) जैसलमेर, बीकानेर, बाड़मेर, चूरू
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान में न्यूनतम से उच्चतम जनघनत्व वाले मरुस्थलीय जिलों का सही क्रम जैसलमेर (17), बीकानेर (78), बाड़मेर (92) तथा चूरू (147) है। थार मरुस्थल की कठोरता के आधार पर जनघनत्व में यह क्रमिक वृद्धि देखने को मिलती है। जैसलमेर में सबसे भीषण जलवायु के कारण न्यूनतम जनघनत्व है, जबकि जैसे-जैसे हम पूर्व की ओर बढ़ते हैं, जनघनत्व का स्तर धीरे-धीरे बढ़ता जाता है।

67. (A) 68.7 वर्ष
नमूना पंजीकरण प्रणाली (एसआरएस) के 2015-19 के जनसांख्यिकीय आंकड़ों के अनुसार राजस्थान में जन्म के समय कुल जीवन प्रत्याशा लगभग 68.7 वर्ष अनुमानित की गई है। इसमें पुरुषों की जीवन प्रत्याशा लगभग 66.3 वर्ष और महिलाओं की जीवन प्रत्याशा 71.3 वर्ष दर्ज की गई है। स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार, शिशु मृत्यु दर में कमी और प्राथमिक चिकित्सा की सुलभता के कारण राज्य में जीवन प्रत्याशा में पिछले दशकों में निरंतर वृद्धि दर्ज हुई है।

NODIA

68. (C) 933
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान का ग्रामीण लिंगानुपात 933 महिलाएं प्रति 1000 पुरुष दर्ज किया गया था। यह आंकड़ा राज्य के कुल लिंगानुपात (928) तथा शहरी लिंगानुपात (914) दोनों की तुलना में अधिक है। ग्रामीण क्षेत्रों में पारंपरिक सामाजिक जीवन, प्रसव पूर्व लिंग पहचान तकनीकों की सीमित पहुँच तथा कुछ हद तक बालिका शिशु देखभाल के प्रति बेहतर रीति-रिवाजों के कारण शहरी क्षेत्रों की तुलना में लिंगानुपात बेहतर स्थिति में बना हुआ है।

69. (A) 914
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान का शहरी लिंगानुपात 914 महिलाएं प्रति 1000 पुरुष दर्ज किया गया था। यह आंकड़ा ग्रामीण लिंगानुपात (933) से 19 अंक कम है। शहरी क्षेत्रों में प्रसव पूर्व लिंग चयन तकनीकों का दुरुपयोग, एकल परिवारों का चलन तथा पुरुषों का रोजगार हेतु एकाकी प्रवास जैसे कारणों ने शहरी लिंगानुपात को ऋणात्मक रूप से प्रभावित किया है, जिससे यह राज्य औसतन स्तर से भी नीचे दर्ज हुआ है।

70. (D) बांसवाड़ा
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान में सर्वाधिक शिशु लिंगानुपात (0-6 वर्ष) बांसवाड़ा जिले में दर्ज किया गया था, जहाँ प्रति 1000 बालकों पर 934 बालिकाएं थीं। इसके पश्चात प्रतापगढ़ 933 के साथ दूसरे स्थान पर रहा। दक्षिणी राजस्थान के इन जनजातीय बहुल जिलों में सामाजिक रीति-रिवाजों में बालक और बालिका के बीच भेदभाव कम पाया जाता है तथा लिंग चयन प्रथाएं अनुपस्थित हैं, जिसके कारण शिशु लिंगानुपात राज्य में सर्वोच्च रहा।

71. (B) उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा, तकनीकी कौशल विकास और रोजगार सृजन में रणनीतिक निवेश।
राजस्थान में अनुकूल आयु संरचना से प्राप्त होने वाले जनांकिकीय लाभांश का अधिकतम लाभ उठाने के लिए केवल युवाओं की विशाल संख्या पर्याप्त नहीं है। इसके लिए राज्य को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, तकनीकी एवं व्यावसायिक कौशल प्रशिक्षण, स्वास्थ्य सुविधाओं तथा पर्याप्त रोजगार के अवसरों का सृजन करना अनिवार्य है। जब युवा कार्यबल कुशल और उत्पादक होगा, तभी राज्य की आर्थिक समृद्धि और प्रति व्यक्ति आय में तीव्र वृद्धि सुनिश्चित हो सकेगी।

72. (C) प्रतिस्थापन स्तर की प्रजनन दर (2.1 की TFR) प्राप्त करना
राजस्थान की जनसंख्या नीति का प्राथमिक और दीर्घकालिक जनसांख्यिकीय उद्देश्य कुल प्रजनन दर को प्रतिस्थापन स्तर (2.1 की टीएफआर) तक लाना है, ताकि राज्य की कुल जनसंख्या को एक स्थायी स्तर पर संतुलित किया जा सके। इस लक्ष्य की प्राप्ति से प्राकृतिक जनसंख्या वृद्धि दर स्थिर हो जाएगी। इसे

हासिल करने के लिए मातृ-शिशु स्वास्थ्य में सुधार, सर्वसुलभ परिवार नियोजन सेवाएं और जन-जागरुकता अभियानों को निरंतर गति दी जा रही है।

73. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
राजस्थान से गुजरात, महाराष्ट्र और दिल्ली जैसे औद्योगिक रुप से विकसित राज्यों की ओर पुरुषों का बाह्य-प्रवास बड़े पैमाने पर होता है। इसका मुख्य कारण पड़ोसी राज्यों में विशाल औद्योगिक आधार, उच्च मजदूरी दर, वाणिज्यिक अवसर तथा निरंतर आजीविका का सुलभ होना है, जबकि राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों में सीमित रोजगार और सूखे की समस्या बनी रहती है। अतः दिया गया कारण अंतरराज्यीय प्रवास की प्रवृत्ति को पूरी तरह से स्पष्ट करता है।

74. (C) 3
2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान में 10 लाख (1 मिलियन) से अधिक आबादी वाले कुल 3 शहर (शहरी संकुलन) दर्ज किए गए थे। ये तीन प्रमुख महानगर जयपुर, जोधपुर तथा कोटा हैं। जयपुर राज्य का सबसे बड़ा दस लाखी शहर है जिसकी शहरी आबादी 30 लाख से अधिक है। इसके पश्चात जोधपुर और कोटा ने भी तीव्र औद्योगिक, व्यावसायिक एवं शैक्षणिक विस्तार के कारण दस लाख से अधिक जनसंख्या का स्तर पार किया था।

75. (B) जयपुर
2011 की जनगणना में जयपुर राजस्थान का एकमात्र ऐसा जिला बनकर उभरा जिसकी कुल जनसांख्यिकी 60 लाख के आंकड़े को पार कर गई। जयपुर जिले की कुल जनसंख्या 66,26,178 दर्ज की गई थी। राज्य की प्रशासनिक राजधानी होने, सुदृढ़ औद्योगिक आधार, परिवहन तंत्र, व्यावसायिक गतिविधियों तथा शैक्षणिक संस्थानों की सुलभता के कारण आसपास के क्षेत्रों से भारी संख्या में जनसांख्यिकीय अंतःप्रवास हुआ, जिससे यह सर्वाधिक आबादी वाला जिला बना।

76. (D) उपर्युक्त सभी
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान के जैसलमेर, सिरोही और प्रतापगढ़ तीनों जिलों की कुल निरपेक्ष जनसंख्या 10 लाख (1 मिलियन) से कम दर्ज की गई थी। जैसलमेर की आबादी 6.69 लाख, प्रतापगढ़ की 8.67 लाख तथा सिरोही की आबादी लगभग 10.36 लाख (नगर क्षेत्र/मूल आधार) के आसपास दर्ज हुई थी। विकट भौगोलिक परिस्थितियों, पहाड़ी व मरुस्थलीय धरातल के कारण इन जिलों में जनसांख्यिकीय आकार राज्य में काफी छोटा है।

77. (A) 52.8 प्रतिशत
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान में अनुसूचित जनजाति (एसटी) की कुल साक्षरता दर 52.8 प्रतिशत दर्ज की गई थी। इसमें जनजातीय पुरुषों की साक्षरता 67.1 प्रतिशत तथा जनजातीय महिलाओं की साक्षरता मात्र 37.3 प्रतिशत पाई गई थी। यद्यपि पिछले दशकों की तुलना में दुर्गम जनजातीय क्षेत्रों में शैक्षणिक अवसरों का विस्तार हुआ है, फिर भी राज्य की सामान्य साक्षरता दर (66.1%) की तुलना में यह काफी पीछे बनी हुई है।

78. (A) P-2, Q-1, R-2, S-2
2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान के कुल लिंगानुपात (928 बनाम 943), शिशु लिंगानुपात (888 बनाम 919) तथा कुल साक्षरता दर (66.1% बनाम 73.0%) के आंकड़े राष्ट्रीय औसत से कम दर्ज किए गए हैं। इसके विपरीत राज्य की दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर (21.3% बनाम 17.7%) राष्ट्रीय औसत से अधिक दर्ज हुई है। यह तुलनात्मक विश्लेषण राज्य में जनसांख्यिकीय सुधार की आवश्यकता तथा जनसंख्या नियंत्रण की गति को स्पष्ट रूप से रेखांकित करता है।

79. (D) चिन्हित लक्षित जिलों में तेजी से घटता शिशु लिंगानुपात
राजस्थान में 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' योजना को प्रारम्भ में राज्य के उन विशेष जिलों में केंद्रित करके लागू किया गया था जहाँ शिशु लिंगानुपात (0-6 वर्ष) में तीव्र गिरावट दर्ज की गई थी। वर्ष 2011 की जनगणना में शिशु लिंगानुपात घटकर 888 हो जाने और झुंझुनूं, सीकर, धौलपुर जैसे जिलों में अत्यंत खराब स्थिति होने के कारण प्रसव पूर्व लिंग निर्धारण रोकने और बालिकाओं के अस्तित्व की सुरक्षा हेतु यह अभियान चलाया गया।

80. (B) केवल II और III
राजस्थान में कार्यशील आयु वर्ग (15-59 वर्ष) कुल आबादी का बहुसंख्यक हिस्सा बनाता है और बेहतर जीवन प्रत्याशा के कारण वृद्ध आबादी (60+ वर्ष) का अनुपात भी धीरे-धीरे बढ़ रहा है। हालाँकि 0-14 आयु वर्ग की बाल जनसंख्या कुल आबादी का लगभग 30 प्रतिशत से अधिक हिस्सा बनाती है, न कि 15 प्रतिशत से कम। इसलिए पहला विवरण गलत है, जबकि दूसरा और तीसरा विवरण प्रामाणिक एवं पूर्णतः सत्य हैं।

81. (D) I, II, III और IV
राजस्थान में ग्रामीण-से-ग्रामीण प्रवास सर्वाधिक है जिसमें विवाह जनित महिला प्रवास प्रमुख है। पुरुष मुख्य रूप से आजीविका के लिए शहरों की ओर पलायन करते हैं। राज्य के आंतरिक अंतरा-राज्यीय प्रवास की मात्रा अंतरराज्यीय प्रवास से कहीं अधिक है, और पश्चिमी राजस्थान में सूखा व जल संकट मौसमी प्रवास का मुख्य प्रतिकर्ष कारक है। अतः राज्य की प्रवास प्रवृत्तियों से संबंधित दिए गए चारों जनांकिकीय विवरण पूरी तरह सत्य और प्रामाणिक हैं।

82. (D) यह राष्ट्रीय भू-भाग के लगभग 10.41% हिस्से का प्रतिनिधित्व करता है जबकि कुल जनसंख्या के लगभग 5.66% का पोषण करता है।
राजस्थान भारत का सबसे बड़ा राज्य है जो देश के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल के 10.41 प्रतिशत भाग (3,42,239 वर्ग किमी) पर विस्तृत है। इसके विपरीत 2011 की जनगणना के अनुसार यह भारत की कुल जनसांख्यिकी के मात्र 5.66 प्रतिशत भाग का पोषण करता है। यह तुलनात्मक अंतर राज्य के विस्तृत मरुस्थलीय एवं अरावली पर्वतीय भू-भाग तथा

Click Here to Buy book on Flipkart

12. मीणा जनजाति के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. वे अपनी पौराणिक उत्पत्ति भगवान विष्णु के मत्स्य अवतार से मानते हैं।
II. मुनि मगन सागर जी महाराज ने उनके इतिहास से संबंधित 'मत्स्य पुराण' का संकलन किया।
III. ऐतिहासिक रूप से, वे मुख्य रूप से जमींदार मीणा और चौकीदार मीणा में विभाजित थे।
कौन-सा संयोजन सही है?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

13. मीणा जनजाति की वह पारंपरिक वृहद स्तरीय सामुदायिक परिषद, जो ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण सामाजिक अधिकार रखती थी, किस नाम से जानी जाती है?
(A) चौरासी पंचायत
(B) पाल
(C) फला
(D) बटाई

14. एक पारंपरिक मीणा घर में 'ओबरी' क्या है?
(A) पारिवारिक देवी-देवताओं को समर्पित एक पवित्र आंतरिक स्थान
(B) जंगली जानवरों के शिकार के लिए उपयोग किया जाने वाला एक पारंपरिक लकड़ी का हथियार
(C) अनाज भंडारण के लिए प्रयुक्त मिट्टी और गाय के गोबर से बनी संरचना
(D) दुल्हन द्वारा पारंपरिक रूप से पहनी जाने वाली एक मांगलिक रेशमी पोशाक

15. शेखावाटी क्षेत्र में मीणा समुदाय द्वारा पारंपरिक रूप से मुख्य इष्टदेवी के रूप में निम्नलिखित में से किस देवी की पूजा की जाती है?
(A) कैला देवी
(B) चौथ माता
(C) करणी माता
(D) जीण माता

16. समकालीन समय में, राजस्थान में अधिकांश मीणा आबादी का मुख्य व्यवसाय क्या है?
(A) पारंपरिक शिकार और वन उपज संग्रहण
(B) हथकरघा बुनाई और हस्तशिल्प उत्पादन
(C) कृषि और पशुपालन
(D) खानों में मजदूरी और उत्खनन का कार्य

17. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए विकल्पों का प्रयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I : (जनजाति)
P. सहरिया
Q. गरासिया
R. डामोर
S. काथोड़ी
सूची II : (जिला)
1. डूंगरपुर
2. बारां
3. उदयपुर
4. सिरोही
(A) P-2, Q-4, R-1, S-3
(B) P-2, Q-3, R-1, S-4
(C) P-4, Q-2, R-3, S-1
(D) P-1, Q-4, R-2, S-3

18. गरासिया जनजाति द्वारा की जाने वाली स्थानांतरित कृषि के विशिष्ट प्रकार को क्या कहा जाता है?
(A) चीमाता
(B) दजिया
(C) पेन्डा
(D) वालरा

19. राजस्थान की किस झील को गरासिया जनजाति द्वारा अत्यंत पवित्र माना जाता है, जहाँ वे अपने पूर्वजों की अस्थियों का विसर्जन करते हैं?
(A) नक्की झील
(B) पुष्कर झील
(C) पिछोला झील
(D) आना सागर झील

20. गरासिया जनजाति के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. वे मुख्य रूप से सिरोही जिले की आबू रोड और पिंडवाड़ा तहसीलों में पाए जाते हैं।
II. 'हेलरु' कृषि और सामाजिक गतिविधियों के लिए उनकी पारंपरिक सहकारी संस्था है।
III. मोर-बांधिया उनके बीच पारंपरिक विवाह का अत्यधिक सम्मानित रूप माना जाता है।
IV. वे अपने समुदाय के भीतर विधवा पुनर्विवाह को कठोरता से प्रतिबंधित करते हैं।
कथनों का कौन-सा संयोजन गलत है?
(A) केवल I और II
(B) केवल III और IV
(C) केवल IV
(D) केवल II और III

21. गरासिया जनजाति के पारंपरिक गांव के मुखिया को निम्नलिखित में से किस नाम से जाना जाता है?
(A) सहरोत
(B) गमेती
(C) मुखी
(D) पटेल

22. राजस्थान में सहरिया जनजाति मुख्य रूप से किन दो तहसीलों में केंद्रित है?

NODIA

अध्याय 19

राजस्थान की प्रमुख जनजातियाँ

1. 2011 की जनगणना के अनुसार, राजस्थान में अनुसूचित जनजाति जनसंख्या का सबसे बड़ा प्रतिशत किस जनजाति का है?
(A) भील
(B) मीणा
(C) गरासिया
(D) सहरिया

2. कुल जनसंख्या के आकार के आधार पर राजस्थान की प्रमुख जनजातियों का सही अवरोही क्रम चुनिए:
(A) मीणा, भील, गरासिया, सहरिया
(B) भील, मीणा, सहरिया, गरासिया
(C) मीणा, भील, सहरिया, गरासिया
(D) भील, मीणा, गरासिया, सहरिया

3. भारत के संविधान के किस अनुच्छेद के तहत राजस्थान की अनुसूचित जनजातियों को आधिकारिक रूप से अधिसूचित किया गया है?
(A) अनुच्छेद 342
(B) अनुच्छेद 341
(C) अनुच्छेद 338
(D) अनुच्छेद 330

4. राजस्थान के किस भौगोलिक क्षेत्र में मुख्य रूप से भील जनजाति का संकेंद्रण है?
(A) हाड़ौती क्षेत्र
(B) शेखावाटी क्षेत्र
(C) मेवाड़ क्षेत्र (वागड़ और भौमट)
(D) मारवाड़ क्षेत्र

5. निम्नलिखित में से कौन-सा जिला राजस्थान में मुख्य भील आबादी वाले क्षेत्र के अंतर्गत नहीं आता है?
(A) चूरू
(B) बांसवाड़ा
(C) डूंगरपुर
(D) उदयपुर

6. दक्षिणी राजस्थान के पहाड़ी क्षेत्रों में ऐतिहासिक रूप से भील जनजाति द्वारा की जाने वाली स्थानांतरित कृषि को स्थानीय रूप से किस नाम से जाना जाता है?
(A) दजिया
(B) वालरा
(C) झूमिंग
(D) चीमाता

7. एक बड़े भील गाँव या गाँवों के समूह (पाल) के पारंपरिक मुखिया को क्या कहा जाता है?
(A) पटेल (B) गमेती
(C) कोतवाल (D) मुखी

8. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A) : ऐतिहासिक रूप से, भील अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से गौण वन उपज तथा शिकार एवं संग्रहण पर अत्यधिक निर्भर थी।
कारण (R) : भील पारंपरिक रूप से अरावली श्रेणी के घने जंगलों और पहाड़ी क्षेत्रों में निवास करते थे, जिससे मैदानी क्षेत्रों में स्थायी कृषि सीमित थी।
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है, लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है, लेकिन कारण (R) सही है।

9. भील जनजाति के संदर्भ में 'फाइरे-फाइरे' शब्द का क्या तात्पर्य है?
(A) फसल कटाई के त्योहारों के दौरान किया जाने वाला एक पारंपरिक लोक नृत्य
(B) गाँव के बुजुर्गों द्वारा निभाई जाने वाली एक पारंपरिक विवाह प्रथा
(C) प्रमुख कृषि चक्रों के दौरान पूजे जाने वाले एक स्थानीय देवता
(D) संकट के समय सदस्यों को एकत्र करने के लिए प्रयोग किया जाने वाला एक पारंपरिक रणघोष

10. भील समुदाय द्वारा रक्षात्मक पूर्वज के रूप में पूजे जाने वाले पारंपरिक पवित्र प्रतीक या पौधे/पशु को क्या कहा जाता है?
(A) टोटेम (B) खेड़ापत
(C) भोमिया (D) भेरुजी

11. मीणा जनजाति की आबादी राजस्थान के किस भौगोलिक क्षेत्र में सर्वाधिक केंद्रित है?
(A) दक्षिणी और दक्षिण-पूर्वी
(B) पूर्वी और उत्तर-पूर्वी
(C) पश्चिमी और उत्तर-पश्चिमी
(D) दक्षिण-पश्चिमी और मध्य

NODIA

प्रजनन दरों का सामना करे। यह सूचकांक किसी राज्य या देश की भावी जनसंख्या वृद्धि की गति, प्रतिस्थापन स्तर और परिवार नियोजन कार्यक्रमों की प्रभावशीलता को मापने का सबसे प्रामाणिक मापदंड माना जाता है।

42. (A) 2.0
राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (एनएफएचएस-5) के नवीनतम आंकड़ों के अनुसार राजस्थान ने अपनी कुल प्रजनन दर (टीएफआर) को घटाकर 2.0 तक पहुँचा दिया है। यह आंकड़ा प्रतिस्थापन स्तर (2.1) से भी नीचे है। यह प्रगति राज्य में बालिका शिक्षा के प्रसार, स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार, जागरूकता तथा परिवार नियोजन के साधनों की सुलभता को दर्शाती है, जिससे भविष्य में राजस्थान की जनसंख्या दर में स्थायित्व आने का मार्ग प्रशस्त हुआ है।

43. (B) झुंझुनूं
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान में सर्वाधिक पुरुष साक्षरता दर झुंझुनूं जिले में दर्ज की गई थी, जो 86.9 प्रतिशत है। इसके पश्चात कोटा जिला 86.3 प्रतिशत के साथ द्वितीय स्थान पर आता है। शेखावाटी क्षेत्र में स्थित झुंझुनूं में शैक्षणिक परंपरा, सैन्य सेवाओं में योगदान हेतु शिक्षा का महत्व तथा ग्रामीण स्तर पर विद्यालयों की सुदृढ़ उपस्थिति के कारण पुरुषों में साक्षरता का स्तर राज्य में सर्वोच्च रहा है।

44. (A) I, II, III, IV
2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान में न्यूनतम महिला साक्षरता वाले जिलों का आरोही (बढ़ता) क्रम जालोर, सिरोही, जैसलमेर तथा बाड़मेर है। जालोर जिले में न्यूनतम महिला साक्षरता 38.5 प्रतिशत दर्ज की गई। इसके बाद सिरोही में 39.7 प्रतिशत, जैसलमेर में 39.7 प्रतिशत तथा बाड़मेर में 40.6 प्रतिशत महिला साक्षरता पाई गई थी। इन दक्षिणी-पश्चिमी जिलों में बालिकाओं की शिक्षा में सामाजिक और भौगोलिक कारणों से अत्यधिक पिछड़ापन देखा जाता है।

45. (A) 888
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान में शिशु लिंगानुपात (0 से 6 वर्ष आयु वर्ग) 888 बालिकाएं प्रति 1000 बालक दर्ज किया गया था। वर्ष 2001 की जनगणना में यह आंकड़ा 909 था, जिसका अर्थ है कि एक दशक में इसमें 21 अंकों की गंभीर गिरावट आई। यह नकारात्मक प्रवृत्ति राज्य में प्रसव पूर्व लिंग चयन और बालिकाओं के प्रति सामाजिक उपेक्षा को उजागर करती है, जिससे निपटने हेतु सरकारी नीतियां लागू की गईं।

46. (C) झुंझुनूं
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान के झुंझुनूं जिले में सबसे कम शिशु लिंगानुपात दर्ज किया गया था जहाँ 0-6 वर्ष आयु वर्ग में प्रति 1000 बालकों पर मात्र 837 बालिकाएं थीं। इसके पश्चात सीकर 848 के साथ दूसरे स्थान पर था। यद्यपि झुंझुनूं में पुरुष साक्षरता दर राज्य में सर्वाधिक है, फिर भी प्रसव पूर्व लिंग निर्धारण की अवैध तकनीक और पितृसत्तात्मक सोच के कारण यहाँ शिशु लिंगानुपात अत्यंत चिंताजनक स्थिति में दर्ज हुआ।

47. (D) छोटे परिवार के मानदंडों को प्रोत्साहित करके और गर्भनिरोधक उपयोग को बढ़ाकर जनसंख्या वृद्धि को स्थिर करना।
राजस्थान में संचालित राज्य परिवार कल्याण कार्यक्रमों का प्राथमिक उद्देश्य प्रजनन दर को नियंत्रित करना और जनसंख्या वृद्धि में स्थायित्व लाना है। इसके तहत छोटे परिवार की अवधारणा का प्रसार करना, आधुनिक गर्भनिरोधक साधनों की आसान पहुँच सुनिश्चित करना, मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य में सुधार लाना तथा परिवार नियोजन सेवाओं को बढ़ावा देना शामिल है। यह नीतिगत प्रयास राज्य के संसाधनों और जनसांख्यिकीय विकास के बीच संतुलन स्थापित करने में सहायक होता है।

48. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
2011 की जनगणना के अनुसार जैसलमेर का जनघनत्व मात्र 17 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है जो संपूर्ण राजस्थान में सबसे कम है। इसका मुख्य कारण जिले में थार मरुस्थल का अत्यधिक फैलाव, कठोर शुष्क जलवायु, रेतीले टीले तथा पेयजल व कृषि योग्य भूमि का अभाव होना है। ये विपरीत प्राकृतिक परिस्थितियाँ मानव बसाव और स्थायी आजीविका के अनुकूल नहीं हैं, इसलिए दिया गया कारण कथन की पूरी तरह सटीक व्याख्या करता है।

49. (B) कोटा
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान में अपनी कुल आबादी की तुलना में सर्वाधिक शहरी जनसंख्या प्रतिशत वाला जिला कोटा है जहाँ 60.3 प्रतिशत आबादी शहरी क्षेत्रों में निवास करती है। दूसरे स्थान पर जयपुर जिला आता है जहाँ 52.4 प्रतिशत शहरी आबादी है। कोटा में औद्योगिक इकाइयों का संकेंद्रण, चंबल नदी आधारित अवसंरचना तथा विशाल कोचिंग उद्योग के कारण शहरीकरण की दर राज्य के अन्य सभी जिलों से अधिक दर्ज की गई।

50. (D) डूंगरपुर
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान के डूंगरपुर जिले में उसकी कुल आबादी के अनुपात में सर्वाधिक ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत दर्ज किया गया है जो 93.6 प्रतिशत है। इसके पश्चात बाड़मेर 93.0 प्रतिशत के साथ दूसरे और बांसवाड़ा 92.9 प्रतिशत के साथ तीसरे स्थान पर आता है। डूंगरपुर में वृहद उद्योगों का अभाव, पहाड़ी एवं जनजातीय बनावट तथा ग्रामीण कृषि-आधारित जीवनशैली के कारण शहरीकरण का स्तर राज्य में न्यूनतम स्थिति में है।

51. (A) केवल I और II
राजस्थान में शहरीकरण की प्रवृत्ति में निरंतर वृद्धि देखी गई है और जयपुर जिले में सर्वाधिक निरपेक्ष शहरी आबादी पाई जाती है। हालाँकि 2001 से 2011 के दौरान शहरी क्षेत्रों की दशकीय वृद्धि दर 29.0 प्रतिशत दर्ज की गई, जो ग्रामीण दशकीय वृद्धि दर 19.0 प्रतिशत से काफी अधिक थी। इसलिए पहला और दूसरा विवरण पूर्णतः सत्य हैं, जबकि तीसरा विवरण आंकड़ों के विपरीत होने के कारण पूरी तरह असत्य एवं गलत सिद्ध होता है।

Downloaded from www.pdf.tube

(A) अंता और मांगरोल
(B) छबड़ा और अटरू
(C) छीपाबड़ौद और किशनगंज
(D) शाहबाद और किशनगंज

23. राजस्थान में भारत सरकार द्वारा विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह के रूप में औपचारिक रूप से मान्यता प्राप्त एकमात्र जनजाति कौन-सी है?
(A) काथोड़ी जनजाति
(B) सहरिया जनजाति
(C) डामोर जनजाति
(D) गरासिया जनजाति

24. निम्नलिखित ऐतिहासिक/पौराणिक हस्तियों में से किसे सहरिया जनजाति द्वारा आदि गुरु के रूप में पूजा जाता है?
(A) गुरु जम्भेश्वर
(B) गोगाजी
(C) वाल्मीकि
(D) तेजाजी

25. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A) : सहरिया जनजाति सांस्कृतिक रूप से भिक्षा मांगने से बचती है और पारंपरिक रूप से दहेज प्रथा का पालन नहीं करती है।
कारण (R) : उन्हें उनकी उच्च साक्षरता और उन्नत आर्थिक स्थिति के कारण विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह के रूप में वर्गीकृत किया गया है।
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है, लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है, लेकिन कारण (R) सही है।

26. डामोर जनजाति मुख्य रूप से किस जिले की सीमलवाड़ा पंचायत समिति क्षेत्र में निवास करती है?
(A) डूंगरपुर
(B) बांसवाड़ा
(C) प्रतापगढ़
(D) उदयपुर

27. निम्नलिखित में से डामोर जनजाति की एक अनूठी सांस्कृतिक विशेषता की पहचान कीजिए:
(A) वे आधुनिक समय में मुख्य रूप से कर्तन एवं दहन (झूम) कृषि करते हैं।
(B) पुरुष, महिलाओं के समान आभूषण पहनते हैं।
(C) वे पारंपरिक रूप से झीलों पर तैरते हुए घरों में रहते हैं।
(D) वे त्योहारों के दौरान वाद्य यंत्रों के प्रयोग को कठोरता से प्रतिबंधित करते हैं।

28. डामोर जनजाति के पारंपरिक मुखिया या नेता को क्या कहा जाता है?
(A) कोतवाल
(B) मुखी
(C) गमेती
(D) पटेल

29. राजस्थान में काथोड़ी जनजाति का ऐतिहासिक पारंपरिक व्यवसाय क्या है?
(A) खैर के पेड़ों की छाल से कत्था बनाना
(B) घने जंगलों के पेड़ों से जंगली शहद और मोम निकालना
(C) बांस की सुंदर टोकरियां और घरेलू चटाइयाँ बुनना
(D) खदानों से कीमती पत्थरों का उत्खनन और कटाई करना

30. काथोड़ी जनजाति के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(A) वे मूल रूप से महाराष्ट्र से राजस्थान में स्थानांतरित हुए थे।
(B) इस जनजाति की महिलाएं पारंपरिक रूप से मराठी शैली की साड़ी पहनती हैं जिसे 'फड़का' कहा जाता है।
(C) वे वर्तमान में राजस्थान में सबसे अधिक जनसंख्या वाला जनजातीय समूह हैं।
(D) ऐतिहासिक रूप से, उनके द्वारा दूध और दुग्ध उत्पादों का सेवन बहुत कम किया जाता है।

NODIA

31. काथोड़ी जनजाति की सामाजिक संरचना और भूगोल के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उनकी बस्ती के नेता या मुखिया को 'नायक' कहा जाता है।
II. घास और पत्तियों से बनी उनकी पारंपरिक झोपड़ियों को 'खोलरा' कहा जाता है।
III. वे मुख्यतः उदयपुर जिले की कोटड़ा, झाड़ोल और सराड़ा तहसीलों में रहते हैं।
कौन-सा संयोजन सही है?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

32. भील जनजाति में प्रचलित 'दापा' प्रथा का तात्पर्य है:
(A) वधू के पिता द्वारा वर के परिवार को दिया जाने वाला दहेज।
(B) विवाह के बाद आयोजित एक बड़ा सामुदायिक भोज।
(C) वर पक्ष द्वारा वधू के पिता को दिया जाने वाला वधू मूल्य।
(D) विधवा का उसके मृतक पति के भाई के साथ अनिवार्य पुनर्विवाह।

33. राजस्थान के जनजातीय समाजों में 'नाता प्रथा' शब्द का क्या तात्पर्य है?
(A) आखा तीज पर बाल विवाह संपन्न कराने की एक पारंपरिक प्रथा

अनुशासन बनाए रखने, पारिवारिक विवादों को सुलझाने तथा सांस्कृतिक एवं धार्मिक अनुष्ठानों की अध्यक्षता करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सहरिया समाज में मुखिया का पद अत्यधिक सम्मानजनक होता है और उसके द्वारा दिए गए निर्णयों को पूरा गाँव सहर्ष स्वीकार करता है, जिससे सामाजिक सामंजस्य बना रहता है।

22. (D) शाहबाद और किशनगंज
राजस्थान में सहरिया जनजाति मुख्य रूप से बारां जिले की शाहबाद और किशनगंज तहसीलों में केंद्रित है। इन दोनों तहसीलों में सहरिया आबादी का घनत्व राज्य में सर्वाधिक है। यह क्षेत्र ऐतिहासिक रूप से वनाच्छादित और दुर्गम रहा है, जिसके कारण सहरिया समुदाय की अनूठी सांस्कृतिक परंपराएँ, बोली और जीवनशैली यहाँ संरक्षित रही हैं। सरकार ने इस क्षेत्र में सहरिया विकास कार्यक्रम भी विशेष रूप से संचालित किए हैं।

23. (B) सहरिया जनजाति
भारत सरकार द्वारा राजस्थान की सहरिया जनजाति को राज्य की एकमात्र विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह (PVTG) के रूप में औपचारिक रूप से सूचीबद्ध किया गया है। अत्यधिक सामाजिक-आर्थिक पिछड़ापन, निम्न साक्षरता दर, घटती या स्थिर जनसंख्या तथा पारंपरिक कृषि तकनीकों के प्रयोग के आधार पर सहरिया समुदाय को यह दर्जा दिया गया है। इस वर्गीकरण के तहत सहरिया समुदाय के सर्वांगीण विकास के लिए विशेष केंद्रीय योजनाएँ संचालित की जाती हैं।

24. (C) वाल्मीकि
सहरिया जनजाति महर्षि वाल्मीकि को अपना आदि गुरु और परम पूज्य मानती है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार सहरिया समुदाय स्वयं को महर्षि वाल्मीकि का वंशज मानता है। सीताबाड़ी, जो बारां जिले में स्थित है, महर्षि वाल्मीकि का आश्रम स्थल माना जाता है और सहरिया जनजाति के लिए सबसे पवित्र तीर्थ स्थान है। यहाँ आयोजित होने वाले वार्षिक मेले में सहरिया समुदाय के लोग भारी संख्या में एकत्र होकर श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं।

25. (C) कथन (A) सही है, लेकिन कारण (R) गलत है।
सहरिया जनजाति में भिक्षा माँगना सामाजिक रूप से वर्जित है और इस समुदाय में पारंपरिक रूप से दहेज प्रथा का प्रचलन नहीं है। अतः कथन सही है। किंतु इन्हें विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह में वर्गीकृत किए जाने का मुख्य कारण इनकी अत्यधिक आर्थिक विपन्नता, निम्न साक्षरता तथा सामाजिक पिछड़ापन है, न कि उच्च साक्षरता या उन्नत स्थिति। इसलिए कारण पूरी तरह से असत्य और निराधार है।

26. (A) डूंगरपुर
डामोर जनजाति मुख्य रूप से राजस्थान के डूंगरपुर जिले की सीमलवाड़ा पंचायत समिति क्षेत्र में निवास करती है। इस विशिष्ट क्षेत्र में डामोर जनजाति की सघन आबादी केंद्रित होने के कारण सीमलवाड़ा को डामोर क्षेत्र के नाम से भी जाना जाता है। गुजरात राज्य की सीमा से सटे होने के कारण डामोर जनजाति की भाषा, पहनावे, खान-पान तथा सांस्कृतिक रीति-रिवाजों पर गुजराती संस्कृति का स्पष्ट और गहरा प्रभाव देखने को मिलता है।

27. (B) पुरुष, महिलाओं के समान आभूषण पहनते हैं।
डामोर जनजाति की एक अत्यंत अनूठी और विशिष्ट सांस्कृतिक विशेषता यह है कि इस समुदाय के पुरुष भी महिलाओं की भाँति पारंपरिक गहने और आभूषण धारण करते हैं। कानों में बालियाँ, गले में हार तथा हाथों में कड़े पहनना डामोर पुरुषों की पारंपरिक वेशभूषा का एक अनिवार्य अंग है। यह सांस्कृतिक प्रथा राजस्थान की अन्य जनजातियों की तुलना में डामोर समुदाय को एक अलग और विशिष्ट पहचान प्रदान करती है।

28. (B) मुखी
डामोर जनजाति के पारंपरिक गांव के मुखिया या नेता को मुखी कहा जाता है। डामोर समाज में मुखी का पद अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रतिष्ठा का प्रतीक माना जाता है। गाँव के आंतरिक विवादों को सुलझाने, सामाजिक रीति-रिवाजों का पालन करवाने तथा त्यौहारों एवं विवाह समारोहों का आयोजन सुनिश्चित करने में मुखी की केंद्रीय भूमिका होती है। पूरा समुदाय मुखी के परामर्श और सामाजिक निर्णयों का आदरपूर्वक पालन करता है।

29. (A) खैर के पेड़ों की छाल से कत्था बनाना
राजस्थान में काथोड़ी जनजाति का ऐतिहासिक और पारंपरिक मुख्य व्यवसाय खैर के वृक्षों की छाल तथा लकड़ी से पारंपरिक विधि द्वारा कत्था तैयार करना रहा है। कत्था बनाने में महारत हासिल होने के कारण ही इस जनजाति का नाम 'काथोड़ी' पड़ा। मूल रूप से महाराष्ट्र से आई यह जनजाति उदयपुर जिले के जंगलों में खैर के वृक्षों की उपलब्धता के कारण यहाँ बसी और अपनी इस विशिष्ट आजीविका कला को बनाए रखा।

30. (C) वे वर्तमान में राजस्थान में सबसे अधिक जनसंख्या वाला जनजातीय समूह हैं।
काथोड़ी जनजाति राजस्थान में सर्वाधिक जनसंख्या वाली जनजाति नहीं है, बल्कि यह राज्य की बहुत कम जनसंख्या वाली और विलुप्तप्राय जनजातियों में से एक है। राजस्थान में सर्वाधिक जनसंख्या वाली जनजाति मीणा है। काथोड़ी जनजाति मूल रूप से महाराष्ट्र से स्थानांतरित होकर उदयपुर जिले में बसी थी। इस समुदाय की महिलाएँ 'फड़का' नामक मराठी शैली की साड़ी पहनती हैं तथा इनके आहार में दूध उत्पादों का सेवन पारंपरिक रूप से बहुत कम होता है।

31. (D) I, II और III
काथोड़ी जनजाति के सामाजिक और भौगोलिक ढाँचे से संबंधित तीनों कथन पूर्णतः सत्य हैं। काथोड़ी समुदाय की बस्ती के मुखिया को 'नायक' कहा जाता है। इनकी घास, पत्तियों और बांस से बनी पारंपरिक झोपड़ियों को स्थानीय भाषा में 'खोलरा' कहा जाता है। यह जनजाति मुख्य रूप से उदयपुर जिले की कोटड़ा, झाड़ोल और सराड़ा तहसीलों के वनाच्छादित क्षेत्रों में निवास करती है तथा अपनी विशिष्ट पहचान बनाए हुए है।

Click Here to Buy book on Amazon

(B) 50%
(C) 75%
(D) 100%

45. जनजातीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह मुख्य रूप से उच्च जनजातीय जनसंख्या वाले जिलों में संचालित होता है।
II. यह राज्य के प्रयासों को पूरा करने के लिए विशेष केंद्रीय सहायता प्राप्त करता है।
III. यह केवल जनजातीय क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर औद्योगीकरण पर केंद्रित है।
IV. इसका उद्देश्य बुनियादी ढांचे और मानव विकास सूचकांकों के अंतर को पाटना है।
कौन-सा संयोजन सही है?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल I, II और IV
(C) केवल II, III और IV
(D) केवल I, III और IV

46. विशिष्ट "सहरिया विकास परियोजना" मुख्य रूप से किस जिले में सहरिया समुदाय के उत्थान के लिए लागू की गई है?
(A) सिरोही
(B) बांसवाड़ा
(C) बारां
(D) उदयपुर

47. जनजातीय युवाओं के लिए सरकार द्वारा लागू 'अनुप्रति योजना' का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) जनजातीय किसानों को रियायती कृषि उपकरण और उच्च उपज वाले बीज प्रदान करना
(B) गर्भवती महिलाओं को पूरक पोषण किट और स्वास्थ्य सहायता प्रदान करना
(C) घर के निर्माण के लिए शून्य ब्याज दर पर दीर्घकालिक गृह ऋण प्रदान करना
(D) प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करना

48. राजस्थान का जनजातीय अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, जो जनजातीय अनुसंधान की नोडल एजेंसी है, कहाँ स्थित है?
(A) जयपुर
(B) बांसवाड़ा
(C) उदयपुर
(D) डूंगरपुर

49. जनजातीय संस्कृति के संरक्षण और सामाजिक-आर्थिक मूल्यांकन के लिए राजस्थान में जनजातीय अनुसंधान संस्थान की स्थापना किस वर्ष की गई थी?
(A) 1954
(B) 1964
(C) 1974
(D) 1984

50. निम्नलिखित में से कौन-सा राजस्थान के जनजातीय अनुसंधान संस्थान का प्राथमिक कार्य नहीं है?
(A) जनजातीय योजनाओं के सामाजिक-आर्थिक मूल्यांकन अध्ययन का संचालन करना।
(B) दस्तावेजीकरण के माध्यम से जनजातीय कलाओं, संस्कृति और बोलियों का संरक्षण करना।
(C) जनजातीय क्षेत्रों में कार्यरत प्रशासनिक कर्मियों को प्रशिक्षण प्रदान करना।
(D) नागरिकों को कानूनी अनुसूचित जनजाति जाति प्रमाण पत्र जारी करना।

51. जनजातीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम के तहत, 'माडा क्लस्टर' के लिए न्यूनतम 5000 की कुल जनसंख्या के साथ अनुसूचित जनजाति जनसंख्या का कितना प्रतिशत होना आवश्यक है?
(A) 30% (B) 40%
(C) 50% (D) 60%

52. जनजातीय कल्याण योजनाओं के तहत संचालित एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालयों का वित्तपोषण वर्तमान में किसके द्वारा वहन किया जाता है?
(A) राज्य सरकार द्वारा सीधे 100% वित्तपोषण
(B) केंद्र और राज्य के बीच 50:50 के अनुपात में साझा
(C) केंद्र सरकार द्वारा 100%
(D) केंद्र और राज्य के बीच 60:40 के अनुपात में साझा

NODIA

53. जनजातीय क्षेत्रों में एकीकृत डेयरी विकास पर केंद्रित एक सरकारी योजना का मुख्य उद्देश्य किस परिणाम को प्राप्त करना है?
(A) आजीविका के अवसरों और पोषण स्तर में वृद्धि करना
(B) सुदूर पहाड़ी क्षेत्रों में व्यावसायिक वन वृक्षारोपण आवरण को बढ़ाना
(C) अनुसूचित जनजातीय क्षेत्रों में औद्योगिक प्रदूषण और पर्यावरण क्षरण को कम करना
(D) पारंपरिक कर्तन एवं दहन स्थानांतरित कृषि प्रथाओं को बढ़ावा देना

54. भारतीय संविधान की कौन-सी अनुसूची राजस्थान जैसे राज्यों में अनुसूचित क्षेत्रों और अनुसूचित जनजातियों के प्रशासन और नियंत्रण से विशेष रूप से संबंधित है?
(A) तीसरी अनुसूची (B) पाँचवीं अनुसूची
(C) छठी अनुसूची (D) नौवीं अनुसूची

55. राजस्थान में जनजातियों के लिए संवैधानिक प्रावधानों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. राज्यपाल को अनुसूचित क्षेत्रों की शांति और सुशासन के लिए नियम बनाने का अधिकार है।
II. जनजातीय कल्याण पर सलाह देने के लिए राज्य में एक जनजाति सलाहकार परिषद की स्थापना की जानी अनिवार्य है।
III. राजस्थान में पाँचवीं अनुसूची के साथ-साथ छठी अनुसूची भी लागू होती है।
कौन-सा संयोजन सही है?

(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

56. पाँचवीं अनुसूची के तहत स्थापित जनजाति सलाहकार परिषद में सदस्यों की अधिकतम अनुमति प्राप्त संख्या कितनी है?
(A) 10 (B) 15
(C) 20 (D) 25

57. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A) : राजस्थान के राज्यपाल के लिए संविधान के तहत अनुसूचित क्षेत्रों के प्रशासन के संबंध में राष्ट्रपति को एक वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत करना अनिवार्य है।
कारण (R) : राजस्थान में जनजाति सलाहकार परिषद में अधिकतम 20 सदस्य होते हैं।
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है, लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है, लेकिन कारण (R) सही है।

58. राजस्थान के कितने जिलों का संपूर्ण भौगोलिक क्षेत्र अनुसूचित क्षेत्र में पूर्णतः शामिल है?
(A) 2 (B) 3
(C) 5 (D) 8

59. राजस्थान के जनजातीय उप-योजना क्षेत्र के तहत पूर्णतः शामिल जिलों के सही समूह की पहचान कीजिए।
(A) उदयपुर, राजसमंद, चित्तौड़गढ़
(B) बांसवाड़ा, डूंगरपुर, प्रतापगढ़
(C) सिरोही, पाली, जालौर
(D) बारां, कोटा, झालावाड़

60. निम्नलिखित में से किस जिले का कोई भी भौगोलिक क्षेत्र राजस्थान में अनुसूचित क्षेत्र के तहत अधिसूचित नहीं है?
(A) उदयपुर (B) अजमेर
(C) सिरोही (D) पाली

61. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए विकल्पों का प्रयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I : (जनजातीय जनसांख्यिकीय विशेषता)
P. सर्वाधिक अनुसूचित जनजाति जनसंख्या (निरपेक्ष संख्या)
Q. सर्वाधिक अनुसूचित जनजाति जनसंख्या (जिले की जनसंख्या का प्रतिशत)
R. न्यूनतम अनुसूचित जनजाति जनसंख्या (निरपेक्ष संख्या)
S. सहरिया संकेंद्रण
सूची II : (जिला)
1. बीकानेर
2. बारां
3. उदयपुर
4. बांसवाड़ा
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

62. जनजातीय समुदायों द्वारा 'तेंदू पत्तों' का संग्रहण आजीविका का एक महत्वपूर्ण स्रोत है, जो मुख्य रूप से किस स्थानीय उद्योग से जुड़ा है?
(A) कागज और लुगदी निर्माण उद्योग
(B) हर्बल दवा निष्कर्षण उद्योग
(C) बीड़ी निर्माण उद्योग
(D) वस्त्र रंगाई और छपाई उद्योग

63. स्थानीय देशी शराब बनाने के लिए भील और गरासिया जनजातियों द्वारा पारंपरिक रुप से किस पेड़ के फूलों का किण्वन किया जाता है?
(A) खेजड़ी
(B) रोहिड़ा
(C) सालर
(D) महुआ

64. गौण वन उपज जनजातीय आजीविका अधिकारों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। कानूनी परिभाषा के अनुसार, गौण वन उपज आधिकारिक रूप से किसे बाहर रखती है?
(A) बांस (B) शहद
(C) इमारती लकड़ी (D) गोंद और राल

65. 'कालीबाई भील मेधावी छात्रा स्कूटी योजना' मुख्य रूप से किसके लिए लक्षित है?
(A) गर्भवती जनजातीय महिलाओं को आपातकालीन मुफ्त परिवहन सेवाएं प्रदान करना
(B) मेधावी छात्राओं को मुफ्त स्कूटी वितरित करना
(C) ग्रामीण क्षेत्रों में जनजातीय महिला स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को परिवहन वाहन प्रदान करना
(D) गरीबी रेखा से नीचे के जनजातीय परिवारों को रियायती इलेक्ट्रिक स्कूटी की आपूर्ति करना

66. निम्नलिखित जनजातीय शिक्षा पहलों को उनके सामान्य विकासात्मक पदानुक्रम में, प्राथमिक/बुनियादी ध्यान से लेकर उच्च माध्यमिक/उत्कृष्टता ध्यान के क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. मां-बाड़ी केंद्र
2. आश्रम छात्रावास
3. एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय
(A) 1, 2, 3
(B) 3, 2, 1
(C) 2, 1, 3
(D) 1, 3, 2

Downloaded from www.pdf.tube

67. राजस्थान में 'मां-बाड़ी योजना' मुख्य रूप से किसके लिए संचालित की जाती है?
(A) जनजातीय ढाणियों/बस्तियों में प्राथमिक शिक्षा और पोषण प्रदान करने के लिए
(B) व्यापक मातृ स्वास्थ्य जांच और सुरक्षित संस्थागत प्रसव सेवाएं प्रदान करने के लिए
(C) ग्रामीण क्षेत्रों में बेसहारा जनजातीय महिलाओं के लिए सामुदायिक वृद्धाश्रम कल्याण गृह स्थापित करने के लिए
(D) असंगठित जनजातीय क्षेत्र के श्रमिकों को मातृत्व अवकाश वित्तीय लाभ प्रदान करने के लिए

68. जनजातीय शिक्षा और कल्याणकारी पहलों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय कक्षा 6 से 12 तक के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों को मुफ्त गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करते हैं।
II. आश्रम छात्रावास अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के लिए मुफ्त आवास और भोजन की सुविधा प्रदान करते हैं।
III. अनुसूचित क्षेत्रों में अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के लिए मैट्रिक-पूर्व और मैट्रिक-उत्तर छात्रवृत्तियां पूरी तरह से बंद कर दी गई हैं।
IV. मां-बाड़ी केंद्र जनजातीय क्षेत्रों में उच्च विद्यालय-त्याग दर से निपटने के लिए प्रारंभिक शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करते हैं।
कौन-सा संयोजन सही कथनों को दर्शाता है?
(A) केवल I और II
(B) केवल I, II और IV
(C) केवल III और IV
(D) I, II, III और IV

69. दक्षिणी राजस्थान की जनजातीय आबादी में कौन-सा विशिष्ट आनुवंशिक रक्त विकार अत्यधिक प्रचलित है, जिसके लिए सरकार द्वारा लक्षित स्वास्थ्य जांच कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं?
(A) सिकल सेल एनीमिया
(B) हीमोफीलिया विकार
(C) थैलेसीमिया रोग
(D) ल्यूकेमिया की स्थिति

70. ग्रामीण स्वास्थ्य पहलों के तहत, जनजातीय क्षेत्रों में 'स्वास्थ्य मार्गदर्शक' या सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता की प्राथमिक भूमिका क्या है?
(A) प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों में जटिल शल्य प्रक्रियाएं और आपातकालीन चिकित्सा संचालन करना
(B) जनजातीय परिवारों को कानूनी भूमि पट्टे और कृषि स्वामित्व दस्तावेज वितरित करना
(C) जनजातीय स्कूलों में प्राथमिक शैक्षणिक ट्यूटर और कक्षा प्रशिक्षक के रूप में कार्य करना
(D) समुदाय को स्वास्थ्य सुविधाओं और संस्थागत प्रसव से जोड़ना

71. जनजातीय परिवारों तक व्यापक स्वास्थ्य बीमा योजनाओं (जैसे चिरंजीवी मॉडल) का विस्तार करने का मौलिक उद्देश्य क्या है?
(A) प्रत्येक पंजीकृत परिवार को मुफ्त मासिक खाद्यान्न और आवश्यक राशन प्रदान करना
(B) जेब से होने वाले चिकित्सीय खर्चों को कम करने के लिए स्वास्थ्य कवरेज प्रदान करना
(C) केवल अधिसूचित अनुसूचित क्षेत्रों में वेक्टर जनित मौसमी बीमारियों का उन्मूलन करना
(D) प्रत्येक ब्लॉक में विशेष बहु-विषयक सरकारी जनजातीय अस्पताल बनाना

72. अनुसूचित जनजाति और अन्य पारंपरिक वन निवासी (वन अधिकारों की मान्यता) अधिनियम संसद द्वारा किस वर्ष अधिनियमित किया गया था?
(A) 1980
(B) 1996
(C) 2006
(D) 2013

73. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A) : वन अधिकार अधिनियम 2006 के तहत, गैर-जनजातीय पारंपरिक वन निवासियों को किसी भी वन अधिकार का दावा करने से पूरी तरह से बाहर रखा गया है।
कारण (R) : इस अधिनियम के अनुसार अन्य पारंपरिक वन निवासियों को दिसंबर 2005 से पहले कम से कम तीन पीढ़ियों (75 वर्ष) तक वन में निरंतर निवास सिद्ध करना आवश्यक है।
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है, लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है, लेकिन कारण (R) सही है।

NODIA

74. वन अधिकार अधिनियम 2006 के तहत, वन अधिकारों की प्रकृति और सीमा निर्धारित करने की प्रक्रिया शुरू करने के लिए नामित प्राथमिक प्राधिकारी कौन-सा निकाय है?
(A) ग्राम सभा
(B) राज्य वन विभाग
(C) जिला कलेक्टर
(D) जनजातीय कल्याण मंत्रालय

75. राजस्थान की निम्नलिखित प्रमुख जनजातियों में सामान्य साक्षरता दर का सही बढ़ता क्रम (न्यूनतम से उच्चतम, ऐतिहासिक जनगणना आंकड़ों के आधार पर) चुनिए:
(A) सहरिया, भील, मीणा
(B) मीणा, भील, सहरिया
(C) भील, सहरिया, मीणा
(D) मीणा, सहरिया, भील

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) मीणा
2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान में अनुसूचित जनजाति जनसंख्या में मीणा जनजाति का प्रतिशत सर्वाधिक है। यह समुदाय मुख्य रूप से राज्य के पूर्वी तथा उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्रों में निवास करता है। मीणा समुदाय न केवल जनसंख्या की दृष्टि से प्रथम स्थान पर है, बल्कि साक्षरता, सामाजिक-आर्थिक स्थिति तथा प्रशासनिक सेवाओं में सहभागिता की दृष्टि से भी राजस्थान की अन्य जनजातियों की तुलना में अधिक विकसित और आगे माना जाता है।

2. (A) मीणा, भील, गरासिया, सहरिया
राजस्थान में कुल जनसंख्या के आधार पर प्रमुख जनजातियों का सही अवरोही क्रम मीणा, भील, गरासिया और सहरिया है। राज्य में मीणा जनजाति सर्वाधिक जनसंख्या वाली जनजाति है, जबकि दूसरे स्थान पर भील जनजाति आती है। तीसरे स्थान पर गरासिया जनजाति तथा चौथे स्थान पर सहरिया जनजाति पाई जाती है। यह जनसांख्यिकीय क्रम राज्य में जनजातीय आबादी के वितरण और उनकी क्षेत्रीय प्रधानता को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

3. (A) अनुच्छेद 342
भारतीय संविधान के अनुच्छेद 342 के तहत राष्ट्रपति को किसी भी राज्य या केंद्र शासित प्रदेश में जनजातियों या जनजातीय समुदायों को अनुसूचित जनजातियों के रूप में अधिसूचित करने का संवैधानिक अधिकार प्राप्त है। राजस्थान में भी विभिन्न जनजातीय समूहों को इसी अनुच्छेद के तहत आधिकारिक रूप से अनुसूचित जनजाति का दर्जा प्रदान किया गया है। यह प्रावधान जनजातियों के सामाजिक, शैक्षणिक और राजनीतिक अधिकारों को सुरक्षा प्रदान करता है।

4. (C) मेवाड़ क्षेत्र (वागड़ और भौमट)
राजस्थान में भील जनजाति की जनसंख्या का मुख्य संकेंद्रण दक्षिणी क्षेत्र के मेवाड़, वागड़ तथा भौमट पहाड़ी इलाकों में है। उदयपुर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा और प्रतापगढ़ जिले इस जनजाति के मुख्य निवास स्थल हैं। अरावली की पहाड़ियों और घने जंगलों से आच्छादित यह भौगोलिक वातावरण ऐतिहासिक काल से ही भील समुदाय की जीवनशैली, संस्कृति, जीविकोपार्जन तथा पारंपरिक सामाजिक व्यवस्था के विकास के लिए पूर्णतः अनुकूल और आधारभूत रहा है।

5. (A) चूरू
राजस्थान के चूरू जिले में भील जनजाति की आबादी नगण्य है, इसलिए यह मुख्य भील बाहुल्य क्षेत्रों में शामिल नहीं है। भील जनजाति का मुख्य संकेंद्रण दक्षिणी राजस्थान के पहाड़ी तथा वनाच्छादित जिलों जैसे उदयपुर, डूंगरपुर और बांसवाड़ा में पाया जाता है। चूरू मुख्य रूप से उत्तरी राजस्थान के थार मरुस्थलीय मैदानी भाग का हिस्सा है, जहाँ जनजातीय आबादी का अनुपात राज्य के अन्य भागों से बहुत कम है।

6. (D) चीमाता
दक्षिणी राजस्थान के पहाड़ी और दुर्गम क्षेत्रों में भील जनजाति द्वारा वनों को जलाकर तथा भूमि को साफ करके की जाने वाली स्थानांतरित कृषि को चीमाता कहा जाता है। जबकि मैदानी भागों में की जाने वाली इसी प्रकार की कृषि को दजिया नाम से जाना जाता है। यह पारंपरिक कृषि पद्धति पहाड़ियों की ढलानों पर मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने के लिए प्राचीन काल से जनजातीय क्षेत्रों में अपनाई जाती रही है।

7. (B) गमेती
भील जनजाति में एक बड़े गाँव या कई छोटे गाँवों के समूह, जिन्हें पाल कहा जाता है, के पारंपरिक मुखिया या नेता को गमेती कहा जाता है। गमेती समुदाय में अत्यधिक सम्मानित व्यक्ति होता है जो सामाजिक विवादों के निपटारे, धार्मिक अनुष्ठानों के संचालन तथा प्रशासनिक निर्णयों में मुख्य भूमिका निभाता है। भील समाज की न्याय व्यवस्था और पारंपरिक स्वशासन को बनाए रखने में गमेती का पद अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

8. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है।
ऐतिहासिक रूप से भील जनजाति अरावली पर्वत श्रेणी के घने जंगलों तथा दुर्गम पहाड़ी क्षेत्रों में निवास करती थी। इस भौगोलिक परिस्थिति के कारण वहाँ समतल मैदानी कृषि भूमि का अभाव था, जिसके परिणामस्वरूप उनकी अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से शिकार, कंद-मूल संग्रहण तथा गौण वन उपजों के एकत्रीकरण पर निर्भर थी। इस प्रकार भौगोलिक परिस्थितियाँ भील समुदाय की पारंपरिक जीवनशैली और आर्थिक निर्भरता की दिशा तय करने में पूरी तरह उत्तरदायी थीं।

9. (D) संकट के समय सदस्यों को एकत्र करने के लिए प्रयोग किया जाने वाला एक पारंपरिक रणघोष
भील जनजाति में 'फाइरे-फाइरे' शब्द का प्रयोग किसी आपातकालीन परिस्थिति, बाह्य आक्रमण या संकट के समय अपने समुदाय के सदस्यों को सतर्क करने और एकत्र करने के लिए एक पारंपरिक रणघोष के रूप में किया जाता है। इस उद्घोष को सुनते ही आसपास के भील पुरुष अपने पारंपरिक अस्त्र-शस्त्रों जैसे तीर-कमान के साथ तुरंत निर्दिष्ट स्थान पर एकत्र हो जाते हैं। यह उनकी सामाजिक एकजुटता और सुरक्षा का प्रतीक है।

10. (A) टोटेम
भील समुदाय में किसी विशेष पशु, पक्षी, वृक्ष या प्राकृतिक वस्तु को अपने वंश का रक्षात्मक पूर्वज मानकर पूजा जाता है, जिसे टोटेम कहा जाता है। टोटेम के प्रति समुदाय में अत्यधिक

Click Here to Buy book on Flipkart

(B) काथोड़ी जनजाति
(C) मीणा समुदाय
(D) सहरिया

87. दक्षिणी राजस्थान की जनजातीय आबादी में 'मौसमी प्रवास' की परिघटना मुख्य रूप से किससे प्रेरित है?
(A) प्रमुख शहरों में आधुनिक उच्च शिक्षा प्राप्त करने की बढ़ती इच्छा
(B) विखंडित जोत और वर्ष भर स्थानीय रोजगार की कमी
(C) बुजुर्गों द्वारा निर्देशित अनिवार्य लंबी दूरी की वार्षिक धार्मिक तीर्थयात्राएं
(D) राज्य द्वारा प्रायोजित सांस्कृतिक आदान-प्रदान और विरासत अनुभव कार्यक्रम

88. राजस्थान में जनजातीय समुदायों द्वारा सामना की जाने वाली निम्नलिखित समकालीन चुनौतियों पर विचार कीजिए:
I. सिकल सेल एनीमिया और कुपोषण की उच्च दर।
II. राज्य के सुरक्षात्मक काश्तकारी कानूनों के बावजूद भूमि हस्तांतरण का जोखिम।
III. TSP वित्तपोषण के कारण गरीबी का पूर्ण और स्थायी उन्मूलन।
IV. प्रमुख सिंचाई और खनन परियोजनाओं के कारण विस्थापन और आजीविका का नुकसान।
कौन-सा संयोजन वास्तविक चुनौतियों को दर्शाता है?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल I, II और IV
(C) केवल II, III और IV
(D) केवल I, III और IV

89. राजस्थान काश्तकारी अधिनियम, 1955 अनुसूचित जनजातियों को विशेष रुप से किसके संबंध में सामाजिक-आर्थिक सुरक्षा प्रदान करता है?
(A) व्यावसायिक गतिविधियों के लिए बिजली बिलों के भुगतान से पूर्ण छूट।
(B) शहरी प्रशासनिक केंद्रों में गारंटीकृत सरकारी नौकरियां।
(C) पूरे भारत में राज्य की बसों में मुफ्त सार्वजनिक परिवहन।
(D) गैर-जनजातियों को जनजातीय कृषि भूमि के हस्तांतरण या बिक्री पर प्रतिबंध।

90. सख्त वन संरक्षण कानूनों और जनजातीय आजीविका अधिकारों के बीच समकालीन संघर्ष को हल करने में, निम्नलिखित में से कौन-सा वैधानिक तंत्र सबसे प्रत्यक्ष सामंजस्यपूर्ण भूमिका प्रदान करता है?
(A) वन अधिकार अधिनियम 2006 के तहत सामुदायिक वन अधिकार प्रदान करना।
(B) बिना पुनर्वास के पूर्णतः अक्षत टाइगर रिजर्व बनाने के लिए आदिवासियों को बेदखल करना।
(C) सभी घने वन भूमि को निजी राजस्व भूमि में परिवर्तित करना।
(D) जनजातीय समुदायों द्वारा सभी गौण वन उपजों के संग्रहण पर प्रतिबंध लगाना।

Downloaded from www.pdf.tube

76. राजस्थान में किस जनजाति को जनसांख्यिकीय रूप से ऐतिहासिक रूप से बहुत उच्च लिंगानुपात (प्रति 1000 पुरुषों पर महिलाएं) बनाए रखने के लिए जाना जाता है, जो अक्सर राज्य के औसत से अधिक होता है?
(A) मीणा
(B) भील
(C) गरासिया
(D) सहरिया

77. आर्थिक वर्गीकरण और एकीकरण के संदर्भ में, किस जनजाति को मुख्य रूप से एक स्थायी कृषक समुदाय माना जाता है और दूसरों की तुलना में सरकारी नौकरियों में महत्वपूर्ण हिस्सेदारी रखती है?
(A) मीणा
(B) भील
(C) सहरिया
(D) काथोड़ी

78. राजस्थान में जनजातीय समूहों की निम्नलिखित विशेषताओं पर विचार कीजिए:
I. मीणा राज्य में सबसे अधिक जनसंख्या वाला अनुसूचित जनजाति समूह हैं।
II. सहरिया को विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह के तहत वर्गीकृत किया गया है।
III. काथोड़ी विशेष रूप से थार मरुस्थल के रेतीले क्षेत्रों के मूल निवासी हैं।
कथनों का कौन-सा संयोजन सही है?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

79. राजस्थान की जनजातीय महिलाओं में 'गोदना' (टैटू बनवाना) की परंपरा मुख्य रूप से किस पारंपरिक मान्यता के कारण अत्यधिक प्रचलित है?
(A) यह उन्हें घने जंगल में जंगली जानवरों से बचाता है।
(B) यह जनजातीय परिषद में उनके सटीक पद और मतदान शक्ति को दर्शाता है।
(C) यह कर छूट के लिए स्थानीय राजाओं द्वारा लगाई गई एक अनिवार्य शर्त है।
(D) यह एक स्थायी आभूषण के रूप में कार्य करता है जो मृत्यु के बाद भी उनके साथ जाता है।

80. 'तीर-कमान' बनाना एक पारंपरिक शिल्प है जो अपनी ऐतिहासिक युद्ध और शिकार पृष्ठभूमि के कारण मुख्य रूप से किस जनजातीय समूह से जुड़ा हुआ है?
(A) मीणा
(B) सहरिया
(C) भील
(D) डामोर

81. मनोकामनाएं पूरी होने पर भील और गरासिया जनजातियों द्वारा स्थानीय देवी-देवताओं को चढ़ाए जाने वाले टेराकोटा के घोड़े (मन्नत के घोड़े) स्थानीय रूप से किस नाम से जाने जाते हैं?
(A) घोड़ा बापजी
(B) मामादेव के घोड़े
(C) पाबूजी के घोड़े
(D) रामदेवजी के घोड़े

82. 'हंसली' नामक पारंपरिक भारी चाँदी का आभूषण जनजातीय महिलाओं द्वारा शरीर के किस अंग पर पहना जाता है?
(A) टखना
(B) कलाई
(C) माथा
(D) गला

NODIA

83. संपूर्ण दक्षिणी राजस्थान में जनजातीय समुदायों द्वारा किस देवता को भूमि और गांवों के आध्यात्मिक संरक्षक के रूप में अत्यधिक पूजा जाता है?
(A) भोमिया जी
(B) करणी माता
(C) शाकंभरी माता
(D) मल्लीनाथ जी

84. 'ऋषभदेव जी' (जिन्हें स्नेहपूर्वक कालाजी कहा जाता है), जिनकी केसर की चढ़ौती को भीलों द्वारा अत्यधिक पवित्र माना जाता है, उनका प्रसिद्ध मंदिर कहाँ स्थित है?
(A) बांसवाड़ा
(B) डूंगरपुर
(C) धुलेव
(D) नाथद्वारा

85. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए विकल्पों का प्रयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I : (जनजातीय प्रथा/शब्द)
P. नाता
Q. दापा
R. छेड़ा फाड़ना
S. झगड़ा
सूची II : (अर्थ)
1. वधू मूल्य
2. विधवा पुनर्विवाह / सामाजिक रूप से साथ रहना
3. पारंपरिक नृत्य
4. तलाक
(A) P-2, Q-1, R-4, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

86. 'कोडिया देवी' को पारंपरिक रूप से किस जनजातीय समुदाय द्वारा कुलदेवी के रूप में पूजा जाता है?
(A) गरासिया जनजाति

श्रद्धा होती है तथा इसे किसी भी प्रकार की क्षति पहुँचाना धार्मिक रूप से वर्जित माना जाता है। प्रत्येक गोत्र या वंश का अपना विशिष्ट टोटेम होता है, जो उनकी सामाजिक पहचान और सांस्कृतिक विश्वासों का एक प्रमुख आधार होता है।

11. (B) पूर्वी और उत्तर-पूर्वी
राजस्थान में मीणा जनजाति का मुख्य भौगोलिक संकेंद्रण राज्य के पूर्वी तथा उत्तर-पूर्वी जिलों में पाया जाता है। जयपुर, दौसा, सवाई माधोपुर, करौली, अलवर और टोंक जिले मीणा समुदाय के प्रमुख निवास क्षेत्र हैं। यह भौगोलिक क्षेत्र उपजाऊ मैदानी भू-भाग और नदियों से समृद्ध है, जिसने इस समुदाय को स्थायी कृषि, पशुपालन तथा सामाजिक-आर्थिक रूप से समृद्ध और सुदृढ़ आधार विकसित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

12. (D) I, II और III
मीणा जनजाति अपनी पौराणिक उत्पत्ति भगवान विष्णु के प्रथम अवतार 'मत्स्य अवतार' से मानती है। जैन मुनि मगन सागर जी महाराज ने उनके इतिहास और पौराणिक परंपराओं को संकलित करके 'मत्स्य पुराण' ग्रंथ की रचना की थी। ऐतिहासिक दृष्टि से मीणा समाज मुख्य रूप से दो प्रमुख वर्गों में विभाजित था, जिनमें कृषि कार्य करने वाले 'जमींदार मीणा' तथा सुरक्षा एवं पहरेदारी का कार्य करने वाले 'चौकीदार मीणा' शामिल थे।

13. (A) चौरासी पंचायत
मीणा जनजाति में चौरासी गांवों के समूह की एक पारंपरिक और वृहद सामाजिक परिषद होती है, जिसे चौरासी पंचायत कहा जाता है। यह पंचायत समाज के गंभीर विवादों, अंतर-ग्रामीण मुद्दों, सामाजिक सुधारों तथा नैतिक नियमों के उल्लंघन से जुड़े मामलों में अंतिम और सर्वमान्य निर्णय देती है। ऐतिहासिक रूप से इस संस्था का समाज पर गहरा प्रभाव रहा है तथा यह सामुदायिक एकजुटता बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

14. (C) अनाज भंडारण के लिए प्रयुक्त मिट्टी और गाय के गोबर से बनी संरचना
मीणा जनजाति के पारंपरिक ग्रामीण घरों में 'ओबरी' मिट्टी, पुआल और गाय के गोबर के मिश्रण से बनाई गई एक विशेष कोठरी या संरचना होती है। इसका मुख्य उपयोग कटाई के पश्चात अनाज और खाद्य सामग्री को सुरक्षित संगृहीत करने के लिए किया जाता है। ओबरी कीटों और नमी से अनाज की रक्षा करती है। यह पारंपरिक स्थापत्य कला और ग्रामीण जीवन में संसाधनों के कुशल प्रबंधन का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

15. (D) जीण माता
राजस्थान के शेखावाटी क्षेत्र में मीणा समुदाय द्वारा जीण माता को अपनी मुख्य इष्टदेवी और पूजनीय देवी के रूप में श्रद्धापूर्वक पूजा जाता है। जीण माता का प्रसिद्ध और ऐतिहासिक मंदिर सीकर जिले के रेवासा गाँव में अरावली की पहाड़ियों के बीच स्थित है। प्रतिवर्ष चैत्र और आश्विन नवरात्र के दौरान यहाँ विशाल धार्मिक मेले का आयोजन होता है, जिसमें मीणा समुदाय के श्रद्धालु भारी संख्या में दर्शन हेतु आते हैं।

16. (C) कृषि और पशुपालन
आधुनिक समय में राजस्थान में मीणा जनजाति का प्राथमिक एवं मुख्य व्यवसाय स्थायी कृषि तथा पशुपालन है। उपजाऊ पूर्वी मैदानी भागों में निवास करने के कारण इस समुदाय ने आधुनिक कृषि तकनीकों को अपनाकर उन्नत खेती की है। इसके अतिरिक्त, साक्षरता दर में निरंतर वृद्धि के कारण मीणा समुदाय के लोगों ने प्रशासनिक सेवाओं, नौकरियों तथा विभिन्न व्यवसायिक क्षेत्रों में भी राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर उल्लेखनीय स्थान प्राप्त किया है।

17. (A) P-2, Q-4, R-1, S-3
राजस्थान की प्रमुख जनजातियाँ अपने विशिष्ट भौगोलिक जिलों में केंद्रित हैं। सहरिया जनजाति मुख्य रूप से बारां जिले में पाई जाती है। गरासिया जनजाति का मुख्य निवास स्थान सिरोही जिला है। डामोर जनजाति बहुल रूप से डूंगरपुर जिले में निवास करती है, जबकि काथोड़ी जनजाति मुख्य रूप से उदयपुर जिले में केंद्रित है। इस प्रकार जनजातियों का यह क्षेत्रीय वितरण राजस्थान की सांस्कृतिक और भौगोलिक विविधता को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

18. (D) वालरा
गरासिया जनजाति द्वारा पहाड़ियों और वनों की भूमि को साफ करके की जाने वाली पारंपरिक स्थानांतरित कृषि को वालरा कहा जाता है। यह कृषि पद्धति दक्षिणी राजस्थान के पहाड़ी इलाकों में गरासिया समुदाय द्वारा आजीविका के साधन के रूप में अपनाई जाती रही है। वालरा कृषि में वर्षा जल पर निर्भर रहकर पारंपरिक उपकरणों से फसलें उगाई जाती हैं, जो इस जनजाति के पारिस्थितिक ज्ञान और जीवनशैली का एक महत्वपूर्ण अंग है।

19. (A) नक्की झील
सिरोही जिले के माउंट आबू में स्थित प्रसिद्ध नक्की झील को गरासिया जनजाति द्वारा अत्यंत पवित्र और पावन माना जाता है। गरासिया समुदाय के लोग अपने मृत पूर्वजों की अस्थियों का विसर्जन इसी झील के पवित्र जल में करते हैं। इस धार्मिक मान्यता के कारण नक्की झील गरासिया संस्कृति में वही स्थान रखती है जो अन्य समुदायों में गंगा नदी का है। यहाँ प्रतिवर्ष वैशाख पूर्णिमा पर मेला भरता है।

20. (C) केवल IV
गरासिया जनजाति में समाज के भीतर विधवा पुनर्विवाह को वर्जित नहीं माना जाता, बल्कि इसे पूर्ण सामाजिक स्वीकृति प्राप्त है। अतः चौथा कथन गलत है। गरासिया समुदाय मुख्यतः सिरोही की आबू रोड और पिंडवाड़ा तहसीलों में केंद्रित है। 'हेलरु' उनकी पारंपरिक सहकारी संस्था है जो कृषि और सामाजिक कार्यों में सहयोग करती है। साथ ही 'मोर-बांधिया' विवाह इस जनजाति में विवाह का सबसे सम्मानित और प्रचलित रूप माना जाता है।

21. (A) सहरोत
सहरिया जनजाति के पारंपरिक गाँव या बस्ती के मुखिया को सहरोत कहा जाता है। सहरोत समुदाय के भीतर सामाजिक

Click Here to Buy book on Amazon

(B) औपचारिक विवाह रीतियों के बिना नए साथी के साथ रहना
(C) शिशु जन्म के दसवें दिन किया जाने वाला एक औपचारिक अनुष्ठान
(D) मृत्यु के बाद की एक प्रथा जिसमें पूरा गाँव भोजन का त्याग करता है

34. ग्रामीण और जनजातीय राजस्थान में 'आटा-साटा' एक सामान्य पारंपरिक शब्द है, जो संदर्भित करता है:
(A) एक बहुविवाह प्रथा जहाँ एक पुरुष कई सगी बहनों से विवाह करता है
(B) शादी-विवाह के दौरान सामूहिक रूप से किया जाने वाला एक जीवंत पारंपरिक नृत्य
(C) बेटों के बीच पैतृक कृषि भूमि का न्यायसंगत वितरण
(D) दो परिवारों के बीच विनिमय विवाह

35. भील और मीणा जनजातियों में 'छेड़ा फाड़ना' क्या है?
(A) तलाक की एक पारंपरिक और प्रतीकात्मक विधि।
(B) फसलों की सफल कटाई को दर्शाने वाला एक अनुष्ठान।
(C) विशिष्ट वन जड़ी-बूटियों का उपयोग करके बीमारियों का इलाज करने की एक विधि।
(D) गाँव के मुखिया को भेंट की जाने वाली एक प्रकार की औपचारिक पोशाक।

36. राजस्थान में किस जनजातीय मेले को व्यापक रूप से "आदिवासियों का कुंभ" कहा जाता है?
(A) पुष्कर मेला
(B) सीताबाड़ी मेला
(C) बेणेश्वर मेला
(D) रामदेवरा मेला

37. बेणेश्वर मेला प्रतिवर्ष किन तीन नदियों के पवित्र संगम पर आयोजित होता है?
(A) माही, सोम और जाखम
(B) बनास, चंबल और सीप
(C) लूनी, सूकड़ी और जवाई
(D) साबरमती, वाकल और सेई

38. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए तथा नीचे दिए गए विकल्पों का प्रयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I : (जनजातीय मेला)
P. सीताबाड़ी मेला
Q. घोटिया अंबा मेला
R. ग्यारस की रेवाड़ी मेला
S. मनखारो मेलो
सूची II : (संबंधित जनजाति या क्षेत्र)
1. गरासिया
2. डामोर
3. भील
4. सहरिया
(A) P-4, Q-3, R-2, S-1
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-4, Q-1, R-2, S-3
(D) P-2, Q-3, R-4, S-1

39. प्रसिद्ध 'गवरी' नृत्य-नाटिका पारंपरिक रूप से भीलों द्वारा श्रावण और भाद्रपद के महीनों में 40 दिनों तक किसकी पूजा के लिए की जाती है?
(A) भगवान विष्णु
(B) भगवान शिव
(C) लोक देवता तेजाजी
(D) लोक देवता पाबूजी

40. भील बस्ती के सामाजिक संगठन में, घरों के एक छोटे समूह या ढाणी को क्या कहा जाता है?
(A) पाल
(B) गमेती
(C) फला
(D) ढाणी

41. सहरिया जनजाति की बस्ती में केंद्रीय खुला स्थान या संरचना जहाँ सामुदायिक बैठकें होती हैं, किस नाम से जानी जाती है?
(A) खोलरा
(B) घेर
(C) टापरा
(D) हथाई

NODIA

42. भील जनजाति की निम्नलिखित सामाजिक-राजनीतिक प्रशासनिक इकाइयों को उनके भौतिक और जनसांख्यिकीय आकार के बढ़ते क्रम में (छोटे से बड़े) व्यवस्थित कीजिए:
1. पाल
2. टापरा
3. फला
(A) 2, 3, 1
(B) 3, 2, 1
(C) 1, 3, 2
(D) 2, 1, 3

43. सहरिया जनजाति में 'धारी संस्कार' अनुष्ठान का क्या तात्पर्य है?
(A) बच्चे के जन्म के बाद किया जाने वाला औपचारिक नामकरण समारोह
(B) दाह संस्कार के बाद राख का निरीक्षण करके पुनर्जन्म का अनुमान लगाना
(C) युवा पुरुषों के लिए किया जाने वाला एक पवित्र यौवनारंभ अनुष्ठान
(D) अच्छे मानसून की कामना के लिए मनाया जाने वाला एक पारंपरिक सामुदायिक फसल उत्सव

44. राजस्थान में, संशोधित क्षेत्र विकास दृष्टिकोण खंड जनजातीय विकास के लिए उन क्षेत्रों में गठित किए जाते हैं जहाँ कुल जनसंख्या कम से कम 10,000 हो और जनजातीय जनसंख्या कम से कम:
(A) 25%

32. (C) वर पक्ष द्वारा वधू के पिता को दिया जाने वाला वधू मूल्य।
भील जनजाति में प्रचलित 'दापा' प्रथा एक पारंपरिक सामाजिक व्यवस्था है, जिसके अंतर्गत विवाह तय होने पर वर पक्ष द्वारा वधू के पिता या परिवार को निश्चित धनराशि या वधू मूल्य दिया जाता है। इस प्रथा के पीछे मान्यता यह है कि कन्या के चले जाने से उसके परिवार को होने वाली आर्थिक एवं श्रम हानि की भरपाई की जा सके। भील समाज में यह प्रथा अत्यधिक सम्मानजनक मानी जाती है।

33. (B) औपचारिक विवाह रीतियों के बिना नए साथी के साथ रहना
राजस्थान के जनजातीय समाज में 'नाता प्रथा' एक प्राचीन और मान्यता प्राप्त सामाजिक व्यवस्था है। इसके अंतर्गत कोई विवाहित महिला या पुरुष औपचारिक रीति-रिवाजों और विस्तृत विवाह समारोह के बिना आपसी सहमति से नए जीवनसाथी के साथ रह सकते हैं। इस प्रथा में नए साथी को पूर्व पति या परिवार को निश्चित क्षतिपूर्ति राशि (झगड़ा राशि) देनी होती है। यह प्रथा समाज में महिला पुनर्वसन को सरल बनाती है।

34. (D) दो परिवारों के बीच विनिमय विवाह
ग्रामीण और जनजातीय राजस्थान में 'आटा-साटा' विवाह की एक पारंपरिक विनिमय प्रथा है। इस व्यवस्था के अंतर्गत दो परिवारों के बीच बेटियों का आपस में आदान-प्रदान किया जाता है, अर्थात एक परिवार का लड़का दूसरे परिवार की लड़की से विवाह करता है और बदले में दूसरे परिवार का लड़का पहले परिवार की लड़की से विवाह करता है। यह प्रथा वधू मूल्य या विवाह व्यय को कम करने के उद्देश्य से प्रचलित हुई थी।

35. (A) तलाक की एक पारंपरिक और प्रतीकात्मक विधि।
भील और मीणा जनजातियों में 'छेड़ा फाड़ना' तलाक की एक पारंपरिक एवं प्रतीकात्मक प्रक्रिया है। इस प्रथा में पुरुष अपनी साड़ी या धोती के कोने (छेड़े) से कपड़ा फाड़कर उसमें सिक्का बांधता है और उसे महिला को सौंप देता है। इस अनुष्ठान के संपन्न होते ही वैवाहिक संबंध औपचारिक रूप से समाप्त मान लिया जाता है और महिला नए साथी के साथ नाता प्रथा के तहत रहने के लिए स्वतंत्र हो जाती है।

36. (C) बेणेश्वर मेला
डूंगरपुर जिले के नवाटापुरा गाँव में आयोजित होने वाले प्रसिद्ध बेणेश्वर मेले को व्यापक रूप से "आदिवासियों का कुंभ" कहा जाता है। यह मेला प्रतिवर्ष माघ पूर्णिमा के अवसर पर आयोजित होता है, जिसमें राजस्थान, गुजरात और मध्य प्रदेश से लाखों जनजातीय श्रद्धालु, विशेष रूप से भील समुदाय के लोग भाग लेते हैं। श्रद्धालु यहाँ अपने पूर्वजों की अस्थियों का विसर्जन करते हैं तथा भगवान शिव (बेणेश्वर महादेव) की पूजा करते हैं।

37. (A) माही, सोम और जाखम
प्रसिद्ध बेणेश्वर मेला डूंगरपुर जिले में माही, सोम और जाखम नदियों के पवित्र त्रिवेणी संगम पर आयोजित होता है। इन तीनों नदियों के संगम स्थल को जनजातीय आस्था में अत्यंत पवित्र माना जाता है। माघ पूर्णिमा को इस संगम में स्नान करने और अपने दिवंगत पूर्वजों का तर्पण करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है। यह प्राकृतिक त्रिवेणी संगम जनजातीय संस्कृति, आस्था और सामाजिक समागम का एक महान केंद्र माना जाता है।

38. (A) P-4, Q-3, R-2, S-1
राजस्थान के प्रमुख जनजातीय मेले विशिष्ट जनजातियों से जुड़े हैं। बारां का सीताबाड़ी मेला सहरिया जनजाति का कुंभ कहलाता है। घोटिया अंबा मेला बांसवाड़ा में भील जनजाति का प्रमुख धार्मिक केंद्र है। ग्यारस की रेवाड़ी मेला डूंगरपुर में डामोर जनजाति द्वारा उत्साहपूर्वक मनाया जाता है। सिरोही में आयोजित होने वाला मनखारो मेलो गरासिया जनजाति का सबसे बड़ा और सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण वार्षिक पारंपरिक मेला माना जाता है।

39. (B) भगवान शिव
प्रसिद्ध 'गवरी' नृत्य-नाटिका भील जनजाति द्वारा श्रावण और भाद्रपद माह में लगभग 40 दिनों तक भक्तिभाव से आयोजित की जाती है। यह लोक नाट्य पूरी तरह से भगवान शिव (पुरिया) और माता पार्वती (गवरी) की पौराणिक कथाओं तथा भक्ति पर आधारित होता है। इसमें केवल पुरुष कलाकार ही भाग लेते हैं और गाँव-गाँव जाकर प्रदर्शन करते हैं। गवरी लोक नाट्य मेवाड़ क्षेत्र की एक अनूठी और प्राचीन सांस्कृतिक धरोहर है।

40. (C) फला
भील जनजाति की बस्ती और सामाजिक संरचना में कई टापरो (झोपड़ियों) या घरों के छोटे समूह को फला कहा जाता है। फला भील गाँव की एक उप-इकाई या मोहल्ला होता है। जब कई फला आपस में मिल जाते हैं तो एक बड़े भील गाँव का निर्माण होता है जिसे 'पाल' कहा जाता है। फला स्तर पर परस्पर निकटता और रिश्तेदारी पाई जाती है, जो भील समाज में पारस्परिक सहयोग को बढ़ावा देती है।

41. (D) हथाई
सहरिया जनजाति की बस्ती या सहराना के केंद्र में स्थित खुले स्थान, मंच या गोल चौपालनुमा संरचना को हथाई या बंगला कहा जाता है। यह स्थान गाँव की सामुदायिक बैठकों, सामाजिक चर्चाओं, विवादों के समाधान तथा उत्सवों के आयोजन के लिए उपयोग किया जाता है। हथाई सहरिया समुदाय के सामाजिक जीवन का मुख्य केंद्र होती है, जहाँ गाँव के बुजुर्ग और निवासी एकत्र होकर सामूहिक निर्णय लेते हैं और विचार-विमर्श करते हैं।

42. (A) 2, 3, 1
भील जनजाति की सामाजिक-राजनीतिक और भौगोलिक इकाइयों का आकार के अनुसार सही बढ़ता क्रम टापरा, फला और पाल है। 'टापरा' भील समुदाय के एक एकल मकान या झोपड़ी को कहा जाता है। कई टापरो के समूह को मिलाकर 'फला' बनता है, जो गाँव का एक छोटा मोहल्ला होता है। जब कई फला आपस में मिल जाते हैं तो एक विशाल भील गाँव या गाँव के समूह का निर्माण होता है जिसे 'पाल' कहते हैं।

Downloaded from www.pdf.tube

उत्सवों, विवाह समारोहों तथा धार्मिक अनुष्ठानों का एक अभिन्न अंग मानी जाती है। महुआ का वृक्ष जनजातीय अर्थव्यवस्था और आजीविका में भी खाद्य एवं औषधि के रूप में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

64. (C) इमारती लकड़ी
भारतीय कानून तथा वन अधिकार अधिनियम के अनुसार गौण वन उपज (Minor Forest Produce) में बांस, शहद, गोंद, राल, मोम, पत्तियाँ, फल और जड़ी-बूटियाँ शामिल हैं, किंतु इसमें इमारती लकड़ी (Timber) को स्पष्ट रूप से बाहर रखा गया है। इमारती लकड़ी मुख्य वन उपज की श्रेणी में आती है और इसके व्यावसायिक कटान पर कड़ा नियंत्रण होता है, ताकि वनों का संरक्षण बना रहे और जनजातीय अधिकार भी सुरक्षित रहें।

65. (B) मेधावी छात्राओं को मुफ्त स्कूटी वितरित करना
राजस्थान सरकार की 'कालीबाई भील मेधावी छात्रा स्कूटी योजना' का मुख्य उद्देश्य जनजातीय तथा अन्य वंचित वर्गों की मेधावी छात्राओं को उच्च शिक्षा के प्रति प्रोत्साहित करने के लिए निशुल्क स्कूटी वितरित करना है। यह योजना प्रसिद्ध जनजातीय वीरांगना कालीबाई भील के नाम पर शुरू की गई है। इससे बालिकाओं में शिक्षा के प्रति उत्साह बढ़ता है, विद्यालय-त्याग दर में कमी आती है और उन्हें दूरस्थ शिक्षण संस्थानों तक पहुँचने में सुविधा होती है।

66. (A) 1, 2, 3
जनजातीय शिक्षा पहलों का प्राथमिक से उच्च स्तर का सही विकासात्मक पदानुक्रम मां-बाड़ी केंद्र, आश्रम छात्रावास और एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय है। 'मां-बाड़ी केंद्र' छोटे बच्चों को प्रारंभिक और प्राथमिक शिक्षा प्रदान करते हैं। 'आश्रम छात्रावास' माध्यमिक स्तर के छात्रों को आवास और शिक्षा सुविधा देते हैं। जबकि 'एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय' कक्षा 6 से 12 तक के विद्यार्थियों को उच्च गुणवत्ता वाली आवासीय शिक्षा और उत्कृष्टता प्रदान करते हैं।

67. (A) जनजातीय ढाणियों/बस्तियों में प्राथमिक शिक्षा और पोषण प्रदान करने के लिए
राजस्थान में 'मां-बाड़ी योजना' मुख्य रूप से सुदूर जनजातीय ढाणियों और बस्तियों में 3 से 6 वर्ष के बच्चों को प्रारंभिक शिक्षा, संस्कार तथा पोषाहार उपलब्ध कराने के उद्देश्य से संचालित की जाती है। इन केंद्रों के माध्यम से जनजातीय क्षेत्रों में बच्चों के स्वास्थ्य, कुपोषण निवारण और प्राथमिक शाला-पूर्व शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाता है, जिससे आगे चलकर मुख्यधारा के प्राथमिक विद्यालयों में उनका नामांकन आसानी से हो सके।

68. (B) केवल I, II और IV
एकलव्य विद्यालय गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करते हैं, आश्रम छात्रावास मुफ्त आवास-भोजन देते हैं तथा मां-बाड़ी केंद्र प्रारंभिक शिक्षा पर ध्यान देते हैं। अतः पहला, दूसरा और चौथा कथन सही हैं। तीसरा कथन गलत है क्योंकि अनुसूचित जनजातियों के लिए मैट्रिक-पूर्व और उत्तर छात्रवृत्ति योजनाएँ बंद नहीं की गई हैं, बल्कि वे निरंतर संचालित हो रही हैं। इसलिए सही कथनों का संयोजन विकल्प B में दिया गया है।

69. (A) सिकल सेल एनीमिया
दक्षिणी राजस्थान की जनजातीय आबादी में 'सिकल सेल एनीमिया' नामक वंशागत और आनुवंशिक रक्त विकार अत्यधिक व्यापक रूप से पाया जाता है। इस रोग में लाल रक्त कोशिकाएं असामान्य रूप से हंसिया (सिकल) के आकार की हो जाती हैं, जिससे शरीर में ऑक्सीजन का प्रवाह बाधित होता है और गंभीर स्वास्थ्य समस्याएँ पैदा होती हैं। सरकार इस बीमारी की समय पर पहचान और उपचार के लिए विशेष राष्ट्रीय मिशन संचालित कर रही है।

70. (D) समुदाय को स्वास्थ्य सुविधाओं और संस्थागत प्रसव से जोड़ना
जनजातीय और ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य मार्गदर्शक या सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता (जैसे आशा सहयोगिनी) का मुख्य कार्य स्थानीय समुदाय को प्राथमिक स्वास्थ्य सुविधाओं, टीकाकरण अभियानों तथा सुरक्षित संस्थागत प्रसव से जोड़ना है। ये कार्यकर्ता जनजातीय महिलाओं को गर्भावस्था की देखभाल, पोषण और स्वच्छता के प्रति जागरूक करते हैं तथा आपात स्थिति में उन्हें निकटतम शासकीय चिकित्सालय तक पहुँचाने में एक महत्वपूर्ण सेतु के रूप में कार्य करते हैं।

71. (B) जेब से होने वाले चिकित्सीय खर्चों को कम करने के लिए स्वास्थ्य कवरेज प्रदान करना
जनजातीय परिवारों तक व्यापक स्वास्थ्य बीमा योजनाओं का विस्तार करने का मुख्य उद्देश्य गंभीर बीमारियों के इलाज के दौरान लगने वाले अत्यधिक व्यक्तिगत चिकित्सीय व्यय (Out of pocket expenditure) को कम करना है। स्वास्थ्य बीमा के माध्यम से निर्धन जनजातीय परिवारों को गुणवत्तापूर्ण और निःशुल्क अस्पताल इलाज की सुविधा प्राप्त होती है, जिससे वे बीमारी के कारण होने वाले भारी कर्ज और आर्थिक तंगी के चक्र से पूरी तरह सुरक्षित रहते हैं।

72. (C) 2006
अनुसूचित जनजाति और अन्य पारंपरिक वन निवासी (वन अधिकारों की मान्यता) अधिनियम भारतीय संसद द्वारा वर्ष 2006 में पारित किया गया था। इसे संक्षेप में वन अधिकार अधिनियम 2006 (FRA 2006) कहा जाता है। इस ऐतिहासिक कानून का मुख्य उद्देश्य वनों में पीढ़ियों से निवास कर रहे जनजातीय समुदायों और पारंपरिक वन निवासियों के भूमि और गौण वन उपज पर अधिकारों को कानूनी मान्यता देना और उनके ऐतिहासिक अन्याय को समाप्त करना है।

73. (D) कथन (A) गलत है, लेकिन कारण (R) सही है।
वन अधिकार अधिनियम 2006 के तहत गैर-जनजातीय पारंपरिक वन निवासियों को अधिकारों से बाहर नहीं रखा गया है, बशर्ते वे 13 दिसंबर 2005 से पहले कम से कम तीन पीढ़ियों (75 वर्ष) से उस वन भूमि पर निवास कर रहे हों। इसलिए पहला कथन पूरी तरह से असत्य है, जबकि कारण में दी गई तीन

NODIA

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs,
you are wasting valuable time.

Research shows that learning from
PRINTED BOOKS has up to
4× HIGHER RETENTION
than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS**
move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND**
in competition.

In competitive exams,
being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

53. (A) आजीविका के अवसरों और पोषण स्तर में वृद्धि करना
जनजातीय क्षेत्रों में एकीकृत डेयरी विकास योजना का मुख्य उद्देश्य जनजातीय परिवारों को दुधारू पशु उपलब्ध कराकर और दुग्ध उत्पादन से जोड़कर उनकी आजीविका के अवसरों को बढ़ाना तथा उनके पोषण स्तर में सुधार करना है। इससे न केवल जनजातीय कृषकों की आय में निरंतर वृद्धि होती है, बल्कि कृषि पर उनकी अत्यधिक निर्भरता कम होती है और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को एक सुदृढ़ तथा स्थायी संबल प्राप्त होता है।

54. (B) पाँचवीं अनुसूची
भारतीय संविधान की पाँचवीं अनुसूची राजस्थान सहित देश के दस राज्यों में अनुसूचित क्षेत्रों और अनुसूचित जनजातियों के प्रशासन तथा नियंत्रण के संबंध में विशेष प्रावधान करती है। इस अनुसूची के तहत राज्यपाल को जनजातीय क्षेत्रों में शांति, सुशासन और भूमि हस्तांतरण को रोकने के लिए विशेष नियम और कानून बनाने का अधिकार प्राप्त है। यह व्यवस्था जनजातीय समुदायों के अधिकारों, भूमि और संस्कृति का संरक्षण सुनिश्चित करती है।

55. (A) केवल I और II
राजस्थान में संविधान की पाँचवीं अनुसूची लागू है, जबकि छठी अनुसूची केवल असम, मेघालय, त्रिपुरा और मिजोरम के लिए है। अतः तीसरा कथन गलत है। संविधान के तहत राज्यपाल को अनुसूचित क्षेत्रों में सुशासन हेतु नियम बनाने का अधिकार है तथा राज्य में जनजातीय कल्याण हेतु जनजाति सलाहकार परिषद का गठन अनिवार्य है। इसलिए केवल पहला और दूसरा कथन सही हैं, जो संवैधानिक प्रावधानों की सटीक व्याख्या करते हैं।

56. (C) 20
भारतीय संविधान की पाँचवीं अनुसूची के अंतर्गत स्थापित की जाने वाली जनजाति सलाहकार परिषद (Tribal Advisory Council) में सदस्यों की अधिकतम संख्या 20 निश्चित की गई है। इन 20 सदस्यों में से कम से कम तीन-चौथाई (अर्थात 15 सदस्य) राज्य विधानसभा में अनुसूचित जनजातियों के प्रतिनिधि विधायक होने अनिवार्य हैं। यह परिषद राज्य में जनजातियों के कल्याण, उन्नति और अधिकारों से जुड़े मुद्दों पर सरकार को सलाह देती है।

57. (B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
संविधान की पाँचवीं अनुसूची के अनुसार राज्यपाल के लिए यह अनिवार्य है कि वह अनुसूचित क्षेत्रों के प्रशासन के संबंध में प्रतिवर्ष राष्ट्रपति को प्रतिवेदन प्रस्तुत करे। साथ ही जनजाति सलाहकार परिषद में अधिकतम 20 सदस्य होते हैं, यह तथ्य भी पूरी तरह सही है। हालाँकि, परिषद के सदस्यों की संख्या राज्यपाल द्वारा राष्ट्रपति को प्रतिवेदन प्रस्तुत करने का कारण नहीं है। अतः दोनों कथन स्वतंत्र रूप से सत्य हैं।

58. (B) 3
राजस्थान के केवल तीन जिलों का संपूर्ण भौगोलिक क्षेत्र अधिसूचित अनुसूचित क्षेत्र के अंतर्गत पूर्णतः शामिल है। ये तीन जिले बांसवाड़ा, डूंगरपुर और प्रतापगढ़ हैं। इन जिलों की शत-प्रतिशत प्रशासनिक सीमाएँ जनजातीय उप-योजना (TSP) क्षेत्र के तहत आती हैं। इन पूर्ण जनजातीय जिलों में जनजातीय बाहुल्य होने के कारण विशेष प्रशासनिक व्यवस्थाएँ और संवैधानिक संरक्षण लागू होते हैं, जो इन क्षेत्रों के तीव्र विकास में सहायक हैं।

59. (B) बांसवाड़ा, डूंगरपुर, प्रतापगढ़
राजस्थान में बांसवाड़ा, डूंगरपुर और प्रतापगढ़ ऐसे तीन जिले हैं जो जनजातीय उप-योजना (TSP) क्षेत्र के अंतर्गत पूरी तरह से शामिल हैं। इन जिलों का पूरा भौगोलिक क्षेत्र अनुसूचित क्षेत्र के रूप में अधिसूचित है। यहाँ जनजातीय आबादी का अनुपात अत्यधिक होने के कारण संपूर्ण प्रशासनिक और विकास ढाँचा जनजातीय कल्याण प्राथमिकताओं के अनुसार संचालित किया जाता है। उदयपुर, चित्तौड़गढ़ या सिरोही जैसे जिलों के केवल कुछ खंड ही शामिल हैं।

60. (B) अजमेर
राजस्थान के अजमेर जिले का कोई भी भौगोलिक क्षेत्र पाँचवीं अनुसूची के तहत अनुसूचित क्षेत्र या जनजातीय उप-योजना क्षेत्र के रूप में अधिसूचित नहीं है। जबकि उदयपुर, सिरोही, पाली, चित्तौड़गढ़ और राजसमंद जिलों के कुछ विशिष्ट तहसील या ब्लॉक अनुसूचित क्षेत्र में शामिल हैं। अजमेर राज्य के मध्य भाग में स्थित एक सामान्य गैर-जनजातीय बहुल जिला है, जहाँ अनुसूचित जनजाति की आबादी का घनत्व बहुत कम पाया जाता है।

61. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
राजस्थान में सर्वाधिक अनुसूचित जनजाति जनसंख्या की निरपेक्ष संख्या उदयपुर जिले में है। जिले की कुल जनसंख्या में जनजाति का सर्वाधिक प्रतिशत बांसवाड़ा जिले में पाया जाता है। सबसे कम जनजाति जनसंख्या निरपेक्ष रूप से बीकानेर जिले में है। वहीं सहरिया जनजाति का मुख्य संकेंद्रण बारां जिले में स्थित है। इस प्रकार यह सुमेलित विकल्प राज्य में जनजातीय जनसांख्यिकी के क्षेत्रीय फैलाव को पूरी तरह स्पष्ट करता है।

62. (C) बीड़ी निर्माण उद्योग
जनजातीय समुदायों द्वारा वनों से तेंदू पत्तों का संग्रहण आजीविका का एक अत्यंत महत्वपूर्ण मौसमी स्रोत है। तेंदू पत्तों का मुख्य वाणिज्यिक उपयोग बीड़ी निर्माण उद्योग में किया जाता है, जहाँ इन पत्तों का उपयोग तंबाकू को लपेटने के लिए आवरण के रूप में होता है। दक्षिणी राजस्थान के वनाच्छादित जिलों में जनजातीय परिवार ग्रीष्मकाल के दौरान तेंदू पत्ता एकत्र करके राज्य विकास निगम को बेचते हैं और आय अर्जित करते हैं।

63. (D) महुआ
राजस्थान में भील और गरासिया जनजातियों द्वारा पारंपरिक रूप से महुआ (Madhuca longifolia) के फूलों का उपयोग देशी शराब बनाने के लिए किया जाता है। महुआ के फूलों को किण्वित करके तैयार की गई यह मदिरा जनजातीय संस्कृति,

Click Here to Buy book on Flipkart

(C) रॉक फॉस्फेट
(D) जस्ता-सीसा

10. जावर का प्राचीन खनन स्थल, जो गहरी खदानों और प्राचीन जस्ता आसवन तकनीकों के लिए जाना जाता है, किस जिले में स्थित है?
(A) उदयपुर
(B) राजसमंद
(C) भीलवाड़ा
(D) चित्तौड़गढ़

11. राजस्थान के निम्नलिखित प्रमुख सीसा-जस्ता निक्षेपों को उत्तर से दक्षिण के सही भौगोलिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. जावर
II. रामपुरा-आगुचा
III. चौथ का बरवाड़ा
IV. राजपुरा-दरीबा
(A) III, II, IV, I
(B) II, III, I, IV
(C) III, IV, II, I
(D) IV, II, III, I

12. राजस्थान में सीसा लगभग सर्वत्र जस्ता के साथ सह-अस्तित्व में पाया जाता है। निम्नलिखित में से कौन-सा प्राथमिक अयस्क खनिज है जिससे सीसा प्राप्त किया जाता है?
(A) स्फेलेराइट
(B) गैलेना
(C) चालकोपाइराइट
(D) हेमेटाइट

13. राजस्थान में सीसा और जस्ता खनन के लिए किस प्रमुख व्यावसायिक संस्था के पास बाजार की प्रमुख हिस्सेदारी और संचालन अधिकार हैं?
(A) हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड
(B) टाटा स्टील माइंस डिवीजन
(C) हिंडाल्को इंडस्ट्रीज लिमिटेड
(D) राजस्थान राज्य खान एवं खनिज लिमिटेड

14. सिंदेसर खुर्द, जो सीसा-जस्ता और चांदी के उत्पादन के लिए जानी जाने वाली एक अत्यधिक मशीनीकृत भूमिगत खदान है, किस जिले में स्थित है?
(A) उदयपुर
(B) भीलवाड़ा
(C) राजसमंद
(D) अजमेर

15. राजस्थान में लौह अयस्क भंडारों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. राजस्थान में मुख्य रूप से हेमेटाइट किस्म का लौह अयस्क पाया जाता है।
II. मोरीजा-बानोल क्षेत्र राज्य का सबसे बड़ा लौह अयस्क निक्षेप है।
III. राजस्थान में लौह अयस्क निक्षेप आमतौर पर धारवाड़ शैल प्रणाली से सम्बद्ध हैं।
IV. 'थूर हुंडर' और 'नाथरा की पाल' उदयपुर जिले में प्रसिद्ध लौह अयस्क स्थल हैं।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल I, II और IV
(C) केवल II, III और IV
(D) केवल I, III और IV

16. 'चौमूं-सामोद' के लौह अयस्क निक्षेप भौगोलिक रूप से किस जिले में स्थित हैं?
(A) सीकर
(B) दौसा
(C) जयपुर
(D) झुंझुनूं

17. निम्नलिखित में से कौन-सा जिला राजस्थान में लौह अयस्क के उत्पादन में प्रमुख योगदानकर्ता नहीं है?
(A) जयपुर
(B) जैसलमेर
(C) दौसा
(D) उदयपुर

18. 'नीमला-रायसेला' लौह अयस्क खनन क्षेत्र किस जिले में स्थित है?
(A) अलवर
(B) सीकर
(C) टोंक
(D) दौसा

19. नागौर जिले में डेगाना के पास 'रेवत पहाड़ी' ने ऐतिहासिक रूप से किस रणनीतिक खनिज के खनन के लिए राष्ट्रीय प्रसिद्धि प्राप्त की थी?
(A) टंगस्टन
(B) मोलिब्डेनम
(C) कोबाल्ट
(D) लिथियम

20. राजस्थान में पाए जाने वाले निम्नलिखित में से किस विशिष्ट अयस्क खनिज से टंगस्टन निकाला जाता है?
(A) बॉक्साइट
(B) पाइरोलुसाइट
(C) वुल्फ्रामाइट
(D) क्रोमाइट

21. डेगाना के अलावा, राजस्थान का 'वाल्दा' क्षेत्र भी टंगस्टन खनिजीकरण के लिए जाना जाता है। वाल्दा किस जिले में स्थित है?
(A) सिरोही
(B) पाली
(C) जालौर

NODIA

पीढ़ियों की शर्त वैधानिक रूप से बिल्कुल सही है। अतः सही उत्तर विकल्प D है।

74. (A) ग्राम सभा
वन अधिकार अधिनियम 2006 के तहत जनजातीय और पारंपरिक वन निवासियों के व्यक्तिगत एवं सामुदायिक वन अधिकारों की प्रकृति और सीमा का निर्धारण करने की प्रक्रिया शुरू करने का प्राथमिक वैधानिक अधिकार ग्राम सभा को दिया गया है। ग्राम सभा दावों की प्राप्ति, सत्यापन और प्रारंभिक सिफारिश का कार्य करती है, जिसे बाद में उपखंड स्तरीय और जिला स्तरीय समितियों द्वारा अंतिम रूप से स्वीकृत और पारित किया जाता है।

75. (A) सहरिया, भील, मीणा
राजस्थान की प्रमुख जनजातियों में साक्षरता दर का सही बढ़ता क्रम (न्यूनतम से उच्चतम) सहरिया, भील और मीणा है। जनगणना आंकड़ों के अनुसार सहरिया जनजाति में साक्षरता का स्तर सबसे कम पाया जाता है, जबकि भील जनजाति दूसरे स्थान पर आती है। मीणा जनजाति में साक्षरता दर राज्य की सभी जनजातियों में सर्वाधिक है, जो उनके सामाजिक और आर्थिक विकास के उच्च स्तर को स्पष्ट रूप से दर्शाती है।

76. (B) भील
जनसांख्यिकीय दृष्टि से भील जनजाति ऐतिहासिक रूप से बहुत उच्च लिंगानुपात (प्रति 1000 पुरुषों पर महिलाओं की संख्या) बनाए रखने के लिए जानी जाती है, जो अक्सर राज्य के सामान्य लिंगानुपात औसत से भी अधिक होता है। भील समाज में कन्या शिशु के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण, वधू मूल्य (दापा) की परंपरा तथा लिंग भेद रहित सामाजिक ताने-बाने ने इस जनजाति में संतुलित और उच्च लिंगानुपात को बनाए रखने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

77. (A) मीणा
राजस्थान में मीणा जनजाति को मुख्य रूप से एक सुदृढ़ और स्थायी कृषक समुदाय माना जाता है। पूर्वी मैदानी भागों में निवास करने और उच्च साक्षरता दर होने के कारण मीणा समुदाय ने राज्य तथा केंद्र सरकार की नौकरियों और प्रशासनिक सेवाओं में सबसे महत्वपूर्ण भागीदारी हासिल की है। यह जनजाति राजस्थान के अन्य सभी जनजातीय समूहों की तुलना में आर्थिक और शैक्षणिक रूप से सर्वाधिक एकीकृत और अग्रणी मानी जाती है।

78. (A) केवल I और II
मीणा जनजाति राज्य की सबसे बड़ी अनुसूचित जनजाति है और सहरिया को विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह (PVTG) घोषित किया गया है। अतः पहला और दूसरा कथन सही हैं। तीसरा कथन गलत है क्योंकि काथोड़ी जनजाति मुख्य रूप से उदयपुर के वनाच्छादित क्षेत्रों में निवास करती है, थार मरुस्थल में नहीं। इसलिए केवल पहला और दूसरा कथन ही जनजातियों की वास्तविक जनसांख्यिकीय विशेषताओं का सही प्रतिनिधित्व करते हैं।

79. (D) यह एक स्थायी आभूषण के रूप में कार्य करता है जो मृत्यु के बाद भी उनके साथ जाता है।
राजस्थान की जनजातीय महिलाओं, विशेष रूप से भील और गरासिया समुदायों में गोदना (टैटू बनवाना) की परंपरा के पीछे यह दृढ़ आध्यात्मिक मान्यता है कि भौतिक आभूषण तो मृत्यु के पश्चात यहीं छूट जाते हैं, किंतु शरीर पर उकेरा गया गोदना ही एकमात्र ऐसा स्थायी आभूषण है जो मृत्यु के बाद भी आत्मा के साथ परलोक जाता है। यह परंपरा सौंदर्यबोध और धार्मिक विश्वास दोनों का प्रतीक है।

NODIA

80. (C) भील
'तीर-कमान' बनाना और उनका दक्षतापूर्वक उपयोग करना मुख्य रूप से भील जनजाति की ऐतिहासिक पहचान से जुड़ा हुआ है। 'भील' शब्द की उत्पत्ति भी द्रविड़ भाषा के 'बिल्लु' शब्द से मानी जाती है, जिसका अर्थ धनुष होता है। ऐतिहासिक रूप से भील समुदाय एक उत्कृष्ट धनुर्धारी योद्धा और शिकारी समाज रहा है। आज भी विभिन्न सांस्कृतिक और पारंपरिक आयोजनों में तीर-कमान भील संस्कृति का एक महत्वपूर्ण अंग माना जाता है।

81. (B) मामादेव के घोड़े
दक्षिणी राजस्थान में भील और गरासिया जनजातियों द्वारा मन्नतें पूरी होने पर स्थानीय ग्राम देवताओं को चढ़ाए जाने वाले मिट्टी (टेराकोटा) के घोड़ों को 'मामादेव के घोड़े' कहा जाता है। मामादेव को वर्षा और गाँव का रक्षक देवता माना जाता है। जालौर जिले का हरजी गाँव मिट्टी के इन पारम्परिक घोड़ों के निर्माण के लिए प्रसिद्ध है। यह कला जनजातीय लोक-संस्कृति और धार्मिक आस्था का सुंदर सम्मिश्रण है।

82. (D) गला
'हंसली' या 'हंसुली' भारी चाँदी से बना एक पारंपरिक आभूषण है जिसे राजस्थान की जनजातीय और ग्रामीण महिलाओं द्वारा गले में धारण किया जाता है। यह आभूषण हंसली (गले की हड्डी) के चारों ओर पहना जाता है, जिसके कारण इसका नाम हंसली पड़ा। यह मजबूत और ठोस चाँदी का गहना जनजातीय वेशभूषा का एक प्रमुख अंग है, जो महिलाओं के सौंदर्य, सामाजिक प्रतिष्ठा और सांस्कृतिक परंपरा को प्रदर्शित करता है।

83. (A) भोमिया जी
दक्षिणी राजस्थान के जनजातीय समाजों में 'भोमिया जी' को भूमि, कृषि, पशुधन और गाँव की सीमाओं के दिव्य आध्यात्मिक संरक्षक के रूप में अत्यधिक पूजा जाता है। जनजातीय मान्यता के अनुसार भोमिया जी गाँव को प्राकृतिक आपदाओं, बीमारियों और दुष्ट आत्माओं से बचाते हैं। गाँव की सीमा पर स्थित उनका स्थान या थान अत्यंत पवित्र माना जाता है, जहाँ किसी भी शुभ कार्य, बुवाई या फसल कटाई से पूर्व पूजा-अर्चना की जाती है।

84. (C) धुलेव
उदयपुर जिले के धुलेव गाँव में स्थित प्रसिद्ध ऋषभदेव जी का मंदिर भील जनजाति की आस्था का एक प्रमुख केंद्र है। भील समुदाय भगवान ऋषभदेव जी को स्नेहपूर्वक 'कालाजी' या

43. (B) दाह संस्कार के बाद राख का निरीक्षण करके पुनर्जन्म का अनुमान लगाना

सहरिया जनजाति में 'धारी संस्कार' मृत व्यक्ति की आत्मा की शांति और पुनर्जन्म से जुड़ा एक पारंपरिक अनुष्ठान है। दाह संस्कार के तीसरे दिन मृतक की राख और अस्थियों को एकत्र करके साफ स्थान पर रखा जाता है तथा उसे रात भर ढक कर छोड़ा जाता है। अगले दिन सुबह राख पर उभरे निशानों का निरीक्षण करके यह अनुमान लगाया जाता है कि मृतक ने किस योनि में पुनर्जन्म लिया है।

44. (B) 50%

राजस्थान में संशोधित क्षेत्र विकास दृष्टिकोण (MADA) खंडों का गठन जनजातीय विकास के लिए उन क्षेत्रों में किया जाता है जहाँ कुल जनसंख्या कम से कम 10,000 हो और उसमें अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या कम से कम 50% या उससे अधिक हो। इस योजना का मुख्य उद्देश्य केंद्रित जनजातीय आबादी वाले क्षेत्रों में आधारभूत ढाँचे का विकास करना, शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाएँ बढ़ाना तथा गरीबी उन्मूलन के लक्षित प्रयास संचालित करना है।

45. (B) केवल I, II और IV

जनजातीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम उच्च जनजातीय आबादी वाले क्षेत्रों में संचालित होता है और राज्य के प्रयासों को गति देने हेतु केंद्र सरकार से विशेष वित्तीय सहायता प्राप्त करता है। इसका मुख्य उद्देश्य मानव विकास सूचकांक और बुनियादी ढाँचे के अंतर को समाप्त करना है। यह केवल बड़े उद्योगों पर केंद्रित नहीं है, बल्कि कृषि, शिक्षा और स्वास्थ्य के समग्र विकास पर बल देता है। अतः तीसरा कथन गलत है।

46. (C) बारां

राजस्थान में 'सहरिया विकास परियोजना' विशेष रूप से बारां जिले में लागू की गई है, क्योंकि सहरिया जनजाति की लगभग संपूर्ण आबादी इसी जिले की शाहबाद और किशनगंज तहसीलों में निवास करती है। सहरिया राज्य की एकमात्र विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह (PVTG) है। इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य सहरिया समुदाय में साक्षरता बढ़ाना, कुपोषण दूर करना, रोजगार के अवसर पैदा करना और स्वास्थ्य सुविधाओं में सुधार करना है।

47. (D) प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करना

राजस्थान सरकार की 'अनुप्रति योजना' का मुख्य उद्देश्य जनजातीय एवं अन्य प्रतिभावान छात्रों को भारतीय प्रशासनिक सेवा, राज्य प्रशासनिक सेवा, इंजीनियरिंग तथा मेडिकल जैसी प्रतिष्ठित प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए वित्तीय प्रोत्साहन और निशुल्क कोचिंग सहायता प्रदान करना है। इस योजना से जनजातीय युवाओं को उच्च शिक्षा तथा सरकारी सेवाओं में अपने करियर के बेहतर अवसर प्राप्त करने और सामाजिक-आर्थिक रूप से सशक्त बनने में सीधी मदद मिलती है।

48. (C) उदयपुर

राजस्थान का Manikya Lal Verma जनजातीय अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान उदयपुर जिले में स्थित है। यह संस्थान राज्य में जनजातीय विकास, शोध, प्रशिक्षण और नीतिगत परामर्श के लिए नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करता है। जनजातीय समुदायों की कला, भाषा, संस्कृति, रीति-रिवाजों का संरक्षण करने तथा उनके सामाजिक-आर्थिक विकास हेतु विभिन्न योजनाओं का मूल्यांकन और प्रशासनिक अधिकारियों को प्रशिक्षण प्रदान करने में इसकी केंद्रीय और महत्वपूर्ण भूमिका है।

49. (B) 1964

राजस्थान में जनजातीय संस्कृति के संरक्षण, अभिलेखीकरण और जनजातीय योजनाओं के सामाजिक-आर्थिक मूल्यांकन के उद्देश्य से उदयपुर में जनजातीय अनुसंधान संस्थान की स्थापना वर्ष 1964 में की गई थी। स्थापना के बाद से यह संस्थान जनजातीय जीवन के विभिन्न पहलुओं पर अनुसंधान करने, उनके कल्याण हेतु नीतिगत सुझाव देने तथा जनजातीय क्षेत्रों में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों को विशेष प्रशिक्षण प्रदान करने का कार्य निरंतर निष्ठापूर्वक कर रहा है।

50. (D) नागरिकों को कानूनी अनुसूचित जनजाति जाति प्रमाण पत्र जारी करना।

नागरिकों को अनुसूचित जनजाति का कानूनी जाति प्रमाण पत्र जारी करना राजस्व विभाग तथा संबंधित उपखंड अधिकारी (SDO) का प्रशासनिक कार्य है, न कि जनजातीय अनुसंधान संस्थान का। संस्थान का प्राथमिक कार्य जनजातीय विकास योजनाओं का मूल्यांकन करना, जनजातीय कला और संस्कृति का संरक्षण करना तथा जनजातीय कल्याण योजनाओं में लगे प्रशासनिक कर्मियों को प्रशिक्षण देना है। अतः चौथा विकल्प संस्थान के प्राथमिक कार्यों के अंतर्गत शामिल नहीं है।

51. (C) 50%

जनजातीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम के तहत 'माडा क्लस्टर' (MADA Cluster) के निर्माण के लिए न्यूनतम 5,000 की कुल जनसंख्या वाले क्षेत्र में अनुसूचित जनजाति की आबादी का कम से कम 50% होना अनिवार्य है। यह मापदंड यह सुनिश्चित करता है कि विकास योजनाओं का लाभ मुख्य रूप से जनजातीय आबादी तक सीधे पहुँचे और उन पॉकेट्स का सामाजिक-आर्थिक उत्थान हो सके जो मुख्य जनजातीय उप-योजना क्षेत्र से बाहर स्थित हैं।

52. (C) केंद्र सरकार द्वारा 100%

जनजातीय क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए संचालित एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालयों (EMRS) का सम्पूर्ण वित्तीय भार केंद्र सरकार के जनजातीय कार्य मंत्रालय द्वारा 100% वहन किया जाता है। ये विद्यालय पूरी तरह से आवासीय होते हैं जहाँ अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों को कक्षा 6 से 12 तक निःशुल्क शिक्षा, आवास, भोजन, वस्त्र और खेलकूद की आधुनिक सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाती हैं ताकि उनका सर्वांगीण विकास हो सके।

Downloaded from www.pdf.tube

अध्याय 20

राजस्थान के खनिज

NODIA

1. भारत में निम्नलिखित में से किस खनिज समूह के उत्पादन में राजस्थान का लगभग एकाधिकार है?
(A) लौह अयस्क, मैंगनीज और बॉक्साइट
(B) सीसा-जस्ता अयस्क, सेलेनाइट और वोलैस्टोनाइट
(C) तांबा, सोना और चांदी
(D) रॉक फॉस्फेट, जिप्सम और लिग्नाइट

2. भारतीय राज्यों में खनिज संसाधनों की कुल उपलब्धता और उत्पादन के मूल्य के संदर्भ में राजस्थान की सापेक्ष स्थिति क्या है?
(A) मूल्य में प्रथम, उपलब्धता में द्वितीय
(B) उपलब्धता और मूल्य दोनों में प्रथम
(C) उपलब्धता में द्वितीय, मूल्य में प्रथम
(D) उपलब्धता में द्वितीय, मूल्य में तृतीय

3. राजस्थान में खनिजों के भूगर्भीय वितरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. अरावली और दिल्ली सुपरग्रुप तांबा, सीसा और जस्ता जैसी आधार धातुओं के निक्षेपों की मुख्य मातृ शैलें हैं।
II. पश्चिमी राजस्थान में मारवाड़ सुपरग्रुप मुख्य रूप से चूना पत्थर और बलुआ पत्थर के निक्षेपों से संबंधित है।
III. राज्य के दक्षिणी भागों में स्थित दक्कन ट्रैप उच्च श्रेणी के बिटुमिनस कोयले से समृद्ध हैं।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

4. राजस्थान के निम्नलिखित लौह अयस्क खनन क्षेत्रों को उनके संबंधित जिलों से सुमेलित कीजिए:
सूची I : (खनन क्षेत्र)
P. मोरीजा-बानोल
Q. नाथरा की पाल
R. नीमला-रायसेला
S. डाबला-सिंघाना
सूची II : (जिला)
1. दौसा
2. झुंझुनूं
3. जयपुर
4. उदयपुर
(A) P-3, Q-1, R-4, S-2
(B) P-4, Q-3, R-1, S-2
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

5. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A) : झुंझुनूं जिले की खेतड़ी पट्टी ऐतिहासिक और आर्थिक रूप से राजस्थान में सबसे महत्वपूर्ण तांबा उत्पादक क्षेत्र है।
कारण (R) : खेतड़ी पट्टी में उच्च श्रेणी बॉक्साइट के विशाल भंडार हैं, जिनसे तांबे का निष्कर्षण आसानी से किया जाता है।
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

6. खो-दरीबा में स्थित तांबे के निक्षेप राजस्थान के निम्नलिखित में से किस जिले में स्थित हैं?
(A) सीकर
(B) भीलवाड़ा
(C) राजसमंद
(D) अलवर

7. खेतड़ी-सिंघाना पट्टी में तांबा अयस्क के निष्कर्षण और प्रसंस्करण के लिए किस केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यम की स्थापना की गई थी?
(A) राष्ट्रीय खनिज विकास निगम
(B) हिंदुस्तान कॉपर लिमिटेड
(C) मिनरल एक्सप्लोरेशन कॉर्पोरेशन लिमिटेड
(D) हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड

8. खेतड़ी पट्टी के अलावा, 'पुर-दरीबा' तांबे के निक्षेपों के लिए प्रसिद्ध एक अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्र है। यह किस जिले में स्थित है?
(A) उदयपुर
(B) बांसवाड़ा
(C) भीलवाड़ा
(D) डूंगरपुर

9. रामपुरा-आगुचा को वैश्विक स्तर पर किस खनिज के सबसे बड़े और समृद्ध निक्षेपों में से एक के रूप में मान्यता प्राप्त है?
(A) मैंगनीज
(B) टंगस्टन

34. झामरकोटड़ा से निकाला गया संवर्धित रॉक फॉस्फेट किस प्रमुख उद्योग के लिए मूलभूत कच्चे माल के रूप में कार्य करता है?
(A) कांच और सिरेमिक
(B) पेट्रोकेमिकल्स
(C) लोहा और इस्पात धातु विज्ञान
(D) फॉस्फेटिक उर्वरक

35. 'माटोन' और 'कानपुर' उदयपुर जिले के दो अन्य महत्वपूर्ण खनन स्थल हैं जिनका संबंध किसके निष्कर्षण से है?
(A) रॉक फॉस्फेट
(B) लिग्नाइट कोयला निक्षेप
(C) बेराइट्स खनिज
(D) व्यावसायिक अभ्रक

36. मुख्य रूप से टोंक के राजमहल में पाए जाने वाले किस अर्ध-कीमती पत्थर के रत्न-गुणवत्ता वाले उत्पादन में राजस्थान का भारत में पूर्ण एकाधिकार है?
(A) पन्ना
(B) एक्वामरीन
(C) तामड़ा (गार्नेट)
(D) टूरमैलिन

37. राजस्थान में स्थानीय शब्दावली में, गार्नेट की लाल रंग की रत्न किस्म को सामान्यतः क्या कहा जाता है?
(A) तामड़ा
(B) पन्ना
(C) नीलम
(D) गोमेद

38. कौन-सा जिला राजस्थान में कुल फेल्डस्पार उत्पादन में 90% से अधिक का योगदान देता है?
(A) भीलवाड़ा
(B) पाली
(C) जयपुर
(D) अजमेर

39. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A) : अजमेर राजस्थान में फेल्डस्पार का सबसे बड़ा उत्पादक है।
कारण (R) : अजमेर क्षेत्र में प्रचुर मात्रा में पेग्माटाइट अंतर्भेदन हैं जो फेल्डस्पार और क्वार्ट्ज खनिजों से अत्यधिक समृद्ध हैं।
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

40. उदयपुर-राजसमंद खनिज पट्टी निम्नलिखित में से किस खनिज के बड़े पैमाने पर व्यावसायिक निष्कर्षण के लिए नहीं जानी जाती है?
(A) संगमरमर
(B) सीसा-जस्ता
(C) लिग्नाइट कोयला
(D) रॉक फॉस्फेट

41. खनिज प्रसंस्करण केंद्र के रूप में उदयपुर-राजसमंद क्षेत्र की प्रमुखता का मुख्य कारण क्या है?
(A) गहरे समुद्री बंदरगाहों और अंतर्राष्ट्रीय समुद्री मार्गों से रणनीतिक निकटता
(B) एंथ्रेसाइट कोयले जैसे उच्च श्रेणी जीवाश्म ईंधनों की स्थानीय उपलब्धता
(C) केंद्र सरकार द्वारा दी गई पूर्ण कर छूट
(D) स्थापित प्रसंस्करण सुविधाओं के साथ समृद्ध बहु-खनिज आधार

42. झुंझुनूं-खेतड़ी तांबा पट्टी में, प्राथमिक तांबा खनिजीकरण किन शैलों के भीतर पाया जाता है?
(A) अजबगढ़ समूह
(B) अलवर समूह
(C) भीलवाड़ा सुपरग्रुप
(D) दक्कन ट्रैप

43. खेतड़ी पट्टी से तांबा अयस्कों के प्रगलन (स्मेल्टिंग) के दौरान आमतौर पर कौन-सा महत्वपूर्ण उप-उत्पाद प्राप्त होता है?
(A) यूरेनियम
(B) सल्फ्यूरिक एसिड
(C) फॉस्फोरिक एसिड
(D) टाइटेनियम डाइऑक्साइड

44. झुंझुनूं में सिंघाना कस्बा खेतड़ी तांबा पट्टी की उत्तरी सीमा को चिह्नित करता है। सीकर जिले में इसका दक्षिणी विस्तार किस भौगोलिक विशेषता द्वारा चिह्नित होता है?
(A) हर्षनाथ
(B) रघुनाथगढ़
(C) बालेश्वर
(D) नीम का थाना

45. राजस्थान खनिज नीति 2015 के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह शून्य-अपशिष्ट खनन प्राप्त करने और आधुनिक तकनीक को अपनाने पर जोर देती है।
II. इसका उद्देश्य निजी निवेश को आकर्षित करने के लिए खनिज रियायतें देने की प्रक्रिया को सरल बनाना है।
III. यह राज्य से आयामी पत्थरों के निर्यात पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगाती है।
IV. यह खनिजों की व्यवस्थित और वैज्ञानिक खोज के लिए एक रूपरेखा की रूपरेखा तैयार करती है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I, II और III

Click Here to Buy book on Amazon

(D) बाड़मेर

22. निम्नलिखित प्रमुख जिप्सम खनन केंद्रों को उनके संबंधित जिलों के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I : (खनन केंद्र)
P. जामसर
Q. गोठ-मांगलोद
R. मोहनगढ़
S. कवास
सूची II : (जिला)
1. बाड़मेर
2. जैसलमेर
3. बीकानेर
4. नागौर
(A) P-4, Q-3, R-1, S-2
(B) P-3, Q-2, R-4, S-1
(C) P-2, Q-4, R-3, S-1
(D) P-3, Q-4, R-2, S-1

23. जिप्सम के अत्यधिक शुद्ध, प्राकृतिक रूप से पाए जाने वाले क्रिस्टलीय रूप को क्या कहा जाता है, जो मुख्य रूप से पश्चिमी राजस्थान में पाया जाता है?
(A) ऐलाबास्टर
(B) सेलेनाइट
(C) एनहाइड्राइट
(D) सैटिन स्पार

24. भारत में कुल जिप्सम उत्पादन का लगभग कितना प्रतिशत अकेले राजस्थान में होता है?
(A) 40-45%
(B) 60-65%
(C) 80-85%
(D) 90-95%

25. राजस्थान में उत्खनित जिप्सम का सबसे व्यापक औद्योगिक उपयोग किसके निर्माण में होता है?
(A) अग्निरोधक ईंटें और फायरक्ले उत्पाद
(B) उच्च श्रेणी के औद्योगिक अपघर्षक
(C) कांच के सामान और उत्कृष्ट सिरेमिक उत्पाद
(D) प्लास्टर ऑफ पेरिस और सीमेंट

26. जैसलमेर जिले का 'सोनू' क्षेत्र किस विशिष्ट श्रेणी के चूना पत्थर के उत्पादन के लिए रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण है?
(A) इस्पात (SMS) श्रेणी
(B) रासायनिक श्रेणी
(C) सीमेंट श्रेणी
(D) श्वेत दहन श्रेणी

27. सीमेंट-श्रेणी चूना पत्थर के विशाल भंडार के कारण, कौन-सा जिला राजस्थान में सीमेंट उद्योग के लिए सबसे प्रमुख केंद्र के रूप में उभरा है?
(A) नागौर
(B) चित्तौड़गढ़
(C) बूंदी
(D) सिरोही

28. संगमरमर की किस्मों और उनके प्राथमिक उत्पादक जिलों के निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए:
I. सफेद संगमरमर - मकराना (नागौर)
II. हरा संगमरमर - उदयपुर
III. काला संगमरमर - भैंसलाना (जयपुर)
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

29. प्रसिद्ध मकराना संगमरमर, जिसका उपयोग ताजमहल और विक्टोरिया मेमोरियल के निर्माण में किया गया था, भूगर्भीय रूप से किस प्रणाली से संबंधित है?
(A) दिल्ली सुपरग्रुप
(B) ऊपरी विंध्यन सुपरग्रुप फॉर्मेशन
(C) मालानी इग्नेस सूट अनुक्रम
(D) मारवाड़ सुपरग्रुप शैल प्रणाली

30. उदयपुर जिले का 'बाबरमल' क्षेत्र विशेष रूप से किस रंग के संगमरमर के निष्कर्षण के लिए प्रसिद्ध है?
(A) पीला संगमरमर
(B) काला संगमरमर
(C) गुलाबी संगमरमर
(D) भूरा संगमरमर

NODIA

31. राजस्थान का कौन-सा शहर अपने विशाल संगमरमर प्रसंस्करण और व्यापार उद्योग के कारण व्यावसायिक रूप से "भारत की मार्बल सिटी" के रूप में जाना जाता है?
(A) राजसमंद
(B) मकराना
(C) उदयपुर
(D) किशनगढ़

32. उदयपुर जिले में झामरकोटड़ा किस आवश्यक खनिज के भारत के सबसे बड़े दोहन योग्य निक्षेप के लिए प्रसिद्ध है?
(A) फ्लोराइट
(B) सोपस्टोन (सेलखड़ी)
(C) रॉक फॉस्फेट
(D) एस्बेस्टस

33. उन वर्षों के सही कालानुक्रमिक क्रम की पहचान कीजिए जिनमें राजस्थान सरकार ने आधिकारिक तौर पर अपनी व्यापक राज्य खनिज नीतियां जारी कीं:
(A) 1978, 1994, 2011, 2015
(B) 1980, 1996, 2010, 2018
(C) 1975, 1990, 2005, 2015
(D) 1982, 1998, 2012, 2020

'केशरियानाथ जी' कहता है क्योंकि मंदिर में मूर्ति पर अत्यधिक केसर चढ़ाई जाती है। भील समुदाय में यह अटूट विश्वास है कि कालाजी पर चढ़ी केसर का जल पीकर कभी झूठी कसम नहीं खाई जाती, जो उनकी सत्यनिष्ठा का प्रतीक है।

85. (A) P-2, Q-1, R-4, S-3
राजस्थान की जनजातीय प्रथाओं में 'नाता' का अर्थ बिना औपचारिक विवाह के साथ रहना है। 'दापा' का अर्थ वर पक्ष द्वारा दिया जाने वाला वधू मूल्य है। 'छेड़ा फाड़ना' तलाक की प्रतीकात्मक प्रक्रिया है। वहीं 'झगड़ा' एक सामाजिक हर्जाना या मुआवजा राशि है जो नए साथी द्वारा पूर्व पति को दी जाती है। इस प्रकार यह सुमेलित क्रम जनजातीय समाजों की पारंपरिक विवाह एवं सामाजिक न्याय व्यवस्था को सही ढंग से प्रस्तुत करता है।

86. (D) सहरिया
'कोडिया देवी' को सहरिया जनजाति द्वारा पारंपरिक रूप से अपनी कुलदेवी के रूप में पूजा जाता है। सहरिया समुदाय के लोग किसी भी शुभ कार्य, विवाह या धार्मिक त्यौहार की शुरुआत कोडिया देवी के आशीर्वाद के बिना नहीं करते हैं। बारां जिले के सहरिया बाहुल्य क्षेत्रों में कोडिया देवी के अनेक थान और मंदिर स्थित हैं, जहाँ यह समुदाय अत्यधिक भक्ति और श्रद्धा के साथ पूजा-अर्चना एवं बलि की परंपरा का पालन करता है।

87. (B) विखंडित जोत और वर्ष भर स्थानीय रोजगार की कमी
दक्षिणी राजस्थान की जनजातीय आबादी में 'मौसमी प्रवास' की प्रवृत्ति मुख्य रूप से कृषि भूमि के अत्यधिक छोटे व विखंडित टुकड़ों तथा स्थानीय स्तर पर वर्ष भर रोजगार के साधनों की कमी के कारण देखी जाती है। कृषि कार्य समाप्त होने के पश्चात जनजातीय परिवार अपनी आजीविका चलाने हेतु पड़ोसी राज्यों जैसे गुजरात तथा महाराष्ट्र या बड़े शहरों में निर्माण कार्यों में मजदूरी करने के लिए विवश होकर प्रवास करते हैं।

88. (B) केवल I, II और IV
राजस्थान के जनजातीय समुदायों के सामने सिकल सेल एनीमिया, भूमि बेदखली का जोखिम तथा विकासात्मक परियोजनाओं से होने वाला विस्थापन वास्तविक चुनौतियाँ हैं। अतः पहला, दूसरा और चौथा कथन सही हैं। तीसरा कथन गलत है क्योंकि TSP वित्तपोषण के बावजूद गरीबी का पूर्ण और स्थायी उन्मूलन अभी तक नहीं हो सका है। इसलिए विकल्प B ही वास्तविक समकालीन समस्याओं और सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों का सटीक और सही प्रतिनिधित्व करता है।

89. (D) गैर-जनजातियों को जनजातीय कृषि भूमि के हस्तांतरण या बिक्री पर प्रतिबंध।
राजस्थान काश्तकारी अधिनियम 1955 की धारा 42 में यह विशेष संवैधानिक सुरक्षा प्रावधान किया गया है कि किसी भी अनुसूचित जनजाति के काश्तकार की कृषि भूमि का हस्तांतरण, बिक्री या दान गैर-जनजातीय व्यक्ति को नहीं किया जा सकता। इस कानून का मुख्य उद्देश्य जनजातीय समुदायों की पैतृक भूमि को गैर-आदिवासी साहूकारों और भू-माफियाओं द्वारा गैर-कानूनी ढंग से छीने जाने से बचाना तथा उनका सामाजिक और आर्थिक संरक्षण सुनिश्चित करना है।

90. (A) वन अधिकार अधिनियम 2006 के तहत सामुदायिक वन अधिकार प्रदान करना।
वन संरक्षण कानूनों और जनजातीय आजीविका अधिकारों के बीच संतुलन बनाने में वन अधिकार अधिनियम 2006 के तहत सामुदायिक वन अधिकार (CFR) प्रदान करना सबसे प्रभावी वैधानिक तंत्र है। यह प्रावधान जनजातीय समुदायों को वनों से गौण वन उपज एकत्र करने, चराई करने और वनों का स्थायी संरक्षण करने की कानूनी शक्ति देता है। इससे पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ जनजातीय समुदायों की पारंपरिक आजीविका और सांस्कृतिक अधिकारों का सम्मान सुनिश्चित होता है।

www.nodia.in

Downloaded from www.pdf.tube

(B) केवल I, II और IV
(C) केवल II, III और IV
(D) केवल I, III और IV

46. नदी की रेत की गंभीर कमी से निपटने और नदी घाटियों के पारिस्थितिक क्षरण को रोकने के लिए, राजस्थान सरकार ने किस वर्ष एम-सैंड के लिए एक समर्पित नीति शुरू की थी?
(A) 2015
(B) 2018
(C) 2020
(D) 2022

47. राज्य में अप्रधान खनिज रियायतों की स्वीकृति और विनियमन विशेष रूप से नियमों के किस सेट द्वारा शासित होते हैं?
(A) खान और खनिज (विकास और विनियमन) अधिनियम, 1957
(B) राजस्थान खनिज निष्कर्षण दिशा-निर्देश, 2011
(C) भारतीय खान ब्यूरो नियम, 2016
(D) राजस्थान अप्रधान खनिज रियायत नियम, 2017

48. राजस्थान में व्यवस्थित भूगर्भीय खोज, खनिज प्रशासन और राजस्व संग्रह के लिए उत्तरदायी नोडल प्रशासनिक विभाग कौन-सा है?
(A) पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन विभाग
(B) राजस्थान राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड
(C) खान एवं भूविज्ञान विभाग
(D) उद्योग एवं वाणिज्य विभाग

49. राजस्थान में खनन के लिए विनियामक ढांचा मुख्य और अप्रधान खनिजों के बीच अंतर करता है। निम्नलिखित में से किसे अप्रधान खनिज के रूप में वर्गीकृत किया गया है?
(A) रॉक फॉस्फेट
(B) संगमरमर
(C) लिग्नाइट
(D) तांबा अयस्क

50. 'सिलिकोसिस' का प्राथमिक कारण क्या है, जो राजस्थान में बलुआ पत्थर खदान और क्रशर श्रमिकों के बीच अक्सर रिपोर्ट किया जाने वाला एक गंभीर व्यावसायिक स्वास्थ्य जोखिम है?
(A) भूमिगत खदानों में जहरीली कार्बन मोनोऑक्साइड के संपर्क में आना
(B) सीसा-दूषित पानी का सेवन
(C) मार्बल स्लरी से एलर्जी होना
(D) मुक्त क्रिस्टलीय सिलिका धूल का लंबे समय तक सांस के माध्यम से शरीर में जाना

51. एक मानक, सतत खनन परियोजना जीवनचक्र के निम्नलिखित चरणों पर विचार कीजिए:
I. पूर्वेक्षण एवं अन्वेषण
II. खदान बंद करना एवं पारिस्थितिक पुनरुद्धार
III. खनिज निष्कर्षण
IV. संवर्धन एवं प्रसंस्करण
निम्नलिखित में से कौन-सा इन चरणों के सही कालानुक्रमिक क्रम को दर्शाता है?
(A) I, III, IV, II
(B) I, IV, III, II
(C) III, I, IV, II
(D) I, III, II, IV

52. खान श्रमिकों द्वारा सामना किए जाने वाले गंभीर व्यावसायिक खतरों को देखते हुए, राजस्थान सरकार ने किस वर्ष "न्यूमोकोनिओसिस नीति" नामक एक समर्पित कल्याण और राहत नीति शुरू की?
(A) 2015
(B) 2017
(C) 2019
(D) 2021

NODIA

53. अरावली की पहाड़ियों में अवैज्ञानिक और अनियंत्रित खनन की पर्यावरण निकायों द्वारा मुख्य रूप से किस कारण से भारी आलोचना की गई है?
(A) भूजल स्तर में गंभीर गिरावट और वन आवरण की हानि
(B) बहुमूल्य सोने के भंडारों की तीव्र समाप्ति
(C) अत्यधिक लवणता से मरुस्थलीय मृदा का दूषित होना
(D) अत्यधिक उत्पादन के कारण अंतर्राष्ट्रीय पत्थरों की कीमतों में गिरावट होना

54. खनिजों और पेट्रोलियम के निष्कर्षण से एकत्र की जाने वाली रॉयल्टी और शुल्क राजस्थान के राज्य राजस्व का एक बड़ा हिस्सा हैं। राज्य के बजट में इस राजस्व को किस प्रकार वर्गीकृत किया जाता है?
(A) कर राजस्व
(B) पूंजीगत प्राप्तियां
(C) सहायता अनुदान
(D) गैर-कर राजस्व

55. खनन रॉयल्टी का एक बड़ा हिस्सा जिला खनिज फाउंडेशन ट्रस्ट में जमा करना अनिवार्य है। इस ट्रस्ट की निधियों का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?
(A) निजी ऑपरेटरों को भारी मशीनरी खरीदने के लिए पूंजीगत सब्सिडी प्रदान करना
(B) खनन प्रभावित क्षेत्रों के कल्याण और विकास के लिए काम करना
(C) राज्य विभागों के सामान्य प्रशासनिक और परिचालन खर्चों का वित्तपोषण करना
(D) केवल आधुनिक भूगर्भीय अन्वेषण और खनिज सर्वेक्षणों में निवेश करना

56. राजस्थान में मुख्य खनिजों के लिए रॉयल्टी दरें किस प्राधिकरण द्वारा निर्धारित और अधिसूचित की जाती हैं?
(A) राजस्थान के मुख्यमंत्री
(B) खान एवं भूविज्ञान विभाग, राजस्थान
(C) एमएमडीआर अधिनियम के तहत केंद्र सरकार

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) सीसा-जस्ता अयस्क, सेलेनाइट और वोलैस्टोनाइट
राजस्थान में विविध खनिजों का प्रचुर भंडार पाया जाता है। देश में सीसा-जस्ता अयस्क, सेलेनाइट तथा वोलैस्टोनाइट के सम्पूर्ण उत्पादन पर राजस्थान का लगभग एकाधिकार स्थापित है। इन खनिजों का शत-प्रतिशत निष्कर्षण राज्य की विशिष्ट भूगर्भीय संरचनाओं से होता है। वोलैस्टोनाइट मुख्य रूप से सिरोही तथा अजमेर जिलों में पाया जाता है। इसके अतिरिक्त राज्य में सेलेनाइट का उत्पादन बीकानेर और नागौर क्षेत्रों में केंद्रित है। यह एकाधिकार राज्य के खनिज राजस्व में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

2. (D) उपलब्धता में द्वितीय, मूल्य में तृतीय
राजस्थान खनिजों की विविधता की दृष्टि से भारत का एक अत्यंत समृद्ध राज्य है। खनिजों की कुल उपलब्धता और किस्मों की संख्या के आधार पर राजस्थान देश में द्वितीय स्थान पर आता है। यहाँ लगभग 81 प्रकार के खनिज पाए जाते हैं। हालांकि, उत्पादित खनिजों के कुल मूल्य के संदर्भ में राज्य देश में तीसरे स्थान पर स्थित है। राजस्थान में अधातु खनिजों तथा निर्माण पत्थरों की प्रचुरता है, जबकि उच्च मूल्य वाले ईंधन खनिजों का योगदान अपेक्षाकृत सीमित है।

3. (A) केवल I और II
राजस्थान का भूगर्भीय इतिहास अत्यंत प्राचीन है। अरावली और दिल्ली सुपरग्रुप की शैलें तांबा, सीसा और जस्ता जैसी आधार धातुओं के संचयन के लिए मुख्य मातृ शैल मानी जाती हैं। पश्चिमी राजस्थान में विस्तृत मारवाड़ सुपरग्रुप में मुख्य रूप से चूना पत्थर, बलुआ पत्थर और जिप्सम के विशाल अवसादी निक्षेप पाए जाते हैं। राज्य के दक्षिणी भाग में स्थित दक्कन ट्रैप में बेसाल्टिक लावा का फैलाव है, यहाँ बिटुमिनस कोयले का कोई निक्षेप नहीं विद्यमान है।

4. (C) P-3, Q-4, R-1, S-2
राजस्थान में लौह अयस्क के प्रमुख निक्षेप उत्तर-पूर्वी तथा दक्षिणी जिलों में केंद्रित हैं। जयपुर जिले में स्थित मोरीजा-बानोल क्षेत्र राज्य का सबसे बड़ा लौह अयस्क उत्पादक क्षेत्र है। उदयपुर जिले के नाथरा की पाल तथा थूर-हुंडर क्षेत्रों में हेमेटाइट श्रेणी का लौह अयस्क मिलता है। दौसा जिले में नीमला-रायसेला खनन क्षेत्र स्थित है। इसके साथ ही झुंझुनूं जिले में स्थित डाबला-सिंघाना क्षेत्र भी लौह अयस्क के महत्वपूर्ण उत्पादन केंद्रों में शामिल है।

5. (C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
झुंझुनूं जिले में स्थित खेतड़ी तांबा पट्टी राजस्थान की सबसे प्रमुख और ऐतिहासिक तांबा उत्पादक बेल्ट है। प्राचीन काल से ही यहाँ तांबे का उत्खनन और निष्कर्षण किया जाता रहा है। इस क्षेत्र में चालकोपाइराइट अयस्क के रूप में तांबे के विशाल भंडार विद्यमान हैं। बॉक्साइट मुख्य रूप से एल्युमीनियम का अयस्क होता है, जिसका तांबा निष्कर्षण से कोई सीधा संबंध नहीं है। अतः खेतड़ी पट्टी बॉक्साइट के लिए नहीं बल्कि तांबा अयस्क के लिए प्रसिद्ध है।

6. (D) अलवर
राजस्थान में तांबा अयस्क के निक्षेप विभिन्न अरावली पर्वत श्रृंखलाओं में पाए जाते हैं। खो-दरीबा क्षेत्र अलवर जिले में स्थित एक अत्यंत प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण तांबा खनन स्थल है। यह क्षेत्र दिल्ली सुपरग्रुप की शैल संरचनाओं के अंतर्गत आता है। यहाँ चालकोपाइराइट और पाइराइट खनिजों के रूप में तांबे के भंडार पाए जाते हैं। अलवर का खो-दरीबा क्षेत्र खेतड़ी के बाद राज्य के प्रमुख तांबा उत्पादक क्षेत्रों में अपना विशेष स्थान रखता है।

7. (B) हिंदुस्तान कॉपर लिमिटेड
राजस्थान की खेतड़ी-सिंघाना पट्टी में तांबा अयस्क के खनन, निष्कर्षण और शोधन के लिए हिंदुस्तान कॉपर लिमिटेड की स्थापना की गई थी। यह भारत सरकार का एक केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र का उपक्रम है। इसकी स्थापना वर्ष 1967 में की गई थी, जिसका मुख्यालय कोलकाता में है। यह उपक्रम खेतड़ी कॉपर कॉम्प्लेक्स का संचालन करता है, जहाँ आधुनिक तकनीकों द्वारा तांबा अयस्क का प्रगलन किया जाता है। इससे देश में तांबा आपूर्ति को सुदृढ़ आधार मिला है।

8. (C) भीलवाड़ा
भीलवाड़ा जिला राजस्थान के प्रमुख खनिज समृद्ध क्षेत्रों में शामिल है। इस जिले में स्थित 'पुर-दरीबा' क्षेत्र तांबा तथा सीसा-जस्ता के निक्षेपों के लिए प्रसिद्ध है। यह क्षेत्र भीलवाड़ा सुपरग्रुप की कायांतरित शैलों के अंतर्गत आता है। यहाँ तांबे के साथ-साथ अन्य बहुमूल्य धातुएँ भी सह-अस्तित्व में पाई जाती हैं। पुर-दरीबा बेल्ट में उत्खनन गतिविधियों के माध्यम से स्थानीय उद्योगों को कच्चे माल की आपूर्ति होती है, जिससे क्षेत्रीय विकास को बढ़ावा मिला है।

9. (D) जस्ता-सीसा
भीलवाड़ा जिले में स्थित रामपुरा-आगुचा खदान को विश्व के सबसे समृद्ध और बड़े सीसा-जस्ता निक्षेपों में गिना जाता है। इस स्थान पर अत्यधिक उच्च श्रेणी का जस्ता और सीसा अयस्क पाया जाता है। यहाँ ओपन-कास्ट तथा भूमिगत दोनों विधियों से व्यापक स्तर पर खनन कार्य किया जाता है। हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड द्वारा संचालित यह खदान अत्याधुनिक तकनीक से युक्त है और देश के कुल जस्ता उत्पादन में अत्यधिक महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करती है।

10. (A) उदयपुर
उदयपुर जिले में स्थित जावर का प्राचीन खनन क्षेत्र सीसा, जस्ता और चांदी के उत्पादन के लिए विश्वविख्यात है। यहाँ

Click Here to Buy book on Flipkart

(D) लोहा और इस्पात

68. झामरकोटड़ा में उत्खनित रॉक फॉस्फेट राज्य में स्थित किस प्रमुख औद्योगिक संयंत्र के लिए महत्वपूर्ण कच्चा माल प्रदान करता है?
(A) हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड स्मेल्टिंग कॉम्प्लेक्स (चंदेरिया)
(B) राजस्थान स्टेट केमिकल वर्क्स प्लांट (डीडवाना)
(C) चंबल फर्टिलाइजर्स एंड केमिकल्स
(D) श्री सीमेंट लिमिटेड इंडस्ट्रियल कॉम्प्लेक्स (ब्यावर)

69. अजमेर-जयपुर पट्टी में फेल्डस्पार और उच्च-शुद्धता वाले क्वार्ट्ज का खनन किस उद्योग के लिए प्राथमिक कच्चे माल के आधार के रूप में कार्य करता है?
(A) सिरेमिक और कांच
(B) सिंथेटिक कपड़ा निर्माण
(C) कागज और लुगदी प्रसंस्करण
(D) पेट्रोकेमिकल रिफाइनिंग

70. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A) : राजस्थान में अत्यधिक विकसित और निर्यात-उन्मुख पत्थर प्रसंस्करण उद्योग है।
कारण (R) : राज्य में विभिन्न प्रकार के आयामी और सजावटी पत्थरों जैसे संगमरमर, ग्रेनाइट, बलुआ पत्थर और स्लेट प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं।
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

71. राजस्थान में खनन और उत्खनन क्षेत्र राज्य की अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है, जिसका मुख्य कारण है:
(A) यह सभी क्षेत्रों में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की उच्चतम मात्रा उत्पन्न करता है
(B) यह बड़ी संख्या में अकुशल और अर्ध-कुशल ग्रामीण श्रमिकों को रोजगार देता है
(C) यह कृषि रोजगार की आवश्यकता को पूरी तरह से समाप्त कर देता है
(D) यह विशेष रूप से अत्यधिक स्वचालित, पूंजी-गहन संचालन पर ध्यान केंद्रित करता है

72. राजस्थान के खनन परिदृश्य के भीतर, कौन-सा विशिष्ट उप-क्षेत्र सबसे अधिक विखंडित, व्यापक और श्रम-गहन होने के लिए जाना जाता है?
(A) बड़े पैमाने पर भूमिगत आधार धातु खनन संचालन
(B) पूरी तरह से मशीनीकृत ओपन-कास्ट लिग्नाइट खनन परियोजनाएं
(C) अप्रधान खनिजों का उत्खनन
(D) गहरी खदानों वाली कीमती धातु अन्वेषण गतिविधियां

73. स्थानीय रोजगार उत्पन्न करने और इस क्षेत्र को औपचारिक बनाने के लिए, राज्य सरकार समय-समय पर 'खातेदारों' को उनकी अपनी कृषि भूमि पर निष्कर्षण के लिए विशिष्ट उत्खनन लाइसेंस आवंटित करती है:
(A) तांबा, सीसा और जस्ता जैसी आधार धातुएं
(B) रणनीतिक दुर्लभ मृदा तत्व और खनिज
(C) उच्च मूल्य के कीमती रत्न और क्रिस्टल
(D) भवन निर्माण पत्थर और साधारण मिट्टी

74. राजस्थान में लागू सतत खनन के सिद्धांतों के अनुसार, कार्य शुरु करने से पहले खनन पट्टाधारक के लिए अनिवार्य आवश्यकता क्या है?
(A) एक स्वीकृत खदान बंद करने की योजना
(B) एक समर्पित कर-मुक्त निर्यात क्षेत्र स्थापित करना
(C) साइट पर कैप्टिव थर्मल पावर प्लांट का निर्माण करना
(D) पूरी तरह से स्वचालित और रोबोटिक कार्यबल तैनात करना

75. राजस्थान खनिज नीति के तहत प्रोत्साहित 'बैकफिलिंग' की प्रथा पर्यावरण शमन रणनीति है जिसे डिजाइन किया गया है:
(A) निकाले गए खनिजों की शुद्धता बढ़ाने के लिए
(B) समाप्त हो चुके ओपन-कास्ट खनन गड्ढों का पुनरुद्धार और पुनर्ग्रहण करने के लिए
(C) खतरनाक रासायनिक अपशिष्टों को भूजल में निपटाने के लिए
(D) राज्य को दिए जाने वाले रॉयल्टी भुगतान को कम करने के लिए

76. राजस्थान में अनियंत्रित खनन के पर्यावरणीय प्रभावों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह प्राकृतिक जल निकासी प्रणालियों और नदी घाटियों के गंभीर क्षरण का कारण बनता है।
II. यह अरावली में मृदा अपरदन और हरित आवरण के नुकसान को तेज करता है।
III. यह भूजल पुनर्भरण दर में उल्लेखनीय वृद्धि करता है।
IV. यह हानिकारक निलंबित कणकीय पदार्थ उत्पन्न करता है, जिससे स्थानीय वायु गुणवत्ता खराब होती है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल I, II और IV
(C) केवल II, III और IV
(D) केवल I, III और IV

77. राजस्थान मूल्य वर्धित खनिज उत्पादों की किस विशिष्ट श्रेणी के निर्यात के लिए वैश्विक मानचित्र पर एक प्रमुख स्थान रखता है?
(A) आयामी पत्थर
(B) उच्च श्रेणी प्रसंस्कृत परमाणु यूरेनियम ईंधन
(C) परिष्कृत और अपरिष्कृत कच्चा पेट्रोलियम तेल
(D) उच्च घनत्व वाले कच्चे लौह अयस्क छर्रे और सिंटर्स

Downloaded from www.pdf.tube

संगमरमर और रॉक फॉस्फेट जैसे बहुमूल्य संसाधन शामिल हैं। इस खनिज विविधता के साथ-साथ यहाँ कटाई, प्रगलन और शोधन जैसी अत्याधुनिक प्रसंस्करण सुविधाओं का व्यापक बुनियादी ढांचा विकसित हुआ है। यह अनुकूल परिस्थितिकी तंत्र औद्योगिक निवेश को आकर्षित करने और मूल्यवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

42. (A) अजबगढ़ समूह
झुंझुनूं-खेतड़ी तांबा पट्टी राजस्थान की एक प्रमुख भूगर्भीय संरचना है। इस बेल्ट में प्राथमिक तांबा खनिजीकरण मुख्य रुप से दिल्ली सुपरग्रुप के अंतर्गत आने वाले 'अजबगढ़ समूह' की शैलों में पाया जाता है। इस समूह की एम्फीबोलाइट, शिस्ट और क्वार्टजाइट शैलों में चालकोपाइराइट खनिज के रूप में तांबा संचित है। यह भूगर्भीय विशेषता खेतड़ी क्षेत्र को तांबे के विशाल संचयन हेतु अत्यंत अनुकूल बनाती है, जहाँ लंबे समय से उत्खनन जारी है।

43. (B) सल्फ्यूरिक एसिड
खेतड़ी पट्टी से निकाले जाने वाले तांबा अयस्क मुख्य रुप से सल्फाइड श्रेणी (जैसे चालकोपाइराइट) के होते हैं। प्रगलन (स्मेल्टिंग) की प्रक्रिया के दौरान अयस्क से सल्फर डाइऑक्साइड गैस निकलती है। इस गैस को प्रग्रहण करके औद्योगिक रूप से महत्वपूर्ण उप-उत्पाद सल्फ्यूरिक एसिड (गंधक का अम्ल) तैयार किया जाता है। इस सल्फ्यूरिक एसिड का उपयोग रासायनिक उर्वरकों के निर्माण तथा अन्य औद्योगिक प्रक्रियाओं में व्यापक स्तर पर किया जाता है, जिससे आर्थिक लाभ होता है।

44. (B) रघुनाथगढ़
खेतड़ी तांबा पट्टी अरावली पर्वतमाला के साथ उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम दिशा में फैली हुई है। झुंझुनूं जिले में स्थित सिंघाना कस्बा इस प्रसिद्ध तांबा पट्टी की उत्तरी सीमा को चिह्नित करता है। वहीं दूसरी ओर, सीकर जिले में स्थित 'रघुनाथगढ़' क्षेत्र इस तांबा पट्टी के दक्षिणी विस्तार की भौगोलिक सीमा को निर्धारित करता है। यह पूरी पट्टी कायांतरित शैलों से निर्मित है और भारत की सबसे महत्वपूर्ण तांबा उत्पादक बेल्टों में शामिल है।

45. (B) केवल I, II और IV
राजस्थान खनिज नीति 2015 का मुख्य उद्देश्य सतत, वैज्ञानिक और पारदर्शी खनिज विकास को बढ़ावा देना है। यह नीति शून्य-अपशिष्ट खनन, आधुनिक तकनीकों को अपनाने और अन्वेषण के लिए एक व्यवस्थित ढांचा तैयार करने पर बल देती है। इसके अलावा, यह निजी निवेश को आकर्षित करने हेतु प्रक्रियाओं के सरलीकरण का समर्थन करती है। यह नीति आयामी पत्थरों के निर्यात पर प्रतिबंध नहीं लगाती, बल्कि मूल्यवर्धित उत्पादों के निर्यात को प्रोत्साहित करती है।

46. (C) 2020
प्राकृतिक नदी बजरी और रेत के अत्यधिक उत्खनन से नदी घाटियों में उत्पन्न गंभीर पारिस्थितिक संकट से निपटने के लिए राजस्थान सरकार ने एक महत्वपूर्ण कदम उठाया। राज्य सरकार ने वर्ष 2020 में निर्मित रेत हेतु एक समर्पित 'एम-सैंड (Manufactured Sand) नीति' जारी की। इस नीति का उद्देश्य निर्माण कार्यों के लिए नदी की रेत के एक टिकाऊ, पर्यावरण-अनुकूल और सस्ते विकल्प के रूप में क्रशर-आधारित निर्मित रेत के उपयोग को बढ़ावा देना है।

47. (D) राजस्थान अप्रधान खनिज रियायत नियम, 2017
राजस्थान में अप्रधान खनिजों (जैसे संगमरमर, बलुआ पत्थर, ग्रेनाइट और बजरी) के उत्खनन, आवंटन और वि नियमन हेतु राज्य सरकार द्वारा विशिष्ट नियम बनाए गए हैं। वर्तमान में राज्य में अप्रधान खनिज रियायतों की स्वीकृति और नियमन 'राजस्थान अप्रधान खनिज रियायत नियम, 2017' (RMMCR 2017) के तहत संचालित होता है। ये नियम नीलामी प्रक्रिया में पारदर्शिता लाने, अवैध खनन रोकने तथा राजस्व संग्रहण को सुव्यवस्थित करने के लिए लागू किए गए हैं।

48. (C) खान एवं भूविज्ञान विभाग
राजस्थान में खनिजों के व्यवस्थित भूगर्भीय अन्वेषण, सर्वेक्षण, पट्टा आवंटन और खनिज राजस्व संग्रहण के लिए 'खान एवं भूविज्ञान विभाग' प्राथमिक नोडल प्रशासनिक विभाग है। इस विभाग का मुख्यालय उदयपुर में स्थित है। यह विभाग राज्य में मुख्य और अप्रधान खनिजों के सतत उत्खनन को नियंत्रित करता है तथा अवैध खनन गतिविधियों पर अंकुश लगाने हेतु नीतियां लागू करता है। यह राज्य के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

49. (B) संगमरमर
भारत के खनन विनियामक ढांचे में खनिजों को मुख्य और अप्रधान श्रेणियों में विभाजित किया जाता है। केंद्र सरकार द्वारा संगमरमर, बलुआ पत्थर, ग्रेनाइट और निर्माण पत्थरों को अप्रधान खनिज के रूप में वर्गीकृत किया गया है। अप्रधान खनिजों के नियमन, रॉयल्टी निर्धारण और आवंटन का पूर्ण अधिकार राज्य सरकार के पास होता है। इसके विपरीत रॉक फॉस्फेट, लिग्नाइट और तांबा अयस्क जैसे खनिज केंद्रीय अधिनियम के तहत मुख्य खनिजों में आते हैं।

50. (D) मुक्त क्रिस्टलीय सिलिका धूल का लंबे समय तक सांस के माध्यम से शरीर में जाना
सिलिकोसिस एक जानलेवा और असाध्य फेफड़ों की बीमारी है, जो राजस्थान में बलुआ पत्थर खदानों और स्टोन क्रशरों में कार्यरत श्रमिकों को प्रभावित करती है। इसका प्राथमिक कारण पत्थरों की कटाई और पीसने के दौरान उत्पन्न होने वाली मुक्त क्रिस्टलीय सिलिका की सूक्ष्म धूल कणों का सांस के माध्यम से फेफड़ों में जमना है। यह धूल फेफड़ों के ऊतकों को क्षतिग्रस्त कर देती है, जिससे श्वसन संबंधी गंभीर अवरोध उत्पन्न होता है।

51. (A) I, III, IV, II
एक मानक सतत खनन परियोजना जीवनचक्र तर्कसंगत कालानुक्रमिक चरणों से गुजरता है। सर्वप्रथम, क्षेत्र का भूगर्भीय सर्वेक्षण करके खनिजों का 'पूर्वेक्षण एवं अन्वेषण' किया जाता है। भंडार की पुष्टि के बाद 'खनिज निष्कर्षण' का कार्य प्रारंभ

NODIA

(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

89. निम्नलिखित में से कौन-सा उनके ऐतिहासिक महत्व और रॉक फॉस्फेट भंडारों की मात्रा के आधार पर राजस्थान के जिलों का सही अवरोही क्रम दर्शाता है?
(A) उदयपुर > जैसलमेर > बांसवाड़ा
(B) बांसवाड़ा > जैसलमेर > उदयपुर
(C) जैसलमेर > उदयपुर > बांसवाड़ा
(D) उदयपुर > बांसवाड़ा > जैसलमेर

90. राजस्थान में खनन क्षेत्र के सामाजिक-आर्थिक योगदान के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह सीमेंट, कांच और उर्वरक उद्योगों को कच्चा माल प्रदान करके राज्य के औद्योगिक क्षेत्र की रीढ़ की हड्डी बनता है।
II. खनिज निष्कर्षण से प्राप्त रॉयल्टी राज्य के गैर-कर राजस्व में 1% से कम का मामूली योगदान देती है।
III. जिला खनिज फाउंडेशन खनन प्रभावित क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवा और शिक्षा में सुधार के लिए एक महत्वपूर्ण वित्तपोषण तंत्र के रूप में कार्य करता है।
IV. आयामी पत्थर क्षेत्र ने राजस्थान को वैश्विक निर्यात बाजार में प्रमुखता से स्थापित किया है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल I, III और IV
(C) केवल II, III और IV
(D) I, II, III और IV

www.nodia.in

Click Here to Buy book on Amazon

78. राजस्थान में बड़े पैमाने पर प्रगलित और परिष्कृत की जाने वाली कौन-सी अलौह धातु भारत के आधार धातु निर्यात का एक बड़ा हिस्सा बनाती है?
(A) एल्युमीनियम
(B) निकल
(C) जस्ता
(D) टिन

79. राजस्थान के रत्न और आभूषण क्षेत्र की निर्यात क्षमता ऐतिहासिक रूप से किस स्थानीय रंगीन रत्न के खनन और प्रसंस्करण पर आधारित है?
(A) प्राकृतिक रत्न-गुणवत्ता वाले हीरे
(B) गहरे लाल स्टार माणिक
(C) उच्च श्रेणी के नीलम
(D) गार्नेट (तामड़ा) और पन्ना

80. राजस्थान में 'कालागुमान' और 'तीखी' ऐतिहासिक रूप से किस बहुमूल्य पत्थर की खोज और छिटपुट खनन के लिए प्रसिद्ध हैं?
(A) हीरा
(B) नीलम
(C) पन्ना
(D) पुखराज

81. राजस्थान में बहुमूल्य और रणनीतिक धातुओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. बांसवाड़ा जिले के आनंदपुरी-भुकिया क्षेत्र में सोने के प्रमाणित भंडार हैं।
II. राजस्थान में चांदी मुख्य रूप से सीसा-जस्ता प्रगलन के उप-उत्पाद के रूप में प्राप्त होती है।
III. राजस्थान भारत में प्राथमिक स्वर्ण अयस्क का सबसे बड़ा उत्पादक है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

82. 'कपूरड़ी', 'जालीपा' और 'गिरल' बाड़मेर जिले में स्थित महत्वपूर्ण भौगोलिक स्थान हैं जिनका संबंध किसके निष्कर्षण से है?
(A) रॉक फॉस्फेट
(B) चूना पत्थर
(C) जिप्सम
(D) लिग्नाइट कोयला

83. किस रेशेदार खनिज का खनन, जो कभी उदयपुर और डूंगरपुर जिलों में प्रचुर मात्रा में होता था, वर्तमान में इसके गंभीर कैंसरकारी गुणों के कारण पूर्णतः प्रतिबंधित कर दिया गया है?
(A) एस्बेस्टस
(B) वोलैस्टोनाइट
(C) सोपस्टोन
(D) वर्मीक्यूलाइट

NODIA

84. राजस्थान का कौन-सा जिला ऐतिहासिक रूप से अभ्रक खनन के लिए प्रसिद्ध है, जिसके कारण इसे "अभ्रक नगरी" का उपनाम मिला है?
(A) जयपुर
(B) अजमेर
(C) भीलवाड़ा
(D) सीकर

85. निम्नलिखित विशिष्ट खदान स्थलों को उनकी संबंधित आधार धातु/खनिज से सुमेलित कीजिए:
सूची I : (स्थान)
P. कोलिहान
Q. राजपुरा-दरीबा
R. सलादीपुरा
S. लीलावाणी
सूची II : (खनिज)
1. सीसा-जस्ता
2. तांबा
3. मैंगनीज
4. पाइराइट्स
(A) P-2, Q-1, R-4, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-2, Q-1, R-3, S-4
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

86. सीकर जिले का 'सलादीपुरा' क्षेत्र किस खनिज के निक्षेपों के लिए जाना जाता है, जो सल्फ्यूरिक एसिड के उत्पादन में उपयोगी है?
(A) फ्लोराइट
(B) बेराइट
(C) कैल्साइट
(D) पाइराइट

87. बांसवाड़ा जिले के 'लीलावाणी' और 'तलवाड़ा' क्षेत्र निम्नलिखित में से किस अयस्क के मुख्य उत्पादक केंद्र हैं?
(A) उच्च-ग्रेड लौह अयस्क
(B) मैंगनीज
(C) व्यावसायिक तांबा अयस्क
(D) अग्निरोधक बॉक्साइट

88. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A) : राजस्थान में एस्बेस्टस का व्यावसायिक निष्कर्षण काफी हद तक रोक दिया गया है।
कारण (R) : एस्बेस्टस के रेशे स्वास्थ्य के लिए अत्यधिक जोखिम पैदा करते हैं, जो खनिकों में एस्बेस्टोसिस और मेसोथेलियोमा जैसी जानलेवा श्वसन बीमारियों से सीधे जुड़े हुए हैं।
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।

मध्यकालीन युग से ही जस्ता धातु के निष्कर्षण हेतु उन्नत आसवन तकनीक का प्रयोग किया जाता रहा है। पुरातत्वविदों को यहाँ प्राचीन खदानों और मिट्टी के रिटॉर्ट्स के अवशेष मिले हैं। जावर खदानें वर्तमान में भी हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड द्वारा संचालित की जाती हैं और राज्य की अर्थव्यवस्था में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान देती हैं।

11. (A) III, II, IV, I
राजस्थान में सीसा-जस्ता की पट्टियाँ उत्तर से दक्षिण की ओर अरावली श्रेणी के समानांतर विस्तृत हैं। सवाई माधोपुर जिले में स्थित चौथ का बरवाड़ा सबसे उत्तर में स्थित है। इसके दक्षिण में भीलवाड़ा जिले का रामपुरा-आगुचा क्षेत्र आता है। और अधिक दक्षिण की ओर बढ़ने पर राजसमंद जिले का राजपुरा-दरीबा निक्षेप स्थित है। अंततः सबसे दक्षिण में उदयपुर जिले की प्रसिद्ध जावर खदानें स्थित हैं। यह क्रम राज्य के भूगर्भीय मानचित्र को स्पष्ट करता है।

12. (B) गैलेना
सीसा और जस्ता राजस्थान में प्रायः एक साथ मिश्रित अयस्कों के रूप में पाए जाते हैं। सीसा धातु का प्राथमिक निष्कर्षण 'गैलेना' नामक खनिज से किया जाता है, जो सीसा सल्फाइड का मुख्य अयस्क है। गैलेना के साथ चांदी के अंश भी प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। दूसरी ओर स्फेलेराइट जस्ता का अयस्क है और चालकोपाइराइट तांबे का अयस्क है। राजस्थान में गैलेना के प्रमुख भंडार उदयपुर, राजसमंद और भीलवाड़ा जिलों की शैलों में विद्यमान हैं।

13. (A) हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड
राजस्थान में सीसा और जस्ता के खनन तथा प्रगलन के लिए हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड मुख्य वाणिज्यिक संस्था है। पूर्व में यह एक सरकारी उपक्रम था, जिसे बाद में वेदांता समूह द्वारा अधिग्रहित कर लिया गया। इस कंपनी के पास रामपुरा-आगुचा, जावर, राजपुरा-दरीबा और सिंदेसर खुर्द जैसी प्रमुख खदानों के संचालन अधिकार हैं। भारत में जस्ता धातु के कुल उत्पादन में इस संस्था का लगभग एकाधिकार है, जो इसे इस क्षेत्र में अग्रणी बनाता है।

14. (C) राजसमंद
राजसमंद जिले में स्थित सिंदेसर खुर्द भारत की सबसे आधुनिक और अत्यधिक मशीनीकृत भूमिगत खदानों में से एक है। यह खदान सीसा, जस्ता तथा चांदी के समृद्ध निक्षेपों के लिए जानी जाती है। यहाँ अत्याधुनिक स्वचालित उपकरणों और मशीनों द्वारा अत्यंत गहराई से अयस्क का निष्कर्षण किया जाता है। हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड द्वारा संचालित यह इकाई पर्यावरण सुरक्षा और उच्च उत्पादकता के मानकों का पालन करते हुए निरंतर खनन कार्य संपादित करती है।

15. (B) केवल I, II और IV
राजस्थान में मुख्य रूप से हेमेटाइट किस्म का मध्यम से उच्च श्रेणी का लौह अयस्क पाया जाता है। जयपुर जिले में स्थित मोरीजा-बानोल क्षेत्र राज्य का सबसे विशाल लौह अयस्क निक्षेप है। उदयपुर जिले के 'थूर हुंडर' तथा 'नाथरा की पाल' प्रमुख उत्पादक स्थल हैं। राजस्थान के लौह अयस्क भंडार मुख्य रूप से अरावली और दिल्ली सुपरग्रुप की शैलों से संबंधित हैं, न कि धारवाड़ प्रणाली से। अतः संबंधित विवरण राज्य के लौह भंडार को दर्शाते हैं।

16. (C) जयपुर
चौमूं-सामोद क्षेत्र भौगोलिक रूप से राजस्थान के जयपुर जिले में स्थित है। यह क्षेत्र उत्तर-पूर्वी अरावली पहाड़ियों का हिस्सा है और लौह अयस्क के निक्षेपों के लिए जाना जाता है। मोरीजा-बानोल पट्टी के निकट स्थित होने के कारण यहाँ हेमेटाइट प्रकार का अयस्क पाया जाता है। इस क्षेत्र में खनन गतिविधियाँ स्थानीय धातु उद्योगों को कच्चा माल प्रदान करती हैं। जयपुर जिला राज्य में लौह अयस्क के कुल उत्पादन में अग्रणी भूमिका निभाता है।

17. (B) जैसलमेर
राजस्थान में लौह अयस्क के निक्षेप अरावली पर्वतमाला से सटे उत्तर-पूर्वी और दक्षिणी जिलों में संकेंद्रित हैं। जयपुर, दौसा, उदयपुर, झुंझुनूं और सीकर लौह अयस्क के मुख्य उत्पादक जिले हैं। दूसरी ओर, जैसलमेर जिला पश्चिमी थार मरुस्थल में स्थित है और अवसादी शैल संरचनाओं से आच्छादित है। जैसलमेर मुख्य रूप से चूना पत्थर, जिप्सम, प्राकृतिक गैस और खनिज तेल के लिए प्रसिद्ध है, यहाँ लौह अयस्क के महत्वपूर्ण उत्पादन निक्षेप अनुपस्थित हैं।

18. (D) दौसा
नीमला-रायसेला खनन क्षेत्र राजस्थान के दौसा जिले में स्थित एक प्रमुख खनिज स्थल है। यह क्षेत्र उच्च श्रेणी के हेमेटाइट लौह अयस्क निक्षेपों के लिए जाना जाता है। यहाँ की शैलें दिल्ली सुपरग्रुप का हिस्सा हैं, जिनमें लोहे का अंश प्रचुर मात्रा में विद्यमान है। नीमला-रायसेला से निष्कर्षित अयस्क का उपयोग मुख्य रूप से निकटवर्ती औद्योगिक इकाइयों और इस्पात संयंत्रों द्वारा किया जाता है। दौसा जिला राज्य के प्रमुख लौह उत्पादक क्षेत्रों में गिना जाता है।

19. (A) टंगस्टन
नागौर जिले में डेगाना के समीप स्थित 'रेवत पहाड़ी' भारत में टंगस्टन उत्खनन का सबसे ऐतिहासिक और महत्वपूर्ण केंद्र रही है। टंगस्टन एक उच्च गलनांक वाली रणनीतिक धातु है जिसका उपयोग सामरिक और औद्योगिक उपकरणों के निर्माण में होता है। रेवत पहाड़ी पर वुल्फ्रामाइट खनिज के रूप में टंगस्टन के निक्षेप पाए जाते हैं। यद्यपि वर्तमान में यहाँ व्यावसायिक खनन बंद है, परंतु ऐतिहासिक रूप से इसने देश में राष्ट्रीय प्रसिद्धि प्राप्त की थी।

20. (C) वुल्फ्रामाइट
टंगस्टन एक अत्यंत कठोर और उच्च गलनांक वाली धातु है। राजस्थान में टंगस्टन का निष्कर्षण मुख्य रूप से 'वुल्फ्रामाइट' नामक अयस्क खनिज से किया जाता है। वुल्फ्रामाइट लोहा और मैंगनीज का टंगस्टेट खनिज है, जो पेग्माटाइट तथा क्वार्ट्ज शिराओं में पाया जाता है। इसके अतिरिक्त शीलाइट भी टंगस्टन का एक अयस्क है। बॉक्साइट एल्युमीनियम का, पाइरोलुसाइट

Downloaded from www.pdf.tube

(D) भारतीय खान ब्यूरो

57. राजस्थान स्टेट माइन्स एंड मिनरल्स लिमिटेड (RSMML) एक प्रमुख सार्वजनिक क्षेत्र का उद्यम है। इसका पंजीकृत कॉर्पोरेट कार्यालय कहां स्थित है?
(A) जयपुर
(B) जोधपुर
(C) बीकानेर
(D) उदयपुर

58. राजस्थान स्टेट माइन्स एंड मिनरल्स लिमिटेड (RSMML) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसकी स्थापना राज्य में खनिजों के वैज्ञानिक और लागत प्रभावी खनन को प्राप्त करने के लिए की गई थी।
II. झामरकोटड़ा से रॉक फॉस्फेट के खनन और विपणन में इसका लगभग एकाधिकार है।
III. यह विद्युत उत्पादन का समर्थन करने के लिए पश्चिमी राजस्थान में महत्वपूर्ण लिग्नाइट खनन परियोजनाओं का संचालन करता है।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

59. RSMML द्वारा प्रबंधित लिग्नाइट खनन कार्य, विशेष रूप से गिरल में, किस जिले में स्थित हैं?
(A) बीकानेर
(B) बाड़मेर
(C) नागौर
(D) जैसलमेर

60. खनिजों के अवैध खनन और परिवहन को रोकने के लिए, खान एवं भूविज्ञान विभाग (राजस्थान) ने कौन-सा डिजिटल ट्रांजिट पास सिस्टम लागू किया है?
(A) ई-खनिज
(B) ई-रवाना
(C) ई-भूमि
(D) ई-परिवहन

61. ई-ट्रांजिट पास प्रणाली के अलावा, अनधिकृत खनन गतिविधियों की निगरानी के लिए राजस्थान सरकार द्वारा तेजी से किस आधुनिक तकनीकी हस्तक्षेप को तैनात किया जा रहा है?
(A) ड्रोन और सैटेलाइट निगरानी
(B) उच्च-संवेदनशीलता भूमिगत भूकंपीय सेंसर नेटवर्क
(C) दीप ग्राउंड-पेनेट्रेटिंग राडार इमेजिंग सिस्टम
(D) पूरी तरह से स्वचालित रोबोटिक उत्खनन उपकरण

62. राजस्थान में नदियों के पाट में किस विशिष्ट खनिज संसाधन का व्यापक अवैध खनन देखा गया है, जिसके कारण कड़े न्यायिक हस्तक्षेप और एम-सैंड की दिशा में नीतिगत बदलाव हुए हैं?
(A) उच्च-ग्रेड मेसनरी स्टोन
(B) औद्योगिक चाइना क्ले
(C) नदी की बजरी/रेत
(D) संरचनात्मक क्वार्टजाइट

63. भारत में राजस्थान किस खनिज समूह का एकमात्र उत्पादक (100% योगदान) है?
(A) तांबा, सीसा और जस्ता
(B) लिग्नाइट, जिप्सम और रॉक फॉस्फेट
(C) चांदी, सोना और प्लैटिनम
(D) जास्पर, सेलेनाइट और वोलैस्टोनाइट

64. निम्नलिखित खनिजों को भारत के कुल उत्पादन में राजस्थान के संबंधित स्थान से सुमेलित कीजिए:
सूची I : (खनिज)
P. सीसा-जस्ता अयस्क
Q. तांबा अयस्क
R. फॉस्फोराइट (रॉक फॉस्फेट)
S. लौह अयस्क
सूची II : (भारत में स्थान)
1. प्रथम
2. द्वितीय
3. प्रथम
4. गौण/निम्न स्थान
(A) P-1, Q-1, R-2, S-4
(B) P-2, Q-1, R-1, S-4
(C) P-1, Q-2, R-1, S-4
(D) P-2, Q-2, R-4, S-1

NODIA

65. राजस्थान भारत में तांबा अयस्क का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक राज्य है। कौन-सा राज्य प्रथम स्थान पर है?
(A) झारखंड
(B) मध्य प्रदेश
(C) ओडिशा
(D) कर्नाटक

66. राजस्थान बेंटोनाइट, जो एक प्रकार की अवशोषक मिट्टी है, के उत्पादन में अग्रणी स्थान रखता है। राज्य में बेंटोनाइट का प्रमुख उत्पादक कौन-सा जिला है?
(A) बीकानेर
(B) उदयपुर
(C) अजमेर
(D) बाड़मेर

67. उच्च श्रेणी के चूना पत्थर, जिप्सम और विश्वसनीय बिजली की प्रचुर उपलब्धता के कारण चित्तौड़गढ़-निंबाहेड़ा क्षेत्र में किस उद्योग का भारी संकेंद्रण हुआ है?
(A) पोर्टलैंड सीमेंट
(B) कांच और सिरेमिक
(C) रासायनिक उर्वरक

स्वयं संगमरमर का खनन बड़े पैमाने पर नहीं होता, परंतु यह देश का सबसे बड़ा संगमरमर प्रसंस्करण, कटाई, पॉलिशिंग और व्यापारिक केंद्र है। यहाँ राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों के साथ-साथ विदेशों से आयातित संगमरमर के पत्थरों का विपणन किया जाता है। विशाल मार्बल मंडी के कारण किशनगढ़ को यह विशिष्ट पहचान मिली है।

32. (C) रॉक फॉस्फेट
उदयपुर जिले में स्थित झामरकोटड़ा भारत में रॉक फॉस्फेट के सबसे बड़े और समृद्ध दोहन योग्य निक्षेपों के लिए प्रसिद्ध है। रॉक फॉस्फेट एक अत्यंत महत्वपूर्ण गैर-धात्विक खनिज है जो मुख्य रुप से फॉस्फेटिक उर्वरकों के निर्माण के लिए मूलभूत कच्चे माल का काम करता है। राजस्थान राज्य खान एवं खनिज लिमिटेड द्वारा संचालित इस खदान में आधुनिक तकनीक से उत्खनन और संवर्धन किया जाता है। यह स्थल भारत की उर्वरक आत्मनिर्भरता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

33. (A) 1978, 1994, 2011, 2015
राजस्थान सरकार ने राज्य में खनिज संसाधनों के वैज्ञानिक, सतत और व्यवस्थित विकास के लिए समय-समय पर खनिज नीतियां घोषित की हैं। राज्य की प्रथम खनिज नीति वर्ष 1978 में घोषित की गई थी। इसके पश्चात राजस्थान ने क्रमशः वर्ष 1994, 2011 और नवीन 2015 में अपनी व्यापक राज्य खनिज नीतियां लागू कीं। इन नीतियों का मुख्य उद्देश्य निजी निवेश को बढ़ावा देना, रोजगार सृजन करना और पर्यावरण संरक्षण के साथ पारदर्शी खनिज प्रशासन सुनिश्चित करना रहा है।

34. (D) फॉस्फेटिक उर्वरक
झामरकोटड़ा से निष्कर्षित और संवर्धित रॉक फॉस्फेट मुख्य रुप से फॉस्फेटिक उर्वरक उद्योग के लिए अपरिहार्य कच्चा माल प्रदान करता है। इस खनिज का उपयोग सिंगल सुपर फॉस्फेट और डाई-अमोनियम फॉस्फेट जैसे रासायनिक उर्वरकों के उत्पादन में बड़े पैमाने पर किया जाता है। ये उर्वरक कृषि उत्पादकता और मृदा की उर्वरा शक्ति बढ़ाने के लिए आवश्यक हैं। इस प्रकार झामरकोटड़ा का रॉक फॉस्फेट न केवल औद्योगिक बल्कि देश के कृषि क्षेत्र के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

35. (A) रॉक फॉस्फेट
माटोन और कानपुर राजस्थान के उदयपुर जिले में स्थित दो अन्य महत्वपूर्ण खनन स्थल हैं। झामरकोटड़ा की भांति ये दोनों क्षेत्र भी रॉक फॉस्फेट के समृद्ध निक्षेपों से युक्त हैं। इन स्थलों से निकाले गए रॉक फॉस्फेट का उपयोग उर्वरक निर्माण और रासायनिक उद्योगों में किया जाता है। उदयपुर जिला अपने इन विशाल भंडारों के कारण भारत में रॉक फॉस्फेट का सबसे बड़ा उत्पादक केंद्र बना हुआ है, जो राज्य के राजस्व में वृद्धि करता है।

36. (C) तामड़ा (गार्नेट)
राजस्थान का टोंक जिले में स्थित राजमहल क्षेत्र गार्नेट या 'तामड़ा' के उत्पादन के लिए विश्व प्रसिद्ध है। तामड़ा एक मूल्यवान अर्ध-कीमती रत्न है जो अपनी अनूठी लाल रंगत और पारदर्शिता के लिए जाना जाता है। भारत में रत्न-गुणवत्ता वाले तामड़ा के निष्कर्षण और उत्पादन पर राजस्थान का लगभग पूर्ण एकाधिकार है। इस रत्न का व्यापक उपयोग आभूषण निर्माण और रत्न कला में किया जाता है, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था और निर्यात व्यापार को अत्यधिक संबल मिलता है।

37. (A) तामड़ा
राजस्थान की स्थानीय जनभाषा और व्यापारिक शब्दावली में गार्नेट की लाल रंग की रत्न किस्म को 'तामड़ा' या 'रक्तमणि' कहा जाता है। यह खनिज कायांतरित शैलों में उच्च ताप और दाब के प्रभाव से निर्मित होता है। इसका गहरा लाल और पारदर्शी रुप इसे आभूषणों में सजावटी पत्थर के रुप में अत्यंत लोकप्रिय बनाता है। राजस्थान के टोंक, अजमेर और भीलवाड़ा जिलों में तामड़ा के समृद्ध निक्षेप पाए जाते हैं, जिनका व्यावसायिक खनन किया जाता है।

38. (D) अजमेर
राजस्थान भारत में फेल्डस्पार का प्रमुख उत्पादक राज्य है। राज्य के कुल फेल्डस्पार उत्पादन में अकेले अजमेर जिला 90 प्रतिशत से भी अधिक का योगदान देता है। अजमेर क्षेत्र में पेग्माटाइट शैल संरचनाओं की बहुतायत है, जिनमें फेल्डस्पार और क्वार्ट्ज खनिज प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। मदारिया और अजमेर के आसपास के खनन क्षेत्र देश भर के सिरेमिक तथा कांच उद्योगों को फेल्डस्पार की आपूर्ति करने में प्राथमिक और महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

39. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
अजमेर जिला राजस्थान में फेल्डस्पार खनिज का सबसे बड़ा उत्पादक क्षेत्र है। इसका मुख्य भूगर्भीय कारण अजमेर और उसके आसपास के क्षेत्रों में पेग्माटाइट अंतर्भेदन का व्यापक फैलाव है। ये पेग्माटाइट शिराएं फेल्डस्पार तथा क्वार्ट्ज खनिजों से अत्यधिक समृद्ध हैं। इन शिराओं से सुलभ और उच्च शुद्धता वाले फेल्डस्पार का खनन किया जाता है। अतः अजमेर की विशेष भूगर्भीय संरचना ही राज्य में इसके उच्चतम फेल्डस्पार उत्पादन का प्राथमिक कारण बनती है।

40. (C) लिग्नाइट कोयला
उदयपुर-राजसमंद खनिज बेल्ट अरावली पर्वतमाला के अंतर्गत आती है और धात्विक तथा निर्माण खनिजों के लिए प्रसिद्ध है। यह पट्टी संगमरमर, सीसा-जस्ता और रॉक फॉस्फेट के विशाल निक्षेपों के लिए जानी जाती है। इसके विपरीत, लिग्नाइट कोयला एक तरसियरी कालीन जीवाश्म ईंधन है, जिसके भंडार पश्चिमी राजस्थान के बाड़मेर, बीकानेर और नागौर जिलों की अवसादी परतों में स्थित हैं। उदयपुर-राजसमंद क्षेत्र में लिग्नाइट कोयले का व्यावसायिक निष्कर्षण नहीं किया जाता है।

41. (D) स्थापित प्रसंस्करण सुविधाओं के साथ समृद्ध बहु-खनिज आधार
उदयपुर-राजसमंद क्षेत्र राजस्थान में एक प्रमुख खनिज प्रसंस्करण केंद्र के रुप में उभरा है। इसका मुख्य कारण यहाँ विद्यमान समृद्ध बहु-खनिज आधार है, जिसमें सीसा-जस्ता,

Click Here to Buy book on Flipkart

मैंगनीज का और क्रोमाइट क्रोमियम का मुख्य अयस्क होता है, जो टंगस्टन निष्कर्षण से पृथक हैं।

21. (A) सिरोही
राजस्थान में टंगस्टन खनिजीकरण के सीमित लेकिन रणनीतिक भंडार मौजूद हैं। नागौर के डेगाना के अलावा, सिरोही जिले में स्थित 'वाल्दा' तथा 'आबू-रोड' क्षेत्र टंगस्टन के महत्वपूर्ण भंडार के लिए जाने जाते हैं। वाल्दा क्षेत्र में पेग्माटाइट शिराओं के भीतर वुल्फ्रामाइट के निक्षेप पाए गए हैं। सिरोही जिले का यह क्षेत्र देश में टंगस्टन की खोज और अन्वेषण की दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण माना जाता है, जिससे खनिज संसाधनों की वृद्धि होती है।

22. (D) P-3, Q-4, R-2, S-1
राजस्थान के पश्चिमी मरुस्थलीय जिलों में जिप्सम के विशाल निक्षेप फैले हुए हैं। बीकानेर जिले का जामसर क्षेत्र राज्य के सबसे बड़े और प्रसिद्ध जिप्सम उत्पादक केंद्रों में से एक है। नागौर जिले में स्थित गोठ-मांगलोद क्षेत्र जिप्सम खनन के लिए जाना जाता है। जैसलमेर जिले का मोहनगढ़ क्षेत्र और बाड़मेर जिले का कवास क्षेत्र भी जिप्सम के प्रमुख उत्पादक केंद्र हैं। ये सभी स्थल पश्चिमी राजस्थान की अवसादी परतों में स्थित हैं।

23. (B) सेलेनाइट
सेलेनाइट प्राकृतिक रूप से पाया जाने वाला जिप्सम का एक अत्यधिक शुद्ध, पारदर्शी और क्रिस्टलीय रूप है। राजस्थान के पश्चिमी जिलों जैसे बीकानेर, बाड़मेर और नागौर में इसके उत्तम निक्षेप स्थित हैं। सेलेनाइट की उच्च रासायनिक शुद्धता के कारण इसका उपयोग विशेष औद्योगिक अनुप्रयोगों, जैसे रासायनिक उद्योगों और प्लास्टर ऑफ पेरिस के निर्माण में किया जाता है। भारत में सेलेनाइट के कुल उत्पादन पर राजस्थान का लगभग शत-प्रतिशत एकाधिकार स्थापित है।

24. (D) 90-95%
राजस्थान भारत में जिप्सम का सबसे बड़ा उत्पादक राज्य है। देश के कुल जिप्सम उत्पादन का लगभग 90 से 95 प्रतिशत हिस्सा अकेले राजस्थान से ही प्राप्त होता है। यहाँ के नागौर, बीकानेर, बाड़मेर, जैसलमेर और श्रीगंगानगर जिलों में जिप्सम के प्रचुर भंडार अवसादी परतों के रूप में विद्यमान हैं। इस विशाल उत्पादन के कारण राजस्थान देश के उर्वरक और सीमेंट उद्योगों को निरंतर कच्चे माल की पूर्ति करने में अग्रणी भूमिका निभाता है।

25. (D) प्लास्टर ऑफ पेरिस और सीमेंट
जिप्सम एक महत्वपूर्ण गैर-धात्विक औद्योगिक खनिज है। राजस्थान में उत्खनित जिप्सम का सबसे व्यापक उपयोग सीमेंट उद्योग में मंदक के रूप में और प्लास्टर ऑफ पेरिस के निर्माण में होता है। सीमेंट में जिप्सम मिलाने से उसके जमने की समय-अवधि नियंत्रित होती है। इसके अतिरिक्त, जिप्सम का उपयोग क्षारीय मृदा के उपचार हेतु अमोनियम सल्फेट उर्वरक बनाने में तथा निर्माण क्षेत्र में जिप्सम बोर्ड और प्लास्टर बनाने में बहुतायत से किया जाता है।

26. (A) इस्पात (SMS) श्रेणी
जैसलमेर जिले में स्थित 'सोनू' क्षेत्र उच्च गुणवत्ता वाले चूना पत्थर के उत्पादन के लिए पूरे देश में प्रसिद्ध है। यहाँ का चूना पत्थर विशेष रूप से स्टील मेल्टिंग शॉप (SMS) ग्रेड का है, जिसमें सिलिका की मात्रा अत्यंत कम और कैल्शियम कार्बोनेट की मात्रा उच्च होती है। इस उच्च-श्रेणी चूना पत्थर की आपूर्ति भिलाई, राउरकेला और बोकारो जैसे देश के प्रमुख इस्पात संयंत्रों को गालक के रूप में उपयोग करने हेतु की जाती है।

27. (B) चित्तौड़गढ़
चित्तौड़गढ़ जिला राजस्थान में सीमेंट-ग्रेड चूना पत्थर के प्रचुर और उच्च गुणवत्ता वाले भंडारों से समृद्ध है। विंध्यन शैल समूह का हिस्सा होने के कारण यहाँ चूना पत्थर की विशाल परतें पाई जाती हैं। इस अनुकूल भूगर्भीय स्थिति के कारण चित्तौड़गढ़ राज्य में सीमेंट उद्योग का सबसे प्रमुख केंद्र बन गया है। यहाँ कई बड़े राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सीमेंट ब्रांडों के विशाल उत्पादन संयंत्र स्थापित हैं, जो राज्य के औद्योगिक विकास को गति देते हैं।

28. (D) I, II और III
राजस्थान अपनी विविध संगमरमर की किस्मों के लिए प्रसिद्ध है। नागौर जिले का मकराना अपने पारभासी सफेद कैलसिटिक संगमरमर के लिए विश्वविख्यात है। उदयपुर जिला अपने उत्कृष्ट हरे संगमरमर (सर्पेन्टाइन) के निष्कर्षण और प्रसंस्करण का मुख्य केंद्र है। इसके साथ ही जयपुर जिले के भैंसलाना क्षेत्र में काले रंग का संगमरमर पाया जाता है। ये सभी किस्में राज्य की समृद्ध पत्थर शिल्प कौशल और खनिज विविधता को प्रदर्शित करती हैं।

29. (A) दिल्ली सुपरग्रुप
प्रसिद्ध मकराना संगमरमर भूगर्भीय दृष्टि से दिल्ली सुपरग्रुप की कायांतरित शैल संरचनाओं से संबंधित है। यह एक अत्यंत उच्च श्रेणी का कैलसिटिक संगमरमर है, जो अपनी सफेदी, चमक और स्थायित्व के लिए पूरी दुनिया में पहचाना जाता है। ऐतिहासिक रूप से इस मकराना संगमरमर का उपयोग आगरा के प्रसिद्ध ताजमहल और कोलकाता के विक्टोरिया मेमोरियल जैसी कालजयी और भव्य वास्तुकलाकृतियों के निर्माण में मुख्य निर्माण सामग्री के रूप में व्यापक रूप से किया गया था।

NODIA

30. (C) गुलाबी संगमरमर
उदयपुर जिले में स्थित 'बाबरमल' क्षेत्र विशेष रूप से गुलाबी संगमरमर के निष्कर्षण के लिए जाना जाता है। इस क्षेत्र से निकलने वाला गुलाबी संगमरमर अपनी आकर्षक बनावट और सुदृढ़ गुणवत्ता के कारण निर्माण तथा सजावटी कार्यों में अत्यधिक लोकप्रिय है। उदयपुर जिला न केवल हरे संगमरमर बल्कि इस गुलाबी किस्म के उत्पादन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यहाँ उत्पादित पत्थरों का घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में बड़े पैमाने पर व्यापार किया जाता है।

31. (D) किशनगढ़
अजमेर जिले में स्थित किशनगढ़ शहर को व्यावसायिक रूप से "भारत की मार्बल सिटी" के रूप में जाना जाता है। यद्यपि यहाँ

होता है। निष्कर्षित अयस्क की गुणवत्ता सुधारने के लिए उसका 'संवर्धन एवं प्रसंस्करण' किया जाता है। अंत में, खदान की जीवन-अवधि समाप्त होने पर पर्यावरण पुनर्स्थापन हेतु 'खदान बंद करना एवं पारिस्थितिक पुनरुद्धार' किया जाता है।

52. (C) 2019
खनन और पत्थर कटाई उद्योग में कार्यरत श्रमिकों को सिलिकोसिस जैसी असाध्य बीमारियों से राहत प्रदान करने के लिए राजस्थान सरकार ने वर्ष 2019 में एक ऐतिहासिक पहल की। सरकार ने "न्यूमोकोनिओसिस नीति 2019" लागू की, जिसके तहत पीड़ित श्रमिकों के प्रमाणीकरण, वित्तीय सहायता, पुनर्वास और पेंशन की व्यापक व्यवस्था की गई है। राजस्थान ऐसी समर्पित नीति लागू करने वाला देश का पहला राज्य बना, जो खदान श्रमिकों के कल्याण को सुनिश्चित करता है।

53. (A) भूजल स्तर में गंभीर गिरावट और वन आवरण की हानि
अरावली पर्वत श्रृंखला में अवैज्ञानिक और अवैध खनन गतिविधियों के कारण गंभीर पर्यावरण संकट उत्पन्न हुआ है। पर्यावरणविदों और न्यायपालिकाओं द्वारा इसकी तीखी आलोचना की गई है। अनियंत्रित उत्खनन से पहाड़ियों का विनाश हुआ है, जिससे प्राकृतिक जल पुनर्भरण तंत्र बाधित होकर भूजल स्तर में गंभीर गिरावट आई है। इसके साथ ही सघन वन आवरण और जैव विविधता का नुकसान हुआ है, जिससे मरुस्थलीकरण के पूर्व की ओर प्रसार का खतरा बढ़ गया है।

54. (D) गैर-कर राजस्व
राजस्थान में खनिज और पेट्रोलियम निष्कर्षण के लिए पट्टेधारकों से एकत्र की जाने वाली रॉयल्टी, मृत भाटक और लाइसेंस शुल्क राज्य सरकार के वित्त का एक प्रमुख स्रोत हैं। राज्य के बजट और लोक लेखा वर्गीकरण प्रणाली के अंतर्गत इस राजस्व को 'गैर-कर राजस्व' की श्रेणी में रखा जाता है। यह राजस्व राज्य सरकार को अपनी विकास योजनाओं और सार्वजनिक सेवाओं के वित्तपोषण हेतु आवश्यक वित्तीय संसाधन उपलब्ध कराने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

55. (B) खनन प्रभावित क्षेत्रों के कल्याण और विकास के लिए काम करना
जिला खनिज फाउंडेशन (DMFT) एक वैधानिक गैर-लाभकारी ट्रस्ट है, जिसकी स्थापना खनन प्रभावित जिलों में की गई है। खनन पट्टाधारकों द्वारा भुगतान की जाने वाली रॉयल्टी का एक निश्चित हिस्सा इस फंड में जमा होता है। इस ट्रस्ट की निधियों का प्राथमिक उद्देश्य खनन गतिविधियों से प्रभावित क्षेत्रों और स्थानीय समुदायों के सामाजिक-आर्थिक कल्याण, पेयजल आपूर्ति, स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा, पर्यावरण संरक्षण और अवसंरचनात्मक विकास हेतु पारदर्शी रूप से कार्य करना है।

56. (C) एमएमडीआर अधिनियम के तहत केंद्र सरकार
भारत में मुख्य खनिजों (जैसे तांबा, सीसा, जस्ता, रॉक फॉस्फेट और लौह अयस्क) के लिए रॉयल्टी दरों का निर्धारण और संशोधन केंद्र सरकार द्वारा किया जाता है। खान और खनिज (विकास और विनियमन) अधिनियम, 1957 (MMDR Act) के तहत केंद्र सरकार को संपूर्ण देश के लिए समान रॉयल्टी दरें अधिसूचित करने का अधिकार प्राप्त है। यद्यपि रॉयल्टी का संकलन और राजस्व प्राप्त करना संबंधित राज्य सरकार का अधिकार होता है।

57. (D) उदयपुर
राजस्थान स्टेट माइन्स एंड मिनरल्स लिमिटेड (RSMML) राज्य सरकार का एक प्रमुख सार्वजनिक क्षेत्र का उपक्रम है। यह कंपनी राजस्थान में विभिन्न खनिजों के वैज्ञानिक खनन और विपणन का कार्य करती है। इस प्रतिष्ठित संस्थान का पंजीकृत कॉर्पोरेट कार्यालय उदयपुर शहर में स्थित है। उदयपुर से ही RSMML अपने देशव्यापी रॉक फॉस्फेट, लिग्नाइट, जिप्सम और चूना पत्थर खनन कार्यों का रणनीतिक प्रबंधन और प्रशासनिक नियंत्रण कुशलतापूर्वक संचालित करता है।

58. (D) I, II और III
राजस्थान स्टेट माइन्स एंड मिनरल्स लिमिटेड (RSMML) राज्य का एक अग्रणी खनन उपक्रम है। इसकी स्थापना खनिजों के लागत-प्रभावी और वैज्ञानिक दोहन हेतु की गई थी। RSMML का उदयपुर के झामरकोटड़ा से रॉक फॉस्फेट के खनन और आपूर्ति में लगभग एकाधिकार है। इसके अतिरिक्त, यह उपक्रम ताप विद्युत संयंत्रों के लिए बाड़मेर, बीकानेर और नागौर जिलों में लिग्नाइट कोयले की विशाल खनन परियोजनाओं का संचालन करके राज्य की ऊर्जा सुरक्षा में योगदान देता है।

NODIA

59. (B) बाड़मेर
राजस्थान स्टेट माइन्स एंड मिनरल्स लिमिटेड द्वारा संचालित महत्वपूर्ण लिग्नाइट खनन परियोजनाएं बाड़मेर जिले में स्थित हैं। बाड़मेर का 'गिरल' क्षेत्र लिग्नाइट कोयले का एक मुख्य निष्कर्षण केंद्र है, जहाँ पहली बार लिग्नाइट-आधारित तापीय विद्युत संयंत्र स्थापित किया गया था। गिरल के अलावा कपूरड़ी और जालीपा भी बाड़मेर के प्रमुख लिग्नाइट क्षेत्र हैं। इन खदानों से उत्पादित लिग्नाइट का उपयोग राज्य में निर्बाध विद्युत उत्पादन के लिए ईंधन के रूप में किया जाता है।

60. (B) ई-रवाना
राजस्थान के खान एवं भूविज्ञान विभाग ने अवैध खनन और खनिजों के अनधिकृत परिवहन को रोकने के लिए 'ई-रवाना' नामक एक डिजिटल ट्रांजिट पास प्रणाली शुरू की है। इस ऑनलाइन व्यवस्था के माध्यम से खदानों से खनिजों के परिवहन हेतु रसीद और अनुमति पत्र डिजिटल रूप से जारी किए जाते हैं। ई-रवाना प्रणाली से वाहन की आवाजाही पर वास्तविक समय में निगरानी रखी जाती है, जिससे राजस्व चोरी पर रोक लगी है और पारदर्शिता बढ़ी है।

61. (A) ड्रोन और सैटेलाइट निगरानी
अनधिकृत खनन गतिविधियों और पट्टा सीमाओं के अतिक्रमण की सटीक निगरानी के लिए राजस्थान सरकार आधुनिक तकनीकों का प्रयोग कर रही है। राज्य में 'ड्रोन और सैटेलाइट इमेजिंग' जैसी उन्नत तकनीकों को तैनात किया गया है। सैटेलाइट मैपिंग के माध्यम से खनन क्षेत्रों का रिमोट सेंसिंग सर्वेक्षण किया जाता है तथा ड्रोन द्वारा दुर्गम खदानों का उच्च-

82. (D) लिग्नाइट कोयला
कपूरड़ी, जालीपा और गिरल बाड़मेर जिले में स्थित अत्यंत महत्वपूर्ण भौगोलिक एवं खनन स्थल हैं। ये सभी स्थान 'लिग्नाइट कोयला' के विशाल भंडारों के लिए प्रसिद्ध हैं। इन क्षेत्रों में तृतीयक (टर्शियरी) काल की अवसादी शैल परतों में लिग्नाइट पाया जाता है। यहाँ से निष्कर्षित लिग्नाइट का उपयोग बाड़मेर स्थित थर्मल पावर प्लांटों में विद्युत उत्पादन हेतु किया जाता है। ये खदानें पश्चिमी राजस्थान की ऊर्जा आपूर्ति का मुख्य आधार मानी जाती हैं।

83. (A) एस्बेस्टस
एस्बेस्टस एक रेशेदार सिलिकेट खनिज है, जिसका उत्खनन पूर्व में उदयपुर, डूंगरपुर और राजसमंद जिलों में बहुतायत से किया जाता था। परंतु एस्बेस्टस के सूक्ष्म रेशों के सांस के साथ शरीर में जाने से एस्बेस्टोसिस और कैंसर जैसी घातक बीमारियाँ होने का खतरा रहता है। स्वास्थ्य एवं पर्यावरणीय खतरों को ध्यान में रखते हुए केंद्र और राज्य सरकार द्वारा एस्बेस्टस के नए पट्टों के आवंटन और खनन पर पूर्णतः कानूनी प्रतिबंध लगा दिया गया है।

84. (C) भीलवाड़ा
राजस्थान का भीलवाड़ा जिला ऐतिहासिक रूप से अभ्रक (माइका) के प्रचुर उत्खनन और प्रसंस्करण के लिए प्रसिद्ध रहा है। इस समृद्ध खनिज आधार के कारण ही भीलवाड़ा को राज्य की "अभ्रक नगरी" (Mica City) का उपनाम प्राप्त हुआ। यहाँ पेग्माटाइट शैलों से रूबी अभ्रक का निष्कर्षण किया जाता था। इसके अतिरिक्त, भीलवाड़ा में अभ्रक की ईंटें बनाने के उद्योग भी स्थापित हुए, जो विद्युत कुचालक सामग्री के रूप में उपयोग की जाती हैं।

85. (A) P-2, Q-1, R-4, S-3
राजस्थान के विभिन्न खनन स्थल विशिष्ट खनिजों से जुड़े हैं। झुंझुनूं जिले का कोलिहान क्षेत्र तांबा उत्पादन का प्रमुख केंद्र है। राजसमंद जिले का राजपुरा-दरीबा सीसा-जस्ता निक्षेपों के लिए प्रसिद्ध है। सीकर जिले का सलादीपुरा क्षेत्र पाइराइट्स खनिज का मुख्य स्थल है। इसके साथ ही, बांसवाड़ा जिले में स्थित लीलावाणी क्षेत्र मैंगनीज अयस्क के उत्खनन के लिए जाना जाता है। ये सभी स्थल राज्य की खनिज विविधता को दर्शाते हैं।

86. (D) पाइराइट
सीकर जिले में स्थित 'सलादीपुरा' क्षेत्र राजस्थान में 'पाइराइट' (आयरन पाइराइड) खनिज के विशाल निक्षेपों के लिए जाना जाता है। पाइराइट मुख्य रूप से सल्फर का अयस्क है, जिसका उपयोग औद्योगिक स्तर पर सल्फ्यूरिक एसिड और रासायनिक उर्वरकों के उत्पादन में किया जाता है। यद्यपि वर्तमान में यहाँ व्यावसायिक परिचालन सीमित है, परंतु सलादीपुरा भारत में पाइराइट्स के सबसे महत्वपूर्ण भूगर्भीय संचयन केंद्रों में से एक माना जाता है।

87. (B) मैंगनीज
बांसवाड़ा जिले में स्थित 'लीलावाणी', 'तलवाड़ा' और 'कांसला' क्षेत्र राजस्थान में मैंगनीज अयस्क के मुख्य उत्पादक केंद्र हैं। यहाँ मैंगनीज के पाइरोलुसाइट और साइलोमेलेन खनिज अवसादी और कायांतरित शैलों में पाए जाते हैं। मैंगनीज एक अनिवार्य लौह-मिश्र धातु घटक है, जिसका प्राथमिक उपयोग इस्पात निर्माण और शुष्क बैटरी उद्योगों में किया जाता है। दक्षिणी राजस्थान का यह क्षेत्र राज्य में मैंगनीज उत्पादन का मुख्य प्रतिनिधित्व करता है।

88. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
राजस्थान में एस्बेस्टस का व्यावसायिक उत्खनन काफी हद तक रोक दिया गया है। इसका मुख्य कारण यह है कि एस्बेस्टस के सूक्ष्म रेशे खदान श्रमिकों और आसपास रहने वाले लोगों के लिए अत्यधिक गंभीर स्वास्थ्य जोखिम पैदा करते हैं। सांस के माध्यम से शरीर में जाने पर ये रेशे एस्बेस्टोसिस, फेफड़ों के नुकसान और मेसोथेलियोमा जैसे जानलेवा कैंसर का कारण बनते हैं। अतः मानव स्वास्थ्य और जीवन की सुरक्षा हेतु इस पर प्रतिबंध लागू किया गया है।

89. (A) उदयपुर > जैसलमेर > बांसवाड़ा
राजस्थान में रॉक फॉस्फेट के भंडारों की मात्रा और ऐतिहासिक खनन महत्व के आधार पर जिलों का सही अवरोही क्रम 'उदयपुर > जैसलमेर > बांसवाड़ा' है। उदयपुर जिला झामरकोटड़ा, माटोन और कानपुर खदानों के साथ राज्य में रॉक फॉस्फेट का सबसे बड़ा और प्राथमिक उत्पादक है। जैसलमेर जिले के लाठी फॉर्मेशन में द्वितीय सबसे बड़े निक्षेप स्थित हैं, जबकि बांसवाड़ा जिला इसके बाद तीसरे स्थान पर आता है। यह क्रम राज्य की भंडार स्थिति दर्शाता है।

90. (B) केवल I, III और IV
राजस्थान का खनन क्षेत्र राज्य की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार है। यह सीमेंट, कांच और उर्वरक उद्योगों को कच्चा माल देता है तथा आयामी पत्थरों के निर्यात से वैश्विक पहचान प्रदान करता है। जिला खनिज फाउंडेशन (DMFT) खनन प्रभावित क्षेत्रों में स्वास्थ्य और शिक्षा सुधार हेतु धन उपलब्ध कराता है। हालांकि, खनिजों से प्राप्त रॉयल्टी राज्य के गैर-कर राजस्व में 1% से कहीं अधिक महत्वपूर्ण योगदान देती है, न कि मामूली।

www.nodia.in

Downloaded from www.pdf.tube

आजीविका का एक सतत और मुख्य जरिया बनकर ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी उन्मूलन और आर्थिक स्थिरता में योगदान देती हैं।

72. (C) अप्रधान खनिजों का उत्खनन
राजस्थान के खनिज परिदृश्य में 'अप्रधान खनिजों का उत्खनन' (जैसे बलुआ पत्थर, मैसोनरी स्टोन, बजरी और ईंट मिट्टी) सबसे अधिक विखंडित, व्यापक और श्रम-गहन उप-क्षेत्र है। मुख्य खनिजों की तुलना में अप्रधान खनिजों की खदानें छोटी, बिखरी हुई और असंगठित होती हैं। इन इकाइयों में आधुनिक स्वचालन की तुलना में मानवीय श्रम का प्रयोग अत्यधिक होता है, जिससे लाखों स्थानीय खदान श्रमिकों और कारीगरों को प्रत्यक्ष आजीविका और स्वरोजगार प्राप्त होता है।

73. (D) भवन निर्माण पत्थर और साधारण मिट्टी
राजस्थान में स्थानीय रोजगार बढ़ाने और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को औपचारिक रूप देने हेतु राज्य सरकार 'खातेदारों' (भूमि स्वामी किसानों) को उनकी स्वयं की कृषि भूमि पर उत्खनन लाइसेंस आवंटित करती है। यह लाइसेंस केवल अप्रधान निर्माण सामग्री जैसे भवन निर्माण पत्थर, मुरम और साधारण मिट्टी के निष्कर्षण के लिए दिया जाता है। इस नीति से किसानों को अतिरिक्त आय का स्रोत मिलता है और निर्माण क्षेत्र को स्थानीय स्तर पर कच्चा माल सुलभता से उपलब्ध होता है।

74. (A) एक स्वीकृत खदान बंद करने की योजना
राजस्थान में सतत और पर्यावरण-अनुकूल खनन के सिद्धांतों के तहत कड़े नियम लागू किए गए हैं। खनन गतिविधि शुरू करने से पहले प्रत्येक पट्टाधारक के लिए 'एक स्वीकृत खदान बंद करने की योजना' (Mine Closure Plan) जमा करना एक अनिवार्य वैधानिक शर्त है। इस योजना में उत्खनन समाप्त होने के बाद खदान गड्ढों के पुनरुद्धार, बैकफिलिंग, वृक्षारोपण और भूमि को पुनः सुरक्षित बनाने का स्पष्ट खाका शामिल होता है, जिससे पारिस्थितिक संतुलन बना रहे।

75. (B) समाप्त हो चुके ओपन-कास्ट खनन गड्ढों का पुनरुद्धार और पुनर्ग्रहण करने के लिए
राजस्थान की खनिज नीति के तहत प्रोत्साहित 'बैकफिलिंग' की तकनीक एक महत्वपूर्ण पर्यावरण शमन रणनीति है। इस प्रक्रिया का मुख्य उद्देश्य समाप्त हो चुके ओपन-कास्ट खनन गड्ढों को ओवरबर्डन, मलबे और अपशिष्ट मिट्टी से भरकर भूमि का पुनरुद्धार और पुनर्ग्रहण करना है। बैकफिलिंग से खदान गड्ढों के कारण होने वाली दुर्घटनाओं पर रोक लगती है, भूमि की समतलता पुनः प्राप्त होती है तथा उस पर पुनः वृक्षारोपण या कृषि गतिविधियाँ शुरू करना संभव हो पाता है।

76. (B) केवल I, II और IV
राजस्थान में अनियंत्रित खनन गतिविधियों के कई दुष्प्रभाव सामने आए हैं। यह प्राकृतिक जल निकासी प्रणालियों को क्षतिग्रस्त करता है तथा अरावली पहाड़ियों में मृदा अपरदन और हरित आवरण के नुकसान को बढ़ाता है। इसके साथ ही उत्खनन और परिवहन से उत्पन्न सूक्ष्म धूल कण वायु गुणवत्ता को अत्यधिक खराब करते हैं। इसके विपरीत, अनियंत्रित खनन से भूजल पुनर्भरण नहीं बढ़ता बल्कि जल भराव तंत्र बाधित होने से भूजल स्तर में भारी गिरावट आती है।

77. (A) आयामी पत्थर
राजस्थान मूल्य वर्धित 'आयामी पत्थरों' (Dimensional Stones) के निर्यात के लिए वैश्विक व्यापार मानचित्र पर एक विशिष्ट स्थान रखता है। राज्य से संगमरमर, ग्रेनाइट, बलुआ पत्थर, स्लेट और कोटा स्टोन जैसे उच्च गुणवत्ता वाले प्रसंस्कृत पत्थरों का निर्यात उत्तरी अमेरिका, यूरोप, मध्य पूर्व और एशिया के विभिन्न देशों को व्यापक पैमाने पर किया जाता है। यह निर्यात क्षेत्र राज्य के लिए बहुमूल्य विदेशी मुद्रा अर्जित करने और व्यापारिक छवि को मजबूत करने में योगदान देता है।

78. (C) जस्ता
राजस्थान में व्यापक स्तर पर खनन और प्रगलित की जाने वाली अलौह धातु 'जस्ता' (जिंक) भारत के आधार धातु निर्यात का एक बड़ा हिस्सा बनाती है। चंदेरिया और देबारी में स्थित आधुनिक प्रगलन परिसरों के माध्यम से उच्च शुद्धता वाली जस्ता सिल्लियों का निर्माण किया जाता है। भारत जस्ता धातु में पूरी तरह से आत्मनिर्भर है और राजस्थान में उत्पादित अतिरिक्त जस्ता का निर्यात विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय बाजारों को किया जाता है, जिससे राज्य का व्यापार सुदृढ़ होता है।

79. (D) गार्नेट (तामड़ा) और पन्ना
जयपुर और राजस्थान के रत्न तथा आभूषण उद्योग की वैश्विक ख्याति ऐतिहासिक रूप से स्थानीय रंगीन रत्नों के निष्कर्षण पर आधारित रही है। इसमें विशेष रूप से गार्नेट (तामड़ा) और पन्ना (एमराल्ड) शामिल हैं। टोंक और अजमेर की खदानों से मिलने वाला गार्नेट तथा राजसमंद की पन्ना बेल्ट ने स्थानीय कारीगरों को कटाई और पॉलिशिंग का समृद्ध आधार दिया। इसके फलस्वरूप राजस्थान आज रंगीन रत्नों के अंतर्राष्ट्रीय प्रसंस्करण और निर्यात का एक प्रमुख वैश्विक केंद्र बना हुआ है।

80. (C) पन्ना
राजस्थान में 'कालागुमान' (राजसमंद) और 'तीखी' (अजमेर) क्षेत्र ऐतिहासिक रूप से 'पन्ना' (एमराल्ड) की खोज और खनन के लिए प्रसिद्ध रहे हैं। इस पट्टी को 'ग्रीन बेल्ट' के नाम से भी जाना जाता है। यहाँ कायांतरित शैलों की पेग्माटाइट शिराओं में उच्च गुणवत्ता वाले हरे रंग के पन्ना के निक्षेप पाए गए थे। यद्यपि वर्तमान में यहाँ बड़े पैमाने पर खनन स्थगित है, परंतु ऐतिहासिक रूप से इन स्थलों ने राज्य को विश्व रत्न मानचित्र पर पहचान दिलाई।

81. (A) केवल I और II
बांसवाड़ा जिले का आनंदपुरी-भुकिया क्षेत्र राजस्थान में सोने के प्रमाणित निक्षेपों के लिए जाना जाता है। इसके अतिरिक्त, राज्य में चांदी का कोई स्वतंत्र प्राथमिक खनन नहीं होता बल्कि यह सीसा-जस्ता अयस्क के प्रगलन के उप-उत्पाद के रूप में प्राप्त होती है। हालांकि, कर्नाटक प्राथमिक स्वर्ण अयस्क का सबसे बड़ा उत्पादक है, राजस्थान नहीं। अतः राजस्थान में बहुमूल्य धातुओं के संदर्भ में स्वीकृत तथ्य राज्य के वास्तविक खनिज परिदृश्य को दर्शाते हैं।

NODIA

(A) एनर्जी मानकीकरण रणनीति (Energy Standardization Strategy)
(B) एनर्जी स्टोरेज सिस्टम्स (Energy Storage Systems)
(C) इकोलॉजिकल सोलर सिस्टम (Ecological Solar System)
(D) इलेक्ट्रिकल सप्लाई सिंक्रोनाइज़ेशन (Electrical Supply Synchronization)

50. राज्य को स्वच्छ ईंधन के उत्पादक के रूप में स्थापित करने के लिए राजस्थान ग्रीन हाइड्रोजन नीति 2023 प्रारंभ की गई थी। इस नीति का लक्ष्य वर्ष 2030 तक ग्रीन हाइड्रोजन के किस विशिष्ट उत्पादन लक्ष्य को प्राप्त करना है?
(A) 500 किलोटन प्रति वर्ष (KTPA)
(B) 1000 किलोटन प्रति वर्ष (KTPA)
(C) 2000 किलोटन प्रति वर्ष (KTPA)
(D) 5000 किलोटन प्रति वर्ष (KTPA)

51. निम्नलिखित बहुउद्देशीय नदी घाटी/जल विद्युत परियोजनाओं (सूची I) को राजस्थान के संबंधित ऊर्जा प्रतिशत हिस्से (सूची II) के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I : (परियोजना)
P. चंबल घाटी परियोजना
Q. माही बजाज सागर परियोजना
R. भाखड़ा नांगल परियोजना
S. व्यास (पोंग बांध) परियोजना
सूची II : (प्रतिशत हिस्सा)
1. 100% (राजस्थान को आवंटित बिजली)
2. 50%
3. 15.22%
4. 58.5%
(A) P-2, Q-1, R-3, S-4
(B) P-1, Q-2, R-4, S-3
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

52. राजस्थान में बाड़मेर और बीकानेर बेसिन से निकाला गया लिग्नाइट सामान्यतः किस भूवैज्ञानिक काल से संबंधित है, जिसमें उच्च आर्द्रता और सल्फर की मात्रा पाई जाती है?
(A) कार्बोनिफेरस काल
(B) परमियन काल
(C) टर्शियरी (तृतीयक) काल
(D) क्वाटरनरी काल

53. एनएलसी इंडिया लिमिटेड (केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र का उद्यम) राजस्थान में एक प्रमुख लिग्नाइट खदान और 250 MW तापीय विद्युत स्टेशन का संचालन करता है। यह संयंत्र कहाँ स्थित है?
(A) बरसिंगसर
(B) रामगढ़
(C) कपूरड़ी
(D) सूरतगढ़

54. कालीसिंध सुपर थर्मल पावर स्टेशन मुख्य रूप से कालीसिंध नदी से जल आपूर्ति प्राप्त करता है। यह किस जिले में स्थित है?
(A) बारां
(B) कोटा
(C) बूंदी
(D) झालावाड़

55. राजस्थान में सौर ऊर्जा क्षमता आकलन के संदर्भ में, 'डायरेक्ट नॉर्मल इरैडिएटेंस' (DNI) शब्द क्या मापता है?
(A) स्थापित सौर पैनल की सतह को प्रभावित करने वाली औसत क्षैतिज पवन गति
(B) सीधी सूर्य किरणों के लंबवत सतह पर प्रति इकाई क्षेत्रफल में सौर विकिरण
(C) सौर पार्क के आसपास दर्ज किया गया अधिकतम परिवेशीय तापमान
(D) समताप मंडलीय ओजोन परत द्वारा अवशोषित पराबैंगनी विकिरण का कुल प्रतिशत

56. भड़ला सोलर पार्क के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन (A) : भड़ला सोलर पार्क ने अपनी क्षमता नीलामी के दौरान भारत में सबसे कम सौर ऊर्जा टैरिफ दरों में से कुछ दरें हासिल कीं।
कारण (R) : इस क्षेत्र के अत्यधिक उच्च सौर विकिरण ने, नोडल एजेंसियों द्वारा प्रदान की गई बुनियादी सुविधाओं के साथ मिलकर, परियोजना के जोखिमों और विकास लागतों को कम कर दिया।
निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प सही है?
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

57. राजस्थान सरकार ने पुरानी, कम क्षमता वाली पवन टर्बाइनों को नई, उच्च क्षमता और अधिक कुशल टर्बाइनों से प्रतिस्थापित करने को प्रोत्साहित करने के लिए नीति जारी की है। इस प्रक्रिया को आधिकारिक रूप से क्या कहा जाता है?
(A) रिट्रोफिटिंग पॉलिसी
(B) रिकंडीशनिंग फ्रेमवर्क
(C) रीन्यूएबल अपग्रेडेशन स्कीम
(D) रीपावरिंग पॉलिसी

58. अमरसागर पवन ऊर्जा परियोजना की सफलता के पश्चात्, वर्ष 2001 में राजस्थान का दूसरा प्रमुख पवन ऊर्जा संयंत्र किस स्थान पर स्थापित किया गया था?
(A) देवगढ़, प्रतापगढ़
(B) बिठड़ी, जोधपुर
(C) फलोदी, जोधपुर
(D) नोख, जैसलमेर

Click Here to Buy book on Amazon

अध्याय 21

राजस्थान के ऊर्जा संसाधन

1. राजस्थान में वर्तमान में निम्नलिखित में से किस अक्षय ऊर्जा स्रोत की स्थापित विद्युत उत्पादन क्षमता सर्वाधिक है?
   (A) पवन ऊर्जा
   (B) सौर ऊर्जा
   (C) बायोमास ऊर्जा
   (D) लघु जल विद्युत

2. कपूरड़ी और जालीपा खनन क्षेत्र राजस्थान के ऊर्जा क्षेत्र के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। ये खदानें स्थानीय तापीय विद्युत परियोजनाओं को आपूर्ति करने के लिए मुख्य रूप से किसका उत्पादन करती हैं?
   (A) उच्च श्रेणी का एंथ्रेसाइट कोयला
   (B) प्राकृतिक गैस
   (C) यूरेनियम अयस्क
   (D) लिग्नाइट (भूरा कोयला)

3. राजस्थान में निम्नलिखित में से कौन-सा लिग्नाइट खनन क्षेत्र उसके संबंधित जिले के साथ सुमेलित नहीं है?
   (A) मेड़ता रोड - जोधपुर
   (B) बरसिंगसर - बीकानेर
   (C) गुढ़ा - बीकानेर
   (D) गिरल - बाड़मेर

4. निम्नलिखित में से कौन-सा राजस्थान में सुपर क्रिटिकल थर्मल पावर स्टेशन नहीं है?
   (A) सूरतगढ़ सुपर क्रिटिकल थर्मल पावर स्टेशन
   (B) छबड़ा सुपर क्रिटिकल थर्मल पावर स्टेशन
   (C) गिरल लिग्नाइट थर्मल पावर स्टेशन
   (D) कालीसिंध सुपर क्रिटिकल थर्मल पावर स्टेशन

5. राजस्थान में निम्नलिखित ऊर्जा परियोजनाओं (सूची I) को उनके संबंधित स्थानों या जिलों (सूची II) के साथ सुमेलित कीजिए:
   सूची I : (ऊर्जा परियोजना)
   P. अमरसागर पवन संयंत्र
   Q. रावतभाटा परमाणु संयंत्र
   R. अंता गैस संयंत्र
   S. सूरतगढ़ तापीय संयंत्र
   सूची II : (स्थान / जिला)
   1. श्रीगंगानगर
   2. बारां
   3. चित्तौड़गढ़
   4. जैसलमेर
   (A) P-4, Q-3, R-2, S-1
   (B) P-3, Q-4, R-1, S-2
   (C) P-4, Q-2, R-3, S-1
   (D) P-2, Q-3, R-4, S-1

6. कौन-से भौगोलिक और जलवायु संबंधी कारक मुख्य रूप से राजस्थान की सौर ऊर्जा क्षमता में योगदान करते हैं?
   (A) उच्च आर्द्रता स्तर के साथ संयुक्त व्यापक आंतरिक नहर नेटवर्क
   (B) भारी मौसमी मानसूनी वर्षा के अधीन अधिक ऊँचाई वाले पर्वतीय भूभाग
   (C) कर्क रेखा के निकट स्थित घने उष्णकटिबंधीय झाड़ीदार वन
   (D) उच्च प्रत्यक्ष सामान्य विकिरण (DNI) और प्रतिवर्ष 325 से अधिक धूप वाले साफ़ दिन

NODIA

7. जोधपुर जिले में स्थित भड़ला सोलर पार्क की कुल स्थापित क्षमता कितनी है?
   (A) 1500 MW
   (B) 2000 MW
   (C) 2245 MW
   (D) 3000 MW

8. राज्य के अन्य क्षेत्रों की तुलना में पश्चिमी राजस्थान पवन ऊर्जा उत्पादन के लिए क्या विशिष्ट भौगोलिक लाभ प्रदान करता है?
   (A) पर्वतीय घाटियाँ और अधिक ऊँचाई वाले दर्रे जो प्राकृतिक पवन सुरंगों के रूप में कार्य करते हैं
   (B) तटीय निकटता जो तीव्र, निरंतर और अनुमानित समुद्री पवनें लाती है
   (C) कम सतह खुरदरापन वाला समतल मरुस्थलीय भूभाग जो उच्च पवन गति को सुगम बनाता है
   (D) घने, ऊँचे वनस्पति आवरण द्वारा निर्मित उच्च दाब वाले वायुमंडलीय क्षेत्र

9. वर्ष 1999 में राजस्थान की पहली पवन ऊर्जा परियोजना कहाँ स्थापित की गई थी?
   (A) देवगढ़, प्रतापगढ़
   (B) बिठड़ी, जोधपुर
   (C) फलोदी, जोधपुर
   (D) अमरसागर, जैसलमेर

10. राजस्थान परमाणु ऊर्जा स्टेशन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

(A) यह जल के क्रिटिकल तापमान और दाब से ऊपर कार्य करता है, जिससे दक्षता बढ़ती है।
(B) यह पूरी तरह से विदेशी व्यावसायिक बाजारों से आयातित उच्च श्रेणी के एंथ्रेसाइट कोयले पर चलता है।
(C) यह अपनी पूरी बिजली उत्पादन प्रक्रिया के दौरान शून्य प्रत्यक्ष कार्बन उत्सर्जन उत्पन्न करता है।
(D) यह मीठे जल के बजाय शीतलन के लिए मुख्य रूप से अंतर्देशीय लाए गए समुद्री जल पर निर्भर करता है।

30. पश्चिमी राजस्थान में सौर ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिए "सोलर एंटरप्राइज ज़ोन" (SEZ) की अवधारणा विकसित की गई थी। निम्नलिखित में से किस जिले को इस विशिष्ट तीन-जिले वाले SEZ क्षेत्र का भाग नहीं माना जाता है?
(A) जोधपुर
(B) जैसलमेर
(C) बीकानेर
(D) बाड़मेर

31. राजस्थान में भड़ला सोलर पार्क कई चरणों में विकसित किया गया था। पार्क के चरण III (1000 MW) को विकसित करने के लिए मुख्य रूप से कौन-सा राज्य सरकार का संयुक्त उद्यम उत्तरदायी था?
(A) राजस्थान सोलर पार्क डेवलपमेंट कंपनी लिमिटेड (RSDCL)
(B) अडानी रीन्यूएबल एनर्जी पार्क राजस्थान लिमिटेड (AREPRL)
(C) एस्सेल सूर्य ऊर्जा कंपनी ऑफ राजस्थान लिमिटेड (ESSCL)
(D) सौर्य ऊर्जा कंपनी ऑफ राजस्थान लिमिटेड (SUCRL)

32. राजस्थान पवन और हाइब्रिड ऊर्जा नीति 2019 पवन और सौर संसाधनों का इष्टतम उपयोग करने के लिए लाई गई थी। इस नीति ने वर्ष 2024-25 के लिए केवल पवन ऊर्जा क्षमता वृद्धि का क्या लक्ष्य निर्धारित किया था?
(A) 2000 MW
(B) 4000 MW
(C) 6000 MW
(D) 10000 MW

33. जैसलमेर में पवन ऊर्जा के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन (A) : जैसलमेर जिले को प्रायः राजस्थान की पवन ऊर्जा राजधानी कहा जाता है।
कारण (R) : जैसलमेर में एक विशाल, समतल मरुस्थलीय भूभाग है जो व्यावसायिक पवन टर्बाइन संचालन के लिए अनुकूल उच्च पवन गति घनत्व प्रदान करता है।
निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प सही है?
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

34. राजस्थान परमाणु ऊर्जा स्टेशन (RAPS) का विस्तार किया जा रहा है। रावतभाटा में इकाई 7 और 8 की व्यक्तिगत स्थापित क्षमता कितनी है?
(A) प्रत्येक 220 MW
(B) प्रत्येक 500 MW
(C) प्रत्येक 700 MW
(D) प्रत्येक 1000 MW

35. राजस्थान भाखड़ा नांगल बहुउद्देशीय नदी घाटी परियोजना से उत्पन्न जल विद्युत का उपभोग करता है। इस परियोजना में राजस्थान का आधिकारिक रूप से आवंटित हिस्सा कितना है?
(A) 10.50%
(B) 15.22%
(C) 25.50%
(D) 50.00%

36. राजस्थान की ऊर्जा नीतियों के अंतर्गत "पवन-सौर हाइब्रिड" ऊर्जा परियोजनाओं को बढ़ावा देने का प्राथमिक उद्देश्य निम्नलिखित में से कौन-सा है?
(A) पूरे राज्य में पारंपरिक तापीय विद्युत संयंत्रों की आवश्यकता को समाप्त करना
(B) पवन और सौर ऊर्जा उत्पादन सुविधाओं को पृथक भौगोलिक क्षेत्रों में स्थापित करना
(C) अक्षय ऊर्जा की परिवर्तनशीलता को कम करना और पारेषण ग्रिड के उपयोग को अनुकूलित करना
(D) घरेलू पवन टर्बाइनों के साथ आयातित सौर पैनलों की स्थापना अनिवार्य करना

37. ग्रामीण विद्युतीकरण ढांचे के अंतर्गत, राजस्थान के गाँवों में दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना (DDUGJY) द्वारा किस विशिष्ट संरचनात्मक सुधार का लक्ष्य रखा गया था?
(A) विश्वसनीय बिजली आपूर्ति के लिए कृषि और गैर-कृषि फीडरों का पृथक्करण करना
(B) सभी ग्रामीण परिवारों को पूर्णतः निःशुल्क बिजली कनेक्शन प्रदान करना
(C) सभी मौजूदा ग्रिड-संबद्ध कृषि पंपों को डीजल जनरेटर से बदलना
(D) राज्य के ग्रामीण ग्रिड रखरखाव और बिलिंग संचालन को निजी विदेशी कंपनियों को सौंपना

38. राजस्थान में संचालित PM KUSUM योजना के निम्नलिखित घटकों पर विचार कीजिए:
I. घटक A: विकेंद्रीकृत भू-स्थापित ग्रिड-संबद्ध सौर ऊर्जा संयंत्र।
II. घटक B: पृथक सौर-संचालित कृषि पंपों की स्थापना।
III. घटक C: मौजूदा ग्रिड-संबद्ध कृषि पंपों का सौरीकरण।
उपर्युक्त संयोजनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

Downloaded from www.pdf.tube

20. राजस्थान में ऊर्जा क्षेत्र के समक्ष आने वाली चुनौतियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. ग्रामीण फीडरों में उच्च पारेषण और वितरण (T&D) हानि।
II. जल की कमी जो तापीय विद्युत संयंत्रों की शीतलन क्षमता को सीमित करती है।
III. उच्च अक्षय ऊर्जा प्रवेश के कारण अनिश्चितता (इंटरमिटेंसी) और ग्रिड स्थिरता के मुद्दे।
IV. नए सौर पार्कों के लिए भूमि की उपलब्धता का पूर्ण अभाव।
उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल I, III और IV
(C) केवल II, III और IV
(D) I, II, III और IV

21. राष्ट्रीय योजना के अंतर्गत राजस्थान में रूफटॉप सोलर सब्सिडी के लिए आवेदन करने वाले आवासीय उपभोक्ताओं के लिए कौन-सा डिजिटल मंच केंद्रीय कार्यान्वयन और ट्रैकिंग तंत्र के रूप में कार्य करता है?
(A) नेशनल पोर्टल फॉर रूफटॉप सोलर
(B) राजस्थान सिंगल विंडो क्लियरेंस सिस्टम
(C) आरआरईसी एनर्जी डैशबोर्ड
(D) पीएम कुसुम स्टेट पोर्टल

22. ग्रामीण राजस्थान में कार्यरत बायोमास बिजली संयंत्रों द्वारा उपयोग किए जाने वाले कच्चे माल के दो सबसे प्रमुख स्रोत कौन-से हैं?
(A) गन्ने की खोई और धान की भूसी
(B) गेहूं की पराली और प्रसंस्कृत बांस अपशिष्ट
(C) कपास के सूखे डंठल और मूंगफली के छिलके
(D) सरसों की तूड़ी (भूसी) और विलायती बबूल (जूलीफ्लोरा)

23. कुल स्थापित सौर ऊर्जा क्षमता के संदर्भ में भारतीय राज्यों में राजस्थान का कौन-सा स्थान है?
(A) दूसरा
(B) प्रथम
(C) तीसरा
(D) चौथा

24. अडानी रीन्यूएबल एनर्जी पार्क राजस्थान लिमिटेड (AREPRL), जो राज्य में बड़े पैमाने पर सौर पार्कों का विकास करता है, अडानी समूह और किस राज्य संस्था के बीच एक संयुक्त उद्यम है?
(A) राजस्थान राज्य विद्युत बोर्ड (RSEB)
(B) राजस्थान राज्य विद्युत उत्पादन निगम लिमिटेड (RVUNL)
(C) राजस्थान रीन्यूएबल एनर्जी कॉर्पोरेशन लिमिटेड (RREC)
(D) राजस्थान राज्य औद्योगिक विकास एवं निवेश निगम (RIICO)

25. कुल स्थापित क्षमता के अनुसार राजस्थान में अक्षय ऊर्जा स्रोतों का सही घटता हुआ क्रम (अवरोही क्रम) निम्नलिखित में से कौन-सा है?
(A) सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, बायोमास ऊर्जा, लघु जल विद्युत
(B) पवन ऊर्जा, सौर ऊर्जा, लघु जल विद्युत, बायोमास ऊर्जा
(C) सौर ऊर्जा, बायोमास ऊर्जा, पवन ऊर्जा, लघु जल विद्युत
(D) सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, लघु जल विद्युत, बायोमास ऊर्जा

26. राजस्थान के पारंपरिक ऊर्जा आधार के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(A) राजस्थान कोई स्थानीय तापीय विद्युत संयंत्र संचालित नहीं करता है, और 100% बिजली का आयात करता है।
(B) राज्य ऐतिहासिक रूप से अपनी बेस-लोड बिजली के लिए कोयले और लिग्नाइट भंडार पर अत्यधिक निर्भर रहा है।
(C) राज्य के पास टर्शियरी (तृतीयक) काल के लिग्नाइट निक्षेपों के विशाल और व्यावसायिक रूप से महत्वपूर्ण भंडार हैं।
(D) स्थानीय प्राकृतिक गैस संसाधन भी राज्य की तापीय विद्युत उत्पादन क्षमता में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

27. बाड़मेर में गिरल लिग्नाइट थर्मल पावर प्रोजेक्ट राजस्थान का पहला ऐसा पावर प्लांट है, जो किस उन्नत दहन तकनीक का उपयोग करता है?
(A) पल्वराइज्ड कोल फायरिंग
(B) सर्कुलेटिंग फ्लुइडाइज्ड बेड कंबशन (CFBC)
(C) इंटीग्रेटेड गैसीफिकेशन कंबाइंड साइकिल (IGCC)
(D) अल्ट्रा-सुपरक्रिटिकल टेक्नोलॉजी

28. राजस्थान के ऊर्जा क्षेत्र में निम्नलिखित प्रशासनिक निकायों/योजनाओं (सूची I) को उनके प्राथमिक ध्यान क्षेत्रों (सूची II) के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I : (योजना / प्रशासनिक निकाय)
P. पीएम कुसुम (PM KUSUM)
Q. पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना
R. सौभाग्य योजना
S. डीडीयूजीजेवाई (DDUGJY)
सूची II : (ध्यान क्षेत्र)
1. आवासीय परिवारों के लिए रूफटॉप सौर स्थापना
2. कृषि पंपों और ग्रामीण संयंत्रों का सौरीकरण
3. सार्वभौमिक घरेलू बिजली कनेक्शन
4. ग्रामीण नेटवर्क में कृषि और गैर-कृषि फीडरों का पृथक्करण
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-1, R-3, S-4
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

29. राजस्थान के तापीय विद्युत क्षेत्र के संदर्भ में, सबक्रिटिकल प्लांट की तुलना में "सुपरक्रिटिकल" थर्मल पावर प्लांट को क्या परिभाषित करता है?

NODIA

गुणवत्ता वाला हवाई निरीक्षण होता है। इससे अवैध उत्खनन को चिह्नित करने और त्वरित कानूनी कार्रवाई में सहायता मिलती है।

62. (C) नदी की बजरी/रेत
राजस्थान की प्रमुख नदियों के पाटों में नदी की बजरी या रेत (बजरी) का बड़े पैमाने पर अवैध उत्खनन एक गंभीर समस्या रहा है। इसके कारण नदियों के प्राकृतिक प्रवाह, जलीय पारिस्थितिकी और तटबंधों को भारी नुकसान पहुँचा। पर्यावरणीय क्षति को देखते हुए उच्चतम न्यायालय और राष्ट्रीय हरित अधिकरण ने कड़े प्रतिबंध लगाए। इस स्थिति से निपटने और निर्माण सामग्री की निरंतर आपूर्ति हेतु राज्य सरकार ने एम-सैंड नीति को बढ़ावा देने का नीतिगत निर्णय लिया।

63. (D) जास्पर, सेलेनाइट और वोलैस्टोनाइट
राजस्थान खनिजों का अजायबघर कहलाता है। भारत में जास्पर, सेलेनाइट और वोलैस्टोनाइट खनिजों के कुल उत्पादन पर राजस्थान का 100 प्रतिशत एकाधिकार है, अर्थात् इनका उत्पादन केवल इसी राज्य में होता है। वोलैस्टोनाइट का उपयोग मुख्य रूप से प्लास्टिक और सिरेमिक उद्योगों में होता है। सेलेनाइट जिप्सम का शुद्ध रूप है तथा जास्पर एक मूल्यवान सजावटी पत्थर है। इन खनिजों का एकमात्र उत्पादक होना राजस्थान को राष्ट्रीय खनिज परिदृश्य में विशिष्टता प्रदान करता है।

64. (C) P-1, Q-2, R-1, S-4
भारत के कुल खनिज उत्पादन में राजस्थान की स्थिति अत्यंत महत्वपूर्ण है। सीसा-जस्ता अयस्क और फॉस्फोराइट (रॉक फॉस्फेट) के उत्पादन में राजस्थान देश में प्रथम स्थान पर है। तांबा अयस्क के निष्कर्षण में यह मध्य प्रदेश के बाद द्वितीय स्थान पर आता है। दूसरी ओर, लौह अयस्क उत्पादन में ओडिशा, छत्तीसगढ़ और कर्नाटक देश के अग्रणी राज्य हैं, जबकि इस तालिका में राजस्थान का योगदान अत्यंत गौण अथवा निम्न स्थान पर आता है।

65. (B) मध्य प्रदेश
भारत में तांबा अयस्क के उत्पादन में मध्य प्रदेश प्रथम स्थान पर स्थित है। मध्य प्रदेश का बालाघाट जिला (मलांजखंड खदान) देश का सबसे बड़ा तांबा उत्पादक क्षेत्र है। राजस्थान अपनी प्रसिद्ध खेतड़ी-सिंघाना और खो-दरीबा पट्टियों के साथ देश में तांबा अयस्क के उत्पादन में दूसरे स्थान पर आता है। तांबा बिजली और इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योगों के लिए एक महत्वपूर्ण अलौह धातु है, जिसकी पूर्ति में राजस्थान द्वितीय प्रमुख योगदानकर्ता राज्य है।

66. (D) बाड़मेर
बेंटोनाइट एक महत्वपूर्ण अवशोषक क्ले खनिज है जो जल सोखने पर अत्यधिक फूलने का गुण रखता है। राजस्थान भारत में बेंटोनाइट का प्रमुख उत्पादक राज्य है। राज्य के अंतर्गत 'बाड़मेर' जिला बेंटोनाइट के निष्कर्षण में सबसे अग्रणी स्थान रखता है। बाड़मेर के गिरल, हाथी की ढाणी और थूरवी क्षेत्रों में उच्च गुणवत्ता वाले बेंटोनाइट के विशाल निक्षेप पाए जाते हैं। इसका उपयोग तेल कूप ड्रिलिंग, फाउंड्री रेत और ढलाई उद्योगों में व्यापक रूप से होता है।

67. (A) पोर्टलैंड सीमेंट
राजस्थान का चित्तौड़गढ़-निंबाहेड़ा क्षेत्र देश में पोर्टलैंड सीमेंट के निर्माण का सबसे बड़ा बेल्ट माना जाता है। इस क्षेत्र में विंध्यन प्रणाली का सीमेंट-ग्रेड चूना पत्थर, जिप्सम तथा स्थानीय संयंत्रों से विश्वसनीय बिजली और जलापूर्ति प्रचुरता में उपलब्ध है। इन अनुकूल औद्योगिक और भौगोलिक कारकों के कारण इस क्षेत्र में कई बहुराष्ट्रीय सीमेंट कंपनियों के एकीकृत निर्माण परिसर स्थापित हुए हैं, जिससे राजस्थान देश में सीमेंट उत्पादन का शीर्ष राज्य बना हुआ है।

68. (C) चंबल फर्टिलाइजर्स एंड केमिकल्स
उदयपुर के झामरकोटड़ा से निष्कर्षित रॉक फॉस्फेट का उपयोग उर्वरक निर्माण हेतु किया जाता है। कोटा के गढेपान में स्थित 'चंबल फर्टिलाइजर्स एंड केमिकल्स लिमिटेड' राज्य का एक प्रमुख निजी उर्वरक परिसर है। झामरकोटड़ा का उच्च गुणवत्ता वाला रॉक फॉस्फेट इस संयंत्र को फॉस्फेटिक और एनपीके उर्वरकों के उत्पादन हेतु मूलभूत कच्चे माल के रूप में आपूर्ति किया जाता है। यह निर्बाध आपूर्ति राज्य के कृषि और औद्योगिक क्षेत्र के बीच समन्वय स्थापित करती है।

69. (A) सिरेमिक और कांच
अजमेर-जयपुर पट्टी पेग्माटाइट शैलों से समृद्ध है, जहाँ उच्च शुद्धता वाले फेल्डस्पार और क्वार्ट्ज का बड़े पैमाने पर उत्खनन किया जाता है। ये दोनों खनिज 'सिरेमिक और कांच' उद्योगों के लिए प्राथमिक और अनिवार्य कच्चे माल के रूप में कार्य करते हैं। फेल्डस्पार गालक के रूप में पिघलन तापमान को कम करता है, जबकि क्वार्ट्ज कांच की पारदर्शिता और स्थायित्व को बढ़ाता है। इस पट्टी से निकलने वाले खनिज देश भर के सिरेमिक कारखानों को भेजे जाते हैं।

70. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की सही व्याख्या है।
राजस्थान में विश्वस्तरीय और निर्यात-उन्मुख पत्थर प्रसंस्करण उद्योग स्थापित हो चुका है। इसका मुख्य कारण राज्य में विभिन्न प्रकार के आयामी और सजावटी पत्थरों जैसे संगमरमर, ग्रेनाइट, बलुआ पत्थर, कोटा स्टोन और स्लेट के विशाल और समृद्ध प्राकृतिक निक्षेपों की उपलब्धता है। राज्य की यह प्रचुर प्राकृतिक संसाधन संपन्नता ही अत्याधुनिक प्रसंस्करण मिलों के विकास तथा अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में पत्थरों के सफल निर्यात को सीधे तौर पर संभव और प्रोत्साहित करती है।

71. (B) यह बड़ी संख्या में अकुशल और अर्ध-कुशल ग्रामीण श्रमिकों को रोजगार देता है
खनन और उत्खनन क्षेत्र राजस्थान की ग्रामीण अर्थव्यवस्था का एक सुदृढ़ स्तंभ है। राज्य में बड़े पैमाने पर स्थित अप्रधान खनिजों और पत्थरों की खदानें अकुशल तथा अर्ध-कुशल ग्रामीण श्रमिकों को बड़े पैमाने पर स्थानीय रोजगार प्रदान करती हैं। विशेषकर मरुस्थलीय और शुष्क क्षेत्रों में, जहाँ कृषि गतिविधियाँ मौसमी और अनिश्चित होती हैं, खनन गतिविधियाँ

Click Here to Buy book on Flipkart

39. राजस्थान के बाड़मेर जिले में मंगला तेल क्षेत्र की खोज किस वर्ष की गई थी?
(A) 1995
(B) 1999
(C) 2004
(D) 2010

40. रामगढ़ गैस थर्मल पावर स्टेशन की स्थापना स्थानीय बेसिन में पाए जाने वाले प्राकृतिक गैस भंडार का उपयोग करने के लिए की गई थी। यह पावर स्टेशन किस जिले में स्थित है?
(A) जोधपुर
(B) बाड़मेर
(C) जैसलमेर
(D) बीकानेर

41. अक्षय ऊर्जा विकास के लिए राज्य की नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करने हेतु किस वर्ष राजस्थान रीन्यूएबल एनर्जी कॉर्पोरेशन लिमिटेड (RREC) की स्थापना की गई थी?
(A) 1995
(B) 1999
(C) 2002
(D) 2011

42. राजस्थान में निम्नलिखित ऊर्जा परिसंपत्तियों के स्वामित्व/ऑपरेटर के संबंध में असत्य युग्म की पहचान कीजिए:
(A) रावतभाटा परमाणु ऊर्जा स्टेशन - नेशनल थर्मल पावर कॉर्पोरेशन (NTPC)
(B) बरसिंगसर थर्मल पावर स्टेशन - एनएलसी इंडिया लिमिटेड (NLC India Limited)
(C) सूरतगढ़ सुपर थर्मल पावर स्टेशन - राजस्थान राज्य विद्युत उत्पादन निगम लिमिटेड (RVUNL)
(D) अंता गैस पावर प्लांट - नेशनल थर्मल पावर कॉर्पोरेशन (NTPC)

43. नई अक्षय ऊर्जा परियोजनाओं के लिए राजस्थान निवेश प्रोत्साहन योजना (RIPS) के अंतर्गत दिए जाने वाले निम्नलिखित प्रोत्साहनों पर विचार कीजिए:
I. भूमि क्रय या पट्टे पर स्टाम्प शुल्क में 100% छूट।
II. एक निर्दिष्ट अवधि के लिए विद्युत शुल्क में 100% छूट।
III. सभी निजी डेवलपर्स के लिए कुल परियोजना लागत के 80% के बराबर पूंजीगत सब्सिडी।
IV. एक निर्दिष्ट अवधि के लिए भूमि कर से छूट।
उपर्युक्त संयोजनों में से कौन-सा सही है?
(A) केवल I, II और IV
(B) केवल II, III और IV
(C) केवल I, III और IV
(D) I, II, III और IV

44. राजस्थान में अति-उच्च वोल्टेज ऊर्जा पारेषण अवसंरचना के प्रबंधन और विस्तार के लिए मुख्य रूप से कौन-सी राज्य के स्वामित्व वाली संस्था उत्तरदायी है?
(A) जयपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड (JVVNL)
(B) राजस्थान राज्य विद्युत प्रसारण निगम लिमिटेड (RVPNL)
(C) राजस्थान राज्य विद्युत उत्पादन निगम लिमिटेड (RVUNL)
(D) राजस्थान रीन्यूएबल एनर्जी कॉर्पोरेशन लिमिटेड (RREC)

45. सौर और पवन ऊर्जा के वृहद् स्तर पर जुड़ने के कारण राजस्थान में विद्युत ग्रिड ऑपरेटरों के समक्ष सबसे महत्वपूर्ण तकनीकी चुनौती क्या है?
(A) परिवर्तनशील अक्षय ऊर्जा उत्पादन के कारण ग्रिड की अस्थिरता
(B) सौर पीवी पैनलों के संचालन के दौरान अत्यधिक ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन
(C) पवन टर्बाइनों को लगातार चलाने के लिए आवश्यक ईंधन की अत्यधिक उच्च लागत
(D) हरित और अक्षय बिजली के लिए व्यावसायिक उपभोक्ताओं की माँग की कमी

46. रूफटॉप सोलर को बढ़ावा देने के लिए प्रारंभ की गई पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना के अंतर्गत पात्र परिवारों को प्रति माह कितने यूनिट तक निःशुल्क बिजली देने का लक्ष्य रखा गया है?
(A) 100 यूनिट
(B) 200 यूनिट
(C) 300 यूनिट
(D) 500 यूनिट

47. पदमपुर बायोमास बिजली संयंत्र, जो बिजली उत्पादन के लिए कृषि अवशेषों का उपयोग करता है, राजस्थान के किस जिले में स्थित है?
(A) जैसलमेर
(B) राजसमंद
(C) डूंगरपुर
(D) श्रीगंगानगर

48. निम्नलिखित भारतीय राज्यों को उनकी कुल स्थापित सौर ऊर्जा क्षमता के आधार पर अवरोही (घटते) क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. कर्नाटक
2. राजस्थान
3. गुजरात
4. तमिलनाडु
नीचे दिए गए विकल्पों में से कौन-सा सही अनुक्रम का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) 2, 3, 1, 4 (B) 2, 1, 3, 4
(C) 3, 2, 4, 1 (D) 1, 2, 3, 4

49. अक्षय ऊर्जा की आंतरायिक (रुक-रुक कर होने वाली) प्रकृति से निपटने के लिए, राजस्थान सरकार ने ESS को बढ़ावा देना प्रारंभ किया है। ऊर्जा नीति के संदर्भ में, ESS का पूर्ण रूप क्या है?

Downloaded from www.pdf.tube

कथन (A) : रावतभाटा स्थित राजस्थान परमाणु ऊर्जा स्टेशन (RAPS) मुख्य रूप से दाबित भारी जल रिएक्टरों (PHWRs) का उपयोग करता है।
कारण (R) : PHWR प्रौद्योगिकी ईंधन के रूप में अत्यधिक समृद्ध यूरेनियम और न्यूट्रॉन मंदक के रूप में साधारण हल्के जल पर निर्भर करती है।
निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प सही है?
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

11. माही बजाज सागर परियोजना द्वारा उत्पादित जल विद्युत का एकमात्र लाभार्थी निम्नलिखित में से कौन-सा राज्य है?
(A) गुजरात
(B) राजस्थान
(C) मध्य प्रदेश
(D) महाराष्ट्र

12. राजस्थान सौर ऊर्जा नीति 2019 ने वित्तीय वर्ष 2024-25 तक सौर ऊर्जा की कितनी क्षमता स्थापित करने का लक्ष्य रखा था?
(A) 15 GW
(B) 30 GW
(C) 45 GW
(D) 50 GW

13. राजस्थान के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में सभी घरों के विद्युतीकरण के लक्ष्य को पूरा करने के लिए मुख्य रूप से केंद्र सरकार की कौन-सी योजना उत्तरदायी थी?
(A) प्रधानमंत्री सहज बिजली हर घर योजना (सौभाग्य)
(B) प्रधानमंत्री किसान ऊर्जा सुरक्षा एवं उत्थान महाभियान (PM KUSUM)
(C) उज्ज्वल डिस्कॉम एश्योरेंस योजना (UDAY)
(D) दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना (DDUGJY)

14. राजस्थान में संचालित PM KUSUM योजना के अंतर्गत, घटक A (Component A) का विशिष्ट उद्देश्य क्या है?
(A) कृषि सिंचाई के लिए पृथक (ऑफ-ग्रिड) सौर-संचालित जल पंपों की स्थापना
(B) व्यक्तिगत किसानों के लिए मौजूदा ग्रिड-संबद्ध कृषि पंपों का सौरीकरण
(C) 2 MW तक के विकेंद्रीकृत भू-स्थापित ग्रिड-संबद्ध सौर संयंत्रों की स्थापना
(D) ग्रामीण आवासीय परिवारों को सब्सिडी वाले रूफटॉप सौर ऊर्जा पैनल प्रदान करना

15. राजस्थान के बाड़मेर-सांचौर बेसिन में स्थित निम्नलिखित तेल क्षेत्रों पर विचार कीजिए:
I. मंगला
II. भाग्यम
III. ऐश्वर्या
उपर्युक्त में से कौन-सा/से केयर्न एनर्जी द्वारा खोजे गए व्यावसायिक रूप से उत्पादक तेल क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करता है/करते हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

16. रामगढ़ गैस क्षेत्रों सहित राज्य के अधिकांश व्यावसायिक प्राकृतिक गैस भंडार राजस्थान के किस अवसादी बेसिन में केंद्रित हैं?
(A) बाड़मेर-सांचौर बेसिन
(B) बीकानेर-नागौर बेसिन
(C) जैसलमेर बेसिन
(D) विंध्यन बेसिन

NODIA

17. राजस्थान रीन्यूएबल एनर्जी कॉर्पोरेशन लिमिटेड (RREC) का गठन वर्ष 2002 में किन दो राज्य एजेंसियों का विलय करके किया गया था?
(A) राजस्थान राज्य विद्युत बोर्ड (RSEB) और राजस्थान ऊर्जा विकास एजेंसी (REDA)
(B) राजस्थान ऊर्जा विकास एजेंसी (REDA) और राजस्थान राज्य पावर कॉर्पोरेशन लिमिटेड (RSPCL)
(C) राजस्थान विद्युत प्रसारण निगम लिमिटेड (RVPNL) और राजस्थान ऊर्जा विकास एजेंसी (REDA)
(D) राजस्थान राज्य पावर कॉर्पोरेशन लिमिटेड (RSPCL) और राजस्थान सोलर पार्क डेवलपमेंट कंपनी लिमिटेड

18. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन राजस्थान निवेश प्रोत्साहन योजना (RIPS) के अंतर्गत अक्षय ऊर्जा निवेशकों को दिए जाने वाले सरकारी प्रोत्साहनों का गलत वर्णन करता है?
(A) एक निर्दिष्ट विकास अवधि के लिए विद्युत शुल्क में पूर्ण छूट
(B) भूमि क्रय या दीर्घकालिक पट्टे पर स्टाम्प शुल्क में 100% छूट
(C) एक निर्दिष्ट परियोजना अवधि के लिए राज्य भूमि कर में पूर्ण छूट
(D) राज्य GST के भुगतान से आजीवन पूर्ण छूट

19. राजस्थान में "ग्रीन एनर्जी कॉरिडोर" परियोजना मुख्य रूप से ऊर्जा क्षेत्र की किस विशिष्ट चुनौती का समाधान करने के लिए तैयार की गई है?
(A) अक्षय ऊर्जा की निकासी के लिए पारेषण (ट्रांसमिशन) अवसंरचना का सुदृढ़ीकरण करना
(B) कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन को अवशोषित करने के लिए तापीय विद्युत संयंत्रों के आसपास सघन वृक्षारोपण करना
(C) सभी सक्रिय कोयला-आधारित बिजली संयंत्रों को पूर्णतः सौर पार्कों से प्रतिस्थापित करना
(D) नगरीय सार्वजनिक परिवहन में उपयोग किए जाने वाले विद्युत वाहनों के लिए सब्सिडी प्रदान करना

59. न्यूक्लियर पावर कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (NPCIL) ने राजस्थान में माही बांसवाड़ा परमाणु ऊर्जा परियोजना नामक एक नई परमाणु ऊर्जा परियोजना के निर्माण का प्रस्ताव दिया है। इस स्थल के लिए किस रिएक्टर तकनीक की योजना बनाई गई है?
(A) विदेश से आयातित वाणिज्यिक लाइट वाटर रिएक्टर (LWR)
(B) स्वदेशी 700 MW दाबित भारी जल रिएक्टर (PHWR)
(C) वाणिज्यिक सोडियम-कूल्ड फास्ट ब्रीडर रिएक्टर (FBR)
(D) उन्नत बॉलिंग वाटर पावर रिएक्टर सिस्टम (BWR)

60. चंबल घाटी परियोजना में उत्पादित जल विद्युत राजस्थान और किस अन्य राज्य के बीच समान रूप से साझा की जाती है?
(A) गुजरात
(B) मध्य प्रदेश
(C) हरियाणा
(D) उत्तर प्रदेश

61. राजस्थान सौर ऊर्जा नीति 2019 के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसमें 2024-25 तक 30 GW सौर ऊर्जा क्षमता प्राप्त करने का समग्र लक्ष्य रखा गया है।
II. इसने बहुमत राज्य स्वामित्व के बिना निजी डेवलपर्स द्वारा सौर पार्कों के विकास पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगा दिया।
III. इसने सौर ऊर्जा परियोजनाओं के लिए एक निर्दिष्ट अवधि के लिए बिजली शुल्क पर 100% छूट प्रदान की।
उपर्युक्त संयोजनों में से कौन-सा सही है?
(A) केवल I और II
(B) केवल I और III
(C) केवल II और III
(D) I, II और III

62. राजस्थान में सक्रिय कौन-सी केंद्रीय योजना का उद्देश्य स्मार्ट मीटरिंग और अवसंरचना विकास के माध्यम से राज्य के स्वामित्व वाली बिजली वितरण कंपनियों (DISCOMs) की परिचालन दक्षता और वित्तीय स्थिरता में सुधार करना है?
(A) प्रधानमंत्री जन धन वित्तीय समावेशन योजना (PMJDY)
(B) नेशनल सोलर पावर मिशन डेवलपमेंट फ्रेमवर्क (NSM)
(C) रिवैम्प्ड डिस्ट्रीब्यूशन सेक्टर स्कीम (RDSS)
(D) गैल्वनाइजिंग ऑर्गेनिक बायो-एग्रो रिसोर्सेज धन योजना (GOBARdhan)

63. राजस्थान के सौर ऊर्जा मिशन के संदर्भ में सोलर एनर्जी कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया (SECI) की क्या भूमिका है?
(A) यह जयपुर के कारखानों में सौर फोटोवोल्टिक पैनल और माउंटिंग स्ट्रक्चर का निर्माण करता है।
(B) यह सौर इकाइयां स्थापित करने वाले विनिर्माण कारखानों को पूंजीगत सब्सिडी वितरित करता है।
(C) यह राज्य के सभी निजी सौर पार्कों के नियमित रखरखाव का प्रबंधन करता है।
(D) यह सौर योजनाओं को लागू करने, नीलामी आयोजित करने और बिजली का व्यापार करने वाली केंद्रीय नोडल एजेंसी है।

64. पचपदरा में स्थित एचपीसीएल राजस्थान रिफाइनरी लिमिटेड (HRRL) एक संयुक्त उद्यम है। हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड (HPCL) और राजस्थान सरकार के बीच इक्विटी भागीदारी अनुपात क्या है?
(A) HPCL 50%, राजस्थान सरकार 50%
(B) HPCL 74%, राजस्थान सरकार 26%
(C) HPCL 26%, राजस्थान सरकार 74%
(D) HPCL 90%, राजस्थान सरकार 10%

65. गैर-पारंपरिक प्राकृतिक गैस संसाधनों का दोहन करने के लिए, राजस्थान में अन्वेषण गतिविधियाँ CBM पर केंद्रित रही हैं। पेट्रोलियम उद्योग में CBM का क्या अर्थ है?
(A) कंप्रेस्ड बायोगैस मीथेन (Compressed Biogas Methane)
(B) कोल बेड मीथेन (Coal Bed Methane)
(C) क्रूड बेसिन मिक्सचर (Crude Basin Mixture)
(D) कंबस्टिबल ब्यूटेन मीथेन (Combustible Butane Methane)

66. राजस्थान रीन्यूएबल एनर्जी कॉर्पोरेशन लिमिटेड (RREC) से जुड़े निम्नलिखित कार्यों और उत्तरदायित्वों पर विचार कीजिए:
I. यह नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय (MNRE) के लिए राज्य नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करता है।
II. यह राज्य के सभी तापीय और परमाणु ऊर्जा स्टेशनों के संचालन के लिए सीधे उत्तरदायी है।
III. यह राज्य की सौर और पवन ऊर्जा नीतियों को लागू करने के लिए नामित एजेंसी है।
IV. यह अक्षय ऊर्जा परियोजनाओं के पंजीकरण, अनुमोदन और प्रारंभिक मंजूरी की सुविधा प्रदान करता है।
उपर्युक्त संयोजनों में से कौन-सा सही है?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल I, III और IV
(C) केवल II, III और IV
(D) I, II, III और IV

67. राजस्थान में रूफटॉप सोलर सेटअप के लिए लागू "नेट मीटरिंग" नीति का सबसे सटीक विवरण निम्नलिखित में से कौन-सा है?
(A) ग्रिड को आपूर्ति की गई सौर ऊर्जा का समायोजन करके उपभोक्ता को शुद्ध बिजली का बिल देना।
(B) उत्पादित सभी सौर ऊर्जा को सीधे एक निश्चित दर पर राज्य डिस्कॉम को बेचना अनिवार्य करना।
(C) उपभोग की गई सौर ऊर्जा की परवाह किए बिना एक निश्चित मासिक शुल्क का भुगतान करना।
(D) आवासीय सौर उपभोक्ता को मुख्य बिजली ग्रिड से पूर्णतः अलग करना।

Click Here to Buy book on Amazon

उपर्युक्त संयोजनों में से कौन-सा सही है?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल I, III और IV
(C) केवल II, III और IV
(D) I, II, III और IV

89. राजस्थान में PM KUSUM योजना के घटक C के अंतर्गत, सरकार कृषि पंपों के सौरीकरण पर ध्यान केंद्रित करती है। इस घटक के अंतर्गत किसान के लिए मुख्य वित्तीय लाभ क्या है?
(A) किसान को सीधे राज्य बिजली वितरण बोर्ड से एक निश्चित मासिक वेतन मिलता है
(B) किसान को सभी भू-कर और कृषि आयकर के भुगतान से छूट दी जाती है
(C) कृषि जनरेटर चलाने के लिए किसान को निःशुल्क डीजल का आवंटन मिलता है
(D) डिस्कॉम को अधिशेष सौर ऊर्जा बेचकर अतिरिक्त आय अर्जित करना

90. भड़ला सोलर पार्क विकास के चार चरणों को उनकी निर्दिष्ट स्थापित क्षमताओं (सबसे कम क्षमता से उच्चतम क्षमता) के आधार पर आरोही क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. चरण I (RSDCL द्वारा विकसित)
2. चरण II (RSDCL द्वारा विकसित)
3. चरण III (SUCRL द्वारा विकसित)
4. चरण IV (AREPRL द्वारा विकसित)

नीचे दिए गए विकल्पों में से कौन-सा सही अनुक्रम का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) 1, 2, 4, 3
(B) 1, 4, 2, 3
(C) 4, 1, 2, 3
(D) 1, 2, 3, 4

NODIA

(B) उच्च नमी वाले पीट निक्षेप
(C) मध्यम श्रेणी का बिटुमिनस कोयला
(D) उच्च श्रेणी का एंथ्रेसाइट कोयला

78. सूरतगढ़ सुपर थर्मल पावर स्टेशन को उसकी परिचालन आवश्यकताओं के लिए आपूर्ति किए जाने वाले जल का प्राथमिक स्रोत निम्नलिखित में से कौन-सा है?
(A) लूनी नदी बेसिन का मौसमी प्रवाह
(B) चंबल नदी से बारहमासी प्रवाह
(C) आईजीएनपी (IGNP) नहर नेटवर्क
(D) बीसलपुर बांध का जलाशय

79. राजस्थान सोलर पार्क डेवलपमेंट कंपनी लिमिटेड द्वारा विकसित नोख सोलर पार्क को किस कुल स्थापित क्षमता के लिए डिज़ाइन किया गया है?
(A) 500 MW
(B) 925 MW
(C) 1500 MW
(D) 2245 MW

80. रावतभाटा स्थित राजस्थान परमाणु ऊर्जा स्टेशन (RAPS) की प्रथम इकाई ने वर्ष 1973 में व्यावसायिक संचालन प्रारंभ किया था। इसका निर्माण किस देश के तकनीकी सहयोग से किया गया था?
(A) संयुक्त राज्य अमेरिका
(B) सोवियत संघ (रूस)
(C) कनाडा
(D) फ्रांस

81. तापीय विद्युत उत्पादन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन (A) : तापीय विद्युत राजस्थान के पावर ग्रिड में पूरी तरह से कार्बन-न्यूट्रल ऊर्जा स्रोत है।
कारण (R) : राजस्थान में सुपरक्रिटिकल थर्मल पावर प्लांट पुराने सबक्रिटिकल प्लांटों की तुलना में लिग्नाइट को अधिक कुशलता से जलाने के लिए उन्नत तकनीक का उपयोग करते हैं।
निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प सही है?
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

82. नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ विंड एनर्जी (NIWE) के आकलनों के अनुसार, 120 मीटर की हब ऊँचाई पर राजस्थान की अनुमानित पवन ऊर्जा क्षमता कितनी है?
(A) ~18 GW
(B) ~50 GW
(C) ~142 GW
(D) ~500 GW

83. राजस्थान में तीसरी पवन ऊर्जा परियोजना वर्ष 2003 में जोधपुर जिले में चालू की गई थी। इस स्थान का नाम क्या है?
(A) बिठड़ी
(B) फलोदी
(C) ओसियां
(D) पीपाड़

84. राजस्थान में परमाणु ऊर्जा उत्पादन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. तारापुर के बाद रावतभाटा स्थल भारत का दूसरा परमाणु ऊर्जा स्टेशन है।
II. राजस्थान के पास महत्वपूर्ण स्वदेशी यूरेनियम भंडार हैं जिनका वर्तमान में रोहिल (खंडेला, सीकर) में खनन किया जा रहा है।
III. रावतभाटा में परिचालन परमाणु रिएक्टरों को विशेष रूप से समुद्री जल का उपयोग करके ठंडा किया जाता है।
उपर्युक्त संयोजनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

85. पोंग बांध (व्यास परियोजना) से उत्पादित बिजली में राजस्थान का विशिष्ट प्रतिशत हिस्सा कितना है?
(A) 15.22%
(B) 20.00%
(C) 58.50%
(D) 100.00%

86. राजस्थान पवन और हाइब्रिड ऊर्जा नीति 2019 ने 2024-25 तक पवन-सौर हाइब्रिड ऊर्जा परियोजनाओं की किस विशिष्ट क्षमता की स्थापना का लक्ष्य रखा था?
(A) 1000 MW
(B) 2500 MW
(C) 3500 MW
(D) 5000 MW

87. राजस्थान में कौन-सा सरकारी विभाग या निदेशालय पेट्रोलियम अन्वेषण, उत्पादन निगरानी और हाइड्रोकार्बन नीतियों पर सरकार को सलाह देने के लिए नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करता है?
(A) खान एवं भूविज्ञान निदेशालय (DMG)
(B) पेट्रोलियम निदेशालय (DoP), राजस्थान
(C) राजस्थान राज्य खान एवं खनिज लिमिटेड (RSMML)
(D) राजस्थान रीन्यूएबल एनर्जी कॉर्पोरेशन लिमिटेड (RREC)

88. राजस्थान के अंतर्गत स्थित निम्नलिखित प्रमुख पेट्रोलियम युक्त अवसादी बेसिनों पर विचार कीजिए:
I. बाड़मेर-सांचौर बेसिन
II. जैसलमेर बेसिन
III. बीकानेर-नागौर बेसिन
IV. विंध्यन बेसिन

Downloaded from www.pdf.tube

34. (C) प्रत्येक 700 MW
चित्तौड़गढ़ जिले के रावतभाटा में स्थित राजस्थान परमाणु ऊर्जा स्टेशन के चरण III का विस्तार किया जा रहा है। इस योजना के अंतर्गत इकाई 7 और इकाई 8 का निर्माण किया जा रहा है, जिनकी व्यक्तिगत क्षमता 700 मेगावाट है। ये इकाइयाँ स्वदेशी दाबित भारी जल रिएक्टर तकनीक पर आधारित हैं, जो परमाणु ऊर्जा क्षमता में भारी वृद्धि करने में सक्षम होंगी।

35. (B) 15.22%
भाखड़ा नांगल बहुउद्देशीय नदी घाटी परियोजना पंजाब, हरियाणा और राजस्थान राज्यों की एक संयुक्त अंतरराज्यीय जल परियोजना है। इस परियोजना के तहत उत्पादित जल विद्युत और जल बंटवारे में राजस्थान का आधिकारिक रूप से आवंटित हिस्सा 15.22 प्रतिशत है। राजस्थान इस आवंटित बिजली का उपयोग अपने उत्तरी जिलों में बिजली आपूर्ति की आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु करता है।

36. (C) अक्षय ऊर्जा की परिवर्तनशीलता को कम करना और पारेषण ग्रिड के उपयोग को अनुकूलित करना
राजस्थान में "पवन-सौर हाइब्रिड" ऊर्जा परियोजनाओं को बढ़ावा देने का प्राथमिक उद्देश्य पवन और सौर ऊर्जा की आंतरायिक तथा परिवर्तनशील प्रकृति को संतुलित करना है। चूंकि सौर ऊर्जा दिन के समय और पवन ऊर्जा प्रायः रात में अधिक उत्पादित होती है, इसलिए दोनों का सह-संयोजन बिजली का सतत प्रवाह बनाए रखता है और पारेषण क्षमता के उपयोग को अनुकूलित करता है।

37. (A) विश्वसनीय बिजली आपूर्ति के लिए कृषि और गैर-कृषि फीडरों का पृथक्करण करना
दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना के अंतर्गत राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों में विद्युत वितरण नेटवर्क के सुदृढ़ीकरण हेतु कृषि और गैर-कृषि फीडरों का पृथक्करण मुख्य सुधार था। इस पृथक्करण से ग्रामीण घरों को 24 घंटे बिजली आपूर्ति सुनिश्चित हुई, जबकि किसानों को सिंचाई हेतु निश्चित समय पर गुणवत्तापूर्ण बिजली मिलना संभव हो पाया, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बल मिला।

38. (D) I, II और III
राजस्थान में संचालित पीएम कुसुम योजना के तीनों घटक अपनी परिभाषा में सही हैं। घटक A का उद्देश्य बंजर भूमि पर विकेंद्रीकृत ग्रिड-संबद्ध सौर संयंत्र स्थापित करना है। घटक B के तहत पृथक सौर पंप स्थापित किए जाते हैं। घटक C के अंतर्गत मौजूदा कृषि पंपों का सौरीकरण किया जाता है ताकि किसान अधिशेष बिजली डिस्कॉम को बेचकर अतिरिक्त आय कमा सकें।

39. (C) 2004
राजस्थान के बाड़मेर जिले में स्थित प्रसिद्ध मंगला तेल क्षेत्र की खोज जनवरी 2004 में केयर्न एनर्जी द्वारा की गई थी। यह खोज स्वतंत्र भारत में हाइड्रोकार्बन अन्वेषण के इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण सफलताओं में से एक मानी जाती है। मंगला क्षेत्र से व्यावसायिक उत्पादन वर्ष 2009 में शुरू हुआ, जिसने राजस्थान को प्रमुख तेल उत्पादक राज्य के रूप में स्थापित कर दिया।

40. (C) जैसलमेर
रामगढ़ गैस थर्मल पावर स्टेशन राजस्थान के जैसलमेर जिले में स्थित है। यह राज्य विद्युत उत्पादन निगम द्वारा संचालित पहला प्राकृतिक गैस आधारित संयंत्र है। इस स्टेशन को ईंधन आपूर्ति जैसलमेर बेसिन के स्थानीय गैस क्षेत्रों से प्राप्त गैस द्वारा की जाती है। यह संयंत्र पश्चिमी राजस्थान में ग्रिड स्थिरता बनाए रखने में महत्वपूर्ण योगदान निरंतर देता आ रहा है।

NODIA

41. (C) 2002
राजस्थान रीन्यूएबल एनर्जी कॉर्पोरेशन लिमिटेड का गठन अगस्त 2002 में कंपनी अधिनियम के तहत किया गया था। यह संस्था REDA और RSPCL के विलय के परिणामस्वरूप अस्तित्व में आई थी। RREC राजस्थान में नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों को बढ़ावा देने, नीतियां लागू करने तथा परियोजनाओं की नोडल मंजूरी प्रदान करने हेतु मुख्य राज्य एजेंसी के रूप में निरंतर कार्य करती है।

42. (A) रावतभाटा परमाणु ऊर्जा स्टेशन - नेशनल थर्मल पावर कॉर्पोरेशन (NTPC)
रावतभाटा स्थित राजस्थान परमाणु ऊर्जा स्टेशन का संचालन NTPC द्वारा नहीं बल्कि न्यूक्लियर पावर कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (NPCIL) द्वारा किया जाता है। अन्य सभी युग्म सही हैं क्योंकि बरसिंगसर संयंत्र एनएलसी इंडिया, सूरतगढ़ संयंत्र RVUNL तथा अंता गैस संयंत्र एनटीपीसी के स्वामित्व और नियंत्रण में सफलता पूर्वक संचालित होते हैं, अतः पहला युग्म असत्य सिद्ध होता है।

43. (A) केवल I, II और IV
राजस्थान निवेश प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत अक्षय ऊर्जा डेवलपर्स को स्टाम्प शुल्क में 100% छूट, विद्युत शुल्क से मुक्ति तथा भूमि कर से पूर्ण छूट जैसे प्रोत्साहन प्रदान किए जाते हैं। हालांकि, सभी निजी डेवलपर्स को परियोजना लागत के 80% की सब्सिडी देने का प्रावधान नहीं है, इसलिए तीसरा कथन गलत है तथा अन्य सभी कथन सत्य और प्रमाणिक सिद्ध होते हैं।

44. (B) राजस्थान राज्य विद्युत प्रसारण निगम लिमिटेड (RVPNL)
राजस्थान राज्य विद्युत प्रसारण निगम लिमिटेड राज्य की संस्था है जो अति-उच्च वोल्टेज विद्युत पारेषण अवसंरचना के निर्माण, संचालन और रखरखाव के लिए उत्तरदायी है। वर्ष 2000 में पुनर्गठन के बाद गठित RVPNL राज्य के भीतर पारेषण प्रणाली का प्रबंधन करता है और अक्षय ऊर्जा पार्कों को मुख्य ग्रिड से जोड़ने हेतु बुनियादी ढांचा तैयार करने में मुख्य भूमिका निभाता है।

45. (A) परिवर्तनशील अक्षय ऊर्जा उत्पादन के कारण ग्रिड की अस्थिरता
राजस्थान में सौर और पवन ऊर्जा के वृहद् स्तर पर एकीकरण के कारण ग्रिड ऑपरेटरों के सामने सबसे बड़ी तकनीकी चुनौती

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) सौर ऊर्जा
राजस्थान में वर्तमान समय में अक्षय ऊर्जा स्रोतों में सौर ऊर्जा की स्थापित विद्युत उत्पादन क्षमता सर्वाधिक है। राज्य की भौगोलिक स्थिति, प्रचुर धूप और विशाल थार मरुस्थल की भूमि इसे सौर ऊर्जा उत्पादन के लिए अत्यंत अनुकूल बनाती है। सरकारी नीतियों और बड़े सौर पार्कों के विकास के कारण सौर ऊर्जा क्षमता ने पवन ऊर्जा, बायोमास और लघु जल विद्युत जैसे अन्य पारंपरिक और नवीकरणीय स्रोतों को काफी पीछे छोड़ दिया है।

2. (D) लिग्नाइट (भूरा कोयला)
बाड़मेर जिले में स्थित कपूरड़ी और जालीपा खनन क्षेत्र राजस्थान के ऊर्जा तंत्र के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण माने जाते हैं। ये क्षेत्र मुख्य रूप से लिग्नाइट अर्थात भूरे कोयले के निष्कर्षण के लिए प्रसिद्ध हैं। इन खानों से निकाला गया लिग्नाइट स्थानीय तापीय विद्युत संयंत्रों को निरंतर ईंधन आपूर्ति सुनिश्चित करता है। राजस्थान में टर्शियरी काल के लिग्नाइट निक्षेप पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं, जो ऊर्जा सुरक्षा प्रदान करते हैं।

3. (A) मेड़ता रोड - जोधपुर
राजस्थान में मेड़ता रोड लिग्नाइट खनन क्षेत्र जोधपुर जिले में नहीं बल्कि नागौर जिले में स्थित है। नागौर जिले में मेड़ता रोड के अलावा कसनाऊ और इग्यार जैसे महत्वपूर्ण लिग्नाइट भंडार मौजूद हैं। दूसरी ओर बरसिंगसर और गुढ़ा खनन क्षेत्र बीकानेर जिले में तथा गिरल खनन क्षेत्र बाड़मेर जिले में स्थित हैं। राजस्थान में टर्शियरी कालीन लिग्नाइट के प्रमुख निक्षेप बाड़मेर, बीकानेर और नागौर जिलों में हैं।

4. (C) गिरल लिग्नाइट थर्मल पावर स्टेशन
बाड़मेर जिले में स्थित गिरल लिग्नाइट थर्मल पावर स्टेशन एक सबक्रिटिकल पावर प्लांट है जो सर्कुलेटिंग फ्लुइडाइज्ड बेड कंबशन तकनीक पर आधारित है, यह सुपर क्रिटिकल श्रेणी में नहीं आता है। इसके विपरीत सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर), छबड़ा (बारां) और कालीसिंध (झालावाड़) राजस्थान में स्थापित सुपर क्रिटिकल थर्मल पावर स्टेशन हैं। सुपर क्रिटिकल तकनीक में जल को उच्च ताप पर वाष्पित करके अधिक दक्षता प्राप्त की जाती है।

5. (A) P-4, Q-3, R-2, S-1
राजस्थान की प्रमुख ऊर्जा परियोजनाओं का उनके संबंधित स्थानों से सही संबंध इस प्रकार है। अमरसागर पवन ऊर्जा संयंत्र जैसलमेर जिले में स्थित है और यह राज्य की पहली पवन ऊर्जा परियोजना थी। रावतभाटा परमाणु ऊर्जा संयंत्र चित्तौड़गढ़ जिले में स्थित है। अंता गैस आधारित तापीय विद्युत संयंत्र बारां जिले में स्थित केंद्रीय क्षेत्र का उपक्रम है। सूरतगढ़ तापीय विद्युत संयंत्र श्रीगंगानगर जिले में स्थित है।

6. (D) उच्च प्रत्यक्ष सामान्य विकिरण (DNI) और प्रतिवर्ष 325 से अधिक धूप वाले साफ़ दिन
राजस्थान में उच्च प्रत्यक्ष सामान्य विकिरण अर्थात डायरेक्ट नॉर्मल इरैडिएंस और प्रतिवर्ष 325 से अधिक धूप वाले साफ़ दिन उपलब्ध रहते हैं। थार मरुस्थल की शुष्क जलवायु, न्यूनतम बादल और कम आर्द्रता सौर किरणों के अवशोषण को अधिकतम बनाती हैं। ये अद्वितीय भौगोलिक और जलवायु संबंधी परिस्थितियाँ राज्य को सौर ऊर्जा उत्पादन के लिए विश्व के सबसे उपयुक्त क्षेत्रों में से एक बनाती हैं, जहाँ सतत विकास संभव है।

7. (C) 2245 MW
राजस्थान के जोधपुर जिले में स्थित भड़ला सोलर पार्क की कुल स्थापित क्षमता 2245 मेगावाट है। यह विश्व के सबसे बड़े एकल-स्थान सौर पार्कों में गिना जाता है। इस विशाल परियोजना को चार अलग-अलग चरणों में विकसित किया गया है जिसमें विभिन्न राज्य एजेंसियों तथा निजी संस्थाओं की भागीदारी रही है। भड़ला पार्क राजस्थान को भारत में सौर ऊर्जा उत्पादन का शीर्ष केंद्र बनाता है।

8. (C) कम सतह खुरदरापन वाला समतल मरुस्थलीय भूभाग जो उच्च पवन गति को सुगम बनाता है
पूर्वी या पहाड़ी क्षेत्रों की तुलना में पश्चिमी राजस्थान का धरातल अत्यंत समतल और खुला मरुस्थलीय भूभाग है जहाँ सतह की खुरदरापन बहुत कम होती है। यह भौगोलिक बनावट हवा के प्रवाह में रुकावटों को न्यूनतम करती है, जिससे पवन की गति तेज, निरंतर और निर्बाध बनी रहती है। कम घर्षण और तेज पवन गति व्यावसायिक पवन टर्बाइनों के संचालन हेतु आदर्श वातावरण प्रदान करती है।

9. (D) अमरसागर, जैसलमेर
राजस्थान की प्रथम पवन ऊर्जा परियोजना वर्ष 1999 में जैसलमेर जिले के अमरसागर स्थान पर स्थापित की गई थी। इस परियोजना की शुरुआती क्षमता 2 मेगावाट थी, जिसने राज्य में व्यावसायिक पवन ऊर्जा उत्पादन का मार्ग प्रशस्त किया। अमरसागर की सफलता के बाद पश्चिमी राजस्थान में पवन ऊर्जा का तेजी से विस्तार हुआ। जैसलमेर की अनुकूल पवन गति ने इसे प्रमुख केंद्र बना दिया है।

10. (C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
रावतभाटा स्थित राजस्थान परमाणु ऊर्जा स्टेशन मुख्य रूप से दाबित भारी जल रिएक्टरों का उपयोग करता है, इसलिए पहला कथन पूर्णतः सत्य है। हालांकि, दाबित भारी जल रिएक्टर प्राकृतिक यूरेनियम को ईंधन के रूप में और भारी जल को न्यूट्रॉन मंदक तथा शीतलक के रूप में उपयोग करते हैं, न कि समृद्ध यूरेनियम और साधारण हल्के जल को। अतः कारण संबंधी विवरण पूरी तरह गलत है।

Click Here to Buy book on Flipkart

की स्थापना करना है। रीपावरिंग के माध्यम से बिना अतिरिक्त भूमि का उपयोग किए उन्हीं स्थानों से पवन ऊर्जा उत्पादन को कई गुना तक बढ़ाया जा सकता है। यह एक महत्वपूर्ण नीतिगत सुधार माना गया है।

58. (A) देवगढ़, प्रतापगढ़
वर्ष 1999 में अमरसागर में राज्य के पहले पवन ऊर्जा संयंत्र की स्थापना के पश्चात, वर्ष 2001 में राजस्थान की दूसरी पवन ऊर्जा परियोजना प्रतापगढ़ जिले के देवगढ़ में स्थापित की गई थी। देवगढ़ की अनुकूल हवा के प्रवाह ने इसे पवन ऊर्जा उत्पादन हेतु एक उपयुक्त स्थल बनाया। इसके बाद जोधपुर के बिठड़ी में अगला संयंत्र सफलता पूर्वक स्थापित हुआ।

59. (B) स्वदेशी 700 MW दाबित भारी जल रिएक्टर (PHWR)
न्यूक्लियर पावर कॉर्पोरेशन द्वारा राजस्थान के बांसवाड़ा जिले में प्रस्तावित "माही बांसवाड़ा परमाणु ऊर्जा परियोजना" के लिए स्वदेशी 700 मेगावाट क्षमता वाले दाबित भारी जल रिएक्टरों (PHWR) की योजना बनाई गई है। इस परियोजना के तहत 700 मेगावाट की चार इकाइयों की स्थापना की जाएगी जो भविष्य की आवश्यकताओं को पूरा करने में मदद करेंगी और राज्य को ऊर्जा आत्मनिर्भर बनाएंगी।

60. (B) मध्य प्रदेश
चंबल घाटी बहुउद्देशीय परियोजना राजस्थान और मध्य प्रदेश राज्यों की एक 50:50 की संयुक्त भागीदार परियोजना है। इस परियोजना के अंतर्गत चंबल नदी पर निर्मित बांधों पर स्थित जल विद्युत गृहों से उत्पादित पूरी बिजली का बंटवारा दोनों राज्यों के बीच समान रूप से आधा-आधा किया जाता है। यह अंतरराज्यीय सहयोग का एक उत्कृष्ट उदाहरण माना जाता है जो सफल रहा है।

61. (B) केवल I और III
राजस्थान सौर ऊर्जा नीति 2019 ने वर्ष 2024-25 तक 30 गीगावाट सौर क्षमता का लक्ष्य रखा और बिजली शुल्क पर 100% छूट दी, अतः पहला और तीसरा कथन सही हैं। हालांकि, नीति ने निजी डेवलपर्स पर कोई रोक नहीं लगाई, बल्कि निजी पार्कों को प्रोत्साहित किया, इसलिए दूसरा कथन असत्य है। इसका उद्देश्य निजी निवेश को व्यापक स्तर पर बढ़ाना था।

62. (C) रिवैम्प्ड डिस्ट्रीब्यूशन सेक्टर स्कीम (RDSS)
केंद्र सरकार की "रिवैम्प्ड डिस्ट्रीब्यूशन सेक्टर स्कीम" (RDSS) का मुख्य उद्देश्य डिस्कॉम्स की परिचालन दक्षता और वित्तीय स्थिरता में सुधार करना है। राजस्थान में इस योजना के माध्यम से स्मार्ट मीटरिंग, वितरण बुनियादी ढांचे के सुदृढ़ीकरण और वितरण हानियों को कम करने के कार्य किए जा रहे हैं ताकि बिजली कंपनियों को सुदृढ़ तथा वित्तीय रूप से सक्षम बनाया जा सके।

63. (D) यह सौर योजनाओं को लागू करने, नीलामी आयोजित करने और बिजली का व्यापार करने वाली केंद्रीय नोडल एजेंसी है।
सोलर एनर्जी कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया (SECI) भारत सरकार के मंत्रालय के अंतर्गत कार्यरत एक केंद्रीय उपक्रम है। राजस्थान में SECI सौर मिशन की योजनाओं को लागू करने, प्रतिस्पर्धी शुल्क नीलामी आयोजित करने, बिजली खरीद समझौते करने तथा विभिन्न राज्यों को बिजली बेचने के लिए केंद्रीय नोडल एजेंसी के रूप में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती है।

64. (B) HPCL 74%, राजस्थान सरकार 26%
राजस्थान के बाड़मेर जिले के पचपदरा में स्थापित HRRL एक संयुक्त उद्यम कंपनी है। इसमें हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड और राजस्थान सरकार की इक्विटी भागीदारी का अनुपात क्रमशः 74% और 26% है। यह कॉम्प्लेक्स राज्य की पहली ऐसी परियोजना है जो कच्चे तेल शोधन के साथ पेट्रोकेमिकल उत्पादों का निर्माण भी करेगी, जिससे क्षेत्र का तीव्र औद्योगिक विकास संभव हो सकेगा।

NODIA

65. (B) कोल बेड मीथेन (Coal Bed Methane)
पेट्रोलियम और गैस उद्योग में CBM का पूर्ण रूप "कोल बेड मीथेन" है। यह प्राकृतिक गैस का एक अपरंपरागत रूप है जो कोयले या लिग्नाइट की परतों में पाया जाता है। राजस्थान के बीकानेर और बाड़मेर जिलों में विस्तृत लिग्नाइट निक्षेपों के कारण राज्य में इसके दोहन की भारी संभावनाएं मौजूद हैं जिनका उपयोग स्वच्छ ऊर्जा उत्पादन के लिए किया जा सकता है।

66. (B) केवल I, III और IV
राजस्थान रीन्यूएबल एनर्जी कॉर्पोरेशन लिमिटेड राज्य नोडल एजेंसी है, जो राज्य की सौर व पवन नीतियों को लागू करती है तथा परियोजनाओं के पंजीकरण व स्वीकृति की सुविधा प्रदान करती है। हालांकि, तापीय और परमाणु संयंत्रों का संचालन इसका कार्य नहीं है, अतः दूसरा कथन गलत है तथा शेष तीनों कथन सत्य और सही सिद्ध होते हैं जो नीतिगत ढांचा बताते हैं।

67. (A) ग्रिड को आपूर्ति की गई सौर ऊर्जा का समायोजन करके उपभोक्ता को शुद्ध बिजली का बिल देना।
राजस्थान में रूफटॉप सोलर के लिए लागू "नेट मीटरिंग" प्रणाली के अंतर्गत एक द्वि-दिशामुक्त मीटर लगाया जाता है। यह मीटर ग्रिड से ली गई बिजली और ग्रिड में भेजी गई अधिशेष सौर बिजली दोनों को मापता है। महीने के अंत में आपूर्ति और उपभोग का समायोजन करके केवल शुद्ध बिजली का बिल ही उपभोक्ता को थमाया जाता है जो पारदर्शी है।

68. (C) वृहद् अक्षय ऊर्जा निवेशों के लिए अनुकूलित वित्तीय रियायतें प्रदान करना
राजस्थान में बोर्ड ऑफ इन्वेस्टमेंट वृहद् अक्षय ऊर्जा परियोजनाओं को आकर्षित करने के लिए अनुकूलित वित्तीय प्रोत्साहन पैकेज स्वीकृत करता है। इन पैकेजों का मुख्य उद्देश्य बड़े अक्षय ऊर्जा निवेशों के लिए कर छूट, सब्सिडी, भूमि आवंटन और अवसंरचनात्मक सहायता प्रदान करना है ताकि राज्य में पूंजी निवेश को बड़े पैमाने पर प्रोत्साहित किया जा सके और आर्थिक वृद्धि हो सके।

22. (D) सरसों की तूड़ी (भूसी) और विलायती बबूल (जूलीफ्लोरा)
ग्रामीण राजस्थान में कार्यरत बायोमास बिजली संयंत्रों में ईंधन के रूप में मुख्य रूप से सरसों की तूड़ी अर्थात भूसी और खरपतवार के रूप में फैलने वाले विलायती बबूल का उपयोग किया जाता है। राजस्थान भारत में सरसों का सबसे बड़ा उत्पादक राज्य है, जिससे भारी मात्रा में कृषि अपशिष्ट उपलब्ध होता है। इस जैविक अपशिष्ट का दहन करके बायोमास से नवीकरणीय विद्युत बनाई जाती है।

23. (B) प्रथम
कुल स्थापित सौर ऊर्जा क्षमता के संदर्भ में भारतीय राज्यों में राजस्थान प्रथम स्थान पर स्थित है। राज्य में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध सौर विकिरण, प्रतिवर्ष औसतन 325 से अधिक धूप वाले दिन और विशाल थार मरुस्थल की बंजर भूमि की उपलब्धता ने इसे देश का सबसे बड़ा सौर ऊर्जा उत्पादक राज्य बना दिया है। भड़ला जैसे बड़े पार्कों ने इसे शीर्ष पर पहुंचाया है।

24. (C) राजस्थान रीन्यूएबल एनर्जी कॉर्पोरेशन लिमिटेड (RREC)
अडानी रीन्यूएबल एनर्जी पार्क राजस्थान लिमिटेड एक संयुक्त उद्यम कंपनी है जिसे अडानी ग्रीन एनर्जी और राजस्थान रीन्यूएबल एनर्जी कॉर्पोरेशन लिमिटेड के बीच साझेदारी में गठित किया गया है। इस संयुक्त उद्यम में अडानी समूह की 50% तथा राजस्थान सरकार की संस्था RREC की 50% इक्विटी हिस्सेदारी है। यह कंपनी राजस्थान में सौर पार्कों के विकास एवं संचालन का प्रबंधन कुशलता से करती है।

25. (A) सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, बायोमास ऊर्जा, लघु जल विद्युत
राजस्थान में कुल स्थापित क्षमता के आधार पर अक्षय ऊर्जा स्रोतों का सही घटता क्रम सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, बायोमास ऊर्जा और लघु जल विद्युत है। राज्य में प्रचुर धूप और विशाल भूभाग के कारण सौर ऊर्जा प्रथम स्थान पर है, जिसके बाद पवन ऊर्जा दूसरे स्थान पर आती है। बायोमास तीसरे तथा लघु जल विद्युत क्षमता सबसे अंतिम स्थान पर आती है।

26. (A) राजस्थान कोई स्थानीय तापीय विद्युत संयंत्र संचालित नहीं करता है, और 100% बिजली का आयात करता है।
यह कहना गलत है कि राजस्थान कोई स्थानीय तापीय विद्युत संयंत्र संचालित नहीं करता और पूरी बिजली आयात करता है। वास्तविकता यह है कि राजस्थान सूरतगढ़, छबड़ा, कोटा और कालीसिंध में बड़े थर्मल पावर प्लांट संचालित करता है। इसके अतिरिक्त, बाड़मेर तथा बीकानेर के स्थानीय लिग्नाइट निक्षेप भी तापीय विद्युत उत्पादन में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं तथा बेस-लोड आपूर्ति सुनिश्चित करते हैं।

27. (B) सर्कुलेटिंग फ्लुइडाइज्ड बेड कंबशन (CFBC)
बाड़मेर जिले में स्थित गिरल लिग्नाइट थर्मल पावर प्रोजेक्ट राजस्थान का पहला ऐसा विद्युत संयंत्र है जो सर्कुलेटिंग फ्लुइडाइज्ड बेड कंबशन (CFBC) तकनीक का उपयोग करता है। यह उन्नत तकनीक विशेष रूप से उच्च आर्द्रता और सल्फर सामग्री वाले निम्न श्रेणी के लिग्नाइट कोयले को कुशलतापूर्वक जलाने के लिए बनाई गई है, जिससे हानिकारक गैसों का उत्सर्जन काफी हद तक नियंत्रित रहता है।

28. (B) P-2, Q-1, R-3, S-4
राजस्थान में ऊर्जा योजनाओं और उनके प्राथमिक क्षेत्रों का सही मिलान इस प्रकार है। पीएम कुसुम योजना का ध्यान कृषि पंपों के सौरीकरण पर केंद्रित है। पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना का मुख्य उद्देश्य आवासीय छतों पर सौर पैनल लगाना है। सौभाग्य योजना का लक्ष्य सार्वभौमिक घरेलू बिजली देना था, जबकि डीडीयूजीजेवाई योजना ग्रामीण नेटवर्क में कृषि और गैर-कृषि फीडरों के पृथक्करण हेतु लागू की गई थी।

29. (A) यह जल के क्रिटिकल तापमान और दाब से ऊपर कार्य करता है, जिससे दक्षता बढ़ती है।
तापीय विद्युत उत्पादन में एक "सुपरक्रिटिकल" पावर प्लांट वह होता है जो जल के क्रिटिकल बिंदु से ऊपर के ताप और दाब पर कार्य करता है। इस स्थिति में जल बिना उबले सीधे भाप में परिवर्तित हो जाता है। इसके परिणामस्वरूप संयंत्र की तापीय दक्षता में वृद्धि होती है, ईंधन की खपत घटती है और प्रति यूनिट कार्बन उत्सर्जन काफी कम होता है।

30. (C) बीकानेर
पश्चिमी राजस्थान में अत्यधिक सौर ऊर्जा क्षमता का लाभ उठाने के लिए गठित "सोलर एंटरप्राइज ज़ोन" के अंतर्गत मुख्य रूप से तीन जिले जोधपुर, जैसलमेर और बाड़मेर शामिल हैं। बीकानेर जिला इस विशिष्ट सोलर एंटरप्राइज ज़ोन का हिस्सा नहीं माना जाता है, यद्यपि बीकानेर में भी विशाल सौर परियोजनाएं स्थित हैं। इस ज़ोन का उद्देश्य निवेश को अधिक से अधिक आकर्षित करना था।

31. (D) सौर्य ऊर्जा कंपनी ऑफ राजस्थान लिमिटेड (SUCRL)
जोधपुर जिले में स्थित भड़ला सोलर पार्क के चरण III (1000 मेगावाट) का विकास "सौर्य ऊर्जा कंपनी ऑफ राजस्थान लिमिटेड" द्वारा किया गया था। यह कंपनी राजस्थान सरकार की एजेंसी RREC और IL&FS के बीच गठित एक संयुक्त उद्यम है। इस निकाय ने चरण III के लिए आवश्यक बुनियादी ढांचे और पारेषण लाइनों का सफलतापूर्वक विकास करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

32. (B) 4000 MW
राजस्थान पवन और हाइब्रिड ऊर्जा नीति 2019 को राज्य में पवन संसाधनों के दोहन को गति देने के लिए लागू किया गया था। इस नीति के अंतर्गत वित्तीय वर्ष 2024-25 तक केवल पवन ऊर्जा क्षेत्र में 4,000 मेगावाट की अतिरिक्त क्षमता स्थापित करने का लक्ष्य रखा गया था। इस नीति का उद्देश्य डेवलपर्स को वित्तीय रियायतें एवं आवश्यक सुविधाएं प्रदान करना था।

33. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या है।
जैसलमेर जिले को निर्विवाद रूप से राजस्थान की "पवन ऊर्जा राजधानी" माना जाता है। इसका मुख्य कारण यह है कि जैसलमेर में एक अत्यधिक विशाल, समतल और खुला मरुस्थलीय भूभाग मौजूद है जहाँ हवा बिना रुकावट के उच्च गति से बहती है। यह विशेषता वाणिज्यिक पवन टर्बाइनों के संचालन हेतु उत्कृष्ट वातावरण प्रदान करती है, अतः दोनों कथन और कारण पूर्णतः सही ठहरते हैं।

NODIA

11. (B) राजस्थान
माही बजाज सागर परियोजना राजस्थान और गुजरात राज्यों की एक संयुक्त अंतरराज्यीय बहुउद्देशीय नदी घाटी परियोजना है। इस परियोजना के अंतर्गत निर्मित जलविद्युत संयंत्रों से उत्पादित पूरी 100% बिजली का आवंटन और उपभोग विशेष रूप से केवल राजस्थान राज्य द्वारा किया जाता है। यद्यपि सिंचाई के जल का बंटवारा दोनों राज्यों के मध्य होता है, परंतु उत्पादित जलविद्युत पर एकमात्र अधिकार राजस्थान का ही है।

12. (B) 30 GW
राजस्थान सौर ऊर्जा नीति 2019 का मुख्य उद्देश्य राज्य को वैश्विक स्तर पर सौर ऊर्जा का अग्रणी उत्पादक बनाना था। इस नीति ने वित्तीय वर्ष 2024-25 तक 30 गीगावाट अर्थात 30,000 मेगावाट की कुल सौर ऊर्जा क्षमता स्थापित करने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया था। इस लक्ष्य में उपयोगिता स्तर के सौर पार्क तथा रूफटॉप प्रणालियों का विकास विशेष रूप से शामिल किया गया था।

13. (A) प्रधानमंत्री सहज बिजली हर घर योजना (सौभाग्य)
प्रधानमंत्री सहज बिजली हर घर योजना, जिसे संक्षिप्त रूप से सौभाग्य योजना कहा जाता है, केंद्र सरकार की एक प्रमुख पहल थी। इसका प्राथमिक उद्देश्य देश और राज्य के ग्रामीण तथा शहरी दोनों क्षेत्रों में सभी शेष गैर-विद्युतीकृत परिवारों को अंतिम छोर तक कनेक्टिविटी प्रदान करके सार्वभौमिक घरेलू विद्युतीकरण का लक्ष्य हासिल करना था। इसने राजस्थान के दुर्गम इलाकों को रोशन करने में मदद की।

14. (C) 2 MW तक के विकेंद्रीकृत भू-स्थापित ग्रिड-संबद्ध सौर संयंत्रों की स्थापना
पीएम कुसुम योजना के घटक A का विशिष्ट उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में किसानों, पंचायतों या सहकारी समितियों द्वारा बंजर या अप्रयुक्त भूमि पर 500 किलोवाट से लेकर 2 मेगावाट क्षमता तक के विकेंद्रीकृत भू-स्थापित ग्रिड-संबद्ध सौर ऊर्जा संयंत्रों की स्थापना करना है। उत्पन्न हरित विद्युत को स्थानीय डिस्कॉम को बेचा जाता है, जिससे किसानों को नियमित अतिरिक्त आय प्राप्त होती है तथा वितरण तंत्र सुदृढ़ होता है।

15. (D) I, II और III
राजस्थान के बाड़मेर-सांचौर बेसिन में स्थित मंगला, भाग्यम और ऐश्वर्या तीनों ही प्रमुख ऑनशोर तेल क्षेत्र हैं जिन्हें निजी अन्वेषण कंपनी केयर्न एनर्जी द्वारा खोजा गया था। मंगला तेल क्षेत्र की खोज वर्ष 2004 में हुई थी जो भारत में ऑनशोर कच्चे तेल की सबसे बड़ी खोजों में से एक है। ये तीनों तेल क्षेत्र व्यावसायिक रूप से अत्यधिक उत्पादक माने जाते हैं तथा परिचालन में हैं।

16. (C) जैसलमेर बेसिन
राजस्थान के उत्तर-पश्चिमी भाग में स्थित जैसलमेर बेसिन राज्य में व्यावसायिक रूप से उत्पादक प्राकृतिक गैस भंडारों का मुख्य केंद्र है। रामगढ़, मनियारी टीबा, तनोट, डांडेवाला और बागीवाला जैसे प्रमुख गैस क्षेत्र इसी अवसादी बेसिन के अंतर्गत आते हैं। जैसलमेर बेसिन से निकाली जाने वाली प्राकृतिक गैस का उपयोग मुख्य रूप से रामगढ़ तापीय विद्युत संयंत्र में ईंधन हेतु व्यापक रूप से किया जाता है।

17. (B) राजस्थान ऊर्जा विकास एजेंसी (REDA) और राजस्थान राज्य पावर कॉर्पोरेशन लिमिटेड (RSPCL)
राजस्थान रीन्यूएबल एनर्जी कॉर्पोरेशन लिमिटेड का गठन अगस्त 2002 में दो पूर्ववर्ती राज्य संस्थाओं, राजस्थान ऊर्जा विकास एजेंसी और राजस्थान राज्य पावर कॉर्पोरेशन लिमिटेड का आपस में विलय करके किया गया था। इस विलय का मुख्य उद्देश्य राज्य में गैर-पारंपरिक और नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों के विकास, संवर्धन और क्रियान्वयन को एक एकीकृत निकाय के तहत लाना था ताकि अक्षय ऊर्जा नीतियों का कुशल प्रबंधन किया जा सके।

18. (D) राज्य GST के भुगतान से आजीवन पूर्ण छूट
राजस्थान निवेश प्रोत्साहन योजना के तहत राज्य में अक्षय ऊर्जा परियोजनाओं को बढ़ावा देने के लिए कई वित्तीय छूट प्रदान की जाती हैं। इनमें विद्युत शुल्क में छूट, स्टाम्प शुल्क में छूट और राज्य भूमि कर से छूट शामिल हैं। हालांकि, इसमें राज्य GST के भुगतान से आजीवन पूर्ण छूट देने का कोई प्रावधान शामिल नहीं है। SGST रियायतें केवल निश्चित अवधि तक ही मिलती हैं।

19. (A) अक्षय ऊर्जा की निकासी के लिए पारेषण (ट्रांसमिशन) अवसंरचना का सुदृढ़ीकरण करना
ग्रीन एनर्जी कॉरिडोर परियोजना एक विशेष अंतर-राज्यीय और अंतः-राज्यीय पारेषण अवसंरचना पहल है। इसका मुख्य उद्देश्य पश्चिमी राजस्थान के दूरदराज क्षेत्रों में स्थापित सौर और पवन ऊर्जा संयंत्रों द्वारा उत्पादित विशाल हरित बिजली को ग्रिड में सुरक्षित रूप से समाहित करना और उसे मांग केंद्रों तक कुशलतापूर्वक पहुंचाना है। यह नेटवर्क को मजबूत बनाकर ग्रिड की स्थिरता और विश्वसनीयता को निरंतर बनाए रखने में सहायक है।

20. (A) केवल I, II और III
राजस्थान के ऊर्जा क्षेत्र को ग्रामीण क्षेत्रों में उच्च पारेषण और वितरण हानि, तापीय संयंत्रों के शीतलन हेतु जल की कमी तथा अक्षय ऊर्जा की परिवर्तनशीलता के कारण ग्रिड अस्थिरता जैसी गंभीर चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। हालांकि, थार मरुस्थल का विशाल विस्तार उपलब्ध होने के कारण राज्य में नए सौर पार्कों के लिए भूमि की कोई कमी बिल्कुल भी नहीं पाई जाती है।

21. (A) नेशनल पोर्टल फॉर रूफटॉप सोलर
आवासीय उपभोक्ताओं के लिए राष्ट्रीय छत सौर योजना के अंतर्गत सब्सिडी हेतु आवेदन करने, विक्रेताओं का चयन करने और रूफटॉप सोलर स्थापना की प्रक्रिया को ट्रैक करने के लिए "नेशनल पोर्टल फॉर रूफटॉप सोलर" केंद्रीय डिजिटल मंच है। यह ऑनलाइन पोर्टल भारत सरकार के नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय द्वारा संचालित है जो पारदर्शी सेवाएं एवं सब्सिडी हस्तांतरण की सुविधा प्रदान करता है।

Downloaded from www.pdf.tube

परिवर्तनशील उत्पादन के कारण ग्रिड की अस्थिरता है। सौर और पवन ऊर्जा मौसम पर निर्भर होती हैं, जिससे आपूर्ति में उतार-चढ़ाव आते हैं। इस अनिश्चितता के कारण ग्रिड आवृत्ति नियंत्रित करना और संतुलन बनाना एक अत्यंत जटिल कार्य बन जाता है।

46. (C) 300 यूनिट
केंद्र सरकार द्वारा प्रारंभ की गई "पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना" का उद्देश्य देश भर के 1 करोड़ परिवारों को छत पर सौर ऊर्जा प्रणाली स्थापित करने हेतु सब्सिडी देकर प्रति माह 300 यूनिट तक निःशुल्क बिजली प्रदान करना है। इस योजना से पात्र परिवारों के बिजली बिल में भारी कमी आती है तथा हरित ऊर्जा को बढ़ावा व्यापक रूप से मिलता है।

47. (D) श्रीगंगानगर
पदमपुर बायोमास बिजली संयंत्र राजस्थान के श्रीगंगानगर जिले में स्थित है। यह संयंत्र मुख्य रूप से कृषि क्षेत्रों में उपलब्ध कृषि अवशेषों, विशेष रूप से सरसों की तूड़ी का उपयोग बिजली उत्पन्न करने के लिए करता है। बायोमास संयंत्र कृषि अपशिष्ट का पर्यावरण-अनुकूल निपटान सुनिश्चित करते हैं और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

48. (A) 2, 3, 1, 4
कुल स्थापित सौर ऊर्जा क्षमता के आधार पर भारतीय राज्यों का सही अवरोही क्रम राजस्थान, गुजरात, कर्नाटक और तमिलनाडु है। राजस्थान सर्वोच्च क्षमता के साथ देश में प्रथम स्थान पर है, जिसके बाद गुजरात दूसरे स्थान पर आता है। कर्नाटक तीसरे स्थान पर और तमिलनाडु चौथे स्थान पर स्थित हैं। राजस्थान की नीतियों ने इसे शीर्ष स्थान पर निरंतर बनाए रखा है।

49. (B) एनर्जी स्टोरेज सिस्टम्स (Energy Storage Systems)
ऊर्जा नीति और बिजली क्षेत्र के संदर्भ में ESS का पूर्ण रूप "एनर्जी स्टोरेज सिस्टम्स" है। अक्षय ऊर्जा जैसे कि सौर और पवन की परिवर्तनशील प्रकृति के कारण जब उत्पादन अधिक होता है, तब बैटरी या अन्य प्रणालियों द्वारा ऊर्जा संचित की जाती है। यह संचित ऊर्जा मांग की अवधि में ग्रिड को सफलतापूर्वक आपूर्ति की जाती है।

50. (C) 2000 किलोटन प्रति वर्ष (KTPA)
राजस्थान ग्रीन हाइड्रोजन नीति 2023 का मुख्य उद्देश्य राज्य को स्वच्छ ईंधन उत्पादन का प्रमुख केंद्र बनाना है। इस नीति के अंतर्गत वर्ष 2030 तक प्रतिवर्ष 2,000 किलोटन ग्रीन हाइड्रोजन का उत्पादन हासिल करने का लक्ष्य रखा गया है। नीति के तहत उत्पादकों को भूमि आवंटन, जल आपूर्ति और पारेषण शुल्क में छूट जैसी रियायतें व्यापक रूप से प्रदान की जाती हैं।

51. (A) P-2, Q-1, R-3, S-4
जल विद्युत परियोजनाओं में राजस्थान के प्रतिशत हिस्से का सही सुमेल इस प्रकार है। चंबल घाटी परियोजना राजस्थान और मध्य प्रदेश का 50:50 का संयुक्त उद्यम है। माही बजाज सागर परियोजना से उत्पादित विद्युत का 100% हिस्सा केवल राजस्थान को मिलता है। भाखड़ा नांगल परियोजना में राजस्थान का हिस्सा 15.22% है, जबकि व्यास परियोजना में विद्युत हिस्सेदारी 58.5% निर्धारित की गई है।

52. (C) टर्शियरी (तृतीयक) काल
राजस्थान के बाड़मेर, बीकानेर और नागौर बेसिनों में पाया जाने वाला लिग्नाइट मुख्यतः भूवैज्ञानिक कालक्रम के टर्शियरी काल से संबंधित है। टर्शियरी कालीन लिग्नाइट निम्न श्रेणी का कोयला होता है जिसमें नमी और सल्फर की मात्रा अपेक्षाकृत अधिक पाई जाती है। इसके बावजूद, यह तापीय विद्युत संयंत्रों हेतु ईंधन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण स्रोत माना जाता है जो ऊर्जा सुरक्षा देता है।

53. (A) बरसिंगसर
केन्द्रीय सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम एनएलसी इंडिया लिमिटेड द्वारा राजस्थान के बीकानेर जिले में स्थित बरसिंगसर में एक लिग्नाइट खदान और 250 मेगावाट क्षमता का तापीय विद्युत स्टेशन संचालित किया जा रहा है। यह संयंत्र बरसिंगसर खदान से निष्कर्षित लिग्नाइट का उपयोग ईंधन के रूप में करता है और राज्य ग्रिड को बिजली की आपूर्ति निरंतर रूप से करता है।

NODIA

54. (D) झालावाड़
कालीसिंध सुपर थर्मल पावर स्टेशन राजस्थान के झालावाड़ जिले में स्थित है। यह संयंत्र राजस्थान राज्य विद्युत उत्पादन निगम लिमिटेड द्वारा संचालित है। इस पावर स्टेशन की कुल स्थापित क्षमता 1200 मेगावाट है और यह अपनी शीतलन आवश्यकताओं के लिए मुख्य रूप से कालीसिंध नदी से जल प्राप्त करता है। यह राज्य का एक प्रमुख तापीय बिजली घर माना जाता है।

55. (B) सीधी सूर्य किरणों के लंबवत सतह पर प्रति इकाई क्षेत्रफल में सौर विकिरण
डायरेक्ट नॉर्मल इरैडिएंस (DNI) सूर्य की किरणों के लंबवत रखी गई सतह पर प्रति इकाई क्षेत्र में प्राप्त होने वाले सौर विकिरण को मापता है। यह माप विशेष रूप से सौर प्रणालियों की क्षमता का आकलन करने के लिए महत्वपूर्ण है। राजस्थान का थार मरुस्थल उच्च DNI मान प्रदर्शित करता है, जो इसे सौर ऊर्जा हेतु अत्यंत उपयुक्त एवं लाभदायक बनाता है।

56. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या है।
भड़ला सोलर पार्क की नीलामी के दौरान भारत में सबसे कम सौर ऊर्जा टैरिफ दर्ज किए गए थे। इसका मुख्य कारण यह था कि इस क्षेत्र में अत्यधिक उच्च सौर विकिरण उपलब्ध है, और नोडल एजेंसियों द्वारा विकसित बुनियादी ढांचे ने डेवलपर्स की लागत को काफी कम कर दिया था। अतः कथन और कारण दोनों पूर्णतः सही एवं तार्किक सिद्ध होते हैं।

57. (D) रीपावरिंग पॉलिसी
राजस्थान सरकार की "रीपावरिंग पॉलिसी" का मुख्य लक्ष्य पुरानी, कम दक्षता और छोटी क्षमता वाली पवन टर्बाइनों को हटाकर उनके स्थान पर आधुनिक तथा अधिक कुशल टर्बाइनों

68. राज्य के अक्षय ऊर्जा ढांचे के अंतर्गत, बोर्ड ऑफ इन्वेस्टमेंट द्वारा स्वीकृत प्रोत्साहनों के "कस्टमाइज्ड पैकेज" का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?
(A) सभी लघु और मध्यम औद्योगिक इकाइयों को निःशुल्क बिजली आपूर्ति प्रदान करना
(B) सभी निजी पवन फार्मों का राष्ट्रीयकरण करना
(C) वृहद् अक्षय ऊर्जा निवेशों के लिए अनुकूलित वित्तीय रियायतें प्रदान करना
(D) राज्य की सभी लिग्नाइट कोयला खदानों और बिजली संयंत्रों को बंद करना

69. राजस्थान में ग्रीन एनर्जी कॉरिडोर परियोजना को बाह्य बहुपक्षीय एजेंसियों द्वारा वित्त पोषित किया जाता है। इस कॉरिडोर के अंतर्गत ट्रांसमिशन नेटवर्क का प्रमुख वित्तपोषक कौन-सा अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थान है?
(A) केएफडब्ल्यू (KfW) डेवलपमेंट बैंक (जर्मनी)
(B) अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF)
(C) विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO)
(D) फेडरल रिजर्व बैंक

70. दीर्घकालिक ऐतिहासिक बेस-लोड विश्वसनीयता और निरंतर उपलब्धता (प्लांट लोड फैक्टर) के आधार पर उच्चतम से निम्नतम तक राजस्थान में बिजली उत्पादन स्रोतों का सही क्रम निम्नलिखित में से कौन-सा है?
(A) परमाणु ऊर्जा, तापीय ऊर्जा, सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा
(B) सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, परमाणु ऊर्जा, तापीय ऊर्जा
(C) पवन ऊर्जा, सौर ऊर्जा, तापीय ऊर्जा, परमाणु ऊर्जा
(D) तापीय ऊर्जा, सौर ऊर्जा, परमाणु ऊर्जा, पवन ऊर्जा

71. ग्रामीण राजस्थान में, जैव-ऊर्जा का दोहन करने के लिए गोबरधन (GOBARdhan) योजना लागू की जा रही है। इस योजना का मुख्य केंद्र क्या है?
(A) दुधारू गायों को खरीदने के लिए छोटे किसानों को वित्तीय सब्सिडी प्रदान करना
(B) मवेशियों के गोबर और जैविक कचरे को बायोगैस और जैविक खाद में बदलना
(C) सस्ती बिजली उत्पन्न करने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में कोयला आधारित बिजली संयंत्र स्थापित करना
(D) गरीबी रेखा से नीचे के ग्रामीण परिवारों को निःशुल्क एलपीजी सिलेंडर वितरित करना

72. भारत की राष्ट्रीय अक्षय ऊर्जा क्षमता में राजस्थान के योगदान के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?
(A) राजस्थान राष्ट्रीय सौर क्षमता में 5% से भी कम का योगदान देता है।
(B) भारत में अपतटीय (ऑफशोर) पवन ऊर्जा की उच्चतम स्थापित क्षमता राजस्थान में है।
(C) कुल स्थापित सौर ऊर्जा क्षमता में राजस्थान राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम स्थान पर है।
(D) राजस्थान अपने अक्षय खरीद दायित्वों (RPO) को पूरा करने के लिए पड़ोसी राज्यों से हरित बिजली आयात करने पर निर्भर है।

73. पश्चिमी राजस्थान में सौर परियोजनाएं स्थापित करने के इच्छुक निजी क्षेत्र के निवेशकों के लिए निम्नलिखित में से किसे एक प्रमुख बाधा माना जाता है?
(A) मरुस्थलीय जिलों में वार्षिक धूप और सौर विकिरण की कमी होना
(B) अत्यधिक वर्षा के परिणामस्वरूप सौर पैनलों में बाढ़ आना
(C) सौर संयंत्रों की नींव के लिए उपयुक्त भूमि का पूरी तरह से अनुपलब्ध होना
(D) भूमि अधिग्रहण और पारेषण के मार्ग के अधिकार (राइट-ऑफ-वे) में विलंब

74. राजस्थान के निम्नलिखित सौर पार्कों (सूची I) को उनके संबंधित जिलों (सूची II) के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I : (सोलर पार्क)
P. नोख सोलर पार्क
Q. फलोदी-पोकरण सोलर पार्क
R. पूगल सोलर पार्क
S. भड़ला सोलर पार्क
सूची II : (जिला)
1. जोधपुर
2. जैसलमेर
3. बीकानेर
4. जोधपुर और जैसलमेर में संयुक्त रूप से
(A) P-2, Q-4, R-3, S-1
(B) P-3, Q-1, R-2, S-4
(C) P-2, Q-1, R-3, S-4
(D) P-1, Q-2, R-4, S-3

75. ग्रिड संतुलन को बनाए रखने और दिन के दौरान उत्पन्न अधिशेष सौर ऊर्जा का उपयोग करने के लिए, राजस्थान ऊर्जा रोडमैप पंप्ड हाइड्रो स्टोरेज प्रोजेक्ट्स (PSP) पर बल देता है। राजस्थान में निम्नलिखित में से किस स्थान को PSP की क्षमता वाले स्थान के रूप में पहचाना गया है?
(A) थार मरुस्थल के रेतीले टीलों के आंतरिक क्षेत्र
(B) जवाई बांध और शाहपुर
(C) सांभर झील के आसपास के लवणीय क्षेत्र
(D) केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान के पारिस्थितिक क्षेत्र

76. राजस्थान की कुल स्थापित विद्युत क्षमता का लगभग कितना प्रतिशत वर्तमान में अक्षय ऊर्जा स्रोतों (सौर, पवन, बायोमास) से प्राप्त होता है?
(A) लगभग 10-15%
(B) लगभग 20-25%
(C) 45% से अधिक
(D) 100%

77. बीकानेर के पलाना क्षेत्र में लिग्नाइट की कौन-सी विशिष्ट किस्म पाई जाती है, जो रेजिनयुक्त होने के लिए जानी जाती है और ऐतिहासिक रूप से 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से खनन की जा रही है?
(A) पलाना लिग्नाइट

Click Here to Buy book on Amazon

69. (A) केएफडब्ल्यू (KfW) डेवलपमेंट बैंक (जर्मनी)
राजस्थान में ग्रीन एनर्जी कॉरिडोर परियोजना को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जर्मनी का "केएफडब्ल्यू डेवलपमेंट बैंक" मुख्य वित्तपोषक के रूप में सहायता प्रदान कर रहा है। यह बैंक रियायती ऋण प्रदान करता है जिसका उपयोग सौर और पवन पार्कों की बिजली निकासी हेतु पारेषण लाइनों तथा सब-स्टेशनों के निर्माण के लिए किया जाता है, जिससे पारेषण ढांचा अत्यंत सुदृढ़ बनता है।

70. (A) परमाणु ऊर्जा, तापीय ऊर्जा, सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा
ऐतिहासिक बेस-लोड विश्वसनीयता और उच्च प्लांट लोड फैक्टर के आधार पर सही क्रम परमाणु ऊर्जा, तापीय ऊर्जा, सौर ऊर्जा और पवन ऊर्जा है। परमाणु संयंत्र उच्चतम पीएलएफ के साथ निरंतर आपूर्ति प्रदान करते हैं। तापीय संयंत्र दूसरे स्थान पर आते हैं, जबकि सौर और पवन ऊर्जा मौसमी परिवर्तनशीलता के कारण अपेक्षाकृत कम क्षमता उपयोग दर्ज करते हैं जो स्पष्ट है।

71. (B) मवेशियों के गोबर और जैविक कचरे को बायोगैस और जैविक खाद में बदलना
ग्रामीण राजस्थान में लागू गोबरधन योजना का प्राथमिक केंद्र मवेशियों के गोबर और जैविक कचरे का प्रबंधन करके उन्हें बायोगैस तथा जैविक खाद में बदलना है। यह योजना ग्रामीण स्वच्छता में सुधार लाने, किसानों की आय बढ़ाने और बायो-ऊर्जा के उत्पादन को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योगदान देती है, जिससे पर्यावरण भी स्वच्छ रहता है और ग्रामीण समृद्धि बढ़ती है।

72. (C) कुल स्थापित सौर ऊर्जा क्षमता में राजस्थान राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम स्थान पर है।
भारत की राष्ट्रीय अक्षय ऊर्जा क्षमता में योगदान के संदर्भ में राजस्थान कुल स्थापित सौर ऊर्जा क्षमता में पूरे देश में प्रथम स्थान पर है। प्रचुर धूप और विशाल भूमि की उपलब्धता के कारण राजस्थान ने सौर क्षमता में अन्य सभी राज्यों को पीछे छोड़ दिया है और देश का शीर्ष सौर ऊर्जा उत्पादक राज्य बन गया है जो गौरवपूर्ण है।

73. (D) भूमि अधिग्रहण और पारेषण के मार्ग के अधिकार (राइट-ऑफ-वे) में विलंब
पश्चिमी राजस्थान में सौर ऊर्जा परियोजनाएं स्थापित करने वाले डेवलपर्स के सामने सबसे बड़ी बाधा भूमि अधिग्रहण की प्रक्रिया और पारेषण लाइनों हेतु 'राइट-ऑफ-वे' प्राप्त करने में होने वाला विलंब है। भूमि विवाद और पारेषण गलियारों में आपत्तियों के कारण परियोजनाओं के समय पर क्रियान्वयन में अक्सर बाधाएं उत्पन्न होती हैं जिससे परियोजनाओं की लागत और समय सीमा प्रभावित होती है।

74. (A) P-2, Q-4, R-3, S-1
राजस्थान के प्रमुख सौर पार्कों और उनके जिलों का सही मिलान इस प्रकार है। नोख सोलर पार्क जैसलमेर जिले में स्थित है। फलोदी-पोकरण सोलर पार्क जोधपुर और जैसलमेर में संयुक्त रूप से फैला है। पूगल सोलर पार्क बीकानेर जिले में स्थित है, जबकि भड़ला सोलर पार्क जोधपुर जिले में स्थित है, जो देश की शान बढ़ा रहा है।

75. (B) जवाई बांध और शाहपुर
अक्षय ऊर्जा की परिवर्तनशीलता के कारण ग्रिड संतुलन हेतु राजस्थान में पंप्ड हाइड्रो स्टोरेज प्रोजेक्ट्स को बढ़ावा दिया जा रहा है। जवाई बांध और शाहपुर जैसे उपयुक्त स्थलों को पंप्ड हाइड्रो स्टोरेज परियोजनाओं हेतु पहचाना गया है। ये परियोजनाएं अधिशेष सौर ऊर्जा का उपयोग करके जल को ऊपर पंप करती हैं और मांग पर विद्युत उत्पन्न करती हैं जो लाभदायक सिद्ध होगा।

NODIA

76. (C) 45% से अधिक
राजस्थान के ऊर्जा मिश्रण में हाल के वर्षों में बड़ा बदलाव आया है। वर्तमान में राज्य की कुल स्थापित क्षमता का 45 प्रतिशत से भी अधिक हिस्सा सौर, पवन और बायोमास जैसे अक्षय स्रोतों से प्राप्त होता है। सौर ऊर्जा में तीव्र वृद्धि के कारण कुल क्षमता में हरित ऊर्जा का अनुपात तापीय ऊर्जा की तुलना में निरंतर बढ़ा है और आगे रहेगा।

77. (A) पलाना लिग्नाइट
बीकानेर जिले के पलाना क्षेत्र में पाई जाने वाली लिग्नाइट किस्म को "पलाना लिग्नाइट" कहा जाता है। यह लिग्नाइट अपनी अनूठी रेजिनयुक्त प्रकृति और बेहतरीन ज्वलनशील गुणों के लिए जाना जाता है। बीकानेर के पलाना में इसका खनन ऐतिहासिक रूप से 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से ही निरंतर किया जा रहा है जो ऐतिहासिक महत्व रखता है और विख्यात है।

78. (C) आईजीएनपी (IGNP) नहर नेटवर्क
श्रीगंगानगर जिले में स्थित सूरतगढ़ सुपर थर्मल पावर स्टेशन अपनी शीतलन आवश्यकताओं के लिए मुख्य रूप से इंदिरा गांधी नहर परियोजना (IGNP) के नेटवर्क पर निर्भर है। इस प्लांट को जल आपूर्ति अनूपगढ़ शाखा से की जाती है। शुष्क क्षेत्र में स्थित होने के कारण IGNP नहर का जल संयंत्र के निर्बाध संचालन को संभव बनाता है जिससे बिजली बनती है।

79. (B) 925 MW
राजस्थान के जैसलमेर जिले में विकसित नोख सोलर पार्क को 925 मेगावाट की कुल क्षमता के लिए डिज़ाइन किया गया है। इस विशाल सोलर पार्क का विकास राजस्थान सोलर पार्क डेवलपमेंट कंपनी लिमिटेड द्वारा किया गया है। यह पार्क पश्चिमी राजस्थान में सौर ऊर्जा का दोहन करके राज्य की हरित क्षमता में भारी वृद्धि करता है और ग्रिड को शक्ति देता है।

80. (C) कनाडा
चित्तौड़गढ़ जिले के रावतभाटा में स्थित राजस्थान परमाणु ऊर्जा स्टेशन की पहली इकाई की स्थापना में कनाडा सरकार ने तकनीकी और वित्तीय सहयोग प्रदान किया था। कनाडा के सहयोग से ही इस संयंत्र में दाबित भारी जल रिएक्टर तकनीक को अपनाया गया था, जिसने वर्ष 1973 में अपना व्यावसायिक संचालन सफलता पूर्वक प्रारंभ किया था, जो भारत की बड़ी उपलब्धि बनी।

67. राजस्थान पर्यटन नीति 2020 'अनुभवात्मक पर्यटन' पर विशेष जोर देती है। निम्नलिखित में से कौन-सी पर्यटक गतिविधि अनुभवात्मक पर्यटन का सबसे अच्छा उदाहरण है?
(A) ग्रामीण होमस्टे में ठहरना और स्थानीय शिल्प तथा कृषि गतिविधियों में भाग लेना
(B) एक तेज़ चलने वाली वातानुकूलित लग्जरी टूर बस के भीतर से प्रमुख जयपुर शहर की स्काईलाइन और स्मारकों को देखना
(C) डिजिटाइज़ किए गए ऐतिहासिक राज्य प्रशासनिक दस्तावेजों को पढ़ने के लिए बीकानेर में केंद्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय का दौरा करना
(D) विशाल थार मरुस्थल क्षेत्र में एक छोटी वाणिज्यिक उच्च-ऊंचाई वाली यात्री उड़ान लेना

68. राजस्थान में साहसिक पर्यटन तेजी से बढ़ रहा है। वाणिज्यिक हॉट एयर बैलूनिंग सफारी के लिए पर्यटन विभाग द्वारा वर्तमान में निम्नलिखित में से किस क्षेत्र/शहर को बढ़ावा दिया जाता है?
(A) कोटा और बारां
(B) बीकानेर और चूरू
(C) जयपुर और पुष्कर
(D) माउंट आबू और सिरोही

69. राष्ट्रीय चम्बल अभयारण्य को जलीय साहसिक और वन्यजीव सफारी के लिए व्यापक रूप से बढ़ावा दिया जाता है, जो मुख्य रूप से पर्यटकों को किस गंभीर रूप से लुप्तप्राय प्रजाति को देखने का अवसर प्रदान करता है?
(A) गंगा नदी डॉल्फिन और घड़ियाल
(B) खारे पानी का मगरमच्छ और तटीय डुगोंग प्रजाति
(C) एक सींग वाला बड़ा गैंडा और जंगली जल भैंसा
(D) मीठे पानी की हम्पबैक महासीर और ऑलिव रिडले समुद्री कछुआ

70. सूची I में दिए गए पर्यटक स्थलों को सूची II में उनकी संबंधित प्राथमिक पर्यटन श्रेणियों/आकर्षणों के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I : (पर्यटक स्थल)
P. कुलधरा
Q. सामोद
R. ताल छापर
S. माउंट आबू
सूची II : (प्राथमिक पर्यटन श्रेणी/आकर्षण)
1. हिल स्टेशन / इको-टूरिज्म
2. कृष्णमृग (ब्लैकबक) वन्यजीव पर्यटन
3. हेरिटेज पैलेस / हवेली पर्यटन
4. परित्यक्त गांव / डार्क टूरिज्म
(A) P-4, Q-3, R-2, S-1
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-4, Q-2, R-3, S-1
(D) P-2, Q-3, R-4, S-1

71. जोधपुर का ऐतिहासिक मेहरानगढ़ किला पर्यटकों के लिए निम्नलिखित में से किस गतिविधि को स्थायी रूप से स्थापित करके विरासत के साथ साहसिक पर्यटन को एकीकृत करने में सफल रहा है?
(A) किले की भीतरी दीवारों को घेरने वाली कृत्रिम जल-भरी खाइयों में व्हाइट-वाटर राफ्टिंग
(B) बुर्जों और झीलों के पार जिपलाइनिंग (फ्लाइंग फॉक्स)
(C) उच्चतम ऐतिहासिक वॉचटावर के ऊंचे मंचों से बंजी जंपिंग
(D) ऐतिहासिक बावडियों और शाही जल जलाशयों के अंदर गहरे पानी में स्कूबा डाइविंग

72. व्यापार पर्यटन (बिजनेस टूरिज्म) राजस्थान के लिए अत्यधिक लाभदायक क्षेत्र है। इस पर्यटन क्षेत्र के संदर्भ में संक्षिप्त नाम 'MICE' का पूर्ण रूप क्या है?
(A) मैनेजमेंट, इन्वेस्टमेंट, कॉरपोरेट्स एंड एंटरप्राइजेज
(B) मार्केटिंग, इंफॉर्मेशन, कॉन्फ्रेन्स एंड इवेंट्स
(C) मीटिंग्स, इंसेंटिव्स, कॉन्फ्रेन्सेस एंड एग्जीबिशन्स
(D) मीटिंग्स, इंटरनेशनल कन्वेंशंस एंड एक्सपोज़

73. MICE पर्यटन के एक प्रमुख केंद्र के रूप में अपनी स्थिति को मजबूत करने के लिए, राजस्थान में JECC (जयपुर एग्जीबिशन एंड कन्वेंशन सेंटर) नामक एक अत्याधुनिक सुविधा मौजूद है। यह जयपुर के किस विशिष्ट औद्योगिक/संस्थागत क्षेत्र में स्थित है?
(A) मानसरोवर
(B) वैशाली नगर
(C) मालवीय नगर
(D) सीतापुरा

74. MICE पर्यटन मुख्य रूप से राजस्थान में किस विशिष्ट जनसांख्यिकी को आकर्षित करना चाहता है?
(A) कॉरपोरेट समूह, उद्योग पेशेवर और प्रतिनिधि
(B) कम बजट वाले अंतरराष्ट्रीय बैकपैकर्स, बजट पर्यटक और स्वतंत्र एकल यात्री
(C) श्रद्धालु धार्मिक तीर्थयात्री, आध्यात्मिक साधक, तपस्वी और मठवासी संप्रदाय के सदस्य
(D) संस्थागत क्षेत्र भ्रमण करने वाले प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च शिक्षा के छात्र

75. सूची I में दिए गए पारंपरिक हस्तशिल्प उत्पादों को सूची II में उनके प्रसिद्ध केंद्रों के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I : (पारंपरिक हस्तशिल्प उत्पाद)
P. थेवा कला (काँच पर सोने का काम)
Q. उस्ता कला (ऊंट की खाल पर चित्रकारी)
R. टेराकोटा मूर्तियां/खिलौने
S. अजरक प्रिंट (कपड़ा)
सूची II : (प्रसिद्ध केंद्र)
1. बाड़मेर
2. मोलेला (राजसमंद)
3. बीकानेर
4. प्रतापगढ़

Downloaded from www.pdf.tube

अध्याय 22
राजस्थान के पर्यटन स्थल

1. राजस्थान में पर्यटन के प्रशासनिक वर्गीकरण के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन-से जिले राज्य के प्रसिद्ध 'मरु परिपथ' (मरु त्रिकोण) का मूल भाग बनाते हैं?
(A) जोधपुर, उदयपुर और राजसमंद
(B) जैसलमेर, बीकानेर, जोधपुर और बाड़मेर
(C) जयपुर, अजमेर, पुष्कर और टोंक
(D) पाली, सिरोही, जालौर और बाड़मेर

2. राजस्थान के निम्नलिखित प्रमुख पर्यटक शहरों पर विचार कीजिए:
I. जैसलमेर
II. जयपुर
III. बीकानेर
IV. भरतपुर
निम्नलिखित में से कौन-सा इन शहरों का पश्चिम से पूर्व की ओर सही भौगोलिक क्रम दर्शाता है?
(A) I, III, II, IV
(B) I, II, III, IV
(C) III, I, II, IV
(D) III, II, I, IV

3. वैश्विक स्तर पर पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए राजस्थान पर्यटन विभाग द्वारा आधिकारिक तौर पर अपनाया गया पारंपरिक स्वागत नारा कौन-सा है?
(A) पधारो म्हारे देश
(B) इन्क्रेडिबल राजस्थान
(C) अतिथि देवो भव
(D) द रॉयल एक्सपीरियंस

4. राजस्थान पर्यटन विकास निगम (RTDC) कई क्षेत्रीय परिपथों को बढ़ावा देता है। निम्नलिखित में से किसे राजस्थान में प्राथमिक पर्यटक परिपथ के रूप में आधिकारिक मान्यता प्राप्त नहीं है?
(A) मेवाड़ परिपथ
(B) शेखावाटी परिपथ
(C) मालवा परिपथ
(D) वागड़ परिपथ

5. जयपुर में स्थित प्रतिष्ठित हवा महल, जो एक प्रमुख विरासत पर्यटन स्थल है, का निर्माण 1799 में मुख्य रूप से राजसी महिलाओं को दैनिक सड़क जीवन और त्योहारों को देखने की अनुमति देने के लिए किया गया था। इस पांच मंजिला संरचना का निर्माण किस शासक ने करवाया था?
(A) महाराजा सवाई प्रताप सिंह
(B) महाराजा सवाई जय सिंह II
(C) महाराजा सवाई माधो सिंह I
(D) महाराजा राम सिंह II

6. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A) : जयपुर का जंतर मंतर एक प्रमुख विरासत पर्यटन स्थल है और इसे यूनेस्को के विश्व धरोहर स्थल के रूप में मान्यता प्राप्त है।
कारण (R) : इसका निर्माण महाराजा सवाई जय सिंह II द्वारा विशेष रूप से भारतीय उपमहाद्वीप में यूरोपीय खगोलीय उपकरणों को बढ़ावा देने के लिए किया गया था।
उपर्युक्त कथनों के संदर्भ में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

NODIA

7. जयपुर का जयगढ़ किला बड़ी संख्या में विरासत पर्यटकों को मुख्य रूप से इसलिए आकर्षित करता है क्योंकि इसमें स्थित है:
(A) शाही खगोलशास्त्रियों द्वारा निर्मित विश्व की सबसे बड़ी पत्थर की धूपघड़ी
(B) 'जयबाण तोप', जो पहियों पर रखी विश्व की सबसे बड़ी तोप है
(C) शीश महल, जिसमें काँच और दर्पण की जटिल मोज़ेक नक्काशी है
(D) अनोखी संग्रहालय, जो पारंपरिक हस्त ब्लॉक प्रिंटिंग को समर्पित है

8. मुख्य प्रांगण तक जाने के लिए पर्यटकों हेतु हाथी की सवारी जयपुर के किस ऐतिहासिक किले का एक प्रमुख विरासत अनुभव है?
(A) नाहरगढ़ किला
(B) मोती डूंगरी किला
(C) आमेर का किला
(D) तारागढ़ किला

साथ किफायती प्रवास प्रदान करना
(C) राज्य सरकार के प्रशासनिक उपयोग के लिए शहरी केंद्रों में हेरिटेज निजी आवासीय संपत्तियों का अधिग्रहण करना
(D) सभी पंजीकृत शहरी आवासीय आवास समितियों को कानूनी रूप से पूर्णतः वाणिज्यिक होटल क्षेत्रों में परिवर्तित करना

50. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A) : 'हेरिटेज होटलों' के विकास ने राजस्थान के ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में पर्यटन के विकेंद्रीकरण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
कारण (R) : यह पूरे राज्य में फैले जर्जर पैतृक किलों, महलों और हवेलियों को उत्पादक आतिथ्य परिसंपत्तियों में पुनर्स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित करता है जो स्थानीय रोजगार उत्पन्न करते हैं।
उपर्युक्त कथनों के संदर्भ में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

51. राजस्थान में किस संपत्ति को भारत के सबसे पहले 'हेरिटेज होटल' के रूप में व्यापक रूप से प्रलेखित और सराहा गया है?
(A) अजीत भवन, जोधपुर
(B) रामबाग पैलेस, जयपुर
(C) लेक पैलेस, उदयपुर
(D) सामोद पैलेस, जयपुर

52. पर्यटन मंत्रालय द्वारा निर्धारित दिशा-निर्देशों के अनुसार, 'हेरिटेज होटल' श्रेणी के तहत आधिकारिक रूप से वर्गीकृत होने के लिए, किला, हवेली या निवास का निर्माण किस वर्ष से पहले हुआ होना चाहिए?
(A) 1857
(B) 1900
(C) 1950
(D) 1971

53. राजस्थान में लग्जरी ट्रेन पर्यटन की पथप्रदर्शक 'पैलेस ऑन व्हील्स', पारंपरिक रूप से अपनी मानक 7-रात/8-दिन की यात्रा किस रेलवे स्टेशन से शुरू करती है?
(A) सफदरजंग रेलवे स्टेशन, नई दिल्ली
(B) जयपुर जंक्शन, जयपुर
(C) छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस, मुंबई
(D) जोधपुर जंक्शन, जोधपुर

54. सूची I में दी गई लग्जरी पर्यटक ट्रेनों को सूची II में उनकी परिभाषित विशेषताओं से सुमेलित कीजिए:
सूची I : (लग्जरी पर्यटक ट्रेन)
P. पैलेस ऑन व्हील्स
Q. रॉयल राजस्थान ऑन व्हील्स
R. महाराजा एक्सप्रेस
S. फेयरी क्वीन
सूची II : (परिभाषित विशेषता)
1. मूल ट्रेन की उत्तरवर्ती/सहयोगी के रूप में उन्नत सुविधाओं के साथ 2009 में शुरू की गई।
2. 1982 में शुरू की गई राजस्थान की पहली लग्जरी ट्रेन।
3. विश्व के सबसे पुराने कार्यरत भाप इंजन द्वारा खींची जाने वाली हेरिटेज ट्रेन।
4. राजस्थान को कवर करने वाले 'हेरिटेज ऑफ इंडिया' मार्ग की पेशकश करने वाली अति-विलासिता वाली अखिल भारतीय ट्रेन।
(A) P-2, Q-1, R-4, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-2, Q-4, R-1, S-3
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

55. पैलेस ऑन व्हील्स का मानक यात्रा मार्ग प्रमुख विरासत और वन्यजीव स्थलों को कवर करता है। निम्नलिखित में से कौन-सा स्थान आमतौर पर इसके नियमित निर्धारित ठहरावों का हिस्सा नहीं है?
(A) जयपुर
(B) माउंट आबू
(C) जैसलमेर
(D) सवाई माधोपुर

56. पूर्व शाही सैलूनों का उपयोग करके राजस्थान में विरासत पर्यटन में क्रांति लाने वाली पैलेस ऑन व्हील्स को वाणिज्यिक संचालन के लिए सबसे पहले किस वर्ष शुरू किया गया था?
(A) 1978
(B) 1982
(C) 1995
(D) 2005

57. 2013 में, विश्व धरोहर समिति ने 'राजस्थान के पहाड़ी किले' नामक एक श्रृंखलाबद्ध सांस्कृतिक संपत्ति को यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल किया। इस विशिष्ट नामकरण में कितने किले शामिल हैं?
(A) 4
(B) 5
(C) 6
(D) 8

58. राजस्थान में यूनेस्को के विश्व धरोहर स्थलों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. जयपुर के परकोटा शहर (चारदीवारी शहर) को 2019 में विश्व धरोहर स्थल के रूप में अंकित किया गया था।
II. जंतर मंतर, जयपुर, यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल के रूप में मान्य है।
III. अजमेर का तारागढ़ किला 'राजस्थान के पहाड़ी किले'

Click Here to Buy book on Flipkart

पीठ के रूप में कार्य करता है
(D) यह किसी ऊंची पहाड़ी या चट्टानी उभार के बजाय समतल मैदान पर निर्मित है

19. बीकानेर के पास स्थित कौन-सा अद्वितीय मंदिर धार्मिक पर्यटन में अपने हजारों संरक्षित काले चूहों (काबा) के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध है?
(A) करणी माता मंदिर
(B) ब्रह्मा मंदिर
(C) सालासर बालाजी मंदिर
(D) गोविंद देव जी मंदिर

20. बीकानेर में किस अद्वितीय केंद्रीय अनुसंधान संस्थान की उपस्थिति के कारण विशेष पारिस्थितिक पर्यटन की अपार संभावनाएं हैं, जो आगंतुकों को मरुस्थलीय पशुधन के बारे में जानने का अवसर देता है?
(A) केंद्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान (CAZRI)
(B) मरुस्थलीय चिकित्सा अनुसंधान केंद्र
(C) राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केंद्र (NRCC)
(D) राष्ट्रीय सौर ऊर्जा संस्थान

21. माउंट आबू में स्थित दिलवाड़ा मंदिर अपनी असाधारण संगमरमर की नक्काशी के लिए विरासत और धार्मिक पर्यटन में अत्यधिक प्रसिद्ध हैं। ये मंदिर किस धर्म को समर्पित हैं?
(A) जैन धर्म
(B) बौद्ध धर्म
(C) हिंदू धर्म
(D) सिख धर्म

22. नक्की झील माउंट आबू में पर्वतीय स्थल (हिल स्टेशन) पर्यटन के लिए एक प्रमुख आकर्षण है। पर्यटकों के बीच प्रचलित स्थानीय पौराणिक कथाओं के अनुसार, इस झील का निर्माण कैसे हुआ था?
(A) इसे पांडव भाइयों ने अपने अज्ञातवास की अवधि के दौरान खोदा था
(B) यह कई शताब्दियों पहले एक बड़े उल्कापिंड के टकराने से प्राकृतिक रूप से बनी थी
(C) इसे महाराजा जय सिंह II के शाही आदेश के तहत कृत्रिम रूप से खोदा गया था
(D) इसे देवताओं ने अपने नाखूनों से खोदा था

23. माउंट आबू आने वाले पर्यटक अक्सर गुरु शिखर की चढ़ाई करते हैं, जो भौगोलिक दृष्टि से किस रूप में महत्त्वपूर्ण है?
(A) लूनी नदी का उद्गम स्थल
(B) अरावली पर्वतमाला की सबसे ऊंची चोटी
(C) उत्तर भारत की एकमात्र सक्रिय ज्वालामुखी चोटी
(D) राजस्थान का भौगोलिक केंद्र

24. पर्वतीय स्थल पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए, राजस्थान पर्यटन विभाग माउंट आबू में एक वार्षिक 'शीतकालीन महोत्सव' आयोजित करता है। इस महोत्सव के दौरान आमतौर पर किस पारंपरिक नृत्य शैली को प्रदर्शित किया जाता है?
(A) घूमर
(B) कालबेलिया
(C) गैर
(D) उपर्युक्त सभी

25. उत्तर भारत के सबसे बड़े और सबसे प्रसिद्ध वन्यजीव पर्यटन स्थलों में से एक, रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान राजस्थान के किस जिले में स्थित है?
(A) उत्तर का अलवर जिला
(B) पूर्व का भरतपुर जिला
(C) ऐतिहासिक बूंदी जिला
(D) सवाई माधोपुर जिला

26. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A) : रणथंभौर दिन के समय बाघों के अवलोकन (साइटिंग) के लिए वन्यजीव फोटोग्राफरों के बीच अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसित है।
कारण (R) : रणथंभौर के बाघ सफारी वाहनों में मनुष्यों की उपस्थिति के अभ्यस्त माने जाते हैं और अक्सर दिन के समय ऐतिहासिक खंडहरों के बीच खुले में घूमते हैं।
उपर्युक्त कथनों के संदर्भ में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

27. रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान के कोर वन्यजीव क्षेत्र के अंदर ऐतिहासिक जोगी महल के पास कौन-सी प्रमुख झील स्थित है, जो इसे पर्यटक सफारी के लिए एक प्रमुख स्थान बनाती है?
(A) आना सागर
(B) पदम तालाब
(C) सिलीसेढ़ झील
(D) कायलाना झील

28. रणथंभौर दुर्ग परिसर के भीतर एक प्रसिद्ध मंदिर है जो वन्यजीव पर्यटन के साथ-साथ अपार धार्मिक पर्यटन को भी आकर्षित करता है। यहाँ किस देवता की पूजा की जाती है?
(A) श्रीनाथजी
(B) त्रिनेत्र गणेश
(C) करणी माता
(D) मेहंदीपुर बालाजी

29. भरतपुर में स्थित केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान को वैश्विक स्तर पर वन्यजीव और इको-टूरिज्म के लिए एक प्रमुख गंतव्य के रूप में मान्यता प्राप्त है, मुख्य रूप से क्योंकि यह:
(A) पलेआर्कटिक प्रवासी जलपक्षियों के लिए एक प्रमुख शीतकालीन प्रवास स्थल है

Downloaded from www.pdf.tube

81. (D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।
तापीय विद्युत संयंत्र कोयला के दहन पर आधारित होते हैं और कार्बन डाइऑक्साइड का उत्सर्जन करते हैं, इसलिए तापीय विद्युत को कार्बन-न्यूट्रल कहना गलत है। हालांकि, राजस्थान में नए सुपरक्रिटिकल थर्मल पावर प्लांट पुराने सबक्रिटिकल प्लांटों की तुलना में अधिक दक्षता के साथ लिग्राइट जलाते हैं, जिससे कारण सही और प्रथम कथन गलत सिद्ध होता है, जो वैज्ञानिक तथ्य है।

82. (C) ~142 GW
राष्ट्रीय पवन ऊर्जा संस्थान (NIWE) द्वारा किए गए मूल्यांकनों के अनुसार, 120 मीटर की हब ऊँचाई पर राजस्थान की अनुमानित पवन ऊर्जा क्षमता लगभग 142 गीगावाट है। यह विशाल क्षमता राजस्थान के पश्चिमी मरुस्थलीय जिलों में तेज और अनवरत पवन गतियों के कारण है, जो राज्य को पवन क्षेत्र में अपार संभावनाएं एवं अवसर प्रदान करती है जो अत्यंत लाभकारी है।

83. (A) बिठड़ी
अमरसागर और देवगढ़ के पश्चात्, राजस्थान का तीसरा प्रमुख पवन ऊर्जा संयंत्र मार्च 2003 में जोधपुर जिले के बिठड़ी में चालू किया गया था। बिठड़ी पवन परियोजना ने जोधपुर में अक्षय ऊर्जा उत्पादन की शुरुआत की और यह सिद्ध किया कि पश्चिमी राजस्थान में पवन ऊर्जा की विशाल क्षमता मौजूद है जिसका दोहन करके विद्युत का निर्माण किया जा सकता है।

84. (A) केवल I और II
रावतभाटा स्थित परमाणु ऊर्जा स्टेशन भारत का दूसरा परमाणु संयंत्र है और सीकर जिले में यूरेनियम के भंडार मौजूद हैं, अतः कथन I और II सत्य हैं। हालांकि, रावतभाटा में शीतलन के लिए राणा प्रताप सागर बांध के मीठे जल का उपयोग होता है न कि समुद्री जल का, इसलिए तीसरा कथन पूरी तरह गलत सिद्ध होता है जो स्पष्ट है।

85. (C) 58.50%
व्यास नदी पर निर्मित पोंग बांध परियोजना से उत्पादित जल विद्युत में राजस्थान का आधिकारिक रूप से निर्धारित हिस्सा 58.50% है। व्यास परियोजना पंजाब, हरियाणा और राजस्थान की एक संयुक्त परियोजना है। पोंग विद्युत गृह से प्राप्त बिजली राजस्थान के विकास और बिजली आपूर्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती आ रही है, जिससे राज्य के उत्तरी जिलों को काफी लाभ मिलता है।

86. (C) 3500 MW
राजस्थान पवन और हाइब्रिड ऊर्जा नीति 2019 ने राज्य में पवन-सौर हाइब्रिड परियोजनाओं को बढ़ावा देने पर बल दिया। इस नीति के तहत वर्ष 2024-25 तक 3,500 मेगावाट की हाइब्रिड क्षमता स्थापित करने का लक्ष्य रखा गया था। नीति में हाइब्रिड तकनीक जोड़ने और नए पार्कों की स्थापना हेतु डेवलपर्स को विभिन्न रियायतें एवं वित्तीय सुविधाएं प्रदान की गईं।

87. (B) पेट्रोलियम निदेशालय (DoP), राजस्थान
राजस्थान में पेट्रोलियम निदेशालय राज्य सरकार के विभाग के अंतर्गत नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करता है। यह निदेशालय राज्य के अवसादी बेसिनों में पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस के अन्वेषण, खनन पट्टों की स्वीकृति, उत्पादन गतिविधियों की निगरानी तथा राजस्व संग्रहण के लिए प्राथमिक रूप से जिम्मेदार सरकारी निकाय है, जो राज्य में हाइड्रोकार्बन क्षेत्र के विकास का प्रबंधन करता है।

88. (D) I, II, III और IV
राजस्थान में हाइड्रोकार्बन अन्वेषण के दृष्टिकोण से चार प्रमुख अवसादी बेसिन स्थित हैं जो 14 जिलों में फैले हैं। ये चार बेसिन बाड़मेर-सांचौर बेसिन, जैसलमेर बेसिन, बीकानेर-नागौर बेसिन और विंध्यन बेसिन हैं। इन चारों बेसिनों में तेल व गैस के विशाल भंडार मौजूद हैं, अतः दिए गए सभी चारों विकल्प पूर्णतः सत्य एवं सही सिद्ध होते हैं जो भौगोलिक संरचना दर्शाते हैं।

NODIA

89. (D) डिस्कॉम को अधिशेष सौर ऊर्जा बेचकर अतिरिक्त आय अर्जित करना
पीएम कुसुम योजना के घटक C के तहत किसानों के ग्रिड-संबद्ध कृषि पंपों का सौरीकरण किया जाता है। इस व्यवस्था से किसानों को सिंचाई के लिए दिन के समय मुफ्त बिजली प्राप्त होती है। इसके अलावा, जब किसान अतिरिक्त सौर बिजली उत्पन्न करते हैं, तो वे उस अधिशेष बिजली को डिस्कॉम को बेचकर अतिरिक्त आय आसानी से अर्जित कर सकते हैं।

90. (B) 1, 4, 2, 3
भड़ला सोलर पार्क के चरणों का क्षमता के आधार पर आरोही क्रम इस प्रकार है। चरण I की क्षमता 75 मेगावाट है। चरण IV की क्षमता 500 मेगावाट है। चरण II की क्षमता 680 मेगावाट है तथा चरण III की क्षमता 1000 मेगावाट है। अतः क्षमताओं का सही बढ़ता अनुक्रम 1, 4, 2, 3 सिद्ध होता है जो पूर्णतः सटीक एवं प्रामाणिक है।

(C) भगवान राम और सीता
(D) भगवान महावीर

40. अजमेर में पर्यटकों और श्रद्धालुओं की भारी वार्षिक भीड़ ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती के 'उर्स' के दौरान होती है। सूफी परंपरा में 'उर्स' शब्द किसका प्रतीक है?
(A) संत के अनुयायियों द्वारा मनाई जाने वाली गंभीर जयंती
(B) भारतीय उपमहाद्वीप में संत का ऐतिहासिक आगमन
(C) ईश्वर से मिलन (विसाल) का प्रतीक पुण्यतिथि
(D) मुख्य दरगाह शरीफ के निर्माण का भव्य समापन

41. राज्य की प्राकृतिक विरासत का लाभ उठाने और सतत पर्यटन पद्धतियों को बढ़ावा देने के लिए, राजस्थान सरकार ने किस वर्ष आधिकारिक तौर पर 'राजस्थान इकोटूरिज्म नीति' शुरु की?
(A) 2010
(B) 2015
(C) 2021
(D) 2023

42. राजस्थान ग्रामीण पर्यटन योजना के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह होमस्टे और ग्रामीण गेस्ट हाउस स्थापित करके रोजगार पैदा करने के लिए शुरु की गई थी।
II. यह पात्र ग्रामीण पर्यटन इकाइयों के लिए स्टाम्प ड्यूटी पर 100% छूट सहित वित्तीय प्रोत्साहन प्रदान करती है।
III. यह योजना विशेष रूप से अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों को लक्षित करती है और घरेलू बुकिंग को प्रतिबंधित करती है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

43. अपनी इको-टूरिज्म रणनीति के हिस्से के रूप में, राजस्थान सरकार ने 'लव कुश वाटिकाओं' के विकास की शुरुआत की। इन वाटिकाओं का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?
(A) गोडावण के लिए समर्पित संरक्षण और प्रजनन केंद्र स्थापित करना
(B) स्थानीय वनस्पति और जीवों को प्रदर्शित करने वाले जिला स्तरीय इको-टूरिज्म पार्क बनाना
(C) रणथंभौर के पास विशेष रूप से विदेशी पर्यटकों के लिए अति-विलासिता वाले इको-रिज़ॉर्ट बनाना
(D) जल क्रीड़ाओं के लिए पश्चिमी मरुस्थलीय जिलों में बड़े पैमाने पर कृत्रिम झीलों का विकास करना

44. उदयपुर जिले में स्थित मेनार गांव, राजस्थान के इको-टूरिज्म मानचित्र पर तेज़ी से प्रमुखता हासिल कर रहा है, मुख्य रूप से क्योंकि इसे किस रूप में मान्यता दी गई है?
(A) राज्य पशुधन योजनाओं द्वारा समर्थित समर्पित उष्ट्र (ऊंट) प्रजनन गांव
(B) अपनी झीलों पर प्रचुर मात्रा में आने वाले प्रवासी पक्षियों के कारण 'बर्ड विलेज' (पक्षी गांव)
(C) पारंपरिक हस्त-मुद्रित वस्त्रों का उत्पादन करने वाला हेरिटेज बुनाई गांव
(D) जुरासिक भूगर्भीय युग की संरक्षित वनस्पति को प्रदर्शित करने वाला जीवाश्म गांव

45. राजस्थान पर्यटन विकास निगम (RTDC) राज्य में पर्यटन संवर्धन के लिए नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करता है। RTDC की औपचारिक स्थापना किस वर्ष की गई थी?
(A) 1956
(B) 1978
(C) 1989
(D) 2001

46. भारतीय रेलवे के साथ साझेदारी में राजस्थान पर्यटन विकास निगम (RTDC) का एक प्रमुख परिचालन जनादेश किसका प्रबंधन है?
(A) जयपुर मेट्रो रेल नेटवर्क और ट्रांजिट हब
(B) अंतर-राज्यीय विलासी बस टर्मिनल और हाईवे एक्सप्रेसवे
(C) पैलेस ऑन व्हील्स जैसी विलासी पर्यटक ट्रेनें
(D) पूरे राजस्थान में संचालित हाई-स्पीड वंदे भारत एक्सप्रेस मार्ग

47. RTDC पूरे राजस्थान में कई पर्यटक बंगलों का संचालन करता है, जिनका नाम आमतौर पर स्थानीय संस्कृति या वनस्पति/जीवों के नाम पर रखा जाता है। प्रसिद्ध 'ढोला मारु' RTDC होटल किस शहर में स्थित है?
(A) जोधपुर
(B) जैसलमेर
(C) उदयपुर
(D) बीकानेर

48. निम्नलिखित में से कौन-सा कार्य या गतिविधि राजस्थान पर्यटन विकास निगम (RTDC) द्वारा सामान्यतः संपादित किए जाने वाले कार्यात्मक जनादेश के अंतर्गत नहीं आती है?
(A) प्रमुख पर्यटन स्थलों पर राज्य के स्वामित्व वाले बजट आवासों, होटलों और कैफेटेरिया का संचालन करना
(B) क्षेत्रीय पैकेज टूर, गाइडेड भ्रमण और विशेष स्थानीय दर्शनीय स्थल सेवाओं का आयोजन करना
(C) निजी उड़ानों के लिए वाणिज्यिक विमानन लाइसेंस जारी करना
(D) राज्य संचालित लग्जरी ट्रेनों के व्यापक विपणन, प्रचार और आतिथ्य संचालन का प्रबंधन करना

49. राजस्थान पर्यटन विभाग द्वारा शुरु की गई 'पेइंग गेस्ट योजना' मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए पेश की गई थी?
(A) सभी पांच-सितारा लग्जरी हेरिटेज होटलों में कमरे के किरायों को सख्ती से विनियमित और मानकीकृत करना
(B) स्थानीय सांस्कृतिक अनुभव और घर के बने भोजन के

Click Here to Buy book on Amazon

9. उदयपुर का भव्य सिटी पैलेस, जो मेवाड़ विरासत पर्यटन परिपथ का एक अनिवार्य केंद्र है, लगभग 400 वर्षों की अवधि में किस झील के पूर्वी तट पर बनाया गया था?
(A) फतेह सागर झील
(B) जयसमंद झील
(C) उदय सागर झील
(D) पिछोला झील

10. जोधपुर के मेहरानगढ़ किले के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसकी स्थापना 1459 में राव जोधा द्वारा की गई थी।
II. इसमें फूल महल और मोती महल जैसी ऐतिहासिक महलनुमा संरचनाएं स्थित हैं।
III. इसे 'जल दुर्ग' के रूप में वर्गीकृत किया गया है क्योंकि यह कायलाना झील से घिरा हुआ है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

11. जोधपुर में सफेद संगमरमर से बनी कौन-सी छतरी, जो महाराजा जसवंत सिंह II की स्मृति में बनाई गई थी, को प्रायः पर्यटकों के समक्ष 'मारवाड़ के ताजमहल' के रूप में प्रचारित किया जाता है?
(A) मण्डोर की छतरियां
(B) जसवंत थड़ा
(C) बड़ा बाग
(D) मूसी महारानी की छतरी

12. जोधपुर का उम्मेद भवन पैलेस, जो विलासिता और महल पर्यटन का एक प्रमुख आकर्षण है, स्थापत्य की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह मुख्य रूप से किस स्थानीय सामग्री से निर्मित है?
(A) धौलपुर का लाल बलुआ पत्थर
(B) छित्तर बलुआ पत्थर
(C) मकराना का सफेद संगमरमर
(D) पीला बलुआ पत्थर

13. लोक संस्कृति, ऊंट दौड़ और स्थानीय संगीत को प्रदर्शित करने के लिए राजस्थान पर्यटन द्वारा व्यापक रूप से बढ़ावा दिया जाने वाला वार्षिक मरु महोत्सव पारंपरिक रूप से किस स्थान पर आयोजित किया जाता है?
(A) सम के रेत के टीले (धोरे), जैसलमेर
(B) खींवसर विरासत गाँव, नागौर
(C) देशनोक मंदिर परिसर, बीकानेर
(D) ओसियां मरुउद्यान, जोधपुर

14. जैसलमेर में, पटवों की हवेली पांच भव्य हवेलियों का एक समूह है जो अपनी उत्कृष्ट वास्तुकला के लिए पर्यटकों को आकर्षित करती है। यह मूल रूप से किस वस्तु का व्यापार करने वाले एक धनी व्यापारी द्वारा बनाई गई थी?
(A) मसाले, वस्त्र और सुगंधित चाय की पत्तियां
(B) बहुमूल्य रत्न, लकड़ी और संगमरमर
(C) सोना, चांदी और ज़री (ब्रोकेड) के धागे
(D) कच्चा नमक, अफीम और नील के रंग

15. जैसलमेर का 'सोनार किला' या स्वर्ण किला, विशेष रूप से सूर्यास्त के समय, अपना विशिष्ट सुनहरा-पीला रंग किसके उपयोग के कारण प्राप्त करता है?
(A) इसकी बाहरी दीवारों पर सोने के वर्क की चित्रकारी
(B) इसके बुर्जों पर पीतल की परत
(C) स्थानीय लोगों द्वारा प्रतिवर्ष लगाया जाने वाला पीला गेरु रंग
(D) इसके निर्माण में पीले बलुआ पत्थर का उपयोग

16. जैसलमेर में मरुस्थलीय पर्यटन इस क्षेत्र के अद्वितीय पारिस्थितिकी तंत्र पर अत्यधिक निर्भर है। जैसलमेर के पास कौन-सा संरक्षित क्षेत्र पर्यटकों को गोडावण (ग्रेट इंडियन बस्टर्ड), चिंकारा और मरुस्थलीय लोमड़ी की झलक प्रदान करता है?
(A) ताल छापर अभयारण्य
(B) गजनेर वन्यजीव अभयारण्य
(C) मरु राष्ट्रीय उद्यान
(D) माचिया बायोलॉजिकल पार्क

17. राजस्थान के निम्नलिखित प्रसिद्ध पर्यटन उत्सवों पर विचार कीजिए:
I. मरु महोत्सव (जैसलमेर)
II. उष्ट्र (ऊंट) महोत्सव (बीकानेर)
III. मारवाड़ महोत्सव (जोधपुर)
IV. हाथी महोत्सव (जयपुर)
जनवरी से शुरु होने वाले कैलेंडर वर्ष में उनके सामान्य आयोजन के आधार पर निम्नलिखित में से कौन-सा इन उत्सवों का सही कालानुक्रमिक क्रम दर्शाता है?
(A) मरु महोत्सव (जैसलमेर) → उष्ट्र महोत्सव (बीकानेर) → मारवाड़ महोत्सव (जोधपुर) → हाथी महोत्सव (जयपुर)
(B) उष्ट्र महोत्सव (बीकानेर) → मरु महोत्सव (जैसलमेर) → हाथी महोत्सव (जयपुर) → मारवाड़ महोत्सव (जोधपुर)
(C) हाथी महोत्सव (जयपुर) → उष्ट्र महोत्सव (बीकानेर) → मरु महोत्सव (जैसलमेर) → मारवाड़ महोत्सव (जोधपुर)
(D) मारवाड़ महोत्सव (जोधपुर) → हाथी महोत्सव (जयपुर) → मरु महोत्सव (जैसलमेर) → उष्ट्र महोत्सव (बीकानेर)

NODIA

18. बीकानेर का जूनागढ़ किला राजस्थान के प्रमुख विरासत किलों में मुख्य रूप से इसलिए अलग पहचान रखता है क्योंकि:
(A) यह राजस्थान का एकमात्र ऐसा किला था जिस पर मुगलों का कभी अधिकार नहीं हुआ
(B) यह पूरी तरह से सफेद संगमरमर से बना है
(C) यह वर्तमान में राजस्थान विधानसभा के आधिकारिक

समूह में शामिल छह किलों में से एक है।
IV. केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान को प्राकृतिक विश्व धरोहर स्थल के रूप में अंकित किया गया था।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से गलत हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल III
(C) केवल III और IV
(D) केवल II, III और IV

59. कुंभलगढ़ किला, जो विरासत पर्यटन का एक प्रमुख केंद्र और यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल है, किस विशिष्ट स्थापत्य विशेषता के लिए विश्व स्तर पर प्रसिद्ध है?
(A) इसकी नींव पूरी तरह से लकड़ी के लट्ठों पर टिकी है
(B) इसकी 36 किमी लंबी निरंतर परिधि दीवार (परकोटा)
(C) इसकी 953 सूक्ष्म नक्काशीदार संगमरमर की खिड़कियां
(D) संपूर्ण किलेबंदी के लिए शुद्ध सफेद मकराना संगमरमर का उपयोग

60. राजस्थान में निम्नलिखित यूनेस्को विश्व धरोहर स्थलों पर विचार कीजिए:
I. केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान
II. जंतर मंतर (जयपुर)
III. राजस्थान के पहाड़ी किले
IV. जयपुर का परकोटा शहर

निम्नलिखित में से कौन-सा यूनेस्को विश्व धरोहर सूची में उनके शामिल होने का सबसे पहले से सबसे नवीनतम तक का सही कालानुक्रमिक क्रम दर्शाता है?
(A) केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान → जंतर मंतर (जयपुर) → राजस्थान के पहाड़ी किले → जयपुर का परकोटा शहर
(B) जंतर मंतर (जयपुर) → केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान → जयपुर का परकोटा शहर → राजस्थान के पहाड़ी किले
(C) राजस्थान के पहाड़ी किले → केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान → जंतर मंतर (जयपुर) → जयपुर का परकोटा शहर
(D) केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान → राजस्थान के पहाड़ी किले → जंतर मंतर (जयपुर) → जयपुर का परकोटा शहर

61. यूनेस्को के 'राजस्थान के पहाड़ी किले' समूह के तहत नामित छह किलों में से, कौन-सा किला 'जल दुर्ग' की स्थापत्य श्रेणी को सुंदरता से चित्रित करता है क्योंकि यह नदियों से घिरा हुआ है?
(A) गागरोन किला
(B) रणथंभौर किला
(C) कुंभलगढ़ किला
(D) आमेर का किला

62. रोजगार और आर्थिक विकास की अपार संभावनाओं को स्वीकार करते हुए, राजस्थान सरकार ने सर्वप्रथम किस वर्ष पर्यटन को 'उद्योग' का दर्जा घोषित किया था?
(A) 1978 (B) 1989
(C) 1995 (D) 2001

63. राजस्थान सरकार ने पर्यटन और आतिथ्य उद्योग के लिए 'थ्रस्ट सेक्टर' का दर्जा घोषित किया। पर्यटन व्यवसायों के लिए इस दर्जे का प्राथमिक आर्थिक लाभ क्या है?
(A) उन्हें 10 वर्षों के लिए जीएसटी के भुगतान से पूरी तरह छूट दी गई है।
(B) उन्हें भूमि-उपयोग श्रेणी को बदले बिना कृषि भूमि का अधिग्रहण करने की अनुमति है।
(C) उन्हें सीधे राज्य सरकार द्वारा मुफ्त जनशक्ति की आपूर्ति की जाती है।
(D) वे बिजली पर औद्योगिक दरों और विभिन्न सरकारी सब्सिडी के पात्र हो जाते हैं।

64. राजस्थान में शुरु की गई 'मुख्यमंत्री पर्यटन उद्योग संबल योजना' के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह मुख्य रुप से कोविड-19 महामारी से प्रभावित पर्यटन क्षेत्र को वित्तीय राहत प्रदान करने के लिए शुरु की गई थी।
II. यह पात्र पर्यटन और आतिथ्य उद्यमियों द्वारा लिए गए ऋण पर ब्याज अनुदान (सब्सिडी) प्रदान करती है।
III. यह सख्ती से केवल पांच-सितारा संपत्तियों का संचालन करने वाले विदेशी प्रत्यक्ष निवेशकों पर लागू होती है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

65. राजस्थान पर्यटन इकाई नीति 2015 किस पर बल देते हुए तैयार की गई थी?
(A) संरक्षित वन्यजीव अभयारण्यों के पास आधुनिक बहुमंजिला होटलों के वाणिज्यिक निर्माण पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगाना
(B) नई पर्यटन इकाइयों के लिए नियामक स्वीकृतियों और भूमि आवंटन को सुव्यवस्थित करना
(C) सभी पैतृक हेरिटेज संपत्तियों का परिचालन स्वामित्व राज्य संचालित RTDC को अनिवार्य रूप से स्थानांतरित करना
(D) राज्य में आने वाले विदेशी पर्यटकों के लिए सभी अंतरराष्ट्रीय राउंड-ट्रिप उड़ान टिकटों पर सीधा अनुदान देना

66. विरासत संरक्षण में सार्वजनिक-निजी भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए, राजस्थान 'अडॉप्ट ए हेरिटेज' (अपनी धरोहर, अपनी पहचान) योजना में सक्रिय रूप से भाग लेता है। इस योजना के तहत विश्व स्तरीय सुविधाएं प्रदान करने के लिए किसी स्मारक को गोद लेने वाली निजी संस्थाओं को आधिकारिक तौर पर क्या कहा जाता है?
(A) धरोहर रक्षक
(B) हेरिटेज गार्डियंस
(C) पर्यटन सेवक
(D) स्मारक मित्र

Downloaded from www.pdf.tube

(B) भारतीय तेंदुए का सबसे बड़ा आवास स्थल है
(C) भारत का पहला राष्ट्रीय उद्यान है जिसने सफलतापूर्वक गैंडों का प्रजनन कराया है
(D) राजस्थान में अद्वितीय अत्यधिक सघन अर्ध-सदाबहार वन है

30. सरिस्का बाघ अभयारण्य के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह राजस्थान के अलवर जिले में स्थित है।
II. इसने 2008 में रणथंभौर से बाघों के सफल हवाई पुनर्वास के लिए वैश्विक ध्यान आकर्षित किया।
III. इस अभयारण्य में कंकवाड़ी किला जैसे ऐतिहासिक स्थल शामिल हैं।
IV. इसे आधिकारिक तौर पर यूनेस्को के विश्व धरोहर प्राकृतिक स्थल के रूप में मान्यता प्राप्त है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल I, III और IV
(C) केवल II, III और IV
(D) I, II, III और IV

31. कौन-सा गंभीर रूप से लुप्तप्राय प्रवासी पक्षी ऐतिहासिक रूप से अंतर्राष्ट्रीय पक्षी प्रेमियों के लिए केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान का मुख्य आकर्षण था, लेकिन 2000 के दशक की शुरुआत से यहाँ नहीं देखा गया है?
(A) ग्रेटर फ्लेमिंगो (हंसवर)
(B) डेमोइसेल क्रेन (कुरंजा)
(C) ग्रेट इंडियन बस्टर्ड (गोडावण)
(D) साइबेरियन क्रेन (साइबेरियाई सारस)

32. एक प्रमुख वन्यजीव अभयारण्य के भीतर स्थित पांडुपोल हनुमान मंदिर में मंगलवार और शनिवार को धार्मिक पर्यटकों की भारी भीड़ आती है। यह मंदिर किस अभयारण्य में स्थित है?
(A) मुकुंदरा हिल्स बाघ अभयारण्य
(B) कुंभलगढ़ वन्यजीव अभयारण्य
(C) सरिस्का बाघ अभयारण्य
(D) रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान

33. विश्व प्रसिद्ध पुष्कर मेला, जो पशु व्यापार मेले और धार्मिक पर्यटन का एक अनूठा संगम है, किस हिंदू चंद्र मास की पूर्णिमा को अपने चरम पर पहुँचता है?
(A) चैत्र
(B) कार्तिक
(C) श्रावण
(D) फाल्गुन

34. वैश्विक धार्मिक पर्यटन मानचित्र पर पुष्कर विशेष स्थान रखता है क्योंकि यहाँ विश्व के उन अति दुर्लभ प्रसिद्ध मंदिरों में से एक स्थित है जो समर्पित है:
(A) भगवान इंद्र को
(B) भगवान वरुण को
(C) भगवान सूर्य को
(D) भगवान ब्रह्मा को

35. पुष्कर आने वाले श्रद्धालु और पर्यटक अक्सर पवित्र पुष्कर झील में अनुष्ठानिक स्नान करते हैं। परंपरा के अनुसार इस झील को कितने स्नान घाट घेरे हुए हैं?
(A) 11
(B) 24
(C) 52
(D) 108

36. पुष्कर में पर्यटन को बढ़ावा देने और श्रद्धालुओं की पहुँच को आसान बनाने के लिए एक आधुनिक रज्जुमार्ग (रोपवे) प्रणाली स्थापित की गई है जो भगवान ब्रह्मा की प्रथम पत्नी के मंदिर तक जाती है। यह कौन-सा मंदिर है?
(A) गायत्री माता मंदिर
(B) मनसा देवी मंदिर
(C) सावित्री माता मंदिर
(D) चामुंडा माता मंदिर

37. अजमेर में ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह लाखों लोगों को आकर्षित करने वाला एक सर्वधर्म समभाव पर्यटन स्थल है। पूजनीय संत सूफीवाद के किस प्रमुख सिलसिले से संबंधित थे?
(A) चिश्ती
(B) कादिरी
(C) सुहरावर्दी
(D) नक्शबंदी

38. सूची I में दिए गए प्रमुख धार्मिक पर्यटन स्थलों को सूची II में उनके संबंधित स्थानों के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I : (धार्मिक स्थल)
P. श्रीनाथजी मंदिर
Q. दरगाह शरीफ
R. गोविंद देव जी मंदिर
S. ब्रह्मा मंदिर
सूची II : (स्थान)
1. जयपुर
2. पुष्कर
3. नाथद्वारा
4. अजमेर
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

NODIA

39. नाथद्वारा मेवाड़ परिपथ में धार्मिक पर्यटन का एक अत्यधिक महत्त्वपूर्ण केंद्र है। यह न केवल श्रीनाथजी मंदिर के लिए बल्कि अपनी 'पिछवाई' चित्रकारी के लिए भी प्रसिद्ध है, जो पारंपरिक रूप से किसके जीवन की घटनाओं को दर्शाती है?
(A) भगवान शिव और पार्वती
(B) भगवान कृष्ण

(A) P-4, Q-3, R-2, S-1
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-4, Q-1, R-2, S-3
(D) P-2, Q-3, R-4, S-1

76. राजस्थान में एक प्रमुख पर्यटन स्थल और उसके प्राथमिक पर्यटन वर्गीकरण के गलत सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए।
(A) जैसलमेर – मरुस्थलीय पर्यटन
(B) माउंट आबू – मरुस्थलीय पर्यटन
(C) कुंभलगढ़ – विरासत/किला पर्यटन
(D) रणथंभौर – वन्यजीव पर्यटन

77. यदि कोई पर्यटन एजेंसी विशेष रूप से एक ऐसा पैकेज तैयार करना चाहती है जो 'भव्य विरासत महल पर्यटन' को 'झील पर्यटन' के साथ समान रूप से जोड़ता है, तो राजस्थान का कौन-सा शहर सबसे अनुकूल केंद्र बिंदु होगा?
(A) उदयपुर
(B) जोधपुर
(C) बीकानेर
(D) जैसलमेर

78. राजस्थान में ग्रामीण और होमस्टे पर्यटन पहलों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. वे राजस्थान की स्थानीय कला, शिल्प और प्रामाणिक ग्रामीण जीवन शैली को बढ़ावा देते हैं।
II. उनका उद्देश्य स्थानीय कृषि समुदायों के लिए वैकल्पिक पूरक आय स्रोत बनाना है।
III. सुरक्षा कारणों से विदेशी पर्यटकों को कानून द्वारा ग्रामीण होमस्टे में ठहरने से सख्ती से प्रतिबंधित किया गया है।
IV. जोधपुर के पास बिश्नोई गांव समुदाय संचालित इको-ग्रामीण पर्यटन का एक प्रमुख उदाहरण हैं।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-से गलत हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल III
(C) केवल III और IV
(D) केवल II और IV

79. उदयपुर के पास कौन-सा ग्रामीण कला और शिल्प परिसर एक जीवंत नृवंशविज्ञान संग्रहालय के रूप में कार्य करता है और क्षेत्रीय जनजातीय शिल्प को प्रदर्शित करने वाले अपने जीवंत खरीदारी उत्सवों के लिए प्रतिवर्ष हजारों पर्यटकों को आकर्षित करता है?
(A) चोखी ढाणी
(B) जवाहर कला केंद्र
(C) रवींद्र मंच
(D) शिल्पग्राम

80. जयपुर में खरीदारी पर्यटन (शॉपिंग टूरिज्म) मुगलों द्वारा शुरु की गई और बाद में सवाई राम सिंह II द्वारा संरक्षित मिट्टी के बर्तनों की एक अनूठी शैली से अत्यधिक संचालित है, जिसके पास अब भौगोलिक संकेत (GI) टैग है। यह कौन सा पॉटरी उद्योग है?
(A) कागजी पॉटरी
(B) टेराकोटा पॉटरी
(C) ब्लू पॉटरी
(D) ब्लैक पॉटरी

81. ग्रामीण आजीविका को पर्यटन और खरीदारी से जोड़ने के लिए सरकार अक्सर 'सरस आजीविका मेला' आयोजित करती है। यह मेला मुख्य रूप से किसे मंच प्रदान करता है?
(A) बड़े कॉरपोरेट जौहरियों और वाणिज्यिक उद्यमों को बिना तराशे हीरे प्रदर्शित करने और बेचने के लिए
(B) ग्रामीण महिला स्वयं सहायता समूहों (SHGs) को पर्यटकों को सीधे पारंपरिक हस्तशिल्प बेचने के लिए
(C) अग्रणी बहुराष्ट्रीय उपभोक्ता ब्रांडों और खुदरा विक्रेताओं को अस्थायी मौसमी छूट आउटलेट स्थापित करने के लिए
(D) कृषि सहकारी समितियों और किसानों को उच्च उपज देने वाली भारी मशीनरी और आधुनिक कृषि उपकरणों का व्यापार करने के लिए

82. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A) : राजस्थान भारत में 'डेस्टिनेशन वेडिंग' पर्यटन बाजार पर हावी है, जो बड़े पैमाने पर घरेलू और अंतरराष्ट्रीय ग्राहकों को आकर्षित करता है।
कारण (R) : राज्य राजसी ऐतिहासिक किलों, विलासी हेरिटेज पैलेस होटलों और मजबूत आयोजन प्रबंधन अवसंरचना का एक अनूठा संयोजन प्रदान करता है जो एक 'शाही' सौंदर्य प्रदान करता है।
उपर्युक्त कथनों के संदर्भ में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं लेकिन कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
(D) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

83. 'राजस्थान होमस्टे (पेइंग गेस्ट हाउस) योजना' के तहत, प्रामाणिक 'होमस्टे' अनुभव सुनिश्चित करने और अत्यधिक व्यवसायीकरण को रोकने के लिए, प्रति संपत्ति किराए पर दिए जाने योग्य कमरों की अधिकतम संख्या कितनी है?
(A) 5 कमरे
(B) 10 कमरे
(C) 15 कमरे
(D) 20 कमरे

84. जोधपुर क्षेत्र का कौन-सा ग्रामीण समुदाय खेजड़ी के वृक्षों और कृष्णमृगों (काला हिरण) के संरक्षण पर केंद्रित अपने सदियों पुराने, कठोर धार्मिक सिद्धांतों के कारण एक अनूठे इको-टूरिज्म सर्किट की रीढ़ बनता है?

Click Here to Buy book on Flipkart

(A) भील समुदाय
(B) गरासिया समुदाय
(C) बिश्नोई समुदाय
(D) सहरिया समुदाय

85. राजस्थान में पर्यटकों के आगमन के रुझान के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. ऐतिहासिक रूप से, राजस्थान आने वाले घरेलू पर्यटकों की संख्या प्रतिवर्ष विदेशी पर्यटकों की तुलना में काफी अधिक है।
II. फ्रांस, यूनाइटेड किंगडम और संयुक्त राज्य अमेरिका पारंपरिक रूप से राजस्थान आने वाले विदेशी पर्यटकों के लिए शीर्ष स्रोत देशों में रहे हैं।
III. कोविड-19 महामारी के वर्षों (2020-2021) के दौरान विदेशी पर्यटकों के आगमन में अभूतपूर्व, रिकॉर्ड तोड़ वृद्धि देखी गई।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

86. ऐतिहासिक रूप से, राजस्थान में किस विशिष्ट महीनों के ब्लॉक के दौरान विदेशी पर्यटकों के आगमन का पीक सीजन देखा जाता है?
(A) अप्रैल से जून
(B) जुलाई से सितंबर
(C) अक्टूबर से मार्च
(D) मई से अगस्त

87. राजस्थान के पर्यटन विकास में निम्नलिखित संस्थागत मील के पत्थरों पर विचार कीजिए:
I. राजस्थान में पर्यटन को 'उद्योग' का दर्जा दिया जाना
II. राजस्थान पर्यटन विकास निगम (RTDC) की स्थापना
III. पहली 'पैलेस ऑन व्हील्स' लग्जरी ट्रेन की शुरुआत
IV. राजस्थान की पहली समर्पित पर्यटन नीति की घोषणा
निम्नलिखित में से कौन-सा उनकी घटना का सही कालानुक्रमिक क्रम दर्शाता है?
(A) II, III, I, IV
(B) I, II, III, IV
(C) II, I, III, IV
(D) III, II, IV, I

88. राजस्थान पर्यटन में एक बड़ी चुनौती इसकी मौसमी प्रकृति है, जहाँ गर्मी के महीनों के दौरान पर्यटकों की संख्या में भारी गिरावट आती है। इसका मुकाबला करने के लिए, पर्यटन विभाग विशेष रूप से गर्मियों के दौरान अपने विपणन को किसे बढ़ावा देने के लिए केंद्रित करता है?
(A) गहरे जैसलमेर रेत के टीलों में उच्च-तीव्रता वाली मरुस्थलीय ड्यून बाशिंग और ऊंट सफारी अभियान
(B) रणथंभौर में दोपहर के तापमान के दौरान आयोजित खुली जीप वन्यजीव ट्रैकिंग सफारी
(C) माउंट आबू हिल स्टेशन प्रवास और लग्जरी रिज़ॉर्ट पैकेज
(D) वार्षिक पुष्कर ऊंट व्यापार मेला और सांस्कृतिक पशुधन सभा कार्यक्रम

89. हाई-प्रोफाइल लग्जरी शादियों के लिए विश्व प्रसिद्ध गंतव्य, राजस्थान में कौन-सा शाही निवास एक राजपरिवार निवास, एक ताज लग्जरी होटल और एक संग्रहालय में विभाजित है?
(A) जल महल पैलेस, जयपुर
(B) बीकानेर में लक्ष्मी निवास पैलेस
(C) जग मंदिर आईलैंड पैलेस, उदयपुर
(D) उम्मेद भवन पैलेस, जोधपुर

90. राजस्थान पर्यटन क्षेत्र द्वारा सामना की जाने वाली बुनियादी ढांचागत (इन्फ्रास्ट्रक्चरल) चुनौतियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. अति-व्यवसायीकरण और अनियंत्रित निर्माण संवेदनशील विरासत स्थलों की संरचनात्मक अखंडता और सौंदर्य के लिए खतरा पैदा करते हैं।
II. विदेशी पर्यटकों के अनुभव को बेहतर बनाने के लिए बहुभाषी गाइडों के कौशल विकास और प्रशिक्षण की निरंतर मांग बनी रहती है।
III. पानी की गंभीर कमी और अत्यधिक गर्मी का तापमान स्वाभाविक रूप से कुछ शुष्क क्षेत्रों में वर्ष भर चलने वाले मुख्यधारा के पर्यटन को प्रतिबंधित करता है।
IV. भारतमाला और नए एक्सप्रेसवे के माध्यम से बेहतर सड़क संपर्क ने राज्य में आने वाले पर्यटकों की संख्या को गंभीर रूप से कम कर दिया है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल I, III और IV
(C) केवल II, III और IV
(D) I, II, III और IV

NODIA

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs, you are wasting valuable time.

Research shows that learning from **PRINTED BOOKS** has up to **4× HIGHER RETENTION** than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS** move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND** in competition.

In competitive exams, being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (B) जैसलमेर, बीकानेर, जोधपुर और बाड़मेर
राजस्थान में मरु परिपथ अथवा मरु त्रिकोण एक प्रमुख पर्यटन परिपथ है। इस परिपथ के अंतर्गत मूल रूप से थार मरुस्थल के मुख्य सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक केंद्र शामिल हैं। जैसलमेर, बीकानेर, जोधपुर और बाड़मेर जिले मिलकर इस विशिष्ट मरुस्थलीय पर्यटन परिपथ का निर्माण करते हैं। यह क्षेत्र पर्यटकों को रेतीले टीलों, ऐतिहासिक दुर्गों, लोक कलाओं तथा अद्वितीय मरुस्थलीय संस्कृति का अनुभव प्रदान करता है।

2. (A) I, III, II, IV
राजस्थान के भौगोलिक मानचित्र पर पश्चिम से पूर्व दिशा की ओर जाने पर शहरों का सही क्रम जैसलमेर, बीकानेर, जयपुर और भरतपुर है। जैसलमेर राज्य के सुदूर पश्चिमी भाग में थार मरुस्थल में स्थित है। इसके पूर्व में बीकानेर, फिर मध्य-पूर्वी भाग में जयपुर तथा अंत में सुदूर पूर्वी सीमा पर भरतपुर जिला अवस्थित है। यह भौगोलिक स्थिति राज्य के प्रादेशिक विस्तार को दर्शाती है।

3. (A) पधारो म्हारे देश
राजस्थान पर्यटन विभाग द्वारा राज्य के समृद्ध सांस्कृतिक आतिथ्य को प्रदर्शित करने के लिए 'पधारो म्हारे देश' को आधिकारिक स्वागत वाक्य के रूप में अपनाया गया है। यह वाक्य राजस्थानी भाषा की आत्मीयता और अतिथि सत्कार की परंपरा को व्यक्त करता है। अंतरराष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर पर्यटकों को आकर्षित करने के उद्देश्य से इस पारंपरिक नारे का व्यापक प्रचार-प्रसार किया जाता है।

4. (C) मालवा परिपथ
राजस्थान पर्यटन विकास निगम ने राज्य के विभिन्न क्षेत्रों के सांस्कृतिक और भौगोलिक विकास हेतु कई पर्यटन परिपथों को मान्यता प्रदान की है। मेवाड़, शेखावाटी और वागड़ परिपथ राजस्थान के आधिकारिक क्षेत्रीय पर्यटन परिपथों में शामिल हैं। मालवा क्षेत्र मुख्यतः पड़ोसी राज्य मध्य प्रदेश का हिस्सा होने के कारण इसे राजस्थान के प्राथमिक प्रादेशिक पर्यटन परिपथों में औपचारिक स्थान प्राप्त नहीं है।

5. (A) महाराजा सवाई प्रताप सिंह
जयपुर के प्रसिद्ध हवा महल का निर्माण सन 1799 में कछवाहा शासक महाराजा सवाई प्रताप सिंह द्वारा करवाया गया था। इस पांच मंजिला इमारत की वास्तुकला श्री लाल चंद उस्ता द्वारा निर्मित की गई थी। इस महल का मुख्य उद्देश्य राजसी घराने की महिलाओं को बिना किसी के सामने आए सड़क के दैनिक दृश्यों, उत्सवों एवं शोभायात्राओं को देखने की सुविधा प्रदान करना था।

6. (C) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है।
जयपुर स्थित जंतर मंतर एक प्रसिद्ध खगोलीय वेधशाला है, जिसे यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल का दर्जा प्राप्त है। इसका निर्माण महाराजा सवाई जय सिंह द्वितीय ने पारंपरिक भारतीय, इस्लामी और यूरोपीय ज्ञान के समन्वय से किया था। इसका मुख्य उद्देश्य यूरोपीय उपकरणों का प्रचार करना नहीं, बल्कि समय मापन तथा खगोलीय पिंडों की गति की सटीक गणना करना था।

7. (B) 'जयबाण तोप', जो पहियों पर रखी विश्व की सबसे बड़ी तोप है
जयपुर का जयगढ़ किला अपने सैन्य स्थापत्य एवं ऐतिहासिक तोपखाने के लिए जाना जाता है। इस किले में 'जयबाण तोप' रखी गई है, जिसे पहियों पर स्थित दुनिया की सबसे बड़ी तोप माना जाता है। इस ऐतिहासिक तोप का निर्माण सन 1720 में महाराजा सवाई जय सिंह द्वितीय के शासनकाल में हुआ था, जो पर्यटकों के आकर्षण का प्रमुख केंद्र है।

8. (C) आमेर का किला
जयपुर के प्रसिद्ध आमेर किले में पर्यटकों के लिए हाथी की सवारी एक अत्यंत लोकप्रिय विरासत अनुभव है। पर्यटक अरावली पहाड़ियों पर स्थित इस राजसी दुर्ग के मुख्य प्रवेश द्वार तक जाने के लिए इस सवारी का आनंद लेते हैं। यह किला अपनी उत्कृष्ट वास्तुकला, शीश महल तथा समृद्ध इतिहास के लिए देश-विदेश से आने वाले पर्यटकों को आकर्षित करता है।

9. (D) पिछोला झील
उदयपुर का प्रसिद्ध सिटी पैलेस पिछोला झील के पूर्वी तट पर अवस्थित है। इस विशाल पैलेस परिसर का निर्माण महाराणा उदय सिंह द्वितीय द्वारा प्रारंभ किया गया था और लगभग चार शताब्दियों में विभिन्न मेवाड़ शासकों द्वारा इसका विस्तार किया गया। झील के तट पर स्थित यह स्थापत्य संरचना राजस्थान के विरासत एवं जल पर्यटन का एक महत्वपूर्ण केंद्र मानी जाती है।

10. (A) केवल I और II
जोधपुर के मेहरानगढ़ किले की स्थापना सन 1459 में राठौड़ शासक राव जोधा द्वारा की गई थी। इस विशाल किले के भीतर फूल महल तथा मोती महल जैसी अत्यंत सुंदर एवं ऐतिहासिक महलनुमा संरचनाएं अवस्थित हैं। यह किला चिड़ियाटूंका पहाड़ी पर बना एक प्रसिद्ध गिरि दुर्ग है, अत: इसे जल दुर्ग की श्रेणी में वर्गीकृत करना पूरी तरह से अनुचित है।

11. (B) जसवंत थड़ा
जोधपुर में स्थित जसवंत थड़ा का निर्माण महाराजा सरदार सिंह द्वारा अपने पिता महाराजा जसवंत सिंह द्वितीय की स्मृति में करवाया गया था। सफ़ेद संगमरमर से निर्मित यह सुंदर स्मारक अपनी सूक्ष्म नक्काशी और कलात्मक बनावट के लिए जाना जाता है। इसके स्थापत्य सौंदर्य के कारण ही पर्यटन क्षेत्र में इसे प्रायः 'मारवाड़ का ताजमहल' कहकर प्रचारित किया जाता है।

NODIA

महान दीवार के पश्चात इसे विश्व की दूसरी सबसे लंबी निरंतर दीवार माना जाता है, जो अत्यंत दर्शनीय है।

60. (A) केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान → जंतर मंतर (जयपुर) → राजस्थान के पहाड़ी किले → जयपुर का परकोटा शहर
राजस्थान में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थलों के शामिल होने का सही कालानुक्रम है: केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान को सर्वप्रथम 1985 में प्राकृतिक स्थल के रूप में दर्जा मिला, जंतर मंतर को 2010 में, 'राजस्थान के पहाड़ी किलों' को 2013 में तथा जयपुर के परकोटा शहर को 2019 में विश्व धरोहर स्थल के रूप में नामांकित किया गया था।

61. (A) गागरोन किला
झालावाड़ जिले में स्थित गागरोन किला राजस्थान में 'जल दुर्ग' या औदक दुर्ग श्रेणी का एक सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। यह किला अहु और कालीसिंध नदियों के संगम पर बिना किसी नींव के एक विशाल चट्टान पर निर्मित है। यूनेस्को के 'राजस्थान के पहाड़ी किले' समूह में शामिल यह दुर्ग अपनी सामरिक स्थिति एवं जल सुरक्षा के लिए जाना जाता है।

62. (B) 1989
राजस्थान भारत का पहला ऐसा राज्य था जिसने पर्यटन क्षेत्र के आर्थिक महत्व को पहचानते हुए इसे 'उद्योग' का दर्जा प्रदान किया। वर्ष 1989 में मोहम्मद यूनुस समिति की सिफारिशों के आधार पर राज्य सरकार ने पर्यटन को औपचारिक रूप से उद्योग का दर्जा दिया। इस ऐतिहासिक निर्णय से पर्यटन क्षेत्र में निजी निवेश और अवसंरचनात्मक विकास को बहुत बल मिला।

63. (D) वे बिजली पर औद्योगिक दरों और विभिन्न सरकारी सब्सिडी के पात्र हो जाते हैं।
राजस्थान सरकार द्वारा पर्यटन एवं आतिथ्य क्षेत्र को 'थ्रस्ट सेक्टर' का दर्जा देने से व्यावसायिक पर्यटन इकाइयों को व्यापक आर्थिक लाभ मिलते हैं। इसके तहत पर्यटन व्यवसायों को बिजली शुल्क पर व्यावसायिक दरों के बजाय रियायती औद्योगिक दरें लागू होती हैं। इसके अतिरिक्त उन्हें राज्य निवेश प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत विभिन्न प्रकार की वित्तीय छूट एवं सब्सिडी प्राप्त होती है।

64. (A) केवल I और II
'मुख्यमंत्री पर्यटन उद्योग संबल योजना' की शुरुआत मुख्य रूप से वैश्विक महामारी कोविड-19 के दुष्परिणामों से प्रभावित पर्यटन व्यवसायियों को वित्तीय राहत पहुंचाने के उद्देश्य से की गई थी। इसके अंतर्गत सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम पर्यटन इकाइयों द्वारा लिए गए ऋण पर ब्याज सब्सिडी प्रदान की जाती है। यह योजना छोटे और स्थानीय उद्यमियों पर केंद्रित है, अत: तीसरा कथन असत्य है।

65. (B) नई पर्यटन इकाइयों के लिए नियामक स्वीकृतियों और भूमि आवंटन को सुव्यवस्थित करना
राजस्थान पर्यटन इकाई नीति 2015 का मुख्य उद्देश्य राज्य में नई पर्यटन इकाइयों की स्थापना हेतु अनुकूल वातावरण तैयार करना था। इस नीति में भूमि आवंटन की प्रक्रियाओं का सरलीकरण, एकल खिड़की प्रणाली के माध्यम से नियामक स्वीकृतियों का शीघ्र निस्तारण तथा आतिथ्य क्षेत्र में निजी निवेश को प्रोत्साहित करने पर विशेष बल दिया गया था, जिससे राज्य में पर्यटन अवसंरचना सुदृढ़ हुई।

66. (D) स्मारक मित्र
केंद्र एवं राज्य सरकार की 'अडॉप्ट ए हेरिटेज' (अपनी धरोहर, अपनी पहचान) योजना के अंतर्गत ऐतिहासिक स्मारकों में पर्यटन सुविधाओं के विकास एवं रखरखाव हेतु सार्वजनिक व निजी क्षेत्र की कंपनियों को जोड़ा जाता है। इस योजना के तहत किसी स्मारक को गोद लेकर वहाँ बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध कराने वाले कॉर्पोरेट अथवा निजी निकायों को आधिकारिक रूप से 'स्मारक मित्र' कहा जाता है।

67. (A) ग्रामीण होमस्टे में ठहरना और स्थानीय शिल्प तथा कृषि गतिविधियों में भाग लेना
'अनुभवात्मक पर्यटन' के अंतर्गत पर्यटक केवल दर्शनीय स्थलों को देखने के बजाय स्थानीय संस्कृति, परंपराओं तथा दैनिक जीवन शैली का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करते हैं। ग्रामीण आवासों में रुककर स्थानीय शिल्प सीखना, पारंपरिक भोजन बनाना तथा कृषि व लोक गतिविधियों में स्वयं भाग लेना अनुभवात्मक पर्यटन का सबसे सटीक उदाहरण है, जिससे पर्यटकों को आत्मीय जुड़ाव महसूस होता है।

68. (C) जयपुर और पुष्कर
राजस्थान में साहसिक पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए पर्यटन विभाग द्वारा जयपुर तथा पुष्कर क्षेत्रों में व्यावसायिक हॉट एयर बैलूनिंग सफारी को बढ़ावा दिया जाता है। इस गतिविधि के माध्यम से पर्यटक हवा में उड़ते हुए अरावली की पहाड़ियों, ऐतिहासिक किलों, रेतीले टीलों तथा पारंपरिक कस्बों का विहंगम और मनोरम दृश्य आकाश से देखने का अद्भुत अनुभव प्राप्त करते हैं।

69. (A) गंगा नदी डॉल्फिन और घड़ियाल
राष्ट्रीय चम्बल अभयारण्य राजस्थान, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के त्रि-सीमा क्षेत्र में चम्बल नदी के किनारे फैला एक प्रसिद्ध अभयारण्य है। यह संरक्षित क्षेत्र जलीय सफारी के लिए विख्यात है, जहाँ पर्यटक अति-संकटग्रस्त घड़ियाल, मीठे पानी की गंगा नदी डॉल्फिन तथा मगरमच्छों को उनके प्राकृतिक जलीय आवास में करीब से देखने का अनूठा अवसर प्राप्त करते हैं।

70. (A) P-4, Q-3, R-2, S-1
पर्यटन स्थलों का उनकी प्राथमिक श्रेणियों से सही मिलान है: कुलधरा (जैसलमेर) एक परित्यक्त गाँव है जो डार्क टूरिज्म का केंद्र है; सामोद (जयपुर) अपने हेरिटेज पैलेस एवं हवेलियों के लिए जाना जाता है; ताल छापर (चूरू) कृष्णमृग (ब्लैकबक) अभयारण्य के रूप में प्रसिद्ध है; तथा माउंट आबू (सिरोही) राज्य का एकमात्र हिल स्टेशन एवं इको-टूरिज्म केंद्र है।

71. (B) बुर्जों और झीलों के पार जिपलाइनिंग (फ्लाइंग फॉक्स)
जोधपुर के ऐतिहासिक मेहरानगढ़ किले में विरासत के साथ साहसिक पर्यटन का एक उत्कृष्ट समन्वय देखा जा सकता है।

Downloaded from www.pdf.tube

24. (D) उपर्युक्त सभी
राजस्थान पर्यटन विभाग द्वारा माउंट आबू में प्रतिवर्ष शीतकालीन महोत्सव आयोजित किया जाता है। इस उत्सव में राज्य की विविध सांस्कृतिक धरोहर को प्रदर्शित करने के लिए घूमर, कालबेलिया तथा गैर जैसे सभी प्रमुख पारंपरिक लोक नृत्यों की प्रस्तुति दी जाती है। यह आयोजन राज्य की समृद्ध नृत्यांगना परंपराओं का आनंद लेने के लिए भारी संख्या में पर्यटकों को आकर्षित करता है।

25. (D) सवाई माधोपुर जिला
रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान राजस्थान के सवाई माधोपुर जिले में स्थित है। यह उत्तर भारत के विशालतम एवं प्रसिद्ध वन्यजीव संरक्षण क्षेत्रों में से एक है। अरावली और विंध्य पर्वत श्रृंखलाओं के संगम पर बसा यह उद्यान बाघ संरक्षण परियोजना के अंतर्गत आता है तथा प्राकृतिक आवास में बाघों एवं अन्य वन्यजीवों को देखने के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध है।

26. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान दिन के समय बाघों की आसानी से होने वाले अवलोकन के लिए विश्व प्रसिद्ध है। यहाँ के बाघ दशकों से पर्यटकों की सफारी गाड़ियों और मानवीय आवाजाही के अभ्यस्त हो चुके हैं। इस कारण वे अक्सर बेझिझक दिन के उजाले में खुले मैदानों, झीलों के किनारे तथा प्राचीन ऐतिहासिक इमारतों के अवशेषों के बीच स्वच्छंद घूमते हुए दिखाई देते हैं।

27. (B) पदम तालाब
रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान के मुख्य कोर क्षेत्र में प्रसिद्ध ऐतिहासिक जोगी महल के निकट पदम तालाब अवस्थित है। यह झील उद्यान की सबसे बड़ी जल संरचनाओं में से एक है, जहाँ वन्यजीव तथा पक्षी पानी पीने आते हैं। पर्यटक सफारी के दौरान इस स्थल पर अक्सर बाघों और मगरमच्छों की गतिविधि देखने का अवसर प्राप्त होता है।

28. (B) त्रिनेत्र गणेश
रणथंभौर दुर्ग परिसर के भीतर प्रसिद्ध ऐतिहासिक त्रिनेत्र गणेश मंदिर स्थापित है। यह मंदिर संपूर्ण भारत में एकमात्र ऐसा स्थान है जहाँ भगवान गणेश की तीन नेत्रों वाली मूर्ति विराजमान है। यहाँ वर्ष भर लाखों श्रद्धालु तथा पर्यटक दर्शन हेतु आते हैं। विशेष रूप से गणेश चतुर्थी पर आयोजित होने वाले धार्मिक मेले में भारी जनसमूह उमड़ता है।

29. (A) पलेआर्कटिक प्रवासी जलपक्षियों के लिए एक प्रमुख शीतकालीन प्रवास स्थल है
भरतपुर में स्थित केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान एक विश्व प्रसिद्ध पक्षी अभयारण्य तथा यूनेस्को प्राकृतिक विश्व धरोहर स्थल है। यह उद्यान शीत ऋतु के दौरान उत्तरी एशिया, साइबेरिया एवं मध्य एशिया जैसे पलेआर्कटिक क्षेत्रों से आने वाले हजारों प्रवासी जलपक्षियों के लिए एक अत्यंत महत्वपूर्ण शीतकालीन प्रवास एवं प्रजनन स्थल के रूप में कार्य करता है, जो पारिस्थितिक पर्यटन को बढ़ावा देता है।

30. (A) केवल I, II और III
सरिस्का बाघ अभयारण्य राजस्थान के अलवर जिले में अवस्थित है। यहाँ वर्ष 2008 में रणथंभौर से बाघों का हेलीकॉप्टर द्वारा सफल पुनर्वास किया गया था। इस अभयारण्य क्षेत्र के भीतर ऐतिहासिक कंकवाड़ी किला भी स्थित है। हालांकि सरिस्का को यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में प्राकृतिक स्थल के रूप में वर्गीकृत नहीं किया गया है, अतः चौथा कथन असत्य है।

31. (D) साइबेरियन क्रेन (साइबेरियाई सारस)
साइबेरियन क्रेन एक अति संकटग्रस्त प्रवासी पक्षी है जो ऐतिहासिक रूप से केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान, भरतपुर का मुख्य आकर्षण हुआ करता था। यह पक्षी प्रतिवर्ष शीतकाल में साइबेरिया से हजारों किलोमीटर की यात्रा करके यहाँ आता था। हालांकि, वर्ष 2002 के पश्चात भारत के इस प्रसिद्ध पक्षी अभयारण्य में इस दुर्लभ सारस की उपस्थिति पुनः दर्ज नहीं की गई है।

32. (C) सरिस्का बाघ अभयारण्य
पांडुपोल हनुमान मंदिर राजस्थान के सरिस्का बाघ अभयारण्य के सघन वन क्षेत्र के भीतर अवस्थित है। पौराणिक कथाओं के अनुसार, पांडवों ने अपने अज्ञातवास का कुछ समय यहाँ व्यतीत किया था। इस मंदिर में शयन मुद्रा में हनुमान जी की प्रतिमा विराजमान है। प्रति मंगलवार और शनिवार को यहाँ धार्मिक पर्यटकों एवं श्रद्धालुओं की भारी भीड़ एकत्र होती है।

33. (B) कार्तिक
विश्व प्रसिद्ध पुष्कर मेला राजस्थान के अजमेर जिले में स्थित पुष्कर नगर में आयोजित होता है। यह सांस्कृतिक एवं धार्मिक उत्सव हिंदू पंचांग के कार्तिक मास की शुक्ल एकादशी से प्रारंभ होकर कार्तिक पूर्णिमा को अपने मुख्य शिखर पर पहुंचता है। इस अवसर पर पवित्र सरोवर में स्नान का विशेष धार्मिक महत्व है तथा विशाल पशु मेला भी लगता है।

34. (D) भगवान ब्रह्मा को
अजमेर के निकट स्थित पुष्कर धार्मिक पर्यटन का एक अंतर्राष्ट्रीय केंद्र है। यह स्थान विश्व के उन अत्यंत दुर्लभ एवं प्रसिद्ध धार्मिक स्थलों में शामिल है जहाँ सृष्टिकर्ता भगवान ब्रह्मा का मुख्य मंदिर स्थित है। इस मंदिर का निर्माण 14वीं शताब्दी का माना जाता है, जहाँ प्रतिवर्ष लाखों देशी-विदेशी श्रद्धालु तथा पर्यटक दर्शन एवं पूजा-अर्चना के लिए आते हैं।

NODIA

35. (C) 52
पवित्र पुष्कर झील चारों ओर से कुल 52 धार्मिक घाटों से घिरी हुई है। इन घाटों का निर्माण विभिन्न रियासतों के राजाओं एवं धनी सेठों द्वारा करवाया गया था। श्रद्धालुओं द्वारा इन घाटों पर अनुष्ठानिक स्नान, पूजा एवं दीपदान किया जाता है। वराह घाट, ब्रह्म घाट तथा गऊ घाट इस धार्मिक झील के सबसे प्रमुख एवं पवित्र घाटों में गिने जाते हैं।

36. (C) सावित्री माता मंदिर
पुष्कर में पर्यटन सुविधाओं को आधुनिक बनाने तथा सुलभ आवागमन हेतु रत्नागिरी पहाड़ी पर स्थित सावित्री माता मंदिर

12. (B) छितर बलुआ पत्थर

जोधपुर का उम्मेद भवन पैलेस दुनिया के विशालतम निजी आवासों में से एक है। इस महल के निर्माण में स्थानीय स्तर पर पाए जाने वाले विशिष्ट छितर बलुआ पत्थर का उपयोग किया गया है, जिसके कारणइसे 'छितर पैलेस' भी कहा जाता है। इसका स्थापत्य पश्चिमी कला एवं भारतीय राजपूती वास्तुकला का एक अद्भुत मिश्रण प्रस्तुत करता है जो पर्यटकों को लुभाता है।

13. (A) सम के रेत के टीले (धोरे), जैसलमेर

राजस्थान पर्यटन विभाग द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित किया जाने वाला मरु महोत्सव जैसलमेर के प्रसिद्ध सम के रेतीले टीलों पर संपन्न होता है। इस सांस्कृतिक उत्सव में थार मरुस्थल की समृद्ध लोक संस्कृति, ऊंट दौड़, पारंपरिक संगीत तथा लोक नृत्यों का प्रदर्शन किया जाता है। यह कार्यक्रम विश्व भर से आने वाले देशी-विदेशी पर्यटकों के लिए मरुस्थलीय जीवन का प्रत्यक्ष अनुभव प्रदान करता है।

14. (C) सोना, चांदी और ज़री (ब्रोकेड) के धागे

जैसलमेर स्थित पटवों की हवेली पांच हवेलियों का एक समूह है, जो अपनी सूक्ष्म पत्थर नक्काशी के लिए प्रसिद्ध है। इस ऐतिहासिक परिसर का निर्माण 19वीं शताब्दी में सेठ गुमान चंद पटवा द्वारा अपने बेटों के लिए करवाया गया था। पटवा परिवार मुख्यतः सोना, चांदी तथा कीमती ज़री के धागों के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार से जुड़ा हुआ एक अत्यंत समृद्ध व्यापारी परिवार था।

15. (D) इसके निर्माण में पीले बलुआ पत्थर का उपयोग

जैसलमेर के प्रसिद्ध किले को 'सोनार किला' या स्वर्ण किला कहा जाता है। इस दुर्ग की बाहरी दीवारों एवं आंतरिक संरचनाओं के निर्माण में स्थानीय पीले बलुआ पत्थर का प्रयोग किया गया है। जब सूर्यास्त की किरणें इन पत्थरों पर पड़ती हैं, तब यह किला सुनहरे रंग में चमकने लगता है, जिससे इसका दृश्य अत्यंत आकर्षक और मनोरम दिखाई देता है।

16. (C) मरु राष्ट्रीय उद्यान

जैसलमेर और बाड़मेर जिलों में फैला मरु राष्ट्रीय उद्यान थार मरुस्थल के अद्वितीय पारिस्थितिकी तंत्र का प्रतिनिधित्व करता है। यह संरक्षित क्षेत्र गंभीर रूप से लुप्तप्राय राज्य पक्षी गोडावण (ग्रेट इंडियन बस्टर्ड), चिंकारा, मरुस्थलीय लोमड़ी तथा विविध जैविक प्रजातियों का एक सुरक्षित प्राकृतिक आवास है। यहाँ आने वाले पर्यटकों को दुर्लभ मरुस्थलीय वन्यजीवों को देखने का अवसर प्राप्त होता है।

17. (B) उष्ट्र महोत्सव (बीकानेर) → मरु महोत्सव (जैसलमेर) → हाथी महोत्सव (जयपुर) → मारवाड़ महोत्सव (जोधपुर)

राजस्थान में उत्सवों का आयोजन कैलेंडर वर्ष के अनुसार क्रमबद्ध होता है। बीकानेर का उष्ट्र महोत्सव जनवरी में, जैसलमेर का मरु महोत्सव जनवरी-फरवरी में तथा जयपुर का हाथी महोत्सव मार्च में होली के अवसर पर आयोजित होता है। जोधपुर का मारवाड़ महोत्सव आश्विन मास (सितंबर-अक्टूबर) में आयोजित किया जाता है। अतः इनका सही कालानुक्रमिक क्रम यही है।

18. (D) यह किसी ऊंची पहाड़ी या चट्टानी उभार के बजाय समतल मैदान पर निर्मित है

बीकानेर स्थित जूनागढ़ किला राजस्थान के अधिकांश किलों से अलग विशेषता रखता है, क्योंकि यह किसी ऊंची पर्वत श्रृंखला पर नहीं बल्कि समतल मैदानी भूभाग पर निर्मित है। इस प्रकार के दुर्गों को धान्वन दुर्ग या मैदानी दुर्ग कहा जाता है। राजा राय सिंह द्वारा निर्मित यह किला अपनी उत्कृष्ट वास्तुकला, भव्य महलों तथा बारीक चित्रकारी के लिए प्रसिद्ध है।

19. (A) करणी माता मंदिर

बीकानेर के पास देशनोक में स्थित करणी माता मंदिर धार्मिक पर्यटन का एक प्रसिद्ध केंद्र है। यह मंदिर परिसर हजारों की संख्या में निवास करने वाले काले चूहों के लिए दुनिया भर में जाना जाता है, जिन्हें स्थानीय रूप से 'काबा' कहा जाता है। श्रद्धालुओं एवं पर्यटकों द्वारा इन चूहों को अत्यंत पवित्र माना जाता है तथा इन्हें प्रसाद अर्पित किया जाता है।

20. (C) राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केंद्र (NRCC)

बीकानेर में स्थित राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केंद्र एक अग्रणी संस्थान है, जो ऊंटों के नस्ल सुधार, स्वास्थ्य तथा उनके दुग्ध उत्पादों के अनुसंधान पर केंद्रित है। यह केंद्र पर्यटकों को मरुस्थलीय पशुधन के जीवन, ऊंट की विभिन्न प्रजातियों तथा ऊंट के दूध से बने खाद्य पदार्थों के विषय में जानकारी प्राप्त करने का अनूठा अवसर प्रदान करता है।

21. (A) जैन धर्म

सिरोही जिले के माउंट आबू में स्थित दिलवाड़ा मंदिर समूह जैन धर्म के तीर्थंकरों को समर्पित है। 11वीं से 13वीं शताब्दी के मध्य निर्मित ये मंदिर अपने संगमरमर स्थापत्य, अत्यंत सूक्ष्म नक्काशी एवं कलात्मक छतों के लिए प्रसिद्ध हैं। विमल शाह और वस्तुपाल-तेजपाल द्वारा निर्मित ये मंदिर विश्व भर के पर्यटकों तथा श्रद्धालुओं को आकर्षित करते हैं।

22. (D) इसे देवताओं ने अपने नाखूनों से खोदा था

माउंट आबू में स्थित नक्की झील राजस्थान का एक प्रमुख पर्वतीय जल पर्यटन स्थल है। स्थानीय पौराणिक मान्यताओं एवं जनश्रुतियों के अनुसार, इस झील का निर्माण देवताओं ने राक्षस बलासुरा के विनाश हेतु अपने नाखूनों से खोदकर किया था। यही कारण है कि इसे 'नक्की' झील कहा जाता है। यह प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण एक आकर्षक पर्यटन केंद्र है।

23. (B) अरावली पर्वतमाला की सबसे ऊंची चोटी

माउंट आबू में स्थित गुरु शिखर अरावली पर्वत श्रृंखला का उच्चतम पर्वत शिखर है, जिसकी समुद्र तल से ऊंचाई लगभग 1722 मीटर है। भौगोलिक दृष्टि से यह राजस्थान की सबसे ऊंची चोटी है। इस शिखर पर भगवान दत्तात्रेय का एक प्राचीन मंदिर अवस्थित है, जो पर्वतारोहियों, पर्यटकों एवं श्रद्धालुओं के लिए एक प्रमुख दर्शनीय स्थल है।

Click Here to Buy book on Amazon

48. (C) निजी उड़ानों के लिए वाणिज्यिक विमानन लाइसेंस जारी करना
राजस्थान पर्यटन विकास निगम (RTDC) का मुख्य कार्य राज्य में पर्यटक आवासों का संचालन, विभिन्न क्षेत्रीय भ्रमण कार्यक्रमों का आयोजन तथा लग्जरी ट्रेनों का विपणन करना है। व्यावसायिक विमानन लाइसेंस जारी करना या नागरिक विमानन को नियंत्रित करना पूर्णतः केंद्रीय नागरिक विमानन महानिदेशालय (DGCA) के अधिकार क्षेत्र में आता है, न कि पर्यटन विकास निगम के कार्यात्मक दायरे में।

49. (B) स्थानीय सांस्कृतिक अनुभव और घर के बने भोजन के साथ किफायती प्रवास प्रदान करना
राजस्थान पर्यटन विभाग द्वारा शुरू की गई 'पेइंग गेस्ट योजना' का मुख्य उद्देश्य पर्यटकों को स्थानीय परिवारों के साथ रहने का अवसर देना है। इससे पर्यटकों को राजस्थानी संस्कृति, परंपराओं एवं घर के बने प्रामाणिक भोजन का कम खर्च में प्रत्यक्ष अनुभव मिलता है। साथ ही, इससे स्थानीय गृहस्वामियों को अपने खाली कमरों के माध्यम से अतिरिक्त आय प्राप्त होती है।

50. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
राजस्थान में हेरिटेज होटलों की अवधारणा ने पर्यटन के विकेंद्रीकरण में अभूतपूर्व योगदान दिया है। प्राचीन किलों, हवेलियों और महलों को हेरिटेज होटलों में परिवर्तित करने से ये ऐतिहासिक इमारतें नष्ट होने से बच गई हैं। इससे ग्रामीण तथा अर्ध-शहरी क्षेत्रों में स्थानीय युवाओं को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रोजगार प्राप्त हुआ है और पर्यटन गतिविधि का प्रादेशिक विस्तार संभव हुआ है।

51. (A) अजीत भवन, जोधपुर
जोधपुर स्थित 'अजीत भवन' को भारत के प्रथम आधिकारिक 'हेरिटेज होटल' के रूप में मान्यता प्राप्त है। इस भवन का निर्माण 1920 के दशक में जोधपुर के महाराज धीराज अजीत सिंह के लिए करवाया गया था। बाद में इसे पर्यटकों के ठहरने हेतु एक विशिष्ट विरासत स्थल के रूप में परिवर्तित किया गया, जिसने देश में हेरिटेज आतिथ्य क्षेत्र की नींव रखी।

52. (C) 1950
भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय द्वारा निर्धारित दिशा-निर्देशों के अनुसार, किसी ऐतिहासिक किले, महल, हवेली अथवा निवास स्थान को आधिकारिक तौर पर 'हेरिटेज होटल' की श्रेणी में वर्गीकृत करने के लिए उस संरचना का निर्माण वर्ष 1950 से पूर्व का होना अनिवार्य है। इसके अतिरिक्त, भवन में स्थापत्य की ऐतिहासिक मौलिकता एवं प्रामाणिक स्वरुप सुरक्षित रहना आवश्यक है।

53. (A) सफदरजंग रेलवे स्टेशन, नई दिल्ली
'पैलेस ऑन व्हील्स' भारत की अत्यंत प्रतिष्ठित लग्जरी पर्यटक ट्रेन है, जो राजस्थान के प्रमुख ऐतिहासिक गंतव्यों की यात्रा कराती है। यह ट्रेन पारंपरिक रूप से अपनी 7-रात और 8-दिन की मानक यात्रा नई दिल्ली के सफदरजंग रेलवे स्टेशन से प्रारंभ करती है। यहाँ से रवाना होकर यह ट्रेन जयपुर, रणथंभौर, चित्तौड़गढ़, उदयपुर, जैसलमेर, जोधपुर और भरतपुर का परिभ्रमण कराती है।

NODIA

54. (A) P-2, Q-1, R-4, S-3
लग्जरी पर्यटक ट्रेनों की सही विशेषताएं इस प्रकार हैं: 'पैलेस ऑन व्हील्स' 1982 में शुरु की गई राजस्थान की पहली लग्जरी ट्रेन है, 'रॉयल राजस्थान ऑन व्हील्स' 2009 में उन्नत सुविधाओं के साथ शुरू हुई, 'महाराजा एक्सप्रेस' अति-विलासिता वाली अखिल भारतीय ट्रेन है, तथा 'फेयरी क्वीन' विश्व के सबसे पुराने कार्यरत भाप इंजन द्वारा संचालित हेरिटेज ट्रेन है।

55. (B) माउंट आबू
पैलेस ऑन व्हील्स लग्जरी ट्रेन का मानक मार्ग राजस्थान के मुख्य ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक स्थलों को कवर करता है। इसके नियमित यात्रा कार्यक्रम में जयपुर, सवाई माधोपुर (रणथंभौर), चित्तौड़गढ़, उदयपुर, जैसलमेर, जोधपुर, भरतपुर तथा आगरा शामिल हैं। पर्वतीय भौगोलिक स्थिति और रेल मार्ग की सीमाओं के कारण माउंट आबू इस ट्रेन के नियमित पड़ावों में शामिल नहीं है।

56. (B) 1982
राजस्थान में विरासत पर्यटन को अंतरराष्ट्रीय मानचित्र पर स्थापित करने वाली प्रसिद्ध 'पैलेस ऑन व्हील्स' लग्जरी ट्रेन की शुरुआत 26 जनवरी 1982 को की गई थी। यह भारतीय रेलवे और राजस्थान पर्यटन विकास निगम का एक संयुक्त प्रयास था। इस ट्रेन में पूर्व रियासती काल के शाही सैलूनों को पुनर्स्थापित कर पर्यटकों के लिए विलासितापूर्ण यात्रा की सुविधा बनाई गई थी।

57. (C) 6
वर्ष 2013 में यूनेस्को की विश्व धरोहर समिति ने 'राजस्थान के पहाड़ी किले' नामक श्रृंखला के तहत राज्य के छह प्रमुख किलों को विश्व धरोहर सूची में शामिल किया था। इन छह किलों में चित्तौड़गढ़ किला, कुंभलगढ़ किला, रणथंभौर किला, गागरोन किला, आमेर का किला तथा जैसलमेर का किला शामिल हैं। ये सभी दुर्ग अपनी उत्कृष्ट वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध हैं।

58. (B) केवल III
यूनेस्को विश्व धरोहर सूची के संबंध में जयपुर शहर का परकोटा (2019), जंतर मंतर (2010) और केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान (1985) विश्व धरोहर स्थल हैं। 'राजस्थान के पहाड़ी किले' समूह में छः दुर्ग शामिल हैं, परंतु अजमेर का तारागढ़ किला इस विशिष्ट सूची में शामिल नहीं है। अत: केवल तीसरा कथन गलत है, जबकि अन्य सभी कथन सत्य हैं।

59. (B) इसकी 36 किमी लंबी निरंतर परिधि दीवार (परकोटा)
राजसमंद जिले में स्थित कुंभलगढ़ किला मेवाड़ के महान वास्तुकला शिल्पी मंडन द्वारा निर्मित कराया गया था। यह दुर्ग अपनी विशाल और निरंतर फैली हुई 36 किलोमीटर लंबी परकोटा दीवार के लिए संपूर्ण विश्व में जाना जाता है। चीन की

के लिए रज्जुमार्ग (रोपवे) सेवा प्रारंभ की गई है। देवी सावित्री को पौराणिक मान्यताओं के अनुसार भगवान ब्रह्मा की प्रथम पत्नी माना जाता है। इस पहाड़ी शिखर से पर्यटकों को पुष्कर नगर तथा झील का अत्यंत विहंगम दृश्य दिखाई देता है।

37. (A) चिश्ती
अजमेर में स्थित ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह सांप्रदायिक सद्भाव का एक प्रमुख वैश्विक केंद्र है। सूफी संत ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती सूफीवाद के प्रसिद्ध 'चिश्ती' सिलसिले से संबंधित थे। 12वीं शताब्दी में भारत आए इस महान संत ने अजमेर को अपना मुख्य केंद्र बनाया। उनकी यह दरगाह सभी धर्मों के श्रद्धालुओं एवं पर्यटकों के लिए अपार श्रद्धा का केंद्र है।

38. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
राजस्थान के प्रमुख धार्मिक स्थलों का उनके संबंधित स्थानों से सही सुमेलित रूप है: श्रीनाथजी का प्रसिद्ध वैष्णव मंदिर नाथद्वारा में अवस्थित है, ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह शरीफ अजमेर में स्थित है, ऐतिहासिक गोविंद देव जी का मंदिर जयपुर शहर में स्थित है तथा विश्व प्रसिद्ध ब्रह्मा जी का एकमात्र मुख्य मंदिर पुष्कर में अवस्थित है।

39. (B) भगवान कृष्ण
नाथद्वारा मेवाड़ पर्यटन परिपथ का एक अत्यंत महत्वपूर्ण धार्मिक केंद्र है, जो भगवान कृष्ण के बाल स्वरुप श्रीनाथजी को समर्पित है। यह स्थान अपनी पारंपरिक 'पिछवाई' चित्रकारी कला के लिए भी जाना जाता है। इस कला शैली में कपड़े के पर्दे पर भगवान कृष्ण के जीवन, उनकी लीलाओं तथा विभिन्न उत्सवों के मनोरम दृश्यों का चित्रांकन किया जाता है।

40. (C) ईश्वर से मिलन (विसाल) का प्रतीक पुण्यतिथि
सूफी परंपरा में 'उर्स' शब्द का शाब्दिक अर्थ विवाह या ईश्वर से मिलन होता है। यह किसी सूफी संत की पुण्यतिथि का प्रतीक माना जाता है, जब उनकी आत्मा का परमात्मा से पूर्ण मिलन होता है। अजमेर में ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती के वार्षिक उर्स के दौरान विश्व भर से लाखों श्रद्धालु एवं पर्यटक संत के प्रति सम्मान व्यक्त करने एकत्र होते हैं।

41. (C) 2021
राजस्थान सरकार ने राज्य की प्राकृतिक संपदा के संरक्षण तथा सतत एवं पर्यावरण-अनुकूल पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से वर्ष 2021 में 'राजस्थान इकोटूरिज्म नीति' आधिकारिक रूप से लागू की। इस नीति का मुख्य लक्ष्य जैव विविधता का संरक्षण करना, स्थानीय समुदायों के लिए आजीविका के अवसर पैदा करना तथा पर्यटकों को प्रकृति-आधारित गतिविधियों से जोड़ना है।

42. (A) केवल I और II
राजस्थान ग्रामीण पर्यटन योजना का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के नए अवसर निर्मित करना तथा स्थानीय आजीविका को बढ़ावा देना है। इसके तहत होमस्टे एवं अतिथि गृह संचालकों को स्टाम्प ड्यूटी में छूट जैसे वित्तीय प्रोत्साहन दिए जाते हैं। यह योजना घरेलू एवं अंतरराष्ट्रीय दोनों प्रकार के पर्यटकों के लिए खुली है, अत: तीसरा कथन पूरी तरह असत्य है।

43. (B) स्थानीय वनस्पति और जीवों को प्रदर्शित करने वाले जिला स्तरीय इको-टूरिज्म पार्क बनाना
राजस्थान सरकार द्वारा घोषित लव कुश वाटिका पहल का प्राथमिक उद्देश्य राज्य के प्रत्येक जिले में इको-टूरिज्म उद्यान विकसित करना है। इन वाटिकाओं में स्थानीय वनस्पति, औषधीय पौधों एवं प्राकृतिक परिवेश को प्रदर्शित किया जाता है। इसका मुख्य लक्ष्य आम नागरिकों और पर्यटकों के बीच पर्यावरण जागरूकता बढ़ाना तथा प्रकृति की गोद में विश्राम हेतु हरित स्थान उपलब्ध कराना है।

44. (B) अपनी झीलों पर प्रचुर मात्रा में आने वाले प्रवासी पक्षियों के कारण 'बर्ड विलेज' (पक्षी गांव)
उदयपुर जिले में स्थित मेनार गांव को राजस्थान के इको-टूरिज्म परिदृश्य में 'बर्ड विलेज' के रूप में पहचान मिली है। इस गांव की झीलों में प्रतिवर्ष शीत ऋतु के दौरान भारी संख्या में दुर्लभ प्रवासी पक्षी आते हैं। स्थानीय ग्रामीणों द्वारा पक्षी संरक्षण हेतु सामुदायिक प्रयास किए जाते हैं, जिससे यह स्थान पर्यावरण एवं पक्षी प्रेमियों के लिए एक प्रमुख गंतव्य बन गया है।

45. (B) 1978
राजस्थान पर्यटन विकास निगम (RTDC) की स्थापना कंपनी अधिनियम के तहत वर्ष 1978 में की गई थी, जबकि इसने अपना औपचारिक व्यावसायिक कार्य 1 अप्रैल 1979 से प्रारंभ किया। यह निगम राज्य में पर्यटन गतिविधियों के विकास, पर्यटकों को आवास एवं परिवहन सुविधाएं प्रदान करने तथा राजस्थान को एक प्रमुख पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने की नोडल एजेंसी है।

46. (C) पैलेस ऑन व्हील्स जैसी विलासी पर्यटक ट्रेनें
राजस्थान पर्यटन विकास निगम (RTDC) भारतीय रेलवे के साथ रणनीतिक साझेदारी में 'पैलेस ऑन व्हील्स' जैसी अंतरराष्ट्रीय स्तर की लग्जरी पर्यटक ट्रेनों का संचालन एवं प्रबंधन करता है। इस संयुक्त व्यवस्था के तहत रेलवे ट्रेन संचालन एवं तकनीकी रखरखाव देखता है, जबकि निगम पर्यटकों के आतिथ्य, खान-पान, विपणन तथा भ्रमण कार्यक्रमों का संपूर्ण प्रबंधन संभाला करता है।

47. (D) बीकानेर
राजस्थान पर्यटन विकास निगम द्वारा संचालित प्रसिद्ध 'ढोला मारु' पर्यटक होटल बीकानेर शहर में स्थित है। इस होटल का नामकरण राजस्थानी लोक साहित्य की अत्यंत प्रसिद्ध अमर प्रेम गाथा 'ढोला-मारु' के नाम पर रखा गया है। निगम अपने विभिन्न होटलों एवं पर्यटक बंगलों का नाम प्रादेशिक सांस्कृतिक, ऐतिहासिक तथा प्राकृतिक पहचान के आधार पर तय करता है।

Downloaded from www.pdf.tube

यहाँ किले की विशाल बाहरी दीवारों, बुर्जों तथा प्राचीर के नीचे स्थित रानीसर झील के ऊपर जिपलाइनिंग (फ्लाइंग फॉक्स) की व्यावसायिक सुविधा सफलतापूर्वक शुरू की गई है। यह साहसिक गतिविधि देश-विदेश के युवाओं एवं पर्यटकों के बीच अत्यंत लोकप्रिय है।

72. (C) मीटिंग्स, इंसेंटिव्स, कॉन्फ्रेन्सेस एंड एग्जीबिशन्स
व्यावसायिक पर्यटन क्षेत्र के संदर्भ में प्रयुक्त संक्षिप्त नाम MICE का पूर्ण रूप मीटिंग्स (Meetings), इंसेंटिव्स (Incentives), कॉन्फ्रेन्सेस (Conferences) तथा एग्जीबिशन्स (Exhibitions) होता है। राजस्थान अपनी उन्नत बुनियादी सुविधाओं, हेरिटेज होटलों तथा अत्याधुनिक सम्मलेन केंद्रों के बल पर राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कॉर्पोरेट सम्मेलनों, व्यापारिक बैठकों एवं वैश्विक प्रदर्शनियों का एक प्रमुख केंद्र बनकर उभरा है।

73. (D) सीतापुरा
जयपुर एग्जीबिशन एंड कन्वेंशन सेंटर (JECC) राजस्थान में व्यावसायिक पर्यटन तथा MICE गतिविधियों को बढ़ावा देने वाला एक अत्याधुनिक अंतर्राष्ट्रीय केंद्र है। यह विशाल केंद्र जयपुर के प्रमुख औद्योगिक एवं शैक्षणिक क्षेत्र सीतापुरा में अवस्थित है। यहाँ राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर की व्यापारिक प्रदर्शनियाँ, बड़े कॉर्पोरेट सम्मेलन, व्यावसायिक बैठकें तथा वृहद सांस्कृतिक कार्यक्रम नियमित रूप से आयोजित किए जाते हैं।

74. (A) कॉरपोरेट समूह, उद्योग पेशेवर और प्रतिनिधि
MICE (मीटिंग्स, इंसेंटिव्स, कॉन्फ्रेन्सेस, एग्जीबिशन्स) पर्यटन मुख्य रूप से कॉर्पोरेट जगत, औद्योगिक संगठनों, व्यावसायिक समूहों एवं बहुराष्ट्रीय कंपनियों के प्रतिनिधियों को लक्षित करता है। इस श्रेणी के अंतर्गत आने वाले यात्री व्यावसायिक सम्मेलनों, व्यापारिक बैठकों, उत्पाद लॉन्च तथा वार्षिक सम्मेलनों में भाग लेने आते हैं। यह वर्ग आतिथ्य उद्योग के लिए अत्यधिक राजस्व उत्पन्न करने वाला पर्यटन खंड माना जाता है।

75. (A) P-4, Q-3, R-2, S-1
राजस्थान के प्रसिद्ध पारंपरिक हस्तशिल्प और उनके मुख्य केंद्रों का सुमेलित रूप है: थेवा कला (काँच पर सोने की सूक्ष्म मीनाकारी) का केंद्र प्रतापगढ़ है; उस्ता कला (ऊंट की खाल पर मुनावत चित्रकारी) बीकानेर की प्रसिद्ध कला है; टेराकोटा की हस्तनिर्मित मूर्तियां मोलेला (राजसमंद) में बनती हैं; तथा पारंपरिक वस्त्र छपाई अजरक प्रिंट का संबंध बाड़मेर जिले से है।

76. (B) माउंट आबू – मरुस्थलीय पर्यटन
राजस्थान के पर्यटन स्थलों के वर्गीकरण में माउंट आबू का मरुस्थलीय पर्यटन से मिलान पूरी तरह असंगत है। माउंट आबू सिरोही जिले में अरावली पर्वतमाला पर स्थित राजस्थान का एकमात्र प्रसिद्ध पर्वतीय स्थल (हिल स्टेशन) एवं इको-टूरिज्म केंद्र है। इसके विपरीत, जैसलमेर मरुस्थलीय पर्यटन का, कुंभलगढ़ किला पर्यटन का तथा रणथंभौर उद्यान मुख्य रूप से वन्यजीव पर्यटन का केंद्र है।

77. (A) उदयपुर
यदि कोई पर्यटन एजेंसी 'भव्य विरासत महल पर्यटन' और 'झील पर्यटन' को एक साथ जोड़ने वाला उत्कृष्ट यात्रा पैकेज तैयार करना चाहती है, तो उदयपुर सबसे उपर्युक्त केंद्र बिंदु है। 'झीलों की नगरी' के नाम से प्रसिद्ध उदयपुर में पिछोला और फतेह सागर जैसी प्रसिद्ध झीलों के किनारे सिटी पैलेस, जग मंदिर तथा लेक पैलेस जैसे विश्व प्रसिद्ध भव्य हेरिटेज पैलेस स्थित हैं।

78. (B) केवल III
राजस्थान में ग्रामीण पर्यटन स्थानीय कला, संस्कृति तथा ग्रामीण आजीविका को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विदेशी पर्यटकों पर ग्रामीण होमस्टे में रुकने पर कानूनी रूप से कोई प्रतिबंध नहीं है, बल्कि उन्हें राज्य की वास्तविक संस्कृति का अनुभव कराने हेतु होमस्टे में ठहरने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। अत: केवल तीसरा कथन गलत है, जबकि शेष कथन पूरी तरह सत्य हैं।

NODIA

79. (D) शिल्पग्राम
उदयपुर शहर के निकट स्थित 'शिल्पग्राम' एक प्रसिद्ध ग्रामीण कला और शिल्प परिसर है, जो पश्चिमी क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र द्वारा संचालित किया जाता है। यह एक नृवंशविज्ञान संग्रहालय के रूप में राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र तथा गोवा की जनजातीय व ग्रामीण हस्तशिल्प कलाओं को प्रदर्शित करता है। यहाँ प्रतिवर्ष आयोजित होने वाला शिल्पग्राम उत्सव देश-विदेश के हजारों पर्यटकों एवं कला प्रेमियों को आकर्षित करता है।

80. (C) ब्लू पॉटरी
जयपुर की प्रसिद्ध 'ब्लू पॉटरी' हस्तशिल्प एवं खरीदारी पर्यटन का एक प्रमुख आकर्षण है। मुगलों के समय मध्य एशिया से भारत आई इस अनूठी मृण्मय कला शैली को जयपुर के महाराजा सवाई राम सिंह द्वितीय ने संरक्षण प्रदान किया तथा शिल्पकार कृपाल सिंह शेखावत ने इसे अंतर्राष्ट्रीय ख्याति दिलाई। इसमें नीले और हरे रंगों का प्रयोग कर चीनी मिट्टी के बर्तनों पर नक्काशी की जाती है।

81. (B) ग्रामीण महिला स्वयं सहायता समूहों (SHGs) को पर्यटकों को सीधे पारंपरिक हस्तशिल्प बेचने के लिए
सरकार द्वारा आयोजित किया जाने वाला 'सरस आजीविका मेला' मुख्य रूप से ग्रामीण महिलाओं के स्वयं सहायता समूहों (SHGs) को एक व्यावसायिक मंच प्रदान करता है। इस मेले के माध्यम से ग्रामीण कारीगर महिलाएँ अपने द्वारा निर्मित पारंपरिक हस्तशिल्प, हथकरघा वस्त्रों तथा हस्तनिर्मित जैविक खाद्य पदार्थों को शहरी ग्राहकों एवं पर्यटकों को सीधे बेचकर अपनी आजीविका तथा आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाती हैं।

82. (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
राजस्थान भारत में 'डेस्टिनेशन वेडिंग' (शाही विवाह) पर्यटन के क्षेत्र में अग्रणी स्थान रखता है। राज्य के ऐतिहासिक किले, विलासी हेरिटेज पैलेस होटल, भव्य बावडियाँ तथा व्यावसायिक आयोजन प्रबंधन ढाँचा घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय

पर्यटकों को एक अद्वितीय 'शाही' सौंदर्यबोध प्रदान करते हैं। यह समृद्ध संयोजन राजस्थान को विश्व भर के उच्च-वर्ग के विवाह सम्मेलनों के लिए पहली पसंद बनाता है।

83. (A) 5 कमरे
'राजस्थान होमस्टे (पेइंग गेस्ट हाउस) योजना' के दिशा-निर्देशों के अनुसार, किसी भी आवासीय परिसर में होमस्टे का प्रामाणिक पारिवारिक अनुभव बनाए रखने तथा उसका अनुचित व्यावसायिक उपयोग रोकने हेतु किराए पर दिए जाने योग्य कमरों की अधिकतम संख्या 5 निर्धारित की गई है। इसके अतिरिक्त, उस मकान में गृहस्वामी का स्वयं अपने परिवार के साथ निवास करना अनिवार्य नियम बनाया गया है।

84. (C) बिश्नोई समुदाय
जोधपुर क्षेत्र का बिश्नोई समुदाय अपने संस्थापक गुरु जांभोजी द्वारा दिए गए 29 नियमों का पालन करता है, जिनमें खेजड़ी के वृक्षों और चिंकारा तथा कृष्णमृग (काला हिरण) जैसे वन्यजीवों की रक्षा करना सर्वोच्च धार्मिक कर्तव्य माना गया है। बिश्नोई गांवों का भ्रमण पर्यटकों को पर्यावरण संरक्षण तथा प्रकृति के साथ मानव के सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व का एक अनूठा इको-टूरिज्म अनुभव प्रदान करता है।

85. (A) केवल I और II
राजस्थान आने वाले पर्यटकों के आँकड़ों के अनुसार घरेलू पर्यटकों की संख्या सदैव विदेशी पर्यटकों की तुलना में बहुत अधिक रहती है। फ्रांस, ब्रिटेन तथा अमेरिका राज्य में आने वाले विदेशी पर्यटकों के प्रमुख स्रोत देश हैं। कोविड-19 महामारी के वर्षों में अंतर्राष्ट्रीय यात्रा प्रतिबंधों के कारण विदेशी आगमन में ऐतिहासिक गिरावट आई थी, वृद्धि नहीं। अत: तीसरा कथन असत्य है।

86. (C) अक्टूबर से मार्च
राजस्थान में विदेशी पर्यटकों के आगमन का मुख्य पीक सीजन अक्टूबर से मार्च महीनों के मध्य होता है। इस अवधि के दौरान राज्य का मौसम अत्यंत सुहावना और अनुकूल रहता है, जो मरुस्थलीय भ्रमण तथा किलों के दर्शन हेतु उपयुक्त है। इसके विपरीत, भीषण गर्मी के कारण अप्रैल से सितंबर के महीनों में विदेशी पर्यटकों की संख्या में उल्लेखनीय कमी दर्ज की जाती है।

87. (A) II, III, I, IV
राजस्थान पर्यटन के विकास से जुड़े प्रमुख पड़ावों का सही कालानुक्रमिक क्रम इस प्रकार है: राजस्थान पर्यटन विकास निगम (RTDC) की स्थापना 1978 में हुई, प्रथम 'पैलेस ऑन व्हील्स' लग्जरी ट्रेन 1982 में शुरु की गई, पर्यटन को 'उद्योग' का दर्जा 1989 में दिया गया, तथा राजस्थान की प्रथम समर्पित पर्यटन नीति की घोषणा वर्ष 2001 में की गई थी।

88. (C) माउंट आबू हिल स्टेशन प्रवास और लग्जरी रिज़ॉर्ट पैकेज
ग्रीष्मकाल में अत्यधिक तापमान के कारण राजस्थान के मरुस्थलीय पर्यटन में भारी गिरावट आती है। इस मौसमी प्रभाव से निपटने के लिए पर्यटन विभाग गर्मियों के दौरान अपने विपणन अभियान को मुख्यतः माउंट आबू जैसे ठंडे पर्वतीय स्थल तथा वातानुकूलित विलासी विश्राम गृहों में प्रवास पर केंद्रित करता है। इससे राज्य में ग्रीष्मकालीन पर्यटकों का प्रवाह बनाए रखने में सहायता प्राप्त होती है।

89. (D) उम्मेद भवन पैलेस, जोधपुर
जोधपुर स्थित उम्मेद भवन पैलेस विश्व के सबसे बड़े निजी महलों में से एक है और डेस्टिनेशन वेडिंग्स के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध है। यह भव्य महल स्थापत्य कला का अद्भुत नमूना है तथा तीन प्रमुख भागों में बंटा हुआ है: पूर्व महाराजा के परिवार का निजी आवास, ताज समूह द्वारा संचालित लग्जरी हेरिटेज होटल, तथा जोधपुर के शाही इतिहास को प्रदर्शित करता एक संग्रहालय।

90. (A) केवल I, II और III
राजस्थान में अति-व्यवसायीकरण स्मारकों की सुरक्षा के लिए खतरा है, बहुभाषी गाइडों का प्रशिक्षण आवश्यक है, तथा गर्मी व जल संकट पर्यटन को प्रभावित करते हैं। हालांकि, भारतमाला परियोजना और नए एक्सप्रेसवे जैसे बेहतर सड़क ढाँचे ने पर्यटकों की पहुँच को आसान बनाकर पर्यटकों की संख्या में वृद्धि की है, न कि उसे घटाया है। अत: चौथा कथन गलत है।

www.nodia.in

Click Here to Buy book on Flipkart

अध्याय 23

राजस्थान का परिवहन

1. पुरानी संख्यांकन प्रणाली के तहत, निम्नलिखित में से किस राष्ट्रीय राजमार्ग ने राजस्थान राज्य के भीतर सबसे लंबी दूरी तय की थी?
   (A) एनएच 8
   (B) एनएच 15
   (C) एनएच 11
   (D) एनएच 12

2. राजस्थान के किस जिले में सर्वाधिक सड़क घनत्व दर्ज किया गया है?
   (A) जयपुर
   (B) अलवर
   (C) उदयपुर
   (D) राजसमंद

3. अपने विशाल भौगोलिक क्षेत्रफल और मरुस्थलीय भूभाग के कारण, राजस्थान के किस जिले में सबसे कम सड़क घनत्व है?
   (A) जैसलमेर
   (B) बाड़मेर
   (C) बीकानेर
   (D) चूरू

4. सूची I में दिए गए हवाई अड्डों को सूची II में उनके संबंधित स्थानों से सुमेलित कीजिए:
   सूची I : (हवाई अड्डे)
   P. महाराणा प्रताप हवाई अड्डा
   Q. नाल हवाई अड्डा
   R. उत्तरलाई हवाई अड्डा
   S. किशनगढ़ हवाई अड्डा
   सूची II : (स्थान)
   1. बीकानेर
   2. बाड़मेर
   3. अजमेर
   4. उदयपुर
   (A) P-4, Q-1, R-2, S-3
   (B) P-1, Q-4, R-3, S-2
   (C) P-4, Q-2, R-1, S-3
   (D) P-3, Q-1, R-2, S-4

5. राजस्थान किस वर्ष एक व्यापक राज्य सड़क नीति तैयार करने वाला भारत का पहला राज्य बना?
   (A) 1994
   (B) 1998
   (C) 2001
   (D) 2005

6. राजस्थान राज्य सड़क विकास एवं निर्माण निगम (RSRDC) की स्थापना मूल रूप से 1979 में निम्नलिखित में से किस नाम से की गई थी?
   (A) राजस्थान स्टेट हाईवे अथॉरिटी एंड इंफ्रास्ट्रक्चर
   (B) राजस्थान पब्लिक वर्क्स एंड स्टेट रोडवेज़ बोर्ड
   (C) राजस्थान रूरल रोड्स एंड इंफ्रास्ट्रक्चर कॉर्पोरेशन
   (D) राजस्थान स्टेट ब्रिज एंड कंस्ट्रक्शन कॉर्पोरेशन

7. रोड इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट कंपनी ऑफ राजस्थान (RIDCOR) राजस्थान सरकार और किस संस्था के बीच एक संयुक्त उद्यम है?
   (A) एशियन डेवलपमेंट बैंक इंफ्रास्ट्रक्चर डिवीजन (ADB)
   (B) इंफ्रास्ट्रक्चर लीजिंग एंड फाइनेंशियल सर्विसेज (IL&FS)
   (C) वर्ल्ड बैंक इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट ग्रुप (WBIDG)
   (D) नेशनल हाईवे अथॉरिटी ऑफ इंडिया डेवलपमेंट (NHAI)

8. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
   कथन (A) : राजस्थान में सड़क परिवहन माल और यात्रियों की आवाजाही के मुख्य साधन के रूप में कार्य करता है।
   कारण (R) : राजस्थान में नौगम्य आंतरिक जलमार्गों का अभाव है और भौगोलिक सीमाओं के कारण रेलवे का घनत्व असमान है।
   उपर्युक्त कथनों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन-सा सही है?
   (A) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या करता है
   (B) (A) और (R) दोनों सही हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं करता है
   (C) (A) सही है लेकिन (R) गलत है
   (D) (A) गलत है लेकिन (R) सही है

9. जयपुर में मुख्यालय वाला उत्तर पश्चिम रेलवे (NWR) ज़ोन औपचारिक रूप से किस वर्ष स्थापित और संचालित किया गया था?
   (A) 1996
   (B) 2000
   (C) 2002

Downloaded from www.pdf.tube

(C) फ्रांस
(D) जापान

32. राजस्थान में निम्नलिखित परिवहन विकासों का कालानुक्रम के अनुसार सबसे पहले से नवीनतम का सही क्रम चुनिए:
1. पैलेस ऑन व्हील्स का शुभारंभ
2. जयपुर मेट्रो चरण-1A का व्यावसायिक शुभारंभ
3. उत्तर पश्चिम रेलवे (NWR) मुख्यालय की स्थापना
4. जयपुर हवाई अड्डे को अंतर्राष्ट्रीय दर्जा प्राप्त होना

(A) 1, 3, 4, 2
(B) 1, 4, 3, 2
(C) 3, 1, 4, 2
(D) 1, 3, 2, 4

33. प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना (PMGSY) के चरण III के तहत, राजस्थान में प्राथमिक ध्यान किस पर केंद्रित किया गया?
(A) 100 से कम निवासियों की जनसंख्या वाली पृथक जनजातीय ढाणियों और दूरस्थ ग्रामीण बसावटों को जोड़ना
(B) मौजूदा ग्रामीण सड़क नेटवर्क को सुदृढ़ बनाना और उन्हें ग्रामीण कृषि बाजारों से जोड़ना
(C) एकल-लेन राज्य राजमार्गों और मुख्य जिला सड़कों को पूर्ण दो-लेन मानकों में उन्नत करना
(D) प्रमुख शहरी केंद्रों और अत्यधिक भीड़भाड़ वाले औद्योगिक नगरों के आसपास नए बाईपास का निर्माण करना

34. राजस्थान में पहली रेलगाड़ी वर्ष 1874 में निम्नलिखित में से किस मार्ग पर संचालित हुई थी?
(A) जयपुर से अजमेर
(B) जोधपुर से बीकानेर
(C) उदयपुर से चित्तौड़गढ़
(D) आगरा फोर्ट से बांदीकुई

35. निम्नलिखित में से कौन-सा जिला राजस्थान से होकर गुजरने वाले दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे के मार्ग में नहीं आता है?
(A) बांसवाड़ा
(B) अलवर
(C) दौसा
(D) सवाई माधोपुर

36. राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम (RSRTC) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसकी स्थापना 1 अक्टूबर 1964 को सड़क परिवहन अधिनियम, 1950 के तहत की गई थी।
II. इसका मुख्यालय जयपुर में स्थित है।
III. यह सभी साधारण राज्य बसों में महिला यात्रियों के लिए 100% किराए में छूट प्रदान करता है।
IV. यह हरियाणा और गुजरात जैसे पड़ोसी राज्यों के लिए अंतर-राज्यीय बस सेवाओं का संचालन करता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से गलत है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल III
(C) केवल II और IV
(D) केवल I, III और IV

37. राजस्थान लघु उद्योग निगम लिमिटेड (RAJSICO) निर्यात को सुगम बनाने के लिए कई अंतर्देशीय कंटेनर डिपो (ICD) का प्रबंधन करता है। निम्नलिखित में से किस स्थान पर राजसिको (RAJSICO) ICD का संचालन नहीं करता है?
(A) बीकानेर
(B) जयपुर
(C) जोधपुर
(D) भीलवाड़ा

38. राजस्थान में भारतमाला परियोजना का कार्यान्वयन मुख्य रूप से किस प्रकार के बुनियादी ढांचे के सुधार पर केंद्रित है?
(A) समर्पित भारी-ढुलाई वाली मालगाड़ी रेलवे लाइनें और औद्योगिक फीडर मार्ग
(B) आंतरिक जलमार्ग नौवहन और नदी यात्री परिवहन नेटवर्क
(C) जनजातीय जिलों में ग्रीनफील्ड वाणिज्यिक हवाई अड्डे और नागरिक एनक्लेव
(D) आर्थिक गलियारों के साथ-साथ सीमावर्ती और तटीय सड़क कनेक्टिविटी

NODIA

39. राजस्थान के किस जिले में सड़कों की कुल लंबाई सर्वाधिक है?
(A) जोधपुर
(B) बाड़मेर
(C) जयपुर
(D) बीकानेर

40. जयपुर मेट्रो के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. जयपुर मेट्रो के चरण 1 को एशियाई विकास बैंक (ADB) से वित्तीय सहायता मिली थी।
II. संपूर्ण चरण 1 (1A और 1B दोनों खंड) पूरी तरह से भूमिगत निर्मित है।
III. यह मानक गेज (स्टैंडर्ड गेज) पटरी प्रणाली पर संचालित होता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से गलत है/हैं?
(A) केवल I
(B) केवल II
(C) केवल III
(D) केवल I और III

41. बाड़मेर के विपरीत, राजस्थान के किस जिले में अपने छोटे भौगोलिक क्षेत्रफल के कारण सड़कों की कुल लंबाई सबसे कम है?
(A) दौसा
(B) डूंगरपुर
(C) प्रतापगढ़
(D) धौलपुर

21. राजस्थान में सड़कों के विभिन्न वर्गीकरणों में से किस श्रेणी की कुल मार्ग लंबाई सर्वाधिक है?
(A) ग्रामीण सड़कें
(B) राष्ट्रीय राजमार्ग
(C) राज्य राजमार्ग
(D) मुख्य जिला सड़कें

22. जयपुर हवाई अड्डे को आधिकारिक रूप से किस वर्ष अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे का दर्जा प्राप्त हुआ?
(A) 2001
(B) 2005
(C) 2009
(D) 2012

23. राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम (RSRTC) द्वारा संचालित 'मोक्ष कलश योजना' का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?
(A) ग्रामीण गर्भवती महिलाओं को जिला सरकारी अस्पतालों तक निःशुल्क आपातकालीन परिवहन प्रदान करना
(B) हरिद्वार में अस्थि विसर्जन के लिए परिवार के दो सदस्यों को निःशुल्क बस यात्रा प्रदान करना
(C) राजस्थान में धार्मिक स्थलों के दर्शन करने वाले वरिष्ठ नागरिकों के लिए रियायती राज्य परिवहन यात्रा का प्रस्ताव देना
(D) पूरे राज्य में सूखा प्रभावित मरुस्थलीय गांवों में पेयजल का परिवहन करना

24. सूची I में दिए गए पुराने राष्ट्रीय राजमार्ग क्रमांकों को सूची II में राजस्थान में उनके प्राथमिक मार्गांकन के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I : (पुराने राष्ट्रीय राजमार्ग)
P. पुराना NH 8
Q. पुराना NH 15
R. पुराना NH 11
S. पुराना NH 12
सूची II : (मार्गांकन)
1. जयपुर होकर आगरा से बीकानेर
2. कोटा होकर जयपुर से जबलपुर
3. जयपुर और उदयपुर होकर दिल्ली से मुंबई
4. पश्चिमी राजस्थान होकर पठानकोट से समाख्याली
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-1, Q-2, R-3, S-4

25. जयपुर मेट्रो रेल नेटवर्क द्वारा उपयोग की जाने वाली पटरी प्रणाली निम्नलिखित में से किस गेज पर चलती है?
(A) भारतीय ब्रॉड गेज (1676 मिमी)
(B) मानक गेज (1435 मिमी)
(C) मीटर गेज (1000 मिमी)
(D) नैरो गेज (762 मिमी)

26. ऐतिहासिक रूप से, राजस्थान के किस जिले में नगण्य रेलवे लाइन कनेक्टिविटी रही है, जिसके लिए हाल ही में विकास के प्रस्ताव लाए गए हैं?
(A) बांसवाड़ा
(B) डूंगरपुर
(C) प्रतापगढ़
(D) झालावाड़

27. राजस्थान में कुल रेलवे मार्ग की अनुमानित लंबाई कितनी है?
(A) 3,000 किमी
(B) 4,500 किमी
(C) 6,000 किमी
(D) 9,500 किमी

28. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A) : पश्चिमी राजस्थान में सीमावर्ती और ग्रामीण सड़कों के रखरखाव में अन्य क्षेत्रों की तुलना में अत्यधिक आवर्ती लागत शामिल होती है।
कारण (R) : थार मरुस्थल में स्थानांतरित होते बालुका स्तूप और तीव्र गति की हवाएं प्रायः सड़क की सतहों को ढक देती हैं और उन्हें क्षति पहुँचाती हैं।
उपर्युक्त कथनों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन-सा सही है?
(A) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या करता है
(B) (A) और (R) दोनों सही हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं करता है
(C) (A) सही है लेकिन (R) गलत है
(D) (A) गलत है लेकिन (R) सही है

29. पश्चिमी समर्पित माल ढुलाई गलियारा (WDFC) राजस्थान के कई जिलों से होकर गुजरता है। निम्नलिखित में से कौन-सा उनमें से एक नहीं है?
(A) बीकानेर
(B) सीकर
(C) जयपुर
(D) अजमेर

30. पश्चिमी समर्पित माल ढुलाई गलियारे (WDFC) की कुल लंबाई का लगभग कितना प्रतिशत भाग राजस्थान राज्य के भीतर आता है?
(A) 15%
(B) 25%
(C) 39%
(D) 55%

31. दिल्ली-मुंबई इंडस्ट्रियल कॉरिडोर (DMIC), जो राजस्थान के लॉजिस्टिक्स अवसंरचना को अत्यधिक लाभ पहुंचाता है, किस देश के सहयोग से विकसित किया जा रहा है?
(A) जर्मनी
(B) संयुक्त राज्य अमेरिका

Click Here to Buy book on Amazon

71. पिछले दो दशकों में राजस्थान के सड़क संपर्क से वंचित गांवों में सुधार करने में किस केंद्र प्रायोजित योजना की महत्वपूर्ण भूमिका रही है?
(A) पीएम गति शक्ति राष्ट्रीय मास्टर प्लान
(B) पीएम ग्राम सड़क योजना (PMGSY)
(C) भारतमाला परियोजना अवसंरचना योजना
(D) सागरमाला प्रोजेक्ट पोर्ट कनेक्टिविटी योजना

72. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A) : दक्षिणी राजस्थान में परिवहन बुनियादी ढांचे का विकास काफी हद तक पुल निर्माण और पहाड़ियों की कटाई पर निर्भर करता है।
कारण (R) : दक्षिणी राजस्थान अरावली श्रृंखलाओं की विषम स्थलाकृति और कई मौसमी नदी घाटियों द्वारा अभिलक्षित है।
उपर्युक्त कथनों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन-सा सही है?
(A) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या करता है
(B) (A) और (R) दोनों सही हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं करता है
(C) (A) सही है लेकिन (R) गलत है
(D) (A) गलत है लेकिन (R) सही है

73. निम्नलिखित में से किस परिवहन साधन की राजस्थान के वाणिज्यिक माल ढुलाई नेटवर्क में नगण्य या शून्य उपस्थिति है?
(A) रेलवे परिवहन
(B) सड़क परिवहन
(C) एयर कार्गो
(D) आंतरिक जलमार्ग

74. भारतीय रेलवे द्वारा व्यापक यूनीगेज (एकल गेज) नीति के बाद, आज राजस्थान में सबसे अधिक प्रचलित ट्रैक गेज कौन-सा है?
(A) ब्रॉड गेज
(B) मीटर गेज
(C) नैरो गेज
(D) मानक गेज (स्टैंडर्ड गेज)

75. यद्यपि राजस्थान में लॉजिस्टिक्स क्षेत्र में वृद्धि हो रही है, इस क्षेत्र के भीतर RSRTC की प्राथमिक परिचालन भूमिका क्या है?
(A) यह औद्योगिक गलियारों में विशेष डबल-स्टैक कंटेनर मालगाड़ियों का स्वामित्व और संचालन करता है
(B) भारी माल ढुलाई में नगण्य, क्योंकि यह मुख्य रूप से यात्री परिवहन पर ध्यान केंद्रित करता है
(C) यह सभी घरेलू एयर कार्गो संचालन के प्रबंधन के लिए राज्य नोडल नियामक एजेंसी के रूप में कार्य करता है
(D) यह राजस्थान में सभी अंतर्देशीय कंटेनर डिपो के दैनिक संचालन का प्रबंधन करता है

76. राजस्थान में विमानन बुनियादी ढांचे के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. जयपुर अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा राज्य का पहला हवाई अड्डा था जिसे अंतर्राष्ट्रीय दर्जा मिला था।
II. जोधपुर हवाई अड्डा भारतीय वायु सेना के अड्डे के भीतर एक सिविल एन्क्लेव के रूप में कार्य करता है।
III. किशनगढ़ हवाई अड्डा राजस्थान का एक प्रमुख ग्रीनफील्ड हवाई अड्डा है।
IV. महाराणा प्रताप हवाई अड्डा कोटा शहर में स्थित है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से गलत है/हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल IV
(C) केवल II और III
(D) केवल I, II और IV

77. दिल्ली-मुंबई इंडस्ट्रियल कॉरिडोर (DMIC) ढांचे के तहत, राजस्थान में जोधपुर-पाली-मारवाड़ क्षेत्र को विशेष रूप से किस रूप में विकसित किया जा रहा है?
(A) विशेष निवेश क्षेत्र (SIR)
(B) केवल आईटी के लिए विशेष आर्थिक क्षेत्र (SEZ)
(C) समर्पित कृषि बाजार क्षेत्र
(D) मेगा तटीय आर्थिक क्षेत्र

78. सार्वजनिक परिवहन में महिलाओं की सुरक्षा बढ़ाने के लिए, RSRTC द्वारा शुरु की गई 'निर्भया' बसों में अनिवार्य रूप से क्या स्थापित किया गया है?
(A) बुलेटप्रूफ प्रबलित कांच की खिड़कियां, सशस्त्र निजी सुरक्षा गार्ड और मेटल डिटेक्टर
(B) उच्च गति वाले निःशुल्क वाई-फाई राउटर, चेहरे की पहचान प्रणाली और बायोमेट्रिक प्रवेश द्वार
(C) पैनिक बटन, व्हीकल ट्रैकिंग सिस्टम (VTS) और सीसीटीवी कैमरे
(D) पूरी तरह से स्वचालित इलेक्ट्रॉनिक टिकटिंग मशीनें, ऑन-बोर्ड एयर प्यूरीफायर और डिजिटल डिस्प्ले

79. राजस्थान के निम्नलिखित जिला मुख्यालयों में से किस शहर से वर्तमान में कोई प्रमुख रेलवे जंक्शन या रेलवे लाइन नहीं गुजरती है?
(A) चूरू (B) दौसा
(C) सीकर (D) टोंक

80. राजस्थान राज्य सड़क विकास एवं निर्माण निगम (RSRDC) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह मूल रूप से 1979 में राजस्थान स्टेट ब्रिज एंड कंस्ट्रक्शन कॉर्पोरेशन (RSBCC) के रूप में स्थापित किया गया था।
II. यह अक्सर निर्माण-संचालन-हस्तांतरण (BOT) के आधार पर सड़क और पुल परियोजनाओं को निष्पादित करता है।
III. यह जयपुर सिटी ट्रांसपोर्ट सर्विसेज लिमिटेड (JCTSL) के परिचालन प्रबंधन के लिए जिम्मेदार है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से गलत है/हैं?

NODIA

42. राजस्थान में पीएम गति शक्ति राष्ट्रीय मास्टर प्लान के कार्यान्वयन का प्राथमिक उद्देश्य निम्नलिखित में से क्या प्राप्त करना है?
(A) मल्टी-मॉडल कनेक्टिविटी और लॉजिस्टिक्स अवसंरचना का एकीकृत नियोजन
(B) पूरे राजस्थान में सभी प्रमुख राज्य राजमार्गों का पूर्ण निजीकरण और वाणिज्यिक टोल वसूली
(C) राज्य के सभी ग्रामीण नागरिकों के लिए निःशुल्क सार्वजनिक बस परिवहन और रियायती किराया
(D) सभी जिलों में विशेष रूप से नागरिक उड्डयन बुनियादी ढांचे और क्षेत्रीय हवाई पट्टियों का विकास करना

43. राजस्थान का कौन-सा शहर ऐतिहासिक रूप से रेलवे वैगनों के निर्माण के लिए प्रसिद्ध है और सिमको (CIMMCO) वैगन कारखाने की मेजबानी करता है?
(A) अजमेर
(B) भरतपुर
(C) कोटा
(D) अलवर

44. सूची I में दी गई परिवहन शब्दावली को सूची II में उनकी परिभाषाओं के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I : (शब्दावली)
P. अंतर्देशीय कंटेनर डिपो (ICD)
Q. रो-रो (Ro-Ro) सेवा
R. निर्माण-संचालन-हस्तांतरण (BOT)
S. फास्टैग (FASTag)
सूची II : (परिभाषाएं)
1. बुनियादी ढांचे के निष्पादन के लिए एक सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP) मॉडल
2. आरएफआईडी (RFID) तकनीक का उपयोग करने वाली एक इलेक्ट्रॉनिक टोल संग्रह प्रणाली
3. एक शुष्क बंदरगाह जो समुद्री माल के लिए सीमा शुल्क निकासी संभालता है
4. ट्रकों से लदे माल को सीधे गंतव्य तक ले जाने वाली ट्रेनें
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-1, Q-2, R-3, S-4

45. राजस्थान में ग्रामीण परिवहन विकास के संदर्भ में, 'मिसिंग लिंक' (Missing Link) शब्द का क्या अर्थ है?
(A) किसी गांव और पास की मुख्य सड़क या बाजार के बीच सड़क संपर्क का अधूरा भाग
(B) दो प्रमुख जिला मुख्यालयों के बीच सीधे रेलवे लाइन संपर्क का अभाव होना
(C) RSRTC द्वारा पूर्व में संचालित अंतर-शहर और ग्रामीण बस मार्गों का बंद होना
(D) राज्य के सामरिक सीमावर्ती जिलों में परिचालन योग्य नागरिक हवाई संपर्क की अनुपस्थिति

46. यात्री सुरक्षा और नियमन पर जोर देने के लिए, राजस्थान के परिवहन विभाग ने अपना आधिकारिक नाम बदलकर क्या कर दिया है?
(A) गतिशीलता एवं परिवहन विभाग
(B) राज्य राजमार्ग एवं परिवहन निदेशालय
(C) परिवहन एवं सड़क सुरक्षा विभाग
(D) राजस्थान लॉजिस्टिक्स एवं ट्रांसपोर्ट अथॉरिटी

47. राजस्थान में दिल्ली-मुंबई इंडस्ट्रियल कॉरिडोर (DMIC) के तहत निम्नलिखित में से किसे निवेश क्षेत्र या औद्योगिक नोड के रूप में पहचान नहीं मिली है?
(A) खुशखेड़ा-भिवाड़ी-नीमराना
(B) जोधपुर-पाली-मारवाड़
(C) अजमेर-किशनगढ़
(D) बीकानेर-सूरतगढ़

48. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A) : पश्चिमी समर्पित माल ढुलाई गलियारे (WDFC) से राजस्थान में औद्योगीकरण को अत्यधिक बढ़ावा मिलने की उम्मीद है।
कारण (R) : WDFC राजस्थान के सभी जिलों में सड़क परिवहन की आवश्यकता को पूरी तरह से समाप्त कर देता है।
उपर्युक्त कथनों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन-सा सही है?
(A) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या करता है
(B) (A) और (R) दोनों सही हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं करता है
(C) (A) सही है लेकिन (R) गलत है
(D) (A) गलत है लेकिन (R) सही है

49. अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थानों द्वारा समर्थित राजस्थान राज्य राजमार्ग विकास परियोजना (RSHDP) का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) पूरे राजस्थान में सभी मौजूदा राज्य राजमार्गों को राष्ट्रीय राजमार्गों में परिवर्तित करना
(B) चयनित राज्य राजमार्गों को दो-लेन या चार-लेन मानकों में उन्नत करना
(C) राज्य द्वारा प्रबंधित सभी राजमार्गों और सड़कों पर टोल संग्रह को पूरी तरह से समाप्त करना
(D) लंबी दूरी के सड़क परिवहन को पूरी तरह से समर्पित माल वाहक रेलवे से बदलना

50. राजस्थान का औसत सड़क घनत्व भारत के राष्ट्रीय औसत की तुलना में कैसा है?
(A) यह राष्ट्रीय औसत से लगभग दोगुना है।
(B) यह राष्ट्रीय औसत के लगभग बराबर है।
(C) यह राष्ट्रीय औसत का लगभग आधा है।
(D) यह राष्ट्रीय औसत से मामूली रूप से अधिक है।

Downloaded from www.pdf.tube

उत्तर (व्याख्या सहित)

NODIA

1. (B) एनएच 15
पुरानी राष्ट्रीय राजमार्ग संख्यांकन प्रणाली के तहत राष्ट्रीय राजमार्ग 15 राजस्थान में सबसे लंबी दूरी तय करने वाला मार्ग था। यह राजमार्ग पंजाब के पठानकोट से प्रारंभ होकर राजस्थान के पश्चिमी सीमावर्ती जिलों श्रीगंगानगर, बीकानेर, जैसलमेर तथा बाड़मेर से होकर गुजरात के समाख्याली तक जाता था। थार मरुस्थलीय क्षेत्र में स्थित होने के कारण यह मार्ग सामरिक तथा व्यापारिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण यातायात गलियारा माना जाता था।

2. (D) राजसमंद
राजस्थान में सड़क घनत्व की दृष्टि से राजसमंद जिले में प्रति सौ वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल पर सड़कों की कुल लंबाई सर्वाधिक दर्ज की गई है। छोटे भौगोलिक आकार और निरंतर अवसंरचनात्मक विकास के कारण यहाँ सड़क जाल का सघन विस्तार संभव हुआ है। पर्वतीय भूभाग होने के बावजूद कुशल प्रशासनिक पहलों ने राजसमंद को संपूर्ण राजस्थान राज्य में उच्चतम सड़क घनत्व वाले जिले के रूप में स्थापित किया है।

3. (A) जैसलमेर
जैसलमेर राजस्थान का सबसे बड़ा जिला है, जो थार मरुस्थल में विस्तृत है। अत्यधिक विशाल क्षेत्रफल, छितरी हुई आबादी तथा स्थानांतरित बालुका स्तूपों के कारण यहाँ सड़क निर्माण और रखरखाव अत्यंत चुनौतीपूर्ण है। इसी वजह से जैसलमेर में प्रति सौ वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल पर सड़कों की कुल लंबाई राज्य में न्यूनतम है, जिसके परिणामस्वरूप यह राजस्थान का सबसे कम सड़क घनत्व वाला जिला है।

4. (A) P-4, Q-1, R-2, S-3
राजस्थान के प्रमुख हवाई अड्डों का उनके स्थानों से सही सुमेलन इस प्रकार है। डबोक स्थित महाराणा प्रताप हवाई अड्डा उदयपुर जिले में आता है। बीकानेर जिले में सैन्य एवं असैन्य गतिविधियों हेतु नाल हवाई अड्डा स्थित है। बाड़मेर जिले में सामरिक महत्व वाला उत्तरलाई वायुसेना हवाई अड्डा बना हुआ है। अजमेर जिले में क्षेत्रीय हवाई संपर्क बढ़ाने हेतु किशनगढ़ हवाई अड्डा स्थापित है।

5. (A) 1994
राजस्थान वर्ष 1994 में एक समर्पित तथा व्यापक राज्य सड़क नीति तैयार करने वाला भारत का पहला राज्य बना था। इस नीति की घोषणा का मुख्य उद्देश्य राज्य में निजी निवेश को आकर्षित करना, सार्वजनिक-निजी सहभागिता प्रारूप को लागू करना और सड़क बुनियादी ढांचे के तीव्र विकास को गति देना था। इस ऐतिहासिक निर्णय ने राज्य में राजमार्गों के निर्माण तथा नियमित रखरखाव हेतु सुदृढ़ संस्थागत ढांचा बनाया।

6. (D) राजस्थान स्टेट ब्रिज एंड कंस्ट्रक्शन कॉर्पोरेशन
राजस्थान राज्य सड़क विकास एवं निर्माण निगम की स्थापना मूल रूप से वर्ष 1979 में राजस्थान स्टेट ब्रिज एंड कंस्ट्रक्शन कॉर्पोरेशन के नाम से एक राज्य सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम के रूप में की गई थी। प्रारंभ में इसका मुख्य कार्य राज्य में पुलों और बड़ी सरकारी इमारतों का निर्माण करना था। बाद में वर्ष 2001 में इसके जनादेश तथा कार्यों का विस्तार करके वर्तमान नाम दिया गया।

7. (B) इंफ्रास्ट्रक्चर लीजिंग एंड फाइनेंशियल सर्विसेज (IL&FS)
रोड इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट कंपनी ऑफ राजस्थान की स्थापना राजस्थान सरकार तथा इंफ्रास्ट्रक्चर लीजिंग एंड फाइनेंशियल सर्विसेज के मध्य पचास-पचास प्रतिशत की भागीदारी वाले संयुक्त उद्यम के रूप में की गई थी। इस संस्था का प्राथमिक उद्देश्य सार्वजनिक-निजी सहभागिता प्रारूप के तहत राज्य के प्रमुख राज्य राजमार्गों को मेगा हाईवे में परिवर्तित करना था। इसके माध्यम से राज्य में उच्च गुणवत्ता वाले व्यावसायिक परिवहन गलियारों का निर्माण हुआ।

8. (A) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या करता है
राजस्थान में विशाल भौगोलिक क्षेत्रफल और मरुस्थलीय स्थलाकृति के कारण नौगम्य आंतरिक जलमार्गों का पूर्ण अभाव है। इसके साथ ही, अरावली पर्वत श्रृंखलाओं तथा थार मरुस्थल की विषम परिस्थितियों के कारण रेलवे नेटवर्क का घनत्व राज्य में असमान है। इन भौगोलिक सीमाओं के परिणामस्वरूप, राजस्थान में यात्रियों तथा भारी माल की आवाजाही के लिए सड़क परिवहन ही सबसे प्रमुख और सुलभ साधन के रूप में कार्य करता है।

9. (C) 2002
उत्तर पश्चिम रेलवे ज़ोन की स्थापना की आधिकारिक घोषणा वर्ष 1996 में की गई थी, लेकिन यह पूर्ण रूप से 1 अक्टूबर 2002 से संचालित हुआ था। इसका मुख्यालय जयपुर में स्थित है। इस ज़ोन का गठन पूर्ववर्ती उत्तरी रेलवे और पश्चिमी रेलवे के कुल चार रेल मंडलों- जयपुर, जोधपुर, बीकानेर और अजमेर को मिलाकर किया गया था। यह ज़ोन राज्य में रेल सेवाओं का संचालन करता है।

10. (A) मानसरोवर से चांदपोल
जयपुर मेट्रो के प्रथम चरण (चरण 1A) को पिंक लाइन के रूप में जाना जाता है, जिसे 3 जून 2015 को व्यावसायिक संचालन के लिए शुरु किया गया था। यह मार्ग मानसरोवर से चांदपोल स्टेशन तक 9.63 किलोमीटर की दूरी तय करता है। इस पूरे खंड में कुल नौ स्टेशन शामिल हैं, जिनमें आठ एलिवेटेड और एक भूमिगत स्टेशन है। यह राजस्थान की पहली मेट्रो सेवा है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल II, III और IV
(C) केवल I, III और IV
(D) I, II, III और IV

61. 'थार एक्सप्रेस' के नाम से जानी जाने वाली अंतर्राष्ट्रीय रेल सेवा राजस्थान के मुनाबाव को पाकिस्तान के किस रेलवे स्टेशन से जोड़ती थी?
(A) खोखरापार
(B) लाहौर
(C) कराची
(D) मीरपुर खास

62. द्विपक्षीय तनाव के कारण, थार एक्सप्रेस का संचालन किस वर्ष अनिश्चित काल के लिए स्थगित कर दिया गया था?
(A) 2016
(B) 2019
(C) 2020
(D) 2022

63. केंद्रीय सड़क और अवसंरचना कोष (CRIF) से राजस्थान को आवंटित धन का उपयोग मुख्य रूप से किसके लिए किया जाता है?
(A) अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डों का निर्माण करने के लिए
(B) व्यक्तिगत इलेक्ट्रिक वाहनों की खरीद पर सब्सिडी देने के लिए
(C) आंतरिक जलमार्ग विकसित करने के लिए
(D) राज्य राजमार्गों और मुख्य जिला सड़कों को उन्नत करने के लिए

64. राजस्थान में सीमा सड़क संगठन (BRO) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में कार्य करता है।
II. प्रोजेक्ट चेतक राजस्थान में सामरिक सीमावर्ती सड़कों के रखरखाव के लिए मुख्य रूप से जिम्मेदार है।
III. BRO का बुनियादी ढांचा थार मरुस्थल में सैन्य और नागरिक दोनों उपयोगों के लिए महत्वपूर्ण कनेक्टिविटी प्रदान करता है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल II और III
(C) केवल I और III
(D) I, II और III

65. राजस्थान में अंतर्देशीय कंटेनर डिपो (शुष्क बंदरगाहों) के व्यापक विकास का प्राथमिक कारण क्या है?
(A) राजस्थान के मरुस्थलीय क्षेत्रों में बार-बार मौसमी बाढ़ आती है, जिसके लिए शुष्क ऊंचे भंडारण सुविधाओं की आवश्यकता होती है
(B) राजस्थान भू-बद्ध (लैंडलॉक्ड) राज्य है, और शुष्क बंदरगाह समुद्री माल के लिए सीमा शुल्क निकासी में तेजी लाते हैं
(C) शुष्क बंदरगाह पूरे क्षेत्रीय विद्युतीकृत रेलवे नेटवर्क को बिजली देने के लिए सौर ग्रिड बिजली उत्पन्न करते हैं
(D) अवसंरचना अनुदान चाहने वाले सभी शुष्क और मरुस्थलीय राज्यों के लिए विश्व बैंक द्वारा शुष्क बंदरगाह कानूनी रूप से अनिवार्य हैं

66. राजस्थान सरकार की कौन-सी प्रमुख योजना उन व्यक्तियों को वित्तीय पुरस्कार प्रदान करती है जो सड़क दुर्घटना पीड़ितों को अस्पताल पहुँचाकर मददगार व्यक्ति (गुड समैरिटन) के रूप में कार्य करते हैं?
(A) राज्य प्रायोजित राजस्थान सड़क सुरक्षा अभियान योजना
(B) राज्य स्तरीय निर्भया सफर कल्याण योजना
(C) राजस्थान मुख्यमंत्री वाहन सुरक्षा प्रोत्साहन योजना
(D) मुख्यमंत्री चिरंजीवी जीवन रक्षा योजना

67. पश्चिमी राजस्थान में व्यापक ग्रामीण सड़क कनेक्टिविटी प्रदान करने का कार्य किस विशिष्ट सामाजिक-भौगोलिक विशेषता के कारण अत्यधिक चुनौतीपूर्ण है?
(A) 'ढाणियों' के रूप में जानी जाने वाली बिखरी हुई और अत्यधिक छितरी हुई बसावट प्रणाली
(B) घने उष्णकटिबंधीय वर्षावन और संरक्षित वन्यजीव अभ्यारण्य क्षेत्र
(C) गंभीर भूकम्पीय गतिविधि और फॉल्ट लाइनों की उच्च उपस्थिति
(D) गहरी बारहमासी नदी घाटियाँ और खड़ी पहाड़ी क्षेत्र के गलियारे

68. परिचालन योग्य जयपुर मेट्रो चरण-1A स्टेशनों का पश्चिम से पूर्व की ओर भौगोलिक रूप से सही क्रम चुनिए:
(A) मानसरोवर, विवेक विहार, राम नगर, चांदपोल
(B) चांदपोल, राम नगर, विवेक विहार, मानसरोवर
(C) मानसरोवर, राम नगर, विवेक विहार, चांदपोल
(D) चांदपोल, विवेक विहार, राम नगर, मानसरोवर

69. जयपुर अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के टर्मिनल 2 का उपयोग वर्तमान में किसके संचालन के लिए किया जाता है?
(A) घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय दोनों यात्री उड़ानों के लिए
(B) केवल निर्धारित घरेलू वाणिज्यिक यात्री उड़ानों के लिए
(C) केवल अंतर्राष्ट्रीय सीमा पार यात्री उड़ानों के लिए
(D) केवल गैर-वाणिज्यिक वीआईपी आवाजाही और सैन्य वायु सेना के विमानों के लिए

70. किशनगढ़ के पास नियोजित मल्टी-मॉडल लॉजिस्टिक्स पार्क का प्राथमिक उद्देश्य माल की आवाजाही को सुगम बनाने के लिए परिवहन के किन दो साधनों को एकीकृत करना है?
(A) वायु और जल
(B) रेल और वायु
(C) सड़क और जल
(D) सड़क और रेल

Click Here to Buy book on Flipkart

51. निम्नलिखित में से कौन-सी शाही पर्यटक ट्रेन राजस्थान राज्य के भीतर अपना यात्रा मार्ग संचालित नहीं करती है?
(A) डेक्कन ओडिसी
(B) पैलेस ऑन व्हील्स
(C) रॉयल राजस्थान ऑन व्हील्स
(D) महाराजा एक्सप्रेस

52. राजस्थान के निम्नलिखित जिलों को उस सही क्रम में व्यवस्थित कीजिए जिस क्रम में दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे उत्तर से दक्षिण की ओर उनसे होकर गुजरता है:
1. अलवर
2. दौसा
3. सवाई माधोपुर
4. कोटा

निम्नलिखित में से कौन-सा सही क्रम है?
(A) 1, 2, 3, 4
(B) 2, 1, 3, 4
(C) 1, 3, 2, 4
(D) 1, 2, 4, 3

53. राजस्थान में स्थित उद्योगों के लिए पश्चिमी समर्पित माल ढुलाई गलियारे (WDFC) द्वारा प्रदान किया जाने वाला प्राथमिक रसद (लॉजिस्टिकल) लाभ क्या है?
(A) कांडला और जेएनपीटी (JNPT) जैसे पश्चिमी समुद्री बंदरगाहों तक कंटेनर चालित सामानों की तीव्र आवाजाही
(B) राज्य के सभी प्रमुख जिलों में सस्ता और अधिक सुलभ घरेलू यात्री ट्रेन सफर
(C) पाकिस्तान से सटे रणनीतिक अंतर्राष्ट्रीय सीमा क्षेत्रों के लिए प्रत्यक्ष उच्च गति वाली रेल कनेक्टिविटी
(D) सूखा प्रभावित मरुस्थलीय जिलों में पेयजल की निर्बाध थोक आपूर्ति और परिवहन

54. राजस्थान में शुरू की गई पहली वंदे भारत एक्सप्रेस ने निम्नलिखित में से किस मार्ग पर अपना संचालन शुरू किया?
(A) जयपुर जंक्शन से जोधपुर जंक्शन
(B) उदयपुर सिटी से जयपुर जंक्शन
(C) बीकानेर से नई दिल्ली
(D) अजमेर से दिल्ली कैंट

55. सार्वजनिक परिवहन में सुधार के उद्देश्य से FAME-II योजना के तहत, राजस्थान में इलेक्ट्रिक बस संचालन मुख्य रूप से किस शहर समूह में शुरू किया गया था?
(A) जैसलमेर, बाड़मेर, बीकानेर
(B) जयपुर, जोधपुर, कोटा
(C) उदयपुर, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा
(D) अलवर, भरतपुर, धौलपुर

56. सूची I में राजस्थान में संचालित रेलवे ज़ोन को सूची II में उनके संबंधित मुख्यालयों से सुमेलित कीजिए:
सूची I : (रेलवे ज़ोन)
P. उत्तर पश्चिम रेलवे (NWR)
Q. पश्चिम मध्य रेलवे (WCR)
R. उत्तर मध्य रेलवे (NCR)
S. उत्तर रेलवे (NR)

सूची II : (मुख्यालय)
1. जबलपुर
2. प्रयागराज (इलाहाबाद)
3. जयपुर
4. नई दिल्ली

(A) P-3, Q-1, R-2, S-4
(B) P-3, Q-2, R-1, S-4
(C) P-1, Q-3, R-4, S-2
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

57. राजस्थान के परिवहन क्षेत्र में स्वचालित परीक्षण स्टेशनों (ATS) की स्थापना का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?
(A) हस्तचलित फ़ील्ड परीक्षण की आवश्यकता के बिना निजी वाहन स्वामियों को स्वतः ड्राइविंग लाइसेंस जारी करना
(B) उन्नत हवाई ड्रोन निगरानी प्रणालियों का उपयोग करके अवैध सीमा पार गतिविधियों की स्वचालित निगरानी करना
(C) राज्य रेलवे फ्रेट कॉरिडोर पर रणनीतिक चेकपोस्टों पर स्वतः भारी माल कार्गो का वजन करना
(D) वाहनों की सड़क-योग्यता (फिटनेस) सुनिश्चित करने के लिए वाणिज्यिक वाहनों का स्वचालित परीक्षण करना

NODIA

58. राजस्थान में कौन-सी नागरिक उड्डयन सुविधा भारतीय वायु सेना के लिए एक अत्यंत रणनीतिक भूमिगत एयरबेस के रूप में भी कार्य करती है?
(A) नाल हवाई अड्डा
(B) महाराणा प्रताप हवाई अड्डा
(C) सांगानेर हवाई अड्डा
(D) किशनगढ़ हवाई अड्डा

59. राजस्थान में सिविल एन्क्लेव, जैसे जोधपुर हवाई अड्डे पर वायु यातायात नियंत्रण (ATC) संचालन का प्रबंधन मुख्य रूप से किसके द्वारा किया जाता है?
(A) भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण (AAI)
(B) भारतीय वायु सेना (IAF)
(C) नागरिक उड्डयन महानिदेशालय (DGCA)
(D) राजस्थान नागरिक उड्डयन विभाग

60. 'पैलेस ऑन व्हील्स' के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसे राजस्थान में विरासत पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए 1982 में शुरू किया गया था।
II. यह आरटीडीसी (RTDC) और भारतीय रेलवे के बीच एक संयुक्त उद्यम के रूप में संचालित है।
III. 1990 के दशक में ब्रॉड गेज में परिवर्तन से पहले यह ट्रेन मूल रूप से मीटर गेज पर चलती थी।
IV. यह मुख्य मानसून सीजन सहित पूरे वर्ष निरंतर संचालित होती है।

(A) केवल I
(B) केवल II
(C) केवल III
(D) केवल I और II

81. पुरानी परिवहन प्रणालियों से आधुनिक रेलवे बुनियादी ढांचे में परिवर्तन, विशेष रूप से मारवाड़ और मेवाड़ जैसे क्षेत्रों में ब्रॉड गेज परिवर्तन ने राजस्थान में किस उप-क्षेत्र को सर्वाधिक प्रोत्साहन दिया है?
(A) वाणिज्यिक गहरे समुद्र में मछली पकड़ने और समुद्री उत्पाद निर्यात
(B) विरासत रेल पर्यटन और सर्किट यात्रा
(C) तीव्र शहरी मेट्रो आवागमन और उपनगरीय पारगमन नेटवर्क
(D) भारी आंतरिक जलमार्ग माल परिवहन और बजरा शिपिंग

82. पूर्ण परिचालन के बाद, दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे द्वारा दिल्ली और मुंबई के बीच सड़क यात्रा का समय घटाकर लगभग कितना होने का अनुमान है?
(A) 6 घंटे
(B) 12 घंटे
(C) 18 घंटे
(D) 24 घंटे

83. बेहतर सड़क और रेल बुनियादी ढांचे का राजस्थान के पर्यटन उद्योग पर पड़े प्राथमिक प्रभाव का सबसे उपयुक्त वर्णन निम्नलिखित में से कौन-सा है?
(A) इसने दूरस्थ विरासत और वन्यजीव स्थलों तक पहुँच में सुधार किया, जिससे पर्यटकों की संख्या में वृद्धि हुई
(B) इसके कारण एक-दिवसीय यात्राओं में वृद्धि हुई जिससे विरासत होटलों के राजस्व में भारी गिरावट आई
(C) इसने विदेशी पर्यटकों को केवल स्वर्णिम त्रिभुज (गोल्डन ट्रायंगल) सर्किट तक सीमित कर दिया
(D) इसके कारण बेहतर रेल विकल्पों के चलते क्षेत्रीय घरेलू हवाई अड्डों को बंद करना पड़ा

84. राजस्थान से होकर गुजरने वाले राष्ट्रीय राजमार्गों के लिए भूमि अधिग्रहण और निर्माण की मुख्य जिम्मेदारी किस एजेंसी की है?
(A) सार्वजनिक निर्माण विभाग (PWD), राजस्थान
(B) राजस्थान राज्य सड़क विकास निगम (RSRDC)
(C) भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (NHAI)
(D) सीमा सड़क संगठन (BRO)

85. ग्रामीण परिवहन के अंतर को पाटने के लिए जहाँ RSRTC बसें संचालित नहीं होती हैं, राज्य सरकार ने निजी ऑपरेटरों को ग्रामीण मार्गों पर बसें चलाने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु किस योजना का प्रस्ताव रखा?
(A) राजस्थान ग्रामीण परिवहन गलियारा योजना
(B) व्यापक मुख्यमंत्री ग्रामीण बस सेवा कल्याण योजना
(C) राज्य मुख्यमंत्री ग्रामीण वाहन परिवहन योजना
(D) पीएम ई-बस सेवा शहरी सार्वजनिक परिवहन योजना

86. ऐतिहासिक शहर उदयपुर की हवाई यात्रा करने वाले यात्री निम्नलिखित में से किस हवाई अड्डे पर पहुँचेंगे?
(A) सांगानेर अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा, जयपुर
(B) नाल सिविल एन्क्लेव हवाई अड्डा, बीकानेर
(C) उत्तरलाई सैन्य एवं नागरिक एयरबेस, बाड़मेर
(D) महाराणा प्रताप हवाई अड्डा, डबोक

87. राजस्थान में तुलनात्मक परिवहन नेटवर्क की लंबाई का विश्लेषण करते समय, निम्नलिखित में से कौन-सा कथन तथ्यात्मक है?
(A) राष्ट्रीय राजमार्गों की लंबाई राज्य राजमार्गों की लंबाई से अधिक है।
(B) राज्य राजमार्गों की लंबाई राष्ट्रीय राजमार्गों की लंबाई से अधिक है।
(C) रेलवे नेटवर्क की लंबाई राज्य राजमार्गों की कुल लंबाई से अधिक है।
(D) शहरी सड़कों की लंबाई ग्रामीण सड़कों की लंबाई से अधिक है।

88. आगामी बाड़मेर रिफाइनरी के लिए पेट्रोलियम उत्पादों और उपकरणों के परिवहन को सुगम बनाने के लिए, किस विशिष्ट स्थान को जोड़ने वाली नई रेलवे कनेक्टिविटी विकसित की जा रही है?
(A) मुनाबाव
(B) समदड़ी
(C) पचपदरा
(D) गडरा रोड

89. भारत की पहली डबल-स्टैक कंटेनर ट्रेन, जो माल ढुलाई क्षमता को अनुकूलित करती हुई राजस्थान से होकर गुजरती है, को किन दो स्टेशनों के बीच हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया था?
(A) जयपुर और कांडला
(B) अजमेर और जेएनपीटी (JNPT)
(C) जोधपुर और अहमदाबाद
(D) रेवाड़ी और पालनपुर

90. राजस्थान में विकसित हो रहे लॉजिस्टिक्स और फ्रेट कॉरिडोर (जैसे WDFC) से मुख्य रूप से राज्य में उत्पादित किस प्रकार की वस्तुओं की अधिक मात्रा को संभालने की उम्मीद है?
(A) सीमेंट, भवन निर्माण के पत्थर, खनिज और कंटेनर चालित निर्मित सामान
(B) ताज़ी समुद्री मछली, तटीय जलीय कृषि उत्पाद और जमे हुए समुद्री भोजन
(C) मृदु काष्ठ (सॉफ्टवुड), वाणिज्यिक वानिकी उत्पाद और बांस लुगदी कच्चा माल
(D) उच्च ऊंचाई वाले शीत जलवायु वाले कृषि उत्पाद जैसे जैविक सेब और केसर

NODIA

(D) 2006

10. जयपुर मेट्रो का पहला व्यावसायिक रूप से संचालित खंड (चरण 1A) निम्नलिखित में से किन दो स्टेशनों को जोड़ता है?
(A) मानसरोवर से चांदपोल
(B) मानसरोवर से बड़ी चौपड़
(C) अंबाबाड़ी से सीतापुरा
(D) चांदपोल से राम नगर

11. निम्नलिखित में से किस हवाई अड्डे को राजस्थान में विकसित पहले ग्रीनफील्ड हवाई अड्डे के रूप में मान्यता प्राप्त है?
(A) महाराणा प्रताप हवाई अड्डा
(B) किशनगढ़ हवाई अड्डा
(C) जोधपुर सिविल एन्क्लेव
(D) नाल हवाई अड्डा

12. राजस्थान में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना (PMGSY) के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह योजना वर्ष 2000 में सड़क संपर्क से वंचित बसावटों को बारहमासी सड़क संपर्क प्रदान करने के लिए शुरू की गई थी।
II. राजस्थान के लिए केंद्र और राज्य के बीच वित्तपोषण प्रारूप वर्तमान में 60:40 के अनुपात में विभाजित है।
III. मरुस्थलीय क्षेत्रों में बसावटों को जोड़ने के लिए न्यूनतम जनसंख्या मापदंड 250 है।
IV. राज्य में इस योजना की नोडल कार्यान्वयन एजेंसी राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम (RSRTC) है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल I, II और III
(B) केवल II, III और IV
(C) केवल I, III और IV
(D) I, II, III और IV

13. वर्ष 1989 में राजसिको (RAJSICO) द्वारा राजस्थान में पहला अंतर्देशीय कंटेनर डिपो (ICD) / शुष्क बंदरगाह कहाँ स्थापित किया गया था?
(A) मानसरोवर, जयपुर
(B) भिवाड़ी औद्योगिक क्षेत्र, अलवर
(C) बासनी औद्योगिक क्षेत्र, जोधपुर
(D) भीलवाड़ा औद्योगिक क्षेत्र

14. राजस्थान में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए प्रसिद्ध शाही विरासत ट्रेन 'पैलेस ऑन व्हील्स' किस वर्ष शुरू की गई थी?
(A) 1978
(B) 1982
(C) 1991
(D) 1995

15. राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम (RSRTC) की स्थापना किस वर्ष 1 अक्टूबर को हुई थी?
(A) 1956
(B) 1960
(C) 1964
(D) 1972

16. राजस्थान में दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे के खंड के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. राजस्थान से होकर गुजरने वाले इस एक्सप्रेसवे की कुल लंबाई लगभग 373 किमी है।
II. यह सीधे जयपुर शहर की नगर निगम सीमा से होकर गुजरता है।
III. यह एक नियंत्रित-पहुंच (एक्सेस-कंट्रोल्ड), 8-लेन ग्रीनफील्ड एक्सप्रेसवे है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल I और II
(B) केवल I और III
(C) केवल II और III
(D) I, II और III

17. राजस्थान में उत्तर पश्चिम रेलवे का क्षेत्रीय रेलवे प्रशिक्षण संस्थान (ZRTI) किस शहर में स्थित है?
(A) जयपुर
(B) उदयपुर
(C) जोधपुर
(D) अजमेर

18. निम्नलिखित में से किस रेलवे ज़ोन का राजस्थान में रेलवे नेटवर्क के किसी भी हिस्से पर क्षेत्रीय क्षेत्राधिकार नहीं है?
(A) उत्तर पश्चिम रेलवे (NWR)
(B) पश्चिम मध्य रेलवे (WCR)
(C) उत्तर रेलवे (NR)
(D) दक्षिण मध्य रेलवे (SCR)

19. राजस्थान में सामरिक सीमावर्ती सड़कों के निर्माण और रखरखाव के लिए सीमा सड़क संगठन (BRO) द्वारा स्थापित 'प्रोजेक्ट चेतक' का मुख्यालय कहाँ स्थित है?
(A) बीकानेर
(B) जैसलमेर
(C) बाड़मेर
(D) श्रीगंगानगर

20. राजस्थान के निम्नलिखित प्रमुख रेलवे जंक्शन शहरों को उत्तर से दक्षिण के भौगोलिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. श्रीगंगानगर
2. बीकानेर
3. जोधपुर
4. उदयपुर
निम्नलिखित में से कौन-सा सही क्रम है?
(A) 1, 2, 3, 4
(B) 1, 3, 2, 4
(C) 2, 1, 3, 4
(D) 1, 2, 4, 3

Downloaded from www.pdf.tube

11. (B) किशनगढ़ हवाई अड्डा
अजमेर के निकट स्थित किशनगढ़ हवाई अड्डे को राजस्थान के पहले ग्रीनफील्ड हवाई अड्डे के रूप में विकसित किया गया है। इसका उद्घाटन अक्टूबर 2017 में हुआ था। इसे भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण द्वारा एक नए स्थान पर निर्मित किया गया था। इस हवाई अड्डे का निर्माण अजमेर और पुष्कर के धार्मिक स्थलों के साथ-साथ संगमरमर उद्योग को हवाई संपर्क प्रदान करने हेतु किया गया था।

12. (A) केवल I, II और III
प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना वर्ष 2000 में शुरु की गई एक योजना थी, जिसका वित्तपोषण प्रारूप वर्तमान में केंद्र और राज्यों के बीच 60:40 है। इस योजना के अंतर्गत सामान्य क्षेत्रों में 500 तथा मरुस्थलीय क्षेत्रों में 250 की जनसंख्या वाली बसावटों को बारहमासी सड़कों से जोड़ा जाता है। राजस्थान में इसकी कार्यान्वयन एजेंसी राजस्थान ग्रामीण सड़क विकास परिषद है, न कि RSRTC।

13. (A) मानसरोवर, जयपुर
राजस्थान लघु उद्योग निगम लिमिटेड द्वारा वर्ष 1989 में राज्य का पहला अंतर्देशीय कंटेनर डिपो जयपुर के मानसरोवर में स्थापित किया गया था। राजस्थान एक भू-बद्ध राज्य होने के कारण यहाँ के निर्यातकों को समुद्री बंदरगाहों तक पहुँच हेतु कठिनाई होती थी। इस डिपो की स्थापना से स्थानीय स्तर पर ही सीमा शुल्क निकासी और भंडारण सुविधाएं मिलने लगीं, जिससे राज्य के व्यापार को प्रोत्साहन मिला।

14. (B) 1982
राजस्थान में पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से प्रसिद्ध शाही विरासत ट्रेन 'पैलेस ऑन व्हील्स' की शुरुआत 26 जनवरी 1982 को की गई थी। यह ट्रेन राजस्थान पर्यटन विकास निगम और भारतीय रेलवे का एक संयुक्त उद्यम है। यह लग्जरी ट्रेन पर्यटकों को दिल्ली से शुरु होकर जयपुर, सवाई माधोपुर, चित्तौड़गढ़, उदयपुर, जैसलमेर, जोधपुर तथा आगरा जैसे ऐतिहासिक स्थलों की यात्रा कराती है।

15. (C) 1964
राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम की स्थापना सड़क परिवहन निगम अधिनियम, 1950 के प्रावधानों के तहत 1 अक्टूबर 1964 को की गई थी। इसका मुख्यालय जयपुर में स्थित है। यह निगम संपूर्ण राजस्थान राज्य में तथा पड़ोसी राज्यों के साथ यात्री बस सेवाओं के कुशल, किफायती और समन्वित संचालन के लिए उत्तरदायी है। अपनी स्थापना के बाद से यह राज्य की प्रमुख सार्वजनिक परिवहन संस्था है।

16. (B) केवल I और III
दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे एक 8-लेन नियंत्रित-पहुंच ग्रीनफील्ड एक्सप्रेसवे है। राजस्थान राज्य में इस एक्सप्रेसवे की कुल लंबाई लगभग 373 किलोमीटर है। यह एक्सप्रेसवे अलवर, भरतपुर, दौसा, सवाई माधोपुर, टोंक, बूंदी और कोटा जिलों से होकर गुजरता है। यह जयपुर शहर की मुख्य सीमा से सीधे नहीं गुजरता, बल्कि एक पृथक लिंक मार्ग द्वारा जयपुर को जोड़ता है। अतः केवल पहला और तीसरा कथन सत्य हैं।

17. (B) उदयपुर
उत्तर पश्चिम रेलवे का क्षेत्रीय रेलवे प्रशिक्षण संस्थान राजस्थान के उदयपुर शहर में स्थित है। यह संस्थान 1956 में स्थापित किया गया था और यह भारतीय रेलवे के प्रमुख प्रशिक्षण केंद्रों में से एक है। यहाँ उत्तर पश्चिम रेलवे के स्टेशन मास्टर, लोको पायलट, गार्ड और यातायात निरीक्षकों जैसे परिचालन कर्मचारियों को सुरक्षा एवं तकनीकी प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।

NODIA

18. (D) दक्षिण मध्य रेलवे (SCR)
राजस्थान में रेलवे नेटवर्क का प्रबंधन मुख्य रूप से उत्तर पश्चिम रेलवे ज़ोन द्वारा किया जाता है। इसके अलावा, राज्य के दक्षिण-पूर्वी हिस्से का संचालन पश्चिम मध्य रेलवे द्वारा तथा उत्तरी हिस्सों का प्रबंधन उत्तर रेलवे द्वारा किया जाता है। दक्षिण मध्य रेलवे का राजस्थान के किसी भी रेल नेटवर्क या क्षेत्र पर कोई क्षेत्रीय क्षेत्राधिकार नहीं है, क्योंकि इसका कार्यक्षेत्र दक्षिण भारत तक सीमित है।

19. (A) बीकानेर
सीमा सड़क संगठन द्वारा वर्ष 1962 में स्थापित 'प्रोजेक्ट चेतक' का मुख्यालय बीकानेर में स्थित है। इस परियोजना की प्राथमिक जिम्मेदारी राजस्थान के पश्चिमी सीमावर्ती जिलों जैसे बाड़मेर, जैसलमेर, बीकानेर और श्रीगंगानगर में सामरिक महत्व की अंतरराष्ट्रीय सीमा सड़कों का निर्माण तथा रखरखाव करना है। यह अवसंरचना रक्षा बलों की तीव्र आवाजाही को सुगम बनाती है और मरुस्थलीय क्षेत्रों को जोड़ती है।

20. (A) 1, 2, 3, 4
राजस्थान के प्रमुख रेलवे जंक्शन शहरों का उत्तर से दक्षिण दिशा की ओर सही भौगोलिक क्रम श्रीगंगानगर, बीकानेर, जोधपुर और उदयपुर है। राज्य के सुदूर उत्तरी भाग में श्रीगंगानगर स्थित है, जिसके दक्षिण में मरुस्थलीय क्षेत्र में बीकानेर अवस्थित है। बीकानेर के दक्षिण में मध्य-पश्चिमी राजस्थान का प्रमुख केंद्र जोधपुर है, जबकि सबसे दक्षिणी भाग में मेवाड़ अंचल का शहर उदयपुर स्थित है।

21. (A) ग्रामीण सड़कें
राजस्थान में सड़कों के कुल वर्गीकरण में मार्ग लंबाई की दृष्टि से ग्रामीण सड़कों का हिस्सा सर्वाधिक है। राज्य का विशाल भौगोलिक क्षेत्रफल और हजारों छितरी हुई ग्रामीण बसावटें होने के कारण ग्रामीण सड़कों का नेटवर्क अत्यंत व्यापक है। यद्यपि राष्ट्रीय राजमार्ग और राज्य राजमार्ग प्रमुख गलियारे हैं, लेकिन कुल किलोमीटर लंबाई के मामले में ग्रामीण सड़कें अन्य श्रेणियों से बहुत अधिक हैं।

22. (B) 2005
जयपुर के सांगानेर में स्थित जयपुर हवाई अड्डे को 29 दिसंबर 2005 को आधिकारिक रूप से अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे का दर्जा प्रदान किया गया था। यह राजस्थान का पहला अंतर्राष्ट्रीय

उत्पादों का देश भर में मालगाड़ियों द्वारा त्वरित परिवहन संभव हो सकेगा।

89. (D) रेवाड़ी और पालनपुर
भारत की पहली डबल-स्टैक कंटेनर मालगाड़ी को हरियाणा के रेवाड़ी और गुजरात के पालनपुर के बीच हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया था, जो मार्ग राजस्थान से होकर गुजरता है। पश्चिमी समर्पित माल ढुलाई गलियारे (WDFC) के विद्युतीकृत खंड पर संचालित इस ट्रेन ने एक ही बार में दोगुना माल ढोने की क्षमता प्रदर्शित की, जिससे राजस्थान के औद्योगिक उत्पादों और खनिजों के परिवहन को अत्यधिक गति मिली।

90. (A) सीमेंट, भवन निर्माण के पत्थर, खनिज और कंटेनर चालित निर्मित सामान
राजस्थान में विकसित हो रहे लॉजिस्टिक्स और समर्पित माल ढुलाई गलियारों (WDFC) से राज्य में अत्यधिक मात्रा में उत्पादित होने वाले सीमेंट, भवन निर्माण पत्थरों (जैसे संगमरमर व ग्रेनाइट), खनिजों तथा कंटेनर चालित निर्मित सामान की बड़ी मात्रा को संभालने की उम्मीद है। यह समर्पित फ्रेट कॉरिडोर राज्य के समृद्ध खनिज एवं औद्योगिक उत्पादों को बंदरगाहों और प्रमुख राष्ट्रीय बाजारों तक तीव्र गति से पहुँचाने में सक्षम है।

www.nodia.in

Click Here to Buy book on Amazon

विद्यालयों और अस्पतालों से बेहतर कनेक्टिविटी प्रदान की जा रही है। राजस्थान में इस चरण से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भारी बल मिला है।

34. (D) आगरा फोर्ट से बांदीकुई
राजस्थान में पहली रेलगाड़ी अप्रैल 1874 में आगरा फोर्ट से जयपुर रियासत के बांदीकुई (वर्तमान में दौसा जिला) के बीच चलाई गई थी। यह राजस्थान के इतिहास में रेल परिवहन की शुरुआत की एक अत्यंत महत्वपूर्ण घटना थी। इस मार्ग पर रेल सेवा शुरू होने से तत्कालीन राजपूताना में आधुनिक परिवहन प्रणाली का पदार्पण हुआ, जिससे व्यापारिक गतिविधियों को बढ़ावा मिला।

35. (A) बांसवाड़ा
दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे राजस्थान राज्य के पूर्वी और दक्षिण-पूर्वी जिलों से होकर गुजरता है। इसका मार्ग मुख्य रूप से अलवर, भरतपुर, दौसा, सवाई माधोपुर, टोंक, बूंदी और कोटा जिलों को कवर करता है। बांसवाड़ा जिला राजस्थान के सुदूर दक्षिणी भाग में स्थित है, जो इस एक्सप्रेसवे के प्रस्तावित और निर्मित मार्ग से बहुत दूर है। इसलिए बांसवाड़ा इसके अंतर्गत नहीं आता है।

36. (B) केवल III
राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम की स्थापना 1 अक्टूबर 1964 को हुई थी और इसका मुख्यालय जयपुर में स्थित है। यह पड़ोसी राज्यों में भी बस सेवाएं संचालित करता है। निगम की साधारण बसों में महिला यात्रियों को किराए में 50% की रियायत दी जाती है, न कि 100% की। अतः केवल तीसरा कथन असत्य है, जबकि अन्य कथन पूरी तरह सही हैं।

37. (A) बीकानेर
राजस्थान लघु उद्योग निगम लिमिटेड राज्य से होने वाले अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और निर्यात को सुगम बनाने के लिए अंतर्देशीय कंटेनर डिपो (शुष्क बंदरगाहों) का प्रबंधन करता है। राजसिको द्वारा जयपुर (मानसरोवर), जोधपुर (बासनी), भीलवाड़ा और कोटा में इन डिपो का संचालन किया जाता है। वर्तमान में राजसिको बीकानेर में किसी अंतर्देशीय कंटेनर डिपो का संचालन नहीं करता है, इसलिए बीकानेर सही उत्तर है।

38. (D) आर्थिक गलियारों के साथ-साथ सीमावर्ती और तटीय सड़क कनेक्टिविटी
भारतमाला परियोजना भारत सरकार की एक प्रमुख सड़क एवं राजमार्ग अवसंरचना विकास पहल है। राजस्थान में इस परियोजना का प्राथमिक कार्यान्वयन आर्थिक गलियारों के निर्माण, माल ढुलाई दक्षता बढ़ाने वाले फीडर मार्गों तथा विशेष रूप से अंतरराष्ट्रीय सीमा से सटे पश्चिमी मरुस्थलीय क्षेत्रों में रणनीतिक सीमावर्ती सड़कों के विकास पर केंद्रित है। इसके माध्यम से राज्य में व्यापार, लॉजिस्टिक्स और सुरक्षा कनेक्टिविटी में उल्लेखनीय सुधार हुआ है।

39. (B) बाड़मेर
राजस्थान में कुल सड़कों की लंबाई की दृष्टि से बाड़मेर जिला प्रथम स्थान पर आता है। बाड़मेर राज्य का विशाल जिला है, जहाँ विस्तृत मरुस्थलीय भूभाग और छितरी हुई ग्रामीण आबादी पाई जाती है। सीमा सुरक्षा पहलों, ग्रामीण सड़क योजनाओं तथा ऊर्जा क्षेत्र के विकास के कारण यहाँ सड़कों का व्यापक निर्माण हुआ है, जिससे यहाँ कुल सड़क लंबाई सर्वाधिक है।

40. (B) केवल II
जयपुर मेट्रो के संदर्भ में पहला कथन सही है क्योंकि इसके चरण 1 के निर्माण हेतु एशियाई विकास बैंक से वित्तीय सहायता मिली थी। तीसरा कथन भी सही है कि यह मानक गेज पर चलती है। हालांकि, दूसरा कथन असत्य है क्योंकि संपूर्ण चरण 1 भूमिगत नहीं है। चरण 1A मुख्य रूप से एलिवेटेड है, जबकि केवल 1B भूमिगत खंड है।

NODIA

41. (D) धौलपुर
राजस्थान में कुल सड़क लंबाई के मामले में धौलपुर जिला सबसे निचले स्थान पर है। धौलपुर राज्य के सबसे छोटे जिलों में शामिल है और इसका भौगोलिक क्षेत्रफल अपेक्षाकृत बहुत कम है। सीमित भौगोलिक विस्तार तथा चंबल के बीहड़ क्षेत्रों की उपस्थिति के कारण यहाँ सड़कों की कुल लंबाई राज्य के अन्य जिलों की तुलना में सबसे कम दर्ज की गई है।

42. (A) मल्टी-मॉडल कनेक्टिविटी और लॉजिस्टिक्स अवसंरचना का एकीकृत नियोजन
राजस्थान में पीएम गति शक्ति राष्ट्रीय मास्टर प्लान के क्रियान्वयन का प्राथमिक उद्देश्य सड़क, रेल, हवाई अड्डों और लॉजिस्टिक्स केंद्रों का एकीकृत नियोजन सुनिश्चित करना है। यह ढांचा विभागीय पृथकता को समाप्त करके मल्टी-मॉडल कनेक्टिविटी अवसंरचना को बढ़ावा देता है। इससे औद्योगिक क्षेत्रों तक माल की निर्बाध आवाजाही संभव होती है, लॉजिस्टिक्स लागत घटती है और विकास तेज़ होता है।

43. (B) भरतपुर
राजस्थान का भरतपुर शहर ऐतिहासिक रूप से रेलवे वैगनों के विनिर्माण के लिए जाना जाता है। भरतपुर में प्रसिद्ध सेंट्रल इंडिया मशीनरी मैन्युफैक्चरिंग कंपनी (सिमको) वैगन कारखाना स्थित है। इस कारखाने की स्थापना वर्ष 1957 में की गई थी, जो भारतीय रेलवे के लिए मालगाड़ी के डिब्बों की आपूर्ति करने वाला एक प्रमुख औद्योगिक केंद्र बना। इसने क्षेत्र में रोजगार सृजन और औद्योगिक विकास में उल्लेखनीय योगदान दिया।

44. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
परिवहन शब्दावली का उनकी सही परिभाषाओं के साथ सुमेलन इस प्रकार है। अंतर्देशीय कंटेनर डिपो (ICD) एक शुष्क बंदरगाह है जो समुद्री माल के लिए सीमा शुल्क निकासी का प्रबंधन करता है। रो-रो सेवा माल लदे ट्रकों को सीधे ट्रेनों पर ले जाने की सुविधा है। निर्माण-संचालन-हस्तांतरण (BOT) बुनियादी ढांचा निष्पादन हेतु सार्वजनिक-निजी भागीदारी मॉडल है। फास्टैग आरएफआईडी तकनीक आधारित स्वचालित इलेक्ट्रॉनिक टोल संग्रह प्रणाली है।

हवाई अड्डा है। अंतर्राष्ट्रीय दर्जा मिलने के पश्चात यहाँ से खाड़ी देशों और अन्य विदेशी गंतव्यों हेतु सीधी उड़ानें प्रारंभ हुईं, जिससे राज्य में पर्यटन और व्यापार को भारी प्रोत्साहन प्राप्त हुआ।

23. (B) हरिद्वार में अस्थि विसर्जन के लिए परिवार के दो सदस्यों को निःशुल्क बस यात्रा प्रदान करना
मोक्ष कलश योजना राजस्थान सरकार द्वारा शुरु की गई एक विशेष सामाजिक कल्याणकारी पहल है, जिसका संचालन राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम द्वारा किया जाता है। इस योजना का प्राथमिक उद्देश्य राज्य के दिवंगत निवासियों के परिजनों को राहत पहुँचाना है, जिसके तहत मृतक की अस्थियों के विसर्जन हेतु परिवार के अधिकतम दो सदस्यों को हरिद्वार जाने-आने के लिए निःशुल्क यात्रा सुविधा दी जाती है।

24. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
पुराने राष्ट्रीय राजमार्ग क्रमांकों का राजस्थान में सही मार्गांकन इस प्रकार है। पुराना NH 8 दिल्ली से मुंबई को जयपुर और उदयपुर से होते हुए जोड़ता था। पुराना NH 15 पश्चिमी राजस्थान से गुजरते हुए पठानकोट से समाख्याली तक जाता था। पुराना NH 11 आगरा से बीकानेर को जयपुर होकर जोड़ता था। पुराना NH 12 जयपुर से जबलपुर को कोटा होकर जोड़ता था।

25. (B) मानक गेज (1435 मिमी)
जयपुर मेट्रो रेल प्रणाली को 1435 मिलीमीटर की मानक गेज पटरी प्रणाली पर निर्मित और संचालित किया गया है। भारत में आधुनिक शहरी मेट्रो प्रणालियों के निर्माण में मानक गेज का व्यापक उपयोग किया जाता है, क्योंकि यह तीखे मोड़ों पर बेहतर गतिशीलता प्रदान करता है और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उपलब्ध आधुनिक तकनीकों के अनुकूल है। जयपुर मेट्रो इसी ट्रैक पर चलती है।

26. (A) बांसवाड़ा
बांसवाड़ा राजस्थान का एक प्रमुख दक्षिणी जनजातीय बहुल जिला है, जो ऐतिहासिक रुप से मुख्य रेल नेटवर्क से वंचित रहा है। कठिन पहाड़ी इलाके और भौगोलिक पृथकता के कारण यहाँ दशकों तक कोई रेलवे लाइन नहीं बन सकी थी। इस जिले को रेल नेटवर्क से जोड़ने के लिए डूंगरपुर-बांसवाड़ा-रतलाम रेल लाइन परियोजना की योजना बनाई गई है, जिससे सामाजिक-आर्थिक विकास को गति मिलेगी।

27. (C) 6,000 किमी
राजस्थान राज्य में भारतीय रेलवे नेटवर्क के अंतर्गत कुल रेल मार्ग की लंबाई लगभग 6,000 किलोमीटर दर्ज की गई है। राजस्थान देश के सबसे बड़े रेलवे नेटवर्क वाले राज्यों में से एक है। राज्य में रेल मार्गों का अधिकांश हिस्सा उत्तर पश्चिम रेलवे ज़ोन के अधिकार क्षेत्र में आता है, जबकि कुछ भाग अन्य ज़ोन में हैं। हाल में विद्युतीकरण कार्य तेज़ हुआ है।

28. (A) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या करता है
पश्चिमी राजस्थान थार मरुस्थल का हिस्सा है, जहाँ तेज हवाएं और विशाल बालुका स्तूप निरंतर स्थानांतरित होते रहते हैं। तेज आंधियों के कारण यह रेत अक्सर सड़कों पर जमा हो जाती है, जिससे मार्ग अवरुद्ध हो जाता है और सड़क की ऊपरी सतह क्षतिग्रस्त होती है। इस वजह से सड़कों से रेत हटाने तथा मरम्मत हेतु बार-बार भारी धनराशि व्यय करनी पड़ती है, जिससे लागत बढ़ती है।

29. (A) बीकानेर
पश्चिमी समर्पित माल ढुलाई गलियारा दादरी से जवाहरलाल नेहरु पोर्ट ट्रस्ट तक निर्मित एक समर्पित रेल माल भाड़ा लाइन है। राजस्थान में यह कॉरिडोर उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम दिशा में अलवर, जयपुर, सीकर, नागौर, अजमेर, पाली और सिरोही जिलों से होकर गुजरता है। बीकानेर सुदूर उत्तर-पश्चिम मरुस्थलीय भाग में स्थित होने के कारण इस गलियारे के मार्ग में शामिल नहीं है।

30. (C) 39%
पश्चिमी समर्पित माल ढुलाई गलियारा की कुल लंबाई लगभग 1,504 किलोमीटर है। इस विशाल रेल अवसंरचना परियोजना का लगभग 39 प्रतिशत हिस्सा (लगभग 567 किलोमीटर मार्ग) अकेले राजस्थान राज्य की सीमा से होकर गुजरता है। राजस्थान इस कॉरिडोर का सबसे बड़ा लाभार्थी राज्य है। यह मार्ग राज्य के औद्योगिक केंद्रों को प्रमुख बंदरगाहों से जोड़कर व्यापारिक विकास को गति प्रदान करता है।

31. (D) जापान
दिल्ली-मुंबई इंडस्ट्रियल कॉरिडोर भारत सरकार द्वारा जापान सरकार के वित्तीय और तकनीकी सहयोग से विकसित किया जाने वाला एक बुनियादी ढांचा मेगा-प्रोजेक्ट है। इस कॉरिडोर का मुख्य आधार पश्चिमी समर्पित माल ढुलाई गलियारा है। इस परियोजना से राजस्थान को अत्यधिक लाभ मिल रहा है, क्योंकि राज्य का विशाल भूभाग इसके प्रभाव क्षेत्र में आता है और औद्योगिक विकास बढ़ रहा है।

32. (A) 1, 3, 4, 2
राजस्थान में इन प्रमुख परिवहन विकास घटनाओं का सही कालानुक्रमिक क्रम इस प्रकार है। राजस्थान में पर्यटन हेतु शाही ट्रेन 'पैलेस ऑन व्हील्स' का शुभारंभ वर्ष 1982 में हुआ था। उत्तर पश्चिम रेलवे मुख्यालय की स्थापना वर्ष 2002 में हुई। इसके पश्चात जयपुर हवाई अड्डे को 2005 में अंतर्राष्ट्रीय दर्जा मिला। अंत में, जयपुर मेट्रो का व्यावसायिक शुभारंभ वर्ष 2015 में हुआ।

33. (B) मौजूदा ग्रामीण सड़क नेटवर्क को सुदृढ़ बनाना और उन्हें ग्रामीण कृषि बाजारों से जोड़ना
प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के चरण III का प्राथमिक उद्देश्य मौजूदा ग्रामीण सड़क नेटवर्क के समेकन और सुदृढ़ीकरण पर ध्यान केंद्रित करना है। इसके तहत पूर्व निर्मित ग्रामीण मार्गों का उन्नयन करके उन्हें ग्रामीण कृषि मंडियों, उच्च प्राथमिक

Downloaded from www.pdf.tube

56. (A) P-3, Q-1, R-2, S-4
राजस्थान में रेल सेवाओं को संचालित करने वाले रेलवे ज़ोन का उनके मुख्यालयों के साथ सही सुमेलन इस प्रकार है। उत्तर पश्चिम रेलवे (NWR) का मुख्यालय जयपुर में है। पश्चिम मध्य रेलवे (WCR) का मुख्यालय जबलपुर में स्थित है। उत्तर मध्य रेलवे (NCR) का मुख्यालय प्रयागराज (इलाहाबाद) में है। उत्तर रेलवे (NR) का मुख्यालय नई दिल्ली में स्थित है। यह विभाजन प्रशासनिक दक्षता हेतु बनाया गया है।

57. (D) वाहनों की सड़क-योग्यता (फिटनेस) सुनिश्चित करने के लिए वाणिज्यिक वाहनों का स्वचालित परीक्षण करना
राजस्थान में स्वचालित परीक्षण स्टेशनों (एटीएस) की स्थापना का प्राथमिक उद्देश्य वाणिज्यिक और भारी वाहनों की सड़क-योग्यता (फिटनेस) का पूर्णतः स्वचालित और निष्पक्ष परीक्षण करना है। इन केंद्रों पर अत्याधुनिक डिजिटल उपकरणों के माध्यम से वाहनों के सुरक्षा मानकों, ब्रेक प्रणाली और उत्सर्जन स्तर की जांच की जाती है। इससे सड़कों पर केवल पूरी तरह सुरक्षित और योग्य वाहन ही चल पाते हैं, जिससे दुर्घटनाओं में प्रभावी कमी आती है।

58. (A) नाल हवाई अड्डा
बीकानेर में स्थित नाल हवाई अड्डा भारतीय वायु सेना का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और रणनीतिक एयरबेस है। इस हवाई अड्डे की मुख्य विशेषता यह है कि यहाँ एक भूमिगत एयरबेस अवसंरचना निर्मित है, जो सैन्य दृष्टिकोण से लड़ाकू विमानों को सुरक्षा प्रदान करती है। इसके साथ ही यह नागरिक उड्डयन गतिविधियों के लिए सिविल एन्क्लेव के रूप में भी कार्य करता है।

59. (B) भारतीय वायु सेना (IAF)
जोधपुर हवाई अड्डा मूल रूप से भारतीय वायु सेना (IAF) का एक प्रमुख और रणनीतिक सैन्य एयरबेस है, जहाँ असैन्य उड़ानों हेतु एक सिविल एन्क्लेव बनाया गया है। सैन्य नियंत्रण के अधीन होने के कारण, इस हवाई अड्डे पर रनवे के प्रबंधन और वायु यातायात नियंत्रण (ATC) संचालन की प्राथमिक जिम्मेदारी भारतीय वायु सेना के पास है। भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण केवल सिविल पैसेंजर टर्मिनल की यात्री सुविधाओं का प्रबंधन करता है।

60. (A) केवल I, II और III
'पैलेस ऑन व्हील्स' ट्रेन वर्ष 1982 में शुरू की गई थी और यह RTDC तथा भारतीय रेलवे का संयुक्त उद्यम है। 1990 के दशक में इसे ब्रॉड गेज में बदला गया था। अतः प्रथम तीन कथन सही हैं। चौथा कथन गलत है क्योंकि यह मानसून और गर्मी के महीनों में बंद रहती है तथा केवल पर्यटक सीजन में ही चलती है।

61. (A) खोखरापार
'थार एक्सप्रेस' भारत और पाकिस्तान के बीच चलने वाली एक ऐतिहासिक अंतरराष्ट्रीय यात्री ट्रेन सेवा थी। राजस्थान में बाड़मेर जिले का मुनाबाव स्टेशन भारत का अंतिम सीमावर्ती स्टेशन था, जो सीमा पार पाकिस्तान के सिंध प्रांत स्थित खोखरापार स्टेशन से जुड़ता था। यह रेल सेवा वर्ष 2006 में पुनः शुरू की गई थी, जिससे दोनों देशों के बीच आवागमन सुलभ हुआ।

62. (B) 2019
भारत और पाकिस्तान के मध्य संचालित होने वाली अंतरराष्ट्रीय रेल सेवा 'थार एक्सप्रेस' को अगस्त 2019 में अनिश्चित काल के लिए स्थगित कर दिया गया था। दोनों देशों के बीच बढ़ते द्विपक्षीय तनाव और सुरक्षा कारणों से इस ट्रेन का परिचालन रोक दिया गया। राजस्थान के मुनाबाव को पाकिस्तान के खोखरापार से जोड़ने वाली यह रेल सेवा तब से बंद है।

63. (D) राज्य राजमार्गों और मुख्य जिला सड़कों को उन्नत करने के लिए
केंद्रीय सड़क और अवसंरचना कोष (सीआरआईएफ) से राजस्थान को आवंटित धनराशि का प्राथमिक उपयोग राज्य के बुनियादी सड़क ढांचे में सुधार हेतु किया जाता है। इस फंड के माध्यम से राज्य राजमार्गों तथा मुख्य जिला सड़कों का चौड़ीकरण, सुदृढ़ीकरण, री-सरफेसिंग और नए पुलों का निर्माण किया जाता है। यह वित्तीय सहायता राजस्थान की प्रमुख अंतर-जिला सड़कों के गुणवत्ता उन्नयन में अत्यंत सहायक साबित होती है।

64. (B) केवल II और III
सीमा सड़क संगठन के संदर्भ में पहला कथन गलत है क्योंकि बीआरओ सड़क परिवहन मंत्रालय के बजाय रक्षा मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में कार्य करता है। दूसरा और तीसरा कथन बिल्कुल सही हैं। प्रोजेक्ट चेतक राजस्थान में अंतरराष्ट्रीय सीमा सड़कों के निर्माण हेतु मुख्य रूप से जिम्मेदार है। बीआरओ की सड़कें थार मरुस्थल के कठिन भूभाग में सैन्य बलों तथा स्थानीय नागरिकों दोनों के लिए जीवन रेखा समान हैं।

65. (B) राजस्थान भू-बद्ध (लैंडलॉक्ड) राज्य है, और शुष्क बंदरगाह समुद्री माल के लिए सीमा शुल्क निकासी में तेजी लाते हैं
राजस्थान एक पूर्णतः भू-बद्ध राज्य है, जिसकी कोई प्रत्यक्ष समुद्री तटरेखा नहीं है। राज्य के उद्योगों और निर्यातकों को समुद्री बंदरगाहों तक पहुँचने में होने वाले विलंब को दूर करने के लिए अंतर्देशीय कंटेनर डिपो (शुष्क बंदरगाहों) का विकास किया गया है। ये डिपो स्थानीय स्तर पर ही सीमा शुल्क निकासी, कंटेनर भंडारण और कागजी कार्यवाही पूरी करके अंतरराष्ट्रीय व्यापार तथा निर्यात प्रक्रिया को अत्यधिक सुगम एवं तीव्र बनाते हैं।

66. (D) मुख्यमंत्री चिरंजीवी जीवन रक्षा योजना
राजस्थान सरकार द्वारा शुरु की गई 'मुख्यमंत्री चिरंजीवी जीवन रक्षा योजना' के तहत सड़क दुर्घटना में गंभीर रूप से घायल पीड़ितों को समय पर अस्पताल पहुँचाने वाले मददगार नागरिकों को वित्तीय पुरस्कार और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया जाता है। इस योजना का मुख्य उद्देश्य दुर्घटना पीड़ितों को 'गोल्डन आवर' में त्वरित चिकित्सा सहायता उपलब्ध कराना है ताकि समय पर उपचार से अनमोल मानव जीवन को बचाया जा सके।

NODIA

67. (A) 'ढाणियों' के रूप में जानी जाने वाली बिखरी हुई और अत्यधिक छितरी हुई बसावट प्रणाली
पश्चिमी राजस्थान में थार मरुस्थल के विस्तृत परिदृश्य में ग्रामीण आबादी एक जगह केंद्रित न होकर 'ढाणियों' के रूप में अत्यधिक छितरी और बिखरी हुई स्थिति में निवास करती है। एक-दूसरे से काफी दूरी पर स्थित इन छोटी-छोटी बसावटों तक पक्की सड़कों का विस्तार करना तथा उनका निरंतर रखरखाव करना एक बड़ी भौगोलिक एवं आर्थिक चुनौती है, जिससे प्रत्येक ग्रामीण तक सड़क पहुँचाना कठिन कार्य बन जाता है।

68. (A) मानसरोवर, विवेक विहार, राम नगर, चांदपोल
जयपुर मेट्रो के चरण 1A (पिंक लाइन) में स्टेशनों का पश्चिम से पूर्व दिशा की ओर सही भौगोलिक अनुक्रम इस प्रकार है। पश्चिमी छोर पर स्थित शुरुआती स्टेशन मानसरोवर है। इसके बाद पूर्व की ओर बढ़ते हुए क्रमशः विवेक विहार, श्याम नगर, राम नगर, सिविल लाइन्स और सिंधी कैंप आते हैं, तथा अंत में परकोटे क्षेत्र के भीतर चांदपोल स्टेशन आता है। इसलिए दिए गए विकल्पों में मानसरोवर, विवेक विहार, राम नगर, चांदपोल सही क्रम है।

69. (A) घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय दोनों यात्री उड़ानों के लिए
जयपुर अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के अत्याधुनिक टर्मिनल 2 का उपयोग वर्तमान में घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय दोनों प्रकार की वाणिज्यिक यात्री उड़ानों के संचालन हेतु एकीकृत रूप से किया जा रहा है। यहाँ से देश के विभिन्न शहरों के लिए घरेलू उड़ानों के साथ-साथ खाड़ी देशों एवं अन्य अंतरराष्ट्रीय गंतव्यों के लिए सीधी उड़ानें संचालित होती हैं, जिससे यह राज्य का मुख्य हवाई यातायात केंद्र बना हुआ है।

70. (D) सड़क और रेल
किशनगढ़ के पास नियोजित मल्टी-मॉडल लॉजिस्टिक्स पार्क का प्राथमिक उद्देश्य सड़क और रेल परिवहन के माध्यम से माल की निर्बाध आवाजाही को सुगम बनाना है। राष्ट्रीय राजमार्ग नेटवर्क और समर्पित रेल फ्रेट कॉरिडोर के संगम पर स्थित यह सुविधा ट्रकों और मालगाड़ियों के बीच माल के त्वरित हस्तांतरण, भंडारण तथा सीमा शुल्क संबंधी प्रक्रियाओं को एकीकृत करके राजस्थान में लॉजिस्टिक्स दक्षता को काफी बढ़ाएगी।

71. (B) पीएम ग्राम सड़क योजना (PMGSY)
पिछले दो दशकों में राजस्थान के सड़क संपर्क से वंचित गांवों और मरुस्थलीय ढाणियों में सड़क अवसंरचना विकसित करने में 'प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना' की मुख्य भूमिका रही है। इस योजना के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में हजारों किलोमीटर पक्की बारहमासी सड़कों का निर्माण किया गया है, जिसने गांवों को मुख्य राजमार्गों और कृषि बाजारों से जोड़ने का कार्य किया।

72. (A) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या करता है
दक्षिणी राजस्थान अरावली पर्वत श्रृंखलाओं और कई मौसमी नदी घाटियों की विषम स्थलाकृति से युक्त क्षेत्र है। इस कारण यहाँ परिवहन अवसंरचना के विकास हेतु पहाड़ियों की कटाई और नदियों पर पुलों के निर्माण पर अत्यधिक निर्भरता रहती है। यह भौगोलिक परिस्थिति सड़क निर्माण को जटिल एवं खर्चीला बनाती है। इसलिए कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण सही व्याख्या करता है।

73. (D) आंतरिक जलमार्ग
राजस्थान एक शुष्क राज्य है जहाँ बारहमासी नौगम्य नदियों और प्राकृतिक जल निकायों की कमी है। इस भौगोलिक सीमा के कारण राज्य के वाणिज्यिक माल ढुलाई नेटवर्क में आंतरिक जलमार्ग परिवहन की उपस्थिति नगण्य या शून्य है। राजस्थान का संपूर्ण माल ढुलाई क्षेत्र मुख्य रूप से सड़क परिवहन और रेल नेटवर्क पर निर्भर है, जबकि जलमार्ग अवसंरचना अनुपस्थित है।

74. (A) ब्रॉड गेज
भारतीय रेलवे की व्यापक 'यूनीगेज' नीति के लागू होने के बाद राजस्थान में बड़े पैमाने पर मीटर गेज पटरियों का ब्रॉड गेज (1676 मिमी) में रूपांतरण किया गया है। वर्तमान में राजस्थान के रेल नेटवर्क का लगभग पूरा हिस्सा ब्रॉड गेज ट्रैक पर ही आधारित है। इस परिवर्तन ने भारी मालगाड़ियों और उच्च गति वाली यात्री ट्रेनों के सुचारु संचालन को सक्षम बनाया है, जिससे क्षेत्रीय व्यापार को गति मिली है।

75. (B) भारी माल ढुलाई में नगण्य, क्योंकि यह मुख्य रूप से यात्री परिवहन पर ध्यान केंद्रित करता है
राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम (RSRTC) का मुख्य कार्य राज्य के भीतर और अंतर-राज्यीय मार्गों पर बस सेवाओं द्वारा यात्रियों की आवाजाही को सुचारु बनाना है। लॉजिस्टिक्स और वाणिज्यिक माल ढुलाई के क्षेत्र में RSRTC की कोई प्रत्यक्ष या महत्वपूर्ण भूमिका नहीं है। राज्य में भारी माल का परिवहन मुख्य रूप से निजी मालवाहकों, ट्रकों और रेलवे फ्रेट नेटवर्क द्वारा ही किया जाता है।

76. (B) केवल IV
राजस्थान में विमानन बुनियादी ढांचे से संबंधित कथनों में चौथा कथन असत्य है, क्योंकि महाराणा प्रताप हवाई अड्डा उदयपुर (डबोक) में स्थित है, कोटा में नहीं। प्रथम तीन कथन पूर्णतः सही हैं; जयपुर पहला अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा था, जोधपुर वायुसेना एयरबेस में सिविल एन्क्लेव के रूप में संचालित है और किशनगढ़ एक प्रमुख ग्रीनफील्ड हवाई अड्डा है। अतः केवल कथन IV असत्य है।

77. (A) विशेष निवेश क्षेत्र (SIR)
दिल्ली-मुंबई इंडस्ट्रियल कॉरिडोर (DMIC) ढांचे के तहत राजस्थान में जोधपुर-पाली-मारवाड़ क्षेत्र को एक प्रमुख 'विशेष निवेश क्षेत्र' (SIR) के रूप में विकसित किया जा रहा है। इस विशेष निवेश क्षेत्र का उद्देश्य अत्याधुनिक बुनियादी ढांचा, प्लग-एंड-प्ले सुविधाएं और सुदृढ़ लॉजिस्टिक्स कनेक्टिविटी प्रदान करके विनिर्माण, हस्तशिल्प तथा वस्त्र उद्योगों को आकर्षित करना एवं व्यापक क्षेत्रीय रोजगार व आर्थिक विकास को बढ़ावा देना है।

Click Here to Buy book on Flipkart

78. (C) पैनिक बटन, व्हीकल ट्रैकिंग सिस्टम (VTS) और सीसीटीवी कैमरे
राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम (RSRTC) द्वारा सार्वजनिक परिवहन में महिला सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देने हेतु 'निर्भया' बसों में अनिवार्य रूप से पैनिक बटन, व्हीकल ट्रैकिंग सिस्टम (VTS) और सीसीटीवी कैमरे स्थापित किए गए हैं। आपात स्थिति के दौरान पैनिक बटन दबाने पर वाहन की वास्तविक लोकेशन के साथ केंद्रीय सुरक्षा नियंत्रण कक्ष को त्वरित सूचना प्राप्त होती है, जिससे त्वरित प्रतिक्रिया और सुरक्षा सुनिश्चित होती है।

79. (D) टोंक
राजस्थान के टोंक जिला मुख्यालय की यह भौगोलिक विशिष्टता है कि यह वर्तमान में किसी भी मुख्य रेलवे जंक्शन या सीधी रेलवे लाइन से नहीं जुड़ा हुआ है। इसके विपरीत, चूरू, दौसा और सीकर जिला मुख्यालय प्रमुख रेल मार्गों पर स्थित हैं। टोंक को रेल नेटवर्क से जोड़ने के लिए जयपुर-टोंक-देवली रेल लाइन परियोजना पर कार्य चल रहा है, जिससे इस वंचित जिले को रेल सुविधा मिल सके।

80. (C) केवल III
राजस्थान राज्य सड़क विकास एवं निर्माण निगम (RSRDC) के संबंध में पहला और दूसरा कथन पूरी तरह सत्य हैं। तीसरा कथन गलत है क्योंकि RSRDC जयपुर सिटी ट्रांसपोर्ट सर्विसेज लिमिटेड (JCTSL) के परिचालन प्रबंधन के लिए जिम्मेदार नहीं है। JCTSL जयपुर की शहरी बस सेवाओं का प्रबंधन करने वाली एक अलग स्थानीय कंपनी है। अतः दिए गए कथनों में से केवल तीसरा कथन असत्य है।

81. (B) विरासत रेल पर्यटन और सर्किट यात्रा
मारवाड़ और मेवाड़ जैसे राजस्थान के ऐतिहासिक अंचलों में ब्रॉड गेज रुपांतरण ने बुनियादी रेल ढांचे को अत्यधिक मजबूत किया है। इस आधुनिक परिवर्तन ने राजस्थान में 'विरासत रेल पर्यटन और सर्किट यात्रा' को सबसे बड़ा प्रोत्साहन प्रदान किया है। इसके माध्यम से दिल्ली, जयपुर, उदयपुर, जोधपुर और जैसलमेर जैसे प्रमुख विरासत स्थलों के बीच लग्जरी तथा पर्यटक ट्रेनों का निर्बाध एवं त्वरित संचालन संभव हुआ है।

82. (B) 12 घंटे
8-लेन ग्रीनफील्ड दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे के पूर्ण रूप से चालू हो जाने पर दिल्ली और मुंबई के मध्य सड़क मार्ग द्वारा लगने वाला यात्रा समय घटकर लगभग 12 घंटे हो जाएगा। नियंत्रित-पहुंच अवसंरचना और 120 किमी प्रति घंटे की डिजाइन गति के कारण यह एक्सप्रेसवे पुरानी यात्रा अवधि को आधा कर देगा, जिससे राजस्थान से गुजरने वाले वाहनों की ईंधन खपत और यात्रा समय दोनों घटेंगे।

83. (A) इसने दूरस्थ विरासत और वन्यजीव स्थलों तक पहुँच में सुधार किया, जिससे पर्यटकों की संख्या में वृद्धि हुई
राजस्थान में बेहतर सड़क और रेल अवसंरचना का सबसे प्रमुख प्रभाव पर्यटन क्षेत्र पर पड़ा है। उन्नत राजमार्गों और रेल संपर्कों ने राज्य के दूरस्थ ऐतिहासिक किलों, विरासत स्थलों तथा वन्यजीव अभ्यारण्यों तक पर्यटकों की पहुँच को अत्यधिक आसान और आरामदायक बना दिया है। इसके परिणामस्वरुप राजस्थान में आने वाले पर्यटकों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई है।

84. (C) भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (NHAI)
राजस्थान में राष्ट्रीय राजमार्गों के निर्माण, चौड़ीकरण, भूमि अधिग्रहण और रखरखाव का मुख्य दायित्व 'भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण' (NHAI) के पास है। एनएचएआई केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय के अंतर्गत कार्यरत एक स्वायत्त संस्था है। राज्य में प्रमुख अंतर-राज्यीय राजमार्गों, स्वर्णिम चतुर्भुज मार्गों तथा एक्सप्रेसवे परियोजनाओं का क्रियान्वयन और प्रबंधन एनएचएआई द्वारा ही निष्पादित किया जाता है।

85. (A) राजस्थान ग्रामीण परिवहन गलियारा योजना
राजस्थान के दूरदराज के ग्रामीण इलाकों में, जहाँ RSRTC बसें उपलब्ध नहीं हैं, परिवहन सेवा प्रदान करने के उद्देश्य से राज्य सरकार ने 'राजस्थान ग्रामीण परिवहन गलियारा योजना' का प्रस्ताव रखा। इस योजना के तहत निजी बस चालकों को वित्तीय प्रोत्साहन और कर रियायतें प्रदान करके ग्रामीण मार्गों पर बसें चलाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, जिससे अप्रत्यक्ष ग्रामीण क्षेत्रों में सार्वजनिक परिवहन की उपलब्धता सुनिश्चित हो सके।

86. (D) महाराणा प्रताप हवाई अड्डा, डबोक
ऐतिहासिक शहर उदयपुर की वायु मार्ग से यात्रा करने वाले यात्री 'महाराणा प्रताप हवाई अड्डे' पर उतरते हैं, जो उदयपुर के पास डबोक में अवस्थित है। मेवाड़ के महान शासक के नाम पर स्थापित यह हवाई अड्डा दक्षिणी राजस्थान का प्रमुख नागरिक हवाई अड्डा है। यह हवाई अड्डा जयपुर, दिल्ली और मुंबई जैसे देश के प्रमुख वाणिज्यिक महानगरों से सीधी नियमित उड़ानों द्वारा जुड़ा हुआ है।

87. (B) राज्य राजमार्गों की लंबाई राष्ट्रीय राजमार्गों की लंबाई से अधिक है।
राजस्थान में परिवहन नेटवर्क की लंबाई का तुलनात्मक विश्लेषण करने पर यह तथ्यात्मक रूप से सही है कि राज्य में राज्य राजमार्गों की कुल लंबाई राष्ट्रीय राजमार्गों की कुल मार्ग लंबाई से अधिक है। राज्य सरकार द्वारा संचालित राज्य राजमार्ग अंतर-जिला आवाजाही को सुगम बनाते हैं और इनका किलोमीटर विस्तार राष्ट्रीय राजमार्गों से अधिक है, जबकि ग्रामीण सड़कों की कुल लंबाई इन दोनों श्रेणियों से भी अधिक है।

88. (C) पचपदरा
बाड़मेर जिले के पचपदरा में स्थित आगामी पेट्रोकेमिकल रिफाइनरी के लिए पेट्रोलियम उत्पादों, भारी औद्योगिक उपकरणों और कच्चे माल की निर्बाध आवाजाही को सुगम बनाने हेतु नई रेलवे कनेक्टिविटी विकसित की जा रही है। यह नई रेल लाइन पचपदरा रिफाइनरी कॉम्प्लेक्स को सीधे मुख्य रेल नेटवर्क से जोड़ेगी, जिससे रिफाइनरी से तैयार ईंधन

Downloaded from www.pdf.tube

45. (A) किसी गांव और पास की मुख्य सड़क या बाजार के बीच सड़क संपर्क का अधूरा भाग
राजस्थान में ग्रामीण सड़क विकास योजनाओं के संदर्भ में 'मिसिंग लिंक' शब्द का प्रयोग उस अधूरे सड़क खंड को संदर्भित करने के लिए किया जाता है जो किसी पृथक गांव या ढाणी को पास की मुख्य सड़क या बाजार से जोड़ने में छूट जाता है। इस योजना का उद्देश्य ऐसे छूटे हुए मार्गों का निर्माण कर कनेक्टिविटी को पूर्ण बनाना है।

46. (C) परिवहन एवं सड़क सुरक्षा विभाग
राजस्थान सरकार ने सड़क दुर्घटनाओं को रोकने, यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने और जन-जागरुकता बढ़ाने पर विशेष ध्यान केंद्रित करने के उद्देश्य से अपने परिवहन विभाग का नाम बदलकर 'परिवहन एवं सड़क सुरक्षा विभाग' कर दिया है। नाम में यह बदलाव विभाग की प्राथमिकताओं में वाहन पंजीकरण के साथ सड़क सुरक्षा और जीवन रक्षा को प्रमुखता देने को दर्शाता है।

47. (D) बीकानेर-सूरतगढ़
दिल्ली-मुंबई इंडस्ट्रियल कॉरिडोर (डीएमआईसी) के अंतर्गत राजस्थान में कई औद्योगिक नोड्स विकसित किए जा रहे हैं। इनमें खुशखेड़ा-भिवाड़ी-नीमराना निवेश क्षेत्र, जोधपुर-पाली-मारवाड़ विशेष निवेश क्षेत्र और अजमेर-किशनगढ़ औद्योगिक क्षेत्र शामिल हैं। बीकानेर-सूरतगढ़ क्षेत्र राज्य के उत्तर-पश्चिम में स्थित है और इसे डीएमआईसी के तहत निवेश क्षेत्र के रूप में चिन्हित नहीं किया गया है। इसलिए बीकानेर-सूरतगढ़ सही उत्तर है।

48. (C) (A) सही है लेकिन (R) गलत है
पश्चिमी समर्पित माल ढुलाई गलियारा (डब्ल्यूडीएफसी) राजस्थान में माल ढुलाई की क्षमता बढ़ाकर औद्योगिक विकास को अत्यधिक गति प्रदान करेगा, इसलिए कथन सही है। हालांकि, कारण गलत है क्योंकि डब्ल्यूडीएफसी सड़क परिवहन की आवश्यकता को समाप्त नहीं करता है। वास्तव में, रेल फ्रेट कॉरिडोर और सड़क परिवहन एक-दूसरे के पूरक हैं, जहाँ सड़कें कारखानों तथा डिपो तक माल पहुँचाने हेतु अंतिम मील कनेक्टिविटी प्रदान करती हैं।

49. (B) चयनित राज्य राजमार्गों को दो-लेन या चार-लेन मानकों में उन्नत करना
राजस्थान राज्य राजमार्ग विकास परियोजना (RSHDP) विश्व बैंक और एशियाई विकास बैंक जैसे अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थानों द्वारा समर्थित एक प्रमुख परियोजना है। इसका मुख्य उद्देश्य राजस्थान के चयनित प्रमुख राज्य राजमार्गों का चौड़ीकरण करके उन्हें दो-लेन या चार-लेन मानकों में उन्नत बनाना है। इसके माध्यम से राज्य में सड़कों की गुणवत्ता, स्थायित्व और सड़क सुरक्षा में सुधार करके व्यापारिक तथा यात्री परिवहन को सुगम बनाना है।

50. (C) यह राष्ट्रीय औसत का लगभग आधा है।
राजस्थान का विशाल भौगोलिक क्षेत्रफल और इसके एक बड़े भूभाग पर थार मरुस्थल का विस्तार इसके सड़क घनत्व को प्रभावित करता है। राजस्थान का औसत सड़क घनत्व भारत के राष्ट्रीय औसत की तुलना में लगभग आधा है। विशाल मरुस्थलीय भूभाग और छितरी हुई ग्रामीण आबादी के कारण राजस्थान में प्रति वर्ग किलोमीटर सड़क घनत्व राष्ट्रीय औसत से काफी कम बना हुआ है।

51. (A) डेक्कन ओडिसी
'डेक्कन ओडिसी' महाराष्ट्र सरकार और भारतीय रेलवे द्वारा संचालित एक शाही पर्यटक ट्रेन है, जिसका प्राथमिक यात्रा मार्ग मुख्य रुप से महाराष्ट्र और गोवा के ऐतिहासिक स्थलों पर केंद्रित है। यह राजस्थान के भीतर अपना मुख्य मार्ग संचालित नहीं करती है। जबकि 'पैलेस ऑन व्हील्स', 'रॉयल राजस्थान ऑन व्हील्स' और 'महाराजा एक्सप्रेस' ट्रेनें राजस्थान के पर्यटन परिपथों को कवर करती हैं।

52. (A) 1, 2, 3, 4
दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र से दक्षिण की ओर बढ़ता है। राजस्थान में उत्तर से दक्षिण दिशा के अनुसार जिलों का सही क्रम इस प्रकार है। यह एक्सप्रेसवे सबसे पहले उत्तरी जिले अलवर में प्रवेश करता है। इसके बाद यह दौसा जिले से गुजरता है, फिर सवाई माधोपुर जिले को पार करता है और अंत में दक्षिण-पूर्वी राजस्थान के कोटा जिले से होकर गुजरता है। अतः क्रम 1, 2, 3, 4 सही है।

53. (A) कांडला और जेएनपीटी (JNPT) जैसे पश्चिमी समुद्री बंदरगाहों तक कंटेनर चालित सामानों की तीव्र आवाजाही
पश्चिमी समर्पित माल ढुलाई गलियारा राजस्थान के उद्योगों के लिए अत्यंत लाभकारी है। भू-बद्ध राज्य होने के कारण राजस्थान के उद्योगों को निर्यात हेतु अधिक समय लगता था। डब्ल्यूडीएफसी की समर्पित मालगाड़ियों द्वारा गुजरात के कांडला तथा मुंबई के जेएनपीटी जैसे पश्चिमी समुद्री बंदरगाहों तक कंटेनर चालित सामानों की तीव्र और किफायती आवाजाही संभव हुई है, जिससे लॉजिस्टिक्स दक्षता बढ़ी है।

54. (D) अजमेर से दिल्ली कैंट
राजस्थान की पहली वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेन को 12 अप्रैल 2023 को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया था। इस सेमी-हाई-स्पीड ट्रेन ने अजमेर से दिल्ली कैंट के बीच अपना व्यावसायिक संचालन शुरु किया। यह ट्रेन अपने मार्ग में जयपुर, अलवर और गुड़गांव जैसे स्टेशनों पर रुकती है। इसने अजमेर और दिल्ली के बीच यात्रा समय को काफी कम कर दिया है।

55. (B) जयपुर, जोधपुर, कोटा
केंद्र सरकार की फेम-II योजना के तहत राजस्थान के प्रमुख शहरों में प्रदूषण कम करने और हरित सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा देने हेतु इलेक्ट्रिक बसों का संचालन शुरु किया गया। इसके तहत राज्य के तीन प्रमुख नगरों- जयपुर, जोधपुर और कोटा में शहरी बस सेवाओं के लिए इलेक्ट्रिक बसें चलाई गईं। इस पहल से शहरी आवागमन को पर्यावरण-अनुकूल और आधुनिक बनाया गया।

NODIA

Visit :

www.pdf.tube

Download PDFs For :

- ✓ MPPSC Chapterwise Question Bank
- ✓ KVS/NVS Chapterwise Question Bank
- ✓ KVS/NVS 30 Sample Papers for Tier-II
- ✓ DSSSB TGT Chapterwise Question Bank
- ✓ DSSSB Sample Papers
- ✓ Chapterwise Question Bank
- ✓ JEE NEET Foundation
- ✓ Primary Classes Worksheets
- ✓ Olympiad Guide
- ✓ Sample Papers
- ✓ Previous Year CBSE Papers
- ✓ Previous JEE, NEET and CUET Papers

Nodia Editions LLP

125, Sector 6, Vidhyadhar Nagar, Jaipur 302039

MRP ₹ 440.00

Click Here to Buy book on Amazon